हिन्दी
विश्वकोष

(चतुर्विंश भाग)

सादा (फा० वि०) १ जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो ; जिसमें बहुत अधिक अंग, उपांग, पेच या बखेड़े आदि न हों। २ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ३ जिसके ऊपर कोई रंग न हो, सफेद। ४ जिसमें किसी विशेष प्रकारका मिश्रण न हो, विना मिलावटका, खालिस। ५ जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ६ मूर्ख, बेवकूफ। ७ जो कुछ छल कपट न जानता हो, जिसमें किसी प्रकारका आडंबर या अभिमान आदि न हो, सरल हृदय, सीधा।

सादापन (फा० पु०) सादा होनेका भाव, सादगी, सरलता।

सादाबाद—सादुल्लाबाद देखो।

सादि (सं० पु०) सद गतौ (वसि वपि यजीति। उण् ४।१२४) इति इञ्। १ सारथि। २ योद्धा। ३ अवसन्न। ४ वायु। (त्रि०) ५ आदियुक्त।

सादित (सं० त्रि०) सद-णिच्-क्त। १ विषादित। २ विनाशित, विध्वस्त। ३ क्षयित, भग्न, छिन्न। ४ दुर्बलीकृत। ५ अवसादप्रापित। ६ शरणप्रापित। ७ गमित।

सादिन् (सं० पु०) सद गतौ णिनि। १ अश्वारोही। २ गजारोही। ३ रथारोही।

सादी (फा० स्त्री०) १ लालकी जातिकी एक प्रकारकी छोटी चिड़िया जिसका अंग भूरे रंगका होता है और जिसके शरीर पर चित्तियां नहीं होतीं, विना चित्तीकी मुनियां, सदिया। २ वह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।

सादी (हिं० पु०) १ शिकारी। २ घोड़ा। ३ शादी देखो।

सादी (शेख)—फारसके सिराज नगरवासी एक सुप्रसिद्ध कवि। फारसी या अरबी भाषामें ऐसे प्रसिद्ध सुरसिक कवि और नहीं हुए। साधारणमें शेख मसलाह उद्दीन् सादी अल्सिराजी इनका नाम प्रचलित था। सन् ११७४ ई० (५७१ हिजरी)-में सिराज नगरमें इनका जन्म हुआ था और सन् १२९२ ई० (६९१ हिजरी) में १२० वर्षकी आयुमें इनकी मृत्यु हुई।

यह प्रसिद्ध कवि अपने सुदीर्घ जीवनमें नाना धाराओं द्वारा परिचालित हुए थे और बहुत दिनों तक शिक्षाके प्रभावसे इनकी ज्ञानशक्ति नाना विषयोंमें विकसित हो कर एक अपूर्व काव्यज्योतिमें जगत्को आलोकित करनेमें समर्थ हुई थी। लड़कपनकी शिक्षाके बाद यौवनमें इन्होंने सैनिक वृत्तिका अवलम्बन कर हिन्दू और ईसाइयोंके विरुद्ध युद्ध यात्रा की थी। इससे अनुमान होता है, कि अपने सैनिक जीवनमें ये फारसके सैनिक रूपमें सुदूर उत्तर अफ्रिकासे भारत सीमान्त तक विस्तृतस्थानके युद्धविग्रहमें बहुत दिनों तक फंसे थे। त्रिपोली नगरके किले बनानेके समय ईसाइयोंने इनको

कैद कर लिया और कुछ दिनों तक किले बनानेके कार्यमें इनको नियुक्त किया। पीछे ही किसी व्यक्तिकी कृपासे इनकी मुक्ति हुई। इसी व्यक्तिने अपनी कन्याका विवाह सादीसे कर दी और इनकी मुक्तिका उपाय कर दिया। इस विवाहसे सादीको खुशी हुई या नहीं यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता। बहुतोंका अनुमान है, कि शान्त चित्त कविके लिये यह स्त्री बडी तीव्र मिजाजकी थी। इस कविने अपनी रचित कविताओंमें एक जगह इसका कुछ आभास दिया है।

जैसे जैसे इस कविकी अवस्था परिपक्व होती गई, वैसे वैसे यह धर्ममें प्रवीण होते गये। इन्होंने ईश्वरकी महिमाका पूर्ण विकाश देखनेके लिये नाना स्थानोंका पर्यटन किया और प्रायः चौदह बार महम्मदकी लीला-स्थल मक्का शरीफकी यात्रा की थी।

ये कवि सर्वजनमान्य शूफी सम्प्रदायके चलानेवाले अवदुल कादिर गिलनीके शिष्य थे। बहुतोंकी धारणा है, कि इन्होंने गिलनीके दार्शनिक ज्ञानधर्मका प्रयोजन समझ मन ही मन उक्त मतकी दीक्षा ली थी। सिराज-नगरमें इनका समाधिमन्दिर आज भी दिखाई देता है।

ये बहुत अधिक कवितायें, किस्से, स्तोत्र और गीत बना गये हैं। इनकी बनायी पुस्तकोंमें गुलिस्ताँ तथा बोस्ता प्रधान हैं। इन सबोंके सिवा इनकी रची कितनी ही आदिरसात्मक कवितायें भी दिखाई देती हैं। इन कविताओंका संग्रह आल्खरिसात् नामसे प्रसिद्ध और इन्हींकी रचना कह कर प्रचलित हैं। ये कविता इनके ऊंचेसे ऊंचे कविजीवनके कलंकस्वरूप हैं। कवि-ने इसलिये अन्तमें खेद प्रकट किया था नहीं; किन्तु अपने पक्षसमर्थनके लिये इन्होंने कहा था, कि ये कवितायें काव्यरसकी स्वादवर्द्धक हैं। नमक जैसे मांस-का स्वाद वर्द्धन करता है, ये कवितायें भी वैसी ही हैं।

निम्नलिखित कई पुस्तकें इनके द्वारा रचित और जनसाधारणमें आदृत हैं—

१ प्रस्तावना, २ मजलिश खाँ, ३ रेसाली साहिब दीवान, ४ गुलिस्ताँ, ५ बोस्ताँ, ६ पन्दनामा, ७ कसायद अरबी, ८ कसायद फारसी, ९ मरासी, १० मुलम्मात्, ११ मुजाहावात, १२ रुवायत्, १३ फर्दियात्, १४ गजालियात्, १५ मुकुलतियात्, १६ मुरक्कावात्, १७ अलखबिसात्, १८ तर्जियात्, १९ किताब-अल-बदारो, २० किताब ताजो वात् और २१ अल खरातिम।

सादीक्—१ एक मुसलमान कवि। पूरा नाम सादीक् अली था। इस कविने "बहारबाघ हैदरी" नामकी कविता रच कर लखनऊके नवाब गाजीउद्दीन् हैदरको समर्पण की थी। इस काव्यावलीमें इस कविके रचे कुल काव्य नहीं, वरं और कविताओंका भी संग्रह है। किन्तु सब कवितायें नवाबके गुणकीर्त्तनमें ही लिखी गई हैं। सन् १८२७ ई०में इसकी मृत्यु हुई।

२ सैयद मुहम्मद कादिरीके पौत्र मीर जाफर खांका काव्यनाम। इसने बहारिस्थान-जाफरी नामकी एक कविताकी रचना की। यह दिल्लीका रहनेवाला था। सन् १७८० ई०से पहले ही किसी वर्षमें इसकी मृत्यु हुई और दिल्लीके वैरामदई नामक नालेकी बगलमें अपने पिताकी कब्रके निकट इसकी कब्र है।

सादीक् खां—बादशाह अकबरका धर्मगुरु। यह एक फकीर था। सन् १५६७ ई०में इसका देहान्त हुआ। सिकन्दरासे आगरा जानेके पथके ठीक मध्यस्थलमें बांई ओर एक चौडे मैदानमें कई कब्रें दिखाई देती हैं। इनमें जिस समाधिमन्दिरमें ६४ खंभोंका दालान है, वहीं इस फकीरकी समाधि होनेकी लोगोंकी धारणा है।

सादुद्दीन्—१ दिल्लीवासी एक मुसलमान कवि। इसने काअउल दकाइक तथा सारा-मानार नामकी दो पुस्तकोंकी रचना की थी। सन् १०८३ ई०में इसका देहान्त हुआ।

२ तुर्कोंका एक ऐतिहासिक। सन् १५९९ ई०में कुस्तुनतुनिया नगरमें उसकी मृत्यु हुई। उसने ताज-उल तवारिख नामका मुसलमान साम्राज्यके (सन् १२९९ से ले कर सन् १५२० तक) इतिहासकी रचना की थी। यह पुस्तक ऐतिहासिकोंके लिये बडे कामकी है। इसके सिवा सलीमनामा नामकी एक और पुस्तक इसके द्वारा लिखी गई थी। इस पुस्तकमें १म सलीम-के जीवन वृत्तान्त सम्बन्धीय किस्से कहानियां लिखी हैं।

सादुद्दीन हाम्विया—सजआल उल-आर्वा, किताब महबूर आदि पुस्तकके रचयिता।

सादुल्ला खाँ—१ सुविख्यात रोहिला सरदार अली महम्मद खाँके पुत्र। पिताकी मृत्युके बाद सन् १७४६ ई०में ये रोहिलाधिकृत प्रदेशके मालिक हुए, किन्तु हाफिज रहमत खाँने इनको ८ लाख रु० वार्षिक वृत्ति देना निर्द्धारित कर स्वयं राज्यभार ग्रहण किया। सन् १७६१ ई०में इनकी मृत्यु हुई। इनका भाई अवदुल्ला खाँ नवाब सुजाउद्दौलाके साथ हाफिज रहमतुल्लाके युद्धमें मारा गया। रोहिला देखो। २ मुगल बादशाह शाहजहाका एक विश्वस्त कर्मचारी। इसकी उपाधि खाँ आलम थी। यह सम्राट् द्वारा दूत बन कर फारस गया था। सन् १६३१ ई०में इसकी मृत्यु हुई। ३ बिजनोरके नवाब महमूद खांके साले। सन् १८५७के तलवेमें इन्होंने नवाबके भाई जलालुद्दीन खांके साथ अंग्रेजोंके विरुद्ध अस्त्र उठाया था। सन् १८५८ ई०में कोट-कादिर नामक स्थानमें अंग्रेज द्वारा पकड़े जा कर जेनरल जोन्सकी आज्ञासे ये गोली मार दिये गये। ४ एक वजीर। ये मुगलसम्राट् शाहजहांके दरबारी तथा विचक्षण मन्त्री थे। इनकी तरहके सुदक्ष, सरल अन्तःकरण, सर्वदर्शी राजमन्त्री भारतके अदृष्टपटमें बहुत कम दिखाई देते हैं। बादशाह आलमगीर इन्हींकी कूटनीतिका अनुसरण कर चलते थे। सन् १६५६ ई०में ४८ चान्द्रवर्षमें इनकी मृत्यु हुई। ये जुमलात्-उल्-मुल्क और अल्लामी फहामी उपाधिसे परिचित थे।

सादुल्ला नगर—१ अवधके गोंडे जिलेका एक प्रगना। उभय पार्श्ववर्त्ती उतौला प्रगनाके भूम्याधिकारी इस प्रगनेके अधिकारी हैं। पहले यह प्रगना जंगलमय था और इसी वनमें छिप कर डाकू रहते थे तथा निकटके गांवों पर अत्याचार किया करते थे। इनके अत्याचारसे उत्पीड़ित हो कर उतौलाके मालिकोंने इस जंगलको कटवा देनेका दृढ़ सङ्कल्प किया। इस समय इसका अधिकांश भाग आबाद हो गया है और डाकू यहांसे भाग गये हैं। अब डाकुओंका उपद्रव भी नहीं होता। २ उक्त प्रदेशके उक्त प्रगनेका एक छोटा-सा नगर। यह अक्षा० २७° ५′ ४५″ उ० और देशा० ८२° २४′ ५१″ पू० गोंडेसे २८ मील उत्तरपूर्व अवस्थित है और सादुल्ला प्रगनाका विचार सदर भी है। सन् १७८६ ई०में उतौला राजवंशके राजा सादुल्लाने इस ग्रामको बसाया था।

सादुल्लापुर—१ बङ्गालके मालदह जिलेका एक ग्राम। यह गङ्गाजीके तट पर बसा हुआ है और स्नान करनेके लिये यहां बहुत अच्छा घाट बना है। इसीसे इस जिलेमें यह ग्राम विशेषरूपसे प्रसिद्ध है। मालदह जिलेके दूरवर्त्ती स्थानोंके अधिवासी अपने अपने मृतकल्प आत्मीयोंको गंगाप्राप्ति कामनासे यहां कुछ दिनोंके लिये गङ्गासेवन कराते हैं। समय समय पर दूर दूरसे लोग मुर्दे यहां ला कर जलाते हैं।

गौड़ नगरमें जब मुसलमानोंकी राजधानी कायम थी, तब राजाकी आज्ञासे सादुल्लापुरका घाट ही हिन्दुओंके मुर्दे जलानेके लिये एकमात्र स्थान निर्दिष्ट था। प्राचीनताको देखते हुए धर्मप्राण हिन्दुओंकी दृष्टिमें यह एक महाश्मशान गिना जाता है। इसी कारणसे यहांके घाट पर स्नान तथा श्मशान दर्शन अतीव पुण्यजनक समझ कर बहुतेरे योगोपलक्षमें स्नान करने आते हैं। प्रति वर्ष यहां वारुणी (चैत्रवारुणी)के समय मेला होता है और कई सौ आदमी स्नान करनेके लिये आते हैं। २ पञ्जाब प्रदेशकी चन्द्रभागा नदीके तट पर बसा हुआ एक ग्राम। यहां सन् १८४६ ई०के जनवरी महीनेमें शेरसिंहका अङ्गरेजोंकी फौजसे युद्ध हुआ था। इस फौजके कमाण्डर थाकवेल थे। शेरसिंह-परिचालित सिक्ख फौजें बड़ी बहादुरीसे लड़ी थीं। इस युद्धमें अंगरेज दल सिक्खोंको हरा न सका।

सादुला शेख—दिल्लीका रहनेवाला एक फकीर कवि। यह गुजरातके राजमन्त्री इसलाम खाँका वंशधर तथा शाहगुलका शिष्य था। शाहगुल शेख अहमद मुजाहीदका वंशधर तथा वाहदत् नामसे परिचित थे। सादुल्लाने गुरु सहवासमें रह कर गुलशन नाम ग्रहण कर 'दरवेश' वेशमें जीवन विताया था। सन् १७२८ ई०में दिल्लीमें इनकी मृत्यु हुई थी।

सादूर (हिं० स्त्री०) १ शार्दूल, सिंह। २ कोई हिंसक पशु।

सादृश (सं० त्रि०) सदृश स्वार्थे अण्। सदृश देखो।

सादृशीय (सं० त्रि०) सदृश-सम्बन्धो।

सादृश्य (सं० क्ली०) सदृशस्य भावः सदृश-ष्यञ्। १ सदृश होनेका भाव, समानता, एक रूपता। तत्पदार्थ भिन्न हो कर तत्पदार्थगत भूयोधर्मवत्त्व ही सदृशत्व है। मुखमें चन्द्रमाका सादृश्य है, यहां पर मुख चन्द्र भिन्न हो कर चन्द्रगत आह्लादकत्वादि मुखमें है, चन्द्रमा देखनेसे जैसा आह्लाद होता है, वैसा ही मुख देखने से भी होता है, इसीसे मुखमें चन्द्रमाका सादृश्य है।

२ समान धर्म, तुलना, बराबरी। ३ कुरङ्ग, मृग।

साद्गुण्य (सं० क्ली०) सद्गुण-ष्यञ्। १ सद्गुण-सम्बन्धी। २ सद्गुण समूह।

साद्भुत (सं० त्रि०) अद्भुतके साथ, आश्चर्यित।

साद्य (सं० त्रि०) १ आरोहणके उपयुक्त। (पु०) २ अश्वारोही, घुड़सवार।

साद्यःक्र (सं० क्ली०) एक सोमयाग।

साद्यस्क (सं० त्रि०) जल्द किया जानेवाला।

साद्योज (सं० त्रि०) सद्योज-सम्बन्धी। (पा ४।३।७५)

साध (हिं० स्त्री०) १ इच्छा, ख्वाहिश, कामना। २ गर्भ धारण करनेके सातवें मासमें होनेवाला एक प्रकारका उत्सव। इस अवसर पर स्त्रीके मायकेसे मिठाई आदि आती है।

साध—(साधु-शब्दका अपभ्रंश)—उत्तर-पश्चिम भारतका एक धर्मसम्प्रदाय। पञ्जाब प्रदेशमें इसका प्रथम विकाश हुआ। इस समय युक्तप्रदेशके नाना स्थानोंमें इस सम्प्रदायके लोगोंका वास है। प्रायः संवत् १६०० या सन् १५४३ ई०में नारनौलके निकट बीजेश्वर नामके स्थानके रहनेवाले एक मनुष्यने ऊधो दास (उद्धवदास) नामक एक साधु पुरुषसे अविज्ञात सूत्रसे इस नये धर्मकी अभिव्यक्ति लाभ की थी। ऊधोदास सतनामी सम्प्रदायके प्रवर्त्तक रामदासके शिष्य थे। ये अपने गुरुदेवके धर्ममत सत्कारान्त जो अभिनव सिद्धान्तमें समुपस्थित हुए, उसे ही उन्होंने दैवशक्तिबलसे वीरभानुके हृदयमें प्रोथित कर दिया था और उससे ही साध धर्ममतकी उत्पत्ति हुई थी।

ऊधोदासने वीरभानुको और भी बता दिया था, कि मैं धरातलमें पुनः अवतीर्ण हूंगा। तुम निम्नलिखित लक्षणोंको देख कर समझना, कि मेरा जन्म हो गया है—१ मैंने जो कहा, भविष्यत्में वही होगा, २ मेरी देहसे किसी तरहकी छाया न होगी, ३ मैं पीछे तुमको अपने हृदयकी वासनावली बताऊंगा, ४ मैं स्वर्ग और मर्त्यके मध्यस्थल अन्तरीक्षमें स्थित रहूंगा और ५ मैं मन्त्रशक्तिके प्रभावसे मृतदेहमें जीवन सञ्चार करूंगा।

इस प्रदेशके लोग इनको साध कह कर पुकारने लगे, किन्तु ये अपनेको सत्नामी कह कर परिचय देते हैं। वेशभूषाकी परिपाटी इनमें बिलकुल मना है, युवक युवतियां केवल सफेद कपड़े पहन सकती हैं और सिर पर साम्प्रदायिक पगड़ीके सिवा किसी तरहकी भी टोपी नहीं रख सकते। धर्मनीतिके अनुसार इनमें झूठ बोलना तथा शपथ (सौगन्ध) करना महापाप है। मद, अफीम, गाँजा, भांग इत्यादि मादक वस्तुओं तथा तम्बाकू इत्यादि उपभोग्य वस्तुओंका सेवन निषिद्ध है। ये सबभूतोंमें समान दया रखते और यह समझते हैं, कि सर्व प्राणियोंमें ब्रह्मका वास है। इससे ये सामान्य कीट पतङ्गकी भी हत्या नहीं करते। इस कारणसे पशुमांस भक्षण भी निषेध है।

ये एकमात्र सत्नामकी उपासना करते हैं। उस परम सत्यके मूर्त्तिमय रूपकी उपासना या पौत्तलिकाचार रूप व्यभिचारसे ये बहुत घृणा करते हैं। किसी देवमूर्त्तिके सामने शिर झुका कर नमस्कार ये लोग नहीं करते। सम्मानार्ह व्यक्ति और यूरोपीय राजकर्मचारीके देखने पर उसको इज्जत करनेके लिये हाथ उठा कर सलाम करते हैं।

अपने सम्प्रदायके धर्ममतमें इनका दृढ़ विश्वास है। इनके धर्मग्रन्थ हिन्दी भाषामें लिखे गये हैं। उन ग्रन्थोंमें धर्मतत्त्वोंका विशेष 'वाणी' धर्मसङ्गीतरूपसे अभिव्यक्त

हुआ है। ग्रन्थमें कई जगह कबीर, नानक आदि प्राचीन धर्ममत प्रवर्त्तकोंके रचे ऐशतत्त्वविषयक सङ्गीत दिखाई देते हैं। ये लोग प्रत्येक दिन सन्ध्या समय जुमला घर-में या विभिन्न चौकीमें स्त्रीपुरुष एकत्र हो कर भजन-गीत गा कर आराधना करते हैं।

दिल्ली, आगरा, जयपुर और फर्रुखाबाद ही इस सम्प्रदायका प्रधान अड्डा है। मिर्जापुर जिलेमें भी इनका वास है। ये केलिको नामक वस्त्र छाप कर छींटका कपड़ा प्रस्तुत करते हैं। ये ही इनकी उपजीविका है।

ये अपने सम्प्रदायमें विवाह करते हैं। अर्थ या सामाजिक मर्यादाके पार्थक्यमें इनको कोई बाधा नहीं है। फिर, यदि सामाजिक कोई व्यक्ति कोई पापजनक या घृणित कार्य कर समाजकी दृष्टिमें पड़े, तो समाजका नियम उसके लिये लागू न होता। ये एकत्र ही भोजन करते हैं। परस्पर हिंसा, द्वेष, निन्दा या कुत्सा और विवाद एकान्त निन्दनीय है।

अपने समाजके सिवा अन्य समाजके व्यक्तियोंके साथ अपनी कन्याओंका विवाह नहीं करते। समाजमें जिस घरमें एक बार कन्याका विवाह हो चुका है, स्मरण रहने पर उस घरसे किसी तरह कन्यायें ग्रहण की जा नहीं सकतीं। ये एक एक महल्लेमें एकत्र वास करते हैं। ये सभी परिश्रमी और कर्मनिष्ठ होते हैं। कभी ये आलसी हो कर बैठ रहना या कुछ अन्नके लिये दूसरे-के स्कन्ध पर भार देना बड़े ही घृणास्पद समझते हैं। इसीलिये इनमें भिक्षुकोंकी संख्या बहुत कम है। सिवा इसके ये आपसमें सहानुभूति दिखलाया करते हैं। अपने अपने सम्प्रदायके अनाथ बालक-बालिकाओं तथा विधवाओंका पोषण करते हैं। उनको अन्नके लिये दूसरी जगह भीख मांगने जाने नहीं देते।

ये प्रायः ही अपने बालक-बालिकाओंका विवाह बालकपनमें ही स्थिर करते हैं। द्वादश, चतुर्दश, षोडशवर्षका विवाह बिलकुल मना है। विवाहमें कन्यापण नहीं है। किन्तु उपहारके रूपमें कन्याको विवाहके समय कुछ दिया जाता है।

इनमें बहुविवाहकी प्रथा नहीं है। स्त्रियां भी एक स्वामीके रहते दूसरे पुरुषसे विवाह या विधवा हो जाने पर भी दूसरे पुरुषसे विवाह नहीं करतीं। जब पुत्र विवाह-योग्य हो जाता है, तब उसका पिता या अभि-भावक विवाहका प्रस्ताव कन्याके पिताके पास एक अपने गृहस्थके द्वारा भेजता है। यदि कन्याका पिता प्रस्ताव स्वीकार कर लेता है, तब वह अगुआके रूपमें उसे मिष्टान्न खिलाता तथा उसकी खातिरदारी करता तथा कुछ रुपये पैसे दे कर विवाहसम्बन्ध पक्का करने पर बाध्य होता है। इसको "मंगनी पाको" कहते हैं।

विवाह स्थिर हो जाने पर भी जब तक कन्या ऋतु-मती नहीं हो जाती, तब तक विवाह कार्य स्थगित रहता है। कन्याके पिताके द्वारा ठहराये गये विवाहकी सूचना वरके पिताको मिलती है, तब वह दिन मुकर्रर कर कन्याके पिताके पास भेज देता है और अपने समाज-के लोगोंको बुला कर प्रचार करता है, कि अमुक दिन मेरे पुत्रका विवाह होगा। इसके बाद चौकियों पर एकत्र बैठ कर भजन गीत गाया करते हैं। इस दिनसे ही विवाहके दिन तक नित्य कन्या-वरके शरीरमें चन्दन तथा हल्दी लगाई जाती है और नित्य ही समाजके सभी एकत्र हो कर विवाह-मङ्गलगान करते हैं।

विवाहके दिन मध्याह्नकालमें कन्याके पिताके घर वरपक्षीय समाजके सभी आदमी भोजन करते हैं। सन्ध्याके समय वर, वरके पिता और आत्मीयस्वजन बन्धुबान्धव-वादिके साथ कन्याके पिताके घर जाते और उसके प्राङ्गणमें बिछे बिछौने पर बैठते हैं। वरके लिये सामने-की ओर एक काष्ठमय सिंहासन रखा रहता है। वरके बैठ जाने पर कन्या बाहर लाई जा कर उसी आसन पर बाईं ओर बैठाई जाती है। इस समय कन्याको कोई आत्मीय आ कर दोनोंका गँठबन्धन कर देते हैं और समाजका एक आदमी मंगल पाठ करता रहता है। इसके बाद वर-कन्या सिंहासनसे उठ कर उसका चार बार प्रदक्षिण करती हैं। यही इनके विवाहका शेष अङ्ग है। सिंहासनका प्रदक्षिण दम्पतीके संसारचक्र परि-भ्रमणका रूपान्तर कल्पनामात्र है। इसके बाद सभी वरकन्याको साथ ले लौट आते हैं।

इस सम्प्रदायके लोग विवाहके समय जैसे मंगल-गान करते हैं, मृत्युकालमें भी वैसे ही पारमार्थिक तत्त्व-

का गान करते हैं। ये लोग मृतदेहको जलाते हैं। कहते हैं, कि फर्रुखाबादके साथ पहले नवाबी राज्यमें मृतदेहको एक वृक्षमें लटकती हुई बांध कर चले जाते थे। यह बात इनका कोई आदमी भी स्वीकार नहीं करता और यह ब्राह्मणोंकी रचना है, इसीसे सभीको धारणा है।

१ विवाहका मंगलगान—

(क) "दर्शन दे गुरु! परम सनेही।
तुम बिना दुःख पावे मोरो देही।
नींद न आवै अन्न न भावै।
बार बार मोहिं विरह सतावै।
घर अंगना मोहिं कछु ना सुहावै।
फजर भये पर विरह न जावै।
नैना छुटे सहल धारा;
निश दिन पन्थ निहारूं तुम्हारा।
जैसे मीन मरै बिनु नीर,
वैसे तुम बिना दुःखत शरीर।"

(ख) दुःखत तुम बिना रोवत हारे, प्रकट दर्शन दीजिये।
बिनती करूं मोरे सुनिय वलि जाऊं विलम न कीजिये।
विविध विविध कर भयावन व्याकुल बिना देखे चित्त न रहै
तपत ज्वाल उठत मनमें कठिन दुःख मेरो जो सहै।
औगुण अपराध दया कीजे औगुण कछु न विचारियो।
पतित पावन रघुपति अब पक्ष छिन न विसारियो॥
दया कीजो दरश दीजो अब की बहीको छोरियो।
भरि भरि नैना निरखि देखो निज सनेह न तोरियो॥

२ मृत्युकालीन गीत—
तुझे बिना ना किया परि तु आपनो बेर?
बाजे ताल बजन्त रे मन बावरे! मुतरि न छेर।
पर हक छाडो हक पिछाडो समझवाली फेर।
झूठो बाजि जगत्‌का, मनबावरे सुन सहहकी टेर।
कायलो नगरी सकल, समरि पांच जमे नेर।
गुरुज्ञान खड्ग सम भल ले मन बावरे यमयम करै न जेर
तेरा जोवन छिन पल एक, जगमें फिर ना ऐसी बेर।
तेरा पर जहाज समुद्रमें मनबावरो! फिर सकै केर।
सभी मुसाफिर वाहके सब खड़े कमर कसे।
लेना हो सो लीजिये, मनबावरे बीतो जात अबेर।
कर सुमार्ग सत्‌गुरु छोड़ो द्वन्द्व दुहेल।
तीजे भाम मिलें सत्‌नाम से, मनबवरे, मनबावरे
जगत की न जेर॥

पहले कह आये हैं, कि ये एकेश्वरवादी हैं। ये जगत्‌-स्रष्टा परमेश्वरको सत्यगुरु या सत्यनाम कहते हैं। ये आदिदेवकी पौत्तलिक मूर्त्ति नहीं बनाते, मन ही मन उसका ध्यान तथा उपासना करते हैं। ये सत्य धर्माचरणको एकमात्र कर्त्तव्य समझते और उसीमें ये मुक्ति समझते हैं तथा उसीसे परमात्मामें मिल जाने (सायुज्य) की आशा रखते हैं। छिप कर भिक्षादान तथा अर्थ सञ्चयमें विरत रहना ही इनके धर्मका प्रधान अङ्ग है। झूठ बोलना, पृथ्वी, जल, वृक्ष या पशुओं पर अकारण दण्डाघात इनके धर्मविरुद्ध कार्य हैं। परस्वापहरण, बल या कौशलपूर्वक दूसरेकी सम्पत्तिसे उसे हटा देना आदि कार्य अतीव गर्हित है। जो पापजनक कार्य हैं, उनको ये नहीं करते। इनके यहां लज्जाकर अथवा विधिविरुद्ध कार्यकारी पुरुष या स्त्रीके प्रति ये देखते तक नहीं तथा क्रीडाकौतुक नाच गानमें भी ये कभी चित्त नहीं लगाते। एकमात्र भगवान्‌के गुणकीर्त्तनमें मन लगाना ये अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

साध (सं० पु०) साध-अच्। साधक।

साधक (सं० पु०) १ साधनकर्त्ता, जो कार्य करते हैं। २ आराधक, अर्चक, सेवक, जो सिद्धिके लिये देवोद्देशसे साधना करते हैं।

शिवसंहितामें लिखा है, कि साधक चार तरहके हैं—मृदु, मध्य, अतिमात्र और अतिमात्रतम।

मृदुसाधक—जो साधक मन्दोत्साही, अति सम्मूढ़, व्याधियुक्त, गुरुदूषक, लोभी, पापमति, बहुभोजनकारी, स्त्रीमें आसक्त, चपल, कातर, पराधीन और अत्यन्त निष्ठुर, मन्दाचार और मन्द वीर्य आदि लक्षणयुक्त हो, वे मृदुसाधक कहे जाते हैं। ये सिद्धिलाभ करनेमें समर्थ नहीं होते।

मध्यसाधक—जो समबुद्धि, क्षमायुक्त, पुण्याकाङ्क्षी, प्रियवादी और सब विषयोंमें उदासी न हों, उन्हें मध्य साधक कहते हैं।

अतिमात्र साधक—स्थिरबुद्धि, मुक्तिकामी, स्वाधीन,

वीर्यवान्, महाशय, दयायुक्त, क्षमावान्, शूर, श्रद्धाविशिष्ट, गुरुपादपद्मपूजाकारी और सदा योगाभ्यासरत, ऐसे लक्षणयुक्त साधक ही अतिमात्र साधक कहे जाते हैं। ये साधक विशेष भक्तिके साथ साधना करें, तो उनको शीघ्र ही सिद्धिलाभ हो सकता है।

अतिमात्र तम-साधक—महावीर्यान्वित, उत्साहसम्पन्न, मनोज्ञ, शौर्यसम्पन्न, शास्त्रज्ञ, अभ्यासशील, ममताशून्य, निराकुल, नवयौवनसम्पन्न, (पहले यौवनमें कार्यमें अत्यन्त आसक्ति रहती है, जो कार्य आरम्भ किया जाता है, उस कामको बिना खतम किये छोड़ा नहीं चाहता इसीलिये नवयौवनसम्पन्न व्यक्ति ही साधनाके लिये सर्वश्रेष्ठ है। सुतरां यह विशेषण उपयुक्त है), मिताहारी, जितेन्द्रिय, निर्भय, शुचि, कार्यकुशल, दाता, बहुतोंके आश्रय, साधनाके अधिकारी, स्थिर, धीमान्, यथेच्छरूपसे अवस्थित, क्षमाशील, सुशील धर्मचारी, गुप्तचेष्ट, प्रियवादी, शास्त्रविश्वाससम्पन्न, देवतागुरुपूजक और जनसङ्गविरक्त। ये ही अतिमात्रतम-साधकोंके लक्षण हैं।

तन्त्रशास्त्रमें भी साधकका लक्षण यों लिखा है—जो विनीत, शुद्धात्मा, श्रद्धाशील, धीर, कार्यदक्ष, कुलीन, प्राज्ञ, सच्चरित्र, यति-आचारविशिष्ट, पुण्यवान, धार्मिक, गुरुभक्त, जितेन्द्रिय और दानध्यानपरायण, ये सब गुण वाले साधक हो सकेंगे। जिनमें ये सब गुण नहीं है, वे साधनाके उपयुक्त नहीं हैं। उनके साधना-कार्य करने पर भी सफल नहीं होता।

साधका (सं० स्त्री०) दुर्गा। दुर्गाका नाम स्मरण करनेसे सिद्धि होती है, इसलिये इनका नाम साधका हुआ है। (देवीपु० ४५ अ०)

साधदिष्टि (सं० पु०) १ साधित यज्ञ। २ जन्तु। ३ ऋत्विक्। (ऋक् ३।८।६)

साधन (सं० क्ली०) साध ल्युट्। १ करण, करणकारक, जिसके द्वारा कर्मसाधित होता है। क्रियासाधन करने पर उनमें अनेक साधनोंकी जरूरत होती है। किन्तु क्या सब साधनोंमें ही करण होगा? ऐसा नहीं। जो साधनतम है अर्थात् जो प्रधानतम साधन है, वही करण होगा। जिसके न करनेसे वह क्रिया निष्पन्न न हो सकेगी, ऐसे ही साधन करण होंगे और इसी करणमें तृतीया विभक्ति होगी। करणकारक देखो। २ कारण, हेतु। औषध, नियोगिता, विद्या और नाना विध स्वर्गमें जो अवस्थान है, ये सभी तपः द्वारा सिद्ध होते हैं, सुतरां तपस्या ही इनकी एकमात्र साधना ४। ३ मारण। ४ मृतसंस्कार, अग्निदान। ५ गति, गमन। ६ द्रव्य। ७ धन। ८ अर्थदापन। ९ निर्वर्त्तन। १० निष्पादन। ११ उपकरणसामग्री। १२ युद्धोपकरण हाथी, घोड़े आदि। १३ अनुव्रज्या, अनुगमन। १४ सैन्य। १५ सिद्धौषधि। १६ उपाय। १७ मेढ्र। १८ उधः। १९ सिद्धि। २० कारक। २१ प्रमाण। २२ व्याप्य। २३ मोहन। २४ जव। २५ साधना, मन्त्रसिद्ध करण, तपस्यादिका अनुष्ठान, जिसके द्वारा मन्त्रकी सिद्धि होती है। मन्त्रका साधन करनेसे ही सिद्धि होती है।

तन्त्रमें कई तरहकी साधन प्रणाली लिखी है। शिष्य यथाविधान साधन द्वारा सिद्ध गुरुके निकट मन्त्र ग्रहण कर साधनामें प्रवृत्त हों। भक्तिके साथ नियमके साथ मन्त्रसाधन करनेसे शीघ्र ही सिद्ध होता है, नहीं तो साधना विफल होती है। जगत्‌में कुछ भी असाध्य नहीं है, जो असाध्य रहता है, वह साधन द्वारा सुसाध्य हो जाता है। किन्तु यथाशास्त्र साधन करना चाहिये।

सुरसुन्दरी-योगिनी साधन, मनोहरयोगिनी साधन, कनकवतीयोगिनी साधन, कामेश्वरीयोगिनी साधन, रतिसुन्दरीयोगिनी साधन, पद्मिनीयोगिनी साधन, मधुमतीसाधन, शवसाधन, चितासाधन आदि बहुतेरे साधनोंकी प्रणाली तन्त्रमें वर्णित है। काली, तारा आदि सिद्धविद्यासे साधन करनेसे भवबन्धनसे मुक्त हो जाता है। तन्त्रमें इसकी साधन-प्रणाली और पद्धति विशेषरूपसे वर्णित है। यह साधनप्रणाली गुरुगम्य है। सिद्ध गुरुके दयापरवश हो उपयुक्त साधकको उक्त मन्त्र और साधन प्रणाली बता देने पर साधक तब साधनामें प्रवृत्त हो सकेंगे। तन्त्रोक्त यह साधन गुरुकी कृपा बिना हो नहीं सकता। तंत्रसारमें इसका विशेष विवरण देखो। तंत्रोक्त यह साधनप्रणाली कलिकालमें दुर्बलाधिकारी मानवोंके लिये प्रशस्त उपाय है।

वेदान्तिकोंके मतसे नित्य और अनित्य वस्तुविवेक है। इस जगत्‌में कौन वस्तु नित्य और कौन वस्तु अनित्य, इत्याकार विवेकज्ञान, इहामूत्र फलभोगविराग और शमदमादि सम्पत्ति ही ब्रह्मज्ञानसाधन है अर्थात् इन साधनों द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। ब्रह्मज्ञानलाभ ही एकमात्र जीवोंका प्रयोजन है। जीव इस साधन द्वारा ब्रह्मसाक्षात्कार कर सकता है।

साधनक (सं० त्रि०) साधन स्वार्थे कन्। उपकरणसामग्रीविशिष्ट।

साधनक्रिया (सं० स्त्री०) साधनरूप कर्म, साधनकार्य।

साधनता (सं० स्त्री०) साधनस्य भाव-तल् टाप्। १ साधनका भाव या धर्म। २ साधन करनेकी क्रिया, साधना।

साधनमालातन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रविशेष। इस तन्त्रमें नाना बौद्ध देवदेवीका ध्यान और साधनप्रणाली विशेष रूपसे लिखी गई है।

साधनवत् (सं० त्रि०) साधनविशिष्ट, साधनयुक्त।

साधना (सं० स्त्री०) साध णिच्-युच् टाप्। १ सिद्धि, निष्पादना। २ आराधना, देवताकी उपासना।

साधना (हिं० क्रि०) १ कोई कार्य सिद्ध करना, पूरा करना। २ संधान करना, निशाना लगाना। ३ अभ्यास करना, आदत डालना। ४ शुद्ध करना, शोधना। ५ पैमाइश करना, नापना। ६ एकत्र करना, इकट्ठा करना। ७ सच्चा प्रमाणित करना। ८ पक्का करना, ठहराना।

साधनार्ह (सं० त्रि०) साधना करनेके योग्य, साधनीय।

साधनी (हिं० स्त्री०) लोहे या लकड़ीका एक प्रकारका लम्बा औजार जिससे जमीन चौरस करते हैं।

साधनीय (सं० त्रि०) साध-अनीयर। १ साधना करनेके योग्य, साधने लायक। २ जो हो सके, जो साधा जा सके।

साधन्त (सं० पु०) साध (तृभूवहिवसिभासि साधीति। उण् ३।१२८) इति भच, सच चित्। भिक्षुक।

साधयन्ती (सं० स्त्री०) साध-णिच्-शतृ-ङीप्। १ उपासना करनेवाली। (त्रि०) साध-यत्। २ साधनकारी।

साधयितव्य (सं० त्रि०) साधन करनेके योग्य, साधने या सिद्ध करने लायक।

साधयितृ (सं० त्रि०) साध-णिच् तृच्। साधनकर्त्ता, साधन करनेवाला।

साधर्म्य (सं० क्ली०) सधर्मस्य भावः ष्यञ्। समान धर्म होनेका भाव, एकधर्मता, समान धर्मता। परस्पर दो प्रकारकी वस्तुमें यदि एक प्रकार धर्म रहे, तो इन दोनों वस्तुमें परस्पर साधर्म्य है, एक धर्म नहीं रहनेसे वैधर्म्यविशिष्ट जानना होगा।

साधस् (सं० क्ली०) साधक। (ऋक् ८।१०।१२)

साधार (सं० त्रि०) आधारयुक्त, आधारविशिष्ट। पूजामें शङ्ख और त्रिपदिकाके ऊपर जिसमें अर्घ्य दिया जाता है, उसे आधार कहते हैं।

साधारण (सं० त्रि०) १ जिसमें कोई विशेषता न हो, मामूली, सामान्य। २ सदृश, समान, तुल्य। ३ सरल, सहज, आसान। ४ सार्वजनिक, आम। वैदिक पर्याय—स्व, पृश्नि, नाक, गो, विष्टप, नभः ये छः साधारण नाम हैं। (वैदिकनि० १।४) (पु०) ५ नैयायिकोंके मतसे हेत्वाभासविशेष। पांच प्रकारका हेत्वाभास है,—अनैकान्त, विरुद्ध, असिद्ध, प्रतिपक्षित और कालात्ययोपदिष्ट। इनमेंसे अनैकान्त हेत्वाभास साधारण, असाधारण और अनुपसंहारी भेदसे तीन प्रकारका है। हेतु और हेत्वाभास देखो। ६ भावप्रकाशके अनुसार वह प्रदेश जहां जंगल अधिक हों, पानी अधिक हो, रोग अधिक हों और जाड़ा तथा गरमी अधिक पड़ती हो। ७ ऐसे देशका जल।

साधारणगति (सं० स्त्री०) १ विज्ञानके मतसे सचल द्रव्यके उपरिस्थित पदार्थकी गति। २ सामान्य गति।

साधारण गान्धार (सं० क्ली०) एक प्रकारका विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुतिसे आरम्भ होता है। इसमें तीन श्रुतियां होती हैं।

साधारणतः (सं० अव्य०) १ मामूली तौर पर, आम तौर पर, सामान्यतः। २ बहुधा, प्रायः।

साधारणतन्त्र—जहां राजा नहीं होता, सर्वसाधारणके मतानुसार राजकार्य निर्वाह होता है, सर्वसाधारण ही एक प्रतिनिधि निर्वाचन करता है, वही प्रतिनिधि राज्यके सारे कामकी देख रेख करते हैं। जिस देशमें इस प्रणालीसे राज्य-शासित होता है, उसे साधारणतन्त्र कहते हैं।

साधारणता (सं० स्त्री०) साधारण होनेका भाव या धर्म, मामूली-पन।

साधारणदेव—हाल-कविकृत गाथासप्तशतीकी मुक्तावली नामकी टीकाके प्रणेता। ये महादेवके पुत्र और वामनदेवके पौत्र थे।

साधारणदेश (सं० पु०) साधारणो देशः। वह देश जहां जंगल अधिक हों, पानी अधिक हो, रोग अधिक हों और जाड़ा तथा गरमी अधिक पड़ती हो।

साधारण धर्म (सं० पु०) साधारणो धर्मः। चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्म। आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये जीवके साधारण धर्म हैं। ये सब जीवोंके साधारण रूपसे वर्त्तमान हैं।

चारों वर्णोंके वर्णाश्रम विहित जो धर्म है, वह उसी उसी वर्णके साधारण धर्म है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, दम, क्षमा, सरलता और दान ये साधारण धर्म अर्थात् सबोंके अवश्य कर्त्तव्य हैं। जो सबोंके करणीय है, वह साधारण और जो व्यक्तिविशेषके करणीय है, वह विशेष है।

साधारणस्त्री (सं० स्त्री०) वेश्या रंडी।

साधारणी (सं० स्त्री०) साधारणस्येयमिति अण् स्त्रियां ङीष्। १ कुञ्चिका, ताली, चाभी। २ एक अप्सराका नाम।

साधारण्य (सं० क्लो०) साधारणस्येदमिति ष्यञ्। साधारणका भाव या धर्म, साधारणता, मामूलीपन।

साधिक (सं० त्रि०) अधिकेन सह वर्त्तमानः। अधिकयुक्त, ज्यादा।

साधिका (सं० स्त्री०) साधयतीति साध णिच् ण्वुल्, टापि अत इत्वं। १ सुषुप्ति, गहरी नींद। २ साधनकर्त्री, सिद्ध करनेवाली।

"सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥"

(दुर्गापूजाप०)

साधित (सं० त्रि०) साध-णिच्-क्त। १ सिद्ध किया हुआ, जो सिद्ध किया हुआ हो, जो साधा गया हो। २ दण्डित, जिसे किसी प्रकारका दंड दिया गया हो। ३ शुद्ध किया हुआ, शोधित। ४ ऋण-शोधित, जो चुकाया गया हो। ५ विनाशित, जिसका नाश किया गया हो।

साधिदैवत (सं० त्रि०) अधिदेवताके साथ, अधिष्ठाता देवता सहित।

साधिन् (सं० त्रि०) साध णिनि। साधनकारी, सिद्ध करनेवाला।

साधिमन् (सं० पु०) साधु अतिशयार्थे इमनिच्। साधिष्ठ, अतिशय साधु।

साधिवास (सं० त्रि०) अधिवासेन सह वर्त्तमानः। अधिवासयुक्त, अधिवासविशिष्ट।

साधिष्ठ (सं० त्रि०) अयमेषामतिशयेन बाढ़ः (अतिशायने तमबिष्ठनौ। पा ५।३।५०) इति इष्ठन्, (अन्तिकबाढयो र्नेदसाधौ। पा ५।३।६२) इति बाढशब्दस्य साधादेश। १ अतिशय बाढ दृढ़तम। २ न्याय्य। ३ अर्हणीय। ४ विधि। (छान्दोग्य उप० ४।६।३) ५ अतिशय साधु।

साधिष्ठान (सं० क्लो०) देहस्थित छः चक्रोंमेंसे एक चक्र। षट्चक्र देखो।

साधीयस् (सं० त्रि०) १ अतिशय बाढ़। २ अतिशय साधु। ३ अतिभृष्ट।

साधु (सं० पु०) साध (कृवा पाजीति। उण् १।१) इति उण्। १ उत्तम कुलोद्भव। २ जिन। ३ मुनि। ४ सज्जन, धार्मिक। ५ समर्थ, योग्य, उपयुक्त, लायक। ६ निपुण। ७ वार्द्धुषिक, सूदखोर, जो सूदसे अपनी जीविका चलाते हैं। ८ उचित। सज्जन तथा संन्यासियोंको साधारणतः साधु कहते है।

गरुडपुराणमें लिखा है—जो सम्मानसे संतुष्ट और अपमानसे क्रुद्ध नहीं होते और यदि कभी वह क्रुद्ध होते हैं, तो परुष वाक्य मुंहसे नहीं निकालते, वे ही साधु हैं।

साधु सदा आत्मसुखभोगेच्छासे विरत होते हैं और वे सब प्राणियोंके सुखके लिये चेष्टामें रत रहते हैं। ये परायेके दुःखसे कातर होते हैं और तो क्या, दूसरेके दुःखको देख कर अपने सारे सुखको भूल जाते हैं। वृक्ष जैसे स्वयं निदारुण तापको सहन हुए भी दूसरेको निदारुण तापसे बचाता है, साधु भी वैसे ही अपने कष्ट सह कर दूसरेका उपकार किया करते हैं।

महानिर्वाणतन्त्रमें लिखा है, कि जो मनुष्य देवायतनमें वास करते हैं और देवरत, दृढव्रत, सत्यधर्मपरायण तथा सत्यवादी हैं, उन्हींको साधु कहते हैं।

विष्णुपुराणमें लिखा है, कि कलिकाल, स्त्री तथा शूद्र ये साधु कहलाते हैं।

साधु—एक प्राचीन कवि। इन्होंने नाममाला नामक ग्रन्थकी रचना की।

साधुक (सं० पु०) १ कदम्ब वृक्ष, कदम। २ वरुण वृक्ष।

साधुकर्मन् (सं० त्रि०) साधु कर्म यस्य। १ उत्तम कर्मकारी, विशुद्ध काम करनेवाला। (क्ली०) २ उत्तम कर्म, अच्छा काम।

साधुकारी (सं० त्रि०) साधु-कृ-णिनि। उत्तम कर्मकारी, अच्छा काम करनेवाला।

साधुकीर्त्ति—एक जैन कवि। इन्होंने शेषसंग्रहनाममाला नामक एक ग्रन्थकी रचना की।

साधुकृत् (सं० त्रि०) विशुद्धकर्मकारी, अच्छा काम करनेवाला।

साधुकृत्य (सं० क्ली०) साधुओंका कार्य, विशुद्ध कर्म।

साधुचरण (सं० त्रि०) साधु अर्थात् न्यायविषयका अनुष्ठान। (लट्या० ११।१६)

साधुचरित्र (सं० क्ली०) साधूना चरित्रं। साधुओंका चरित्र।

साधुज (सं० त्रि०) उत्तम कुलोद्भव, कुलीन, जिसका जन्म उत्तम कुलमें हुआ हो।

साधुजन (सं० पु०) उत्तम व्यक्ति, साधु मनुष्य।

साधुजात (सं० त्रि०) १ सुन्दर, खूबसूरत। २ उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ।

साधुता (सं० स्त्री०) १ साधु होनेका भाव या धर्म। २ साधुओंका धर्म, साधुओंका आचरण। ३ सज्जनता, भलमनसाहत। ४ भलाई, नेकी। ५ सीधापन, सिधाई।

साधुदत्त—एक प्राचीन वणिक्। (दिग्विजयप्र०)

साधुदर्शी (सं० त्रि०) साधु-दृश-णिनि। साधुद्रष्टा, जो साधु अर्थात् उत्तमरूपसे दर्शन करते हैं।

साधुदायिन् (सं० त्रि०) साधु-दा-णिनि। उत्तम वस्तु दानकारी, अच्छी चीज दान करनेवाला।

साधुदेवी (सं० त्रि०) साधु-देव-णिनि। उत्तमरूपसे क्रीडाकारक, जो जुआ आदि अच्छी तरह खेल सकता है।

साधुधर्म (सं० पु०) जैनोंके अनुसार साधुओंका धर्म, यतिधर्म। यह दश प्रकारका कहा गया है—क्षान्ति, मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, संयम, सत्य, शौच, अकिञ्चन और ब्रह्म।

साधुधी (सं० स्त्री०) साधुधी र्यस्याः। १ श्वश्रू, सास। २ सुन्दर बुद्धि, अच्छी समझ। (त्रि०) ३ सुन्दर बुद्धिविशिष्ट, अच्छी समझवाला।

साधुपुत्र (सं० पु०) १ सत्पुत्र, उत्तम पुत्र। २ बौद्ध यतिभेद।

साधुपुष्प (सं० क्ली०) साधु चारु पुष्पं यस्य। १ स्थलपद्म, स्थल कमल। २ उत्तम कुसुम, बढ़िया फूल।

साधुभवन (सं० पु०) साधुओंके रहनेकी जगह, कुटीर, कुटी।

साधुभाव (सं० पु०) साधुत्व, उत्तम भाव।

साधुमती (सं० स्त्री०) १ बौद्धके मतसे १०वीं पृथ्वीका नाम। २ तान्त्रिकोंकी एक देवीका नाम।

साधुमाला (सं० स्त्री०) उत्तम माला, उपयुक्त परिमाण।

साधुया (सं० अव्य०) साधु, उत्तम। (ऋक् १०।३।५)

साधुरत्न सूरि (सं० पु०) ग्रन्थकारविशेष।

साधुवत् (सं० त्रि०) साधुगुणविशिष्ट, उत्तम गुणवाला।

साधुवाद (सं० पु०) प्रशंसावाद, किसीके कोई उत्तम कार्य करने पर 'साधु साधु' कह कर उसकी प्रशंसा करनेका काम।

साधुवादिन् (सं० त्रि०) १ साधुवादप्रदानकारी, साधु वाद देनेवाला। २ सच्चा या उचित बोलनेवाला।

साधुवाह (सं० पु०) १ विनीताश्व, सुशिक्षित अश्व, सिखाया हुआ घोड़ा। २ उत्तम वाहन, अच्छी सवारी।

साधुवाहिन् (सं० पु०) साधु उत्तमं, वहन्नीति वह-णिनि। १ शोभनवहनशील घोटक, भलीभांति सिखाया हुआ घोड़ा। (त्रि०) २ सुन्दर घोटकविशिष्ट जिसके पास अच्छे घोड़े हों। ३ साधु वहनशील, अच्छी तरह जो ढो सकता हो।

साधुवृक्ष (सं० पु०) १ कदम्ब वृक्ष, कदमका पेड़। २ वरुण वृक्ष।

साधुवृत्त (सं० त्रि०) सत्स्वभावविशिष्ट, उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला।

साधुवृत्ति (सं० स्त्री०) १ उत्तम जीविका, बढ़िया पेशा। २ सद्विवरण। ३ सुन्दर वर्णन।

साधुशील (सं० त्रि०) साधुशीलं यस्य। सच्चरित्र, उत्तम चाल चलन।

साधु साधु (सं० अव्य०, एक पद जिसका व्यवहार किसीके बहुत उत्तम कार्य करने पर किया जाता है, धन्य धन्य, वाह वाह, बहुत खूब।

साधुसुन्दरगणि--शब्दरत्नाकरके रचयिता। ये साधुकीर्त्ति उपाध्यायके शिष्य थे। इनका नाम वाचनाचार्य था।

साधुसेन--पर्व्वणि प्रदेशके एक प्राचीन राजा।

साधून (सं० क्ली०) १ मयूरसमूह। २ पण्यवीथी। ३ आतपत्र।

साधू (हिं० पु०) १ धार्मिक पुरुष, साधु, सन्त। २ सज्जन, भला आदमी। ३ सीधा आदमी, भोला भाला।

साधो (हिं० पु०) धार्मिक पुरुष, सन्त, साधु।

साध्य (सं० पु) साध्यमनेनस्येति अर्श आदित्वादच्। १ गणदेवताविशेष। इसकी संख्या १२ है। इनके नाम इस तरह हैं—मनः, मन्ता, प्राण, नर, अपान, वीर्यवान्, विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष और प्रभुश्च, यह द्वादश साध्यगण हैं। (अग्निपुराण)

शारदीय दुर्गापूजा के समय साध्यगणकी पूजा करनी होती है। (दुर्गापूजाप०) २ देव। ३ विष्कम्भ आदि २७ योगोंमें २१वां योग। ज्योतिषके अनुसार यह योग शुभयोगके नामसे प्रसिद्ध है। इस योगमें जो कोई काम किया जाये, वह सिद्ध होता है। इस योगमें जो लड़का जन्म ग्रहण करता है, वह असाध्य साधन करता है। फिर वह शूर, अत्यन्त धीर, शत्रुविजयकारी, बुद्धिपूर्वक उपाय द्वारा कार्यसाधनकारी और विनीत होता है। (कोष्ठीप्रदीप)

४ मन्त्रविशेष। गुरुसे तन्त्रोक्त यह मन्त्र ग्रहण किया जाता है। यह मन्त्र चार प्रकारका होता है—सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और अरि। इन चारों मन्त्रोंमें सिद्धादि तीन मन्त्र ग्रहणीय हैं। इनमें साध्य मन्त्र यथाविधान ग्रहण कर जप और होमादिका अनुष्ठान करने पर शीघ्र ही सिद्ध होता है। कौन मन्त्र सिद्ध है, इसका निश्चय करनेके लिये मन्त्रके अक्षर और नामके अक्षर चार कोठोंमें लिखो। इसके बाद प्रथम नामक अक्षरसे सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और अरि, इस तरह स्थिर करना होगा। गुरु मन्त्रविचारके समय यह सब विचार करें।

(त्रि०) ५ साधनीय, साधनयोग्य, निष्पाद्य। ६ शक्य। ७ ज्ञेय। ८ प्रतिविधेय, प्रतिकारयोग्य। ९ निवर्त्तनीय। १० प्रतिपाद्य, साधनार्हाभिमत। इसका दूसरा नाम पक्ष है।

११ अनुमितिविशेष, साध्यताावच्छेदक। जिसकी अनुमिति हो, वही साध्य, हेतु, साध्य, पक्ष है। हेतु द्वारा पक्षमें साध्यका अनुमान होता है। 'पर्वतो वह्निमान् धूमात्' यहां पर्वत पक्ष, वह्नि साध्य और धूम हेतु, धूम—इस हेतुके देखनेसे पर्वतरूप पक्षमें साध्य वह्निका अनुमान हुआ। हेतु, साध्य और पक्षका विषय नव्यन्यायके अनुमान खण्डमें विशेषरूपसे आलोचित हुआ है। न्यायदर्शन और प्रमाण देखो।

साध्यता (सं० स्त्री०) साध्यका भाव या धर्म, साध्यत्व।

साध्यतावच्छेदक (सं० क्ली०) अनुमितिविधेयांशभासमानधर्म, साध्यनिष्ठ धर्मका विशेष कारक।

इस शब्दका व्यवहार नैयायिकोंको भाषामें ही होता है। अवच्छिन्न अवच्छेदकता आदि शब्द अच्छी तरह न समझ सकनेसे इसका अर्थ स्पष्टरूपमें नहीं जाना जा सकता। साध्यका धर्म साध्यता है, साध्य जिस सम्बन्धसे साध्य होता है, वही सम्बन्ध साध्यतावच्छेदक धर्म है। साध्यअंशमें प्रतीयमान धर्म अर्थात् जिस प्रकार साध्य होता है, वैसे धर्मका नाम साध्यतावच्छेदक धर्म है, क्योंकि यह सम्बन्ध या धर्म साध्यताका अवच्छेद है अर्थात् परिचय या नियमन करता है। संयोग और समवाय सम्बन्धमें साध्यता एक नहीं है, भिन्न भिन्न है। क्योंकि एक साध्यताका अवच्छेद होता है, उसीको साध्यतावच्छेदक कहते हैं।

साध्यवत् (सं० त्रि०) साध्य-अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। साध्यविशिष्ट, साध्ययुक्त।

साध्यवसाना (सं० स्त्री०) लक्षणाशक्तिभेद।

साध्यवसानिका (सं० स्त्री०) लक्षणाशक्तिविशेष। स्व-शब्द द्वारा अनुक्त जो विषय उसके अन्य शब्द द्वारा आरोप होनेसे यह लक्षणा होती है। लक्षणा शब्द देखो।

साध्यसम (सं० पु०) हेत्वाभासविशेष। इसका लक्षण न्यायदर्शनमें इस तरह लिखा है जो हेतु साध्यको तरह साधनीय है, उसका नाम साध्यसम है। मीमांसकोंने छाया या अन्धकारको द्रव्य पदार्थ प्रमाणित किया है। किन्तु नैयायिक इसे नहीं मानते। वे कहते हैं, यह द्रव्य पदार्थ नहीं। केवल आलोक या तेजका अभाव है। मीमांसक कहते हैं, कि क्रिया द्रव्यका साधारण लक्षण है। नैयायिक भी इसे मानते हैं। इसमें मतविरोध नहीं है। इस छायामें भी गतिक्रिया है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति आलोककी ओर गमन करे, तो साथ साथ उसकी पश्चाद्वर्त्ती छाया भी गमन करती है। सुतरां यह गतिमत्त्वहेतु द्वारा मीमांसक छायाका द्रव्यत्व प्रतिपादन करते हैं। किन्तु नैयायिक छायाकी गतिको स्वीकार नहीं करते। सुतरां छायाके द्रव्यत्वकी तरह उसके गतिमत्त्वरूपहेतुका भी साधन करना पड़ता है। इससे यह हेतु साध्यसम निर्दिष्ट हुआ है।

नैयायिकोंका कहना है, कि पुरुषकी तरह वस्तुगति-के अनुसार छायाकी गति है, किन्तु स्वभावतः छायाकी गति नहीं है। इसलिए गतिका भ्रम होता है। इसमें विवेचना करनी होगा, कि छाया कौन पदार्थ है, गमन-शील पुरुष आलोकका आवरक है, इससे उसके पीछे छाया आती है। यहां आलोक (प्रकाश) की असन्निधि या अभाव है, यह अविसंवादी है अर्थात् इस विषयमें और किसीका मतभेद हो नहीं सकता। पुरुष क्रमसे अग्रसर होता है, इससे आलोककी असन्निधि या अभाव उत्तरोत्तर अग्रस्थानमें उपलब्धि होती है। इसीलिये पुरुषकी तरह छाया भी क्रमसे अग्रसर हो रही है, ऐसा भ्रम होता है। अतः छायाकी गति नहीं; सुतरां छाया द्रव्य पदार्थ नहीं। यह आलोककी असन्निधिमात्र है। अतएव छायाका जो गतिमत्त्वहेतु है, वह साध्यसम है। जहां हेतु इस तरह साध्यकी तरह प्रतीयमान होता है, वहां साध्यसम हेतु होता है। इस हेतुका दूसरा नाम असिद्ध है। कणादने इसीको ही अप्रसिद्ध कहा है। भाषापरिच्छेदमें भी यह असिद्ध नामसे अभिहित हुआ है। (न्यायद०) हेत्वाभास शब्द देखो।

साध्याभाव (सं० पु०) साध्यस्य अभावः। साध्यका अभाव, जिस तरह साध्य होता है उसी तरह साध्यका अभाव। नव्य नैयायिकोंकी भाषामें जब इस शब्दका अर्थ किया जाये, तब कहना होगा, कि साध्यतावच्छेदक-सम्बन्धावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकधर्मावच्छिन्न-प्रति-योगितानिरूपक अभाव ही साध्याभाव शब्दका अर्थ है।

साधारण व्यक्ति इसका अर्थ नहीं समझ सकता। किन्तु नैयायिकोंने इसमें कितनी और कैसी बुद्धि चलाई है, जिस पर विचार करनेसे विस्मित होना पड़ता है। नैयायिकोंकी भाषामें किञ्चित् अधिकार न होनेसे यह परिस्फुट रूपसे मालूम नहीं होता। फिर भी, यह विषय बोध्य करनेकी चेष्टा की गई। साध्यके धर्मका साध्यता कहते हैं। साध्य जिस सम्बन्धसे साधित होता है, वही साध्यतावच्छेदक धर्म है। क्योंकि यह सम्बन्ध या धर्म साध्यताका अवच्छेद अर्थात् परिचय या नियमन करता है। संयोग सम्बन्धमें वह्निकी साध्यता और समवायसम्बन्धमें वह्निकी साध्यता एक नहीं, भिन्न भिन्न है। कारण, एक साध्यताका नियामक या परि-चायक सम्बन्ध संयोग है, दूसरी साध्यताका नियामक या परिचायक सम्बन्ध समवाय है। इस तरह वह्निगत-साध्यता एवं घटगतसाध्यता परस्पर भिन्न हैं, क्योंकि वह्निगतसाध्यताकी नियामक या परिचायक धर्म वह्नित्व और घटगत साध्यताका नियामक धर्म घटत्व है। अवच्छेद सम्बन्ध और धर्म जिसका अवच्छेद करता है, उसको अवच्छिन्न कहते हैं। साध्यताके जैसे अवच्छेदक सम्बन्ध या धर्म है, वैसे ही प्रतियो-गिताके भी अवच्छेदक, सम्बन्ध और धर्म है। समवाय सम्बन्धमें वह्निके अभावकी प्रतियोगिताका नाम समवाय सम्बन्धावच्छिन्न है, अतएव साध्यतावच्छेदक जो संयोग सम्बन्ध तदवच्छिन्न नहीं। महानसीय वह्निके अभावकी प्रतियोगिता महानसीय वह्नित्वावच्छिन्न है, साध्यतावच्छेदक धर्म शुद्ध वह्नित्व तदवच्छिन्न नहीं।

अतएव पर्वतमें उक्त दो तरहके अभाव रहने पर भी धूममें वह्निकी व्याप्तिको कोई क्षति नहीं होती।

नैयायिकोंकी भाषामें साध्याभाव कहनेसे इसी तरह के अर्थकी प्रतीति होती है। व्याप्तिके लक्षणमें साध्या-भाववद्वृत्तित्व ही व्याप्ति है। इस व्याप्तिका लक्षण करने पर प्रत्येक शब्दको अवच्छिन्न अवच्छेदकता कर अति दुर्बोध्य हो जाती है। विषय बढ़ जानेके भयसे अधिक आलोचना न की गई।

साभ्र (सं० क्ली०) सामभेद। (पञ्चविंश० १५।५।२८)

साभ्यर्य्य (सं० त्रि०) अतिशय अनुरक्त, विश्वस्त।

साध्वस (सं० क्ली०) साधु-अस-अच्। १ भय, त्रास, डर। २ प्रतिभा। ३ व्याकुलता, घबराहट। ४ भणिकाङ्गविशेष। (साहित्यद० ६।५५६)

साध्वाचार (सं० पु०) साधूनामाचारः। १ साधुओं का-सा आचार। २ शिष्टाचार। (त्रि०) ३ साधुओं-का आचारविशिष्ट, उत्तम आचरणवाला।

साध्वी (सं० स्त्री०) साधु-ङीप्। १ पतिव्रता स्त्री। जो स्त्री स्वामीके दुःखित होने पर दुःखित, हृष्ट होने पर आनन्दित, प्रोषित अर्थात् विदेश जाने पर मलिन और कृश तथा स्वामीकी मृत्यु पर अनुमृता होती है, उसीको साध्वी कहते हैं। साध्वी स्त्री केवल पतिसेवा द्वारा ही इहकालमें सुख और परकालमें स्वर्गलाभ करती है। बिना स्वामीकी अनुमतिके उनके लिये कोई पृथक् यज्ञ व्रत उपवासादि कुछ भी नहीं है। यदि किसी व्रतादि-का अनुष्ठान करना हो, तो स्वामीकी अनुमति ले कर करे। स्वाधीनभावमें किसी कर्मका उन्हें अधिकार नहीं है। साध्वी स्त्रीको चाहिये, कि स्वामी जीवित रहें या नहीं, पतिलोककामी हो कर कभी उसका अप्रिया-चरण न करें। पतिके मरने पर पतिको छोड़के वे पर पुरुषका नामोच्चारण नहीं कर सकतीं। जब तक अपना मरण न हो, तब तक वे क्लेशसहिष्णु और नियमचारी हो कर मधु, मांस, मैथुनादि वर्जनकर ब्रह्मचर्यका अव-लम्बन करें। साध्वी स्त्री चाहे जिस अवस्थामें क्यों न रहें, सर्वदा प्रहृष्ट मनसे अपना समय बितावें। उन्हें गृहकर्ममें दक्ष तथा गृहसामग्रियोंको परिष्कृत और परि-च्छिन्न रखना तथा व्ययविषयमें सदा असुक्त हस्त होना उचित है। पिता या पिताकी अनुमतिके अनुसार भ्राता-ने जिसे दान कर दिया है, उस स्वामीके जीवितकाल पर्य्यन्त उसकी सुश्रूषा तथा उसकी मृत्युके बाद व्यभि-चारादि द्वारा उसका उल्लङ्घन न करना साध्वी स्त्रीका अवश्य कर्त्तव्य है। स्वामिपरतन्त्रता ही उनका एकमात्र कर्म है। (मनु० ५ अ०)

२ दुग्धपाषाण। ३ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। (त्रि०) ४ शुद्ध चरित्रवाली, सच्चरित्रा।

साध्वीक (सं० त्रि०) अतिशय साध्वी।

सान (हिं० पु०) वह पत्थरकी चक्की जिस पर अस्त्रादि तेज किये जाते हैं, शाण, कुरंड।

सानना (हिं० क्रि०) १ दो वस्तुओंको आपसमें मिलाना, गूंधना। २ सम्मिलित करना, शामिल करना। ३ मिलाना, लपेटना।

सानत्कुमार (सं० त्रि०) सनत्कुमारसम्बन्धीय, सनत्-कुमारप्रोक्त उपकरण।

सानत्सुजात (सं० त्रि०) जिसमें सनत्सुजातका उपा-ख्यान हो।

सानन्द (सं० पु०) आनन्देन सह वर्त्तते इति। १ सङ्गीत मतसे १६ ध्रुवकोंके अन्तर्गत ध्रुवकभेद। (सङ्गीतदामोदर) वीररस और कहरसंश्रुत्तान अष्टादश अक्षर द्वारा युक्त, यश और हर्षप्रदानकारी ध्रुवकको सानन्द कहते हैं। २ गुच्छकरञ्ज। ३ सम्प्रज्ञातसमाधि विशेष। सवितर्क, सविचार, सानन्द और सास्मित भेदसे चार प्रकारकी समाधि है। आनन्द शब्दका अर्थ आह्लाद है। इन्द्रियोंके अहङ्कारसे उत्पन्न इन्द्रिया ही आनन्द नामसे अभिहित होती हैं। इन इन्द्रियोंका अवलम्बन कर चित्तवृत्ति धारारूपसे जो समाधि होती है, वही सानन्द समाधि है। इस समाधिके हो जाने पर यह न समझना चाहिये, कि समाधिका अन्त हो गया। इस समाधिमें सन्तुष्ट रहो, पीछे उसकी पुन-रुत्पत्ति होती है।

समाधि शब्दमें इसका विशेष विवरण देखो।

(त्रि०) ४ आह्लादयुक्त, आनन्दविशिष्ट, आनन्दके साथ।

सानन्दनी (सं० स्त्री०) नदीभेद।

सानन्दमिश्र—वृत्तरत्नावलीकी वृत्तमुक्तावलीटीका नामक ग्रन्थके प्रणेता।

सानन्दमुनि—एक जैन साधु।

सानन्दूर (सं० पु०) एक तीर्थका नाम। वराहपुराणमें सानन्दूरतीर्थमाहात्म्य नामक अध्यायमें इस तीर्थका विशेष विवरण लिखा है। मलयके दक्षिणमें और समुद्रके उत्तर यह तीर्थ अवस्थित है। यह तीर्थ न उतना ऊंचा और न उतना नीचा एक प्रतिमा है। यह प्रतिमा अतिशय आश्चर्याविशिष्ट है। कोई इसको कांसेकी, कोई लोहेकी, कोई पत्थरकी मूर्त्ति कहते हैं। यहां मध्याह्नकालमें सुवर्णमय पद्म (कमल) दिखाई देता है। यहां उत्पन्न पुण्यप्रद ब्रह्मसर नामका एक सरोवर है। इस सरोवरकी एक आश्चर्यजनक बात यह दिखाई देती है, कि मध्याह्नके समय इस सरोवरको धारा पतित होते देखी जाती है। किन्तु सायाह्नकाल उपस्थित होने पर यह धारा दिखाई नहीं देती। इस तीर्थसरोवरमें स्नान, तर्पण और दान विशेष पुण्यजनक है। जो यहां स्नान कर उक्त प्रतिमाकी पूजा करते हैं, वह इस संसारमें नाना सुख सम्भोग कर अन्तमें ब्रह्मलोकमें गमन करते हैं। (वराहपुराण सानन्दूरमाहात्म्यनामाध्याय)

सानसि (सं० पु०) सन्यते दीयते दक्षिणोयर्थमिति षणु दाने (सानसि वर्णसोति। उण् ४।१०७) इति असि प्रत्ययेन साधु। १ स्वर्ण, सोना। (त्रि०) २ सम्भजनीय।

सानसिया—चौरवृत्तिजीवी अन्त्यज जातिविशेष। मनुसंहितामें श्वपाक नामक जिस नगरबाह्य जातिका उल्लेख दिखाई देता है, बहुतेरोंका अनुमान है, कि यह सानसिया जाति उस श्वपाक नामकी जातिको ही क्षीणसूत्र है। ये भ्रमणशील हैं, ये कभी एक जगह बस्ती कर नहीं रहते। मुर्देका कफन इनका परिधेय है और इनका आहार भी बड़ा कदर्य है। आचार-व्यवहारमें ये डोम, कञ्जर, बेरिया, हाबुरा और भातू नामकी जातिके समान दिखाई देते हैं।

यह जाति समाजमें अनार्य और हेय समझी जाने पर भी इनकी कोई कोई शाखा अपनेको भाट जातिका एक दल कहती है। किन्तु भाट किसी तरहका अपना सम्बन्ध इनसे नहीं बताते। दूसरे एक उपाख्यानसे पता चलता है, कि राजपूत जातिकी अग्निकुलोत्पत्ति कहानीके साथ साथ इस जातिकी उत्पत्ति हुई। प्रवाद है, कि चौहान राजपूतोंने स्वयं उत्पन्न होने पर अपने गुणका कीर्त्तन करनेवाली इस सानसिया जातिको उत्पन्न किया। इस जातिके आदि पुरुषका नाम संसमल्ल या माहसमाल था।

आश्चर्यका विषय है, कि यह जाति समाजमें अति निन्दनीय होने पर भी किसी किसी जगह ये जाट अथवा चौहान राजपूतोंके वंशशाखा-कीर्त्तनकारी भाटोंके स्थलाभिषिक्त हैं। इस भाट सानसिया जातिके लोगोंके बहुतेरे भरतपुरको अपनी आदिभूमि बताते हैं और कहते हैं, कि हम लोग बहुत प्राचीनकालसे भरतपुरके राजवंशका चरित कीर्त्तनकारी हैं। पञ्जाबके होशियारपुर जिलेमें आज भी इस भाट श्रेणीके सानसिया जाटोंसे वृत्ति पाते हैं। वहां प्रायः प्रत्येक जाट परिवारके लिये एक सांसी वंशकीर्त्तिमें नियुक्त है। मालव और माझा नामके स्थानवासी जाटोंकी धारणा है, कि वंशके इतिहास-कीर्त्तन करनेमें मिरासियोंकी अपेक्षा ये सांसी ही अधिक पटु हैं। विवाहके समय सांसी आ कर वर और कन्या पक्षको वंशगाथाका कीर्त्तन करते हैं। इसीलिये उनको कुछ वृत्ति निर्द्धारित कर दी गई है। यदि उनको यह वृत्ति न दी जाये, तो ये लोग वर या कन्याकर्त्ताके खेतोंमें खड़ी जला कर इसका बदला चुकाते हैं। सानसिया जातिका यह भाटवृत्त देख कर मालूम होता है, कि ये किसी समय उच्च वर्णके थे। आचार और संसर्गदोषसे क्रमशः यह हीन दशामें परिणत हुई है। ये अपने दलमें विवाह नहीं करते, किन्तु एक दल दूसरे दलकी कन्या-को ले सकता है। पितासे बड़े चाचा या छोटे चाचाके वंशके पुत्र या कन्याके साथ विवाह नहीं होता। किन्तु कहां कहीं उल्लिखित परिवारमें प्रथम सम्बन्धके तीन पुरुष छोड़ कर विवाह सम्बन्ध किया जा सकता है। ये प्रायः ही एक ग्राममें विवाह करते हैं। किन्तु दूसरे ग्रामसे कन्या अपहरण कर विवाह करना ये बहुत पसन्द करते हैं।

वन वनमें घूमनेवाले सानसिया जातिवाले अपनी शवदेहको जङ्गलमें फेंक देते हैं। किन्तु बहुतेरे जो ग्राममें

रहते हैं, कब्र देते हैं। इनकी कब्र खोदने और गाड़नेकी क्रिया मुसलमानोंकी तरह है, किन्तु शवानुगमन नहीं करते। चार आदमी एक चारपाई पर मृतकको सुला कर कब्र स्थानमें ले जाते और कब्रमें पूर्व पश्चिम लम्बे भावसे सुला कर ऊपरसे मिट्टी डाल देते हैं। शिर पश्चिमकी ओर रखते हैं। अन्त्येष्टिक्रिया समाप्त होने पर घर लौट आते हैं। मृताशौचधारी चार दिनों तक अकेला निवास करता है और स्वपाकी रहता है। भोजनके पहले प्रति दिन मृतकको प्रेतात्माके उद्देश्यसे एक सकोरेखण्ड गृहप्राङ्गणमें रख कर तब वह भोजन करता है। चौथे दिन श्राद्धोपलक्षमें स्वजातियोंको भोज देते हैं। बीस या चौबीस दिनों पर कनफटोंको भोजन कराया जाता है।

ये एक ईश्वरको भगवान्, परमेश्वर या नारायण कहके पुकारते हैं। आर्त्त और विपद्ग्रस्त व्यक्ति देवी कालिकाकी पूजा करते हैं। प्रीतिके लिये कभी कभी ये कुमारीभोजन भी कराते हैं। जलेश्वर और अमरोहके मियाँ साहबके प्रति ये भक्ति रखते हैं। चौर्यवृत्ति ही इनकी प्रधान उपजीविका है।

सानाथ्य (सं० क्ली०) सनाथ भावे ष्यञ्। सनाथका भाव, नाथयुक्तता।

सानि—मुसलमान फकीरसम्प्रदायविशेष। ये लोग सानाइ या साइन, साई नामसे परिचित हैं। पञ्जाब प्रदेशमें सिख सम्प्रदायके मध्य गुलाबदासी या साई नामक एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय है। ये लोग ईश्वरकी सत्ता स्वीकार नहीं करते। आत्माकी निरन्तर तृप्तिसाधन और भोगसुख ही इनका मूल मत है। ये लोग मद्यपान, स्त्री-सहवास और अन्यान्य दैहिक सुखभोगमें दिन बिताते हैं। व्यभिचार और अन्यान्य कुक्रिया यदि सुखजनक हो, तो वह कार्य करनेसे ये लोग बाज नहीं आते। इस नामसे पुकारे जानेवाले मुसलमान सम्प्रदायके साथ इनका कोई सामञ्जस्य या सम्पर्क नहीं है। दोनों सम्प्रदाय आचार व्यवहारमें सम्पूर्ण पृथक् हैं।

सानिका (सं० स्त्री०) सनति सुस्वरमिति षणु दाने ण्वुल्, टापि अत इत्वं। वंशी मुरली।

साना (हिं० स्त्री०) १ वह भोजन जो पानीमें सान कर पशुओंको खिलाया जाता है। नाँदमें भूसा भिगो देते हैं और उसमें खली, दाना, नमक आदि छोड़ कर उसे पशुओंको खिलाते हैं। इसीको साना कहते हैं। २ अनुचित रीतिसे एकमें मिलाए हुए कई प्रकारके खाद्य-पदार्थ। ३ गाड़ीके पहियेमें लगानेकी गिट्टक। ४ सनई देखो।

सानी (अ० वि०) १ द्वितीय, दूसरा। २ समानता रखनेवाला, बराबरीका।

सानु (स० पु० क्ली०) सन-संवायां (दसनि जनीति। उण् ११३) इति ञुण्। १ पर्वतसम भूभाग, गिरितट। २ वन, जङ्गल। ३ शिखर, पर्वतकी चोटी। ४ अन्त, सिरा। ५ समतल भूमि, चौरस जमीन। ६ मार्ग, रास्ता। ७ पल्लव, पत्ता। ८ सूर्य। ९ कोविद, पण्डित।

सानुक (सं० त्रि०) १ समुच्छ्रित, बहुत ऊँचा। सानु-स्वार्थे कन्। २ सानु देखो।

सानुज (सं० क्ली०) सानौ जायते इति जन ड। १ प्रपौण्डरीक, पुंडेरी। (पु०) २ तुम्बुरु नामक वृक्ष। (त्रि०) ३ अनुजके साथ वर्त्तमान, अनुजविशिष्ट।

सानुनासिक (सं० त्रि०) अनुनासिक वर्णके साथ वर्त्तमान। व्याकरणके मतसे ङ, ञ, ण, न, म ये सब वर्ण अनुनासिक हैं, इन वर्णोंके साथ जो वर्ण रहता है, उसे सानुनासिक कहते हैं।

सानुनासिक्य (सं० त्रि०) सानुनासिकवर्णविशिष्ट।

सानुप्रस्थ (सं० पु०) वानरभेद। (रामा० ५।१।३६)

सानुप्रास (सं० त्रि०) अनुप्रासेन सह वर्त्तमानः। अनुप्रास अलङ्कारके साथ वर्त्तमान, जिसमें अनुप्रास अलङ्कार हो। अनुप्रास देखो।

सानुप्रासक (सं० पु०) पुण्डरीक वृक्ष, पुंडेरी। (वैद्यकनि०)

सानुरुह (सं० त्रि०) पर्वतसानुदेशस्थित, जो चोटी पर हो। (रामा० ३।७६।४४)

सानुषक् (सं० अव्य०) सानुषङ्ग, सातत्य।

सानुष्टि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सानेयिका (सं० स्त्री०) सानेयी स्वार्थे-कन्। वंशीभेद, एक प्रकारकी मुरली।

सानेयी (सं० त्रि०) वंशी, मुरली।

सान्ततिक (सं० त्रि०) सन्ततिसम्बन्धीय।

सान्तपन (सं० क्लो०) सन्तपतीति सम्-तप-ल्युट् ततः स्वार्थे अण्। १ व्रतविशेष, कृच्छ्रसाध्य व्रत। पापक्षयके लिये यह व्रत किया जाता है। सान्तपन और महासान्तपनके भेदसे यह दो प्रकारका है। एक दिन गोमूत्र, गोमय, दुग्ध, दधि, घृत और कुशोदक, इन्हें एक साथ मिला भोजन कर रहे। दूसरे दिन निरम्बु उपवास करना होता है, ऐसे आचरणको कृच्छ्रसान्तपन कहते हैं।

यदि इन सब द्रव्योंको एकत्र न कर पृथक् पृथक् भावमें भोजन किया जाय अर्थात् प्रथम दिन केवल गोमूत्र, द्वितीय दिन गोमय, तृतीय दिन दुग्ध, चतुर्थ दिन दधि, पञ्चम दिन घृत और षष्ठ दिन कुशोदक पान कर रहे, और कुछ भी भोजन न करे, सप्तम दिन निरम्बु उपवास, ऐसा करनेसे उसे महासान्तपन कहते हैं।

२ ऋषिभेद। (त्रि०) ३ संतापक। ४ सूर्य सम्बंधी।

सान्तपनकृच्छ्र (सं० पु०) सान्तपन देखो।

सान्तपनायन (सं० पु०) सान्तपनके गोत्रापत्य।

सान्तपनीय (सं० त्रि०) मरुत्-सान्तपनसम्बन्धीय।

सान्तर (सं० त्रि०) अन्तरेण सह वर्त्तमानः। १ विरल, व्यवधानविशिष्ट, जिसमें फासला हो। २ सावकाश। ३ सछिद्र, गर्त्तयुक्त।

सान्तरता (सं० स्त्री०) सान्तरका भाव या धर्म। जिन सब गुणोंके रहने पर जड वस्तुके परमाणुओंमें कुछ कुछ अवकाश या अन्तर रहता है, उसे सान्तरता कहते हैं।

सान्तरप्लुत (सं० क्लो०) प्लुत गतिविशेष। लङ्घ अर्थात् कूदनेके बाद जो अन्तर गति होती है, उसका नाम सान्तरप्लुत है।

सान्तान (सं० त्रि०) सन्तान-अण्। १ सन्तानसम्बन्धीय। २ पारिजातमाल्यसम्बन्धीय।

सान्तानिक (सं० त्रि०) १ सन्तानजन्य, अपत्यके लिये। (मनु ११।१) २ सन्तान सम्बन्धीय।

सान्तापक (सं० त्रि०) सन्ताप (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः। पा ५।१।१०१) इति ठञ्। सन्तापदायक, कष्ट देनेवाला।

सान्तापिल्ली—मन्द्राजप्रदेशके विजागा-पाटम् जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह कोनन्दपैण्टप पाञ्च माल उत्तर अक्षा० १८° २′ ३०″ उ० तथा देशा० ८३° ४८′ ०″ पू०के मध्य विस्तृत है। यहां एक बड़े पहाड़के ऊपर एक लाइट हाउस या रोशनीका घर है। विमलीपत्तन बन्दरमें घुसनेवाले जहाजोंका समुद्रगर्भस्थ पर्वतसे सतर्क रखनेके लिये यह १८४७ ई०में स्थापित हुआ था। समुद्रगर्भमें १४ मीलकी दूरीसे इसकी रोशनी दिखाई देती है।

सान्ताल—भारतवर्षकी एक आदिम अनार्य जाति। बङ्गलसे पश्चिम, सन्ताल परगना, भागलपुर और कुछ कुछ उड़ीसेमें इस जातिका वास है। साउंताल नाम सांउतार शब्दका अपभ्रंश है। सन्ताल बहुपुरुष पहले मेदिनीपुरके अन्तर्गत साउंत नामक स्थानमें वास करते थे। इस साउंत नामसे ही साउंताल या सन्ताल नामकी उत्पत्ति हुई है। कहा गया है, कि यहां आनेके पहले ये खारवार नामसे परिचित थे। इस समय भी सन्तालोंमें होड़ नाम प्रचलित है। किन्तु कर्नल डालटन साहबके मतसे सांउताल नामसे मेदिनीपुरके साउंत ग्रामका नामकरण हुआ है। क्योंकि उड़ीसेके सागुता और केउंझड़ प्रदेशमें साउंत नामकी एक छोटी जाति वास करती है। इसलिये इसका निर्णय करना कठिन है कि साउंत ग्राम नामसे सन्ताल जातिका नामकरण हुआ है या साउंत जाति पहले उस ग्राममें वास करती थी, इससे उस ग्रामका नाम सांउत हुआ। किसी सन्तालसे पूछा जाये, कि वह किस जातिका है, तो वह तुरंत उत्तर देगा, कि मैं माझी हूं (अर्थात् ग्रामका प्रधान) या सन्ताल माझी।

यूरोपीय जाति तत्त्वविदोंने सन्तालोंके शारीरिक विशेषत्वका लक्ष्य कर इनका द्राविड़ीयवंशसम्भूत स्थिर किया है। इनमें कुछ श्यामवर्णके हैं, फिर इनमें भी अङ्गारवत् घोर कृष्णवर्णके हैं। नाकका अग्रभाग हब्शियोंकी तरह मोटा है, हिन्दुओंकी तरह इनकी नाक उन्नत नहीं। मुख बड़ा और दोनों होंठ मोटे हैं। नीचेका होंठ सामनेकी ओर अधिक लटका हुआ होता है।

सन्ताल विभिन्न श्रेणियोंमें बंटे हुए हैं। हासदाक, मुरमु, किसकु, हेम, मोल, मरान्दि, सोरेन, टुडु ये सात

आदिपुरुष पिलचुरम और पिलचुबूढ़ि के सात पुत्रोंके वंशधर हैं।

उक्त सम्प्रदायोंमें परस्पर विवाहप्रथा प्रचलित है। ये सम्प्रदाय फिर भिन्न भिन्न दलोंमें विभक्त हैं। एक सम्प्रदायका व्यक्ति अपने सम्प्रदायमें विवाह नहीं कर सकता। उनका अन्य सम्प्रदायमें विवाह होता है। किन्तु वे मातृकुलमें भी विवाह कर सकते हैं। भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंमें विवाहकालमें बहुतेरे अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं।

रमणियां पूर्ण यौवन प्राप्त होने पर अपने मनके मुताबिक अपने पति निर्वाचित कर लेती हैं। अविवाहित बालिका किसी युवकके सहवाससे गर्भवती हो जाये, तो वह युवक उसकी प्रणयिनीसे विवाह करने पर बाध्य होगा। यदि वह इस विवाहप्रस्तावको अस्वीकार कर दे, तो ग्रामके प्रधान तथा मण्डल उसको पीटते हैं और उसके पिता पर जुर्माना ठोक देते हैं। सन्ताल-विद्रोहके बाद (१८५५ ई०में) धनी सन्तालोंने हिन्दुओं-की तरह ८।९ वर्षकी बालिकाका विवाह कर देनेकी प्रथा चलाई। किंतु यह प्रथा अधिक दिनों तक टिक न सकी। आज कल पूर्ण वयस्क अर्थात् युवती न होनेसे प्रायः ही बालिकाओंका विवाह नहीं होता। सन्तालोंमें बहुविवाहकी प्रथा नहीं है। किंतु पत्नीके बन्ध्या होने पर उसकी आज्ञा ले कर पुरुष अपना दूसरा विवाह कर सकता है। इसी तरह प्रथमा पत्नीके वर्त्तमान रहते हुए भी देवर अपनी विधवा भ्रातृजायासे विवाह कर सकता है। किसी समय सन्ताल स्त्रियोंमें बहुपति ग्रहण-की प्रथा भी प्रचलित थी। आज भी कनिष्ठ (छोटा) भाई अपनी ज्येष्ठ भ्रातृवधू अर्थात् भौजाईका उपभोग करता है, किंतु प्रकाश्यरूपसे यह कार्य इन लोगोंमें भी निन्दनीय माना जाता है। फिर विवाहिता स्त्री अपनी इच्छासे अपनी कनिष्ठा बहनसे अपने स्वामीके साथ सहवास करा देती है, इस सहवाससे यदि उसकी बहनको गर्भ रह जाये, तो युवक उससे भी विवाह कर लोक-लज्जा निवारण करता है।

पिता पुत्रके विवाहके लिये कन्या खोजनेके हेतु एक 'अगुआ' नियुक्त करता है। कन्याके पिताके विवाह सम्बन्ध स्वीकार कर लेने पर कन्या अपनी दो सहचरियों-के साथ जगमाँझी अर्थात् ग्राममें प्रधान पुरोहितके घर जाती है। वहां उसके भावी पतिका पिता कन्याको देखता है। जब उसको कन्या पसन्द हो जाती है, तब कन्याका पिता भी वरके पिताके घर जा कर वरको पसन्द करता है। इस तरह पात्र पात्रीके पसन्द हो जाने पर कन्यकाके मूल्यका कुछ भाग दिया जाता है। कन्याका मूल्य साधारणतः ३ तीन रुपया है। सिवा इसके वरको कन्याके लिये एक साड़ी और यदि उसकी पितामही तथा मातामही जीवित हों, तो उनके लिये भी एक एक साड़ी देनी पड़ती है। इन सब चीजोंके अति-रिक्त अन्य कुछ प्रदान करने पर कन्याका पिता दहेजमें एक गाय देने पर बाध्य होता है। विधवा तथा स्वामी-परित्यक्ता स्त्रीविवाहमें कन्याका मूल्य साधारण विवाह-के मूल्यका आधा होता है, क्योंकि सन्तालोंका दृढ़ विश्वास है, कि इस तरहकी स्त्री केवल इहलोकमें उप-भोग्या है, किन्तु परलोकमें उनके पूर्वस्वामी उनको मिल जाते हैं।

इन लोगोंमें महुआके वृक्षके नीचे यह विवाहकार्य अनुष्ठित हुआ करता है। इस अनुष्ठानका प्रधान अङ्ग है, स्त्रीके सिरमें सिन्दूर देना। इसका नाम है—सिन्दुर-दान।

कन्या कुत्सित या विकलाङ्ग होनेसे उसका घरदी-जवाई नामक दूसरे प्रकारसे विवाह होता है। इस विवाहके होने पर दामाद पाँच वर्षों तक श्वशुरकी नौकरी करता है, घरमें रह कर उसके अधीन कृषिकार्यमें नियुक्त रहता है। ये पाँच वर्ष बीत जाने पर वह अपने घर लौट आता है। आनेके समय उसे एक जोड़ा बैल, कुछ चावल और कई कृषि यन्त्रादि दिये जाते हैं। उसके बाद और उसके साथ श्वशुरसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

यदि कोई युवक यह ख्याल करे, कि उसकी प्रणयिनी उसे अच्छी नजरसे नहीं देखती, फिर भी, वह युवक उससे विवाह करनेके लिये व्याकुल हो, तो किसी तरह उसके माथेमें सिन्दूर लेपन अथवा धूलि लेपन करनेकी फिक्रमें किसी बाजार या किसी प्रकाश्य स्थानमें युवती-की प्रतीक्षामें खड़ा हो जाता है। जब उसकी प्रणयिनी

उस रास्तेसे जाने लगतो है, तब वह बलपूर्वक उसके सिरमें सिन्दूर पोत कर वहांसे वह इस डरसे भाग जाता है, कि उसे उसके इस कमसे कन्याके अभिभावक उसे मार न डाले। जब कन्याके अभिभावक इस बातको सुनते हैं, तब शीघ्र ही वे ग्रामके प्रधानको आज्ञा ले कर उसके घर जाते हैं तथा उस युवककी तीन बकरियोंको मार कर खा डालते हैं। इस विवाहमें कन्याके मूल्यस्वरूप दूगुना मूल्य निर्द्धारित किया जाता है। इस विवाहका नाम इतुत है।

इसो तरह कभी कभी कन्या बलपूर्वक अपनी इच्छाके अनुसार पति ढूंढ कर विवाह कर लेतो है। इस विवाहको निब-बोलोक कहते हैं। युवती एक मिट्टीके बरतनमें एक प्रकारका हाँडिया नामक शराब ले कर अपने प्रेमीके मकानमें जाती और रहनेका अनुरोध करतो है, घरसे बलपूर्वक उसे भगा देना उनकी रीति रश्मके खिलाफ है। अतः उसके भगानेके लिये घरकी माता आगमें लालमिर्च डाल देती है। यदि उस मिर्चका धुंआ सह कर भी युवती उस घरसे भाग नहीं जाती, तो घरकी माता उससे अपने पुत्रका विवाह कर देती है।

विधवा या परित्यक्ता स्त्रीके पत्यन्तरका नाम साङ्गा है। कन्या वरके घर उपस्थित होने पर वर दिबु पुष्प सिन्दूर चिह्नित करवाये हाथसे कन्याके बालको स्पर्श कर देता है।

किसी अविवाहित कन्यासे किसी अविवाह्य पुरुषका संसर्ग हो कर गर्भ हो जाये, तो उसके अभिभावक दूसरा एक वर खोजता है और उसको कन्याके प्रमी यदि दो बैल, एक गाय और कुछ चावल देना स्वीकार करे, तो वह उस कन्याको पत्नीरूपमें ग्रहण कर लेता है। इसके बाद ग्रामका प्रधान उसको पतित्वको स्वीकार कर लेता है। इस विवाहको 'किरि-जबई' कहते हैं।

सन्तालोंमें यद्यपि विधवाविवाह तथा प्रचलित है, तथापि मृत पतिके कनिष्ठ भ्राता अर्थात् देवरके साथ ही विवाह प्रशस्त माना गया है। विधवा अपने भसुरसे कभी विवाह नहीं कर सकती।

सन्तालोंकी उत्तराधिकारित्वविधि हिन्दुओंकी तरह नहीं है। पिताकी मृत्युके बाद पुत्र पैतृकसम्पत्तिके समभावसे उत्तराधिकारी होता है। कन्या पैतृक सम्पत्ति में कुछ भी अंश नहीं पाती। किन्तु जब भाइयोंमें पैतृक सम्पत्तिका बटवारा होने लगता है, तब उसे एक गाय मिलता है। पिताकी मृत्युके समय पुत्र नाबालिग रहने से जब तक वह बालिग नहीं हो जाता, तब तक माता ही उस सम्पत्तिकी देखरेख करती है। इसके बाद माता अपने छोटे पुत्रके साथ रह कर शेषजीवन निर्वाहित करती है।

सन्तालोंमें कई तरहकी पूजा प्रचलित है—उनमें (१) मरङ्ग बुरु—ये देवताओंमें सर्वप्रधान देवता हैं। इनकी असाधारण क्षमता है। (२) मोरेको (अग्नि), पहले मोरेकोके पांच सहोदरोंको पूजा प्रचलित थी; इस समय केवल मोरेकोकी ही पूजा की जाती है। (३) जाहर इरा—मोरेकोकी बहन। प्रत्येक ग्रामके वनमें एक एक स्थान इस देवीकी अधिष्ठानभूमिके नामसे निर्दिष्ट रहता है। (४) गोसेन इरा—जाहेर इराकी छोटी बहन। (५) परगणा—ये डाकिनियों पर कर्तृत्व करती हैं। इससे इनकी सभी भक्ति करते हैं। (६) माँझी—ये परगणाके अधीनस्थ सर्वप्रधान देवता हैं। देवता जिससे मनुष्योंका अनिष्ट न कर सकें, इस ओर इनकी सदा दृष्टि रहती है। सन्तालोंका विश्वास है, कि उनको तरह देवताओंमें भी माँझी या प्रधान हैं देव-माँझी भी अन्यान्य देवताओं पर शासन करते हैं। वनमें इन सब देवताओंकी पूजा होती है। केवल मरङ्ग बुरुकी पूजा घरमें भी की जाती है।

सिवा इनके प्रत्येक सन्तालके दो कुलदेवता हैं। ओराक् बंग या गृहदेवता तथा आबगे बंग या गुप्तदेवता। बाद सन्ताल अपने ज्येष्ठपुत्रके सिवा अन्य किसीसे अपने कुलदेवताद्वयका नाम नहीं बताता। गृहस्वामी अपने परिवारकी स्त्रियोंसे इन दोनों देवताओंका नाम तथा इनकी पूजा प्रकरण विशेषरूपसे छिपा रखते हैं।

सन्तालोंमें पहले मनुष्यबलि प्रचलित थी। अभी भी कभी कभी सन्ताल अपनी दुरभिसन्धि सिद्ध करनेके मानससे तथा प्रचुर अर्थ प्राप्तिकी आशासे देवताके सामने नरबलि देते हैं।

पौष महीनेमें खेतसे धान ग्राममें लाने पर सन्ताल एक उत्सव करते हैं। यही उनका प्रधान उत्सव है। देवताके स्थानमें पुरोहित द्वारा मुर्गेकी बलि दी जाती है। सिवा इसके ग्रामवासी शूकर, बकरा और मुर्गे चढ़ाने लगते हैं। इस उत्सवके समय ग्रामस्थ स्त्रीपुरुष सभी मदिरा पी पी कर उन्मत्त हो यथेच्छाचार हो आनन्द उपभोग करते हैं। इस समय इस तरहसे यथेच्छाचारी हो स्त्रियोंका परपुरुषका सहवास वैसा निन्दनीय नहीं गिना जाता। फाल्गुन महीनेमें शालफूलके प्रस्फुटित होने पर सन्ताल और एक उत्सव करते हैं। इस उत्सवके उपलक्षमें देवताके सामने सन्ताल परस्पर लोग प्रीतिभोजका आयोजन करते हैं। दिन रात नाच होता है और वंशीकी मधुर तानसे ग्राम मुखरित हो उठता है। इसके सिवा आषाढ़ महीनेमें क्षेत्रमें बीजवपन करनेके समय और भाद्र महीनेके धानकी अङ्कुरोत्पत्ति पर सन्ताल तरह तरहके उत्सव करते हैं। पौषके प्रथम दिनको ये मृत पूर्वपुरुषोंके उद्देशसे चिउड़ा, गुड़ और रोटी चढ़ाते हैं। अन्य समयमें भी यह मृतव्यक्तिको पूजा करते हैं। माघ मासमें सन्तालोंका वर्ष समाप्त होता है। प्रत्येक सन्ताल अपने जीवनमें अन्ततः एक बार भी जमस्मिमकी पूजा करने पर बाध्य होता है। इस पूजामें वे सूर्यदेवके उद्देशसे एक बकरे और एक भेड़को बलि चढ़ाते हैं। इस पूजाके एक वर्ष बाद सन्ताल गृहदेवताके सामने एक गाय और मरबुरू और पूर्वपुरुषोंकी प्रेतात्माके उद्देशसे एक सांढ़की बलि चढ़ाते हैं। यह पूजा कुतम् दस्रा नामसे अभिहित है।

प्रत्येक ग्राममें सन्तालोंका एक मांझी या ग्राम्य प्रधान रहता है, उसी तरह कई ग्रामोंका एक प्रगना बना कर वहां एक प्रगनाइत रहता है। प्रगनेके समाजमें सबसे ऊपर यह व्यक्ति अफसरी करता है। प्रत्येक विवाहमें इस 'प्रगनाइत' की मंजूरी लेनी पड़ती है और कोई व्यक्ति यदि समाजनीतिके विरुद्ध कोई कार्य करे, तो यह व्यक्ति ग्राम्य पञ्चायतके साथ परामर्श कर उसको ग्रामसे विताड़ित कर देता है या अर्थदण्डसे दण्डित करता है।

सन्ताल अपने शवको जलाते हैं। किसी ग्राममें एक व्यक्ति उस मृत व्यक्तिके संस्कारके लिये निकटके नदी तट पर उपस्थित होते हैं। सन्ताल भी धनुर्विद्यामें सिद्धहस्त हैं। इनका लक्ष्य प्रायः व्यर्थ नहीं जाता। केवल धनुर्बाणके बल पर ही सन्तालोंने सन् १८५५ ई०में सन्ताल प्रगनेमें विद्रोह उपस्थित किया था। सन्तालोंकी प्रकृति अति सरल होती है और ये सत्य वादी कहे जाते हैं।

सान्ताल (सौंताल) परगना—विहार और उड़ीसाप्रदेशके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २३° ४८' से २५° १८' उ० तथा देशा० ८६° २८' से ८७° ५७' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५४७० वर्गमील है। इसके उत्तरमें भागलपुर और पूर्णिया जिला, पूरबमें मालदह, मुर्शिदाबाद और वीरभूम, दक्षिणमें वर्द्धमान और मानभूम तथा पश्चिममें हजारीबाग, मुंगेर और भागलपुर जिला है। जिलेके उत्तरमें और पूर्वके कुछ भागोंमें गङ्गानदी तथा दक्षिण सीमामें बराकर और अजयनदी बहती है।

जिलेका पूर्व भाग पहाड़ी है। गङ्गासे ले कर नूनबिल नदी तक प्रायः एक सौ मील लम्बी एक पर्वतमाला विस्तृत है। इस शैलश्रेणीका पश्चिमी भूभाग बड़ा ही मनोरम है। कोई स्थान ऊंचा और कोई नीचा है। इसके सिवा लूप लाइनका पार्श्वस्थित भूमिखण्ड बड़ा ही उर्वरा है। जिलेके स्थान स्थानमें कोयलेकी खान है। तमाम पहाड़ ही पहाड़ नजर आता है। ये सब पहाड़ घने जंगलोंसे भरे हैं, अधिकांश ही मनुष्य और जीवजन्तुका अगम्य है। राजमहल गिरि इन सब पर्वतोंमें प्रसिद्ध है। इसके मोरी और सेन्द्गरस नामके दो शिखर प्रायः २००० फुट ऊंचे हैं। नाव जाने आने योग्य इस जिलेमें कोई नदी नहीं है। इस जिलेकी सभी नदियां गङ्गा भागीरथीमें गिरती हैं। इन नदियोंमें गुमानी, मोरल, वंशलोई, ब्राह्मणी और मौराक्षी ही विशेष उल्लेखयोग्य हैं। मौराक्षी ही इस जिलेकी सर्वप्रधान नदी है। नूनबिल, अजय और बराकर मौराक्षीकी उपनदी हैं।

यह परगना जंगलोंसे भरा हुआ है सही, परन्तु इन सब जंगलोंमें व्यवसायके उपयोगी मूल्यवान् वृक्ष अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। यहांके वनजात शालसे सन्ताल लोग राल तथा पलाश और पीपलके पेड़से लाख संग्रह

करते हैं। इसके सिवा ये लोग जंगलसे टसरके कोड़े संग्रह कर बाजारमें बेचते हैं। साबुई घास और कोङ्गा जंगलमें काफी तौर पर पैदा होती है। साबुई घास कागज और रस्सी बनानेके लिये दूसरी जगह भेजी जाती है तथा कोङ्गासे बहुत मजबूत और रेशम जैसा चिकना सूता तैयार होता है।

सन्ताल परगनेमें प्रायः सभी जगह कोयला और लोहा पाया जाता है। १८५० ई०में कप्तान सेरविलने देवघर इलाकेमें भी तांबे और चांदीकी खान पाई थी।

यहांके प्रायः सभी जंगलोंमें बाघ, भालू, जंगली बराह आदि हिंस्र जन्तु देखनेमें आते हैं। कभी कभी नगरमें भी इनका प्रादुर्भाव होता है। पहले हाथी और गैंडे इस परगनेकी जंगली भूमिमें विचरण करते थे, किन्तु अभी वे कहीं भी दिखाई नहीं देते।

अन्यान्य जिलोंकी शासनपद्धतिसे यह बिलकुल स्वतन्त्र है। यह जिला नन-रेगुलेटेड प्रदेश कहलाता है। इसीसे इस स्थानके जमीनसंक्रान्त आईन और दण्डविधिमें कुछ विभिन्नता देखी जाती है। इस परगनेके अधिकांश अधिवासी सन्ताल और पहाड़ी नामकी आदिम अनार्य्य जाति है। ये लोग शान्त और निरीह जाति हैं, व्यवसाय वाणिज्यकी कूटनीति, जाल जुआचोरी आदि ये कुछ भी नहीं जानते। १८५५ ई०में इन लोगोंने गवर्मेण्टके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था, पीछे वृटिशसरकारने बहुतेरे सन्तालोंके प्राण ले कर बड़ी मुश्किलसे उनका दमन किया। अनन्तर सरकारके आगे अपना दुखड़ा रोने पर इन लोगोंने अपनी प्रकृति अनुयायी शासनपद्धति प्राप्त की।

सन्ताल परगना छः महकमोंमें विभक्त है, १। दुमका (२) राजमहल, (३) देवघर, (४) पाकुड़, (५) जामताड़ा और (६) गोड्डा। ज्वाइण्ट मजिष्ट्रेटके अधीन राजमहल उपविभाग है और बाकी उपविभाग एक डिपटी मजिष्ट्रेट कलक्टरके अधीन। तीन डिप्टी मजिष्ट्रेट कलक्टर और एक सब डिपटी मजिष्ट्रेट कलक्टर दुमकामें, एक डिपटी मजिष्ट्रेट कलक्टर और एक सब-डिपटी मजिष्ट्रेट कलक्टर राजमहल, देवघर और गोड्डामें तथा एक सब डिपटी मजिष्ट्रेट कलक्टर जामताड़ा और पाकुड़में रहते हैं। इन अफसरोंको दीवानी और फौजदारी विचार करनेका अधिकार है। दीवानी और फौजदारी अपील भागलपुरके जज सुनते हैं। खासमहालका राजस्व भी भागलपुरके कोषागारमें दाखिल करना होता है।

इस जिलेमें मधुपुर, देवघर और साहबगञ्ज नामके तीन शहर और ६१६७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या २० लाखके करीब है। निम्नलिखित विभिन्न अनार्य्य जातियां यहां वास करती हैं,—(१) भर या राजभर, ये लोग अति नीच श्रेणीकी अनार्य्यजाति हैं। ये लोग सूअर पालते पोसते हैं। (२) धाङ्गर जाति स्वभावतः छोटा नागपुरकी ओरांव श्रेणीभुक्त है। ये लोग साधारणतः खेतीबारी करते हैं। आज कल निम्नबङ्गमें कृषि लोगोंका विशेष अभाव होनेसे इन लोगोंमेंसे कितने अपना देश छोड़ कर निम्न बङ्गमें सस्त्रीक बस गये हैं। (३) कान्जरजाति, बेदिया लोगोंकी तरह प्रायः बारहों मास बाहर घूमते रहते हैं, घाससे रस्सी बनाना और खसखसकी चटाई बनाना ही इनका प्रधान कार्य्य है। (४) खरवारजाति राजमहल पर्वत पर ही अधिक संख्यामें देखी जाती है। इनका आचार व्यवहार बहुत कुछ हिन्दू-सा है। (५) किसनी या नागेश्वर। (६) कोल जातिकी संख्या भी कम नहीं है। मुण्डा, भूमिज, हो आदि विभिन्न श्रेणीके लोग भी कोल कहलाते हैं। ये लोग अन्यान्य आदिम अनार्य्य जातिकी तरह बलिष्ठ और कर्मठ नहीं होते। (७) माल—बहुतोंका विश्वास है, कि निम्नबङ्गकी मालजाति और सन्ताल परगनेकी माल जाति एक श्रेणीभुक्त है। फिर किसीका कहना है, कि बङ्गालके बाउडाल और सौताली माल अभिन्न जाति है। (८) नैया—मर्दुमशुमारीकी विवरणीमें लिखा है, कि यह जाति पहले बौद्धधर्मका पौरोहित्य करती थी और इसीलिये आज भी ये लोग हिन्दुओंके अस्पृश्य हैं। (९) नट—इन लोगोंका निर्दिष्ट वासस्थान नहीं है। ये लोग नाना देशोंमें बाजीगरी और खेल तमाशे दिखाते हुए घूमते हैं और अपनेको बाजीगर बतलाते हैं। इन लोगोंमें अधिकांश कबीरपन्थी हैं, कोई कोई अपनेको मुसलमान बतलाते हैं। बेदिया लोगोंकी तरह ये लोग चोरी-विद्यामें सिद्ध-

हस्त हैं। साधारण प्रचलित भाषाको छोड़ कर इन लोगोंमें एक प्रकारकी गुप्तभाषा प्रचलित है। ये लोग आपसमें इस भाषाका व्यवहार करते हैं। (१०) पहाड़िया सन्ताल परगनेमें एक प्रधान जाति है। (११) सौताल या सान्ताल। सन्ताल देखो।

विद्या-शिक्षामें यह जिला बहुत पिछड़ा हुआ है। सैकड़े पीछे तीन मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी कुल मिला कर ३० सिकेण्ड्री, ६२५ प्राइमरी और १०० स्पेशल स्कूल हैं। इष्टइण्डियन रेलवे द्वारा परिचालित मधुपुरमें एक शिल्पविद्या स्कूल है। सन्तालियामें प्राइमरी शिक्षा प्रचारके लिये सरकारकी ओरसे वार्षिक ६५००) हजार रु० मिलते हैं। स्कूलके अलावा दश अस्पताल और राजकुमारी नामक कुष्ठाश्रम भी है।

सान्तालपुर चाड़चाट—बम्बई प्रदेशके गुजरात विभागान्तर्गत पालनपुर शासनकेन्द्रके अधीन एक सामन्त राज्य। सन्तालपुर और चाड़चाट नामक दो उपविभाग ले कर यह राज्य संगठित है तथा बहुत से सरदारों द्वारा शासित होता है। इसके उत्तरमें मेरकरा और सुइगाम जमींदारी, पूरबमें जराही और राधनपुर राज्य तथा दक्षिण और पश्चिममें कच्छका मरण प्रदेश है। सन्तालपुर और चाड़चाट दोनोंको एक साथ मिलानेसे इसकी लम्बाई ३७ मील और चौड़ाई ६७ मील होती है। भूपरिमाण ४४० वर्गमील है।

इस राज्यका सर्वांश ही समतल है। यहां घासिया नामक एक प्रकारका नमक तैयार होता है। यहांकी मिट्टी कर्दमाक्त, बालुकामय और कृष्णवर्णकी है। इस कारण यहांके सभी स्थान उर्वरा नहीं हैं। खेती बारीके लिये भी विशेष सुविधा नहीं होती। सारे प्रदेशमें एक भी नदी नहीं है। कहीं कहीं कुछ तालाब दिखाई देते हैं। दुःखका विषय है, कि चैत्रमासके बाद फिर उसमें जल नहीं रहता। इस कारण यहांके लोगोंको कूआं खोद कर जलका इन्तजाम करना पड़ता है।

यहांके सरदार झाड़ेजावंशीय राजपूत तथा ठाकुर उपाधिधारी हैं। वे लोग कच्छप्रदेशके रावराजाओंके आत्मीय हैं। प्रायः चार सदी पहलेसे वे लोग इस स्थानको अधिकार कर शासन करते आ रहे हैं। सन्तालपुर और चाड़चाटका कुल राजस्व ३३६००) रु० है।

सान्त्व (सं० क्ली०) सान्त्व सान्त्वने भावे घञ्। १ अत्यन्त मधुर, कर्ण और मनका प्रीतिजनक वाक्य, प्रबोधजनक वचन। २ साम, सन्धि, मिलन। ३ दाक्षिण्य।

सान्त्वन (सं० क्ली०) सान्त्व-ल्युट्। १ प्रियवाक्य द्वारा प्रबोध देना, किसी दुःखीको सहानुभूति पूर्वक शान्ति देनेकी क्रिया, आश्वासन, ढारस। २ साम, सन्धि, मिलन। ३ प्रणय, प्रेम। ४ स्नेहपूर्वक कुशल पूछना और बातचीत करना।

सान्त्वना (सं० स्त्री०) सान्त्व-युच्-टाप्। १ दुःखी व्यक्तिको उसका दुःख हलका करनेके लिये समझाने बुझाने और शान्ति देनेका काम, ढारस, आश्वासन। २ चित्तकी शान्ति, सुख। ३ प्रणय, प्रेम।

सान्त्ववाद (सं० पु०) वह वचन जो किसीको सान्त्वना देनेके लिये कहा जाय, सान्त्वनाका वचन।

सान्त्वयितृ (सं० त्रि०) सान्त्व-णिच्-तृच्। सान्त्वनाकारक, सान्त्वना करनेवाला, ढारस देनेवाला।

सान्थाल—सान्ताल देखो।

सान्दीपनि (सं० पु०) सन्दीपनका गोत्रापत्य मुनिविशेष। यह मुनि ब्रह्माके अंशविशेष तथा योगियों और ज्ञानियोंके गुरु हैं।

सान्दीपनि मुनि सब तत्त्वों और अखिल विज्ञानोंसे अवगत थे। श्रीकृष्ण और बलराम इन्हीं मुनिके शिष्य थे। विष्णुपुराणमें लिखा है, कि कृष्ण-बलराम धनुर्वेदकी शिक्षाके लिये सान्दीपनिके पास गये थे। मुनिवरने शिष्यरूपमें पा कर सरहस्य धनुर्वेदकी शिक्षा दी। ६४ दिनोंमें कृष्णबलरामने समग्र आयुर्वेद आयत्त कर लिया था। सान्दीपनि मुनिने इनकी ऐसी अद्भुत क्षमता देख कर विस्मित हो इनका महापुरुष होना स्थिर किया। जब आयुर्वेदकी शिक्षा समाप्त हो गई, तो इन लोगोंने सान्दीपनि मुनिको गुरुदक्षिणा देनी चाही। मुनिने कहा, कि मुझे यदि गुरुदक्षिणा देना चाहते हो, तो मेरे मृत पुत्रको पुनर्जीवित कर दो। रामकृष्णने यमपुरीमें जा कर यमराजको परास्त कर उसी आकारमें मुनि पुत्रको ला मुनिको दे दिया। (विष्णुपु० ५.२१)

सान्द्रष्टिक (सं० क्ली०) सन्दृष्टौ प्रत्यक्षे भवं। १ संदृष्टि।

२ सद्यफल, तात्कालिक फल । ३ न्यायभेद, दृष्टपरिकल्पना-न्याय । पहले एक विषय जिस भावमें देखा गया है, वैसा ही एक विषय देखनेसे पूर्वदृष्टवत् तदनुरूप फलकी कल्पना करनेमें यह न्याय होता है । (दायक्रमसं०)

सान्द्र (सं० क्ली०) १ वन, जङ्गल । २ तक्र, मट्ठा । (त्रि०) ३ घना, गहरा । ४ मृदु, कोमल । ५ स्निग्ध, चिकना । ६ सुंदर, खूबसूरत । ७ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ ।

सान्द्रता (सं० स्त्री०) सान्द्र होनेका भाव ।

सान्द्रपद (सं० क्ली०) छन्दोभेद । इस छन्दके प्रति चरणमें ११ अक्षर करके होते हैं । उनमेंसे १, ४, ५, १०वां अक्षर गुरु और बाकी लघु है ।

सान्द्रपुष्प (सं० पु०) विभीतक वृक्ष, बहेड़ा ।

सान्द्रप्रसादमेह (सं० पु०) मेहरोगभेद । इसमें कुछ मूत्र तो गाढ़ा और कुछ पतला निकलता है, यदि ऐसे रोगीका मूत्र किसी बरतनमें रख दिया जाय, तो उसका गाढ़ा अंश नीचे हो जाता है और पतला अंश ऊपर रह जाता है ।

सान्द्रमणि (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम ।

सान्द्रमेह (सं० पु०) श्लेष्मज मेहरोगविशेष । जिस मेहरोगमें मूत्र किसी बरतनमें रखनेसे पीछे वह घना हो जाता है, उसे सान्द्रमेह कहते हैं । इस मेहरोगमें भी श्लेष्मा बिगड़ जाती है जिन सब आहार और विहार द्वारा श्लेष्म, मेद और मूत्रकी वृद्धि होती है, उन सब द्रव्योंका सेवन करनेसे श्लेष्मा बिगड़ कर कफज मेहरोग पैदा करती है । (चरक नि० ४ अ०) मेहरोग देखो ।

सान्द्रस्निग्ध (सं० क्ली०) सं-द्रु (अभिविधौ भावे इनुण् । सम्यक् द्रव, अच्छी तरह गलना ।

सान्ध (सं० त्रि०) १ सन्धिसम्बन्धी, संधियुक्त । (पु०) २ एक प्राचीन ऋषिका नाम ।

सान्धिक (सं० पु०) सन्धा-ठक् । १ शौण्डिक, वह जो मद्य बनाता या बेचता हो । २ सन्धिकर्त्ता, वह जो संधि करता हो ।

सान्धिविग्रहिक (सं० पु०) सन्धि और विग्रहकारक, वह जो संधि और विग्रह करता हो । हिन्दू राजाओंके समय यह राजकीय पद वर्त्तमान Foreign secretary and Minister for peace and war पदके समान था ।

सान्धिवेल (सं० त्रि०) सन्धिवेला (संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् । पा ४।३।१६) संधिवेलाभव, जो संधिके समय हो ।

सान्ध्य (सं० त्रि०) संध्या सम्बन्धीय, संध्या कालमें करने योग्य । (रघु २।२३)

सान्ध्यकुसुमा (सं० स्त्री०) त्रिस न्ध्युपवृक्ष, वे वृक्ष, पौधे और वेलें आदि जो संध्याके समय फूलती हों ।

सान्नत (सं० क्ली०) सामभेद ।

सान्नहनिक (सं० त्रि०) १ सन्नाहविशिष्ट, वर्मित । २ जो आसन्न विपद् देख कर सेनाओंको वर्म पहननेकी आज्ञा देते हैं । ३ जो वर्म ढो कर ले जाते हैं ।

सान्नाय्य (सं० क्ली०) सं-नी (पाय्यसान्नाय्येति । पा ३।१।१२६) इति सं-नी ण्यत्, आयादेशः, समो दीर्घत्वञ्च निपात्यते, हविः मंत्रोंसे पवित्र किया हुआ वह घी जिसमें हवन किया जाता है ।

सान्नाहिक (सं० त्रि०) सन्नाह (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः । पा ५।१।१०१) इति ठञ् । १ कवचपरिधानकारी । २ कवचबन्धनार्ह, कवच पहननेके योग्य ।

सान्नाहुक (सं० त्रि०) सान्नाहिक, कवचबंधनार्थ ।

सान्निध्य (सं० क्ली०) सन्निधिरेव सन्निधि (चातुर्वर्णादीनां स्वार्थ उपसंख्यान । पा ५।१।१२४) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या स्वार्थे ष्यञ् । १ समीपता, सामीप्य, सन्निकटता । देवप्रतिमामें किसी किसी जगह देवताका सान्निध्य होता है, उसका विषय शास्त्रमें इस प्रकार लिखा है—अर्च्चकका तपोयोग और जिसके द्वारा देवपूजा की जाती है, उसके यदि किसी अङ्गकी त्रुटि न हो, प्रतिमा अति सुन्दर अथच ध्यानके साथ यथायथभावमें बनाई जाय, तो वहां देवताका सान्निध्य होता है । दूसरी जगह देवताका सान्निध्य नहीं होता ।

सान्निध्यता (सं० स्त्री०) सान्निध्यस्य भावः, तल्-टाप् । सान्निध्यका भाव या धर्म, समीपता ।

सान्निपातकी (सं० स्त्री०) एक प्रकारका योनिरोग जो त्रिदोषसे उत्पन्न होता है ।

सान्निपातिक (सं० पु०) सन्निपातस्य शमनं कोपनं वा (सन्निपाताच्च । पा ५।१।३८) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या स्वार्थे ष्यञ् । १ सान्निपातक रोग, तीन दोषके एकत्र सम्मिलनको

सञ्चित होते हैं, अतएव यह त्रिदोष कुपित हो कर जहां रोगोत्पादन करता है, वहां उसे सान्निपातिक कहते हैं। सान्निपातिक रोगमें त्रिदोषके सभी लक्षण दिखाई देते हैं, इस कारण सान्निपातिक रोगमात्र ही दुःसाध्य है। सान्निपातिक रोग होने पर जिससे त्रिदोषका ही शान्ति हो, वैसा करना सर्वतो-भावमें उचित है। २ ज्वरभेद, सान्निपातिक ज्वर। यह रोग होने पर तथा इस रोगके सभी लक्षण दिखाई देने पर रोगीका प्राणनाश होता है।

सन्निपात शब्दमें विशेष विवरण देखो।

(त्रि०) ३ सन्निपात-संबन्धी, सन्निपातका। ४ त्रिदोष संबन्धी, त्रिदोषसे उत्पन्न होनेवाला।

सान्निपातिन् (सं० त्रि०) सम्यक् निपातनशील।

सान्निपातिकी (सं० स्त्री०) सन्निपातजन्य योनिरोग, त्रिदोषजन्य योनिरोग। जिस योनिरोगमें त्रिदोषसे उत्पन्न सभी प्रकारके योनिरोगके लक्षण दिखाई देते हैं, उसे सान्निपातिकी कहते हैं। (वाभट उ० ३३ अ०)

योनिरोग देखो।

सान्निपात्य (सं० त्रि०) सन्निपात्य, सन्निपातयोग्य।

सान्निवेशिक (सं० त्रि०) सन्निवेश समवैति (सम-वायान् समवेति। पा ४।४।४३) इति ठक्। सन्निवेश-प्राप्त।

सान्न्यासिक (सं० पु०) संन्यासाय प्रयोजनमस्येति ठक्। संन्यासी।

सान्युत्र (सं० पु०) वैदिक आचार्यभेद।

सान्वय (सं० त्रि०) अन्वयेन सह वर्त्तमानः। १ अन्वयके साथ वर्त्तमान, अन्वययुक्त, अन्वयविशिष्ट। २ वंश-विशिष्ट। ३ कारणविशिष्ट।

सापत्न्य (सं० पु०) सपत्न एव स्वार्थे ष्यञ्। १ शत्रु, दुश्मन। २ सपत्नीपुत्र, सौतका लड़का। (क्ली०) ३ सपत्नीभाव, सौतपन।

सापत्नेय (सं० त्रि०) सापत्न, सपत्नीपुत्र।

सापत्य (सं० त्रि०) अपत्यके साथ वर्त्तमान, संतान-युक्त।

सापद् (सं० त्रि०) आपद्युक्त, आपद्विशिष्ट।

सापदेश (सं० त्रि०) अपदेशके साथ वर्त्तमान, अपमान-युक्त।

सापन (हि० पु०) एक प्रकारका रोग। इसमें सिरके बाल गिर जाते हैं।

सापराध (सं० त्रि०) अपराधविशिष्ट, अपराधी।

सापह्नव (सं० त्रि०) १ अपह्नवयुक्त, अपह्नवविशिष्ट। २ अपह्नुति, अलङ्कारविशिष्ट।

सापाय (सं० त्रि०) अपाययुक्त, नाशविशिष्ट।

सापाश्रय (सं० पु०) गृहान्तःपुरस्थ उन्मुक्त स्थानकी वीथिका।

सापिण्ड (सं० क्ली०) सपिण्डता, सापिण्ड्य।

सापिण्ड्य (सं० क्ली०) सपिण्डस्य भावः सपिण्ड ष्यञ्। सपिण्डता। शास्त्रमें सापिण्ड, सकुल्य और समा-नोदक ये तीन प्रकारकी ज्ञाति हैं। अशौचग्रहणके विषय-में सापिण्ड ज्ञातिका पूर्णाशौच, पुरुषके सप्तमपुरुष तक सापिण्ड्य और अविवाहिता कन्याके तीन पुरुष तक सापिण्ड्य होता है। सपिण्ड देखो।

सापुयामुण्डो—उड़ीसाके खण्डपाड़ाविभागके अन्तर्गत एक शैलशृङ्ग। यह अक्षा० २०° २६′ २८″ उ० तथा देशा० ८५° ५′ २१″ पू०के मध्य विस्तृत है तथा समुद्रपृष्ठसे १७७० फुट ऊंचा है।

सापुर—विन्ध्यपार्श्वस्थ एक गण्डग्राम।

सापुर—तिहारानवासी एक कवि। १६३८ ई०में इनकी मृत्यु हुई। ताब्रिज नगरमें इनका समाधिमन्दिर विद्य-मान है।

सापुर १म—पारस्यके शसनीय वंशीय द्वितीय नृपति। ये अर्देसीर बावगानके लड़के थे। ग्राक् ऐतिहासिकों-के निकट ये सापोर (Sapores) नामसे प्रसिद्ध हैं। २४० ई०में ये सिंहासन पर बैठे। उस समय रोम-साम्राज्यकी तूती पश्चिम एशियाखण्ड तक बोल रही थी। राजा सापुरने अपनी सेना ले कर कई युद्धोंमें रोमसेनाको हराया तथा रोमक सम्राट् भालेरियन उनके हाथ बन्दी हुए। कहते हैं, कि सापुरने रोमसम्राट्के शरीरका चमड़ा खींच कर उनकी जान ले ली थी। उनके पुत्र हर्मुज २७१ ई०में पिताकी मृत्युके बाद पारस्य-राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे।

साप्त (सं० त्रि०) सप्तन् (सप्तनोऽञ्छन्दसि। पा ५।१।६१) इति अञ्। सप्त संख्यानिष्पन्न वर्गका कर्म।

साप्तनन्तव (सं० पु०) धर्मसम्प्रदायविशेष ।
साप्ततक (सं० त्रि०) सप्त तत संख्याको पूरण, सत्तरवां ।
साप्तदश (सं० स्त्री०) सप्तदश संख्या, सत्तरह ।
साप्तपद (सं० त्रि०) सप्तपद पर निर्भरकारी, सात चरणों पर खड़ा रहनेवाला ।
साप्तपदीन (सं० क्ली०) सप्तभिः पदैरवाप्यते इति (साप्तपदीन सख्यं । पा ५।२।२२) इति खञ् प्रत्ययेन साधुः । १ सख्य, बन्धुत्व, मित्रता । केवल सात बातों पर जो मित्रता होती है, उसे साप्तपदीन कहते हैं । (त्रि०) २ सप्तपदसम्बन्धी, सप्तपदीका ।
साप्तपुरुष (सं० त्रि०) सप्तपुरुष सम्बन्धीय, सापिण्ड ।
साप्तपौरुष (सं० त्रि०) सप्तपुरुष-सम्बन्धीय, सापिण्ड-ज्ञाति ।
साप्तमिक (सं० त्रि०) सप्तमीकृत, सप्तमीका ।
साप्तरथवाहनि (सं० पु०) ऋषिभेद ।
साप्तरात्रिक (सं० त्रि०) सप्तरात्रिभव, जो सात रात तक हो ।
साप्तलायन (सं० पु०) सप्तलका गोत्रापत्य ।
साप्तलेय (सं० त्रि०) सप्तलसम्बन्धीय । (पा ४।२।८०)
साप्त (सं० पु०) सप्तन् (बह्वादिभ्यश्च । पा ४।१।६६) इति अपत्यार्थे इञ् । सप्तका गोत्रापत्य ।
साप्य (सं० त्रि०) सबेरेका आश्रयणीय ।
साप्राच्य (सं० क्ली०) एक जातिका ।
साफ (अ० वि०) १ जिसमें किसी प्रकारका मैल या कूड़ा करकट आदि न हो, स्वच्छ, निर्मल । २ जिसकी रचना या संयोजक अंगोंमें किसी प्रकारकी त्रुटि या दोष न हो । ३ जिसमें किसी और चीजकी मिलावट न हो, शुद्ध, खालिस । ४ जिसमें किसी प्रकारका झगड़ा, पेच या फेर फार न हो । ५ जो स्पष्टतापूर्वक अङ्कित या चित्रित हो, जो देखनेमें स्पष्ट हो । ६ जिसका तल या चमकीला और सफेदी लिये हो, सफेद । ७ जिसमें किसी प्रकारका सन्देह या गड़बड़ी आदि न हो । ८ जिसमें किसी प्रकारका छल कपट न हो, निष्कपट । ९ जिसमें धुंधलापन न हो, स्वच्छ, चमकीला । १० जिसमें किसी प्रकारकी विघ्न बाधा आदि न हो । ११ जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो, सादा, कोरा । १२ जिसमें किसी प्रकारका दोष न हो, बे-ऐब । १३ जिसमेंसे अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो । १४ जिसमेंसे सब चीजें निकाल ली गई हों, जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो । १५ जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझमें आवे, जिसके समझने या सुननेमें कोई कठिनता न हो । १६ जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो, समतल, हमवार । १७ लेनदेन आदिका निपटना, चुकता होना । (क्रि० वि०) १८ बिना किसी प्रकारके दोष, कलंक या अपवाद आदिके । १९ बिना किसी प्रकारकी हानि या कष्ट उठाये हुए, बिना किसी प्रकारकी आंच सहे हुए । २० इस प्रकार जिसमें किसीको पता न लगे या कोई बाधक न हो । २१ नितान्त, बिलकुल । २२ निराहार, बिना अन्न जलके ।
साफल्य (सं० क्ली०) १ सफलता, सफल होनेका भाव । जो मानव जन्म ले कर भगवत्की उपासना द्वारा त्रिताप-रहित हो जन्म और मृत्युके हाथसे छुटकारा पाते हैं, उन्हींका जन्म साफल्य हुआ है, दूसरेका नहीं । २ सिद्धि लाभ ।
साफा (अ० पु०) १ सिर पर बांधनेकी पगड़ी, मुरेठा । २ शिकारी जानवरोंको शिकारके लिये या कबूतरोंको दूर तक उड़नेके लिये तैयार करनेके उद्देशसे उपवास कराना । ३ नित्यके पहनने या ओढ़नेके वस्त्रों आदिको साबुन लगा कर साफ करना, कपड़े धोना ।
साफी (अ० स्त्री०) १ हाथमें रखनेका रूमाल, दस्ती । २ वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलमके नीचे लपेटते हैं । ३ भांग छाननेका कपड़ा, छनना । ४ एक प्रकारका रंदा जो लकड़ीको बिलकुल साफ कर देता है ।
साबत (हिं० पु०) सामन्त, सरदार ।
साबन (हिं० पु०) साबुन देखो ।
साबर (हिं० पु०) १ साँभर देखो । २ सांभर मृगका चमड़ा जो बहुत मुलायम होता है । ३ शबर जातिके लोग । ४ थूहर वृक्ष । ५ मिट्टी खोदनेका एक औजार, सबरी । ६ एक प्रकारका सिद्ध मन्त्र जो शिवकृत माना जाता है ।
साबल (हिं० पु०) बरछी, भाला ।
साबस (फा० पु०) १ वाह वाही देनेकी क्रिया । शाबाश देखो । (अव्य०) २ धन्य, साधु साधु, वाह वाह ।

साबाध (सं० त्रि०) पीडित, अस्वस्थ।

साबिक (अ० वि०) पूर्वका, पहलेका, पुराने समयका।

साबिका (अ० पु०) १ जान पहचान, मुलाकात। २ सम्बन्ध, सरोकार।

साबित (फा० वि०) १ जिसका सबूत दिया गया हो, प्रमाणित, सिद्ध। (पु०) २ वह नक्षत्र या तारा जो चलता न हो, एक ही स्थान पर सदा ठहरा रहता हो। (वि०) ३ साबूत, पूरा। ४ दुरुस्त, ठोक।

साबुत (फा० वि०) १ जिसका कोई अङ्ग कम न हो, सम्पूर्ण। २ दुरुस्त। ३ निश्चल, स्थिर।

साबुन (अ० पु०) रासायनिक क्रियासे प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किये जाते हैं। साबुन फरासी savon शब्दका अपभ्रंश है। अंगरेजोंके भारतवर्षमें आनेके पहले यहां साबुनका व्यवहार नहीं होता था। पुर्त्तगोज लोग सबसे पहले भारतमें आये थे। वे लोग साबुनको 'सावांओ' कहते हैं। शायद पुर्त्तगोजोंसे भारतवासीने साबुनका व्यवहार करने सीखा है। इसके पहले कपड़े लत्ते धोनेके लिये भारतवर्षमें नाना प्रकारके क्षार, उद्भिद्की राख, सज्जी मिट्टी और रीठा आदि उद्भिज्ज पदार्थ प्रचुर परिमाणमें व्यवहृत होते थे। आज कल साबुन शौकीनोंका एक प्रधान अंग हो अधिक व्यवहृत होता है, पाश्चात्य वैज्ञानिकोंके मतसे जिस देशमें जितना साबुन व्यवहृत होता है, वह देश उतना ही अधिक सभ्य है। अतएव किसी एक जातिकी उन्नति और सभ्यताका परिमाण आज कल साबुनके प्रचलनसे जाना जाता है।

साबुन एक लवणतुल्य (salt) रासायनिक यौगिक पदार्थ है। लवण मात्र ही जिस प्रकार क्षार (Alkali) और अम्ल (Acid) के संयोगसे प्रस्तुत होता है, साबुन भी ठीक उसी प्रकार क्षार और तैलज अम्ल (Faty Acid)से प्रस्तुत होता है। साबुन साधारणतः तैलज अम्ल और पटाश अथवा सोडा-क्षारकी रासायनिक समष्टि है।

तेल और चर्वीमें अकसर ग्लिसिरिन (Glycerine) नामक मीठे स्वादका एक पदार्थ और कुछ तैलज अम्ल रहते हैं। तैलज अम्लके मध्य स्टियारिक (stearic), पाल्मिक (palmic), औलिक (Oleic) और मार्गारिक (margaric) अम्ल प्रधानतः तेल और चर्वीमें देखे जाते हैं। तेल अथवा चर्वीमें कोई एक क्षार मिला कर उस मिश्रित पदार्थको आँचमें उबालनेसे ग्लिसिरिनसे तैलज अम्ल अलग हो जाता है, यह अम्ल क्षारके साथ मिल कर आंच लगने पर लवणमें परिणत होता है। इस उपायसे उत्पन्न लवण ही साबुन कहलाता है। ग्लिसिरिन जलके साथ मिश्रित अवस्थामें पृथक् हो जाता है। अतएव उग्र पटाश या सोडा क्षार डाल कर चर्वी या तेलसे ग्लिसिरिन अलग कर देनेसे ही साबुन तैयार होता है। अर्थात् क्षार द्रव्यके गलीय अंशके साथ चर्वी या तेलका ग्लिसिरिन भाग मिलने पर जो अवशिष्ट रह जाता है, वही साबुन है।

प्रत्येक लवण एक निर्दिष्ट परिमाणके क्षार और अम्ल मिलानेसे बनता है। उसी प्रकार सोडा या पटाश-क्षार और तैलज अम्लका जो जो परिमाण आपसमें मिल कर साबुन तैयार होता है, उसकी भी एक स्वाभाविक मात्रा निर्दिष्ट है। कितने क्षार, कितने तेल या चर्वीको साबुनमें परिणत कर सकता है, वह जब तक मालूम न रहे, तब तक बढ़िया साबुन तैयार नहीं किया जा सकता। क्योंकि, इसी परिमाणके ऊपर साबुनके गुण और उपकारिताका तारतम्य निर्भर करता है।

क्षार साधारण अम्लकी अपेक्षा तैलज अम्ल अधिक परिमाणमें ग्रहण कर सकता है। ३१ भाग सोडा २८४ भाग स्टियारिक एसिड आसानीसे ग्रहण कर सकता है। किन्तु पटाशमें अम्लधारणकी क्षमता बहुत कम है, इस कारण पटाश साबुन तैयार करनेमें प्रत्येक २८४ भाग स्टियारिक एसिडके लिये ४१ भाग पटाशका व्यवहार करना होता है। फिर पटाशकी अपेक्षा सोडामें जमाट बांधनेकी शक्ति बहुत ज्यादा है। इसीसे सोडा द्वारा जो साबुन बनता है, उसे 'कठिन साबुन' तथा पटाश-साबुनको 'कोमल साबुन' कहते हैं।

जो तेल जितना ही अधिक क्षार शोषण करता है, उससे उतना ही अधिक साबुन बनता है। नारियलका

तेल सबसे अधिक परिमाणमें सोडा या पटाश ग्रहण कर सकता है, इसीसे नारियलका तेल साबुन बनानेमें अधिक व्यवहृत होता है। नीचेकी तालिकासे नारियल और पाम तेल तथा चर्बीकी क्षारधारणाशक्तिका परिमाण समझमें आयेगा—

	विशुद्ध सोडा पौंड	विशुद्ध पटाश पौंड
नारियल-तेल (४०० पौंड)—	१२·४४	१८·८६
पाम-तेल ,,	११·००	१६·२७
चर्बी ,,	१०·५०	१५·६२

इस तालिकासे जाना जाता है, कि नारियलके तेलसे जितना ही अधिक साबुन तैयार होता है, चर्बीसे उतना ही कम साबुन होता है। भिन्न भिन्न तेल और चर्बीमें भिन्न भिन्न प्रकारका तैलज अम्ल वर्त्तमान रहनेसे तथा उनका परिमाण विभिन्न होनेसे सभी तेल और चर्बीमें क्षार शोषण-शक्ति समान नहीं है। यही कारण है, कि भिन्न भिन्न तेलमें क्षार-धारण-शक्तिका तारतम्य देखा जाता है।

साधारणतः नारियल, रेंडी, तिल, तीसी, चीनका बादाम, पाम, जलपाई और कपास-बीजका तेल साबुन बनानेमें व्यवहृत होता है। अफ्रिका, चीन, बोर्नियो, जावा और सुमात्रा आदि ग्रीष्मप्रधान देशोंके वृक्षविशेषके फलसे जान्तव चर्बीकी तरह सफेद और घना एक प्रकारका तेल बनता है। इसीको उद्भिज्ज चर्बी कहते हैं। जान्तव चर्बीमें गाय और सूअरकी चर्बी ही अधिक परिमाणमें व्यवहृत होती है।

सभी प्रकारके साबुन प्रायः एक ही उपायसे तैयार होते हैं। पहले सोडा, राख, चूना और जल मिला कर एक क्षारका गोला बनाया जाता है। इस गोलेको कुछ काल आगमें जला कर ठंढा किया जाता है। गोला बिलकुल ठंढा हो जाने पर कैलसियम कार्बोनेट या खड़ी पात्रके नीचे जम जाता है। उसके बाद परिष्कार जलीय अंश पात्रसे पृथक् कर दूसरे पात्रमें अग्निके ऊपर बैठाया जाता है। इसके बाद उस क्षारको जलमें तरल कर उसमें विशुद्ध चर्बी अथवा तेल मिलाते हैं। जब क्रमशः वह क्षार और तेल मिला हुआ पदार्थ आंच लगने पर उबलने लगे, तब थोड़ा उग्र क्षारजल उसमें मिलावे। अनन्तर साबुन प्रस्तुत हो कर पात्रके ऊपरी भाग पर जब तैरने लगे, तब परीक्षा करके देखना होगा, कि उस साबुनमें तेलका भाग अधिक है या नहीं? साबुनमें तब भी अमिश्रित चर्बीका अंश अधिक रहने पर उस पात्रमें फिरसे क्षारगोला डाल देना होता है। उसके बाद उस पात्रमेंका पदार्थ जब और भी उबलने लगे, तब साधारण लवण उसमें डालना होगा। लवण डालते ही साबुन जमने लगेगा। नारियल तेलके साबुनमें सबसे अधिक लवणकी जरूरत होती है। पटाश द्वारा साबुन तैयार करनेमें लवणका व्यवहार नहीं किया जाता। क्योंकि लवणमेंके भीतरका सोडा समस्त क्षारको सोडा-क्षारमें परिणत कर डालता है; अतएव 'कोमल साबुन' न बन कर 'कठिन साबुन' बनता है। सोडा मंहगा और पटाश सस्ता होने पर अनेक समय लवण डाल कर पटाश द्वारा 'कठिन साबुन' बनाया जाता है। इस प्रकार साबुन जब पात्रके ऊपर तैरने लगता, तब उसे उठा कर दूसरे पात्रमें रखा जाता है। उस समय भी यदि थोड़ा बहुत क्षारजल साबुनमें मिला रहे और वह क्रमशः नीचे बैठ जाय, तो साबुनको फिर अलग कर दे। इस प्रकार तीन चार दिनके बाद यह साबुन कठिन हो जाता है। पीछे उसमें भिन्न भिन्न गंधद्रव्य या औषधादि मिला कर उसके टुकड़े टुकड़े कर डालते हैं।

कुछ श्रेणीके साबुन बनानेमें कभी कभी रजनका व्यवहार होता है। तारपिनके तेलसे तेलका अंश चुआ कर पृथक् करने पर जो जमाट पदार्थ अवशिष्ट रहता है, वही रजन है। तारपिन पाइन जातिके एक प्रकारके वृक्षका निर्यास है। कुछ उद्भिज्ज अम्ल रजनका रासायनिक उपादान है। इनमें पामेरिक, सिल्भिक और पाइनिक एसिड ही प्रधान हैं। इस एसिडके क्षारके साथ मिलनेसे साबुन बनता है। रजनमध्यस्थित अम्लका ३०२ भाग ३१ भाग सोडाको सम्पूर्णरूपसे ग्रहण कर सकता है। किन्तु रजन-निर्मित साबुन सख्त नहीं होता और न वह जम ही सकता है। वह वायु लगने पर वायुसे जलीय वाष्प आकर्षण कर गल जाता है। इस कारण अन्यान्य तेल या चर्बीके साथ रजन मिलनेसे

उमदा सावुन वनता है। धोवी जिस सावुनसे कपडे धोते हैं, उसमें रजनका भाग अधिक रहता है। जलमें रगडनेसे इस सावुनसे ज्यादा फेन निकलता है। इसलिए कपडे धोनेमें यह वहुत उपयोगी है।

सावुन वनानेके लिये जो सब उपकरण व्यवहृत होते हैं, वे एकदम परिष्कृत और विशुद्ध होने चाहिये। निम्न लिखित कुछ उपायोंसे तेल और चर्वी परिष्कृत की जा सकती है—१। अधिकांश तेल छान लेनेसे ही परिष्कृत होता है। साधारणतः ब्लाटिं फिल्टर कागज द्वारा तेल छाना जाता है। केवल फिल्टर कागजमेंसे तेल छान लेने पर भी यदि वह खूव परिष्कार न हो, तो उस तेलको पुनः काठके कोयलेमेंसे छान लेना होगा। काठके कोयलेके वदलेमें अस्थिचूर्ण अङ्गारका व्यवहार करनेसे तेल अधिकतर परिष्कृत और विशुद्ध होता है। निम्न भागमें छोटे छोटे छेदवाले अङ्गारपूर्ण वाक्सके मध्य तेल ढाल देना होता है। कोयलेके भीतरसे तल धीरे धीरे छेदमेंसे टपक कर परिष्कृत अवस्थामें वाहर निकलता है। उस तेलको फिरसे फिल्टर कागज द्वारा छान लेने पर ही तेल एकदम साफ हो जाता है।

२। उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा तेल यदि निर्मल न हो, तो एसिड द्वारा उसे साफ कर लेना चाहिये। एक सौ भाग गरम तेलमें एक या दो भाग उग्र गंधकद्रावक मिला कर लगातार हिलाना होगा। इस प्रकार हिला कर उसे २४ घंटे स्थिरभावमें रख देना होगा। इसके वाद उसमें थोडा और भी गरम जल मिला कर पुनः आवर्त्तन करना होगा। इस प्रकार जव तेल और जल मिलानेसे वह गाढा हो जाय, तो कुछ दिनोंके लिये उसे उसी अवस्थामें छोड दे। इसके वाद उसके ऊपर जव निर्मल तेल वहने लगे और तेलका मैल द्रावकसंयुक्त हो कर नीचे जम जाय, तव वडी सावधानीसे ऊपरका तेल ढाल कर फिरसे गरम जल द्वारा धो लेनेसे ही तेल विलकुल साफ हो जायेगा। साफ तेल जलके ऊपर तैरने लगता है, उस तेलको सावधानीसे अलग कर लेना होता है।

३। विकृत तेल अथवा चर्वी क्षारसे परिष्कृत की जाती है। तेल या चर्वीको कुछ गरम कर उसमें उष्ण अनुग्र काष्टिक सोडा या पटाश जल मिलावे और अच्छी तरह हिलावे, तो तेलके ऊपर मैल तैरने लगेगी। उस मैलको धीरे धीरे फेंक कर तेलके १०।१२ घंटा स्थिर होने दे। इससे निर्मल तेल ऊपरमें तैरने लगेगा। चर्वी शोधन करनेका यही सहज उपाय है।

तेल और चर्वीके भिन्न और भी कितने तैलाक्त पदार्थोंसे सावुन तैयार होता है। ओलिन नामक पदार्थ इनमें एक प्रधान सामग्री है। वत्ती वनानेके लिये चर्वीको निचोड कर उसके भीतरमें का स्टियारिन नामक पदार्थ पृथक् कर लेनेसे तेल जैसा तरल ओलिन निकलता है। वत्तीके कारखानेसे यह वहुतायतसे संग्रह किया जाता है। क्षार मिलने पर ओलिनसे वहुत कठिन सावुन वनता है, परंतु उसमें चर्वी या और कोई तेल नहीं मिलनेसे उसमेंसे ओलिनकी दुर्गंध नहीं जाती। ओलिनका तैयार किया हुआ सावुन सस्ता मिलता है।

वडे तेलके कारखानेमें तैलाधारके काटसे भी सावुन वनाने लायक सामग्री मिलती है। इन वहुत कुछ तैलाक्त सामग्रीको सावुन वनाने लायक करनेमें पहले इन्हें सोडा क्षारके साथ मिला कर आँच देनी होती है। पीछे ठंढा होने पर उसमें जलमिश्रित गंधकद्रावक प्रयोग कर ऊपरके वहते हुए तेलको संग्रह कर लेना होता है।

नाना प्रकारके सावुन प्रस्तुत होते हैं। उनमेंसे कुछ प्रचलित सावुनका विषय नीचे लिखा जाता है—

१। साधारण कपडा धोनेका सावुन—साफ सज्जीमिट्टी, कलि चूना और नारियलका तेल, समान भाग ले कर एक साथ मिलावे और पीछे जलमें घोले। उसके वाद उसको आँच पर चढ़ा कर वहुत देर तक उवाले। उवालने पर हत्थेसे लगातार घोटता रहे। ऐसा करनेसे वह गाढ़ा हो कर राल जैसा हो जाता है, किंतु तव भी उसमें कुछ जलका भाग रह जाता है। उस जलीय अंशको पृथक् करनेके लिये उसमें थोडा नमक डालना होता है। लवण गल कर जलके साथ मिल जाता और नीचे वैठ जाता है तथा घना पदार्थ ऊपर तैरने लगता है। अनन्तर उसे आँच परसे उतार कर मिट्टीके वरतनमें ठंढा करनेसे ही वह वहुत गाढ़ा

हो जाता है। इसी प्रकार साधारण कपड़ा धोनेका साबुन तैयार होता है।

२। कार्ड साबुन—जमनीमें प्रधानतः गायकी चर्बीसे कार्ड साबुन बनता है। फरासी देशमें अकसर अलीभके तेलसे साबुन बनाया जाता है। इसको मार्सेलिस अथवा कैसटाइल सोप कहते हैं। इसी प्रकार इङ्गलैण्डमें साबुन बनानेमें गायकी चर्बी और पामतैल अधिक मात्रासे दिया जाता है। अफ्रिकाके पाम नामक वृक्षके फलके अन्दर एक प्रकारका कोमल पदार्थ रहता है। उसीसे यह पामतैल तैयार किया जाता है। साबुन-के व्यवसायिगण इसके साथ कुछ रजन-साटीन और सिलिकेट आफ सोडा नामक सब पदार्थ मिला देते हैं। ये सब पदार्थ साबुनके साथ मिले रहने पर साबुन बहुत कड़ा होता है।

३। मटल्ड या मार्बल साबुन—मार्बल साबुन और कार्ड साबुनमें कुछ भी फर्क नहीं है, पर जो कार्ड साबुनमें जो सब आवर्जना रहती है, मार्बल साबुनमें वे सब नहीं रहती है। मार्बल साबुन बनानेमें आधे गाढ़े साबुनको बहुत धीरे धीरे ठंढा करना होता है। यह साबुन देखनेमें बहुत कुछ मार्बल या मर्मर-पत्थर जैसा होता है, इसीसे इसको मार्बल साबुन कहते हैं।

४। पेलो या हल्दी रंगका साबुन—किसी साधारण चर्बीसे तैयार किये हुए साबुनमें सैकड़े पीछे ४० भाग तक रजन साबुन मिला कर यह साबुन बनाया जाता है। इसमें रजन साबुन अधिक मात्रामें मिलानेसे साबुन बहुत नरम हो जाता है। अकसर किसी प्रकारका चर्बी साबुन और रजन साबुन तैयार करके उन दोनोंको फिरसे आगके ऊपर गला कर तथा उनमें थोड़ा क्षार जल मिला कर यह साबुन तैयार किया जाता है।

५। मेराइन या नमक विहीन साबुन—यह साबुन प्रधानतः नारियल तेलसे बनता है। लवणाक्त समुद्र जलमें भी यह साबुन व्यवहृत हो सकता है, इस कारण लोग इसे मेराइन या समुद्र सम्बन्धीय साबुन कहते हैं। साधारणतः या 'शीतलप्रक्रिया' द्वारा यह मेराइन साबुन तैयार किया जाता है। पहले तेलको ८०° फा० तक गरम कर उसमें निर्दिष्ट परिमाणका कष्टिक मिश्रित जल मिलावे और लगातार घोंटे। ऐसा करनेसे कुल मिश्रित पदार्थ जम जाता है। नारियलके तेलमें एक विशेष गुण यह है, कि नारियल तेलसे तैयार किया हुआ साबुन अधिक जल सोख सकता है यह साबुन जिस समय जमने लगता है, उस समय साबुनको अधिक कठिन करनेके लिये उसमें सिलिकेट, श्वेतसार आदि द्रव्य मिला दिये जाते हैं।

६। स्वच्छ साबुन—पहले साधारण साबुनको सुरासारमें गलाया जाता है। पीछे अतिरिक्त सुरासारमें वकयन्त्र द्वारा चुआ कर पृथक् करनेसे स्वच्छ गाढ़ा राल जैसा पदार्थ बन जाता है। अनन्तर साधारण उपाय द्वारा इस पदार्थको शीतल करनेसे वह स्वच्छ साबुनमें परिणत हो जाता है। फिर कभी कभी नारियल तेल, रेंड़ी तेल, चीनी और सुरासार मिला कर 'शीतलप्रक्रिया' द्वारा स्वच्छ साबुन बनता है। इस साबुनमें अमिश्रक्षार अधिक परिमाणमें रहता है, इस कारण शरीरमें इसका व्यवहार करना युक्तिसङ्गत नहीं है।

७। ग्लिसिरिन साबुन—ग्लिसिरिन और कठिन साबुन समान भागमें मिला कर ग्लिसिरिन साबुन बनता है। यह साबुन शरीरमें लगानेसे शरीर चिकना रहता है और ग्रीष्मकालमें शरीरका चमड़ा नहीं फटता।

८। औषध मिश्रित साबुन—साबुनके साथ नाना प्रकारकी औषध मिला कर चर्मरोग आदि दूर करनेके लिये साबुन बनता है। जो कोई औषध इसके साथ मिला कर औषधरूपमें जुलाबके लिये शरीरके भीतरी और चर्मरोग दूर करनेके लिये शरीरके ऊपर व्यवहृत हो सकती है। अकसर जमालगोटेका बीया जुलाब साबुनमें मिलाया जाता है। नाना प्रकारके औषधमिश्रित साबुन पाये जाते हैं, पर उनमें निम्न-लिखित उल्लेखयोग्य हैं—कार्बलिक, सुहागा, कपूर, आयोडिन, गन्धक, निम आदि। पशु पक्षीके चमड़ेकी रक्षा करनेके लिये चर्मव्यवसायिगण संखिया मिला हुआ साबुन व्यवहार करते हैं।

शरीरमें लगानेके लिये सदुगन्धयुक्त विशुद्ध साबुन आज कल सारे देशोंमें ही अधिक प्रचलित हुआ है। ये सब रंग बिरंगके होते हैं। साबुन बनानेके बाद उसमें

इच्छानुयायी रंग मिला कर उस रंग मिले हुए साबुनको एक विशेष यंत्रकी सहायतासे पीसा जाता है। इसके बाद उसमें इच्छानुसार गंध द्रव्य डाल कर किसी दूसरे यंत्रसे पुनः उसको पीसते हैं। इस प्रकार वह गंध द्रव्य जब अच्छी तरह साबुनके सभी अंशोंमें मिल जाता है, तब उसे विभिन्न सांचेमें डाल कर यंत्रकी सहायतासे नाना प्रकारके आकारमें बनाया जाता है। जिन सब साबुनोंमें बहुत थोडा अमिश्रक्षार और अम्ल रहता है, वे शरीरमें व्यवहार करने लायक सर्वोत्कृष्ट साबुन हैं। यह अमिश्र क्षार या अम्ल शरीरका विशेष अनिष्टकर है।

साबूदाना (हिं० पु०) सागूदाना देखो।

साब्दी (सं० स्त्री०) द्राक्षाविशेष, एक प्रकारकी दाख।

साब्रह्मचार (सं० क्ली०) सब्रह्मचारिणो भावः अण्, इनो लोपः। (पा ५।१।१३०) सब्रह्मचारीका भाव या धर्म।

साभर—पूर्ववङ्गके ढाका नगरका एक ग्राम। यह अक्षा० २३°५७´ उ० तथा देशा० ९०°१५´ पू० वंशीनदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या २ हजारके करीब है। यहां एक समय पाल राजाओंकी राजधानी थी। जिस समय सेनवंशीय राजे विक्रमपुरके अन्तर्गत रामपालसे राज्यशासन करते थे, उसके कुछ पहलेसे पालराजगण विक्रमणिपुरसे माणिकगञ्जके अन्तर्गत दासोडा तकके भूभागमें सुप्रतिष्ठित थे। इस भूभागकी राजधानी साभरमें आज भी पालराजाओंके प्रसादके अनेक चिह्न विद्यमान हैं। हालमें वहां नाना प्रकारके कारुकार्य समन्वित बुद्धमूर्तिशोभित तोरणका भग्नांश आविष्कृत हुआ है। बहुसंख्यक बौद्धस्तूप आज भी साभरके चारों ओर दिखाई देते हैं। यशोपाल नामक राजाका प्रतिष्ठित देवविग्रह अभी धामराई ग्राममें विद्यमान है। यह मूर्ति अभी यशोमाधव कहलाती है। किन्तु चतुर्भुज मूर्तिके दो हाथके नीचे दो बड़े सर्प देखे जाते हैं। वे विष्णुमूर्तिके अङ्गीय प्रतीत नहीं होते। राजा हरिश्चन्द्रपालकी अनेक कीर्त्तियां साभरमें हैं। उनके गढ़ और प्रासादका अंश जङ्गलसे ढका है। एक समय दासोडाके दत्तवंशीय कर्ण खांने साभरको अधिकार किया था। किंतु उस समय साभरका कोई विशेष गौरव न था। आज भी वहां कर्ण खांका गढ़ दिखाई देता है। साभरसे अनेक प्राचीन मुद्राएं पाई गई हैं। कहते हैं, कि वहांके अधिवासियोंको कभी कभी जमीनमें गडा हुआ काफी धन दैवक्रमसे मिल गया है। यहां जिन सब स्तूपोंके निदर्शन हैं, वे साभरके उत्तरपूर्वमें अवस्थित भावालके उपान्त तक विच्छिन्न भावमें नाना स्थानोंमें देखे जाते हैं। ये सब स्तूप खोदनेसे नाना प्रकारके ऐतिहासिक तत्त्वका उद्धार हो सकता है। हरिश्चंद्रके राजप्रासादके प्रकोष्ठमें अच्छी अच्छी बनारसी साडियोंसे भरा हुआ एक सन्दूक पाया गया था। कहना फजूल है, कि हाथ रखते ही वे सब साडियां चूर चूर हो गईं। राजप्रासादके अवस्थान तथा नाना प्रकारकी अवस्थाकी पर्यालोचना करनेसे मालूम होता है, कि जिन्होंने इस पुरीको ध्वंस किया था, वे यहां नहीं रहते थे। अतएव आज भी गुप्तभावमें नाना प्रकारके बहुमूल्य द्रव्यादि यहां तमाम फैले हुए हैं।

यहां डाकघर, सबरजेष्ट्री आफिस, पुलिसका थाना और स्टीमरस्टेशन है। सूती कपडे और लोहेका यहां कारबार भी चलता है।

साभापत (सं० पु०) सभापतेरपत्यं (अश्वपत्यादिभ्यश्च। पा ४।१।८४) इति अण्। १ सभापतिका अपत्य। (त्रि०) २ सभापति-सम्बंधीय।

साभ्राङ्गिका (सं० स्त्री०) छन्दोभेद।

साभ्रमती (सं० स्त्री०) नदीभेद।

साम (सं० क्ली०) सममेव स्वार्थे अण्। सम देखो।

सामक (सं० क्ली०) समभेव सामं अण्, ततः स्वार्थे कन्। १ मूल ऋण, कर्जका असल रुपया। २ सान धरनेका पत्थर। ३ तेकुली। साम अधीते वेद वा सामन् (क्रमादिभ्यो वुन्। ४।२।६१) इति वुन्। (त्रि०) ४ सामवेदाभिज्ञ। ५ सामवेदाध्ययनकारी।

सामकपुंख (सं० पु०) सरफोंका घास।

सामकारी (सं० त्रि०) साम करोतीति कृ-णिनि। १ सान्त्वनाकारी, जो मीठे वचन कह कर किसीको ढारस देता हो। (क्ली०) २ एक प्रकारका सामगान।

सामग (सं० पु०) साम गायतीति गै शब्दे टक्। १ सामवेदी ब्राह्मण। सामगान करना इनका कर्त्तव्य है। इसीसे सामग शब्दसे सामवेदी ब्राह्मणका बोध होता है। २ विष्णु। (भारत १३।१४९।७५)

"वेदानां सामवेदोऽस्मि" (गीता १० अ०)

(त्रि०) ३ सामवेदज्ञ, सामवेद जाननेवाला।

सामगण (सं० पु०) साममेद।

सामगर्भ (सं० पु०) साम गर्भो यस्य। विष्णु।

सामगान (सं० पु०) साम गानं यस्य। १ सामग, सामवेदी ब्राह्मण। (क्ली०) २ सामवेदगान। सामगगण सामवेदका गान करते हैं। ३ साममेद।

सामगाय (सं० पु०) सामगानकारी, वह जो सामगानका अच्छा ज्ञाता हो।

सामगिर (सं० त्रि०) मिष्टवाक्य युक्त, मीठे वचनसे भरा हुआ।

सामगी (सं० स्त्री०) साम गायतीति गै-टक्, ङीप्। सामगब्राह्मणपत्नी, सामगकी स्त्री।

सामगीत (सं० क्ली०) गै भावे क्त, साम्नः गीतं गानं। सामगान।

सामग्री (सं० स्त्री०) समग्रस्य भावः ष्यञ्, अभिधानात् स्त्रीत्वं, ङीष् यलोपः। १ कारणसमूह, कारणकलाप। २ वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्यमें उपयोग होता है। २ सामान, असबाब। ३ आवश्यक द्रव्य, जरूरी चीज। ४ किसी कार्यकी पूर्तिके लिये आवश्यक वस्तु, साधन।

सामग्र्य (सं० क्ली०) समग्रस्य भावः समग्र-ष्यञ्। १ समुदायत्व, दलबल। २ अस्त्रशस्त्र, हथियार। ३ भाण्डार, खजाना।

सामज (सं० त्रि०) साम्नो सामवेदात् जायते इति जन-ड। १ सामवेदजात, जो सामवेदसे उत्पन्न हुआ हो। (पु०) २ हस्ती, हाथी। (मेदिनी) ब्रह्मा जब सामवेदका गान करते हैं, तब हाथियोंकी उत्पत्ति होती है, इसीसे सामज शब्दसे हाथीका बोध होता है। (माघ १२।११)

सामञ्जस्य (सं० क्ली०) समञ्जसस्य भावः समञ्जस-ष्यञ्। १ औचित्य। २ उपयुक्तता। ३ अनुकूलता। ४ वैषम्य या विरोध आदिका अभाव।

सामतन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रभेद।

सामतस् (सं० अव्य०) सामन् तसिल्। सामविषयमें, सामसे।

सामतेजस् (सं० त्रि०) साममन्त्ररूप तेजोविशिष्ट।

सामत्रय (सं० पु०) हर्रे, सोंठ और गिलोय इन तीनोंका समूह।

सामत्व (सं० क्ली०) साम्नः भावः त्व। सामका भाव या धर्म, सामता।

सामन् (सं० क्ली०) १ सामवेद। "गीतेषु सामाख्या" (जैमिनि) गीयमान मन्त्रका नाम साम है। यज्ञमें जिन सब मंत्रोंके गान करनेका विधान है, उनको साम कहते हैं।

२ चार वेदोंमें एक वेद। साम, ऋक्, यजुः और अथर्व ये चार वेद हैं। वेदोंमें साम तीसरा वेद है। इस वेदकी शाखा एक सहस्र है। प्रत्येक वेदमें ही भिन्न-भिन्न उपनिषद् उत्पन्न हुए हैं। छान्दोग्य आदि उपनिषद् साम वेदसे निकली हैं। वैदिक इसे सामत्रयी ही कहते हैं।

सायणाचार्यने सामवेद भाष्यकी अवतरणिकामें साम लक्षण इस तरह निर्देश किया है—मन्त्र और ब्राह्मण दो प्रकारका वेद भाग माना गया है। महर्षि जैमिनिने (अपने मीमांसासूत्रमें) ऋक् यजु और सामरूप मन्त्रविशेष स्वीकार कर इनके लक्षण इस प्रकार बतलाये हैं। जिन मन्त्रोंकी जहां अर्थवश पादव्यवस्था या पद्य समझो, वे ऋक्, गीतरूपसे जो सब मंत्र निर्दिष्ट हैं, वही साम है, इसके सिवा अवशिष्ट मंत्र यजुः शब्द वाची हैं। जैमिनीय 'न्यायमालाविस्तर'में यह स्पष्ट कर दिया गया है—सब वेदोंमें ऋक्, यजु और साम-लक्षणात्मक मन्त्र हैं। इस सङ्कर दोषका किस तरह खण्डन किया जाये? (तैत्तिरीयब्राह्मणमें १।२।२६) इस तरहकी श्रुति है,—'हे अहे बुध्निय! जिस मन्त्र भागको ऋषियोंने ऋक्, साम और यजुमें दसे तीन प्रकारका कहा है, उनकी रक्षा करो।' इससे स्पष्ट ही मालूम होता है, कि मन्त्र भाग तीन प्रकारका है। किन्तु उनमें कौन मंत्र ऋक्, कौन साम और कौन यजुः है, इसे जाननेका कोई उपाय नहीं। इसलिये भाष्यकार सायणाचार्यने सामलक्षण समझानेके लिये विस्तारपूर्वक आलोचना की है। विषय बढ़ जानेके भयसे उनके अभिप्रायका सारांश ही यहां देता हूं।

इस समयके यजुर्वेद नामक प्रसिद्ध ग्रन्थमें भी— "एतत् साम गायन्नास्ते" (तै० स० १।६ ५।१) इस तरह प्रतिज्ञा कर यजुर्वेदमें कुछ सामवेद भी स्वीकृत हुआ

है। फिर सामवेदमें भी—"अक्षितमसि अच्युतमसि प्राणसंशितमसि" (छा० ब्रा० ३।१७) इत्यादि यजुर्मंत्र दिखाई देता है और गीयमान सामसमूहके आश्रयमें ऋक् भी सभी सामवेदमें गृहीत हुई हैं। तब क्या ऋक् मंत्रका लक्षण नहीं ?

इसके उत्तरमें जैमिनिने लिखा है—पादबन्ध और अर्थयुक्त छान्दोबद्ध मन्त्र ही ऋक् हैं। गीतिरूपसे रचे मन्त्र सामवेदीय हैं और छन्दः और गीतवर्जित गद्य मंत्र ही यजुः है। साम गीतिमें रचित है—यह स्पष्टरूपसे समझानेके लिये न्यायविस्तर ग्रंथमें (७।२) इस तरहसे 'रथन्तर' शब्द आलोचित हुआ है-—

'कवती'में रथन्तर साम गान करना होता है। यहां सहसा यह सन्देह होता है, कि "कया न श्चित्र आभुव" इत्यादि तीन ऋकोंको ही कवती कहते हैं। ये तीन ऋक् ही स्वर और स्तोभादिके योगमें गीत होनेसे उसको 'वामदेव' साम कहा जाता है। (उ० गा०१।१।५) इधर "अभित्वा शूर नो नुमः" (छ० आ० ३।१।५।१) यह मन्त्र स्वर आदिके योगसे गीत हो कर रथन्तर साम नामसे प्रसिद्ध है (आ० गा० २।१।२१)। रथन्तर साम गाओ, कहनेसे इसका ही पाठ करना होता है। ऐसे स्थलमें रथन्तर कहनेसे, स्वर-स्तोभादियुक्त "अभित्वाशूर नो नुमः" यह ऋक् ही अथवा क्या केवल स्वरस्तोभादि समझोगे। स्वरस्तोभादि युक्त यह ऋक् ही रथन्तर समझना होगा। "अभित्वा" ऋक् जिस तरह स्वरस्तोभमें गान करनेकी विधि है, और वही रथन्तर साम कहके प्रसिद्ध है, कवती ऋक् भी उसी तरह रथन्तरीय स्वरस्तोभादि युक्त कर गान करो, यही अभिप्राय है। साम, बृहत्साम और रथन्तर साम कहनेसे वही वही स्वर समझने होंगे। चाहे जिस मन्त्रका आश्रय हो, उस स्वरका गान करनेसे वही साम होगा।

सामगान फिर अपने आश्रयस्वरूप ऋचोंके अक्षर क्रुष्ट आदि सप्तस्वर और अक्षरविकार आदि द्वारा सम्पन्न होता है। क्रुष्ट, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम और षष्ठ प्रधानतः ये सात स्वर हैं। इनके उच्चारणके अनुसार नाना प्रकारसे विभिन्न हो जाते हैं। छान्दोग्योपनिषद्में इसीसे सामको गति या उगाथ कहा है।

केवल स्वर जाननेसे ही सामगान सम्पन्न नहीं होता, साथ ही यह भी जानना आवश्यक है, कि किस स्थानमें किस तरहके अक्षरोंमें विकार आदि होगा। इसीसे मीमांसासूत्रभाष्यमें शबरस्वामीने लिखा है—

आभ्यन्तरप्रयत्नके लिये क्रिया विशेष ही गीति है। यही बृहत् रथन्तर आदि विविध स्वरका अभिव्यञ्जक है, वही साम कहा जाता है और मिताक्षरादि नियमोंसे ग्रथित ऋक् (पद्य) अवलम्बनसे गीत हो जाता है। केवल स्वर ही इस गीतिका सम्पादक नहीं ऋक्समूहका कहां अक्षरविकार, कहाँ विश्लेष, कहाँ विकर्षण, कहाँ अभ्यास और विराम होगा, इसके सिवा स्तोभ साधन आदि सभी सामवेदमें लिखा है। छान्दोग्य तलवकार आदि शाखा भेदसे एक एक साम भी भिन्न भिन्न प्रकारसे गान होता है।

स्तोभ ही प्रधान सामाङ्ग है। इसके सम्बन्धमें न्यायविस्तरकारने यथेष्ट आलोचना की है। ऋक्का वर्ण विकृत हो रूपान्तरित न हो वृद्धिप्राप्त होने पर ही उस वर्द्धित वर्णों को स्तोभ कहते हैं। स्तोभ भी दो प्रकारका है—पदस्तोभ और वाक्यस्तोभ। गेय ऋक्से अतिरिक्त फिर भी ऋगंशरूपसे ऋक्में या पृथक आश्रय रूपमें ही गीतपद या पदावलीको पदस्तोभ और उसी प्रकार वाक्यावलिको वाक्यस्तोभ कहते हैं। पदस्तोभ १५ और वाक्यस्तोभ ६ प्रकारका है।

जैसे अक्षरविकार आदि और स्तोभयोग सामगीतिका हेतु है, वैसे ही वर्णलोप भी अन्यतम कारण है। जैसे ज्योतिष्टोममें विधि है—"यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे" इत्यादि ऋग् उत्पन्न साम द्वारा स्तव करना। 'यज्ञायज्ञा' ऋक्में गिरा शब्द है, योनिगान ग्रन्थमें इस ऋक्मूलक साममें गिरा स्थानमें अक्षर-विकृति और आगम कर 'गायिरा' गीत होता है। इधर ताण्ड्यब्राह्मणमें विधि है—गिराको इरा कर अर्थात् 'ग' लोप कर ज्योतिष्टोममें गान करना। अभी बात यह है, कि योनिगान और ताण्ड्यब्राह्मण दोनों वेद हैं—कौन ग्राह्य है? ताण्ड्यब्राह्मणमें और भी लिखा है, 'गिरा गिरा' न कहना। 'गिरा गिरा' कहनेवाला अपनेको ही

गिरायमा।' (८।६) सुतरां यह विशेष विधि मानना ही होगी। इसी कारणसे ज्योतिष्टोममें 'गिरा' पद गायिरा, पीछे इस गायिराका ग लोप कर 'आइरा' रूपसे ज्योतिष्टोममें गात होगा।

इसी तरह सायणाचार्यने सामभाष्यकी उपक्रमणिकामें सामवेदके सम्बन्धमें विस्तारपूर्वक आलोचना की है। साममन्त्रमें ही देवताओंके स्तव करनेका विधान रहनेसे नाना शास्त्रोंमें सामवेदका प्राधान्य सूचित हुआ है। अन्यान्य वेदोंकी तरह सामवेदके मन्त्र और ब्राह्मणको छोड़ आरण्यक, उपनिषद्, श्रौतसूत्र, कल्पसूत्र, प्रातिशाख्य आदि बहुतेरे सामवेदीय ग्रंथ प्रचलित हैं। वेद शब्दमें सामसाहित्य प्रसङ्गमें उसका विस्तारपूर्वक प्रसङ्ग लिपिबद्ध है, उसका यहां पुनरुल्लेख करना अनावश्यक है।

२ शत्रु वशीकरणोपायविशेष। साम, दान, भेद और दण्ड ये चार उपाय हैं। मनुस्मृतिमें लिखा है, कि जो सब शत्रु राजाके विरुद्ध आचरण करे, राजा साम, दान, भेद और दण्ड इन चारों उपाय द्वारा उसे वशीभूत करे। प्रियवाक्य कथनका नाम साम और सन्धिको भी साम कहते हैं। पहले शत्रुके प्रति सामका प्रयोग किया जाता है, यदि साम द्वारा शत्रु शान्त हो जाये, तो उसके प्रति अन्योपाय करनेकी आवश्यकता नहीं। साम द्वारा शत्रु शान्त न हो तो दान, इसके बाद भेद और दण्डका विधान करना चाहिये। (मनु ७ अ०)

सामन (सं० त्रि०) धनशाली, धनी।

सामना (हिं० पु०) १ किसीके समक्ष होनेकी क्रिया या भाव। २ भेंट, मुलाकात। ३ किसी पदार्थका अगला भाग, आगेकी ओरका हिस्सा। ४ किसीके विरुद्ध या विपक्षमें खड़े होनेकी क्रिया या भाव, मुकाबला।

सामनी (सं० स्त्री०) पशुबन्धनरज्जु, गाय आदि बांधनेकी रस्सी।

सामने (हिं० क्रि० वि०) १ सम्मुख, समक्ष, आगे। २ उपस्थितिमें, मौजूदगीमें। ३ सीधे, आगे। ४ मुकाबलेमें, विरुद्ध।

सामन्त (सं० पु०) १ किसी राज्यका कोई बड़ा जमींदार या सरदार। २ वीर, योद्धा। ३ पड़ोसी। ४ श्रेष्ठ राजा। ५ समीपता, सामीप्य, नजदीकी।

सामन्त—ताजिकसारटीकाके प्रणेता एक ज्योतिर्विद्। इन्होंने राजा श्रीपति विष्णुदासके राज्यकालमें १६१७ या १६६० ई०को १० वीं फाल्गुनको ग्रन्थ समाप्त किया।

सामन्त—चाहमान वंशीय एक राजा।

सामन्तक (सं० क्ली०) १ परिधि। २ व्याप्ति, घेरा।

सामन्तदेव—एक प्राचीन हिन्दू राजा।

सामन्त भारती (सं० पु०) राग मल्लार और सारङ्गके मेलसे बना हुआ एक प्रकारका संकर राग।

सामन्तराज—सूर्यप्रकाशके रचयिता। ये श्रीकृष्णके पुत्र थे। इनका दूसरा नाम हरिसामन्तराज भी था।

सामन्त सारंग (सं० पु०) एक प्रकारका सारङ्ग राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सामन्तसिंह—कुछ हिन्दू राजे। १ एक राजपूत सामन्त। ये राजा धारावर्षके छोटे भाई प्रह्लादन द्वारा पराजित हुए थे। २ मेवाड़के गुहिलवंशीय राजा क्षेमसिंहके पुत्र। ३ मण्डलीके एक राजा। ये अपने वीर्यबलसे महामण्डलेश्वर राणक कह कर परिचित थे। इनके पिताका नाम संग्रामसिंहदेव था। ४ जोधपुरके एक राजा। ये महाराजकुल सामन्तसिंहदेव नामसे भी परिचित थे।

सामन्तसेन—एक राजा। ये बङ्गालके सेन वंशीय राजा हेमन्तसिंहके पिता और विजयसेनके पितामह थे।

सामन्ती (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी रागिणी जो मेघ रागकी प्रिया मानी जाती है। २ सामन्तका भाव या धर्म। ३ सामन्तका पद।

सामन्तेय (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सामन्तेश्वर (सं० पु०) सामन्तरूप ईश्वर। चक्रवर्ती, सम्राट्, सामन्त राजाओंके अधिपति।

सामन्य (सं० पु०) सामन् (तत्र साधुः। पा ४।४।९८) इति यत्। सामवेदज्ञ ब्राह्मण। (भट्टि ४।९)

सामपुष्पि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सामप्रगाथ (सं० पु०) छौलक, साममन्त्रपाठक।

सामभृत् (सं० त्रि०) उद्गाथा, यज्ञमें सामवेद गान करनेवाले। (ऋक् ७।३३।१४)

साममय (सं० त्रि०) सामन् स्वरूपे मयट्। सामस्वरूप, साम।

सामयाचारिक (सं० त्रि०) सामयाचार एव (विनयादिभ्यष्ठक्। पा ५।४।३४) इति ठक्। समयाचार।

सामयिक (सं० त्रि०) समयः प्राप्तोऽस्य समय (समयस्तदस्य प्राप्त। पा ५।१।१०४) इति ठञ्। १ समयोचित, समयके अनुसार। २ समय सम्बन्धी, समयका। ३ वर्त्तमान समयसे संबंध रखनेवाला।

सामयुगीन (सं० त्रि०) समयुगविषयमें उत्तम।

सामयोनि (सं० पु०) १ ब्रह्मा। २ हस्ती, हाथी। (त्रि०) ३ सामोत्थवस्तु।

सामर (सं० पु०) समर एव अण्। १ समर, लड़ाई। (त्रि०) २ युद्धभव, युद्धका।

सामरथ (हिं० स्त्री०) सामर्थ्य देखो।

सामराज—शृङ्गारामृतलहरीके प्रणेता।

सामराजदीक्षित—१ अक्षरगुम्फ और आर्यात्रिशतीके प्रणेता। २ नरहरिके पुत्र। ये रामचरितनाटक और धूर्त्तनर्त्तक नामक ग्रन्थके प्रणेता थे।

सामराधिप (सं० पु०) सामरस्य अधिपः। समरका अधिपति, सेनापति।

सामरिक (सं० त्रि०) समर-सम्बन्धीय।

सामरिकपोत (सं० पु०) युद्धसम्बन्धीय जहाज, जंगी जहाज।

सामरिक-विचारालय (सं० पु०) वह विचारालय जिसमें सेना आदिके अपराधोंका विचार होता है।

सामरी—सामुद्रिक शब्दका अपभ्रंश। समुद्रोपकूलवासी कालिकटके राजे 'सामरी' उपाधिसे भूषित थे, पीछे लोग उन्हें 'जामोरिन्' कहने लगे। कालिकट देखो।

सामरेय (सं० त्रि०) समर-सम्बन्धीय, युद्धका।

सामर्थी (हिं० पु०) १ सामर्थ्य रखनेवाला, जिसे सामर्थ्य हो। २ जो किसी कार्यके करनेकी शक्ति रखता हो। ३ पराक्रमी, बलवान्।

सामर्थ्य (सं० क्ली०) समर्थस्य भावः, समर्थ-ष्यञ्। १ योग्यता। २ शक्ति, ताकत। ३ समर्थ होनेका भाव, किसी कार्यके सम्पादन करनेकी शक्ति। ४ शब्दकी व्यञ्जना शक्ति, शब्दकी वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ५ व्याकरणमें शब्दोंका परस्पर संबंध। (त्रि०) ६ श्लाघ्य, प्रशंसनीय।

सामर्थ्यवत् (सं० त्रि०) सामर्थ्ययुक्त, योग्यताविशिष्ट, ताकतवर।

सामर्ष (सं० त्रि०) अमर्षेण सह वर्त्तमानः। अमर्षयुक्त क्रोधाविशिष्ट।

सामलकोट—मन्द्राजप्रदेशके गोदावरी जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १७° ३' १०" उ० तथा देशा० ८२° २' ५०" पू० काकनाडासे ७ मील उत्तरमें अवस्थित है। पहले यहां सेना रखनेको एक छोटी छावनी थी। १८६६ ई०के जनवरी मासमें वह सेना यहांसे छोड़ दिया गया। वह सेनावारिक १७८६ ई०में बनाया गया था तथा आज भी वह उसी अवस्थामें मौजूद है। राजमहेन्द्री और काकनाडा नगरके साथ यह एक नहरसे मिला हुआ है। यहां लुदारोव चर्च मिसनका एक गिरजा घर है।

सामलायन (सं० त्रि०) समल पक्षादित्वात् फक् (पा ४।२।८०) १ समल स्थानसे प्रत्यागत। २ समलस्थानवासी। ३ समल स्थानके पासका स्थान।

सामलेय (सं० त्रि०) समल सख्यादित्वात् ढञ् (पा ४।२।८०) सामलायन देखो।

सामलय (सं० त्रि०) समल सङ्काशादित्वात् ण्य। (पा ४।२।८०) सामलय देखो।

सामवत् (सं० त्रि०) सामयुक्त, सामविशिष्ट।

सामवर्ण्य (सं० क्ली०) समवर्ण भावे ष्यञ्। समवर्णता, एक प्रकारका वर्ण।

सामवश (सं० त्रि०) सामच्छन्दानुगामी।

सामवाद (सं० पु०) साम्नः वादः। १ सामकथन, प्रिय वचन कहना। २ प्रिय वाक्य, मीठा वचन।

सामवायिक (सं० पु०) समवायान् समवैति समवाय (समवायान् समवैति। पा ४।४।४३) इति ठक्। १ मंत्री, वजीर। (त्रि०) २ समवायसम्बंधयुक्त, जिसमें समवाय सम्बंध हो, नित्य सम्बन्धविशिष्ट। नैयायिकोंके मतसे नित्य संबंधका नाम समवाय है। समवाय देखो। ३ समूह या झुण्ड सम्बंधी।

सामविद् (सं० त्रि०) साम वेत्ति विद्-क्विप्। सामज्ञ, सामवेत्ता।

सामविधान (सं० क्ली०) साम्नः विधानं। सामवेदोक्त विधान। सामवेदमें जो कर्त्तव्यानुष्ठान आदिष्ट हुए हैं, सामविधान-ब्राह्मणमें और अग्निपुराणमें वे सब वर्णित हुए हैं। वे मन्त्र या मन्त्रांश हैं। उनका जप या उच्चारण या पत्रमें लिख कण्ठादिमें धारण करनेसे विशेष विशेष फल लाभ होता है। जिन स्त्रियोंका गर्भ गत हो जाता है, वे यदि "अवोध्यग्नि" इस मन्त्रद्वारा घृत अभ्युक्षण कर घृत शेष द्वारा मेखला बन्धन करे, तो निश्चय ही गर्भ-रक्षा होगी। बालक उत्पन्न होने पर उसके कण्ठमें "सोमं राजानं" इस मन्त्र द्वारा मणिबन्धन कर देनेसे वह बालक सब व्याधियोंसे मुक्त होता है। प्रातःकाल और सायंकालमें 'गहरेषुण' मन्त्र द्वारा गौओंकी उपासना करने पर बहुतेरी गौयें प्राप्त होती हैं। द्रोणपरिमित यव घृताक्त कर 'वात आवातु भेषणं' मन्त्र द्वारा जो व्यक्ति विधिवत् होम करता है, वह सर्वप्रकारका मायाबन्धन तोड़ सकता है। "प्रदेवो दासेन" और वषट्कारसमन्वित "अभित्वा पूर्व्वपातये" मन्त्र द्वारा तिलहोम करनेसे अत्यन्त कर्मदक्ष होता है। पिष्टमय हाथी, घोडा और पुरुष निर्माण कर 'वासरंश्म' मन्त्र द्वारा सहस्र बार होम करनेसे संग्राममें विजयलाभ होता है। इत्यादि और भी अनेक आधिभौतिक व्यापार विधिवद्ध दिखाई देता है। विषय बढ़ जानेके भयसे उद्धृत नहीं किया गया।

सामविप्र (सं० पु०) सामवेदी ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेदके विधानोंके अनुसार करते हों।

सामवेद (सं० पु०) भारतीय आर्योंके चार वेदोंमेंसे प्रसिद्ध तीसरा वेद।

विशेष विवरण सामन् और वेद शब्दमें देखो।

सामवैदिक (सं० त्रि०) सामवेदसम्बन्धीय, सामवेदी ब्राह्मण।

सामवेदीय (सं० त्रि०) सामवेद-सम्बन्धीय, सामवेदी ब्राह्मण।

सामशिरस् (सं० त्रि०) साममन्त्र ही जिसमें शीर्षस्थान है।

सामश्रवस् (सं० पु०) ऋषिभेद।

सामश्रवस (सं० पु०) सामश्रवाका गोत्रापत्य।

सामश्राद्ध (सं० क्ली०) साम्नः श्राद्धं। सामवेदीय गणका श्राद्ध। सामवेदी ब्राह्मणोंका जो श्राद्धानुष्ठान होता है, उसे सामश्राद्ध कहते हैं।

सामसंहिता (सं० स्त्री०) १ सामवेदकी संहिता। २ सामवेद।

सामसरस् (सं० क्ली०) सामभेद।

सामसाला (हिं० पु०) राजनीतिके साम, दाम, दंड और भेद नामक अंगोंका जाननेवाले, राजनीतिज्ञ।

सामसावित्री (सं० स्त्री०) सावित्रीमन्त्रभेद।

सामसुर (सं० पु०) सामभेद।

सामसूक्त (सं० क्ली०) सामवेदोक्त सूक्त, सामप्रगाथ, वह सूक्त जो सामवेदमें कहे गये हैं।

सामस्त (सं० त्रि०) समस्त, कुल।

सामस्तम्बि (सं० पु०) समस्तम्बका गोत्रापत्य, ऋषिभेद। (प्रवराध्याय)

सामस्तिक (सं० त्रि०) सामस्त, समस्तयुक्त।

सामस्त्य (सं० क्ली०) समस्तस्य ष्यञ् कर्मणि भावे च। (पा ५।१।१२४) समस्तका भाव।

सामा (हिं० पु०) १ सां देखो। २ सामान देखो। (स्त्री०) ३ श्यामा देखो।

सामागुरी—आसाम प्रदेशके नागा पहाड़ी जिलेका एक शहर। पहले यहां जिलेका सदर और सामान्तरक्षार्थ सेनानिवासका केन्द्र था। यह अक्षा० २५° ४५' ३०" उ० तथा देशा० ९३° ४८' पू० धनेश्वरी नदीकी एक शाखा के किनारे अवस्थित है। समुद्रपृष्ठसे २४७७ फुट ऊंचे शिवसागर जिलेके गोलाघाटसे ६१ मील दक्षिण पड़ता है।

पहाड़ी नागाजातिके बार बार उपद्रवसे तंग आ कर भी अङ्गरेजराजने १८६७ ई०में यहां सेना रखनेकी व्यवस्था की, किन्तु कोहिमा नागादलनका उपयुक्त स्थान जान कर १८७८ ई०में वे यहांसे छावनी उठा कर कोहिमा ले गये। यह स्थान अत्यन्त स्वास्थ्यकर है। दूरकी पहाड़ी उपत्यकासे जलनाली निकाल कर नगरमें जलका प्रबंध किया गया है। दुर्ग प्राकारादिसे सुरक्षित नहीं है।

सामाङ्ग (सं० क्ली०) सामवेदका अङ्ग, सामवेदकी शाखा।

सामाचारिक (सं० त्रि०) समाचार एव (विनयादिभ्यष्ठक् । पा ५।४।३४) इति स्वार्थे ठक् । समाचार, खबर।

सामाजिक (सं० पु०) समाज (समवायान् समवैति । पा ४।४।४३) इति ठक्, यद्वा समाजं रक्षतीति (रक्षति । पा ४।४।३३) इति ठक । १ सभ्य, सभासद । (त्रि०) २ सहृदय, रसज्ञ । ३ समाजसे संबंध रखनेवाला, समाजका । ४ समासे सबंध रखनेवाला ।

सामाजिक तन्त्र (स ० क्ली०) समाज सम्बन्धीय नियम ।

सामाजिकता (स ० स्त्री०) सामाजिकका भाव, लौकिकता ।

सामाजिकनियम (सं० पु०) दश आदमी मिल कर जहां एक साथ रहते हैं, वहां उसे समाज कहते हैं। इस समाज में जो सब नियम लिपिबद्ध है अर्थात् दश मनुष्यों द्वारा जो सब नियम चलाये गये हैं, वही सामाजिक नियम है।

सामातान (सं० पु०) सामप्रगाथ ।

सामात्य (सं० त्रि०) अमात्येन सह वर्त्तमानः। अमात्ययुक्त, अमात्यविशिष्ट ।

सामात्मनाश्य (सं० स्त्री०) १ पर्यायक्रमसे एकके बाद एक ग्रहका विषुवरेखामें प्रवेश और निर्गम। २ पर्यायिक आगम और निगम, आरम्भन और समाधान ।

सामाधान (सं० पु०) १ शमन करनेकी क्रिया, शान्ति । २ शङ्काका निवारण । ३ किसी कार्यको पूर्ण करनेका व्यापार, संपादन ।

सामान (फा० पु०) १ किसी कार्यके लिये साधन स्वरूप आवश्यक वस्तुएं, उपकरण, सामग्री। २ माल, असबाब । ३ औजार। ४ बंदोबस्त, इंतजाम ।

सामानग्रामिक (स ० त्रि०) समान-ग्राम-ठञ् । समानग्राम भव, एक ही ग्राममें रहनेवाले, एक ही गांवके निवासी ।

सामानाधिकरण्य (स ० स्त्री०) समानाधिकरणका भाव, एकाश्रयवृत्ति, साधारण गुण या धर्मका अवस्थिति स्थान।

सामान्य (सं० क्ली०) समान एव स्वार्थे ष्यञ्। १ जाति, प्रकार, रकम, गोत्व, मनुष्यत्वादि जातिसाधर्म्य, गोर गोत्व और मनुष्यका मनुष्यत्व ।

वैशेषिकदर्शनमें ६ पदार्थ स्वीकृत हुए हैं, उनमें सामान्य एक है, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, समवाय और विशेष ये छः पदार्थ हैं। नित्य और अनेक समवेत पदार्थों का नाम सामान्य है। इसका दूसरा नाम जाति है। एक वस्तुका संयोग नहीं होता, एकसे अधिक वस्तुओंका ही संयोग होता है, अतएव संयोग अनेक समवेत है सही; किन्तु यह संयोग नित्य नहीं अनित्य है। फिर जलपरमाणुओंका रूप, आकाशका परम महत्परिणाम नित्य और समवेत होने पर भी अनेक समवेत नहीं, अत्यंताभाव नित्य और अनेक वृत्ति होने पर भी समवेत नहीं है, अतः ये सब पदार्थ सामान्य हो नहीं सकते। क्योंकि सामान्य लक्षणोंसे अभिहित हुआ है, कि नित्य और अनेकसमवेत पदार्थों का नाम सामान्य है। सुतरां इस लक्षणके अनुसार उक्त सब पदार्थोंका नित्यत्व है, अनेक समवेतत्व नहीं है, फिर अनेक समवेतत्व है, नित्यत्व नहीं। अतएव वे सामान्य हो नहीं सकते। यह सामान्य दो प्रकारका है—पर और अपर। इनका दूसरा नाम—पराजाति और अपरा जाति। अधिकदेशवृत्ति पर सामान्य और अल्पदेशवृत्ति अपर सामान्य है। द्रव्य, गुण और कर्म इन तीन पदार्थोंकी सत्ता नामकी एक जाति है। इस सत्ताकी अपेक्षा अधिक देशवृत्ति और जाति नहीं है। इसीलिये यह परसामान्य है। घटत्वादि जाति सर्वापेक्षा अल्पदेशवृत्ति है, इसलिये वे अपराजाति हैं। द्रव्यत्व जाति क्षित्यादि जाति अपेक्षा अधिक देशवृत्तिकी वजह परा और सत्ता अपेक्षा अल्पदेश वृत्तिके कारण अपरा इसलिये उन्हें परापर जाति कहते हैं।

२ सादृश्य, समानता, तुल्यत्व । ३ साधारण्य, साधारणका कार्य। ४ काव्यालङ्कारविशेष। जिस जगह प्रकृत विषयका सादृश्य गुण द्वारा अन्यतादात्म्य होता है अर्थात् जिस स्थलमें साधारण धर्मबलसे अनेक वस्तुओंका एकत्व सम्बन्ध हुआ है, वहां यह अलङ्कार होता है। (त्रि०) ५ अनेकसम्बन्धी एक वस्तु, साधारण ।

सामान्यकुशण्डिका (सं० स्त्री०) कुशण्डिकाविशेष। संस्कारादि कार्यमें यदि होम करना हो, तो पहले सामान्य कुशण्डिका कर पीछे उस संस्कारका होम करे। यह सामान्य-कुशण्डिका साम, ऋक् और यजुर्वेदसे तीन प्रकारका है। भवदेवादिकी पद्धतिमें इस कुशण्डिकाकी पद्धति लिखी है। कुशण्डिका देखो।

सामान्यछल (सं० पु०) न्याय-शास्त्रके अनुसार एक प्रकारका छल। इसमें संभावित अर्थके स्थानमें अति सामान्यके योगसे असंभूत अर्थकी कल्पना की जाती है। जब वादी किसी संभूत अर्थके विषयमें कोई वचन कहे, तब सामान्यके संबंधसे किसी असंभूत अर्थके विषयमें उस वचनकी कल्पना करनेकी क्रियाको सामान्य-छल कहते हैं। विशेष विवरण छल शब्दमें देखो।

सामान्यज्वर (सं० पु० साधारण ज्वर, मामूली बुखार।

सामान्यतः (सं० अव्य०) सामान्य रूपसे, साधारण रीतिसे, साधारणतः।

सामान्यतया (सं० अव्य०) सामान्य रूपसे, मामूली तौरसे, साधारणतया।

सामान्यतोदृष्ट (सं० पु०) १ तर्क और न्यायशास्त्रके अनुसार अनुमान संबंधी एक प्रकारकी भूल। यह भूल उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थके द्वारा अनुमान करते हैं जो न कार्य हो और न कारण। जैसे किसी आमको बौरते देख अनुमान करे, कि अन्य वृक्ष भी बौरते होंगे। २ दो वस्तुओं या बातोंमें ऐसा साधर्म्य जो कार्य कारण संबंधसे भिन्न हो। जैसे विना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुंच सकता। इसी प्रकार दूसरेको भी किसी स्थान पर भेजना विना उसके जानेसे नहीं हो सकता।

सामान्यपूजापद्धति (सं० स्त्री०) सामान्यपूजायाः पद्धतिः। सामान्यपूजाप्रणाली। किसी देवताकी पूजा करना हो, तो पहले सामान्यपूजापद्धतिक्रमसे पूजा कर इसके बाद उस देवताकी पूजोक्त प्रणालीके अनुसार पूजा करनी होती है। तन्त्रसारमें यह बात स्पष्ट है। पहले यदि सामान्यपूजापद्धतिक्रमसे पूजा न करे, तो देवताकी विशेष पूजा नहीं की जा सकती।

पहले जो पूजा करनी हो, उस पूजाकी प्रणालीके अनुसार आचमन, स्वस्तिवाचन, सङ्कल्प, घटस्थापन आदि कर सामान्य प्रणालीके अनुसार पूजा करना चाहिये। पहले द्वार पर सामान्यार्घ्य देना होता है। अपने बाईं ओर पृथ्वी पर त्रिकोण वृत्त खींच कर "ओं आधारशक्तये नमः" इस मन्त्रसे पूजा करे, इसके बाद 'फट्' इस मन्त्रसे पात्र प्रक्षालन कर साधारण शङ्ख वहां स्थापन करना होगा। 'नमः' इस मन्त्रसे साधारमें जल भरना होता है। जल भरनेके बाद अंकुश मुद्रा द्वारा सूर्यमण्डलसे इस मन्त्रसे तीर्थ आवाहन करना चाहिये—

"ओं गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥"

पीछे प्रणव मन्त्रसे इस पर गन्ध पुष्प चढ़ाना चाहिये। इसके बाद धेनुमुद्रा प्रदर्शन एवं प्रणवमन्त्रको दश बार जप करे। इसके बाद फट् कह कर उस जलके छींटेसे द्वारपूजा करे।

ऊर्द्ध्वोडुम्बरे 'ओं विघ्नाय नमः, दक्षिणशाखायां ओं क्षेत्रपालाय नमः, तयोः पार्श्वे ओं गङ्गायै नमः, ओं यमुनायै नमः, देहल्यां ओं अस्त्राय नमः' इस तरह चार द्वारोंकी पूजा करे। इसमें अशक्त होनेसे 'द्वारदेवताभ्यो नमः' कहके द्वारदेवताओंकी पूजा करे। त्रिपुरसुन्दरी आदिकी द्वारपूजाके पूजाविधानमें जरा विशेषता है, जैसे गणेश, क्षेत्रपाल, योगिनी, बटुक, गङ्गा, यमुना, लक्ष्मी और सरस्वती इन सबोंकी पूजा करनी होती है। विष्णुपूजा स्थलमें नन्द, सुनन्द, प्रचण्ड, चण्ड, प्रबल, भद्र, सुभद्र, विघ्न और वैष्णव इन सबोंकी पूजाकी विधि है। इन सब देवताके आदि और अन्तमें प्रणव और नमः इस मंत्रका प्रयोग करना होता है। ओं गणेशाय नमः, इत्यादि रूपसे पीछे ओं वास्तुपुरुषाय नमः, ओं ब्रह्मणे नमः, इस तरह पूजा करे। "अस्त्राय फट्" इस मंत्रसे जलवेष्टन द्वारा आकाशस्थित विघ्न और वाम पार्ष्णिघात द्वारा भूमिमें तीन आघात कर भूमिगत विघ्नको दूर करना होता है। इसके बाद 'फट्' यह मंत्र ७ बार जप कर विकिर प्रक्षेप किया जाता है। लाज, चन्दन, सफेद सरसों, भस्म, दूर्वा, कुश और अरवा (अक्षत) चावलको विकिर कहते हैं। साधारणतः पूजा स्थलमें अक्षत या सफेद सरसों ही विकिर रूपसे व्यवहृत होती है। ये विकिरद्रव्य हाथमें ले कर इस मंत्रको पढ़ कर चारों ओर छींट देना चाहिये—

"ओं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥"

इस तरह विकिर छींट कर भूतापसर्पण कर 'ओं

अस्त्राय फट्' इस मंत्रमें नाराचमुद्रा द्वारा अक्षत ले कर सब विघ्नोंका दूरीकरण करे। इसके बाद आसनशुद्धि, सचन्दन पुष्प ले कर "ह्रीं आधारशक्ति कमलाशनाय नमः' इस मंत्रसे आसनपूजा कर निम्नोक्त मंत्र पाठ करे।

आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

ओं पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके बाद वामे ओं गुरुभ्यो नमः, ओं परमगुरुभ्यो नमः, ओं परापरगुरुभ्यो नमः, दक्षिणे ओं गणेशाय नमः, मस्तके अमुकदेवतायै नमः। जिस देवताकी पूजा करनी हो, मूल मंत्रके साथ उस देवताको प्रणाम करना चाहिये। इसके बाद मातृकान्यास, 'संहारमातृकान्यास' प्राणायाम, पीठन्यास और ऋष्यादि न्यास करे। भूत शुद्धि और इन सब न्यासका विषय तन्त्रसारमें विशेष रूपसे वर्णित हुआ है।

न्यास और भूतशुद्धि शब्दमें इसका विवरण देखो।

गणेश, शिव आदि पञ्चदेवता, आदित्यादि नवग्रह, इन्द्रादि दशों दिक्पाल और मत्स्यादि दशों अवतार प्रभृतिकी भी पूजा करनी चाहिये।

काली, तारा, जगद्धात्री, अन्नपूर्णा आदि तंत्रोक्त सब देवताको पूजा हो पहले सामान्य पूजा पद्धति क्रमसे कर फिर उन देवताओंकी विशेष विधानानुसार पूजा करनी चाहिये।

सामान्यपूजायन्त्र (स० क्लो०) न सामान्यपूजायाः यन्त्रं। पूजायन्त्रविशेष। तन्त्रमें लिखा है, कि घट और यन्त्रमें देवताको पूजा करनी होती है। ये सब पूजाके आधार हैं। इन सब स्थानोंमें देवताको पूजा करनेसे वे प्रसन्न होते हैं तथा पूजकके मन्त्रकी सिद्धि होती है। प्रत्येक देवताका भिन्न भिन्न यन्त्र है। ये सब यन्त्र अङ्कित कर उन देवताओंकी पूजा करनी होती है।

सामान्य भविष्यत् (सं० पु०) भविष्य क्रियाका वह काल जो साधारणरूप बतलाता है।

सामान्यभूत (सं० पु०) भूतक्रियाका वह रूप जिसमें क्रियाकी पूर्णता होती है और भूत कालको विशेषता नहीं पाई जाती। जैसे,—खाया, गया, उठा।

सामान्यलक्षणा (सं० स्त्री०) अलौकिक सन्निकर्षविशेष, वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्यको देख कर उसीके अनुसार उस जातिका और सब पदार्थोंका ज्ञान होता है। जैसे एक घड़ेको देख कर समस्त गौओं या घड़ोंका जो ज्ञान होता है, वह इसी सामान्यलक्षणाके अनुसार होता है।

अलौकिक सन्निकर्ष तीन प्रकारका है, सामान्य लक्षणा, ज्ञानलक्षणा और योगज। सामान्यलक्षणा अर्थात् जो सामान्य जिसमें स्थित है, वही सामान्य उस आश्रय या उसके प्रत्यक्षमें सन्निकर्षरूप होता है। उस सामान्यके किसी एक आश्रयमें चक्षुःसंयोग होने पर उस सामान्यरूप सम्बंधमें समस्त तदाश्रयका अलौकिक चाक्षुषप्रत्यक्ष हुआ करता है।

जहां धूमादि इन्द्रिय संयुक्त हुआ है, जहां धूम देख कर यह धूम है, ऐसा ज्ञान हुआ है, उस ज्ञानमें धूमत्व प्रकार उस धूमत्वरूप सन्निकर्ष द्वारा धूमत्वजातिका ज्ञान होता है, वही सामान्यलक्षणा है। समानके भाव को सामान्य कहते हैं। यह सामान्य कहीं नित्य और कहीं अनित्य है। सन्निकर्ष देखो।

सामान्यवचन (सं० क्ली०) साधारण वाक्य, सबोंके लिये जो समान है, ऐसा वाक्य।

सामान्यवर्त्तमान (सं० पु०) वर्त्तमान क्रियाका वह रूप जिसमें कर्त्ताका उसी समय कोई कार्य्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—खाता है, जाता है।

सामान्यविधि (सं० स्त्री०) साधारणविधि या आज्ञा, आम हुकुम। हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, किसीका अपकार मत करो आदि सामान्य विधिके अन्तर्गत है। परंतु यदि यह कहा जाय, कि यज्ञमें हिंसा की जा सकती है अथवा ब्राह्मणकी प्राणरक्षाके लिये झूठ बोल सकते हो, तो इस प्रकारकी विधि विशेष विधि होगी और वह सामान्य विधिकी अपेक्षा अधिक मान्य होगी।

सामान्या (सं० स्त्री०) सामान्य-टाप्। साधारणी नायिका, वेश्या। इसका लक्षण—यह नायिका धनमात्र पानेके लिये पुरुषाभिलाषिणी होती है, धन मिलने पर यह सभी पुरुषोंकी भजना करती है। यह सामान्या

तीन प्रकारकी है, अन्यसम्भोगदुःखिता, वक्रोक्तिगर्विता और मानवती। वक्रोक्तिगर्विताके भी दो भेद हैं, प्रेमगर्विता और सौन्दर्यगर्विता। ये सब नायिका फिर अवस्थाभेदसे प्रत्येक आठ प्रकारकी हैं, प्रोषितभर्तृका, खण्डिता, कलहान्तरिता, विप्रलब्धा, उत्कण्ठिता, वासकसज्जा, स्वाधीनपतिका और अभिसारिका।

सामायिक (सं० त्रि०) समाय एव (विनयादिभ्यष्ठक्। पा ५।४।३४) इति ठक्। १ मायायुक्त, माया सहित। (पु०) २ जैनोंके अनुसार एक प्रकारका व्रत या आचरण। इसमें सब जीवों पर समभाव रख कर एकान्तमें बैठ कर आत्मचिन्तन किया जाता है।

सामाश्रय (सं० पु०) वह भवन या प्रासाद आदि जिसके पश्चिम और वीथिका या सड़क हो।

सामासिक (सं० त्रि०) १ समाससे संबंध रखनेवाला, समासका। (पु०) २ समास। भगवान्‌ने गीतामें कहा है, कि मैं सामासिकमें द्वन्द्व हूं। (गीता १०।३३)

सामि (सं० स्त्री०) १ निन्दा, शिकायत। (त्रि०) २ अर्द्ध, आधा।

सामिक (सं० त्रि०) सामसम्बन्धीय स्तोत्र।

सामिकृत (सं० त्रि०) सामि कृ-क्त। १ अर्द्धीकृत, जिसका आधा भाग किया गया हो। २ जिसकी निन्दा की गई हो।

सामिग्री (सं० स्त्री०) सामग्री देखो।

सामित (सं० त्रि०) समिता अण्। समिता या मैदा सम्बंधीय।

सामित्य (सं० त्रि०) १ समिति सम्बन्धी, समितिका। (पु०) २ समितिका भाव या धर्म।

सामिधेनी (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारका ऋक् मंत्र जिसका पाठ यज्ञकी अग्नि प्रज्वलित करनेके समय किया जाता है। २ समिध। (मेदिनी)

सामिधेन्य (सं० त्रि०) मन्त्रविशेष, सामिधेनी ऋक्।

सामिन् (सं० पु०) बृहत्संहितोक्त महापुरुषके लक्षणविशेष।

सामियाना (फा० पु०) शामियाना देखो।

सामिल (फा० वि०) शामिल देखो।

सामिष (सं० त्रि०) आमिषेण सह वर्त्तते। आमिष सहित, मछली मांस आदिके साथ, निरामिषका उलटा। मछली और मांस आदिके द्वारा पितरोंके उद्देशसे श्राद्ध कर्म करने कहा गया है। (मनु ४।१३१)

सामिषश्राद्ध (सं० क्ली०) पितरों आदिके उद्देशसे किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मत्स्य आदिका भी व्यवहार होता हो। मांसाष्टका आदि श्राद्ध सामिषश्राद्ध है। किस किस मांस द्वारा पितरोंका श्राद्ध करनेसे कब तक वे तृप्त रहते हैं, इसका विषय मनुमें इस प्रकार लिखा है,—पाठीन मछली देनेसे दो मास, हरिणके मांससे तीन मास, मेषमांससे चार मास, द्विजातिभक्ष्य पक्षिमांससे पांच मास, छागमांससे ६ मास, चित्रित मृगमांससे ७ मास, एणमांससे ८ मास, कृष्णसार मृगमांससे ९ मास, वराह और महिषमांससे १० मास, साही और कच्छपके मांससे ११ मास, विशेषतः आद्धमें वाध्रीणस मांस देनेसे पितर लोग बारह वर्ष तक तृप्त रहते हैं। लम्बी लम्बी जिह्वा और कर्णविशिष्ट वृद्ध श्वेत छागविशेषको वाध्रीणस कहते हैं। इत्यादि मांस द्वारा जो श्राद्ध किया जाता है, वही सामिषश्राद्ध है। (मनु० ३ अ०)

सामीची (सं० स्त्री०) वन्दना, प्रार्थना, स्तुति।

सामीप्य (सं० क्ली०) १ समीप होनेका भाव, निकटता। २ अधिकरणविशेष, आधारभेद। ३ एक प्रकारकी मुक्ति जिसमें मुक्त जीवका भगवान्‌के समीप पहुंच जाना माना जाता है।

सामीर (हिं० पु०) समीर, पवन।

सामीर्य (सं० त्रि०) समीर सङ्काशादित्वात् ण्य। समीर-सम्बन्धीय, समीरका, हवाका।

सामुत्कर्षिक (सं० त्रि०) समुत्कर्ष एव (विनयादिभ्यष्ठक्। पा ५।४।३४) इति ठक्। समुत्कर्ष-सम्बन्धी।

सामुदायिक (सं० क्ली०) समुदाय ठक्। नाड़ीनक्षत्र भेद। बालकके जन्म समयके नक्षत्रसे आगेके अठारह नक्षत्रको सामुदायिक नक्षत्र कहते हैं। यह नक्षत्र अशुभ नक्षत्र है और इसमें किसी प्रकारका शुभ कार्य करनेका निषेध है।

सामुद्र (सं० क्ली०) १ समुद्रभव लवण, समुद्रसे निकला हुआ नमक। इसका गुण—पाकमें अत्यन्त उष्ण नहीं, अविदाही, भेदन, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक, अत्यन्त पित्त

वर्द्धक। (राजवल्लभ) २ समुद्रफेन। समुद्रेण अर्पिणा प्रोक्तमिति अण्। ३ देहचिह्न, शरीरमें होनेवाले चिह्न या लक्षण आदि जिन्हें देख कर शुभाशुभका विचार किया जाता है। सामुद्रिक देखो। ४ वह ग्रन्थ जिसमें उक्त लक्षण हों। ५ समुद्रगामी वणिक्, वह व्यापारी जो समुद्रके द्वारा दूसरे देशोंमें जा कर व्यापार करता हो। ६ मशकविशेष। सुश्रुतमें लिखा है, कि मशक ५ प्रकार का है। इस मशकके काटनेसे तीव्र कण्डु, दंश और शोथ होता है। (सुश्रुत ५।८) ७ देशविशेष। ८ नारिकेल, नारियल। ९ द्वीपान्तरा वचा, तोपचीनी।

(त्रि०) ६ समुद्रसे उत्पन्न, समुद्रसे निकला हुआ। १० समुद्र सम्बन्धी, समुद्रका।

सामुद्र—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत समुद्रतटस्थ कालिकट राज्य। यहांके राजा राय सामरी कहलाते हैं।

सामुद्रक (सं० क्लो०) सामुद्रमेव स्वार्थे कन्। १ समुद्र लवण। २ वह ग्रन्थ जिसमें मनुष्यके शरीरके चिह्नों या लक्षणों आदिके शुभाशुभ फलोंका विवेचन हो। ३ समुद्रशास्त्र। (त्रि०) ४ समुद्र-सम्बन्धी, समुद्रका।

सामुद्रनिष्कुट—१ महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपदका नाम। २ इस जनपदका निवासी।

सामुद्रमत्स्य (सं० पु०) समुद्रमें होनेवाली बड़ी बड़ी मछलियां, तिमि, तिमिङ्गिल और कुलिशपाक आदि। इसका गुण—गुरु, स्निग्ध, मधुर, नातिपित्तवर्द्धक, वातहर, उष्ण, वृष्य और श्लेष्मवर्द्धक। (सुश्रुत सूत्रस्था० ४६ अ०)

सामुद्रस्थलक (सं० त्रि०) समुद्रस्थली (धूमादिभ्यश्च। पा ४।२।१२७) इति वुञ्। समुद्रस्थली देश, समुद्रके आस पासका देश।

सामुद्राद्यचूर्ण (सं० क्लो०) वैद्यकमें एक प्रकारका चूर्ण। यह सांभर, साचर और सेंधा नमक, अजवायन, जवाखार, वायविडङ्ग, हींग, पीपल, चीतामूल और सोंठको बराबर मिलानेसे बनता है। कहते हैं, कि इस चूर्णको घीके साथ सेवन करनेसे सब प्रकारके उदर रोग दूर होते हैं। यदि भोजनके आरम्भमें इसका सेवन किया जाय, तो यह बहुत पाचक होता है और इससे कोष्ठबद्धता दूर होती है।

सामुद्रिक (सं० त्रि०) समुद्रेण प्रोक्तं शास्त्रं अधीते वेत्ति वा ठञ्। सामुद्रकशास्त्र-अध्ययनकारी या सामुद्रशास्त्रवेत्ता, स्त्रीपुरुषचिह्नवेत्ता, सामुद्रशास्त्राभिज्ञ, जो स्त्री पुरुष आदिके चिह्नोंको देख कर शुभाशुभ निर्देश कर सकें।

सामुद्रिक फलित ज्योतिषशास्त्रका एक विशेष विभाग है। सामुद्रिकशास्त्र द्वारा कर, चरण और ललाटकी रेखा और अन्यान्य शरीरचिह्न देख कर मनुष्यके भूत, भविष्यत् और वर्त्तमानके शुभाशुभ फलाफल जाना जाता है। समुद्र द्वारा यह शास्त्र कथित हुआ है, इससे इसका नाम सामुद्रिक हुआ है।

प्रधानतः कराङ्कित रेखादि विचार करके ही इस विद्यासे शुभाशुभ घटना निर्दिष्ट होती है। इस विद्याको अंग्रेजीमें Palmistry या Chiromancy कहते हैं। बहुत प्राचीन कालसे भारतवर्षमें सामुद्रिक शास्त्र प्रचलित है। प्राचीन यूनान और रोममें भी यह विद्या प्रचलित थी, Chiromancy शब्द ही इसका प्रमाण है, Cheir का अर्थ कर, Mantia भविष्यत् फलाफल गणना। पहले इंग्लैण्डमें भी फलित ज्योतिष विशेष रूपसे सम्मानित होता था। इस समय Palmistry या सामुद्रिक गणना वहां गैरकानूनी होनेसे इसका सर्वाधिक प्रचलन नहीं।

हस्तरेखा विवरण।

जो रेखा कनिष्ठांगुलीके नीचेसे आरम्भ कर तर्जनी मूलाभिमुख गमन करती है, उसका नाम आयुरेखा है। कुछ आदमी इसको भोगरेखा भी कहते हैं। १ नं० चित्रकी १-१ रेखा देखो।

आयु रेखाकी बगलमें जो दूसरी एक रेखा तर्जनीके निम्न देशमें गई है, उसका नाम मातृरेखा है। १ नं० चित्रकी २-२ रेखा।

जो रेखा करतलमूलके मध्य स्थलसे उठ कर साधारणतः मातृरेखाका ऊर्द्ध्वदेश स्पर्श करती है, अथवा उसके निकट पहुंचती है, उसका नाम पितृरेखा है। कुछ लोग इसको आयुरेखा भी कहते हैं। १ नं० चित्रकी ३-३ रेखा।

जो सीधी रेखा पितृरेखाके मूलके समीपसे आरम्भ हो कर मध्यमांगुलिकी ओर गमन करती है, उसे ऊर्द्ध्वरेखा कहते हैं। १नं० चित्रकी ५-५ रेखा।

जो दो पितृरेखाके पार्श्वमें अंगुष्ठके मूलदेशसे उठ कर ऊर्द्धगामी होती है, उसको परस्वास्तरेखा कहते हैं। १ नं० चित्रकी ४-४ रेखा।

रेखाका वर्णविचार।

रेखाओंके रक्तवर्ण (लाल) होनेसे मनुष्य आमोदप्रिय, सदालापी और उग्रस्वभावका होता है। रक्त वर्णमें यदि उसकी आभा काली हो अर्थात् रक्तवर्ण यदि रक्ताभ हो, तो प्रतिहिंसापरायण, शठ और क्रोधी होता है। जिसकी रेखा पीली होती है, पित्तके आधिक्यवशतः वह क्रुद्ध स्वभावका, उच्चाभिलाषी, कार्यक्षम और प्रतिहिंसापरायण होता है। यदि उसकी रेखा पाण्डु आभाकी हो, तो वह स्त्रीस्वभावका, दाता और उत्साही होता है।

हाथमें ग्रहोंका स्थान।

तर्जनीमूलदेशमें बृहस्पतिका स्थान, मध्यमा अंगुलिके मूलदेशमें शनिस्थान, अनामिकाके मूलदेशमें रविस्थान, कनिष्ठाके मूलदेशमें बुधस्थान तथा वृद्धांगुष्ठके मूलदेशमें शुक्रका स्थान है। (१नं० चित्रकी ११, १२, १३, १४ और १९ संख्या) मङ्गलके दो स्थान हैं—एक तर्जनी और वृद्धांगुलीके बीचमें पितृरेखाके समाप्तिस्थानके नीचे और दूसरा बुधके स्थानके नीचे और चन्द्रके स्थानके ऊपर आयुरेखा और मातृरेखाके नीचवाले स्थानमें। (१नं० चित्रकी १८ संख्याद्वय) मङ्गल-स्थानके नीचेसे मणिबन्धके ऊपर तक करतलके पार्श्व भागमें स्थानको चन्द्रका स्थान कहते हैं। (१नं० चित्रकी १६ संख्या।)

पुरुषके दाहने हाथ और स्त्रियोंके बायें हाथ प्रधान हैं। इसीलिये पुरुषोंके दाहने हाथ और स्त्रियोंके बायें हाथकी रेखाओंको देख कर उनका फलाफल निर्णय किया जाता है। 'सामुद्रिकम्' ग्रन्थमें लिखा है,—नारियोंके बायें भागमें और पुरुषके दाहने भागमें सामुद्रिक लक्षण निर्दिष्ट होता है।

ग्रहस्थानका विचारफल।

रविका स्थान—ऊंचा होनेसे वह व्यक्ति चञ्चल होता है, सङ्गीत तथा अन्यान्य कलाविद्याविशारद और नये विषयोंका आविष्कारक होता है तथा प्रायः ही स्त्रियोंसे घृणा करता है। रवि और बुधका स्थान उच्च होनेसे वह विज्ञ, शास्त्रविशारद और सुवक्ता होता है। अत्युच्च होनेसे वह अपव्ययी, विलासी, अर्थलोभी और तार्किक होता है। निम्न (नीचा) होनेसे आलसी और अधार्मिक होता है। रविका स्थान उच्च होनेसे वह व्यक्ति मध्यमाकृति, लम्बे केश, बड़े बड़े नेत्र, किञ्चित लम्बमुख मण्डल, सुन्दर शरीर और करतल भाग और अंगुलिका दैर्घ्य समान होता है। रविके स्थानमें कोई रेखा न रहने पर उसको नाना दुर्घटनाका सामना करना पड़ता है। कोई बलवान रेखा हो, तो यशोलाभ होता है।

चन्द्रका स्थान—उच्च होनेसे वह मनुष्य सङ्गीतप्रिय आत्मतत्त्वानुसन्धित्सु, भगवद्भक्त, विषण्ण और चिन्तायुक्त होता है। उस व्यक्तिका विस्मयकर विवाह होता है। नीचा होनेसे उस व्यक्तिकी चिन्ताशक्ति नहीं रहती। इन स्थानमें यदि कोई रेखा न हो, तो वह व्यक्ति संसारमें शाक्रुष्ट नहीं होता, एक धनुषकी तरह रेखा बुधके स्थानसे चन्द्रके स्थान पर जाये तो वह व्यक्ति प्रत्यादेश प्राप्त होता है और भविष्यत्की घटना स्वप्नमें देख लेता है। हस्ततलकी अन्याय रेखायें दुर्बल तथा चन्द्रके स्थानमें एक वज्र या नक्षत्रके चिह्न रहनेसे वह व्यक्ति आवेचक या मूर्ख होता है।

मङ्गलका स्थान—पितृरेखाके सन्निकटस्थ मङ्गलका स्थान उच्च हो, तो वह व्यक्ति असीमसाहसी, विवादप्रिय और उपस्थित बुद्धिविशिष्ट होता है। हस्त पार्श्वस्थ मङ्गल स्थान उच्च होनेसे वह व्यक्ति अन्याय कार्यमें प्रवृत्त नहीं होता तथा धीर, नम्र, धार्मिक, साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ होता है। दोनो स्थान समान उच्च होनेसे वह व्यक्ति उग्रस्वभावसम्पन्न, कामातुर, निष्ठुर और अत्याचारी होता है और रक्त देख कर प्रसन्नता प्राप्त करता है। किन्तु दोनो स्थान नीचा हो, तो वह भीरु (डरपोक) और बालकोंकी तरह व्यवहार करनेवाला होगा। इन दोनो स्थानोंके चन्द्रका स्थान उच्च होने पर वह व्यक्ति नाव चलानेवाला मल्लाह होता है। मङ्गलका स्थान कठिन होनेसे स्थावरसम्पत्तिकी वृद्धि होती है। दोनों हाथमें आयु रेखा और मातृरेखाके बीच मङ्गल स्थानमें तिल रहनेसे मुकदमोंसे सम्पत्ति नष्ट होती है। किन्तु एक हाथमें रहनेसे सब सम्पत्ति विनष्ट नहीं होती। मङ्गल-

द्वितीय स्थान तिलचिह्नित होनेसे पैतृक सम्पत्तिकी हानि होती है।

बुधका स्थान—उच्च होनेसे शास्त्रबुद्धियुक्त, वक्तृता-पटु, साहसी, परिश्रमी और बहु स्थानभ्रमणकारी और कम उम्रमें ही विवाह होता है। किन्तु अत्युच्च होनेसे विश्वासघातक, मिथ्यावादी, विद्याहीन और दाम्पत्य-सुखहीन होता है। नीचा होनेसे आलसी, विद्याशिक्षा-विरत और उद्यमहीन होता है। यहां यदि एक सीधी रेखा हो, तो भाग्यवान् और बहुतेरी रेखा हो, तो शास्त्रज्ञ और धनवान् होता है और ये सब रेखायें आयुरेखामें मिली हुई हों, तो वह दाता होता है। बुधका स्थान उच्च हो और वहां बहुतेरी रेखायें हों, तो चिकित्सक होता है। स्त्रियोंके हाथमें यदि ऐसा हो, तो उनका विवाह चिकित्सक या शास्त्रज्ञसे होता है।

वृहस्पतिका स्थान—अत्युच्च होनेसे अधार्मिक और अहंकारी होता है और सबके ऊपर प्रभुत्व करनेकी इच्छा करता है। यह स्थान यदि नीचा हो, तो वञ्चक, धर्महीन और नीच प्रकृतिका होता है। वृहस्पति और रविका स्थान उच्च होनेसे भाग्यवान् धनवान् और सम्भ्रमशाली तथा उसके साथ बुधका स्थान उच्च होनेसे विज्ञान और न्यायशास्त्रज्ञ होता है। उसके साथ मङ्गलका स्थान उच्च हो, तो वह युद्ध-विशारद होता है। वृहस्पतिके स्थानमें बहु रेखाओंको एक रेखा काट दे, तो वह पुरुष लम्पट और स्त्रियाँ असती होती हैं। यहां अधिक रेखायें हों, तो वह व्यक्ति प्रायः ही विफलमनोरथ होता है।

शुक्रका स्थान—अत्युच्च होनेसे लम्पट, लज्जाहीन, और व्यभिचारी होता है। उच्च होनेसे सौन्दर्यप्रिय, नृत्य-गीतानुरक्त और स्त्रीप्रिय होता है तथा बहुतेरी कला और शिल्पविद्याका ज्ञानलाभ करता है। नीचा होनेसे स्वार्थपर, आलसी और रिपुदमनकारी होता है। एक मोटी रेखा शुक्रके स्थानसे उठ कर पितृरेखाके ऊपर होती हुई मङ्गलके स्थानमें जाये, तो उसको दमा और खांसीका रोग होता है। शुक्रस्थानके ऊपरी भागसे कोई एक रेखा बुधके स्थानमें जानेसे पुरुष विपत्नीक तथा स्त्री विधवा होती है। शुक्रके स्थानकी कोई एक रेखा शनि स्थानमें जा कर शाखाविशिष्ट हो, तो उसका असुखकर विवाह होता है। यहां कोई रेखा रहनेसे पवित्रचित्त और शान्त स्वभावविशिष्ट होता है।

शनिका स्थान—उच्च होनेसे निर्जनताप्रिय, अल्पभाषी, और गीतवाद्यप्रिय होता है। यह स्थान नीचा हो, तो भाग्यहीन, नीच प्रवृत्तिविशिष्ट और प्रायः ही निरामिष-भोजी होता है। कभी कभी वह आत्महत्या करनेमें भी प्रवृत्त होता है। शनि और वृहस्पतिका स्थान उच्च होनेसे धैर्यशील और मूर्च्छा या वायुरोगग्रस्त होनेकी सम्भावना है। शनि और बुधका स्थान उच्च होनेसे क्रोधी, चोर और अधार्मिक होता है। शनि और मङ्गलका स्थान उच्च होने पर लज्जाहीन तथा अत्याचारी होता है। शनि और शुक्रका स्थान उच्च होनेसे इन्द्रजाल आदि ज्योतिषविद्या-का अनुसन्धान करनेवाला होता है। यही स्थान सरल और उज्ज्वल रेखा रहने पर सौभाग्यशाली होता है, किन्तु बहुतेरी रेखाओंके रहने पर इसके विपरीत फल होता है।

रेखाका विचारफल।

१। आयु या भोगरेखा—आयुरेखा यदि छिन्न भिन्न न हो, तो वह व्यक्ति १२० वर्ष तक जीवित रहता है। यदि यह रेखा कनिष्ठाङ्गुलि मूलसे अनामिकाके मूल तक विस्तृत हो तो ५० से ६० वर्षकी आयु होती है। जिसके इस रेखाको क्षुद्र-क्षुद्र रेखायें भेद करें, तो उसकी आयु कम होती है। यह रेखा मोटी और छोटी होनेसे वह व्यक्ति अविवेचक होता है। शृङ्खलाकार होनेसे लम्पट और उत्साहहीन होता है और पीतवर्ण होनेसे यकृत् पीडासे पीड़ित होता है। यह रेखा जब छोटी छोटी रेखाओंसे कटी हुई हो, तो वह व्यक्ति प्रेममें हताश, यन्त्रणाभोग और प्रेमका प्रतिबन्धक होता है। इस रेखाके मूलमें अर्थात् बुधके स्थानमें शाखा न रहनेसे सन्तान नहीं होता। शनि स्थानके निम्नदेशमें मातृ-रेखाके साथ इस रेखाके मिल जाने पर हठात् मृत्यु होती है। यदि इस रेखाकी एक शाखा मातृरेखाको स्पर्श करे और दूसरी एक रेखा इस स्पर्शकारी रेखाको काटे, तो शोचनीय विवाह और उसके लिये मानसिक कष्ट होता है। भोगरेखा शृङ्खलाकार हो कर शनिके स्थान तक जाये, तो वह व्यक्ति स्त्री-प्रेमी होता है। दो हाथोंमें

इस रेखाकी कोई शाखा न हो, तो अल्पायु होता है। शनिके स्थानके नीचे यह रेखा यदि टूट गई हो, तो हृत्-पीडा और मनोवेदना प्राप्त होती है और उच्च स्थानसे गिरनेकी आशङ्का रहती है। इस रेखा पर काली तिल हो, तो पीडाग्रस्त और ऐसा ही चिह्न यदि रविके स्थानके नीचे हो, तो वह मनुष्य चक्षुरोगका रोगी होता है। दोनो हाथमें यह रेखा शनि या वृहस्पतिके क्षेत्रके नीचे मातृरेखाके साथ मिलनेसे अपमृत्यु होती है।

२। मातृरेखा—यह रेखा शनि स्थान या शनि स्थानके नीचे तक लम्बी हो, तो अकालमृत्यु होती है। *जिस व्यक्तिको मातृ और पितृरेखा मिलती नहीं*, वह विशेष विवेचना न कर हठात् कार्यमें प्रवृत्त होता है। किन्तु वह कार्यतत्पर, आत्माभिमानी, अभिनेता और व्याख्यान झाडनेमें पटु होता है। दो मातृरेखा रहनेसे सौभाग्यशाली, सत्परामर्शदाता और धनशाली होता है तथा पैतृक सम्पत्ति लाभ करता है। यदि यह रेखा टूट गई हो, तो मस्तकमें चोट लगती है अथवा अङ्गहीन होता है। यह रेखा लम्बी हो और करतलमें अन्यान्य बहुतेरी रेखायें हों, तो वह व्यक्ति विपत्कालमें आत्मदमन करनेमें समर्थ होता है और इशारा पाते ही किसी भी कार्यको कर डालता है। इस रेखाके मूलमें कुछ अन्तर पर यदि पितृरेखायुक्त हो, तो वह परमुखापेक्षी और डरपोक होता है। मातृरेखा करतलमें सरल भावसे न जा कर बुधके स्थानाभिमुखी होनेसे वाणिज्य व्यवसायमें सौभाग्यलाभ होता है। यह रेखा कनिष्ठा और अनामिकाके बीचकी ओर आवे, तो शिल्प द्वारा उन्नति लाभ होती है। यह रेखा रविके स्थानमें जाने पर शिल्पविद्यानुरागी और यशःप्रिय होता है। यह रेखा भोगरेखाको छेद कर शनि स्थानमें जाने पर मस्तकमें आघात लगनेसे मृत्यु होती है। यह रेखा या अन्य कोई प्रधान रेखा जिसके हाथमें न हो, वह व्यक्ति अचिर हृत्स्पन्दरोग या किसी सांघातिक घटनासे विशेष कष्ट पाता है। यह रेखा आयुरेखाके अत्यन्त समीपवर्ती होनेसे श्वासरोग (दमा) होता है और पितृरेखासे युक्त हो वृद्धाङ्गुलिकी ओर जाये, तो मनुष्य शिरोरोगसे अत्यन्त दुःख पाता है। इस रेखा पर लाल विन्दुकी तरह चिह्न हो, तो मस्तकमें आघात प्राप्त और सादा विन्दुका चिह्न रहनेसे विज्ञान सम्बन्धीय आविष्कारक होता है। मातृरेखाके ऊपर यवचिह्न रहनेसे वायुरोगग्रस्त होता है। मातृरेखा पितृरेखासे न मिले, पितृरेखा दो छोटी रेखा द्वारा कटा हो, तो, वह आदमी मद्यप्रिय होता है। इस रेखाका शेषांश बहुतेरी शाखायें हों, तो वह अतिशय विलास और आडम्बरप्रिय होता है। मातृ और पितृ दोनो रेखायें अत्यन्त छोटी होनेसे अकस्मात् मृत्यु होती है। इस रेखाके शेष भागमें वृत्ताकार चिह्न रहनेसे चक्षु नष्ट होता है, जिस हाथमें होता है, उसी तरफकी आंख खराब होती है, यदि दोनो हाथमें हो, तो दोनो नेत्र खराब होते है।

३। पितृरेखा—यह रेखा चौड़ी और विवर्ण हो, तो मनुष्य रुग्न, नीच स्वभाव, दुर्बल और ईर्षान्वित होता है। दोनों हाथमें पितृरेखाके छोटी होनेसे अल्पायु होता है। पितृरेखा शृङ्खलाकृति होनेसे रुग्न और शारीरिक दुर्बल होता है। दो पितृरेखा रहनेसे वह व्यक्ति दीर्घायु, विलासी, सुखी और किसी स्त्रीका उत्तराधिकारी होता है। इस रेखाका शेषभाग यदि शाखाविशिष्ट हो, तो उसकी धमनीशक्ति दुर्बल होती है। पितृरेखासे कोई शाखा चन्द्रके स्थानमें जानेसे मूर्खतावशतः अपव्यय कर कष्टमें पडता तथा मद्यपायी होता है। यह रेखा टेढी हो कर चन्द्रके स्थानमें जाये, तो दीर्घजीवी और इस रेखाकी कोई शाखा बुधके क्षेत्रमें प्रविष्ट हो, तो व्यवसायमें उन्नति और शास्त्रानुशीलनमें सुख्यातिलाभ करता है। पितृरेखाके शेष भागसे दो रेखायें निकल कर एक चन्द्र और दूसरी शुक्रके स्थानमें जाये, तो वह मनुष्य स्वदेश त्याग कर विदेश जाता है। चन्द्रस्थानसे कोई रेखा आ कर पितृरेखाको काटे, तो वह वातरोगी होता है। जिस व्यक्तिके दोनो हाथकी पितृ, मातृ और आयु रेखा मिल गई हो, उसकी अकस्मात् मृत्यु और दुरवस्था होती है। किसी स्त्रीको इस रेखाके आरम्भ स्थानसे कोई रेखा शनिके क्षेत्रमें गमन करे, तो उसकी प्रसव-वेदनासे ही मृत्यु होती है। इस रेखाका शेष भाग मणिबन्धरेखाकी ओर शाखाविशिष्ट हो निम्नाभिमुखगामी होने पर वह व्यक्ति पहली अवस्थामें कोई शुभ फल

न पा कर देश देश भ्रमण करता और स्वदेशमें धनोपार्जन करनेमें असमर्थ होता है। पितृरेखा वृद्धांगुलिके निकटवर्त्ती स्थानमें जाये, तो उससे संतान नहीं होता। एक उज्ज्वल मोटी रेखा इस रेखासे रविस्थान तक जाने पर सम्मानसूचक उपाधिप्राप्त होता है। पितृरेखा से क्षुद्र क्षुद्र रेखायें हाथके चतुष्कोणोंमें गमन करने पर आत्मीय स्वजनके साथ विरोध और विच्छेद होता है तथा परिणाममें सम्पत्तिके विषयमें मुकद्दमा होता है। इस रेखाके प्रारम्भसे एक अधोमुखी रेखा शुक्रके स्थानकी ओर जाये, तो उच्च स्थानसे गिरनेकी आशङ्का होती है। मूलदेशमें कण्टकित होने पर वृथा गौरव और मतकी अस्थिरता होती है। किन्तु ये सब शाखा परिष्कार और सीधी होनेसे वह न्यायपरायण और विश्वासी होता है। इस रेखाके अनेकस्थलमें टेढ़ी होने पर अग्नि द्वारा अङ्गदग्ध होता है। जिस किसी ग्रहके क्षेत्रसे कोई रेखा निकल कर पितृरेखाको काटे, तो उस व्यक्तिको पीड़ा होती है और आयुरेखासे कोई रेखा आ कर पितृरेखाको काटे, तो हृत्पिण्डमें पीड़ा होती है। पितृरेखाकी ऊद्र्ध्वमुखी रेखा सब कार्यमें उन्नतिकी परिचायक तथा अधोमुखी रेखा अस्वास्थ्य तथा धनहानिकी चिह्न है।

४। ऊद्र्ध्वरेखा—जिसकी ऊद्र्ध्वरेखा पितृरेखासे उठे, वह अपनी चेष्टासे सुख और सौभाग्य लाभ करता है। ऊद्र्ध्वरेखा हस्ततलके बीचसे उठे बुधस्थान तक जाये, तो वाणिज्य व्यवसायमें, वक्तृतामें या विज्ञानशास्त्रमें उन्नति लाभ करता है। यह रेखा मणिवन्धको यदि भेद करे, तो दुःख और शोक उपस्थित होता है। इस रेखाके हाथके बीचसे निकल कर रविके स्थानमें जानेसे साहित्य और शिल्पविद्यामें उन्नति होती है। यह रेखा मध्यमांगुलिसे जितनी ऊपर उठेगी, उतने ही अशुभ होंगे। ऊद्र्ध्वरेखा जिस स्थानमें टेढ़ी हो कर जायेगी, उस व्यक्तिके उसी उम्रमें सांसारिक कष्ट होगा। इसके भग्न होने पर शारीरिक पीड़ा होगी और कुछ अंश भग्न होनेसे और कतकांश अभग्न होनेसे जीवनमें नाना तरहकी विचित्र घटनायें होती हैं। यह रेखा सरल और सुन्दर होनेसे सुखी और आयुवृद्धि होती है। शुक्रके स्थानसे कई एक छोटी रेखा निकल कर पितृरेखा और ऊद्र्ध्वरेखा काटनेसे स्त्रीवियोग होता है। ऊद्र्ध्वरेखा और पितृरेखाके मूलदेशमें यवचिह्न रहनेसे और ऊद्र्ध्वरेखा टेढ़ी होनेसे वह व्यक्ति जारज समझा जाता है। जिसके हाथमें ऊद्र्ध्वरेखा न रहे, वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली, उद्यमरहित और मत्स्यमांसत्यागी होता है। इस रेखाके अस्पष्ट होनेसे उद्यम व्यर्थ होता है। इस रेखाके स्पष्ट और सरलभावसे शनिके स्थानमें जानेसे दीर्घजीवी होता है। सीधी और दोनों ओर शाखाविशिष्ट होने पर क्रमशः मनुष्य दरिद्रतासे मुक्त हो कर धनवान् होता है। इस रेखाका प्रथमांश भग्न होनेसे प्रथम वयसमें दुःख उपस्थित होता है। ऊद्र्ध्वरेखा शनिके स्थानमें छोटी छोटी रेखा द्वारा कट जाने पर बहुत समय तक शुभादृष्ट भोग कर शेषजीवनमें दुर्भाग्य प्राप्त होता है। इस रेखाके मूलदेशमें दो शाखाविशिष्ट होने पर एक शुक्रके और दूसरी चन्द्रके स्थानमें जाने पर कल्पनाशक्तिविशिष्ट और प्रेमिक होता है। स्त्रियोंके करतलमें और पादतलमें ऊद्र्ध्वरेखा रहने पर वह चिर सधवा, भाग्यवती और पुत्रपौत्रवती होती है। स्त्री या पुरुष जिसके हाथमें यह रेखा हो, वह ऐश्वर्यशाली और सुखी होता है। उसकी वंशवृद्धि होती है और सब प्रकारका शुभफल प्राप्त होता है। उसकी तर्जनीके मूल तक ऊद्र्ध्वरेखा दृष्ट हो, तो वह राजदूत होता है और उसका धर्मनाश होता है। मध्यमांगुलिका मूल तक जिसकी ऊद्र्ध्वरेखा दिखाई देती हो, वह सुखी, विभवशाली और पुत्रपौत्रादि समन्वित होता है।

५। मणिवन्धरेखा—जिस व्यक्तिके मणिवन्धमें तीन सुस्पष्ट सरल रेखा हो, वह दीर्घजीवी, सुस्थ शरीर और सौभाग्यशाली होता है। रेखात्रय जितनी ही साफ होगी, स्वास्थ्य उतना ही अच्छा होगा। मणिवन्ध रेखात्रयके बीचमें क्रुश-चिह्न रहने पर कठिन परिश्रमसे सौभाग्यलाभ होता है। मणिवन्ध रेखामें यदि एक तारका चिह्न हो, तो उत्तराधिकारीरूपसे धनलाभ होता है, किन्तु यह चिह्न अस्पष्ट रहनेसे पारदारिक कहा जाता है। मणिवन्धसे चन्द्रस्थानके ऊपरकी रेखा जलपथसे भ्रमण करानेवाली होती है और किसी

एक रेखाके मणिबन्धसे चन्द्रके स्थानमें गमन करनेसे समुद्रयात्रा होती है। इस स्थानसे कोई रेखा वृहस्पतिके स्थानमें जाये, तो जलपथसे दूरकी यात्रा करनी पड़ती है। जलभ्रमणसूचक रेखाओंमें किसी रेखाके पितृरेखासे मिलने पर जलयात्रामें ही मृत्यु होनेकी सम्भावना है। मणिबन्धसे कोई रेखा यदि वृहस्पतिके स्थानमें जाये, तो धनलाभ होता है। इस रेखाके अति सरल होनेसे आयुवृद्धि होती है, किन्तु जलमग्न होनेकी सम्भावना रहती है। मणिबन्धसे कोई रेखा यदि रविके स्थानमें जाये, तो सम्भ्रान्त व्यक्तिका आश्रय और अनुग्रह लाभ होता है। मणिबन्धकी एक रेखा वृहस्पतिके स्थान और दूसरी एक शनिस्थानकी ओर जाने पर जलयात्रासे लौट आनेकी सम्भावना नहीं रहती। इन दो रेखाओंमें कोई एक पितृरेखाके साथ मिल जाये, तो जलयात्रामें मृत्यु हो जाती है, किन्तु ये दोनों रेखाये समान्तराल हों, तो जलयात्रामें अनेक विघ्नबाधा होने पर भी धन लाभ हुआ करता है। मणिबन्धसे एक रेखा बुधके स्थानमें जा कर वहां दो भिन्न रेखाओंमें फट जाये, तो स्त्री जातिसे उसको बड़ा अनिष्ट होता है।

६। शुक्रबन्धनी रेखा—यह रेखा तर्जनी और मध्यमागुंलीके बीचसे निकल कर अनामिका और कनिष्ठाके मध्यस्थल तक जाती है। (१ नं० चित्रकी १० १० संख्या) इस रेखाके भग्न या बहु शाखा विशिष्ट होने पर मूर्च्छा रोग होता है। इस रेखाके स्थान-स्थानमें भग्न होने पर वह मनुष्य लम्पट होता है। शुक्रबन्धनी हाथमें रहने पर मनुष्य कभी तो विषादमें मग्न या कभी आनन्दमें उत्फुल्ल रहता है। इस रेखाके वृहस्पति स्थानसे अर्द्धचन्द्राकार हो सीधी तरहसे बुधके स्थान तक जानेसे ऐन्द्रजालिक होता है और साहित्य ज्ञानलाभ करता है। यह रेखा हाथमें रहना विशेष अशुभजनक है। किन्तु सुलक्षणयुक्त हाथमें रहनेसे बुद्धिका विकाश होता है।

शरीरके चिह्नों द्वारा राशिका निरूपण।

नर या नारीको दोनों भौंहेंके मध्यकी रेखा यदि रक्त वर्ण हो, तो मेषराशि। इस रेखाके ऊपर नीलवर्ण और दीर्घरेखा रहने पर वृषराशि। यदि किसीको नाकके अग्रभागमें कुछ शुक्लवर्ण वर्त्तुलाकार कोई चिह्न हो, तो मिथुन राशि। जिसके ललाटमें शुक्लवर्णकी रेखा दिखाई दे, तो उसको कर्कटराशि समझना। यह चिह्न विशेष शुभसूचक है। नेत्रमें किञ्चित्‌खर्व गौरवर्णका कोई चिह्न हो, तो सिंहराशि समझनी चाहिये। कन्या राशिवालोंकी नाकके मूल देशमें वर्त्तुलाकार पीतवर्ण चिह्न परिलक्षित होता है। अधरमें अरुण वर्णका कोई चिह्न रहनेसे तुलाराशि समझना। जिसके हाथमें मध्यमा और अनामिकाके पर्वमें दीर्घाकार और चिक्कण कोई रेखा हो, तो वह वृश्चिक राशिका होगा। धनुराशिवालेके अंगुष्ठमूलमें अथवा उसके बीचमें काली रेखा रहती है। जिस व्यक्तिके हाथमें मत्स्यरेखाके निकट नीचे धूम्रवर्ण चक्राकृति कोई चिह्न रहे, तो उसको मकरराशि कहते हैं। तर्जनीके अग्रभागमें गोलाकार कोई रेखा रहनेसे कुम्भराशि और स्त्री किम्बा पुरुषके हाथमें आयुरेखाके निकट ही पीतवर्णका कोई चिह्न दिखाई दे, तो वह मीनराशिका होगा।

करस्थित विभिन्न रेखाओंका फलाफल।

बृहस्पतिके स्थानमें यव चिह्न रहनेसे सामाजिक विग्रह भोग करना होता है। आयुरेखाके ऊपर यह चिह्न रहनेसे हृद्रोग या हृदयकी दुर्बलता मालूम होती है। पितृरेखाके ऊपर रहनेसे दुर्बल शरीर और पैतृक रोग परिचायक है। मङ्गल क्षेत्रमें मातृरेखाके ऊपर रहनेसे नरहत्यामें प्रवृत्त होता है। यह चिह्न पितृरेखाके आरम्भस्थानके सिवा अन्य स्थानमें रहनेसे जन्मकालमें कोई दुर्घटना होती है। शुक्रके स्थानमें रहनेसे विवाह भङ्ग होता है। पितृरेखाके प्रारम्भमें यवचिह्न रहनेसे जन्मके समयमें पीड़ा या मृत्यु होती है। यदि वृद्धांगुलिकी मध्य रेखामें चक्र चिह्न दिखाई दे, तो वह व्यक्ति इस संसारमें धन, मान, ज्ञान इत्यादि द्वारा नाना तरहसे शोभित हो कालयापन करता है और उसकी आयु १०० वर्षकी होती है। यदि मध्यम अंगुलिमें अथवा अंगुष्ठमें सुन्दर यवचिह्न हो, तो उसको दूसरेका सञ्चित धन प्राप्त होता है। जिसके वृद्धांगुलिके ऊपर भागमें यव रेखा हो, वह आजीवन भोगी और सुखी होता है। मध्यमा अथवा तर्जनीके मूलदेशमें यव रेखा

रहनेसे धनवान्, सुखभोगी और पुत्रकलत्रसे उसका घर शोभित होता है।

बृहस्पतिके स्थानमें तारका चिह्न रहनेसे सत्कुलमें विवाह, अर्थलाभ, मनोरथसिद्धि और वह सबका प्रियपात्र होता है। शनिके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो वज्राघात, सर्पाघात और दुर्घटनासे ही मृत्यु होती है। शनिके स्थानमें यह चिह्न यदि दोनों हाथमें हो और मङ्गल तथा बृहस्पतिका स्थान ऊंचा हो, तो उसको हत्याके अपराधमें फांसीका दण्ड मिलता है। बुधस्थानमें यह चिह्न हो, तो चोरके अपराधमें अपमानित होता है। दोनों हाथमें मङ्गलके स्थानमें यदि तारका-चिह्न हो, तो उस पुरुषको दमा या खांसीका रोग होता है और आत्महत्याकी चेष्टा करता है। चन्द्रके स्थानमें यदि यह चिह्न हो, तो जलमें मृत्यु होती है और इस चिह्नके स्थान तक यदि आवे, तो जलमें आत्महत्या करनेकी चेष्टा करता है। शुक्रके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो स्त्रियोंसे कष्ट होता है और अर्थ कष्ट भोगना पड़ता है।

बृहस्पतिके स्थानमें क्रुश-चिह्न रहनेसे उत्तम स्त्री प्राप्त होती है और गौरव तथा अर्थ प्राप्त होता है। शनिकेस्थानमें यदि यह स्थान हो, तो जीवनमें सुख नहीं होता। रविके स्थानमें रहनेसे अन्य धर्मावलम्बी हो जाता है। बुधके स्थानमें क्रुश-चिह्न रहनेसे धन सम्पत्ति अपहृत होती है और वह व्यक्ति आत्महत्या करता है। चन्द्रके स्थानमें यह चिह्न रहनेसे वातरोगपीड़ित और मिथ्यावादी होता है। शुक्रके स्थानमें क्रुश-चिह्न हो, तो वह व्यक्ति गोपनीय प्रेममें रत रहता है और आत्मीय लोगोंके कारण अर्थ कष्ट पाता है।

बृहस्पतिके स्थानमें यह चिह्न रहनेसे वह व्यक्ति आधिपत्य करता है। यदि शनिके स्थानमें यह चिह्न हो, तो अग्निके कारण कष्ट होता है। शुक्रके स्थानमें चतुष्कोण चिह्न रहनेसे और वह चिह्न यदि पितृरेखाके निकट हो अथवा इस रेखाके साथ मिला हुआ हो, तो राजदण्डसे कारावास होनेकी सम्भावना है। अशुभ चिह्नके साथ यदि यह चतुष्कोण हो, तो वह अशुभ फल नहीं देता। यह चिह्न शुक्रके क्षेत्रमें पितृरेखाके निकट हो, तो कारावास होता है।

बृहस्पतिके स्थानमें यदि यह चिह्न हो, तो वह राजप्रतिनिधि होता है। शनिके स्थानमें होनेसे ज्योतिष, इन्द्रजाल आदि विद्यामें ज्ञान लाभ करता, रविके स्थानमें रहनेसे शिल्पी, बुधके स्थानमें रहनेसे राजनीतिज्ञ और मङ्गलके स्थानमें रहनेसे युद्ध और अस्त्रविद्यामें पारदर्शी होता है। चन्द्रके स्थानमें रहनेसे ऐन्द्रजालिक होता है और जलमें मृत्यु होती है। शुक्रके स्थानमें रहनेसे गणितशास्त्रप्रिय होता है। बृहत्चतुष्कोणमें यदि यह चिह्न हो, तो पुरुष या स्त्री चौपाये जानवर द्वारा आहत होती है।

बृहस्पतिके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो अपने आधिपत्य विस्तारकी चेष्टा करता है और आत्मश्लाघाकारी, अहङ्कारी, स्वार्थपर और कुक्रियासक्त होता है। शनिके स्थानमें रहनेसे भाग्यहीन, अर्थहीन और विषण्णचित्त होता है। रवि स्थानमें रहनेसे गर्वित, यशःप्रार्थी, भ्रमयुक्त और मेधाशक्तिविहीन होता है। बुधके स्थानमें रहनेसे धूर्त्त, अविश्वासी, ठग और चोर होता है। मङ्गलके स्थानमें रहनेसे विपद्ग्रस्त हो कर कष्ट पाता है और अकस्मात् मृत्यु होती है। चन्द्रके स्थानमें रहनेसे मिथ्या कल्पनामें अभिभूत हो कर मृत्युचिन्ता करता है। शुक्रके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो वह व्यक्ति कामुक होता है।

चन्द्रके स्थानमें वृत्त या अर्द्धवृत्त चिह्न हो, तो पानीमें डूब कर मृत्यु होती है। चन्द्रके स्थानमें दो वृत्त चिह्न हो, तो अन्धा होता है। आयु रेखाके ऊपर यह चिह्न हो, तो हृत्पिण्डके दुर्बल होनेका परिचायक है। मातृरेखाके ऊपर यह चिह्न जहां भी रहे, सब जगह केवल दुर्घटनाका ही द्योतक है।

बृहस्पतिके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो अर्थ और सम्भ्रमकी हानि होती है। पितृ और मातृरेखाके ऊपर बिन्दुचिह्न रहनेसे रोग या मस्तकमें आघात रूप दुर्घटना होती है। श्वेतवर्ण बिन्दुचिह्न मातृरेखाके ऊपर रहनेसे वैज्ञानिक आविष्कारक होता है। रक्तवर्ण बिन्दुचिह्न रहनेसे आघातप्राप्तिका परिचायक है तथा काला और नीला चिह्न स्नायुरोगका लक्षण है। मङ्गल या चन्द्रके स्थानमें यह चिह्न रहे, तो अन्त्र-सम्बन्धी पीड़ा होती।

करतलमें तिलचिह्न रहे, तो अनवरत धनागम

होता है। पदतलमें तिल रहनेसे राजा होता है। पितृरेखा पर रहे, तो विष द्वारा कष्ट होता है। कपालके दक्षिण पार्श्वमें तिल रहने पर धनवान् और सम्भ्रमशाली होता है। वाम पार्श्व या भ्रू में रहनेसे कार्यनाश और आशाभङ्ग होती है। दक्षिण भ्रू में रहे, तो प्रथम उम्रमें ही विवाह हो जाता और गुणवती पत्नी मिलती है। चक्षु के कोणमें बाहरी ओर रहे, तो शान्त, विनीत और अध्यवसायी होता है। गण्डस्थलमें या कपोलमें रहे, तो मध्यवित्त का आदमी होगा। गलेमें तिलका रहना दुःख-सूचक है। कण्ठमें रहनेसे विवाहके द्वारा भाग्यशाली होता है। वक्षस्थलके दक्षिण भागमें यदि तिल रहे, तो सर्वस्वान्त होता है और उसको लड़कियां अधिक उत्पन्न होती हैं। दक्षिणपञ्जर स्थित तिल निर्बोध तथा कापुरुष का लक्षण है। उदरमें रहे, तो दीर्घसूत्र और स्वार्थपर होता है। नासिकाके वाम पार्श्वमें तिल रहे, तो धन हीन, मद्यपायी और मूर्ख होता है। वामगण्डका तिल दाम्पत्य प्रेमका सुखी और सौभाग्यका लक्षण है। कानमेंका तिल भाग्य और यशका द्योतक है। नितम्ब (चूतड़)में तिल रहे, तो उसे बहुत सन्तान प्राप्त होती हैं, किन्तु सभी नहीं जीते हैं। दक्षिण जङ्घामें तिल रहे, तो धनवान् और विवाहसूत्रमें भाग्यवान् होता है। वाम जंघामें हो, तो बन्धुहीन तथा प्रतिवेशीसे उत्पीड़ित होता है। दक्षिण पदमें तिल रहनेसे ज्ञानी होता है। दक्षिण बाहुमें तिल रहे, तो दृढ़देह और धैर्यशाली तथा वाम बाहुमें हो, तो कठोर प्रकृति, क्रोधी और विश्वासघातक होता है।

यदि नारियोंके बांये कानमें, बांयें कपोलमें, बायें कण्ठमें या बायें हाथमें तिल या आँचिल रहे, तो प्रथम प्रसवमें वे पुत्र प्रसव करती हैं। दक्षिण भ्रू में तिल रहने से गुणवान् स्वामी लाभ करती हैं। बाईं छातीके स्तनके पास यदि तिल हो, तो बुद्धिमती, प्रेमवती और सुप्र-सन्नचित्ता होती है। हृदयमें तिल रहनेसे नारी सौभाग्य वती होती है। दक्षिण स्तनमें लोहित वर्णका तिल हो, तो चार कन्यायें और तीन पुत्र उत्पन्न होते हैं। बायें स्तनमें तिल या लाल कोई चिह्न हो, तो वह स्त्री एक पुत्र प्रसव कर विधवा हो जाती है। बगलमें सुदीर्घ तिल रहने पर पतिप्रिया और पौत्रवती होती है। नखमें श्वेत बिन्दु हो, तो उसके स्वेच्छाचारिणी तथा कुलटा होनेकी सम्भावना है। जिस स्त्रीकी नाककी नोक पर तिल या आँचिल रहे और दन्त तथा जिह्वा काली हो, तो वह स्त्री विवाहके दिनसे १०वें दिन विधवा होती है। दक्षिण घुटने पर तिल रहनेसे मनोहर पतिलाभ होता है। दक्षिण बाहुमें हो, तो पतिको सौभाग्यदायिनी, पीठमें सुलक्षणा और पतिपरायणा होती है। वाम बाहुमें मुखरा और कटुभाषिणी होती है। बायें कंधे पर तिल रहनेसे चञ्चला नासिके बायें भागमें कुस्वामी और दक्षिणमें हो, तो सुलक्षण है।

पुरुषके विशेष लक्षण।

नासिका, नेत्र, दन्त, ललाट, मस्तक और वक्ष यह छः अवयव उन्नत होनेसे मनुष्य सुलक्षणयुक्त होता है। करतल, पदतल, नयनप्रान्त, नख, तालु, अधर और जिह्वा ये सात अङ्ग लाल हों तो शुभप्रद है। जिसकी कमर विशाल है, वह बहुत पुत्रवान् होता है। जिसकी भुजाएं बहुत लम्बी होती हैं, वह नर श्रेष्ठ होता है। जिसका हृदय विस्तीर्ण है, वह धनधान्यशाली और जिसका मस्तक विशाल है, वह मनुष्योंमें पूजनीय होता है। जिस व्यक्ति-का नयनप्रान्त लाल है, लक्ष्मी कभी उसको परित्याग नहीं कर सकती। जिसका शरीर तप्तकाञ्चनके समान गौरवर्ण है, वह कभी भी निर्धन नहीं होता। जिसके दांत बड़े होते हैं, वह व्यक्ति कदाचित् ही मूर्ख होता है और लोमश व्यक्ति कदाचित् ही सुखी होता है। जिसका हस्ततल चिकना और मुलायम हो, वह ऐश्वर्य भोग करता है। जिसके पैरका तलवा चिकना होता है, वह यान और वाहनका भोग करनेवाला होता है।

जिसके हाथमें बहुत रेखायें दिखाई दें, वह दुःखी होता है। अल्प रेखा रहनेसे धनहीन होता है। कर-तलकी रेखायें यदि लाल हों, तो लक्ष्मीयुक्त और काली होनेसे मृत्यु होनेकी सम्भावना है। जिस व्यक्तिकी कनिष्ठाङ्गुलिके नीचे जितनी रेखायें होती हैं, उसे उतनी ही स्त्रियां प्राप्त होती हैं।

तर्जनीमें चक्र हो, तो बन्धु द्वारा धन प्राप्त होता है। जिसकी मध्यमाङ्गुलिमें चक्र हों, देवानुग्रहसे

धनप्राप्त होता है। यह चिह्न यदि अनामिकामें हो, तो नाना उपायोंसे धन प्राप्त करता है। कनिष्ठ उंगलिमें चक्र हो तो वह वाणिज्य द्वारा धन उपार्जन करता है।

जिसके ललाटमें चार चक्राकार रेखा हो, तो वह अस्सी वर्ष और पांच वक्र रेखा रहनेसे १००   वर्ष जीवित रहता है।

जिसके केश ताम्रवर्ण और उन्नत तथा जिसके वक्षदेशमें कोई रेखा दिखाई न दे, वह उन्मत्त हो कर पृथ्वीका भ्रमण करता है। जिसकी जिह्वा इतनी लम्बी हो जो नाकका अग्र भाग स्पर्श कर ले, तो वह योगी और मुमुक्षु हो कर सर्वदा भूतलमें परिभ्रमण करता है।

जिसके दांत विरल अर्थात् अलग अलग हों और हंसने पर जिसके गालमें गर्त्तचिह्न दिखाई दे, वह व्यक्ति पराये के धनसे धनी होता है और परस्त्रीका भोग करता है। जिसके चिबुकमें श्मश्रु नहीं और जिसके हृदयमें बाल नहीं, वह धूर्त्त है।

स्त्रियोंके विशेष लक्षण।

जिस स्त्रीकी मध्यमांगुलि दूसरी अंगुलिसे मिली रहती है, वह सदा उत्तम भोग करेगी, उसका एक भी दिन दुःखसे नहीं बीतेगा। जिसका अंगुष्ठ गोल और मांसल तथा उसका अग्रभाग उन्नत होगा, वह अतुल सुख और सौभाग्यका सम्भोग करेगी। जिसकी अंगुलि लंबी होती है, उसे कुलटा और जिसकी पतली होती है, उसे निर्धन समझना चाहिये।

जिस स्त्रीके चरणके नख स्निग्ध, समुन्नत, ताम्रवर्ण, गोलाकार और सुदृश्य तथा जिसके पदतलका पृष्ठदेश उन्नत है, वह राजमहिषी होती है। जिसके घुटने मांसल तथा गोल हैं, वह सुखसौभाग्यशालिनी होती है। जिसके जानु या घुटनेमें मांस नहीं, वह दुश्चरित्रा तथा दरिद्र होगी।

जिसके हृदयमें लोम नहीं है, जिसका वक्षस्तल नीचा नहीं, किन्तु समतल है, वह स्त्री ऐश्वर्यशालिनी और पतिसोहागिनी होती है और विधवा नहीं होती।

जिस रमणीके स्तनद्वयका मूल मोटा है और उपरिभाग क्रमसे पतला होता आया है, वह बाल्यकालमें सुख भोग कर अन्तमें दुःखभागिनी होती है। नारियोंके करतलमें बहुत रेखा रहनेसे विधवा होती है, यदि करतलमें शिरा हो, तो भिक्षुकी होती है।

जिस स्त्रीके अंगुष्ठमूलसे आरम्भ कर एक रेखा कनिष्ठांगुलिके मूल पर्यन्त गमन करे, तो वह पतिघातिनी होगी।

यदि किसी स्त्रीकी नीचेकी पंक्तिमें अधिक दन्त हो, तो वह पहले माताको भक्षण कर जाती है, यदि नासिकाका अग्रभाग स्थूल हो और मध्यदेश नीचा हो तथा यदि यह नासिका उन्नत हो, तो यह शुभ लक्षण नहीं।

जिसकी आंखें गायकी तरह पिङ्गल वर्णकी हों, वह अत्यन्त गर्विता होती है। जिसकी आँखें कबूतरकी तरह हैं, वह दुःशीला होती है और जिसकी आखें रक्त वर्णकी हैं, वह पतिघातिनी होती है। जिस स्त्रीकी बाई आंख कानी है, वह पुंश्चली और जिसकी दाहिनी आंख कानी है, वह वन्ध्या होती है।

जिस स्त्रीका शरीर लम्बा तथा उसमें लोम और शिरा दिखाई दे, वह रोगयुक्ता होती है। जिसके भ्रू के पार्श्वमें या ललाटमें आतिल हो, वह राज्यभोग करती है। जो नारी काली हो, फिर उसका केश यदि पिङ्गल वर्णका हो, जिसका भ्रू युक्त हो और तेज चलनेवाली हो, वह कुलक्षणा है। जिस रमणीका वक्षस्थल अत्युत्कट और विस्तृत हो तथा जिसके ऊपरके होंठमें लोम दिखाई दे, वह शीघ्र ही विधवा होती है। जिसके चरणकी तर्जनी, मध्यमा अथवा अनामिका भूमि स्पर्श नहीं करती, वह सुख सौभाग्यवर्जिता होती है।

सामुद्रिकशास्त्रमें लिखा है--बायें पैरमें अर्द्धचन्द्र, कलस, त्रिकोण, धनु, शून्य, गोष्पद, प्रोष्ठीमत्स्य और शङ्ख—ये आठ चिह्न और दाहने पैरमें अष्टकोण, स्वस्तिक, चक्र, छत्र, यव, अंकुश, ध्वज, वज्र, जम्बू ऊर्द्ध्वरेखा और पद्म, ग्यारह प्रकारके चिह्न जिसके पैरमें हों, महालक्ष्मी उसकी पदसेवा करती हैं। इस प्रबन्धके अन्तमें ये सब चिह्न देखिये।

कई प्रधान गणनायें।

१ विद्याबुद्धिगणना--एक या दो सरलरेखा यदि मध्यमांगुलिके तीसरे पर्व तक आवे, तो विद्वान् होता है। पितृरेखासे ऊर्द्ध्वरेखा निकल कर अकर्त्तित भावसे

शनि स्थानमें गमन करनेसे विद्या-शिक्षासे यशोलाभ होता है। जिसके वृहस्पति, बुध और चन्द्रके स्थान ऊंचे हों और उंगलियां चतुष्कोण या स्थूलाग्र हों, उंगलीका द्वितीय ग्रन्थि पुष्ट और नख छोटे हों, वह व्यक्ति साहित्यचर्चा करता रहता है अंगुलिया चतुष्कोण या स्थूलाग्र द्वितीय पर्व तीर्थ और द्वितीय गांठें पुष्ट होने से वह व्यक्ति अङ्कशास्त्रमें पारदर्शिता लाभ करता है। कनिष्ठांगुलिके तृतीय पर्वसे एक रेखा प्रथम पर्वमें उठने पर और मातृरेखामें श्वेत विन्दु और बुधके स्थानमें त्रिकोण चिह्न रहने पर विज्ञानमें व्युत्पत्ति होती है। मणिबन्धसे ऊर्द्धरेखा रविस्थानमें अथवा मातृरेखासे एक सीधी रेखा रविस्थानमें जावे, या रविस्थानमें त्रिकोण चिह्न हो, तो शिल्पविद्यामें पारदर्शिता लाभ करता है। मातृरेखाकी एक शाखा बुधके स्थानमें और मंगलस्थानकी कोई रेखा बुधके स्थानमें उपस्थित होने पर वह व्यक्ति नाटकका अभिनेता होता है। बुधका स्थान सुप्रकाशित हो यदि दो सरल रेखाओंसे युक्त हो, अथवा रवि वृहस्पति और बुधका स्थान उच्च या रविरेखा सुस्पष्ट और वृहस्पतिका स्थान उच्च हो, तो चिकित्साशास्त्रमें पारदर्शी होता है। इन सब चिह्नोंके साथ मङ्गलका स्थान यदि ऊंचा हो, तो अस्त्र चिकित्सक होता है। शनिका स्थान उच्च, अंगुलीका अग्रभाग स्थूल, नख छोटे, चन्द्रस्थान उच्च या रविरेखा प्रबला होनेसे सङ्गीतशास्त्रज्ञ होता है।

२। भाग्यवान् और भाग्यहीन गणना—पितृरेखासे रविरेखा निकल कर रविस्थानगत, मातृरेखासे एक रेखा उठ कर वृहस्पति-स्थानमें तारकायुक्त अथवा ऊर्द्धरेखा अभग्न अवस्थामें मध्यमाके द्वितीय पर्व तक जावे, तो वह मनुष्य भाग्यवान् होता है। मातृरेखासे एक सरलरेखा वृहस्पतिस्थानमें तारकाचिह्नयुक्त होने पर भाग्यवान् होता है। मातृरेखासे एक सरल रेखा वृहस्पतिके स्थानमें तारकाचिह्नयुक्त होने पर भाग्यवान् होता है। अनामिकाके तृतीय पर्वसे दो रेखायें द्वितीय पर्वमें जाने पर और वृहत् चतुष्कोण प्रशस्त और वृहत् त्रिभुज परिष्कार भावसे अङ्कित रहने पर सौभाग्यशाली होता है। शुक्र स्थानसे कोई रेखा निकल कर कनिष्ठांगुलिके साथ मिल जाने पर सौभाग्यलाभ होता है। शनि स्थानके नीचे तारकाचिह्न भाग्यरेखा शृङ्खलयुक्त और अनामिकाके तृतीय पर्वमें अर्द्धचन्द्र सदृश चिह्न रहनेसे दुर्भाग्य होता है। पितृरेखाके प्रारम्भमें भाग्यरेखा और मातृरेखा मिलनेसे दुर्भाग्य होता है। शुक्रके स्थानमें या वृद्धांगुलिके द्वितीय पर्वके नीचे एक तारकाचिह्न रहनेसे स्त्रियोंसे दुर्भाग्य उपस्थित होता है। पितृरेखा और ऊर्द्ध्वरेखाके प्रथमांशमें कुछ छोटे छोटे क्रुशचिह्न रहनेसे अल्पवयसमें ही दुर्भाग्य होता है।

३। उच्चपद, मान इत्यादिकी गणना।—अनामिकाके तृतीय पर्वसे प्रथम पर्व तक एक सरल रेखा विस्तृत रहनेसे उच्च पदस्थ होता है। मणिबन्धसे एक सरल रेखा उत्थित हो मङ्गलके स्थानको पार करती हुई रवि स्थान तक यदि जावे अथवा मणिबन्धसे कई सरल रेखायें करतल तक जायें, तो पदगौरव और सम्मानवृद्धि होती है। पितृरेखासे सरल रेखा वृहस्पतिके स्थानमें जाने पर वृहस्पतिका स्थान ऊंचा होनेसे जातक राजदरबारका ऊंचा पद पाता है और बहुतेरी परीक्षाओंमें उत्तीर्ण होता है।

४। भूमिसम्पत्तिलाभ और हानि।—दोनों हाथमें बुधके नीचे मङ्गलका स्थान ऊंचा रहनेसे भूमिलाभ होता है। मणिबन्धके ऊपर एक कोणाकृति चिह्न या वृहत् त्रिभुजके जिस किसी भुजमें तारका या क्रुशचिह्न रहनेसे उत्तराधिकारसूत्रसे सम्पत्तिलाभ होती है। दोनों हाथके नीचे मंगलका स्थान नीचा हो, तो भूमिनाश या भूमिसम्पत्ति होती ही नहीं। ऊर्द्धरेखा मणिबन्धसे निकल कर मातृरेखाको स्पर्श करने पर या रविस्थानमें बहुत रेखाओंके रहने पर जातककी सम्पत्ति नष्ट होती है।

५। धनलाभकी गणना।—मणिबन्धके ऊपर एक कोणाकृति चिह्न, क्रुशचिह्न या तारकाचिह्न रहनेसे अथवा दो मातृरेखा रहनेसे उत्तराधिकारीसूत्रसे धन प्राप्त होता है। रविस्थानमें कई सरल रेखायें और तारका चिह्न पितृरेखासे एक रेखा रविस्थान तक जानेसे धनवान् होता है। पितृरेखासे एक या अनेक रेखायें वृहस्पति या रविस्थानगत होने पर भी धनवान्

होता है। बृहस्पतिस्थान ऊंचा, पितृरेखासे एक सरल रेखा शनिस्थानमें अथवा मणिबन्धसे एक सरल रेखा बुधके स्थानमें जाने पर या शनिस्थानके नीचे मातृरेखा में श्वेतविन्दु रहनेसे दैवात् अर्थलाभ होता है। बृहस्पति-के स्थानमें क्रुश या तारका चिह्न अथवा बृहस्पति स्थानमें क्रुश और रविस्थानमें तारका चिह्न रहनेसे जातक विवाहमें अर्थप्राप्त करता है।

६। अर्थकष्ट, व्यय इत्यादिकी गणना।—अनामिकाके तृतीय पर्वमें एक अर्द्धवृत्त चिह्न रहनेसे, ऊर्द्ध्वरेखा शृङ्खलावत् रहनेसे अथवा मणिबन्धकी तीन रेखाये अस्पष्ट या भग्न रहनेसे अर्थकष्ट भोग करना होता है। शनिके स्थानमें एक तारका और जालचिह्न रहनेसे, मातृरेखासे एक रेखा उठ कर बृहस्पतिके स्थानमें क्रुश चिह्नयुक्त होनेसे या पितृरेखासे छोटी छोटी रेखायें निकल कर अधोगामी होनेसे अर्थकष्ट होता है। बुधके स्थानमें काली तिल अथवा क्रुशचिह्न रहनेसे और क्रुशकी एक रेखा आयुरेखाको स्पर्श करनेसे हठात् अर्थ नाश होता है। शुक्रके स्थानसे सूक्ष्मरेखा उठ कर पितृ-रेखाके ऊपर होती हुई मङ्गलके स्थानमें उपस्थित होने पर गृहविवादमें अर्थकष्ट होता है।
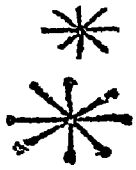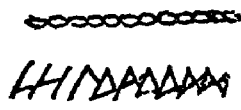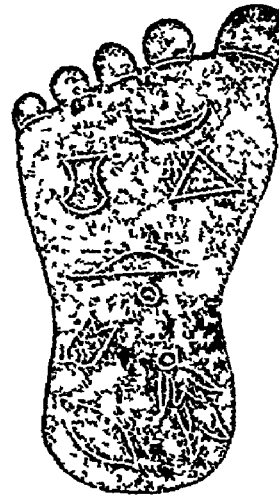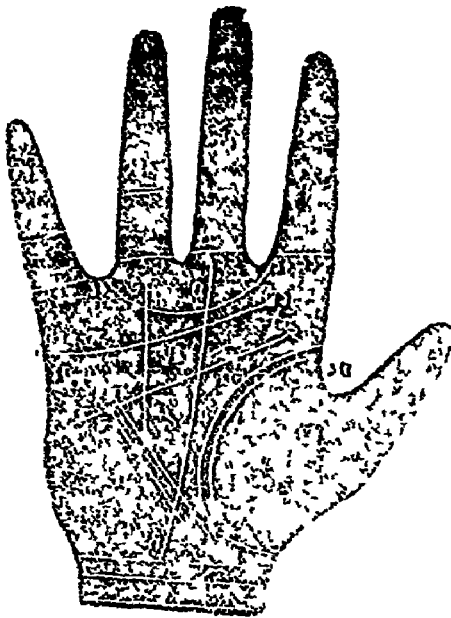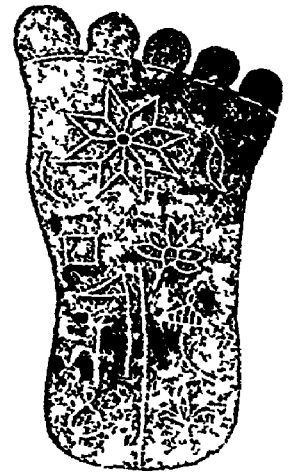
१ नं० चित्र—हाथके चिह्नादि
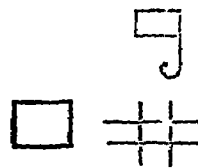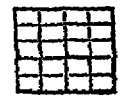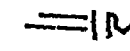
७। धर्माधर्म।—वृहत्चतुष्कोण प्रशस्त, तर्जनी चतुष्कोणविशिष्ट और समस्त ग्रहोंके स्थान समान ऊंचा रहनेसे अथवा चन्द्रस्थान सपतल रहनेसे, मातृ-रेखा उज्ज्वल और पार्श्वपर्य्यन्त विस्तृत और अना-मिकामें चतुष्कोण होनेसे सब धर्मोंमें समान विश्वास-सम्पन्न और सर्वदेवतामें भक्तिविशिष्ट होता है। आयुरेखा दो रहनेसे वृद्धांगुलि दृढ़ और शुक्रका स्थान उच्च होनेसे धार्मिक होता है। अनामिकाके तृतीय पर्वसे कई रेखायें प्रथम पर्व तक गमन करने पर ऊर्द्ध्वरेखासे कई शाखा रेखायें मणि-बन्धकी ओर जाने पर या रवि स्थानमें क्रुशचिह्न रहने से वह व्यक्ति अपने धर्मको परित्याग कर अन्य धर्मका

आश्रय लेता है दोनों हाथके वृहस्पतिका स्थान नीचा, उंगलियोंका प्रथम पर्व छूट, शनिके नीचे मङ्गल क्षेत्रमें कृश चिह्न रहनेसे नास्तिक होता है। मातृरेखाकी कोई शाखा बुधके स्थानमें जाने पर पुण्यवान होता है। मातृरेखा प्रशस्त और मलिन और भोगरेखा अस्पष्ट होने पर या शुक्रस्थान अपरिपुष्ट और बहुरेखायुक्त होनेसे पार्थिव विषयमें आसक्तिशून्य होता है।

२ समुद्र सम्बन्धी। ३ सामुद्रशास्त्र सम्बन्धीय।

सामुद्रिकाचार्य—एक फलित ज्योतिषज्ञ पण्डित। इनके पुत्र राजेन्द्र, राघवेन्द्र (रामप्रकाश आदि ग्रन्थके रचयिता) और महेश तथा पौत्र रामदेव चिरञ्जीव आदि सुपण्डित थे।

सामुहा (हिं० पु०) आगेका भाग या अंश, सामना।

सामूहक (सं० त्रि०) समूह-सम्बन्धी, समूहका।

सामूह्य (सं० क्ली०) समूह भावे ष्यञ्। समूहता समूहित्व भाव।

सामेश्वर—एक शैवतीर्थ। सामेश्वरमाहात्म्यमें इसका माहात्म्य वर्णित है।

सामोद (सं० त्रि०) सामका ऊहयुक्त।

सामोद (सं० त्रि०) आमोदयुक्त।

सामोद्भव (सं० पु०) साम उद्भवः कारणं यस्य। १ सामज, सामयोनि। २ हस्ती, हाथी।

सामोपनिषत्—उपनिषद्‌ द।

साम्नी अनुष्टुप् (सं० पु०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें १४ वर्ण होते हैं।

साम्नी उष्णिक् (सं० पु०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें १४ वर्ण होते हैं।

साम्नी गायत्री (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें १२ वर्ण होते हैं।

साम्न जगती (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें २२ सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी त्रिष्टुप (सं० पु०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें २२ सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी पंक्ति (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें २० सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी वृहती (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वैदिक छन्द जिसमें १८ सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्पद्र (सं० क्ली०) सम्पद्र-अण्। सम्पद्रसम्बन्धीय।

साम्पराय (सं० पु०) सम्पराय देखो।

साम्परायिक (सं० क्ली०) सम्पराय विपदि प्रभवतीति सम्पराय (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः। पा ५।१।१०१) इति ठञ्। १ युद्ध, लड़ाई। (त्रि०) २ पारलौकिक, परलोकसम्बन्धीय। ३ युद्धादि, युद्धके लायक।

साम्पातिक (सं० त्रि०) सम्पातसम्बन्धीय।

साम्पीक—एक प्राचीन कवि।

साम्पेयिक (सं० त्रि०) सम्पेय प्रभवति सम्पेय (पा ५।१।१०१) इति सन्तापादित्वात् ठञ्। सम्पेयजन्य जो प्रभु हो।

साम्प्रत (सं० अव्य०) सम् च प्रति च तयोः समाहारः, ततः प्रज्ञाद्यण्। १ युक्त, मिला हुआ। २ इदानीं, इसी समय, अद्य, अभी। (त्रि०) ३ इदानीन्तन।

साम्प्रतिक (सं० त्रि०) वर्त्तमान कालसे सम्बन्ध रखनेवाला, वर्त्तमान कालिक, इस समयका।

साम्प्रदानिक (सं० त्रि०) १ सम्प्रदान। २ सम्प्रदानसम्बन्धीय।

साम्प्रदायिक (सं० त्रि०) सम्प्रदाय-ठञ्। सम्प्रदायसम्बन्धी।

साम्प्रयोगिक (सं० त्रि०) नित्यसम्प्रयोगार्ह, नित्य सनादि प्रयोगयोग्य।

साम्प्रश्निक (सं० त्रि०) नित्य सम्प्रश्नार्ह।

साम्ब (शाम्ब)—श्रीकृष्णके पुत्र। श्रीकृष्णकी प्रधान महिषी जाम्बवतीके गर्भसे इनका जन्म हुआ था। जिस दिन शम्बरासुर रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्नको हरण कर अपने घर ले गया, उस दिनसे एक महीनेके अन्दर इनका जन्म हुआ। बाल्यकालमें महावीर बलदेवने इन्हें अस्त्रविद्या सिखाई। इस सुशिक्षाके प्रभावसे ये यादवोंमें अति ताय बलशाली और द्वितीय बलदेव कह कर समझे जाने लगे। साम्बके जन्मकालमें श्रीकृष्ण द्वारकापुरीमें शान्तिराज्यका भोग कर रहे थे। (हरिवंश १६८ अ०)

भविष्यपुराणमें लिखा है, कि जाम्बवतीके पुत्र साम्ब अनुपम रूपवान् थे। युवाकालमें अपने रूपसे इन्हें इतना अभिमान था, कि किसीको और भी भ्रूक्षेप नहीं करते थे। इसी समय एक दिन दुर्वासा ऋषि द्वारकापुरीमें

घूमने आये। साम्ब उनका रूक्ष, शुष्क और अत्यन्त कृश कलेवर देख कर मुंह बनाने और व्यङ्ग करने लगे। यह देख महर्षि दुर्वासाने अत्यन्त क्रुद्ध हो शाप दिया, कि तुम्हारी देह शीघ्र ही कुष्ठरोगाक्रान्त होगी।

इसके कुछ दिन बाद एक दिन नारद अकस्मात् द्वारकामें आ पहुंचे। बातचीत चलते चलते उन्होंने श्रीकृष्णसे कहा, 'स्त्रियों पर कदापि विश्वास करना कर्त्तव्य नहीं। यहां तक, कि आपकी महिषीगण कोई रूपवान् पुरुष देख कर उस पर आसक्त हो जाती हैं।' श्रीकृष्णको नारदकी इस बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ।

नारद आत्मवाक्य समर्थनके लिये और एक दिन श्रीकृष्णके पास गये। उस दिन कृष्णकी महिषियां मद्यपानमें मत्त हो श्वेतशिखर पर जलक्रीड़ा कर रही थीं। कृष्णपुत्र साम्ब भी उन लोगोंके साथ थे। महिषियां भी उस समय मद्यपानमें अपनेको भूल गई थीं। रुक्मिणी, सत्यभामा और जाम्बवतीको छोड़ सभी रमणियां साम्बका वह अनुपम सौन्दर्य देख कर मोहित और चञ्चल हो गईं। पद्मपत्र पर उन लोगोंका रेतः स्खलित हो गया। नारदने श्रीकृष्णको यह घटना दिखा कर कहा, 'प्रभो! मेरे पूर्ववाक्यकी सचाई देखिये।' तब द्वारकानाथने उन रमणियोंको सम्बोधन कर कहा, 'तुम लोग जब पुत्र जैसे साम्बकी मुखश्री देख कर अपनेको सम्हाल न सकी, तब तुम सभी इस पापसे डकैतोंके पल्ले पड़ोगी।' उन्होंने साम्बसे भी कहा, 'तुम्हारा रूप देख कर जब तुम्हारी माताओंका चित्त चंचल हो गया है, तब तुम्हें शाप देता हूं, कि तुम्हारा यह रूप कुष्ठरोगाक्रान्त और मलिन हो।'

पितृवाक्य पूर्ण हुआ, साम्ब कुष्ठरोगग्रस्त हुए। महाकष्टमें कातर हो इन्होंने नारदकी शरण ली और चंगा कर देनेके लिये ये उनसे बार बार अनुरोध करने लगे। अनन्तर नारदने इन्हें मित्रकी उपासना करने कहा। अब साम्बको इस बातकी बड़ी चिन्ता हुई, कि साङ्गोपाङ्ग मित्रनामा सूर्यमूर्त्ति निर्मित होने पर कौन प्रतिष्ठा करेगा और पौरोहित्य ही कौन करेगा, इस ऊहापोहमें पड़ कर इन्होंने नारदसे सलाह पूछी। नारदने कहा, 'लोभी देवल ब्राह्मण द्वारा सूर्यपूजा नहीं हो सकती। सद्ब्राह्मण भी सेवाइत होना नहीं चाहेंगे, क्योंकि उन्हें इस बातका डर होगा, कि देवस्व ग्रहण करनेसे कहीं पतित भी न हो जायें! अतएव तुम अपने कुलपुरोहितसे उपयुक्त ब्राह्मण स्थिर कर लो।'

अनन्तर साम्ब कुलपुरोहितके पास गये और उनसे कुल वृत्तान्त कह सुनाया। उत्तरमें पुरोहितने कहा, 'सूर्यपूजा और सूर्योद्देशमें प्रदत्त द्रव्य लेनेके अधिकारी ब्राह्मण इस देशमें नहीं हैं। शाकद्वीपमें निक्षुभाके गर्भजात सूर्यपुत्रगण रहते हैं, वे ही एकमात्र सूर्यपूजाके अधिकारी हैं। उन्हें किस उपायसे यहां लाया जा सकता है, सो मैं नहीं कह सकता। एकमात्र सूर्यदेव ही वह कह सकते हैं।'

पुरोहितके मुखसे यह वचन सुन कर साम्बने सूर्यका आश्रय लिया, सूर्यदेवने साम्बको देख कर कहा, 'जम्बूद्वीपके बाद शाकद्वीप है। उस शाकद्वीपमें मेरे अंशसे उत्पन्न मग, मसग, मानस और मन्दग नामकी चार जातिका वास है। उनमेंसे मग नामक ब्राह्मण ही मेरे अंशसम्भूत हैं और मेरी पूजाके अधिकारी हैं। तुम इधर उधर न भटक अभी गरुड़ पर सवार हो और मेरी पूजाके लिये उन मग ब्राह्मणोंको तुरत शाकद्वीपसे यहां ले आओ।'

भगवान् दिवाकरकी आज्ञा शिरोधार्य कर जाम्बवतीनन्दन साम्ब उसी समय द्वारकापुरीसे चल दिये। वहां पिता कृष्णके सामने दिवाकरदर्शन पानेकी सारी घटना सुना कर इन्होंने उसी समय गरुड़ पर सवार हो शाकद्वीपकी ओर यात्रा कर दी। वायुवेगगामी गरुड़पृष्ठ पर आरोहण कर ये शीघ्र ही शाकद्वीप पहुंचे। वहां इन्होंने धूपदीपादि विविध उपचारोंके साथ मगब्राह्मणोंको प्रखर प्रभाकरके पूजाकार्यमें निरत देखा। पीछे इन्होंने उन सूर्यसेवक ब्राह्मणोंको भक्तिभावसे प्रणाम और प्रदक्षिण कर कहा, 'हे द्विजगण! मैं आप ही लोगोंके पास आया हूं। मेरा नाम साम्ब है और मैं भगवान् विष्णुका नन्दन हूं। चन्द्रभागा नदीके किनारे मैंने भगवान् सूर्यदेवकी प्रतिमूर्त्ति स्थापित की है। पुरोहितके अभावसे उनकी यथाविधि प्रतिष्ठा और पूजा नहीं हो रही है। स्वयं सूर्यदेवके आदेशसे ही मैं आप लोगोंको लेने आया हूं।'

साम्बकी बात सुन कर मगोंने कहा 'हे साम्ब ! तुमने जो कुछ कहा वह बिलकुल सच है, क्योंकि कुछ समय पहले स्वयं दिवाकरने ही यह विषय हम लोगोंसे कहा है। अतएव अभी हम लोग तुम्हारे साथ जा रहे हैं। यहां हम लोगोंके जो अट्ठारह कुल हैं, वे सभी तुम्हारे साथ जायंगे।'

साम्बके आनन्दका पारावार न रहा। वे मगब्राह्मणोंको बड़े यत्नसे गरुड पर चढ़ा कर अभीष्ट स्थानमें लाये। वे लोग यथाविधि सूर्यकी पूजा करने लगे। उनके साधनप्रभावसे साम्ब शीघ्र ही रोगमुक्त हुए।

मगब्राह्मणोंको शाकद्वीपसे ला कर साम्बने चन्द्रभागा नदीके किनारे एक मनोहरपुरी निर्माण कराई। वह पुरी पीछे साम्बपुरी नामसे प्रसिद्ध हुई। इस पुरीके मध्यस्थलमें साम्बने दिवाकरमूर्त्ति स्थापन कर पूजा-निर्वाहके लिये धनरत्नादि रखा और भोजकोंको उन सबका अधिकारी बनाया। इसके बाद वे कुछ दिन पूजाकार्य तनमनसे कर सूर्यके पास वर लेने आये और पीछे देवता और ब्राह्मणोंको प्रणाम कर द्वारका लौटे।

साम्बपुराणमें लिखा है, कि साम्बने जिस स्थान पर सूर्यकी आराधना की, वह मित्रवण कहलाया। यह मित्रवण और साम्बपुर चन्द्रभागा नदीके किनारे अवस्थित था। साम्बपुर देखो।

महाभारतमें कई जगह वृष्णिनन्दन साम्बका उल्लेख है। यहां वे भारतसमरके एक नेता और पाण्डवपक्षमें जरासन्ध, शाल्व आदिके विरुद्ध युद्धकारी बताये गये हैं। (भारत २।४।३५३।१६।६-१९, ३।६१।४३)

मौषलपर्वमें लिखा है, कि एक दिन सारण प्रमुख वीरगण तथा विश्वामित्र, कण्व और नारद ऋषि द्वारका नगर आये। इस समय दुर्नीतिपरायण वृष्णिवंशीयगण ऋषियोंको विद्रूप करनेके अभिप्रायसे परमरूपशाली साम्बको मनोहर स्त्रीके वेशमें सजा कर उन लोगोंके पास लाये और बोले, 'हे महर्षिगण ! पुत्राभिलाषी अमिततेजस्वी वीरकी यह पत्नी क्या प्रसव करगी ? यह अच्छी तरह गणना कर देखिये।' वृष्णिवंशधरके इस वञ्चना वाक्य पर विरक्त हो उन लोगोंने कहा, 'वासुदेव नन्दन साम्ब वृष्णि और अन्धकोंके लिये एक घोर आयस मुषल प्रसव करेगा। यथासमय इस मुषलके जन्म लेने पर राजा उग्रसेनके आदेशसे वह चूर्ण कर समुद्रमें फेंक दिया गया। (मौषिल पर्व १।१५ २५)

भागवतके १।१०।२६, १।१।१८, १४।३१, ३।१।३१, १०।६१।११ आदि स्थलोंमें जाम्बवतीसुत साम्बका उल्लेख है।

साम्ब—साम्बपञ्चाशिका या सूर्यस्तोत्र, सूर्यद्वादशार्या और सूर्यसप्तार्याके रचयिता।

साम्बन्धिक (सं० क्ली०) १ सम्बन्ध। २ श्यालक, साला। (त्रि०) २ सम्बन्ध-सम्बन्धीय। ३ विवाह-सम्बन्धीय।

साम्बपुर—पञ्जाबके मूलतान नगरका प्राचीन नाम। यह नगर चन्द्रभागा नदीके तट पर बसा हुआ है। कहते हैं, कि इस श्रीकृष्णके पुत्र साम्बने बसाया था।

साम्ब और मूलतान देखो।

साम्बपुराण—एक उपपुराण, साम्बोपपुराण। पुराण देखो।

साम्भर (सं० क्ली०) सम्भरदेशजात लवण, साभर नमक।

साम्बरी (सं० स्त्री०) माया, जादूगरी। सम्बरने इस मायाकी सृष्टि की, इसीसे इसका नाम साम्बरी हुआ है। इस शब्दमें तालव्य श और दन्त्य स ये दोनों ही सकार होते हैं।

साम्बर्य (सं० पु०) सम्बरका गोत्रापत्य।

साम्बशास्त्री—शिवरुद्रस्तवके प्रणेता।

साम्बशिव (सं० पु०) एक विख्यात आचार्य। भारत-टीकामें नीलकण्ठने वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जरीय ग्रन्थमें इनका नामोल्लेख किया है।

साम्बाजी प्रतापराज—परशुरामप्रतापके रचयिता।

साम्बादित्य (सं० पु०) साम्बप्रतिष्ठित सूर्य।

साम्ब्य (सं० पु०) साम्बस्य गोत्रापत्यं वाह्वादित्वात् इञ्। (पा ४।१।९६) साम्बका गोत्रापत्य।

साम्बेश्वर (सं० पु०) साम्ब-प्रतिष्ठित शिव।

साम्भवी (सं० स्त्री०) रक्त लोध्र, लाल लोध।

साम्भस् (सं० त्रि०) अम्भोयुक्त, जिसमें पानी हो।

साम्भाष्य (सं० क्ली०) सम्भाषीका भाव या कर्म, सम्भाषण।

साम्भूयि (सं० पु०) सम्भूयस् गोत्रार्थे इञ्। सम्भूयसका गोत्रापत्य।

साम्मत्य (सं० क्ली०) सम्मतेर्भावः (वर्णादृढादिभ्यः ष्यञ् च। पा ५।१।१२३) इति सम्मति ष्यञ्। सम्मतिका भाव।

साम्मद (सं० पु०) सम्मदका गोत्रापत्य।

साम्मनस्य (सं० क्ली०) समानचित्तवृत्तियुक्त।

साम्मातुर (सं० पु०) सम्मातुरपत्यं पुमान् सम्मातृ (मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः। पा ४।१।११५) इति अण् उकारश्च। सतीतनय। पर्याय—भाद्रमातुर।

साम्मार्जिन (सं० क्ली०) सम्मार्जिन् (अनिणुनः। पा ५।४।१५) इति स्वार्थे अण्। सम्मार्जिन देखो।

साम्मुखी (सं० स्त्री०) सायाह्नव्यापिनी तिथि, जो तिथि सायंकाल तक रहती है, उसे साम्मुखी तिथि कहते हैं। (तिथितत्त्व)

साम्मुख्य (सं० क्ली०) सम्मुख भावे ष्यञ्। सम्मुखता, आभिमुख्य, सामना।

साम्मेघ्य (सं० क्ली०) संमेघ, मेघयुक्तकाल।

साम्मोदनिक (सं० त्रि०) सम्मोदनाय प्रभवनि (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः। पा५।१।१०) इति ठञ्। सम्मोदकारक, आनन्ददायक।

साम्य (सं० क्ली०) समस्य भावः सम-ष्यञ्। १ समता, तुल्यता, बराबरी। जैसे,—इन दोनों पुस्तकोंमें बहुत कुछ साम्य है। २ एक स्थानत्व। "साम्यन्त्वेकस्थानत्वं" (मुग्धबोधव्या०) (त्रि०) ३ साम्यावस्थापन्न।

साम्यग्राह (सं० पु०) समयभ्रादक।

साम्यता (सं० स्त्री०) साम्यत्व, साम्य।

साम्यवाद (सं० पु०) एक प्रकारका पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्त जिसका आरम्भ इधर सौ डेढ़ सौ वर्षोंसे हुआ है। इस सिद्धान्तके प्रचारक समाजमें बहुत अधिक साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्त्तमान वैषम्य दूर करना चाहते हैं। वे लोग चाहते हैं, कि समाजसे व्यक्तिगत प्रतियोगिता उठ जाय और भूमि तथा उत्पादनके समस्त साधनों पर किसी एक व्यक्तिका अधिकार न रह जाय, बल्कि सारे समाजका अधिकार हो जाय। इस प्रकार सब लोगोंमें धन आदिका बराबर वितरण हो, न तो कोई बहुत गरीब रह जाय और न कोई बहुत अमीर रह जाय।

साम्यावस्था (सं० स्त्री०) समान अवस्था, तुल्यावस्था, वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों उनमें किसी प्रकारका वैषम्य न हो।

साम्युत्थान (सं० क्ली०) यज्ञ समाप्तिमें विघ्न या असुविधा।

साम्राज्य (सं० क्ली०) सम्राजो भावः ष्यञ्। १ वह राज्य जिसके अधीन बहुतसे देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट्का शासन हो।

तन्त्रमें साम्राज्यका लक्षण इस प्रकार लिखा है,—लाख मनुष्यके ऊपर आधिपत्य रहनेसे उसे राज्य, दश लाखके ऊपर आधिपत्य रहनेसे साम्राज्य और सौ लाख होनेसे उसे महासाम्राज्य कहते हैं। (वरदातन्त्र २ पटल) २ आधिपत्य, पूर्ण अधिकार।

साम्भर—राजपूतानेके जयपुर राज्यान्तर्गत एक लवणजलपूर्ण ह्रद और तत्तीरवर्त्ती नगर। इस ह्रदके जलसे जो लवण तैयार होता है, वह भी साम्भर कहलाता है।

शाम्भर देखो।

साम्राज्यलक्ष्मी—तन्त्रोक्त देवीभेद। ये साम्राज्यकी अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। आकाशभैरवतन्त्रमें इनकी पीठिका और पूजादि वर्णित है।

साम्राज्यसिद्धिदा (सं० स्त्री०) उज्जानक राज्यकी अधिष्ठात्री देवी।

साम्राणिकर्द्दम (सं० क्ली०) जवादि नामक गन्धद्रव्य, गंधमार्जार या गंध बिलावका वीर्य जो गंध द्रव्योंमें माना जाता है।

साम्राणिज (सं० क्ली०) महापारेवत, बड़ा पारेवत।

सायं (सं० त्रि०) १ संध्यासम्बन्धी, सायकालीन। (पु०) २ दिनका अन्तिम भाग, शाम। ३ वाण, तीर।

सायंकाल (सं० पु०) सायं सायाह्नकालः। सायाह्न काल, सायंसन्ध्या समय। जिस समय सायंसन्ध्या कही गई है, उस समयको सायकाल कहते हैं। दिवाका एक दण्ड और रात्रिका एक दण्ड, यह दण्डद्वयात्मक काल ही सायंसन्ध्याका काल है, अतएव यही समय सायकाल है।

सायंकालीन (सं० त्रि०) संध्याके समयका, शामका।

सायंगृह (सं० पु०) वह जो संध्या समय जहां पहुंचता हो, वहीं अपना घर बना लेता हो।

सायंगोष्ठ (सं० त्रि०) सायंकालमें गोचारणस्थानमें रहनेवाली गाय।

सायंतन (सं० त्रि०) सन्ध्याकालीन, सन्ध्याका।

सायंतनी (सं० त्रि०) सायंतन देखो।

सायंभव (सं० त्रि०) सन्ध्याका, शामका।

सायंस (अं० स्त्री०) १ विज्ञान शास्त्र। २ वह शास्त्र जिसमें भौतिक तथा रासायनिक पदार्थोंके विषयमें विवेचन हो। विज्ञान देखो।

सायंसन्ध्या (सं० स्त्री०) सायं सायाह्ने या सन्ध्या। १ सायंकालोपास्य देवता, सायंकालमें जिस देवताकी उपासना करनी होती है, सरस्वती। सायं समयमें सरस्वतीकी उपासना करनी होती है। २ सायंकालकी कर्त्तव्य उपासना। सायंकालमें जो उपासना की जाती है, उसको सायंसन्ध्या कहते हैं। प्रति दिन त्रिसन्ध्याकालमें अर्थात् प्रातःसन्ध्या, मध्याह्नसन्ध्या और सायंसन्ध्या, इस त्रिसन्ध्याकालमें ब्राह्मणादि सब वर्णों को ही सन्ध्योपासना करना अवश्य कर्त्तव्य है। शास्त्र में लिखा है—

"धरमे ह्याहुतिः काले नाकाले लक्षकोटयः।"

(स्मृति)

यथाविहित समयमें एक बार आहुति प्रदान भी श्रेयस्कर है, किन्तु असमयकी लाखों बारकी आहुति भी फलप्रद नहीं हो सकती। इसी विधानके अनुसार सायंसन्ध्याका जो समय है, उसी समय सन्ध्योपासना करना कर्त्तव्य है। प्रति दिन ही सायंसन्ध्याका अनुष्ठान करना होता है। किन्तु निम्नलिखित दिनको सायंसन्ध्या नहीं करनी चाहिये—द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति और श्राद्धके दिन। किन्तु गायत्रीका जप करना चाहिये, यही शास्त्रसंगत व्यवस्था है। वैदिक संध्याके सम्बन्धमें यह विधान जानना होगा। जिन्होंने तन्त्रमतके अनुसार दीक्षा ली है, उनको तान्त्रिक सन्ध्या करनी चाहिये। किन्तु तान्त्रिक सन्ध्या उक्त दिनोंको मना नहीं है। उस दिनको सायंसन्ध्या अनुष्ठान अवश्यकर्त्तव्य है। हरनस्वदीधितिमें उक्त निषिद्ध दिनको क्यों सन्ध्या करनी होगी, उसका विचार और तत्तौक प्रमाण उद्धृत किये गये हैं।

कालिकापुराणमें लिखा है—सन्ध्या ब्रह्माकी मानसी कन्या हैं। वे तपस्या करनेके लिये वशिष्ठ देवके यहां गईं। वशिष्ठने उनको परमपुरुष विष्णुके उद्देशसे तपस्या करनेका उपदेश दिया। उनके उपदेशानुसार सन्ध्याने कठोर तपका अनुष्ठान किया। विष्णुने प्रसन्न हो कर कहा—वर मांग। सन्ध्याने कहा—देव! यदि आप मेरी तपस्यासे सन्तुष्ट हों, तो मुझे यही वर दें, कि पृथ्वीके जीव उत्पन्न होते ही सकाम न हों, मैं त्रिलोकमें पतिव्रताके नामसे प्रसिद्ध होऊं। पतिके सिवा और किसी पुरुषके प्रति मेरी सकाम दृष्टि न हो और जो मुझको सकाम दृष्टिसे देखें वे क्लीव बन जायें। भगवानने कहा,—तुम्हारे स्वामी तुम्हारे साथ सप्तकल्पान्त जीवित रहें, तुमने जो सब बातें कही हैं, वे सब तुमको दी गईं। इसके सिवा तुम्हारे मनमें और एक बात है, वह भी पूरी होगा। मेधातीथि इस पर्वतकी उपत्यकाभूमिमें महायज्ञ सम्पादन कर रहे हैं, तुम मेरे प्रसादसे मुनियोंके अलक्ष्यमें जा कर अग्निमें देह त्याग करो।

भगवान् विष्णुने उनको इस तरह वर प्रदान कर हाथसे सन्ध्याको स्पर्श किया। क्षण कालमें ही उनका शरीर पुरोडाशमय हो गया। ऐसा होनेका कारण यह था, कि अवैधमांस दग्ध होनेसे अग्निकी पवित्रता विनष्ट होती है। इसीलिये विष्णुने उनको पुरोडाशमय बनाया। उस समय सन्ध्या मेधातिथिके यज्ञस्थानमें गईं और सबके अलक्ष्यमें वे अग्निमें प्रवेश कर गईं। इसके बाद पुरोडाशमय सन्ध्याका शरीर तत्क्षणात् अलक्ष्य भावसे जल कर पुरोडाशमय गन्ध प्रकट होने लगी। वह्निने उनका शरीर जला कर विष्णुकी अनुमतिसे उस विशुद्ध देहको सूर्यमण्डलमें स्थापित किया। उनके शरीरका ऊर्द्ध्वभाग दिवसका आदि और अहोरात्रकी मध्यगामिनी प्रातःसन्ध्या और शेष भाग दिवसका अन्त और अहोरात्रकी मध्यगामिनी पितृगणकी सदा प्रीतिदायिनी सायंसन्ध्या हुई। सूर्योदयके पूर्व जब अरुणोदय होता है, तब इस प्रातःसन्ध्याका उदय होता है और सूर्यके

डूबनेके बाद रक्तकमलसन्निभा इस सायंसन्ध्याका उदय होता है। (कालिकापुराण २२ अ०)

सायंसन्ध्यादेवता (सं० स्त्री०) सायंसन्ध्याया देवता। सरस्वती।

सायंसूर्य (सं० पु०) सायंकालीनः सूर्य्यः। सायं समयका सूर्य। वैद्यकमें लिखा है, कि सायं समयका सूर्य्यकिरण शरीरमें नहीं लगाना चाहिये, यह शरीरके लिये बडो ही आनष्टकारक है।

साय (सं० पु०) १ दिनान्त। २ बाण, तीर।

सायक (सं० पु०) १ बाण, तीर। २ खड्ग, तलवार। ३ पञ्चम संख्या। ४ एक प्रकारका वृत्त जिसके प्रत्येक पादमें सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। ५ भद्रमुञ्ज, रामसर।

सायकपुङ्खा (सं० स्त्री०) सायकस्य पुङ्ख इव पुङ्खो यस्याः। १ शरपुङ्खा, सर्फोका। (पु०) २ सायकका पुङ्ख।

सायकप्रयुक्त (सं० त्रि०) प्रहरणार्थ उत्तोलित खड्ग, मारनेके लिये उठाया हुआ खड्ग।

सायकमय (सं० त्रि०) १ अस्त्रयुक्त। (पु०) २ बाणविशेष।

सायका (सं० स्त्री०) कुंजदह, लाई।

सायण—प्रायश्चित्तपद्धतिके प्रणेता एक पण्डित। ये राजा रङ्गराजके मन्त्री थे। (१५७२—८५ ई०)

सायण माधवीय (सं० त्रि०) सायणाचार्य्य और माधवाचार्य्य सम्बन्धीय।

सायणवाद (सं० पु०) आचार्य्य सायणका मत या सिद्धान्त।

सायणाचार्य—ऋग्वेद भाष्यकार एक सुप्रसिद्ध सर्वशास्त्रविद् पण्डित। दाक्षिणात्यके विद्यानगरके राजा महाराज द्वितीय सङ्गम, प्रथम बुक्क और उनके पौत्र द्वितीय हरिहरने इनकी विद्याके प्रभावसे मुग्ध हो कर इनको राजमन्त्री पद पर नियुक्त किया। इनके पिताका नाम सायण और भ्राताका नाम माधव था। माधव राज-मन्त्री थे। पीछे शृङ्गेरी मठके गुरुपद पर नियुक्त हो कर विद्यारण्य स्वामी या मुनि नामसे पूजित हुए।

विद्यानगर या विद्यारण्य स्वामी देखो।

सायणाचार्य विष्णुसर्वज्ञ तथा शङ्करानन्दके शिष्य थे। पञ्चदशी टीकाके प्रणेता सुप्रसिद्ध रामकृष्ण उनके शिष्य थे। उन्हों ने सायणाचार्यसे विद्या शिक्षा ली थी। सायणके नाम जितने ग्रन्थ प्रचलित हैं, उनमें सभी इन्हीके रचे हुए हैं या नहीं इसका निर्णय करना कठिन है। अनेक ग्रन्थोंकी तो दोनों भाइयोंने मिल कर रचना की है। कितने ही ग्रन्थ जो सायणाचार्य्यके बनाये प्रसिद्ध हैं, उनके दूसरे एक ग्रन्थमें माधवाचार्य्यकी भणिता पाई जाती है। ऋग्वेदभाष्य और तैत्तिरीय संहिताके भाष्यकी आलोचना करने पर मालूम होता है, सायणाचार्य्य स्वयं उक्त दो भाष्य सम्पूर्ण नहीं कर गये। इसके बाद उनकी कई शिष्यपरम्परा उसको समाप्त की थी। तैत्तरीय ब्राह्मण, तैत्तिरीयारण्यक और ऐतरेयारण्यक भाष्य आदि आलोचना करनेसे मालूम होता है, कि उनकी अनुभूति या व्याख्या भिन्न भिन्न व्यक्तियोंकी कल्पनाका फल है।

सायणाचार्य्य सन् १३८७ ई०में मरे। सन् १३५४ से १३७७ ई०तक प्रथम बुक्कका राज्यकाल माना गया है। सुतरां सायणाचार्य्यने सन् १३४० ई० पहलेसे ही सङ्गम राजवंशके मन्त्रिरूपमें विद्यानगरकी राजसभाको अलंकृत किया था, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। सायणाचार्य्यने स्वयं जिन ग्रंथोंको बनाया था या उनके नामसे आज कल जो ग्रन्थ प्रचलित हैं, उनकी सूची नीचे प्रकाशित की जाती है—अद्भुतदर्पण, अधिकरणरत्नमाला या जैमिनीय न्यायमालाविस्तर, अनुभूतिप्रकाश या सर्वोपनिषदर्थप्रकाश, अपरोक्षानुभवटीका, अभिनवमाधवीय अष्टकटीका, आचारमाधवी या पराशरस्मृतिभाष्य, आत्मानात्मविवेक, आधानयज्ञतन्त्र (यज्ञतन्त्रसुधानिधिका प्रकाश), आर्षेयब्राह्मणभाष्य, आशीर्वादपद्धति या ब्रह्मविद्याशीर्वादपद्धति, आश्वलायनदर्शपूर्णमास सूत्रभाष्य, उपग्रन्थसूत्रवृत्ति, ऋग्वेदभाष्य, ऐतरेय ब्राह्मणभाष्य, ऐतरेयारण्यक भाष्य, ऐतरेयोपनिषद्भाष्य, कर्मकालनिर्णय, कर्मविपाक, कल्पभाष्य, काठकभाष्य, कालनिर्णय या कालमाधवीय, कुरुक्षेत्रमाहात्म्य, कृष्णचरणपरिचर्यावृत्ति, कैवल्योपनिषद्दीपिका, कालाग्निरुद्रोपनिषद्भाष्य, गोत्रप्रवरनिर्णय, गोभिलगृह्यसूत्रभाष्य, छान्दोग्योपनिषद्दीपिका, जातिविवेकजनप्रश्न, जीवन्मुक्तिविवेक, ज्ञानखण्डभाष्य, या ज्ञानयोगखण्डभाष्य, तत्त्व-

मेद, नाड्यब्राह्मणभाष्य, निधिनिर्णय, तैत्तिरीय विद्या प्रकाशशालिक, तैत्तिरीयब्राह्मणभाष्य वा यजुर्वेद-ब्राह्मणभाष्य और तैत्तिरीय संहिताभाष्य, तैत्तिरीय सन्ध्याभाष्य, तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य, त्र्यम्बकभाष्य, दक्षिणामूर्त्ति प्रकाशटीका, दत्तकमीमांसा, दर्शपूर्ण, मासप्रयोग, दर्शपूर्णमासभाष्य, दर्शपूर्णमास यज्ञतन्त्र दशोपनिषद्भाष्य, देवताध्यायभाष्य, देवीभागवत-त्रिवृत्ति, धातुवृत्ति, पञ्चदशी, पञ्चरुद्रीय टीका या रुद्र-भाष्य, पञ्चरात्रव्याख्या, पञ्चीकरण, पराशरस्मृति-व्याख्या या व्यवहारमाधव, पाणिनीयशिक्षाभाष्य, पुराणसार, पुरुषसूक्तटीका, पुरुषार्थसुधानिधि, प्रमेय-सारसंग्रह, बृहदारण्यकभाष्य, बौधायनश्रौतसूत्र व्याख्या, ब्रह्मगीताटीका, भगवद्गीताभाष्य, मण्डल-ब्राह्मणभाष्य, मन्त्रप्रश्नभाष्य, महानाट्य'नर्णय, माधवीय, माधवीयभाष्य (वेदान्त), मुक्तिखण्डटीका, मुहूर्त्त-माधवीय, यजुर्वेदमन्त्रखण्डटीका, याज्ञिक्यपनिषद् भाष्य, योगवाशिष्ठसारसंग्रह, रात्रिसूक्तभाष्य, रामतत्त्वप्रकाश, लघुन्यासटीका, व्याख्या (वेदान्त) व्यासदर्शनप्रकाश, शङ्करविलास, शतपथब्राह्मणभाष्य, शतरुद्रीयभाष्य, शिवखण्डभाष्य, शिवमाहात्म्यभाष्य, श्रीसूक्तभाष्य, श्वेताश्वतरोपनिषद्प्रकाशिका, षड्विंश ब्राह्मणभाष्य, सन्ध्याभाष्य, सरस्वतीसूक्तभाष्य, सर्व-दर्शनसंग्रह, सहस्रनामकारिका, सामब्राह्मणभाष्य, सामविधानब्राह्मणभाष्य, सामवेदभाष्य, सिंहानुवाक् भाष्य, सिद्धान्तबिन्दु (वेदान्त), सूतसंहिता तात्पर्य दीपिका, सूर्यसिद्धान्तटीका, स्तोत्रभाष्य (सामवेद), स्मृतिसंग्रह, स्वरविग्रह, शिक्षाभाष्य, स्वाध्यायब्राह्मण-भाष्य, हरिस्तुतिटीका।

सायणीय (सं० त्रि०) सायण प्रोक्त या लिखित।

सायत (अ० स्त्री०) १ एक घटे या ढाई घड़ीका समय। २ दण्ड, पल, लमहा। ३ शुभ मुहूर्त्त, अच्छा समय।

सायतन (सं० त्रि०) आयतनयुक्त, स्थानयुक्त।

सायन (सं० स्त्री०) १ सूर्यकी एक गति। (त्रि०) २ अयनयुक्त, जिसमें अयन हो। सूर्य देखो।

सायन्तन (सं० त्रि०) सायं भवः सायम् (साय चिरं प्राह्णे प्रगे ऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च। पा ४।३।२३) इति ट्युल् तुट् च। सायंकालभव, जो सामको हो।

सायन्दुग्ध (सं० त्रि०) सायंकालमें जो दूध दुहा जाता है।

सायन्दोह (सं० पु०) सायंकालमें दोहन, शामको दूहने-की क्रिया। (कात्यायनश्रौ० २१।५।७)

सायर (फा० पु०) स्वामी।

सायवान (फा० पु०) १ मकानके सामने धूपसे बचनेके लिये लगाया हुआ ओसारा, बरामदा। २ मकानके आगेकी ओर बढ़ी या निकली हुई वह छाजन या छप्पर आदि जो छायाके लिये बनाई गई हो।

सायम् (सं० अव्य०) १ सायाह्न। २ सन्ध्या।

सायमाश (सं० पु०) सायंभोजन, वह भोजन जो शाम-को किया जाता है।

सायमाहुति (सं० स्त्री०) सायंकालमें प्रदत्त आहुति। सायंकालके होममें जो आहुति दी जाती है, उसे सायमा हुति कहते हैं।

सायम्पोष (सं० पु०) सायंकालमें भोजन या खाद्यदान।

सायम्प्रातर् (सं० अव्य०) सायं और प्रातःकाल, सुबह और शाम।

सायम्प्रातराशिन् (सं० त्रि०) सायं और प्रातःकालमें भोजनकारी, सवेरे और शामको खानेवाला।

सायम्प्रातिक (सं० त्रि०) सायं और प्रातर्भव, सवेरे और सामको होनेवाला।

सायम्प्रातर्होम (सं० पु०) सायं और प्रातःकालीन होम, साग्निक ब्राह्मणोंको सायंकाल और प्रातःकालमें होम करनेका विधान है।

सायम्भव (सं० पु०) सायंकालमें उत्पन्न, सायन्तन।

सायम्भोजन (सं० क्ली०) सायं भोजन। सायंकालमें भोजन। मनुमें लिखा है, कि सायम्भोजन शेष होनेके बाद यदि गृहमें अतिथि आवे, तो फिरसे पाक कर उसे भोजन करावे। किन्तु बलिवैश्वका अनुष्ठान न करे।

सायर (हिं० पु०) १ सागर, समुद्र। २ ऊपरी भाग, शीर्ष।

सायर (अ० पु०) १ वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २ फुटकर, मुतफर्रकात।

सायल (अ० पु०) १ प्रश्नकर्त्ता, सवाल करनेवाला। २ मांगनेवाला, याचना करनेवाला। ३ भिखारी, फकीर।

४ प्रार्थना करनेवाला, दरखास्त करनेवाला। ५ आकांक्षी, उम्मेदवार। ६ न्यायालयमें फरियाद करने या किसी प्रकारकी अरजी देनेवाला, प्रार्थी।

सायल (हिं० पु०) सिलहटमें होनेवाला प्रकारका धान।

सायवस (सं० पु०) ऋषिभेद।

साया (फा० पु०) १ छाया, छांह। २ परछाईं। ३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४ प्रभाव, असर।

साया (हिं० पु०) १ घाघरेकी तरहका एक पहनावा जो प्रायः पाश्चात्य देशोंकी स्त्रियां पहनती हैं। २ एक प्रकारका छोटा लहंगा जिसे स्त्रियां प्रायः महीन साड़ियोंके नीचे पहनती हैं।

सायाबंदी (फा० स्त्री०) मुसलमानोंमें विवाहके अवसर पर मंडप बनानेकी क्रिया।

सायारम्भ (सं० त्रि०) सायंकालमें आरम्भ।

सायाशन (सं० क्ली०) सायं दिनान्ते अशनं भोजनं। दिनान्तमें भोजन, शामको खाना।

सायास (सं० त्रि०) आयासेन सह वर्त्तमानः। आयासयुक्त, आयासविशिष्ट।

सायाह्न (सं० पु०) सायमह्नः (संख्या विसायेति। पा ६।३।११०) इति ज्ञापकात् समासः। दिनको पांच भागोंमें विभक्त कर उसके अन्तिम भागका नाम सायाह्न है, दिनका अन्तिम तीन मुहूर्त्त।

सायिका (सं० स्त्री०) क्रमस्थिति, क्रम क्रमसे अवस्थिति।

सायिन् (सं० पु०) अश्वारोही, घोड़ेका सवार।

सायुज्य (सं० क्ली०) १ सहयोग, एकत्व। २ अभेद, साम्य, सादृश्य। ३ पांच प्रकारकी मुक्तियोंमेंसे एक मुक्ति। सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य यही पांच प्रकारकी मुक्ति है। एकत्व मुक्तिका नाम सायुज्य है। जिस मुक्तिसे मुक्तपुरुष ब्रह्ममें लीन हो जाता है, वही सायुज्यमुक्ति कहलाती है। विष्णुभक्त इस मुक्तिकी कामना नहीं करते एवं भगवत्सेवाके सिवा इन मुक्तियोंमें कोई भी मुक्ति मिलने पर ग्रहण नहीं करते।

भगवान् विष्णुके एक साथ लोकमें वास करनेका नाम सालोक्यमुक्ति है। उनके साथ समान ऐश्वर्य लाभ करनेका नाम सार्ष्टि है, उनके निकट वास करनेका नाम सामीप्य और एकत्वका नाम सायुज्य है।

क्रमसन्दर्भ नामक ग्रन्थमें लिखा है, सायुज्य दो प्रकारका है—भगवत्सायुज्य और ब्रह्मसायुज्य। ये दोनों प्रकार सायुज्य भगवान्का लीलाके स्वरूप हैं। अतएव इससे भगवत्सेवनार्थ अभावके कारण इसके ग्रहण करनेकी आवश्यकता है। मुक्ति शब्द देखो।

सायुज्यत्व (सं० क्ली०) सायुज्यस्य भावः त्व। सायुज्यका भाव या धर्म।

सायें (सं० अव्य०) दिनान्तमें, सायंकालमें।

सारंगिया (हिं० पु०) सारंगी बजानेवाला, साजिंदा।

सारंगी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका बहुत प्रसिद्ध बाजा। विशेष विवरण सारङ्ग शब्दमें देखो।

सार (सं० क्ली०) १ जल, पानी। २ धन, दौलत। सरात् जात। सर-अण्। ३ नवनीत, मक्खन। ४ अमृत। ५ विपिन, जंगल। ६ अग्निपुराणमें लिखा है, कि जिस रसके मध्य सार घृत और घृतका सार हुत है अर्थात् घृत द्वारा जिस अग्निमें होम किया जाता है, वही अग्नि है, हुतका सार स्वर्ग और स्वर्गका सार स्त्री है।

यह संसार असार है, किन्तु इस असार संसारमें चार वस्तु सार है,—काशीमें वास, साधुओंका सङ्ग, गङ्गा जलपान और शिवपूजा। (पु०) स्तृ (सृ स्थिरे। पा ३।३।१७) इति घञ्। ७ बल, ताकत। ८ कथन आदिसे निकलनेवाला मुख्य अभिप्राय, निष्कर्ष। ९ किसी पदार्थमेंसे निकला हुआ निर्यास या अर्क आदि, रस। १० मज्जा। ११ वज्रक्षार। १२ वायु, हवा। १३ रोग, बीमारी। १४ पाशक, जूआ खेलनेका पासा। १५ दूहनेके बाद तुरत औंटाया हुआ दूध। १६ औंटाए हुए दूधपरकी साढ़ी, मलाई। १७ लकड़ीका हीर। १८ परिणाम, फल, नतीजा। १९ दाड़िम्ववृक्ष, अनारका पेड़। २० पियाल वृक्ष, चिरौंजीका पेड़। २१ वङ्ग, रांगा। २२ मुद्ग, मूंग। २३ क्वाथ, काढ़ा। २४ नीली वृक्ष, नीलका पौधा। २५ कर्पूर, कपूर। २६ काष्ठान्तर्गत परिपक्व निर्यास, धूप। २७ सालसार। २८ पना, पतला शरबत। २९ तलवार। ३० द्रव्य। ३१ अस्थि, हाड़। ३२ देहान्तर्गत स्थिर पदार्थ। चरकके विमानस्थानमें इस सारका विषय इस प्रकार लिखा है,—पुरुषके सार आठ हैं, यथा—त्वक्, रक्त, मांस, मेद,

अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्त्व (मन)। इन आठ सार द्वारा पुरुषोंके बलका विशेष ज्ञान होता है अर्थात् पुरुष अति-बलवान्, मध्यबल, हीनबल है या अबल, ये सब विशेष रूपसे जाने जाते हैं।

३३ अर्थालङ्कारविशेष। इसमें उत्तरोत्तर वस्तुओंका उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। राज्यके मध्य सार वसुधा, वसुधाके मध्य पुर और पुरके मध्य सौध तथा सौधके मध्य शय्या और शय्यामें अनङ्गका सर्वस्व धन वराङ्गना है। यहां उत्तरोत्तर उत्कर्ष वर्णित हुआ है तथा इसमें वैचित्र है, अतएव यहां उक्त अलङ्कार हुआ। जहां ऐसा होता है, वहां यह सार अलङ्कार होगा। एकमात्र वैचित्र ही अलङ्कारका कारण है। अतएव वर्णनीय स्थलमें वैचित्र रहना बिलकुल उचित है। जहां लक्षण का समावेश होता है अथच वैचित्र नहीं रहता, वहां वहां अलंकार हो नहीं होगा। ३४ एक प्रकारका मात्रिक छन्द। इसमें २८ मात्राएं होती हैं और सोलहवीं मात्रा पर विराम होता है। इसके अंतमें दो गुरु होते हैं। प्रभाती नामक गीत इसी छन्दमें होता है। ३५ एक प्रकारका वर्णवृत्त जिसमें एक गुरु और और एक लघु होता है। इसे ग्वाल और शानु भी कहते हैं। ३६ मूंग, मांस। ३७ वह भूमि जिसमें दो फसलें होती हों। ३८ गोशाला, बाड़ा। ३९ खाद। ४० लोह, लोहा। ४१ किसी पदार्थमेंका मूल, मुख्य, कामका या असली भाग, तत्त्व, सत्त।

(त्रि०) ४२ न्याय्य। ४३ दृढ़, मजबूत। ४४ उत्तम, श्रेष्ठ।

सार (हिं० पु०) १ पालन, पोषण, रक्षा। २ शय्या, पलंग।

सारक (सं० पु०) १ जयपाल, जमालगोटा। २ पीतमुद्ग, पीली मूंग। ३ धान्यक, धनिया। (त्रि०) ४ विरेचक, जो वस्तु सेवन करनेसे विरेचन होता है।

सारखदिर (सं० पु०) दुर्गन्ध खदिर, बबुरी।

सारखा (हिं० वि०) सदृश, समान।

सारगन्ध (सं० पु०) चन्दन, संदल।

सारगन्धि (सं० पु०) सारो गन्धो यस्य। चन्दन।

सारघ (सं० क्ली०) सरघाकृत मधु, वह मधु जो मधु मक्खी तरह तरहके फूलोंसे संग्रह करती है। वैद्यकमें यह लघु, रूक्ष, शीतल, कोमल और अर्श रोगनाशक, दीपन, बलकारक, अतिसार, नेत्ररोग तथा घावमें हितकर कहा गया है।

सारङ्ग (सं० पु०) १ चातक पक्षी। २ हरिण। ३ मातङ्गज, हाथी। ४ कोकिल, कोयल। ५ श्येन, बाज। ६ छत्र, छाता। ७ राजहंस। ८ चित्रमृग। ९ अंशुक, महीन कपड़ा। १० नानावर्ण। ११ मयूर, मोर। १२ कामदेव। १३ धनुष। १४ केश। १५ स्वर्ण। १६ आभरण। १७ पद्म, कमल। १८ शङ्ख। १९ चन्दन। २० कर्पूर, कपूर। २१ पुष्प, फूल। २२ मेघ, बादल। २३ पृथ्वी। २४ रात्रि, रात। २५ दीप, ज्योति। २६ सिंह। २७ सूर्य। २८ अश्व, घोड़ा। २९ भ्रमर, भौंरा। ३० विष्णुका धनुष। ३१ लवा पक्षी। ३२ श्रीकृष्णका एक नाम। ३३ चन्द्रमा, शशि। ३४ समुद्र, सागर। ३५ जल, पानी। ३६ बाण, शर, तीर। ३७ दीपक, दीया। ३८ पपीहा। ३९ शम्भु, शिव। ४० सुगन्धित द्रव्य। ४१ सर्प, सांप। ४२ भूमि, जमीन। ४३ शोभा, सुन्दरता। ४४ स्त्री, नारी। ४५ दिन। ४६ तलवार, खड्ग। ४७ कपोत, कबूतर। ४८ एक प्रकारका छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें २२ अक्षर होते हैं जिनमेंसे १, २, ४, ५, ७, ८, १० और ११वां अक्षर गुरु और बाकी सभी लघु होते हैं। ४९ एक प्रकारका छन्द। इसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ५० छप्पयके २३वें भेदका नाम। ५१ मोती। ५२ कुच, स्तन। ५३ हाथ, कर। ५४ वायस, कौआ। ५५ ग्रह, नक्षत्र। ५६ खञ्जन पक्षी, सोनचिड़ी। ५७ हल। ५८ मेंढक। ५९ गगन, आकाश। ६० पक्षी, चिड़िया। ६१ ईश्वर, भगवान्। ६२ नयनाञ्जन, काजल। ६३ कामदेव, मन्मथ। ६४ विद्युत् बिजली। ६५ सम्पूर्ण जातिका एक राग। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। शास्त्रोंमें यह मेघरागका सहचर कहा गया है, पर कुछ लोग इसे स्वतन्त्र राग मानते और नट मल्लार तथा देशरागके संयोगसे बना हुआ बतलाते हैं। इसकी स्वर-लिपि इस प्रकार कही गई है—स रे ग म प ध नि स। स नि ध प म ग रे स। स रे ग म प प ध प प म ग म प म ग म ग रे स। स रे ग रे स।

६६ वाद्ययन्त्रविशेष, सारंगी। इसका प्रचार इस देशमें बहुत प्राचीनकालसे है। यह लकड़ीका बना हुआ होता है। इसकी लम्बाई प्रायः डेढ़ हाथ होती है। इसका सामनेका भाग जो परदा कहलाता है, पांच छः अंगुल चौड़ा होता है और नीचेका सिरा अपेक्षाकृत कुछ अधिक चौड़ा और मोटा होता है। इसमें ऊपरकी ओर प्रायः ४ या ५ खूंटियां होती हैं जिन्हें कान कहते हैं। उन्हीं खूंटियोंसे लगे हुए लोहे और पीतलके कई तार होते हैं जो बाजेकी पूरी लम्बाईमें होते हुए नीचेकी ओर बंधे रहते हैं। इसे बजानेके लिये काठका एक लम्बा और दोनों ओर झुका हुआ एक टुकड़ा होता है। इस टुकड़ेमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक घोड़ेकी दुमके बाल चढ़े होते हैं। इसे कमानी कहते हैं। बजानेके समय यह कमानी दाहिने हाथमें ले ली जाती है और उसमें लगे हुए घोड़ेके बालसे बाजेके तार रेते जाते हैं। उधर बाएं हाथकी उंगलियां तारों पर रहती हैं जो बजानेके लिये स्वरोंके अनुसार ऊपर नीचे और एक तारसे दूसरे तार पर आती जाती रहती हैं। इस बाजेका स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है। इसलिये नाचने गानेका पेशा करनेवाले लोग अपने गानेके साथ प्रायः इसीका व्यवहार करते हैं।

(त्रि०) ६७ रंजित, रंगा हुआ। ६८ सुन्दर, सुहावना। ६९ सरस।

सारङ्ग—१ सह्याद्रिवर्णित कुछ राजे। (सह्या २७।३१, २७। ३९,३३।१०६) २ न्यायसारविचारके प्रणेता भट्ट राघवके पिता।

सारङ्ग-कवि—रुक्मिणीकृष्णवल्लीटीकाके रचयिता।

सारङ्गचर (सं० पु०) काच, शीशा।

सारङ्गदेव—राजपूतानेके अन्तर्गत अजमीढ़ राज्यका एक राजपुत्र। ये राजा विशालदेवके पुत्र थे। ६वीं सदीमें सारङ्गदेवने बौद्धधर्म ग्रहण किया। पीछे विशालदेवने उन्हें हिन्दूशास्त्र सुना कर उनकी बुद्धि पलट दी।

सारङ्गनट (सं० पु०) सङ्गीतमें सारङ्ग नटके संयोगसे बना हुआ एक प्रकारका सङ्कर राग।

सारङ्गनाथ (सं० पु०) काशीके समीपस्थित एक स्थान जो सारनाथ कहलाता है। यहां प्राचीन मृगदाव है। यह बौद्धों, जैनियों और हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थ है।

सारङ्गपाणि—विवाहपटलके प्रणेता।

सारङ्गपुर—मध्यभारत एजेन्सीके देवास राज्यान्तर्गत एक नगर। यह गुनासे इन्दौर जानेकी पक्की सड़क पर कालीसिन्धु नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। नगरमें वाणिज्य जोरोंसे चलता है और जनसंख्या प्रायः १४ हजार है।

सारङ्गलोचना (सं० स्त्री०) हरिणनयना, मृगनयनी, जिसकी आंखें हिरनकी-सी हों।

सारङ्गा (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी छोटी नाव जो एक ही लकड़ीकी बनती है। २ एक प्रकारकी बड़ी नाव जिसमें ६०८० मन माल लादा जा सकता है। ३ एक रागिनीका नाम जो कुछ लोगोंके मतसे मेघ रागकी पत्नी है।

सारङ्गिक (सं० पु०) सारङ्गं हन्तीति। (पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति। पा ४।४।३५) इति ठक्। १ व्याध, चिड़ीमार जो पक्षियोंको पकड़ कर अपना निर्वाह करता हो। २ एक प्रकारका वृत्त। इसके प्रत्येक पदमें नगण, यगण और सगण (न य स) होते हैं। कवि भिखारीदासने इसे मात्रिक छन्द माना है।

सारङ्गिका (सं० स्त्री०) १ सारङ्गिक देखो। २ सारङ्ग देखो।

सारङ्गी (सं० स्त्री०) वाद्ययन्त्रविशेष। सारङ्ग देखो।

सारजंट (अं० पु०) पुलिसके सिपाहीका जमादार, विशेषतः गोरा या यूरेशियन जमादार।

सारज (सं० क्ली०) सारात् जायते इति जन-ड। नवनीत, मक्खन।

सार जनशोर—भारतके एक अंग्रेज राजप्रतिनिधि।

सारजासव (सं० पु०) शाल चन्दनादि सारसे प्रस्तुत बीस प्रकारका आसव। चरकमें इस आसवका विषय इस प्रकार लिखा है,—धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी, इन नौ वस्तुओंसे आसव बनता है। अतएव सारसे जो आसव तैयार होता है, उसे सारजासव कहते हैं। शाल, प्रियङ्गु, रक्तचन्दन, तिनिश, खदिर, श्वेतखदिर, छतिवन, अश्वकर्ण, शाल, अर्जुन, असन, विट्खदिर, तिन्दुक, किनही (अपामार्ग), शमी, बेर, शीशम, सिरस, अशोक, धव्वन और सैल इन बीस

प्रकारके काष्ठोंसे सारज्ञासव बनता है। यह आसव मन, शरीर और अग्निका बलप्रद, अनिद्रा, शोक और अरुचिनाशक तथा आनन्द उत्पादक माना गया है।
(चरक सूत्रस्था० २५ अ०)

सारटिफिकट (अं० पु०) प्रशंसापत्र, सनद, सर्टिफिकेट।

सारडा—उड़ीसाविभागके बलेश्वर जिलान्तर्गत सारडा नदीतीरवर्त्ती एक बन्दर। यह अक्षा० २१°३४'३५" उ० तथा देशा० ८७°१६' पू०के मध्य विस्तृत है। इस नदीवक्ष पर नलितागढ़ पर्यन्त पण्यवाही नावें जाती आती हैं। बन्दरमें नाव द्वारा काफी चावल आता है। सारडाकी बगलमें छनुआ नामक एक और बन्दर है। आज भी यहां चावलकी आमदनी और बिक्री होती है।

सारण (सं० क्ली०) सारयतीति सृ-णिच् ल्यु। १ गन्धभेद। (पु०) २ आम्रातक, आमडा। ३ अतिसार, दस्तकी बीमारी। ४ अडवला। ५ पारा आदि रसोंका संस्कार, दोषशुद्धि। ६ रावणके एक मन्त्रीका नाम जो रामचन्द्रकी सेनामें उनका भेद लेने गया था। ७ आमलकी, आंवला। ८ गंधप्रसारिणी। ९ नवनीत, मक्खन। १० गन्ध, महक।

सारण—१ विहार और उड़ीसाके पटना विभागका एक जिला। यह अक्षा० २५°३६' से २६°३६'३० तथा देशा० ८३°५४' से ८५°१२' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २६७४ वर्गमील है। इसके उत्तरमें युक्तप्रदेशका गोरखपुर जिला, पूर्वमें चम्पारण और मुजफ्फरपुर जिलेको मध्यवर्त्ती गंडक नदी, दक्षिणमें शाहाबाद और पटना जिलेकी मध्यवर्त्ती गङ्गा नदी तथा दक्षिण और पश्चिममें युक्तप्रदेशके आजिमगढ़ जिलेके मध्यवर्त्ती घर्घरा और गोरखपुरका कुछ अंश है। छपरा नगर ही यहांका विचारसदर है। पहले सारण जिला चम्पारणके अन्तर्गत था। १८३७ ई०में राजकार्य चलानेकी सुविधाके लिये इसे एक स्वतन्त्र जिलेमें और एक स्वतन्त्र मजिष्ट्रेटके शासनाधीन रखा गया। तब भी यहांके राजस्व आदि उगाहनेका काम चम्पारण सदरसे ही चलता था। १८६६ ई०में वह राजस्वविभाग भी पृथक् हो गया। १८४८ ई०में यहां सेवान उपविभाग और १८७५ ई०में गोपालगञ्ज उपविभाग स्थापित हुआ। उसके साथ उन सब स्थानोंमें स्वतन्त्र विचार अदालत भी प्रतिष्ठित हुई थी।

सारण जिलेका सारा स्थान पलिमय है। गङ्गा, गण्डक और घर्घरा ये तीनों नदियां तीन ओर बह गई हैं। जिलेके बीच हो कर भी बहुतसे छोटे छोटे सोते बह गये हैं। इनमेंसे झुन्दी या दाहा, भराही, गण्डकी, गाङ्गरी, धनाई और खारसा प्रधान हैं। किन्तु किसीमें भी ग्रीष्मऋतुमें जल नहीं रहता। छोटे छोटे सोते दक्षिण पूर्वकी ओर आ कर गण्डक और गङ्गामें गिर गये हैं।

नदीतटको छोड़ जिलेके समस्त स्थानोंका प्राकृतिक सौन्दर्य मनोरम है। जिलेके उत्तर-पश्चिममें अवस्थित फोत्रफोट नामक स्थान समुद्रपृष्ठसे १२२ फुट ऊंचा है और दक्षिण-पूर्वका गङ्गा गण्डकसङ्गमस्थ शोनपुर नगर १६८ फुट ऊंचा है। यहां नील, अफीम, जौ, गेहूं, चावल, उडद आदिकी फसल काफी तौर पर होती है। अन्यान्य वनमाला नहीं रहने पर भी यहां असंख्य आम्रकानन विद्यमान हैं तथा जगह जगह बड़े बड़े वृक्ष भी देखे जाते हैं। पीपलके पेड़से लाख तैयार की जाती है। प्रतिवर्ष २०० मन लाखका रंग यहांसे विक्रयार्थ भेजा जाता है।

जिलेमें कई जगह सोरा देखा जाता है। नोनिया लोग मिट्टीसे यह सोरा और नमक बाहर निकालते हैं। कहीं कहीं चूर-पत्थर भी पाया जाता है। उसे जला कर चूना तैयार किया जाता और रास्ते पर कंकड़ बिछानेके लिये पटना भेजा जाता है।

छपरा ही यहांका प्रधान नगर है। सेवान, रेवलगञ्ज, पानापुर, छगवान, रानीपुर, टेङ्गराही, शकी और एसी नगर यहांका वाणिज्यकेन्द्र है। इस जिलेका कोई प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। जो कुछ ऐतिहासिक घटनारूपमें इसके साथ सम्बद्ध किया गया है, वह छपरा और शोनपुरके साथ संश्लिष्ट किया गया है। शोनपुरके हरिहरछत्रका मेला भारत-विख्यात है।
शोनपुर देखो।

१८७१ और १८७४ ई०में यहां जो बाढ़ आई थी, उससे लोगोंका भारी नुकसान हुआ था। १८६६ और १८७४ ई०में अनावृष्टिके कारण यहां उपज कुछ भी नहीं हुई थी जिससे

घोर अकाल पड़ा था। इस जिलेमें शीतपुर, छपरा, सेवान और मैरवा नामक स्थानमें रेलवेस्टेशन है। रेल लाइन खुल जानेके बादसे यहांके वाणिज्यकी बड़ी सुविधा हुई है। नील, चीनी, पीतलके बरतन, मिट्टीके खिलौने, सोरा और कपड़े यहां प्रस्तुत हो कर कलकत्ता आदि नगरोंमें विक्रयार्थ भेजे जाते हैं।

इस जिलेमें छपरा, सेवान, रेवलगञ्ज और मीरगञ्ज नामक चार शहर और ५८५५ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या २४ लाखसे ऊपर है जिनमेंसे हिन्दूकी संख्या हो ज्यादा है। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पिछड़ा हुआ है, सैकड़े पीछे केवल ४ मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। अभी इस ओर लोगोंका ध्यान कुछ कुछ आकृष्ट हुआ है और स्कूलोंकी संख्या एक हजारके करीब हैं। स्कूलके अलावा १५ अस्पताल भी हैं।

२ उक्त जिलेका एक उपविभाग। छपरा देखो।

सारणगढ़—१ मध्यप्रदेशके सम्बलपुर जिलान्तर्गत एक देशी सामन्त राज्य। यह अक्षा० २१° २१´ से २१° ४५´ उ० तथा देशा० ८२° ५६´से ८३° २६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५४० वर्गमील है। इसके उत्तरमें चन्द्रपुर और रायगढ़ सामन्तराज्य, पूर्वमें सम्बलपुर जिला, दक्षिणमें फुलझर राज्य और पश्चिममें बिलासपुर जिला है।

इस राज्यका समस्त स्थान प्रायः समतल है, केवल दक्षिण और पूर्वमें शैलश्रेणी विराजित देखी जाती है। महानदी इस राज्यके मध्य प्रायः ५० मील तक बह गई है। इसके सिवा यहां लाट नामकी एक और नदी है।

यहांके सरदार गोण्ड जातिके हैं। राजवंशकी जो वंशलता पाई गई है, उसमें ५४वीं पीढ़ीमें राजा जगदेव साहसे इस वंशकी प्रतिष्ठा कल्पित हुई है। उक्त जगदेवके पुत्र नरेन्द्र साह भाण्डाराके अन्तर्गत लञ्जीके राजा थे। रत्नपुरके राजा नरसिंहदेवको किसी युद्धमें जगदेव साहसे सहायता मिली थी। उन्होंने इस उपकारके लिये जगदेवको खिलअत और दीवानकी उपाधि दे कर सारणगढ़ प्रदेशके अन्तर्गत ८ ग्रामोंका आधिपत्य प्रदान किया। जगदेवसे ४२ पीढ़ी नीचे कल्याण साह जब दीवानके पद पर नियुक्त थे, तब मराठा-सरदार रघुजी भोंसले अपनी सेनावाहिनी ले कर कटककी ओर बढ़ रहे थे। उस समय फुलझरवासीने सिंघोडा सङ्कटमें आ कर उन्हें रोका। दोनोंमें युद्ध छिड़ गया। रघुजीने जब देखा, कि वे अकेला उन लोगोंका दमन नहीं कर सकते, तब उन्होंने रत्नपुरमें राजा बालोजीकी शरण ली और उनसे सहायता मांगी। तदनुसार बालोजीने उक्त गिरिपथ साफ कर देनेके लिये कल्याण साहको हुकुम दिया। कल्याण साहने वैसा ही किया। इस कार्यके लिये कल्याणको 'राजा' की उपाधि मिली और वे अपने वंशके लिये विशेष चिह्न धारण करनेके अधिकारी हुए। सारणगढ़ जब सम्बलपुरके अधिपति राजा छत्र साहके हाथ आया, तब उन्होंने भी सारणगढ़ाधिपतिको राजा कह कर स्वीकार किया। ये गोंडराजे समय समय पर सम्बलपुर राजवंशधरोंको युद्धविग्रहमें सहारा पहुंचाया करते थे जिससे पुरस्कार स्वरूप अनेक ग्राम और परगने उन्हें जागीरमें मिले थे। इस प्रकार क्रमशः प्रचुर सम्पत्ति एकत्र हो कर सारणगढ़ राज्यरूपमें संगठित हुआ।

इस राज्यके मध्य १७४८ ई०में दीवान आदित्य साहका निर्मित सम्बलेश्वर मंदिर देखने-लायक है। राजा भवानीप्रताप साहने जब्बलपुरके राजकुमार कालेजमें शिक्षा समाप्त कर कुछ वर्ष राज्य किया। उनके पिता संग्रामसाह विद्योत्साही थे। उनके यत्नसे राजधानी तथा राज्यके अन्यान्य प्रधान ग्रामोंमें भी विद्यालय खोले गये थे। वर्त्तमान सरदारका नाम लाल जवाहर साह है। इनका जन्म १८८६ ई०में हुआ है। इस राज्यमें सारणगढ़ नामक एक शहर और ४५५ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ८० हजारके करीब है। राजस्व लाख रुपयेके करीब है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २१° ३५´ उ० तथा देशा० ८३° ५´ पू० रायगढ़ रेलवे स्टेशनसे ३२ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या ५ हजारसे ऊपर है। शहरमें एक बड़ा तालाब है जिसके उत्तर और बहुतसे मन्दिर प्रतिष्ठित हैं। उन मन्दिरोंमेंसे करीब ढाई सौ वर्ष हुए राज्यके दीवान द्वारा निर्मित

सोमलेश्वरी देवीका मन्दिर ही प्रधान है। यहां वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल, एक बालिका स्कूल और एक अस्पताल है।

सारणा (सं० स्त्री०) रसका संस्कारविशेष, पारद आदि रसोंका एक प्रकारका संस्कार।

सारणि (सं० स्त्री०) सृ-णिच्-अनि (उण् २।१०३) १ छोटी नदी। २ प्रसारिणी। ३ पुनर्णवा, गदहपूरना।

सारणिक (सं० त्रि०) पथिक, राहगीर, बटोही।

सारणिकघ्न (सं० त्रि०) दस्यु, डाकू, पथिकोंका विनाश करनेवाला।

सारणी (सं० स्त्री०) सारणि बाहुलकात् ङीष्। १ प्रसारणी। २ पुनर्नवा, गदहपूरना। ३ छोटी नदी।

सारणेश (सं० पु०) एक पर्वतका नाम।

सारण्ड (सं० पु०) सर्पाण्ड, सांपका अंडा।

सारतण्डुल (सं० पु०) तण्डुलसार, चावल।

सारतम (सं० त्रि०) सबोंमें जो अत्यन्त सार है वही सारतम है।

सारतरु (सं० पु०) १ कदलावृक्ष, केलेका पेड़। २ खदिरवृक्ष, खैरका पेड।

सारता (सं० स्त्री०) सारका भाव या धर्म।

सारतैल (सं० क्ली०) सुश्रुतोक्त क्षुद्ररोगमें प्रयोज्य तैल, वैद्यकके अनुसार अशोक, अगर, सरल, देवदारु आदिका तेल जिसका व्यवहार क्षुद्र रोगोंमें होता है।

सारथि (सं० पु०) सरत्यश्वानिति सृ अन्तर्भावितण्यर्थः (सर्त्तेणिच्च। उण् ४।८९) इति साथिन्। १ रथादिका चलानेवाला, सूत, रथवाहक। २ समुद्र, सागर।

सारथित्व (सं० क्ली०) सारथेर्भावः कर्म वा त्व। १ सारथिका कार्य। २ सारथिका भाव या धर्म। ३ सारथिका पद।

सारथ्य (सं० क्ली०) सारथि-ष्यञ्। १ रथ आदिका चलाना, गाडी आदि हांकना। २ सवारी। ३ सहायता।

सारद (हिं० पु०) शरदऋतु।

सारदा (सं० स्त्री०) सारं ददातीति दा-क। १ सरस्वती। २ दुर्गा। इस अर्थमें उक्त शब्द तालव्य और दन्त्य ये दोनों ही प्रकार होते हैं, किन्तु तालव्य शकारका ही अधिक व्यवहार देखा जाता है। ३ स्थल कमल। (त्रि० स्त्री०) ४ सारदाता, सार देनेवाली।

सारदा—अयोध्या और उत्तरपश्चिम भारतमें प्रवाहित एक नदी। यह नदी हिमालयके १८००० फुट उच्च शिखरसे निकल कर तिब्बत और कुमायूं होती हुई पर्वत पृष्ठ पर १४८ मील रास्ता तै करनेके बाद समुद्रपृष्ठसे ८४७ फुट ऊंचेमें स्थित वरमदेव नामक स्थानमें आ गिरी है। यहां नदीवक्ष ४५० फुट विस्तृत और जल स्रोत प्रति सेकेण्डमें ५६०० क्युबिक फुट है।

वरमदेवसे सारदा नाना शाखा प्रशाखाओंमें विभक्त हो ९ मील दक्षिण वनवास नामक स्थानमें फिरसे मिल गई है। यहां यह फिर दो भागोंमें विभक्त हो मुण्डियाघाट नामक स्थानमें मिली है। नदीके उत्पत्ति स्थानसे मुण्डियाघाट प्रायः १६८ मील है। यहां नदी प्रपाताकारमें समतल मैदान होती हुई मन्द गतिसे अयोध्या प्रदेशके खैरागढ़ परगनेमें अंगरेजी राज्यकी सीमा पर आई है। प्रायः १६० मील जानेके बाद मोतियाघाट नामक स्थानमें चौका नदीसे मिली है। इसके बाद मिली हुई नदी चौका नामसे दक्षिण किनारेमें आ कर मिल गई है।

सारदा—लिपिभेद। गुप्तवंशकी अवनतिके बाद गुप्तलिपिसे सारदा, श्रीहर्ष और कुटिल आदि लिपियोंकी उत्पत्ति हुई है। यह लिपि उत्तर और पश्चिम भारतमें प्रचलित है। वर्त्तमान काश्मीरी, गुरुमुखी और सिन्धी अक्षर सारदा अक्षरके अनुकृत हैं।

सारदातीर्थ (सं० पु०) एक प्राचीन तीर्थ।

सारदारु (सं० पु०) सारमय काष्ठ, वह लकडी जिसमें सारभाग अधिक हो।

सारदासुन्दरी (सं० स्त्री०) दुर्गा।

सारदी (सं० स्त्री०) जलपीपल।

सारद्रुम (सं० पु०) १ खदिरवृक्ष, खैरका पेड। २ सार प्रधान वृक्ष, वह वृक्ष जिसकी लकड़ीमें सार भाग अधिक हो।

सारधातृ (सं० पु०) बोधजनयिता, वह जो ज्ञान उत्पन्न करता हो।

सारधान्य (सं० क्ली०) श्रेष्ठ धान्य, बढ़िया चावल।

सारधू (हिं० स्त्री०) पुत्री, बेटी।

सारध्वजि (सं० पु०) सारध्वजका गोत्रापत्य।

सारना (हिं॰ क्रि॰) १ पूर्ण करना, समाप्त करना, सम्पूर्ण रूपसे करना। २ साधना, बनाना। ३ सुशोभित करना, सुन्दर बनाना। ४ देख-रेख करना, रक्षा करना, सम्हालना। ५ आँखोंमें अंजन आदि लगाना।

सारनाथ (सं॰ पु॰) वाराणसीसे ४ मील उत्तरपश्चिममें अवस्थित एक कसबा। सारनाथ शिवके नामसे इस स्थानका सारनाथ नाम पड़ा है। यहां कुछ बौद्धस्तूप और बौद्धोंकी प्राचीन कीर्त्तिका ध्वंसावशेष आविष्कृत हुआ है।

५वीं सदीके आरम्भमें चीनपरिव्राजक फा-हियान, वाराणसी और सारनाथ आये थे। उन्होंने लिखा है, दो कोसकी दूरी पर मृगदाव (वर्त्तमान सारनाथ) उपवनमें विहार और सङ्घाराम अवस्थित है। पहले यहां एक प्रत्येक बुद्ध रहते थे, इसीसे इसका पूर्व नाम ऋषिपत्तन है। जहां बुद्धदेवके पधारने पर ही कौण्डिन्य आदि पांच व्यक्तियोंने इच्छा नहीं रहते हुए भी उनका स्वागत किया था, वहां पीछे एक स्तूप बनाया गया है। पूर्वोक्त स्थानसे साठ कदम उत्तर जहां बुद्धदेवने पूर्वास्य हो कौण्डिन्यप्रमुख व्यक्तियोंको दीक्षित करनेके लिये धर्म-चक्र प्रवर्त्तन किया था, उस स्थानसे बीस कदम उत्तर जहां बुद्धदेवने मैत्रेय बुद्धके आविर्भाव सम्बन्धमें भविष्यद्वाणी की थी, उस स्थानसे पचास कदम दक्षिण जहां एलापत्रनागने बुद्धदेवसे अपने नागजन्मसे मुक्तिके विषयमें प्रश्न किया था, उन सब स्थानोंमें स्तूप बनाये गये थे। मृगदावके मध्य दो सङ्घाराम विद्यमान हैं जिनमें आज भी बौद्धभिक्षुक रहते हैं।

७वीं सदीके प्रारम्भमें चीन-परिव्राजक यूएनचुवंग काशीराज्यमें आये थे। उन्होंने जिन सब स्थानोंका परिभ्रमण किया था, उन सब स्थानोंका बौद्ध तीर्थोंका वर्णन वे विस्तृत भावमें कर गये हैं। उनका वर्णन पढ़नेसे जाना जाता है, कि राजधानीके उत्तर-पूर्व वरणा नदीके पश्चिम अशोकराजनिर्मित एक स्तूप था। उस स्तूपकी ऊंचाई १०० फुट थी, सामनेमें एक प्रस्तर स्तम्भ था। यूएनचुवंग वरणा नदीके उत्तर-पूर्व १० लीसे चल कर मृगदावके सङ्घाराममें पहुंचे थे। यह सङ्घाराम ८ महलोंमें विभक्त था, उसके चारों ओर ऊंची दीवार खड़ी थी। इस सङ्घारामका बालाखाना अपूर्व शिल्पसे मण्डित था। उस समय यहां १५०० बौद्धाचार्य रहते थे। वे लोग सम्मतीय दलभुक्त हीनयान सम्प्रदायी थे। प्रदक्षिणाके मध्य ही २०० फुट ऊंचा एक विहार विद्यमान था। इसकी दीवार और अधिरोहणी पत्थरकी बनी थी। किन्तु गुम्बज और झरोखे ईंटोंके थे। चारों ओर प्रायः सौसे अधिक झरोखे और प्रत्येक झरोखेमें एक स्वर्णमयी बुद्धमूर्त्ति थी। विहारके मध्य-स्थलमें एक वृहत् ताम्रमय बुद्ध धर्मचक्रप्रवर्त्तनमें निरत थे। विहारके दक्षिण-पश्चिम अशोकराजप्रतिष्ठित १०० फुट ऊंचा स्तूप ध्वंसावशेष नजर आता था। स्तूपके सामने ही ७० फुटकी ऊंचाईका एक पाषाण-स्तम्भ था जो पद्मरागके समान उज्ज्वल और स्वच्छ था। उसका मध्यभाग तुषार जैसा चिकना था। इस स्तम्भ पर बुद्ध-का प्रतिबिम्ब पड़ता था। यहां शाक्यसिंहने धर्मचक्र प्रवर्त्तन किया था। इस स्तूपके पास ही अज्ञात-कौण्डिन्य, प्रत्येकबुद्धवर्ग, मैत्रेय बोधिसत्त्व और शाक्य-बोधिसत्त्वके भिन्न भिन्न स्तूप नजर आते थे। सङ्घाराम-का प्राचीरवेष्टनमें सैकड़ों विहार और स्तूपके पवित्र निदर्शन थे। उक्त प्रदक्षिणाके पश्चिम एक स्वच्छ जल वाला बहुत बड़ा सरोवर था। इस सरोवरमें बुद्धदेव स्नान करते थे। इसके पश्चिम और दक्षिण भी दो सरोवर थे। इसके पास ही चीन परिव्राजकने और भी कितने स्तूप देखे थे।

इसके सिवा यूएनचुवंगने ७वीं सदीमें वहांकी उल्लेखयोग्य हिन्दू कीर्त्तियोंका लिपिबद्ध करना छोड़ा नहीं था। उनके लिखित वाराणसी और सारनाथ (मृग-दाव) का वर्णन पढ़नेसे ज्ञात होता है, कि हिन्दू और बौद्धधर्म उस समय भी अपने अपने गौरवकी रक्षा कर रहा था। वर्त्तमान कालमें वाराणसी उस पुरातन हिन्दू-गौरवकी रक्षा करनेमें कुछ कुछ समर्थ होने पर भी सारनाथ बौद्धक्षेत्रकी उस पूर्वसमृद्धिका अभी कुछ भी वर्त्तमान नहीं है, यदि ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। सच पूछिये, तो यूएनचुवंगके समय ही सारनाथकी दुर्दशाका सूत्रपात हुआ। बौद्धधर्मानुरागी पालराजाओंके यत्नसे कुछ पूर्वकीर्त्ति रक्षित होने पर भी

मुसलमानोंके हाथमें यहांके बौद्धप्रभावका शेषचिह्न तक विलुप्त हो गया है। और तो क्या, मुसलमानोंके हाथसे ही यहाका बौद्धकुल निर्मूल और पवित्र विहार तथा सङ्घाराम एकदम विध्वस्त हो गये थे।

१८ वीं सदीके अन्तमें पाश्चात्य प्रत्नतत्त्वविदोंका ध्यान सारनाथके ध्वंसावशेषके ऊपर दौड़ा। १८३५ ई०में जेनरल कनिंहमने धामेक नामक प्रस्तरस्तूप खोदाया और पीछे १८५४ ई०में मेजर कीटोने इस स्तूपका कुछ अंश फिरसे उद्धाटित किया था। १७९४ ई०में काशीराजके दीवान जगत्सिंहने अपने नाम पर काशीमें एक महल्ला निर्माण करनेके समय सारनाथके प्राचीन ध्वंसावशेषसे महल्ला बनानेके उपयोगी उपादान संग्रह किये थे। इस उपादानके संग्रहकालमें सारनाथके बहुत स्तूप तहस नहस हो गये थे। अतएव जब सारनाथके ऊपर पाश्चात्य पण्डितोंकी दृष्टि आकृष्ट हुई, उसके बहुत पहले ही इसकी प्रसिद्ध बौद्ध कार्त्तियां बहुत कुछ लयको प्राप्त हो गई थीं।

धामेक स्तूप सर्वजनपरिचित है। यह अपनी भित्तिसे ११० फुट और पार्श्वस्थित समतलभूमिखण्डसे १२८ फुट ऊंचा है। इसकी भित्ति बृहदाकार प्राचीन ईंटोंकी बनी है। भित्ति ४३ फुट तक पत्थरका और इसका ऊपरी भाग ईंटोंका बना है। पत्थरमें अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। कनिंहम साहबके मतसे धामेक नाम 'धर्मोपदेशक' या 'धर्म देशक' शब्दका अपभ्रंश है। धामेकसे ५२० फुट पश्चिम एक बहुत बड़ा गोलाकार गर्त्त और उसके चारों ओर प्रायः १५ फुट चौड़ी ईंटोंकी बनी दीवार है। दीवान जगत्सिंहने यहां पर एक स्तूप खोदवाया था, उसीका यह गर्त्त है। यह अभी जगत्सिंहका स्तूप कहलाता है। जगत्सिंह जब यह स्तूप खोदवा रहे थे, तब एक बड़े प्रस्तराधारके मध्यस्थित एक छोटे मर्मराधारके मध्य कुछ अस्थिखण्ड, मणिमुक्ताप्रवाल और सुवर्णपात्र मिले थे। इसके सिवा यहां एक बौद्धमूर्त्ति आविष्कृत हुई थी। इस मूर्त्तिके पादतलमें बङ्गके पालवंशीय राजा महीपालकी खोदित लिपि है। कनिंहम साहबने खोदते समय एक खण्ड सुन्दर कारुकार्यशोभित प्रस्तरमय तोरणका अंश पाया था। इसके दो पार्श्वमें दो छोटे मन्दिराकारके घर खोदित हैं। एकमें दीपङ्कर बुद्धका उपाख्यान और दूसरेमें शाक्यबुद्ध और मलयगिरि नामक हाथीका उपाख्यान खोदा हुआ है। इस तोरणका अंश अभी कलकत्तेके म्युजियममें रखा हुआ है। इसके सिवा कनिंहम साहबने सारनाथके पास बराहीपुर ग्राममें एक भग्न मन्दिरकी बगलमें ५०।६० खण्ड प्रस्तरमूर्त्ति पाई थी। यह स्थान खोदते समय कुछ मन्दिरका प्राचीर पाया गया था।

धामेकसे २५०० फुट दक्षिण चौखण्डा नामक एक स्तूपका ध्वंसावशेष है। जेनरल कनिंहमने १८३५ ई०में यह स्तूप भी खोदवाया था। इसके ऊपर एक बुर्ज है। इस बुर्जके द्वारके ऊपर जो शिलालिपि है, उसे पढ़नेसे जाना जाता है, कि बादशाह हुमायूंके यह स्थान परिदर्शनके चिह्नस्वरूप यह बुर्ज बनवाया गया था।

१९०४ ई०में इञ्जिनियर वेरेल्टल साहबने गवर्मेण्टके खर्चसे सारनाथ फिरसे खुदवाया था। खोदते समय यहां अनेक प्रकारकी प्राचीन कीर्त्ति आविष्कृत हुई है। उनमेंसे निम्नलिखित उल्लेखयोग्य हैं।

उनमें महाराज कनिष्कके समयकी एक बोधिसत्त्वमूर्त्ति, प्रस्तर छत्र और स्तम्भगात्रोत्कीर्ण लिपि, महाराज अशोकका खोदित स्तम्भ और स्तम्भफलकका भग्नांश, एक बृहत् सङ्घारामकी भित्ति और राजा अश्वघोषकी एक खोदित लिपि और बहुत सी हिन्दू, जैन तथा बौद्ध देवदेवियोंकी मूर्त्ति।

प्रायः २०० वर्गफुट स्थान खोदवाया गया था। जगत्सिंहके स्तूपसे २०० फुट उत्तर एक मन्दिरकी नींव आविष्कृत हुई है। यह लम्बाई और चौड़ाईमें ६४ फुट है। प्राङ्गणके दक्षिण ओर एक चतुष्कोण इष्टकानिर्मित अति प्राचीन स्तूप उद्घाटित हुआ है। इसके चारों ओर साञ्ची और भारहूतकी रेलिंकी तरह पत्थरकी रेलिं है।

चार ईंटोंके स्तूपके ध्वंसावशेषके पास एक बोधिसत्त्वमूर्त्ति, प्रस्तरछत्र और खोदित स्तम्भ पाये गये हैं। स्तम्भगात्रमें पहली सदीके अक्षरोंमें महाराज कनिष्ककी लिपि खोदी हुई है।

इस अनुशासनके सिवा इस स्तम्भमें और भी द

खोदित लिपि है। एकमें क्षत्रपाक्षरमें लिखा है, "परिनेश्य राण्ण अश्वघोषस्य चतरिये संवछरे हेमत पखेदिवसे दशमे।" अर्थात् राजा अश्वघोषके चालीस संवत्सरमें हेमन्तके प्रथम पक्षके दशवें दिनमें पाषप्रदक निमित्त।

मन्दिरके उत्तर एक बड़े सङ्घारामकी भित्ति आविष्कृत हुई है। इसके मध्य चालीस फुट लम्बा और आठ फुट चौड़ा एक घर था। यहां राजा अश्वघोषके नाम खुदे हुए एक प्रस्तरफलकका भग्नांश पाया गया है।

मन्दिरप्राङ्गणके दक्षिण चार तीर्थङ्करकी मूर्त्ति अङ्कित एक जैन चतुर्मुख है। यहांसे असंख्य बौद्धमूर्त्ति और अनेक हिन्दू देवदेवियोंकी मूर्त्ति आविष्कृत हुई है। हिन्दू देवदेवियोंकी मूर्त्तिमें विष्णु, गणेश और हर-पार्वतीकी मूर्त्ति ही विशेष उल्लेखनीय हैं।

सारनाथमें आज भी कभी कभी खोदनेका काम चलता है, परन्तु आज तक कोई विशेष उल्लेखयोग्य पुराकीर्त्ति उद्घाटित नहीं हुई है। यहां यदि लगातार इसी तरह खननकार्य चलता रहा, भविष्यमें और भी असंख्य प्राचीन कीर्त्तियां आविष्कृत हो कर ऐतिहासिक जगत्‌में नूतन युग प्रवर्त्तित करेगी, इसमें जरा भी भी सन्देह नहीं। यहांके विशाल ध्वंसावशेषसे जिन सब अतीत कीर्त्तियोंका निदर्शन बाहर हुआ है, वह कलकत्तेके म्युजियम घरमें रखा हुआ है।

सारनाथ चतुष्पार्श्वस्थ समतल भूमिसे प्रायः ३०।४० वर्गमील स्थान सारनाथ कहलाता है। अतिप्राचीन कालसे यहां स्तूप, विहार और सङ्घाराम आदि निर्मित होते आ रहे थे। कालक्रमसे वे सब जब ध्वंस हो गये, तब फिरसे उसके ऊपर अनेक गृहादि बनाये गये हैं। इस प्रकार महाराज अशोकके समयके पहलेसे ले कर प्रायः ढाई हजार वर्षसे सारनाथ अपने आसपासके भूमिखण्ड से ऊंचेमें अवस्थित है।

सारन्दा—सिंहभूम जिलान्तर्गत एक ग्रामगुच्छ। इसमें प्रायः ८८ ग्राम लगते हैं। यह अक्षा० २२° १' १५" से २२° ३०' उ० तथा देशा० ८५° २' से ८८° २८' पू०के मध्य विस्तृत है।

सारपत्र (सं० त्रि०) १ सारविशिष्ट या स्थूलपत्रयुक्त। (क्ली०) २ वह पत्ता जिसमें सार हो।

सारपद (सं० पु०) पक्षिभेद।

सारपाक (सं० क्ली०) एक प्रकारका विषैला फल जिसका उल्लेख सुश्रुतने किया है।

सारपाद (सं० पु०) धन्वङ्गवृक्ष, धामिन।

सारपादप (सं० पु०) सारवृक्ष, धामिन।

सारफल (सं० पु०) जंबारी नीबू।

सारबंधका (सं० स्त्री०) मेथी।

सारभाटा (हिं० पु०) ज्वारभाटाका उलटा, समुद्रकी वह बाढ़ जिसमें पानी पहले बढ़ कर समुद्रके तटसे आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

सारभाण्ड (सं० क्ली०) १ व्यापारकी बहुमूल्य वस्तु। २ खजाना। ३ कस्तूरी।

सारभुक् (सं० पु०) लोहेको खानेवाली अग्नि, आग।

सारभूत (सं० त्रि०) १ सारस्वरूप। २ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

सारभृत् (सं० त्रि०) सारग्राही, सारग्रहण करनेवाला, साधु। साधु असार विषयका परित्याग कर सभी विषयोंका सार ग्रहण करते हैं।

सारमण्डूक (सं० पु०) कीटभेद, सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका कीड़ा जो मेढ़ककी तरहका होता है।

सारमय (सं० त्रि०) १ सारस्वरूप, केवल सार। २ वीर्याधिक।

सारमहत् (सं० त्रि०) अत्यन्त मूल्यवान्, बहुत कीमती।

सारमिति (सं० पु०) श्रुति, वेद।

सारमूषिका (सं० स्त्री०) देवदालीलता, घघर बेल, बंदाल।

सारमेय (सं० पु०) सरमाया अपत्यं पुमानिति सरमा-ढक्। १ कुक्कुर, कुत्ता। २ सरमाकी सन्तान। ३ सफल्कके पुत्र और अक्रूरके एक भाईका नाम।

सारमेयादन (सं० क्ली०) सारमेयस्य अदन भोजन। १ कुक्कुरभोजन, कुत्तेका भोजन। २ नरकविशेष।

सारयव (सं० त्रि०) सरयूनदीसमुत्पन्न।

साररूप (सं० त्रि०) सारं रूपं यस्य। १ श्रेष्ठरूपयुक्त, उत्तम रूपवाला। (क्ली०) २ श्रेष्ठ रूप, उत्तम रूप।

सारलोह (सं० क्ली०) लौहसार, इस्पात, लोहा। वैद्यकमें

यह प्राणी, अतिसार, अर्द्धाङ्गगत वात, परिणामशूल, सर्दी, पीनस, पित्त और श्वासका नाशक बताया गया है।

सारल्य (सं० क्लो०) सरलस्य भावः सरल-ष्यञ्। सरलता, सरल होनेका भाव।

सारवती (सं० स्त्री०) एक प्रकारका छन्द। इसमें तीन भगण और एक गुरु होता है।

सारवत्ता (सं० स्त्री०) सारग्रहण करनेका भाव, सारग्राहिता।

सारवर्ग (सं० पु०) भावप्रकाशोक्त क्षीरवृक्षवर्ग, वे वृक्ष या वनस्पतियां आदि जिनमेंसे किसी प्रकारका दूध या सफेद तरल पदार्थ निकलता हो।

सारवर्जित (सं० त्रि०) सारेण वर्जितः। जिसमें कुछ भी सार न हो, साररहित।

सारवस्तु (सं० क्ली०) सारं वस्तु। श्रेष्ठ वस्तु। एकमात्र ब्रह्म ही सार वस्तु हैं, इनके सिवा और सभी असार है।

सारवाला (हिं० पु०) एक प्रकारकी जंगली घास जो तर जगहोंमें होती है। यह प्रायः बारह वर्ष तक सुरक्षित रहती है। मुलायम होने पर यह पशुओंको खिलाई जाती है।

सारवृक्ष (सं० पु०) धन्वङ्ग वृक्ष, धामिन।

सारशालव (सं० पु०) श्वेतखदिर, सफेद खैरका पेड़।

सारस (सं० क्लो०) सरसि भवं, सरस अण्। १ पद्म, कमल। २ स्त्रियोंका एक प्रकारका कटिभूषण, चन्द्रहार। ३ झीलका जल। नदीका जल पहाड़ आदिके कारण रुक कर जहां जमा होता है, उसे सरस और उसके जलको सारस जल कहते हैं। ऐसा जल बलकर, प्यास बुझानेवाला, लघु, रुचिकारक और मल रोकनेवाला माना गया है। ४ चन्द्रमा। ५ हंस। ६ गरुड़पुत्र। ७ छप्पयका ३७वां भेद। इसमें ३४ गुरु, ८४ लघु, कुल ११८ वर्ण या मात्राएं अथवा ३४ गुरु, ८० लघु कुल ११४ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं।

८ एक प्रकारका प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी। पर्याय—पुष्कराह्व, गोनर्द, मांकुर, लक्ष्मण, लक्षण, सारसोक, सरोद्भव, रसिक, कामी। वैज्ञानिक नाम Grus cinerea है। यह पक्षी एशिया, अफ्रिका, अष्ट्रेलिया और यूरोपके उत्तरी भागमें पाया जाता है। इसकी लम्बाई पूंछके आखिरी सिरे तक चार फुट होती है। परन्तु भूरे होते हैं, सिरका ऊपरी भाग लाल और पैर काले होते हैं। यह एक स्थान पर नहीं रहता। बराबर घूमा करता है। किसानोंके नये बीज बोने पर यह वहां पहुंच जाता है और बीजोंको चर कर जाता है। यह मेंढक, घोंघा आदि भी खाता है। यह प्रायः घास फूसके ढेरमें जंगलोंमें रहता है। यह अपने बच्चोंका लालन पालन बड़े यत्नसे करता है। कहीं कहीं लोग इसे पालते हैं। बाग बागीचोंमें छोड़ देने पर यह कोड़े मकोड़ोंको खा कर उनसे पेड़ पौधोंकी रक्षा करता है। कुछ लोग भ्रमवशतः हंसको ही सारस मानते हैं।

वसन्तराजशाकुनमें लिखा है, कि यदि यात्रादि शुभ कार्य कालमें सारद्वन्द्व दिखाई दे, तो समस्त इष्टकी सिद्धि होती है। गमनकालमें यदि पीछेकी ओर इसकी ध्वनि सुनाई दे, तो गमन नहीं करना चाहिये। यदि यह घरमें आ कर शब्द करे, तो समस्त अभीष्ट सिद्ध होते हैं। बाईं ओर इसकी ध्वनि सुनाई देनेसे स्त्रीलाभ आगे सुनाई देनेसे राजासे अर्थलाभ और दो सारस एकत्र हो कर यदि लगातार शोरगुल करे, तो अर्थलाभ होता है।

सारसक (सं० पु०) सारस स्वार्थे कन्। सारस।

सारसन (सं० क्लो०) १ स्त्रियोंका कमरमें पहननेका मेखला नामक आभूषण, चन्द्रहार। पर्याय—अधिकाङ्ग। २ तलवारकी पेटी, कमरबन्द।

सारसा (अ० पु०) साजवा देखो।

सारसी (सं० स्त्री०) १ आर्या छन्दका २३ वां भेद। इसमें ५ गुरु और ४८ लघु मात्राएं होती हैं। २ सारस पक्षीकी मादा।

सारसुता (हिं० स्त्री०) यमुना।

सारसैन्धव (सं० पु०) सेंधा नमक।

सारस्य (सं० त्रि०) १ जिसमें बहुत अधिक रस हो, बहुत रसवाला। (पु०) २ रसदार होनेका भाव, रसीलापन।

सारस्वत (सं० पु०) सरस्वती देवताऽस्येति अण्। १ बिल्वदण्ड। सरस्वत्या अर्गमति तस्मेदमित्यण्। २ देश विशेष दिल्लीके उत्तर पश्चिमका वह भाग जो सरस्वती नदीके तट पर है और जिसमें पञ्जाबका कुछ भाग

सम्मिलित है। प्राचीन आर्य पहले यहीं आ कर बसे थे और इसे बहुत पवित्र समझते थे। ३ इस देशके निवासी ब्राह्मण। यह ब्राह्मण पञ्च गौड़में गिने जाते हैं।

सारस्वत ब्राह्मण देखो।

"सारस्वताः कान्यकुब्जा उत्कलामैथिलाश्च ये।
गौड़श्च पञ्चधा चैव दशविप्राः प्रकीर्त्तिताः॥"

(सह्या० २।१।३)

दक्षिण पश्चिम भारतमें भी सारस्वत ब्राह्मणका वास है। वे लोग मत्स्याद कह कर पञ्चद्राविड समाजमें परिचित हैं।

"सारस्वतास्तथा विप्रा मत्स्यादा इति कीर्त्तिता"

(सह्या० २।४।१३)

४ सरस्वती नदीके पुत्र एक मुनिका नाम। ५ एक प्रसिद्ध व्याकरण, सारस्वत व्याकरण। यह व्याकरण अति प्राचीन है। ६ कल्पविशेष, सरस्वतीका उपासनाप्रकरण। ७ जातिविशेष। (मार्क०पु० ५८।७) ८ ऋषिभेद। (लिङ्गपुराण २४।३७) ६ राजभेद। (सह्याद्रि० २१।४२)

(क्ली०) १० एक प्रकारका औषधयुक्त घृत। सात दिन इस घृतका सेवन करनेसे किन्नरके समान कण्ठ, आध मास सेवन करनेसे सुन्दर शरीर और एक मास सेवन करनेसे श्रुतिधर होता है। इसके सिवा अठारह प्रकारके कुष्ठ अर्श, पांच प्रकारके गुल्म, सभी प्रकार प्रमेह और पांच प्रकारके कास इसके सेवनसे दूर होते हैं। वृद्धा, स्त्री और अल्परेता पुरुषोंके लिये यह घृत ही एकमात्र बल वर्ण और अग्निवर्द्धक है। इसे कोई कोई ब्राह्मी घृत भी कहते हैं। (भैषज्यरत्ना०) ११ वैद्यकमें एक प्रकारका चूर्ण। इसके सेवनसे उन्माद, वायुजनित विकार तथा प्रमेह आदि रोगोंका दूर होना माना जाता है।

(त्रि०) १२ सरस्वती-सम्बन्धी। याज्ञवल्क्यसंहितामें लिखा है, कि जहां साक्षीके सच्ची गवाही देने पर प्राणिवध होता है, वहां साक्षी झूठ बात बोले, पीछे इस पापनाशके लिये सारस्वतचरु द्वारा निर्वपण करे। १३ सारस्वत देशसम्बन्धी। १४ सरस्वती देशसम्बन्धी।

सारस्वतकल्प (सं० पु०) सारस्वतः कल्पः। सरस्वती सम्बन्धीय कल्प, सरस्वती देवीका उपासनाप्रकरण। तन्त्रसारमें उपासनाका विषय लिखा है।

सारस्वतक्षेत्र—प्रभासके अन्तर्गत एक तीर्थक्षेत्र।

(प्रभासख०)

सारस्वतचूर्ण (सं० पु०) एक प्रकारका चूर्ण जिसके सेवनसे उन्माद, वायुजनित विकार और प्रमेह आदि रोग दूर होते हैं।

सारस्वततन्त्र—शाक्तानन्दतरङ्गिणीधृत एक तन्त्रग्रन्थ।

सारस्वततीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थभेद, सरस्वती नदी-सम्बन्धीय तीर्थ।

सारस्वतव्रत (सं० पु०) सारस्वतः सरस्वतीदेवताकः व्रतः। व्रतविशेष। यह व्रत सरस्वती देवताके उद्देशसे किया जाता है। कहते हैं, कि इस व्रतका अनुष्ठान करनेसे मनुष्य बहुत बड़ा पण्डित, भाग्यवान् और कुशल हो जाता है और उसे पत्नी तथा मित्रों आदिका प्रेम प्राप्त होता है। यह व्रत बराबर प्रति रविवार या पञ्चमीको किया जाता है। इसमें किसी अच्छे ब्राह्मणको पूजा करके उसे भोजन कराया जाता है। मत्स्यपुराणके ६६वें अध्यायमें इस व्रतका विशेष विधान है।

सारस्वतब्राह्मण—पञ्चगौड ब्राह्मणका एक विभाग। ये लोग अभी प्रधानतः आगरा, मथुरा, अलीगढ़ और मुरादाबादमें वास करते हैं। ये चार प्रधान श्रेणियोंमें विभक्त हैं,—१ पान, २ अढ़ान, ३ बारहि और ४ बाहान जाति। इन सभी श्रेणियोंके नामसे ही मालूम होता है, कि पान जातिमें पांच, अढ़ानमें आठ, बारहिमें बारह और बाहान जातिमें बावन विभिन्न गोत्र विद्यमान हैं। इन विभिन्न गोत्रोंका धारावाहिक वंशविवरण लिपिबद्ध करना बड़ा ही कठिन है। परन्तु हरिद्वार, थानेश्वर और मथुरा आदि तीर्थस्थानके पण्डा लोगोंने तीर्थयात्रियोंका वंशपरिचय लिखा है। उसकी आलोचना करनेसे इन सब गोत्रोंका परिचय मिलता है।

बम्बई-प्रदेशके धारवाड, बेलगाम् और कनाडा आदि जिलोंके विभिन्न ग्राममें भी इस श्रेणीके ब्राह्मणोंका वास है। दक्षिण-पश्चिम समुद्रोपकूलस्थ गोआ नगरमें उन लोगोंका पूर्वावास था। १६वीं सदीमें पुर्त्तगाओं द्वारा जातिनाशके भयसे सारस्वत-ब्राह्मण वहांसे भाग आये। इनमें भाण्डारी, पिन्टु, कार्नाविन्दे, बेगे, तेलङ्ग आदि उपाधि तथा अत्रि, भरद्वाज, गौतम, जामदग्न्य,

कौशिक, वशिष्ठ, वत्स और विश्वामित्र आदि गोत्र प्रचलित हैं। ये लोग मराठी और कनाड़ी भाषा बोलते हैं, किन्तु घराऊ भाषा कोङ्कणी है।

बम्बई प्रदेशमें ये लोग सेनवी कहलाते हैं। इन लोगोंमें स्मार्त्तमतानुसारी और वैष्णव धर्मावलम्बी दो दल देखे जाते हैं। ये दोनों ही दल अपने अपने गुरुके अधीन रह कर उनके आदेशका पालन करते हैं। वे दोनों गुरु संन्यासी और स्वामी नामसे पुकारे जाते हैं। स्मार्त्त-स्वामी गोआके अन्तर्गत सोनावरा ग्राममें और वैष्णव स्वामी गोआमें रहते हैं।

सेनवियोंमें सबके सब धनी, अमितव्ययी और बाह्य आडम्बरप्रिय हैं, किन्तु सभी बुद्धिमान, कर्मिष्ठ और संयत होते हैं। ये लोग मछली खाते हैं तथा देवद्विजके प्रति भक्ति दिखलाते हैं। धर्मकर्मानुष्ठानमें ये लोग कनाड़ा और बेलगामवासी ब्राह्मणोंका ही आचार पालन करते हैं। शान्तदुर्गा और मङ्गेश इन लोगोंके कुलदेवता हैं। सेनवी देखो।

सारस्वतीय (सं० त्रि०) सरस्वती-सम्बन्धीय, सरस्वती-सूत्र सम्बन्धीय।

सारस्वतोत्सव (सं० पु०) सरस्वतीपूजाके दिन सरस्वती-देवीके उद्देशसे जो उत्सव किया जाता है, उसे सारस्वतोत्सव कहते हैं।

सारस्वत्य (सं० त्रि०) सारस्वत, सरस्वती सम्बन्धीय।

साराम्ल (सं० पु०) नीबूका रस।

सारांश (सं० पु०) १ संक्षेप, खुलासा, सार, निचोड़। २ तात्पर्य्य, मतलब। ३ परिणाम, नतीजा। ४ उपसंहार, परिशिष्ट।

सारा (सं० स्त्री०) सारयतीति सृ-णिच्-अच्-टाप्। १ कृष्णत्रिवृता, काली निसोथ। २ दूर्वा, दूब। ३ शातला। ४ थूहर। ५ केला। ६ तालिशपत्र। (पु०) ७ एक प्रकारका अलङ्कार। इसमें एक वस्तु दूसरीसे बढ़ कर कही जाती है।

सारा (हिं० वि०) सम्पूर्ण, समस्त, समूचा, पूरा।

साराक—पश्चिमवङ्गवासी निम्नश्रेणीकी एक जाति। सराक देखो।

साराघाट—राजशाही जिलान्तर्गत पद्मानदीतीरवर्ती एक बड़ा ग्राम। यहां इष्टर्न बेङ्गाल रेलवेकी उत्तर शाखाका स्टेशन आरम्भ हुआ है। कलकत्तेके मुसाफिर उसी गाड़ीसे पद्माके इसी किनारे दामुकदियाघाट स्टेशन पर उतरते हैं, पीछे ष्टीमर द्वारा नदी पार कर साराघाटमें फिरसे रेलगाड़ीमें चढ़ते हैं। यहांसे रेलपथ क्रमशः उत्तर, पश्चिम और पूर्वकी ओर चला गया है। इस रेलपथसे दिनाजपुर, रङ्गपुर, नाटोर, राजशाही, गौहाटी, मैमनसिंह, कछाड़, चट्टग्राम और शिलिगुड़ी हो कर दार्जिलिङ्ग जाया जाता है। रङ्गपुर, जलपाईगुड़ी आदि स्थानोंसे तमाकू, पाट, हल्दी, सोंठ आदि इस राहसे कलकत्ता लाया होता है।

साराम्भस् (सं० क्ली०) नीबूका रस।

साराम्ल (सं० क्ली०) १ जंबीरी नीबू। २ आमिन।

सारामृतमोदक—औषधभेद। (चिकित्सासार)

साराल (सं० पु०) तिल।

सारावली (सं० स्त्री०) एक प्रकारका छन्द जिसे सारावली भी कहते हैं।

सारासेन—मुसलमान जातिका पाश्चात्य नाम। मध्ययुगमें जिन मुसलमान सेनाओंने सुदूर स्पेन तक बढ़ कर मुसलमान साम्राज्य स्थापित किया था, वे ही यूरोपवासी आक्रान्त और पराजित खृष्टसम्प्रदाय द्वारा सारासेन कहलाये। पीछे यूरोपवासी मुसलमानमात्र ही सारासेन नामसे परिचित हुए थे।

प्राचीन कालमें साहरी नामक अरबी मरुभूमिवासी जो सब भ्रमणशील दुर्द्धर्ष अरब युफ्रेटिस तीरसे इजिप्त पर्य्यन्त रोमसाम्राज्यसीमान्तप्रदेशमें आ कर बार बार लूट आदि द्वारा वहांके लोगोंको तंग करते थे, प्राचीन ग्रीक् और रोमकोंने उस बर्बरतुल्य जातिका नाम 'सारासेनी' रखा। मुसलमान शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

सारि (सं० पु० स्त्री०) १ पाशक, पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २ जुआ खेलनेका पासा। ३ गोटी।

सारिक (सं० पु०) पक्षिविशेष, मैना।

सारिका (सं० स्त्री०) पक्षिविशेष, मैना।

सारिकामुख (सं० पु०) कीटविशेष, सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका कीड़ा।

सारिणी (सं० स्त्री०) १ सहदेवी, महाबला। २ कार्पासी,

कपास। ३ दुरालभा, धमासा। ४ कपिलशिंशपा, काला सोसो। ५ प्रसारिणी। ६ रक पुनर्नवा।

सारिन् (सं० त्रि०) अनुसरणकारी, पीछा करनेवाला।

सारिफलक (सं० पु०) चौपड़की गोटी या पासा।

सारिव (सं० पु०) षष्टिका, साठी धान।

सारिवा (सं० स्त्री०) लताविशेष, अनन्तमूल। इसका गुण—मधुर, स्निग्ध, वृष्य और पित्तनाशक। यह सारिवा दो प्रकारकी होती है, सारिवा और कृष्णसारिवा। यह कृष्णसारिवा इन्द्रजम्बुकी तरह पत्रविशिष्ट होती है। इसे सुगन्ध और कलसपडा भी कहते हैं। ये दोनों प्रकारकी सारिवा स्वादिष्ट, स्निग्ध, शुक्रवर्द्धक, गुरु, अग्निमान्द्य, अरुचि, श्वास, कास, आम और विषनाशक, त्रिदोष, अस्र, प्रदर, ज्वर और अतिसारनाशक होती है। सारिवा विशेषरूपसे रक्तपरिष्कारक है, सालसा व्यवहारकालमें इसके साथ सेवन करना होता है। अनन्तमूल देखो।

सारिवादिगण (सं० पु०) वैद्यकोक्त सारिवा आदि द्रव्यगणविशेष। यह गण यथा—सारिवा, यष्टिमधु, श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन, पद्मकाष्ठ, गाम्भारीफल, मधुकपुष्प और खसका मूल। यह पिपासा, रक्तपित्त, पित्तज्वर और दाहरोगका शान्तिकर है। (सुश्रुत)

सारिवाद्वय (सं० क्ली०) अनन्तमूल और श्यामालता इन दोनोंका समूह।

सारिष्ठ (सं० त्रि०) १ सबसे सुन्दर। २ सबसे श्रेष्ठ।

सारिसूक्त (सं० पु०) ऋग्वेदके १०।१४२ सूक्तके मन्त्रद्रष्टा ऋषि।

सारी (सं० स्त्री०) सारि वा ङीष। १ सारिका पक्षिणी, मैना। २ पाशक, पासा। ३ सातला, सातला।

सारूप (सं० क्ली०) सरूप-अण्। समानरूप होनेका भाव, सरूपता।

सारूपवत्स (सं० क्ली०) स्वरूपवत्सा गायका दूध।

सारूप्य (सं० क्ली०) सरूपस्य भावः ष्यञ्। १ पांच प्रकारकी मुक्तियोंमें एक प्रकारकी मुक्ति। इसमें उपासक अपने उपास्य देवके रूपमें रहता है और अन्तमें उसी उपास्य देवताका रूप प्राप्त कर लेता है। मुक्ति और सायुज्य देखो। २ समानरूप होनेका भाव, एकरूपता। सरूपता।

सारूप्यता (सं० स्त्री०) सारूप्यस्य भावः तल्-टाप्। सारूप्यता, सारूप्यका भाव वा धर्म।

सारेश्वर पण्डित—लिङ्गप्रकाश नामक व्याकरणके प्रणेता। ये जैन धर्मावलम्बी थे।

सारो (हिं० पु०) एक प्रकारका धान जो अगहन मासमें तैयार हो जाता है।

सारोदक (सं० पु०) अनन्तमूलका रस।

सारोद्धार (सं० पु०) सारस्य उद्धारः। १ सारका उद्धार, सारग्रहण। २ वैद्यकग्रन्थविशेष।

सारोपा (सं० स्त्री०) लक्षणाशक्तिविशेष। यह उस स्थान पर होती है जहां एक पदार्थमें दूसरेका आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है। जैसे-घी आयुको बढ़ानेवाला है। यहा घीमें आयुका आरोप हुआ है, इस लक्षणाशक्ति द्वारा मालूम होता है, कि घी खानेसे आयु बढ़ती है। (साहित्यद० १।१६) लक्षणा देखो।

सारोष्ट्रिक (सं० पु०) एक प्रकारका विष।

सार्कण्डेय (सं० पु०) सृकण्डुका गोत्रापत्य।

सार्गिक (सं० त्रि०) सार्गाय प्रभवति (तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः। पा ५।१।१०१) इति ठञ्। सर्गकारी, सृष्टि करनेमें समर्थ।

सार्ङ्गी (सं० स्त्री०) वाद्ययन्त्र, सारंगी।

सार्जेंट (अं० पु०) सर्जेंट देखो।

सार्ज (सं० पु०) सर्जका, राल, धूना।

सार्जनाक्षि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिविशेष।

सार्ञ्जय (सं० पु०) सृञ्जय अपत्यार्थे अञ्। १ सृञ्जयका गोत्रापत्य। २ सहदेव। (ऐत० ब्रा० ७।३४)

सार्टिफिकेट (अं० पु०) सर्टिफिकेट देखो।

सार्थ (सं० पु०) सरतीति सृ (सर्त्तेणिच। उण् २।५) इति थन्, स च णित्। १ जन्तुसङ्घ, जन्तुओंका समूह। २ वणिक्समूह, बनियोंका समूह। ३ समूहमात्र, गरोह, झुंड। (त्रि०) अर्थेन सह वर्त्तमानः। ४ अर्थके साथ वर्त्तमान, जिसका कुछ अर्थ हो।

"सार्थः प्रसवतो नित्य भार्या मित्र गृहे सतः।
आतुरस्य भिषङ्मित्रं दान मित्रं मरिष्यतः॥"
(शुद्धितत्त्व)

सार्थक (सं० त्रि०) सार्थ एव कन्। १ अर्थके साथ वर्त्तमान, अर्थयुक्त। शब्दशक्तिप्रकाशिकामें इसका लक्षण यों लिखा है—दूसरे शब्दकी जरा भी अपेक्षा न करके जो अर्थबोध कराता है, उसे सार्थक कहते हैं। यह तीन प्रकारका है, प्रकृति, प्रत्यय और निपात। ये तीनों किसीकी अपेक्षा न करके भी अर्थके बोधकारक होते हैं।

"शब्दान्तरमपेक्ष्यैव सार्थकः सार्थबोधकृत्।
प्रकृतिः प्रत्ययश्चैव निपातश्चेति स त्रिधा॥"
(शब्दशक्ति०)

२ सफल, सिद्ध। ३ उपकारी, गुणकारी।

सार्थकता (सं० स्त्री०) १ सार्थक होनेका भाव। २ सफलता, सिद्धि।

सार्थधर (सं० पु०) वणिक्कुलनेताविशेष।

सार्थपति (सं० पु०) व्यापार करनेवाला, वणिक्, रोजगारी।

सार्थपाल (सं० पु०) वणिक्कुलका नेता।

सार्थभृत् (सं० पु०) सार्थं बिभर्त्ति भृ-क्विप् तुक् च। सार्थवाह, वणिक्।

सार्थवत् (सं० त्रि०) सार्थ मतुप् मस्य व। १ अर्थयुक्त, जिसका कुछ अर्थ हो। २ यथार्थ, ठीक।

सार्थवाह (सं० पु०) सार्थं वहतीति वह-अण्। वणिक्, रोजगारी।

सार्थवाहन (सं० पु०) सार्थवाह।

सार्थसञ्चय (सं० त्रि०) अर्थसञ्चयेन सह वर्त्तमानं। अर्थसञ्चययुक्त, अर्थसञ्चयविशिष्ट।

सार्थिक (सं० त्रि०) १ सार्थक। २ सफल।

सार्थी (हिं० पु०) रथ हाकनेवाला, कोचवान।

सार्दायन (सं० पु०) सृदाकु गोत्रापत्यार्थे अञ्। सृदाकुका गोत्रापत्य।

सार्द्र (सं० त्रि०) आर्द्रेण सह वर्त्तमानः। आर्द्र, भींगा, गीला।

सार्दूल (हिं० पु०) सिंह, केशरी। शार्दूल देखो।

सार्द्ध (सं० त्रि०) अर्द्धेन सह वर्त्तमान। १ अर्द्धयुक्त, जिसमें पूरेके अतिरिक्त आधा भी मिला या लगा हो। २ सहित, साथ। यह शब्द विभक्तियुक्त हो कर 'सार्द्धम्' इस प्रकार व्यवहृत होता है। यह शब्द सहार्थक है, अतएव व्याकरणके मतसे इस शब्दयोगमें तृतीया विभक्ति होती है।

"दुःशासनो भ्रातृभिः सार्द्धं युद्धार्थी पृष्ठतोऽन्वयात्।"
(भारत ७।२७।१)

सार्द्धवार्षिक (सं० त्रि०) अर्द्धवर्षव्यापी, जो प्रायः छः महीने तक होता हो। (मनु ११।१२६ कुल्लूक)

सार्प (सं० पु०) सर्प-स्वार्थे अण्। सर्प देखो।

सार्पराज्ञ (सं० त्रि०) सर्पराज्ञी नाम्नी ऋक्सम्बद्ध-रचित या तत्सम्बन्धीय।

सार्पाकव (सं० पु०) सृपाकु अपत्यार्थे बिदादित्वात् अञ्। (पा ४।१।१०४) सृपाकुका गोत्रापत्य।

सार्पाकवायन (सं० पु०) सार्पाकव हरितादित्वात् फक्। (पा ४।१।१००) सार्पाकवका गोत्रापत्य।

सार्पिष (सं० त्रि०) १ सर्पिस् सम्बन्धीय। (पु०) २ घृत द्वारा संस्कृत वस्तु।

सार्पिष्क (सं० त्रि०) सर्पि द्वारा संस्कृत वस्तु, घीसे तैयार की हुई चीज।

सार्प्य (सं० पु०) १ अश्लेषा नक्षत्र। (त्रि०) २ सर्पसम्बन्धी, सांपका।

सार्व्व (सं० पु०) सर्वस्मै हितायं सर्व्व (सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ। पा ५।१।१०) इति ण। १ बुद्ध। २ जिन। ये सबोंके हितकारक थे, इसीसे इनका नाम सार्व्व हुआ है। (त्रि०) ३ सर्व्व-सम्बन्धी, सबसे सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्व्वकर्मिक (सं० त्रि०) सर्व्वकर्मकारी, कुल काम करनेवाला।

सार्व्वकामसमृद्ध (सं० त्रि०) कर्ममासका छठा दिन।

सार्व्वकामिक (सं० त्रि०) जो सकल कामना करके किया जाता है। (भागवत ६।१९।२)

सार्व्वकाल (सं० त्रि०) सर्व्वकाल-अण्। सर्वकालभव, जो सब समय होता है।

सार्व्वकालिक (सं० त्रि०) सर्व्वकालभव, जो सब कालों में होता हो।

सार्वकेश्य (सं० त्रि०) सर्वकेश-सम्बन्धी।

सार्व्वक्रतुक (सं० त्रि०) सब प्रकारके यज्ञ करनेवाला।

सार्व्वगुण (सं० त्रि०) सर्व्वगुण सम्बन्धी।

सार्वगुणिक (सं० त्रि०) सर्वगुणभव, सकल गुणसम्बन्धी।

सार्वचर्मीण (सं० त्रि०) सकल चर्मनिर्मित, सभी प्रकार-के चमड़ोंसे बना हुआ। (पा ५।२।५)

सार्वजनिक (सं० त्रि०) सर्वजनाय हितः (सर्वजनात् ठञ् खश्च। पा ५।१।६) इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या ठञ्। १ सब लोगोंके इष्टसाधक। २ सर्वसाधारण सम्बन्धी।

सार्वजनीन (सं० त्रि०) सर्वजनाय हितः सर्वजन-ख (पा ५।१।६) सार्वजनिक, सब लोगोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्वजन्य (सं० त्रि०) सर्वजन-ष्यञ्। १ जिससे सब लोगोंका लाभ हो, लोकहितकर। २ सब लोगोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्वज्ञ (सं० क्लो०) सर्वज्ञ भावे अण्। सर्वज्ञ होने-का भाव, सर्वज्ञता।

सार्वज्ञ्य (सं० क्लो०) सर्वज्ञ भावे ष्यञ्। सर्वज्ञत्व।

सार्वत्रिक (सं० त्रि०) सर्वत्र-व्यापी, सब स्थानोंमें होने-वाला।

सार्वदेशिक (सं० त्रि०) सम्पूर्ण देशोंका, सर्व-देश सम्बन्धी।

सार्वधातुक (सं० त्रि०) सार्वधातु कन्। सकल धातु-सम्बन्धीय।

सार्वनाम्न्य (सं० क्लो०) बहुसंख्यक नाम।

सार्वभौतिक (सं० त्रि०) सर्वभूतनिर्मित, सब भूतोंसे सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्वभौम (सं० पु०) सर्वभूमौ विदितः (तत्र विदित इति च। पा ५।१।४३) इत्यण्। १ उत्तरदिग्गज। २ समस्त भूमिका राजा, चक्रवर्त्ती राजा। पर्याय—चक्रवर्त्ती, एकजन्मा, नृपाग्रणी। (शब्दरत्ना०)

३ भागवतके अनुसार विदूरथके पुत्रका नाम। ४ पुरु-वंशी अहंयातिका पुत्र। अहंयातिका कृतवीर्यकी कन्या भानुमतीसे विवाह हुआ था। इसी भानुमतीके गर्भसे सार्वभौमकी उत्पत्ति हुई। (महाभारत आदिपर्व ९५ अध्याय) (त्रि०) ५ समस्त भूमि-सम्बन्धी, सम्पूर्ण भूमिका।

सार्वभौम—१ स्मृति-ग्रन्थराजके प्रणेता। २ सप्तर्षिचार और सूर्यादि-क्रान्तटीकाके रचयिता। ३ एक प्राचीन कवि। इन्होंने अपने ग्रन्थमें अनङ्गभीम नामक एक राजा का उल्लेख किया है। ये अनङ्गभीम शायद उड़ीसाके राजा अनङ्गभीमदेव होंगे। ४ भानुदत्ताके गर्भसे उत्पन्न संयातिके पुत्र। (नृसिंहपु० २८।१०)

सार्वभौमभट्टाचार्य—१ चैतन्यदशक नामक स्तोत्रके रच-यिता। वासुदेव सार्वभौम देखो। २ पद्यावलीधृत एक कवि। ३ अद्वैतमकरन्दके प्रणेता।

सार्वभौम मिश्र—भुवनप्रदीपिका नामक अभिधानके प्रणेता।

सार्वभौम व्रत—व्रत विशेष। (वराहपु०)

सार्वयज्ञिक (सं० त्रि०) सभी प्रकार यज्ञ सम्बन्धीय।

सार्वरुह (सं० पु०) मूर्त्तक्षार, सूर्याक्षार, शोरा।

सार्वलौकिक (सं० त्रि०) सर्वलोके विदितः (लोक सर्व-लोकात् ठञ्। पा ५।१।४४) इति ठञ्। १ सर्वजन विदित, सर्वत्र प्रसिद्ध। २ सब लोगोंसे संबंध रखनेवाला।

सार्ववर्णिक (सं० त्रि०) १ सर्व प्रकारक व्यञ्जनादि-युक्त। २ सकल वर्ण सम्बन्धीय, ब्राह्मणादि चारों वर्णोंसे संबंध रखनेवाला।

सार्ववर्मिक (सं० त्रि०) सर्ववर्मीक।

सार्वविद्य (सं० क्लो०) सर्वविद्यायुक्त, सर्व वेद्या।

सर्वविभक्तिक (सं० क्लो०) सकल विभक्ति सम्बन्धीय।

सार्ववेदस (सं० त्रि०) सर्ववेदस, कृतसर्वस्वदक्षिण विश्वजित् याग, जिन्होंने सर्वस्व दक्षिणा दे कर विश्व-जित् यज्ञ किया हो। (मनु ११।१)

सार्ववेद्य (सं० पु०) सर्ववेदज्ञ ब्राह्मण।

सार्ववैदिक (सं० त्रि०) १ सर्ववेद सम्बन्धीय, सब वेदों-से सम्बन्ध रखनेवाला। २ सर्ववेदज्ञ, सभी वेद जानने-वाला।

सार्वसेन (सं० पु०) पञ्चरात्रभेद। (आश्व० श्रौ० १०।६।२७)

सार्वसेनि (सं० पु०) १ शाचेयका गोत्रापत्य। २ योद्धा-गण।

सार्वसेनीय (सं० पु०) सर्वसेनिके राजा।

सार्वसेनी (सं० पु०) १ भरतकी कन्या। २ सुनन्दाकी वंशोपाधि।

सार्वस्नेय (सं० त्रि०) सर्वस्नेन सम्बन्धीय।

सार्वायुष (सं० त्रि०) सर्वायुस् अण्। सकल आयु-सम्बन्धी।

सार्वाप (सं० त्रि०) सर्वापस्यापत्यमिति सर्वाप अण्। १

सर्षप-सम्बन्धीय, सरसोंका। (पु०) २ सरसों। ३ सरसोंका तेल। ४ सरसोंका साग।

सार्ष्टि (सं० लि०) मुक्तिभेद।

सार्ष्टि (सं० स्त्री०) पांच प्रकारकी मुक्तिमें एक प्रकारकी मुक्ति समानैश्वर्य। जिस मुक्तिमें ईश्वरके साथ समान ऐश्वर्य लाभ होता है, उसे सार्ष्टि कहते हैं।

सार्सा—बम्बई प्रदेशके खेडा जिलान्तर्गत आनन्द उप विभागका एक नगर। यह अक्षा० २२° ३३´ उ० तथा देश० ७३° ७´ पू०के मध्य विस्तृत है। यह नगर स्थानीय कपास-वाणिज्यका केन्द्र है।

साल (सं० पु०) सल्यते इति सल गतौ घञ्। १ शाल मत्स्य, एक प्रकारकी मछली जो भारत, लङ्का और चीनमें पाई जाती है। २ प्राकार, परकोटा। ३ राल, धूना। ४ वृक्ष, पेड़। सारोऽस्त्यत्रेति अच्, रस्यलैक्यं। ५ स्वनाम ख्यात वृक्ष, इस वृक्षका कुछ अंश प्रायः सार है, इसीसे इसका नाम साल हुआ है। भारतवर्षके पहाड़ी प्रदेश मात्रमें ही साल वृक्ष उत्पन्न होते हैं। विशेष विवरण शाल शब्दमें देखो। ६ मूल, जड़। ७ कूचबंदोंकी परिभाषामें खसकी जड़ जिससे कूंच बनती है। ८ प्राचीर, दीवार। ९ शृगाल, सियार। १० फोर्ट, किला।

साल (हिं० पु० स्त्री०) १ सालने या सलनेकी क्रिया या भाव। २ छेद, सूराख। ३ चारपाईके पायोंमें किया हुआ वह चौकोर छेद जिसमें पाटी आदि बैठाई जाती है। ४ घाव, जख्म। ५ दुःख, पोड़ा।

साल (फा० पु०) वर्ष, बरस, बारह महीने।

साल—सूतका पुत्र। (जैन हरि० १७।३)

साल अमोनिया (अं० पु०) नौसादर।

सालई (हिं० स्त्री०) सलई देखो।

सालक (हि० वि०) सालनेवाला, दुःख देनेवाला।

सालकि (सं० पु०) मुनिविशेष।

सालगा (हि० पु०) सलई देखो।

सालगिरह (फा० स्त्री०) बरस गांठ, जन्म दिन।

सालग्राम (सं० पु०) शालग्राम देखो।

सालग्रामी (हि० स्त्री०) गण्डक नदी। इसका यह नाम इसलिये पड़ा, कि उसमें शालग्रामकी शिलाएं पाई जाती हैं।

सालङ्क (सं० पु०) सङ्गीतमें तीन प्रकारके रागोंमेंसे एक प्रकारका राग, वह राग जो बिलकुल शुद्ध हो, जिसमें किसी और रागका मेल न हो, पर फिर भी किसी रागका आभास जान पड़ता हो।

सालज (सं० पु०) सर्जरस, राल।

सालजक (सं० पु०) सालज देखो।

सालज्य (सं० क्ली०) ग्रहसंस्थानभेद।

सालद्रुम (सं० पु०) सागौन।

सालन (सं० पु०) सर्जरस, धूना, राल।

सालन (हिं० पु०) मांस, मछली या साग सब्जीकी मसालेदार तरकारी।

सालना (हिं० क्रि०) १ दुःख देना, खटकना। २ चुभना, गड़ना। ३ दुःख पहुंचाना, व्यथित करना। ४ चुभाना, गड़ाना।

सालनिर्यास (सं० पु०) सर्जरस, राल, धूना।

सालपर्णी (सं० स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन।

सालपुष्प (सं० क्ली०) सालस्येव पुष्पमस्य। १ स्थल पद्म। २ पुंडेरी।

सालभञ्जिका (सं० स्त्री०) पुतला, मूर्त्ति।

सालम मिश्री (हिं० स्त्री०) अमृतोत्था, सुधामूली। यह एक प्रकारका क्षुप है। इसकी ऊंचाई प्रायः डेढ़ फुट तक होती है। इसके पत्ते प्याजके पत्तेके समान और फैले हुए होते हैं। डंठोके अन्तमें फूलोंका गुच्छा लगता है। फल पीले रंगके होते हैं। इसका कन्द कसेरूके समान, पर चिपटा, सफेद और पीले रंगका तथा कड़ा होता है। इसमें वीर्यके समान गंध आती है और यह खानेमें लसीली और फीकी होती है। इसके पौधे भारतके कितने ही प्रान्तोंमें होते हैं, पर काबुल, बलख, बुखारा आदि देशोंकी अच्छी होती है। यह अत्यन्त पौष्टिक है। पुष्टिकर औषधियोंमें इसका विशेष प्रयोग होता है। वैद्यकके अनुसार यह स्निग्ध, उष्ण, वाजीकरण, शुक्रजनक, पुष्टिकर और अग्निप्रदीपक मानी जाती है।

सालर मसाउद गाजी—एक मुसलमान योद्धा और साधु पुरुष। यह युक्तप्रदेशमें गाजी मियां नामसे मशहूर था। इस्लाम धर्मप्रचारके लिये इसने आत्मजीवन उत्सर्ग कर बड़ा नाम कमाया था। अयोध्याप्रदेशके बराइच

नगरमें इसका मकबरा मौजूद है। यह शालर साहका लड़का और गजनीपति सुलतान महमूदका भांजा था। १०३३ ई०में (४२४ हि:) मसाउद गाजी अपने मामा-की ओरसे मुसलमान सेनाका नायक बन कर बहराइच का एक प्रसिद्ध हिन्दूमन्दिर जीतने अग्रसर हुआ। इस समय वहांके हिन्दू बड़े उत्साहसे मुसलमानोंके विरुद्ध डट गये थे। हिन्दुओंने चारों ओरसे मुसलमानी सेनाको घेर लिया और वे उन पर अस्त्रको वर्षा करने लगे। इस युद्धमें हिन्दुओंके हाथसे सालर मसाउद और उसके अधीनस्थ सेनादल मारे गये। इस समय सालर मसाउदकी उमर सिर्फ १६ वर्षकी थी।

उक्त घटनाके स्मरणार्थ बहराइचके लोग प्रति वर्ष ज्येष्ठ मासके प्रथम रविवारको एक उत्सव करते हैं। इस उत्सवके अन्तिम दिनमें सभी गुड्डी उड़ा कर आमोद प्रमोदमें दिन बिताते हैं।

सालर साह—एक मुसलमान सेनापति। यह गजनो-पति महमूदका भगिनीपति और सालर मसाउदका पिता था। इसने अयोध्याप्रदेशके बारावांकी जिलेके सत्रिध नगर पर आक्रमण किया। इसी स्थानमें सालर साहकी मृत्यु हुई। उसके समाधिक्षेत्रमें प्रति वर्ष मेला लगता है। इस उपलक्षमें करीब १८ हजार आदमी इकट्ठे होते हैं।

सालवन (सं० पु०) १ सालवृक्षका वन। जिस वनका अधिकांश वृक्ष ही साल है, उसे सालवन कहते हैं। २ वृन्दावनके मध्य एक वन।

सालवाई—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २५°५१´ उ० और देशा० ७८°१६´ पू० के मध्य ग्वालियर दुर्गसे ३२ मील दक्षिण-पूर्वमें अव-स्थित है। मधुराव वल्लालकी मृत्युके बाद पेशवा-पद ले कर महाराष्ट्र-समाजमें जब विप्लव खड़ा हुआ, तब यहां १७८२ ई०में अंगरेज गवर्मेण्टके साथ समवेत मराठा-शक्तिको एक सन्धि हुई, यही सालवाईकी सन्धि नामसे इतिहासमें प्रसिद्ध है।

इस सन्धिकी शर्तके अनुसार महाराष्ट्र अधिकारभुक्त बसाई और अन्यान्य जो सब प्रदेश अंगरेजोंने युद्धमें जीते थे, उसे वे पेशवाको लौटा देनेको वाध्य हुए। पेश-वाने भी महाराष्ट्रपक्षसे अङ्गरेजोंको सालसेट, एलिफण्टा (गाढ़ापुरी), करञ्ज और बम्बई शहरके पासका हगद्वीप छोड़ दिया। सन्धिके तृतीय प्रस्तावके अनुसार वृटिशराज भरोचनगर परगनेके सम्पूर्ण स्वत्वाधिकारी हुए।

पीछे अंगरेजोंने वह सम्पत्ति सिन्देराजको पुरस्कार स्वरूप दे दी। क्योंकि उन्होंने पहलेके युद्धोंमें अङ्गरेजोंको मदद दी थी। वह सम्पत्ति सिन्देराजको देते समय अंगरेज गवर्मेण्टने उनके राज्यमें बे-रोकटोक वाणिज्य करनेको एक व्यवस्था भी सन्धि-शर्तमें शामिल कर दी थी।

सालवाहन (सं० पु०) शालिवाहनराज, सातवाहन। शालिवाहन देखो।

सालवेष्ट (सं० पु०) धूनक, धूना।

सालशृङ्ग (सं० क्लो०) प्राचीराग्र, दीवारका ऊपरी हिस्सा।

सालसा (अं० पु०) खून साफ करनेका एक प्रकारका अंगरेजी ढंगका काढ़ा जो अनन्तमूल आदिसे बनता है।

सालसार (सं० पु०) सालमेद। (सुश्रुत सू० ३८ अ०)

सालसी (अ० स्त्री०) १ सालस होनेकी क्रिया या भाव, दूसरोंका झगड़ा निपटाना। २ पंचायत।

सालसेट—बम्बई प्रदेशके थाना जिलेका एक उपविभाग और बम्बई शहरके उत्तर एक बड़ा द्वीप। यह अक्षा० १८° ५३´ से १६°१६´ उ० तथा देशा० ७२° ४७´ से ७३°३´ पू०के मध्य भण्डारासे उत्तर बसाई शहरकी समुद्रखाड़ी तक प्रायः १६ मील विस्तृत है। बम्बई नगरके साथ सेतु द्वारा संयुक्त है। भूपरिमाण २४६ वर्गमील है। इसमें बन्दर, थाना और कुर्ला नामक तीन शहर और १२८ ग्राम लगते हैं, जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है।

इस द्वीपके ठीक मध्यस्थलमें उत्तर-दक्षिणकी ओर विस्तृत एक शैलश्रेणी दृष्टिगोचर होती है। इस शैल-मालाकी ऊंचाई अधिक नहीं होने पर भी द्वीपका अधि-कांश मध्यभाग अधित्यकासे परिपूर्ण है। कार्लोंके निकट-वर्त्ती स्थानमें समतल मैदानमें मिल जाने पर भी इस शैलद्वीपके दक्षिण ट्रोम्बे नामक नगरके पास यह मस्तक उठाये खड़ा है। इस शैलमालाके मध्यस्थलमें थाना शृङ्ग १५३० फुट ऊंचा है। द्वीपके उत्तरमें एक और बड़ा शैल दिखाई देता है। उसकी चोटी समुद्रकी तहसे

१५०० फुट ऊंची है। इस मध्य पर्वत श्रेणीमें बहुत-सी शाखाएं पश्चिमकी ओर समुद्रतीर तक फैल गई हैं। बीच बीचमें जो निम्न समतलभूमि है, वह समुद्रकी तरङ्ग लगनेसे एक एक खाडीकी तरह हो गई है। उक्त उपविभागके उत्तर-पश्चिमस्थित तरङ्गाघातसे विध्वंत कुछ अंश विच्छिन्न हो कर एक एक छोटे द्वीपकी तरह देख पडते हैं।

इस उपविभागमें मीठे जलसे भरी हुई एक भी नदी या जलनाली नहीं है। स्थानीय लोग कुआ खोद कर मीठा जल निकालते तो सही, पर वह उतना स्वादिष्ट नहीं होता, यहां एकमात्र धानकी ही खेती होती है। उडद आदिकी फसल बहुत कम लगती है। बम्बई शहरके बाजारमें जो घासकी खपत होती है, वह यहांकी उच्च अधित्यकाभूमिसे ही जाती है। समुद्रतीरवर्त्ती उपकूल-भागमें नारियल और ताडके पेड अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। शस्यश्यामला धान्यक्षेत्रके विस्तृत मैदानमें वनमालाके अभ्यन्तर ऊंची चोटीका शैलश्रृंग ही यहांके प्राकृतिक चित्रका स्पष्ट निदर्शन है।

यहां पुर्त्तगीजोंके वासभवन, गिरजा घर, धर्मभवन और उद्यानवाटिका आदिके जो सब ध्वस्त निदर्शन दृष्टिगोचर होते हैं, वही यहांकी पूर्व समृद्धिके एकमात्र परिचायक हैं तथा कनेरीकी पुराकीर्त्ति प्रत्नतत्त्वविदोंके आदरकी सामग्री है।

सालसेट द्वीप इष्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकारभुक्त होनेके बाद ५३ ग्रामों और १८ भूसम्पत्तियोंमें विभक्त हुआ। इनमेंसे अधिकांश निष्कर था और थोडेकी मालगुजारी निर्दिष्ट कर दी गई थी। पीछे उसकी मालगुजारी बढ़ानेकी व्यवस्था हुई। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला तथा बम्बई, बडौदा और सेण्ट्रल इण्डिया रेलवे इस उपविभागके मध्य हो कर चली गई है।

१६वीं सदीके प्रारम्भसे पुर्त्तगीजोंने यह द्वीप अधिकार किया। पीछे राजा २य चार्लसकी महिषीके यौतुकस्वरूप यह इङ्गलैण्डके राजाको दे दिया गया। पुर्त्तगीजोंने १६६२ ई०में इस बातको बिलकुल अस्वीकार कर दिया, कि यौतुक यह नहीं दिया गया है। किन्तु उसके प्रायः एक सदीके बाद यह अंगरेजोंके दखलमें आया। १७३९ ई०में मराठोंने कमजोर पुर्त्तगीजोंको परास्त करके सालसेटद्वीप अधिकार कर लिया। अङ्गरेजी सेनाने १७७४ ई०के दिसम्बर मासमें महाराष्ट्र-सेनापतिको परास्त कर सालसेटमें घेरा डाला और उसे जीत लिया। इसके बाद १७८२ ई०में सालबाईकी सन्धिके बाद यह स्थान इष्ट इण्डिया कम्पनीके राज्यभुक्त हुआ।

पूर्वकथित कनेरीके गुहामन्दिरका स्थापत्यशिल्प पुरातत्त्वानुसन्धित्सु मात्रकी ही दृष्टि आकर्षण करता है। कनेरीका यह बडा चैत्य डा० फार्गुसनके मतसे कार्लीके सुविख्यात गुहामन्दिरकी हू-बहू नकल है। किन्तु स्थापत्यशिल्प विषयमें कार्लीका मन्दिर बढ़ा चढ़ा है। सालसेट द्वीपमें जो सब पुराकीर्त्तियां हैं, पाश्चात्य पुरातत्त्वविदोंका विश्वास है, कि उनका अधिकांश ५वीं सदीमें प्रतिष्ठित हुआ है। किन्तु वे लोग कहते हैं, कि उनमें भी विहार उससे और भी प्राचीन कालमें स्थापित हुए हैं। इसके सिवा सालसेट द्वीपमें ४थी सदीका शाक्य-बुद्धका दण्ड स्थापित हुआ। तभीसे इस स्थानका माहात्म्य लोगोंको मालूम है। भारतमें बहुत प्राचीन कालसे राजकीय या सामाजिक विप्लव होते आ रहे हैं और उनसे पुण्यकीर्त्तियोंका विलय और विपर्यय होता गया है, परन्तु भारतान्तरित इस द्वीपभागके उस राष्ट्र-विप्लवकी छाया तक भी स्पर्श न कर सकी है।

सालहज,(हिं० स्त्री०) सलहज देखो।

साला (सं० स्त्री०) शाला, गृह, घर।

साला (हिं० पु०) १ पत्नीका भाई। २ एक प्रकारकी गाली। ३ सारिका, मैना।

सालाकारी (सं० स्त्री०) युद्धमें पराजित स्त्री।

सालाना (फा० वि०) वर्षका, सालका।

सालार (सं० क्ली०) कोई पदार्थ रखनेके लिये दीवारमें कील, खूंट।

सालावृक (सं० पु०) १ कुक्कुर, कुत्ता। २ शृगाल, सियार। ३ तरक्षु, भेडिया।

सालावृकेय (सं० पु०) सलावृकका गोत्रापत्य।

सालि (सं० पु०) शालि देखो।

सालिग्राम (सं० पु०) शालिग्राम देखो।

सालिनी (सं० स्त्री०) शालिनी देखो।

सालिब मिश्री (अ० स्त्री०) सालम मिश्री देखो।

सालिम (अ० पु०) जो कहींसे खंडित न हो, पूर्ण, पूरा।

सालियाना (फा० वि०) सालाना देखो।

सालिवाहन—एक प्रवल पराक्रान्त हिन्दूराजा। ये शालिवाहन या सातवाहन नामसे भी परिचित थे।

भारतवर्ष देखो।

सालिहोत्री (सं० पु०) शालिहोत्री देखो।

साली (फा० स्त्री०) १ वह जमीन जो सालाना देनके हिसाबसे ली जाती है। २ खेती वारीके औजारोंकी मरम्मतके लिये बढईको सालाना दी जानेवाली मजूरी।

सालुर गण्ड—दाक्षिणात्यके विजयनगरके एक राजा।

विद्यानगर देखो।

सालुर नरसिंह—दाक्षिणात्यके विजयनगर राज्यके एक हिन्दू राजा। विद्यानगर देखो।

सालू (हिं० पु०) १ एक प्रकारका लाल कपडा जो माङ्गलिक कार्यों के उपयोगमें आता है। २ सारी।

सालूर (सं० पु०) मण्डूक, मेढक।

सालेटेकी—मध्यप्रदेशके वालाघाट जिलान्तर्गत एक निष्कर भूसम्पत्ति। ३८ ग्राम ले कर यह सगठित हुई है। इसका भूपरिमाण २८४ वर्गमील है। इस सम्पत्तिका अधिकांश स्थान पर्वत और जङ्गलमय है। शोननदीके तीरवर्त्ती कुछ ग्रामोंको छोड और सभी स्थान जङ्गलमय हैं तथा समुद्रपृष्ठसे प्रायः १८०० से २ हजार फुट ऊंचे हैं। यहाके सरदार प्राचीन गोंड-राजवंशके हैं। वे कभी कभी अपने वासभवनसे निकल कर समतल क्षेत्रस्थ ग्रामवासियोंसे मालगुजारी तौर पर कुछ कुछ वसूल करते आ रहे थे। पहाडी घाटोंकी रक्षा करनेके लिये गोंड सरदारको यह सम्पत्ति निष्कर छोड दी गई। सालेटेकी ग्राम बुर्हासे ५० मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है।

सालेम—१ मन्द्राजप्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० ११° २′ से १२° ५४′ उ० तथा देशा० ७७° २६′ से ७९° २′ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ७५३० वर्गमील है। यह जिला प्राचीन चेर-राज्यके अन्तर्गत था, इससे मालूम होता है, कि चेरम् शब्दके अपभ्रंशसे चेरम् या चेलम्से सेलम् और पीछे सालेम नामकी उत्पत्ति हुई होगी।

इस जिलेके उत्तर महिसुर राज्य और उत्तर आर्कट जिला, पूर्वमें त्रिचिनापल्ली और उत्तर आर्कट जिलेका कुछ अंश, दक्षिणमें कोयम्बतोर और त्रिचिनपल्ली तथा पश्चिममें कोयम्बतोर और महिसुर राज्य है। सालेम नगर यहांका विचारसदर है।

भूपृष्ठका पार्थक्य निरीक्षण कर इस जिलेको तीन भागोंमें विभक्त किया गया है। १ तलघाट अर्थात् पूर्वघाट-पर्वतमालाके पादमूलस्थ और कर्णाटक राज्यको सीधमें अवस्थित समतल भूमि, इसका जल, वायु और मिट्टी पार्श्ववर्त्ती त्रिचीनपल्ली और दक्षिण आर्कट जिलेके समान है। २ वारहमहाल विभाग घाटपर्वतमालाकी अधित्यका भूमि और उनके सानुदेशस्थ प्रदेशको ले कर बना है। ३ बालाघाट-विभाग घाटमालाके उत्तर महिसुर राज्यकी अधित्यकाभूमिके ऊपर विस्तृत है।

यहाका जलवायु शुष्क और मनोरम है। दक्षिणांशकी अपेक्षा उत्तरांश बहुत शीतल है। होसुर उपविभागका जलवायु बहुत कुछ बङ्गलूर जैसा है। कावेरी इस जिलेकी प्रधान नदी है। नामकल तालुकका कृषि-कार्य इसी नदीके जलसे चलता है। इस कार्यके लिये नदीके बाएं किनारेसे नाली काट कर खेतमें जल लाया गया है। पालर नदी तिरुपातुर तालुकके उत्तरी कोनमें बहती है। पेन्नार नदी महिसुर राज्यसे निकल कर होसुर, कृष्णगिरि और उत्तङ्करई तालुकके मध्यसे होती हुई दक्षिण आर्कट सीमा तक चली गई है। यहां पाम्बर और वनियार नामकी दो शाखा नदी उत्तर और दक्षिणसे इसमें मिल कर मूल नदीके कलेवरको बढाती है। सनत्-कुमार नदी होसुर और धर्मपुरी उपविभागमें बहती है। वशिष्ठनदी और श्वेत नदी आतुर जिलेको जलसिक्त कर पूर्वकी ओर चली गई है। इसके सिवा कावेरी नदीके दोनों किनारोंकी बहुत सी शाखा-प्रशाखाएं जिलेके नाना स्थानोंमें विस्तृत हो कर प्रजाको सुख दे रही हैं।

यहाकी वनमालाओंमें नाना जातिके मूल्यवान् वृक्ष उत्पन्न होते हैं, इस कारण उन सब वनोंसे रुपयेकी अच्छी आमदनी होती है। समतलक्षेत्र प्रायः वनशून्य है। स्थानीय उच्च पर्वतपृष्ठ और उसके अन्तर्गत उपत्यका-

समूह वनमालासे परिपूर्ण है । अधिकांश पर्वत ऊंची चोटीसे ले कर नीचे तक शालवृक्षसे भरा हुआ है । उसके साथ साथ चन्दनादि नाना प्रकारके मूल्यवान् वृक्ष भी देखे जाते हैं । जेवाडी, पलगिरिमाला और शेवारामें यथेष्ट शाल और चन्दनादि पाये जाते हैं । कहीं कहीं जलानेकी लकड़ीके लिये वन सुरक्षित है, कहीं शाल आदि वृक्षोंकी खेती हो कर वनरक्षाकी व्यवस्था हुई है ।

इन सब जङ्गलोंसे मधु, मोम, रंग या चमड़ा परिष्कार करनेके लिये लकड़ी या वृक्षकी छाल, इटा तन्तु और नाना प्रकारका भेषज ले कर मलयाली और अन्यान्य वनवासी जाति आसपासके शहरोंमें बेचने आती है। कहीं ऐसे जङ्गली भेषजादि उद्भिज्ज संग्रह करनेके लिये कर देना पड़ता है । होसुरके जंगलमें लाख उत्पन्न होती है । इसके सिवा इस उपविभागके जङ्गलमें और समतल मैदानमें इमलीके पेड़ बहुत होते हैं, यही इस देशके लोगोंकी प्रधान आयकी सम्पत्ति है । जङ्गली जन्तुओं-की संख्या यहां धीरे धीरे कम होती जा रही है । जङ्गली जातियां पासमें हमेशा बन्दूक रखती हैं और सामने जो कोई जन्तु देखती हैं, उसीको गोलीसे दाग कर घर लाती और खाती हैं । जेवाड़ी शैल पर वाइसन नामक महिष और हाथी देखा जाता है ।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास दो भागोंमें विभक्त है । क्योंकि पहले इसका उत्तरार्द्ध और दक्षिणार्द्ध दो प्रतापशाली प्राचीन हिन्दूराजवंशके अधिकारमें था। इसके उत्तरांशमें पल्लववंशीय राजाओंका राज्य था। इस राजवंशने ५वीं सदीमें अथवा उसके पहले काञ्ची-पुर राजधानीमें रह कर प्रबल प्रतापसे राज्यशासन किया था। ९वीं सदीमें तञ्जोरके चोल राजाओं द्वारा पल्लव साम्राज्य विद्‌लित हुआ। पल्लवराजने हार खा कर सारा राज्य शत्रुके हाथ सौंप दिया । इस समय इस स्थानको छोड़ उनका राज्य और कहीं भी न था।

दक्षिण सालेम भू-भाग प्राचीन कोंगू राज्यके अन्तर्भुक्त था । कोंगू राज्यके प्रथम राजगण सूर्यवंशीय और परवर्त्ती राजगण गङ्गवंशीय थे । रट्टवंशीय सात राजाओंको ले कर यहांके सूर्यवंशीय राजाओंका शासन आरम्भ होता है। उस वंशके प्रथम राजाका नाम वीर-राय चक्रवर्त्ती था। प्राचीन स्कन्दपुरमें उनकी राजधानी थी। इस कोंगू राज्यमें उस प्राचीन युगमें बहुत बढ़िया इस्पात बनता था। पाश्चात्य प्रत्नतत्त्वविदोंकी धारणा है, कि प्राचीन मिस्रवासी इसी भारतीय इस्पातसे तैयार किये हुए अस्त्रादि ले कर अपने मन्दिर और स्तम्भगात्रमें हाइरोग्लिफिक लिपि उत्कीर्ण करते थे । भारतीय इस्पातके गौरवकी बात अलेकसन्दरके विवरणमें भी देखी जाती है । महामति अलेकसन्दर जब भारतवर्ष आये थे, उस समय पुरुराजने उन्हें इस्पातका बना हुआ उपहार दिया था।

द्वितीय या गङ्गवंशके शासन-कालमें इस राज्यकी सीमा क्रमशः उत्तर-पश्चिममें फैल गई थी। उक्त राजवंशके इतिहासमें जो राजवंशकी तालिका दी गई है, उसके साथ उत्कीर्ण ताम्रशासनादिवर्णित राजाओंकी बहुत कुछ एकता देखी जाती है। चोलराज कर्त्तृक कोंगू-विजय पर्यन्त यह प्रदेश गङ्गवंशके अधिकारमें था। पीछे दाक्षिणात्यमें बल्लालवंशका जब अभ्युदय हुआ, तब १०६६ ई०के लगभग सालेम जिला कर्णाटके बल्लाल राजाओंके अधिकारभुक्त हुआ। कर्णाटमें ८ बल्लालोंने राज्य किया था। इसके बाद करीब १३५० ई०में सालेम जिला विजयनगरके राजवंशका करप्रद रहा। १५६५ ई०में विजयनगरके अधःपतनके बाद भी यह सम्पूर्णरूपसे विजयनगर राज्यमें आ गया था। पीछे विजयनगरके प्राचीन राजवंशधरोंके हाथ दक्षिण विजयनगर और यह प्रदेश सौंपा गया।

१७वीं सदीके प्रारम्भ कालमें सालेम जिला मदुरा-राज्यके शासनाधीन हुआ। उस समय १६२३ ई०में रावर्ट डि नोविलिस इस स्थानको देखने आये। इसके बाद की सदीमें हैदरअलीका अभ्युदय हुआ। उस समयसे यह स्थान ऐतिहासिक घटनासे परिपूर्ण है। अंगरेजोंने एक एक कर जब सालेम और कोयम्बतोर जिलेके हैदर अलीके सभी दुर्भेद्यदुर्ग दखल कर लिये, तब हैदरके साथ अंगरेजोंका घमसान युद्ध छिड़ा। इस युद्धमें हैदरने अङ्गरेजों-को परास्त कर अपने कुल खोये हुए दुर्ग ले लिये। अङ्गरेज गवर्मेण्टने कोई उपाय न देख १७६९ ई०में उनसे मेल कर लिया। हैदर अली देखो।

१७८० ई०में फिरसे दोनोंमें लड़ाई छिड़ी। यह लड़ाई १७८२ ई०में हैदरकी मृत्युके बाद भी चलती रही थी। १७८४ ई०में उनके लड़के टीपू सुलतानके साथ अंगरेजोंकी एक संधि हुई। उस सन्धि-शर्त्तका १७९० ई० तक दोनों ओरसे पालन हुआ। अन्तिम वर्ष टीपूने त्रिवाङ्कोड पर आक्रमण कर दक्षिणभारतमें पुनः अशान्ति मचा दी। इस सूत्रसे अंगरेजोंके साथ टीपूका फिर युद्ध आरंभ हुआ। अंगरेज सेनापति कर्नल फैलोने दलबल-के साथ अग्रसर हो बारहमहाल पर धावा बोल दिया। एक वर्षके बाद बारहमहाल अंगरेजोंके हाथ आया। यह ले कर टीपूके साथ अंगरेजोंके और कई युद्ध हुए थे। इस प्रकार कुछ समय युद्धविग्रहमें लिप्त रह कर टीपू संधि करनेके लिये बाध्य हुआ। १७९२ ई०में टीपूने अंगरेजोंके साथ जो संधि की, उसमें उसने अंगरेजोंके क्षतिपूरण-स्वरूप उन्हें वर्त्तमान होसुर तालुकको छोड़ सारा सालेम जिला अर्थात् तलघाट और बारहमहाल विभाग दिया। इसके बाद १७९९ ई०में दोनोंने सन्धिकी शर्त्त तोड़ दी और दोनों रणक्षेत्रमें उतर पड़े। युद्धमें टीपू पराजित और निहत हुआ। दाक्षिणात्यमें अंगरेजोंकी शक्ति प्रबल हो उठी। इस समय महिसुर राज्यके साथ जो विभाग ले कर संधि हुई, उसमें अंगरेजोंको बाला-घाट विभाग या होसुर तालुक मिला था।

सालेम जिला होसुर, कृष्णगिरि, तिरुपातुर, धर्मपुरी, उत्तङ्कराई, सालेम, शेवाराय शैल, आतुर, तिरुचेङ्गोड और नामकल इन दश तालुकोंमें विभक्त है। १७९९ ई०में अंगरेजोंके दखलमें आनेके बाद इस जिलेका और कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ। केवल १८०८ ई०में इस जिलेके अन्तर्गत कुछ जमींदारियां उत्तर अर्काट जिलेमें मिला दी गईं।

इस जिलेमें ११ शहर और ३७८२ ग्राम लगते हैं जनसंख्या २२ लाखके करीब है। सैकड़े पीछे ९६ हिन्दू हैं। तामिल यहांकी मातृभाषा है। सालेम जिलेका प्रधान नगर है। वानियम्बाडी, तिरुपातुर, सेन्दमङ्गलम्, कृष्ण गिरि, आतुर, रसिपुर, धर्मपुरी, अम्नापेट, तिरुचेङ्गोड, होसुर, नामकल, श्वयङ्करपेट्ट और पड़प्पड़ी नगर यहाके प्रधान वाणिज्यस्थान हैं। इस जिलेके अनेक स्थानोंमें प्राचीन राजाओंके कीर्त्तिसूचक शिव या विष्णुमन्दिर, शिलालिपि या प्रस्तरप्रतिमूर्त्ति दृष्टिगोचर होती हैं। विस्तार हो जानेके भयसे उनका परिचय यहा पर नहीं दिया गया।

वर्त्तमान कालमें सालेम, यारकुद, होसुर और अन्यान्य प्रधान प्रधान नगरोंमें पाठागार या साहित्यसमिति प्रतिष्ठित हुई है। ये समितियां स्थानवासीकी शिक्षाकी परिचायक हैं। 'धोपुरछत्तम् भंडार' यहांके जातीय जीवनका ज्वलन्त दृष्टान्त है। इस भंडारसे जिलेके अन्यान्य स्थानोंकी सरायोंका खर्च दिया जाता है और उससे कितने अनाहारी दीन दुःखियोंकी जीविका चलती है। सालेम, धोपुर, जोलारपेट, आतूर और तिरुपातुरका छत्र सर्वश्रेष्ठ है।

मदुरा, तंजोर या श्रीरङ्गमकी तरह इस जिलेमें कोई विशेष तीर्थक्षेत्र नहीं है, किन्तु बहुतसे तीर्थयात्री उत्तङ्कराई तालुकके तीर्थमलय नामक स्थानके प्रस्रवणमें और पेन्नार नदीतीर्थस्थ हनुमत्तीर्थम् नामक स्थानमें तथा होसुरके पागोडा (मन्दिर), कावेरी प्रपातके निकट अदीपर्दिनेत्तु ग्राममें स्नानोपलक्षमें आते हैं। इसके सिवा धर्मपुरी, मेचेरी, तिरुचेङ्गोड, नामकल और अन्यान्य देव-मन्दिरादिमें प्रति वर्ष उत्सव होता है। इस समय भिन्न भिन्न स्थान-के लोग देवदर्शनार्थ आते हैं और उसके साथ साथ मेला भी लगता है। मलयाली जातिका प्रधान तीर्थ सेवाराय शैल और उत्तङ्कराई उपविभागके हरुरके निकट-वर्त्ती चित्तेरीमलय शैल है।

वस्त्रवयन ही यहांका प्रधान ग्राम और नगरमें तांतियों-का वास है। सालेम और राजीपुरके तांती अच्छे कपड़े बुनते हैं। सालेम जेलखानेमें उत्कृष्ट और शिल्पनैपुण्य-पूर्ण चित्रादियुक्त गलीचे बनते हैं। वहां छुरी, कैंची भी तैयार होती है, पर उतनी अच्छी नहीं। चीनी, कपास, चर्म, नील, सोरा, सुपारी, नारियल, काफी, सूती कपड़ा और नाना प्रकारका वनजात द्रव्य ले कर ही यहाका प्रधान कारवार है।

रैलपथके सिवा यहा गिरिपथ हो कर भी नाना स्थानोंमें वाणिज्य चलता है। उन सब गिरिपथोंमेंसे चेङ्गमसंङ्कट हो कर शिङ्गारपेटसे इस पथसे दक्षिण

आर्कट जाया जाता है। मोरुर पट्टीघाट—सेवाराय और थोपुर शैलमालाके मध्य यह गिरिपथ अवस्थित है। थोपुर और मुकनूर घाट हो कर जिलेके दक्षिण और दक्षिण-पूर्वसे पण्य द्रव्य बैलगाडी द्वारा धर्मपुरी लाया रायकोट्टई हो कर कृष्णगिरिसे वालाघाट जाया जाता है। नदी और कोट्टइपट्टि गिरिपथ हो कर सालेम और आतुरसे उत्तङ्करई उपविभागके नाना स्थानोंमें देशी वणिक पण्यद्रव्य ले कर जाते आते हैं। अञ्चित्तैघाट नामक गिरिपथ हो कर कावेरी उपत्यकासे वालाघाटकी ओर आया जाता है। किन्तु पथ अत्यन्त दुर्गम होनेके कारण लोग उस पथसे नहीं जाते हैं।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पिछडा हुआ है। परन्तु लोगोंका ध्यान अभी कुछ कुछ आकृष्ट होता जा रहा है। अभी एक म्युनिसपल कालेज, ३० सिकेण्ड्री, ८१८ प्राइमरी और ३ ट्रेनिङ्ग तथा दूसरे दूसरे स्पेशल स्कूल हैं। स्कूल और कालेजके अतिरिक्त ११ अस्पताल और १५ चिकित्सालय है।

२ सालेम जिलेका एक उपविभाग। इसमें सालेम और आतुर तालुक लगते हैं।

३ उक्त जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० ११ २३´से ११´ ५६´ उ० तथा देशा० ७७´ ४४´से ७८´ २६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १०७१ वर्गमील और जनसंख्या ५ लाखके करीब है। इसमें २ शहर और ४१ ग्राम लगते हैं। इस तालुकमें लोहेकी खान तमाम पाई जाती है। काफी, चाय और नील यहांका प्रधान उत्पन्न द्रव्य है। मन्द्राज रैलवेकी दक्षिण-पश्चिम शाखा इस उपविभागके बीचसे चली गई है।

इस तालुकके अन्तर्गत अमरगोण्डी, कोविल वेल्लार, नङ्गपाल्ली, माल्लूर, पोट्टिपुरम्, ओलापाडी, तारमङ्गलम् और येलयम्पट्टी ग्राममें प्राचीन मन्दिर, शिलालिपि और ताम्रशासनादि पाये जाते हैं। तारमङ्गलके शिवमन्दिरमें १३ शिलाफलक देखे जाते हैं जिनमेंसे लङ्कापुरीके विजेता राजा श्रीवीर वसन्तरायके शासनकालके ३५ वर्षमें अर्थात् ६०८ ई०में उत्कीर्ण शिलाफलक ही विशेष उल्लेखनीय हैं। ऐतिहासिक तत्त्वानुसन्धित्सु प्रत्नतत्त्वविदोंकी यह आलोचना की सामग्री है।

४ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० ११´ ३१ उ० तथा देशा० ७८´ १०´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ७० हजारके करीब है। हिन्दूकी संख्या सैकडे पीछे ६० है। म्युनिसपलिटी रहनेसे नगर खूब साफ सुथरा है।

नगरकी क्रमशः उन्नति होती जा रही है। देशी अधिवासी नगरके जिस अंशमें रहते हैं, वह तिरुमणिमुतर नामक नदीसे दो भागोंमें विभक्त है। स्थानीय यूरोपीय अधिवासी हस्तम्पट्टी नामक उपकण्ठमें रहते हैं। नगरके उपकण्ठसे प्रायः ३॥० मील दूर सुरमङ्गलम् नामक स्थानमें रैलस्टेशन है। नगरके पूरब वणिक् और राजकर्मचारियोंका वास देखा जाता है। दक्षिणमें गुगाई नामक स्थानमें तांती लोग कपड़े बुनते और बेचते हैं। पश्चिम दिशामें प्राचीन दुर्गांश और शिवपेट नामक मेलास्थान है। यहां प्रति बृहस्पतिवारको हाट और मेला लगता है। गढके समीप राजकीय अट्टालिकायें हैं। महाल नामक अट्टालिकाशमे पहले स्थानीय सामन्त राज्यका प्रासाद विद्यमान था।

सालेम नगर वाणिज्यप्रधान है। यहांके सूती कपडेका ही अधिक कारबार चलता है। पहले यहां ज्वर और विसूचिकाका विशेष प्रकोप रहता था। म्युनिसपलिटी हो जानेसे नगरके स्वास्थ्यकी विशेष उन्नति हुई है।

यहां एक प्राचीन शिवमन्दिर है। यह शिवमंदिर एक तीर्थरूपमें गिना जाता है। उसके एक अंशमें बहुतसी शिलालिपियां देखी जाती हैं। गुगाई नामक नगरांशमें एक गुहा है। कहते हैं, कि पहले वहां एक योगी सन्यासी रहते थे। नदीके किनारे दो एक जैनमूर्त्ति देखी जाती है।

सालेम—मन्द्राजप्रदेशके दक्षिण आर्कट जिलान्तर्गत पलयकुर्चि तालुकका एक बडा ग्राम। यह अक्षा० ११´ ३८´ उ० तथा देशा० ७८´ ५५´ ३०´´ पू०के मध्य अवस्थित है।

सालेय (सं० पु०) मधुरिका, सौंफ।

साले गुग्गुल (हिं० पु०) गुग्गुलका गोंद या राल। गुग्गुल देखो।

सालोक्य (सं० क्ली०) सलोकस्य समानलोकस्य भावः

क्यम्। १ तुल्य लोकत्व, समानलोकता, एक लोकमें वास। २ पांच प्रकारकी मुक्तियोंमेंसे एक। इसमें मुक्तजीव भगवान्‌के साथ एक लोकमें वास करता है।

मुक्ति और सायुज्य देखो।

सालोहित (सं० क्लो०) आत्मीय। (दिव्या० १११।६)

साल्टरेञ्ज (लवणपर्वत)—पंजाब-प्रदेशके बन्नू, शाहपुर और झेलम जिलेमें विस्तृत एक पर्वतमाला। इस पर्वतके भीतरी स्तरमें प्रचुर सैन्धव लवण मिलता है, इसीसे अङ्गरेजी भूगोलमें इसका salte range नाम रखा गया है। यह अक्षा० ३२° ४१' से ३२° ५६' उ० तथा देशा० ७१° ४२' से ७३° पू०के मध्य विस्तृत है।

झेलम नदी तटसे तीन पर्वत-शाखाने मिल कर मध्यभागमें जो मूल पर्वतांश संगठित किया है, वही इस पर्वतका मूल पृष्ठ है। यह अंशचेल कहलाता है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ३७०१ फुट है। इसकी उत्तर-वाहिनी शाखा सुलतानपुरके पास नदी तटसे ही ऊंची हो कर झेलम नदीके साथ प्रायः २५ मील समानान्तर भावमें चली गई है, पीछे कुछ वक्र हो कर ४० मील जानेके बाद मूल पर्वतपृष्ठसे मिल गई है। यह पर्वतांश नीलिशैल कहलाता है। द्वितीय शाखाका नाम रोहतास पर्वत है। यह शैलखण्ड ऊपर कहे गये नीलि शैल और उक्त झेलम नदीके मध्यभागमें समानान्तर भावमें अवस्थित है। इस पर्वतके ऊपर इतिहास-विख्यात रोहतास-दुर्ग और टिल्लीका शैलावास प्रतिष्ठित है। समुद्रपृष्ठसे उक्त दोनों स्थान प्रायः ३२४० फुट ऊंचे हैं।

तीसरा पवित्र शैल झेलम नदीके दक्षिणी तटसे उत्तरोत्तर चला गया है। इसके बीचसे ही झेलम नदी बहती है। यह पर्वत समुद्रकी तहसे ५०१० फुट ऊंचा है।

उक्त दोनों श्रेणियोंके बीच तथा उनके मध्यस्थित कुछ गिरिशिखरके मध्यभागमें एक विस्तीर्ण अधित्यका भूमि दृष्टिगोचर होती है। वह भूमि बहुत उर्वरा तथा नाना प्रकारके पार्थिव सौन्दर्यसे परिपूर्ण है। इस स्थानके ठीक मध्यस्थलमें 'कल्लार-कहार' नामक एक बहुत बड़ा हद है। उसका प्राकृतिक सौन्दर्य देखने लायक है। इस हदसे जो सब पहाड़ी सोते अधित्यकाभूमि होते हुए समतल मैदानसे चले गये हैं उनमेंसे प्रत्येक भूगर्भस्थ सैन्धव लवणास्वादयुक्त जलराशि पूर्ण है।

पिण्डदादन खाके उत्तर-पूरब खेवरा ग्रामको 'Mayo Mines' नामक खान, शाहपुरके वर्छा नामक स्थानकी खान और बन्नू जिलेके कालाबाग नामक स्थानकी खानसे लवण अधिक परिमाणमें निकाला जाता है। मेयो-खानसे लवण लानेको सुविधाके लिये पिण्डदादन खाके पास झेलम नदीमें एक पुल बनाया गया है।

कालाबागमें डलिटिक स्तरमें तथा जलालपुर और पिण्डदादन खाँके टर्सीयारी स्तरमें कोयला मिलता है। प्रथमोक्त स्थानका कोयला सिन्धुनदमें जानेवाले स्टीमरोंके काममें आता है। ऊपर कहे गये खनिज पदार्थको छोड़ यहां और भी नाना प्रकारके खनिज पदार्थ पाये जाते हैं।

साल्टवाटर-लेक—कलकत्तेसे ५ मील पूर्वमें अवस्थित एक विस्तृत जलाभूमि। यह लवण-जलसे पूर्ण और अक्षा० २२° २८' से २२° ३६' उ० तथा देशा० ८८° २३' से ८८° २८' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३० वर्गमील है। इस हृदसे कलकत्तेकी वेलियाघाटा नहर हो कर विद्याधरी होते हुए सुन्दरवनके मध्यसे दूसरी जगह जाया जाता है।

सालमली (सं० पु०) शाल्मली देखो।

साल्व (सं० पु०) १ विष्णुध्वजराजविशेष। महाभारतके कर्णपर्वमें लिखा है, कि ये भौमदेशके अधिपति थे। (लि०) २ तद्देश-सम्बन्धी, उस देशका। शाल्व देखो।

साल्वहन् (सं० पु०) विष्णु।

साल्विक (सं० पु०) पक्षिविशेष।

साल्ह (सं० पु०) आचार्यभेद। (तारनाथ)

साल्हण (अ० लि०) साल्हणिपक्षीय।

साल्हणि (सं० पु०) सह्लणका गोत्रापत्य।

सावँकरन (हिं० पु०) श्यामकर्ण घोड़ा, जिसके सब अङ्ग श्वेत, पर कान काले होते हैं।

सावंत (हिं० पु०) १ वह भूस्वामी या राजा जो किसी बड़ेके अधीन हो और उसे कर देता हो, करद राजा। २ योद्धा, वीर। ३ अधिनायक। ४ उत्तम प्रजा।

साव (सं० पु०) सोमाभिषव। (ऋक् १०।४६।७)

साव (हिं० पु०) १ बालक, पुत्र। २ साहु देखो।

सावक (सं० पु०) शिशु, बच्चा। शावक देखो।

सावकाश (सं० क्ली०) १ अवकाश, फुर्सत, छुट्टी। ३ मौका, अवसर। (क्रि० वि०) ४ सुभीतेसे, फुर्सतसे।

सावगी (हिं० पु०) सरावगी देखो।

सावग्रह (सं० त्रि०) अवग्रहयुक्त अवग्रहविशिष्ट।

सावचेती (हिं० स्त्री०) सतर्कता, सावधानी।

सावज्ञ (सं० त्रि०) अवज्ञया सह वर्त्तमानः। अवज्ञाके साथ वर्त्तमान, अवज्ञायुक्त, अवज्ञाविशिष्ट।

सावडा—१ बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलान्तर्गत एक उपविभाग। भूपरिमाण ५५३ वर्गमील है। इसमें ४ नगर और १७८ ग्राम लगते हैं। यह उपविभाग खान्देश जिलेके उत्तरपूर्वमें अवस्थित है तथा यावल और रावेरी विभाग इसके अन्तर्भुक्त है। सारा उपविभाग समतल मैदान और जंगलसे परिपूर्ण है। नदी नाला काफी नहीं है, जो सामान्य जल है उससे खेतीबारीका काम ठिकानेसे चलता है। तापी और सुकि नदीतटवासीको काफी जल मिलता है। उत्तरमें सतपुराशैलमाला प्राचीनकी तरह खड़ी है। चैत्रसे ज्येष्ठ मास तक यहां खूब गरमी पड़ती है। फिर भी यहांकी आबहवा अच्छी है।

२ उक्त उपविभागका प्रधान नगर और विचारसदर। यह अक्षा० २१° ८′ ३०″ उ० तथा देशा० ७५° ५६′ पू०के मध्य विस्तृत है। यहां ग्रेट-इण्डियन पेलिनसुला रेलवेका एक स्टेशन है। १७६३ ई०में निजामने उसका स्वत्व परित्याग कर पेशवाको यह नगर प्रदान किया। सरदार रास्तेकी कन्याके विवाहके बाद पेशवाने यह सम्पत्ति रास्तेको दे दी। १८५२ ई०में राजस्व स्थिर करनेके लिये जब यहां पैमाइशी शुरू हुई, तब प्रायः १५ हजार आदमी बागी हो गये। आखिर गवर्मेण्टके आदेशसे उन लोगोंका दमन करनेके लिये एक दल सेना भेजी गई। वे लोग ५६ विद्रोही दलपतिको पकड़ ले गये। म्युनिसपलिटी स्थापित होनेके बाद इस नगरकी यथेष्ट श्रीवृद्धि हुई है। रुई, चना, तीसी और गेहूं यहांका प्रधान वाणिज्य पण्य है। प्रति सप्ताह यहां हाट लगती है। इस हाटमें निमार और रेवासे गाय आदि पशु अधिक संख्यामें बिकनेको आते हैं।

सावणिक (हिं० पु०) सावण मासका, सावनका।

सावद्य (सं० त्रि०) अवद्येन सह वर्त्तमानः। १ निन्दायुक्त, निन्दनीय। (पु०) २ तीन प्रकारकी योग शक्तियोंमेंसे एक शक्ति जो योगियोंको प्राप्त होती है। अन्य दो शक्तियोंके नाम निरवद्य और सूक्ष्म हैं।

सावधान (सं० त्रि०) अवधानेन सह वर्त्तमानः। सचेत, सतर्क, होशियार।

सावधानता (सं० स्त्री०) सावधान होनेका भाव, सतर्कता, होशियारी, खबरदारी।

सावधारण (सं० त्रि०) अवधारणेन सह वर्त्तमानः। निश्चययुक्त, निश्चयविशिष्ट।

सावधि (सं० त्रि०) अवधियुक्त, अवधिविशिष्ट।

सावन (सं० पु०) मुनिविशेष। (उणादि० ३३।१६६)

सावन (सं० पु०) सवनस्यायमिति अण्। १ यज्ञकर्मान्त। यज्ञकर्मके शेषको सावन कहते हैं। २ यजमान। ३ वरुण। ४ दिवस विशेष, सावन दिन, एक दिन रातमें सावन दिन होता है।

एक तिथिके परिमाणानुसार जो दिन होता है, उसे चान्द्रदिन और एक अहोरात्र द्वारा जो दिन होता है, उसे सावन दिन कहते हैं अर्थात् तिथिघटित दिनका नाम चान्द्र दिन और एक अहोरात्रात्मक कालका नाम सावन दिन है। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है, कि अद्य सूर्योदयसे आगामी कल्य सूर्योदय तक यह ६० दण्डात्मक दिवारात्रिरूप जो काल है, वही सावन दिन है। इस दिनका स्थूल परिमाण रवि जिस लग्नमें उदय होते हैं, उस लग्नमानके तीसवें भागके साथ नक्षत्र ६० दण्ड होता है, किन्तु सूर्यको कभी मन्द और कभी शीघ्र गति द्वारा राशिचक्रके वक्रतायुक्त इस सावनदिनकी ह्रासवृद्धि होती है अतएव इस सावन दिनके प्रति दिनमें ही परिमाणको कुछ भिन्नता होती है। साम्वत्सरिक सावन दिनोंको समान कर विभक्त करनेसे नाक्षत्रमाससे कुछ अधिक ६० दण्डका जो एक एक दिन होता है, उसे मध्यम सावन दिन कहते हैं। सौर वत्सरमें नाक्षत्र दिनकी अपेक्षा सावन एक न्यून होता है, अतएव इस परिमाणमें नाक्षत्र और इस मध्यम सावन कालकी कमोवेशी होती है।

सावन ३० दिनका एक सावन मास और सावन १२

मासका सावन एक वर्ष होता है। जिसी दिनसे ले कर ३० दिन पर्य्यन्त एक सावन मास होता है अर्थात् एक मासके ४थेसे परवर्त्ती मासके ३रे तक जो तीस दीनका समय है, वही एक सावन मास है। इस सावन बारह महीनोंका एक सावन वर्ष होता है।

"चान्द्रः शुक्लादिदर्शान्तः सावनस्त्रिंशता दिनैः।
एकराशौ रविर्यावत् कालं मासः सभास्करः।"
(मलमासतत्त्व)

सावन वर्षमें सौर वर्षकी अपेक्षा ५ दिन १५ दण्ड ३१ विपल और २४ अनुपल कम होता है, यह सावनदिन भी नाक्षत्र अहोरात्रिकी तरह दण्ड, पल, विपल और अनुपलमें विभक्त होता है। अतएव सौर वत्सरमें सावन ३६५ दिन १५ दण्ड ३१ पल ३१ विपल और २४ अनुपल होता है। सावन मासके अनुसार ही संस्कारादि कार्य्य होते हैं।

अशौच भी इस सावन मासके अनुसार ग्रहण करना होता है। इसमें सौर या चान्द्रमासका ग्रहण नहीं होगा, एक मास अशौच होगा, इससे यही समझा जायगा, कि जिस दिनसे अशौच आरम्भ हुआ है, उस दिनसे तीस अहोरात्र ही अशौच काल है। यज्ञ आदि कर्म—यज्ञ, भृति, वृद्धिश्राद्ध, प्रायश्चित्त, आयुर्दाय, अशौच, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, नामकरण, अन्नप्राशन, निष्क्रामण और चूड़ाकरण ये सब कार्य्य सावन मासानुसार ही होते हैं।

शास्त्रमें लिखा है, कि जात बालकका ६ठे या ८ वें मासमें अन्नप्राशन होगा। अतएव यहां ६ मास कहनेसे यही समझना होगा, कि जिस दिन जन्म हुआ है, उस दिनसे १५० दिन या १८० दिनके मध्य अन्नप्राशन होगा। सावन मासको जगह इसी नियमके अनुसार सभी मानना होगा।

सावन वर्षकी अपेक्षा सौर वर्ष जो ५ दिन १५।३१। ३१।२४ कम होता है, वह सूक्ष्म है। किन्तु स्थूल भावमें माननेसे ६ दिन अधिक लेना होता है।

सावनमल्ल—मूलतानके एक शासनकर्त्ता। इन्होंने १८३२ ई०में महाराज रणजित्सिंहसे देरागाजी खां बन्दोबस्त कर लिया। १८२९ से १८४० ई० तक इन्होंने मूलतान का शासन किया। मूलतान देखो।

सावन्त—उड़ीसाके अन्तर्गत केवंझर-राज्यवासी एक जाति। उत्कलीय भाषामें ये सावत् कहलाते हैं।

सावन्तवाड़ी—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत एक देशी सामन्त-राज्य। यह अक्षा० १५° ३८´से १६° १४´ उ० तथा देशा० ७३° ३७´ से ७४° २३´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ६२५ वर्गमील है। इस राज्यके उत्तरपश्चिम अंग रेजाधिकृत रत्नगिरि जिला, पूर्वमें सह्याद्रि शैलमाला और दक्षिण पुर्त्तगीजोंका अधिकृत गोयाराज्य है। इस राज्यका प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोरम है। समुद्रोपकूलसे सह्याद्रिपादमूल पर्य्यन्त २० से २५ मील विस्तृत भूमिभाग वनमालासमाच्छादित शैलश्रेणीसे पूर्ण है। मध्यकी उपत्यका सुरम्य उपवन और नारियल तथा सुपारीके उद्यानसे शोभा दे रही है। यहां कार्ली और तेरेखोल नामकी तेज धारवाली दो छोटी नदी बहती है। नदीका मुहाना बहुत विस्तृत है, देखनेसे समुद्रकी खाड़ी सा मालूम होता है। मुहानेसे तेरेखोल नदीमें १५ मील और कार्ली नदीमें १४ मील तक छोटी छोटी नावें जाती हैं।

सह्याद्रि सन्निहित वनभागमें सेगुन, आबलूस, खैर और जामुनके पेड़ देखे जाते हैं। समुद्रके किनारे कटहल, आम और मेरंडाके पेड़ बहुतायतसे उत्पन्न होते हैं। मेरंडाके फलसे कोकम् नामक एक प्रकारका तेल निकाला जाता है। खाद्योपयोगी नाना प्रकारके फल तथा धान्य और उड़द आदि फसल इस राज्यमें काफी तौर पर पैदा होती है। तिल, पटसन, गांजा, मिर्च, लाल मिर्च और काफी आदिकी भी खेती होती है।

सह्याद्रिशैलके रामघाट नामक स्थानके सन्निहित प्रदेशमें खनिज लोहा पाया जाता है। गृहादिनिर्माणोपयोगी आकेरो और लेटाराइट पत्थरका अभाव नहीं है। सह्याद्रिके वनभागमें बाघ, चिता, बाइसन, भैंस और साम्भर आदि हरिण देखनेमें आते हैं।

यहां पहले नमक तैयार होता था, अभी राजाके हुकुमसे वह बंद कर दिया गया है। चमड़े और कपड़ेके ऊपर सुनहले और रुपहले सलमेके पंखे, पेटारी और बकस, सोनेके तारसे बाहरी काम किया हुआ पानपात, तास, भैंसके सींगके बने हुए नाना प्रकारकी गृहसज्जा,

लाहके खिलौने और मिट्टीकी पुतली आदि शिल्पव्यवसाय ही यहांके अधिवासियोंको एकमात्र उपजीविका है।

प्राचीन शिलालिपिसे जाना जाता है, कि ६ठीसे ८वीं सदी तक यहां चालुक्यराजवंशका अधिकार विस्तृत था। १०वीं सदीमें यादवोंने यहां शासनदण्ड फैलाया था। १३वीं सदीमें (१२६१ ई०) चालुक्यगण पुनः यह प्रदेश अधिकार कर राज्यशासन करने लगे। १४वीं सदीमें करीब १३९१ ई०में विजयनगर राजवंशके एक कर्मचारी यहांके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए। १५वीं सदीके मध्यभागमें यहां एक स्वतन्त्र ब्राह्मण-राजवंशको प्रतिष्ठा हुई। वह राजवंश कुछ दिन स्वाधीन भावमें राज्य करनेके बाद उक्त शताब्दीके शेष भागमें बिजापुर-राजवंशके हाथसे पराजित हुए तथा बिजापुर राजगण स्वयं इस प्रदेश का शासन करने लगे। करीब १५५४ ई०में मङ्गसावन्त नामक भोंसले वशीय एक महाराष्ट्रनेताने बिजापुर राजवंशके विरुद्ध अस्त्रधारण कर वाडिनगरसे नौ मील दूर होडुकरा नामक स्थानमें स्वाधीनता-पताका फहराई। बिजापुरराजने इस उद्धत महाराष्ट्रयुवकको उचित दण्ड देनेके लिये सेना भेजो, पर वह मराठाके हाथसे हार खा कर भागी। मङ्गने अपने जीवित काल तक स्वाधीन भावसे ही इस प्रदेशका शासन किया था। उनकी मृत्युके बाद उनके वंशधरोंने फिरसे बिजापुरराजकी अधीनता स्वीकार की।

आखिर खेम सावन्त भोंसलेने मुसलमानोंके हाथसे यह प्रदेश स्वाधीन कर लिया। खेम सावन्तने १६२७ से १६४० ई० तक राज्य किया था। पीछे उनके लड़के सोम सावन्त सिंहासन पर बैठे। केवल अठारह महीने राज्य करनेके बाद उनके भाई लक्ष्मण सावन्तने राज्यलाभ किया। १६५० ई०में छत्रपति शिवाजीकी तूती जब महाराष्ट्रदेशमें बोलने लगी, तब लक्ष्मणने शिवाजीकी अधीनता स्वीकार कर ली और सारे दक्षिण कोङ्कणका 'सरदेशाई' पद प्राप्त किया। १६६५ ई०में उनका देहान्त हुआ। पीछे उनके भाई फोन्द सावन्त सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। उन्होंने दश वर्ष राज्य किया था। बादमें उनके लड़के द्वितीय खेम सावन्त इस देशके राजा हुए थे। शिवाजीके पौत्र साहुके समसामयिक थे। साहुने कोलापुरके शासनकर्त्ताके साथ समान भागमें सालसी महलका आधा राजस्व इन्हें देनेका प्रबन्ध कर दिया। २य खेमके वंशधरके शासनकालमें (१७०१-१७३७) सावन्तवाड़ी राज्य पहले पहल अंगरेजोंकी देखभालमें आया।

१७५५से १८०३ ई० तक महाखेम सावन्तने सावन्तवाड़ीमें राज्य किया। १७६३ ई०में जयाजी सिन्धियाकी कन्यासे उनका विवाह हुआ था। इस कारण दिल्लीके सम्राट्की ओरसे उन्हें राय बहादुरकी उपाधि मिली थी। खेम सावन्तका राजसम्मान देख कर कोलापुरके शासनकर्त्ता जलने लगे और उन्होंने सावन्तवाड़ीके कुछ पहाड़ी दुर्गोंको दखल कर लिया, किन्तु सिन्धियाकी सहायतासे वे सब दुर्ग पुनः खेम सावन्तके हाथ आये। वे केवल स्थलयुद्धसे संतुष्ट नहीं होते थे, इस कारण आखिर जलदस्युका कार्य करनेमें भी प्रवृत्त हो गये थे। उनका समूचा राज्यकाल कोल्हापुरके शासनकर्त्ताके साथ तथा पेशवा, पुर्तगीज और अंगरेजोंके साथ लड़ाई आदि करनेमें बीता था। खेम सावन्तको १८०३में मृत्यु हुई। उनके कोई न था, इस कारण राजसिंहासन ले कर राज्यमें बड़ी गड़बड़ी मच गई। इसके बाद १८०५ ई०में खेम सावन्तकी विधवा पत्नी लक्ष्मीबाईने रामचन्द्र सावन्त उर्फ भाऊसाहबको गोद लिया जिससे कुल गोलमाल जाता रहा। किन्तु तीन वर्ष बाद शत्रुओंने इस बालकका गला घोंट कर काम तमाम किया, पीछे फोन्द सावन्त नामक एक नाबालिग उसकी जगह पर निर्वाचित हुआ। इस अराजकताके समय जलदस्यु द्वारा सभी बन्दर धीरे धीरे उत्पीड़ित हो गये थे। इससे अंगरेजोंके वाणिज्य व्यवसायमें करारा धक्का पहुंचा। १८१२ ई०में फोन्द सावन्तने अङ्गरेजोंके साथ संधि कर ली। इस सन्धिके अनुसार वे अंगरेजोंको वेनगुर्ला बन्दर देने तथा युद्धके जहाज उनके हाथ सौंपनेके लिये बाध्य हुए। इस संधिके कुछ समय बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। पीछे उनका आठ वर्षका लड़का सिंहासन पर बैठाया गया। बालिग हो कर भी वह राज्यशासन सुचारुरूपसे कर न सका। लगातार विद्रोह और अशान्ति उपस्थित होनेसे १८३८ ई०में उन्होंने अंगरेजोंके हाथ इस राज्यका शासनभार सौंप दिया। उसके बाद भी १८३९ और १८४४ ई०में दो बार वहां

विद्रोहवह्नि धधक उठी थी, किन्तु शीघ्र ही वह बुझ गई, तभीसे राज्यमें शान्ति विराजती है।

अभी सावन्तवाडीके सरदेशाई अङ्गरेजोंकी सलाहसे राज्यशासन करते हैं। सरकारकी ओरसे इन्हें नौ सलामी तोपें मिलती हैं। राज्यकी वार्षिक आय करीब पांच लाख रुपया है। राजाके अधीन ४३६ सैन्य ले कर एक छोटा सैन्यविभाग है। यह सैन्यविभाग सावन्तवाडी लोकल कोर या सामन्तवाडीका स्थानीय सैन्य-विभाग कहलाता है।

राज्यकी जनसंख्या २ लाखसे ऊपर है। इसमें १ शहर और २२ ग्राम लगते हैं। हिन्दूकी संख्या सैकडे पीछे ६४ है। राज्यमें एक कारागार, १५५ स्कूल, १ अस-पताल, ३ चिकित्सालय और १ कुष्ठाश्रम है।

सावयव (सं० त्रि०) अवयवेन सह वर्त्तमानः। अवयव-युक्त, साङ्गरूपकालङ्कार।

सावयस् (सं० पु०) सवयसका अपत्य, अपाढ।

सावर (सं० पु०) १ लोध्र, लोध। २ पाप, अपराध, गुनाह। (विश्व) (क्ली०) ३ मृगविशेषका मांस। इस मांसका गुण—स्निग्ध, शीतल, गुरु, रस और पाकमें मधुर, श्लेष्मवर्द्धक तथा रक्तपित्तनाशक। (भावप्र०)

सावर (त्रि० पु०) १ शिव कृत एक तन्त्रका नाम। इनके सम्बन्धमें इस प्रकारकी कथा है—एक बार जब शिव-पार्वती किरात देशमें वनमें विचरण कर रहे थे, तब पार्वतीजीने प्रश्न किया, कि प्रभो! आपने सम्पूर्ण मन्त्र कील दिये हैं, पर अब कलिकाल है, इस समयके जीवोंका उपकार कैसे होगा। तब शिवजीने उसी वेशमें नये मन्त्रोंकी रचना की जो शावर या सावर कहाते हैं। इन मन्त्रोंके जपने या सिद्ध करनेकी आवश्यता नहीं, ये स्वयं सिद्ध हैं। न इसके कुछ अर्थ ही हैं। २ एक प्रकारका लोहेका लंबा औजार जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेखकी तरह होता है। इस पर खुरपा रख कर हथौडेसे पोटा जाता है जिससे खुरपा पतला और तेज हो जाता है। ३ एक प्रकारका हिरन।

सावरक (सं० पु०) सावर स्वार्थे कन्। सावर-लोध्र, सफेद लोध।

सावरणी (सं० स्त्री०) वह बुहारी जो जैनयति अपने साथ लिये रहते हैं।

सावररोध्र (सं० पु०) सफेद लोध। (सुश्रुत)

सावरिका (सं० स्त्री०) निर्विष जलौका, बिना जहर वाली जोंक।

सावरोह (सं० त्रि०) अवरोहेण सह वर्त्तमानः। अवरोह-युक्त।

सावर्ण (सं० पु०, सवर्णएव स्वार्थे अण्, सवर्णायाः छायाया अपत्यमिति वा अण्। १ अष्टम मनु, सावर्णि मनु। सूर्यकी पत्नीका नाम संज्ञा था। संज्ञा सूर्यका तेज सहन नहीं कर सकती थी, इस कारण वह अपनी सवर्णा छाया बना कर और उसे सूर्यके पास रख कर पितृभवनको चली गई। इस छायाके गर्भसे सावर्ण मनुकी उत्पत्ति हुई। संज्ञाकी सवर्णा छायाका पुत्र होनेके कारण इनका नाम सावर्ण हुआ। छायाके गर्भसे एक कन्या भी उत्पन्न हुई थी। सावर्ण मनु मनुओंके समान गुणवान् थे। जिस समय बलि इन्द्र होंगे, उसी समय ये सावर्णि मनु होंगे। इस मन्वन्तर कालमें राम, व्यास, गालव, दीप्तिमान्, कृप, ऋष्यश्रृङ्ग और द्रौणि ये सात सप्तर्षि तथा सुतपा, अमिताभ और मुख्य ये देवता होंगे। इन देवताओंमें ६० गण निर्दिष्ट हुए हैं, जिनमें तपस, तप, शक्र, द्युति, ज्योति, प्रभाकर, प्रभाव, दयित, धर्म, तेज, रश्मि, चक्रतु इत्यादि २० सुतपा देवगण कहलाते हैं। प्रभु विभु, विभासादि २० अमिताभ देवगण तथा दम, दान्त, रित आदि २० मुख्य-गण हैं। ये सब देवगण मन्वन्तराधिपति हैं और प्रजापति मारीचके पुत्र हैं। विरोचनके पुत्र बलि इनके भविष्य इन्द्र होंगे। विरजा, चार्वावीर, निर्मोह, सत्य-वाक्, कृति और विष्णु आदि सावर्ण मनुके पुत्र हैं।

सूर्यके पुत्र सावर्ण स्वारोचिष मन्वन्तरमें सुरथ नामके राजा थे। वे प्रजाका पुत्रके समान लालन पालन करते थे। सुरथ देखो। जब उनका देहावसान हुआ, तब वे सूर्यसे छायासंज्ञाके गर्भसे जन्म ले कर सावर्णि मनु कहलाये। यही मनु वैवस्वत सावर्ण हैं। इसके सिवा दक्ष सावर्ण, धर्मपुत्र सावर्ण और रुद्रपुत्र सावर्ण मनु हैं। इन सब सावर्ण मनुके विषयमें लिखा है,

कि दक्षपुत्र सावर्णमनुके मन्वंतरमें मरीचि,भर्ग और सुधर्मा ये सब देवगण,(ये गण बारह भागोंमें विभक्त हैं) महा बलिष्ठ सहस्रलोचन इन देवताओंके इन्द्र हैं। मेधातिथि, वसु, सत्य, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, सवल, हव्यवाहन, ये सात सप्तर्षि; धृष्टकेतु, वर्णकेतु, पञ्चहस्त, निरामय, पृथुश्रवा, अर्चिष्मान्, भूरिद्युम्न, वृहद्भय ये सब मनुपुत्र हैं।

धर्मपुत्र सावर्ण मनुके मन्वन्तरमें विहङ्गम, कामग और निर्माणपति ये तीन देवगण हैं। प्रत्येक देवगण तीस गणोंमें विभक्त हैं। उनमें मास, ऋतु और दिवस हैं निर्माणपति, रात्रि, विहङ्ग और मौहूर्त्त काम गण तथा विक्रमवृष इनके इन्द्र हैं। हविष्मान्, वरिष्ठ, ऋष्टि, आरुणि, निश्चर, विष्टि और अग्निदेव ये सात सप्तर्षि; सर्वग, सुशर्मा, देवानीक, पुरूद्वह, हेमधन्वा और दृढ़ायु ये सब मनुपुत्र हैं। इनके बाद रुद्रसावर्ण मनु हैं, इस मन्वन्तरमें सुधर्मा, सुमना, हरित, रोहित और सुवर्ण ये पांच देवगण हैं, ये सब गण दश भागोंमें विभक्त हैं। ऋतनामा इन देवताओंके इन्द्र, द्युति, तपस्वी, सुतपा, तपोमूर्त्ति, तपोरति और तपोधृति ये सात सप्तर्षि देववान्, उपदेव, देवश्रेष्ठ, विदूरथ, मित्रवान् और मित्र वृन्द ये सब मनुके पुत्र हैं। इसी प्रकार मनु और मन्वन्तर होते हैं। (मार्कण्डेयपु० ८०-६४ अ०) देवीभागवतके दशम स्कन्धके १० अध्यायमें इस सावर्ण मनुका विस्तृत विवरण लिखा है और यह भी लिखा है, कि वैवस्वत मन्वन्तरीय राजा सुरथ भगवती दुर्गतिहारिणी दुर्गाकी मृण्मयी मूर्त्तिकी पूजा करके अष्टम सावर्ण मनु हुए थे। (देवीभाग १०।१० १३ अ०)

(त्रि०) २ सवर्ण सम्बन्धीय, समान वर्णका।

सावर्णक (सं० पु०) सावर्ण स्वार्थे कन्। सावर्ण मनु।

सावर्णलक्ष्य (सं० क्ली०) सवर्णस्य समानवर्णस्य पूर्वाकृतेरिनि यावत् लक्ष्यं यस्मात्। चर्म, चमड़ा।

सावर्णि (सं०पु०) सवर्णाया अपत्य मिति इञ्। १ आठवें मनु जो सूर्य्यके पुत्र थे। सावर्ण देखो। २ एक मन्वन्तरका नाम। ३ गोत्र, सावर्णगोत्र। इस गोत्रके पांच प्रवर हैं,—और्व्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।

सावर्णिक (सं० त्रि०) सावर्ण मनुसम्बन्धी, सावर्ण मनुका अन्तर काल, जितने दिनों तक सावर्ण मनुका आधिपत्य है, उतने दिन सावर्णिक मन्वन्तर है।

सावर्ण्य (सं० त्रि०) सवर्णाया अपत्यं सवर्ण-ष्यञ्। १ सावर्ण मनु। २ सावर्ण मन्वन्तर।

सावशेष (सं० त्रि०) अवशेषेण सह वर्त्तमानः। अवशेषयुक्त। (मार्कण्डेयपु० ६।२।२६)

सावष्टम्भ (सं० पु०) १ वह मकान जिसके उत्तर-दक्षिण दिशामें सड़क हो। ऐसा मकान बहुत शुभ माना गया है। (त्रि०) २ दृढ़, मजबूत। ३ स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर।

सावां (हिं० पु०) सांवा देखो।

साविक (सं० त्रि०) आविकयुक्त।

सावित्र (सं० पु०) सविता देवता अस्येति अण्। १ ब्राह्मण। ब्राह्मण भगवान् सूर्य्यकी उपासना करते हैं, इसलिये इनका सावित्र नाम हुआ है। २ शङ्कर। ३ वसु। (मेदिनी) सवितृ-स्वार्थे अण्। ४ सूर्य। ५ गर्भ। सवितुरपत्यं पुमान् अण्। ६ कर्ण। (भारत १।२३७।८) ७ सूर्यके पुत्र। ८ एक प्रकारका अस्त्र। (क्ली०) ६ यज्ञोपवीत। १० उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत। (त्रि०) ११ सूर्यवंशीय। १२ सवितृसम्बन्धी।

सावित्री (सं० स्त्री०) सवितृ-अण्, सावित्र-ङीष्। १ गायत्री, वेदमाता गायत्री। इसकी नामनिरुक्ति इस प्रकार लिखी है—

जो सर्वलोक प्रसव करती है, उनका नाम सविता है अर्थात् जिनसे सर्वलोककी सृष्टि हुई है, वे ही सविता हैं। यह सविता जिनकी देवी हैं, वे ही सावित्री हैं अथवा जिन्होंने निखिलवेद प्रसव किया है, वे ही सावित्री हैं। ब्रह्माकी स्त्रीका नाम सावित्री है। सूर्यकी पृश्नि नामक पत्नीसे इनका जन्म हुआ था।

मत्स्यपुराणमें लिखा है, कि वे अपनी देहको दो भागोंमें विभक्त कर एक भागमें पुरुष और एक भागमें नारी हुए। यह नारी ही सावित्री हैं। यह देवी सरस्वती, गायत्री और ब्रह्माणी भी कहलाती हैं।

(मत्स्यपु० ३।३०-३२)

यह सावित्री देवी ही द्विजातियोंकी एकमात्र उपास्या हैं। इस सावित्रीकी उपासना द्वारा ही ब्राह्मण निःश्रेयस लाभ करते हैं। पद्मपुराण-सृष्टिखण्डके १७ वें अध्यायमें

सावित्रीका सहस्रनाम कीर्त्तित हुआ है। सावित्रीकी उपासना कर जो द्विज यह सहस्रनाम पाठ या श्रवण करते हैं, वे सभी पापोंसे विमुक्त हो ब्रह्मलोकमें वास करते हैं। (मत्स्यपु० सृष्टिख० १७ अ०)

२ उपनयनकर्म, उपनयन संस्कार। ब्राह्मणका १६ वर्ष, क्षत्रियका २२ वर्ष और वैश्यका २४ वर्ष तक उपनयन-संस्कारकाल है। इसके बाद करनेसे प्रत्यवाय होता है। उपनयनकालमें सावित्रीकी दीक्षा होती है, इस कारण उक्त संस्कार भी सावित्री कहलाता है। उक्त कालमें यदि तीनों वर्ण सावित्री दीक्षित न हों, तो उन्हें व्रात्य कहते हैं। पीछे सावित्री ग्रहण करनेमें यथा विधान व्रात्यप्रायश्चित्त करके उनकी सावित्री दीक्षा होगी। उपनयन और यज्ञोपवीत देखो।

सावित्री—मद्रदेशके अधिपति अश्वपतिकी कन्या, सत्यवान्‌की स्त्री, भारतकी आदर्शसती रमणी। सावित्री मन्त्रसे आहुति देने पर सावित्रीने प्रीतिपूर्वक यह कन्या अर्पण की थी, इसीसे अश्वपतिने उनका 'सावित्री' नाम रखा था।

महाभारतमें लिखा है,—'मद्रदेशमें परम धर्मनिष्ठ, जितेन्द्रिय, पौरजनसे प्रियपाल अश्वपति नामक एक राजा रहते थे। राजाको कोई सन्तान न थी, इस कारण बुढ़ापेमें वे बड़ी चिन्ता करते थे। अनन्तर उन्होंने सन्तानकी कामनासे नियमिताहारी ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय हो कर कठोर नियमका अवलम्बन किया। वे सावित्री मन्त्रसे प्रति दिन लाख बार आहुति दे कर दिनके छठे भागमें परिमित भोजन करते थे। इस प्रकार १८ वर्ष बीत गये। पीछे सावित्री उन पर प्रसन्न हुईं और मूर्त्तिमती हो कर उन्होंने नरपतिको दर्शन दिये।

सावित्रीने कहा "हे राजन्! मैं तुम पर प्रसन्न हूं, अतएव जो इच्छा हो मांगो।" अश्वपतिने बड़ विनीतभावसे सावित्री देवीसे कहा, 'मैंने सन्तानके लिये यह व्रत अवलम्बन किया है, अतएव मुझे यही वर दीजिये जिससे मुझे अनेक पुत्र हों।' देवीने जवाब दिया, 'ब्रह्माके प्रसादसे शीघ्र ही तुम्हें एक तेजस्विनी कन्या होगी।' सावित्रीके वचन पर प्रसन्न हो अश्वपतिने फिरसे उनकी वन्दना की, पीछे वे अन्तर्द्धान हो गईं।

कुछ समय बीत जाने पर अश्वपतिकी बड़ी रानी मालवीके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई। सावित्रीमन्त्रमें आहुति दी गई थी और उसीसे इस कन्याका जन्म हुआ है, यह सोच कर अश्वपतिने उसका नाम सावित्री रखा। सावित्री साक्षात् मूर्त्तिमती हो लक्ष्मीकी तरह बढ़ने लगी। कालक्रमसे उसने युवावस्थामें कदम बढ़ाया।

सावित्रीके साथ राजा द्युमत्सेनके पुत्र सत्यवान्‌का विवाह हुआ। विवाहके संवत्सर बाद सत्यवान्‌की मृत्यु हुई। यम सत्यवान्‌की सूक्ष्मदेह ले जानेके लिये जब मृतदेहके पास आये, तब सावित्रीने उन्हें प्रसन्न कर मृत पतिको प्राण-भिक्षा मांगी। सतीके प्रसादसे मृतपतिने पुनर्जीवन लाभ किया। इसका विस्तृत विवरण सत्यवान् शब्दमें लिखा जा चुका है। सत्यवान् शब्द देखो।

महाभारत और देवीभागवत भिन्न ब्रह्मवैवर्त्तपुराणादिमें भी सावित्रीके असामान्य सतीत्वप्रभावका वर्णन है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां वह नहीं लिखा गया।

सावित्रीतीर्थ (सं० क्लो०) तीर्थविशेष।

सावित्रीपुत्र (सं० पु०) सावित्र्याः पुत्रः। सावित्रीका पुत्र।

सावित्रीव्रत (सं० क्लो०) सावित्र्या व्रतं। व्रतविशेष, योषिद्व्रतभेद। स्त्रियां अवैधव्यकी कामनासे इस व्रतका अनुष्ठान करती हैं। ज्येष्ठमासकी कृष्णा चतुर्दशी तिथिमें उपवास करके इस व्रतका अनुष्ठान करनेसे वैधव्य नहीं होता। यह व्रत चौदह वर्ष तक करना होता है। चौदह वर्षके बाद इसका उद्यापन करनेकी विधि है। इस व्रतकी व्यवस्थादिका विषय स्मृतिमें इस प्रकार लिखा है—

यह व्रत रात्रिमें करना कर्त्तव्य है। प्रायः सभी व्रत दिनको करने होते हैं, किन्तु इस व्रतमें विशेषता यह है, कि सात दिन उपवास रह कर पीछे रात्रिकालमें यह व्रत करनेका विधान है। यह व्रत उपवास करके करना होता है, किन्तु यदि कोई उपवास न कर सके, तो रात्रिकालमें व्रत करके भोजन कर ले। स्त्रियोंके यदि रजोयोग या सूतिका आदि अशौच हो अथवा वे गर्भवती रहें, तो दूसरे द्वारा पूजादि कार्य करावें। किन्तु कायिक उपवा-

सादि शुद्धा या अशुद्धा चाहे जिस अवस्थामें हों, उन्हीं-को करना होगा।

यदि दिवाभागमें त्रयोदशी और रात्रिकालमें चतुर्दशी हो, तो उसी चतुर्दशीमें सत्यवान्‌के साथ सावित्री-की पूजा करनी होती है। दिवाभाग शब्दका अर्थ यह है—यह चतुर्दशी यदि दो दण्ड दिवा भागमें रहे, तो प्रदोषकालमें यह व्रताचरण करे। यदि पूर्व दिनमें तिथि इसी प्रकार रहे अर्थात् दो दण्ड त्रयोदशी रहनेके बाद चतुर्दशी तिथि तथा वह तिथि यदि त्रिसन्ध्याव्यापिनी हो, तो दूसरे दिन प्रदोष कालमें ही यह व्रतानुष्ठान करे। क्योंकि दूसरे वचनमें लिखा है, कि चतुर्दशी तिथिमें यदि अमावस्या हो, तो उस दिन उपवास करके यह व्रता-चरण करे। फिर जहां पूर्व या परदिन तिथिका ऐसा कोई गोल न हो, तो वहां उक्त चतुर्दशी तिथिमें ही व्रता नुष्ठान करना होता है।

देवीभागवतमें इस व्रतका विषय इस प्रकार लिखा है—नारदने भगवान् नारायणसे जब इस व्रतका विधान पूछा, तब उन्होंने कहा था, कि ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी या शुद्ध चतुर्दशीमें यत्न और भक्तिपूर्वक इस व्रतका अनु-ष्ठान करे। त्रयोदशी और चतुर्दशी ये दो तिथि कहनेसे यही समझा जायेगा, कि त्रयोदशीयुक्ता चतुर्दशी तिथिमें यह व्रत करे। इस व्रतमें चौदह फल और चौदह नैवेद्य प्रदान करने होते हैं। चौदह वर्षमें यह व्रत समाप्त करना होता है। व्रतके अन्तमें ब्राह्मण भोजन करा कर पारण करनेका विधान है। यह व्रत सर्वाभीष्ट फलप्रद है। राजा अश्वपति अपुत्रक थे। मालती उनकी धर्मपत्नी वन्ध्या थीं। वशिष्ठदेवके उपदेशसे उन्होंने सावित्रीव्रत किया था। इस व्रतके फलसे उन्होंने साक्षात् सावित्री तुल्य कन्या लाभ की और इसी कन्याके प्रभावसे उनके सौ पुत्र हुए। सावित्री देखो।

सावित्रीसूत्र (सं० क्ली०) सावित्रदीक्षाकालिक सूत्र। यज्ञोपवीत। यह सावित्री दीक्षाके समय धारण किया जाता है।

सावेतस (सं० पु०) सवेतसका अपत्य।

सावेश्य (सं० क्ली०) तुल्यदेशत्व, एकरूप वेश।

साव्य (सं० पु०) एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि।

साशिव (सं० पु०) १ एक प्राचीन देशका नाम। अर्जुन-के दिग्विजयके प्रकरणमें यह उत्तर दिशामें बतलाया गया है। इसी देशको जीत कर अर्जुन यहांसे आठ घोड़े लाया था। २ ऋषीक, ऋषिपुत्र।

साशूक (सं० पु०) सास्ना, गलकम्बल। (हारावली)

साश्रु धी (सं० स्त्री०) श्वश्रू, पत्नी या पतीकी माता, सास।

साश्वत (सं० वि०) शाश्वत देखो।

साष्टाङ्ग (सं० त्रि०) आठों अंग सहित।

साष्टाङ्गयोग (सं० पु०) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठों अंग हों। योग देखो।

सास्टी (हिं० पु०) एक टापू। यह बम्बई प्रदेशके थाना जिलेमें है। वहांवाले इसे फालता और शास्तर तथा अंगरेज सालसीट कहते हैं। यह बम्बईसे बीस मील ईशानकोणमें उत्तरको झुकता हुआ समुद्रके तट पर बसा है। यहां एक किला भी बना है।

सास (हिं० स्त्री०) पति या पत्नीकी मां।

सासकर्णि (सं० पु०) ससकर्णका गोत्रापत्य।

सासण (हिं० पु०) शासन देखो।

सासनलेट (हिं० पु०) एक प्रकारका सफेद जालीदार कपड़ा।

सासव (सं० त्रि०) मद्ययुक्त, मद्यविशिष्ट।

सासहि (सं० पु०) शत्रुओंका अभिभवकारी।

सासु (सं० त्रि०) प्राणयुक्त, जीवित।

सासुर (हिं० पु०) १ पति या पत्नीका पिता, ससुर। २ ससुराल।

सासेराम (सहस्राराम) १ शाहाबाद जिलेके दक्षिण पूर्वका एक उपविभाग। यह अक्षा० २४° ३१´ से २५° २२´ उ० तथा देशा० ८३° ३० से ८४° २७´ पू०के मध्य अव-स्थित है। भूपरिमाण १४६० वर्गमील और जनसंख्या ५ लाखसे ऊपर है। इसमें सासेराम नामक एक शहर और १६०६ ग्राम लगते हैं। यहां शेरगढ़ और रोहतास-गढ़ नामक दो प्राचीन दुर्ग हैं।

२ उक्त उपविभागका एक नगर। यह अक्षा० २४° ५७´ उ० तथा देशा० ८४° १´ पू०के मध्य विस्तृत

है। जनसंख्या २३ हजारसे ऊपर है। यह नगर ट्राङ्क रोडके ऊपर बसा हुआ है। यहां पहले सहस्र बौद्धाराम थे, इसीसे नगरका नाम सासेराम या सहस्राराम नाम हुआ है। किन्तु इस नामके सम्बन्धमें भिन्न भिन्न मत प्रचलित है। कोई कोई कहते हैं, कि पूर्वकालमें इस नगरमें सहस्र भुजवाला एक असुर था। प्रत्येक हाथमें एक एक कर खेलकी सामग्री रखनेका उसे अभ्यास था, इस कारण सहस्रारामसे सासेराम शब्द उत्पन्न हुआ है। सासेराम नगरके दक्षिण एक कोस एक छोटे पर्वत पर एक प्रस्तरगात्रमें महाराज अशोककी गिरिलिपि आविष्कृत हुई है तथा वहां जगह जगह बौद्धकीर्त्तिके प्राचीन निदर्शन भी पाये जाते हैं। इस सब कारणोंसे स्पष्ट प्रतीत होता है, कि बौद्धयुगमें यह स्थान बौद्धोंका एक केन्द्रस्थान था। अतएव सासेराम सहस्राराम शब्दका अपभ्रंश है, यही समीचीन प्रतीत होता है।

दिल्लीके पठान सम्राट् शेरशाहका पिता हुसेन खां यहां रहता था। सम्राट् शेरशाहका इसी स्थानमें जन्म हुआ था। हुसेन खांके मकानका खंडहर देखनेसे मालूम होता है, वह विशेष सङ्गतिपन्न व्यक्ति था। नगरके ठीक मध्यस्थलमें शेरशाहकी बनाई हुई उसकी एक बहुत बड़ी पत्थरकी कब्र है। वह आज भी पूर्ववत् अवस्थामें मौजूद है। एक ऊंची पत्थरकी दीवारसे घिरे एक मैदानमें यह कब्र खोदी गई है। इस दीवारके पूरब एक बड़ा दरवाजा है। कब्रका दरवाजा पश्चिम मुख है। एक बहुत ऊंचे बड़े घरके ऊपर गुम्बजके साथ यह कब्र बनाई गई है। गुम्बजमें अच्छी कारीगरी है। कुरानकी सैकड़ों उपदेशावली इस गुम्बजके भीतरी भागमें खुदी हुई है। यह कब्र सासेरामकी एक द्रष्टव्य वस्तु है। बहुत दूरसे यह कब्र दिखाई देती है। किन्तु सासेरामका प्रधान दर्शनीय विषय शेरशाहकी कब्र है। यह एक अपूर्व दृश्य है। एक बड़े तालावके मध्यस्थलमें लाल पत्थरकी बनी प्रकाण्ड गुम्बजवाली कब्र विराज रही है। तालावकी मिट्टी उसके ऊपर चारों ओर ढेर लगा दी गई है जो अभी दीवारकी तौर तालावके चारों ओर घिरी है। कब्रमें जानेके लिये तालावमें मिट्टी फेंक कर एक रास्ता तैयार किया गया है। पहले उसमें जानेके लिये एक पुल काममें लाया जाता था। इस कब्रके ऊपर चढ़नेके लिये सीढ़ी लगी है। सीढ़ीसे छत पर जा कर नगरका सौन्दर्य खूब अच्छी तरह देखा जा सकता है। गुम्बजका भीतरी भाग नाना प्रकारके पत्थरोंसे जड़ कर विभिन्न चित्रोंसे सुशोभित किया गया है। भीतरके प्राचीर गात्रमें कुरानके भिन्न भिन्न उपदेश खुदे हैं।

शेरशाहकी कब्रके उत्तर पश्चिम आध मीलकी दूरी पर उसके भतीजे सलीमकी कब्र भी देखी जाती है। यह कब्र अधूरी पड़ी है। यह भी एक सरोवरके मध्य अवस्थित है। इसके सिवा सासेरामके नाना स्थानोंमें मुसलमानोंकी पुराकीर्त्तिका भग्नावशेष देखनेमें आता है। इससे स्पष्ट जाना जाता है, कि पठानशासनकालमें सासेरामकी बड़ी उन्नति हुई थी। १८६९ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है।

सास्थितास्राढ्य (सं० क्ली०) कांस्य, कांसा।

सास्ना (सं० स्त्री०) गौओं आदिका गलकंवल।

सास्मित (सं० क्ली०) शुद्ध सत्वको विषय बना कर की जानेवाली भावना।

साह (सं० क्ली०) जैनके मतसे एक स्थानका नाम।

साह (हिं० पु०) १ साधु, सज्जन, भला आदमी। २ व्यापारी, साहूकार। ३ धनी, महाजन, सेठ। ४ लकड़ी या पत्थरका वह लंबा टुकड़ा जो दरवाजेके चौखटेमें देहलीजके ऊपर दोनों पार्श्वोंमें लगा रहता है। ५ शाह देखो।

साहचर (सं० त्रि०) सहचर-अण्। सहचरसम्बन्धी।

साहचर्य (सं० क्ली०) सहचरस्य भावः कर्म वा, सहचर-ष्यञ्। १ सहचर होनेका भाव, सचरता। २ सहगमन। ३ सहचार। ४ सामानाधिकरण्य, एकाधिकरणवृत्तित्व।

साहञ्ज (सं० पु०) राजभेद।

साहञ्जनी (सं० स्त्री०) साहञ्ज स्थापित एक नगर।

साहदेव (सं० पु०) सहदेवका गोत्रापत्य।

साहदेवक (सं० पु०) सहदेवका स्तोता या पूजक)

साहदेवि (सं० पु०) सहदेवका गोत्रापत्य।

साहदेव्य (सं० पु०) सहदेव राजपुत्र। (ऋक् ४।१५।७)

साहनी (हिं० स्त्री०) १ सेना, फौज। २ साथी, संगी। ३ पारिषद।

साहब (अ० पु०) १ मित्र, दोस्त, साथी। २ मालिक, स्वामी। ३ परमेश्वर, ईश्वर। ४ गोरी जातिका कोई व्यक्ति, फिरंगी। ५ एक सम्मानसूचक शब्द जिसका व्यवहार नामके साथ होता है, महाशय।

साहबजादा (फा० पु०) भले आदमीका लड़का। २ पुत्र, बेटा।

साहब सलामत (अ० स्त्री०) परस्पर मिलनेके समय होनेवाला अभिवादन, बंदगी सलाम।

साहबी (अ० वि०) १ साहबका, साहब-सम्बन्धी। जैसे,—साहबी चाल, साहबी रंग ढंग। (स्त्री०) २ साहब होनेका भाव। ३ प्रभुता, मालिकपन। ४ बड़प्पन।

साह बुलबुल (फा० पु०) एक प्रकारका बुलबुल जिसका सिर काला, सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लम्बी होती है।

साहय (सं० त्रि०) सहनकारयिता, सहन करानेवाला।

साहस (सं० क्ली०) सहसा बलेन निर्वृत्तं सहस् (तेन निर्वृत्त, पा ४।२।६८) इति अण्। १ बलपूर्वक कार्य करनेकी क्रिया, जबरदस्ती दूसरेका धन लेना।

साधारणका अथवा दूसरेका द्रव्य बलपूर्वक हरण करनेका नाम साहस है। डकैती कर जब दूसरेका द्रव्य लिया जाता है, तब उसे साहस कहते हैं। छिप कर दूसरेकी वस्तु लेनेका नाम चोरी और साक्षात्में लेनेका नाम साहस है। चोरी और साहसमें यही प्रभेद है। जो यह साहसिक कार्य करे, राजाको चाहिये, कि वे उसे उसी समय दण्ड दें। जो यह साहस कर्म करता है, उसे हृत द्रव्यके मूलसे दूना दंड और जो साहस कर्म करके पीछे उसका अपलाप करता है (अर्थात् मैंने ऐसा नहीं किया, इत्यादि झूठी बात कहता है), उसे चौगुना दंड और जो साहसकार्य करनेका हुकुम देता है, उसे भी दूना दण्ड तथा जो दूसरेके द्वारा साहस कार्य कराता है, उसे भी चौगुना दंड होगा। यह साहस दण्ड तीन प्रकारका है—उत्तम, मध्यम और अधम।

८० हजार पण जो दण्ड है, उसे उत्तम साहस दण्ड, इसके अर्द्धक दण्डको मध्यम और उससे भी आधे दण्डको अधम साहस कहते हैं। अपराधकी गुरुताके अनुसार उत्तम, मध्यम और अधम ये तीन प्रकारके साहस दण्ड दिये जाते हैं।

व्यवहारतत्त्वमें नारदवचनानुसारमें लिखा है, कि मनुष्यमारण, स्तेय, परदाराभिमर्षण, पारुष्य और अनृत ये पांच प्रकारके साहस हैं।

"मनुष्यमारणं स्तेयं परदाराभिमर्षणं।
पारुष्यमनृतञ्चैव साहसं पञ्चधा स्मृतं॥"

ये सब साहस कार्य जो करते हैं, उन्हें साहसिक कहते हैं। इन्हें साहसदण्ड देना होता है। किस किस अपराधीके प्रति यह साहसदण्ड प्रयोग करना होता है, उसका विषय मन्वादिमें इस प्रकार लिखा है—राजा यदि साहसिक व्यक्तिको दण्ड न दे कर उसे छोड़ दे, तो उसका राज्य शीघ्र नष्ट होता है तथा वह लोक समाजमें निन्दित होता है। इस कारण साहसिककी उपेक्षा करना कर्त्तव्य नहीं।

२ अन्तःकरणका विक्रम, वह मानसिक गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य यथेष्ट बलके अभावमें भी कोई भारी काम कर बैठता है या दृढ़तापूर्वक विपत्तियों तथा कठिनाइयों आदिका सामना करता है, हिम्मत, हियाव। ३ दुष्कृत कर्म, कोई बुरा काम। ४ अविमृष्यकृति। (भारत ४२।१) ५ द्वेष। ६ दुष्कर्म, अत्याचार। ७ अनौचित्य। ८ बलपूर्वक कृतदुष्कर्म, क्रूरता, बेरहमी। ९ पर-स्त्रीगमन। १० दण्ड, सजा। ११ जुर्माना। (पु०) सहसे बलाय हित सहस्-अण्। १२ अग्निविशेष। पूजादि कार्यमें अग्निके विशेष विशेष नाम हैं, उन्हीं नामोंसे अग्निकी पूजा करके होम करना होता है।

प्रायश्चित्तकार्यमें अग्निका नाम विधु और पाकयज्ञमें साहस है। जहां चरुपाकादि द्वारा होम होता है, वहां अग्निका नाम साहस है।

साहसाङ्क (सं० पु०) साहस एव अङ्कश्चिह्नं यस्य। राजा विक्रमादित्य।

साहसाङ्कीय (सं० त्रि०) साहसाङ्कसम्बन्धी।

साहसिक (सं० पु०) सहसा बलेन वर्त्तते इति सहस् (ओजः सहोम्भसा वर्त्तते। पा ४।४।२७) इति ठक्। १ वह जिसमें साहस हो, साहस करनेवाला, हिम्मतवर। २ डाकू, चोर। ३ मिथ्यावादी, झूठ बोलनेवाला। ४ कर्कश वचन बोलनेवाला। ५ परस्त्रीगामी। शास्त्रोंमें डाका, चोरी, झूठ बोलना, कठोर वचन कहना और परस्त्री गमन

ये पांचों कर्म करनेवाले साहसिक कहे गये हैं और अत्यन्त पापी बताये गये हैं। धर्मशास्त्रोंमें इन्हें यथोचित दंड देनेका विधान है। स्मृतियोंमें लिखा है, कि साहसिक व्यक्तिको साक्षी नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये स्वयं ही पाप करनेवाले होते हैं। ६ वह जो हठ करता हो, हठीला। ७ निर्भीक, निर्भय, निडर।

साहसिकता (सं० स्त्री०) साहसिकस्य भावः तल् टाप्। निर्भीकता।

साहसी (सं० पु०) १ वह जो साहस करता हो, हिम्मती, दिलेर। २ बलिका पुत्र जो शापके कारण गधा हो गया था। इसे बलरामने मारा था।

साहस्र (सं० क्ली०) सहस्राणां समूहः सहस्र (भिक्षादिभ्योऽण्। पा ४।२।३८) इति अण्। १ सहस्रका समूह। सहस्रमेव स्वार्थे अण्। २ सहस्र मात्र। (त्रि०) सहस्रेण क्रीतमिति (शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण्। पा ५।१।२७) इति अण्। ३ जो सहस्र या हजार दे कर खरीदा गया हो। ४ सहस्र-सम्बन्धी, हजारका। (पु०) सहस्रमस्यास्तीति सहस्र-अण्। (पा ५।२।१०३) ५ सहस्र संख्यक गजादि द्वारावली।

साहस्रक (सं० त्रि०) सहस्रसंख्याविशिष्ट, सहस्रसंख्यायुक्त।

साहस्रवेधिन् (सं० पु०) १ अम्लवेतस, जलबेंत। २ कस्तूरी। (त्रि०) ३ सहस्र वेधकर्त्ता।

साहस्रिक (सं० पु०) १ सहस्रांश, किसी पदार्थके एक सहस्र भागोंमेंसे एक भाग। (त्रि०) २ सहस्र-सम्बन्धी, हजारका।

साहा (हिं० पु०) १ वह वर्ष जो हिन्दू ज्योतिषके अनुसार विवाहके लिये शुभ माना जाता है। २ विवाह आदि शुभ कार्योंके लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त्त।

साहा (साह) (हिं० पु०) १ साधु। २ राजा, अधिपति। ३ अध्यक्ष। कोई कोई समझते हैं, कि फारसी 'शाह' शब्दसे ही 'साह' 'साहा' और 'साहि' शब्दकी उत्पत्ति हुई है। किन्तु प्राचीन पारस्य भाषामें व्यवहारके पहलेसे ही भारतमें इस शब्दका प्रयोग देखा जाता है।

'साह' या 'साहि' उपाधि दो हजार वर्ष पहलेसे भारतवर्षमें प्रचलित है। ऐसी हालतमें इस शब्दको भारतमें मुसलमानी प्रधानताका निर्देशक नहीं कह सकते। भारतीय सुप्राचीन शिलालिपि और मुद्रालिपिमें षाहि' राजवंशका परिचय मिलता है। गान्धार, पञ्जाब, राजपूताना और सौराष्ट्रमें 'षाहि' राजवंशने एक समय प्रबल प्रतापसे आधिपत्य विस्तार किया था। मुद्रातत्त्वविद् राप्सनने इस वंशके राजाओंकी मुद्रा आलोचना कर लिखा है, कि ईसा-जन्मके पहले २५ से १०२५ ई० (महमूद गजनीके आक्रमण काल) तक षाहिराजगण गान्धारमें आधिपत्य कर गये हैं। प्रत्नतत्त्वविद् फिलटसाहबने सौराष्ट्रके 'साह' या 'षाहि' वंशके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—

"कुछ क्षत्रप या महाक्षत्रपके नामके अन्तमें 'सीह' =(सिंह) उपाधि देखी जाती है। साधारणतः मुद्राओंमें (अनुस्वार) युक्त ह्रस्व ि या दीर्घ ी प्रायः परित्यक्त हो कर ('सीह' शब्द) 'सह' और 'साह' रूपमें मुद्रामें उत्कीर्ण हुआ है। यह देख कर बहुतोंने इस वंश या कुलकी 'सह' या 'साह' ऐसी कल्पित वंशाख्या दी है। किन्तु गान्धारसे आविष्कृत मुद्राओं और केवल मुद्रा ही नहीं, महाराज समुद्रगुप्तकी इलाहाबादकी स्तम्भलिपिकी आलोचना करनेसे निःसन्देह प्रतिपन्न होगा, कि ४थी सदीमें 'षाहि' और 'षाहानुषाहि' आदि राजवंश भारतमें प्रबल थे। उन सब राजवंशोंको परास्त कर समुद्रगुप्त भारतसम्राट् हुए थे। अतएव यह स्थिर हुआ, कि ईसा-जन्मके पहले १ली शताब्दीसे भारतवर्षमें महत्त्वव्यञ्जक उन सब शब्दोंका प्रचलन था। अकबर बादशाह जिस प्रकार 'शाहनशाह' अर्थात् राजाधिराज कह कर सम्बोधित होते थे, उसी प्रकार ४थी सदीमें उत्कीर्ण समुद्रगुप्तकी शिलालिपिमें 'षाहानुषाहि' उपाधिधारी राजवंशका भी सन्धान पाया गया है।

केवल पारस्य ही नहीं, प्राचीन और अप्राचीन प्राकृत हिन्दी, गुजराती, उर्दू आदि नाना भाषाओंमें इस शब्दका प्रयोग है। केवल मुसलमान राजवंश ही नहीं, बहुत पहलेसे आज तक अनेक हिन्दू-राजवंश 'साह' 'साही' या 'षाही' उपाधिका व्यवहार करते आ रहे हैं।

बहुत पहलेसे ले कर आज तक हिन्दू और मुसल-

मान धर्मप्रवर्त्तक या साधुप्रकृतिक फकीरोंको 'सा' या 'शाह' उपाधि देखी जाती है। जैसे—'शाह जलाल' 'बाबा नानक सा' आदि। मुसलमान अभ्युदयके पहले प्राचीन हिन्दू राजाओंके विभिन्न विभागमें जिस प्रकार शुल्काध्यक्ष, कराध्यक्ष आदि अध्यक्ष नियुक्त होते थे, मुसलमानी अमलमें भी उसी प्रकार एक अध्यक्ष नियुक्त होता था। उनमेंसे किसी किसीको 'शाह' उपाधि देखी जाती है। जैसे, शाहबन्दर या बन्दरका अध्यक्ष। 'साह' या 'साहा' उपाधि अध्यक्ष अर्थवाची या महत्त्वव्यञ्जक होनेसे आब्राह्मणचण्डाल प्रायः सभी जातियोंमें प्रचलित हुई है। जिस प्रकार गोधूमसे 'गोहुम' गेहूं" तथा वधूसे 'बहू' हुआ है, उसी प्रकार संस्कृत 'साधु' शब्दसे भी 'साहु' शब्द, उसका अपभ्रंश 'साउ' 'सउ' और 'साहा' हुआ है। यह साधु शब्द ही उत्कलमें 'साहु, और श्रीहट्ट आदि अञ्चलोंमें 'साउ' नामसे आज भी प्रचलित है।

४ पूर्ववङ्गवासी वणिकूजातिका वंशपरिचायक विशेष उपाधि। इन वणिकोंको विभिन्न श्रेणियोंकी प्राचीन जन्मपत्रिकाओंमें 'साधुकुलोद्भव' और 'साउकुलोद्भव' ऐसा वंशपरिचय देखा जाता है। इससे निःसन्देह कहा जा सकता है, कि यह जाति बहुत पहलेसे 'साधु' 'साहु' और उसके अपभ्रंशसे 'साउ' नामसे ही परिचित थी। यह जाति उत्कल, मेदिनीपुर आदि दक्षिणाञ्चलोंमें 'साहु' तथा श्रीहट्ट आदि पूर्व सीमामें आज भी 'साउ' कहलाती है। दाक्षिणात्यमें भी महाजन लोग 'साउकर' या 'साओकर' कहलाते हैं। उत्तर पश्चिम अञ्चलमें वे साह महाजन नामसे ही भी परिचित हैं। 'साधु' संज्ञा ही कालक्रमसे 'साउ' 'सउ' और 'साहा' नामसे अभिहित और जातिवाचक हुई है। गौड़ीय शौण्डिक जातिमें भी 'साह' और 'साहा' उपाधि प्रचलित है।

साहायक (सं० क्ली०) साहाय्य, सहायता, मदद।

साहाय्य (सं० क्ली०) सहायस्य भावः कर्म वा सहाय पक्षे ष्यञ्। सहायता, मदद।

साहि (सं० पु०) अधिपति, प्रभु।

साहिती (सं० स्त्री०) साहित्य देखो।

साहित्य (सं० क्ली०) सहित ष्यञ्। १ एकत्र होना, मिलना। २ वाक्यमें पदोंका एक प्रकारका सम्बन्ध जिसमें वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका एक ही क्रियासे अन्वय होता है। ३ किसी एक स्थान पर एकत्र किये हुए लिखित उपदेश, परामर्श या विचार आदि, लिपिबद्ध विचार या ज्ञान। ४ गद्य और पद्य सब प्रकारके उन ग्रन्थोंका समूह जिनमें सार्वजनीन हित-सम्बन्धी स्थायी विचार रक्षित रहते, वे समस्त पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य और मानव भाव बुद्धिमत्ता तथा व्यापकतासे प्रकट किये गये हों।

साहिनी (हिं० स्त्री०) साहनी देखो।

साहिब (हिं० पु०) साहब देखो।

साहियी (हिं० स्त्री०) साहबी देखो।

साहिलो (अ० स्त्री०) १ एक प्रकारका पक्षी। इसका रंग काला और लंबाई एक बालिश्तसे अधिक होती है। यह प्रायः उत्तरी भारत और मध्यप्रदेशमें पाया जाता है। यह पेड़की टहनियों पर प्यालेके आकारका घोंसला बनाता है। इसके अंडोंका रंग भूरा होता है। २ बुलबुल, चश्म।

साही (हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध जन्तु जो प्रायः दो फुट लंबा होता है। इसका सिर छोटा, नथुने लंबे, कान और आंखें छोटी और जीभ बिल्लीके समान कांटेदार होती है। ऊपर नीचेके जबड़ेमें चार दांतोंके अतिरिक्त कुतरने वाले दो दांत ऐसे तीक्ष्ण होते हैं, कि लकड़ीके मोटे तख्ते तकको काट डालते हैं। इसका रंग भूरा, सिर और पाव पर काले काले सफेदी लिए छोटे छोटे बाल और गर्दन परके बाल लंबे और भूरे रंगके होते हैं। पीठ पर लंबे नुकीले कांटे होते हैं। कांटे बहुधा सफेद और नोकें पूंछकी भांति फिरी रहती हैं। जब यह क्रुद्ध होता है, तब कांटे सीधे खड़े हो जाते हैं। यह अपने शत्रुओं पर अपने कांटोंसे आक्रमण करता है। इसका शिकार बहुत कठिनतासे प्राप्त होता है। इन कांटोंसे लिखनेकी कलम बनाई जाती है और चूड़ाकर्ममें भी कहीं कहीं इनका व्यवहार होता है। ये जन्तु आपसमें बहुत लड़ते हैं, इसलिये लोगोंका विश्वास है, कि यदि इसके दो कांटे दो आदमियोंके दरवाजे पर गाड़ दिये जायं, तो

दोनोंमें बहुत लड़ाई होती है। यह दिनमें सोता और रातको जागता है। यह नरम पत्ती, साग, तरकारी और फल खाता है। शीतकालमें यह बेसुध पड़ा रहता है। यह प्रायः उष्ण देशोंमें पाया जाता है। स्पेन, सिसिली आदि प्रायोद्वीपों और अफ्रिकाके उत्तरी भाग, एशियाके उत्तर, तातार, ईरान तथा हिन्दुस्थानमें बहुत मिलता है। इसे कहीं कहीं सेई भी कहते हैं। विशेष विवरण शाही शब्दमें देखो।

साहु (हिं० पु०) १ सज्जन, भलामानस। २ महाजन, धनी, साहूकार। प्रायः वणिकोंके नामके आगे यह शब्द आता है। इसका कुछ लोग भ्रमसे फारसी 'शाह' का अपभ्रंश समझते हैं। पर यथार्थमें यह संस्कृत 'साधु'का प्राकृत रूप है।

साहुल (फा० पु०) दीवारकी सीध नापनेका एक प्रकार का यन्त्र। इसका व्यवहार राज और मिस्त्री लोग मकान बनानेके समय करते हैं। यह पत्थरकी एक गोलीके आकारका होता है और इसमें एक लम्बी डोरी लगी रहती है। इसी डोरीके सहारेसे इसे लटका कर दीवारकी टेढ़ाई या सिधाई नापते हैं।

साहू (हिं० पु०) साहु देखो।

साहूकार (हिं० पु०) बड़ा महाजन या व्यापारी, कोठी-वाल।

साहूकारा (हिं० पु०) १ रुपयोंका लेन-देन, महाजनी। २ वह बाजार जहां बहुतसे साहूकार या महाजन कारबार करते हों। (वि०) ३ साहूकारोंका।

साहूकारी (हिं० स्त्री०) साहूकार होनेका भाव, साहु कारपन।

साहेब (फा० पु०) साहब देखो।

साह्न (सं० त्रि०) दिनयुक्त, दिनविशिष्ट।

साह्निक (सं० पु०) १ एक ग्रन्थकार। (त्रि०) २ कृताह्निक, आह्निकयुक्त।

साह्य (सं० क्ली०) सह ष्यञ्। १ मेलन। २ सहितत्व। ३ साहाय्य, सहायता।

साह्यकृत् (सं० पु०) समभिव्याहारी, संगी।

साह्व (सं० त्रि०) संज्ञाविशिष्ट, नामयुक्त।

साह्वय (सं० पु०) १ मेषादि प्राणिद्यूत, समाह्वय, पशु युक्त। (त्रि०) २ नामयुक्त, संज्ञाविशिष्ट।

सिंकना (हिं० क्रि०) आँच पर गरम होना या पकना, सेंका जाना।

सिंकोना (अं० पु०) कुनैनका पेड़।

सिंग (हिं० पु०) सींग देखो।

सिंगड़ा (हिं० पु०) सींगका बना हुआ बारूद रखनेका एक प्रकारका बरतन।

सिंगरफ (फा० पु०) ईंगुर।

सिंगरफी (फा० वि०) ईंगुरका, ईंगुरसे बना।

सिंगरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली जिसके सिर पर सींगसे निकले होते हैं।

सिंगरौर (हिं० पु०) प्रयागके पश्चिमोत्तर नौ दस कोस पर एक स्थान जो प्राचीन शृंगवेरपुर माना जाता है। यहां निषादराज गुहकी राजधानी थी।

सिंगल (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी बड़ी मछली जो भारत और बरमाकी नदियोंमें पाई जाती है। यह छः फुट तक लंबी होती है। (पु०) २ सिगनल देखो।

सिंगा (हिं० पु०) फूंक कर बजाया जानेवाला सींग या लोहेका बना एक बाजा, तुरही।

सिंगार (सं० पु०) १ सजावट, सज्जा, बनाव। २ शोभा। ३ शृंगार रस।

सिंगारदान (हिं० पु०) वह पात्र या छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगारकी सामग्री रखी जाती है।

सिंगारना (हिं० क्रि०) वस्त्र, आभूषण, अङ्गराग आदिसे शरीर सुसज्जित करना, सजाना, संवारना।

सिंगारमेज (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी मेज जिस पर दर्पण लगा रहता है और शृंगारकी सामग्री सजी रहती है। इसके सामने बैठ कर लोग बाल संवारते और वस्त्र आभूषण आदि पहनते हैं।

सिंगारहार (हिं० पु०) हरसिंगार नामक फूल, पर-जाता।

सिंगारिया (हिं० वि०) किसी देवमूर्त्तिका सिंगार करने-वाला, पुजारी।

सिंगारी (हिं० वि०) शृंगार करनेवाला, सजानेवाला।

सिंगाल (हिं० पु०) एक प्रकारका पहाड़ी बकरा जो कुमायूंसे नैपाल तक पाया जाता है।

सिंगाला (हिं० वि०) सींगवाला।

सिंदुरी (हिं० स्त्री०) वलूतकी जातिका एक छोटा पेड़ जो हिमालयके नीचेके प्रदेशमें चार साढ़े चार हजार फुट तक पाया जाता है।

सिंदूरिया (हिं० वि०) १ सिंदूरके रंगका, खूब लाल। (स्त्री०) २ सिंदूरपुष्पी, सदा सुहागिन नामका पौधा।

सिंदोरा (हिं० पु०) लकड़ीकी एक डिबिया जिसमें स्त्रियां सिंदूर रखती हैं। यह सौभाग्यकी सामग्री मानी जाती है।

सिंफु—आसामकी पूर्वसीमान्तवर्त्ती एक छोटा देश। सिंफो नामकी एक असभ्य जाति इस पहाड़ी प्रदेशमें रहती है। सिंफोगण ब्रह्मदेशके कचेन वंशकी एक शाखा हैं। इन लोगोंकी भाषामें सिंफो शब्दका अर्थ है मनुष्य। निकटवर्त्ती मानवंशसम्भूत खमती आदि जातियोंसे इनका शारीरिक गठन, भाषा और धर्म बिलकुल स्वतन्त्र है। कहते हैं, कि ये लोग १८वीं सदीके शेषभागमें सिंफुमें रहते थे। उत्तर आसाममें मोयामारियागण द्वारा विद्रोह खड़ा करने पर जब चारों ओर अशान्ति फैल गई, तब सिंफो लोगोंने अच्छा मौका पा कर ब्रह्मपुत्रके अधित्यका प्रदेशमें पहुंच उपद्रव शुरू कर दिया और बहुतोंको पकड़ कर गुलाम बनाया। अभी उत्तर आसाममें दोयाहिलया नामकी एक सङ्करजाति रहती है, इनके पूर्वपुरुषोंने सिंफोके औरस और आसामी क्रीतदासियोंके गर्भसे जन्मग्रहण किया था। अङ्गरेजोंने आसाम प्रदेश अधिकार कर सिंफोका अत्याचार दूर किया। सुना जाता है, कि कप्तान न्युफभिललेने पहली बार युद्धयात्रा करके ५००० असामियोंको क्रीतदासत्वसे मुक्त किया था। अभी सिंफोगण पहलेकी तरह लूटपाट करनेको नहीं निकलते। आज कल वे लोग वृटिश सरकारकी शान्तिप्रिय प्रजा हैं, कृषिकार्य द्वारा जीविका निर्वाह करते हैं। लोहा गलाने तथा छींटका कपड़ा तैयार करनेमें ये लोग बड़े सिद्धहस्त हैं। सिंफु अभी लक्ष्मीपुर जिलेके अन्तर्भुक्त है। इसकी जनसंख्या प्रायः दो हजार है।

सिंरौली—युक्तप्रदेशके अन्तर्गत मिर्जापुर जिलेके मध्य स्थित एक निम्न भूमिखण्ड। चारों ओरकी भूमिसे यह स्थान अधिक नीचेमें अवस्थित है। कहीं कहीं लाल मिट्टी दिखाई देती है, पर बहुत जगहकी मिट्टी बड़ी कड़ी और अनुर्व्वर है।

सिंह (सं० पु०) स्वनामख्यात पशु, शेर। पर्याय—मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्य्यश्व, केशरी, हरि, पारीन्द्र, श्वेत पिङ्गल, कण्ठीरव, पञ्चशिख, शैलाट, भीमविक्रम, सटाङ्क, मृगराज, मृगप्लव, केशी, लम्बोकर्स, करिदारक, महावीर, श्वेतपिङ्ग, गजमोचन, मृगारि, इभारि, नखायुध, महानाद, मृगपति, पञ्चमुख, नखी, मानी, क्रव्याद, मृगाधिप, शूर, विक्रान्त, द्विरदान्तक, बहुबल, दीप्त, बली, विक्रमी, दीप्तपिंगल। इसके मांसका गुण—अर्श, प्रमेह, जठरामय और जड़तानाशक। (राजनि०)

पशुओंके मध्य आकृति, प्रकृति और बलविक्रममें यह सबसे श्रेष्ठ जन्तु है, इसीसे इसको पशुराज कहते हैं। ऐतिहासिक युगके आरम्भसे जिन सब पशुओंसे मानवगण परिचित थे, उनमें सिंह ही सर्वप्रधान था। इसकी शारीरिक क्षमता और सद्गुण देख कर लोग इतने मोहित हो गये थे, कि उन सब विषयोंमें सिंह सम्बन्धीय बहुत-सी गल्पें पूर्वकालसे प्रचलित होती आ रही हैं। पूर्वकालमें ग्रीष्मप्रधान देशोंमें ही बहुतसे सिंह देखनेमें आते थे। रोमके इतिहाससे मालूम होता है, कि किसी एक उत्सवमें खेल तमाशे दिखलाने तथा प्राणदण्डसे दण्डित अपराधियोंके प्राण लेनेके लिये रोमके आम्फिथियेटरमें छः सौ सिंह रखे जाते थे। इससे जाना जाता है, कि उस समय राजधानीके आस-पास भी बहुतसे सिंहोंका वास था। प्राचीन रोम और ग्रीसके राजे सिंहके साथ मनुष्यका मल्लयुद्ध देख कर बड़ा आनन्द लूटते थे। जब असहाय मनुष्य मल्लयुद्धमें सिंहसे मारा जाता था, तब राजा फूले नहीं समाते थे। ग्रीक-दूत मेगास्थनीजने लिखा है, कि खृष्टपूर्व ३री सदीके प्रारम्भमें जब वे पाटलिपुत्रमें चन्द्रगुप्तकी राजसभामें रहते थे, उस समय भी ग्रीसकी तरह भारतवर्षकी राजसभामें सिंह और मनुष्यका मल्लयुद्ध दिखलाया जाता था।

पहले आफ्रिकामें सब जगह, एशियाके दक्षिण भागस्थित सिरीया, अरब, एशिया माइनर, पारस्य, उत्तर और मध्यभारत तथा यूरोपके दक्षिण पूर्वप्रदेशोंमें सिंह

रहते थे। पीछे मनुष्योंसे उत्पीड़ित हो इनकी संख्या कम हो गई है। अभी अफ्रिकाके अलजिरियासे केपकालोनी तक सभी स्थानोंमें पारस्यमें और भारतवर्षके उत्तर-पश्चिम अंशमें ये बहुतायतसे पाये जाते हैं। पारस्यके अधित्यका-प्रदेशमें तथा बेलुचिस्तानमें यह कभी भी नहीं देखा जाता। भारतवर्षके मध्य गुजरात ही इनकी प्रधान वासभूमि है। इसके सिवा ग्वालियर, सागर और नर्मदा-के दक्षिण भी सिंह मिलते हैं।

सिंहकी विभिन्न प्रकृति, वर्ण और केशरका परिमाण देख कर बहुतोंका अनुमान है, ये भिन्न भिन्न श्रेणीमें विभक्त हैं। कप्तान वाल्टर जैसे प्रमुख पशुतत्त्वविद्गण समझते थे, कि भारतवर्षीय सिंहकी तरह अफ्रिकाके सिंहके केशर नहीं होते। किन्तु उनका यह ख्याल गलत साबित हुआ। अफ्रिकामें कुछ सिंहके शावक पकड़े गये थे, उस समय सचमुच उनके एक भी केशर नहीं था। यही देख कर पशुतत्त्वविदोंने स्थिर किया था, कि अफ्रिकादेशीय सिंहके केशर नहीं होते। किन्तु ऐसा नहीं है, वहां काले तथा थोड़े केशरवाले सिंह जगह जगह देखे जाते हैं। सिंहनीके केशर नहीं होते, यह बात प्रायः सबोंको मालूम है। शावक जब तीन वर्षके होते, तब उन्हें केशर निकलने लगते हैं, पांच या छः वर्षोंमें बिल-कुल निकल आते हैं।

सिंहकी आकृतिका परिमाण साधारणतः बाघके समान होता है, परन्तु कभी कभी सिंहनें बहुत बड़ा बाघ भी दिखाई देता है। दक्षिण अफ्रिकासे एक .० फुट (नथुनेसे ले कर पूंछ तक) लंबा सिंह पकड़ा गया था।

भारतवर्षीय सिंहके स्वभाव और आचरणादिके सम्बन्धमें कोई विशेष विवरण मालूम नहीं होता। सुना जाता है, कि वे प्रधानतः गाय और गदहे पर टूट पड़ते हैं, किन्तु बहुतेरे भ्रमणकारियोंने अफ्रिकाके सिंहके परि-पूर्ण वनोंमें परिभ्रमण कर वहांके सिंहोंका स्वभाव अच्छी तरह लक्ष्य किया है। ये सब साधारणतः बालुकापूर्ण समतल भूमिमें तथा पहाड़ी कण्टकपूर्ण वनोंमें रहते हैं। दिनके समय जनशून्य वनमें भी कभी कभी ये विचरण करते देखे जाते हैं, किन्तु अन्यान्य हिंस्र पशुओंकी तरह रात्रि ही इनके शिकारका उपयुक्त समय है। रातको छोटी नदी या सोतेकी बगलवाली झाड़ोमें छिप कर शिकारकी प्रतीक्षा करते हैं। जब कभी कोई पशु चरता हुआ नजदीक आता है, तब ही यह उस पर टूट पड़ता और उसकी जान ले लेता है। शिकार पर आक्र-मण करनेके समय सिंह गगनभेदी मेघ-गर्जनकी तरह भीतिजनक शब्द करता है और शीघ्र ही शिकारके ऊपर कूद कर उसे मार डालता है।

सिंह सभी समय एक सिंहनीके साथ भ्रमण करता है। वह प्रायः एक सिंहनीको छोड़ दूसरीके साथ नहीं रहता। उनके बच्चे जब तक दो तीन वर्षके नहीं होते, तब तक वह उन्हें छोड़ कहीं नहीं जाता। इस समय वह बच्चोंके भरणपोषणके लिये खाद्यादि संग्रह करनेमें सिंहनीकी सहायता करता है।

सिंहकी पारिवारिक जीवनीके सम्बन्धमें एक घटना डूमण्ड साहबने वर्णन की है। उन्होंने लिखा है,—"मैं जुलुल्याण्डमें एक नदीके किनारे खेमा डाल कर रहता था। एक दिन अपराह्णकालमें मैं खेमेसे बाहर निकला और करीब आध मील जाने पर देखा, कि एक दल जेब्रा बड़ी तेजीसे जा रहा है। कुछ समय बाद एक पीले रंगका पशु विद्युत् वेगसे जेब्राका जो सरदार था उसके पास आया। बातकी बातमें वह जेब्रा सिंह द्वारा मारा गया। बादमें सिंह वह शिकार ले कर क्या करता है, यह देखनेके लिये मैं एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गया। पशुराजने शिकारको खाया नहीं, जोरसे गरजना शुरू किया। उसका गर्जन सुनते ही सिंहनी अपने चार बच्चोंके साथ गरजती हुई वहां आई। जिस ओरसे जेब्रा दल आया था, ठीक उसी ओर से सिंहनी आई। इससे यह मैं अच्छी तरह समझ गया, कि सिंहनीने जेब्रादलको खदेर कर सिंहके सामने कर दिया था। इसके बाद वे सभी उस लाशके चारों ओर बैठे तथा इच्छानुसार जेब्राके मांस खाने लगे। कोई भी किसीके आहारमें बाधा नहीं देता था, केवल शावक गण खाद्य ले कर बीच बीचमें झगड़ते थे। माताके भोजनमें जब वे बाधा डालते, तब यह उन्हें थाप जमाती थी। इस प्रकार जब कुल मांस निःशेष हो गया, केवल थोड़ीसी हड्डी रह गई, तब वे धीरे धीरे प्रफुल्ल मनसे चल दिये। सिंहनी शावकोंके आगे और सिंह उनके पीछे

जाता था। जाते जाते सिंहने घूम कर देखा, कि कहीं कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा है।"

सिंह अकसर अकेला ही भ्रमण करना पसन्द करता है, पर उन्हें कभी कभी दल बांध कर भी भ्रमण करते देखा गया है। कभी कभी ऐसा भी देखा गया है, कि वृद्ध सिंह-सिंहनी चार पांच पूर्णवयस्क सन्तानके साथ जंगलमें घूम रही है। कभी कभी सिंह आपसमें सलाह कर एक साथ शिकारको निकलते हैं। समय समय पर शिकारको ले कर इनमें घोर कलह भी हो जाया करता है, यहां तक, कि आपसमें लड़ कर मर जाते हैं। एण्डरसन साहबने लिखा है, कि एक बार मृत हरिणको ले कर एक भूखे सिंहदम्पती आपसमें लड़ने लगे, क्योंकि उन दोनोंकी क्षुधा निवृत्त होनेकी सम्भावना उस मृत हरिणसे न थी। आखिर सिंहने अत्यन्त गुस्सा कर सिंहनीको मार डाला और अवलीलाक्रमसे खा लिया। वृद्ध सिंहके दांत जब कमजोर हो जाते, तब वे मनुष्यका मांस खाने लगते हैं क्योंकि उस समय उनमें ऐसी ताकत नहीं रहती, कि वे पशु आदिका शिकार कर अपना निर्वाह कर सकें। इस कारण रातको वे गांवमें घूमते और सोते हुए आदमीको पीठ पर चढ़ा कर ले भागते हैं।

सिंह चीताबाघकी तरह पेड़ पर नहीं चढ़ सकते। वे प्रधानतः गिरिगह्वरमें वास करते हैं।

इङ्गलैण्डमें दो बार सिंह और व्याघ्रीके संयोगसे शावक उत्पन्न हुए थे। शावक बचपनमें ही मर गये। उनके शरीरका वर्ण सिंहसे कहां सफेद था तथा अन्यान्य सिंहोंकी अपेक्षा उनके शरीरके रेखाएं बहुत स्पष्ट थीं।

बाघ, चीता, लकड़बग्घा छीपी, विड़ाल आदि मांसाहारी सभी प्राणी सिंह जातिके हैं। इस जातिका अङ्गरेजी वैज्ञानिक नाम फिलिडी है। सिंहके शरीरकी आकृति बाघ और बिड़ाल-सी होती है, किन्तु प्रभेद बहुत है। विडालके २८ दांत होते हैं, किन्तु सिंहके ३०। काटनेवाले दांत ऊपरके जबड़ेमें ६, नीचे भी ६; तेज दांत ऊपरकी दोनों बगलमें २ और नीचेकी भी दोनों बगलमें २, कुतरनेवाले दांत ऊपरमें दोनों बगल चार चार करके आठ और नीचेकी दोनों बगलमें तीन तीन करके ६, कुल मिला कर सिंहके ३० दांत होते हैं। बाघके चक्षुका मध्यस्थल कुछ धसा और टेढ़ा होता है, सिंहके चक्षुका बिचला-हिस्सा चिपटा होता है। बाघकी खोपड़ी चिपटी होती है, किन्तु सिंहकी खोपड़ी कुछ पीछेकी ओर निकल गई है। सिंहकी पूंछकी जड़में हड्डी होती है। जब शिकारी सिंह पर आक्रमण करता है, तब वह अपनेको उत्तेजित करनेके लिये पहले इसी पूंछको जमीन पर पटकता है। पीछे उसी पूंछके पट् पट् शब्दसे उत्तेजित हो समस्त वनको थर्रा देता और जोरसे गरजता हुआ आततायी पर टूट पड़ता है। सिंहकी कटि बहुत पतली होती है। केशर इसका विशेष अलङ्कार है। केशर रहनेसे ही यह इतना सुन्दर, सुश्री और गाम्भीर्यपूर्ण दिखाई देता है। केशर यदि नहीं रहता, तो सिंह पशुराज नहीं कहलाता। सिंहको जब क्रोध होता है, तब उसके केशर फूल जाते हैं। सिंहकी वह क्रोधोद्दीप्त मूर्ति एक भयङ्कर दृश्य है।

सिंहनी एक समय तीन चार बच्चे जनती है। नवजात शावककी आंखें नहीं फूटतीं, दश पन्द्रह दिनके बाद वे दृष्टिशक्ति लाभ करते हैं। सिंहकी क्षमताके सम्बन्धमें बहुत-सी कहानियां प्रचलित हैं। बिल्ली जिस प्रकार चूहेको मुखसे पकड़ कर ले जाती है, उसी प्रकार सिंह भी बड़े बड़े बैल और भैंस आदिका शिकार कर उन्हें अपनी पीठ पर लाद बड़ी तेजीसे पांच सात कोस ले जा सकता है। इसमें वह जरा भी कष्टका अनुभव नहीं करता।

कुछ यूरोपीय शिकारी आफ्रिकामें सिंहके शिकारमें प्राण खो बैठे हैं। कमिं नामक एक अंगरेज शिकारी दक्षिण आफ्रिकामें सिंहका शिकार करने गया था। उसने सिंहके विषयमें जो एक कहानी लिखी है, वह इस प्रकार है—

"हम लोगोंने तीन गैंड़ेको मार एक सोतेके किनारे रख दिया था। जब रात हुई, तब मैं उस सोतेके पास गया। वहां देखा, कि मृत गैंडेके चारों ओर जंगली पशु झुंडमें आ कर जमा हो रहे हैं। मैंने समझा, कि ऐसा होनेसे हिंस्र जन्तु शीघ्र ही इस स्थान पर इकट्ठे हो जायेंगे। इसलिये मैंने फौरन अपने कम्बल, तकिये और बन्दूकको एक गड्ढेमें रख दिया। इसके बाद मैं धीरे धीरे उन जन्तुओंको देखने लगा। चांदिनी रात

थी, मैंने साफ साफ देखा, कि छः बड़े बड़े सिंह, दश बारह हायना और बीस पचीस सियार गैंडेको चारो ओरसे घिरे हुए हैं। दो चार सिंह गैंडेको खानेके लिये बैठे हैं, वे खाद्यको ले कर आपसमें लड़ते नहीं, किन्तु खानेके समय हायना और सियार झगड़ने लगे, एक दूसरेके मुंहसे मांस छीनने लगा। हायना सिंहके भयसे भोजन नहीं करते थे, किन्तु उनमें ऐसी सामर्थ्य भी न थी, कि वे सिंहके आहारमें बाधा डालें। सिंह इस प्रकार गैंडेके मांससे पेट भर कर धीरे धीरे कदम उठाये वनमें चले गये।"

भारतके सिंह प्रधानतः दो प्रकारके होते हैं। सौराष्ट्र और वङ्गीय। कोई कोई कहते हैं, कि सौराष्ट्र या गुजराती सिंहके केशर नहीं होते, पर यह उनकी भूल है। क्योंकि कितने गुजराती सिंह पकड़े गये हैं जिन्हें केशर भरपूर है। परन्तु जब तक उनकी उम्र अधिक नहीं बढ़ती, तब तक गुजराती सिंहके केशर नहीं होते हैं। केशरविशिष्ट होने पर भी वे अफ्रिकाके सिंहकी तरह सर्वाङ्गसुन्दर और पूर्णता लाभ नहीं कर सकते।

यद्यपि वङ्गदेशमें अभी और सिंह नहीं देखा जाता, तथापि एक समय सुन्दरवन आदि जङ्गल सिंहसे भरपूर रहते थे। इसीसे वङ्गीय सिंह नामक दूसरे प्रकारके सिंहकी नामोत्पत्ति हुई है। इस सिंहका वर्ण मृग जैसा और केशर फीका हल्दी रंगका होता है। अफ्रिकाके सिंहकी तरह इनमें गम्भीरता नहीं है। किन्तु बलविक्रममें ये अफ्रिकाके सिंहके समान हैं। केशर नहीं होनेसे इनका व्याघ्रका सा भ्रम होता है। ये आजकल सिन्धुदेश, राजपूताने और ग्वालियरके राज्यमें ग्रीष्मके समय देखे जाते हैं।

भारतवर्षसे, केवल भारतवर्ष ही नहीं, पृथ्वीके अन्यान्य देशोंसे भी सिंहका वंश क्रमशः निर्मूल होता आ रहा है। जिन सब स्थानोंमें पहले सैकड़ों सिंह रहते थे, अभी उन सब स्थानोंमें एक भी सिंह नजर नहीं आता। इस कारण बहुतेरे अनुमान करते हैं, कि जिस प्रकार मैमथ आदि पशु पृथ्वीसे बिलकुल लोप हो गये हैं, उसी प्रकार सिंह भी दो एक सदीके मध्य पृथ्वीसे लोप हो जायंगे

सिंहको घरमें लालन पालन करनेसे वह ठीक बिल्लीकी तरह पोस मानता है। सिंहकी चर्बी वातरोगके औषधरूपमें व्यवहृत होती है।

भावप्रकाशके मतसे सिंह, व्याघ्र आदि जन्तु गुहाशय कहलाते हैं। मांसका गुण—वातहर, गुरु, उष्ण, मधुर, स्निग्ध, बलकारक, नित्य और गुह्यरोगोंके पक्षमें विशेष हितकर है। (भावप्रकाश)

पदके अन्तमें यह शब्द श्रेष्ठार्थवाचक है अर्थात् पदके शेषमें यह शब्द रहनेसे श्रेष्ठ अर्थ समझा जाता है। पुरुषसिंहसे पुरुषश्रेष्ठ समझा जाता है।

२ अर्हतोंका ध्वज, वर्त्तमान अवसर्पिणीके २४वें अर्हत्‌का चिह्न जो जैन लोग रथयात्रा आदिके समय झंडों पर बनाते हैं। ३ रक्तशिग्रु, लाल सहिंजन। ४ वकुल वृक्ष, मौलसिरीका पेड़। ५ छप्पय छन्दका सोलहवां भेद। इसमें ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। ६ वास्तुविद्यामें प्रासादका एक भेद। इसमें सिंहकी प्रतिमासे भूषित बारह कोने होते हैं। ७ एक रागका नाम। ८ एक आभूषण जो रथके बैलोंके माथे पर पहनाते हैं। ९ एक कल्पित पक्षी। १० वेङ्कटगिरिका एक नाम।

११ मेषादि बारह राशियोंके अन्तर्गत पांचवीं राशि, सिंहराशि। पर्याय—लेय। राशिचक्रके मध्य यह राशि पञ्चम है। इस राशिका अधिष्ठाता देवता सिंह है, इसीसे इस राशिका नाम सिंह हुआ है। मघा, पूर्व फल्गुनी और उत्तरफल्गुनी नक्षत्रोंके एक पाद तक एक राशि होती है। यह राशि ओज, विषम, स्थिर, क्रूर, पुरुष, अग्निराशि, शीर्षोदय, पुष्ट, दिनबली, धूम्रवर्ण, रविका क्षेत्र, केतुका मूल त्रिकोण, पूर्वदिक् स्वामी, पर्वत, वन, दुर्ग, गुहा, व्याध, अवनी, दुर्गम स्थान, इन सब स्थानोंमें विचरणकारी, क्षत्रियवर्ण, महाशब्द, अल्पसन्तान, अल्पस्त्रीसङ्ग, इस राशिमें जन्म लेनेसे जातक मांस और वनप्रिय, कुटुम्बकार्यरत, राजाके धनसे धनवान्, सिंहके समान मुखविशिष्ट, स्थितिमान्, सिंहके समान गम्भीरप्रकृति, अल्पभाषी, निर्लज्ज, लोभी, परदाररत, क्रोधी, सुहृद्युक्त, आमोदी, दुःखसहनशील, हतशत्रु, विख्यात, कृष्यादि कार्यों द्वारा धनवान्, नाना कार्योंमें व्यापृत, अधिक व्ययशील, वेश्या और नटीप्रिय होता है।

सिंहराशिका यही साधारण फल है। जातक यदि इस राशिमें जन्म ले और इस राशिमें यदि किसी ग्रहका योग या अन्य ग्रहकी दृष्टि न रहे, तो पूर्वोक्त फल सुफल होते हैं। ग्रहोंकी दृष्टि या योगसे कुछ परिवर्त्तन हुआ करता है, क्योंकि राशिका साधारण फल तथा ग्रहोंकी अवस्थितिका फल और ग्रहोंकी दृष्टिज फल ये सब एकत्र मिल कर फल देते हैं अतएव फलनिर्णय करनेमें राशिका साधारण फल, ग्रहावस्थानजन्य फल और दृष्टि फल ये सब अच्छी तरह देख कर फल निरूपण करना उचित है।

राशि और लग्नभिन्न सिंहराशिमें जब सूर्य पहुंचते हैं, तब उस समयको सिंहलग्न कहते हैं। 'राशीनामुदयो लग्नं' राशियोंके उदयका नाम लग्न है। उदयका अर्थ सूर्य होता है, जब सूर्य वहां जाते हैं, तब राशियोंका उदय होता है, तब वे सब लग्न कहलाते हैं। जिस राशिमें सूर्य उदय होते हैं, उस राशिको सातवीं राशिमें सूर्य अस्त होते हैं। अतएव दिनके मध्य सात लग्नोंका उदय होता है। इन सब लग्नोंका परिमाण है, उस परिमाण काल तक सूर्य उस राशिका भोग करते हैं। यही सूर्यकी दैनिक गति है। रात्रिकालमें भी उसी प्रकार सात लग्नोंका उदय हुआ करता है। देशभेदसे लग्नमानमें भी कुछ कमी-बेशी होती है।

इस सिंहलग्नमें यदि किसीका जन्म हो, तो वह भोगी, शत्रुविमर्द्दक, स्वल्पोदर, अल्पपुत्र, गजविक्रम और उत्साहयुक्त होता है। (कोष्ठीप्रदीप)

सिंहकर्णी (सं० स्त्री०) वाण चलानेमें दाहिनी हाथकी एक मुद्रा।

सिंहकर्म्मन् (सं० पु०) सिंहके समान वीरतासे काम करनेवाला, वीर पुरुष।

सिंहकेतु (सं० पु०) एक बोधिसत्त्वका नाम।

सिंहकेलि (सं० पु०) १ प्रसिद्ध बोधिसत्त्व मञ्जुघोषका एक नाम। २ सिंहकी क्रीड़ा, सिंहका खेल।

सिंहकेशर (सं० पु०) १ बकुलवृक्ष, मौलसिरी। २ सिंहकी गर्द्दनके बाल। ३ एक प्रकारकी मिठाई, सूत फेनी, काता।

सिंहग (सं० पु०) शिव।

सिंहगढ़—बम्बई-प्रदेशमें पूना जिलेके मध्यमें अवस्थित एक प्राचीन पहाड़ी दुर्ग। यह पूनानगरसे दक्षिण-पश्चिम १२ मील दूर सिंहगढ़-भूलेश्वर नामक पर्वतश्रेणीकी सबसे ऊंची चोटी पर अवस्थित है। यह चोटी समुद्रकी तहसे ४३२२ फुट तथा आस-पासकी समतलभूमिसे २३०० फुट ऊंची है। सिंहगढ़का उत्तरी और दक्षिणी अंश दुर्गम पर्वतसे घिरा है, यह पर्वत प्रायः आध मील ऊंचा खड़ा है। दो दरवाजेसे दुर्गमें जाना होता है। एकका नाम पुना और दूसरेका नाम कल्याणद्वार है। प्रायः दो मील तक दुर्ग चारों ओरसे मजबूत पत्थरकी दीवारसे घिरा है। इस दीवारमें बहुतसे गुम्बज हैं। युद्धके समय इन सब गुम्बजोंसे शत्रुके ऊपर अस्त्रादि फेंके जाते थे। दुर्गका उत्तरांश अत्यन्त दृढ़ और मजबूत है, किन्तु दक्षिणांश वैसा नहीं है। इसी कारण अंगरेजोंने १८१८ ई०में इस अंशसे दुर्ग पर चढ़ाई कर दी थी। दुर्गके प्राचीरवेष्टित त्रिकोण भूमिखण्डके मध्य आज कल बहुतसे बंगले बनाये गये हैं, पूनाके अंगरेज कर्मचारी ग्रीष्मकालमें स्वास्थ्यलाभके लिये इन्हीं सब बंगलेमें आ कर ठहरते हैं।

पूर्व यह दुर्गमें कोनवान नामसे प्रसिद्ध था। पीछे १६४७ ई०में महाराष्ट्रवीर छत्रपति शिवाजीने इस दुर्गको अधिकार कर इसका सिंहगढ़ नाम रखा। १३४० ई०में दिल्लीके सम्राट् महम्मद तुगलकने सिंहगढ़ पर चढ़ाई की थी। इसके बाद १४८६ ई०में अहमदनगर राजवंशके प्रतिष्ठाताने जब शिवनेर दखल किया, तब यह दुर्ग उनके हाथ आया था। अनन्तर १६४७ ई०में सिंहगढ़के किलेदारको वशीभूत कर शिवाजीने यह दुर्ग अधिकार किया था। शिवाजीके समयमें ही सिंहगढ़ नामसे इसकी प्रसिद्धि हुई थी। १६६२ ई०में मुगलसेनापति साइस्ता खांने जब दलबलके आ कर पूना पर धावा बोल दिया, तब शिवाजी सिंहगढ़ भाग गये और इसी सिंहगढ़से उन्होंने पूनामें साइस्ता खां पर एकाएक आक्रमण कर दिया। ऐतिहासिक पाठकोंके निकट शिवाजी और साइस्ता खांका युद्ध चिरपरिचित है। शिवाजी शब्द देखो। १६६५ ई०में मुगलोंने फिरसे सिंहगढ़ पर छापा मारा। शिवाजी उनको अधीनता स्वीकार करनेको बाध्य हुये। १६७०

ई०में शिवाजीके प्रसिद्ध सेनापति तानाजीने फिरसे यह दुर्ग अपनाया। इस दुर्गके आक्रमण कालमें वीर तानाजीने असाधारण क्षमता और साहस दिखलाया था। उनकी वीरत्व कहानी महाराष्ट्रदेशके इतिहासमें ज्वलन्त भाषामें लिखी है। पीछे औरङ्गजेबने स्वयं १७०३ ई०में इस दुर्गमें घेरा डाला। साढ़े तीन महीने तक घेरा डाले रहनेके बाद उसने दुर्गको अधिकार कर लिया। सिंहगढ़ नाम बदल कर औरङ्गजेबने इसका 'बकिसन्दावक्स' (ईश्वरका दान) नाम रखा। १७०६ ई०में मुगलसेना जब पूनाका परित्याग कर विजापुर चली गई, तब शाम्भरजी सचिव नामक एक मराठा-दलपतिने सिंहगढ़ तथा अन्यान्य दुर्ग फिरसे दखल कर लिये। उस समयसे ले कर १८१८ ई० तक सिंहगढ़ मराठोंके अधीन रहा। १८१८ ई०में जेनरल प्रिजलरने मराठा युद्धकालमें यह दुर्ग आक्रमण कर अंगरेजोंके अधिकारमें कर लिया था।

सिंहगिरि (सं० पु०) एक विख्यात आचार्य। महाराज बल्लालसेनको इन्होंने शैव मन्त्रमें दीक्षित किया था।

सिंहगिरीश्वराचार्य (सं० पु०) एक आचार्य। ये शाङ्कर सम्प्रदायके छठे आचार्य थे।

सिंहगुप्त (सं० पु०) १ राजभेद। २ वैद्यकग्रन्थके प्रणेता वाग्भटके पिता।

सिंहग्रीव (सं० त्रि०) जिसकी गर्दन सिंहके समान हो।

सिंहघोष (सं० पु०) एक बुद्धका नाम।

सिंहचन्द्र (सं० पु०) एक बौद्धाचार्यका नाम।

सिंहचित्रा (सं० स्त्री०) माषपर्णी, मषवन।

सिंहच्छदा (सं० स्त्री०) श्वेतदूर्वा, सफेद दूब।

सिंहतल (सं० पु०) कृताञ्जलि, दोनों हाथ जोड़ना।

सिंहताल (सं० पु०) सिंहतल, कृताञ्जलि। (हेम)

सिंहतुण्ड (सं० पु०) १ सेहुण्डवृक्ष, स्नुही, थूहर। २ मद्गुरमत्स्य, मोंगरी मछली। दैव और पैत्र कर्ममें यह मछली खाई जा सकती है। (मनु ५।१६) (क्ली०) ३ सिंह मुख।

सिंहतुण्डक (सं० पु०) सिंहतुण्ड देखो।

सिंहदंष्ट्र (सं० पु०) १ असुरभेद। २ शवरराजभेद।

सिंहदत्त (सं० पु०) असुरभेद। (कथासरित्सा०)

सिंहदेव (सं० पु०) राजभेद। (राजतर० ८।१८३६)

सिंहद्वार (सं० क्ली०) प्रवेशद्वार, सदर फाटक जहां सिंहकी मूर्त्ति बनी हो।

सिंहध्वज (सं० पु०) बुद्धभेद।

सिंहध्वनि (सं० पु०) १ सिंहका शब्द। २ सिंहनाद सदृश शब्द। (कुमार १।५७)

सिंहनन्दन (सं० पु०) संगीतमें तालको साठ मुख्य भेदोंमेंसे एक।

सिंहनाद (सं० पु०) सिंहस्येव नादः। १ सिंहको गरज। २ युद्धमें वीरोंकी ललकार। ३ सत्यताके निश्चयके कारण किसी बातका निःशङ्क कथन, जोर दे कर कहना ललकारके कहना। ४ शिव, महादेव। ५ रावणके एक पुत्रका नाम। ६ एक प्रकारका पक्षी। ७ संगीतमें एक ताल। ८ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें सगण, जगण, सगण और एक गुरु होता है, कलहंस, नन्दिनी।

सिंहनादक (सं० पु०) सिंह इव नदतीति नद ण्वुल्। शुकार, सिंघा नामक बाजा।

सिंहनादगुग्गुलु (सं० पु०) आमवातरोगाधिकारोक्त औषधविशेष। इस औषधका सेवन करनेसे वड़वानलके समान अग्निकी वृद्धि होती है; आमवात, शिरोवात, सन्धिवात, जानु और जङ्घाश्रितवात, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, तिमिर, उदरी, अम्लपित्त, कुष्ठ और प्रमेह आदि रोग नष्ट होते हैं। (भैषज्यरत्ना०)

सिंहनादनादिन् (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

सिंहनादलोकेश्वर—तान्त्रिक बौद्धोंके पूजित एक बोधिसत्त्वका नाम।

सिंहनादिका (सं० स्त्री०) दुरालभा, जवासा, धमासा।

सिंहनादिन् (सं० पु०) १ मारके एक पुत्रका नाम। (ललितवि०) (त्रि०) २ सिंहके समान गरजनेवाला।

सिंहनी (सं० स्त्री०) १ सिंहको मादा, शेरनी। २ एक छन्दका नाम। इसके चारों पदोंमें क्रमसे १२, १८ २० और २२ मात्राएं होती हैं। अन्तमें एक गुरु और २०, २० मात्राओं पर १ जगण होता है। इसके उलटेको गाहिनी कहते हैं।

सिंहपन्थी (सं० पु०) धर्मसम्प्रदायभेद।

सिंहपत्रा (सं० स्त्री०) माषपर्णी, मषवन।

सिंहपराक्रम (सं० पु०) १ सिंहके समान पराक्रम। (त्रि०) २ सिंहके समान पराक्रमशाली।

सिंहपर्णी (सं० स्त्री०) सिंहपर्णिका, वासक।

सिंहपिप्पली (सं० स्त्री०) सैंहली।

सिंहपुच्छ (सं० पु०) पृश्निपर्णी, पिठवन।

सिंहपुच्छिका (सं० स्त्री०) चित्रपर्णिका।

सिंहपुच्छी (सं० स्त्री०) १ चित्रपर्णिका। २ पृश्निपर्णी, पिठवन। ३ माषपर्णी, मषवन।

सिंहपुर (सं० क्ली०) १ सारनाथके आस-पासका एक प्राचीन ग्राम। (ब्रह्मख० ५६।३३) २ मगधके बीचका एक प्राचीन जनपद। (जैन हरि० ६३।४) ३ मिथिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। (जैन हरि० ३४) ४ महावंशवर्णित राढ़ देशकी एक प्राचीन राजधानी।

सिंहपुर (सिंहपुरम्)—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके विजागापाटम् जिलेके जयपुर राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० १८° ३´ १६´´ उ० तथा देशा० ८२° ४३´ १६´´ पू० नागपुर आनेके वाञ्चारा नामक पथके रास्ते पर विशेमकटकसे ३१ मील पश्चिममें अवस्थित है।

सिंहपुरुष (सं० पु०) जैनियोंके नौ वासुदेवोंमेंसे एक वासुदेव।

सिंहपुष्पी (सं० स्त्री०) पृश्निपर्णी, पिठवन।

सिंहपौर (हिं० पु०) सिंहद्वार, सदर फाटक जिस पर सिंहकी मूर्त्ति बनी हो।

सिंहभद्र (सं० पु०) एक बौद्धाचार्यका नाम।

सिंहभूपाल—सह्याद्रिवर्णित एक राजाका नाम।

सिंहभूम—विहार और उड़ीसाका एक जिला। यह छोटानागपुर विभागके दक्षिण पूर्व अक्षा० २१° ५८´ से २२° ५४´ उ० तथा देशा० ८५° ०´ से ८६° ५४´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३८९१ वर्गमील है।

इसके उत्तर लोहारडंगा और मानभूम जिला, पूरब मेदिनीपुर जिला, दक्षिण उड़ीसा विभागका सामन्त राज्य तथा पश्चिम छोटानागपुर विभागका देशी राज्य और लोहारडंगाका कुछ अंश है। इस जिलेके चारों ओर शैलश्रेणी विराजित हैं। उसी शैलमालाको ले कर इस जिलेकी सीमा निर्दिष्ट हुई है, किन्तु पर्वतका पृथक् पृथक् नाम न रहनेके कारण सीमानिर्देशमें बड़ी असुविधा होती है। उत्तर दो गण्डशैलके बीचमें सुवर्णरेखा नदी प्रायः १५ मील तक जिलेके सीमारूपमें बह गई है। इस प्रकार यह नदी जिलेके दक्षिण कुछ स्थानोंमें बहती हुई उड़ीसाके अन्तर्गत मयूरभञ्ज राज्यको पृथक् करती है। पश्चिमसे केउञ्झर राज्यसे निकली हुई वैतरणी नदी भी इस जिलेके तथा केउञ्झर राज्यके सीमारूपमें ८ मील चली गई है।

अंगरेज गवर्मेण्टकी कोलहान या हो-देश नामकी सम्पत्ति, धलभूम परगना तथा पोड़ाहार, सरायकिला और खरसोंया नामक देशी राज्य ले कर यह जिला संगठित हुआ है। शेषोक्त तीनों भूसम्पत्तिका राजस्व अधिक नहीं होने पर भी वहांके जमींदार अंगरेज गवर्मेण्टके साथ राजकीय सम्बन्धमें आवद्ध हैं। चाइबासा नगर यहांका विचार-सदर है।

जिलेका मध्यभाग एक विस्तीर्ण नतोन्नत भूमि है। यह प्रान्तर देश मानो पूर्वभागके पहाड़ी प्रदेशसे तरङ्गायित हो कर क्रमशः पश्चिमके शैलमयदेशमें मिल गया है। दक्षिण, उत्तर और जिलेके मध्य भागमें भी गण्डशैलमाला ऊंची चोटी ले कर खड़ी है। इस ऊंचे पहाड़ी अधित्यकाप्रदेशके निम्न प्रदेशको स्तवकके आकारमें काट कर वहांके लोग वहां धान रोपते हैं। हजारीबाग और लोहारडंगा जिलेमें भी इसी प्रकार खेतीबारी होती है। पहाड़ी उपत्यका प्रदेशोंको इस तरह काटनेका कारण यह है, कि उच्च अधित्यका पृष्ठ परसे गिरी हुई जलकी धारा पर्वतके ढालवें भाग हो कर नीचे नदीमें जाने नहीं पाती। इसके सिवा वहांके लोग वर्षाकालमें ऊपर जो सब बांध तैयार करते हैं, खेतोंमें जलकी जरूरत होने पर कभी कभी उस बांधसे जल खोल दिया जाता है। वह जल नलीके मुखसे ऊपरके खेतोंमें आता है। जब पहला स्तवक भर जाता, तब एक एक कर सभी स्तवक भर जानेसे खेतमें तमाम जल हो जाता है।

चाइबासाके पश्चिम अङ्गारबाड़ी शैलप्रान्तसे पूरब सुवर्णरेखा नदी तक विस्तृत भूमिखण्ड उर्वरा और शस्यशालिनी है। यह स्थान वनमालाशून्य और साधारणतः ऊंचा है। सुवर्णरेखाका तट समुद्रपृष्ठसे ५०० फुट ऊंचा हो कर क्रमशः चाइबासाके निकट ७५० फुट ऊंचा हो

गया है। खेतीबारी, मिट्टीकी उर्वरता और प्राकृतिक संस्थान देखनेसे इस प्रान्तके साथ मूल छोटानागपुरका बहुत कुछ मेल खाता है।

जिलेके दक्षिण ७०० वर्गमील विस्तृत एक विस्तीर्ण अधित्यका भूमि है। वह सभी जगह समुद्रपृष्ठसे १३०० ऊंची है। दक्षिण दिशाकी यह ऊंची भूमि क्रमशः उन्नत हो कर केउंझर राज्यकी पर्वतमालामें मिल गई है। पश्चिमांशमें छोटानागपुर सीमान्तका पहाडी प्रदेश है। वनराजिसमाकीर्ण विस्तीर्ण इस शैलके निभृत कन्दरमें असभ्य कोल जाति रहती है। जातिविद् कर्नेल डालटन-का कहना है, कोल लोग इस पहाडी भूमिसे क्रमशः सिंहभूमिके निम्न प्रान्तरमें आ कर बस गये हैं।

सिंहभूममें जितनी पर्वतमाला हैं, वे सभी कोणाकार और चूडावलम्बी हैं। वे इतने ढालवें हैं, कि उन पर चढ़ना बहुत कठिन है। पर्वत साधारणतः वनमाला-च्छादित है। केवल जिलेके मध्यस्थलमें जो विस्तृत उर्वरा अधित्यका भूमि पडी हुई है, उसीका सीमान्तवर्त्ती सानुदेश परिष्कृत हो कर कृषिकार्यके योग्य हो गया है।

सुवर्णरेखा ही यहांकी प्रधान नदी है। कर्कई और सञ्जय उसकी दो शाखा हैं। कोयल, उत्तर और दक्षिण करो नदी, कोइना नामक नदी, ये चारों सारण्ड नामक पार्वत्य प्रदेशकी अववाहिका भूमिकी जलराशि ले कर बहुत बडी हो गई हैं। पर्वतवक्षको भेद कर नदियोंके प्रवाहित होने तथा नदीवक्षमें जहां तहां बडे बड़े पत्थरोंके बांध होनेसे उसमें माल भर कर नावोंका जाना बिलकुल असम्भव है।

यहां कोई खाल, हद या स्वाभाविक बांध नहीं है। खेतीबारीकी सुविधाके लिये नीची जमीनमें बांधसे जल रोक रखा गया है। खेतोंमें जब जलकी जरूरत होती है, तब उन सब बांधोंका मुंह काट कर जल निकाला जाता है। वृष्टिपातके अभावमें ऐसे कृत्रिम उपायसे ही जलका काम चलता है।

गिरिश्रेणियों और भूपृष्ठ पर प्रचुर खनिज लौह देखा जाता है। इस स्थानकी मिट्टी काली है। मिट्टी खोदने-से नीचे लोहा मिलता है। पहाडी नदियोंसे जो बालू लाया जाता है, उसमें सोनेके कण पाये जाते हैं। सुवर्ण रेखा नदीमें ऐसे सोनेके कणें अधिक हैं। नदीतटवासी जातियां नदी जलसे सोना निकालती हैं सही, पर उससे बडी मुश्किलसे वे अपनी जीविका चलाती हैं।

धलभूमके पर्वत पादमूलमें तांबेकी खान है। जिलेमें सभी जगह चून पत्थरके कंकड़ देखे जाते हैं। उसे घुटिं भी कहते हैं। उसे जलानेसे जो चूना निकलता है, उसकी दूसरी जगह रफतनी नहीं होती, आस-पासमें ही खपत हो जाती है।

स्लेट पत्थर और भिन्न भिन्न रंगकी पथरीली मिट्टी यहां बहुत पाई जाती है। कहीं कहीं सोपस्टोन भी देखा जाता है। उसके द्वारा कटोरे, थालियां, गिलास आदि बरतन बनाये जाते हैं।

यहांके वनोंमें कोल, ओरांओन आदि असभ्य जातियोंकी वासभूमि है। बहुत पहलेसे इन सब अरण्योंके निभृत निकेतनमें अनार्यगण विचरण करते आ रहे थे। आज भी वहां उनकी संख्या उतनी कम नहीं है। इस जिलेका प्रायः अधिकांश स्थान जङ्गलोंसे भरा हुआ है। उन जङ्गलोंमें शाल, असन, गंभार, कुसुम, तुन, पियासाल, शीशम, केंद, जामुन आदि बडे बडे पेड लगते हैं। व्यवसायी उनकी लकडियां काट कर बिक्री करते हैं। यहां लाख, मोम, छेवे नामकी लता और बबुई घास मिलती है। बबुई घाससे रस्सी बनाई जाती है। इसके सिवा यहां तरह तरहके भेषजादिके मूल और फल मिलते हैं। मूल असभ्य जातियां खाती हैं।

बाघ, चीता, भालू, भैंस और नाना प्रकारके हरिन यहांके प्रधान जंगली जन्तु हैं। मयूरभञ्जके मेघासनि शैलके वनप्रदेशसे छोटे छोटे हाथियोंका दल प्रायः सीमान्तको पार कर सिंहभूममें विचरण करता है। यहां भिन्न भिन्न जातिके पक्षी और सर्प देखे जाते हैं।

सिंहभूम जिलेका कोई प्राचीन इतिहास नहीं मिलता। हिंदूराजाओंके अमलमें यह जिला छोटे छोटे विभागोंमें विभक्त था। एक एक परगना या देशभाग एक एक सरदार या सामन्तके अधीन रहता था। उक्त देशी सामन्तगण पीछे घाटवाल या पार्वत्य-पथरक्षक कह कर परिचित हुए। धलभूम, सरगुजा, सरायकिला, पोड़ाहाट आदि स्थानोंका इतिहास पढनेसे यह सहजमें

ज्ञाना जाता है। अङ्गरेजी अधिकारमें इनमेंसे कोई कोई राजाकी उपाधिसे सम्मानित हुए और कोई कोई साधारण जमींदार कहलाये । किन्तु स्थानीय लोगोंके निकट राजाके तौर पर ही उनका सम्मान होता था। अङ्गरेजी शासनके पहले इनमेंसे कोई कोई दिल्लीके मुसलमान राजाओंके अधीन करद मित्रराज्य समझे जाते थे। १८०३ ई०में सबसे पहले अङ्गरेज गवर्मेण्ट के साथ यहांके राजपूत राजवंशकी मित्रता स्थापित हुई। उसी साल अङ्गरेज-राजप्रतिनिधि मार्क्विस आव वेलेस्लीने सिंहभूमके राजकुमार अभिरामसिंह, को मित्रभावमें एक पत्र लिखा। इसका कारण यह था, कि इसके पहले कुमार अभिराम सिंहने वर्गीके उपद्रवमें अङ्गरेज-गवर्मेण्टकी सहायता देनेका वचन दिया था। इस सरायकिलाराजका राज्य उस समय इष्टइण्डिया कम्पनीके अधिकृत जङ्गल महलके ठीक बगलमें ही था, इसी कारण इष्टइण्डिया कम्पनी उनके साथ सद्भाव रखती थी। नागपुरपति रघुजी भोसले दल बलके साथ आ रहे हैं, यह समाचार पा कर गवर्नर जेनरल मार्क्विस वेलेस्लीने उन्हें पत्र लिख सहायताके लिये पूर्व प्रतिश्रुतिकी बात याद दिला दी। किन्तु १८१९ ई०के पूर्व पर्यान्त कोलहान जातिके साथ किसी अंगरेज कर्मचारीकी मित्रता न थी।

१८२० ई०में पोड़ाहाटके राजाने अंगरेज गवर्मेण्टको अधीनता स्वीकार की और उन्हें कुछ वार्षिक कर देनेको राजी हुए। सिंहभूमके राजाओं और जमींदारोंके अनुरोधसे १८२० ई०में कोलविद्रोहके कारण मेजर राफसेजने अश्वारोही पदातिक और कमानवाही सेनादल ले कर कोलराज्यमें प्रवेश किया। उन्होंने अच्छी तरह समझा बुझा कर कोलोंको राजाका अधीनता स्वीकार करनेकी कोशिश की। वे लोग ऐसा करनेसे राजी हो गये।

अंगरेजीसेनाके सिंहभूमसे चली जानेके बाद ही उत्तर और दक्षिण पीड़के लड़काओंमें युद्ध छिड़ गया। इस युद्धमें अंगरेज गवर्मेण्टने उत्तर पीड़के लड़काओंकी सहायतामें १०० हिन्दुस्थानी इरेगुलर सेना भेजी। दक्षिण पीड़के लड़काओंने अंगरेजी सेनाको परास्त कर सिंहभूमसे निकाल भगाया।

१८२१ ई०में दुद्ध र्ष लड़का[illegible]दमन करनेके लिये बहुत-सी सेना ले कर एक सेनादल संगठित हुआ। वे लोग क्रमागत एक मास युद्ध करके भी कोलोंका दमन न कर सके। आखिर अंगरेज गवर्मेण्टके आश्वासवाक्यसे उत्साहित हो लड़का सरदारोंने अपनी खुशीसे अंगरेजोंके हाथ आत्मसमर्पण किया तथा सिंहभूमके अन्यान्य राजाओंको वे वार्षिक कर देनेके लिये राजी हुए। अंगरेज गवर्मेण्टके उक्त अनुशासन बलसे कोल लोग पथघाटको सर्वदा निरापद और पथिकोंके जाने आने लायक रखने तथा पलायित राजद्वेषी शत्रुको अंगरेज या राजाके हाथ समर्पण करनेमें प्रतिज्ञाबद्ध हुए। यह भी शर्त्त थी, कि देशी सामन्तराजे अथवा सर्दार यदि उन लोगोंके प्रति कोई अत्याचार भी करें, तो वे कभी राजाके विरुद्ध अस्त्रधारण नहीं कर सकते। सीमान्तप्रदेशके अंगरेज सेनापति या किसी दूसरे अंगरेज कर्मचारीके निकट वह अत्याचार कहानी निवेदन करनेसे ही उसकी यथोपयुक्त मीमांसा और विचार होगा।

इस घटनाके बाद प्रायः दो वर्ष तक कोलराज्यमें और किसी प्रकारका विप्लव खड़ा नहीं हुआ। ऐसा मालूम होता था, कि कोलोंने मानो अंगरेजोंकी न्यायसङ्गत मीमांसासे सम्पूर्ण शान्तभाव धारण कर लिया है। इसके बाद वे लोग फिर बागी हो गये, आस-पासके स्थानोंमें लूट-पाट मचाने लगे। १८३१-३२ ई०में नागपुरके कोल विद्रोहमें उन्होंने साथ दिया और अंगरेजी शासनकी उपेक्षा की। कोल जातिका यह अवैध आचरण देख कर ननरेगुलेशन प्राभिन्सके एजेण्ट विलकिन्सन साहबने गवर्नर जेनरलको सूचित किया, कि कोलोंको सम्पूर्णरूपसे परास्त करना ही श्रेयस्कर है तथा उन्हें देशी सरदारोंके अधीन न रख कर अंगरेज गवर्मेण्टके अधीन रखना ही युक्तिसंगत है। उनके प्रस्तावानुसार सिंहभूममें एक दल सेना रख कर अधिवासियोंको वहां अंगरेज कर्मचारीके शासनाधीन रखनेकी व्यवस्था की गई। तदनुसार १८३६ ई०में चाइबासामें कर्नल रिचार्डशन अंगरेजी सेनाके साथ वहां पहुंचे। दूसरे वर्षके फरवरी मासमें कोलदलपति अङ्गरेजगवर्मेण्टको अधीनता

स्वीकार कर सन्धि शर्तोंमें आबद्ध रहनेसे राजी हुए। इस वर्षसे ले कर १८५७ ई०के गदर तक यहां और किसी प्रकार विप्लव नहीं हुआ। उसी साल पोड़ाहाटके राजाने अंगरेजोंके विरुद्ध अस्त्र धारण किया। इस समय बहुतसे कोल उनके दलमें मिल गये। बस फिर क्या था, दोनोंमें घमसान युद्ध छिड़ गया। ज्यों ही अंगरेजी सेना वीरदर्पसे कोलों पर समतलक्षेत्रमें आक्रमण कर पीछे हटाती थी, त्यों ही वे लोग पर्वतके निभृत निकेतनमें जा कर आश्रय लेते थे। इस प्रकार लगातार कई युद्धोंमें दोनों पक्षकी महती क्षति हुई। इसके बाद १८५९ ई०में कोलगण आत्मसमर्पण करनेमें बाध्य हुए और पोड़ाहाटका राजा कैद किया गया। इसके बाद कोलोंने और किसी प्रकारका ऊधम नहीं मचाया।

इस समयसे सिंहभूममें जिन सुविज्ञ न्यायविचारक राजकर्मचारियोंने शासनभार ग्रहण किया था, उनके सुप्रबन्धसे दुर्द्धर्ष कोलजाति धीरे धीरे सभ्य और नम्र स्वभाव हो होती गई। कोलहान प्रदेशके प्रत्येक ग्रामवासीके पास उन सब शासनकर्त्ताओंके नाम और दयाकी बात आज भी सुनी जाती है। अंगरेजोंके यत्न और सहवाससे कोलगण बहुत नम्र और सुसभ्य हो गये हैं। अभी उनमेंसे बहुतेरे शिक्षित हैं। चाइबासाके विद्यालयमें कोई कोई किरानीका काम करता है। मिशनरियोंके यत्नसे कितने ईसा-धर्ममें दीक्षित हुए हैं। अभी वे पथघाटकी उपयोगिता समझ कर स्वयं पथघाट तैयार कर लेते हैं तथा एक एक मुण्डा या दलपतिके अधीन वे कुओंका काम स्वयं करते हैं।

यहां जितनी आदिम जातियोंका वास है, उनका साधारण संज्ञा कोल हुई है, किन्तु यथार्थमें वह नहीं है। कोल एक स्वतन्त्र जाति है। इसके सिवा हो या लड़का कोल, मुण्डा, भूमिज, खरवार आदि भिन्न भिन्न जातियां इसके अन्तर्भुक्त मानी जाती हैं। ओरांओन, संताल और गोंड जाति स्वतन्त्र हैं।

विशेष विवरण उन्हीं सब शब्दोंमें देखो।

इसमें चाइबासा नामक एक शहर और ३१५० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ६ लाखसे ऊपर है। निम्न श्रेणीके हिन्दुओंमें यहां ग्वाला, तांती और कुर्मीको संख्या ही अधिक है। मथुरावासी ग्वाले और कुर्मी बड़े उत्साहसे खेतीबारी करते हैं तथा वे स्वयं शामिल हो कर जिलेके अनेक जंगलों और परती जमीनको परिष्कार कर यहां धानकी फसल उपजाते हैं। धानके सिवा यहां गेहूं, जुनहरी, मटर, उड़द, चना, सरसों, ईख, रूई और तमाकू आदि उत्पन्न होते हैं। कोल लोग महुएके फूलसे नाना प्रकारके खाद्य तैयार कर लेते हैं। महुएके फूलसे एक प्रकारकी शराब भी बनती है। चाइबासा, खर्सावान्, सरायकिला और बहार-गड़हा यहांके प्रधान वाणिज्य स्थान हैं। नाना प्रकारके शस्य, तेलहन, लाख, लोहे, टसरके कोश यहांसे नाना स्थानोंमें भेजे जाते हैं। बेङ्गाल नागपुर रेलवेके इस जिलेमें कई स्टेशन हैं। उनमेंसे चक्रधरपुर सर्वप्रधान है। यहांसे चाइबासा १६ मील दूर पड़ता है। चाइबासा देखो।

विद्याशिक्षामें लोगोंका ध्यान उतना नहीं गया है। सैकड़े पीछे तीन मनुष्य पढ़े लिखे मिलते हैं। स्कूलकी संख्या कुल मिला कर ४४० है, जिनमेंसे १५ सिकण्डरी, ४१० प्राइमरी और १५ स्पेशल स्कूल हैं। स्कूलके अलावा दो अस्पताल भी हैं जिनमेंसे एकमें १५ रोगी रखे जाते हैं।

सिंहमनि (सं० पु०) मारपुत्रविशेष।

सिंहमल (सं० पु०) एक प्रकारको धातु या पीतल, पञ्चलौह।

सिंहमाया (सं० स्त्री०) मायाभेद। (हरिवंश)

सिंहमुख (सं० पु०) १ राक्षसभेद। २ शिव। (त्रि०) ३ सिंहके समान मुखवाला।

सिंहमुखी (सं० स्त्री०) १ वासक, अडूसा। २ वंशवास। ३ कृष्ण निर्गुण्डी, काला संभालू। ४ धारा सिट्टी। ५ वन उड़दी।

सिंहयाना (सं० स्त्री०) दुर्गा। भगवती दुर्गाका वाहन सिंह है, इसलिये इनका नाम सिंहयाना है।

सिंहरथा (सं० स्त्री०) दुर्गा।

सिंहरव (सं० पु०) १ सिंहनाद, सिंहध्वनि। (त्रि०) २ सिंहके समान गरजनेवाला।

सिंहराज (सं० पु०) १ काश्मीरके एक राजाका नाम। (राजतर० ६।१७३) २ एक प्राकृतिक व्याकरणके रचयिता।

सिंहर्षभ (सं० पु०) १ सिंहश्रेष्ठ। २ शूरश्रेष्ठ।

सिंहल (सं० पु० क्ली०) १ देशविशेष, सिंहल देश। श्रीमद्भागवतमें लिखा है, कि यह सिंहलद्वीप प्रसिद्ध आठ द्वीपविशिष्ट जम्बूद्वीपमेंसे एक है। उन आठ द्वीपोंके नाम ये हैं—स्वर्ण-प्रस्थ, चन्द्रशुक्र, आवर्त्तन, रमणक, मन्दहरिण, पाञ्चजन्य, सिंहल और लङ्का।
(भागवत ३।१६।२६-३०)

२ भारत महासागरका एक छोटा द्वीप। यह भारतवर्षके दक्षिण पूर्व रामेश्वरतीर्थके पास ही अवस्थित है। भारतभूमि और सिंहलके बीचमें जो समुद्रभाग पड़ता है, वह मन्नार उपसागर और पकप्रणाली नामसे प्रसिद्ध है। सुप्रसिद्ध रामेश्वर क्षेत्र और आदमस ब्रीज या सेतुबन्ध नामक छोटा द्वीप उक्त दोनों समुद्रको पृथक् करता है। यह अक्षा० ५' ५५' से ६' ५१' उ० तथा देशा० ७९' ४१' ४०" से ८१' ५४' ५०" पू०के मध्य विस्तृत है। उत्तर पामिरा पायेण्टसे ले कर दक्षिणमें ओण्डरा हेड तक यह २७१॥ मील लम्बा तथा पश्चिममें कलम्बो राजधानीके समुद्रप्रान्तसे पूर्व उपकूलके सङ्गमन-काण्डो तक १५७॥ मील चौड़ा है। मूल सिंहल और उसके आस पासको छोटे छोटे द्वीप ले कर भूपरिमाण २५७४२ वर्गमील है। द्वीप कोणाकार है और सूचीमुखाग्र उत्तरकी ओर ही विलम्बित है। समूचे द्वीपको परिधि प्रायः ६०० मील है।

सिंहलके समुद्रतटका प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोरम है। उत्तर पश्चिमका उपकूलदेश चौरबालू और जलगर्भस्थ शैलमालासे समाच्छन्न है। रामेश्वर और सेतुबन्ध नामक पर्वतजात द्वीप और जलगर्भस्थ शैलमाला द्वारा यह भारतवर्षके साथ मिला हुआ है। इससे मालूम होता है, कि एक समय यह भारतवर्षके साथ संश्लिष्ट था, पीछे समुद्रजल-स्रोतके आघातसे जलमय हो गया है। केवल भूपृष्ठस्थ पर्वत अपने स्थानसे मस्तक उठाये हुए हैं। भारत और सिंहलके मध्य इस प्रकारके शैल और द्वीपश्रेणी रहने पर भी इसके भीतरसे पोतादि ले जानेके लिये दो जलपथ हैं। उनमेंसे मन्नार नामक पथ केवल छोटी छोटी नावोंके जाने आने लायक है तथा भारतोपकूल और रामेश्वरके पास जो पम्बान नामक पथ देखा जाता है, वह बहुत रुपये खर्च कर गहरा बनाया गया है, इससे अर्णवपोत उसमें आसानीसे आ जा सकते हैं। मलबार उपकूलसे करमण्डल उपकूलमें जितने जहाज आते हैं, वे सभी इसी पथसे।

पश्चिम और दक्षिणोपकूल निम्न तथा बालूचर और शैलशृङ्ग द्वारा परिपूर्ण है। यहां नारियल और ताड़के पेड़ अधिक उत्पन्न होते हैं। समुद्रगर्भस्थ पोतसे उपकूलका श्यामल दृश्य बड़ा ही मनोरम लगता है। समुद्रके किनारे जहां तहां शैलखण्ड रहनेसे स्थानविशेषमें समुद्रका जल इस प्रकार घुस गया है, कि देशी नावें तूफान आदिके समय उसमें जा कर निरापद रह सकती हैं। दुःखका विषय है, कि सभी खाड़ीकी गहराई थोड़ी रहनेके कारण वहां जहाज आदि ठहरनेका उपयुक्त स्थान नहीं हैं। परन्तु जहां कुछ गहराई है भी, वहां एक एक बन्दर स्थापित हो गया है।

इस द्वीपका दक्षिणांश और मध्यभाग एक पर्वत द्वारा घिरा है तथा ४२१२ मील तक यह पहाड़ी जनपद फैला हुआ है। उसका पूरबी, दक्षिणी और पश्चिमी उपकूल नवगठित निम्नभूमि है तथा प्रायः ३० से ८० मील तक विस्तृत है। उत्तरमें कल्पितियासे बाट्टिकालोया पर्यन्त विस्तृत भूमिभाग समतल और नाना मूल्यवान् वृक्षपूर्ण वनमालासे आच्छन्न है।

सिंहलका यह पहाड़ी राज्य प्रत्नतत्त्वका एक अपूर्व केन्द्र है। स्वास्थ्य और देखनेयोग्य द्रव्यके हिसाबसे यह जनसाधारणका आदरणीय है। बौद्धोंका कीर्त्तिनिकेतन सुपवित्र अनुराधपुरीके पार्श्वस्थित महिन्ताल शैल और श्रीगिरि पार्थिव सौन्दर्यमें दाक्षिणात्य अधित्यकाके अनुरूप है।

पहले लोगोंकी धारणा थी, कि आदमस् पीक नामक शैलशृङ्ग ही सिंहलका सर्वोच्च पर्वत है। किन्तु अभी साबित कर देखा गया है, कि उसकी ऊंचाई सिर्फ ७३५२ फुट है। सिंहलका सर्वोच्च शिखर और पिदुरु तालागला ८२९५ फुट तथा किरिगल-पोता ७८३६ फुट ऊंचा है। इनमेंसे प्राचीन तीर्थक्षेत्र कह कर श्रीपादशैलका माहात्म्य सबसे अधिक है। नाना देशोंसे नाना जातिके तीर्थयात्री सभी समय यहां आया करते हैं। श्रीपादशैलके शिखर पर एक गह्वर है, यही यहांका प्रधान तीर्थ है। ब्राह्मणोंका कहना है, कि वह देवादिदेव

महादेव का पादचिह्न है। बौद्धोंके मतसे वहां शाक्यबुद्धने पदार्पण किया था। मुसलमान लोग उसे आदमका पद बतलाते हैं। फिर पुर्तगीज ईसाइयोंमें भी इस विषयमें मतभेद देखा जाता है। उनमेंसे कोई कोई कहते हैं, कि यह महात्मा सेण्ट टामसकी विहारभूमि है, फिर दूसरोंका कहना है, कि नहीं थियोफिया राजरानी काण्डी राजकुमारीके किसी खोजाकी कीर्त्ति है।

पर्वतके ऊपर जानेके आधे रास्तेमें एक सुसमृद्ध सङ्घाराम है। वहाके पुरोहित इस पथ और पर्वत-शिखरस्थ तीर्थके परिदर्शक हैं। ये सब पर्वतशिखर नाना जातिके फल और फूलके वृक्षोंसे परिपूर्ण हैं। श्रीपादशैलके चारों ओरके मूलदेशमें जो विस्तीर्ण उपत्यका देखी जाती है, वह एक समय शाल, चन्दन आदि नाना जातिके मूल्यवान् वृक्षोंसे समाच्छन्न थी। वह अरण्यप्रदेश अभी यूरोपीय कृषिसमितिसे परिष्कृत हुआ है तथा समुद्रपृष्ठके २०००से ४५०० फुट तक ऊंचे पर्वतगात्र पर शालादि वृक्षके बदले काफीकी खेती होती है। नुवारा एलिया नामक स्वास्थ्यकर स्थान समुद्रपृष्ठसे ६२०० फुट ऊंचा है। इसका समतल वक्ष आल्पस पहाड़ी प्रदेशकी तरह शोभासम्पन्न है। हटन नामक अधित्यका भूमि भी प्रायः ७००० फुट ऊंची है। यहांका स्वास्थ्य नुवारा एलियासे अच्छा है। दुःखका विषय है, कि यह दुरारोह होनेके कारण अङ्गरेजोंके रहनेमें विशेष असुविधाजनक है। सिंहलके मध्यप्रदेशकी प्राचीन राजधानी काण्डीनगरी समुद्रपृष्ठसे १७२७ फुट ऊंचीमें अवस्थित है।

यहांकी नदियोंमें विदुरुतलागला पर्वतसे निकली हुई महावली गङ्गा सर्वप्रधान है। उत्पत्तिस्थानसे यह चक्रगतिमें नीचे उतर कर कोटमाली उपत्यकासे पाशवेज नामक स्थानमें आई है। श्रीपाद शैलसे निकली हुई एक छोटी नदी यहां पर उक्त नदीसे मिलती है। पेरादेनिया ग्रामके पास इस नदीमें दो पुल हैं। इसके बाद क्रमशः यह नदी काण्डीनगरके पश्चिम और उत्तर घूम कर पर्वतपृष्ठसे उतरते समय दो भागोंमें बंट गई है और समतलक्षेत्रकी वनभूमिसे समुद्रकी ओर दौड़ गई है। उसकी मूलशाखा महावली गंगा नामसे त्रिकोणमाली बन्दरकी बगलसे होती हुई कोत्तियाके उपसागरमें गिरती है और छोटी शाखा बेरुकल नामसे त्रिकोणमालीसे २५ मील दक्षिण समुद्रमें मिल गई है। बाढ़के समय नदीका जल २६ से ३० फुट तक ऊपर उठता है। अन्यान्य समय लोग नदीको पैदल पार करते हैं। नदी प्रायः २०० मील लम्बी है, किन्तु मुहानेसे सिर्फ ८०।९० मील तक नावें आ जा सकती हैं। प्राचीन हिन्दू राजाओंने इस नदीके किनारे कई जगह बांध बांध कर तथा कई जगह नहर काट कर देशरक्षाका अच्छा प्रबन्ध कर दिया था।

केलानी गङ्गा श्रीपादशैलसे निकल कर पहले उत्तरकी ओर और पीछे पश्चिमकी ओर आ कर रावण-वेल्लाकी बगल होती हुई फिर दक्षिणकी ओर लौट गई है तथा कलम्बोके उत्तरसे समुद्रमें मिली है। इस नदीमें नाव द्वारा ४० मील तक पण्यद्रव्य ले कर गमनागमन किया जाता है। उक्त पर्वतके पूर्वपार्श्वसे कालूगङ्गा और बलवगङ्गा (वलोवा) शबरगमुव जिलेसे होती हुई सागरमें गिरि है। कालूगङ्गाके रत्नपुरसे समुद्र तीरवर्त्ती कालूतारा ग्राम पर्यन्त वाणिज्य व्यवसाय चलता है। कालूतारामें एक नहर कलम्बो गई है। यहां और जो सब नदियां हैं उनमेंसे किसीमें भी वर्षाको छोड़ अन्य ऋतुमें जल नहीं रहता।

यहां कलम्बो, बोलगोड और नगोम्बो नामक स्थानमें बहुतसे विस्तृत ह्रद हैं। उन सब ह्रदोंका प्राकृतिक सौन्दर्य देखने लायक है। किनारेमें जो नारियलके पेड़ खड़े हैं, उनसे शोभा और भी खिलती है। ओलन्दाजोंके अमलमें जलपथसे वाणिज्य विस्तारकी सुविधा करनेके लिये यहां उनके यत्नसे बहुतसी नहरें काटी गई हैं। कालपितीयासे नेगोम्बो और कलम्बोसे दक्षिणभागमें कालुतारा पर्यन्त उन लोगोंने बांध या नहर कटवा कर एक वाणिज्यपथ खोल दिया था।

सिंहलके भूतत्त्वकी आलोचना करनेसे जाना जाता है, कि इसका उत्तरांश प्रवालकीट और समुद्रकी तरङ्गसे लाये हुए बालूके मेलसे उत्पन्न हुआ है। भारतके करमण्डल उपकूलसे बालू समुद्रकी तरङ्गसे आता हुआ पाइण्ट-डि-गैलके निकट प्रवाल शैलसे टकरा कर वहीं जम गया है। इस प्रकार क्रमशः प्रवालशैलके बालू

द्वारा परिपूरित होनेसे जाफनापाटम् नामक प्रायोद्वीपका संगठन हुआ है। पर्वतभागमें ग्नाइस्, कोयाटस, डोलामेटिक लाइमष्टोन, फेल्सपर, लौहमिश्रित पर्फिरि हार्नब्लेण्ड, लेटाराइट आदि पत्थर देखे जाते हैं। खनिज पदार्थोंमें तांबा, प्लाटिना, पारद, प्लाम्बेगो, लौह, सालफेट आव माग्नेसिया, सूर्मा, लवण और सोरा आदि द्रव्य मिलते हैं।

इतिहासके अशिक्षित हिन्दू लोग सिंहलको राक्षस राजा रावणकी राजधानी बतलाते हैं। किन्तु यथार्थमें सिंहल लङ्काराज्य नहीं, प्राचीन लङ्काराज्यके अन्तर्भुक्त भले ही हो सकता है। बौद्धधर्म विस्तारके समय तथा ब्राह्मणधर्मने जब यहां आश्रय पाया था, तब उन दो युगोंमें सिंहलमें नई नई कीर्त्तियां स्थापित हुईं तथा उस समयसे यह भगवान्‌का लीलाक्षेत्र समझा जाने लगा। श्रीरामचन्द्रको लङ्का विजयकहानी जब रामेश्वरतीर्थ और दर्भशयनादि स्थानमें परिकीर्त्तित हुई, उसी समय सिंहलको लोग लङ्का मानने लगे। उस समय सिंहलमें रावणका प्रासाद, अशोकवन, सीताका अग्निपरीक्षास्थल आदिका संगठन हो कर वह हिन्दूके पवित्र तीर्थ भगवान् श्रीरामचन्द्रके लीलाक्षेत्ररूपमें विघोषित होने लगा। अधिक सम्भव है, कि दाक्षिणात्यके चालुक्य राजवंशके समय अथवा रामनाद राजाओंके कौशलसे यह क्रमशः लङ्काराज्य कह कर जनसाधारणमें परिचित हुआ है।

. इसका प्राचीन नाम सिंहल द्वीप है। महावंश नामक बौद्धग्रन्थमें वङ्गराजकुमार विजयसिंहकी सिंहलयात्राका प्रसङ्ग है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थमें इस द्वीपका ताम्रपर्णी और बौद्धशास्त्रमें तम्बपन्नो नाम मिलता है। प्राचीन ग्रीक और रोमन लोग सिंहलको तप्रोबेन (ताम्रपर्णीका अपभ्रंश) कहते थे। इङ्गलैण्डके महाकवि मिल्टनने अपने काव्यमें सिंहल द्वीपके समृद्धि-गौरवकी बात लिखी है—

"The Asia kings and Parthian among these,
From India and golden Chersonese,
And utmost India Isle Taprobane
Duck faces with white silken turbans wreathed"

अरबदेशीय नाविक लोग सिंहलद्वीप शब्दके अनुकरण पर इसे सेरेनदिव, सेरेनदिप, सिरिन्, डुइल और जेलान नामसे पुकारते थे। भारतीय मुसलमान इसे सेरेनद्वीप, अरबी लोग भी सेरेनदीप और सिंखुन कहते हैं। प्राच्य जगत्‌के अन्यान्य देशोंकी तरह इस सिंहलद्वीपमें भी प्रत्नतत्त्वके अनेक निदर्शन विद्यमान हैं। यहां जो सब प्राचीन धर्मशास्त्र, इतिहास और राज्योपाख्यान आदि ग्रन्थ देखे जाते हैं, उनसे किंवदन्ती और प्रकृत विवरण पृथक् करना बहुत कठिन है। महावंशवर्णित उपाख्यानसे ही यहांके धारावाहिक इतिहासका सूत्रपात हुआ है।

सिंहलको लङ्का कह कर लोगोंकी धारणा रहने पर भी उक्त दोनों द्वीप जो परस्पर स्वतन्त्र और समृद्ध जनपदरूपमें गिने जाते थे, पुराण पढ़नेसे उसका पता हम लोगोंको लगता है। महाभारत सभापर्व ३४।१२ और ५२। ३५-३६ श्लोकोंमें सिंहलकी स्वतन्त्र उक्तिसे जाना जाता है, कि सिंहलराज नाना मणिरत्न ले कर युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे।

"समुद्रसारं वैदुर्यं मुक्ताशङ्खास्तथैव च।
शतशश्च कुथास्तत्र सिंहलाः समुपाहरन्।
संवृता मणिचीरैस्तु श्यामास्ताम्रान्तलोचनाः"

(भारत २।५२।३५-३६)

श्रीमद्भागवतके पञ्चम स्कन्धमें सिंहल और लङ्का स्वतन्त्र राज्य और जम्बूद्वीपके अन्तर्गत माने गये हैं,—

"तद्यथा स्वर्णप्रस्थश्चन्द्रशुक्ल आवर्त्तनो रमणको मन्दहरिणः पाञ्चजन्यः सिंहलो लङ्केति।"

(भागवत ५।१९।२९)

मार्कण्डेयपुराण ५८।२७, राजतरङ्गिणी १।२९५ तथा कथासरित्सा० ८५।६२ आदि ग्रन्थोंमें भी सिंहलका स्वतन्त्र परिचय है।

प्राचीनकालमें सिंहल भी लङ्काकी तरह कथासरित्सागरमें वर्णित सिंहलपतिके उपाख्यानसे जाना जाता है। वराहमिहिरने भी सिंहलाधिपका उल्लेख किया है। राजतरङ्गिणीमें भी सिंहलकी समृद्धिका उपाख्यान है। महाकवि कह्लनने पञ्जावके शकराज मिहिरकुलको सिंहलविजयके गौरवसे भूषित किया है। यह बात इतिहासकारोंने कहानी कह कर उड़ा दी है। उन लोगों-

का कहना है, कि सिहिरकुल शायद भिक्षु जीवनके लिये गये होंगे। सिहिरकुल ५१५ ई०में विद्यमान थे।

५४३ ई० सनके पहले विजयसिंहने बङ्गदेशसे दल बलके साथ सिंहलकी यात्रा की। वे अपने अनुचरोंकी सहायतासे सिंहलराज्यका उद्धार कर स्वयं वहांके एक-मात्र अधीश्वर हुए। राजा विजयसिंहने ही यहां जाति-भेदप्रथाका प्रवर्त्तन किया। तभीसे यहां जातिभेद पूर्ण प्रभावमें विद्यमान है।

उनके तथा उनके वंशधरोंके राज्यकालमें सिंहलद्वीप सभ्यताकी चरम सीमा तक पहुंच गया था। उस प्राचीन वाङ्ग राज्यके राजशासनका अप्रतिहत प्रभाव यहां पूर्ण मात्रामें प्रचलित था। मन्वादि स्मृतिवर्णित धर्म और शासननीति यहां सर्वत्र प्रचलित थी। राजा उसीके अनुसार राजदण्ड देते थे। पाश्चात्य ऐतिहासिक टिक-सनने लिखा है, कि यहांके अधिवासी जिस पवित्र भावसे धर्मचर्या करते हैं, नीतितन्त्र यहां जिस भावसे दिखाई देता है, यहांका विचारकार्य जैसा न्यायपरतासे चलता है तथा जैसा पुत्रानुपुत्रक्रमसे यहां राजवंशकी रक्षा होती है, उसका आनुपूर्विक इतिहास पढ़नेसे हमें युगपत् आनन्द, विस्मय और भक्तिका उद्रेक होता है।

मासिदोनिय नौसेनापति ओनेसिक्रितस सिंहल या ताम्रपर्णीका विशेष विवरण लिख गये हैं। ३२६ या ३३० ई०सनके पहले ओनेसिक्रितस जीवित थे। दियो-दोरस सिकुलस भी ४४ ई०सनके पहले सिंहलका संक्षिप्त परिचय दे गये हैं। प्लिनीके ग्रन्थमें सिंहलका उल्लेख देखा जाता है। ३६ ई०में टायलेमीने सिंहलका पूर्ण विवरण अच्छी तरह जान कर यहांके बड़े बड़े हाथियोंका विवरण लिपिबद्ध किया है। सिन्दबाद नाविकके भ्रमण वृत्तान्तमें, अबदुल रज्जाकके ग्रन्थमें तथा पीछे विदेशीय लेखकोंमें सिंहलका उल्लेख है।

रोम साम्राज्याधीश्वर क्लडियस सीजरके राज्यकालमें लोहित सागरके कोई रोमकरसंग्राही ईरदुविणाने भीषण तूफानमें पड़ कर अरबके किनारेसे सिंहल चले गये थे। वे यहांकी सुसमृद्ध राजधानी देख कर चमत्कृत हो गये थे। उन्होंने यहांके इस शिक्षित राजाको रोमके साथ वाणिज्य व्यवसाय करनेके लिये रोम राज्याधीश्वरके पास दूत भेजने कहा था। उनके अनुरोधसे सिंहलपतिने लोहितसागर पथसे दूत भेज कर आपस-का वाणिज्य-सम्बन्ध दृढ़ कर लिया था।

सिंहलका प्राचीन इतिहास नाना प्रकारके अविश्वासयोग्य उपाख्यानोंसे भरा हुआ है, फिर भी महावंशके अंगरेजी अनुवादक महामति टर्नरने उसीके आधार पर जिन धारावाहिक ऐतिहासिक घटनावलीका उल्लेख किया है, उसे ऐतिहासिक सत्य कहा जा सकता है। नीचे उनमेंसे कुछ घटनाओंका उल्लेख किया गया है।

खृ० पू० ५४३ तथागतके अप्रकटकालमें विजयका सिंहला-गमन।

" ३०७ बौद्धधर्मप्रचारके लिये धर्माशोक कर्त्तृक श्रमणादि प्रेरण।

" १०४ मलवारों द्वारा सिंहल विजय।

खृ० पू० ९० वलगामबाहु द्वारा अभयगिरिस्थापन।

" २०९ वैवहारके राज्यकालमें वैतुल्यमत प्रचार।

" २५२ गोठ अभयके राज्यकालमें फिरसे वैतुल्यमत-स्थापनकी चेष्टा।

" ३०१ महासेनकी मृत्यु।

" ५२५ अम्बहेरके शासनकालमें वैतुल्य मतका पुनः प्रचार।

" ८३८ सिलमेघसेनके राज्यकालमें वज्रवादीय सम्प्रदायकी उत्पत्ति।

" ११५३ पराक्रम बाहुका राज्यारोहण।

" १२०० साहस मल्लका राज्यारोहण।

" १२६६ पण्डित पराक्रमबाहु ३यका राज्याधिकार।

" १३४७ भुवनैकबाहु चतुर्थकी सिंहासनप्राप्ति।

सिंहलके इतिहासमें किंवदन्तीमूलक चाहे कैसी ही घटना लिपिबद्ध क्यों न रहे, भारतीय नाना ग्रन्थोंमें इसकी जो ख्याति है, उसका एकमात्र कारण सिंहलमें आर्यसभ्यताका विस्तार है। स्थानीय किंवदन्तीमें राम-चन्द्रकी विजयकहानी कल्पित रहने पर भी उस समय यहां आर्यसभ्यताका विस्तार हुआ था, ऐसा नहीं कह सकते। बौद्ध सम्राट् अशोकने सिंहलमें बौद्धधर्मका प्रचार करनेके लिये श्रमणादि भेजे थे। इससे जाना जाता है, कि उसके बहुत पहले सिंहलमें आर्यसभ्यताका

विस्तार हुआ था तथा सिंहलमें बौद्धके सिवा हिन्दूमत भी प्रचलित था।

भारतके साथ सिंहल इसी समयसे राजनैतिक सम्बन्धमें आवद्ध है। इस समयसे दक्षिण और उत्तर भारतके राजे कभी मित्रभावमें और कभी शत्रुभावमें सिंहलकी यात्रा करते थे। द्राविड़गण प्रायः वाणिज्यके उद्देशसे सिंहल जाते थे। शिलालिपिसे हमें मालूम होता है, कि ३५० ई०के समकालमें १म चन्द्रगुप्तके पुत्र महाराज समुद्रगुप्तने सिंहलवासियोंको पदानत किया था। ६६६ ई०में पश्चिम चालुक्यराजने पितृसिंहासन अलङ्कृत किया। उन्होंने अपने राजत्वके ११वें से १४वें वर्षके मध्य उत्तर और दक्षिण-भारतके साथ सिंहलके पराक्रान्त राजाको परास्त किया था। १३८३ ई०में विजय-नगर-राज २य हरिहरकी स्त्री मल्लानदेवीके गर्भजात पुत्र विरूपाक्ष पिता द्वारा सेनापतिपद पर अभिषिक्त हुए और उन्होंने दलबलके साथ सिंहलयात्रा करके अधिपतिको पराजित किया था।

भारतीय प्रवल पराक्रान्त राजे जिन सिंहलपतियोंको जीतनेके अभिप्रायसे दलबलके साथ सागर पार करते थे और जिन्हें परास्त करनेमें वे अपना गौरव समझते थे, उन प्रसिद्ध बलवृन्द और समृद्धिसम्पन्न बौद्ध राजाओंके साथ भारतका ऐतिहासिक और राजनैतिक सम्बन्ध निरूपण करनेके लिये यहां सिंहलराजवंशकी तालिका उद्धृत की जाती है। (नाम प्रायः पाली या सिंहली भाषामें लिखे गये हैं।)

१ विजयसिंह	५४३ खृ० पू०
२ उपतिस्स (अभिभावक)	५०५ ,,
३ पाण्डुवासुदेव	५०४ ,,
४ अभय	४७४ ,,
राजहीन विप्लवकाल	४५४ ,,
५ पाण्डुकाभय	४३७ ,,
६ मुट शिव	३६७ ,,
७ देवानम्पिय तिस्स	३०७ ,,
८ उत्तिय	२६७ ,,
६ महाशिव	२५७ ,,
१० सूर तिस्स	२४७ ,,
११ सेन और गुत्तक (वैदेशिक राज्याधिकारी)	२३७ खृ०पू०
१२ असेल	२१५ ,,
१३ एलर (तामिलजातीय राज्यापहारी)	२०५ ,,
१४ दुट्ठगामिनी	१६१ ,,
१५ सद्धा तिस्स	१३७ ,,
१६ थुल्लत्थन (तुलुन)	११६ ,,
१७ लज्जि तिस्स	११६ ,,
१८ खल्लाट नाग	१०६ ,,
१६ वट्टगामनी अभय या वल-गम वाहु	१०४ ,,
२० पुलहत्थ	१०३ खृ० पू०
बाहिय	१०० ,,
पणयमार	६८ ,,
पिलयमार	६१ ,,
दाठिय	६१ ,,

(२० से दाठिय तक:) ये लोग तामिल देशीय और सिंहल सिंहासनके अपहारक थे।

२१ वट्टगामनी अभय या वलगमवाहुका फिरसे सिंहासनाधिकार	४४ खृ० पू०
२२ महाचूल या महातिस्स	७६ ,,
२३ चोड़नाग	६२ ,,
२४ तिस्स या कुडा तिस्स	५० ,,
२५ अनुडा	४७ ,,
२६ मकलङ् तिस्स या कालकन्नि तिस्स	४२ ,,
२७ भातिकाभय	२० ,,
२८ महादाठीय या महानाग	६ ,,
२६ आमण्डगामनी अभय	२१ ,,
३० कनिजानु तिस्स	३० ,,
३१ चूडाभय तिस्स या कुड़ा अवा	३३ ,,
३२ शोवली	३५ ,,
३ वर्ष अराजक काल—	
३३ इलनाग या एलुना	३८ ,,
३४ चन्दमुख शिव या सन्दमुहुनु	४४ ,,
३५ यशलालक तिस्स	५२ ,,
३६ शुभराज	६० ,,
३७ वसभ या वह्प	६६ ,,
३८ वङ्कनासिक तिस्स	११० ,,
३६ गहवाहु १म	११३ ,,
४० महल्लक नाग या महुळ ना	१३५ ,,
४१ भातिय या भातिक २य	१४१ ,,

४२ कणिट्ठ तिस्स या कणिट्ठ तिस १६५ ख़ृ० अ०
४३ चूड़नाग या चुल्लु ना १६३ „
४४ कुड्डनाग १६५ „
४५ श्रीनाग (शिरिनाग) १म १६६ „
४६ वोहारक तिस्स २१५ „
४७ अभय तिसस २३७ „
४८ श्रीनाग २य २३५ „
४९ विजय २य या विजयिन्दु २४७ „
५० सङ्घतिसस १म २४८ „
५१ श्रीसङ्घबोधि १म या दहम शिरि सङ्घवो २५२ „
५२ गोठभय मेघवर्णाभय २५४ „
५३ जेट्ठ तिस्स या देट्ठु तिस २६७ „
५४ महासेन या मह सेन २७७ „
५५ किंत्तिशिरि मेघवन्न या किटिशिरि मेवन ३०४ „
५६ जेट्ठ तिसस २य या देट्ठुतिस ३३२ „
५७ बुद्धदास या बुजस ३४१ „
५८ उपतिसस २य ३७० „
५९ महानाम ४१२ „
६० सोत्थि सेन ४३४ „
६१ छत्तगाहक ४३४ „
६२ मित्त सेन

६३ पाण्डु—१३६ ख़ृ० अ०
पारिन्द—४३१ „
खुद्दुव
पारिन्द ४४४ „
तिरीतर ४६० „
दाठिय ४६० „
पीठिय ४६३ „

ये सातों तामिल राजे सिंहल सिंहासन के अपहर्त्ता थे।

६४ धातुसेन या दासेन-केलिय ४६३ ख़ृ० अ०
६५ कस्सप १म (काश्यप) ६४वें के पुत्र ४७९ „
६६ मोग गल्लान १म (मौद्गल्यायन) ६५वें भाई ४९७ „
६७ कुमार धातुसेन ६६वें के पुत्र ५१५ „
६८ कित्तिसेन (कीर्तिसेन) ६७ वें के पुत्र ५२४ „
६९ शिव (कित्तिसेनके मामा) ५२४ „
७० उपतिसस ३य (उपतिष्य ६६ वेंके साले) ५२५"
७१ अम्बसामनका शिलाकाल (७०वें के जमाई) ५२६ „
७२ दाठापभूति (७१ वें के पुत्र) ५३६ „
७३ मोग्गल्लान २य (मौद्गल्यायन, ७२) वें के बड़े भाई ५४० ख़ृ० अ०
७४ कित्तिशिरि मेघवण्ण (कीर्तिश्री मेघवर्ण) ७३वें के पुत्र ५६०"
७५ महानाग (ओक्काक वंशीय राजपुत्र) ५६१",
७६ अग्गबोधि १म (अग्रबोधि) ७५ वेंके मामाका भतीजा ५६४ „
७७ अग्गबोधि २य ७६ वें के जमाई ५९८ „
७८ सङ्घतिसस (सङ्घतिष्य राजावलिके मतसे ७७वें के भाई) ६०८ „
७९ दल्ल मोग्गल्लान ७७वें के सेनापति ६०८ „
८० सिला मेघवण्ण या असिगाहक (असिग्राहक शिलमेघ, दल्लमोग्गल्लानके सेनापतिका लड़का ६१४ „
८१ अग्गबोधि ३य पुनरधिकार ६२४ „
८२ जेट्ठ तिस्स ८०वे के भाई ६२३ „
८३ दाठोपतिस्स १म लेमेनि वंशीय ६४० „
८४ कस्सप २य, ८१वे के भाई ६५२ „
८५ दप्पुल १म, ८४वें के जमाई ६६१ „
८६ हत्थदाठ या दाठोपतिस्स २य (८३वें के भतीजे) ६६४ „
८७ अग्गबोधि ४र्थ सिरिसङ्घबोधि, ८६के छोटे भाई ६७३ „
८८ दत्त, सिंहलराज वंशधर ६८९ „
८९ उंहनागर, हत्थ दाठ ६९१ „
९० माणवम्म (मानवर्मन्) ८४वें के पुत्र ६९१ „
९१ आग्गबोधि ५म, ९०वें के पुत्र ७२६ „
९२ कस सप ३य, ९१वें के भाई ७३२ „
९३ महिन्द १म (महेन्द्र) ९२वें के पुत्र ७३८ „
९४ अग्गबोधि छटे शिलामेघ, ९३वें के पुत्र ७४१ „
९५ अग्गबोधि ७म, ९४वें के भाई ७४८ „
९६ महिन्द २य शिलामेघ, ९५वे के भतीजे ७८७ „
९७ दप्पुल २य, ९६वे के पुत्र ८०७ „
९८ महिन्द ३य या धम्मिक सिलामेघ, (सिलामेघ) ९७वे के पुत्र ८१२ „
९९ अग्गबोधि ८म, ९८वें के सम्पर्क में भाई ८१६ „
१०० दप्पुल ३य ९९वेंके छोटे भाई ८२७ „

१०१ अग्‌गबोधि ६म, १००वेंके पुत्र ८४३ खृ० अ०
१०२ सेन १म, शिलामेघ सेन (शिलामेघवर्ण)
१०१वेंके कनिष्ठ ८४६ „
१०३ सेन २य, १०२वेंके पौत्र ८६६ „
१०४ उदय १म, १०३वेंके सर्वकनिष्ठ भ्राता ६०१ „
१०५ कस्सप ४र्थ १०४वेंके जमाई ६१२ „
१०६ कस्सप ५म, १०५वेंके जमाई ६२६ „
१०७ दप्‌ पुल ४र्थ, १०६वेंके पुत्र ६३६ „
१०८ दप पुल ५म, १०७वेंके भाई ६४० „
१०६ उदय २य ६५२ „
११० सेन ३य, १०६वेंके भाई ६५५ „
१११ उदय ३य ६६४ „
११२ सेन ४र्थ ६७२ „
११३ महिन्द ४र्थ ६७५ „
११४ सेन ५म, ११३वेंके पुत्र ६६१ „
११५ महिन्द ५म, ११४वेंके भाई १००१ „
११६ युवराज काश्यप या विक्रमवाहु १०३७ „
इनके समयमें राष्ट्रविप्लवकी सूचना हुई तथा सिंहल राज्यमें अनाचारका स्रोत वहने लगा।
११७ कित्ति (कीर्त्ति सेनापति राज्यापहारक) १०४६ „
११८ महालाण कीत्ति (राज्यापहारी) १०४६ „
११६ विक्कम पण्डु (विक्रमपाण्डु राज्यापहारी) १०५२ „
१२० जगतिपाल (राज्यापहर्त्ता) १०५३ „
१२१ परक्कम (पराक्रम राज्यापहारी) १०५७ „
१२२ लोक या लोकिस्सर (लोकेश्वर राज्यापहारी) १०५६ „
१२३ विजयवाहु १म (श्रीसङ्घबोधि) ११५वेंके पुत्र १०६५ „

विक्रमवाहुके सिंहासनाधिकार १०३७ ई०से विजयवाहुके राज्यलाभ १०६५ ई० तक सिंहल जो घोर अन्तर्विप्लवसे उत्सन्नप्राय हो गया था, उससे राज्यापहारियोंके राज्याधिकारसे हो जाना जाता है। राज्य या राजसरकारभुक्त जो व्यक्ति जब अर्थ या सेनावलसे वलवान्‌ होते थे, तब ही वे सिंहासनको अधिकार कर बैठते थे। उस समय राजमन्त्री और सेनापतियोंमें जो घोर प्रतियोगिता और प्रतिद्वन्द्विता विद्यमान थी, वादके राज्यापहारकका अभ्युदय उसका प्रमाण है।

१२४ जयवाहु, १२३वेंके भाई ११२० खृ० अ०
१२५ विक्कमवाहुज्जो (विक्रमवाहु) १२३वेंके पुत्र ११२२१ „
१२६ गजवाहु २य, १२५वेंके पुत्र ११४२ „
१२७ परक्कम वाहु (पराक्रमवाहु) १२६वेंके ज्ञातिभ्राता ११६४ „
१२८ विजयवाहु, १२७वेंके भतीजे ११६७ „
१२६ महिन्द षष्ठ, राज्यापहारी ११६८ „
१३० कित्ति निस्सङ्क (कीर्त्ति निःशङ्कमल्ल) ११६८ „

राजा पराक्रमवाहु बौद्धधर्ममें विशेष आस्थावान्‌ थे। बौद्धधर्मका विस्तार करनेके लिये उन्होंने सिंहलके नाना स्थानोंमें मठ, विहार और मन्दिरादि निर्माण किये हैं, इस कारण उन्हें सब कोई लङ्केश्वर और महापराक्रमवाहु कहते थे। ११२६ ई०में विजयवाहु, दूसरेके मतसे विक्रमवाहुके मरने पर राज्याधिकार ले कर राजपरिवारमें बडी गड़बडी मची। इस कारण प्रायः २२ वर्ष तक अन्तर्विप्लव चलता रहा। इस भीषण युद्धविग्रहके समय सिंहलकी राजधानी अनुराधापुर श्रीहीन हो गया। ११५५ ई०में युद्धविग्रहादिकी शान्ति होने पर राजा पराक्रमवाहु पुलस्ति नगरमें राज्याभिषिक्त हुए। रामण्णदेशाधिपतिने जब उनके भेजे दूतको कैद कर दिया, तब उन्होंने अत्यन्त क्रुद्ध हो उनके विरुद्ध ५०० नौवाहिनी भेजी थी। उनकी पत्नी पाण्ड्यराजपुत्री लीलावतीकी नामाङ्कित मुद्रा आज भी मिलती है। स्वामीके मरने पर यह विदुषी रमणी ११६७, १२०६ और १२११ ई०में तीन वार सिंहासन पर बैठी, पराक्रम वाहुने त्रिपिटकके अनुसार बौद्धधर्मका पालन किया था, इस कारण युद्धविग्रहमें लिप्त रहते हुए भी उन्होंने धर्मकी प्रेरणासे १३० विद्याके मन्दिर स्थापन किये थे। पराक्रमवाहु देखो।

महापराक्रमवाहुके वाद सिंहलमें कई नगण्य राजे राजसिंहासन पर बैठे। इसके वाद सिंहलवासियोंके निर्वाचनसे कलिङ्गके अन्तर्गत सिंहपुराधिपति राजा जयगोपके पुत्र निःशङ्कमल्लको सिंहल ला कर राजपद पर अभिषिक्त किया गया, इस कारण वे कालिङ्गचक्रवर्त्ती वंशीय कहलाते हैं। सिंहासनारोहणके वाद उन्होंने "श्रीसङ्घबोधि कालिङ्ग-पराक्रमवाहु वीरराज निःशङ्कमल्ल अप्रतिमल्ल लङ्केश्वर महाराज"की उपाधि

धारण की। निःशङ्कमल्लके बाद उनके पुत्र वीरबाहु राजा हुए। पराक्रमबाहु निःशङ्कमल्ल देखो।

१३१ वीरबाहु, १३०वेंके पुत्र १२०७ खृ०अ०
१३२ विक्रमबाहु, १३०वेंके भाई १२०७ „
१३३ चोड़गङ्ग, १३०वेंके भतीजे १२०७ „
१३४ लीलावती, १२७वेंकी विधवा महिषी १२०८ „
१३५ साहसमल्ल १३०वेंके वैमात्रेय भाई १२०० „
१३६ कल्याणवती, १३०वेंकी पाटरानी १२०२ „
१३७ धम्माशोक (धर्माशोक) १२०८ „
१३८ अणिकङ्ग (प्रधान शासनकर्त्ता) १२०९ „
१३४ लीलावती (पुनरभिषेक) १२०९ „
१३९ लोकिस्सर (लोकेश्वर राज्यापहारक) १२१० „
(१३४) लीलावती (पुनरभिषेक) १२११ „
१४० परक्कमपण्डु (पराक्रम पाण्डु
राज्यापहारक) १२१२ „
१४१ माघ या कालिङ्ग विजयबाहु (राज्यापहारी) १२१५ „
१४२ विजयबाहु ३य (श्रीसङ्घबोधि-वंशीय) १२३६ „
१४३ पराक्रमबाहु २य (कलिकाल
साहित्य-सर्वज्ञ पण्डित पराक्रम बाहु) १२४० „
१४४ विजयबाहु ४र्थ, १४३वेंके पुत्र १२७५ „
१४५ भुवनेकबाहु १म, १४४वेंके भाई १२७७ „
१४६ पराक्रमबाहु ३य, वीरमत् विजयबाहुके
पुत्र १२८८ „
१४७ भुवनेकबाहु २य, १४५वेंके पुत्र १२९३ „
१४८ पराक्रमबाहु ४र्थ, १४७वेंके पुत्र १२९५ „
१४९ भुवनेकबाहु ३य
१५० जयबाहु १म
१५१ भुवनेकबाहु ४र्थ १३४७ „
१५२ पराक्रमबाहु ५म १३५१ „
१५३ विक्रमबाहु ३य
१५४ भुवनेकबाहु ५म, गिरिवंश गोत्रसम्भूत
१५५ वीरबाहु २य, १५४वेंके भाई
१५६ पराक्रम बाहु ६ष्ठ १४१० „
१५७ जयबाहु २य १४६२ „
१५८ भुवनेकबाहु ६ष्ठ १४६४ „
१५९ पराक्रमबाहु ७म १४७१ „

दूसरे ग्रन्थमें पराक्रमबाहु ३य, ४र्थ, ५म, ६ष्ठ और ७मका राज्यकाल ले कर गोलमाल है। जनसाधारणकी जानकारीके लिये उसका संक्षेप विवरण नीचे दिया जाता है —

पराक्रमबाहु ३यने १२६६से १३०१ ई० तक राज्य किया। उन्होंने सिंहलवासीको त्रिपिटककी शिक्षा देनेके लिये चोलराज्यसे श्रमण मंगवाये थे। इसके सिवा उनके उद्योगसे बौद्ध धर्मग्रन्थसंग्रह और बौद्ध धर्मशास्त्रादिका विचार करनेके लिये यहां एक सङ्घ स्थापित हुआ। पराक्रमबाहु ४र्थने १३१४से १३१९ ई० तक राज्य शासन किया। ५म पराक्रमबाहु श्रीसङ्घबोधि नामसे भी प्रसिद्ध थे। इन्होंने अपने राजत्वके १०वें वर्षमें १३३० ई०को देवराज विष्णुके उद्देशसे भूमि-महाविहारके निकट एक नारिकेलस्तूप निर्माण किया। छठे पराक्रमबाहु प्रबल पराक्रान्त राजा थे। १४१०से १४६२ ई० तक इन्होंने कलम्बो बन्दरके निकटवर्त्ती जयवर्द्धनपुर (वर्त्तमान कोट्ट)में राज्य किया। माता सुनमित्रादेवीके स्मरणार्थ इन्होंने १४५३ ई०में एक बुद्धमन्दिर स्थापित किया था। १५०१ से १५२५ ई० तक ७म पराक्रमबाहु का राज्यकाल है। ये सिंहलके पिहित, माया और रुहुनु प्रदेशमें अपना शासनदण्ड विस्तार करनेमें समर्थ हुए थे।

१६० पराक्रमबाहु ८म
१६१ विजयबाहु ५म
१६२ भुवनेकबाहु ७म
१६३ वीर विक्रम (वीर विक्रम) १५४२ खृ० अ०
१६४ मायाधनु
१६५ राजसीह (राजसिंह)
१६६ विमल धम्म सुरिय (विमल धर्म सूर्य) १५९२ „
१६७ सेनरत्न, १६६वेंके भाई १६२० „
१६८ राजसीह (राजसिंह) १६७वेंके पुत्र १६२७ „
१६९ विमल धर्म सुरिय (विमल धर्मसूर्य)
१६८वेंके पुत्र १६७९ „
१७० सिरिवीर परकम नरिन्दसीह (श्रीवीर पराक्रम
नरेन्द्रसिंह १६९वेंके पुत्र १७०१ „
१७१ श्रीविजयराजसिंह, १७०वेंके साले १७३४ „

१७२ कीर्त्ति श्रीराजसिंह — १७४७ खृ० अ०
१७३ श्रीराजाधिराज सिंह (१७२वें के छोटे भाई) — १७८० "
१७४ श्रीविक्रमराजसींह (श्रीविक्रमराजसिंह, १७३वें के भतीजे) — १७९८ "

श्रीविक्रमराजसिंह ही काण्डीके अन्तिम बौद्ध राजा थे। अंगरेजोंने इन्हें तख्तसे उतार कर कैद रखा। १८३२ ई०में वल्लूर दुर्गमें नजरबन्दी अवस्थामें इनकी मृत्यु हुई।

संक्षेपमें सिर्फ इतना ही कहा जायेगा, कि सिंहल-विजेता विजयसिंहके वंशधरोंने विभिन्न शक्तिसे राज्य रश्मि आकर्षण कर विभिन्न मार्गमें सिंहलको सभ्यता फैलाई थी। कोई राजा विद्वान् थे, उन्होंने अपने विद्यानुरागवशतः सिंहलमें विद्याशिक्षाके विषयमें यथेष्ट चेष्टा की थी। कोई वीरचेता थे जिन्होंने अपनी समर-शक्तिके विकाशसे भारतवासीको चमत्कृत कर दिया था। दूसरे वदान्यताके कारण प्रभूत यशस्वी हो गये हैं। कोई कोई राजा गृहविवाद और आत्मविच्छेदमें राज्यभ्रष्ट हुए हैं तथा कितनोंने विदेशियोंके साथ रण-रङ्गमें लिप्त रहनेमें आनन्द प्रकाश किया है। वे लोग रणक्षेत्रमें रणपिपासाकी शान्ति न करके अपने अपने जीवनको उत्सर्ग कर गये हैं। उस समय मलवार उप कूलवासी कितनी जातियां सिंहलराजकी राज्यसीमाको आक्रमण और लूटपाट किया करती थीं। दिनेमारोंके वृटेन-विजयके समय इङ्गलैण्डवासी जैसी क्रूरतासे दिनेमारोंके हाथ निगृहीत हुए थे, सिंहलवासी भी एक समय वैसे ही मलवार जातिसे उत्पीड़ित हुए हैं, इसमें सन्देह नहीं।

इसके बाद प्रायः ८५ सदी तक मलवारके दस्युदल सशस्त्र झुण्डके झुण्ड यहां आये थे। इसके बाद सिंहल-में प्राचीन गौरव-सूर्यका अवसान होने लगा तथा सिंहलराज्य ७ विभिन्न जनपदोंमें विभक्त हो गया। भद्रयान्वेषी पुर्त्तगीज सेनापति अलमोडा १५०५ ई०को कलम्बो नगरमें उतरे। वे ही सिंहलको सात राज्योंमें विभक्त देख अपनी विवरणीमें उसे लिपिबद्ध कर गये हैं।

१५१७ ई०में यहां पुर्त्तगीजोंका प्रथम उपनिवेश स्थापित हुआ। इस समय अलवर्जेरिया नामक पुर्त्त-गीज-दलपतिको सिंहलमें वाणिज्य करनेके लिये कलम्बो के समीप कोठी खोलनेका स्थान मिला। पीछे वे लोग अपना बल बढ़ानेका मौका देखने लगे और देशवासियों-के साथ उन लोगोंने सद्भाव स्थापन कर लिया। कुछ दिनोंके बाद ही उनकी कोठीका सामान्य प्राचीर मजबूत पत्थरके प्राचीरमें परिणत हुआ तथा वह कोठी एक दृढ़ दुर्गमें रूपान्तरित हुई। पीछे राजसेनाओंके साथ पुर्त्त-गीजोंके समुद्रके किनारे कई भीषण युद्ध हो गये। युद्ध में पुर्त्तगीजपक्ष प्रबल और राजपक्ष अत्यन्त दुर्बल था। अतएव रणकुशल यूरोपीयगण सिंहलका पश्चिमोपकूल अपने अधीन करनेमें समर्थ हुए।

पुर्त्तगीजगण धीरे धीरे देशवासियोंके चिरशत्रु हो गये। उन लोगोंके लगातार निष्ठुराचरणसे तङ्ग आ कर सिंहलवासी बीच बीचमें उन लोगोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेसे भी बाज नहीं आये। देशवासीके स्वाधीनता-लाभ अथवा कठोर अत्याचारके हाथसे मुक्तिलाभकी चेष्टा जनक्षय या रक्तपातको छोड़ और किसी पथसे परिचालित नहीं हुई। १६०२ ई०में ओलन्दाज नौ-सेना-पति स्पिलबर्जने दलबलके साथ आ कर सिंहलके पूर्वोप-कूलमें छावनी डाली और काण्डीराजके साथ बन्धुत्व स्थापन करना चाहा। काण्डीपति ओलन्दाजोंकी यह प्रार्थना महासुयोगका अवसर जान कर उनकी सहायता-से ही पुर्त्तगीजोंको राज्यसे निकाल भगानेमें समर्थ होंगे, इस आशासे प्रणोदित हो उन लोगोंको प्रत्येक विषयमें उत्साह देने लगे। राजाके ओलन्दाजोंका प्रत्येक विषयमें आदर करने और उत्साह दिलाने पर भी १६३८-३९ ई० तक उन लोगोंने राजाके शत्रु-दमनकी कोई चेष्टा नहीं की। शेषोक्त वर्षमें ओलन्दाजोंने पुर्त्तगीजोंके विरुद्ध सेना भेज कर पूर्वोपकूलवर्त्ती पुर्त्तगीजोंके सभी दुर्ग आक्रमण किये। एक एक सभी दुर्ग धूलिसात् हो गये। दूसरे वर्ष ओलन्दाज लोग दलबलके साथ नेगोम्बे देशमें गये। किन्तु वे लोग उस समय वहां सामान्य वणिग्-भावमें ही रहते थे। वे आश्रय पानेके लिये उस समय वहां एक भी सुरक्षित दुर्गादिकी प्रतिष्ठा न कर सके।

१६४४ ई०में ओलन्दाजसेनाने नेगोम्बो जीत कर वहां दुर्गादि बनवाये। १६५६ ई०में कलम्बो उन लोगोंके हाथ आया तथा १६५८ ई०में उन लोगोंने पुर्तगीजोंको उनके सिंहलस्थ अन्तिम दुर्ग जाफनासे निकाल बाहर किया।

ओलन्दाजोंने सिंहलके वाणिज्यपरिचालनमें सफल-मनोरथ हो कर हालण्डराज्यको बड़ी मदद पहुंचाई थी। उनके उत्साहसे सिंहलमें नाना प्रकारके कलाशिल्पकी प्रतिष्ठा हुई। उन लोगोंने राजकीय अट्टालिकादि बनाने और पथघाट रक्षाके लिये अच्छा प्रबन्ध कर रखा था। उनके आग्रह और उत्साहसे समुद्रोपकूलस्थ प्रदेशोंमें शिक्षाविस्तारकी अच्छी व्यवस्था हुई।

कूटराजनीतिके बलसे ओलन्दाजोंने सिंहलकी जो उन्नति की थी, अंगरेजोंके उनके विरुद्ध अस्त्रधारण करने पर उनका सैनादल उस सुसमृद्ध सिंहलराज्यकी रक्षा न कर सका। प्रायः डेढ़ सदी तक सुखशान्तिसे राज्यशासन करके ओलन्दाज औपनिवेशिकगण आलस्य-प्रिय हो दैहिक और मानसिक शक्तिमें निस्तेज हो गये। १६५८ ई०में अदम्य साहस और अपार वीरतासे ओलन्दाजोंने धीरे धीरे जो राज्य जीते थे, १७९६ ई०ने मोहता और दुर्बलतासे वे सभी नष्ट कर दिये।

१७६३ ई०में अंगरेजोंके साथ सिंहलका प्रथम सम्बन्ध हुआ। उसी साल मन्द्राजकी अंगरेज बस्तीके कर्त्तृपक्षने काण्डीपतिके पास दूत भेजा। दुःखका विषय है, कि इसमें वाणिज्यका उन्नतिसाधक कोई भी प्रस्ताव फलदायक नहीं हुआ। १७८२ ई०में अंगरेजी सेनाने त्रिकोणमाली जीता, किन्तु कुछ समय बाद ही तो सेनापति सुफरानने इसे फिर अधिकार कर लिया। १७९५ ई०में ग्रेट ब्रिटेन और हालैण्डके अधिपतिमें मनमुटाव हो गया। इस सूत्रसे इंगलैण्डके राजाने ओलन्दाजोंके सिंहलस्थ अधिकृत प्रदेश जीतनेका हुकुम दिया। दुर्बल ओलन्दाजगण बलदर्पित अंगरेजी सेनासे पराजित हुए और १७९६ ई०में अंगरेज सेनापतिने ओलन्दाजोंके सभी दुर्ग अधिकार कर लिये।

अधिकृत सिंहलप्रदेश इस समय इङ्गलैण्डकी इष्ट-इंडिया कम्पनीकी देखरेखमें रखा गया, किन्तु १८०२ ई०-में आमेनके सन्धिसूत्रसे समूचा सिंहल समस्त इङ्गलैण्ड के राजाके शासनयुक्त हुआ। केवल मध्यसिंहलके पर्वत-परिवेष्टित दुर्भेद्य पार्वत्य और जंगलमय प्रदेश मलाबारराजवंशधर विक्रमसिंहके हाथ थे।

१८०३ ई०में कुछ सामान्य मनमुटावसे अङ्गरेज लोग काण्डीराज्य पर आक्रमण करनेको बाध्य हुए। १८१५ ई०में अङ्गरेजी सेनापति ब्राउनने घेरा डाल कर राजाको कैद किया। १८१८ ई०में राजा वन्दोबाग्रमें बल्लूर दुर्गमें निर्वासित हुए। इसी राजासे सिंहलके दो हजार वर्ष भी पहलेका चला आता हुआ एक समृद्ध राजवंशका अवसान हुआ।

१८१५ ई०की २री मार्चको काण्डीय सरदारोंके साथ जो सन्धिपत्र लिखा गया, उसमें अंगरेज लोग सारे सिंहलके अधिपति माने गये। उधर अंगरेजराज भी देशवासीके धर्म और राजकीय स्वार्थरक्षा करनेको राजी हुए। बौद्धधर्म यहां प्रबल रहेगा तथा मठ, विहार, संघाराम और देवमन्दिरादि पूर्ववत राजाकी देखरेखमें रक्षित और परिचालित होंगे। धर्मयाजक सम्प्रदायका प्रभुत्व अक्षुण्ण रहेगा तथा सभी इच्छानुसार धर्मानुष्ठान कर सकेंगे। अङ्गरेजराज शासनके खर्च वर्चके लिये शुल्क और राजस्व वसूल कर सकेंगे।

१८१७ ई०में सिंहलके अभ्यन्तरदेशके नाना स्थानों में विद्रोहको सूचना देखी गई। इस भयावह विद्रोहका दमन करनेमें अङ्गरेजोंको विशेष कष्ट उठाना पड़ा था। विद्रोहदमनके बाद अङ्गरेजराजने काण्डीपतिको वल्लूरमें निर्वासित किया। अनन्तर १८४३ और १८४८ ई०में यहां दो छोटे छोटे विद्रोहकी सूचना हुई तथा उसका शीघ्र ही दमन किया गया। सिंहलराजके निर्वासनके बादसे यहां राजकीय कोई गोलमाल खड़ा नहीं हुआ। सिंहलराज्य अभी अङ्गरेजराजके अधीन उपनिवेश गिना जाता है। राजनैतिक भाषामें इसे क्राउन कोलोनी कहते हैं। यहांके शासनकर्त्ता या गवर्नर इङ्गलैण्डके राजा द्वारा नियुक्त हो कर छः वर्ष तक शासनकार्य चलाते हैं। पीछे दूसरे शासनकर्त्ता नियुक्त होते हैं। ये एक्जिक्युटिभ और लेजिस्लेटिभ सभाके परामर्शसे राजकार्य चलाते हैं। भारतमें जिस प्रकार सिविल सर्विस परीक्षोत्तीर्ण छात्र

विचारविभागीय कार्यमें नियुक्त होते हैं, यहां भी उसी प्रकार शिक्षित व्यक्ति ही राज्यशासनकार्यमें नियुक्त होते हैं। वे सब व्यक्ति सेक्रेटरी आव स्टेट और सिंहलके गवर्नर द्वारा निर्वाचित होते हैं।

अभी सिंहलद्वीप सात प्रदेशोंमें विभक्त है। प्रत्येक प्रदेशमें एक सरदार या सहकारी एजेण्ट हैं। वे सब सरदार सिंहलके विभिन्न स्थानमें विभिन्न नामसे अर्थात् काण्डीराज्यमें वे रतेमाहात्म्य, कोरल, आरच्छि; सामुद्रप्रदेशमें मुदलियर, महन्दिरम और विदान; तामिल प्रदेशमें वन्नियर, उदैयर और निदान नामसे परिचित हैं। सिंहलके मध्य, उत्तरमध्य और पश्चिम भूखण्ड ले कर काण्डीय प्रदेश संगठित है। समुद्रका दक्षिण पश्चिम और उत्तर-पश्चिम उपकूलदेश सिंहलका सामुद्रप्रदेश कहलाता है। सिंहलका उत्तरांश और पूर्वांश तामिल प्रदेश है।

यहांके सैकड़े पीछे ७० मनुष्य सिंहली भाषा बोलते हैं, छः हजार यूरोपीय और प्रायः १४ हजार यूरोपीय वंशधरोंको छोड़ कर यहांके अन्यान्य अधिवासियोंकी भाषा तामिल है। सिंहलीय भाषा आर्य हिन्दूजातिकी भाषा है। पालिभाषा और वङ्गभाषाके साथ इसका बहुत कुछ मेल खाता है। तामिल और यहांके अरबवंशधर द्राविड़ीय भाषामें बातचीत करते हैं। यूरोपीय वंशधर फिरंगी टूटी फूटी पुर्त्तगीज भाषाका व्यवहार करते हैं। वेद्दा और रोडिया नामक जातिकी भाषा बिलकुल स्वतन्त्र है। मगधमें प्रचलित पालि भाषाका भी यहां यथेष्ट प्रचार है।

सिंहलवासी बहुत पहलेसे शिक्षित हैं। उन लोगोंके अनेक काव्यग्रन्थ हैं। राजावली या राज-इतिहास आदि ग्रन्थ भी कवितामें लिखे गये हैं, किन्तु धर्मशास्त्र पालि भाषामें लिखे हुए हैं। बहुतसे ग्रन्थोंका मूल सिंहलीय भाषामें अनुवाद हुआ है। वह अनुवाद पढ़ कर ही सभी धर्मशास्त्रका प्रकृत मर्म जाना जाता है।

सिंहल बौद्धप्रधान स्थान है। आज भी यहां प्रबल भावसे बौद्धरूपमें प्रचलित है। खृष्ट पूर्व ३री सदीके प्रारम्भमें भारतीय बौद्धके तुधर्माशोकके पुत्र महिन्दने (करीब ३२० खृ० पू०) सिंहलमें बौद्धधर्मको नींव डाली। सिंहलकी प्राचीन राजधानी अनुराधापुर और पुलस्तिनगरमें (पोलोन्नरुवा) आज भी बौद्धोंके भूरि भूरि कीर्त्तिनिदर्शन पड़े देखे जाते हैं। उनसे सहज ही अनुमान किया जाता है, कि सिंहलके राजगण और प्रजावृन्द कैसे उत्साह और आग्रहसे चिरस्थायी स्मृतिस्तम्भ स्थापन कर अपने धर्मजीवनमें आस्थावान् हो गये थे। यूरोपीयगणके अधिकारमें राजाके खजानेसे उक्त स्तम्भादिका जीर्णसंस्कार नहीं होने पर भी धर्मप्राण प्रजावृन्द आज भी गौतम बुद्धकी पवित्र स्मृतिको अपने अपने हृदयपद्ममें धारण किये हुए हैं।

यहांके अधिवासियोंमें १५ लाख बौद्ध, ५ लाख हिन्दू, २ लाख ७५ हजार मुसलमान और प्रायः २॥ लाख ईसाई हैं। प्रजावर्गके मध्य शिक्षा फैलानेके लिये यहां सरकारी २५३ स्कूल, ४ सामरिक विद्यालय, ८८२ फ्री स्कूल तथा ३२६ साधारण लोगोंके स्थापित विद्यालय हैं।

यहांकी प्रधान उपज धान है। इसके सिवा नाना प्रकारकी उड़द और अन्यान्य शस्य भी यथेष्ट उत्पन्न होते हैं। दुम्बरा, उभा, जाफना आदि स्थानोंमें तमाकूकी खेती होती है। कहवा, दारचीनी, चाय, सिनकोना और नारियल यहांका प्रधान पण्य है। १४वीं सदीमें ओलन्दाज वणिकों द्वारा इस स्थानका गंधद्रव्य अधिक परिमाणमें भारत तथा अन्यान्य स्थानोंमें लाया जाता था। सूती कपड़ा बिनना, नारियल काटना तथा नारियलका तेल तैयार करना ही यहांके अधिवासियोंकी प्रधान उपजीविका है। ये सब द्रव्य नदी और रेल पथसे समुद्रतीरवर्त्ती बन्दरादिमें लाये जाते हैं। यहां समुद्रसे नाना प्रकारकी मछली निकाली जाती हैं। पीछे उन मछलियोंको सुखा कर नाना स्थानोंमें विक्रयार्थ भेजते हैं। समुद्रोपकूलदेशमें प्रायः हाङ्गर और बड़े बड़े गण्डार मत्स्य देखनेमें आते हैं। उनकी लम्बाई १२से १५ फुट होती है।

सिंहलवासी बौद्धधर्मावलम्बी होने पर भी प्राचीन जातिभेदप्रथाका बिलकुल परित्याग नहीं कर सकते। प्राचीनकालमें भारतसे आ कर जिन सब ब्राह्मणोंने सिंहलमें उपनिवेश स्थापन किया, उनके वंशधर ब्राह्मणवंश नामसे प्रसिद्ध हैं। राजवंशी सूर्यवंशीय माने जाते हैं। वृत्तिकी उत्कर्षापकर्षताके कारण सूर्यावंशीय स्वतन्त्र

श्रेणियोंमें विभक्त हुए हैं। इन लोगोंमें जो राजमन्त्री, सामन्त, प्रधान, पुरोहित और राजकर्मचारी तथा कृषिकर्मोपजीवी हैं, वे गोयिवंश कहलाते हैं। सिंहलके गोपालकवर्ग सूर्यवंशोद्भव माने जाने पर भी उन्हें 'नोवले मारकंडेय' दलके अन्तर्भुक्त किया गया है। उक्त दो श्रेणी विप् (वैश्य) वंश नामसे भी परिचित हैं। शूद्रवंशीय ६० स्वतन्त्र श्रेणियोंमें विभक्त हैं। वेदिया जाति अस्पृश्य अन्त्यज मानी जाती है। ये लोग देवमन्दिर अथवा किसी उच्च जातिके घरमें प्रवेश नहीं कर सकते। सिंहलमें गतारु नामक एक स्वतन्त्र जाति है। वे लोग पूर्वकालमें स्वजातिसे भ्रष्ट हो नीच जातित्वको प्राप्त हो गये हैं। यूरोपीय और देशीके संमिश्रणसे जिस सङ्कर वर्णकी उत्पत्ति हुई है, उसका नाम वर्गर है। इसके सिवा यहां और भी एक जाति है। इस जातिके पुरुष स्त्रीकी तरह बड़े बड़े बाल रखवाते हैं। उक्त बालोंका जूड़ा बांध कर वे लोग उसमें कच्छपकी पीठ आदिकी बनी हुई कंघी खोंस देते हैं।

काण्डीयगण सिंहलके पहाड़ी अधिवासी हैं। ये लोग बहुत हट्टे कट्टे होते हैं। पर्वतप्रान्तस्थ निम्न प्रदेशवासी सिंहलियोंके साथ अभी इनका आदानप्रदान चलता है। काण्डीय और समतलवासी बौद्ध ईसाई और सिंहलीमें बहुस्वामिग्रहणकी प्रथा प्रचलित है। पत्नी इच्छा करने पर देवरसे विवाह कर सकती है। आत्मीय नहीं होने पर भी स्वामी यदि पत्नीके निकट किसी दूसरे पुरुषको ले आवे, तो वह स्त्री दोनोंको ही स्वामीकी तरह मानती है। इस प्रकार स्त्री जितने व्यक्तिको स्वामी रूपमें रख सकती है, प्रथम स्वामी उसे उतने पति ला देनेमें जरा भी नहीं संकुचता।

काण्डीमें बीणाप्रथाका विवाह ही विशेष प्रचलित है। इस प्रथासे स्वामीको स्त्रीके पित्रालयमें जा कर वास करना होता है। वह स्त्री अपनी पितृसम्पत्तिकी अधिकारिणी होती है। इस प्रकार घर-जमाईको ससुराल का कोई भी भाग मिलता है। ऐसा करनेसे विवाह सम्बन्ध विच्छिन्न होता और वह कन्या फिर विवाहिता हो सकती है।

दीगा-प्रथाका विवाह ही यहां विशेष सम्मानका परिचायक है। इसमें कन्या अपने पित्रालय और प्राप्य पितृसम्पत्तिका परित्याग कर स्वामीके पास जाती है। ये स्त्रियां स्वामीके ऊपर किसी किसी विषयमें आधिपत्य जमाने पर भी विवाहबन्धन काट नहीं सकती। पर हां, किसी विषयमें सामान्य त्रुटि देखनेसे ही विवाहबन्धन काटनेका हीला पा जाती है। विवाहबन्धन छिन्न होनेके बाद नौ मासके भीतर यदि उस रमणीके कोई पुत्र हो, तो उस बालकका उसका पूर्व स्वामी अर्थात् बालकका जन्मदाता पालन करनेके लिये वाध्य है।

सिंहल मणिमुक्ताका आकर है। बहुत प्राचीन काल से यहांकी मणिमुक्ताकी विशेष प्रसिद्धिका परिचय पाया जाता है। मुक्ता शब्द देखो।

रत्नपुरके दक्षिणपूर्वस्थ बल्लन्सगोड़ीके आस पास के समतल मैदानमें, श्रीपादशैलके पश्चिम समुद्र पर्यन्त विस्तृत समतल भूमिमें, न्युवेलिया पत्तन, उभाकाण्डी, मध्यप्रदेशके मातेलो नामक स्थानमें, कलम्बोके निकटवर्त्ती कुआनेल्लो नामक स्थानमें, मतुरामें (मथुरामें), महगम (महाग्राम) नामक प्राचीन नगरकी पूर्ववर्त्ती नदीतटमें और साफ्राग्राम पर्वतके सानुदेशमें लाल, बैंगनिया, जर्द, नील और सफेद वर्णकी नाना प्रकारकी उज्ज्वल मणि, नीला और श्वेत पोन, चुन्नी (मानिक), पोखराज और वैदूर्य जैसा उत्कृष्ट मिलता है, वैसा और कहीं भी नहीं पाया जाता। एमिथिष्ट, सिनामनष्टोन, स्पिनेल, क्रुसोबेरिल, करुन्दम, जासिन्थ, हायासिन्थ, स्फटिक, ग्रेज, गुलाबी स्वच्छ पत्थर, गोमेद आदि पत्थर यहां स्वच्छ और अस्वच्छ जातिके भेदसे नाना प्रकारके देखे जाते हैं। विस्तार हो जानेके भयसे रत्नादिका परिचय विशेष भावमें नहीं लिखा गया। उन्हीं शब्दोंमें विशेष विवरण देखो। २ सिंहल देशवासी।

सिंहलक (सं० क्ली०) १ उत्तम पित्तल, बढ़िया पीतल। २ वङ्ग, रांगा। ३ त्वक्, गुड़त्वक्, दारचीनी। (त्रि०) ४ सिंहल-संबन्धी।

सिंहलद्वीप (सं० पु०) सिंहल नामका टापू जो भारतके दक्षिणमें है। सिंहल देखो।

सिंहलद्वीपी (सं० त्रि०) १ सिंहल द्वीपमें होनेवाला। २ सिंहल द्वीपका निवासी।

सिंहलम्ब (सं० क्ली०) जम्बूद्वीपके मध्यदेशान्तर्गत एक स्थान। (रोमकसि०)

सिंहल-शैवाल—सिंहलके समुद्रोपकूलमें लवणजलसे उत्पन्न एक प्रकारका उद्भिज्ज। इसे लोग खाते हैं। यूरोप खण्डमें यह पण्यरूपमें बिकता है और Ceylom moss नामसे परिचित है।

दक्षिण-पश्चिम मौसुम वायुके बहने पर तरंगके टक्कर से इसका मूल उखड़ जाता है। उस समय वहांके लोग उसे उठा कर घर लाते हैं और चटाई पर दो तीन दिन सूखनेके लिये छोड़ देते हैं। पीछे उसे मीठे जलसे कई बार धो कर फिर धूपमें सुखा लेते हैं। ऐसा करनेसे लवणका स्वाद दूर हो जाता है। इसके बाद उसे एकत्र कर दूर देशमें विक्रयार्थ भेजा जाता है।

दो ड्राम् (Drachm) परिमित गुल्मको अच्छी तरह चूर्ण कर तीन पाव जलमें २० मिनिट तक सिद्ध करे। जब एक पाव जल रह जाय, तब उसे कपड़ेमें छान कर पान करे। वह भूमिज शैवाल आध औंसकी मात्रामें देनेसे काढ़ा घना होता है। उसे छान कर एक स्वतन्त्र पात्रमें रख देनेसे कुछ समय बाद वह ठंढा हो कर जम जाता है। उस समय उसमें दारचीनी डाल कर दुर्बल रोगीको खिलाया जाता है। यह अति लघु, पथ्य और बलकारक माना जाता है।

सिंहलस्था (सं० स्त्री०) १ सैंहली, सिंहली पीपल। २ सिंहलदेशवासिनी।

सिंहला (सं० स्त्री०) १ सिंहल द्वीप, लंका। २ पित्तल, पीतल। ३ वङ्ग, राँगा। ४ छाल, वकला। ५ त्वक्, दारचीनी।

सिंहलांगुली (सं० स्त्री०) पृश्निपर्णी, पिठवन।

सिंहलास्थान (सं० पु०) एक प्रकारका ताड़ जो दक्षिणमें होता है।

सिंहली (हिं० वि०) १ सिंहल द्वीपका। २ सिंहल द्वीपका निवासी। सिंहली काले और भद्दे होते हैं। वे अधिकांश हीनयान शाखाके बौद्ध हैं। पर बहुतसे सिंहली मुसलमान भी हो गये हैं। (स्त्री०) ३ सिंहली पीपल।

सिंहली पीपल (हिं० स्त्री०) एक लता जिसके बीज दवा के काममें आते हैं। यह सिंहल द्वीपके पहाड़ों पर उत्पन्न होती है। इसका रंग और रूप साँपके समान होता है और बीज लंबे होते हैं। यह चरपरी, गरम तथा कृमि रोग, कफ, श्वास और वातकी पीड़ाको दूर करनेवाली कही गई है।

सिंहलील (सं० पु०) १ संगीतमें एक ताल। २ कामशास्त्रमें एक रतिबन्ध।

"लिङ्गोपरिस्थिता नारी भूमौ दत्त्वा पदद्वयं।
हृदये दत्तहस्ता च सिंहलील: प्रकीर्त्तितः॥
लिंगोपरिस्थिता नारी कान्तोवक्षस्थपदद्वया।
हृदये दत्तहस्ता च सिंहलीलोऽप्यसावपि॥" (रतिमञ्जरी)

सिंहवंश—उत्तर और पश्चिम भारतका एक प्राचीन प्रसिद्ध राजवंश। ये भी सौराष्ट्रमें क्षत्रप या सेनवंश नामसे परिचित थे। ईस्वीसन् ७०से २३५ वर्ष तक इस वंशके राजाओंकी नामाङ्कित मुद्रा पाई जाती है।

सिंहवक्त्र् (सं० पु०) १ राक्षसभेद। (रामा० ६।८४।१२) (क्ली०) २ सिंहका वक्त्र, मुख।

सिंहवत्स (सं० पु०) नागभेद।

सिंहवदना (सं० स्त्री०) १ अड़ूसा। २ माषपर्णी, वन उड़दी। ३ खारी मिट्टी।

सिंहवर्मा—चौलुक्यवंशीय एक राजा। इनके पौत्र अवनिवर्माकी कन्यासे हैहयराज कोकलके पुत्र केयूरवर्णका विवाह हुआ।

सिंहवल्लभा (सं० स्त्री०) अड़ूसा।

सिंहवाह (सं० त्रि०) सिंहवाहन, सिंहवाहनयुक्त।

सिंहवाहना (सं० स्त्री०) दुर्गा देवी।

सिंहवाहिनी (सं० स्त्री०) दुर्गा। देवीपुराणमें लिखा है, कि कल्पान्तकालमें देवी दुर्गाने सिंह पर सवार हो महिषासुरका वध किया था, इसलिये ये महिषघ्नी और सिंहवाहिनी कहलाती हैं। (देवीपु० ४५ अ०)

सिंहविक्रम (सं० पु०) १ सिंहका विक्रम। २ विद्याधरविशेष। ३ चन्द्रगुप्त। ४ घोड़ा। ५ छन्दोभेद। इस छन्दमें पैतालीस अक्षर होते हैं जिनमेंसे ७, ६, १०, १२, १३, १५, १६, १८, १६, २१, २२, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, ३३ ३४, ३६, ३७, ३६वां अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं। (त्रि०) ६ सिंहके समान पराक्रम विशिष्ट।

सिंहविक्रम—सह्याद्रिवर्णित एक राजा। (सह्या० ३४।२२)

सिंहविक्रान्त (सं० पु०) १ अश्व, घोड़ा। २ सिंहकी चाल। ३ दो नगण और सात या सातसे अधिक यगणोंके दंडकका एक नाम। (त्रि०) ४ सिंहके समान पराक्रमविशिष्ट।

सिंहविक्रान्त-गामिता (सं० स्त्री०) बुद्धके अस्सी अनु व्यञ्जनोंमेंसे एक।

सिंहविक्रीड (सं० क्ली०) दंडकका एक भेद जिसमें ६से अधिक यगण होते हैं।

सिंहविक्रीडित (सं० क्ली०) १ छन्दोभेद। इसके प्रत्येक चरणमें १८ अक्षर होते हैं जिनमेंसे ८, ११, १४, १७वां अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं। २ सङ्गीतमें एक ताल। (पु०) ३ सिंहकी क्रीड़ा। ४ बोधिसत्त्व-भेद। ५ एक प्रकारकी समाधि।

सिंहविजृम्भिता (सं० स्त्री०) १ बौद्धमतसे एक प्रकार-का ध्यान। २ एक प्रकारकी समाधि।

सिंहविन्ना (सं० स्त्री०) माषपर्णी।

सिंहविष्टर (सं० पु० क्ली०) सिंहासन।

सिंहविष्णु—मालवके एक प्राचीन हिन्दू नरपति।

सिंहविस्फूर्जित (सं० क्ली०) छन्दोभेद। इस छन्दके प्रत्येक चरणमें १८ करके अक्षर होते हैं। जिनमेंसे ८, ९, १३, १६वां अक्षर लघु और बाकी गुरु होते हैं।

सिंहवृन्ता (सं० स्त्री०) माषपर्णी, वन उड़दी।

सिंहशङ्कर—अलङ्काररत्नाकरोदाहरणसन्निवद्धदेवीस्तोत्र-के रचयिता। ये काश्मीरके रहनेवाले थे।

सिंहसंहनन (सं० त्रि०) १ वराङ्गरूपोपेत, सर्वाङ्ग सुन्दर। (क्ली०) २ सिंहहनन, सिंहनाश।

सिंहसाहि (सं० पु०) साहिवंशीय एक राजाका नाम।

सिंहसेन (सं० पु०) १ महाभारतमें उक्त एक योद्धा। (द्रोणप०) २ जैनके मतसे सर्पिणीके चौदहवें अर्हत्के पिता। (हेम)

सिंहस्कन्ध (सं० त्रि०) सिंहस्य स्कन्ध इव स्कन्धो यस्य। विशाल स्कन्ध।

सिंहस्थ (सं० त्रि०) १ सिंहराशिमें स्थित। २ एक पर्व जो बृहस्पतिके सिंहराशिमें होने पर होता है। सिंहस्थमें विवाह आदि शुभकर्म वर्जित है।

सिंहस्थ—दाक्षिणात्यका एक तीर्थक्षेत्र। स्कन्दपुराणा-न्तर्गत सिंहस्थमाहात्म्य और सिंहस्थस्थानपद्धति-में इस पवित्र क्षेत्रका परिचय लिखा हुआ है।

सिंहस्था (सं० स्त्री०) दुर्गा।

सिंहस्वामिन् (सं० पु०) सिंहराजस्थापित काश्मीरकी एक देवमूर्त्ति और एक तीर्थका नाम। (राजतर० ६।३०४)

सिंहहनु (सं० पु०) १ सिंहके समान दाढ़ या दाढ़की हड्डी जो कि बुद्धके बत्तीस प्रधान लक्षणोंमेंसे एक है। २ गौतमबुद्धके पितामहका नाम। (त्रि०) ३ जिसकी दाढ़ सिंहके समान हो।

सिंहा (सं० स्त्री०) १ नाड़ी शाक, करेमू। २ गुहती, वनभंटा। ३ कण्टकारी, भटकटैया। (पु०) ४ नाग देवता। ५ सिंह लग्न। ६ वह समय जब तक सूर्य इस लग्नमें रहता है।

सिंहा—शाहाबाद जिलान्तर्गत एक छोटा नगर।

सिंहाक्ष (सं० त्रि०) १ सिंहके समान आंखवाला। (पु०) २ राजभेद। (कथासरित्सा०)

सिंहाचल (सं० पु०) पर्वततीर्थभेद। सिंहाचलम् देखो।

सिंहाचलम्—मन्द्राज प्रदेशके विजगापाटम् जिलान्तर्गत एक देवतीर्थ। यह विशाखपत्तनम्से ६ मील उत्तर-पश्चिम समुद्रपृष्ठसे ८०० फुट ऊपर एक बड़े पहाड़के ऊपर अक्षा० १७ ४६´ ३० तथा देशा० ८३´ ११´ ८´´ पू०के मध्य विस्तृत है। वनमालासमाच्छादित पर्वतकन्दरमें यह तीर्थक्षेत्र प्रतिष्ठित है। यहां बहुतसे प्रस्रवण हैं जो तीर्थ यात्रीके निकट पुण्यतोया समझे जाते हैं। पर्वतमालवाही निर्झरमालासे विधौत उपत्यकाका प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोरम है। इस कारण तीर्थक्षेत्रकी भी शोभा और सुन्दरता बहुत कुछ बढ़ गई है।

इस तीर्थके देवमन्दिरमें विष्णु नरसिंहमूर्त्तिमें विरा-जमान हैं। स्कन्दपुराणके अन्तर्गत सिंहाचलमाहात्म्यमें इस तीर्थका विवरण विशेष भावमें वर्णित है। यहांके लोग बड़ी भक्तिके साथ इस देवमन्दिरमें पूजा देने आते हैं। जनसाधारणका विश्वास है, कि यह उड़ीसाके लाङ्गु-लिया गजपतिवंशकी कीर्त्ति है। जिन्होंने भक्तिपूर्वक कोणार्कके सुविख्यात सूर्यमन्दिरकी बहुत रुपये खर्च कर स्थापना की थी, उन्होंने ही प्रायः हजार वर्ष पहले

यह मन्दिर बनवाया। क्योंकि इस मन्दिरमें ११०६, १२६७, १२६८ और १४६१ ई०को प्रदत्त ताम्र-शासनसे ही वह प्रमाणित होता है। मन्दिरके स्तम्भगात्रमें और १ पढ़ने योग्य और कुछ अयोग्य शिलालिपि हैं। पढ़ने योग्य लिपिमें १५२५ ई०में उत्कीर्ण किसी राजाकी दानप्रशस्ति है। १५२६ ई०के एक शिलाफलकमें विजयनगरराज कृष्णदेव रायके देवमन्दिरमें आगमन-विवरण विवृत है। महाराज कृष्णदेव रायने सिंहाचलको आक्रमण और अधिकार किया था। यहां शैलशृङ्ग पर एक दुर्ग भी है। वह कबका बना है, उसका कोई पता नहीं।

प्रायः ढाई सदी पहले दाक्षिणात्य राजाओंने इस मन्दिरके खर्चा वर्चाके लिये प्रभूत सम्पत्ति दान कर दी थी। अभी वह विजयनगरके महाराजके अधीन परिचालित होता है। यहां महाराजका एक प्रासाद और गुलाबका उद्यान है। राजा सीताराम रायने बड़े यत्नसे इस उद्यानवाटिकाका निर्माण कराया। तीर्थयात्रियोंकी सुविधाके लिये यहां महाराजके खर्चसे परिचालित एक छत्र है।

सिंहाचार्य (सं० पु०) एक विख्यात ज्योतिर्विद्।

सिंहाजिन (सं० पु०) एक ऋषिका नाम। (पा ५।३।८२)

सिंहाटकाचल—हिमालयपर्वतका एक शिखर। (हिमवत्खण्ड० ८।४७)

सिंहाण (सं० क्ली०) १ नासिकामल, नाककी मल, नकटी, रेंट। २ लौहमल, लोहेका मुरचा, जंग।

सिंहाणक (सं० क्ली०) नाकका मल, नकटी, रेंट।

सिंहान (सं० क्ली०) सिंहाण देखो।

सिंहानन (सं० क्ली०) १ कृष्णनिर्गुण्डी, काला संभालू। २ वासक, अडूसा।

सिंहाना—राजपूतानेके जयपुर राज्यान्तर्गत सेखावती जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २८° ५´ ३० तथा देशा० ७५° ४४´ पू०के मध्य दिल्लीसे ६५ मील दक्षिण-पश्चिम और जयपुर नगरसे ८० मील उत्तरमें अवस्थित है। यह नगर समुद्रपृष्ठसे ६०० फुट ऊपर एक बैंगनिया रंगके पर्वतके शिखर पर बसा हुआ है। यहांकी अट्टालिका प्रस्तरनिर्मित और परिष्कार परिच्छन्न है। नगरसे २ मील दक्षिण एक शैल पर तांबेकी खान थी। इसके सिवा सालफेट और सालफ्युरेट नामक पदार्थ यहां खनिज अवस्थामें मिलता था। १८७२ ई०में खानके काममें अधिक खर्च पड़नेसे उसका कार्य बन्द कर दिया गया है।

सिंहाक (सं० पु०) सिंहस्य अर्कः। सिंहराशिस्थित भास्कर।

सिंहाली (सं० स्त्री०) सिंहली पीपल।

सिंहावलोक (सं० पु०) सिंहस्य अवलोकः अवलोकनं। सिंहावलोकन देखो।

सिंहावलोकन (सं० पु०) १ सिंहके समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २ आगे बढ़नेके पहले पिछली बातोंका संक्षेपमें कथन। ३ पद्य रचनाकी एक युक्ति जिसमें पिछले चरणके अन्तके कुछ शब्द या वाक्य ले कर अगला चरण चलता है।

सिंहावलोकित (सं० क्ली०) १ सिंहका अवलोकन। २ न्यायभेद। सिंह जिस प्रकार पासकी चीज न देख कर दूरकी चीज देखता है, उसी प्रकार अर्थात् जहां पासका विषय न देख कर दूरका विषय देखा जाता है वहां यह न्याय होता है, अथवा सिंह जिस प्रकार समानरूपमें देखता है, उसी प्रकार जहां समानभावमें देखा जाता है, वहां यह न्याय होता है। न्याय शब्द देखो।

सिंहासन (सं० क्ली०) सिंहचिह्नितं आसनं। १ स्वर्णमय राजासन, राजाओंका श्रेष्ठ आसन।

राजाओंका श्रेष्ठ जो आसन है, वही सिंहासन है। यह सिंहासन तैयार करनेमें शुभ मुहूर्त्त, शुभ मास और शुभ काल, उत्तम तिथि और चन्द्रशुद्धि देख कर तथा गृहारम्भमें जिन सब तिथि नक्षत्रादिका उल्लेख है, उन सब तिथि नक्षत्रादिमें कार्य आरम्भ करना होता है। अशुभ दिनमें कदापि सिंहासन प्रस्तुत न करे। सिंहासन बनाते समय खास कर यह देखना होगा, कि उस दिन चन्द्र तारा शुद्ध, रवि आदि ग्रहगण शुभभावमें अवस्थान, वार, तिथि, नक्षत्र, लग्न, आदि शुभ होंगे। क्योंकि अशुभ दिनमें सिंहासन बना कर यदि राजा उस पर बैठे, तो विशेष अशुभ होता है। फिर शुभदिनमें जो सिंहासन बनाया जाता है, उस पर यदि राजा बैठे, तो नाना प्रकारका शुभमङ्गल होता है।

यह सिंहासन आठ प्रकारका है, पद्म, शङ्ख, गज, हंस, सिंह, भृङ्ग, मृग और हय अर्थात् पद्मसिंहासन, शङ्खसिंहासन आदि।

१ पद्मसिंहासन—यह सिंहासन गम्भारी काष्ठका होना चाहिये। इसे पद्ममाला द्वारा चित्रित तथा स्थान स्थानमें पद्मरागमणिलचित और विशुद्ध काञ्चनमण्डित करना होगा। चरणाग्र पर अर्थात् जहां पैर रखना होता है, वहां पद्मरागमणि द्वारा चित्रित आठों ओर राजाओं के १२ अंगुल परिमित ८ पुत्तिका तथा आसन चौकोन होगा। इसके ऊपर बारह पुत्तिका रहेगी। उन सब पुत्तिकाओंमें जगह जगह नवरत्न द्वारा खचित तथा रक्त वस्त्र द्वारा आवृत करना होगा। ऐसे लक्षणयुक्त आसनको पद्म सिंहासन कहते हैं। राजा इस सिंहासन पर बैठ कर यदि राजा कार्य करें, तो वे अत्यन्त प्रतापशाली होते हैं।

२ शङ्खसिंहासन—यह सिंहासन भद्र इन्द्रकाष्ठ द्वारा निर्मित और शङ्खमाला द्वारा शोभित होगा। इस का सर्वाङ्ग शुद्ध स्फटिक और रौप्य द्वारा भूषित करना होता है। चरणाग्र पर शङ्खनाभि और सत्ताईस पुत्तिका रहेगी। इसके सभी स्थान विशुद्ध स्फटिक विन्यस्त और शुक्ल पट्टवस्त्रसे आवृत होंगे। इसीका नाम शङ्ख सिंहासन है।

३ गजसिंहासन—यह सिंहासन कटहलकी लकड़ीका होना चाहिये। इसे गजमाला, विद्रुप, वैदूर्य और काञ्चन द्वारा भूषित करे। इसके चरणाग्र पर गजशिर तथा पुच्छमें एक एक पुत्तिका रहेगी तथा यह माणिक्य द्वारा शोभित और रक्तवस्त्र द्वारा आवृत होगा। यह सिंहासन साम्राज्यफलदायक है।

४ हंससिंहासन—इसे शालकाष्ठ द्वारा निर्मित तथा हंसमाला द्वारा शोभित, पुष्पराग, काञ्चन और कुरुविन्द द्वारा चित्रित, चरणाग्र पर हंसरूप, इक्कीस पुत्तिका और गोमेद रत्नखचित तथा पीत वस्त्र द्वारा आच्छादित करना होगा। यह सिंहासन अनिष्टविनाशक है।

५ सिंहसिंहासन—यह सिंहासन चन्दनकाष्ठका होता है। इसे सिंहमाला द्वारा विभूषित, सभी अङ्ग विशुद्ध सुवर्णखचित, मध्य मध्यमें हीरक खचित, चरणाग्र पर सिंहलेप, इक्कीस पुत्तिका और मुक्ता आदि द्वारा भूषित तथा शुद्ध शुभ्रवस्त्र करना होगा। राजा इस आसन पर बैठ कर समस्त पृथिवीका शासन आसानीसे कर सकते हैं।

६ भृङ्गसिंहासन—यह चम्पककाष्ठनिर्मित, भृङ्गमाला द्वारा शोभित और मरकतमणि खचित होगा। पादाग्र पद्मकोष, बाईस पुत्तिका और नीलवस्त्रसे आवृत करना होगा। यह सिंहासन शत्रुक्षयकारक और विजयप्रद है।

७ मृगसिंहासन—यह सिंहासन नीमकी लकड़ीका बनाना होता है। इसे मृगमाला द्वारा सुशोभित, इन्द्रनील और काञ्चन द्वारा चित्रित, चरणाग्र पर मृगशिर, ४० पुत्तिका और नीलवस्त्रसे आच्छादन करना होता है। यह सिंहासन लक्ष्मी, विजय, सम्पत्ति और नीरोगप्रद है।

८ हयसिंहासन—यह केशर काष्ठ द्वारा प्रस्तुत, हय माला और समस्त वस्त्र द्वारा विभूषित, ७५ पुत्तिका, चरणाग्र पर हयशिर तथा विचित्र वस्त्रसे भूषित होगा। यह सिंहासन लक्ष्मी और विजयवर्द्धक है।

राजाओंके यही ८ प्रकारके सिंहासन हैं। इन आठ सिंहासनोंमेंसे किसी एक सिंहासन पर बैठ कर राजा राजकार्य करें इससे उनका सुमङ्गल होगा। जो राजा दम्भपूर्वक इसका अतिक्रम करते हैं, वे शीघ्र ही मृत्युमुखमें पतित होते हैं तथा उन्हें नाना प्रकारकी विपत्ति झेलनी पड़ती है। दूसरेके आसन या निरासन पर राजा न बैठें, बैठनेसे वे शत्रु द्वारा मारे जाते हैं।

युक्तिकल्पतरु, शुक्रनीति आदि ग्रन्थोंमें इसका विवरण आया है।

२ चतुरङ्गक्रीडामें जयविशेष। उक्त क्रीडामें राजा जब अन्य राजपदको प्राप्त होते हैं, तब उनका सिंहासन होता है अथवा राजा यदि राजाको हनन कर सिंहासन लाभ कर सकें, तो भी वे जयी होते हैं। अथवा राजा यदि किसी प्रकार मित्रसिंहासन भी लाभ कर सकें, तो भी वे जयलाभ करते हैं। उक्तरूप जयलाभ करनेका नाम सिंहासन है। रघुनन्दनके तिथितत्त्वमें इस क्रीडाका विवरण तथा जयपराजयादिका विषय विशेषरूपसे वर्णित है।

३ योगासनविशेष। दोनो पंड़ीको वृषणके नीचे और सीवनीके पार्श्वदेशमें निक्षेप करे। दोनों हाथ जानुदेशमें रख कर सभी उंगलियां फैला दे। मुंह विवृत कर नाकका अगला हिस्सा निरीक्षण करता रहे। इस प्रकार अवस्थान करनेको सिंहासन कहते हैं। यह सिंहासन आसनोंमें श्रेष्ठ है। योगिगण सर्वदा इस आसनकी प्रशंसा करते हैं। इस आसन पर योगाभ्यास करनेसे शीघ्र ही योगसिद्ध होता है। (हठप्रदीप)

(पु०) ४ सोलह प्रकारके रतिबंधोंमेंसे चौदहवां रतिबंध।

"स्वजङ्घाद्वयबाहू च कृत्वा योषापदद्वयं।
स्तनौ धृत्वा रमेत् कामी बन्धः सिंहासनो मतः॥"

(रतिमञ्जरी)

५ ज्योतिषोक्त योगभेद, सिंहासनयोग। जात बालकके जन्मकालमें ग्रहगण यदि मीन, मेष, वृष और तुलाराशिमें अवस्थान करें, तो सिंहासनयोग होता है।

इसके सिवा और भी एक सिंहासनयोग है जिसे श्वेतसिंहासनयोग कहते हैं। जात बालकके यदि दशमाधिपतिके केन्द्र अथवा नव, पञ्चम या द्वितीय स्थानमें रहे, तो यह योग होता है। लग्न, लग्नके चतुर्थ, सप्तम और दशम स्थानको केन्द्र कहते हैं। इस योगमें जन्म लेनेसे जात बालक विश्वविख्यात और राजा होता है। (बृहज्जातक)

६ लौहकिट्ट, मंडूर। ७ दोनों भौंहोंके बीचमें बैठकी के आकारका चन्दन या रोलीका तिलक।

सिंहासनचक्र (सं० क्ली०) फलितज्योतिषमें मनुष्यके आकारका सताइस कोठोंका एक चक्र जिसमें नक्षत्रोंके नाम भरे रहते हैं। इस चक्र द्वारा राजाओंके सिंहासन विषयका शुभाशुभ ज्ञात हो जाता है।

सिंहास्य (सं० पु०) १ वासक, अडूसा। २ कोविदार, कचनार। ३ एक प्रकारकी बडी मछली। (त्रि०) ४ सिंह तुल्यमुख, जिसका मुख सिंहके समान हो।

सिंहिका (सं० स्त्री०) १ एक राक्षसी। यह राहुकी माता थी। इसके दो पुत्र थे—राहु और वास्तुपुरुष। यह राक्षसी दक्षिण समुद्रमें रह कर उडते हुए जीवोंकी परछाईं देख कर ही उनको खींच कर खाती थी। इसको लंका जाने समय हनुमानने मारा था। २ दाक्षायणी देवीका एक रूप। ३ टेढ़े घुटनोंकी कन्या जो विवाहके अयोग्य कही गई है। ४ वनभंटा। ५ कण्टकारी। ६ अडूसा। ७ शोभन छन्दका एक नाम। इसके प्रत्येक पदमें १४, १० के विरामसे २४ मात्राएं और अन्तमें जगण होता है।

सिंहिकासूनु (सं० पु०) १ सिंहिकाके पुत्र, राहु। २ वास्तुपुरुष। सिंहिका देखो।

सिंहकेय (सं० पु०) सैंहिकेय, राहु। (हरिवंश)

सिंहिनी (सं० स्त्री०) बौद्धदेवीभेद।

सिंहिनी (हिं० स्त्री०) मादा सिंह, शेरनी।

सिंहिय (सं० पु०) सिंह जाति, सिंह।

सिंहिल (सं० पु०) सिंह।

सिंही (सं० स्त्री०) १ सिंहकी पत्नी, शेरनी। २ वार्त्ताकी, बैंगन। ३ कण्टकारी। ४ वासक, अडूसा। ५ बृहती। ६ राहुकी माता सिंहिका। ७ मुद्गपर्णी। ८ चन्द्रशेखरके मतसे आर्य्याका पचीसवां भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं। ९ सिंघा नामका बाजा। १० नाडी शाक, करेलू। ११ पीली कौड़ी।

सिंहीमारी—आसामप्रदेशके ग्वालपाडा जिलान्तर्गत एक गण्डग्राम। यह ब्रह्मपुत्रनदके बायें किनारेके पास ही अवस्थित है। गारोहिल पर्वतमालाके तुरा नामक सेनावाससे यह ४३ मील पश्चिम है। यहांसे तुरा तक एक पक्की सड़क है। प्रति सप्ताहमें यहां एक हाट लगती है और गारो पहाडी लोग नाना प्रकारका द्रव्य इस हाटमें बेचनेके लिये आते हैं।

सिंहीमारी—बङ्गालके कुचविहार राज्यमें प्रवाहित एक नदी। कुचविहारके उत्तर पश्चिम कोणमें अवस्थित खोति विभागके मोरङ्गकी हाट नामक स्थानसे यह नदी जलढाका नाम धारण कर धीरे धीरे गिलाडंगा, पाणिग्राम, दैमंगा, खेनेरबाटो और माथाभंगा आदि ग्राम होती हुई दक्षिणपूर्वकी ओर चली आई है। राज्यके ठीक मध्यस्थलमें यह नदी मनसाही नामसे तथा और भी दक्षिण सिंहीमारी नामसे प्रसिद्ध हो गई है। मुजनाई, शताङ्गा, दुधुआ, दोलङ्ग आदि शाखाएं इसके कलेवरको बढाती हैं। धर्ला या तोर्षा नदीके साथ सिंहीमारी

सिकता—पुरीधामके श्रीजगन्नाथ महाप्रभुके मन्दिर-से पश्चिममें अवस्थित समुद्रका वेलाप्रदेश । यहां लोकनाथ महादेवका मन्दिर विद्यमान है ।

सिकतामेह (सं० पु०) एक प्रकारका प्रमेह जिसमें पेशाव-के साथ बालूके-से कण निकलते हैं ।

सिकतावर्त्मन् (सं० पु०) आंखकी पलकका एक रोग ।

सिकतासिन्धु (सं० पु०) काश्मीरका एक जनपद ।

सिकतिल (सं० त्रि०) सिकताः सन्त्यत्रेति सिकता (देशे लुबिलचौ । पा ५।२।१०५) इति इलच् । सिकतावान्, रेतीला ।

सिकत्तर (हिं० पु०) किसी संस्था या सभाका मन्त्री, सेक्रेटरी ।

सिकत्य (सं० त्रि०) बालुकामय प्रदेशमें जो होता हो ।

सिकन्दर—महात्मा अलेकसन्दरका पारसिक नाम । माकिदोनवीर अलेकसन्दरकी गुणावली और वीरताका परिचय पा कर मुसलमान लोग उक्त नामके विशेष पक्ष पाती हुए तथा तभीसे वे सिकन्दर कहलाने लगे। कुरानमें महम्मदने इसे 'जूलकर्णिन्' या द्विश्रृङ्ग मनुष्य कह कर अभिहित किया है। सिकन्दरकी प्रचलित मुद्रा अथवा पदकोंमें उसकी जो मूर्त्ति दी हुई है, उसके शिरोदेशमें मेषश्रृङ्गचिह्न विद्यमान देख कर इस्लामधर्म-प्रवर्त्तकने शायद इसी उक्तिका प्रयोग किया होगा । कुरानके प्राच्य देशीय टीकाकारोंने 'जुलकर्णिन' पद पर किसको उल्लेख किया गया है, उसे स्थिर न करते हुए कहा है, कि ऐसा व्यक्ति निश्चय ही ईश्वरानुगृहीत है। सिकन्दर एकान्त ईश्वरका विश्वासी था। वह पैगम्बर खिजिर द्वारा परिचालित हो यमपुरीके निकटस्थ जीवन प्रस्रवणके समीप पहुंच गया था। किन्तु दुर्भाग्यवशतः देवताओंने उस निर्झरकी अमृतधारा पीनेसे उसको मना कर दिया।

३२७ ई०सनके पहले ३० वर्षकी अवस्थामें इसको मृत्यु हुई। ३३१ ई०सनके पहले वह पारस्यपति दरा युसको परास्त कर ३२७ ई०में भारत विजय करनेके लिये गया था। यहां पञ्जाव प्रदेशमें पुरु ग्रीकग्रन्थ-लिखित नामक राजाके साथ इसको घमासान लड़ाई हुई। उस लड़ाईमें विजित पुरुराजके साथ विजेता अलेकसन्दरने मित्रता स्थापन की थी।

अलेकसन्दर देखो।

सिकन्दर—मुसलमान कवि खलीफा सिकन्दरका काव्य नाम। इसने पुरबी, मारवाड़ी और पंजाबी भाषामें कुछ मार्शियाकी रचना की थी। इसके सिवा मत्स्योपा-ख्यान तथा राजा दिलखवार और माफी विषयक दो काव्य ग्रन्थ इसके बनाये हुए हैं।

सिकन्दर (युवराज)—अमीर तैमूरका पोता और उमर शेख मिर्जाका लड़का । अमीर तैमूरकी मृत्युके बाद इस-ने पीर महम्मद और मिर्जारुस्तम नामक अपने दो भाइयोंको परास्त कर उनसे फार और इस्पाहन राज्य छीन लिया। ऐसे आचरण पर विरक्त हो उसके चचा शाहरुखने उससे युद्ध ठान दिया। युद्धमें सिकन्दर परा-जित और बन्दी हुआ। १४१४ ई०में शाहरुखने उसकी दोनों आंखें निकाल कर उसे पापका प्रायश्चित्त कराया था।

सिकन्दर आदिलशाह—दाक्षिणात्यके विजापुर राज्यका अन्तिम राजा। यह बहुत बचपनमें पिता २य अली-आदिलशाहके सिंहासन पर १६७२ ई०में बैठा। बाल्या वस्थाके कारण यह स्वाधीनभावमें राज्यभोगका उप भोग नहीं कर सका, हमेशा अपने अमात्य और मन्त्रियोंके अधीन रहा। १६८३ ई०में विजापुर और उसके अधीन कुल प्रदेश बादशाह औरङ्गजेबके हाथ आया। राजा सिकन्दर मुगलोंके हाथ बन्दी हुआ और तीन वर्ष कारा-वासमें रह कर यमपुर सिधारा।

सिकन्दर कादेर मिर्जा—मुगलसम्राट् शाह आलमका वंशधर। कुमार खुसेंदका लड़का। यह एक कवि था।

सिकन्दर खां उजबेक—पारस्यके कासगर राज्यके प्रसिद्ध सिकन्दर खा राजवंशका एक वंशधर। यह मुगल सम्राट् हुमायू बादशाहके साथ भारतवर्ष आ कर उस-का मन्त्री बना। १५४३ ई०में ससैन्य मिर्जा हैदर-के साथ काश्मीर राज्य फतह करने गया। इस लड़ाई-में काश्मीर मुगलोंके हाथ लगा। १५७२ ई०में बादशाह अकबरशाहके राज्यकालमें लखनऊ शहरमें इसका देहान्त हुआ।

सिकन्दर-जाह—दाक्षिणात्यके हैदराबाद राज्यका एक निजाम (नवाब) यह १८०२ ई०में पिता नवाब निजाम अली खां बहादुरकी मृत्युके बाद दाक्षिणात्यकी मसनद पर बैठा। प्रायः २८ वर्ष राज्य करनेके बाद १८२९ ई-के मई मासमें इसका देहान्त हुआ। पीछे उसके लड़के मीर फर्खुन्द अली खाने नासीर उद्दौला नाम ग्रहण कर राज्यशासन किया था। नासिर उद्दौला देखो।

सिकन्दरपुर—युक्तप्रदेशके वलिया जिलान्तर्गत बांसदिया तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २६° ३´ उ० तथा देशा० ८४° ४´ पू० घघरा नदीके दाहिने किनारे बांसदिया से २१ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या ७ हजारसे ऊपर है। १५वीं सदीमें जौनपुरका राजा सिकन्दर लोदीने इसे बनाया। उस समय यह बहुत समृद्धशाली नगर था। प्राचीन सुदृढ़ एक दुर्गका ध्वंसावशेष और बहुत दूरव्यापी ध्वस्त अट्टालिका श्रेणी आज भी वह अतीत स्मृति याद दिलाती है। स्थानीय लोगोंके पटना चले जानेसे यह नगर श्रीहीन हो गया है। आज भी यहांके बाजारमें इतर और गुलाब जल बिकता है। यहां मोटे कपड़ेका भी कारबार चलता है। शहरमें एक स्कूल है।

सिकन्दर बेगम—राजपूतानेके दक्षिणमें अवस्थित सुप्रसिद्ध भूपाल राज्यकी एक शासनकर्त्री। १८१६ ई०में इसका जन्म हुआ। इसका पिता जातिका अफगान (पठान) और विख्यात योद्धा था। मुगलसम्राट् औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद उसने अपनेको भूपालका स्वाधीन राजा कह कर घोषणा कर दी तथा आत्मपक्षकी रक्षा करनेमें भी यथेष्ट वीरता दिखलाई थी। उसके मरने पर उसका सेनाने सिकन्दर बेगमकी माताको भूपाल-राज्यकी अभिभाविका बनाई और नावालिका सिकन्दर बेगम राज्यकी भावी उत्तराधिकारी ठहराई गई।

माताकी इच्छाके विरुद्ध सिकन्दरने अपने चचेरे भाई जहांगीरसे विवाह किया। विवाहके पहले सिकन्दरने भाई स्वामीसे यह स्वीकार कराया, कि वह कभी भी राजकार्यमें हस्तक्षेप न करेगा, सारा कार्य बेगमके इच्छानुसार ही परिचालित होगा। १८३५ ई०में जहांगीरकी मृत्यु हुई। इसके कुछ दिन बाद आगराके दरबारमें अंगरेज गवर्मेण्टने इसके आचरण और राज्यशासन प्रणाली पर संतुष्ट हो इसे *G. C. S. I.* की उपाधि दी। १८४७ ई०में सिकन्दर बेगम पहले भूपाल-राज्यको रिजेण्ट (अभिभावक) हुई। पीछे १८६८ ई०में मृत्युकाल-पर्यन्त इसने स्वयं राज्यशासन किया था। इसकी मृत्युके बाद इसकी बड़ी लड़की शाहजहां बेगम भूपाल राज्यकी अधीश्वरी हुई।

सिकन्दर मुन्शी—पारस्यपति १म शाह अब्बासका मन्त्री। इसने १६१६ ई०में 'आलम आराइ आब्बासि' नामक एक इतिहास ग्रन्थमें सफावि वंशीय राजा १म शाह अब्बास पर्यन्त विवरण लिपिबद्ध किया। ग्रन्थ तीन खण्डोंमें सम्पूर्ण है। अन्तिम खण्डमें शाह अब्बासका जीवनवृत्त लिपिबद्ध हुआ है। यह ग्रन्थ शाह अब्बासको उपहार स्वरूप दिया गया। इसका दूसरा नाम इस्कन्दार मलिसि या सिकन्दर भी था।

सिकन्दर शाह—गुजरातका एक हिन्दूराजा। यह अपने पिता २य मुजफ्फर शाहकी मृत्युके बाद १५२६ ई०में गुजरातके सिंहासन पर बैठा। ३ मास १७ दिन राज्य करनेके बाद यह गुप्त शत्रुके हाथसे मारा गया। पीछे उसका लड़का नासिर खाँ २य महम्मद नाम धारण कर राजा हुआ।

सिकन्दर शाह पूरबी—बङ्गालका एक पठान राजा। यह १३५८ ई०में पिता समसुद्दीन भङ्गिराके मरने पर बङ्गाल की मसनद पर बैठा। राज्यशासनकार्य आरंभ करनेके पहले ही दिल्लीश्वर फिरोज शाह तुगलकने बंगाल पर चढ़ाई कर दी। सिकन्दरको उस समय राज्यकी प्रकृत अवस्था मालूम न थी, इस कारण दिल्लीश्वरके विरुद्ध अस्त्र धारण करना उसके लिये शुभजनक नहीं है, ऐसा जान कर वह वार्षिक कर देनेको राजी हो गया और फिरोजसे मेल कर लिया। फिरोज भी इस पर प्रसन्न हो दिल्लीको लौट गया। प्रायः ६ वर्ष शान्तिपूर्वक राज्य शासन कर १३६७ ई०में सिकन्दरशाह पूरबी परलोक सिधारा। इसके बाद उसका लड़का गयासुद्दीन पूरबी राजा हुआ।

सिकन्दरशाह लोदी (सुलतान)—दिल्लीका पठान-वंशीय मुसलमान सम्राट्। यह सुलतान बहलोल लोदीका

लडका था। निज़ाम खाँ नामसे इसकी प्रसिद्धि थी। १४८९ ई०में पितृसिंहासन पानेके बाद यह सिकन्दर लोदी कहलाने लगा। इसके राजत्वकालमें भारतमें भयानक भूकम्प हुआ था। * इससे उत्तर-भारतके अधिकांश स्थानोंके मकान ढह टूट गये और लाखोंकी जान गई थी। दिल्ली नगरी उस समय जब शोभाहीन हो गई, तब सिकंदर आगरामें राजधानी उठा ले गया। इसने अपने ज़मानेमें हिन्दुओंको पहले पारसी भाषा सीखनेका हुकुम दिया। प्रायः २१ वर्ष राज्य करनेके बाद १५१० ई०में सिकन्दर शाह परलोकको सिधारा। ब्रीगस फिरिस्ता नामक फिरिस्ताके अनुवाद ग्रन्थमें १५१७ ई०सन् लिखा हुआ है। पारस्य भाषाविद् बील साहबने उसे भ्रम साबित कर दिया है।

सिकन्दर लोदीने अपने जीते-जी आगरा नगरके दक्षिणमें बादलगढ़ नामक एक दुर्ग बनवाया था। मुगल सम्राट् अकबर शाहने उस दुर्गको तोड कर फिरसे उसमें लाल पत्थर जड दिया। क़ासिम खा मीरबहर नौसेनापतिकी देख-रेखमें ८ वर्षके परिश्रममें ३६ लाख रुपया खर्च कर उसका सत्कार कराया गया था। मुगल-सम्राट् शाह आलम बादशाह और मधुराव सिन्देके अधिकार कालमें वह दुर्ग अकस्मात् दग्ध हो गया। इसके लडके का नाम हुसेन लोदी था। भारतवर्ष और लोदीवंश देखो।

सिकन्दर शाह शूर—दिल्लीका शूरवंशीय एक राजा, शेर शाह शूरका भतीजा। इसका असल नाम अहाद खां शूर था। १५५५ ई०के मई मासमें इसने इब्राहिम शूरको रणक्षेत्रमें परास्त कर दिल्लीसिंहासन अपनाया। उसके भाग्यमें सुखभोग अधिक दिन बदा नहीं था। क्योंकि उसी सालके जून मासमें भारतेश्वर हुमायूं बादशाह फिरसे अपने दलबलके साथ पञ्जाब सीमान्त पर आ धमका। इसके पहले हुमायूं शेरशाह द्वारा भारतवर्षसे निकाल दिया गया था। वे अभी सुयोग देख कर नष्ट राज्यका उद्धार करनेकी इच्छासे दलबलके साथ आगे बढ़े। सिकन्दर शूरने हुमायूंको रोकनेके लिये स्वयं कदम उठाया। वह सरहिन्दके सेनादलके नायक बैराम खाके साथ युद्ध करने लगा। २२वीं जूनको युद्धमें हार खा कर वह शिवालिक शैल पर भाग गया। मुगल-सम्राट् अकबरने १५५७ ई०में उसका पीछा कर उसे पर्वतके निभृत निवाससे निकाल भगाया। इसके बाद सिकन्दर शूर बङ्गाल भाग आया। यहीं पर दो वर्षके बाद उसकी मृत्यु हुई।

सिकन्दर सुलतान—काश्मीरका एक मुसलमान राजा। यह 'भूत-शिवान्' अर्थात् मूर्त्ति तोडनेवाला कह कर जनसाधारणमें परिचित था। इसलामधर्मके प्रतिष्ठाता शाह मीर दर्वेशका यह पोता था। सिकन्दर अपनी माताकी सहायतासे पिता सुलतान कुतुबुद्दीनके सिंहासन पर १३९३ ई०में अभिषिक्त हुआ। राज्यके कुल मन्त्री और कर्मचारीने इसे काश्मीरका राजा स्वीकार किया। अपने भुज और प्रतिभाबलसे सिकन्दर काश्मीरका प्रबल पराक्रान्त राजा हो गया था। हिन्दू-धर्मके प्रति विद्वेषवशतः इसने काश्मीरके अनेक मन्दिरों और देवमूर्त्तियोंको विध्वंस कर डाला था। २६ वर्ष ६ मास राज्य करनेके बाद १४१६ ई०में यह परलोकको सिधारा। इसीके राज्यकालमें तैमूरलङ्गने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था। सिकन्दर सुलतानने उसे उपयुक्त नजर दे कर परित्राण पाया था।

सिकन्दरा—युक्तप्रदेशके आगरा जिलान्तर्गत आगरा तहसीलका एक बड़ा ग्राम। यह आगरा नगरसे ५ मील उत्तर-पश्चिम मथुरा जानेके रास्ते पर अवस्थित है। जौनपुरके राजा सिकन्दर लोदीने इस नगरको बसा कर यहां १४९५ ई०में एक प्रासाद बनवाया था। मुगल सम्राट् अकबर बादशाहने अपने अन्तिम दिनकी देहरक्षाके लिये यहां एक मकबरा निर्माण कराया था, इसीसे इसकी विशेष प्रसिद्धि है। १६१३ ई०में उसके लडके जहांगीरने उस मकबरेका काम जो कुछ अधूरा रह गया था, खतम किया।

फार्गुसन साहबने उस मकबरेका कारुकार्य देख कर लिखा है, कि अकबर शाहकी बनाई हुई दूसरी दूसरी इमारतोंसे यह इमारत बिलकुल नई है। भारतवर्षमें उस समय या उसके पहले जितने मकबरे बनाये गये हैं, उनमेंसे किसीके साथ इसका मेल नहीं खाता। यह हिन्दू या बौद्ध-स्थापित्य शिल्पके अनुकरण पर बनाया गया है। इसके

* १५०५ ई०को छठी जुलाई रविवारको भूमिकम्प हुआ था।

चारों ओर विस्तीर्ण उद्यान है। उन्होंने यह भी कहा है, कि उसकी ऊंचाई और गुम्बज यदि और भी कुछ बड़ा होता, तो यह ताजमहलका मुकाबला कर सकता था।

सिकन्दरा—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद जिलान्तर्गत फुलपुर तहसीलका एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २५° ३३´ १५´´ उ० तथा देशा० ८२° १´ ६´´ पू०के मध्य विस्तृत है। इस ग्रामसे एक मील उत्तर पश्चिम गजनीपति महमूदके विख्यात सेनापति सैयद सलार मसाउदका मकबरा है। यहां प्रतिवर्षके वैशाखमासमें उस मकबरेके अहातेमें एक मेला लगता है जिसमें करीब ५० हजार मुसलमान इकट्ठे होते हैं।

सिकन्दराबाद—१ युक्तप्रदेशके बुलन्द-शहर जिलेकी उत्तर-पश्चिमकी तहसील। यह अक्षा० २८° १५´ से २८° ३६´ उ० तथा देशा० ७७° १८´ से ७७° ५०´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५१६ वर्गमील और जनसंख्या ढाई लाखसे ऊपर है। इसमें ४०४ ग्राम और ७ शहर लगते हैं। इसके उत्तरमें हिन्दान और भूरिया नदी बहती है।

२ उक्त प्रदेशके बुलन्दशहर जिलेका एक नगर और सिकन्दराबाद तहसीलका विचारसदर। यह अक्षा० २८° २८´ उ० तथा देशा० ७७° ४२´ पू० इष्ट इण्डिया रेलवेके सिकन्दराबाद स्टेशनसे ४ मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या करीब २० हजार है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। शहरमें म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। १४९८ ई०में दिल्लीश्वर सिकन्दर लोदीने इस नगरको बसाया। मुगल-सम्राट् अकबरके शासनकालमें यह नगर एक महलके सदररूपमें गिना जाता था। नाजिब उद्दौलाने दिल्लीश्वरको रणक्षेत्रमें सहायता पहुंचानेके कारण जागीर पाई थी। यह नगर भी उस जागीरका केन्द्रस्थल था। १७३६ ई०में अयोध्याके राजप्रतिनिधि सादत् खाँने इस नगरमें मराठी सेनाओंको परास्त किया। १७६४ ई०में भरतपुर-राज्यके साथ सेनादलने इस नगरमें छावनी डाली थी। सूर्यमलजीकी मृत्यु और जवाहिर सिंहकी पराजयके बाद वे लोग यमुना पार कर भाग गये। मराठोंके अधीन परिचालित सेनापति पेरोनके सेनादलने यहां शिविर स्थापन किया था। अलीगढ़-युद्धके बाद कर्नेल जेम्स स्किनरने यह नगर अधिकार किया। १८५७ ई०के सिपाहीविद्रोहके समय निकटवर्त्ती स्थानवासी गूजर, राजपूत और मुसलमान जातियोंने विद्रोहमें शामिल हो कर सिकन्दराबाद पर आक्रमण किया और उसे लूटा। उसी सालकी २७वीं सितम्बरको कर्नेल ग्रेट हेडके अधीनस्थ सेनादलने उनके विरुद्ध अग्रसर हो कर नगरका पुनरुद्धार कर लिया। यहां बहुतसी-मसजिद और हिन्दूमन्दिर हैं। स्थानीय प्रसिद्ध जमींदार मुन्शी लक्ष्मणस्वरूपका वासभवन उल्लेखयोग्य है।

यहां सिरकी पगड़ी, चादर और कुरते आदि बनानेके लिये एक प्रकारका बढ़िया मसलिन तैयार होता है। शहरमें एक एङ्गलो वर्नाक्युलर स्कूल और पांच प्राइमरी स्कूल हैं। यहां दो बाजार हैं, वे बाजार ही स्थानीय कपास, चीनी और शस्यादिके वाणिज्य-केन्द्र हैं।

सिकन्दराबाद (अलेकसन्दरनगर)—हैदराबाद या निजाम राज्यके अन्तर्भुक्त एक नगर। यह अक्षा० १७° २६´ ३०´´ उ० तथा देशा० ७८° ३३´´ पू०के मध्य विस्तृत है। यहां वृटिश सरकारका एक सेनानिवास है। यह नगर हैदराबाद नगरसे ६ मील उत्तर-पूरब समुद्रपृष्ठसे १८३० फुट ऊपरमें बसा हुआ है। निजाम सिकन्दर शाहके नामानुसार-सिकन्दराबाद सेनानिवास स्थापित हुआ है। भारतवर्षमें वृटिश गवर्मेण्टके जितने सेनानिवास हैं, उनमें यही सेनानिवास सबसे बड़ा है। क्योंकि यहां हैदराबादके साहाय्यकारी सेनादल और मन्द्राज-सेनादलका एक विभाग रखनेकी व्यवस्था है। यहां अस्त्रागार तारदर्शनके लिये युद्धसज्जासंरक्षणी-कार्यालय और कमिसेरियट विभाग है।

१८५३ ई०की २१वीं मईको अंगरेजोंके साथ निजामकी जो संधि हुई, उसीकी शर्तके अनुसार वृटिश गवर्मेण्ट अपने हाथसे उक्त सेनादलका पोषण करती है। १८५० ई० तक सिकन्दरा सेनावासमें एक बारक और थोड़ीबहुत कुछ कोठियां थीं। उस समय उसकी लम्बाई पूर्व-पश्चिममें प्रायः ३ मील थी। उसके सम्मुख और वामभागमें घुड़सवार-सेनादल रहता था तथा दक्षिणमें पदातिक सेनाओंका वासगृह था। उसी साल बलराम तक सेनानिवासकी सीमा बढ़ाई गई तथा १६ वर्गमील स्थान तक सिकन्दराबादका सेनानिवास फैला हुआ

था। उसके बीचमें कुछ ग्राम भी विद्यमान हैं। इस नूतन सेनानिवासमें यूरोपीय सेनादलको रक्षाके लिये एक बहुत बड़ी दो खनवाली बारक तथा उसके पास ही देशी सेनावृन्दके लिये सुन्दर गृहावली बनाई गई है।

सेनावास और उसके चारों ओरका देशभाग ऊंचा नीचा और गण्डशैलमालासे समाकीर्ण है। भूमिभाग भी पार्वतीय स्तरोंसे परिपूर्ण है। उसके पास ही कदम रसूल नामक एक पहाड़ है। कहते हैं, कि उस शैलके ऊपर पैगम्बर महम्मदका पादचिह्न है। सेनानिवास-के ठीक दक्षिण-पश्चिम हुसेन-सागर नामका बहुत प्रसिद्ध बांध है। उसकी परिधि प्रायः ३ मील है।

यहांका कूच-कवायद करनेका मैदान बहुत लम्बा चौड़ा है। प्रायः ८ हजार सेना इस मैदानमें खड़ी हो कर अवलीलाक्रमसे कृत्रिम रणक्रीडा दिखला सकती है। इसके सिवा उसके दाहिनी ओर साधारण राजकीय गृहावली है और वामभागमें एक मिट्टीका बना दुर्ग है। वह स्थान कुछ बड़ी बड़ी कमानों और एक दल कमान-वाही सेनासे संरक्षित है। पासमें कब्रिस्तान है।

सिकन्दराबाद सेनावासके पास त्रिमिलगिरि सेना-वास है। यहां स्थानीय यूरोपीय अधिवासियोंका स्थान हो सकता है। उसके चारों ओर खाई खोद गई है। बलराम-सेनानिवास सिकन्दराबादसे उत्तरमें अवस्थित है। यहां निजामके अधीनस्थ हैदराबाद सेनादलका एक दल घुड़सवार और एक दल कमानवाही सेना रहती है। सिकन्दराबाद-सेनावाससे ५ मील दक्षिण निजामके अधीनस्थ हैदराबाद रिफर्मण्ड सेनादलकी बारक है। वहां एक यूरोपीय सेनानायकके अधीन एक दल घुड़-सवार, पदातिक और कमानवाही सेना रहती हैं। मोटी बात यह है, कि सिकन्दराबाद-सेनानिवासकी उत्तरी और दक्षिणी सीमाका सेनावास ले कर गणना करनेसे अनुमान होता है, कि यहां प्रायः १० मील स्थानके मध्य ८००० सुशिक्षित सेना अवस्थान करती है।

सिकन्दराबादके पश्चिम बेगमपट नामक स्थानमें पाइओनियर सेनादल और चैायेनपिलि नामक स्थानमें मन्द्राज अश्वारोही सेनादलका अड्डा है। वर्षा ऋतुमें यहांका स्वास्थ्य बड़ा ही खराब हो जाता है तथा ज्वर, उदरामय और वातपीड़ा यूरोपीय और देशी सेनामें देखी जाती है।

सिकन्दराराव—१ युक्तप्रदेशके अलीगढ़ जिलेकी एक तह-सील। यह अक्षा० २७° ३२' से २७° ५३' उ० तथा देशा० ७८° १०' से ७८° ३२' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३३७ वर्गमील और जनसंख्या दो लाखसे ऊपर है। इसमें ७ शहर और २४८ ग्राम लगते हैं। सिकन्दरा और अकबराबाद परगना ले कर यह तहसील संगठित हुई है।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २७° ४१' उ० तथा देशा० ७८° २३' पू० कोइलसे २३ मील दक्षिण-पूर्व कानपुर जानेके रास्ते पर अवस्थित है। जन-संख्या ११ हजारसे ऊपर है। १५वीं सदीमें दिल्लीश्वर सिकन्दर लोदीने इस नगरको बसाया। उन्होंने राव खां नामक एक अफगान वीरको जागीर-स्वरूप यह स्थान दे दिया। तभीसे दोनोंके नाम पर नगर सिकन्दरा राव कहलाने लगा है। नगर म्युनिसपलिटीके अधीन रहने पर भी उतना साफ सुथरा नहीं है।

१८५७ ई०में सिपाही विद्रोहके समय यहांके अफ-गान सरदार घौस खाने विद्रोही दलका नेतृत्व ग्रहण किया और मालागढ़के अधीश्वर वलिदाद खांके सहकारी रूपमें कोइल अधिकार कर लिया। इस समय कुन्दनसिंह नामक एक पुण्डीरवंशीय राजपूतने अंगरेजोंको खासी मदद पहुंचाई थी। वे उस समय उक्त परगनेका नाजिम-स्वरूप रह कर शासन-कार्य करते थे। यहां मुगल-सम्राट् अकबर बादशाहके समयकी बनी हुई मसजिद और मुसल-मान शासनकर्त्ताका आवासभवन आज भी ध्वस्तावस्थामें विद्यमान है। शहरमें एक मिडिल स्कूल और पांच प्राइ-मरी स्कूल है।

सिकरवार (हिं० पु०) क्षत्रियोंकी एक शाखा।

सिकरी (हिं० स्त्री०) सिकड़ी देखो।

सिकली (हिं० स्त्री०) धारदार हथियारोंको मांजने और उन पर सान चढ़ानेकी क्रिया।

सिकलीगढ़ (हिं० पु०) सिकलीगर देखो।

सिकलीगर (हिं० पु०) तलवार और छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला, सान धरनेवाला, चमक देनेवाला।

सिकसोनी (हिं० स्त्री०) काक-जंघा।

सिकहर (हिं० पु०) छींका, झोका।

सिकुली (हिं० स्त्री०) मूंज, कास आदकी बनी छोटी डलिया।

सिकाकोल (हिं स्त्री०) दक्षिणकी एक नदी।

सिकार (हिं० पु०) शिकार देखो।

सिकारपुर (शिकारपुर) --१ बम्बई प्रदेशके सिन्धुविभागका एक जिला। यह अक्षा० २७° से २८´ ३० तथा देशा० ६७°से ७०´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १०००१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें बलूचिस्तान, उत्तर-सिन्धु सीमान्त जिला और सिन्धुनद, पूरबमें बहवलपुर और जयसलमीरका सामन्त राज्य, दक्षिणमें खैरपुर राज्य और कराची जिलेकी सेहवान् तहसील तथा पश्चिममें खीरथर पर्वतमाला है। रोहडी, सक्कर, लरखाना और मेहर उपविभाग ले कर यह जिला संगठित हुआ है। सिकारपुर नगर यहांका विचारसदर है।

समूचा जिला एक पलिमय प्रान्तर है। केवल रोहडी और सक्कर विभागमें चून-पत्थरका पहाड है। यह पर्वत समुद्रपृष्ठसे ७००० फुट ऊंचा है और बलूचिस्तानको भारतसे अलग करता है।

जिलेके उत्तर जगह जगह कालरनामक लवणमय भूमिभाग दृष्टिगोचर होता है। याकुबाबाद सीमान्त-देशमें कर्दममय ऊर भूमि और उसके बीच बीचमें कण्टकपूर्ण गुल्माच्छादित वालूका पहाड है।

सिन्धुप्रदेशके सम्पर्कमें जो प्राचीन इतिहास मिलता है, वही इस जिलेका प्राचीन इतिहास माना जा सकता है। ७१२ ई०में मुसलमानों द्वारा सिन्धुप्रदेश आक्रमण होनेके पहले वर्त्तमान रोहडी नगरसे ५ मील दूर अलोर राजधानीमें ब्राह्मणवंश राज्य करते थे। इसके बाद सिकारपुर प्रदेश कुछ समयके लिये ओमैद और कुछ दिनके लिये अब्बासीद वंशके शासनाधीन रहा। इसके बाद सिकारपुरके साथ समूचा सिन्धुप्रदेश १०२५ ई०में गजनीपति महमूदके शासनाधीन हुआ। महमूदका राज्य अधिक काल स्थायी न रहा। क्योंकि १०३२ ई०में सुमरावंशीय राजे सिकारपुरके अधिकारको राज्य करने लगे। सुमरावंशीयोंको राज्यच्युत कर सम्मावंशधरोंने राज्य अधिकार कर लिया। पीछे अर्घूंन नामक मुसलमान जातिने सिन्धुको अधिकार कर सम्मा लोगोंको राज्यसे निकाल भगाया। इन सब राजवंशोंका विवरण सिन्धुप्रदेश शब्दमें लिखा गया है, इस कारण यहां लिखनेकी कोई जरूरत नहीं।

सिन्धु देखो।

१८४३ ई०में अंगरेजोंने सिन्धुप्रदेशको जीत कर खैरपुरमें मीर अली मुराद तालपुरके अधिकृत राज्यको छोड सारा उत्तर सिन्धुप्रदेशको सिकारपुर कलेक्टरेट कायम किया। उसके ठीक पहले वर्ष (१८४२ ई०) मीरोंने सक्कर, भक्कर और रोहडी नगरको सदाके लिये अङ्गरेजों के हाथ सौंप दिया। १८५१ ई०में खैरपुरके राजा मीर अली मुराद तालपुरके विरुद्ध अंगरेज गवर्मेण्टने जाली कागज बनानेका अभियोग खडा किया। इस अभियोगमें कहा गया था, कि अलीमुरादने अपने भाई मीर नासिर और मीर मुबारकको धोखा देनेके लिये १८४२ ई०में सम्पादित एक दस्तावेजका कुछ अंश बदल कर उसमें नया कागज जोड दिया था। ऐसा करनेसे वह अनेक जिलेका स्वत्वाधिकारी होता था। १८५२ ई०की १ली जनवरीको भारतके गवर्नर जनरल मार्किस डलहौसीने अलीमुरादके विरुद्ध एक घोषणापत्र निकाला। उसमें उसको राज्यभ्रष्ट किया गया तथा उबोरा, बर्द्धिक, मीरपुर और सैदाबाद जिला तथा सिन्धुनदके वामकूलस्थ कुछ प्रदेश उनके राज्यसे विच्छिन्न करके उस समय शिकारपुर-कलक्टरके मातहत किये गये। वे सब प्रदेश अभी रोहडी उपविभागके अन्तर्गत हैं।

यहां भिन्न भिन्न वस्तुका वाणिज्य-व्यवसाय चलता है, सिन्धु, पञ्जाब और सिन्धु-पिसिन रेलवेके खुल जानेसे यहां वाणिज्यकी बडी उन्नति हुई है। आज भी बोलन गिरिपथ हो कर प्रति वर्ष प्रायः ३० लाख रुपयेका माल बैलगाडीसे आता जाता है। गेहूं, रूई, सूती कपडे और कार्पेट यहांका प्रधान वाणिज्यद्रव्य है।

विशेष विवरण लरखाना, सक्कर जिला देखो।

२ उक्त जिलेका एक तालुक। यह अक्षा २७°५५´ से २८° १०´ उ० तथा देशा० ६८° २१´ से ६९° ६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ४६२ वर्गमील और जनसंख्या लाखसे ऊपर है। इसमें सिकारपुर नामक एक शहर और ८८ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २७° ५७´ उ० तथा देशा० ६८° ४०´ पू०के मध्य विस्तृत है। जन-संख्या ५० हजारसे ऊपर है। यह शहर बहुत नीचेमें बसा हुआ है। समुद्रकी तहसे इसकी ऊंचाई सिर्फ १६४ फुट है। सिन्धुनदकी कुछ नहरें इस निम्न भूभाग-में नगरके पास हो कर बह गई है। बाढके समय नदीकी नहरें जलपूर्ण हो कर नगर तथा आस पासकी निम्न भूमिको डुबा देती है। सिन्धुनदकी दो नहरें नगरके उत्तर और दक्षिणसे चली गई हैं। उत्तरकी नहर छोटी बेगारी और दक्षिणकी राइसवाह कहलाता है। सिकार-पुर नगरमें गवर्मेण्टके अंगरेज कर्मचारीमात्र रहते हैं। पहले यहां जिलेका विचार सदर था, पीछे वह सक्कर उठ कर चला गया है। सक्कर देखो।

यहां आज भी बहुत-सी राजकीय अट्टालिका विद्य-मान हैं। सिन्ध-पिसिन रेलवेका स्टेशन रहनेसे नगरमें जाने आनेकी बड़ी सुविधा है। १८५५ ई०में यहां पहले पहल म्युनिसपलिटी स्थापित हुई। पहलेसे अभी यहांकी आबहवा बहुत अच्छी है। ष्टुआर्टगञ्जकी हाट और सर-दार खाँकी दिग्गी, जिलेदपी पुष्करिणी और हजारीदिग्गी देखने लायक हैं।

सिकारपुर बहुत पहलेसे वाणिज्यकेन्द्र कह कर प्रसिद्ध है। सिन्धु प्रदेशके समीपस्थ यहांके बोलान गिरिसङ्कटसे खुरासान जाने तथा कराची, मूलतान, बह-बलपुर, खैरपुर, लुधियाना, कच्छि, वाघ, गण्डार, कोटरी, दादर आदि स्थानोंके साथ यहांका बे-रोकटोक वाणिज्य चलता था। आज भी उस वाणिज्यका प्रभाव दूर नहीं हुआ है। परन्तु सिन्धु-पञ्जाब दिल्ली रेलवे खुल जानेसे यहांके स्थलपथके वाणिज्यका ह्रास हो गया है तथा उक्त रेलपथसे ही सभी प्रकारके माल भिन्न भिन्न स्थानोंमें लाये जाते हैं।

शहरमें सब जजकी अदालत, सिविल अस्पताल और एक चिकित्सालय तथा सरकारी हाई स्कूल और बहुतसे प्राइमरी एवं मिडिल इङ्गलिश स्कूल हैं। यहांके जेलखाने में पोस्तिन या बकरेके चमड़ेका कुर्त्ता, टोकरी, कार्पेट, तम्बू, जूता आदि कैदियों द्वारा प्रस्तुत हो कर विक्रयार्थ मौजूद रहते हैं।

सिकारपुर—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहर जिलान्तर्गत एक समृद्धिशाली नगर। यह बुलन्द शहरसे १३ मील दक्षिण-पूर्व रामघाटके रास्ते पर अक्षा० २८° १७´ उ० तथा देशा० ७८° ३´ १५´´ पू०के मध्य अवस्थित है। १५०० ई०में सिकन्दर लोदीने इस नगरको बसाया। शिकारके समय वह इसी स्थानमें विश्राम लेता था, इस कारण यह शिकारपुर कहलाया। नगरके उत्तर प्रायः ५०० गजकी दूरी पर तालपत नगरी नामक एक बहुत बड़ा ध्वस्त स्तूप है और उस स्तूपके मध्य स्थानमें 'बारहखंभा' नामक अट्टालिकांशके १२ लाल पत्थरके थम खड़े हैं। उनकी शिल्प प्रणाली सम्राट् जहांगीरके समयकी है। इससे अनुमान होता है, कि दिल्लीश्वर सिकन्दर लोदीके समयसे मुगल सम्राटोंके अधिकारकाल पर्यन्त यह नगरी बड़ी समृद्धशाली थी। नगरके बाहर चारों ओर प्राचीन दुर्गके विध्वस्त निदर्शन देखनेमें आते हैं। यहां बहुत से प्राचीन मन्दिर और मसजिद हैं। मसजिदमें जितनी शिला-लिपियां देखी जाती हैं, उनमेंसे सम्राट् फर्रुखशियरके लड़के सैयद फजलउल्लाकी १७१८ ई०में उत्कीर्ण शिला-लिपि ही सर्वप्राचीन है। रामघाट रास्तेकी बगलमें ढाई सौ वर्षकी पुरानी एक सराय है। उसके चारोंओर ऊंची दीवार खड़ी है। १८५७ ई०में सिपाहीविद्रोहके समय चौधरी लछमण सिंह अंगरेजोंको सहायता पहुंचानेके कारण विशेष सम्मानभाजन हुए। उनका वासभवन उल्लेखयोग्य है। शहरमें एक मिडिल स्कूल और एक प्राइमरी स्कूल है।

सिकारपुर—१ महिसुर राज्यके सिमोगा जिलान्तर्गत एक तालुक। यह अक्षा० १४° ५´ से १४° ३१´ उ० तथा देशा० ७५° ८´ से ७५° ३२´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ४२६ वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारसे ऊपर है। इस उपविभागका अधिकांश स्थान जङ्गलावृत और जंगली जन्तुओंकी वासभूमि है।

२ उक्त तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १४° १६´ उ० तथा देशा० ७५° २१´ पू० चोडाडी नदीके किनारे सिमोगा नगरसे २८ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। पहले यह ग्राम मल्लियानहल्ली नामसे मशहूर था, पीछे महादानपुर कहलाने लगा। इसके चारों ओर जङ्गलीजन्तुओंका वास

है तथा वहां बैठ कर कभी कभी शिकार खेला जा सकता है, यह देख महिसुरके सुविख्यात मुसलमान राजा हैदर अलीने इसका शिकारपुर नाम रखा। यहांका प्राचीन दुर्ग अभी खंडहरमें पड़ा है। प्रतिवर्षके बैशाख महीनेमें यहां तीन दिन एक महोत्सव और मेला होता है। उस समय यहां बहुत-से लोग इकट्ठे होते हैं। प्रति शनिवारको हाट लगती है।

सिकारी (हिं० पु०) शिकारी देखो।

सिकिम (सिक्किम)—हिमालय पर्वतमालाके पूरबमें अवस्थित एक देशी पहाड़ी राज्य। यह अक्षा० २७° ५' से २८° ६' उ० तथा देशा० ८७° ५६' से ८८° ५८' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २८१८ वर्गमील है। पहले यहांके राजा स्वाधीन भावसे राज्य करते थे। अंगरेज गवर्मेण्टके कौशलसे रणक्षेत्रमें अंगरेजी सेनाके निकट पराभव स्वीकार कर स्थानीय सामन्त राजोंने अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार की। आज भी सिकिम राज्य वृटिश गवर्मेण्टकी देख-रेखमें देशीय राजा द्वारा शासित होता है। इसके उत्तर और उत्तर-पूर्वमें तिब्बत राज्य, दक्षिण पूर्वमें भोटानराज्य, दक्षिणमें अंगरेजाधिकृत दार्जिलिङ्ग जिला और पश्चिममें नेपाल राज्य है।

तुमलोङ्ग नामक नगर यहांकी राजधानी है। राजा शीत और वसन्तकालमें तुमलोङ्ग प्रासादमें रहते हैं। ग्रीष्मऋतुके अन्तिम समयमें वे वर्षाकी अविश्रान्त वारिधाराके भयसे सिकिम राजधानीका परित्याग कर और भी उत्तर तिब्बत राज्यान्तर्गत चुम्बि नामक उपत्यका भागमें चले जाते हैं।

तिब्बतीय भाषामें सिकिमको दिङ्ग जिङ्ग या देमोजोङ्ग और वहांके लोगोंको देनजोङ्ग कहते हैं। गुर्खा लोग इस देशके वासीन्दे लेपचा कहते हैं। वे लोग अपनेको रोङ्ग जातिके बतलाते हैं।

हिमालय पर सुविस्तृत पर्वतबन्धनीके मध्य बहुत ऊंचे स्थान पर सिकिमराज्य अवस्थित है। तुमलोङ्ग और दार्जिलिङ्गके मध्यस्थित जो विस्तृत पर्वतभाग है, वह दार्जिलिङ्गशैलमालासे बहुत नीचा है। तुमलोङ्ग के उत्तर तिब्बत जानेका गिरिपथ है। भूतत्त्वानुसन्धित्सापरायण महामति ब्लानफोर्ड और एडगर उन सब पथोंको देख कर उनकी उच्चता अवधारण कर गये हैं। मि० क्लेमाण्टस मार्कहम-रचित तिब्बत-विवरणीमें लिखा है, कि तुमलोङ्गसे ५० मील दूर जयलेप ला नामका सबसे दक्षिण जो गिरिपथ है वह समुद्रपृष्ठसे प्रायः १३ हजार फुट ऊंचा है। उत्तर गोआंटिवला और याक-ला नामक गिरिसङ्कटमें अन्तिम गिरिसङ्कट १४ हजार फुट ऊंचा है। यह पथ कभी कभी बर्फसे ढक जाता है, किन्तु अधिक दिन वह बर्फ नहीं रहता। इस पथसे लोग आसानीसे तिब्बतके अन्तर्गत चुम्बि उपत्यकामें आ जा सकते हैं। इसके और भी उत्तर १५ हजार फुट ऊंचा चो-ला सङ्कट है। यह पथ सीधे सीध तुमलोङ्गसे चुम्बि तक चला गया है। उक्त याक-ला चो-ला और जयलेप ला ये तीनों सङ्कट हिमालयके ऊंचे शिखरोंको पृथक् कर चुम्बि और तिस्ताकी उपत्यका भूमिको पृथक् करते हैं। इसके भी उत्तर ताङ्कुरा-ला सङ्कट है जो १६०८३ फुट ऊंचा है। सिकिमका यह पथ बर्फसे हमेशा ढका रहता है।

सिकिम राज्यसे बहुत-सी बड़ी बड़ी नदियां निकली हैं। भारत-प्रसिद्ध पुण्यतोया त्रिस्रोता (तिस्ता) नदी यहीं से निकली है। लचेन, लचुंग, वूढ़ो-रणजित्, मोइंग, रंगरि और रंगचू नामकी छोटी छोटी नदियां उक्त त्रिस्रोताकी शाखारूपमें बहती हैं। आम माचु नामक नदी चमलहरि नामक शैलशिखरके पादमूलमें परिजोङ्ग नामक स्थानके पाससे निकल कर सिकिम और भोटान के मध्यस्थित तिब्बतीय अधिकारभुक्त चुम्बि उपत्यकासे बह गई है और जलपाईगुड़ि जिलेमें तोरसा नामसे पुकारी जाती है। ये नदियां हिमालयवक्ष पर कई जगह प्रपाताकारमें गिरती हैं। उन नदियोंमेंसे तिस्ता नदी १० मीलके मध्य ८२१ फुट और रङ्गित् २३ मीलमें ६८७ फुट नीचे उतरी है।

भूटिया लोग जमीन खोद कर खान बाहर निकालनेके उतने पक्षपाती नहीं हैं। उन लोगोंमें एक ऐसा कुसंस्कार है, कि धरित्री देवीको कोड़नेसे महापाप होता है। इस कारण सिकिममें कहीं भी किसी चीजको खान नहीं है। केवल सिण्डुले नामक स्थानमें तांबेकी खान पाई जाती है। नेपाली लोग वहांसे सामान्य परिमाणमें तांबा निकालते हैं।

पर्वतका ढालवा भाग और उपत्यकाभूमि जङ्गलसे परिपूर्ण है। उच्चताके अनुसार जगह जगह वृक्षविशेष-का उत्पत्तिव्यतिक्रम देखा जाता है। जिस पर्वतभागमें सोमल, पीपल, गूलर आदि ग्रीष्मप्रधान देशजात वृक्षादि उत्पन्न होते हैं, ठीक उसीके ऊपर झाऊ, बेउड़ बास और काल्लू नामक वृक्षादि १० हजार फुट ऊंचे स्थान पर देखनेमें आता है। यहां सातसे नौ इञ्च घेरेके बड़े बड़े बास भी हैं। जङ्गलमें बेंत बहुत उत्पन्न होता है।

सिकिम राज्यका प्राचीन इतिहास अच्छी तरह मालूम नहीं होता। तिब्बतमें बौद्ध धर्मप्रचार करनेके लिये बौद्ध-यतिगण इसी सिक्किमके पथसे गये थे। प्राचीन यूरोपीय पर्यटक होरेश डेल्लापेना और सामुयल डान डि पुट्टने इस स्थानको ब्रह्मासन कह कर वर्णन किया है। वोगल के ग्रन्थमें यह स्थान द्रेमोजङ्ग नामसे वर्णित हुआ है।

कहते हैं, कि सिकिम राजवंशके आदि पुरुष ऊसाके निकटवर्त्ती स्थानवासी थे। वे लोग जन्मभूमिका परि-त्याग कर गएटक नामक स्थानमें बस गये। १६वीं सदी के मध्यभागमें इस वंशके नेता पञ्च नामगर नामक कोई मोडुपका (लाल टोपी) सम्प्रदायभुक्त तीन बौद्धाचार्यों द्वारा बौद्धधर्ममें दीक्षित हुए। उक्त आचार्यगण तिब्बत-के गलुकप सम्प्रदायके घोर विरोधी थे। उन लोगोंने सिकिमके लेपचाओंको अपने मतमें दीक्षित कर पञ्चू नामगरको सिकिमका राजा चुना। उक्त दुग्का सम्प्रदाय के बौद्धाचार्यों के अवताररूपमें जो दो लामा जनसाधा रणसे निर्वाचित होते हैं, वे सारी लेपचा जातिके प्रधान धर्माचार्य हैं। उनमेंसे एक प्रेमिओङ्छि और दूसरे तसिदिङ्ग सङ्घाराममें वास करते हैं। १७८८ ई०में गोर्खाओंने सिकिमके मोरङ्ग विभाग पर आक्रमण किया और १७८६ ई०में वे लोग सिक्मिराजके अधिकृत कोटि नामक गिरिसङ्कटके पार्श्वस्थ देशभाग क्षतिपूरणस्वरूप पा कर लौटे।

१८१४ ई०में जब अंगरेजोंके साथ नेपालियोंका युद्ध छिड़ा, तब मेजर लैटरने एक दल सेना ले कर मोरङ्ग को अधिकार किया तथा उस स्थानसे सिक्किमराजके साथ मित्रता करनेकी चेष्टा की। सिकिमराजने अपने चिरशत्रु गोर्खा जातिको दमन करनेका यह अच्छा मौका देखा। १८१६ ई०में नेपाल युद्धके बाद सिकिम-राजको काफी भूसम्पत्ति हाथ लगी थी। वह सारी सम्पत्ति नेपालराजने अंगरेजोंको दे दी। इधर अंगरेज कम्पनीने भी सिकिमराजके सौजन्य और सहृदय व्यव-हार पर प्रसन्न हो उन्हें वे सब पहाड़ी प्रदेश दे दिये थे। १८३५ ई०में राजाने अंगरेजोंको दार्जिलिङ्ग दे दिया और उसके लिये अंगरेज कम्पनी भी वार्षिक ३००० रु० वृत्ति देने लगी।

जो हो, इसके बाद सिकिमराजके साथ अङ्गरेजराजका किसी एक कारणसे विवाद खड़ा हो गया। सिकिममें गुलामी प्रथा प्रबल थी। राजाके अनुचर दुःसाहसी प्रजापहारक थे। वे लोग अंगरेजोंके अधिकारसे निरीह प्रजाओंको छिपके अपहरण कर गुलाम बनाते थे। यदि कोई गुलाम मौका पा कर अंगरेजोंके अधि-कारसे भाग आता, तो राजा अपनी प्रजाके लिये अंगरेज गवर्मेण्टसे आवेदन करती थी। इसमें कभी कभी तकरार हो जाया करता था। एक दिन कई गुलाम छिपके भाग आये। उन्हें फिरसे पानेकी आशासे राजा-ने १८४६ ई०में दार्जिलिङ्गके तत्त्वावधायक डा० कम्बेल और जीवतत्त्वविद् डा० हुकारको छः सप्ताहके लिये कैद रखा। वे दोनों अंगरेज पुङ्गव उस समय सिकिम राज्य देखने आये थे।

राजाके इस अन्याय अत्याचारके दण्डस्वरूप अंगरेज गवर्मेण्टने उनकी वार्षिक वृत्ति बन्द कर दी। इतना ही नहीं, उनके अधिकृत तिस्तानदीकी पहाड़ी उपत्यका और सिकिम तराईके कुछ स्थानोंको अंगरेजी राज्यमें मिला लिया गया। इस पर भी राजाको हाथ नहीं हुआ। उनके अधीनस्थ लोग फिर भारतीय प्रजाको चुरा कर ले जाने लगे। आखिर १८६० ई०में ऐसे ऐसे दो निष्ठुर अत्याचार किये गये। अब अंगरेज गवर्मेण्ट निश्चिन्त न रह सकी। उसी समय कलकत्तेसे रम्मान नदीके उत्तर और बूढ़ा रङ्गित नदीके पश्चिम तक सिकिम राज्य अंगरेजोंके दखलमें लानेका फरमान निकाला गया। तदनुसार अंगरेज सेनाके नायक हो कर्नल गालर राजदूत-रूपमें माननीय असली इडन द्वारा सिकिम राज्यमें भेजे

गये। उन लोगोंके तुमलोङ्ग पहुंचने पर राजा अंगरेजों-का क्षति पूरीके लिये बाध्य हुए। इस कारण १८६१ ई०में सिक्किमराजके साथ अंगरेज गवर्मेण्टकी फिर एक संधि हुई। इस पर सिक्किमराजने अंगरेजोंको अपने राज्यमें बेरोक टोक वाणिज्य करनेका अधिकार दिया। सिवा इसके यह भी शर्त्त थी, कि अंगरेज लोग अपनी सुविधाके लिये उनके राज्यमें पथघाट खोल और फैला सकेंगे तथा उनके राज्यमें वैदेशिक-भ्रमणकारिगण स्वच्छन्दसे विचरण कर सकेंगे।

उक्त सन्धिबन्धनके बाद सिक्किमराज अंगरेज गवर्मेण्टके साथ उत्तरोत्तर मित्रभावमें दिन यापन करते आ रहे हैं। अनन्तर डा० हुकारका पदानुसरण कर बहुतसे वैदेशिक पर्य्यटकोंने सिक्किम राज्यके सभी स्थानोंमें जा कर वहांके द्रव्योंका सिलसिला विवरण प्रकाशित किया। १८७३ में सिक्किमराज और उनके प्रधान मन्त्री चङ्गजेर नामू दार्जिलिङ्ग आ कर बङ्गेश्वर छोटे लाट साहबसे मिले। इस कारण बेङ्गाल-गवर्मेण्टके प्रतिनिधि-स्वरूप उस समय मि० एडगार सिक्किमराज्यमें गये थे। उन्हीं के लिखे विवरणसे उक्त ऐतिहासिक तत्त्व मालूम हुआ है।

तुमलोङ्ग राजधानी और गण्टक यहांका प्रधान स्थान है। तुमलोङ्गके निकटवर्त्ती लेबङ्ग, पेमिओङ्गची और रुमितिङ्ग नामक स्थानमें तीन बौद्धमठ हैं। उन मठोंके अध्यक्ष एक लामा हैं। लेबङ्गमठके अध्यक्ष कुपगाई कह लाते हैं। पेमिओङ्गची और सिक्किमके अन्यान्य बहुतसे मठ इन्हीं दूसरेलामों परिचालित हैं। तुमलोङ्ग शैलशिखर पर राजप्रसादके सिवा और भी अनेक पक्केके मकान हैं। उन मकानोंमें प्रधानतः राजकर्मचारी रहते हैं। वर्षा के आने पर राजाके चुम्बि उपत्यका जाते समय बहुतसे राजकर्मचारी भी उनके साथ हो लेते हैं। इस कारण उस समय बहुतसे मकान खाली हो जाते हैं। गण्टकको काजीका मकान मिहर चित्रसे पूर्ण है।

सारा सिक्किम राज्य १२ काजी और कुछ कर्मचारी-योंकी देखरेखमें है। उनमेंसे जिनका जो अंश निर्दिष्ट है, वे ही उस अंशमें अपना प्रभुत्व फैलाते हैं। वे सब काजी और अन्यान्य कर्मचारिगण प्रजाके ऊपर मनमाना कर लगाते हैं। वे उन लोगोंसे कर वसूल कर अधिकांश खुद हडप कर लेते और बहुत थोड़ा राजाको देते हैं।

दीवानी और फौजदारी विषयोंका विचारभार उन सब कर्मचारियोंके ऊपर रहने पर भी प्रधान प्रधान अपराधोंकी निष्पत्ति राजा, मन्त्री या दीवान द्वारा ही होती है। प्रजाको जमीनमें कोई अधिकार नहीं है। वे लोग एक बार जो जमीन आबाद करते हैं, उस जमीनसे राजाको छोड़ और कोई भी उन्हें अलग नहीं कर सकता।

सिक्किमकी जमीन जरीप नहीं होती। राजस्व देनेवाले अपनी इच्छासे राजाको कर देते हैं, किन्तु वे लोग आपद् विपद्में राजाको सहायता पहुंचानेके लिये बाध्य हैं। यहां तक, कि कायिक परिश्रम द्वारा भी उन्हें राज-कार्यमें सहायता पहुंचानी होती है। लामा लोग ऐसे कायिकश्रममें बाध्य नहीं हैं।

दार्जिलिङ्गसे सिक्किम होते हुए तिब्बत जानेके अनेक पथ हैं। वे सभी पथ पर्वतकी ऊंची नीची जमीन पर चक्करोंसे गये हैं। कई जगह झरने या नदीस्रोतके ऊपर बेंतके बने पुल हैं। तिब्बतवासी सोना, चांदी, टट्टू, घोड़ा, मृगनाभि, सोहागा, पशम, रेशम, मांजूठा आदि वस्तु इस देशमें लाते हैं और उसके बदलेमें यहांसे बनात, थोआ सूती कपड़ा, तमाकू और मुक्ता ले जाते हैं। यहांका टरकुइयो नामक पत्थर जौहरियोंके विशेष आदरकी वस्तु है। वे लोग महामूल्य मणिके बदलेमें उक्त पत्थरको अच्छी तरह पालिश करके अलङ्कारादिमें जड़ते हैं।

भारतराज प्रतिनिधि लार्ड कर्जनने जिस समय तिब्बतमें ब्रिटिश सेना भेजी, उस समय कर्नल यंहसबैण्ड दल-बलके साथ सिक्किम होते हुए ग्याञ्ट्सि और वहांसे लासा गये थे। दुःखका विषय है, कि इस उद्योगसे कुछ निरीह तिब्बतीय बौद्ध प्रजाके प्राणनाशको छोड़ कर और कोई विशेष फलदायक घटना न घटी। पर हां, इस घटना स्रोतसे बौद्ध-साहित्य जगत्‌की जो विशेष उन्नति हुई है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। उस समयके बौद्ध मठोंसे जो अनेक धर्मग्रंथ और तान्त्रिक देवदेवीओंकी प्रतिकृति प्रलतफ्जोटवाही अंगरेज-सेनापतिसे इस देशमें लाई गई

थी, उन्होंने प्राच्यजगत्‌में अभिनव निदर्शन प्रदान किया था। वर्त्तमान महाराजका नाम है एच, एच, महाराजा सर तशी नमग्याल के, सी, आई, ई। इन्हें १५ तोपों की सलामी मिलती है।

यहांकी जनसंख्या ४० हजारके करीब है जिनमेंसे सैकड़े पीछे ६५ हिन्दू और ३५ बौद्ध हैं। राज्यकी आमदनी दो लाखके करीब है। गङ्गटोकमें एक स्कूल, एक सिविल अस्पताल और चिदममें एक अस्पताल है।

सिकुड़न (हिं० स्त्री०) १ दूर तक फैली वस्तुका सिमट कर थोड़े स्थानमें होना, संकोच, आकुंचन। २ वस्तुके सिमटनेसे पड़ा हुआ चिह्न, आकुंचनका चिह्न बल, शिकन।

सिकुड़ना (हिं० क्रि०) १ दूर तक फैली वस्तुका सिमट कर थोड़े स्थानमें होना, सुकड़ना, आकुंचित होना। २ संकीर्ण होना, तंग होना। ३ बल पड़ना, शिकन पड़ना।

सिकोड़ना (हिं० क्रि०) १ दूर तक फैली हुई वस्तुको समेट कर थोड़े स्थानमें करना, संकुचित करना। २ समेटना, बटोरना। ३ संकीर्ण करना, तङ्ग करना।

सिकोरा (हिं० पु०) सकोरा या कसोरा देखो।

सिकोली (हिं० स्त्री०) बांसके फट्टों, कास, मूंज, बेंत आदिकी बनी डलिया।

सिकोहाबाद—१ युक्तप्रदेशके मैनपुरी जिलेकी दक्षिणपश्चिम तहसील। यह अक्षा० २६° ५३´से २७° ११´ उ० तथा देशा० ७८° २६´से ७८° ५०´ पू०के मध्य विस्तृत है। भू-परिमाण २६४ वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखसे ऊपर है। इसमें २ शहर और २८७ ग्राम लगते हैं। सर्सानदी इस तहसीलके बीच और यमुना नदी दक्षिणसे बह गई है।

२ उक्त तहसीलका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २७° ६´ उ० तथा देशा० ७८°५७´ पू०के मध्य विस्तृत है। यह नगर अतिप्राचीन है। यहांका ध्वस्त दुर्ग ही इस प्राचीनत्वका निदर्शन है। उस दुर्गस्थानके ऊपर अभी बहुतसे घर बन गये हैं। यहां ६ सराय-घर हैं।

मुगल-सम्राट् राजपूत दारासिकोहके नाम पर इस नगरका सिकोहाबाद नाम पड़ा है। आज भी यहां दारासिकोहका वासभवन, उद्यान और कूप आदि विद्यमान हैं। १८०१ ई०में अङ्गरेजोंने सिकोहाबाद अधिकार किया और नगरके दक्षिणमें एक सेनावास स्थापित हुआ। १८०२ ई०में सेनापति फलुरि-परिचालित मराठा-सेनाने अंगरेजोंकी छावनी पर चढ़ाई कर दी। पीछे यहांसे अंगरेजी सेना मैनपुरमें स्थानान्तरित हुई। पहले यहां रूईका व्यवसाय होता था। अभी उसका ह्रास हो गया है। यहांका सूती कपड़ा और मिष्टान्न विख्यात है। शहरमें एक बालक और एक बालिकाका भी स्कूल है।

सिकोही (फा० वि०) १ आनबानवाला, गर्वीला, दर्पवाला। २ वीर, बहादुर।

सिक्कक (सं० क्ली०) बाँसुरीमें लगानेकी जीभी या उसके स्वरको मधुर बनानेके लिये लगाया हुआ तार।

सिक्कड़ (हिं० पु०) सीकड़ देखो।

सिक्कर (हिं० पु०) सीकड़ देखो।

सिक्का (अ० पु०) १ मुहर, मुद्रा, छाप। २ रुपये, पैसे आदिपरकी राजकीय छाप, मुद्रित चिह्न। ३ राज्यके चिह्न आदिसे अङ्कित धातुखण्ड जिसका व्यवहार देशके लेन देनमें हो, टकसालमें ढला हुआ धातुका टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्यका धन माना जाता है। ४ मालका वह दाम जिसमें दलाली न शामिल हो। ५ वह धन जो लड़कीका पिता लड़केके पिताके पास सगाई पक्की होनेके लिये भेजता है। ६ पदक, तमगा। ७ मुहर पर अंक चढ़ानेका ठप्पा। ८ नावके मुंह पर लगी एक हाथ लंबी लकड़ी। ९ लोहेकी गावदुम पतली नली जिससे जलती हुई मशाल पर तेल टपकाते हैं।

सिक्की (अ० स्त्री०) १ छोटा सिक्का। २ आठ आनेका सिक्का, अठन्नी।

सिक्ख (हिं० पु०) सिख देखो।

सिक्त (सं० त्रि०) सिच्-क्त। १ सिञ्चित, सींचा हुआ। २ भीगा हुआ, तर, गीला।

सिक्ता (सं० स्त्री०) वालुका, सिकता।

सिक्ति (सं० स्त्री०) सिच्-क्तिच्। सेक, सिञ्चन।

सिक्थ (सं० पु०) सिच्-थक्। १ उबाले हुए चावलका दाना, भातका एक दाना, सीथ। २ भातका ग्रास या

पिंड। ३ नीली, नील। ४ मधूच्छ, मोम। ५ मोतियोंका गुच्छा जो तौलमें एक धरण हो, ३२ रत्ती तौलका मोतियोंका समूह।

सिक्थक (सं० पु०) सिक्थ देखो।

सिकरोल—वाराणसी जिलेके सुप्रसिद्ध वाराणसीधामके पश्चिम उपकण्ठस्थित नगरका एक अंश। इस अंश और वाराणसीके मध्य हो कर वरणा नदी वह चली है। इस अंशमें जिलेके अंगरेजोंका वास है। एक सेनावास भी है। यहाका स्वास्थ्य प्राचीन वाराणसीसे बहुत अच्छा है। इसलिये बहुतेरे सम्भ्रान्त व्यक्तियोंने यहां उद्यानवाटिका बनाई है।

सिक्ष्य (सं० पु०) स्फटिक।

सिख (हिं० स्त्री०) १ सीख, शिक्षा, उपदेश। (पु०) २ शिष्य, चेला। ३ गुरु नानक तथा गुरु गोविन्दसिंह आदि दश गुरुओंका अनुयायी सम्प्रदाय, नानकपंथी। इस सम्प्रदायके लोग अधिकतर पंजाबमें हैं।

सिख दमली (हिं० पु०) भालूको नाचना सिखानेकी रीति। कलंदर लोग पहले हाथमें एक लोहेकी चूड़ी पहनते हैं और उसे एक लकड़ीसे बजाते हैं। इसीके इशारे पर भालूको नाचना सिखाते हैं।

सिखर (हिं० पु०) १ शिखर देखो। २ सिकहर देखो।

सिखर (शिखरभूम)—पञ्चकोटराज्यका एक नाम।

सिखर—वाराणसी जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २५° ८' उ० तथा देशा० ८२° ५०' पू० गङ्गा नदीके बायें किनारे चुनार दुर्गकी दूसरी ओर अवस्थित है। १७८१ ई०में वाराणसीके विद्रोही राजा चेतसिंहने यहांके दुर्गमें अपनी सेना रखी थी, किन्तु अङ्गरेज सेना लेफ्टेनाण्ट पोलहिल दलवलके साथ आगे बढ़ा और दुर्ग अपने दखलमें कर लिया।

सिखरन (हिं० स्त्री०) दही मिला हुआ चीनीका शरबत जिसमें केसर, गरी आदि मसाले पड़े हों।

सिखलाना (हिं० क्रि०) सिखाना देखो।

सिखा (हिं० स्त्री०) शिखा देखो।

सिखाना (हिं० क्रि०) १ शिक्षा देना, उपदेश देना बतलाना। २ पढ़ाना। ३ धमकाना, दंड देना, ताड़ना करना।

सिखापन (हिं० पु०) १ शिक्षा, उपदेश। २ सिखानेका काम।

सिखावन (हिं० पु०) शिक्षा, उपदेश।

सिखी (हिं० पु०) शिखी देखो।

सिगनल (अं० पु०) सिकन्दर देखो।

सिगरेट (अं० पु०) तंबाकू भरी हुई कागजकी बत्ती जिसका धुंआ लोग पीते हैं, छोटा सिगार।

सिगा (हिं० स्त्री०) चौबीस शोभाओंमेंसे एक।

सिगार (अं० पु०) चुरुट।

सिग्रुडी (सं० स्त्री०) लताभेद। (राजनि०)

सिगोती (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी छोटी चिड़िया।

सिगोन (हिं० स्त्री०) नालोंके पास पाई जानेवाली लाल रेत मिली मिट्टी।

सिगौली—चम्पारण जिलेकी एक छावनी। यह अक्षा० २६° ४७' उ० तथा देशा० ८४° ४५' पू०के मध्य मोतिहारीसे प्रायः १५ मील दूर बेतिया जानेके रास्ते पर अवस्थित है। जनसंख्या ६ हजारके करीब है। इस छावनीमें एक दल देशी पदातिक रहता है। सिगौलीसे कुछ उत्तर सिग्रेणानदी बहती है। इस नदीके जलसे सिगौलीके वार्धक्यतकका स्थान डूब जाया करता है। सिपाही विद्रोहके समय यहां युद्ध हुआ था। सिपाहियोंने बागी हो कर अपने सेनापति मेजर जेम्स होलमस, उनकी स्त्री और बालबच्चेकी हत्या की थी।

सिङ्गसारि—(सिंहसारि) यवद्वीपके दक्षिण पार्श्वस्थित एक स्थान। यहां हिन्दुओंकी प्राचीन कीर्त्तिके अनेक ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान हैं। संस्कृत सिंह और यवद्वीपके सारि (पुष्प) शब्दसे सिङ्गसारि नामकी उत्पत्ति हुई है। यह स्थान माला जिलेके मध्य तथा समुद्रपृष्ठसे १०००से १५०० फुट उच्च तेङ्गर पर्वतश्रेणी और अर्जुन पर्वतकी मध्यवर्त्ती सबसे ऊंची अधित्यका पर अवस्थित है। कुछ पुराने शिवमन्दिर यहां देखनेमें आते हैं। इन सब मन्दिरोंमें शिव, दुर्गा, गणेश आदिकी मूर्त्ति खोदित हैं। यवद्वीपके अधिकांश मन्दिर ईंटोंके बने हैं, किन्तु सिङ्गसारिका मन्दिर चून-पत्थरसे बनाया गया था। एक शिवमूर्त्तिके शरीरमें प्राचीन देवनागरी अक्षरमें एक शिलालिपि उत्कीर्ण है। बहुतसे मन्दिरोंका निर्माणकाल प्राचीरगात्रमें खुदा हुआ है। उन्हें पढ़नेसे

मालूम होता है, कि ये सब मन्दिर ८१८से १०८२ शकाब्दके बीच बनाये गये थे। इसके सिवा सिङ्गसारिसे कुछ दूर एक खोदित लिपि आविष्कृत हुई है। इसमें १२४२ शकाब्द लिखा हुआ है। सिङ्गसारिके मन्दिर भी सिङ्गसारि नामसे प्रसिद्ध हैं।

सिङ्गा—पञ्जाब प्रदेशके बुसहर राज्यान्तर्गत एक गिरि सङ्कट। कुनावरसे यह पथ उत्तरमें हिमाचलपृष्ठको पार कर गया है। यह समुद्रकी तहसे १६।१७ फुट ऊंचा है। ज्येष्ठसे भाद्रमासके पन्द्रह दिन तक इस पथसे लोग आते जाते हैं। पीछे बर्फके ढक जानेके कारण वह बिलकुल अगम्य हो जाता है।

सिङ्गापुर (सिंहपुरम्)—मन्द्राज प्रदेशके विजागापाटम जिलेके जयपुर राज्यका एक नगर। यह विलेम पट्टनसे २१ मील पश्चिम नागपुर जानेके बंजारा नामक रास्तेकी बगलमें अक्षा० १६° ३' १६" उ० तथा देशा० ८२° ४३' १६" पू०के मध्य विस्तृत है।

सिङ्गारपुर—मलय प्रायोद्वीपके दक्षिण प्रान्तमें स्थित एक द्वीप। यह अक्षा० १° १७' उ० तथा देशा १०° ५०' पू० के बीच अवस्थित है। एक छोटी प्रणाली सिंगारपुरको महादेशसे पृथक करती है। महादेश और सिंगापुरके बीचका समुद्र कहीं कहीं अति सङ्कीर्ण हो कर एक मीलसे भी कम हो गया है। ११६० ई०में श्रीसुरभवन पहले इस द्वीपमें रहते थे। सिंगापुर नदीके किनारे एक भग्न उत्कीर्ण प्रस्तरफलकसे जाना जाता है, कि आमदन नगरके राजा सुरणने जोहरराज्यको जीत कर १२०१ ई०में तामस्ककी ओर प्रस्थान किया तथा क्लिनं नामक स्थानमें लौट कर इस प्रस्तरमय स्मृतिकी स्थापना की।

यह द्वीप प्रायः सर्वत्र ही छोटी छोटी शैलश्रेणीसे परिपूर्ण है। इन सब गिरिमालाके अन्तवर्त्ती स्थान प्रायः सङ्कीर्ण जलभूमि है। द्वीपका समुद्रतीरस्थित भूखण्ड आस पासके स्थानसे ऊंचा है, किन्तु द्वीपके चारों ओरके स्थान घने मैनग्रोभ वृक्षके जंगलसे ढके हैं। इस प्रकार वृक्षोंसे परिवेष्टित होनेके कारण द्वीप समुद्रसे बड़ा ही सुन्दर दिखाई देता है। ग्रानाइट पत्थरका विकुटहिमा नामक पर्वत ५३० फुट ऊंचा है। इसके सिवा सेडिमेण्टरी पत्थरका पर्वत ही अधिकांश है। इन सब पहाड़ों पर बालूपत्थर भी अधिक परिमाणमें दिखाई देते हैं। विकुटहिमा द्वीपके ठीक मध्यस्थलमें खड़ा है।

१८१६ ई०में सर ष्टामफोर्ड रैफलसके शासनकालमें जोहरके सुलतानने ६०००० डालर मूल्य ले कर तथा यावज्जीवन वार्षिक २४००० डालर अंगरेजोंसे पायेंगे, इस शर्त्त पर सिङ्गापुर अंगरेजोंके हाथ सौंप दिया। इसके बाद १८२५ ई०में सुलतानने अंगरेजोंके साथ संधि करके यह द्वीप उन्हें दे दिया। उसी समयसे सिङ्गापुर अङ्गरेजों द्वारा शासित होता है।

सिङ्गापुरका भूपरिमाण २०६ वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। यह एक प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान है। एशियाके मध्य सिङ्गापुर एक प्रधान बन्दर है। प्रतिवर्ष इस बन्दरमें प्रायः १४ करोड रुपये पण्यद्रव्यकी आमदनी और १० करोड रुपयेकी रफ्तनी होती है। पण्यद्रव्यमें धान, चावल और बहादुरी काष्ठ ही प्रधान है।

सिङ्गाभट्ट (सं० पु०) एक ग्रन्थकार। इन्होंने सिङ्गाभट्टी रचना की।

सिङ्गारकोण—वर्द्धमान जिलेके कालना उपविभागान्तर्गत एक वाणिज्यप्रधान गण्डग्राम।

सिङ्गालीला—बङ्गालके दार्जिलिङ्ग जिलान्तर्गत एक शैल। यह शैलशिखरभाग काञ्चनजङ्घासे भारतप्रान्तपर्यन्त प्रायः ६० मील विस्तृत है और अक्षा० २७° १' से २७° १४' उ० तथा देशा० ८८° से ८८° २' पू०के मध्य फैला हुआ है। इसके पश्चिम ओरकी जलराशि ताम्बर नदीमें गिरती है, तथा पूरबकी वृद्धो रणजितके कलेवरको बढ़ाती है। इस पर्वतश्रेणीका फललुमश्ङ्ग १२०४२ फुट, सुबरगाव १०४३ फुट और तङ्गलु १००८४ फुट ऊंचा है।

सिङ्गुर—हुगली जिलेके श्रीरामपुर विभागके अन्तर्गत एक थाना और बड़ा ग्राम। पठानी अमलसे इस अञ्चलमें बहुतसे हिन्दुस्तानी, ब्राह्मण, क्षत्रिय और खत्री आकर बस गये। उनमेंसे कुछ सेनाविभागमें काम करते और वृत्तिस्वरूप भूमिका भोग करते थे। उस समय यहां चोरी डकैतीका एक बड़ा अड्डा था। सिङ्गारकी डकैती काली

प्रसिद्ध थी। उसके सामने नरबलि होती थी। आज भी बड़े रास्तेकी बगलमें तीन ओर घना जंगल है और बड़े मन्दिरमें उस डकैतीकालीकी भीषणमूर्त्ति विराज करती है।

यहां बहुतसे भद्र पुरुषोंका वास है। उनमेंसे कायस्थ मल्लिकवंश अति प्रसिद्ध है। बहुतसे राजकीय कर्मचारी इसी वंशके हैं। सिङ्गूरके साथ बङ्गसाहित्यका भी सम्पर्क है। यहां बड़े बड़े बाजार हैं। तारकेश्वर रेल खुलनेके पहले इसी राहसे सभी लोग वहां जाया करते थे। सिङ्गूरका सन्देश आज भी प्रसिद्ध है।

सिङ्गौरगढ़—मध्यप्रदेशका एक पहाड़ी दुर्ग। यह अक्षा० २३° ३२' उ० तथा देशा० ७९° ४७' पू०के मध्य जबलपुरसे उत्तर पश्चिम २६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। संग्रामपुर अधित्यकाके पार्श्वस्थित एक ऊंचे पर्वतके ऊपर यह दुर्ग खड़ा है। दुर्गके ऊपरसे निम्न स्थित अधित्यकाका स्वाभाविक दृश्य बड़ा ही मनोरम लगता है। चन्देल राजपूतवंश सम्भूत राजा बेलने यह दुर्ग बनवाया और गढ़मण्डलके राजा दलपत् साहने इसे परिवर्द्धित किया था। १५४० ई०में राजा दलपत्ने सिङ्गौरगढ़में राजधानी बसाई थी। सम्राट् अकबरके सेनापति आसफ खाँने रानी दुर्गावतीको इस स्थानमें परास्त किया। औरंगजेबके जमानेमें मुसलमानोंने नौ मास तक सिंगौरगढ़में घेरा डाला था।

सिङ्घण (सं० क्ली०) नासिकामल, नकटी।

सिङ्घदेव (सं० पु०) एक विख्यात राजा।

सिङ्घाण (सं० क्ली०) नासिकामल, नकटी।

सिङ्घाणक (सं० क्ली०) सिङ्घाण-कप्। १ नासिकामल, नकटी। २ काचपात्र। ३ नासारोगभेद। जिस नासारोगमें कफ अतिशय प्रवृद्ध हो कर नासिकाका स्रोत बन्द कर देता, घर घर शब्द कर श्वास निकलता तथा पीनससे अधिक वेदना और हमेशा पिच्छिल, पीला घना कफ निकलता है, उसे सिङ्घाणक नासारोग कहते हैं। ४ अश्वरोगविशेष। यह अश्वरोग वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सान्निपातिकके भेदसे चार प्रकारका है। लौह-कीट, मण्डूर।

सिङ्घान (सं० पु०) कुरण्डवृद्धि।

सिङ्घिनी (सं० स्त्री०) नासिका।

सिच् (सं० स्त्री०) १ वस्त्रप्रान्त। (ऋक् ३।६।३२) सिच्-क्विप्। २ सेक।

सिचय (सं० पु०) १ वस्त्र, कपड़ा। (राजतर० १।१) २ जीर्ण वस्त्र, पुराना कपड़ा।

सिच्छा (हिं० स्त्री०) शिक्षा देखो।

सिजकपुर—बम्बई प्रेसिडेन्सीके काठियावाड़ विभागके झालावाड़ प्रान्तका एक छोटा सामन्तराज्य। सिर्फ चार गाँव ले कर यह राज्य संगठित है। भूपरिमाण २६ वर्गमील है। यहांके सरदार अंगरेज गवर्नमेंट और जूनागढ़के नवाबको वार्षिक कर देते हैं।

सिजदा (अ० पु०) प्रणाम, दंडवत।

सिजल (हिं० पु०) जो देखनेमें अच्छा लगे, सुन्दर।

सिजली (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो दवाके काममें आता है।

सिजादर (हिं० पु०) पालके चौखूंटे किनारेसे बंधा हुआ रस्सा जिसके सहारे पाल चढ़ाया जाता है।

सिजावल—बम्बई प्रेसिडेन्सीके सिन्धु प्रदेशके शिकारपुर जिलेके लर्काना उपविभागका एक तालुक। भू-परिमाण १६२ वर्गमील है। इसमें कुल ८६ गांव लगते हैं।

सिजु—पूर्वबङ्गके आसाम प्रदेशके गारोपहाड़ जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह समेश्वरी या सोमेश्वरी नदीके किनारे अवस्थित है। इस ग्राममें बहुतसे धीवरोंका वास है। नदीमें मछली पकड़ कर बेचना ही इनकी प्रधान उपजीविका है। इस ग्रामके पास कोयलेकी एक खान थी। सोमेश्वरी नदी तटस्थ चूनापत्थरके स्तरमें बहुतसी विचित्र गुहाएं देखी जाती हैं उनमेंसे सिजु ग्रामके पासवाली गुहा सबसे बड़ी है। इसका प्रवेशपथ २० फुट ऊंचा तथा भीतरका घर बहुत बड़ा और उसकी छत गुम्बजाकार है। इस गुहाके भीतरसे एक जलधारा बहती है। समूचा दिन गुहाके भीतरसे जाने पर भी उस छोटे स्रोतका उत्पत्तिस्थान दृष्टिगोचर नहीं होता।

सिजौली—उत्तर-पश्चिम भारतके फतेपुर जिलेकी कोड़ा तहसीलके अन्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २५° ५६' २८" उ० तथा देशा० ८०° ३' ४५" पू०के बीच पड़ता है। यहां प-माल राजपूत जातिका ही वास देखा जाता है।

सिझना (हिं० क्रि०) आंच पर पकना, सिझाया जाना।

सिझाना (हिं० क्रि०) १ आँच पर गलाना, पका कर जलाना। २ पकाना, रांधना, उबालना। ३ शरीरको तपाना या कष्ट देना, तपस्या करना। ५ मिट्टीको पानी दे कर पैरसे कुचल और साफ करके बर्तन बनाने योग्य बनाना।

सिञ्चत् (सं० त्रि०) सिञ्चतीति सिञ्च-शतृ। सेचनकर्त्ता सींचनेवाला।

सिञ्चन (सं० क्ली०) १ जल छिड़कना, पानीके छींटे डाल कर तर करना। २ पेड़ोंमें पानी देना, सींचना।

सिञ्चलपहाड़—दार्जिलिङ्ग जिलेका एक बहुत ऊंचा पर्वत। तिस्ता नदी तक यह पर्वत फैला हुआ है। समुद्रकी तहसे इसकी ऊंचाई ८६०७ फुट है। इस पर्वतके ऊपर अंगरेजीसेनाका सेनानिवास है। आस पासके अन्यान्य पर्वतोंकी अपेक्षा सिञ्चल पहाड़ बहुत ऊंचा है। इसके दो गिरिशृङ्ग बड़े और छोटे दूरवीन नामसे स्थानीय लोगोंके निकट परिचित हैं। इस पहाड़के शृङ्ग घाससे ढके हैं तथा चारों ओर बांस तथा अन्यान्य जंगली पेड़ भरे पड़े हैं। आकाश परिष्कार रहनेसे इस पहाड़के ऊपरसे गौरीशङ्कर दिखाई देता है। १८५५ ई०में सिञ्चलपहाड़ सैनिक विभागके हाथ सौंपा गया।

सिञ्चित (सं० त्रि०) १ जल छिड़का हुआ। २ पानीके छींटोंसे तर किया हुआ, सींचा हुआ।

सिञ्चिता (सं० स्त्री०) सिञ्च णिच् क्त टाप्। पिप्पली, पीपर।

सिञ्जा (सं० लि०) अलंकार, ध्वनि।

सिञ्जालवारी (सं० लि०) गावलिन देखो।

सिञ्जित (सं० क्ली०) शब्द, ध्वनि, झनक।

सिञ्जितिका (सं० स्त्री०) १ सेव नामक प्रसिद्ध फल। यह छोटा और बड़ा दो प्रकारका होता है। इसका गुण—वृष्य, गुरु, धातुवर्द्धक, पाक और रसमें शीतल तथा कफकर माना गया है। २ बदरफल, बेर।

सिटकिनी (हिं० स्त्री०) किवाड़ीके बन्द करने या अड़ीनके लिये लगी हुई लोहे या पीतलकी छड़, अगरी, चटकनी।

सिटनल (हिं० पु०) सिगनल देखो।

सिटपिटाना (हिं० क्रि०) १ दब जाना, मन्द पड़ जाना। २ किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना, स्तब्ध हो जाना। ३ सकुचाना।

सिटी (अं० स्त्री०) नगर, शहर।

सिट्टी (अं० स्त्री०) वाक्‌पटुता, बहुत बढ़बढ़ कर बोलना।

सिट्ठी (हिं० स्त्री०) सीटी देखो।

सिठनी (हिं० स्त्री०) विवाहके अवसर पर गाई जानेवाली गालीं, सीठना।

सिठाई (हिं० स्त्री०) १ फीकापन, नीरसता। २ मन्दता।

सिड़ (हिं० स्त्री०) १ उन्माद, पागलपन, बावलापन। २ धुन, सनक।

सिड़पन (हिं० पु०) १ पागलपन, बावलापन। २ धुन, सनक।

सिड़पना (हिं० पु०) सिड़पन देखो।

सिड़बिल्ला (हिं० पु०) १ पागल, बावला। २ बेवकूफ, भोंदू, बुद्धू।

सिड़िया (हिं० स्त्री०) डेढ़ हाथ लंबी लकड़ी जिसमें बुनते समय बादला बंधा रहता है।

सिड़ी (हिं० वि०) १ पागल, दीवाना। २ धुनवाला, सनकी। ३ मनमौजी, मनमाना काम करनेवाला।

सितंबर (अं० पु०) अंगरेजी नवां महीना, अक्तूबरसे पहले और अगस्तके पीछेका महीना।

सित (सं० क्ली०) १ रौप्य, चाँदी। २ मूलक, मूली। ३ चन्दन। ४ श्वेतचन्दन। (गरुडपु० २०८अ०) (पु०) सिनोतीति सि बन्धने (अञ्जिघृसिभ्यः क्तः। उण् ३।८६) इति क्त। ५ शुक्रग्रह। ६ शुक्राचार्य। ७ शुक्लपक्ष, उजाला पाख। ८ स्कन्दके एक अनुचरका नाम। ९ भोजपत्र। १० सफेद तिल। ११ शक्कर, चीनी। १२ सफेद कचनार। (त्रि०) १३ श्वेत, सफेद, उजला। १४ उज्ज्वल, शुभ्र, दीप्त, चमकीला। १५ स्वच्छ, निर्मल, साफ।

सितकङ्गु (सं० स्त्री०) सर्ज्ज निर्यास, राल।

सितकटभी (सं० स्त्री०) श्वेत कटभीवृक्ष।

सितकण्टा (सं० स्त्री०) श्वेत कण्टकारी, सफेद कटसरैया।

सितकण्टारिका (सं० स्त्री०) श्वेत कण्टकारी।

सितकण्ठ (सं० पु०) १ दात्यूहपक्षी, मुर्गाबी। (त्रि०) २ श्वेत कण्ठयुक्त, सफेद गर्दनवाला।

सितकण्ठ (हिं० पु०) महादेव, शिव।

सितकमल (सं० क्ली०) श्वेत पद्म, सफेद कमल।

सितकर (सं० पु०) १ कपूर, भीमसेनी कपूर। २ शुभ्र किरण, चन्द्रमा।

सितकरा (सं० स्त्री०) नील दूर्वा, नीली दूब।

सितकर्णी (सं० स्त्री०) वासक, अडूसा।

सितकल्याणघृत (सं० क्ली०) स्त्रीरोगाधिकारोक्त घृतौषधविशेष। यह घृत सेवन करनेसे प्रदर, रक्तगुल्म, रक्तपित्त, हलीमक, कामला, जीर्णज्वर, पाण्डुरोग आदि शीघ्र निवारित होते हैं तथा जिन सब स्त्रियोंका अच्छी तरह रजोस्राव नहीं होता, उनके लिये भी विशेष उपकारी है। इसके सेवनसे स्त्रियोंके सभी रजोदोष विनष्ट होते और वे गर्भधारण करती हैं। (भैषज्यरत्ना०)

सितकाच (सं० पु०) १ हलकी शोशा। २ बिल्लौर।

सितकाञ्चन (सं० पु०) श्वेतपुष्प काञ्चनवृक्ष, सफेद फूलवाला कचनार।

सितकारिका (सं० स्त्री०) ह्रस्व वास्यालक, बला या वरियारा नामका पौधा।

सितकुञ्जर (सं० पु०) १ इन्द्र। २ इन्द्रका हाथी। ३ श्वेतहस्ती, सफेद हाथी।

सितकुम्भी (सं० स्त्री०) श्वेतपाटला, सफेद पाडर।

सितकेश (सं० पु०) दानवभेद। (हरिवंश)

सितक्षार (सं० पु०) श्वेतटङ्कण, सफेद सुहागा।

सितक्षुद्रा (सं० स्त्री०) श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया।

सितगुञ्जा (सं० स्त्री०) श्वेतगुञ्जा।

सितचन्दन (सं० क्ली०) सितं चन्दनं। श्रीखण्डचन्दन, सारचन्दन।

सितचिल्ली (सं० स्त्री०) श्वेतवास्तुक।

सितनिह (सं० पु०) वालुगाढ, खैरा मछली, छिवुआ मछली।

सितच्छत्र (सं० क्ली०) राजछत्र।

सितच्छत्रा (सं० स्त्री०) १ सौंफ। २ सोवा।

सितच्छत्रिक (सं० पु०) श्वेतछत्रयुक्त।

सितच्छत्री (सं० स्त्री०) सितच्छत्रा देखो।

सितच्छद (सं० पु०) १ हंस, मराल। २ रक्त शोभाञ्जन, लाल सहिंजन।

सितच्छदा (सं० स्त्री०) श्वेत दूर्वा, सफेद दूब।

सितज (सं० पु०) मधुशर्करा, मधुखंड।

सितजफल (सं० पु०) मधुनारिकेल वृक्ष, मधु नारियल।

सितजलज (सं० क्ली०) श्वेतपद्म।

सितजा (सं० स्त्री०) मधुशर्करा, मधुखंड।

सितजाम्रक (सं० पु०) बहु रसाल आम्र, कलमी आम।

सितजीरक (सं० क्ली०) शुक्ल जीरक, सफेद जीरा।

सितता (सं० स्त्री०) श्वेतता, सफेदी।

सिततुरग (सं० पु०) अर्जुन।

सितदर्भ (सं० पु०) श्वेत कुश।

सितदीधिति (सं० पु०) सिता शुक्ला दीधितिः किरणो यस्य। चन्द्रमा।

सितदीप्य (सं० पु०) श्वेतजीरक, सफेद जीरा।

सितदूर्वा (सं० स्त्री०) श्वेत दूर्वा, सफेद दूब।

सितद्रु (सं० पु०) १ मोरट वृक्षविशेष, श्वेत मोरट। २ शुक्लवर्ण वृक्ष, सफेद पेड। ३ अर्जुन वृक्ष।

सितद्रुम (सं० पु०) श्वेतवृक्ष, सफेद पेड।

सितद्विज (सं० पु०) हंस।

सितधातु (सं० पु०) १ कठिनी, खरिया मिट्टी। २ शुक्ल वर्णकी धातु।

सितपक्ष (सं० पु०) १ हंस। २ शुक्ल पक्ष। (बृहत्सं० ६०।२०)

सितपट (सं० त्रि०) १ श्वेतवस्त्रधारी। (पु०) २ ग्रन्थकार भेद।

सितपद्म (सं० क्ली०) श्वेतपद्म।

सितपर्णी (सं० स्त्री०) अर्कपुष्पी, अंधाहुली।

सितपाटला (सं० स्त्री०) शुक्लपाटला वृक्ष, सफेद पाडरका पेड। गुण—तिक्त, गुरु, उष्ण, वातदोष, वमि, हिक्का, कफ, श्रम और शोफनाशक।

सितपीत (सं० त्रि०) १ श्वेत और पीतवर्ण, सफेद और पीला। २ श्वेत और पीतवर्णविशिष्ट, सफेद और पीले रंगका।

सितपुङ्खा (सं० स्त्री०) श्वेतशरपुङ्खा।

सितपुष्प (सं० क्ली०) १ कैवर्त्तीमुस्तक, केवटी मोथा। (पु०) २ श्वेतपुष्प, रोहितक। ३ कासतृण। ४ तगर वृक्ष। ५ द्वीपान्तर खर्ज्जूरी वृक्ष पिंडखजूर। ६ शिरीष वृक्ष, सिरिसका पेड।

सितपुष्पा (सं० स्त्री०) १ मल्लिका, एक प्रकारकी चमेली। २ बला, बरियारी। ३ कंघीका पौधा।

सितपुष्पिका (सं० स्त्री०) श्वेत कुष्ठ, सफेद दागवाला, कोढ़।

सितपुष्पी (सं० स्त्री०) १ श्वेत अपराजिता। २ कैवर्त्ती-मुस्तक, केवटी मोथा। ३ कास नामक तृण। ४ नाग-वल्ली, पान। ५ नागदन्ती।

सितप्रभ (सं० पु०) चांदी।

सितप्रभा (सं० स्त्री०) नदीभेद। (कालिकापु० ७७ १५)

सितभानु (सं० पु०) चन्द्रमा।

सितम (फा० पु०) १ गजब, अनर्थ, आफत। २ अनीति, जुल्म।

सितमगर (फा० पु०) अन्यायी, जालिम।

सितमणि (सं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर।

सितमरिच (सं० क्ली०) १ श्वेत मरिच, सफेद मिर्च। गुण—कटु, उष्ण, विषघ्न, दृष्टिरोगनाशक, अवृष्य, युक्ति द्वारा रसायन। २ शिग्रुबीज, सहिजनके बीज।

सितमाष (सं० पु०) राजमाष, लोबिया, बोडा।

सितमेघ (सं० पु०) शुभ्रवर्ण मेघ, सफेद बादल।

सितमोघा (सं० स्त्री०) श्वेत पाटल वृक्ष।

सितरक्त (सं० त्रि०) १ शुभ्र और रक्तवर्णविशिष्ट। (पु०) २ श्वेत और रक्तवर्ण, सफेद और लाल रंग।

सितरञ्ज (सं० क्ली०) कर्पूर, कपूर।

सितरञ्जन (सं० पु०) सितं रञ्जयतीति रञ्ज ल्यु। पीत-वर्ण, पीला रंग।

सितरजस् (सं० क्ली०) कर्पूर, कपूर।

सितरश्मि (सं० पु०) सफेद किरणोंवाला चन्द्रमा।

सितराग (सं० पु०) रौप्य, चांदी।

सितरुचि (सं० पु०) चन्द्रमा।

सितरुनी (हिं० स्त्री०) गन्धपलाशी, कपूर कचरी। पहाडी लोग इसकी पत्तियोंकी चटाइयां बनाते हैं।

सितलता (सं० स्त्री०) अमृतवल्ली नामकी लता।

सितलशुन (सं० पु०) सफेद लहसुन।

सितली (सं० स्त्री०) वह पसीना जो बेहोशी या अधिक पीडाके समय शरीरसे निकलता है।

सितवराह (सं० पु०) श्वेत वराह।

सितवराहपत्नी (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

सितवर्णा (सं० स्त्री०) क्षीरिणीवृक्ष।

सितवर्षाभू (सं० स्त्री०) सफेद पुनर्नवा।

सितवल्लरी (सं० स्त्री०) भूमिजम्बू, जंगली जामुन, कठ जामुन।

सितवल्लीज (सं० क्ली०) श्वेतमरिच, सफेद मिर्च।

सितवाजी (सं० पु०) अर्जुन।

सितवार (सं० पु०) शालिञ्च शाक, शान्ति शाक।

सितवारक (सं० पु०) सितवार देखो।

सितवारण (सं० पु०) श्वेतहस्ती सफेद हाथी।

सितवारिक (सं० पु०) सिंहली पिप्पली, सैंहली।

सितशर्करा (सं० स्त्री०) धवलशर्करा, चीनी।

सितशायका (सं० स्त्री०) श्वेत शरपुङ्खा।

सितशिंशपा (सं० स्त्री०) १ श्वेतपुष्प शाल्मली वृक्ष। २ श्वेत शिंशपा।

सितशिम्बिक (सं० पु०) गोधूम, गेहूं।

सितशिव (सं० क्ली०) १ सैन्धवलवण, सेंधानमक। २ शमीका पेड।

सितशुक्ति (सं० पु०) पर्वतभेद। (सह्याद्रि० ३१५।१०)

सितशूक (सं० पु०) यव, जौ। (भारत)

सितशूरण (सं० पु०) वनशूरण, सफेद जमीकंद।

सितशृङ्गी (सं० स्त्री०) अतिविषा, अतीस।

सितसप्ति (सं० पु०) सिताः सप्तयो घोटका यस्य। १ अर्जुन। २ श्वेताश्व, सफेद घोडा।

सितसर्षप (सं० पु०) गौर सर्षप, गोरी सरसों

सितसागर (सं० पु०) क्षीरसागर।

सितसायका (सं० स्त्री०) श्वेतपुष्प शरपुङ्खा।

सितसार (सं० पु०) शालिञ्च शाक, लोह मारक।

सितसारक (सं० पु०) सितसार देखो।

सितसिंही (सं० स्त्री०) सिता सिंहीव। श्वेत कण्टकारी, सफेद भटकटैया।

सितसिन्धु (सं० स्त्री०) १ क्षीरसमुद्र। २ गंगा।

सितसिद्धार्थ (सं० पु०) सफेद या पीली सरसों जो मन्त्र या झाड़ फूंकमें काम आता है।

सितसित (सं० स्त्री०) सैन्धव लवण सेंधा नमक। सितशिव देखो।

सितसूर्या (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सितहूण (सं० पु०) हूणोंकी एक शाखा।

सितांशु (सं० पु०) १ चन्द्रमा। २ कर्पूर, कपूर।

सितांशुतैल (सं० क्ली०) कर्पूरतैल, कपूरका तेल।

सिता (सं० स्त्री०) सित-टाप्। १ शर्करा, चीनी। गुण—सुमधुर, रुचिकर, वात, पित्त, आम, दाह, मूर्च्छा और छर्दि ज्वरनाशक तथा शुक्रवर्द्धक। २ वचा, वच। ३ सोमराजी, बकुची। ४ सिंहली। ५ आमलकी, आंवला। ६ गोरोचना। ७ वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ८ सुरा-मेद। ९ रौप्य, चांदी। १० शुक्ल त्रिवृता, सफेद निसोथ। ११ त्रिसन्धि नामक पुष्पवृक्ष। १२ श्वेत पुनर्नवा, सफेद गदहपूरना। १३ आस्फोतक। १४ गिरि अपराजिता। १५ मल्लिका पुष्पवृक्ष। १६ श्वेत पाटलिका, सफेद पाडर। १७ श्वेत कण्टकारी, सफेद भटकटैया। १८ विदारी, भुईंकुम्हड़ा। १९ श्वेत दूर्वा, सफेद दूब। २० श्वेत शिम्बी, सफेद सेम। २१ शुक्ल पक्ष। २२ चन्द्रिका, चांदनी। २३ अर्कपुष्पी, अंधाहुली। २४ गोकर्णलता, मूर्वा।

सिताइश (फा० स्त्री०) १ प्रशंसा, तारीफ। २ धन्यवाद, शुक्रिया। ३ वाहवाही, शाबाशी।

सिताखण्ड (सं० पु०) १ मधुजात शर्करा। शहदसे बनाई हुई शक्कर। गुण—अति मधुर, चक्षुष्य, छर्दि, कुष्ठ, व्रण, कफ, श्वास, हिक्का, पित्त और अस्रदोषनाशक। २ मिश्री।

सिताग्र (सं० स्त्री०) श्वेत मरिच, सफेद मिर्च।

सिताख्या (सं० स्त्री०) श्वेत दूर्वा, सफेद दूब।

सिताग्र (सं० पु०) कण्टक, कांटा। (हारावली)

सिताङ्ग (सं० पु०) बालुकागड मत्स्य, एक प्रकारकी मछली।

सिताद्रु (सं० पु०) १ श्वेतरोहितक वृक्ष, सफेद रोहिड़ा। २ चांगेरी पुष्पवृक्ष, बेला। ३ बालुकागड मत्स्य, एक प्रकारकी मछली।

सिताज (सं० पु०) श्वेतपद्म, सफेद कमल।

सिताजाजी (सं० स्त्री०) श्वेत जीरक, सफेद जीरा।

सितात्रय (सं० क्ली०) त्रिशर्करा, तीन प्रकारकी चीनी। गुडोत्पन्ना, हिमोत्पन्ना और मधुर मिश्री इन तीनों चीनीका नाम सितात्रय है।

सितादि (सं० पु०) शर्करा आदिका कारण या पूर्व रूप, गुड़।

सितानन (सं० पु०) १ गरुड़। २ बिल्ववृक्ष, बेलका पेड़। (त्रि०) ३ शुक्ल मुखयुक्त, सफेद मुंहवाला।

सितान्त—मेरुके निकटका एक पर्वत। (लिङ्गपु० ४९।४१)

सितापाक (सं० पु०) महाशाण्डी, [illegible]।

सितापाङ्ग (सं० पु०) मयूर, मोर।

सिताफल (सं० क्ली०) स्वनामख्यात फल, आता।

सिताब राय—मुसलमानी शासनके अन्तमें और अंगरेजी शासनके प्रारम्भमें बङ्गालके एक प्रसिद्ध राजकर्मचारी। शकसेन-वंशीय कायस्थ जातिमें दिल्लीमें इनका जन्म हुआ था। दिल्लीके सम्राट् महम्मद शाहके प्रधान कर्मचारी खाँदौरानके घरमें इनका लालन पालन हुआ था। पीछे ये आगा सुलेमान नामक एक कर्मचारीके अधीन बहुत कम वेतनमें नौकरी करने लगे। आगा सुलेमान खाँदौरान परिवारके एक विशिष्ट कर्मचारी थे। सिताब राय अपनी असाधारण बुद्धि और कार्यदक्षताके प्रभावसे शीघ्र ही आगा सुलेमानके कुल कार्योंकी देखभाल करने लगे। धीरे धीरे इनके परामर्शानुसार खाँदौरानका पारिवारिक कुल काम भी चलने लगा। इस प्रकार सिताब राय दोनों परिवारके मालिक स्वरूप समझे जाने लगे। किन्तु खाँदौरानके पुत्र समसामुद्दौलाके मारे जाने तथा मुसलमानी राजधानी दिल्लीमें नाना प्रकारके विद्रोह और अराजकता उपस्थित होनेसे सिताबरायने दिल्लीको छोड़ देना चाहा। जब राजदरबारमें यह बात मालूम हुई, तब अपने बंधु-बांधवोंके अनुरोधसे सिताबराय बिहारके डिपटी दीवान, रोहतास दुर्गके रक्षक तथा समसामुद्दौलाकी चकलेशमें जो सब जागीर थी, उनके तत्त्वावधायक नियुक्त हुए। इस प्रकार तीन उच्च पद पा कर सिताबराय दिल्लीको छोड़ पटना चले आये। जिस समय उस समय मीरजाफर बंगालका नवाब था। जिस समय

सिताबराय पटना पहुंचे, उस समय मीरजाफर वहां रहते थे। सिताबराय पटना पहुंचते ही राजा रामनारायणसे मिले। रामनारायणने नवाबके साथ उनका परिचय करा दिया। सिताबराय जिन तीन पदोंके लिये दिल्लीसे सनद ले कर आये थे, महम्मदी खां नामक रामनारायणके एक मित्र उस समय उक्त तीन पदों पर अधिष्ठित थे। अतएव चतुर सिताबको समझनेमें देर न लगी; कि रामनारायणके साथ मित्रता स्थापन करना युक्तिसङ्गत नहीं है। उधर नवाब मीरजाफर बहुत आलसी आदमी था, राजकार्य कुछ भी नहीं जानता था। अतएव उससे विशेष सहायता पानेकी आशा कम थी। इस प्रकार नाना कारणोंसे सिताबरायने स्थिर किया, कि वे सौभाग्यशाली अंगरेजराजके साथ मिल कर अपने सौभाग्यकी परीक्षा करें। इसके बाद वे कर्नल क्लाइवके साथ मुर्शिदाबाद आये। क्लाइव उन पर बड़े प्रसन्न हुए और उनकी सनदके अनुसार उन्होंने पदप्राप्तिके लिये राजा रामनारायणको प्रशंसापत्र दिया। वह प्रशंसापत्र ले कर सिताबराय पुनः मीरजाफरसे मिले। क्लाइवका प्रशंसापत्र पा कर मीरजाफरने कोई छेड़ छाड़ न की। वरन् उसने भी रामनारायणको सिताबकी पदप्राप्तिके लिये बहुत बढ़ा चढ़ा कर लिखा। दीवान रामनारायणने इस बार जरा भी आना कानी न की, और सिताबको शीघ्र ही सनदके अनुसार पद पर प्रतिष्ठित किया। धीरे धीरे सिताबरायके साथ रामनारायणकी मित्रता हो गई। वे पदगौरव और सम्मानके साथ मुर्शिदाबादमें रहने लगे।

१७६० ई०में पूर्णियाका राजस्व नियमपूर्वक वसूल नहीं होनेसे नवाब मीरजाफरने पूर्णियाके शासनकर्ता खादेम हुसेनको वहांसे हटाना चाहा। अंगरेजपक्ष अर्थात् ऐमियट, क्लाइव आदिने बीचमें पड़ कर यह झगड़ा निबटा दिया। खादेम हुसेन मीरजाफरके आदेशानुसार कार्य करनेको राजी हुआ। इस समय नवीन युवक शाहआलम दिल्लीका सम्राट् था। उसके पक्षमें दिलेर खां और आसालत खां सैन्यपरिचालक थे। अंगरेजने पलासीकी लड़ाईमें जयी हो कर मीरजाफरको बंगके सिंहासन पर बैठाया है, रामनारायण पटनाका आधिपत्य करते हैं, इन सब बातोंमें उस समयके दिल्ली-सम्राट्की सम्मति न थी। शाहआलमने दलबलके साथ पटनाकी ओर कदम उठाया। पहले पटनाके बाहर रामनारायणके साथ तुमुल युद्ध हुआ। इस युद्धमें रामनारायणको हार होने पर भी सिताबरायने अपना अतुल विक्रम दिखलाया था। इसके बाद शाहआलमने स्वयं पटना नगरमें घेरा डाला। बादशाहके पटनामें घेरा डालनेके पहले ही रामनारायण और सिताबरायने अंगरेजोंसे मिल कर नगररक्षाका यथासम्भव आयोजन कर रखा था। मूसेल साहबकी सहायतासे शाह आलमने नगर पर चढ़ाई कर दी। सिताब राय असाधारण वीरता दिखा कर नगरकी रक्षा करने लगे। वे दिन रात आहार-निद्राका परित्याग कर नगरप्राचीरके ऊपर घूम घूम कर सेनाओंको उत्साहित करते थे। अपनी शक्ति भर युद्ध करके उन्होंने नगरकी रक्षा की थी। किन्तु थोड़े ही दिनोंमें लेल साहबने नगर-प्राचीरका एक स्थान छेद डाला। फिर भी सिताब राय और रामनारायण नगरकी रक्षा करनेसे बाज नहीं आये। किन्तु फिरसे आक्रान्त होने पर बचावका कोई उपाय नहीं, जब वे लोग इस बातकी चिन्ता कर रहे थे, उसी समय कप्तान नक्सका सैन्यदल पटना आ धमका। उसी दिन रातको नक्स साहबने शत्रुकी छावनी पर चढ़ाई कर उन्हें विपर्यस्त कर डाला। शाह आलम टिकारीकी ओर प्रस्थान कर नवसैन्यसे सहायता पानेकी प्रतीक्षा करने लगा।

इधर पूर्णियाका नवाब खादेम हुसेन बादशाहको मदद देनेके अभिप्रायसे हाजीपुर पहुंचा। कप्तान नक्सने दूसरे किनारे जा कर उस पर आक्रमण करना चाहा। उनके पास बहुत थोड़ीसी फौज थी, इस कारण रामनारायण उनके साथ ससैन्य जानेको राजी न हुए। नक्सने सिताब रायको अपने साथ जानेके लिये अनुरोध किया। सिताब राय साहसी वीर पुरुष थे। वे नक्सकी बात मान कर अपनी तीन सौ सेनाके साथ असीम साहससे नक्सके दलमें मिल गये। अब वे लोग शीघ्र ही गङ्गाके दूसरे किनारे पहुंच गये। नक्सने सिताबरायसे सलाह ले कर रातको ही शत्रुपक्ष पर आक्रमण करनेका विचार किया। किन्तु उस दिनकी रात बहुत अंधियाली

थी, इससे उन लोगोंकी इच्छा पूरी न हुई। रात बीतने पर शत्रु पक्षके एक दलने उन लोगोंका मुकाबला किया। यद्यपि वे लोग उस समय युद्धके लिये बिलकुल तैयार न थे और शत्रु पक्षने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया था, तथापि नक्स और सिताबराय असाधारण पराक्रमसे युद्ध करने लगे। छः घंटे युद्ध करनेके बाद खादेम हुसेन पराजित हुआ। वह बादशाहसे मिलनेकी आशा छोड़ कर उत्तर बेतियाकी ओर चल दिया। मुताक्षरीणके प्रणेता गुलाम हुसेन इस युद्धके समय पटनामें मौजूद थे। कप्तान नक्सने पटना लौट कर सिताब रायको असामान्य साहस और वीरत्वकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी। नक्स साहबने हृष्टचित्तसे बार बार कहा था, 'ये ही यथार्थ नवाब हैं, मैंने ऐसे नवाबको और कहीं भी नहीं देखा।

इस युद्धमें सिताब रायका वीरत्व और साहस देख कर अंगरेज कर्मचारियोंको उनकी क्षमता अच्छी तरह मालूम हो गई। सिताबराय धीरे धीरे अपनी असामान्य बुद्धि और विक्रमके प्रभावसे अंगरेजोंकी सहानुभूति आकर्षण कर उनमें अपनी प्रतिपत्ति जमानेमें समर्थ हुए थे। उस समय सिताब राय अंगरेजी दलके एक प्रधान क्षमताशाली पुरुष थे।

१७६१ ई०की १५वीं जनवरीको नगरसे तीन कोस पश्चिम गयान नामक स्थानमें सम्राट् शाह आलमकी सेनाओंके साथ अंगरेजोंका पुनः भीषण युद्ध हुआ। कर्नेल कर्नाक अंगरेजी सेनाके अधिनायक थे। शाह आलमकी सेनाके अमित विक्रमसे युद्ध करने पर भी वे अंगरेजोंके हाथसे पराजित हुई। युद्धके कुछ बाद ही कर्नाक साहबने सिताबरायको सन्धि करनेके अभिप्रायसे शाह आलमके शिविरमें भेजा था। किन्तु सम्राट् इस सन्धि-के प्रस्ताव पर राजी नहीं हुआ। सिताब रायने शाह आलमसे विदा होते समय कहा था, "अगर तो सन्धिके उन नियमोंको बादशाहने नहीं माना, पर उसे अवश्य उन्हीं नियमोंसे सन्धिके लिये प्रार्थना करनी होगी। उस समयसे फिर सन्धि होने पर भी जिस नियमसे वह स्थिर होगी वह नियम सम्राट्का सम्मान या सुविधा होने वाला नहीं होगा।

सिताब रायकी बात अक्षरशः सत्य निकली। शाह आलमकी आर्थिक अवस्था हीन हो चली। सहकारीगण एक एक कर उसे छोड़ने लगे, अंगरेजी सेना उसके पीछे पड़ी, अन्तु उसे सन्धिका प्रस्ताव पेश करना पड़ा। अंगरेजी शिविरमें पहुंच कर उसने सन्धिके लिये प्रार्थना की। अंगरेजोंके साथ संधि हो गई, इस प्रकार कुछ दिनों तक युद्धविग्रहादि स्थगित रहे।

मीरकासिम बंगालके नवाब होनेके बादसे रामनारायणको बुरी निगाहसे देखने लगा। अंगरेजोंके पटनासे चले जाने पर वह हिसाब किताबके लिये रामनारायणको तंग करने लगा। रामनारायण अच्छी तरह हिसाब समझा न सके,—उन्होंने बहुतोंको कागज पत्र ले कर भाग जानेकी सलाह दे दी है, इस झूठी अफवाहके फैलते ही वे कारारुद्ध किये गये।

सिताब रायको भी इसी प्रकार तंग करनेका संकल्प किया गया था। नवाब मीर कासिमको दिल्लीके सम्राटसे बिहारका दीवानी पद मिला। अब उसने सिताब रायसे कागज पत्रका हिसाब मांगा। नवाब उनका सर्वनाश करनेको तुल गया। सिताब रायको पकड़नेके लिये नवाबने पटनामें उनके घर पर आदमी भेजा। तीक्ष्ण बुद्धि और असाधारण साहसमें सिताब राय चिरप्रसिद्ध थे। वे अपने परिवारोंके साथ आत्मरक्षा करनेके लिये तैयार हो गये। नवाब उनकी वीरत्व कहानी सुन कर दांतों उंगली काटने लगा और कुछ समय तक उन्हें तंग करनेसे रुक गया।

किन्तु सिताब रायका दुर्भाग्य आ पहुंचा। वे दिन तीन वर्षों पर प्रतिष्ठित थे, मीर कासिमने वे तीनों पद पानेके लिये बादशाहसे सनद ले ली। फिर हिसाब किताब बुझानेके लिये सिताब राय पर अत्याचार होना शुरू हुआ। अङ्गरेज लोग पहलेसे ही सिताब रायको प्रेमदृष्टिसे देखते थे। इस विपदमें अङ्गरेज कर्मचारियोंने उन्हें मीर कासिमके हाथसे बचानेका संकल्प किया। अंगरेजोंने बीचमें पड़ कर यह तै किया, कि कलकत्तेकी अंगरेज कौंसिल सिताब रायके कागज-पत्रकी जांच कर उसका विचार करेगी। नवाब इस बात पर राजी हो गया। कर्नाक साहबके साथ सिताबराय कलकत्ता भेजे गये। उनके विरुद्ध कुछ भी प्रमाणित नहीं हुआ

कौंसिलके कर्मचारियोंने उन्हें नवाबका राज्य छोड़ कर दूसरी जगह चले जानेका अनुरोध किया। एक दल अंगरेजी सेनाके साथ सिताबराय सरयू पार कर अयोध्याके नवाबके राज्यमें चले गये।

उस समय सुजाउद्दौला अयोध्याका नवाब था। सिताबराय अयोध्या पहुंच कर सुजाउद्दौलाके अधीन नौकरी करने लगे। नवाबके मन्त्री बेणी बहादुरके साथ उनका विशेष परिचय हुआ। वे धीरे धीरे बेणी बहादुरके एक विश्वस्त प्रियपात्र हो गये। उस समय सुजाउद्दौलाके साथ मीरकासिमकी सन्धिकी बातचीत चल रही थी। मन्त्री बेणीकी सलाह लिये बिना ही नवाब यह काम कर रहा था, इस कारण मन्त्रीके हृदयमें कुछ विद्वेषभाव जग उठा। उन्होंने सङ्कल्प किया, कि इन्हीं सिताब रायके द्वारा मीरजाफरके साथ अंगरेजोंकी पुनः सन्धि करा कर अपना मतलब निकालेंगे। यह सोच विचार कर उन्होंने एक पत्रके साथ सिताबरायको मीरजाफरके पास भेजा। इधर नवाब सुजाउद्दौला स्वयं मीरकासिमके साथ सन्धि करनेकी कोशिश कर रहा था। जो हो, उस युद्धमें दोनों पक्षको अच्छा मौका हाथ लगा। सुजाउद्दौला और शाह आलम एक पक्षमें थे, दूसरे पक्षमें बलवान् अंगरेज जाति। इस समय मेजर कर्नाकके सुपरिचित राजा सिताब रायने अंगरेजोंको खासी मदद पहुंचाई थी। अंगरेजोंने जब देखा, कि नवाब सुजाउद्दौला किसी हालतसे अंगरेजोंके साथ संधि करनेको राजी नहीं है, तब उन लोगोंने राजा बलवन्त सिंहके परामर्शानुसार चुनारगढ़में घेरा डाला। किन्तु इसमें अंगरेजी सेना कुछ भी कर नहीं सकी। सेनानायकके मरने पर उन लोगोंने घेरा उठा कर सुजाउद्दौलाके आक्रमणकारी सेनादलका पीछा किया।

इसके बाद ही मेजर फ्लिचार्डके अधीन एक दल अंगरेजी सेना लखनऊ पर चढ़ाई करने भेजी गई। राजा सिताबराय और नजफउद्दौला उनके सहकारीरूपमें गये थे। राहमें चलते चलते सिताबरायने इलाहाबाद दुर्गको जीतनेका इरादा किया। प्राचीरभेदी कमान द्वारा दुर्गके दरवाजेका एक स्थान टूट गया, दुर्गाधिकारी औं उस प्रदेशके शासनकर्त्ता अलीकम् खाँ समयाभावसे युद्धसज्जा न कर सके। उन्होंने सिताबरायकी बात पर विश्वास कर आत्मसमर्पण किया। उन लोगोंको आदरपूर्वक सुजाउद्दौलाके दुर्गमें भेज दिया गया। अंगरेज लोग इलाहाबाद पर अधिकार कर बैठे।

इस विजयके बाद कुछ दिनों तक सिताबराय राजा बलवन्तके साथ मिल कर उक्त दोनों प्रदेशोंकी शासन-शृङ्खला स्थापन करनेमें उलझे रहे। उनकी सलाहसे मीर कासिम द्वारा भगाये गये। मीर रोशन अली खाँ, शाह फरहत अली, शाह सबरबेग आदि राजकार्य चलानेमें समर्थ व्यक्तियोंको अंगरेज गवर्मेण्टने प्रादेशिक शासनकर्त्तारूपमें नियुक्त किया। इसके बाद जब उन लोगोंने सुना, कि वजीर दलबलके साथ उन्हें सजा देने आ रहा है, तब अंगरेज-सेनापति राजा सिताबराय और मिर्जा नजफखाँको साथ ले कर युद्ध करने अग्रसर हुए। कोड़ाके पासमें दोनों पक्षमें मुठभेड़ हुई। महाराष्ट्र-सेनापति मलहारराव इस समय सुजाकी ओरसे लड़ रहा था। उसने कौशलसे राजा सिताब रायको अपनी सेनासे घेर लेनेकी कोशिश की। जगदीश्वरकी अपार करुणासे सिताबराय अपनी थोड़ी-सी सेना ले कर भाग गये।

इसके बाद सिताबराय अपनी मुट्ठी भर सेना और सहायतामें भेजी हुई अंगरेजी सेनाको ले कर अंगरेज सेनापतिसे मिले। अनन्तर उन दोनोंने फिरसे दुर्गमें घेरा डालनेका पक्का इरादा किया। शीघ्र ही चुनार दुर्ग अंगरेजोंके हाथ लगा। अब सुजाउद्दौला कोई उपाय न देख अपनी बारह घुड़सवार सेना ले कर अंगरेज सेनापतिकी शरण लेने चला। वजीरके आनेकी खबर सुन कर सेनापति और सिताबराय उसका स्वागत करनेके लिये पैदल आगे बढ़े। अंगरेज-सेनापतिको पैदल आते देख सुजा घोड़ेसे उतर गया और सेनापतिका आलिङ्गन किया। उसके सम्मानके लिये यहां उसे काफी नजर दी गई थी।

अंगरेजी छावनीमें आ कर सुजाउद्दौलाने आनन्दपूर्वक कुछ समय विश्राम किया। पीछे वह अपनी छावनीको लौट गया। यहां आ कर वह सिताबरायकी सलाहके अनुसार अंगरेजोंके साथ संधिके विषयमें

विचार करने लगा। इधर सिताबराय भी उनके साथ सन्धिकी कथावार्त्ता ले कर आपसमें मिलता करनेकी चेष्टा करने लगे। इस समय सिताब रायकी सौजन्यसे सुजाउद्दौला ऐसा मुग्ध हो गया था, कि वह अंगरेजों से सन्धि किये विना रह नहीं सका। इस सन्धिके अनुसार अंगरेजोंको सुजाउद्दौलासे युद्धके व्ययस्वरूप ५० लाख रुपये मिले। इलाहाबाद दिल्लीश्वरको छोड़ दिया गया और बङ्गालके राजस्वसे नजफ खाँकी वार्षिक एक लाख रुपया वृत्ति कायम की गई।

वजीर सुजाउद्दौलाने जब अंगरेजोंके प्राप्य रुपया चुकानेकी व्यवस्था की, तब उसे अंगरेज-सेनापतिके पास अपने मूल्यवान् जवाहरात आदि बन्धकस्वरूप रखने पड़े थे। उन सब मणिरत्नादिका मूल्य निरूपण करनेमें राजा सिताब रायको विशेष कष्ट स्वीकार करना पड़ा था।

अंगरेज गवर्नरने जब नाजिम उद्दौलाको बंगालकी मसनद पर बैठाया और मीरजाफरके भाई महम्मद कासिम खाँ आजिमाबादका शासनकर्त्ता नियुक्त हुआ, तब रामनारायणके भाई धिराजनारायणको आजिमाबादके दीवान या प्रधान मन्त्रीके पद पर नियुक्त किया गया। अब राजा सिताबराय पर किसीकी भी दृष्टि न पड़ी। उस समय सिताबराय सम्राटके अधीन बिहार प्रदेशके दीवान पद पर नियुक्त थे। अंगरेजोंके साथ विशेषतः अंगरेज सेनापति कर्नाकके साथ उनका जैसा सौहार्द था, उससे उनकी सलाहके अनुसार कार्य करना ही सुजाउद्दौलाने युक्तिसंगत समझा था। तदनुसार उसने राजा सिताबरायको प्रसन्न रखनेके लिये आजिमगढ़ और जौनपुरके अन्तर्गत लाख रुपये आयकी एक सम्पत्ति जागीरस्वरूप दे दी।

इसी समय लार्ड क्लाइव दूसरी बार भारतवर्ष पधारे। उन्होंने भारतकी अवस्था देख इलाहाबाद जा कर सम्राट्से मिलना ही अच्छा समझा। सिताबराय भी उनके साथ साथ चले। वे दोनों पहले सम्राट्से मिल कर पीछे सुजाके शिविरमें गये। वहा उन दोनोंने बंग, बिहार और उड़ीसाकी दीवानी लेनेका प्रस्ताव पेश किया। वजीर और सम्राट्की अनुमतिसे बंगालकी दीवानी सनद लिखी गई (१७६५ ई०)। अंगरेज कम्पनी वार्षिक २० लाख रुपये देनेको राजी हुई।

इलाहाबादसे लौटनेके बाद सिताबराय अजीमाबादमें ठहर कर फिर क्लाइवसे कलकत्तेमें मिले। सिताबरायको विनय-नम्र व्यवहार, तीक्ष्ण बुद्धि और हृदयहारी वाक्शक्ति तथा अंगरेजोंके प्रति सहानुभूतिने इस समय लार्ड क्लाइवका चित्त आकर्षण किया था। सिताबरायके कलकत्ता आने पर क्लाइवने कौंसिलके परामर्शानुसार उन्हें राजस्व और राज्यपरिचालनके विषयमें अपने सहकारीरूपमें नियुक्त रखनेकी कोशिश की। किन्तु चतुर सिताबराय ताड़ गये कि, ऐसा होनेसे शत्रुओं और दुष्ट लोगोंकी आंखे उन पर गड़ जायेंगी, इसलिये रोगका बहाना करके उन्होंने टाल दिया। किन्तु क्लाइवने ऐसे सुयोग्य मनुष्यकी नितान्त आवश्यकता समझी। उन्होंने राजाके उज्रको जरा भी नहीं सुना और अपने विश्वस्त चिकित्सक द्वारा राजाकी चिकित्सा कराई। राजाने शीघ्र ही आरोग्यलाभ किया। अब उन्हें बाध्य हो कर राजकीय कार्य करना पड़ा। अंगरेज गवर्मेण्टकी ओरसे उन्हें 'महाराजा' और 'बहादुर' की उपाधि मिली। वे पाचहजारी घुड़सवार सेनाके अध्यक्ष बनाये गये। उन्हें और भी नई नई जागीर दे कर सम्मानित किया गया। इसके सिवा उस सम्पत्ति और सेनादलरक्षाके खर्च वर्चके लिये उन्हें मासिक २५ हजार तथा उनके निजी खर्चके लिये मासिक ७ हजार रुपयेकी वृत्ति निर्द्धारित हुई। गवर्मेण्टका कुल काम देखने सुननेके लिये उन्हें पूरा अधिकार दिया गया। यहा तक कि, वे नये नवाब सैफउद्दौलाके मोहर रक्षक भी हुए थे।

इस बार महाराज सिताब राय अजीमाबादका शासनकर्त्ता बन कर अजीमाबाद पधारे (१७६६ ई०)। उनकी कार्यतत्परता पर धिराजनारायण उतने प्रसन्न नहीं हुये पर उनकी चलाई हुई नई विधि देख कर बड़े ही विरक्त हुए। इसके बाद वे दीवानी कागज पत्रमें धिराजनारायण की भूल निकालने लगे। उन्होंने धिराजनारायणको सरकारी रुपयेके अपव्यय करनेमें अपराधी पाया और उन्हें वह अपहृत रुपये लौटा देने कहा। क्लाइव और सेनापति

कर्नीक आदिने भी उन्हें रुपये लौटा देनेके लिये सख्त तगाजा भेजा। किन्तु धिराजनारायण एक छोटे पत्र पर अपराध स्वीकार कर नाना प्रकारके उज्र करने लगे।

राजकीय किसी गोलमालका मीमांसा करनेके लिये लार्ड क्लाइवने इस समय एक बार सुजाउद्दौलासे मिलना चाहा। लार्ड क्लाइवके अजीमाबाद पहुंचने पर राजा सितावरायने उनका अच्छा स्वागत किया। अनन्तर दोनों नदी पार कर गये और छपराके दरबारमें पहुंचे। दरबार शेष होने पर वे दोनों मुर्शिदाबाद लौटे। राहमें आते समय धिराजनारायणसे रुपये वसूल करनेका प्रस्ताव उठाते हुए सितावरायने कहा, मित्रता और सौजन्यके नाते मुझसे रुपया वसूल होना असम्भव है। मुर्शिदाबादसे महम्मद रेजाखाँको भेज कर बलपूर्वक रुपया वसूल न करना ही अच्छा होगा। तदनुसार मुर्शिदाबाद आते ही क्लाइवने मन्त्री महम्मद रेजाखांको धिराजनारायणसे रुपया वसूल करनेके लिये भेजा। बहुत तंग करनेके बाद धिराज कार्यच्युत हुए और कलकत्ता कौंसिलकी रायसे महाराज सिताब राय अजीमाबाद प्रदेशके सर्वेसर्वा बनाये गये। इसके कुछ बाद ही लार्ड क्लाइव विलायत लौटे (१८६७ ई०)।

१७६९ ई०में बङ्गाल भरमें एक प्रकारकी शासनविशृङ्खला उपस्थित हुई। राजा और सभी शासनकर्त्ता, यहां तक कि सिताब राय तक भी कौंसिलकी आँखों पर चढ़ गये। उनकी बनाई हुई कार्यावलोकी अच्छी तरह परीक्षा करनेके लिये मि० वान्सिटार्ट और मि० पलक अजीमाबाद-मन्त्रिसभाके सदस्य हुए। वान्सिटार्ट सिताब रायका दोष निकालनेमें जितनी ही चेष्टा करने लगे, उतने ही वे उनका चतुर बुद्धिके कौशलसे विमोहित होते गये। आखिर उन्होंने राजा सिताब रायको बिलकुल निर्दोष बतलाया। राजा सिताब रायने वान्सिटार्टका एक समय अच्छा सम्मान किया था, शायद इसी लिहाजसे वे प्रकाश्य भावमें उनकी शिकायत न कर सके। विलायत लौटने समय उन्होंने कुछ गोपनीय कागजपत्रोंका पुलिंदा बांध कर उसमें सील लगा दी थी। वारेनहेस्टिंस जब गवर्नर बन कर आये, तब उन्होंने उसे खोल कागज पत्र पढ़ा और महम्मद रेजाखाँ तथा राजा सिताब रायको कैद कर कलकत्ता भेज देनेका हुकुम दिया। मुर्शिदाबादके अंगरेज कर्मचारी जन ग्राहमने यह आदेश पा कर अजीमाबादमें सिताब रायके पास भेज दिया। सिताब राय उस आदेश पत्रका अमान्य न कर सीधे १७७१ ई०में बजरा पर चढ़ कलकत्ता चले आये इधर कलकत्ता-कौंसिलसे यह हुकुम निकला कि, सिताब राय बर्खास्त हो गये और अजीमाबादको पूर्वगठित कार्यकारणी सभाको राजस्व संग्रहका अधिकार मिला।

१८७१ ई०में महाराज सिताब राय नजरबन्दीरूपमें कलकत्ता लाये गये सही, पर उन्हें कलकत्तेमें अपने ही घरमें रहनेके दिया गया। दो मास बीत जाने पर एक दिन कौंसिलसे यह हुकुम निकला, कि "महाराज सितावरायको राज और राजस्वके दीवानी पदसे हटाया गया और उसका भार अजीमाबादकी कौंसिलके सुपुर्द हुआ। राज्यके कुल कर्मचारी उन लोगोंके आदेशका पालन करेंगे, किन्तु महाराजाके आज भी निजामतका कार्य देखने सुननेका अधिकार है, अतएव सभी कर्मचारी उनका पूर्ववत् सम्मान करेंगे।"

अंगरेजी सिपाहियोंसे परिवेष्टित हो महाराज सितावराय जब कलकत्ता लाये गये, उस समय गवर्नर वारेनहेस्टिङ्गस मुर्शिदाबाद जानेकी तैयारी कर रहे थे। वे शीघ्र ही वहांसे कलकत्ता लौट कर पहले सितावरायका ही विचार करने लगे। महामति गवर्नर और कौंसिलके सभासदोंके विचारसे राजा निर्दोष और कट्टर राजभक्त प्रमाणित हुए। उन्होंने राजाको फिरसे अजीमाबादका दीवान बनाया और अजीमाबादकी कौंसिलको आदेशपत्र लिख भेजा। उस पत्रका स्थूल मर्म इस प्रकार था—

कलकत्तेकी कमिटी और यूरोपके प्रधान प्रधान राजेश्वरोंको राजा सितावरायके प्रभुत्व और सर्वमय कर्तृत्वसे उनके राजकार्य-परिचालनमें संदेह हो गया था, इसीलिये उनकी कार्यावलीकी प्रकृत अवस्था जाननेके लिये उन्हें विचाराधीन रखा गया था। ऐसे राजभक्त, अंगरेजोंके प्रति चिरानुरक्त तथा अंगरेजोंके शुभाकांक्षी व्यक्तिको इस प्रकार असलियत जाने बिना तंग करना

बिलकुल अन्याय हुआ है। उनके प्रति दुष्ट लोगोंने जो मिथ्या दोषारोप किया है वह भित्तिहीन और सम्पूर्ण अमूलक है।

जिन अंगरेज शासनकर्त्ताओंके निकट सिताबरायने एक दिन आदर, यत्न और सम्मानसे राजकार्य चलाया था, उन्हीं अंगरेजोंके हाथसे वे इस प्रकार अपमानित होंगे ऐसा उन्होंने कभी भी नहीं सोचा था। अंगरेजोंके इस आचरण पर दुःखित हो कर उनका चित्त क्रमशः हताश होने लगा। साथ साथ उनका स्वास्थ्य भी खराब होता चला। अजीमाबाद पहुंचनेके कुछ दिन बाद ही उदरामय रोगसे उनका प्राणान्त हुआ। (१७७३ ई०)।

इस समय गवर्नर हेष्टिंग्स वाराणसी जानेके लिये अजीमाबाद पहुंचे। वे महाराज सिताबरायको साथ ले कर जायेंगे, ऐसा सोच कर ही वे यहां आये थे। महाराज उस समय मृत्युशय्या पर पड़े थे। उन्होंने अपनी दुर्भाग्यकी बात गवर्नरके पास कहला भेजा। हेष्टिंग्स दो दिन वहां रह कर उनकी देखभाल करने लगे, पीछे जरूरी कामके लिये वाराणसीको चल दिये। हेष्टिंगसके वाराणसीसे लौटनेके पहले ही राजा सिताबराय परलोकको सिधार चुके थे। अग्निसंस्कार गंगाके किनारे किया गया।

गवर्नर वारेन हेष्टिंगसने मृत राजाके प्रति अपने अविचलित विश्वासके प्रमाणस्वरूप उनके लड़के कल्याणसिंहको पिताके पद पर नियुक्त किया। कल्याणसिंह पिताके समान कार्यपटु और विवेचक तो नहीं थे फिर भी उन्हें पिताकी जागीर और वेतन पानेका आदेश हुआ। उनकी माताकी वृत्ति भी बढ़ा दी गई।

१७६९ ई०में बंगाल बिहारमें भीषण दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। यही हम लोगोंके देशमें 'छियत्तर मन्वन्तर' कहलाता है। जब दुर्भिक्षने विकरालरूप धारण किया, तब प्रति दिन हजारों प्रजा अन्नाभावसे मरने लगी। अन्न पीड़ितोंके आर्त्तनादसे देश गूंज उठा। उस समय दानवीर महाराज सिताबरायने दरिद्र, वृद्ध, खञ्ज, अन्ध, बधिर, मूक और अन्नाभावमें विपदापन्न व्यक्ति मात्रको भोजन देनेका अच्छा प्रबंध कर दिया था।

उन्होंने सुना कि वाराणसी धाममें धान आदि फसल बहुत सस्तेमें बिकती है। इसलिये उन्होंने अपने आदमियोंको नाव ले कर वाराणसी धाम जानेका हुकुम दिया। वे लोग राजभंडारसे रुपये ले कर महीनेमें तीन बार जाते आते थे। जब तक दुर्भिक्ष चलता रहा, तब तक उनके आदमी वहांसे अनाज नाव पर ढोते रहे। इसके सिवा अजीमाबादमें शस्यकी रक्षा करने और उसे बांटनेके लिये स्वतन्त्र आदमी निर्दिष्ट हुए थे। मुताक्षरीणकार गुलाम हुसेनने लिखा है, कि महाराज सिताबराय हिन्दू होने पर भी मुसलमानी धर्ममें विशेष आस्थावान् थे।

सिताभ (सं० पु०) १ कपूर, कपूर।

सिताभा (सं० स्त्री०) तकाह्वा क्षुप, तकी।

सिताभ्र (सं० पु०) १ कर्पूर, कपूर। २ श्वेत मेघ, सफेद बादल।

सिताभ्रक (सं० पु०) सिताभ्र देखो।

सितामण्डूर—अम्लपित्त रोगमें फायदा पहुंचानेवाली एक औषध।

सितामोक्ष (सं० स्त्री०) श्वेतवर्ण पुष्पविशेष, सफेद फूल।

सितामोघा (सं० स्त्री०) श्वेत पाटला, सफेद पाडर।

सिताम्बर (सं० पु०) १ श्वेतवस्त्र परिहितव्रती, वह जो सफेद कपड़ा पहन कर व्रत करता हो। (त्रि०) २ शुक्लवस्त्र परिधायी, सफेद कपड़ा पहननेवाला।

सिताम्भोज (सं० क्ली०) सिताम्बुज, श्वेतपद्म, सफेद कमल।

सितार (हिं० पु०) एक प्रकारका प्रसिद्ध बाजा जो लगे हुए तारोंको उंगलीसे झनकारनेसे बजता है, एक प्रकारकी वीणा। यह काठकी दो ढाई हाथ लंबी और ४-५ अंगुल चौड़ी पटरीको एक छोर पर गोल कद्दूकी तूंबी जड़ कर बनाया जाता है। इसका ऊपरका भाग समतल, चिपटा होता है और नीचेका गोल। समतल भाग पर तीनसे ले कर सात तार लंबाईके बलमें बंधे रहते हैं।

सितारबाज (फा० पु०) सितार बजानेवाला, सितारिया।

सितारा (फा० पु०) १ तारा, नक्षत्र। २ भाग्य, प्रारब्ध नसीब। ३ चांदी या सोनेके पत्तरकी बनी हुई छोटी

वर्षाकालमें इन दोनों नदियोंके सङ्गमस्थलकी तरङ्गमाला अत्यन्त भीतिप्रद हो जाती है। प्रकृतिका वह भीषण ताण्डव नृत्य देख कर सभी विस्मय-सागरमें गोते खाने लगते।

अटक नगर तक सिन्धुवक्षसे नावें माल लाद कर आ जा सकती हैं। उसके बाद नदीमें जहां तहां पर्वत खड़े हैं जिससे नदीकी जलगति बहुत तेज और प्रायः प्रपाताकारमें गिरती है। उत्पत्तिस्थानसे ले कर अटक तक नदीकी गति ८६० मील और यहांसे समुद्रतीर तक प्रायः ६४० मील है। तिब्बतभूममें १६००० फुट उच्च भूमिसे नीचेकी ओर उतर कर यह नदी समुद्रपृष्ठसे २०७६ फुट ऊंचे अटकनगरमें आई है। अतएव उच्च हिमालय-पृष्ठसे यह ८६० मीलका रास्ता तै कर १४ हजार फुट नीचे उतरी है। इसी कारण यहाका जलप्रवाह प्रपाताकारवेगविशिष्ट है। इसके बाद नदीवक्ष पर्वतपृष्ठ होने पर भी बहुत दूर तक प्रायः समतल है। इसकी अववाहिका भूमि २००० फुटसे निम्न नहीं है। अटक नगरके पास दुर्गके दूसरे किनारे ग्रीष्म ऋतुमें नदीका वेग प्रति घंटेमें १३ मील है, किन्तु शीत ऋतुमें उसका वेग घट जाता है। उस समय उसका वेग प्रति घंटेमें ५ से ७ मील तक होता है। जब यहां बाढ़ देखी जाती है, तब साधारणतः २४ घण्टेके मध्य जल ५१७ फुट तक ऊपर उठता है। शीतकालमें बाढ़के जलकी रेखा ५० फुट तक ऊंची होती है। बाढ़के ह्रास और वृद्धिके कारण विभिन्न ऋतुमें गर्भके विस्तारमें विभिन्नता देखी जाती है। किसी समय २५० गज और किसी समय १०० गजसे भी कम देखा जाता है। यहां सिन्धुनद पार करनेके लिये डोंगी और डोंगीका बना पुल है। इसके उत्तर लोग प्रायः चमड़ेके मशक पर चढ़ नदी पार होते हैं। पेशावर जानेका बड़ा रास्ता इस नगर हो कर नदीके दूसरे किनारे चला गया है। १८८३ ई०को पेशावरमें रेलगाड़ी ले जानेके लिये यहां एक पक्केका पुल बनाया गया है। उसी पुलके ऊपरसे रेलगाड़ी जाती है। यह रास्ता खुल जानेसे बम्बई और कलकत्तेके साथ पेशावरका लगाव हो गया है। इस पुलके ऊपर खड़े हो कर सिन्धुनदके उत्तर और दक्षिण तथा सम्मुखस्थ हिमाचलका दृश्य देखनेमें बड़ा ही मनोरम लगता है।

अटक होता हुआ सिन्धुनद क्रमागत दक्षिणको चला गया है। यह पश्चिम पञ्जाब और सुलेमान पर्वतके ठीक समानान्तरभावमें बह गया है। सिन्धु प्रदेशसे उत्तरको ओर बन्नू जिलेका जो विस्तृत रास्ता गया है, वह इस नदीके पश्चिम उपकूलसे। एक दूसरा रास्ता मूलतानसे नदीके पूर्वी किनारे होता हुआ रावलपिण्डीको गया है। यहा यह नदी डेरा इस्माइल खां, डेरा गाजी खां और सुलेमान पर्वतमालाके पूर्वस्थ अङ्गरेजाधिकृत एक भूभागको सिन्धुसागर-दोआबसे पृथक् करती है।

डेरा गाजी खां जिलेके दक्षिण और मिथुनकोटके ऊपर पांच शाखा नदियोंका जल सिन्धुमें गिरता है। यह पञ्चशाखा पञ्जाब नामसे मुसलमान ऐतिहासिकके निकट प्रसिद्ध हैं और उसीसे पञ्जाबप्रदेशके नामकी उत्पत्ति हुई है। ये पांचों नदियां सिन्धु और यमुनाके मध्य बहती हैं। झेलम, चन्द्रभागा (चनाब), इरावती (रावी), वितस्ता (व्यास और शतद्रु (सतलज) नामसे प्रसिद्ध है। उक्त पञ्चनद समुद्रसे ४६० मील उत्तर मिथुनकोट नामक स्थानके पास सिन्धुनदमें मिलता है। इस सङ्गमस्थानके उत्तर सिन्धुकी चौड़ाई ६०० गज तथा गहराई १२ से १५ फुट है। जलवेग प्रति सेकेण्डमें ६१७१६ क्युबिक फुट है। पञ्चनद जहा सिन्धुमें मिला है, वहाका नदीवक्ष १०७६ गज विस्तृत है। स्रोतवेग प्रति घंटेमें २ मील और जलवेग प्रति सेकेण्डमें ६८६५५ क्युबिक फुट है। सङ्गमके दक्षिण पञ्चनद सिन्धु नामसे समुद्रकी ओर चला गया है। वहां नदीकी विस्तृति कई कोसों तक २००० गज है। विभिन्न ऋतुमें इसके विस्तारमें कमी-बेशी देखी जाती है।

पञ्जाबके मध्यसे सिंधुका गर्भ जहां तक विस्तृत है, उसके बीच बीचमें छोटे छोटे द्वीप और उच्च बालूके किनारे तथा सुविस्तृत बालुकासमाकीर्ण तटभूमि देखी जाती है। विस्तृत बालुकापूर्ण तटभूमि रहने पर भी इसका किनारा प्राकृतिक दृश्यसे परिपूर्ण है। भक्करके समीपका नदीतट खजूर आदि नाना प्रकारके वृक्षोंसे विभूषित हो अपूर्व शोभा दे रहा है।

मिथुनकोट समुद्रपृष्ठसे २५८ फुट ऊंचा है। यहां सिंधुनद पञ्जाबके वहवलपुर राज्यके सीमारूपमें बहता है। काश्मीर नगर (अक्षा० २८° २६´ ३० तथा देशा० ६९° ४७´ पू०)के पास सिंधुनद सिंधुप्रदेशमें घुस गया है। काश्मीर नगर सिंधु प्रदेशकी सर्वोत्तर सीमा पर अवस्थित है। भक्करनगरसे समुद्रतीर पर्यन्त सिंधुनद 'लोअर सिन्ध' कहलाता है। सिंधवासियोंने इसे 'दरिया' शब्दसे और पाश्चात्य पण्डित प्लिनिने Indus incolis Sandus appellatus शब्दसे उल्लेख किया है। सिंधनद सिन्धुप्रदेशके मध्य ५८० मील तक दक्षिण-पश्चिमकी ओर वक्रगतिसे बह कर नाना शाखा-प्रशाखाओंमें अरब उपसागरमें गिरता है। इस प्रदेशमें इसकी चौड़ाई ४८० से १६०० गज और जब बाढ़ नहीं आती तब प्रायः ६८० गज रहती है।

बाढ़के समय नदीके दक्षिणांशका विस्तार कहीं कहीं एक मील भी होता है तथा जलकी गभीरता बाढके प्राबल्यके अनुसार ४से २४ फुट तक भी देखी जाती है। हिमालय पर्वत पर बर्फके पिघलनेसे जो जल पर्वतकी चोटीको चीरता फाड़ता नीचे उतरता है, उसमें कुछ कार्बनेट आव सोडा और पटास नाइट्रेट पाया जाता है। बाढके समय इसका स्रोतोवेग प्रति घंटेमें ८ मील और अन्यान्य समय ४ मील रहता है। नदीवेगसे तारतम्यानुसार इसके जलनिर्गमका भी न्यूनाधिक्य होता है अर्थात् बाढ़के समय ४४६०८६ से दूसरे समय ४०८५७ घनफुट तक जल प्रति सेकेण्डमें नदीगर्भसे समुद्रकी ओर दौड़ता है। इस स्थानके जलका ताप भी वायुसे १०° फा० कम है।

सिन्धुनदका डेल्टा भाग प्रायः ३ हजार वर्गमील है। यह समुद्रके किनारे प्रायः १२५ मील तक फैला हुआ है। यहां एक भी वृक्ष दिखाई नहीं देता। यहांकी मिट्टीमें बालू और कीचड भरा हुआ है। जो सब स्थान अपेक्षाकृत निम्न और जलमय हैं, यहां बड़ी बड़ी घास उगती है तथा वे सब स्थान गोचारणके विशेष उपयोगी हैं। उच्च स्थानों पर धानकी फसल अच्छी लगती है। डेल्टाभागका जलवायु शैत्यभावापन्न और बड़ा ही सुखप्रद है। शीतकालमें यह और भी मनोरम मालूम होता है। बाढ़के समय यहांकी आबहवा बिलकुल खराब हो जाती है। नदीके मुहानेसे तुलना करने पर देखा जाता है, कि गङ्गाका डेल्टा सुन्दर वनविभागसे जैसा भरा हुआ है, सिन्धुके डेल्टामें वैसी एक भी वन माला नहीं है। सिन्धुके बालुकामय डेल्टाके साथ अफ्रिकाके नीलनदके डेल्टाकी बहुत कुछ तुलना की जा सकती है।

१८०० ई०में सिन्धु डेल्टाके उत्तरी कोनसे बाघियार और सोता नामक दो शाखा नदी विभक्त हो कर सिन्धु नदमें गिरती थी। १८३७ ई०में वह पुनः पूर्वगतिका परित्याग कर दूसरे रास्तेसे चली गई है। समुद्रोपकूलस्थ शाहबन्दर जिलेमें लवणके स्तर कई जगह दिखाई देते हैं। यहां १८१९ ई०के पहले खेरैयारी शाहबन्दरमें पण्यद्रव्यादि आते जाते थे। किन्तु उसी साल जो भूकम्प हुआ था, उससे नदीगर्भ उठ जानेसे जलकी गति रुक गई और नावोंका जाना आना रुक गया। १८३७ ई०में काकेवाड़ीकी खाड़ी क्रमशः ७७० गज बढ कर नदीरूपमें परिणत हो गई और उसी राहसे पण्य द्रव्यादि ले जानेका प्रबन्ध किया गया। किन्तु १८६७ ई०में उक्त खाड़ीका मुंह बालूसे भर जानेके कारण नाव जाने आनेके लायक न रह गई। १८४१ ई० तक जिस हाजामो शाखामें छोटी छोटी नावें पाल उड़ाती थीं, पीछे वही सिन्धुनदका मूल मुहाना हो गई है।

इससे अनुमान होता है, कि सिन्धुनद बालुकामय भूवक्ष पर प्रवाहित हो अपनी गतिको हमेशा बदला करता है। १८४५ ई०में डेल्टाभागमें घोड़ाबाड़ी नगर नदीकूलका प्रधान वाणिज्यस्थान था। १८४८ ई०में उस स्थानसे नदीके हट जानेसे नगर श्रीभ्रष्ट होने लगा और नई नदीके किनारे कई वर्ष बाद फिरसे केटी नगर बसाया गया। कुछ दिन बाद बाढके जलसे नगरका कुछ अंश डूब गया जिससे लोगोंकी महती क्षति हुई। उसीके उत्तर फिर दूसरा केटि नगर बसाया गया था। वर्त्तमान समयमें ठट्ट और जिमान-जो पुरा नामक स्थानके मध्य नदीगर्भमें शैलस्तर दिखाई देता है। १८४६ ई०के पहले ये सब शैल नदीगर्भसे ८ मील दूरी पर थे। १८६३ ई०में घरेजाकी वनमाला नदीके प्रबल स्रोतसे

बरबाद हो गई और प्रायः हजार एकड़ जमीन जलमें डूब गई।

मार्च माससे सिंधुनदीका जल बढ़ने लगता है और अगस्त मासमें वह एकदम लबालब हो जाती है। इस समय हैदराबादके निकटवर्ती गिढुबन्दरमें जलकी गहराई १५ फुट होती है। सितम्बर माससे जल फिर घटने लगता है। इस नदीमें तरह तरहको मछली और जलज जीव देखे जाते हैं।

१८३३, १८४१ और १८५८ ई०में यहां तीन बार भयानक बाढ़ आई थी। अन्तिम वर्षकी १०वीं अगस्तके सबेरे करीब पांच बजे नदीमें बहुत थोड़ा जल दिखाई दिया। ११ बजे जल ११ फुट ऊपर उठा; १॥ बजे क्रमशः ५० फुट ऊपर उठता गया। संध्याकालमें ८० फुट ऊपर उठ कर नौसेरा सेनावासके अधिकांश स्थानोंको बहा दिया।

बालुकामय मरुप्राय सिंधु प्रवाहित प्रदेशमें पञ्चनद विद्यमान रहने पर भी पार्वत्य गर्भनिबंधन नदियोंमें जल हमेशा थोड़ा दिखाई देता है। इस कारण उस देशमें सभी समय जलका अभाव रहता है। फिर बाढ़के समय नदीके किनारे जो कोई फसल लगी रहती है, वह भी नष्ट हो जाती है। देशी हिन्दू और मुसलमान राजोंने इस प्रदेशका जलाभाव दूर करनेके लिये नहर कटवाना शुरू किया। इस समय सिंधुतटसे ३० या ४० मील विस्तृत कुछ नहरें भी काटी गईं। मुगल-सम्राटोंके यत्नसे ये सब नहरें काटी गईं सही, पर वे अङ्गरेज इञ्जिनियरों द्वारा चालित कृषिकर्मोपयोगी जलनालीका मुकाबला न कर सकीं।

अंगरेजी शासनमें १८६१ ई०को ६३ मील विस्तृत सक्कर नहरकी कटाई शुरू हुई और १८६० ई०में उसका काम शेष हुआ। परवर्त्तिकालमें काश्मीरके उत्तरसे बेगारी माल पर्यन्त सिंधुके किनारे तक बांध तैयार किया गया। इस बांधके हो जानेसे सिंधु पिषिण या कन्दहार रेलपथ में आने जानेकी बड़ी सुविधा हो गई। सिन्धुनद और सुलेमान पर्वतके मध्यवर्त्ती देराजात जिलेमें इस नदीसे ६१८ मील विस्तृत नहर है। उनमेंसे अंगरेजी अमलमें प्रायः १०८ मील तक नहर काटी गई। सिन्धुतटसे पश्चिम सक्कर, सिन्धु, घर या लरखाना, बेगारी और पश्चिम-नाड़ा नहर तथा पूर्वतीरसे पूर्वकी ओरमें पूर्व-नाड़ा और फेलुली नहर विद्यमान है। उन सब नहरोंमें प्रत्येकमेंसे फिर कई छोटी नहर कट कर इधर उधर चली गई है। उन्हीं नहरोंके जलसे आस पासके बाशिन्दे खेती बारीका काम चलाते हैं। सिन्धुप्रदेश देखो।

सिन्धुक (सं० पु०) सिन्धुवार वृक्ष, निर्गुंडी।

सिन्धुकन्या (सं० स्त्री०) लक्ष्मी। समुद्र मथनेके समय लक्ष्मी समुद्रसे निकली।

सिन्धुकफ (सं० पु०) समुद्रफेन।

सिन्धुकर (सं० क्ली०) श्वेत टङ्कण, सोहागा।

सिन्धुकालक (सं० पु०) नैर्ऋत्य कोणके एक प्रदेशका प्राचीन नाम।

सिन्धुक्षित् (सं० पु०) १ राजर्षिविशेष। २ ऋक्मन्त्रद्रष्टा एक ऋषि।

सिन्धुखेल (सं० पु०) सिन्धुदेश।

सिन्धुगञ्ज (सं० पु०) सिन्धुके तीरका एक नगर।

सिन्धुज (सं० क्ली०) १ सैन्धव लवण, सेंधा नमक। २ शंख। ३ पारद, पारा। ४ टङ्कण, सोहागा। (त्रि०) ५ समुद्रजात, समुद्रसे उत्पन्न। ६ सिन्ध देशमें होनेवाला।

सिन्धुजन्मन् (सं० पु०) सैंधव लवण, सेंधा नमक।

सिन्धुजा (सं० स्त्री०) १ लक्ष्मी। २ सीप जिसमेंसे मोती निकलता है।

सिन्धुजात (सं० पु०) १ सिंधी घोड़ा। २ मोती।

सिन्धुड़ा (सं० स्त्री०) एक रागिनी जो मालव रागकी भार्या मानी जाती है।

सिन्धुतीरसम्भव (सं० पु०) सोहागा।

सिन्धुदेश (सं० पु०) सिंधु नामक देश। सिंधुप्रदेश। सिन्धुप्रदेश देखो।

सिन्धुद्वीप (सं० पु०) १ राजर्षिविशेष। २ अम्बरीषके पुत्र ऋक्मन्त्र द्रष्टा ऋषि। ३ राहुके एक पुत्रका नाम। (भारत) ४ नाभके पुत्र।

सिन्धुनद (सं० पु०) नदभेद, सिंधुनद।

सिन्धुनन्दन (सं० पु०) चन्द्रमा। (त्रिका०)

सिन्धुनाथ (सं० पु०) समुद्र।

सिन्धुपति (सं० पु०) १ नदियोंके पालयिता। (ऋक् ७।६५।२) २ नदियोंका पति, समुद्र।

सिन्धुपत्नी (सं० स्त्री०) समुद्रकी पत्नी, नदी।

सिन्धुपथ (सं० पु०) सिंधुदेशका पथ।

सिन्धुपर्णी (सं० स्त्री०) गम्भारीवृक्ष।

सिन्धुपारज (सं० त्रि०) सिंधुके पारजात घोड़ा।

सिन्धुपिब (सं० पु०) अगस्त्य ऋषि जो समुद्र पी गये थे।

सिन्धुपुत्र (सं० पु०) १ मर्कटेन्दु। २ चन्द्रमा। ३ सिंधुराजपुत्र। ४ सिंधुमुनिपुत्र।

सिन्धुपुष्प (सं० पु०) १ शङ्ख। २ कदम्ब, कदम। ३ बकुल, मौलसिरी।

सिन्धुप्रदेश—अंगरेजाधिकृत भारतकी पश्चिमी सीमामें अवस्थित एक प्रदेश। यह बम्बई गवर्मेण्टके अधीन एक कमिश्नर द्वारा शासित होता है और अक्षा० २३° ३५' से २८° २६' उ० तथा देशा० ६६° ४०' से ७१° १०' पू० के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५३११६ वर्गमील और जनसंख्या ३४ लाखसे ऊपर है। इसके उत्तरमें बलुचिस्तान, पञ्जाब प्रदेश और बहवलपुर राज्य, पूरबमें राजपूतानेके अन्तर्गत जयसलमेर और जोधपुरराज्य, दक्षिणमें कच्छका रण प्रदेश और अरब-उपसागर तथा पश्चिममें किलात खाका अधिकृत राज्य है।

सिंधुप्रदेश दो भागोंमें विभक्त है,—(१) अंगरेजाधिकृत ५ जिला और (२) खैरपुर सामन्तराज्य। अंगरेजी अधिकारमें कराची नगरमें विचार-सदर स्थापित होने पर भी इस समय महासमृद्ध हैदराबाद नगरी यहांकी राजधानी थी।

सिंधुप्रदेशका प्रत्येक विभाग पलिमय है। यहांके भूपृष्ठका अन्वेषण करनेसे मालूम होता है, कि सिंधुनद अथवा उसकी कोई एक शाखा इस प्रदेशके किसी न किसी स्थानसे बहती थी। वर्त्तमान कालमें सिंधुनदकी गति बदल गई है। युगयुगान्तरमें भी यह नदी उसी तरह अस्थिर गतिसे बहती थी तथा उसीके फलसे नदीजलके साथ आये हुए बालू इधर उधर जमा हो गये हैं। भूतत्त्वकी आलोचनासे जाना गया है, कि एक समय हिमालयशैलके शिवालिक श्रृङ्ग पर्यन्त समुद्र विस्तृत था। पर्वतवक्षस्थल शम्बुककी अस्थि आदि ही उसका प्रमाण है। उस प्राचीन युगके बाद प्रकृतिके परिवर्त्तनसे जब शिवालिक पर्वत बहुत ऊंचा हो गया, तब समुद्रतट क्रमशः दक्षिणकी ओर हट गया। काश्मीरके पर्वत जिस समय आसमानसे बातें कर रहे थे, उसी समय पश्चाद् पर्वतपृष्ठसे प्रवाहित हो क्रमशः पञ्जाब और सिंधुकी निम्न समतल भूमिमें उतरा। हम लोग ऋग्वेदीय युगमें पञ्जाबप्रदेशमें प्रवाहित पञ्चनदका उल्लेख पाते हैं। आगे चल कर वे सब नदियां एक साथ मिल गईं और उनकी गतिके परिवर्त्तनसे समुद्रमुख पर डेल्टा बन गया। सिन्धु अपने साथ जो बालूका ढेर लाता है, वह निम्न प्रान्तमें वेगका ह्रास हो जानेसे नीचे बैठ जाता है, और उसे मन्द धारा बहा कर नहीं ले जा सकती। इस कारण चर आदिके पड़ जानेसे वह स्थान पार्श्ववर्त्ती देशभागकी अपेक्षा ऊंचा हो कर द्वीपके आकारमें खड़ा हो जाता है। पहाड़ी सोते नदीमें मिल कर यहां रुक जाते हैं और तब उसके दोनों पार्श्वमें बड़े वेगसे बहते हैं। इस कारण उन सब स्थानोंमें नदीके किनारे नहर काट कर खेतोंमें जल ले जानेकी बड़ी सुविधा होती है।

सिन्धुप्रदेशके मध्य खारथर पर्वत सबसे बड़ा और ऊंचा है। उसका कोई कोई स्थान समुद्रपृष्ठसे ७ हजार फुटसे भी ज्यादा ऊंचा है। यह पर्वतमाला उत्तर-दक्षिणमें विस्तृत है और १२० मील अंगरेजी राज्यकी सीमा तक चली गई है। २८° अक्षांशके बादसे यह पावशैल नामसे पुकारा जाता है तथा समुद्रकी ओर सङ्ग अन्तराय तक ६० मील विस्तृत है। यह ऊंचाईमें खारथर पर्वतमालासे बहुत कम है।

पाव शैलमालाके कन्दर और उपत्यकाओंसे एक मात्र हाव नदी बहती है। सिन्धु और उसकी अन्यान्य शाखाओंकी तरह इस नदीमें भी सभी समय जल रहता है। कराची जिलेके पश्चिम और हाव नदीके किनारे कोहिस्तानकी जङ्गलपूर्ण पार्वत्य अधित्यकाभूमि है। उत्तरमें खोरथर शैलश्रेणीसे पूरब सेहवान उपविभाग तक लक्षि नामक पर्वतमाला है। वह जो आग्नेय गिरिकी उद्गीरणराशिसे गठित है, वह प्रस्तरस्तरादिका पर्यवेक्षण करनेसे जाना जा सकता है और आज भी यहां

कई जगह उष्ण प्रस्रवण है और गंधककी गंध आती है।

तालपुर राज्यकी राजधानी हैदराबाद नगरके पास सिन्धु उपत्यकाके बीच गञ्जो नामक एक बड़ा पहाड़ है। वह १०० फुट ऊंचा और चूनपत्थरसे भरा पड़ा है। उस श्रेणीकी और एक पर्वतश्रेणी जयसलमेरसे उत्तर पश्चिम सिन्धुतट तक फैली हुई है तथा प्रायः १५० फुट ऊंची है। उस पर्वतके एक एक अंशमें रोहडो और सक्कर नगर तथा भक्कर-दुर्ग प्रतिष्ठित है।

सिन्धुप्रदेश मरुसदृश वालुकामय ऊसर भूमिसे परिपूर्ण होने पर पलिमय उर्वर मृत्तिकापूर्ण भूखण्डका अभाव नहीं है। शिकारपुर और लरखाना विभागके निकटवर्त्ती उत्तर दक्षिणमें १०० मील विस्तृत एक उर्वर द्वीप नजर आता है। उसकी एक ओर सिन्धुनद और दूसरी ओर पश्चिमनाडा नदी है। शिकारपुर नगरसे ३० मील पश्चिम पाट नामक ऊसर भूमि है। यह बोलन-पास नामक गिरिसङ्कटक पादमूल तक विस्तृत है। यह स्थान कीचड़से भरा हुआ है। बोलन, नाडी और कोरथर पर्वतके जलके साथ साथ यह कीचड आया है। इसके सिवा काफी जल नहीं मिलनेसे इस प्रदेशके और भी अनेक स्थान अनुर्वर हो गये हैं।

सिन्धुप्रदेश इस प्रकार विस्तीर्ण होने पर भी यहां वनमाला बहुत ही कम है। खैरपुर ले कर सारे सिन्धु विभागका अरण्य ६२५ वर्गमील होगा। उसका अधिकांश चेटकोसे दक्षिण मध्य डेल्टा तक विस्तृत है तथा गवर्मेण्टकी देखरेखमें ६० स्वतन्त्र वनविभागमें विभक्त है। १८६० ई०की बाढ़से घरेजाकी वनमाला बह गई। उसके दो वर्ष बाद सुन्दर बेलो और सांमितिया वन-विभाग क्रमशः नष्ट होता गया।

सिंधुके दक्षिण-पूर्वमें कच्छका रणप्रदेश है। वह प्रायः ६ हजार मील विस्तृत एक लवणमय ऊसर भूमि है। यहां किसी प्रकारका पेड़ नहीं लगता। सिंधुनदका कोरी मुहानास्थित लखपत बन्दर जूनसे नवम्बर तक समुद्रजलमें डुबा रहता है। इस कारण प्रति वर्ष उक्त समयमें कच्छके काठियावाडके अनेक स्थानोंमें नहर काट कर उसे खारे जलसे भर कर रखा जाता है। परवर्त्ती छः महीनोंमें वह जल बिलकुल सूख जाता और जमीन पर नमक पड जाता है। पहले यहां लवण तैयार होता था। अभी नहरके परिवर्त्तन होने अथवा मनुष्य द्वारा पुनः पुनः नहर-काटी जानेके बाद वह एक लंबा जलाशय हो गया है। रणप्रदेशमें उर्वरा खेत बहुत कम है। कोरी नदीका एक दूसरा नाम पुराण है।

यहांके पार्वत्य वनभागमें बाघ, हायना, गुर्खर (जंगली गदहा), लकडबग्घा, खरगोश, वनवराह और नाना जातिके हरिण देखनेमें आते हैं। सिन्धुनदीके डेल्टा-भागके वनप्रदेशमें हंस काण्डवादि नाना जातिके जलचर और स्थलचर पक्षी पाये जाते हैं। महिषकी संख्या भी यथेष्ट है, ये सब दल बांध कर विचरण करते हैं। भैंसका घी यहांका एक प्रधान पण्य है। यहांके घोड़े कदमें छोटे होने पर भी कष्टसहिष्णु और मजबूत होते हैं। उत्तर सिन्धुवासी बलुच जाति इन घोडोंका पालन करती है और उनके जिससे बछडे हों, उस ओर इन लोगोंका विशेष ध्यान रहता है। अंगरेज गवर्मेण्टने यह अच्छी तरह देखा है, विलायती घोड़े के साथ इस देशकी घोडीका संयोग करानेसे उत्तम घोड़ा पैदा होता है। ये सब घोडे साधारणतः घुड़सवार सेनादलमें व्यवहृत होते हैं।

महेञ्जो-दारो और हरप्पाके वर्णनानुसार हमें मालूम होता है, कि सिन्धुदेशमें आर्योंके आनेके पहले उनकी जैसी अवस्था थी, उनके यहां आनेके बाद भी ठीक वैसी ही थी। सिन्धुप्रदेशमें आर्यनिवास होनेके पहले जो यहां रहते थे, उनका दिन बड़े मजेमें कटता था। देश-की अवस्थाका परिवर्त्तन केवल युद्ध द्वारा ही हुआ करता है, किन्तु ऋग्वेदसे जो जाना जाता है, उसमें सिर्फ एक ही युद्ध उल्लेखयोग्य है। वह युद्ध दश राजाओंके साथ हुआ था। जो हो, अपनी अपनी अवस्थाकी उन्नति करने-का समय उन लोगोंने यथेष्ट पाया था।

आर्योंके आगमनके साथ विशेष अवस्थाका परिवर्त्तन नहीं होने पर भी दो विभिन्न जातियोंके इस प्रकार हठात् संघर्षसे कुछ कुछ परिवर्त्तन अवश्य देखा जाता है।

सिन्धुप्रदेशका कोई धारावाहिक इतिहास नहीं मिलता। सुप्राचीन ऋग्वेदसंहितासे हमें मालूम होता

है, कि उस पूर्वयुगमें सिन्धुनदके किनारे आर्य लोग रहते थे। ऋङ्मन्त्रमें ऋषियोंने सिन्धुके जलको परम पवित्र और देवाश्रित कह कर वर्णन किया है। इस नदीके किनारे आर्य लोग यागयज्ञ करते थे। सिंधुनद तटसमाश्रित यही देश सिंधु प्रदेश कहलाता है। प्राचीन वैदिक युगमें हम आर्यनिवासभूत त्रिसप्तसिंधु प्रवाहित देशका उल्लेख पाते हैं। यह सप्तनदप्रदेश नामसे प्रसिद्ध और तीन भागोंमें विभक्त था। प्रत्येक विभागमें सात सात नदी बहती थीं। इक्कीस नदी प्रवाहित देशके मध्य वर्त्तमान सिंधुनद ही राजाकी तरह विद्यमान है। शाखा नदियां उसकी शिशुके समान हैं।

उक्त सिंधुनदके पूरब जो सप्तनदप्रदेश था, वही इन लोगोंका वर्त्तमान सिंधु और पञ्जाब प्रदेश है तथा सिंधु नदके पश्चिम जो आर्यावर्त्तके अन्तर्गत सप्तनदप्रदेश था, वह अभी आर्यावर्त्तके बाहर है और वहां मुसलमानोंका वास हो गया है। इस द्वितीय सप्तनद विभागमें तृष्टामा, सुसर्त्तु, रसा, श्वेती, कुभा, क्रमु और गोमती यही सात नदियां बहती हैं और ये सभी सिंधुनदमें गिरती हैं। उक्त सप्तक नदीके मध्य सुसर्त्तु नदी सुवास्तु या स्वात, श्वेती देरा इस्माइल खां-प्रदेशतलवाहिनी अर्जुनी, कुभा काबुल, क्रमु कुरम और गोमती गोमाल नामसे मशहूर है। अतएव यह सप्तनद प्रदेश पश्चिमोत्तर भारतके पुराने आर्यावर्त्तांशका पश्चिमी सप्तनदप्रदेश है। यह बलुचिस्तान, अफगानिस्तान और बन्नू आदि प्रदेशोंको ले कर संगठित है। इस सिंधुनदके पश्चिम उत्तर बहुत दूरमें और भी एक नदीसप्तक-प्रवाहित प्रदेशका उल्लेख मिलता है। उनमेंसे ऊर्णावती कैलास शिरस्थ ऊर्णा प्रदेशमें; हिरण्मयी, वाजिनीवती और सीलमावती नामकी तीन नदी और भी उत्तरमें तथा पर्णी नदी निम्न बलुचिस्तानमें बहती हैं। चित्रा चित्रलसे निकल कुभामें मिलती है। ऋनीती नामकी दूसरी नदी उसीके पासमें बहती थी, ऐसा मालूम होता है।

यह त्रिसप्त नदी प्रवाहित देश एक समय पश्चिममें पारस्य और एशिया-माइनर सीमासे पूर्वमें यमुना और गंगातीर तथा उत्तरमें उत्तरकुरुसे दक्षिणमें समुद्रतट तक विस्तृत था। आर्य लोगोंकी इस विस्तृत निवासभूमिके मध्य सिंधुनद ही सर्वप्रधान था तथा आर्य लोग इस नदीका विषय अच्छी तरह जानते थे। अतएव आगे चल कर त्रिसप्त नदीप्रवाहित सिंधुसेवित यह आर्यावास सप्तसिंधु* नामसे प्रसिद्ध हुआ। मुसलमान ऐतिहासिकोंने उस सप्तसिंधुको 'हप्त हिन्दु' शब्दसे उल्लेख किया है। मुसलमान जातिके साथ साथ पश्चिम और उत्तरका सप्तनद प्रदेश प्राचीन नाम खो कर मुसलमानोंके नामसे ही पुकारा जाता है।

वेद शब्दमें आर्यावास देखो।

पूर्व सप्तनदके अन्तर्गत वर्त्तमान सिन्धु प्रदेश भी पञ्चनद प्रदेशरूपमें प्रसिद्ध था। वह भारतके अन्तर्भुक्त और आर्यनिवासरूपमें गिना जाता था। आर्य-उपनिवेश स्थापनके साथ यहां आर्यराजवंशकी भी प्रतिष्ठा हुई। ऋग्वेदके १।१२६ सूक्तमें सिन्धुनिवासी राजा भावयव्यका उल्लेख है। वे हिंसारहित, कीर्त्तिमान् और समस्त सोमयागके अनुष्ठानकारी थे। अथर्ववेदके १४।१।४३ मन्त्रमें सिन्धुसाम्राज्यकी प्रतिष्ठाका परिचय मिलता है। भारत-भीष्म पर्वमें (६।०।४०) सिन्धुदेश और अधिवासियोंकी बात है। वहांके राजा जो प्रथितनामा थे, वह वनपर्व और भागवत (५।१२।६)-को उक्तिसे ही जाना जाता है। पौराणिक युगमें यह प्राचीन अवन्तिके अन्तर्भुक्त था। राजकवि कह्लण और महाकवि कालिदासने सिन्धुदेशवासी राजा और वहांके योद्धा अधिवासियोंका गौरव कीर्त्तन किया है।

माकिदनवीर अलेकसन्दरके सिन्धुविजयप्रसङ्गमें सिन्धुप्रदेशका कुछ परिचय मिलता है। ग्रीक-ऐतिहासिकके वर्णनसे हमें मालूम होता है, कि ३२५ ई०-सन्के पहले अलेकसन्दर दलबलके साथ आ कर अपने सेनापति पार्दिकससे मिला था।

अलेकसन्दर शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

---

* वेदमें सिन्धु शब्द नदीवाचक है। सप्तनद पीछे सप्तसिंधु हुआ होगा। ऋग्वेदके १।१२२।६, ४।५४।६, ४।४५।३, ५।५३।६, ७।५।१, ८।१२।३, ८।२५।१४, ८।२०।२५, ८।२६।१८, १०।६४।८ और १०।७२।१ मन्त्रमें सिन्धुनदका उल्लेख है।

अलेकसन्दरने समुद्रपथसे पारस्य जाते समय अरबियो (वर्त्तमान नाम पुराली) नदी पार कर ओरिटैलुशबेजा नामकी जातियोंको परास्त किया। वन्य ओरिटे लोगोंने यहां मिस्रके भावी राजा टलेमीको विषाक्त वाणसे विद्ध कर दिया था। दियोदोरस सिकुलसका कहना है, कि यह घटना सिन्धुप्रदेशके हार्मोटेलिया नामक स्थानमें घटी। इसके बाद ग्रीक नौवाहिनी कराचीके निकटवर्त्ती किसी स्थानमें पहुंची। यह स्थान अलेकसन्दरका 'हामेल' बन्दर कहलाता है। यहां उक्त नौवाहिनी २४ दिन तक अवरुद्ध थी।

१६० ई०सन्‌के पहले यहां जो ग्रीकशासन प्रतिष्ठित था, वह यवनराज प्रथम आगोलेदोतसकी प्रचलित मुद्रासे जाना जाता है। शकराज तोरमानपुत्र मिहिरकुल सिन्धु जीतनेको आये थे। मुजमलुल् तवारिख नामक मुसलमानी इतिहासमें उक्त विवरण लिपिबद्ध है। राजतरङ्गिणीमें उक्त घटना सिंहलविजय कह कर लिखी गई है।

स्थाण्वीश्वर पति आदित्यवर्द्धनके पुत्र प्रभाकरवर्द्धनने करीब ५८५ ई०में सिंधुपतिको परास्त किया था।

सिन्धुप्रदेशका हिन्दू राजवंश

१ राय दीवाइज ४९५ ई०, ये शाकलाधीश्वर शककुलतिलक तोरमाणके समसामयिक थे।

२ राय सिंहरस -१लेके पुत्र

३ राय साहसी—२रेके पुत्र

४ राय सिंहरस २य—३रेके पुत्र, ये सम्भवतः पारस्यपति खश्रु नौसिर्वान (५३१ ५७५ ई०)के हाथसे परास्त और निहत हुए।

५ राय साहसी २य—ये ६३१ ई०में सीलाइज नामक ब्राह्मणके पुत्र चाच द्वारा राज्यभ्रष्ट हुए।

ब्राह्मण-राजवंश

६ चाच—६३ ई०, ये अपने प्रभु राय २य साहसीके राजपुराध्यक्ष थे। सिंहासनाधिकारके कुछ समय बाद ही इन्होंने चित्तौर अथवा जयपुरके राणा महरतको युद्धमें मार डाला। ६३५ ई०में कीरमान राज्य जीत कर इन्होंने वहां तक सिंधुराज्यकी सीमा बढ़ाई थी। परवर्त्ती वर्षमें मुचीराइने देवल पर आक्रमण किया। चाचने ४० वर्ष राज्य किया।

७ चन्द्र—ये चाचके भाई थे। ८० वर्ष तक इन्होंने राज्यशासन किया।

८ डाहिर—६ठेके पुत्र। ये ७१३ ई०में महम्मद कासिम द्वारा परास्त हुए।

खलीफाओंके अधिकारमें यहां जो सब मुसलमान शासनकर्त्ता नियुक्त हुए थे, उनके नाम मालूम नहीं। ८३१ ई०में खलीफा मुतामिदने सिन्धुप्रदेशके शासनकर्त्तृपद पर याकुब इबम् लाइस शफारीको नियुक्त किया। इन्होंने अपने बाहुबलसे बुस्त, जाबुलिस्तान, जमीन-इ-दावर, गजनी, तुखारिस्तान, बालख, काबुल, हीरट, वदघाई, बुषञ्ज, जाम, वाथरुज, सिजिस्तान आदि देश जीते थे। पश्चिम एशियाखण्डके ये राज्य जीतने के अभिप्रायसे और वहां शासन-शृङ्खला स्थापन करनेमें उन्हें तनमनसे व्यापृत रहना पड़ा था। अतएव सिंधुप्रदेशके ऊपर लक्ष्य रखनेमें उन्हें अवकाश नहीं मिलता। इसी समयसे यहां विशृङ्खला उपस्थित हुई। ८७६ ई०में याकुब इराक जीत कर जब लौटे थे, तब राहमें ही उनका प्राणान्त हुआ। इसके बाद उनके भाई उमरू मुवफिककरके लड़के खलीफा मुतािजद द्वारा खुरासान, फार्स, इसपाहन सिजिस्तान, कीरमान और सिन्धुप्रदेशके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए थे। इस समय मनसूरने भी मूलतानमें स्वाधीन हिन्दूराज्य स्थापन किया।

सुमरा वंश

गजनीपति महमूदके सिन्धुविजयके कुछ बाद मूलतानके शासनकर्त्ता इबनसुमराने १०५३ ई०में सिन्धुराज्य शासनका भार ग्रहण किया। इन्होंने गजनीपतिको अपना अधीश्वर मान लिया था। ऐतिहासिक मीरमासूमने लिखा है, कि सिन्धुवासियोंने गजनीपतिके अधीनस्थ-शासनकर्त्ता अबदुल रसीदके कठोर शासनसे उत्पीड़ित हो उनकी अधीनतामें रहना नहीं चाहा और सुमराको अपना राजा माना। पीछे सुमरावंशधरोंने अपने भुजबलसे सम्पूर्ण स्वाधीनताका उपभोग किया था।

सुमरावंशके २० पीढ़ी राज्य करनेके बाद १३वीं सदीके अन्त और १४वीं सदीके प्रारम्भमें सम्माजातिने

सिन्धुका सिंहासन अधिकार किया। इस वंशकी १८वीं पीढ़ीमें नन्द बोरल जाम निजाम उद्दीनने १४६१ ई० तक राज्य किया। सम्माराण यादववंशीय राजपूत थे। १३९१ ई०के पहले इसलाम धर्ममें दीक्षित हुए। नन्दके पुत्र जाम फिरोज १५२० ई०में शाहबेग अर्घुनसे परास्त हुए। इस प्रकार उनके हाथसे राज्य सदाके लिये जाता रहा। अर्घुनवंश अपनेको जङ्गिस खाँके वंशधर बतलाते थे। शाहबेगके पुत्र शाह हुसैनकी १५५४ ई०में निःसन्तानावस्थामें मृत्यु हुई। इसके बाद तर्खानवंशने १५९० ई० तक राज्यशासन किया। इसी साल मुगल-सम्राट् अकबरशाहने ठट्टके शासनकर्त्ता मिर्जा जानि बेगको परास्त कर सिन्धुराज्य दिल्लीके मुसलमान-साम्राज्यमें मिला लिया था। मुगलशासनका संक्षिप्त इतिहास सिकारपुर शब्दमें लिखा जा चुका है।

सिकारपुर देखो।

१७वीं सदीके शेष भागमें निम्न सिंधु-उपत्यका प्रदेशमें कलहोरावंशका अभ्युदय हुआ। ये लोग इस्लामधर्मावलम्बी थे और अब्बास-निवासी महम्मद (१२०४ ई०) से अपने वंशकी उत्पत्ति बतलाते थे। बहुतोंका कहना है, कि पैगम्बर महम्मदके चचा अब्बास-से इस कलहोरावंशकी उत्पत्ति हुई है।

सिंधुप्रदेशके चाण्डका नगरमें एक फकीर सम्प्रदाय रहता था। उस सम्प्रदायके गुरु आदमशाह धर्मात्मा समझे जाते थे। बहुतेरे उनके साधु चरित्र पर मुग्ध हो उनके शिष्य बन गये। १५५० ई०में ही इस सम्प्रदाय-की प्रतिपत्तिका परिचय पाया जाता है।

आदम शाहके शिष्य फकीरोंने पूर्वापर प्रायः एक सदी तक मुगल शासनकर्त्ताओंके साथ युद्ध किया। आखिर १६५८ ई०में नासिर महम्मद कलहोराके अधीन हो सबोंने सम्राट् सैन्यके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। उन मुसलमानोंने उनके अधीन रह कर एक स्वतंत्र शासन-केन्द्र संगठन किया था।

१७०१ ई०में यार महम्मद कलहोराने सिराई या तालपुरवासी जातिविशेषके साथ मिल कर शिकारपुर पर आक्रमण किया और उस नगरमें राजधानी बसाई। इसके बाद इन्होंने मुगलसम्राट् औरङ्गजेबसे खुदा यार खाँकी उपाधि और देराजात प्रदेश जागीरस्वरूप पाया था। १७११ ई०में यार महम्मदने कच्छियारो और लरखाना शहरके आस पासके स्थानोंको जीता।

१७१९ ई०में यार महम्मद कलहोराकी मृत्यु हुई। उनके लड़के नूर महम्मदशाह पितृराज्य पर अभिषिक्त हुए। सिंहासन पर बैठनेके कुछ समय बाद ही उन्होंने दाउदके पुत्रोंका अधिकृत नहर उपविभाग छीन लिया। थोड़े दिनोंमें सेहवान् और उसके अधीनस्थ देशभाग उनके हाथ आये। इस समय उनकी राज्यसीमा मूलतानसे ले कर ठट्टप्रदेश तक फैल गया था। केवल भक्कर-दुर्ग उस समय उनके हाथ नहीं लगा था। १७३६ ई०में वह दुर्ग कलहोरावंशके दखलमें आ गया।

एकमात्र भक्कर दुर्गको छोड़ राजपूतानेके मरुप्रदेश-से ले कर बलुचिस्तानके पार्वत्य प्रदेश पर्यन्त सभी देशभाग नूर महम्मदके शासनाधीन हो गये थे। उनके राज्यकालमें सिंधुप्रदेशके अन्तिम मुसलमान राजवंशके आदिपुरुष तालपुरवासी बलुच जातिके मीर बहरामने अच्छा नाम कमाया था। ये कलहोराराज नूर महम्मदके प्रधान सेनानायक थे। रणक्षेत्रमें वीरता दिखा कर इन्होंने विशेष यश लाभ किया था।

१७३९ ई०में पारस्यपति नादिर शाहने भारत-राजधानी दिल्ली महानगरीको लूट कर मुगलसाम्राज्यको झर्रा दिया था। सिन्धुनदके जो सब पश्चिम प्रदेश अकबर शाहके समयसे मुगलसाम्राज्यभुक्त हुए थे, इतने दिनोंके बाद नादिर शाहने उन्हें पारस्य राज्यमें मिला लिया। युद्धके क्षतिपूरणस्वरूप ठट्टा और सिकारपुर प्रदेश नादिर शाहको मिला था।

नादिर शाहकी मृत्युके बाद १७४८ ई०में सिन्धु-प्रदेश अहमदशाह दुर्रानीके दखलमें आया। दुर्रानी सरदारने नूर महम्मदको शाह नवाज खाँकी उपाधि दी थी। १७५४ ई०में राजस्व बाकी पड़ जानेसे अहमद शाहने दल-बलके साथ सिन्धुकी ओर यात्रा कर दी। उसके आनेका समाचार पा कर नूर महम्मद जयसलमीरकी ओर भाग गये और वहीं उनकी मृत्यु हुई। उनके लड़के महम्मद मुराद याब खाँ इस समय कन्धारपतिकी कृपासे राज सिंहासनके उत्तराधिकारी हुए। इन्होंने मुरादाबाद नगर बसाया था।

१७५७ ई०में सिन्धुवासी मुरादके कठोर शासनसे उत्पीड़ित हो उनके विरुद्ध खड़े हो गये। उन लोगोंने राजाको राज्यच्युत कर उनके भाई गुलाम शाहको सिंहासन पर अभिषिक्त किया। प्रायः दो वर्ष अन्तर्विप्लवसे राज्यमें अशान्ति फैली रही। पीछे नये राजाने समस्त विघ्नबाधाको दूर कर अपना राजपद निष्कण्टक कर लिया था। १७६२ ई०में गुलाम शाहने कच्छ पर आक्रमण किया। झूरा नामक स्थानमें दोनों पक्षमें मुठभेड़ हुई। दूसरे वर्ष गुलाम शाहने पुनः अदम्य उत्साहसे कच्छकी ओर कदम बढ़ाया और सिन्धुनारस्थ बास्ता और लखपत बन्दरको अधिकार किया। इसके बाद उन्होंने १६६८ ई०में प्राचीन नेरणकोट (नारायणकोट) नगरके ऊपर हैदराबाद नगर स्थापन किया था। १७७२ ई०में उनकी मृत्यु पर्यन्त यहां राजधानी स्थापित रही। १७७४ ई०में बलूचियोंने राजाको तख्त परसे उतार दिया और पीछे प्रायः दो वर्ष तक सिन्धुराज्यमें अराजकता फैली रही।

१७७७ ई०में गुलाम शाहके भाई गुलाम नबि खाँ सिंहासन पर बैठे। इस समय तालपुरके सरदार मीर बिजर बागी हो गये। दोनों पक्षमें गहरी मुठभेड़ हुई। कलहोरा राज मारे गये। पीछे उनके भाई अबदुल नबि खाँने सिंहासन पर अधिकार जमाया। इसके बाद गृहशत्रु कहीं उनके विरुद्ध खड़े न हो जाय, इस भयसे तथा अपने राजासनको अटल रखनेके अभिप्रायसे वे सिंहासन पर बैठते ही अपने आत्मीय स्वजनोंको यमपुर भेजने लगे। अनन्तर उन्होंने तालपुरके सरदार मीर बिजरको अपना मन्त्री बना संतुष्ट किया था।

१७८१ ई०में कन्धहारराजने बहुत दिनोंका बाकी खजाना उगा नेके लिये अफगानी सेनाका एक दल सिन्धुदेश भेजा। जब वे लोग सिन्धुके पास पहुंचे, तब मीर बिजरने ससैन्य जा कर सिकारपुरमें उन लोगोंको हराया। मीर बिजरका अमितविक्रम और अद्भुत रणपाण्डित्य देख कर सिन्धुपति दंग रह गये। मीर जब तक जीवित रहेंगे, तब तक उनका राज्य निष्कण्टक होनेको नहीं, यह सोच कर उन्होंने छिपके उनका काम तमाम किया। यह निदारुण संवाद बिजरपुत्र अबदुल्ला खाँके पास तालपुर पहुंचा। राजाकी ओरसे उनकी श्रद्धा बिलकुल जाती रही। पितृशोक पर अत्यन्त पीड़ित हो वे प्रकाश्यभावमें ही उस कपटाचारी राजाको दण्ड देनेके लिये तुल गये। उनके अधीनस्थ सेनादलने एक दिन राजा पर अकस्मात् आक्रमण कर दिया। राजा वीरपुत्र अबदुल्लाके वीरत्वसे अच्छी तरह जानकार थे। अतः क्रुद्ध मन्त्रि-पुत्रके साथ युद्धमें अकेला खड़ा होना अच्छा न समझ वे खिलात नगरमें भाग गये। यहांसे उन्होंने अपना राज्य पुनरुद्धार करनेकी कोशिश की, किन्तु दुःखका विषय है, कि कई बार विशेष उद्यमसे अग्रसर हो कर भी वे व्यर्थमनोरथ हुए। आखिर कन्दहार-राजकी सहायतासे अन्तिम कलहोरापति अबदुल नबि खाराज्यमें पुनः प्रतिष्ठित हुए थे।

कन्दहार-पतिकी कृपासे अबदुल नबि सिंहासन पर बैठे सही, पर उन्हें ऐसा मालूम पड़ने लगा, मानो चारों ओरसे अविश्वासरूपी छुरी उनके शरीरमें चुभ रही हो। उन्हें जरा भी सुखशान्ति नहीं मिलती थी। इस प्रकार नाना प्रकारकी दुश्चिन्तासे विचलित हो उन्होंने पूर्वोक्त अबदुल्ला खाँको ही विद्रोहीका दलपति ठहराया। अनन्तर शीघ्र ही तालपुर वंशधर अबदुल्लाके विरुद्ध गुप्त-हत्याकारी नियुक्त हुए। देखते देखते चन्द दिनोंके भीतर ही अबदुल्ला उन गुप्त हत्याकारीके शिकार बने।

अबदुल्ला खाँकी मृत्युसे उत्कण्ठित हो उनके परम आत्मीय मीर फते अलीने इसका बदला चुकानेके लिये राजा पर चढ़ाई कर दी। उनके प्रचण्ड विक्रमसे भयभीत हो राजा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। मीर फते अलीने पीछे उन्हें पकड़ कर राज्यसे निकाल बाहर किया। कलहोराराजने सिंहासन पानेकी पुनः चेष्टा की थी सही, पर मीर फते अलीसे फिर हार खा कर वे जोधपुर राज्य भाग गये। उनके वंशधर आज भी जोधपुरमें उच्च सम्मानसे भूषित हैं। अबदुल नबिसे ही सिन्धुप्रदेशमें कलहोरा शासन विलुप्त हुआ।

१७८३ ई०में मीर फते अली सिंधुप्रदेशके राय या राजारूपमें प्रतिष्ठित हुए। वे ही तालपुर वंशके प्रथम राजा थे। कंधहार-राज जमान शाहसे वे जो फरमान

लाये थे, उसमें राजाने तालपुरके मीरवंशको ही सिंधुका शासनकर्त्ता माना था।

तालपुर मीरोंके जमानेमें सिंधुप्रदेश विभिन्न खण्डोंमें विभक्त हो गया। वे लोग अपने अपने देशमें स्वतन्त्र और स्वाधीनभावसे राज्यशासन करते थे, फिर भी मूलतः एक वंशमें उत्पन्न होनेके कारण 'तालपुर मीर' कह कर इतिहासमें प्रसिद्ध थे। फते अली खांके भतीजे मीर सोहराब खांने अपने अनुचरोंको साथ ले रोहड़ी नगरमें राजपाट बसाया। फिर उन्हींके पुत्र मीर थारो खां दलबलके साथ जा कर शाहबन्दरमें बस गये। उन्होंने भी मीर सोहराबकी तरह हैदराबादके मूलवंशको अधीनता उच्छेद कर शाहबन्दरके आस पासके देशोंमें अपना शासन फैलाया था।

इस प्रकार सिंधुप्रदेशमें तीन तालपुरवंशकी प्रतिष्ठा हुई। हैदराबाद या शाहदादपुरवंशी मध्य सिंधुप्रदेशके राज्येश्वर थे। मीर थारोके वंशधर मीरपुरमें रह कर राजकार्य चलाते थे। मीरपुर या मणिकानिवंश नामसे इनकी प्रसिद्धि थी। मीर सोहराबके वंशधर मेहरावाणी कहलाते थे। खैरपुरमें इनकी राजधानी थी।

१८०१ ई०में हैदराबाद मीर वंशके प्रतिष्ठापक फते अलीकी मृत्यु हुई। मरते समय उन्हें शोभदार नामक एक पुत्र था। किन्तु पुत्रके हाथ राज्यभार न सौंप कर वे अपने तीन भाइयोंको ही राज्यके उत्तराधिकारी बना गये। उन तीनोंमें गुलाम अली बड़े थे। उन्होंने १८११ ई० तक राज्य किया था। उसी साल उनके मरने पर उनके लड़के मीर महम्मद राजसिंहासन पर बैठे। उनके छोटे भाई करम अली और मुराद अली हैदराबादके मीरवंशके नायक हुए। १८२८ ई०में करम अलीकी मृत्यु हुई। वे अपुत्रक थे, किंतु मुराद अली नूरमहम्मद और नासिर खां नामक दो पुत्र छोड़ गये। १८४० ई० तक नूरमहम्मद और नासिर खां अपने चचेरे भाई शोभदार और महम्मदके साथ मिल कर निर्विरोध राजकार्यकी पर्यालोचना करते थे। १८४१ ई०में मीर नूर महम्मदकी मृत्यु हुई। उनके शाहदाद और हुसेन अली नामक दो पुत्र थे। पिताकी मृत्युके बाद दोनों पुत्र तालपुर-राज्यके अधिकारी हुए। वे अपने चाचा नासिर खाके साथ राजकार्य चलाते थे।

तालपुर मीरोंके शासनकालमें हैदराबाद नगरी और उसके उपकण्ठस्थ खुदाबाद नगरने अपूर्व शोभा धारण किया था। उक्त मीरोंके वासभवन और उनके समाधिमन्दिर देखने लायक है। वे सब सुंदर सुंदर अट्टालिकाएं रमणीय समृद्धिको गौरववर्द्धक हैं, इसमें सन्देह नहीं।

१७५८ ई०में अङ्गरेजोंके साथ सिंधुवासियोंका प्रथम संस्रव हुआ। १७७५ ई०में राजाकी आज्ञासे अंगरेज कम्पनी ठट्टकी कोठी उठा देनेको बाध्य हुई। १८०९ ई०में कम्पनीके कर्माध्यक्षोंने मीरोंके साथ एक बन्दोबस्त किया, इसमें फरासियोंको सिन्धुप्रदेशमें स्थान न देंगे, यही मीरोंने स्वीकार किया।

१८२५ ई०में सिन्धुवासी असभ्य खोसाजातिने कच्छप्रदेशमें लूटपाट आरम्भ कर दिया। उनका दमन करनेके लिये सेना भेजनेकी आवश्यकता हुई। तदनुसार १८३० ई०में अंगरेज सेनापति लेफ्टनाण्ट (पीछे सार अलेकसन्दर) बार्निस सदलबल भेजे गये। मीरोंने पहले उन्हें छल बल दिखा कर आगे न बढ़ने दिया। आखिर किसी कारणसे बाध्य हो मीरोंने उन्हें सिन्धुनद पार कर उत्तरकी ओर जानेका हुकुम दे दिया। अंगरेज-सेनापति उस समय पञ्जाबकेशरी रणजित् सिंहको देनेके लिये इङ्गलैण्डके राजाके यहांसे भेजे हुए कुछ उपहार साथ ले गये थे। उस समय सिन्धुतीरवर्त्ती देश लोगोंको मालूम नहीं था। प्रतिष्ठा-काङ्क्षी अंगरेज सिन्धुप्रदेशके तत्त्वानुसन्धानोद्देशसे इस नौ-यात्रामें विशेष उद्योगी हुए थे। इसीके दो वर्ष बाद कर्नल पटिञ्जर वाणिज्य फैलानेके उद्देशसे मीरोंके साथ एकता और सन्धिस्थापन करनेमें समर्थ हुए। उस संधिपत्र पर लिखा गया, कि अंगरेज-वणिक् पण्य संग्रह कर सिन्धुप्रदेशकी नदीमाला और पथघाटसे स्वेच्छासे आ जा सकते हैं, परन्तु वे लोग सिन्धुमें कहीं भी वास नहीं कर सकते।

१८३८ ई०में प्रथम अफगान युद्ध आरम्भ हुआ। उस समय सिन्धुनदसे सेना भेजनेमें हर बातमें सुविधा होगी, यह सोच विचार कर अङ्गरेजोंने सिन्धुनदके ऊपरसे

सैन्य परिचालना की। उसी सालके दिसम्बर मासमें सर जान कीनके अधीन अंगरेजी-सेना सिंधुप्रदेशमें जा धमकी, किंतु वे उस सेनावाहिनीको ले कर उत्तरकी ओर अग्रसर होनेमें आसक्त हुए। क्योंकि मीर लोग रसद और बैलगाडी आदिके संग्रहमें बाधा देते थे। इस प्रकार कष्टसे पीडित फौज बड़े ही विरक्त हो गये। आखिर जब उन्होंने हैदराबाद पर छापा मारनेका भय दिखलाया, तब मीर लोग उन्हें पथ छोड देनेके लिये प्रस्तुत हुए। मीरोंका हृदय वैरभावसे भरा हुआ जान कर अंगरेजोंने १८३६ ई०में बम्बईसे सिन्धुप्रदेशमें एक दल सेना रखनेकी व्यवस्था की।

१८३६ ई०में हैदराबादके प्रधान मीरवंश अंगरेजोंके साथ संधि करनेको बाध्य हुए। उस संधिकी शर्त्तसे उन्होंने अफगानराज शाहसुजाको बाकी खजाना कुल २३ लाख रुपया दे कर छुटकारा पाया। इसके सिवा सिंधुप्रदेशमें ५ हजार अंगरेजी सेना रखनेका अधिकार दिया गया। उस सेनाके रखनेमें जो खर्च होगा उसका कुछ अंश मीरगण वहन करनेको राजी हुए। उसके साथ सिंधुनदगामी पण्यद्रव्यवाही नौकाओं पर जो 'टोले या शुल्क लगता था, वह बंद कर दिया गया। खैरपुरके मीर अंगरेजोंके साथ इस प्रकार संधिशर्त्त पर आवद्ध तो हुए, परन्तु उन लोगोंने सेनादलका खर्च देना न चाहा। अंगरेजोंने उस संधिके अंतमें भक्कर दुर्गको अधिकार कर लिया।

अंगरेजप्रतिनिधि साम्यविधानसे राजकार्यका परिदर्शन करने लगे। उन लोगोंके सौजन्यसे देशवासी जनसाधारण और मीरगण एकदम मुग्ध हो गये। देशमें शीघ्र ही शांति विराजने लगी। उसीके फलसे सिंधुनदमें स्टीम फ्लोटिला बे-रोक टोक चलाने लगा।

१८४१ ई०में मीर नूर महम्मदकी मृत्यु हुई। उनके दोनों पुत्रोंने तालपुरराज्यका शासनभार ग्रहण किया। १८४२ ई०में सर चार्ल्स नेपियर दक्षिण सिंधुप्रदेशका कर्तृत्वभार ग्रहण कर सिंधुप्रदेशमें आये। मीर लोग जो राजकर नहीं देते थे, इसके लिये उन्होंने कहला भेजा, कि वे लोग कराची, ठट्ठ, सक्कर, भक्कर और रोहडी नगर छोड दें। मीरोंने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बिना युद्धके मीर लोग अंगरेजोंका प्रस्ताव स्वीकार करनेको नहीं, सोच कर नेपियर युद्धका आयोजन करने लगे। विषम गोलमाल देख कर मीरोंने १८४३ ई०के फरवरी मासमें संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिया।

सिंधुराजके बलूच सेनादल इस प्रकार अंगरेजोंके हाथ स्वाधीनता अर्पण कर संतुष्ट नहीं रह सके और उन्होंने रेसिडेन्सी पर चढाई कर दी। मेजर आउटरम रेसिडेंसीकी रक्षा करते थे, किन्तु उनके पास अधिक फौज न रहनेके कारण वे नदीके स्टीमर द्वारा नेपियरसे जा मिले। १७वीं फरवरीको नेपियरने दलबलके साथ आ कर भिआनीके पास लेलाफुलदीके किनारे बलूचियोंको परास्त किया। हैदराबाद और खैरपुरके मीरोंके आत्मसमर्पण करने पर भी वे कैद कर लिये गये थे।

पराजित मीरगण अंगरेजकम्पनीके परामर्शसे बम्बई, पूना और कलकत्ते नजरबन्दीरूपमें भेजे गये। १८५४ ई०में लार्ड डलहौसीने निरोह मीरोंको सिन्धुप्रदेश लौट कर हैदराबादमें रहनेका अधिकार दिया था।

सिंधुराज्य अंगरेजोंके दखलमें आनेके बाद नेपियर यहांके प्रथम गवर्नर हुए। उनके समयमें जागीरको छोड मीरोंने पौने चार लाख रुपयेकी निर्द्धारित वृत्ति पाई थी। १८५१से १८५६ ई०में स्थानीय कमिश्नर सर बार्टल फ्रेरीके यत्नसे यहां रेलगाडी दौडाई गई, बंदरादि खोले गये तथा और भी कितने हितजनक काम हुए। खैरपुर, मीरपुर, हैदराबाद, तालपुर आदि शब्द देखो।

सिन्धीजाति यहांकी आदिम अधिवासी है। ओम्मायिद खलीफा वंशके अधिकारमें ये लोग महम्मदीय धर्ममें दीक्षित हुए। ये लोग सुन्नी सम्प्रदायके हैं और शराब खूब पीते हैं। इन लोगोंमें प्रायः ३०० स्वतंत्र दल या वंश हैं, किंतु जातिविचार नहीं है। इन लोगोंकी भाषा इस देशकी है, संस्कृत मूलक है। हिंदू, मराठी, बङ्गभाषा और प्राचीन प्राकृतके साथ इसका मेल खाता है। उत्तर और दक्षिण सिंधु तथा थरप्रदेशको सिंधी भाषामें बहुत थोडा अंतर है। अरबी भाषासे अनूदित कुछ धर्मग्रंथ और जातीय सङ्गीत इनके साहित्यको पुष्ट करता है।

वैदेशिकके मध्य सैयद, अफगान, बलूच और काफ्री आदि जातियां यहां आ कर बस गई हैं। अफ्रिकाके जंजिबार और अबिसिनियावासी कुछ क्रीतदास मुसलमान-वणिकों द्वारा यहां लाये गये हैं। अंगरेजी अमलमें वे लोग स्वाधीनभावसे विवाहादि कर सकते हैं, फिर भी अपने पूर्व प्रभुवंशके प्रति इनकी विशेष अनुरक्ति है। यहांके ब्राह्मण दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं। मुसलमान और अंगरेजी अमलमें किरानी वृत्तिजीवी ब्राह्मण आमिल नामक एक स्वतंत्र दलमें मिल गये हैं। ये लोग ब्राह्मण होने पर भी मुसलमानोंका अनुकरण करते हैं।

कराची—यहांका प्रधान बंदर और अंगरेजोंकी राजधानी है। वृटिश सरकारने बहुत रुपये खर्च कर यहांका बंदर-विभाग संगठन किया है। सिकारपुर—बोलनपास नामक घाटीसे खुरासानमें वाणिज्य चलानेका पण्यभाण्डार है। हैदराबाद—तालपुर-राजाओंकी राजधानी है। इसके सिवा यहां और भी कितने नगर हैं जिनकी प्राचीन कीर्त्तिमाला प्रत्नतत्त्वविदोंके आदरकी सामग्री है।—अलोर या अरोर नगर—प्राचीन हिंदू राजवंशकी राजधानी, ब्राह्मणाबाद एक प्राचीन नगर है और शाहदादपुरके निकट अवस्थित है। यहां एक विस्तृत इष्टक स्तूप देखा जाता है। वह बहुत पुराना शहर है। भक्कर—सिंधुनदके मध्यस्थित एक द्वीपके ऊपर स्थापित नगर और दुर्ग। खैरपुर—इसी नामके राज्यकी राजधानी। कोटरी—हैदराबादके दूसरे पारमें अवस्थित है। यहां इण्डस-भेली रेलपथका स्टेशन है। लरकाना—यहां नाना प्रकारके देशी द्रव्य तैयार होनेका कारखाना है। रोहड़ी, सेहवान, शाहबंदर, सक्खर, ठट्ठ, याकोबाबाद, कुरसार, मटली-मसिन और मटोरी यहांके दूसरे प्रदेशके नगर हैं।

मुसलमानी अमलमें यहां सिया और सुन्नीमत प्रवर्त्तित हुआ। उनके पहले जो यहां हिंदूधर्मका प्रचार था, वह इतिहासकी आलोचना करनेसे हो जाना जाता है।

विद्याशिक्षामें यह प्रदेश बहुत पीछे पड़ा हुआ है। अभी कुल मिला कर ३०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा बहुतसे अस्पताल और चिकित्सालय भी हैं।

सिन्धुप्रसूत (सं॰ क्ली॰) सैंधव लवण, सेंधा नमक।

सिन्धुमथ्य (सं॰ त्रि॰) सिंधुमथनजात अमृत।

सिन्धुमन्थज (सं॰ क्ली॰) १ सैन्धवलवण, सेंधा नमक। (त्रि॰) २ समुद्रमथनके समय जो उत्पन्न हुआ हो।

सिन्धुमातृ (सं॰ स्त्री॰) १ नदियोंकी माता, सरस्वती। (ऋक् ।७।३६।६) (त्रि॰) २ समुद्रमातृक, सिंधु अर्थात् समुद्र जिसकी माता हो।

सिन्धुर (सं॰ पु॰) १ हस्ती, हाथी। २ आठकी संख्या।

सिन्धुरद्वेषिन् (सं॰ पु॰) सिंह।

सिन्धुरमणि (सं॰ पु॰) गजमुक्ता।

सिन्धुरवदन (सं॰ पु॰) गजवदन, गणेश।

सिन्धुरगामिनी (सं॰ स्त्री॰) गजगामिनी, हाथीकी-सी चालवाली।

सिन्धुराज (सं॰ पु॰) १ नदीपति समुद्र। २ राजभेद। ३ मुनिभेद। (रामायण)

सिन्धुराज्ञी (सं॰ स्त्री॰) सिंधुराजपत्नी।

सिन्धुराव (सं॰ पु॰) १ समुद्रगर्ज्जन, समुद्रकी ध्वनि। २ सिंधुवार, सिगुंडी।

सिन्धुल (सं॰ पु॰) धारापति भोजके पिता। भोज देखो।

सिन्धुलताग्र (सं॰ पु॰) प्रवाल, मूंगा।

सिन्धुलवण (सं॰ क्ली॰) सैंधवलवण, सेंधा नमक।

सिन्धुवार (सं॰ पु॰) १ हयोत्तम। (त्रिका॰) २ सिंधुवार, सिगुंडी।

सिन्धुवारक (सं॰ पु॰) सिंदुवार, सिगुंडी।

सिन्धुवारित (सं॰ पु॰) सिन्दुवार, सिगुंडी।

सिन्धुवासिन् (सं॰ त्रि॰) सिंधुदेशवासी।

सिन्धुवासिनी (सं॰ स्त्री॰) लक्ष्मी।

सिन्धुवाहन (सं॰ त्रि॰) १ नदियोंके प्रवाहयिता। (ऋक् ५।७५।२) (पु॰) २ गङ्गपति।

सिन्धुविष (सं॰ पु॰) हलाहल विष जो समुद्र मथने पर निकला था।

सिन्धुवीर्य (सं॰ पु॰) राजा मरुत्तकी भार्या। इसकी कन्याका नाम था वपुष्मती। (मार्कण्डेयपु॰ १३१ अ॰)

सिन्धुवृष (सं॰ पु॰) विष्णु।

सिन्धुवेतस (सं॰ पु॰) गम्भारी वृक्ष।

सिन्धुशयन (सं० पु०) विष्णु। कल्पान्तकालमें विष्णु क्षीरोदसमुद्रमें अनन्तशय्या पर शयन करते हैं।
सिन्धुसामन् (सं० क्ली०) साममेद।
सिन्धुसङ्गम (सं० पु०) नदी, नद और समुद्रका आपस में मिलना। पर्याय—सम्भेद।
सिन्धुसम्भवा (सं० स्त्री०) फिटकिरी।
सिन्धुसर्ज (सं० पु०) शालवृक्ष, साखू।
सिन्धुसहा (सं० स्त्री०) सिंदुवार, निर्गुंडी।
सिन्धुसागर (सं० पु०) वह स्थान जहां सिंधुनद समुद्रमें मिला है।
सिन्धुसुत (सं० पु०) जलंधर नामक राक्षस जिसे शिवजीने मारा था।
सिन्धुसुता (सं० स्त्री०) १ लक्ष्मी। २ सीप।
सिन्धुसुतासुत (सं० पु०) सीपका पुत अर्थात् मोती।
सिन्धुसूनु (सं० पु०) सिंधुपुत्र।
सिन्धुसृत (सं० त्रि०) सिंधुसे बहिर्गत, समुद्रसे निकला हुआ।
सिन्धुसौवीर (सं० पु०) सिंधु और सौवीर देश।
सिन्धुसौवीरक (सं० पु०) सिंधु और सौवीर देशका मनुष्य। (बृहत्स० ६।१६)
सिन्धूत्तम (सं० क्ली०) महाभारतके अनुसार एक तीर्थ।
सिन्धूत्थ (सं० क्लो०) १ सिंधूद्भव, सैंधव लवण, सेंधा नमक। (त्रि०) २ समुद्रसे उत्पन्न।
सिन्धूद्भव (सं० क्ली०) १ सैंधवलवण, सेंधा नमक। (रत्नमाला) (त्रि०) २ समुद्रजातमात।
सिन्धूपल (सं० क्ली०) सैंधवलवण, सेंधा नमक।
सिन्धूरा (हिं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक राग। यह वीर रसका राग है और हिंडोल रागका पुत्र माना जाता है। इसमें ऋषभ और निषाद स्वर कोमल लगते हैं। गानेका समय दिनमें ११ दंडसे १५ दंड तक है।
सिन्धूरी (सं० स्त्री०) एक रागिनी। यह हिंडोल राग की पुत्रवधू मानी जाती है।
सिन्धोरा (हिं० पु०) सिंदूर रखनेका लकड़ीका पात्र जो कई आकारका बनता है।
सिपर (फा० स्त्री०) वार रोकनेका हथियार, ढाल।
सिपरा (हिं० स्त्री०) सिप्रा देखो।

सिपहगरी (फा० स्त्री०) युद्ध व्यवसाय, सिपाहीका काम।
सिपहसालार (फा० पु०) फौजका सबसे बड़ा अफसर, सेनापति, सेनानायक।
सिपारा (फा० पु०) कुरानके तीस भागोंमेंसे कोई एक। कुरान तीस भागोंमें विभक्त किया गया है जिनमेंसे प्रत्येक सिपारा कहलाता है।
सिपाव (फा० पु०) लकड़ीकी एक प्रकारकी टिकठी या तीन पायोंका ढांचा जो छकड़े आदिमें आगेकी ओर अड़ानके लिये दिया जाता है।
सिपावा भाथो (हिं० स्त्री०) लोहारोंकी हाथसे चलाई जानेवाली धौंकनी।
सिपास (फा० स्त्री०) १ धन्यवाद, शुक्रिया। २ प्रशंसा, स्तुति।
सिपासनामा (फा० पु०) विदाईके समय या अभिनन्दन-पत्र।
सिपाह (फा० स्त्री०) फौज, सेना, लश्कर।
सिपाहगिरी (फा० स्त्री०) अस्त्रव्यवसाय, सिपाहीका काम या पेशा।
सिपाहियाना (फा० वि०) सैनिकोंका-सा, सिपाहियों-का-सा।
सिपाही (फा० पु०) १ सैनिक, योद्धा, फौजी आदमी। २ कांस्टेबिल, तिलंगा। ३ चपरासी, अरदली।
सिपाहीविद्रोह—सिपाहीविद्रोह कहनेसे साधारणतः १८५७ ई०की उसी घटनाका बोध होता है जिसने भारतवर्षके इतिहासके पृष्ठोंको कलङ्कित कर दिया है। इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है,—

सबसे पहले १७६४ ई०के मई मासमें पटनामें अंगरेजी और देशी सेनामें विद्रोहका लक्षण दिखाई दिया। किन्तु इस विद्रोहने भीषण आकार धारण करने भी न पाया था, कि सेनाध्यक्ष मनरोने बड़ी तत्परतासे उसका दमन किया।

विशेष लाभजनक 'डबल भत्ता' की प्रथा उठा देनेके कारण १७६६ ई०के जनवरी मासमें द्वितीय बार विद्रोह-की सूचना हुई। किन्तु लार्ड क्लाइवने इस विद्रोहको अंकुरमें ही विनष्ट कर डाला।

सैनिक विभागमें जो सब लाभजनक पद थे, लार्ड कार्नवालिसने उन्हें उठा दिया। इस कारण १७६५ ई०में बङ्गालके यूरोपीय सैनिक कर्मचारी खुल्लमखुल्ला विद्रोही हो उठे। सर जान शोरके बलसे यह विद्रोह आपसमें मिट गया।

१८०६ ई०में वेल्लूर दुर्गकी देशी सेना विद्रोही हो उठी। उन्होंने ऊर्द्ध्ववेतन साहब कर्मचारियों और अन्यान्य यूरोपीयोंका विनाश कर इसे और भी गुरुतर कर डाला। किन्तु उस दिन संध्या होनेके पहले ही वीरवर कर्नल गोलेस्पी घोड़े पर सवार हो घटनास्थल पर आ पहुंचे जिससे विद्रोही लोग तितर बितर हो गये। टीपू सुलतानके परिवार वेल्लूरमें रहते थे। इस काममें उन लोगोंका भी हाथ है, ऐसा संदेह कर गवर्मेण्टने उन लोगोंको बङ्गाल भेज दिया।

इसके बाद कई वर्षों तक शान्ति विराजती रही। किन्तु १८२४ ई०में फिर देशी सेनाओंमें अवाध्यता और उच्छृङ्खलताका लक्षण दिखाई दिया। ब्रह्मदेशमें जानेका आदेश पा कर बारकपुरकी कुछ देशी सेना बहुत रंज हुई। किन्तु किसी प्रकारका गुरुतर अत्याचार करनेके आदेशसे उनमेंसे ४४० मनुष्य गोलीसे उड़ा दिये गये।

भीषण तूफान आनेके पहले प्रकृति जिस प्रकार अपनी सारी शक्तिको संग्रह कर शान्त और निस्तब्ध भावसे अभीष्ट कार्यके लिये प्रस्तुत होती है, १८२४ ई० के विद्रोहके बाद सिपाही लोग भी कई दिनों तक उसी भावमें रहे। आखिर १८५७ ई०के विद्रोह-विप्लवमें अंगरेजराजके आसन सहित सारा भारतवर्ष कांप उठा।

उपरोक्त घटनाओंसे यह स्पष्ट देखा जाता है, कि सैनिक विभागमें शासन और शृङ्खलाका यथेष्ट अभाव था। केवल देशी नहीं अङ्गरेजी सेना भी कभी कभी असन्तोषका लक्षण प्रकट करती थी। किंतु इस असंतोषका कारण दूर करनेके लिये कोई भी अधिकारी प्रस्तुत नहीं था। अधिकांश अधिकारी समझते थे, कि देशी सेना ऐसी ही होती है, स्वभावतः वे लोग अवाध्य और उद्दण्ड हैं। वे लोग समझते थे, कि खण्ड खण्ड विद्रोहानलका दमन करने हीसे वे लोग यथेष्ट निरापद हुए हैं। देशी सेनाओंके अन्तःकरणमें जो अशांतिका आग्नेय गिरि धुंआता था, यह खंण्ड विद्रोह उसका सामयिक अकालविकाशमात्र है, इस ओर उनका लक्ष नहीं जाता था तथा क्या करना आवश्यक है, यह भी उन्हें समझते नहीं आता था।

इस संक्रामक अशान्ति और असन्तोषका वीजाणु जो केवल देशी सेनाओंका मन कलुषित करता था, सो नहीं, साधारण लोगों पर भी उसका पूरा असर था। इसीसे १८५७ ई०का गदर ऐसा व्यापक और भयानक हो उठा था।

१८५६ ई०में ब्रह्मदेशमें सैन्यका भेजना जरूरी आन पड़ा, किन्तु उन्हें समुद्र पार नहीं करना पड़ेगा, इसी शर्त्त पर हिंदूगण सैनिक विभागमें भर्त्ती हुए थे। अतः गवर्नर जनरलने इस शर्त्तको तोड़ना नहीं चाहा जिससे एक भी ब्राह्मणसेना वहां न जा सकी। इस कारण गवर्नर जेनरलने मन्द्राजका जो देशी सैन्यदल general Service में भर्त्ती हुआ था, जो शर्त्तके अनुसार सर्वत्र जानेके लिये बाध्य थे, उन्हें भेजना चाहा। किंतु वहां की सेना असंतुष्ट होगी, सोच कर मंद्राजके शासनकर्त्ता ने इस पर आपत्ति की। गवर्नर जेनरल बड़े विरक्त और क्रुद्ध हुए। उन्होंने पीछे यह हुकुम निकाला, कि जो आदमी जहां आवश्यकता होगी, वहां जानेको राजी होगा, उसीको सेनामें भर्त्ती किया जायेगा। इस पर हिंदू लोग बड़े बिगड़े और उन्होंने समझ रखा, कि वृटिश गवर्मेण्ट हम लोगोंका जातिधर्म नष्ट करना चाहती है। इसी साल गाय और सूअरकी चर्बीसे टोटा तैयार होने लगा जिसे दांतसे काट कर बंदूकमें भरा जाता था। सेनाओंमें हिंदू और ब्राह्मण थे। एक तो हिंदूसेनामें पहलेसे ही आग सुलग रही थी, अब वह आग और भी धधक उठी। दावाग्निकी तरह मुहूर्त्त भरमें यह खबर सर्वत्र फैल गई। अङ्गरेजोंके जो सब श ... थे, वे तो इस खबरको और भी रंगा कर नाना स्थानोंमें भेजने लगे। बङ्गालके ब्राह्मणोंने उत्तर पश्चिम प्रदेशके ब्राह्मणोंको भी यह संवाद भेज कर उन्हें उत्तेजित

कर डाला। अयोध्या राज्यच्युत नवाबके कर्मचारी भी इस विषयको अनुकूल किया करनेसे न भूले।

विद्रोहाग्नि धाय धाय कर शीघ्र ही प्रज्वलित हो उठी। २८वीं जनवरीको बारकपुरमें प्रथम विद्रोहकी सूचना हुई। देशी सेनाने सरकारी घर और अपने ऊर्द्ध्वतन कर्मचारियोंके मकानमें रातको आग लगा दी। उन लोगोंकी इच्छा थी, कि आखिर कलकत्तेमें जा कर दुर्ग और कोषागार पर अधिकार कर लें। किंतु उस समय तक विद्रोहाग्नि चारों ओर फैली नहीं थी। यथासमय यदि गवर्मेण्ट चर्वी मिला हुआ टोटा सम्बंधीय यह कुसंस्कार दूर करनेकी चेष्टा करती, तो निश्चय था, कि विद्रोहाग्नि भीषणरूप धारण नहीं करती।

विद्रोह-वह्नि जब धधक उठी, तब गवर्मेण्टने कलुषित दलोंको परस्पर विच्छिन्न और स्थानांतरित करना आवश्यक समझा, यह सोच विचार कर बारकपुरके दलको उन्होंने बहरमपुर भेजा। यहां १९ नम्बरके देशी पदातिक दलमें तीन सप्ताह पहले ही उत्तेजनाका लक्षण दिखाई दिया था, किंतु टोटाके संबंधमें अधिकारीवर्गने जो कैफियत दी थी, उसीसे वे लोग बहुत कुछ शान्त हो गये थे। बारकपुरका दल पहुंचने पर उन लोगोंके जातिनाशकी आशङ्का फिर नये भावमें नये तेजसे जग उठी। बंदूकमें Percussion cap का व्यवहार करनेसे वे बिलकुल अस्वीकार कर गये। वे सबके सब उसी समय बर्खास्त कर दिये गये। अनंतर सनेज, सदर्पसे कुल माल असबाब ले कर वे लोग चुंचडाकी ओर दौड पड़े। इसके कुछ दिन बाद बारकपुरस्थित ३४ नं० बंगालके देशी सेनादलमें एक भीषण उत्तेजनास्रोत आ पहुंचा। २९वीं मार्चको मंगल पांडे नामक कोई सिपाही प्रकाश्य विद्रोहमें शामिल होनेके लिये अपने समव्यवसायियोंको उत्तेजित और उत्साहित करने लगा। उसने बहुतोंके सामने दलके अध्यक्षको मार डाला, किन्तु कोई भी कुछ नहीं बोला। उस समय प्रकाश्यभावमें योगदान नहीं करने पर भी उसे समझनेमें देर न लगी, कि सभी देशी सेनाओंने उसका पक्ष अवलम्बन किया है। पकड़े जाने पर मङ्गलसिंहको फांसी हुई। अधिकारीवर्गको मदद नहीं पहुंचानेके कारण और भी बहुतोंको सजा मिली।

किन्तु विद्रोहकी शिखा धीरे धीरे धधकने लगी। इसके पहले ही उत्तर-पश्चिमप्रदेशके दूसरे प्रान्तमें देशी सेनादलमें जाति और धर्मनाशकी आशङ्काने भीषण रूपसे काम करना आरम्भ कर दिया था।

इस प्रकार विद्रोहकी अग्नि धीरे धीरे प्रबल वेगसे बहने लगी। ऊपरसे दुष्ट कुचक्री लोग नाना प्रकारकी झूठी अफवाह उड़ा कर सेनाओंके मनको और भी उत्तेजित करने लगे। पीछे यह गरम अफवाह फैली, कि हिन्दूके जातिनाश करनेका सङ्कल्प करके ही सरकार बहादुरने ऐसे टोटेका प्रयोग करनेका आयोजन किया है। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने गायकी हड्डीके चूर्णको आटा और मैदेके साथ मिलाने और कूपके जलमें फेंकनेकी व्यवस्था की है। अब जातिधर्म रहने नहीं पाया।

यह काण्ड धीरे धीरे भीषणरूप धारण करने लगा। हतबुद्धि अंगरेज कर्मचारियोंको यह अवस्था अच्छी तरह सूझ पड़ी, फिर भी वे कोई व्यवस्था नहीं करते थे। यह समस्या और भी जटिल होने लगी। फिर युक्तप्रदेशके एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें रोटी भेजी जाने लगी, इसका अर्थ लोगोंने यह लगाया, कि सरकार बहादुर धर्मनाशकी चेष्टा कर रहे हैं।

इसी समय उत्तेजनाका स्रोत दिल्ली जा कर वहांके जनसमूहको भी नई आशाके हिल्लोलमें गोता खिलाने लगा। मुगल गौरवका ध्वंस हो जाने पर भी वृद्ध बहादुरशाह अंगरेजोंकी कृपासे दिल्लीके मसनद पर अधिष्ठित थे। सारा देशव्यापी एक विपुल विद्रोह शीघ्र ही जल उठेगा और इससे सम्भव है, कि कहीं दिल्लीका नष्ट गौरव फिर पलट न जावे, इस आशासे बहादुर शाहके अनुचर और पार्श्वचरगण फूले न समाये। रूस-सम्राट् अंगरेजोंको निकाल भगानेके लिये दलबलके साथ भारतकी ओर दौड पड़ेंगे, यह अफवाह भी चारों ओर उड़ा दी गई। दिल्लीमें गोली बारूद और अस्त्रशस्त्रसे परिपूर्ण एक भंडार था। यह अस्त्रागार राजप्रासादके ही अन्तर्भुक्त था। फिर जिससे यह शत्रुके हाथ न आ जावे, इसके लिये गवर्मेण्टने कोई भी इन्तजाम नहीं

कर रखा था। अभी दिल्लीका संवाद पा कर वे सभी विचलित हो उठे।

इधर उन लोगोंके विरुद्ध षड्यन्त्र और भी पक्का होने लगा। बहुत दिनोंसे नाना साहब गवर्मेण्टसे बदला चुकानेका मौका देख रहे थे। अभी वे बिठूर, कालपी, दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानोंमें घूम कर देशी राजाओं-को गवर्मेण्टके विरुद्ध उभाड़ने लगे।

अयोध्याके शासनकर्त्ता हेनरी लारेन्स असलियत मालूम कर अयोध्या वासियोंको शान्त और आश्वस्त करनेकी चेष्टा करने लगे। वे आखिर इन कार्योंमें कृत कार्य भी हुए, क्योंकि उन्होंने देशी सेनाओंको फिर बहाल कर लिया, नवाब और उनके अधीनस्थ व्यक्तिको पेन्शनकी आशा दी तथा जिन जमींदारकी सम्पत्ति छीन ली गई थी, उन्हें फिर लौटा दी।

किन्तु गवर्मेण्टने एक भारी भूल कर डाली। प्रधान सेनापति, गवर्नर जेनरल आदि किसीको भी दिमागमें यह बात न सूझी, कि भीतर ही भीतर यह समस्या भीषण रूप धारण करती जा रही है। जिन सब सेनाओंमें विद्रोहके लक्षण दिखाई दिये थे, आज तक उन्हें कोई उपयुक्त दण्ड न मिला। अगर मिलता भी था, तो फांसी नहीं, केवल नौकरीसे अलग कर देना। इससे वे लोग और भी श्रद्धाहीन और भयरहित हो गये।

धीरे धीरे सिपाहियोंका साहस बढ़ने लगा। गुप्त विद्वेषका परित्याग कर वे खुल्लमखुल्ला शत्रुता करने लगे। लखनऊके ४८ नं०के देशी पदातिक सेनाओंमें पहले ही विद्रोहके लक्षण दिखाई दिये। डाक्टरखानेमें जा कर डाक्टर वेल्सने औषधका एक बोतल उठा कर पी लिया। हिंदू रोगी यह देख कर सिहर उठे और सोचने लगे कि, उन्हें इसी तरह जूठा खिलाया जाता है। क्षण भरमें यह बात सिपाहीके एक कानसे दूसरे कानमें जा पहुंची। जातिनाश होता देख एक भारी कोलाहल मच गया। उसी समय आ कर कर्नेल साहबने उन लोगोंके सामने औषधका बोतल फोड़ डाला और डाक्टर वेल्सको बहुत फटकारा किंतु अशांतिकी कुछ भी निवृत्ति नहीं हुई। कुछ दिन बाद ही वेल्सके बंगलेमें आग लगा दी गई। अब उन्हें समझनेमें देर न लगी, कि सैन्यदल असंतुष्ट और विरक्त हो गया है। किंतु तब भी प्रकाश्यभावमें विद्रोह-वह्नि धधकती दिखाई नहीं देती थी। मई महीना आया, नये भर्ती किये हुए सिपाहियोंको टोटा व्यवहार करनेका हुकुम हुआ। वे लोग इनकार कर गये। दूसरे दिन केवल वे ही नहीं, समस्त हिन्दूदल टोटा व्यवहार पर घोर प्रतिवाद करने लगे। लारेन्स पहले मीठी बातोंसे उसका खण्डन करने लगे, पर कोई फल नहीं निकला। ३री मई रविवारके दिन ऐसा मालूम हुआ, कि देशी सिपाही प्रकाश्य भावसे बागी हो गये। लारेन्सको यह बात मालूम हुई, वे डर गये, कि कहीं वे लोग यूरोपियनोंकी हत्या भी न कर डालें। वे फौरन जो कुछ सिपाही उनके पास थे, उन्हें ले कर बागियोंकी ओर दौड़ पड़े। सन्ध्या समय जब बिलकुल अंधकार छा गया था, दोनों पक्षमें मुठभेड़ हो गई। अन्ध-कारको शत्रु संख्याका अन्दाजा न लगा सकनेके कारण विद्रोहीदल डरके मारे चारों ओर खिसकने लगे। जो भाग न सके, उन्होंने आत्मसमर्पण कर लिया। इस घटनाके बाद ही ४थी मईको मीरटमें प्रकाश्य विद्रोह-का अभिनय आरम्भ हुआ।

विद्रोहियोंने जेल तोड़ कर कैदियोंको भगा दिया। पीछे वे बड़ी तेजीसे छावनीकी ओर बढ़े, जहां जो अंग-रेज मिले, वहीं उन्हें कत्ल कर रक्तकी नदी बहाने लगे। आखिर दिल्लीकी देशी सेनाओंको उत्तेजित करनेके लिये वे लोग दिल्लीकी ओर दौड़ पड़े। वहांके अंगरेज बिलकुल तैयार न थे, इसलिये दिल्ली रक्षाका कोई भी इन्तजाम कर न सके। बहुतेरे स्त्री पुरुष, बालक-बालिका विद्रोहियोंके हाथसे यमपुर सिधारे। अन्तमें आत्मरक्षा और दुर्गरक्षा दोनों ही असम्भव देख कर उन्होंने शस्त्रागारको बन्दूकसे उड़ा दिया और छिपके दिल्लीसे भाग चले। धीरे धीरे युक्तप्रदेशके सभी सिपाही विद्रोही-दलमें शामिल हो गये। उन लोगोंने अङ्गरेजोंकी आबालवृद्धवनिताको जहां पाया वहीं कतले-आम कर दिया। नाना स्थानोंमें विद्रोहाग्नि धधक उठी, किन्तु दिल्लीमें ही प्रधान केन्द्रस्थान था। पंजाबमें देशी सिपाहियोंको निरस्त्र करके सर जान लारेन्स उन्हें

बहुत कुछ काबूमें ला सके थे। इधर सिख और अफगान सेनाओंने भी विद्रोहियोंका साथ नहीं दिया था।

अयोध्या और रोहिलखण्डके सभी लोग उन्मत्तकी तरह विद्रोहके स्रोतमें कूद पड़े। बरेलीके नवाब और अयोध्याकी बेगमने भी विद्रोहियोंका प्रकाश्यभावमें साथ दिया। ६ ठी जूनको कानपुरकी सेनाने विद्रोहपताका उड़ाई। उन लोगोंने पेशवा बाजीरावके दत्तकपुत्र धन्दुपन्थ (नाना साहब) को मराठोंका पेशवा घोषित किया। विद्रोहियोंके हाथसे निष्कृति पानेकी कोई भी सम्भावना न देख कानपुरके यूरोपीयगणने नानासाहबके निकट आत्मसमर्पण किया। नानासाहबने पक्का वचन दिया, कि वे उन्हें जलपथसे बे रोक टोक इलाहाबाद तक जाने देंगे। इस बात पर विश्वास कर ज्यों ही अंगरेज लोग स्त्रीपुत्रके साथ नाव पर जा चढ़े, त्यों ही नोसे उन लोगों पर बंदूक छूटने लगी। निरपराध हतभाग्योंके रक्तसे नदीका जल लाल हो गया—सिर्फ एक नाव परके कुछ माझीके सिवा और सभी उनके शिकार बने। यह लोमहर्षण संवाद पा कर कानपुरमें नानासाहबके हाथसे जो सब अंगरेज बन्दी हुए थे, वे बहुत विचलित हो उठे। १५वीं जुलाईको जेनरल हैभलाक कानपुरमें आ धमके। अब कोई उपाय न देख निष्ठुर नानसाहबने १२५ स्त्री और बालक और बालिकाओंको पशुकी तरह हत्या कर डाली।

दिल्ली ही विद्रोहियोंका प्रधान अड्डा है, दिल्ली हस्तगत नहीं करनेसे विद्रोहका शीघ्र दमन नहीं हो सकता, यह सोच कर ३१वीं मईको जेनरल बार्नार्डने दिल्लीकी ओर प्रस्थान किया। ब्रिगेडियरके, विलसनके अधीन भी मीरटसे अंगरेजी सेनाका एक दल प्रतिहिंसामें उन्मत्त हो दिल्लीकी ओर दौड़ पड़े। गाजीउद्दीन नगरसे करीब मील भरकी दूरी पर हिन्दान नदी बहती थी। विद्रोही लोग इस नदीके दूसरे किनारे आक्रमणकारियोंकी बाट जोह रहे थे। अंगरेजोंको देखते ही उन्होंने बंदूक चलाना शुरू किया। इसी समय कर्नल मैकेञ्जी और मेजर टुमने भी आ कर विद्रोहियों पर आक्रमण कर दिया। बहुत देर तक प्राणपणसे चेष्टा करके भी जब विद्रोहियोंने देखा कि, अब जयलाभकी सम्भावना बिलकुल नहीं है, तब वे लोग पीछे हटने लगे, किन्तु अंगरेजी सेनाके विपुल विक्रमसे वे शीघ्र ही तितर बितर हो गये।

इधर पलातक विद्रोहियोंके दिल्ली पहुंचने पर उन्हें बहुत ललकारा गया। अनन्तर वे लोग पुनः दलवृद्धि कर अपने अदृष्टकी परीक्षा करनेके लिये आगे बढ़े। नदीके दूसरे किनारे आ कर उन्होंने फिर अंगरेजों पर गोली चलाना शुरू कर दिया। बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। इस प्रकार भाग्यलक्ष्मी उन लोगोंके ऊपर उसी प्रकार अप्रसन्न रही। बहुत खूनखराबीके बाद विद्रोहियोंने रणक्षेत्रसे पीठ दिखाई। ५वीं जूनको बार्नार्डने आ कर विलसनकी विजयी सेनाका साथ दिया। आखिर सभी एकत्र हो दिल्लीकी ओर अग्रसर हुए। विद्रोही दल दिल्लीके उत्तर पश्चिम कोनेमें पांच मील दूरवर्ती बादलीकी सराय नामक स्थलमें पड़ाव डाले हुए थी। ८वीं जूनको अंगरेजीसेनाने आ कर उन लोगों पर धावा बोल दिया। बहुत खूनखराबी करके विद्रोहियोंने आक्रमणकारियोंकी शक्तिकी परीक्षा की, किंतु आखिर वे लोग शत्रुओंके गोलेके सामने क्षण भर भी ठहर न सके। जो रास्ता मिला, उसी हो कर वे लोग दिल्लीकी ओर भाग खड़े हुए।

इधर मीरटमें विद्रोहका संवाद पाते ही युक्तप्रदेशके शासनकर्त्ता मि० कलभिनने आगरा-वासी अंगरेजोंको ले कर एक सभा की। कलभिनकी इच्छा थी, कि इस विपत्तिके समय सभीका दुर्गमें आश्रय लेना उचित है, किन्तु बहुतोंने यह सोच कर इस पर आपत्ति की, कि ऐसा करनेसे विद्रोहियोंका साहस और भी बढ़ जायेगा। लेफ्टेनाण्ट गवर्नरने मीठी मीठी बातोंसे देशी सेनाओंको प्रबुद्ध करनेकी चेष्टा की, किंतु उन्होंने समझा, कि केवल इने गिने अंगरेजोंकी शक्ति पर ही भरोसा करना उचित नहीं, सिंधिया, होलकर और भरतपुरके राजासे भी सहायताके लियेप्रार्थना करना आवश्यक है। सहायता मांगी गई, उन लोगोंने बड़ी प्रसन्नतासे सहायता दी। आगराके सम्बन्धमें कलभिन बहुत कुछ आश्वस्त हुए।

किंतु अलीगढ़का विद्रोहसंवाद पाते ही वे भारी ऊहापोहमें पड़ गये। यहांकी देशी सेना बहुत दिनोंसे प्रभुभक्ति और विश्वस्तताका प्रमाण देती आ रही थी, यहां तक कि उन लोगोंने एक ब्राह्मणको पकड़वा भी दिया था जिसने उन्हें विद्रोहमें शामिल होनेके लिये उभाड़ा था। किंतु विचारसे जब ब्राह्मणको फांसी हुई, तब उसकी कम्पिनी देहकी ओर उंगलीका इशारा कर एक सिपाही जोरसे गरज उठा, 'वहां देखो' हम लोगोंकी धर्मरक्षाके लिये ही आज बेचारे ब्राह्मणकी जान गई! इतना कहते न कहते वे लोग क्रोधके मारे जल भुन उठे, अधिकारियोंकी जान उन लोगोंने तो नहीं ली, पर उन्हें निकाल बाहर कर दिया और विद्रोहियोंसे मिलनेके लिये बड़े दर्पसे दिल्लीकी ओर यात्रा कर दी। इस प्रकार केवल अलीगढ़ ही अधिकारीके हाथ जाता रहा सो नहीं, मीरट और आगरामें संवाद भेजनेका रास्ता भी बंद कर दिया गया। इन लोगोंका अनुसरण कर इटावा, बुलन्दशहर और मैनपुरीके सिपाही भी बागी हो गये। आगरामें एक भीषण आतङ्कका प्रवाह बह गया—गाड़ी-गाड़ी स्त्री बालक-बालिका माल असबाब ला कर दुर्गके भीतर आश्रय लेने लगा, निरस्त्र भीत देशी अधिवासी जहां तहां आत्मरक्षाके लिये चेष्टा करने लगे। प्रत्येक अंगरेज रिवाल्वर और तलवार हाथमें लिये घूमने लगा।

३०वीं मईको मथुराकी दुर्गरक्षामें नियुक्त सैन्यदल विद्रोही हो उठा। उन लोगोंके दृष्टांत पर उत्तेजित हो भरतपुरके राजाने जो दल भेजा था तथा जिन पर ऐसा विश्वास किया गया था, उन लोगोंने भी क्रोधसे अधीर हो कर्मचारियोंको मार भगाया। चारों ओरकी अवस्था देख कर आगरेकी देशी सेनाओंसे हथियार छीन लिये गये। आगरावासी दम भरने लगे, पर उसी क्षणके लिये। शीघ्र ही रोहिलखण्डसे भीषण संवाद आया। मथुराका विद्रोह-संवाद पा कर भी शाहजहानपुरके सिपाही कुछ दिनों तक शान्त भावसे रहे, किंतु ३१वीं तारीखको वे लोग भी बागी हो गये। फलतः कुछ अंगरेज विद्रोहियोंके हाथसे यमपुर सिधारे और कुछ किसी प्रकार भाग कर अयोध्या प्रदेशके पोवाइन राजाके शरणापन्न हुए। राजाने उन्हें आश्रय देनेसे इनकार कर दिया। अनंतर वे लोग एक दिन और एक रात नाना प्रकारके कष्ट झेलते हुए अयोध्याके मोहामदि नामक स्थानमें पहुंचे। यहां एक दूसरा अंगरेजी दल उन लोगोंके साथ मिल गया। अब वे लोग एकत्र हो औरङ्गाबादकी ओर अग्रसर हुए। ५वीं जूनको जब वे लोग औरङ्गाबादसे आध मील दूर भी नहीं गये थे, कि पीछेसे सिपाहियोंने आ कर उन पर गोली बरसाना शुरू कर दिया। उपाय न देख सभी एक वृक्षके नीचे खड़े हुए और भगवान्से प्रार्थना करने लगे। इसी समय आततायियोंने आ कर उन लोगोंके रक्तसे पृथ्वीको रंगा दिया।

इधर रोहिलखण्डकी राजधानी बरेली ले कर सरकारको भारी चिंता हो रही थी। यहां कमिश्नरका वास स्थान तथा तीन दल देशी सेनाओंका वास था। ३०वीं मईको यह अफवाह उड़ी, कि पदातिकका दल विद्रोही होगा। ज्यों ही यह खबर पहुंची, त्यों ही घुड़सवार दलके नेता कप्तान मैकेञ्जी तैयार हो गये। उन्हें घुड़सवारोंके ऊपर पूरा भरोसा था, किंतु जा कर देखा, कि वे लोग विद्रोही दलमें मिल गये हैं। बहुत समझाने बुझाने पर भी उन लोगोंने नहीं माना और सबके सब उठ खड़े हुए। निरुपाय कप्तान जिन ५३ सिपाहियों पर विश्वास करते आ रहे थे, उन्हें ले कर नैनीतालकी ओर चल दिये। इसके पहले ही बचे खुचे अंगरेज वहांसे रवाना हो चुके थे। बरेलीमें खां बहादुर खां नामक एक गवर्मेंटके पेन्शनभोगी मुसलमानने अपनेको राजप्रतिनिधि कह कर घोषणा कर दी। जो सब अंगरेज उसे मिले, सबोंको पशुकी तरह हत्या कर डाली।

दूसरे दिन १ली जूनको बदाऊंके सिपाही विद्रोही हो उठे। मजिस्ट्रेट विलियम एडवर्ड यहां अकेले थे, कोई भी अंगरेज न था। इतने दिनों तक वे शान्तिरक्षा करते आ रहे थे, अभी चारों ओर विपद्से घिरा देख वे ठहर न सके। अब तक मुरादाबादमें शान्ति और शृङ्खला थी।

जज विलसनके चरित्रके माहात्म्य पर मुग्ध हो देशी सेना केवल चुप बैठी थी, सो नहीं, तीन तीन बार उन्होंने बाहरके विद्रोहियोंके आक्रमणसे मुरा-

दावादकी रक्षा भी की थी। किन्तु आखिर संक्रामक रोगने उन्हें भी नहीं छोड़ा। बरेलीका संवाद पा कर वे लोग बहुत ही विचलित हो उठे तथा ३री जूनको विद्रोहकी पताका उड़ा कर खड़े हो गये। शहर भरमें लूट पाट होने लगा, अंगरेज कर्मचारी प्राण ले कर भागे।

मुरादाबादके पतनके साथ साथ रोहिलाखण्डका अंगरेजी शासन विलुप्त हो गया। खां बहादुरके अपनेको राजप्रतिनिधि कह कर घोषित करने पर भी कोई उसका शासन माननेको तैयार नहीं। चारों ओरसे भीषण अराजकताकी महामारी चलने लगी। मुसलमानोंके हाथसे हिन्दुओंकी लाञ्छना और दुर्गतिकी सीमा न रही। चारों ओर भीषण हाहाकार मच गया।

फर्रुखाबादमें १० नं०के देशी पदातिकका दल प्रतिष्ठित था। विशेष राजभक्त नहीं होने पर भी वे अनेक दिनों तक वाध्य और वशीभूत रहे। फरुखाबाद देखो।

फतेगढ़के विद्रोहके फलसे गङ्गा और यमुनाके मध्यवर्त्ती दोआब प्रदेशसे अंगरेजों का शासन बिलकुल विलुप्त हो गया।

विद्रोहकी बाढ़ धीरे धीरे सारे देशमें उमडने लगी। ग्वालियरके सिन्धिया और उनके प्रधान मन्त्री दिनकर राव सदा अंगरेजी शासनके पक्षपाती और विद्रोहियोंके विपक्ष थे। अंगरेजोंकी स्त्री और बालक बालिकाओं को वे अपने राजप्रासादमें ले गये। ये लोग आगरा जानेके लिये व्यस्त हुए, किन्तु लेफटेनाण्ट गवर्नरने कहला भेजा, कि ग्वालियरमें विद्रोह खड़ा नहीं होने तक उन लोगोंको वहीं अपेक्षा करनी होगी। १४वीं जूनको यह खबर आई, कि झांसीमें विद्रोहियोंने लोमहर्षण हत्याकाण्डका अभिनय किया है। उस रातके बीतने न बीतने ग्वालियरवासी अंगरेजोंका भी अदृष्ट आकाश मेघाच्छन्न हो उठा। रातको तोप पड़ने न पड़ते ही वज्रध्वनि हुई। फिर क्या था, हाथमें बंदूक लिये सिपाही लोग अपने अपने घरसे निकाल कर बड़ा चीत्कार करते हुए बाहर निकले। अधिकारी लोग बड़ी उतावलीसे सैन्यश्रेणीकी ओर दौड़े, किन्तु शान्ति स्थापन न कर सके। उसी जगह वे लोग मार डाले गये। बंदूककी आवाज, अग्निका धाय धाय शब्द और उन्मत्त विद्रोहियोंका ताण्डव चीत्कार सुनते ही अंगरेज लोग अपने अपने घर द्वार छोड़ भागने लगे। किन्तु भागें तो कहां? चारों ओरसे रक्तलोलुप सिपाहियोंने घेर लिया। कल कल रवसे रक्तनदी बहने लगी। केवल थोड़े से अंगरेजोंने दुःसहदुःख, कष्ट और लाञ्छना सहते हुए आखिर आगरामें आ कर प्राणरक्षा की। पालिटिकल एजेण्ट मैकफारसन साहबने इसी तरह रक्षा पाई थी। किन्तु भागनेके पहले अपने प्राणकी उपेक्षा करके भी वे सिन्धियाके साथ जा मिले और जिससे विद्रोहिदल और अपनी सेना ग्वालियरकी सीमाको पार कर सके, इसके लिये उन्होंने बलप्रयोग करनेका अनुरोध किया। ऐसा नहीं होनेसे भारतवर्षकी रक्षा करना कठिन हो जाता। मैकफारसनके चरित्रगुण पर सिन्धिया मुग्ध थे, सबसे पहले वे उनके अनुरोधकी रक्षा करनेके लिये कोशिश करने लगे। ऐसा करनेसे खुद उन पर विपद् टूटनेकी आशङ्का थी, किन्तु उन्होंने जरा भी उस ओर ध्यान नहीं दिया। ग्वालियरके विद्रोहिदल और सैन्यसामन्त यदि अंगरेजोंके शत्रुओंसे जा मिलते, तो भारतमें अंगरेजी शासनकी रक्षा करना कठिन हो जाता।

राजपूतानेकी अवस्था बहुत कुछ आशाप्रद थी। यहांके राजे अंगरेजी शासनकी ओर बहुत कुछ आकृष्ट थे। बड़े लाट गवर्नर जेनरलके प्रतिनिधि लारेन्स साहबके सौजन्य और परिणामदर्शिता पर सहजमें कोई विद्रोहाचरण कर सकेगा, ऐसी जरा भी सम्भावना न थी। राजपूतानेके केन्द्रस्वरूप अजमीरमें अर्थपूर्ण कोषागार और अस्त्रपूर्ण अस्त्रागार था। देशके जितने धनीमानी थे, सभी उसी जगह रहते थे। लारेन्सने बड़े कौशलसे सिपाहियोंको दूसरी जगह भेज कर एक दल मेरसेनासे अजमीरकी रक्षा की।

किन्तु इसके कुछ दिन बाद ही नसीराबाद नामक स्थानमें अंगरेजोंके जो देशी सिपाही थे, वे क्रोधित हो उठे। ग्रामनगरको लूट कर कर्मचारियोंका बंगला जलाते हुए वे दिल्लीकी ओर रवाना हुए।

यह संवाद यथासमय आगरा पहुंचा। शासनकर्त्ता कलभिन अब निश्चिन्त बैठ न सके। उन्होंने समस्त अंगरेज बालक बालिका स्त्री-पुरुष सभीको दुर्गमें आश्रय लेने

रहा। किंतु नितान्त प्रयोजनीय सामग्रीके सिवा वे दुर्गमें और भी नहीं ले जा सके।

आगराकी रक्षा करनेके लिये वहां एक दल यूरोपीय सेना और कोटाके राजपूत राजाका प्रेरित एक दल तथा नवाब सैफउल्लाकी चालित देशी सेनाका एक दल था। ४थी जुलाईके बाद यह संदेह हुआ, कि कोटाकी सेना विश्वासी नहीं है। परीक्षाके लिये उन्हें विद्रोहियों पर आक्रमण करनेका हुकुम दिया गया। वे लोग विद्रोहियोंके विरुद्ध न हो कर उनके साथ मिल गये। उस दिन रातको नवाब सैफउल्लाने भी आ कर सुना कि उनकी सेना पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अतः जिससे वे कोई अनिष्ट न कर सकें, इसलिये उन लोगोंको फौजी काम पर स्थानसे हटा दिया गया। ५वीं जुलाईके सवेरे यह खबर मिली, कि विद्रोही आगरा पर आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं। अध्यक्ष पालहिलने उन लोगोंको आक्रमण करनेका सुयोग न दे कर स्वयं उन पर आक्रमण करनेका संकल्प किया। सिर्फ आठ सौ ब्रिटिश सेना उनके अधीन थी। उन्हींको ले कर अपराह्नकालमें शत्रुकी ओर अग्रसर हुए। तीन मील दूर गावके भीतर और बाहरमें शत्रु डटे हुए थे। इनको देखते ही उन लोगोंने गोली चलाई, इन्होंने भी उसका जवाब दिया था। दोनों पक्षमें तुमुल संग्राम चलने लगा। शत्रु लोग सुरक्षित थे। अंगरेजी सेना उनका कुछ भी अनिष्ट न कर सकी, वरन् स्वयं धीरे धीरे निस्तेज और दुर्बल होने लगी।

ब्रिगेडियर पालहिलने जब देखा, कि शत्रु उनके आगमनके रास्ते तकको रोकना चाहते हैं, तब उन्होंने सेनाओंको आगरा लौटनेका हुकुम दिया। आगरा दुर्गके भीतर जो सब स्त्रियां थीं, उनकी दुश्चिन्ताका पारावार न था। इसी युद्धके ऊपर उनका भाग्य भरोसा निर्भर करता है, जान कर वे कान फाड़ फाड़ कमान बंदूककी ध्वनि सुन रही थीं। आखिर यह उत्कंठा इतनी बढ़ चली कि वे दुर्गके दरवाजे पर जा रणक्षेत्रकी ओर एक टकसे देखने लगीं। अकस्मात् उन्होंने देखा, कि एक दल सेना जिसे गजनमें नाराबीर शत्रु लोग पीछा कर रहे हैं, 'छाती धक्कसे फट गई' कहती हुई दुर्गके भीतर घुस गई। दुर्गस्थ रमणियोंकी आशा पर पानी फिर गया। वे आत्मविस्मृत हो अपने अपने स्वामीपुत्रका विरह भूल घायलोंकी सेवा-सुश्रूषा करने लगीं। इन आहतोंमें कप्तान डि अरली भी एक थे। उन्होंने कहा कि, 'मेरी कब्रके ऊपर एक पत्थर पर लिख रखना, कि युद्ध करते ही करते मैंने प्राणत्याग किया है।'

इसी समय विद्रोहियों द्वारा प्रोत्साहित हो आगरा-वासी जितने गुंडे और बदमाशोंके दल थे, उन्होंने लूट पाट, घरमें आग लगाना, अंगरेज देखते ही उनकी हत्या करना आदि लोमहर्षण काण्ड आरम्भ कर दिया। दो दिन तक यह अराजकता अप्रतिहत वेगसे चलती रही। आखिर ८वीं जुलाईको कुछ अंगरेज-सैनिक शहरके बाहर हो निकलगये चारों ओर प्रदक्षिण कर आये। अराजकता बहुत कुछ शान्त हुई।

आगरादुर्गवासियोंने जो इतनी आसानीसे निष्कृति पाई, वह केवल मेकफारसनकी चेष्टा और बुद्धिके गुणसे। ग्वालियरमें आग आने पर भी उन्होंने सिन्धिया और दिनकर रावके साथ पत्रव्यवहार छोड़ा नहीं था। पुनः पुनः अंगरेजोंको पराजित होते तथा अपनी सेनाओंमें विरक्ति और असन्तुष्टिका स्पष्ट लक्षण देख कर भी सिन्धियाने जो अंगरेजोंका पक्ष लिया है, वह केवल मेकफारसनके ही गुणसे। उनका सैन्यदल यदि एक बार ग्वालियरकी सीमा पार कर विद्रोहियोंके साथ मिल जाता, तो भारतका इतिहासमें कैसा परिवर्तन होता, कह नहीं सकते।

चारों ओर जब अंगरेजोंकी प्रतिपत्ति और सम्मान इस प्रकार कलङ्कित और खर्च होता आ रहा था, उस समय मीरटके मजिस्ट्रेट राबर्ट डनलपने वीरता और बुद्धिमत्ताका जैसा परिचय दिया था, वह प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। वे छुट्टी ले कर हिमालयप्रदेशमें भ्रमण कर रहे थे। मीरट और दिल्लीके हत्याकाण्डका संवाद पा कर वे निश्चिन्त रह न सके, तुरत मीरट आ धमके। यहांके कर्मचारी बिलकुल हताश हो हाथ पांव समेटे बैठे थे। डनलपने आ कर जितने राजभक्त कर्मचारी थे, उन्हें बुला कर एक भोलण्टियरका दल संगठित किया।

पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट विलियम्स इस दलके नेता बनाये गये। अविश्रान्त शिक्षा और उत्साह दे कर तीन दिनके भीतर ही विलियम्सने उन लोगोंको युद्धक्षम एक सैन्यदलमें परिणत किया। दो एक दिनके मध्य ही एक दल विद्रोहीका दमन करनेको निकला। पहली ही बार उस दलने विपक्षीको पराभूत, हताहत और बन्दी कर तीन ग्राम पुनः अंगरेजोंके दखलमें कर लिये। इतने दिनों तक राजकर बंद था, अब वह भी वसूल होने लगा। किंतु डानलप इतने पर भी निश्चिन्त और निश्चेष्ट न हुए। वे ससैन्य दौरेमें निकले। विद्रोहियोंके अत्याचारसे भीत और उत्पीडित अधिवासियोंको आश्वस्त और अत्याचारियोंको पराहत कर वे चारों ओर अंगरेजोंकी गोटी फिरसे जमाने लगे।

चारों ओर अंगरेज और अन्यान्य यूरोपीयगण जब विद्रोहियोंके अत्याचार और उत्पीडनके भयसे कातर और उद्विग्न हो उठे थे, तब भी लार्ड कैनिङ्गने अपना कर्त्तव्य छोड़ा नहीं था, वे धीरगम्भीर भावसे आगे ही बढ़ते जा रहे थे। बारकपुर और दानापुरकी देशी सेनाओंको निरस्त्र और कर्मच्युत करनेके लिये कलकत्तेके अधिवासियोंने जो जोर पकड़ा था, उस ओर लार्ड कैनिङ्गने ध्यान तक भी नहीं दिया। आखिर जब देखा, कि सचमुच इन लोगोंकी प्रभुभक्ति और सत्यताके सम्बन्धमें सन्देह करनेके यथेष्ट कारण पाये जाते हैं, तब उन्होंने सिपाहियोंसे हथियार छीन लेनेका हुकुम दे दिया। कलकत्तेके यूरोपीय और अन्यान्य ईसाई सम्प्रदाय 'भोलण्टियर' का काम करनेको तैयार होने पर पहले तो कैनिङ्गने बाधा डाली, पर पीछे जब उन्होंने देखा, कि स्थानीय बदमाश मुसलमानों और पार्श्ववर्ती स्थानोंके असंतुष्ट सिपाहियोंके हाथसे कलकत्तेमें अत्याचार खड़ा होनेकी विशेष सम्भावना हो गई है, तब १२वीं जूनको उन्होंने यह भोलण्टियर दल संगठन करनेका हुकुम दे दिया। नेपालके पोलिटिकल एजेण्ट रामसे द्वारा वहांके प्रधान मंत्री और सर्वमय कर्त्ता जङ्गबहादुरसे सहायता पानेके लिये भी बातचीत चल रही थी। तदनुसार हेनरी लारेन्सकी सहायताके लिये तीन हजार गुर्खा सेना २३वीं जूनको रायामुण्डसे भेजी गई।

१३वीं जूनको बड़े लाटने एक कानून निकाला। समाचार-पत्र वालोंने उसका गैगिङ्ग (कण्ठरोध) ऐक्ट नाम रखा था। इस ऐक्टके अनुसार प्रत्येक मुद्रकको सरकारसे लाइसेन्स लेना होता था तथा शासनविभागके अधिकारी जो सब पुस्तक और प्रबन्ध आपत्तिजनक समझते थे, उन्हें जब्त कर लेते थे।

बारकपुर और दानापुरके दलको पहले ही निरस्त्र किया जा चुका था। १४ वीं जूनको दमदमा और कलकत्तेके दल भी वैसे ही किये गये। यह दिन सिपाही-विद्रोहके इतिहासमें एक चिरस्मरणीय है। ऐसी अफवाह फैली, कि बारकपुरके सिपाही अपने कर्तृपक्षोंका विनाश कर सकनेसे ही कलकत्तेकी ओर रवाना होंगे तथा यहां अयोध्याके नवाबके जो सब सशस्त्र अनुचर हैं, उन लोगोंके साथ मिल कर ईसाइयोंकी शोणितसे गङ्गाके जलको रंगा देंगे। इस अफवाहसे वणिक् और व्यवसायी उतने विचलित नहीं हुए, किंतु जो सब उच्च राजकर्मचारी इतने दिनों तक विपदकी आशङ्कासे नाक सिकुड़ाये हुए थे, अभी वे घर द्वार छोड़ कर, प्राण ले कर भागे और गङ्गामें जहाज पर जा बैठे। निम्नतन कर्मचारी और यूरेसियन चौरङ्गीका मैदान पार कर दुर्गद्वार पर आये और भीतर घुसनेके लिये दुर्गाध्यक्षको तंग तंग करने लगे। यहांके बाशिंदे भी जहाँ तहाँ डरके मारे आश्रय लेने लगे। सारा दिन इसी प्रकार बीत गया—किसीने भी आक्रमण नहीं किया। रात आई—सवेरा भी हुआ, परन्तु कोई ऊधम नहीं, शहर भरमें शान्ति विराजने लगी।

दूसरे दिन सोमवारको फिर एक भीषण घटना घटी। अयोध्या-नवाबके अनुचर सशस्त्र थे, मालूम हुआ, कि उन लोगोंकी सहानुभूति विद्रोहियोंकी ओर है। केवल यही नहीं, वे लोग दुर्गस्थ सिपाहियोंको कलुषित करनेके लिये भी चेष्टा करने लगे। अब उन लोगोंके सम्बन्धमें चुपचाप बैठा नहीं जा सकता। नवाब और उनके अनुचरोंको आबद्ध करनेके लिये गवर्नर जनरलने एडमण्ड स्टोनको भेजा। चारों ओर पहरा बैठा कर इन्होंने राजप्रासादमें प्रवेश किया। प्रधान मन्त्री और प्रधान प्रधान पारिषदोंको बन्दी कर इन्होंने नवाबके पास जाने

की इच्छा प्रकट की। अंतमें वे नवावको बंदी कर फोर्ट-विलियम दुर्गमें ले आये। इस प्रकार अयोध्याके षड-यंत्रकारीका दल वीर्यहीन बना दिया गया।

किंतु देशमय षड्यंत्र देशमय विद्रोह था। इधर विद्रोही पराजित और निरस्त्र हो रहे थे, उधर वे दूने उत्साहसे कर्मक्षेत्रमें उतर रहे थे। २५वीं जुलाईको दानापुरके सिपाहियोंको निरस्त्र करनेकी कोशिश की गई। जब उन लोगोंको अपने बारूदके थैले फेंकनेको कहा गया। तब उन लोगोंने गोली चलाना शुरू कर दिया। जनरल अनुपस्थित थे, उनका हुकुम पाये विना अङ्गरेजी सेना कुछ भी नहीं कर सकती थी। विद्रोहीदल निर्विघ्न पूर्वक शोननदी पार कर गया। २७वीं जुलाईको वे लोग फिर आ पहुंचे। पहले ही संवाद पा कर अङ्गरेजी सेना और कर्मचारिगण प्रस्तुत थे। कारागार तोड फोड कर कैदियोंको भगा कर और कोषागार लूट कर विद्रोही दलने दुर्ग पर आक्रमण कर दिया, किंतु वे कुछ भी कर न सके। तब वे लोग दुर्गको घेर कर गोलीसे दुर्ग उडानेकी कोशिश करने लगे। किंतु अङ्ग रेजोंके सौभाग्यवशतः २९वीं जुलाईको एक दल अङ्ग रेजी सेना ले कर डानवर साहब फिर सहायतामें आ पहुंचे। विद्रोहियोंके साथ तुमुल सग्राम चलने लगा। स्वयं डानवर मारे गये, बहुत-सी अङ्गरेजी सेना हताहत हुई, कुछ शोननदीकी ओर भाग चले। आखिर किसी प्रकार दानापुर पहुंच कर उन लोगोंने आत्मरक्षा की। इतना होने पर भी उन लोगोंने शत्रुके हाथ आत्मसमर्पण नहीं किया।

इधर मिनसेण्ट आयर कलकत्तेसे इलाहाबाद जा रहे थे। २८वीं जुलाईको बक्सर पहुंच कर उन्होंने सुना, कि विद्रोहियोंने आरे पर छापा मारा है। अब वे उसका उद्धार करनेके लिये अग्रसर हुए। १ली अगस्तको शामको वे पासवाले गुजराजगञ्ज नामक ग्राममें पहुंचे। यहां शत्रुसेनाके साथ उनकी गहरी मुठभेड हुई। बड़ी मुश्किलसे उन्होंने जयलाभ कर आरा उद्धार किया। २०वीं अगस्तको वे फिर इलाहाबादकी ओर अग्रसर होने लगे।

इलाहाबादमें पहले शांति और शृङ्खला थी। ४थी जूनको जब वाराणसीविद्रोहका संवाद मिला, तब मालूम हुआ, कि वाराणसीसे भगाये जा कर विद्रोही-दल यहां पहुंचेगा तथा स्थानीय सिपाही और अन्यान्य मनुष्य उनका साथ देंगे। यथार्थमें ६ठी जूनको सिपाही लोग बागी हो गये, वाराणसीके दलने भी आ कर उन लोगोंका साथ दिया। तुमुल सग्राम छिड गया, जो सब अङ्गरेज दुर्गमें आश्रय ले न सके, वे शत्रुके हाथसे यमपुर सिधारे। बहुतसे हिन्दू भी हताहत हुए, उनका माल असबाब लुट गया। कुछ घंटेके भीतर ही इलाहाबादमें अङ्गरेजोंका प्रभुत्व अन्तर्हित हो मुसलमानी पताका उडने लगी। दुर्गके भीतर बहुतसे अंगरेजोंने जा कर आश्रय लिया था; मुसलमान लोग दुर्ग जीतनेके लिये प्राणपणसे चेष्टा करने लगे, किन्तु ११वीं जूनको नेइलने आ कर उन लोगोंको पराजित किया और आप दुर्गमें घुस गये। धीरे धीरे उन्होंने विद्रोहियोंका दमन कर इलाहाबाद और पार्श्ववर्त्ती स्थानोंको अंगरेजी-शासनके अन्तर्भुक्त कर लिया।

२३वीं मईको कानपुरमें विद्रोह-आरम्भका संवाद लखनऊ पहुंचा। ३०वीं मईको लखनऊके सिपाही बागी हो गये। किन्तु सभी सिपाहियोंने इसमें योगदान नहीं किया था। ३१वीं मईको वे लोग फिर युद्ध करनेके लिये तुल गये। इस बार भी उन लोगोंकी हार हुई। उन लोगोंमेंसे कुछ अङ्गरेजोंके हाथ बंदी हुए। इधर अयोध्याप्रदेशके नाना स्थानोंमें विद्रोहका आरम्भ हुआ। ३री जूनको सीतापुरके कमिश्नर साहब तथा और भी कुछ अङ्गरेज और बालकबालिका मारी गई। इसके बाद चारों ओर विद्रोहकी आग धधकने लगी। कई स्थानोंमें अङ्गरेज लोग हताहत हुए। किन्तु लखनऊ अब तक भी अंगरेजोंके ही काबूमें था। मुची-भवनमें ला कर विद्रोहियोंको फांसी दी गई तथा रेसिडेन्सीको सुरक्षित करनेके लिये अच्छा प्रबंध किया गया।

२९वीं जूनको यह खबर मिली, कि दश मील दूरवर्त्ती चिनहाट नामक स्थानके पास एक दल विद्रोही डटा हुआ है और वे लोग शीघ्र ही लखनऊ पर आक्रमण

करेंगे। ३०वीं जूनको लारेन्स उन लोगों पर आक्रमण करनेके लिये बाहर निकले। भीषण युद्धमें उनकी बहुतसी सेना मारी गई। कुछ उपाय न देख उन्होंने सेनाको लखनऊ भाग जानेका हुक्म दिया। रेसिडेन्सीमें भारी हलचल मच गया, वे जिधर तिधर भागने लगे। शत्रुपक्षने भी आ कर उन लोगोंको चारों ओरसे घेर लिया। २री जुलाईको स्वयं लारेन्स मारे गये। धीरे धीरे अंगरेजी सेना घटने लगी और विद्रोहियोंकी संख्या और उत्साह बढ़ने लगा। जो सब अंगरेज अवरुद्ध किये गये थे, उन पर बड़ी मुसीबत बीती, फिर भी वे लोग १६वीं सितम्बर तक प्राणपणसे आत्मरक्षा करने लगे।

कानपुर और लखनऊका उद्धार करनेका भार विख्यात योद्धा हेनरी हैभलाकके ऊपर सौंपा गया। ७वीं जुलाईके अपराह्नकालमें वे इलाहाबादसे रवाना हुए। फतेपुरके पास ही एक दल विद्रोहीके साथ उनकी मुठभेड़ हुई। इस युद्धमें विपक्ष अपनी अपनी कमान-बंदूक फेंक कर भाग चले। किन्तु १५वीं जुलाईको उन लोगोंने फिर आर्यानाक स्थानमें इकट्ठे हो हैभलाककी गति रोकनेकी चेष्टा की। यहां भी उन लोगोंकी हार हुई। पीछे वे सब-के सब पाण्डुनदी नामक स्थानमें युद्धके लिये तैयार हो गये। यहां एक गहरी नदी थी, उस पर एक पुल था। शत्रु लोग उस पुलको उड़ा देनेकी कोशिश करने लगे। किन्तु चतुर अमन पराक्रमी हैभलाकने शीघ्र ही वहां जा कर उन लोगों पर आक्रमण कर दिया। बहुतेरे हताहत हुए और वे अपने अपने अस्त्रशस्त्रको रख कानपुरकी ओर भाग खड़े हुए।

दूसरे दिन थकी-मांदी सेना ले कर हैभलाक २३ मील दूरवर्ती कानपुरकी ओर दौड़ पड़े। १६ मील जाने पर उन्हें मालूम हुआ, कि पांच हजार सेना ले कर नानासाहब उन्हें रोकनेके लिये आ रहे हैं। बस फिर क्या था, हैभलाक युद्धके लिये प्रस्तुत हो गये। बहुत देर तक तुमुल संग्राम चलता रहा। हैभलाकके रणकौशल तथा उनके अधीनस्थ सेनापति और सेनाओंकी वीरत्व और उत्साहसे शत्रुसेना हार खा कर कानपुरको भाग गई। किंतु पीछे फिर वे लोग लौटे और विपक्षियोंसे संग्राम करने लगे इस बार दोनों ही पक्षकी सेना हताहत हुई थी। आखिर नाना साहब अंगरेजोंकी गोलागोलीके सामने ठहर न सके और दल-बलके साथ कानपुर छोड़ बिठुरकी ओर भाग गये। अंगरेजोंका आगमन-संवाद सुन कर हजारों नगरवासी भी कानपुरका परित्याग कर चारों ओर भागने लगे। १७वीं तारीखको हैभलाकने कानपुरमें प्रवेश किया, किन्तु जिन्हें वे उद्धार करने आये थे, उन्हें देख न पाये—उन लोगोंके खूनसे जमीन तराबोर हो रही थी।

१८वीं जुलाईको उन्होंने अधिकतर सुरक्षित नवाबगञ्जमें पड़ाव डाला। २०वीं जुलाईको इलाहाबादसे नेइल आ पहुंचे। कानपुरका रक्षाभार उन्हींके ऊपर छोड़ २५वीं जुलाईको हैभलाक गंगा पार कर लखनऊकी ओर रवाना हुए। २९वीं जुलाईको उन्नाव शहरके पास एक दल शत्रुसेनाके साथ उनकी मुठभेड़ हुई। बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। आखिर अस्त्रशस्त्र शत्रुके हाथ समर्पण कर वे लोग किसी प्रकार जान ले कर भागे। कुछ मील और आगे जाने पर बसिरतगञ्ज नामक स्थानमें शत्रुसेनाके साथ फिर उनका मुकाबला हुआ। यहां भी हैभलाकने जयलाभ किया था।

बसिरतगञ्जमें हैभलाक साहबको दो बार शत्रुओंका सामना करना पड़ा था, हरएक बार उन्हीं की जीत होती गई थी। पीछे हैभलाक साहबने जब सुना, कि बिठुरमें तातिया तोपीके अधीन शत्रुपक्ष प्रबल होता जा रहा है, तब उन्होंने बिठुर पर चढ़ाई कर दी। दोनों पक्षमें बहुतसी सेनाके हताहत होनेके बाद अंगरेज सेनापतिने बिठुरसे विद्रोहियोंको निकाल भगाया। इसके बाद नये बलसे बलवान् हो हैभलाक २१वीं सितम्बरको लखनऊकी ओर दौड़ पड़े। उसी दिन मङ्गलवार नामक स्थानमें शत्रुसेनाके साथ उनकी एक बार गहरी मुठभेड़ हुई। बड़ी आसानीसे उन लोगोंको परास्त कर हैभलाक २३वीं सितम्बरको लखनऊके पास आलमबाग नामक स्थानमें आ पहुंचे।

इधर अंगरेजी सेनाने जा कर ८वीं जूनको दिल्ली घेर लिया। शत्रुकी संख्या ३०००० और उन लोगोंकी संख्या ८००० हजारसे ऊपर नहीं थी। ११वीं सित-

म्बरको कुछ अंगरेजी सेनाने जा कर दुर्ग पर चढ़ाई कर दी। भीषण युद्धके बाद काश्मीरद्वार हाथ लगा। पीछे चार लाइनमें विभक्त हो सारी अंगरेजी सेनाने जा कर दिल्ली दुर्गमें प्रवेश किया, किंतु शत्रुके सभी सुरक्षित स्थान हस्तगत करनेमें और भी पांच दिन लगे थे। १४ से १७वीं सितंबर तक अंगरेजोंको जरा भी चैन न था। कालेज, कोतवाली, गिरजा, कचहरी, बारूदखाना, बैङ्क आदि इन्हीं थोड़े दिनोंमें उन लोगोंके हाथ लगे। दिल्लीके वृद्ध राजा सिराजउद्दीन हैदरशाह-बाजी दो पुत्रोंके साथ बन्दी हुए। दोनों पुत्र गोलीके शिकार बने। राजाको बन्दी कर रंगून भेज दिया गया। यहां पर १८६२ ई०में उनकी मृत्यु हुई। दिल्लीसे पराजित और विताड़ित हो विद्रोही दल आगरेकी ओर भाग चला। कर्नल ग्रेटहेडने ससैन्य उन लोगोंका पीछा किया। बुलन्दशहरमें उन लोगोंके एक दलको परास्त कर मालगढ़का दुर्ग विध्वस्त कर डाला तथा अलीगढ़में जा कर एक दूसरे दलको परास्त और विध्वस्त किया। विद्रोही दल धीरे धीरे निस्तेज और हतोत्साह होने लगा। २५वीं सितम्बरको आउटराम और हैवलाकने जा कर लखनऊके कैदियोंका उद्धार किया, किंतु तब भी शत्रु संख्या प्रबल थी। १८५८ ई०को मार्च मासमें कोलिन कैम्बेल लखनऊ पहुंचे। सिकन्दरबागमें तुमुल संग्राम छिड़ा। दो हजारसे ऊपर विद्रोही रणक्षेत्रमें मारे गये—दक्षिण-पूर्वकोणके देशोंमें अंगरेजोंकी विजयपताका फिर उड़ने लगी। किंतु विद्रोही दल तब भी शहरका मध्यभाग अधिकार किये बैठा था। कैम्बेलने लखनऊमें घेरा डाला। धीरे धीरे शत्रुओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त और निरुत्साह करने लगे। बहुतोंने भाग कर जान बचाई। आखिर २१वीं मार्चको लखनऊ सदाके लिये विद्रोहीके हाथसे निकल कर अंगरेजोंके हाथ आया।

विद्रोहकी बाढ़ पश्चिम और पूर्व बिहार, बङ्गाल और छोटानागपुरमें भी उमड़ पड़ी। यहां कुमारसिंहके साथ आजमगढ़में अंगरेजी सेनाका युद्ध हुआ। इस युद्धमें अंगरेजोंकी जीत हुई। भागलपुरमें भी विद्रोहानल धधक उठा था, पर वह शीघ्र ही बुझ गया। छोटा नागपुरकी असभ्य जातियोंने कुछ दिनों तक ऊधम मचाया था, किन्तु १८५८ ई०के प्रारम्भमें वे लोग काबूमें आ गये।

बम्बईप्रदेशमें भी कई जगह विद्रोह खड़ा हो गया था, किन्तु गवर्नर लार्ड एलफिनष्टनकी तीक्ष्ण परिणामदर्शिता और सुकौशलसे उतना अनिष्ट न हो सका।

किन्तु मध्य भारतवर्षको ले कर कम्पनी भारी चिन्तामें पड़ी हुई थी। यहां इस समय होलकर राज्यमें हेनरी-डुरण्ड नामक गवर्मेण्टके एक प्रतिनिधि रहते थे। वे पहले से ही विद्रोहके लिये तैयार थे। होलकर भी अंगरेजोंके प्रति सदा भक्ति और अनुरक्ति दिखाया करते थे। इन्दौर, मालव, धार आदि स्थानोंमें भी सामान्य विद्रोह दिखाई दिया था। गोआरिया नामक स्थानमें विद्रोहियोंको परास्त कर डुरण्ड फिर इन्दौर वापस आये।

झांसीमें भयानक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। वहांकी रानी विद्रोही दलमें मिल गई थी। यूरोपीय स्त्री पुरुष बालक बालिकाकी बड़ी निष्ठुरतासे हत्या की गई। इसके बाद नौगांवमें भी सिपाही बागी हो गये थे। नाना प्रकारका अत्याचार सहते हुए अंगरेजोंने बांदा नामक स्थानमें भाग कर जान बचाई। बुन्देलखण्डके अधिवासियोंने भी विद्रोहियोंका साथ दिया था। सागर और नर्मदाराज्यमें भयानक विद्रोह संघटित हुआ। सागरके अंगरेज अधिवासी १ली जुलाईसे १८वीं सितम्बर तक दुर्गमें आबद्ध रहे। हैदराबादके निजाम अंगरेजोंके भक्त रहने पर भी सबोंको काबूमें नहीं रख सके। १७वीं जुलाईको एक दल रोहिलाने जा कर अंगरेज रेसिडेन्सी पर छापा मारा, किन्तु वे शीघ्र ही वहां से खदेड़े गये।

मध्यप्रदेशके नाना स्थानोंमें विद्रोहका संवाद पा कर सर ह्यू रोज बम्बईसे एक दल सेना ले कर झांसीकी राहसे कालपीकी ओर रवाना हुए। १६वीं दिसम्बरको वे इन्दौर पहुंचे। रथगढ़में विद्रोहियोंका एक अड्डा था। रोजने जा कर उस स्थानको घेर लिया। कुछ दिन आत्मरक्षाकी चेष्टा करके २८वीं जनवरी (१८५८ ई०) को विद्रोही लोग दुर्ग छोड़ भाग गये। इसके बाद बरोदिया नामक स्थानमें उन्होंने विद्रोहियोंको परास्त किया और सागर प्रदेशमें जा कर अंगरेजोंकी नष्ट प्रतिपत्ति फिर

से जमाई। गत वर्ष झांसीमें जो भीषण हत्याकाण्ड हुआ था, उसका प्रतिशोध लेनेके लिये रोज उन्मत्त हो गये और झांसीकी ओर रवाना हुए। राहमें शाहगढ़ नामक स्थानमें विद्रोहियोंने उन्हें रोकना चाहा। इस सूत्रसे दोनों में गहरी मुठभेड़ हो गई। आखिर शत्रु हार खा कर भाग चले। १७वीं मार्चको अंगरेजी सेनाने बेतोया नदी पार कर झांसीकी तरफ अभियान किया। दूसरे दिन यह खबर मिली, कि विद्रोहियोंका एक दूसरा स्थान चन्देरी भी अंगरेजोंके हाथ आ गया है।

२१वीं मार्चके सवेरे साढ़े सात बजे अंगरेजी सेना झांसीके सामने आ धमकी। इसी समय चन्देरीका दल भी पहुंच गया। ह्यूरोज उस समय दुर्गको भी अधिकार कर बैठे थे। अब दोनों पक्षमें घमसान युद्ध चलने लगा। ३० और ३१ मार्चको दुर्गवासियों-ने प्राणपणसे दुर्गरक्षाकी चेष्टा की। यहां तक, कि स्त्रियोंने भी बन्दूक उठाई। संध्या समय यह समाचार मिला, कि झांसीकी रक्षाके लिये तातिया तोपी दलबलके साथ आ रहे हैं। दुर्गवासियोंका उत्साह सौ गुना बढ़ चला। हताश नहीं होने पर भी अंगरेजी सेना उद्विग्न और भयभीत हो गई थी। इधर एक अपूर्व वीराङ्गनाके नेतृत्वसे दुर्गवासी उन लोगोंकी सब चेष्टाएं व्यर्थ कर रहे थे। उधर तातिया जैसे एक वीरपुरुषके नेतृत्वमें २२००० हजार विद्रोही उन पर आक्रमण करनेकी चेष्टा कर रहे थे। रोज चुपचाप बैठ न सके, उन्होंने कुछ ले कर बेतोया नदी पार कर तांतिया पर चढ़ाई कर दी। १ली अप्रिलको तुमुल युद्धके बाद बहुतसे हताहत हुए। पीछे अठाईस बंदूक फेंक तातिया नदी पार कर चम्पत हो गये।

अनन्तर रोजने असीम साहससे झांसी पर आक्रमण कर दिया। ३री अप्रिलको विपक्ष पीछे हटने लगे, एक एक कर अङ्गरेजी सेनाने नगर दखल कर लिया। कोई उपाय न देख रानी ४थी रातको कुछ अनुचरोंके साथ काल्पी नामक स्थानमें भाग गई। २५ वीं तारीखको ह्यूने काल्पीकी ओर प्रस्थान किया, किन्तु राहमें उन्हें मालूम हुआ, कि तांतिया तोपी कुञ्च नामक स्थानमें ठहरा हुआ है। इस बार उसका दल पहलेसे कहीं मजबूत है। ह्यूने ६ठी मईको कुञ्चमें आ कर विपक्षियों पर आक्रमण कर दिया। अतिरिक्त परिश्रम, तृष्णा और तापसे बहुतसे अंगरेजी सेना मारी गई। फिर भी विद्रोही उनके मुकाबलेमें खड़े नहीं रह सके। उन लोगोंमेंसे अनेको हताहत हुए, तांतिया भाग गया। जो सब विद्रोही बच गये थे, उन्होंने काल्पी जा कर बांदा नवाबका आश्रय लिया। यहां नाना साहबका एक भतीजा राव साहब रहता था। उसने तथा रानीने मिल कर इन लोगोंको खूब उत्तेजित और उत्साहित कर डाला।

२२वीं मईको काल्पीके निकटवर्ती गलौली नामक स्थानमें अंगरेजी सेनाके साथ उन लोगोंका युद्ध हुआ, पीछे वे सभी जान ले कर भागे। काल्पी अंगरेजोंके हाथ आया। झांसीकी रानी और राव साहब पास ही गोपालपुर नामक स्थानमें छिप रहे। इसी समय तांतिया तोपीने आ कर उन दोनोंका साथ दिया। आपसमें यह सलाह हुई, कि वे लोग ग्वालियर जा कर सिन्धियाकी सेनाको अंगरेजोंके विरुद्ध उत्तेजित करेंगे। जो थोड़े अंगरेजी सैन्यसामन्त थे, उन्हींको ले कर ये लोग ग्वालि-यरके सामने उपस्थित हुए। १ली जूनको सिंधियाने जा कर उन लोगों पर धावा बोल दिया, किंतु उनकी सेना शत्रु-सेनामें मिल गई। निरुपाय देख वे स्वयं आगरेकी ओर चम्पत हुए। दुर्ग, कोषागार और अस्त्रागार आदि विपक्षियोंके हाथ आये। नाना साहबको पेशवा कह कर घोषित किया गया।

संवाद पाते ही ह्यूरोजने ग्वालियरकी तरफ कदम बढ़ाया। ग्वालियरके पास मोरार नामक स्थानमें शत्रु सेनाके साथ उनका प्रथम संघर्ष हुआ। शत्रुओं-के कितने हताहत हुए। बचे खुचे जान ले कर भागे। यह घटना १६वीं जूनको घटी। मोरार अङ्गरेजोंके दखलमें आया।

१८वीं जूनको कोटाकी सराय नामक स्थानमें स्मिथ-के अधीनस्थ अंगरेजी सेनाके साथ ग्वालियरके विद्रोही सैन्यदलका तुमुल संग्राम छिड़ा। विद्रोहीगण हार खा भाग खड़े हुए। जो सब मारे गये थे, उनमेंसे पुरुषके वेशमें रानीकी मृतदेह भी पाई गई थी।

१६वीं जूनको ह्यू रोजने जा कर ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया। तुमुल युद्धके बाद विपक्षगण चारों ओर भागने लगे। अंगरेजी सेनाने जा कर ग्वालियर अधिकार किया, किन्तु तब भी दुर्ग शत्रुके ही हाथ था। २०वीं जूनको भीषण संग्रामके बाद वह भी अधिकृत हुआ। सिन्धिया फिर अपने राज्यमें प्रतिष्ठित हुए।

तातिया और राव साहब भाग गये थे। जोरा अलीपुरमें अंगरेजी सेनाने उन पर चढ़ाई कर दी। वे दोनों हार खा कर राजपूताना भाग गये। इसके बाद कई जगह तातियाके साथ अंगरेजोंकी मुठभेड़ हुई। सभी स्थानोंमें वे हारते गये, किन्तु लाख चेष्टा करके भी वे तातियाको पकड़ न सके। आखिर मानसिंह नामक तातियाके एक अनुचरने विश्वासघातकता कर १४वीं अप्रिलकी रातको सोते समय उसे अंगरेजोंके हाथ पकड़वा दिया। १८वीं अप्रिलको उसे फांसी हुई। इसके बाद ही विद्रोहवह्नि शान्त हो गई। दो एक जगह चिनगारियां उठी भी, तो वह तुरत बुझा दी गई। १८५८ ई०को ३०वीं नवम्बरको अवशिष्ट विद्रोहियोंमेंसे कुछने आत्मसमर्पण किया और कुछ नेपाल प्रान्तसीमा पार कर गये। धुन्धुपन्थ नानाका भी तभीसे कोई संवाद न मिला।

विद्रोहदमन होनेके साथ ही साथ विक्टोरियाने कम्पनीके हाथसे भारतका शासनभार ग्रहण किया और १८५८ ई०को १ला नवम्बरको उनका प्रसिद्ध घोषणा-पत्र निकाला गया।

सिपिल (सं० पु०) एक बौद्धाचार्य।

सिपुन (सं० पु०) लताभेद।

सिप्पर (फा० स्त्री०) सिपर देखो।

सिप्पा (हिं० पु०) १ निशाने पर किया हुआ वार, लक्ष्य वेध। २ कार्यसाधनका उपाय, डौल, युक्ति, तदबीर। ३ सूत्रपात, डौल, प्रारम्भिक कार्रवाई। ४ प्रभाव, रंग, धाक।

सिप्र (सं० क्लो०) १ सरोवरविशेष। (पु०) २ चन्द्रमा। ३ निदाघ सलिल। ४ घर्म, पसीना।

सिप्रा (सं० स्त्री०) १ उज्जयनीकी एक प्रसिद्ध नदी, शिप्रानदी। २ हिमालयके समीप अवस्थित एक नदी। कालिकापुराणमें लिखा है, कि विधाताने देवताओंके उपभोगके लिये हिमालयशृङ्ग पर एक सरोवर खोदवाया, इसीका नाम सिप्र है। यह अत्यन्त मनोरम है। यहां तक, कि महादेव जब सतीविरहसे कातर हो इधर उधर घूम रहे थे, तब इसी सरोवरके किनारे आ कर और इसकी मनोरम शोभा देख कर वे क्षणकालके लिये अपना शोक भूल गये थे।

देवगण इस सरोवरकी बड़े यत्नसे रक्षा करते थे। मानवगण यदि इस सरोवरमें स्नान और इसका जल पान करे, तो वे सदा सबल और अमर होते हैं।

वशिष्ठदेवका जब अरुन्धतीके साथ विवाह हुआ, तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वरने वेदमन्त्रका पाठ कर शान्तिविधान किया अर्थात् शान्तिजल छिड़का। वह शान्तिजल अत्यन्त प्रवृद्ध हो मानस पर्वतको गुहाको चीरता फाड़ता सिप्रसरोवरमें आ गिरा। यह सरोवर सर्वदा समानभावमें रहता था, किन्तु यह जल इसमें पतित हो कर प्रति दिन बढ़ने लगा। विष्णुने इस सरोवरको प्रति दिन बढ़ता देख चक्र द्वारा गिरिशृङ्ग काट डाला। इससे वह बढ़ी हुई जलराशि उस छिन्न मार्ग द्वारा महेन्द्रपर्वतके चारों ओर घूम कर दक्षिण सागरमें प्रविष्ट हुआ। सिप्रसे होनेके कारण ब्रह्माने इसका सिप्रा नाम रखा। यह नदी गङ्गाके समान पूतसलिला है। जो इस नदीमें स्नान, दान और पितरोंके तर्पणादि करते हैं, उन्हें गङ्गानदीके समान फल होता है।

(कालिकापु० १६ अ०) शिप्रा देखो।

सिफत (अ० स्त्री०) १ विशेषता, गुण। २ लक्षण। ३ स्वभाव। ४ सूरत, शक्ल।

सिफर (अ० पु०) शून्य, सुन्ना।

सिफलगी (अ० स्त्री०) ओछापन, कमीनापन।

सिफला (अ० वि०) १ नीच, कमीना। २ छिछोरा, ओछा।

सिफलापन (अ० पु०) १ छिछोरापन, ओछापन। २ पाजीपन।

सिफा (अ० पु०) शिफा देखो।

सिफारिश (फा० स्त्री०) १ किसीके दोष क्षमा करनेके लिये किसीसे कहना सुनना। २ किसीके पक्षमें कुछ

कहना सुनना, किसीका कार्य सिद्ध करनेके लिये किसीसे अनुरोध। ३ नौकरी देनेवालेसे किसी नौकरी चाहनेवालेकी तारीफ, नौकरी दिलानेके लिये किसीकी प्रशंसा।

सिफारिशी (फा० वि०) १ सिफारशवाला, जिसमें सिफारिश हो। २ जिसकी सिफारिश की गई हो।

सिफारिशी टट्टू (फा० पु०) वह जो केवल सिफारिश या खुशामदसे किसी पद पर पहुंचा हो।

सिम (सं० पु०) सि-बन्धने (अविसिविसिशुषिभ्यः कित्। उण् १।१४३) इति मन् स च कित्। १ समुदाय, सर्व। (लि०) २ श्रेष्ठ। (ऋक् १।१०२।६)

सिमई (हिं० स्त्री०) सिवईं देखो।

सिमगा—१ मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेका एक उपविभाग। भूपरिमाण १४०१ वर्गमील है।

२ उक्त जिलेका एक नगर। मध्यप्रदेश और उक्त जिलेमें यह एक प्रधान नगर तथा तहसीलका विचार सदर है। यह रायपुर नगरसे २८ मील उत्तर विलासपुर जानेके रास्ते पर शिवनदके किनारे अवस्थित है।

सिमट (हिं० स्त्री०) सिमटनेकी क्रिया या भाव।

सिमटना (हिं० क्रि०) १ दूर तक फैली हुई वस्तुका थोड़े स्थानमें आ जाना, सुकड़ना। २ शिकन पड़ना, सलवट पड़ना। ३ व्यवस्थित होना, तरकीबसे लगाना। ४ संकुचित होना, लज्जित होना। ५ सहमना, सिटपिटा जाना। ६ इधर उधर बिखरी हुई वस्तुका एक स्थान पर एकत्र होना, बटोरा जाना, बटुरना। ७ पूरा होना, निबटना।

सिमटी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कपड़ा जिसकी बुनावट खेसके समान होती है।

सिमरगोला (हिं० पु०) एक प्रकारकी मेहराब।

सिमरावन (शिवरावन)—चम्पारण जिलेका एक प्राचीन ध्वस्त नगर। इसका कुछ अंश अभी नेपाल-सीमामें पड़ता है। आज भी यहां दुर्गका जो ध्वस्त निदर्शन देखा जाता है, वह चतुष्कोण है और १४ मील घेरेके बहिःप्राचीरसे घिरा है। इसके भीतरी ओर १० मील परिधिकी एक दूसरी प्राचीर-परिवेष्टनी है। इन दोनों प्राचीरवेष्टनीमें बहुत-सी बड़ी बड़ी अट्टालिकायें देखी जाती हैं। वे सभी अट्टालिकायें ध्वस्त और इधर उधर पड़ी हुई हैं। अभ्यन्तर भागमें इसका नामकी एक दिग्गी है जिसकी लम्बाई ६६६ हाथ और चौड़ाई ४२० हाथ होगी। स्थानीय मन्दिरादि और राजप्रासादसे स्थापत्यशिल्पका यथेष्ट परिचय पाया जाता है। वह साधारणतः ईंटोंके ऊपर खुदाई किया हुआ है। नगरके ठीक मध्यस्थलमें प्रासाद और गोपुर उत्तरमें अवस्थित है। दोनों अट्टालिकायें ध्वस्तस्तूपमें परिणत हो गई हैं। बड़े बड़े वृक्ष उस पर उत्पन्न हो कर उन दोनों स्थानोंको निबिड़ जङ्गलसे ढके हुए हैं। १०६७ ई०में नान्यदेवने यह दुर्ग बनवाया था। उनके वंशके छः राजे यहां महासमारोहसे राज्यशासन कर गये हैं। छठे हरिसिंहदेव १३२२ ई०में मुसलमानों द्वारा राज्यभ्रष्ट हुए।

सिमरिख (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया।

सिमल (हिं० पु०) १ हलका जूआ। २ जूएमें पड़ी हुई खूंटी।

सिमला—युक्तप्रांतके लाटके शासनाधीन एक जिला। यह निम्न हिमालयके पहाड़ी अधित्यकादेशमें अवस्थित है और उस पर्वत अंशके कुछ छोटे छोटे अंशको ले कर संगठित है। उस छोटे छोटे देशभागोंके चारों ओर स्वाधीन पार्वत्य राजाओंके अधिकृत राज्य विद्यमान हैं। वे सब सामन्त सरदार सिमलाके डिपटी कमिश्नरके परामर्शानुसार चलते हैं। सिमला नगर ही यहांका विचार सदर है। यह जिला अक्षा० ३०° ५८' से ३१° २२' उ० तथा देशा० ७७° ७' से ७७° ४३' पू०के मध्य विस्तृत है।

इस जिलेको तथा उसके चारों ओरके सामन्तराज्योंको जो शैलशृङ्गके ऊपर अवस्थित है, पश्चिम हिमालयशैलकी मध्यवाहित सर्वोच्च शैलश्रेणीका दक्षिण सानु कहा जाय, तो कोई अत्युक्ति न होगी। यह मूल पर्वतकी बसहर राज्यसीमासे धीरे धीरे दक्षिण-पश्चिमकी ओर अवतीर्ण हो कर गङ्गा और सिन्धुकी अववाहिकाके मध्यवर्ती अम्बाला जिलेके समतल मैदानमें मिल गया है। सिमला-शैलके पास उन दोनों अववाहिकाओंमें यथाक्रम यमुना और शतद्रु नदी बहती है।

सिमला-शैलावासके किसी एक उन्नत स्थान पर खड़े हो कर सुदूर दक्षिण दृष्टिपात करनेसे सामने सुबाथु और कसौलीका शैलपृष्ठ तथा पीछे अम्बालाका लंबा चौड़ा मैदान दिखाई देता है। इसकी बाईं ओर छोड़ नामक शैल खड़ा है। शैलपृष्ठने मानो क्रमशः ढालू हो कर असंख्य कन्दर और गह्वरकी सृष्टि की है। अद्रिकी नदीप्रवाहित उपत्यकाभूमि अपूर्व शोभा दे रही है। विमानारोही शैलशृङ्ग मानो सृष्टिकर्त्ताकी क्रिया और गंभीरताका परिचय देता है। इस जिलेमें शतद्रु, पावर, गिरिगंगा, गम्भार और सर्सा नदी बहती है।

सिमलाका सेनावास और छावनीको छोड़ सारे जिलेका भूपरिमाण १०१ वर्गमील है। यह स्थान पांच स्वतन्त्र इलाकेमें विभक्त है। १ला कालका इलाका — कालका सिमलाशैल पर चढ़नेका रास्ता कालकासे गया है। पहले सिमलायात्री कालकामें आ कर विश्राम करते थे। यहां उन लोगोंको जब आने जानेमें बड़ी असुविधा हुई, तब पतियालाके महाराजने एक बाजार और रसद आदिका डीपो खोलनेके लिये वृटिश गवर्मेण्टको यहां स्थान छोड़ दिया। २रा—शिव इलाका—नगोठी कालका और कसौल ग्रामके मध्य अवस्थित है तथा कसौलीके निकटवर्त्ती चार छोटे छोटे ग्राम ले कर यह विभाग संगठित है। इसका भूपरिमाण सिर्फ १५ हजार एकड़ है। सिमला शैलावास जानेके पथ पर सुबाथुसे कियारीघाट तक विस्तृत एक निम्न उपत्यकाखण्ड पर भरौली राज्य बसा हुआ है। गुर्खा युद्धके बाद यहांका राजवंश विलुप्त हुआ तथा तभीसे यह स्थान अंगरेजोंके दखलमें आया है। ३रा सिमला इलाका—इसका भूपरिमाण ४ हजार एकड़ है। यहांका कुछ स्थान शैलावास है, केवल दो सौ एकड़में खेतीबारी होती है। १८३० ई०में कैउन्थल और पतियालाके राजाको बदलेमें दूसरी जमीन दे कर वृटिश-गवर्मेण्टने यह जमीन ले ली। ४थे इलाकेका नाम कोट खाई है। यह सिमलासे २० मील दक्षिण गिरि-नदीके उत्पत्तिस्थानके चारों ओर २२ हजार एकड़ परिमित एक छोटा राज्य है। १८२८ ई०में राणा भगवान सिंहने अपनी इच्छासे यह प्रदेश अंगरेजोंके हाथ सपुर्द कर दिया। ५वां इलाका कोट गुरु या कोटगढ कहलाता है। यह सिमलासे २० मील उत्तर पूर्व शतद्रु तीरस्थ ढालू पर्वतके ऊपर ११ हजार एकड़ जमीन ले कर संगठित है। यह पहले कोट-खाइराजके अधिकारमें था पीछे कुलुराजने उनसे छीन लिया। इसके बाद बसहरके राजाने कुलुपतिको परास्त किया और इस पर अपना अधिकार जमाया। अनन्तर प्रायः ४० वर्ष तक यह बसहर-राजाके अधीन रहा। पश्चात् गुर्खासेनाने इसे आक्रमण कर जीत लिया। १८१५ ई०में गुर्खायुद्धके समय कुलुराजको सेना सहायतामें भेजी गई। कुलुराजकी जीत हुई और उन्होंने फिर इस पर अधिकार जमाया।

जिस शैलांश पर सिमलाका स्वास्थ्यावास प्रतिष्ठित है, वह स्थान १८१६ ई०में वृटिश-गवर्मेण्टके अधिकारमें आया। १८३० ई०में केउन्थलके राजाने और भी कुछ जमीन गवर्मेण्टको दी। इस शैलवाससे ३॥ मील दूर जुटोघ नामक एक शैलशिखर देखा जाता है। १८४३ ई०में अंगरेज गवर्मेण्टने पतियालाके महाराजको करौलीके दो ग्राम दे कर उसके बदले यह स्थान लिया। राणा भगवान्सिंहने कोट-खाइ और कोटगढप्रदेशसे कोई विशेष आमदनी न देख यह अंगरेजोंको दे दिया। कसौली पहले विजयराजके शासनाधीन था। अंगरेज गवर्मेण्ट जब कुछ वार्षिक कर देनेको राजी हुई, तब विजयराजने यह गवर्मेण्टको छोड़ दिया। पहले ही अंगरेज गवर्मेण्टने सुबाथु शैलको सेनादलकी छावनीरूप मनोनीत कर रखा था, अन्यान्य अंश इसी प्रकार विभिन्न समयमें अंगरेजोंके हाथ आनेसे सिमला एक जिला कायम किया गया।

सिमला जिलेमें ६ शहर ४२ ग्राम लगते हैं, जनसंख्या ४० हजारसे ऊपर है। शहरोंके नाम ये सब हैं, सिमला, कसौली, दिगसाई, सुबाथु, सोलन और कालका। इन सभी शहरोंमें थोड़ा बहुत वाणिज्य चलता है। सिमला पर्वतजात द्रव्योंका एक प्रधान वाणिज्यकेन्द्र है। दिल्लीसे कालका तक रेलपथ खुल जानेसे सिमलाके शैलवास पर आने और पण्य द्रव्यादि ले जानेमें बड़ा सुविधा हो गई है। कालकासे सिमलाशैल पर जानेका जो पुराना रास्ता गया है, वह कसौली और सुबाथु होते

हुए गया है। वह रास्ता प्रायः ४१ मील लंबा है। घोड़े, खच्चर, पनिघोड़े आदिकी पीठ पर चढ़ कर इस रास्तेसे जानेमें बडी दिक्कत है। टोङ्गा नामक यान ही यहांको प्रसिद्ध सवारी है। दिगसाई और सेलेन हो कर जो बैलगाडीका रास्ता सिमला आया है वह ५८ मील है। दो चक्केवाली गाडी इस पथसे नौ दश घंटेमें आ सकती है तथा इसी पथसे साधारणतः सिमलेका कुल वाणिज्य-व्यवसाय चलता है। अभी मोटर गाडी भी थोड़े ही समयमें आने जाने लगी है। विश्रामके लिये इस पथकी बगलमें थोडी थोडी दूरके फासले पर बङ्गला स्थापित है। कालका, कसौली और सिमलामें टेलिग्राफ स्टेशन है। कुछ दिन हुए रेलगाडी भी जाने लगी है।

अम्बालाके कमिश्नरके अधीनस्थ एक डिपटी कमिश्नर द्वारा यहांका कुल शासनकार्य चलता है। वे पहाडी राज्योंके भी परिदर्शक हैं।

सिमला शैलमालाका जलवायु बडा ही मनोरम है। यूरोपीयके निकट यह विशेष स्वास्थ्यप्रद है तथा इङ्गलैण्डवासीको इङ्गलैण्डकी हवा जैसी अच्छी लगती है, यहांकी आबहवा भी वैसी ही अच्छी है।

विद्याशिक्षामें यह जिला इस प्रदेशके अठाईस जिलेमें सर्वप्रथम है। अभी कुल मिला कर १२ सिकेण्डरी, १६ प्राइमरी, १० इलिमेण्टरी और ४२ प्राइभेट स्कूल हैं। इनमेंसे अधिकांश सिमला शहरमें है। १८४७ ई०में सर हेनरी लावरेन्सने सनावरमें एक स्कूल खोला जिसका नाम Lawrence Asylum रखा गया है। इस स्कूलमें अंगरेजी सैनिकोंके लड़के पढ़ते हैं। स्कूलके अलावा सिमलामें रिपन अस्पताल और वाल्कर अस्पताल हैं। कोटखैमें एक चिकित्सालय भी है।

२ उक्त जिलेका एक विख्यात नगर और विचार सदर। यह अक्षा० ३१° ६´ उ० तथा देशा० ७७° १०´ पू०के मध्य विस्तृत है। समुद्रकी तटसे इसकी ऊंचाई ७०८४ फुट है। रेलगाडी द्वारा कलकत्तेसे इसकी दूरी ११७६ मील, बम्बईसे ११११२ माल, कराचीसे ६४७ मील और बैलगाड़ी द्वारा कालकासे इसकी दूरी ५८ मील है। जनसंख्या १४ हजारके करीब है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है।

भारतवासी यूरोपीयके पक्षमें यह सर्वप्रधान स्वास्थ्यकर स्थान है। शैलपृष्ठ पर जो सब मकान रहनेके लिये बनाये गये हैं, उनकी शोभा वर्णनातीत है। ग्रीष्मप्रधान कर्कट-क्रान्ति सीमासे बहुत उत्तरमें रहनेसे यह स्थान रुक्ष और शैत्यप्रधान है। इस कारण शीतप्रधान भारतके समतल पृष्ठ पर अधिक दिन वास करनेसे जब जी ऊब जाता है, तब वे सिमलाके शैलवासमें आ कर ठहरते हैं, पीछे अंगरेज गवर्मेण्टने इसी स्थानमें भारतसाम्राज्यकी ग्रीष्मकालीन राजधानी मनोनीत की है तथा उस उद्देश्यसे यहां राजपाट स्थापनके उपयोगी कार्यालयादि बनानेकी व्यवस्था भी की है।

भारतकी अन्यतम राजधानी दिल्लीके उत्तर, मध्य हिमालय श्रेणीसे दक्षिण-पश्चिम एक शाखाशैलशिखर पर सिमला नगर अवस्थित है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ७०८४ फुट है। जाडा अधिक पडनेसे अर्थात् नवम्बर महीनेमें यहांके अधिवासी नीचे उतरते हैं। गवर्मेण्टके कर्मचारी भी इस समय दिल्ली राजधानीमें चले जाते हैं। इस कारण जनवरी और फरवरी महीनेमें यहांकी जनसंख्या घट जाती है, मार्चके महीनेसे फिर बढने लगी है। अगस्तमाससे स्वास्थ्यान्वेषी यहा आने लगते हैं, यूरोपीयगण शरत्, वसन्त और शीतको संमिश्रित वायुका सेवन करनेके लिये पूजा-छुट्टीके पहले यहां इकट्ठे होते हैं। इस कारण सितम्बर और अक्टूबरमें ही यहांकी जनसंख्या बहुत बढ़ जाती है।

इतिहास पढ़नेसे जाना जाता है, कि सिमला शैलके जिस अंशमें तथा जिस भूमिखण्डके ऊपर अभी सिमलाका शैलावास प्रतिष्ठित है, १८१५-१६ ई०में गुर्खायुद्धके बाद वह वृटिश गवर्मेण्टके हाथ आया। पहाडी सामन्त सरदारोंके साथ मित्रताकी रक्षा करनेके अभिप्रायसे अंगरेज गवर्मेण्टके असिष्टाण्ट पालिटिकल एजेण्ट लेफटनाण्ट रस साहबने १८१६ ई०में यहीं एक काठका कुटीर बनवाया। उसके तीन वर्ष बाद उनकी जगह पर आये हुए लेफटेनाण्ट केनेडी एक पक्का घर बनवा कर वहां रहने लगे। इस समय उनकी चेष्टासे सिमलाके मनोहर स्वास्थ्य और दृश्यकी बात उनके बंधुबान्धवोंमें प्रचारित हुई। केनेडीने बहुत रुपये खर्च कर एक सुन्दर भवन

बनवाया है, यह सुन कर उनके कर्मक्षेत्रक बंधुबान्धवों तथा अम्बाला और उसके आस पासके स्थानवासी यूरोपीय राजकर्मचारियोंमेंसे बहुतोंने उनका पथानुसरण कर स्वास्थ्य परिवर्त्तनार्थ यहां बहुतसे मकान बनवाये। १८२६ ई०के मध्य इस पार्वत्य उपनिवेशका नाम यूरोपीयगणके मध्य बहुत प्रसिद्ध हो गया। उसके दूसरे वर्ष लार्ड अमहर्ष्ट भरतपुर दुर्ग विजयके बाद उत्तर-पश्चिम प्रदेशमें अन्यान्य स्थानोंके कार्यादि समाप्त कर ग्रीष्मऋतुके प्रारम्भमें सिमला आये और ग्रीष्मऋतु बिता कर ही यहांसे गये।

भारत राजप्रतिनिधिके शुभागमन और वाससे ही सिमलाके शैलावासने उत्तर-भारतवासी यूरोपीय मात्रका ही चित्ताकर्षण किया तथा उसके साथ साथ सिमलाके शैलावासकी उन्नति भी देखी गई। विख्यात सिखयुद्धके बाद पञ्जावप्रदेश जब अङ्गरेजोंके हाथ आया, तब सिमलाका आदर और भी बढ़ गया। क्योंकि इस समयसे उत्तर और पश्चिम भारतके प्रधान प्रधान सरदारोंने अंगरेजोंको सम्मान दिखलानेके लिये प्रतिवर्ष सिमला राजधानीमें आना शुरू किया। यह स्थान पञ्जाबके पास है तथा सरदार लोग भी यहां आसानीसे आ सकते हैं, जान कर गवर्मेण्टने यहीं पर पक्की राजधानी बनाई। फिर यहांसे भारतप्रतिनिधि गवर्नर जनरल बहादुरको शीतकालमें भारतराज्य देखनेकी भी अच्छी सुविधा है।

पहले गवर्नर जनरलके साथ कुछ कर्मचारी सिमला आ कर राजकार्य चलाते थे। किन्तु १८६४ ई०में सर जान लारेन्सके शासनकालमें सिमला ही यथार्थमें अंगरेजोंकी ग्रीष्मकालीन राजधानी निर्वाचित हुई। इस समय सिक्रेटेरियट और विचार विभागके सभी कार्यालयादि यहां प्रतिष्ठित हुए। तभीसे यहां नियमित रूपसे ग्रीष्मके समय भारतराजधानी उठ कर आती है। केवल १८७४ ई०के दुर्भिक्षके समय गवर्मेण्टका राजपाट यहां उठ कर नहीं आया। अधिकारी वर्ग समतलक्षेत्रमें ही बैठ कर दुर्भिक्षसे प्रपीड़ित अधिवासियोंके तत्त्वावधानकार्यमें व्यापृत थे।

पश्चिम प्रान्तमें प्रस्पेक्टहिल नामक एक शैलशृङ्ग उसकी ऊंचाई जाकोसे कम नहीं देखा जाता। वह केवल तृण द्वारा ढका हुआ है। जाको शैलके दक्षिण-पादमूलमें ही बहुतसे लोगोंका वास है। पश्चिम प्रान्तके दूसरे दो शैलांश पर भी आबादी कम नहीं है। इन दोनों शैलोंमेंसे एक पर राजप्रतिनिधियोंका पूर्वतन 'पीटर होफ' नामक प्रासाद था और दूसरे पर मानमन्दिरकी बड़ी अट्टालिका शोभा देती थी। वह मानमन्दिर अभी राजकर्मचारियोंके साधारण वासभवनमें परिणत हो गया है। १८८६ ई०में बड़े लाट साहबके लिये अबजरभेटरी हिल पर एक नया और सुन्दर वासभवन बनाया गया है। वह भवन पूर्वोक्त लाटभवनके पश्चिममें अवस्थित है।

जाकोहिलके पश्चिमपादमूलमें एक गिरजा घर है। उसीके नीचे दक्षिण शैलपृष्ठ पर एक बाजार है। वह सिमलाके शैलावासको देशी और यूरोपीयको दो अंशोंमें विभक्त करता है। बाजारके पूरब जिस अंश पर देशी लोगोंका वास है, वह छोटा सिमला कहलाता है और पश्चिमांश बैलूगञ्ज नामसे प्रसिद्ध है। सिमलाशैलके उत्तर एक दूसरी शैलमाला विस्तृत है। वह नाना प्रकारके प्राकृतिक सौंदर्यसे परिपूर्ण है। यह स्थान इलिसियम स्थापनके लायक समझा गया है। पश्चिम प्रान्तमें ३॥ मील दूर जुटोघ शैलखण्ड पर कमानवाही सैन्यदलका एक अड्डा है।

ग्रीष्मकालमें सिमला शैलावास पर आये हुए व्यक्तियोंके आवश्यकीय द्रव्यादिका संग्रह ही यहांका प्रधान वाणिज्य है। परन्तु यहांसे अफीम, चरस, नाना प्रकारके फल, सुपारी तथा निकटवर्त्ती शैल और रामपुर सीमान्तका पशम दूसरी जगह भेजा जाता है। परिच्छदादि जिस किसी चीजकी जरूरत होती है, वह प्रायः यूरोपीय दूकानदारोंकी दूकानसे ही मिलती है। वे सब दूकान कलकत्तेकी बड़ी बड़ी दूकानोंकी एक एक शाखा है। अभी यहां तीन बैङ्क, क्लब, गिरजा घर, टाउनहाल, १८६६ ई०में स्थापित बिशापकाटन स्कूल, बालिका आकलैण्ड हाई स्कूल, अंगरेजी और देशी अनाथालय तथा म्युनिसिपल हाई-स्कूल है। स्कूलके सिवा रीपन और वालकर अस्पताल भी है।

सिमला आलू (हिं० पु०) एक प्रकारका पहाड़ी बड़ा आलू, मरबुली।

सिमला कम-भरौली—सिमला जिलेके दो ऊसर प्रान्त। यह अक्षा० ३०° ५८′ से ३१° ८′ उ० तथा देशा ७७°१′ से ७७°१५′ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २५ वर्गमील और जनसंख्या ३० हजारके करीब है। इसमें ३५ ग्राम लगते हैं।

सिमला-हिल ष्टेट्स—सिमला शैलावासके चारों ओर २३ सामन्त राज्य ले कर यह विभाग संगठित हुआ है। इसके पूरबमें हिमालयका उच्च प्राचीर, उत्तर पश्चिममें काङ्‌ड़ा जिलेके अन्तर्भुक्त कुलु और स्पितिकी पर्वतमाला तथा शतद्रु नदी, दक्षिण-पश्चिममें अम्बालाका समतल मैदान और उत्तर-पूर्वमें देहरादून और गढ़वालका सामन्त राज्य है। यह अक्षा० ३०° ४६′ से ३२° ५′ उ० तथा देशा० ७६° २८′ से ७६° १४′ पू०के मध्य विस्तृत है। अम्बालाके कमिश्नरके अधीनस्थ एक डिपटी-कमिश्नर द्वारा इन राज्योंको शासनविधि परिचालित होती है। वृटिश गवर्मेण्टकी तालिकामें ये Superintendent of Hill States नामसे परिचित हैं। नीचे सामन्तराज्योंके नाम और संक्षिप्त विवरण दिये गये हैं:—

राज्य	भूपरिमाण	ग्रामसंख्या	देय राजस्व
१ सिरमूर (नाहन)	१०७७	२०६६	
२ विलासपुर (कहलुर)	४४८	१०७३	८०००)
३ वसहर (वसाहिर)	३३२०	८३६	३६४०)
४ हिन्दुर (नालागढ़)	२५२	३३१	५०००)
५ सुकेत	४७४	२२०	११०००)
६ केउन्थल	११६	८३८	
७ वाघल	१२४	३४६	३६००)
८ जब्बल	२८८	४७२	२५२०)
९ भज्जि	९६	३२७	१४४०)
१० कुम्भरसेन	९०	२५४	२०००)
११ महीलोक	४८	२२२	१४४०)
१२ वलासन	५१	१५२	१०८०)
१३ वागहाट	३६	१७८	९००)
१४ कुथर	७	१५०	१०००)
१५ धामी	२६	२१४	७२०)
१६ तरोच	६७	४०	२६०)
१७ साङ्गड़ी	१६	१०५	
१८ कुनिहार	८	६६	१८०)
१९ वीजा	४	३३	१८०)
२० माङ्गल	१२	३३	७०)
२१ रवाई	३	१८	
२२ दरकुटी	५	८	
२३ दाधि	१	१०	

शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती दक्षिण-पश्चिममें विस्तृत पर्वतपृष्ठके ऊपर शिमला शैलराज्य विराजित है। सिमलाके दक्षिण-पूर्व तथा शतद्रु और यमुनाकी शाखा तोंस नदोके मध्यवर्त्ती शैल छोड शैलशिखरमें आ कर मिल गये हैं। वह स्थान समुद्रशिखरसे ११९८२ फुट ऊंचा है। छोडश्रृङ्ग सिमला शैलकी दक्षिणमुखी एक शाखाकी चरमसीमा है। उस गिरिराजिका ठीक ठीक विवरण लिपिवद्ध करना बहुत कठिन है। किन्तु उन्होंने जगत्‌पाताको इस महती कीर्त्तिको अपनी आखों देखा है, वे ही इस स्थानके गाम्भीर्यपूर्ण दृश्य पर मोहित हो गये हैं। साराश यह, कि इन पर्वत शाखाओंको तोन मूलभागमें विभक्त किया जा सकता है। (१) छोड पर्वत और उससे निकली हुई दक्षिण-पूर्व कोणमें शाखाएं; (२) मध्य-हिमालयसे सुवाथु पर्य्यन्त विस्तृत सिमला शैल और (३) निम्न हिमालय पर्वत प्रदेश। यह उत्तरपूर्वसे उत्तर-पश्चिमके सोमारूपमें अवस्थित है।

शतद्रुके दूसरे किनारे तथा स्पिति और लाहुलके दक्षिण वसहर राज्यका कुनावर विभाग है। यहां प्रायः ७ हजार फुट ऊंचे स्थान पर अच्छी खेती होती है। स्थान विशेष स्वास्थ्यकर है। वृष्टि या शीतकी अधिकता नहीं है। कुनावरवासियोंको कुनवरी कहते हैं। आकृति प्रकृति देखने पर ये भारतसम्भूत एक आदिम जाति समझे जाते हैं, किन्तु आचारव्यवहारमें तथा धर्मकर्ममें ये लोग बहुत कुछ तिब्बतीय जैसे हैं। उत्तर कुनावरवासी वाणिज्यप्रिय हैं। ये लोग चरस खरीदनेके लिये लेह तथा पशम लानेके लिये गर्दोख तक गिरिपथसे जाते आते हैं।

खच्चर, बकरे और भेंड़की पीठ पर ये लोग माल लाद कर अपने साथ ले जाते हैं।

यहांकी शैलमालासे निकला हुआ जल पहाड़ी नालोंसे बह कर धीरे धीरे शतद्रु, पावर, गिरिगङ्गा, मङ्गार और सरो नदीमें रूपान्तरित हुआ है। शतद्रु नदी चीनराज्यमें हिमालयशृङ्गके मध्यस्थित पथसे वसहर राज्यमें घुस गई है। अन्तिम शिखर समुद्रपृष्ठसे २२१८३ फुट ऊंचा है। वसहरराज्य हो कर दक्षिण-पूर्वमें उतरते समय उसमें मध्यहिमालय और स्पितिशैलका जल मिलता है। अनन्तर यह धारा कुलु काङ्गड़ा और विलासपुर होता हुई पश्चिमकी ओर चली गई है। कोटगढ़के समीप इस नदी पर वङ्गडु और लौरी नामक स्थानमें पुल है। विलासपुरमें छोटी छोटी नावें ले कर मनुष्य नदीमें जाते आते हैं। कुछ लोग चमड़ेके मशकोंको जलमें बहा कर उसी पर चढ़ नदी पार करते हैं। वास्पा और स्पिति नदी इसकी प्रधान शाखा है।

पावर नदी तोंस नदीकी शाखा है। मध्य-हिमालय और सिमलाशैलके दक्षिण ढालूकी जलराशिसे वसहर-राज्यमें इसकी उत्पत्ति हुई है। ये सब नदियां मिल कर जिलेके मध्य यमुनामें गिरती हैं। पावर और गिरिगङ्गा ही यहांकी सबसे बड़ी नदी हैं।

सिमा (सं० स्त्री०) महानाम्नी सामभेद।

सिमाना (हिं० पु०) सिवाना, हद।

सिमेंट (अं० पु०) एक प्रकारका लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कड़ा और मजबूत हो जाता है।

सिमोगा—१ महिसुर राज्यके नागर विभागका एक जिला। यह अक्षा० १३° २७' से १४° ३९' उ० तथा देशा० ७४° ३८' से ७६° ४' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४०२५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें बम्बईका धारवार जिला, पूरबमें चित्तलदुर्ग, दक्षिणमें कदूर और पश्चिममें कनाड़ा जिला है। तुङ्गा, भद्रा, वरदा, शरावती आदि नदियां बहती हैं।

कादम्ब राजाओंसे यहांका प्रकृत इतिहास आरम्भ हुआ है। ६ठी सदीमें चालुक्यराजाओंने कादम्बोंको राज्यच्युत किया था। इसके बाद कलचूरिराजने चालुक्यपतिको परास्त कर राज्य पर दखल जमाया। इस समय दाक्षिणात्यमें लिङ्गायतमत प्रवर्तित तथा हुमचामें एक जैनराज्य प्रतिष्ठित हुआ था।

इसके बाद होयशाल बल्लालगण और विजयनगर राजवंशने यथाक्रम यहां राज्य किया। विजयनगर राजवंशका अधःपतन होने पर यह केलाड़ी और वासवपाटनवंशीय पालेगार सरदारके शासनाधिकृत हुआ। केलाड़ीने १५६० ई०में इक्केरी और पीछे वदनूर राजधानी बसाई थी। वासवपाटनवंशको १७६१ ई०में तेरिकेरी नगरमें तथा १७६३ ई०में केलाडियोंको वदनूरमें परास्त कर हैदरअलीने यह प्रदेश अधिकार किया। १७९९ ई०में टीपू सुलतानके अधःपतनके बाद देशस्थ ब्राह्मणोंके कठोर शासन और पीड़नसे देशवासी बड़े ही उत्पीड़ित हो गये। आखिर १८३० ई०में उन लोगोंके बागी होने पर अंगरेजोंने उनका साथ दे कर ब्राह्मणोंको अधिकारच्युत किया तथा पूर्वतन केलाड़ी और वासवपाटन वंशीय सरदारोंको फिरसे राज्याधिकार दिया।

इस जिलेमें १४ शहर और २०१७ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ६ लाखके करीब है। धान ही यहांकी प्रधान फसल है। अभी इस जिलेमें कुल ४०० स्कूल, एक अस्पताल और १३ चिकित्सालय हैं।

२ उक्त जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १३° ४२' से १४° ८' उ० तथा देशा० ७५° १६' से ७५° ५२' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ६८७ वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारसे ऊपर है। इसमें सिमोगा, बेङ्कीपुर, कुमसी होलेहन्नूर नामक ४ शहर और ४०१ ग्राम लगते हैं। तुङ्ग और भद्र नदी तालुकके दक्षिण ओरसे आ कर उत्तरकी ओर चली गई है। इस तालुकमें धानकी फसल कम लगती है।

३ उक्त तालुकका प्रधान नगर और विचारसदर। यह अक्षा० १३° ५६' उ० तथा देशा० ७५° ३५' पू०के मध्य तुङ्ग नदीके किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है। सिमोगा नाम शिवमुख शब्दका अपभ्रंश है। फिर कोई कोई कहते हैं, कि शी-मोगे अर्थात् सिद्धान्न-भाण्डसे सिमोगा नाम कल्पित हुआ है। १७९१ ई०में मराठा सेनाने टीपू सुलतानके सेनापतिको परास्त कर नगर लूटा था। रोमन कैथलिक और वेसलियन मिशन-

का यह प्रधान स्टेशन है। १८७० ई०में म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है।

सिम्ब (स० पु०) शिम्ब देखो।

सिम्बा (सं० स्त्री०) १ शमीधान्य, शिम्बी धान। २ नखी नामक गन्धद्रव्य, हट्टविलासिनी। ३ सोठ।

सिम्बि (सं० स्त्री०) १ शिम्बा। २ नखी नामक गन्धद्रव्य।

सिम्बिजा (सं० स्त्री०) शमीधान्य।

सिम्बितिका (सं० स्त्री०) शिम्बि, सिम्बिका।

सिम्बी (सं० स्त्री०) सिम्बि-पक्षे ङीष्। १ फली, छीमी। २ निष्पावी, सेम। ३ वनमुद्ग, वनमूंग।

सिम्माल्लु (सं० क्ली०) सिन्दुवार, निर्गुंडी।

सिया (हिं० स्त्री०) जानकी, सीता।

सिया—मुसलमान सम्प्रदायभेद। मुसलमान शब्द देखो।

सियागोश—बाघकी जातिका एक चौपाया जानवर। बहुतेरे इसे लकड़बग्घा जातिका बताते हैं। प्राणिविदोंकी भाषामें यह Feli. caracal or Caracal mela.. tis नामसे प्रसिद्ध है। अंगरेजोंमें इसे Red Lynx कहते हैं। शरीरका रंग धूम्राभ, पेट सफेद, पूंछका अगला हिस्सा काला, भीतरका सफेद और अग्रभागमें गुच्छाकारमें लोम है। बाघ या बिल्लीकी तरह इसे भी मूंछें होती हैं। नेत्रके ऊपर भ्रू भी देखे जाते हैं। इसकी लम्बाई २६से ३० फुट और ऊंचाई १६से १८ फुट होती है। पूंछ ६।१० फुट और कान ३ फुट लंबे होते हैं।

दक्षिण भारतके उत्तर-सरकारमें, हैदराबाद और नागपुरके मध्यवर्त्ती निविड़ जङ्गलमें, मौके निकटस्थित विन्ध्यशैलमाला पर, जयपुर राज्यमें, खान्देश, कच्छ और गुजरात प्रदेशमें, तिब्बतमें, अरबमें और अफ्रिका महादेशमें सर्वत्र ही ये दल बांध कर विचरण करते हैं। हिमालयपर्वत पर बङ्गालमें और पूर्व भारतके किसी भी दूसरे स्थानमें सियागोश देखनेमें नहीं आता।

यह शशक, कुक्कुट, चील, काक, बक आदिका शिकार करता है। यह शीघ्र ही पोस मानता है। शिकारके लिये बड़ौदाके गायकवाड़ एक दल शिक्षित सियागोश पालन करते हैं।

विभिन्न स्थानमें रहनेके कारण इसकी आकृतिमें फर्क देखा जाता है, इस कारण प्राणिविदोंने विभिन्न जातिका स्वीकार कर इसका विभिन्न नाम रखा है। यथा—तिब्बतका साधारण सियागोश F.isabellina, छोटे बिड़ालके जैसे—F manul, तिमीरका—F.mgaotis, यूरोपका—F.lynx, F.Cervaria, F.Pardina, F.borealis (उत्तर मेरुजात) यह शेषोक्त श्रेणी उत्तर अमेरिकामें दिखाई देती है। उत्तर अमेरिकामें दूसरी जगह Rufa नामक एक दूसरा श्रेणीका सियागोश है।

सियाना (हिं० क्रि०) सिलाना देखो।

सियाना—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहर जिलेका एक नगर।

सियानेव (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी।

सियापा (हिं० पु०) मरे हुए मनुष्यके शोकमें कुछ काल तक बहुतसी स्त्रियोंके प्रति दिन इकट्ठा हो कर रोनेकी रीति। यह रिवाज पंजाब आदि पश्चिमी प्रान्तोंमें पाया जाता है।

सियार (हिं० पु०) जंबुक, गीदड़।

सियार—पञ्जाब प्रदेशके बसहर राज्यका एक गिरिपथ। यह अक्षा० ३१° १६´ उ० तथा देशा० ७७° ५८´ पू०के मध्य हिमालयके दक्षिण दिक्स्थ एक पर्वतशिखर परसे होता हुआ कुनावर आया है। यह स्थान समुद्रपृष्ठसे १३७२० फुट ऊंचा है। इस पर खड़ा होनेसे सिमला शैलके छोड़ शृङ्गसे यमुनोत्तरी शृङ्ग पर्यन्त विशाल पर्वतपृष्ठका एक मनोहर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

सियार लाठी (हिं० पु०) अमलतास।

सियारसोल—बङ्गालके वर्द्धमान जिलान्तर्गत एक विस्तृत कोयलेकी खान। यह कोयलेकी खान रानीगंजसे स्वतन्त्र है। यहाका कोयला वैसा अच्छा नहीं होता, विभिन्न स्तरमें विभिन्न प्रकारका कोयला देखा जाता है।

सियारा (हिं० पु०) १ जुती हुई जमीन बराबर करनेका लकड़ीका फावड़ा। २ सियाला देखो।

सियारी (हिं० स्त्री०) सियार देखो।

सियाल (हिं० पु०) शृगाल, गीदड़।

सियालखबस्—बलरामपुरमें रहनेवाली एक नीच जाति। चोरी ही इन लोगोंकी एकमात्र उपजीविका है।

सियाला (हिं० पु०) शीतकाल, जाड़ेका मौसिम।

सियाला पोका (हिं० पु०) एक बहुत छोटा कीड़ा जो सफेद चिपटे कोशके भीतर रहता है और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है। इसे लोना पोका भी कहते हैं।

सियाली (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी विदारीकंद। (वि०) २ जाड़ेके मौसिमकी फसल, खरीफ।

सियावड (हिं० पु०) सियावड़ी देखो।

सियावड़ी (हिं० स्त्री०) १ अनाजका वह हिस्सा जो खेत कटने पर खलिहानमेंसे साधुओंके निमित्त निकाला जाता है। २ वह काली हांडी जो खेतोंमें चिड़ियोंको डराने और फसलको नजरसे बचानेके लिये रखी जाती है।

सियासत (अ० स्त्री०) १ देशका शासन प्रबन्ध तथा व्यवस्था। २ दण्ड, पीड़न। ३ कष्ट, यन्त्रणा।

सियाह (फा० पु०) स्याह देखो।

सियाहगोश (फा० पु०) १ काले कानवाला। २ बिल्ली की जातिका एक जंगली जानवर, बनबिलाव। इसके अंग लंबे होते हैं। पूंछ पर बालोंका गुच्छा होता है और रंग भूरा होता है। खोपड़ी छोटी और दांत लम्बे होते हैं। कान बाहरकी ओर काले और भीतरकी ओर सफेद होते हैं। इसकी लम्बाई प्रायः ४० इंच होती है। यह घासकी झाड़ियोंमें रहता और चिड़ियोंको मार कर खाता है। इसकी कुदान ५से ६ फुट तककी होती है। यह सारस और तीतरका शत्रु है। यह बड़ा सुगमतासे पाला और चिड़ियोंका शिकार करनेके लिये सिखाया जा सकता है। इसे अमीर लोग शिकारके लिये रखते हैं।

सियाहा (फा० पु०) १ आय व्ययकी बही, रोजनामचा, बही खाता। २ सरकारी खजानेका वह रजिस्टर जिसमें जमींदारोंसे प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है। ३ वह सूची जिसमें काश्तकारोंसे प्राप्त लगान दर्ज होता है।

सियाहानवीस (फा० पु०) सियाहाका लिखनेवाला, सरकारी खजानेमें सियाहा लिखनेके लिये नियुक्त कर्मचारी।

सियाही (फा० पु०) स्याही देखो।

सिर (सं० पु०) पिप्पलीमूल, पिपरामूल।

सिर (हिं० पु०) १ शरीरके सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल जिसके भीतर मस्तिष्क रहता है, कपाल, खोपड़ी। २ शरीरका सबसे अगला या ऊपरका गोल या लंबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक और मुंह ये प्रधान अवयव होते हैं और जो गरदनके द्वारा धड़से जुड़ा रहता है। ३ ऊपरका छोर, सिरा, चोटी।

सिरई (हिं० स्त्री०) चारपाईमें सिरहानेकी पट्टी।

सिरकटा (हिं० वि०) १ जिसका सिर कट गया हो। २ दूसरोंका सिर काटनेवाला, अनिष्ट करनेवाला।

सिरका (फा० पु०) धूपमें पका कर खट्टा किया हुआ ईख, अंगूर, जामुन आदिका रस। ईख, अंगूर, खजूर, जामुन आदिके रसको धूपमें पका कर सिरका बनाया जाता है। यह स्वादमें अत्यन्त खट्टा होता है। वैद्यकमें यह तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारी, पाचक, हलका, रूखा, दस्तावर, रक्त पित्तकारक तथा कफ कृमि और पाण्डुरोगका नाश करनेवाला कहा गया है। यूनानी मतानुसार यह कुछ गरमी लिए ठंढा और रूक्ष, स्निग्धताशोषक, नसों और छिद्रोंमें शीघ्र ही प्रवेश करनेवाला, गाढ़े दोषोंको छांटनेवाला, पाचक, अत्यन्त क्षुधाकारक तथा रोधका उद्घाटक है। यह बहुतसे रोगोंके लिये परम उपयोगी है।

सिरकाकश (फा० पु०) अर्क खींचनेका एक प्रकारका यन्त्र।

सिरकी (हिं० स्त्री०) १ सरकंडा, सरई, सरहरी। २ सरकंडे या सरईकी पतली नालियोंकी बनी हुई टट्टी। यह प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षासे बचावके लिये डालते हैं। ३ बांसकी पतली नली जिसमें बेलबूटे काढ़नेका कलाबत्तू भरा रहता है।

सिरखप (हिं० वि०) १ सिर खपानेवाला। २ परिश्रमी। ३ निश्चयका पक्का।

सिरखपी (हिं० स्त्री०) १ परिश्रम, हैरानी। २ साहसपूर्ण कार्य, जोखिम।

सिर खिली (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया जिसका

सम्पूर्ण शरीर मटमैला पर चोंच और पैर काले होते हैं।

सिरखिश्त (फा० पु०) एक प्रसिद्ध पदार्थ जो कुछ पेड़ों की पत्तियों पर ओसकी तरह जम जाता है और दवाके काममें आता है, यवशर्करा, यवास शर्करा।

सिरगा (हिं० स्त्री०) घोड़ेकी एक जाति।

सिरगिरी (हिं० स्त्री०) १ शिखा, कलगी। २ चिड़ियोंके सिरकी, कलगी।

सिरगोला (हिं० पु०) दुग्ध पाषाण।

सिरचन्द (हिं० पु०) एक प्रकारका अर्द्ध चन्द्राकार गहना जो हाथीके मस्तक पर पहनाया जाता है।

सिरजना (हिं० क्रि०) संचय करना, हिफाजतसे रखना।

सिरण—पञ्जाब प्रदेशके हजारा जिलान्तर्गत एक छोटी नदी। यह अक्षा० ३४° ४६' उ० तथा देशा० ७३° ६' पू० के मध्य विस्तृत है। मोगरमङ्ग शैलकन्दरसे निकल कर यह पाखली उपत्यका और तानावलके मध्य होती हुई तारबेला नामक स्थानमें सिन्धुनदमें मिल गई है। यह शाखा नदी ८० मील लम्बी है, कहीं भी नावसे जानेका उपाय नहीं, सर्वत्र जगह पैदल जाया जाता है। नदीमें थोड़ा जल रहने पर भी इससे खेतोबारीमें बड़ी मदद मिलती है। नदी तटका दृश्य बड़ा ही मनोरम है।

इस नदीमें बड़ी बड़ी मछलियां पाई जाती हैं। बहुतेरे उन्हें पकड़नेके लिये यहां आते हैं। पहाड़से हो कर बहनेके कारण इसका स्रोतवेग बहुत प्रखर है। इस कारण इसके किनारे बहुतसे कलकारखाने हैं।

सिरताज (हिं० पु०) १ मुकुट। २ शिरोमणि, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु। ३ अग्रगण्य, सरदार।

सिरतान (हिं० पु०) १ असामी, काश्तकार। २ मालगुजार।

सिरतापा (हिं० क्रि० वि०) १ सिरसे पाव तक, नखसे ले कर सिर तक। २ आदिसे अन्त तक, सम्पूर्ण, बिलकुल, सरासर।

सिरत्राण (सं० पु०) शिरस्त्राण देखो।

सिरदुआली (हिं० स्त्री०) लगामके कड़ोंमें लगा हुआ कानोंके पीछे तकका घोड़ोंका एक साज जो चमड़े या सूतका बना होता है।

सिरनामा (फा० पु०) १ लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २ पत्रके आरम्भमें पत्र पानेवालेका नाम, उपाधि आदि। ३ किसी लेखके विषयका निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य जो ऊपर लिख दिया जाता है; शीर्षक, हेडिंग।

सिरनेत (हिं० पु०) १ पगड़ी, पटा, चीरा। २ क्षत्रियोंकी एक शाखा जो अपना मूल स्थान श्रीनगर (गढ़वाल) बताती है।

सिरपाव (हिं० पु०) सिरोपाव देखो।

सिरपेच (फा० पु०) १ पगड़ी। २ पगड़ीके ऊपरका छोटा कपड़ा। ३ पगड़ी पर बांधनेका एक आभूषण।

सिरपोश (फा० पु०) १ सिर परका आवरण, टोप, कुलाह। २ बंदूकके ऊपरका कपड़ा।

सिरफूल (हिं० पु०) सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियोंका आभूषण।

सिरफेंटा (हिं० पु०) साफा, पगड़ी, मुरेठा।

सिरबंद (हिं० स्त्री०) साफा।

सिरबंदी (हिं० स्त्री०) १ माथे पर पहननेका स्त्रियोंका आभूषण। (पु०) २ रेशमके कीड़ेका एक भेद।

सिरबोझी (हिं० पु०) एक प्रकारके पतले बांस जो पाटनके काममें आते हैं।

सिरमौर (हिं० पु०) १ सिरका मुकुट। २ शिरोमणि, सिरताज।

सिररुह (हिं० पु०) शिरोरुह देखो।

सिरलकोप्पा—महिसुर राज्यके सिमोगा जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १४° २३' उ० तथा देशा० ७५° १५' पू० शिकारपुर शहरसे ११ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। यह स्थान वाणिज्यप्रधान है। म्युनिसपलिटी रहनेसे नगर साफ सुथरा है। यहां शराब चुआनेका एक सरकारी कारखाना है। देशी लोग गुड़से एक प्रकारका गुड़ तैयार करते हैं जिसका आदर बम्बई और मन्द्राजमें बहुत है।

सिरवा (हिं० पु०) वह कपड़ा जिससे खलियानमें अनाज बरसानेके समय हवा करते हैं, ओसानेमें हवा करनेका कपड़ा।

सिरवार (हिं० पु०) १ सिवार देखो। २ जमींदारका वह कारिंदा जो उसका खेतोंका प्रबन्ध करता है।

सिरस (हिं० पु०) शीशमकी तरहका लंबा एक प्रकार का ऊंचा पेड़। यह पेड़ बड़ा किन्तु अचिरस्थायी होता है। इसकी छाल भूरापन लिये खाकी रंगकी होती है। लकड़ी सफेद या पीले रंगकी होती है जो टिकाऊ नहीं होती। हीरकी लकड़ी कालापन लिये भूरी होती है। पत्तियां इमलीकी पत्तियोंके समान परन्तु उनसे लंबी चौड़ी होती हैं। चैत वैशाखमें यह वृक्ष फूलता है। इसके फूल सफेद, सुगन्धित, अत्यन्त कोमल तथा मनोहर होते हैं। कवियोंने इसके फूलकी कोमलताका वर्णन किया है। इसके वृक्षसे बबूलके समान गोंद निकलता है। इसकी छाल, पत्ते, फूल और बीज औषधके काममें आते हैं। इसके तीन भेद होते हैं,-- काला, पीला और लाल। आयुर्वेदके अनुसार यह चरपरा, शीतल, मधुर, कड़वा, कसैला, हलका तथा वात, पित्त, कफ, सूजन, विसर्प, खांसी, घाव, विषविकार, रुधिर-विकार, कोढ़, खुजली, बवासीर, पसीने और त्वचाके रोगोंको हरण करनेवाला है। यूनानी मतानुसार यह ठंढा और रूखा है।

सिरसगाव—दाक्षिणात्यके बेरार विभागान्तर्गत इलिचपुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २१° १६´उ० तथा देशा० ७७° ४४´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है। यह नगर आस पासके नगरोंसे विशेष समृद्धिशाली है तथा नगरके अधिवासी भी धनवान हैं। यहां सप्ताहमें एक दिन हाट लगती है।

सिरसा (हिं० पु०) सिरस देखो।

सिरसा—१ पञ्जाबके हिस्सार जिलेकी तहसील और उप-विभाग। यह अक्षा० २९° १३´से ३०° ०´उ० तथा देशा० ७४° २९´से ७५° १८´पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६४२ वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। इसमें ४ शहर और ३०६ ग्राम लगते हैं।

इसके उत्तर-पूर्वमें फिरोजपुर जिला और देशी राज्य पटियाला, पश्चिममें सतलज नदी, दक्षिणपश्चिममें बहावलपुर और बीकानेर तथा पूर्वमें हिसार जिला है। शासनकेन्द्र सिरसा शहरमें प्रतिष्ठित है।

यहां जंगली जन्तुका बड़ा ही अभाव है। ५० वर्ष पहले सतलजके निकटवर्ती स्थानमें बाघ और रोहीमें जंगली गदहे देखे जाते थे। जंगली सूअर भी यहां नहीं दिखाई देता है। अभी केवल हरिन और कृष्णसार, शशक और शृगाल ही देखनेमें आते हैं। पक्षियोंमें शीत-ऋतुमें कुञ्ज, धनहंस, जलकुक्कुट आदि विचरण करते आते हैं।

यहांके अधिवासियोंमें जाट जाति ही प्रधान है; उसके बाद राजपूत। इन दोनों जातियोंमें हिन्दू, सिख और मुसलमान हैं। जाट हिन्दुओं और राजपूत हिन्दुओंमें आचार-व्यवहारगत बहुत पृथक्ता देखी जाती है। जाट लोगोंमें विधवा-विवाह प्रचलित है, परन्तु राजपूतोंमें नहीं। किन्तु इन दोनों दलके मुसलमानोंमें ऐसी कोई विशेष पृथकता नजर नहीं आती। संख्यामें अधिक नहीं होने पर भी राजपूतोंमें भट्टि नामक जो सम्प्रदाय है, वे ही यहांके अधिवासियोंके मध्य क्षमता और आधिपत्यमें सर्वश्रेष्ठ हैं। ये लोग प्रायः सभी मुसलमान हैं, किन्तु आलसी होनेके कारण इनकी अवस्था धीरे धीरे खराब होती जा रही है। अधि-वासियोंमें कृषिजीवियोंकी संख्या ही ज्यादा है। पञ्जाबके अन्यान्य जिलोंमें सैकड़े पीछे ५५, किन्तु यहां सैकड़े पीछे ६६ पुरुष कृषिकार्य द्वारा जीविका निर्वाह करते हैं। बाजरा ही यहांका प्रधान शस्य है। ज्वार, मटर, सेम और तिल भी कम नहीं उपजता। रब्बीमें जौ और गेहूं ही प्रधान है। कहीं कहीं धानकी भी खेती होती है।

यहांके अधिवासी बहुत कुछ अस्थायी हैं। एक जगह दो तीन वर्ष काट कर भी जब सुविधा नहीं देखते, तो स्त्रीपुत्र, मवेशी तथा अपना कुल सामान ले कर दूसरी जगह चले जाते हैं। किन्तु यह प्रकृति और अभ्यास धीरे धीरे उठता जा रहा है। बागरी जाट और मुसल-मान कई जगह स्थायीरूपमें वास करने लग गये हैं। यहां पीनेके जलका पूरा अभाव है, जिससे अधिवासियों-को भारी कष्ट होता है, किन्तु धीरे धीरे सभी जगह कूआं खोदनेका प्रबन्ध होता आ रहा है।

यहां जाने आनेकी वैसी सुविधा नहीं है। सिरसा के उत्तर पूर्व प्रान्तसे रेवारी फिरोजपुर तक रेलगाड़ी गई है। पक्की सड़क एक भी नहीं है, तमाम कच्ची सड़क गई है। वर्षा ऋतुमें इन सड़कोंसे जानेमें बड़ी

विक्रय होती है। इन्हीं सड़कोंसे वाणिज्य-द्रव्यकी आमदनी और रफतनी होती है।

यहांके उत्पन्न शस्यादि प्रधानतः पश्चिम सिन्धु-प्रदेशमें और पूरब दिल्ली शहरमें भेजे जाते हैं। पूर्वमें सिरसा शहर और पश्चिममें फाजिलका, ये ही दो स्थान वाणिज्यके प्रधान केन्द्रस्थल हैं। पशम, तिल, सरसों आदिकी कराचीमें रफतनी और पूर्वदेशसे रूई, धान्यादि तथा यूरोपसे आये हुए वस्त्रादिकी आमदनी होती है। यहांके पार्वत्यद्रव्यमें एकमात्र सज्जी मिट्टी ही उल्लेख योग्य है।

२ उक्त तालुकका प्रधान शहर और विचार सदर। यह अक्षा० २९° ३२' उ० तथा देशा० ७५° २' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या १६ हजारके लगभग है।

यह शहर बहुत पुराना है। कहते हैं, कि राजा सारसने करीब तेरह सौ वर्ष पहले इस नगरको बसाया था। उनका बसाया हुआ यहां एक दुर्ग भी था। अभी उसका नाम-निशान भी नहीं है। इसके चारों ओर ८ फुट ऊंची मिट्टीकी दीवार है, हंसी, हिसार, पतियाला और बीकानेरसे अनेक महाजनों और व्यवसायियोंको यहां बसाया गया है। उन लोगोंके व्यवसायके गुणसे शहर धीरे धीरे उन्नत होता जा रहा है। राजपूतानेसे आये हुए हिन्दू बनिया लोग ही यहांके सर्वश्रेष्ठ व्यवसायी हैं। मोटा कपड़ा और मिट्टीका बरतन ही यहांका प्रधान शिल्प माना जाता है।

सिरसा पहले भट्टियाना राज्यके अन्तर्भुक्त था। वर्त्तमान शासनकेन्द्रके पास प्राचीन सिरसा शहरका ध्वंसावशेष आज भी उसके पूर्व गौरवके साक्षीस्वरूप विद्यमान है।

१८ वीं सदीमें राजपूत वंशधर मुसलमानों यहांका शासन करते थे, ऐसा मालूम होता है। इन मुसलमानोंमें अनेक सम्प्रदाय थे। किन्तु भट्टिगण ही सबसे ज्यादा क्षमताशाली थे। उन्हीं लोगोंके नामानुसार मालूम होता है, कि पार्श्ववर्त्ती प्रदेशका नाम भट्टियाना हुआ था। १८५७ ई० तक यह देश इसी नामसे परिचित रहा। ये भट्टि मुसलमान पशु चराया करते थे तथा प्रतिवेशीके पशु और द्रव्य लूटना ही उनका प्रथम और प्रधान कार्य्य था।

१७३१ ई०में पतियाला राज्यके प्रतिष्ठाता आला सिंहने भट्टियोंका दमन करनेके लिये पहली बार कोशिश की। १७७४ ई०में उनके उत्तराधिकारी अमर सिंहने भट्टिनायक अमीर खांको परास्त कर सिरसा अपने अधिकारमें कर लिया। किन्तु १७८३ ई०के भीषण दुर्भिक्षमें बहुतसे मनुष्य और पशु मृत्युमुखमें पतित हुए। जो कुछ बच रहे, वे घर द्वार छोड़ भाग गये। प्रायः समूचा देश जनमानवशून्य हो गया। १७९९ ई०में घाघर उपत्यकामें अंगरेजोंका अधिकार पहले पहल प्रतिष्ठित हुआ, किन्तु १८०२ ई०में जो युद्ध हुआ, उसके फलसे यह फिर मराठोंके अधीन आया। १८०३ ई०में सिन्धियाके साथ जो सन्धि हुई, उसके फलसे सिन्धियाने अंगरेजोंको सिरसा दे दिया। १८३ ई०में वृटिशराजने इस देशमें प्रकाश्य भावसे आधिपत्य स्थापन किया तथा घाघर उपत्यका और पार्श्ववर्त्ती स्थानोंमें जा कर उत्तर-पश्चिम प्रदेशके अन्तर्भुक्त भट्टियाना जिला बसाया। नाना स्थानोंसे लोग आ कर उपनिवेश बसानेकी कोशिश करने लगे। किन्तु १८५८ ई० के विद्रोहके बाद सिरसा जिला युक्तप्रदेशसे पृथक् कर पञ्जाबमें मिला दिया गया है। इस शहरमें एक अस्पताल, एक एङ्गलोवर्नाक्युलर मिडिल स्कूल और साहाय्य प्राप्त प्राइमरी स्कूल है।

सिरसा—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद जिलान्तर्गत मेजा तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २५° १६' उ० तथा देशा० ८२° ६' पू० इष्ट इण्डियन रेलवेके किनारे बसा हुआ है। जनसंख्या ४ हजारसे ऊपर है। यह वाणिज्यप्रधान शहर है। शहरमें एक मिडिल स्कूल है।

सिरसी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका तीतर।

सिरहाना (हिं० पु०) चारपाईमें सिरकी ओरका भाग, खाटका सिरा, मुंडवारी।

सिरांचा (हिं० पु०) एक प्रकारका पतला बांस जिससे कुरसियां और मोढे बनते हैं।

सिरा (सं० स्त्री०) सिनोतीति सिञ् बन्धने रक्। (उणा् २।१३) १ नाड़ी, शिरा। सब शिराओंका उत्पत्ति स्थान

नाभि है। नाभिमूलसे समूचे शरीरमें सभी सिराएं परिव्याप्त हुई हैं। शिरा देखो। २ सिंचाईकी नाली। ३ खेतकी सिंचाई। ४ पानीकी पतली धारा। ५ गगरा, कलसा, डोल।

सिरा (हिं० स्त्री०) १ लम्बाईका अंत, छोर, टोंक। २ शीर्ष भाग। ३ अन्तिम भाग, आखिरी हिस्सा। ४ आरम्भका भाग, शुरूका हिस्सा। ५ अग्र भाग, अगला हिस्सा। ६ नोक, अनी।

सिरा—१ महिसुर राज्यके तुमकुड जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १३° २९' से १४° ६' उ० तथा देशा० ७६° ४१' से ७७° ३' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ८० हजारके करीब है। इसमें सिरा नामक एक शहर और २४७ ग्राम लगते हैं। तालुकका उत्तर-पूर्व भाग उपजाऊ है, जलका क्रमशः प्रबंध है, किन्तु अन्यान्य भाग पथरीला और ऊसर है। पश्चिम-भागमें निविड जंगल दिखाई देता है।

२ उक्त जिलेका एक नगर और तालुकका विचार-सदर। यह अक्षा० १३° ४४' उ० तथा देशा० ७६° ५४' पू० तुमकुर शहरसे ३३ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। जनसंख्या ४ हजारसे ऊपर है।

पहले इस नगरमें मुसलमानराज्यकी राजधानी थी। प्रवाद है, कि रत्नगिरिराज्यके रङ्गप्प नायकने इस नगरकी प्रतिष्ठा की। किन्तु दुर्ग बनानेके पहले उन्होंने १६३८ ई०में विजापुरराज-सेनापति रणदुल्ला खाने नगरमें घेरा डाला और उसे अधिकार कर लिया। इसके बाद विजापुरपति शिवाजीके पिता शाहजीको सिराप्रदेश जागीरमें मिला। १६८७ ई०में मुगल-सम्राट् औरङ्गजेबने विजापुरराज्य जीत कर शासनशृङ्खला स्थापनके लिये तुङ्गभद्रातीरस्थ दक्षिणप्रदेशको एक स्वतन्त्र प्रदेशमें विभक्त किया। सिरामें उनकी राजधानी हुई और मुसलमान शासनकर्त्ता वहांके शासनकर्त्ता हुए। उक्त शासनकर्त्ताओंमें कासिम खां और दिलावर खांका नाम विशेष उल्लेखयोग्य है। दिलावरके शासनकालमें नगरकी बड़ी उन्नति हुई। इस समय यहां प्रायः ५० हजार घर मनुष्योंका वास था। दिलावरने बहु यत्न और व्ययसे जो प्रासाद बनवाया, वह अभी खंडहरमें पड़ा है। उसीकी नकल पर पीछे 'बङ्गलूर' और श्रीरङ्गपत्तनका प्रासाद बनाया गया।

१७५७ ई०में सिरानगर मुसलमानोंके दखलमें आया। १७६१ ई०में हैदरअलीने उसे फिरसे अधिकार कर लिया। दाक्षिणात्यमें कर्णाटक युद्धके समय जब दोनों पक्ष आत्मपक्ष समर्थन करनेको उतारू थे, तब सिरानगरमें वह राजनैतिक तूफान बहा था। टीपू सुलतानने जब शहरगञ्जानगरकी प्रतिष्ठा की, तब उसने इस नगरसे १२ हजार आदमी वहांसे भेजे थे।

बराबरके विप्लवसे यह नगर धीरे धीरे श्रीभ्रष्ट होता गया। स्थानीय अट्टालिकादि उपयुक्त संस्कार नहीं होनेसे ढह टूट गई। आज भी जुम्मा मसजिद और पत्थरका बना दुर्ग विद्यमान है।

यहांकी कुरुम्बर जातिके अधिवासी आज भी एक प्रकारके कम्बल बुनते हैं। पहले यहां छींटके कपड़ेका कारबार था, अभी वह उठ गया है। सीलकी लोह बनानेका कारबार अभी भी यहां जोरोंसे चलता है।

सिरागुप्पा—मन्द्राज प्रदेशके बेलरी जिलान्तर्गत बेल्लरी तालुकका एक नगर। यह अक्षा० १५° ३८' ५०" उ० तथा देशा० ७६° ५६' ३०" पू०के मध्य विस्तृत है। नगरकी गठन-प्रणाली वैसी सुन्दर नहीं है, इससे नगरका जल अच्छी तरह बाहर नहीं निकल सकता। यही कारण है, कि नगरवासीका स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है।

सिराज उद्दौला—बङ्गालके नवाब अलीवर्दी खांका नाती, धीरश्रेष्ठ जइनउद्दीन और अमीना बेगमका लड़का, बङ्गालका अन्तिम स्वाधीन नवाब। सिराजका जन्म १७३० ई०में हुआ। इस समय अलीवर्दीका सौभाग्यसूर्य मध्याह्न गगनमें उगा हुआ था। नातीको गोद ले कर वृद्ध अलीवर्दी उसका बड़े यत्नसे पालन करने लगा। वह लड़का धीरे धीरे अधिक उद्धत और उच्छृङ्खल होने लगा। उसे पढ़ाने लिखानेका कोई इन्तजाम नहीं किया गया। स्नेहान्ध नवाबने सोचा, कि ज्यों ज्यों वह बढ़ता जायेगा, त्यों त्यों उसका चरित्र भी सुधरता जायगा।

अलीवर्दी उसका नाना अपने प्राणसे भी उसे ज्यादा प्यार करता था, फिर भी उसने चरित्रहीन, अधर्मी यार-

मुसाहबोंकी सलाहसे सिराजने समझ लिया, कि माता-महका प्रेम करना मौखिक है। इसका पिता जइनउद्दीन् विहारका नायब नाजिम था, अभी राजा जानकीराम उस पद पर बैठा था। यदि अलिवर्दीका अपने नातीके प्रति प्रेम होता, तो वह क्या कभी इस पदसे उसको वञ्चित रख सकता था? वर्गियोंको निकाल भगानेके लिये अलवर्दी १७५० ई०में उड़ीसा गया। इसी सुअवसर पर प्रणयिनी लुत्फउन्निसा बेगम और कुछ अनुचरोंको ले कर सिराजने पटनाकी ओर कदम बढ़ाया। नवाब ा अनुमतिपत्र न पा कर जानकीरामने उसे दुर्गमें घुसने न दिया। दोनोंमें लड़ाईकी नौबत आ गई। सिराजके अनुचर उसे छोड़ भाग चले। वृद्ध राजभक्त जानकीराम-ने उसके ठहरनेके लिये दुर्गके बाहर एक अच्छा स्थान दिया और वे नवाबके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे।

इधर नवाबने जब सिराजकी धृष्टताकी बात सुनी, तब इसके अमङ्गलकी आशङ्का पर प्राण सिहर उठे। अपना कुल कामकाज छोड़ कर वृद्ध अलिवर्दी पटनाकी तरफ रवाना हुआ और अपने जानेके पहले उसने प्रेम और विनयपत्रके साथ एक दूतको भेजा। सिराजने इस प्रकार उत्तर दिया, 'आपकी चिकनी चुपड़ी बात पर मैं अब नहीं भूल सकता। मैं अपने दावे पर बलपूर्वक अधिकार करूंगा ही। बाधा देनेसे मैं युद्धके लिये तैयार हो जाऊंगा और उस युद्धकी मीमांसा तब तक नहीं होगी जब तक आपका मस्तक मेरी गोद पर अथवा मेरा मस्तक आपके चरणोंमें न गिरे।'

पटना पहुंचते ही नवाबने दौहित्रको आलिंगन कर कहा 'मूर्ख तुम्हारी समझ गलत है। विहारकी नायब-नाजिमीके लिये तुम लालायित हो रहे हो। यदि ताकत रहती, तो मैं तुम्हें समस्त भारतवर्षको बादशाही देनेसे भी बाज नहीं आता।"—फिर दोनोंमें मेल हो गया, दोनों राज-धानीकी ओर लौटे।

मुताक्षरीणकार गुलाम हुसेनने लिखा है, "सिराज पदमर्यादा, वयस या स्त्रीपुरुष, कुछ भी ग्राह्य नहीं करते थे। नवाब देख कर भी नहीं देखते थे उनकी असङ्गत और मजागत कामासक्तिके निकट स्त्री-पुरुष दोनोंकी निःसङ्कोच और अबाधसे बलि पड़ने लगी। धीरे धीरे उन्हें पाप-पुण्यका भेदज्ञान तक भी जाता रहा, कामकी चरितार्थताके लिये वे निकट आत्मीय कुटुम्बका भी विचार नहीं करते थे। आखिर यहां तक हुआ, कि उन्हें देखनेसे लोग 'ओ खुदा रक्षा करो!' कह कर चीत्कार करते थे।"

सिराजके हुकुमसे उसके अनुचरोंने ढाका डिपटी नवाबके प्रियपात्र हुसेनकुली और उनके भाई अंभ हैदर-को खण्ड खण्ड कर डाला। पहले ही संवाद आया था, कि सिराजके आदेशसे ढाकाके हुसेनकुलीके भतीजेके भी प्राण ले लिये गये हैं।

उसे सुधारनेकी कोई भी व्यवस्था न करके दौहित्र-गतप्राण अलीवर्दी उसके उद्दाम काम कल्पनाकी परि-तृप्तिकी व्यवस्था ही करने लगा। उसने बहुत रुपये खर्च करके गौड़से अनेक प्रकारके बहुमूल्य पत्थर ला कर भागीरथीके पश्चिमी किनारे उसके लिये हीराझील नामक एक अपूर्व प्रमोदभवन बनवाया। इसके खर्च वर्चके लिये नवाबने मनसुरगञ्ज नामक बाजार स्थापन कर जमींदारोंके ऊपर 'नजराना मनसुरगञ्ज' नामक एक नया कर बैठा दिया। इसके वार्षिक ५०१५६७) रु०की आमदनी आने लगी।

परन्तु दौहित्रका भविष्य सोच कर वृद्ध मन ही मन कातर और क्षुण्ण हो रहा था। राज्यभार कंधे पर पड़नेसे सुधर सकता है, सोच कर १७५२ ई०में उसने सिराजको परिदर्शन उपलक्षमें हुगली प्रान्तमें भेज दिया। यहीं पर अंगरेजोंके साथ उसका प्रथम परिचय हुआ। अंगरेज कम्पनीने १५५६०) रु० दे कर उसकी शुभदृष्टि खरीद ली। इस पर नवाबने लिखा,—इसके बाद उन लोगोंके वाणिज्यके ऊपर सुदृष्टि रखी जायेगी।

१७५६ ई०के प्रथम भागमें नवाब अलीवर्दी खां शोथ और उदरी रोगसे अन्तिम शय्या पर पड़ रहा। उसकी सलाहके अनुसार इस समयसे सिराजउद्दौलाने राज-कार्य चलाना शुरू कर दिया। सुना जाता है, कि इस समय मातामहके अनुरोध करने पर उसने कुरान छू कर प्रतिज्ञा की थी, वह आजसे शराब आदि कुछ भी नहीं पीयेगा।

दो मास रोगभोगके बाद १७५६ ई०के अप्रिल मासमें

(११६६ हि० सालकी ६वीं रजब तारीख) अलिवर्दी खाँ-का देहान्त हुआ। सिंहासन पर बैठते ही सिराजने कृष्ण-वल्लभको भेज देनेके लिये कलकत्तेके अध्यक्ष ड्रेक साहबको एक पत्र लिख भेजा। ड्रेक उस समय कलकत्तेमें नहीं थे। घसेटी बेगमके साथ सिराजका सिंहासन ले कर जो विवाद चल रहा था, उसका अब तक निबटारा नहीं हुआ था। कृष्णवल्लभको भेज देनेसे वे असन्तुष्ट हो जायगे, यह आशङ्का कर कौंसिलने स्थिर किया, कि सिराजकी प्रार्थनाको स्वीकार करना नहीं होगा। केवल यही नहीं, प्रेरित दूत और उसके साथ जो पत्र था, उसे संदेहजनक समझ कर उसको अपमानित कर भगा दिया।

सिंहासन पर बैठनेके कुछ दिन बाद ही सिराज-उद्दौलाने घसेटी बेगमको कैद कर उसकी धनदौलत हीरा जवाहरात हड़प करनेके लिये एक दल सेना भेजी। बेगमके आदमी डरके मारे जहां तहां भाग गये। उसकी सम्पत्ति जब्त और वह कैद की गई।

घसेटी बेगमकी तरह सिराजका चचेरा भाई सौकत-जङ्ग भी उसके विरुद्ध खड़ा हुआ। घसेटी बेगमको कैद कर सिराज सौकतके विरुद्ध पूर्णियाकी ओर रवाना हुआ, परन्तु हठात आधे रास्तेसे ही लौट आया।

पूर्णियाके रास्तेसे सिराज जब राजमहल पहुंचा, उसी समय दुर्ग तोड़ डालनेके लिये उसने अंगरेजोंको कहला भेजा था, उसका जवाब आया। दुर्ग तोड़नेमें वे लोग अनिच्छुक थे। प्रेसिडेण्ट ड्रेक साहबने नवाबको प्रसन्न करनेके लिये बड़ी मुलायमीसे लिखा था, "हम लोग नया दुर्ग नहीं बनवा रहे हैं, केवल जीर्णसंस्कार कराते हैं। फरासिसियोंके साथ युद्धकी आशङ्का देख हम लोग पहले हीसे सतर्कताका अवलम्बन कर रहे हैं।"

यह उत्तर पा कर सिराज आग बबूला हो गया। अंगरेजोंने उसके एक भी आदेशका पालन नहीं किया। उन लोगोंको उचित शिक्षा देनी होगी, ऐसा संकल्प कर वह पूर्णिया नहीं गया और सीधे मुर्शिदाबाद लौटा। सबसे पहले उसने कासिमबाजारकी अंगरेजी कोठी घेरनेका हुकुम दिया। २४वीं मईको जमादार उमारबेग तीन हजार घुड़सवार सेना ले कर कासिमबाजारमें आ धमका। १ली जूनके भीतर सैन्यसंख्या बारह हजार हो गई। कोठीके अध्यक्षने एक सौ आदमी भेज देनेके लिए कलकत्ता पत्र लिखा। इस समय लेफ्टेनाण्ट इलियट-के अधीन कुछ लश्कर और सिर्फ ३५ सिपाही थे।

निरुपाय हो २री जूनको कोठीके अध्यक्ष वाट्साहब डरसे कांपते हुए सिराजके सामने पड़े हुए। नवाबने उनसे निम्नलिखित शर्तोंका मुचलका लिखा लिया—(१) राजदण्डसे छुटकारा पानेकी आशासे यदि कोई प्रजा कलकत्ते भाग जाय, तो नवाबकी आज्ञा पाते ही उसे सरकारमें समर्पण करना होगा। (२) गत कई वर्षोंके वाणिज्यका पक्का हिसाब देना होगा और उनके अपव्यवहारसे राजकरको जो क्षति हुई है, वह पूरी करनी होगी। (३) बागबजारमें परिपेण्ट जो दुर्गप्राकार बनाया गया है, उसे गिरा देना होगा तथा प्रजाओंकी महती क्षति हो रही है, इससे कलकत्तेके जमींदार हालवेल साहबको क्षमता घटा देनी होगी। कोठीमें और भी दो कालेट और बाटसन अंगरेज थे। उन्हें भी बुलवा कर मुचलका पर हस्ताक्षर कराया गया। पीछे वे तीनों ही नवाबके शिविरमें नजरबंद रखे गये। ४थी जूनको दुर्ग भी नवाबके हाथ आया। नवाबकी सेनाने काफी रकम लूट ली, इलियट साहबने अपमानित हो कर आत्महत्या कर डाली। अंगरेजी सेना मुर्शिदाबादमें कैद की, कमान बन्दूक नवाबके हाथ लगी।

६ठी जूनको कासिमबाजार नवाबके दखलमें आया, ऐसा समाचार मिला। दूसरे ही दिन यह भी समाचार आया, कि ५० हजार सेना ले कर सिराजउद्दौला कलकत्तेकी ओर अग्रसर हो रहा है। कलकत्ता पहुंचते ही सिराजने ढाका, बालेश्वर, लक्ष्मीपुर आदि स्थानोंकी कोठीके कर्मचारीयोंको सहबिलपत्रके साथ बहुत जल्द कलकत्ता आनेके लिये मन्द्राज और बम्बईमें लिखा गया। ओलन्दाज और फरासिसियोंसे भी सहायता मांगी गई, परन्तु कोई भी तैयार नहीं हुआ।

कलकत्तेके दुर्गमें इस समय सिर्फ १६० सैनिक और २५० भालण्टियर थे। इसमें सैनिक ६० और भालण्टियर ६५, कुल १२५ अंगरेज थे। इन लोगोंको ही ले कर गवर्नर ड्रेक साहब दुर्गरक्षाके लिये डट गये।

जिस तिस तरहस १४ सौ सिपाही और रसदका संग्रह किया गया।

वर्तमान शिवपुर उद्यानमें, भागीरथीके पश्चिमी किनारे नदीमुखको रक्षा करनेके लिये एक छोटा-सा दुर्ग था। उसमें १३ कमान और ५० सिपाही रहते थे। दुर्गका नाम टाना दुर्ग था। १३वीं जूनको अंगरेजी सेना जहाजसे नदी पार कर गई और दुर्गको अधिकार कर लिया। बहुतसी कमानोंको बेकाम कर बाकीको जलमें फेंक दिया गया। किन्तु दूसरे ही दिन हुगलीके फौजदार द्वारा प्रेरित सैन्यदलने आ कर अंगरेजोंको निकाल भगाया।

इधर अमीरचंद जिससे भाग न सके और कृष्णवल्लभ भी जिससे नवाबके साथ मिलने न पाये, इसलिये इन दोनोंको ड्रेक साहबने कैदमें रखा।

१६वीं जूनको बागबाजारकी ओरसे कलकत्ते पर चढ़ाई कर दी गई, परन्तु नवाबकी सेनाको इधर कुछ भी सफलता न मिली।

२०वीं जूनको नवाबकी सेनाने अमित तेजसे दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। पुर्त्तगीज और आरमनीवासमें दुर्गके मध्य सिर्फ १७० आदमी थे। उन लोगोंने आत्मसमर्पण करनेके लिये हालवेलको बाध्य किया। किन्तु इसके पहले ही चारों ओरसे नवाबकी सेना दुर्गमें प्रवेश करने लगी—बहुतसी अङ्गरेजी सेना हताहत हुई। दुर्गके शिखर पर नवाबकी जयपताका फहरने लगी। ५ बजे शामको नवाबने दुर्गमें प्रवेश किया। सबसे पहले अमीरचंद और कृष्णवल्लभको उसके सामने खड़ा किया गया। नवाबने दोनोंका समुचित सम्मान और शिरोपा प्रदान किया। सदस्योंके अनुरोधसे राजवल्लभको पहले ही माफी मिल चुकी थी। अङ्गरेजोंका खजाना अपनाया गया। हालवेल जब बन्दी अवस्थामें उपस्थित किये गये, तब नवाबने उन्हें छोड़ देनेके लिये हुकुम दिया। माणिकचंदके ऊपर दुर्गभार सौंप कर नवाब अपने खेमेमें लौटा। कुछ गोरोंने नवाबकी सेनासे झगड़ा किया था, इस कारण उन्हें कैदमें ठूस देने कहा गया। रातको उन्हें एक छोटी-सी कोठरी में बंद किया गया। असह्य गरमी और कड़ी प्यास से अधिकांश यमलोक सिधारे। जब सवेरा हुआ, तब देखा गया, कि १४६में सिर्फ २३ जीवित हैं। यही इतिहासमें 'अन्धकूपहत्या' नामसे प्रसिद्ध है। इस भीषण हत्याकाण्डका उत्तरदायी सिराजको किसी तरह नहीं बताया जा सकता। २१वीं जूनको सवेरे जब उसे इस रोमाञ्चकारी कहानीका हाल मालूम हुआ, तब उसने फौरन बंदियोंको बाहर निकालनेका हुकुम दे दिया गुप्त खजानेका कोई समाचार नहीं मिलनेसे हालवेलको बन्दी कर तीन अनुचरोंके साथ मीरमदनके अधीन नाव द्वारा मुर्शिदाबाद पहुंचाया गया। इसके सिवा स्त्रियोंमें केरी नामकी एक युवती भी कैद की गई। इन दोनोंको छोड़ और सभी बन्दी और बन्दिनीको मुक्तिप्रदान किया गया।

कलकत्तेका नाम 'आलिनगर' रख कर २री जुलाईको नवाब हुगलीके निकटवर्ती स्थानमें गङ्गा पार कर स्थलपथसे मुर्शिदाबाद आया। आलिनगरका शासनभार भी राजा माणिकचंद पर सौंप गया।

राहमें फरासियोंने साढ़े चार लाख रुपये दे कर नवाबकी कोपदृष्टिसे रक्षा पाई। अंगरेजोंको कलकत्तेमें पुनः घुसनेकी अनुमती दी भी गई थी, पर किसी गोरेने उन्मत्त हो कर एक मुसलमानको मार डाला था, इससे वह अनुमती लौटा ली गई। अंगरेज लोग भाग कर फलता चले गये जहां उन लोगोंके जहाज लगे हुए थे। अलिवर्दीकी कृपासे कारामुक्त हो हालवेल भी १६वीं जुलाईको फलता आये। काशिमबाजारके बन्दी वाट्स और कालेट साहबको भी इसके पहले ओलन्दाजोंके हाथ समर्पण किया गया था।

इधर ११वीं जुलाईको मुर्शिदाबाद पहुंचते ही नवाबने फरमान निकाला, कि उसके राज्यमें अंगरेजोंकी जहां जो सम्पत्ति है, वह सरकारसे जब्त होगी।

यह व्यापार धीरे धीरे गुरुतर होने लगा। बाहरमें अंगरेजोंके साथ शत्रुता और घरमें भी भीषण षड्यन्त्र चलने लगा।

मीरजाफर आदि सेनापति और दुर्लभराम आदि हिन्दूकर्मचारी, सबके सब नवाबके व्यवहार पर तंग तंग आ गये और अपना अपमान समझने लगे। माणिकचंद-

को कलकत्तेका शासनकर्त्ता नियुक्त करना, इन लोगोंके लिये एकदम असह्य हो गया। इधर असद्व्यवहारसे जगत्-सेठ आदि गण्यमान्य भी नवाबके ऊपर असन्तुष्ट होने लगे।

अब सभी मिल कर एक षड्यन्त्र रचने लगे। मीरजाफरने सौकतजङ्गको लिखा, कि वे यदि कुछ नियमोंका पालन और राज्यरक्षाका सुप्रबन्ध करनेको राजी हों, तो सभी उनका पक्ष अवलम्बन करेंगे। वे आसानीसे बङ्गाल, बिहार और उड़ीसाके सूबादार हो सकेंगे।

पत्र पा कर अलिवर्दी खांके द्वितीय उत्तराधिकारी सौकतजङ्गका सिर चकराने लगा। उसकी तुलनामें सिराज भी एक तरह था, सिराजको तो विवेचनाकी कुछ शक्ति भी थी। नाम लिखनेमें भी सौकतको पसीना छूटता था। खुशामदियोंके बहकानेसे सौकत गद्गद् हो गया। वह भी षड्यन्त्रमें शामिल हुआ। वार्षिक एक करोड़ राजस्व देनेसे सौकत बङ्गाल, बिहार और उड़ीसाकी मसनद पर बैठ सकता है, इस आशय पर दिल्लीके वजीरका हस्ताक्षर किया हुआ एक परवाना भी षड्यन्त्रकारियोंने संग्रह कर लिया। सौकतमें जो कुछ धीरता थी, वह परवाना देखनेसे ही विदा हो गई। उसे अब अभिमान हो गया। बहुतसे पुराने कर्मचारियोंको उसने अपमानित कर विदा कर दिया। बिना किसी कारणके दीवान रास्ता लालहजारी निर्वासित किया गया। लाल मुर्शिदाबाद जा कर सिराजसे मिला। कुल हाल मालूम होने पर नवाबको कुछ चिन्ता हुई, उसने देखा, कि उसका अपराध भी उसके विरुद्ध खड़ा हो गया है। अब वह उन लोगोंको खुश करनेके लिये उन्हींकी सलाहसे काम करने लगा। सौकत जङ्गके चरित्रका विषय जान कर षड्यन्त्रकारि दल पहलेसे ही बहुत कुछ हतोत्साह हो गया था। अभी वे लोग और भी नरम हो गये। सौकतका अभिप्राय जाननेके लिये उसके पास एक पत्र भी भेजा गया। उत्तरमें मस्तिष्कशून्य युवकने लिखा, "मैंने नवाबकी सनद पाई है। भाई जान कर तुम लोगोंका जान लेना नहीं चाहता। तुम ढाका जिलेमें जहां इच्छा हो, रह सकते हो।"

पत्रका मर्म समझ कर सबोंने कहा, 'सौकतको शिक्षा देना आवश्यक है। उस समय वर्षाकाल था, इसलिये स्थिर हुआ, कि शरत्कालके प्रारम्भमें ही युद्धारम्भ होगा। इधर दुर्भाग्यवशतः, इतने दिनों तक सिराजने दिल्ली दरबारसे कोई सनद नहीं ली है, वही बात उठाई गई। नवाबने महातावचन्द जगत्सेठको इसका उत्तरदायी ठहराया, क्योंकि वे ही यह काम करने जा रहे थे। नवाबका भले बुरेका ज्ञान जाता रहा और उसने खुले दरबारमें वृद्ध जगत्सेठके गाल पर जोरसे तमाचा जमाया। केवल यही नहीं, उन्हें कारागार भी ले जानेका हुकुम हुआ। मीरजाफर प्रमुखोंने इस पर आपत्ति की पर नवाबने किसीकी भी बात नहीं सुनी। तब क्रुद्ध क्षुण्ण सेनापतिने कहा, 'जब तक दिल्लीसे सनद नहीं लाई जायेगी तब तक मैं क्या, मेरा कोई भी सहकारी आपकी ओरसे अस्त्रधारण नहीं करेगा।" अनन्तर सिराजने अपने विरुद्ध सबोंको देख कर जगतसेठको कारामुक्त किया और उनसे क्षमा मांगी।

वर्षाके बाद सौकतके विरुद्ध यात्रा की गई। पटनाके नायब-नाजिम राजा रामनारायणको उस ओरसे आक्रमण करने कहा गया। इधर स्वयं सिराज राजमहलके पथसे तथा राजा मोहनलाल मालदह जिलेकी ओरसे सौकत पर चढ़ाई करनेके लिये सजधजके साथ रवाना हुए। नवाबगञ्ज और मनिहारीके मध्यवर्त्ती सुरक्षित स्थानमें सौकतकी सेना छावनी डाले हुए थी। दोनों पक्षमें तुमुल संग्राम छिड़ा। सौकतकी ओरसे श्यामसुन्दर और मिनावलाल तथा सिराजकी ओरसे मोहनलाल और लालहजारी ये चार हिन्दू वीर थे। युद्धमें सौकत पक्षकी हार हुई। नशेमें चूर सौकत हाथी पर सवार था, इसी समय शत्रुपक्षकी ओरसे एक गोला ऐसा आया, कि उसका ललाट चकनाचूर हो गया।

इधर फलताके जहाज पर अंगरेजोंकी दुर्गतिकी सीमा न थी। खाद्य द्रव्यसे वे भारी कष्ट पा रहे थे। १७५६ ई०के प्रारम्भमें फरासिसियोंके साथ जब विवादकी नौबत आई, तब एक दल रणपोत ले कर वाटसन और क्लाइव विलायतसे भारतवर्षके पूर्वी किनारे आये। इसी समय कलकत्तेका दुःसंवाद मन्द्राज दरबारमें पहुंचा। बहुत वादानुवादके बाद यही स्थिर हुआ, कि कलकत्तेका

उद्धार करनेकी चेष्टा करनी होगी। क्लाइवको प्रधान सेनापति बना कर उनके अधीन तथा नौसेनापति वाटसनके अधीन १६वीं अक्तूबरको कम्पनीके पांच जहाज और पांच जंगी जहाज नौ सौ गोरो और पन्द्रह सौ सिपाहियोंको ले कर कलकत्तेकी ओर रवाना हुए। राहमें अनेक कठिनाइयोंका सामना करते हुए वे दिसम्बर मासमें फलता पहुंचे।

बङ्गालमें अंगरेजोंको फिरसे वाणिज्य करनेका अधिकार देने के लिये आर्कटके नवाब महम्मद अली, निजाम सलावतजङ्ग और मन्द्राजके अध्यक्ष पिगट साहबके तीन अनुरोधपत्र क्लाइव अपने साथ लाये थे। उन्होंने स्वयं भी एक पत्र लिख कर सभी पत्र माणिकचंदके पास भेज दिये। माणिकचंदने उन्हें सिराजके पास नहीं भेजा। उस समय और भी दो पत्र सिराजको लिख कर तथा अंगरेज युद्धके लिये प्रस्तुत हो कर ही आये हैं, नगरमें ऐसा आतङ्क पैदा करनेके लिये वे लोग कार्यक्षेत्रमें उतर पड़े। २७वीं दिसम्बरको मायापुरके पास उतर कर स्थलपथसे अंगरेजी सेना वजवजकी ओर अग्रसर हुई। यह सवाद पा कर राजा माणिकचंद भी वजवजकी रक्षाके लिये रवाना हुए। दोनों पक्ष से कुछ समय गोली चलनेके बाद ही माणिकचंदने रणक्षेत्रसे पीठ दिखाई।

वजवज अधिकारके बाद क्लाइव वाटसन टाना दुर्गके सामने आ पहुंचे। दुर्गरक्षक पहले ही भाग चुके थे। बिना खून खराबीके दुर्ग अंगरेजोंके हाथ आ गया।

इसके बाद २री जनवरीको क्लाइव कलकत्ता पहुंचे। उनके पहले दो जंगी जहाज भी आ गये थे। दोनोंमें गोली चलने लगी, पीछे दुर्गरक्षक दुर्गको छोड़ भाग गये।

वाट्सने नवावके पास पत्र भेजा जिसमें उन्होंने लिखा था, कि नवाब अंगरेजोंको वाणिज्य करनेको फिरसे इजाजत दें और उनकी क्षति पूरी करें। उत्तरमें सिराजउद्दौलाने लिख भेजा, "ड्रेकने मेरी दुष्ट प्रजाको आश्रय दिया था जिसे उपयुक्त दण्ड भी मिल चुका यदि कोई दूसरे अध्यक्ष नियुक्त हो, तो फिरसे अंगरेजोको वाणिज्य करनेको इजाजत मिल सकती है।" इसके उत्तरमें वाटसनने फिर लिखा, आपके कर्मचारियोंने ही आपको धोखा दिया है। उन लोगोंको सजा दीजिये और हमारी क्षति पूरी कीजिये। कम्पनीको लिखनेसे ही वह ड्रेकका विचार करेगी।

किन्तु यह पत्र नवावके पास पहुंचनेके पहले ही हुगलीसे लूटकी खबर आई। अब नवाब जरा भी ठहर न सका, तुरत दलबलके साथ कलकत्तेकी ओर रवाना हुआ। क्लाइव भी चुप बैठे न थे। बागबाजारसे मील भर उत्तर शिविर स्थापन करके नवावकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नवावकी अग्रगामी सेनाके साथ ३री फरवरीको उनकी मुठभेड़ हुई। कोई भी पक्ष पीछे न हटा। सिराजने नवाबगञ्ज पहुंच कर क्लाइवके पास यह जाननेके लिये एक दूत भेजा, कि वे सन्धि करनेके लिये तैयार हैं या नहीं। नवावके लिये कोई भी अंगरेजोंको रसद नहीं पहुंचाता था, देशी नौकर भी भाग गये थे। इस कारण क्लाइव भी सन्धिके लिये व्यग्र हो उठे थे। नवावका पत्र पा कर उन्होंने दो अंगरेज दूतोंको उसके पास भेजा। इसी समय नवाब कलकत्ता आ धमका। अमीरचंदके उद्यानमें एक खुला दरबार लगा। सिराजने दोनों दूतोंको संधिपत्रके सम्बन्धमें पक्की बातचीत करनेके लिये दीवानको शिविरमें भेज सभा भङ्ग की। अमात्योंका भाव देख कर दोनोंको बड़ा डर हुआ। इधर अमीरचंदने भी उन्हें होशियार रहनेकी सलाह दी। वे दोनों दूत उस अंधेरी रातमें वहांसे भागे। बस फिर क्या था क्लाइवको यह हाल मालूम होते ही उन्होंने सजधजके साथ आनेके लिये वाटसनको लिख भेजा। दो पहर रातके पहले ही छः सौ सेनाने आ कर उनका साथ दिया। क्लाइवके अधीन अभी पांच सौ गोरे, आठ सौ सिपाही और ६० गोलन्दाज मात्र थे। इधर नवावके दलमें १८ हजार अश्वारोही, १५ हजार पदातिक, असंख्य अनुचर, ५० हाथी और ४० कमान थीं।

परन्तु नवावके पास इतनी बड़ी फौज रहने पर भी क्लाइव जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने उसी रातको नवावकी सेना पर आक्रमण करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया। अंगरेजी सेनाने चुपके जा कर नवावके शिविर पर चढ़ाई कर दी। नवावकी सेना बिलकुल सो रह

थीं, इस प्रकार अतर्कित आक्रमणमें वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गई। आखिर उन लोगोंने धैर्य अवलम्बन कर अंगरेजी सेना पर गोली चलानी शुरू कर दिया। बहुत देर युद्ध करके जब ५७ हत और १३७ आहत हुए, तब अंगरेजी सेना पीछे हटी।

किन्तु इस रात्रिके आक्रमणसे नवाब बहुत ही डर गया। उसकी बहुती क्षति हुई। संधिके लिये उसने फिरसे अंगरेजोंके शिविरमें आदमी भेजा। दूरदर्शी अंगरेजने सन्धिके प्रस्तावको मंजूर कर लिया।

क्लाइवको इस बातका डर था, कि कहीं फरासी लोग नवाबके दलमें मिल भी न जांय। यही सोच कर उन्होंने नवाबसे सन्धि कर ली।

वाट्सन साहब और अमीरचंदने चन्दननगर जीतनेके बाद बारह हजार रुपयेका लोभ दिखा कर नन्दकुमारको हस्तगत किया। इसके बाद २१वीं फरवरीको वे लोग अग्रद्वीपमें जा कर नवाबसे मिले। अमीरचंदने जब ब्राह्मणके पैर छू कर शपथ खाई, कि अंगरेज संधिका पालन अवश्य करेंगे, तब नवाबने मीरजाफरको दलबल के साथ चन्दननगर जानेका जो हुकुम दिया था, वह वापस कर लिया। क्लाइवने भी लिख भेजा, 'नवाबके असन्तुष्ट होने पर वे फरासियोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त नहीं होंगे।'

मुर्शिदाबाद दरबारमें फरासी पक्ष ही प्रबल था। ख्वाजा वाजीद और जगत्सेठ दोनों ही इनका पक्ष समर्थन करते थे। जिससे इन दोनों पक्षमें किसी प्रकारका गोलमाल न हो, इसके लिये नवाब उन लोगोंको खूब तरहसे समझाने लगा। चाहे जिस कारणसे हो, अङ्गरेजीपक्ष भी शान्त था।

इधर नवाबको एक नई विपदकी खबर मिली। दिल्लीको विध्वस्त करके अहमद शाह अबदाली बंगालकी ओर बढ़ रहा था। राज्यकी रक्षाके लिये सिराज उद्दौला पटनाकी तरफ अग्रसर होनेका सङ्कल्प करके सन्धिपत्रकी शर्तोंके अनुसार अंगरेजोंसे सैन्य साहाय्य मांग भेजा। परन्तु उधरसे सहायताकी कोई सम्भावना न देखी गई।

सिराजने जब सुना, कि अंगरेजी सेना चन्दननगरकी ओर बढ़ रही है, तब उसने फरासियोंकी सहायतामें एक दल सेना भेजी। 'अभी फरासियोंने आत्मसमर्पण कर लिया है, जानेसे कोई फल नहीं।' कह कर नन्दकुमारने उस सैन्यदलको भी रोक दिया। अपने आचरणका समर्थन करते हुए उन्होंने जो कैफियत दी थी, वह सन्तोषजनक नहीं हुआ। दुःसमयमें पड़ कर खुल्लमखुल्ला कुछ नहीं कहने पर भी सिराज उन्हें संदेहकी दृष्टिसे देखने लगा। फिर फरासीसोंको ले कर ही अंगरेज और नवाबमें तकरार खड़ा हुआ। चन्दननगरसे निताड़ित फरासीसोंने जा कर नवाब दरबारमें आश्रय लिया। अंगरेजोंको अभिमान हो गया। नवाब यदि उनका साथ देता, तो फिर वह तड़ खड़ा नहीं हो सकता था। सन्धिके मर्मके अनुसार फरासी नवाबके भी शत्रु हैं, ऐसी अवस्थामें उन्हें आश्रय दे कर नवाब सन्धिपत्रका उल्लङ्घन कर रहे हैं, इत्यादि आशयकी चिट्ठी नवाबको लिखी गई और भय दिखानेके लिये एक दल अंगरेजी सेनाने हुगलीके उत्तर छावनी डाली। नवाब इस पर बहुत बिगड़ा, फिर भी जब उसे समाचार मिला, कि कुछ फरासी जहाज भारतवर्षकी ओर आ रहे हैं, तब उसने चतुरताका अवलम्बन कर एक पत्र लिख भेजा, 'अंगरेजी सेनाके अत्याचारसे हुगली वर्द्धमान हिजली आदि स्थान जनशून्य हो गये हैं, आप लोगोंकी ओरसे फिर कालीघाट भी कलकत्तेकी जमींदारीके अन्तर्भुक्त करनेका दावा किया गया है। आप लोगोंको सचमुच ये सब बातें मालूम न होंगी। जिससे ये सब दूर हो कर अंकुरित बन्धुभाव हो धीरे धीरे पुष्ट और वर्द्धित हो, आशा करता हूं, वैसा ही करेंगे। इधर फिर मैंने सुना, कि फरासी लोग दक्षिणपथसे फौज ला रहे हैं। मेरे राज्यमें यदि वे लोग विवाद करना चाहें, तो मुझे लिखें, आपकी सहायताके लिये मैं सिपाही भेज दूंगा। आपके रुपये भी मैं करीब करीब शोध कर चुका हूं।" क्लाइवने भी इसे स्वीकार कर लिया और नवाबके साथ मेल रखना ही अच्छा समझा।

नवाबकी अवस्था क्रमशः अधिक शोचनीय होती चली। अमात्य और पारिषदोंको वह संदेहकी दृष्टिसे देखने लगा। उन लोगोंका भी नवाबके प्रति जो विश्वास था वह जाता रहा। वे लोग नवाबकी निगाहसे दूर हट

गये। दोस्त महम्मद खां सासेराम चला गया। मोहनलालका कर्तृत्व बर्दाश्त नहीं होगा, ऐसा समझ कर राजा दुर्लभराम सैन्यदल ले कर मुर्शिदाबादसे दूर जा कर रहने लगे। सन्देहसे मतवाला-सा हो कर सिराज इस समय फिर जगत्सेठको अपमानित और लाञ्छित करने लगा। अंगरेजोंके साथ वह कलङ्कित सन्धि स्थापनके समय मीरजाफर अंगरेजोंके पक्षमें था, ऐसा कह कर उसके शत्रुओंने उसके प्रति नवाबका बुरा ख्याल पैदा करा दिया। पहले वह फिरसे प्रधान सेनापतिका पद पा कर कुछ संतुष्ट भी हुआ था, अभी उसने नवाबसे नाता तोड़ कर दरबारमें आना बिलकुल बंद कर दिया।

इधर नवाबके नवीन मंत्री मोहनलालके बीमार पड़नेसे किसी दूसरेको ऐसा साहस नहीं होता था, कि वे उसे सदुपदेश दें। अतः कई कारणोंसे दोनों पक्षमें जो मनमुटाव चला आता था, वह और भी गहरा होता गया। किये हुए दुष्कर्मके लिये माणिकचंद पहले बंदी हुए। पीछे उन्होंने दश लाख रुपये जुर्माना दे कर छुटकारा पाया। इस पर नवाबका विपक्ष दल बहुत बिगड़ा।

भीतर ऐसी अवस्था चल रही थी और बाहरसे सिराजके शिर पर वज्रगर्भ मेघका उदय हो रहा था। फरासियोंको पटनाकी ओर बढ़ने देख क्लाइवने उनके पीछे एक दल सेना भेजनेका सङ्कल्प किया। यह खबर नवाबके कानोंमें पहुंची। उस पर क्रोध सवार हुआ, और तुरत उसने हुकुम दिया कि, अंगरेजी दूत अभी मेरे दरबारसे चला जाय, अंगरेज फरासियोंके ऊपर किसी प्रकारका अत्याचार नहीं कर सकते, वाट्स यदि इस आशय पर अङ्गीकारपत्र लिख देनेको राजी न हो तो वे शीघ्र ही काशिमबाजारका त्याग कर कलकत्ता चले जाय, तीन दिनका समय ले कर वाट्सने कुल हाल कलकत्ता लिख भेजा। वहांसे खजाना दूसरी जगह उठा ले जानेका आदेश दे कर कलकत्तेके कर्तृपक्षने उन्हें आश्वासन दिया और काशिमबाजारकी रक्षाके लिये ४० गोरे और नाव पर लद कर रसद तथा कुछ गोलाबारूद भी भेज दी। वाट्सनने नवाबको लिख भेजा कि "एक फरासी भी जब तक इस देशमें रहेगा, तब तक हम लोग निरस्त नहीं होंगे। पर हां, यदि वे लोग आत्मसर्पण करें, तो उनके प्रति कोई अत्याचार नहीं किया जायगा। हम शीघ्र ही काशिमबजारमें सेना भेज रहे हैं, उस समय जिससे हम लोग दो हजार सेना स्थलपथसे पटना भेज सकें, आपको उसका बन्दोबस्त करना होगा। ऐसी हालतमें आपके देशमें शान्ति स्थापित हो सकती है।"

सिराजका नितान्त ही दुःसमय उपस्थित था। उसे राज्यच्युत करनेका षड़यन्त्र चलने लगा। दरबारके प्रधान मन्त्री और कर्मचारियोंके साथ नवाबका मनोमालिन्य चल रहा है, यह संवाद पा कर क्लाइवने वाटस साहबको उन लोगोंके साथ बन्धुता स्थापन करनेके लिये पत्र लिखा। विश्वासघातक कर्मचारीका दल भी यही चाहता था। अभी जगत्सेठके मन्त्रणाभवनमें क्रमागत षड़यन्त्र चलने लगा, राज्यके अनेक धनीमानी भी इसमें संलिप्त थे। ऐसा सुना जाता है, कि महाराज कृष्णचन्द्र भी षड़यन्त्रकारीके दलमें थे। मौका देख कर घसेटी बेगमने भी साथ दिया। उसके पासमें कुछ पूंजी थी, उसकी सहायतासे वह मीरजाफरको भी हस्तगत करनेकी चेष्टा करने लगी। अंगरेज लोग भी जिससे इस षड़यन्त्रमें भाग लें, अमीरचंदकी मध्यस्थतामें उसकी भी कोशिश होने लगी। उन लोगोंका मनोभाव समझ कर जगत्सेठने २९ वीं अप्रिलको नवाबके एक घुड़सवार दलके नायक यार लुत्फ खांको वाट्स साहबके पास भेजा। वाट्सने स्वयं जानेका साहस न करके अमीरचंदको उनके पास भेज दिया। लुत्फ खांने मीरजाफरकी तरफसे कहा, 'पटनासे लौटते ही नवाबने अंगरेजोंको निकाल भगानेकी प्रतिज्ञा की है।'

दूसरे ही दिन फिर मीरजाफर-प्रेरित खोजा पिद्रू जा कर वाटसनके साथ मिला। मीरजाफरने कहला भेजा, 'मैं स्वयं जीवनकी आशङ्का करके नवाबके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेको तैयार हूं। उन्हें राज्यच्युत करनेमें यदि अंगरेजोंकी ओरसे मदद मिले, तो दुर्लभराम, जगत्सेठ आदि प्रधान प्रधान व्यक्ति भी शामिल होनेके लिये प्रस्तुत हैं। अंगरेजोंकी सलाह पाने पर शीघ्र ही कार्यारम्भ करना होगा। किन्तु सिराजकी आंखोंमें धूल फेंकनेके लिये कमसे कम हुगलीसे अंगरेजी शिविर उठा लेना होगा।' यह संवाद पाते ही क्लाइवने फरासी-

बलके लिये सेना भेजना बंद रख कर नवाबको एक मधुर-पत्र लिखा। पीछे वे हुगलीसे छावनी उठा लानेकी सलाह करनेके लिये कलकत्तेके दरबारमें आये। इस समय फिर मीरजाफरका प्रेरित मिर्जा अमीरबेग भी कलकत्ता पहुंचा। सिराजको सिंहासनच्युत करनेके लिये प्रधान प्रधान कर्मचारियोंने जिस स्वीकारपत्र पर स्वाक्षर किया था उसे दिखाते हुए मिर्जा अमीरने कहा, 'अभी आप लोगोंकी सहायता पानेसे ही नवाबके अत्याचारसे प्रजा उद्धार पा सकती है।' दरबारमें यह स्थिर हुआ, कि मीरजाफर जैसे क्षमताशाली व्यक्तिके प्रस्तावानुसार कार्य करना ही युक्तिसंगत है। उस समय हुगलीसे आधी सेना चन्दननगर और आधी कलकत्ता लाई गई। पीछे नवाबको और भी अच्छी तरह भुलावेमें डालनेके लिये लिखा गया, हम लोग अपनी सेनाको हुगलसे ले आये। आप भी पलासीसे सेना हटा कर सद्भावकी रक्षा करें। * किन्तु इसको पहले ही जो ४० अंगरेजी सेना कटेया भेजी गई थी, उन्हें दुर्लभरामने कैद कर रखा था। बहुतसी अंगरेजी सेना छिपके काशिमबाजार भेजी गई है, गुप्तचरके मुखसे यह संवाद पा कर सिराज फौरन काशिमबाजारकी ओर दौड़ पड़ा। उसे कहीं भी कुछ दिखाई न दिया, फिर भी उसका संदेह दूर नहीं हुआ। अहमदशाह अबदलीके नहीं आनेसे अभी जो उसको अंगरेजोंका डर था, वह बहुत कुछ जाता रहा। किन्तु उसे पूरा विश्वास था, कि अंगरेज मुर्शिदाबाद आये बिना छोड़ेंगे नहीं। इस कारण नाना प्रकारसे मीरजाफरको खुश कर उसे पन्द्रह हजार सेनाके साथ पलासीमें दुर्लभरामके साथ 'मिलनेके लिये भेजा। पछा हो कर अंगरेज लोग राजधानीमें घुसेंगे, यह आशङ्का कर उसने भागरथीके मुख पर बड़े बड़े शालवृक्ष गिरा कर उसे रोक दिया। इधर फरासिसियोंको भी आयत्त करने लिये नवाबने मूंसोलोको भागलपुरमें ठहरनेके लिये पत्र लिखा और उन लोगोंके खर्चा-वर्चाका भार बिहारके कर्मचारियों को दिया गया

नवाबके इन सब आचरणों पर अंगरेजपक्षने अभी प्रकाश्यभावमें कुछ भी प्रतिवाद नहीं किया। वे लोग मीरजाफरके साथ चुपके साजिश करने लगे। नवाब को जिसमें किसी प्रकारका संदेह होने न पावे, इस ख्यालसे उसने पलासी जानेका आदेश पा कर जरा भी आनाकानी न की और तुरत पलासीकी यात्रा कर दी।

इधर कलकत्तेके गुप्त दरबारके उपदेशानुसार वाट्सने मीरजाफरके साथ रुपये पैसेकी बात छेड़ी। इतने दिनों तक अमीरचंदको मीरजाफरके सम्बन्धमें कुछ भी कहा नहीं गया था। किन्तु अभी उसके जैसे धूर्त आदमीको धोखा देनेसे काम नहीं चलेगा, सोच कर वाट्सने उसे मीरजाफरकी बात कह दी। अमीरचन्दने समझा, कि षड्यन्त्र सिद्ध होने पर मीरजाफरसे मोटी रकम हाथ लगेगी। इस कारण उन्होंने कहा, कि षड्यन्त्र व्यर्थ होनेसे इधर जिस प्रकार मेरा प्रभूत अर्थनाश होगा, उधर उसी प्रकार मेरे प्राण ले कर खींचा-खींची होगी। ऐसी अवस्थामें मुझे केवल नष्ट अर्थ लौटा देनेसे ही काम नहीं चलेगा, नवाबके राजकोष-प्राप्त. मणिमुक्ताका चतुर्थांश तथा प्राप्त अर्थमेंसे सैकड़े पीछे ५) रु०के हिसाब से मुझे देना होगा। अभी सम्मत नहीं होनेसे विपद्की सम्भावना है, इस कारण १४वीं मईको मीरजाफरके साथ जो सन्धिपत्र लिखा जायेगा, उसके खसरेके साथ अमीरचंद लिये भी एक चुक्तिपत्र कलकत्तेके दरबारमें भेजा जायेगा। १७वीं मईको उस दरबारमें सन्धिपत्रकी नकल और अमीरचंदके प्रस्ताव पर विचार हुआ। राजकोषसे जो रुपये मिलेंगे वह इस प्रकार बांटे जायेंगे, ऐसा स्थिर हुआ, कम्पनी एक करोड़, अंगरेज और फिरंगी वणिक ५० लाख, देशी वणिक् २० लाख, अरमानी वणिक् ७ लाख नौसेना २५ लाख और सैन्यविभाग २५ लाख। कौंसिलके सभासदोंको भी यथायोग्य पारितोषिक देना होगा इस बातका भी उल्लेख रहा। वाट्स साहबने खसरे पर अमीरचंदके नाम ३० लाख लिख दिया, किन्तु कौंसिल ने उसे मंजूर नहीं किया। परन्तु इस षड्यन्त्रकी बात

* मूसोंला प्रभृति फरासियोंको काशिमबाजारसे निकाल भगानेके पहले अंगरेजों पर रञ्ज हो कर सिराजउद्दौलाने राजा दुर्लभरामके अधीन एक दल सेना पलासी-क्षेत्रमें रखी थी।

कहीं नवाबको न कह दे इस भयसे उसे भुलावेमें डालना ही अच्छा समझा गया। लाल और सफेद दो कागज पर सन्धि-पत्र लिखा गया, सफेद असली और लाल जाली था। असली पत्र पर अमीरचंदका कोई उल्लेख नहीं रहा,—दूसरे पर उसे ३० लाख रुपये देनेकी बात थी। वाटसनको छोड़ कौंसिलके सभी सदस्योंने इस पर हस्ताक्षर किया। वाटसनका नाम क्लाइवके आदेशानुसार लुसिंटन लिखा गया था।

१९वीं मईको दोनों ही संधि-पत्र मुर्शिदाबाद भेजे गये।

इधर एक ऐसी घटना घटी जिससे नवाबके मनसे अंगरेजोंके प्रति जो संदेह था, कुल जाता रहा। इसी समय पेशवा बाजीरावके यहांसे एक दूत कलकत्ता आया। उसके आनेका उद्देश्य यह था, कि अंगरेजोंसे यदि मदद मिले तो महाराष्ट्रगण बंगालमें आ कर लूट कर सकते हैं। उन लोगोंके साथ क्लाइवका विशेष परिचय न था, न जाने कहीं नवाबने ही हम लोगोंकी परीक्षा लेने न भेजा हो, ऐसा सोच कर उन्होंने वह पत्र नवाबके पास भेजना ही अच्छा समझा, क्योंकि इससे यदि नवाबका ही चक्रान्त साबित होगा, तो भी अंगरेजोंके ऊपर उनका दृढ़ विश्वास हो जायेगा। आखिर हुआ भी ऐसा ही। अंगरेजोंको परम मित्र जान कर वह अधिकांश सेना मुर्शिदाबाद लौटा ले गया।

जाली सन्धि-पत्र दिखा कर सदस्यगण अमीरचंद पर विश्वास न कर सके। उन लोगोंने स्थिर किया, कि अमीरचंदको कलकत्ता ले जा कर उसे काबूमें रखना ही अच्छा है इसी उद्देशसे उन लोगोंने कहा, 'न जाने कहीं आपकी जान जोखिममें न पड़ जाय, इसलिये आपको कलकत्तेमें ही ठहरना अच्छा है।' अमीरचंदने भी वैसा ही किया।

अंगरेजोंके ऊपर विश्वास फिरसे जम जाने पर सिराजने पलासीसे मीरजाफरको बुला भेजा। उससे और कोई विशेष काम लेना ही है, यह सोच कर नवाब उसे बहुत तंग करने लगा। मीरजाफरने दरबारमें आना बंद कर दिया, अधीनस्थ सेनाओंसे भी कह रखा, कि यदि मेरे महल पर हठात् आक्रमण कर दिया जाय, तो तुम लोग उसकी रक्षामें तैयार रहना। इधर अंगरेजोंके साथ उसकी छिपके बातचीत चलने लगी। संधि-पत्र देख कर राजा दुर्लभरामने कुछ आपत्ति की, क्योंकि उसे एक कौड़ी भी देनेकी बात न लिखी थी। इस पर वाटसने कहा, आप खजाञ्ची हैं, कुल हाथ आप हीका है। जब रुपया बटवारा होगा, तब हम लोग नियमानुसार आपको अपने अपने भागमें से सैकड़े पीछे ५) रु० आपको देंगे।" राजाबहादुर शान्त और आश्वस्त हुए। १७५७ ई०को ४थी जूनको मीरजाफरने संन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किया। विधाताकी क्या ही आश्चर्य विधि है! इस दिन नवाबने हुकुम दिया, कि मीरजाफर सेनापति-सिरिस्तेका कामकाज खाजा हादीको समझा दें।

मीरजाफरने जिस संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किया था, उसमें पूर्वोक्त प्रकारसे रुपया बटवाराके अलावा इस बातका भी उल्लेख था कि,' "कलकत्ता और दक्षिणमें कुल्पीतकका स्थान अंगरेजोंके दखलमें आ जायेगा। इसके लिये अंगरेज नवाब सरकारमें अन्यान्य जमींदारोंकी तरह राजकर देंगे, जो कोई अंगरेजोंका शत्रु है उसे नवाबका भी शत्रु समझना होगा। बङ्गाल, बिहार और उड़ीसामें फरासिसियोंकी जो सब कोठियां हैं, वे सभी अंगरेजोंके दखलमें आयेंगी तथा फरासी अब इस देशमें ठहर नहीं सकेंगे। नवाब होनेसे ही मैं शर्त्तके अनुसार कुल रुपये कम्पनीके हाथ दूंगा तथा हुगलीके दक्षिण कभी भी कोई दुर्ग नहीं बनवाऊंगा।

अंगरेजों (वाट्सन, क्लाइव, डे्क, वाटस, बिचार)-ने जिस सन्धिपत्र पर दस्तखत किया था उसमें इन सब शर्तोंके अलावा यह भी लिखा था कि, "हम लोग अपनी सारी सेना ले कर बिहार और उड़ीसाकी सूबेदारी प्राप्तिके लिये यथासाध्य चेष्टा करेंगे तथा नवाब होनेके बाद जब कभी वे शत्रुके विरुद्ध हम लोगोंसे मदद मांगेंगे, तब ही प्राणपणसे हम उनकी सहायता करेंगे।"

इसके सिवा क्लाइवने वाट्सकी सहायतासे एक स्वीकार-पत्र भी मीरजाफरसे लिखवा लिया। उसका आशय इस प्रकार था—'कमिटीको (वाट्स और उनके अन्तर्भुक्त) १२ लाख और सेनाओंको ४० लाख रुपया उपहार दूंगा।"

ये सब काम बहुत गुप्तभावसे किये गये थे—नवाब तो क्या, उसके विश्वस्त कर्मचारियोंको भी मालूम न हो सका।

सब ठीक हो जाने पर 'शुभस्य शीघ्र' नीतिका अनुसरण कर क्लाइवने १२वीं जूनको ससैन्य युद्धयात्रा की।

इस समय गुप्त मन्त्रणाका संवाद नवाबके कानोंतक पहुंचा। क्रोधके आवेशमें उसने मीरजाफरको उसके घर पर ही आक्रमण करनेका सङ्कल्प किया। वाट्स वायुसेवन करनेके बहाने १२वीं जूनको मुर्शिदाबादसे भाग गये। १३वीं को ३ बजे वे कालनामें अंगरेजी सेनासे जा मिले। इसी दिन नवाबने मीरजाफरके महल पर आक्रमण करनेका सङ्कल्प किया था, किन्तु वाट्सके भागनेका समाचार पा कर उसे समझनेमें देर न लगी, कि विपद् आसन्न है। इस समय चाहे जिस तरह हो मीरजाफरको बाध्य और प्रसन्न रखना ही होगा। बड़ी नम्रतासे एक पत्र लिख कर उसने एक आदमीकी मार्फत मीरजाफरके पास भेजा, परन्तु मीरजाफर दरबारमें आनेसे बिलकुल राजी नहीं हुआ। अनन्तर आत्ममर्यादा और आत्माभिमान भूल कर थोड़ेसे अनुचरोंके साथ सिराज स्वयं उसके घर पर गया। कुरान छू कर दोनोंने मेल कर लिया। मीरजाफरने शपथ खाई, कि वह कभी भी अंगरेजोंसे न मिलेगा और न उनकी सहायता ही करेगा। नवाबने भी वचन दिया, कि यह गोलमाल मिट जानेसे ही वे सम्पत्ति और परिवारके साथ अन्यत्र जा कर निर्विघ्न वास करने देंगे।

सिराज सरल विश्वासी था—संधिस्थापनके बाद वह मीरजाफर पर एकदम विश्वास करने लगा। मूसोलाको भागलपुरसे चले आने लिख कर तथा सैन्यदल फिरसे पलासीकी ओर भेजनेका प्रबंध कर १४वीं जूनको इस प्रकार लिखा, "सन्धिपत्रके अनुसार मैंने प्रायः सभी रुपये चुका दिये। माणिकचंदकी विपद भी एक तरहसे ठीक ही हो गया। ऐसी अवस्थामें वाट्स और कासिमबजारके कोठीके अन्यान्य अङ्गरेजोंको भागते देख कर मुझे विश्वास हो गया, कि आप लोग सन्धि पालन करनेमें प्रस्तुत और इच्छुक नहीं हैं। जो हो मैंने संधि भंग नहीं की, इसीसे भगवान्को धन्यवाद देता हूं।"

१३वीं जूनको क्लाइवने चन्दननगरसे नवाबको इस प्रकार पत्र लिखा, "आप संधिपत्रके अनुसार कार्य नहीं करते अब भी रुपया परिशोध नहीं कर सके हैं, फरासिसोंके साथ सद्भाव रखते हैं— बूसीको आनेके लिये लिखा है, उसका अब भी रुपयेसे पालन करते ही हैं, । हम लोगोंको अन्य तरहसे अपमानित कर रहे हैं। हम सभी निर्विवाद सह्य करते आ रहे हैं। अभी हम लोगोंकी सेना मुर्शिदाबादकी यात्रा कर रही है। आपके प्रधान प्रधान पात्रमित्र, मीरजाफर, जगतसेठ, दुर्लभराम, मीरमदन, मोहनलाल आदि जैसी मीमांसा कर देंगे, आशा है, आप खूनखराबी बंद रखनेके लिये उसी पर सहमत होंगे।" उसी दिन वे चन्दननगरसे दो सौ सेना ले कर भागीरथीकी राहसे रवाना हुए। सिपाहियोंने पैदल मुर्शिदाबादकी ओर यात्रा की। राहमें हुगलीका फौजदार एक बार बाधा देनेके लिये तैयार हो गया था, किन्तु क्लाइवकी सजावट देख कर उसे खड़ा होनेका साहस नहीं हुआ।

१६वीं जूनको अंगरेजीसेना कांटोयासे ६ मील दूरवर्त्ती पाटुली नामक स्थानमें पहुंची। दुर्गाधिपतिके साथ पहले ही से बंदोबस्त था, कि थोड़ा युद्धका अभिनय किया कर दी वे आत्मसमर्पण करेंगे। १७वींके सबेरे कूटके साथ थोड़ी शक्तिपरीक्षाके बाद ही दुर्गवासी भाग गये, दुर्ग अंगरेजोंके हाथ लगा।

क्लाइव प्रति दिन मीरजाफरको आशा और उत्साह भरा पत्र लिखते थे। १७वींको मीरजाफरके पत्रसे जाना गया, कि वे केवल बातसे नवाबका पक्ष समर्थन करने तैयार हैं, परन्तु कार्यतः अंगरेजोंके साथ उनका जो संधि बन्धन हुआ है, उसीके अनुसार वे चलेंगे। क्लाइव सन्देह और उद्वेगसे विचलित हो उठे। १९वीं तारीखको उन्हें एक दूसरा पत्र मिला, जिसमें लिखा था, कि मीरजाफर पलासीको रवाना हुए। रणक्षेत्रमें वे बांयें या दाहिने छावनी डालेंगे और वहींसे अंगरेजोंके साथ संवाद आदान प्रदान करेंगे। यह संवाद पा कर सन्देह बहुत कुछ तो दूर हुआ, पर भय और दुश्चिन्ता दूर नहीं हुई। रणक्षेत्रमें मीरजाफरकी घुड़सवार सेनाकी सहायता नहीं पानेसे जयकी कोई आशा नहीं। क्योंकि अंगरेजोंके एक भी घुड़सवार सेना थी।

इधर अङ्गरेजी सेनाकी रणयात्राका संवाद और क्लाइव का अन्तिम पत्र पा कर सिराज भी युद्धकी तैयारी करने लगा। सेनानायकोंको सैन्यसग्रह करने कहा गया। सेनाओंका वेतन बहुत बाकी पडा था, वेतन पाये विना वे लोग आगे बढ़नेसे इनकार कर गये। तीन दिन तो इसी गड़बडोमें बीत गया। आखिर कुल वेतन पा जाने पर वे लोग पलासीकी ओर रवाना हुए।

मीरजाफरका अभिप्राय ठीक न समझ कर क्लाइव-प्रमुख अंगरेज लोग बड़े ही शङ्कित और विचलित हो उठे। मन्त्रणा सभा की गई। प्रश्न उठा—अभी नवावी सेना पर आक्रमण किया जायेगा या वर्षाकाल-काटोयामें ही विना कर मराठोंकी मदद ले कर युद्धकी तैयारी की जायगी? सभामें २० सभ्य उपस्थित थे। क्लाइव प्रमुख १३ने काटोयामें रहनेके पक्षमें और बाकी ७ उसी समय युद्ध ठान देनेके पक्षमें थे। कर्त्तव्य निर्द्धारित नहीं हुआ। आखिर काटोयामें चन्द तरहकी सुविधा देख कर क्लाइवने बहुत तड़के ही गंगा पार होनेका हुकुम दे दिया। २२वीं तारीखको मीरजाफरके यहांसे भी एक पत्र आया। उसमें अंगरेजोंके कर्त्तव्यके सम्बन्धमें उपदेश लिखा हुआ था। इसके उत्तरमें 'दादपुर तक जाने पर भी यदि मीरजाफर अङ्गरेजी सेनाका साथ न दे तो वे नवावके साथ संधि करेंगे, इस प्रकार लिख कर अंगरेज लोग पलासीकी ओर अग्रसर होने लगे (२२वीं जून)। राहमें तरह तरहकी कठिनाइयां झेलते हुए वे एक बजे दिनको पलासीके आम्रकाननमें पहुंचे। इसके पहले ही सिराज उद्दौलाने दादपुरके दक्षिण आ कर छावनी डाली थी। सामनेमें मीरमदन और मोहनलाल की वाहिनी वायें पलासी ग्राम तक विश्वासघातक मीरजाफर, दुर्लभराम और यार लुत्फके अधीनस्थ सैन्य-दल तथा दायें ४ कमान और कुछ गोलन्दाज ले कर फरासी सिन्फ़े थे।

बहुत सवेरे नवावकी यह विराटवाहिनी और विपुल आयोजन देख कर अंगरेजोंके प्राण सिहर उठे, किन्तु मीरजाफर आदि उन लोगोंकी ही सहायता करेंगे, इस ढाढ़स पर क्लाइव युद्धके लिये प्रस्तुत हुए। ८ कमान यथा स्थान पर स्थापित करके उन्होंने बाईं ओर सिपाही और दाहिनी ओर गोरा सेनाको सजाया।

आठ बजते न बजते फरासी गोलन्दाजोंने कमानसे अग्नि स्पर्श की—दक्षिण पार्श्वस्थ नवाब सेना भी अटूट गोली बरसाना शुरू कर दिया। अंगरेजीसेनाने भी उसका जवाब दिया, किन्तु संख्यामें वे लोग मुट्ठी भर थे। इनमें भी फिर १० गोरे और २० सिपाही आध घंटेके भीतर ही पञ्चत्वको प्राप्त हुए। क्लाइवने डरके मारे ससैन्य आम्रकाननमें आश्रय लिया। किंतु यहां भी नवावी सेना उन लोगों पर गोली बरसाने लगे। यह सब मीरमदन और मोहनलालका काम था। प्रभुद्रोही मीर-जाफर, दुर्लभराम और लुत्फ दर्शकके ही रूपमें खड़े थे। आम्रकाननके वृक्ष और बाध अंगरेजी सेनाके कवचका काम करते थे। क्लाइव आदिने स्थिर किया, कि सारा दिन वे लोग इसी आश्रयतलमें बितायेंगे और रातको नवावशिविर पर आक्रमण कर देंगे। महावीर मीर-मदन अविश्रान्त परिश्रमसे अंगरेजी सेनाके ऊपर गोली बरसाने लगा। किंतु सिराजके दुर्भाग्यवशतः उसके पैरमें सख्त चोट लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। कुछ समय बाद ही उसके प्राण निकल गये।

अभी सिराज भयभीत और विचलित हो गया। अब क्या करना चाहिये इसके लिये उसने मीरजाफरको बुला भेजा। बहुत साध्य साधनके बाद सेनापति नवावके सामने आ खड़ा हुआ। आत्माभिमानकी ओर ख्याल न करते हुए सिराजने उसके सामने राजमुकुट रख विनीत भावसे कहा, 'आप मेरे आत्मीय हैं, महामति अलिवर्दीकी बात सुन कर मेरे पूर्वकृत सभी अपराध भूल जायं। सैयदवंशोचित महत्त्व द्वारा अनुप्राणित हो आप मुझे इस विपदसे बचायें, नहीं तो मेरा कोई उपाय नहीं।' इस अनुनय विनय पर दुराकांक्षी विश्वास-घातक मीरजाफर विचलित होनेको नहीं। उसने प्रतारणाके ऊपर प्रतारणा की और कहा, "आज तो शाम हो चली, सेनाको रोक दिजिये, कल मैं सारी सेना को एकत्र कर युद्धमें अग्रसर हूंगा।" और यह भी कहा 'डरें नहीं, शत्रुसेना रातको शिविर पर आक्रमण नहीं करेगी।"

इधर महावीर मोहनलाल और फरासी गोलन्दाज लगातार गोली बरसा कर अंगरेजोंकी नाकों दम कर

रहे थे । इसी समय स्वाधीन चिन्ताविरहित भीतिविह्वल सिराजने, मीरजाफरके परामर्शानुसार युद्ध स्थगित रखनेके लिये हुकुम दिया। पहले तो मोहनलालने इस पर आपत्ति की—थोड़ी देर और युद्ध होता रहता, तो कुछ न कुछ मीमांसा हो ही जाती। किन्तु मीरजाफरकी विरक्ति देख कर और दुर्लभरायकी सलाहसे नवावका फिर फिर आदेश पा कर आखिर वे युद्धक्षेत्रसे लौट आनेके लिये वाध्य हुए। इधर मीरजाफरने क्लाइवको लिख भेजा, कि रात होते न होते यदि आप शिविर पर चढ़ाई कर दें, तो कार्यकी सिद्धि होगी।" सेनापति मोहनलालको पीछे हटते देख सेना डर गई और रणक्षेत्रसे पीठ दिखाने वाध्य हुई। अंगरेजी सेनाने उनका पीछा किया। वाहरी शत्रुसे भी बढ़ कर घरके शत्रुका भय करके सिराजउद्दौला हाथीकी पीठ पर सवार हो राजधानीकी ओर भागा।

अंगरेजी सेनाने दादपुरमें रात विताई। दूसरे दिन सवेरे पुत्र मीरन और अनुचरोंके साथ मीरजाफर अंगरेजी शिविरमें पहुंचा। बङ्गाल, विहार और उड़ीसाका नवाब सम्बोधन करके क्लाइवने उसका आलिङ्गन किया।

सिराजउद्दौला रातों रात भाग कर २४वीं जूनके सवेरे राजधानी घुसा। प्रधान प्रधान सेनापतियोंको उसने अपनी शरीररक्षाके लिये राजभवनमें ही अपेक्षा करने कहा, किन्तु किसीने भी, यहां तक, कि उसके ससुर इरीज खांने भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। पात्रमित्र सभी उसे छोड़ चले गये। नवावने रुपये दे कर लोगोंको वशीभूत करनेकी चेष्टा की और जिसका जो प्राप्य था, उसे देनेके लिये खजाना खोल दिया। न्याय अन्याय भावमें असंख्य लोग आ कर रुपये ले गये, किन्तु कोई भी उसकी रक्षाके लिये अग्रसर नहीं हुआ।

अब उसने किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो वेगमोंको उठाया और धनरत्नोंके साथ हाथी पर सवार हो तीन बजे रातको मनसूरगञ्जका प्रासाद छोड़ दिया और जान ले कर भागा। भगवानगोलामें जा कर नाव पर सवार हुआ। इसी समय सिराजके भागनेका सम्वाद पा कर मीरजाफरने मनसूरगञ्ज दखल कर लिया और उसे पकड़नेके लिये चारों ओर आदमी भेजा।

तीन दीन सपरिवार निराहार कटा कर सिराज राजमहलके दूसरे किनारे चार कोस दूरवर्ती एक ग्राममें पहुंचा। छोटे छोटे बच्चोंके लिये दूध तथा दूसरोंके लिये भोजनकी तलाशमें क्षुत्पिपासासे कातर नवाब दानशा फकीरके आश्रममें गया। पहलेसे ही यह फकीर नवावके ऊपर रंज था। अभी मौका देख कर, उसने सिराजको पकड़वा देनेका संकल्प करके राजमहलके फौजदार मीरजाफरके भाई मीर दाउदको खबर दी। मीरजाफरके भेजे हुए मीरकासिमने दलवलके साथ जा कर नवावको सपरिवार कैद किया। उन लोगोंके पंजेमें पड़ कर सिराज फूट फूट कर रोने लगा और कहा, "मुझे जानसे न मार कर किसी एक निभृत स्थानमें वास करने दो। सामान्यवृत्तिसे ही मेरी जीविका चलेगी।" किन्तु उस की वात सुनता कौन? सभी तो उसके खूनके प्यासे थे। उसका कुल धन लुट गया। भागनेके ठीक आठवें दिन वन्दी भावमें वह फिर मुर्शिदावाद लाया गया।

दो पहरका समय था—मीरजाफर मनसूरगञ्ज प्रासादमें सुखपूर्वक सो रहा था। पुत्र मीरनने अपनी कोठरीके पासवाली कोठरीमें सिराजको वन्द रखनेका हुकुम दिया। किन्तु इस पर भी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ। दुराचारी महम्मदी वेग नामक एक अनुरक्त अनुचरको सिराजके प्राण लेनेके लिये भेजा। उसे देखते ही सिराजके प्राण सिहर उठे और उसने ईश्वरको प्रणाम कर अपने किये दुष्कर्मके लिये उनसे क्षमा मांगी। आखिर घातककी ओर देख कर उसने कहा, "क्या तुम मुझे मारने आये हो? क्या मुझे निभृत स्थानमें भेज देनेके लिये भी उन लोगोंकी इच्छा नहीं हुई?" फिर कुछ समय मौन रह कर वह स्वयं बोल उठा, 'नहीं' नहीं' ऐसा होनेसे होसेन कुलीको तृप्ति किस प्रकार होगी? उसकी हत्याका प्रायश्चित्त हुआ क्या!' पाखण्डी महम्मदी वेगकी तलवारसे उसके शिर क्षणमें जमीन पर लोटने लगा, शरीर खंड खंड किया गया। अन्तमें उसके शरीरके कटे हुए टुकड़ोंको हाथीकी पीठ पर चढ़ा कर समूचा नगर प्रदक्षिण कराया गया और पीछे अलिवर्दीके मकबरेकी बगलमें उसे दफनाया गया।

सिराजगञ्ज—१ बङ्गालके पावना जिलेका एक उपविभाग।

यह अक्षा० २४° ७' से २४° ४५' उ० तथा देशा० ८६° १५' से ८६° ५३' पू० यमुनाके दाहिने किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण ६५७ वर्गमील है। इसमें १ शहर और २६६२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ८ लाखसे ऊपर है। शाहजादपुर, उल्लापाड़ा, सिराजगञ्ज और रायगञ्ज थाना ले कर यह उपविभाग संगठित हुआ है।

२ उक्त उपविभागका एक नगर और नदीतीरवर्त्ती सर्वप्रधान वाणिज्य बन्दर। यह अक्षा० २४° २७' उ० तथा देशा० ८६° ४५' पू०के मध्य यमुना नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या २३ हजारसे ऊपर है। पाटकी आमदनी और रफ्तनीके लिये जितने वाणिज्यकेन्द्र हैं उनमें सिराजगञ्जकी आढ़त सबसे बड़ी है। यहांका पाट सब जगहसे उमदा होता है। कभी कभी तो पाट ठीक रेशम जैसा दिखाई देता है।

१८६६ ई०में सिराजगञ्जके माछिमपुरमें सिराजगञ्ज-जूट-कम्पनीकी ष्टीम-कोठी स्थापित हुई। इसमें चटकी थैली आदि प्रस्तुत होती थी और प्रायः ३॥ हजार आदमी काम करते थे। उन लोगोंके काम काजमें विशेष सुविधा देख १८७७ ई०में कलकत्तेकी बड़ी बड़ी छः कोठियोंके अधिकारीने यहां शाखा कोठी खोल कर पाट खरीदनेकी व्यवस्था की। इस समय रुपये लेन-देनकी सुविधा होगी, जान यूरोपीय वणिक्-समितिके प्रार्थनानुसार कलकत्तेमें बैङ्क आव-बेङ्गालने यहां एक एजेन्सी खोल कर हुंडोसे रुपये देनेकी व्यवस्था की थी।

यहां रङ्गपुर, कोचविहार, मैमनसिंह, बगुड़ा, ग्वालपाड़ा आदि दूरवर्त्ती स्थानोंसे नाना प्रकारके द्रव्योंकी आमदनी तथा उसके बदले विलायती कपड़े, लवण आदि विविध द्रव्योंकी रफ्तनी होती है। यहांके घाटमें करीब ५० हजार बोट आमदनी और रफ्तनीके लिये हमेशा लगे रहते हैं।

धानबंदी नदीका खेयाघाट, कालीबाड़ी घाट, रहुआबाड़ी घाट और जूट कम्पनीका माछिमपुरघाट यहांके वाणिज्यके प्रधान अड्डे हैं। पावनासे चंदाईकोना तक जो रास्ता गया है, उस रास्तेसे बहुत सा माल भी सिराजगञ्जहाटमें बिकनेको आता है।

सिरापत्र (सं० पु०) १ अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़। २ एक प्रकारकी खजूर।

सिराप्रहर्ष (सं० पु०) सिराहर्ष, नेत्ररोगविशेष। सिराहर्ष देखो।

सिरामूल (सं० क्ली०) सिराका मूल, नाभि।

सिरामोक्ष (सं० पु०) शरीरका दूषित रक्त निकल जाना, फसद खुलवाना।

सिरार (हिं० स्त्री०) वह लकड़ी जो पाईके सिरे पर लगाई जाती है।

सिराल (सं० त्रि०) सिराः सन्ति-अस्य (प्राणिस्थादातो-लजन्यतरस्या। पा ५।२।९६) इति लच्। १ सिरायुक्त, जिसमें बहुत नसें या रेशे हों। (क्ली०) २ कर्मरङ्ग, कमरख।

सिरालक (सं० पु०) अस्तिभङ्गवृक्ष।

सिराला (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारका पौधा। २ कर्मरङ्गफल, कमरख।

सिराली (हिं० स्त्री०) मयूर-शिखा, मोरोकी कलगी।

सिरालु (सं० त्रि०) सिराल, सिरायुक्त।

सिरावन (हिं० पु०) जुता हुआ खेत बराबर करनेका पाटा, हेंगा।

सिरावृत्त (सं० क्ली०) सीसक, सीसा।

सिरावेध (सं० पु०) सिरा विद्धकरण, सिराका वेध। रक्त दूषित होनेसे सिराविद्ध कर रक्तमोक्षण करना होता है। शिरावेध देखो।

सिराव्यध (सं० पु०) शिरावेध।

सिराव्यधन (सं० क्ली०) सिरावेध, सिराविद्ध करना।

सिराहर्ष (सं० पु०) १ नेत्ररोगविशेष, आंखके डोरोंकी लाली। मोहवशतः सिरोत्पातसे यह रोग उत्पन्न होता है। यह रोग होनेसे रोगीकी आंख लाल और अत्यन्त स्रावान्वित होती है और दृष्टि क्षीण हो जाती है।

सिरित (हिं० पु०) रक्त शिरीष वृक्ष, लाल सिरिस।

सिरियारी (हिं० स्त्री०) सुनिष्णक शाक, सुसनाका साग।

सिरिश्ता (फा० पु०) विभाग, मुहकमा।

सिरिश्तेदार (फा० पु०) अदालतका वह कर्मचारी जो मुकदमेंके कागज पत्र रखता है।

सिरिश्तेदारी (फा० स्त्री०) सरिश्तेदारका काम या पद।

सिरिस (हिं० पु०) सिरस देखो।

सिरी (सं० स्त्री०) १ करघा। २ कलिहारी, लांगली।
सिरी (हिं० स्त्री०) १ लक्ष्मी। २ शोभा। ३ रोली, रोचना। श्रीका लाल चिह्न तिलकमें रोलीसे बनाते हैं; इसीसे रोलीको भी 'श्री' या 'सिरी' कहते हैं। ४ माथे परका गहना।
सिरीज (अं० पु०) मंगल और वृहस्पतिके बीचका एक ग्रह। इसका पता आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिर्विदोंने लगाया हैं। यह सूर्यसे प्रायः साढ़े अट्ठारह कोटि मीलकी दूरी पर है। इसका व्यास १७६० मीलका है। इसे निज कक्षामें सूर्यके चारों तरफ फिरनेमें १६८० दिन लगते हैं। १६वीं सदीमें सिसली नामक उपद्वीपमें यह ग्रह पहले देखा गया था। इसका वर्ण लाल है और यह आठवें परिमाणके तारोंके समान दिखाई पड़ता है।
सिरीपञ्चमी (हिं० स्त्री०) श्रीपञ्चमी देखो।
सिरीस (हिं० पु०) शिरस देखो।
सिरोत्पात (सं० पु०) नेत्ररोगविशेष।
सिरोना (हिं० पु०) रस्सीका बना हुआ मेंडरा जिस पर घड़ा रखते हैं, इंडुरी, विड़वा।
सिरोपाव (हिं० पु०) सिरसे पैर तकका पहनावा जो राजदरबारसे सम्मानके रूपमें दिया जाता है, खिलअत।
सिरोमनि (हिं० पु०) शिरोमणि देखो।
सिरोरुह (हिं० पु०) शिरोरुह देखो।
सिरोही (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया जिसकी चोंच और पैर लाल और शेष शरीर काला होता है।
सिरोही—राजपूताना एजेन्सीका एक देशी राज्य। यह अक्षा० २४' २०'से २५' १७' उ० तथा देशा० ७२' १०' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १९६४ वर्गमील है। इसके उत्तरमें मारवाड़ या जोधपुर राज्य, दक्षिणमें पालनपुर तथा इदर और दन्तराज्यके अन्तर्भुक्त महीकान्ता राज्य, पूरबमें मेवाड़ या उदयपुर और पश्चिममें जोधपुर है।

सिरोही पार्वत्य प्रदेश—दक्षिण-पश्चिमसे उत्तर पूर्वकी ओर विस्तृत आरावली पर्वत-श्रेणी इसे दो भागों में बांटती है। यहां जो सब पहाड़ हैं उनमें आरावलीके प्रान्तस्थित आबू पहाड़ ही सबसे ऊंचा है। इसकी ऊंचीसे ऊंची चोटी समुद्रपृष्ठसे ५६५२ फुट ऊंची है।

सिरोहीका पश्चिमांश अपेक्षाकृत उन्मुक्त और समतल है, इससे यहांकी आबादी ज्यादा है तथा खेतीबारी भी पूरी तरह होती है। पर्वतश्रेणीसे असंख्य जलधारा या नाला निकल कर दोनों भागोंको नाना भावोंमें विभक्त करती है। वर्षाके समय इन सब नालाओंका वेग तेज रहता है। किन्तु दूसरे समय इसमें कुछ भी जल नहीं रहता। इन सब नालाओंका जल लोनी और बनास नदीमें गिरता है। सिरोहीस्थित आरावलीका निम्नांश घने जंगलसे भरा पड़ा है। यहांके बहुतसे प्रस्तरस्तूप पर छोटे बड़े अनेक पेड़ उगे हैं। इन सब जंगलोंमें खैर, काबुल, धव आदि पेड़ अधिक संख्यामें दिखाई देते हैं। यहांकी नदियोंमें पश्चिम बनासहया उल्लेखयोग्य है। सिरोहीमें आज भी कृत्रिम ह्रदके अनेक लुप्तावशेष नजर आते हैं। किन्तु वर्त्तमान समयमें आबू पर्वत परके नखी तालावको छोड़ और कोई भी ह्रद दृष्टिगोचर नहीं होता। यहां ६०से १०० फुट जमीन खोदने पर ही जल मिलता है। वह जल खारा होता है। किन्तु उत्तर पश्चिमांशके कूप साधारणतः ७०से ६० फुटसे अधिक गहरे नहीं होते। फिर पूर्वभागके कूप १५ से लेकर ६० फुट तक गहरे होते हैं। जल भी स्वादिष्ट होता है।

सिरोही जंगलमें बाघ, चीते, भालू आदिका अभाव नहीं है। कहीं कहीं चिकर नामक हरिन और चार सींगवाले हरिन देखे जाते हैं। खरहे और खरगोश कम मिलते हैं। चूहेके उपद्रवसे बालूप्रधान देशोंका बड़ा नुकसान होता है। धूसर वर्णके तीतर पक्षी बहुतायत से मिलते हैं। पहाड़ी अंशमें जंगली मुर्गे अनेक हैं। बनास नदीको छोड़ और किसी भी नदीमें मछली नहीं मिलती।

आरावली पर नीलवर्णके श्लेटके ऊपर ग्रेनाइट पत्थर देखनेमें आते हैं। उपत्यकाओंमें रंग विरंगके कोबाटेंज और शिपटोज नामक श्लेट पत्थर प्रचुर परिमाणमें विद्यमान है। यहां और भी तरह तरहके पत्थर पाये जाते हैं। कुछ दिन पहले एक तांबेकी खान आविष्कृत हुई है।

सिरोहीके वर्त्तमान राजवंश देवरा राजपूत जातिके

हैं। ये लोग सुविख्यात चौहानवंशकी एक शाखा है—चौहान वंशीय दिल्लीके अधिपति पृथ्वीराजके वंशधर देवराजसे अपनी उत्पत्ति बतलाते हैं। बहुत खोज करने पर मालूम हुआ है, कि भील लोग ही यहाके आदिम अधिवासी थे। उन लोगोंको पराजित और विताड़ित कर सबसे पहले गहलोत् वंशीय राजपूत यहां आ कर बस गये। उन लोगोंके बाद परमार वंशीय राजपूतोंने अपनी गोटी जमाई। चन्द्रावतीमें उनकी राजधानी थी। आज भी इसका जो ध्वंसावशेष देखनेमें आता है वह इसकी पूर्वसमृद्धिका यथेष्ट परिचायक है।

बहुकालव्यापी युद्धविग्रहके बाद इन्हें पराजित और बलहीन करके चौहान वंशधरोंने आ कर ११५२ ई०के लगभग अपना आधिपत्य फैलाया।

सिरोहीवासी चौहानोंके सम्बन्धमें १६वीं सदीके पहले तक कुछ भी नहीं जाना जाता। इस सदीके प्रथम भागमें जोधपुरके साथ इनका जो युद्ध हुआ, उसमें उन्हें विशेष क्षति स्वीकार करनी पड़ी थी। इस समय फिर जंगली मीना जातियोंके लगातार उत्पातसे भी इन्हें बड़ा नुकसान उठाना पड़ा था। राजवंशके दुर्बल हो जानेसे दक्षिणांशके ठाकुरोंने उनकी अधीनता अस्वीकार कर पालनपुरका आश्रय लिया। इस प्रकार विपन्न और हीनबल होनेसे तत्कालीन राजप्रतिनिधि राव शिवसिंहने वृटिश गवर्मेण्टका आश्रय चाहा। कप्तान टाड उस समय पश्चिम राजपूतानेके पोलिटिकल एजेण्ट थे। सविशेष अनुसन्धान कर उन्होंने सिरोहीके ऊपर जोधपुरका प्रभुत्व अस्वीकार कर दिया।

आखिर १८२३ ई०में वृटिश गवर्मेण्टके साथ सिरोही राजकी संधि स्थापित हुई। गवर्मेण्टकी सहायतासे जंगली मीना लोगोंसे मदद पा कर जो सब ठाकुर विद्रोही हो उठे थे, सिरोहीराजने उन्हें पराजित और वशीभूत किया। इस संधिके अनुसार राव शिवसिंहको प्रति वर्ष १३७६ पौंड राजकर देना होता था, किन्तु १८५७ ई०के गदरके समय उन्होंने गवर्मेण्टको खासी मदद पहुंचाई थी, इस कारण आधा कर घटा दिया गया। शिवसिंहका १८६२ ई०में देहान्त हुआ। पीछे उनके लड़के उमेदसिंह राजसिंहासन पर बैठे। इनके समय-की प्रधान घटना १८६८-६ का दुर्भिक्ष, भूटानके ठाकुरों-की स्वाधीनता-घोषणा और मारवाड़ अञ्चलसे भीलोंका अभियान। उमेदसिंह १८७५ ई०में इस लोकसे चल बसे। पीछे उनके लड़के केशरीसिंहने राजसिंहासन सुशोभित किया। १८८७ ई०में इन्हें महाराव तथा G. C. I. E. और K. C. S. I की उपाधि मिली। इन्हें १५ सलामी तोपें मिलती हैं।

इस राज्यमें ५ शहर और ४०८ ग्राम लगते हैं। जन-संख्या डेढ़ लाखसे ऊपर है। ब्राह्मण और संन्यासीका वास अधिक है। कुछ जैनधर्मावलम्बी भी हैं। राजपूतकी संख्या भी कम नहीं है। जिन सब राजपूतोंके जागीर नहीं है, अथवा जो जागीरदारोंके घनिष्ठ आत्मीय नहीं हैं वे सरकारके अधीन नौकरी या खेतीबारी करके जीविका चलाते हैं। उन्हीं लोगोंको ले कर राजाका सैन्यदल संगठित है। इससे उन लोगोंको 'दीवानी वैन्त' या ग्रामरक्षक कहते हैं तथा खेतीबारीके लिये उन्हें निःशुल्क जमीन दी जाती है। कलवी, रबरी और घरों-की संख्या भी थोड़ी नहीं है। अनार्य और अर्द्ध अनार्य (भील, गिरहिया, मीना आदि) लोग भी यहां अधिक संख्यामें पाये जाते हैं। सिरोहीके दक्षिण-पूर्व कोणमें जो पार्वत्यदेश (भीकर) है, गिरसिया लोग प्रधानतः वहीं वास करते हैं। सुननेमें आता है, कि पहले वे लोग भी राजपूत ही थे, पीछे भील रमणोसे विवाह कर अर्द्ध-अनार्योंके दलमें मिल गये हैं। लूटपाट ही पहले उनका व्यव-साय था; किन्तु अभी उन लोगोंने कृषि कार्यकी ओर ध्यान दिया है। गुजरातसे आये हुए कुलीका दल भी वहां देखनेमें आता है। किन्तु वे लोग भी अभी कृषिकार्यमें नियुक्त हैं। मीना और भील यथाक्रम सिरोहीके उत्तर और पश्चिमांशमें वास करते हैं। चोरी डकैती, लूटपाट ही मानो उनका व्यवसाय है। मुसलमान साधारणतः तहसीलदार और सिपाहीका काम करते हैं।

यहांकी भाषा मारवाड़ी और गुजराती दोनोंके मेलसे निकली है। यहां गरमी खूब पड़ती है, पर जाड़ा कम। आबहवा साधारणतः अच्छी है। राजस्व चार लाख रुपयेसे ज्यादा है।

दीवानी मुकदमा पचायत द्वारा फैसला होता है।

फौजदारी मुकद्दमेका विचार राजधानीमें मन्त्री और जिलोंमें तहसीलदार करते हैं। सिरोहीमें सिर्फ एक कारागार है, सैनिकविभागमें ८ कमान, १२० घुड़सवार और ५०० पैदल सिपाही हैं।

गेहूं और जौ यहांका प्रधान अनाज है। सरसों भी काफी उपजती है। लोग सरसों तेलका ही अधिक व्यवहार करते हैं। गेहूं, जौ और सरसों काटी जाने पर कपास और धान बुना जाता है। वर्षारम्भ होनेके पहले ही इन्हें काट कर घर लाया जाता है। यहां एक ही जमीनमें बराबर एक ही अनाज उपजाया जाता है; किन्तु दो तीन वर्षमें जमीनमें खाद दी जाती है।

राजपूतानेके अन्यान्य अञ्चलोंकी तरह यहां भी राजा ही एकमात्र भूम्यधिकारी हैं। राजवंशधर और दूसरे, जिन्होंने राजाके पूर्वपुरुषोंके साथ यह देश फतह किया था, कुछ कुछ जमीन दानस्वरूप भोग करते आ रहे हैं सही, परन्तु जमीनमें उनका मालिकाना स्वत्व नहीं है। राजाको मान्य कर चलेंगे और जरूरत पड़ने पर युद्धकार्यमें उनकी सहायता करेंगे, इसी शर्त पर उन लोगों को जमीन मिली है। परन्तु भाकरमें गिरसिया लोगोंका ही भूम्यधिकारीका स्वत्व विद्यमान है। नियमित रूपसे राजकर देते आने पर कृषिप्रजाको जमीनके ऊपर पुरुषानुक्रमिक स्वत्व कायम रहता है। निष्कर आबादी जमीन भी इस देशमें बहुत है। राजपूत, भील, मीना और कुलियोंको ले कर एक सम्प्रदाय संगठित हुआ है जिसे दिवाली सम्प्रदाय कहते हैं। ग्रामकी रक्षाका भार इन्हीं लोगों पर रहता है। ये लोग तथा ब्राह्मण, भाट और चारण निष्कर जमीनका भोग करते हैं।

जो सब जागीर हैं, उनके लिये राजा उत्पन्न द्रव्यका निर्दिष्ट अंश और स्थानीय प्रथानुसार राजकर पाते हैं। साधारणतः इस प्रकार उत्पन्न अनाजका आठवां भाग राजकरस्वरूप दिया जाता है। जो सब ग्रामभृत्य हैं, जैसे, कुम्हार, बढ़ई, नाई आदि वे भी वृत्तिस्वरूप उत्पन्न शस्यके अंशभागी होते हैं। यह अंश बाद दे कर जो बचता है, कृषक साधारणतः उसका १।३ से ले कर ३।४ अंश तक पाते हैं।

शिक्षाकी ओर लोगोंका उतना ध्यान नहीं है, दरबार भी इसमें लोगोंको उत्साह नहीं देते। अभी यहां दो रेलवे स्कूल, एक हाई स्कूल, लावरेन्स स्कूल और आबूमें म्युनिसिपल स्कूल हैं। स्कूलके अलावा पांच अस्पताल और एक चिकित्सालय है।

२ उक्त राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २४° ५३' उ० तथा देशा० ७२° ५३' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ५ हजारसे ऊपर है। सरनवा पहाड़ीके जिसके ऊपर यह बसा हुआ है, नामानुसार इसका नामकरण हुआ है। १४२५ ई०में रावसेनमल्लने इसे बनवाया। दो मील उत्तर राजाके कुलदेवता सरनेश्वरका मन्दिर है। यह मन्दिर पांच सौ वर्षका पुराना है। उसके चारों ओर जो दीवार खड़ी है उसे मालवाके एक राजाने बनवा दिया है। यहां डाक और तारघर, कारागार, एङ्गलो वर्नाक्युलर प्राइमरी स्कूल और एक अस्पताल है।

सिर्का (हिं० पु०) सिरका देखो।

सिर्फ (अ० क्रि० वि०) १ केवल, मात्र। (वि०) २ एक मात्र, अकेला। ३ शुद्ध, खालिस।

सिर्मूर—निम्न हिमालय प्रदेशका एक पहाड़ी सामन्त राज्य। यह अक्षा० ३०° २०' से ३१° ५' उ० तथा देशा० ७७° ५' से ७७° ५१' पू०के मध्य सिमलाके दक्षिण यमुनाके पश्चिमी किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण ११९८ वर्गमील है। नाहन इसकी राजधानी है। नाहन नगरके नामानुसार इसे लोग नाहन राज्य भी कहते हैं। यह पञ्जाब-सरकारकी देख-रेखमें है। इसके उत्तरमें बलासन और जब्बल नामक पहाड़ी राज्य, पूर्वमें अंगरेजाधिकृत देहरादून जिलेके मध्यवर्ती टोंस और यमुना नदी, दक्षिण और पश्चिममें अम्बाला जिला और कालसिया सामन्त राज्यका कुछ अंश तथा उत्तर पश्चिममें पतियाला और केउन्थल राज्य है।

सिर्मूर राज्य उत्तरमें उच्चचूड़ चोड़ शल (११९८२ फुट)से दक्षिणकी ओर क्रमशः नीचा चला गया है तथा दक्षिण सीमान्त पर गिरि-यमुना सङ्गम पर इसकी ऊंचाई समुद्रपृष्ठसे १५०० फुट हो गई है। इस सङ्गमसे कियार्दा-दून नामकी उपत्यका भूमि पश्चिमकी ओर नाहन शैल तक विस्तृत है। यह पूर्व-पश्चिममें २५ मील लंबा और १२से ६ मील चौड़ा है। इसके पूरबमें

गिरि नदी और उसकी शाखा जलाक पालुर तथा तोंस नदकी शाखा मिनुह और नैराई पहाड़ी जलनालियोंसे पुष्ट हो यमुनामें गिरती है। पश्चिम ओर मार्कण्ड आदि पहाड़ी नदियां सरस्वती और घावरा नदीकी अव वाहिकासे प्रवाहित हो उक्त दोनों नदियोंमें मिली है।

खियार्दादून उपत्यकाके उत्तर पश्चिम प्रान्तमें श्वेत शैलशिखर उत्तरमें गिरि नदीके तीर तक विस्तृत है। इसके दक्षिण पूर्वमें ताण्डु भवानी (५७०० फुट) और उत्तर-पश्चिममें सशुं देवी (सरस्वती देवी ६२६६ फुट) नामके दो ऊंचे शिखरवाले पर्वत हैं। खियार्दादूनके दक्षिणभागमें शिवालिक शैल है। शिवालिक देखो।

सिमुरमें भांति भांतिके पत्थर देखे जाते हैं। किन्तु मूल्यवान पत्थर एक भी नहीं है। कालसीमें तांबेकी खान पाई गई है। यहांके वनभागमें नाना जातिके हिंस्र पशु देखनेमें आते हैं। उस निविड अरण्यमें जन मानवके जाने लायक एक भी पथ नहीं है।

सिमुर शब्दका अर्थ शिरमौड़ या शिरोमुकुट है। यहीं पर राजाका प्रासाद है। स्थानीय किंवदन्ती है, कि प्राचीनकालमें यहां जो राजवंश राज्य करता था, उस वंशके अन्तिम राजा दुर्भाग्यवशतः बाढ़के जलमें बह गये और उसीसे उनकी मृत्यु हुई। इस समय अर्थात् करीब १०६५ ई०में जयसलमीरके वंशधर राजा अग्रसेन रावल गङ्गाके किनारे तीर्थयात्राके उद्देशसे आये थे। जब उन्होंने सुना कि यह राज्य सूना पड़ा है, तब वे दलबलके साथ चढ़ आये और सिमुर सिंहासन पर अधिकार कर बैठे। तभीसे उन्हींके वंशधर सिमुरका शासन करते आ रहे हैं। १८०३ ई०में गुर्खा लोगोंने सिमुर पर कब्जा जमाया और १८१५ ई०में अंगरेज सेनापति सर डेविड आक्टरलोनीने यह गुर्खाओंके हाथसे छीन लिया।

इसके बाद अंगरेज गवमेंटने सिमुरराजाको उनके पितृसिंहासन पर बैठाया। उनके अधिकृत प्रदेशोंमेंसे जैनपुर और बायर परगना अंगरेजराजने देहरादून जिलेमें मिला लिया। गुर्खायुद्धके समय जिस मुसलमान सरदारने अंगरेजोंको मदद पहुंचाई थी, अंगरेज गवमेंटने पुरस्कारमें उसे कूटाहा या गड़ही दुर्ग तथा वह परगना दे दिया। केउन्थलके राजाको गिरिनदीका उत्तर तीरवर्त्ती प्रदेश छोड़ दिया गया। इसके बाद १८३३ ई०में अंगरेजराजने कृपा दरसा कर सिमुरराजके कियार्दादून नामक उपत्यका देश लौटा दिया।

१८८७-८८ ई०में यहां राजा शमशेर प्रकाश राज्य करते थे। इन्हें वृटिश सरकारने के. सी, एस, आई की उपाधि दी थी। उनके बाद विक्रमप्रकाश राजसिंहासन पर बैठे। वे लेजिसलेटिभ कौंसिलके सदस्य थे। वर्त्तमान राजाका नाम है एच, एच, महाराजा सर अमरप्रकाश बहादुर, के, सी एस, आई, के, सी, आई, ई, । इन्हें ११ सलामी तोपें मिलती हैं। १८१५ ई०की २१वीं सितम्बरको अंगरेजराजने जो सनद दी थी, उसके अनुसार यहांके सरदार अंगरेजोंको जरूरत पड़ने पर सैन्य-साहाय्य करनेके लिये बाध्य है। सिमुरराजको किसी प्रकारका कर नहीं देना पड़ता। उन्हें प्राणदण्ड देनेका अधिकार नहीं है। इस विषयमें उन्हें अम्बालाके कमिश्नरको सलाह लेनी पड़ती है।

इस राज्यमें नाहन नामक एक शहर और ६७३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। उत्तर सिमुरवासी आर्य-वंशसम्भूत होने पर भी उनकी मुखाकृति मङ्गोलीय जैसी है। यहां कुनेत नामक एक श्रेणीके हिन्दू रहते हैं। वे अपनेको राजपूत-वंशोद्भव बतलाते हैं। अभी उन लोगोंके मध्य पलीकत्र और विधवाविवाह ये दो निकृष्ट आचार प्रचलित होनेसे वे उच्च श्रेणीके हिन्दूके निकट हेय समझे जाते हैं।

यहांका राजस्व कुल मिला कर ६ लाख रुपया है। अभी इस राज्यमें एक सेकेण्डरी, ४ प्राइमरी और ५ एलिमेण्ट्री स्कूल हैं। स्कूलके अलावा २ अस्पताल और ६ चिकित्सालय हैं।

सिल (हिं० स्त्री०) १ पत्थर, चट्टान, शिला। २ पत्थरकी चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३ पत्थरका गढ़ा हुआ चौकोर टुकड़ा जो इमारतोंमें लगता है, चौकोर पटिया। ४ काठकी पटरी जिस पर दबा कर रूईकी पूनी बनाई जाती है। (पु०) ५ कटे हुए खेतमें गिरे अनाज चुन कर निर्वाह करनेकी वृत्ति। (वि०)

६ शिल और शिलाञ्छ देखो। ७ बल्लूत की जातिका एक पहाड़ी पेड़ जो हिमालय पर होता है, बञ्ज, माऊ।

सिल (अ० पु०) राजयक्ष्मा, तपेदिक।

सिल्हक (सं० पु०) शिल्हक, अरिमेद।

सिलक (हिं० स्त्री०) १ लड़ी, हार। २ पंक्ति। (पु०) ३ तागा, धागा।

सिलकी (हिं० पु०) बेंत।

सिलखड़ी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका चिकना मुलायम पत्थर जो बरतन बनानेके काममें आता है। इसको घुकनी चीजोंको चमकानेके लिये पालिश व रोगन बनाने के भी काममें आती है। २ सेत खड़ी, खरिया मिट्टी।

सिलखरी (हिं० स्त्री०) सिलखड़ी देखो।

सिलगना (हिं० क्रि०) सुलगना देखो।

सिलहट (शिलहट)—१ खासी और जयन्तिया पार्वत्य प्रदेशका उपविभाग। यह अक्षा० २५° ७´ से २६° ७´ उ० तथा देशा० ९०° ४५´ से ९२° १६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३६४१ वर्गमील है। जनसंख्या डेढ़ लाखके करीब है।

२ उक्त उपविभागका एक शहर तथा आसाम प्रदेशकी ग्रीष्मऋतुकी राजधानी। यह अक्षा० २५° ३४´ उ० तथा देशा० ९१° ५३´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ८ हजारसे ऊपर है। पहले यह चेरापुञ्जी, खासी और जयन्तियाका प्रधान नगर था। १८७४ ई०में यह आसामको राजधानी सिलमें उठ आया। १९०५ ई०में जब नया पूर्ववङ्ग और आसामप्रदेश संगठित हुआ, तब सिलंग युक्तप्रदेशकी राजधानीरूपमें परिणत हुआ था। ग्रीष्मऋतुकी राजधानी होनेके कारण आसाम गवर्मेण्ट-के जितने प्रधान प्रधान आफिस हैं सभी यहीं पर प्रतिष्ठित हैं। बहुतसे आसामवासी यहां स्थायिरूपमें बस गये हैं। कार्योपलक्षमें पूर्ववङ्ग और अन्यान्य प्रदेशोंके भी असंख्य लोग यहां आ कर रहते हैं। इससे लोकसंख्या धीरे धीरे बढ़ती जा रही है। पहले टोङ्गा अर्थात् मनुष्यकी पीठ पर चढ़नेके सिवा शिलङ्ग पहुंचनेका कोई उपाय नहीं था। कुछ दिन पहले गौहाटी तक रेलगाड़ी गई थी। अभी गौहाटीसे सिलङ्ग तक रेलगाड़ी और मोटर दोनों दौड़ने लगी हैं। इस स्थानको वासोपयोगी और मनोरम करने-के लिये गवर्मेण्ट बहुत रुपये खर्च कर रही है। यहां एक सरकारी छापाखाना है। गवर्मेण्टके सभी कागज पत्र तथा आसाम-गजट इसीमें छपता है। यहां खृष्टधर्माव लम्बियोंकी उपासनाके लिये गिरजा-घर भी है। पहले इस स्थानकी लम्बाई ७ मील और चौड़ाई १॥ मील थी। परन्तु अभी यह दोनों ओर फैल गया है। समीपवर्त्ती पर्वतसे निकले हुए झरनेका जल लोग पीनेके काममें लाते हैं। बाजार तथा अन्यान्य अनेक सुविधा-जनक स्थानोंमें जलको कल भी स्थापित हुई है। जिससे लोगोंके स्वास्थ्यकी उन्नति हो, इसके लिये सरकार बहुत रुपये खर्च कर रही है। यहां सैन्यदल भी प्रतिष्ठित हुआ है।

यह बड़ा ही सुशीतल स्थान है। स्थानीय उत्ताप कभी ८०° डिग्रीसे ऊपर उठ जाता है। दिसम्बर, जन-वरी और फरवरीके महीनेमें जमीन पर तुषारका कण जम जाता है, किन्तु वर्षा कभी भी नहीं पड़ता। यहां आग जलानेके लिये पत्थर-कोयला ही अधिकतर काममें लाया जाता है। प्रतिवर्ष ८९८४ इञ्च पानी पड़ता है। यहांके लोग अक्सर आमाशय, उदरामय और वक्रत् रोगसे पीड़ित रहते हैं, किन्तु यूरोपीयगण यदि किसी तरह यहां एक वर्ष ठहर सकें, तो उनके स्वास्थ्यमें बड़ी ही उन्नति होती है।

सिलङ्ग राजधानीके पास सिलं नामक एक पर्वत श्रेणी भी है। इसका सर्वोच्चशिखर समुद्रपृष्ठसे ६४५० फुट ऊंचा है। इस देशमें इससे बढ़ कर और कोई दूसरा स्थान नहीं है। इसका ऊपरी भाग बहादुरीवृक्षके जंगल-से समाच्छादित है। यथार्थमें इसी पर्वतका नाम सिलङ्ग है और जो स्थान अभी सर्वत्र सिलङ्ग कहलाता है, उसका असल नाम लायान है। शहरमें एक हाई स्कूल और कारागार है।

सिलपची (हिं० स्त्री०) चिलमची देखो।

सिलपट (हिं० वि०) १ साफ, बराबर, चौरस। २ घिसा हुआ, मिटा हुआ। ३ चौपट, सत्यानाश। (पु०) ४ पैरों की ओर खुली हुई जूती, चट्टी, चप्पड़।

सिलपोहनी (हिं० स्त्री०) विवाहकी एक रीति। विवाहमें मातृका पूजनके समय वर और कन्याके माता पिता सिल

पर थोड़ी-सी भिगोई हुई उरदकी दाल रख कर पीसते हैं। इसीको सिलपोहनी कहते हैं।

सिलफची (हिं० स्त्री०) चिलमची देखो।

सिलफोड़ा (हिं०पु०) पाषाणभेद, पत्थरचूर नामका पौधा।

सिलबरुआ (हिं० पु०) एक प्रकारका बांस जो पूरबी बंगालकी ओर होता है।

सिलमाकुर (हिं० पु०) पाल बनानेवाला।

सिलवट (हिं० स्त्री०) सुकड़नेसे पड़ी हुई लकीर, शिकन।

सिलवाना (हिं० क्रि०) किसीको सीनेमें प्रवृत्त करना, सिलाना।

सिलसिला (अ० पु०) १ बंधा हुआ तार, क्रम, परंपरा। २ श्रेणी, पंक्ति। ३ शृङ्खला, जंजीर, लड़ी। ४ कुल परम्परा, वंशानुक्रम। ५ व्यवस्था, तरकीब। (वि०) ६ आर्द्र, भींगा हुआ, गीला। ७ जिस पर पैर फिसले, रपटनवाला। ८ चिकना।

सिलसिलाबंदी (फा० स्त्री०) १ क्रमका बंधान, तरकीब। २ कतारबंदी, पंक्ति बंधाई।

सिलसिलेवार (फा० वि०) तरतीबवार, क्रमानुसार।

सिलह (अ० पु०) शस्त्र, हथियार।

सिलहखाना (फा० पु०) अस्त्रागार, हथियार रखनेका स्थान

सिलहट—सिलेट देखो।

सिलहट (हिं० पु०) १ एक प्रकारका अगहनी धान। २ एक प्रकारकी नारंगी जो सिलहटमें होती है।

सिलहटिया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी नाव जिसके आगे पीछे दोनों तरफके सिक्के लंबे होते हैं।

सिलहार (हिं० पु०) खेतमें गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहारा (हिं० पु०) सिलहार देखो।

सिलहिला (हिं० वि०) जिस पर पैर फिसले, रपटनवाला, कीचड़से चिकना।

सिलही (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी।

सिला (हिं० स्त्री०) १ शिला देखो। (पु०) २ खेतसे कटी फसल उठा ले जानेके पश्चात् गिरा हुआ अनाज, कटे खेतमेंसे चुना हुआ दाना। ३ पछोड़ने या फटकनेके लिये रखा हुआ अनाजका ढेर। ४ कटे हुए खेतमें गिरे अनाजके दाने चुननेकी क्रिया, शिलावृत्ति।

सिला (अ० पु०) बदला, एवज।

सिलाई (हिं० स्त्री०) १ सीनेका काम, सूईका काम। २ सीनेका ढंग। ३ सीनेकी मजदूरी। ४ टाँका, सीवन। ५ एक कीड़ा जो प्रायः ऊख या ज्वारके खेतोंमें लग जाता है। इसका शरीर भूरे पन लिये हुए गहरा लाल होता है।

सिलाची (सं० स्त्री०) लताभेद। (अथर्व० ५।५।१)

सिलाजीत (हिं० पु०) पत्थरकी चट्टानोंका लसदार पसेव जो बड़ी भारी पुष्टई माना जाता है। शिलाजतु देखो।

सिलाञ्जला (सं० स्त्री०) लताभेद। (अथर्व० ६।१६।३)

सिलाना (हिं० क्रि०) सीनेका काम दूसरेसे कराना, सिलवाना।

सिलावाक (हिं० पु०) शैलज, छरीला, पथरफूल।

सिलावी (हिं० वि०) सीड़वाला, तर।

सिलारस (हिं० पु०) १ सिल्हक वृक्ष। २ सिल्हक वृक्षका निर्यास या गोंद जो बहुत सुगन्धित होता है। यह पेड़ एशियाई कोचकके दक्षिणके जंगलोंमें बहुत होता है। इसका निर्यास सिलारसके नामसे बिकता है और औषधके काममें आता है।

सिलाव—विहारके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। विहार महकमेसे यह प्रायः तीन कोस दूरमें अवस्थित है। किसीके मतसे यहीं बौद्ध विश्वविद्यालययुक्त विक्रमशिला नगरी थी। यहांके खाजा प्रसिद्ध हैं।

सिलावट (हिं० पु०) पत्थर काटने और गढ़नेवाले, संगतराश।

सिलासार (हिं० पु०) लोहा।

सिलाह (अ० पु०) १ जिरह बकतर, कवच। २ अस्त्र-शस्त्र, अस्त्रागार।

सिलाहबंद (अ० वि०) सशस्त्र, हथियारबंद।

सिलाहर (हिं० पु०) १ खेतमेंसे एक एक दाना अन्न बीन कर निर्वाह करनेवाला मनुष्य, सिला बीननेवाला। २ अकिंचन, दरिद्र।

सिलाहसाज (फा० पु०) हथियार बनानेवाला।

सिलाही (अ०पु०) शस्त्र धारण करनेवाला, सैनिक, सिपाही

सिलिंगिया (हिं० स्त्री०) पूरबी हिमालयके शिलांग प्रदेशमें पाई जानेवाली एक प्रकारकी भेड़।

सिलिकमध्यम (सं० पु०) सङ्कुल मध्यप्रदेश, निबिड़ मध्यभाग। (ऋक् १।१६३।१०)

सिलिया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पत्थर जो मकान बनानेके काममें आता है।

सिलियार (हिं० पु०) सिलाहर देखो।

सिलिसिलिक (सं० क्ली०) गोंद, लासा।

सिलीन्ध्र (सं० पु०) मत्स्यविशेष।

सिलीमुख (हिं० पु०) शिलीमुख देखो।

सिलेट—आसामका एक जिला। यह अक्षा० २३° ५६' से २५° १३' उ० तथा देशा० ९०° ५६' से ९२° ३६' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५३८८ वर्गमील है। यह श्रीहट्टका नामान्तर है। पूर्वकालमें शिलहट्ट और शिलहाट नामसे प्रसिद्ध था। प्राचीन वैष्णव ग्रन्थमें 'छिलट' नाम देखा जाता है। उसीसे अंगरेजोंके निकट 'सिलट' या 'सिलेट' हुआ है। इसके उत्तरमें खासिया और जयन्तिया पर्वत, पूरबमें कछाड़ जिला, दक्षिणमें पार्वत्य त्रिपुरा, पश्चिममें त्रिपुरा और मैमनसिंह जिला है।

अंगरेजी अमलमें यह जिला पांच भागोंमें विभक्त हुआ है, यथा, उत्तर-सिलेट, करीमगञ्ज, दक्षिण-सिलेट, हबिगञ्ज और सुनामगञ्ज। इन पांच सब-डिविजनके अधीन १६ थाने और १५ फाड़ी हैं।

सुरमा विभागके कमिश्नरके अधीन यह जिला एक डिपटी कमिश्नर द्वारा शासित होता है। वे सिलेट शहरमें ही रहते हैं। इसके सिवा वहां पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और उनके सहकारी जेलसुपरिण्टेण्डेण्ट आदि हैं। विचार विभागमें डिस्ट्रिक्ट जज और उनके सहकारी तथा सब-जज, अडिशनल सब-जज तथा मुन्सफ, फौजदारी विभागमें असिस्टाण्ट कमिश्नर और एकाध असिस्टाण्ट कमिश्नर हैं।

महकमेमें पुलिसका एक एक इन्सपेक्टर रहता है। इस जिलेमें ६ पुलिस-इन्सपेक्टर, ४६ सब इन्सपेक्टर, ११४ हेडकानेष्टबल और २६७ कनेष्टबल हैं। ग्राम्य चौकीदारकी संख्या ५१५८ है।

यहां बहुतसे प्रसिद्ध पहाड़ हैं। कुछ प्रधान पहाड़के नाम नीचे दिये गये हैं—

पलडहरका पहाड़—जिलेके सबसे पूरबमें है। इसकी ऊंची चोटीका नाम छत्रचूड़ा है जो प्रायः २०३४ फुट ऊंचा है। दुआलिया या प्रतापगढ़का पहाड़ उसके प्राय ५: मील पूरबमें है। इसकी ऊंचाई १५०० फुट है। आदम आइल—दुआलियासे कुछ पश्चिम है। ऊंची चोटी ८०० फुट है। लंलाका पहाड़—लंला परगनेमें है। उच्च शृङ्ग चाड़ेरगज ११०० फुट ऊंचा है। आदमपुरका पहाड़—लंला पहाड़के दक्षिण-पश्चिममें विस्तृत है। बड़शीथोड़ा पहाड़—यह ३०० फुटसे ज्यादा ऊंचा नहीं है। इस पहाड़ पर बहुतसे चाय-बागान हैं। सानगार पहाड़—यह भी ६०० फुटसे ज्यादा ऊंचा नहीं है। इस पहाड़ पर भी अनेक चायके बागान हैं। रघुनन्दन पहाड़—यह जिलेके दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। इसकी ऊंचाई प्रायः ७०० फुट होगी। लाउडका पहाड़—लाउड परगनेमें जिलेके उत्तर-पश्चिम प्रान्तमें अवस्थित है। इस पहाड़ पर बहुतसी प्राचीन कीर्त्तियोंके चिह्न हैं।

इस जिलेमें नदियोंकी संख्या भी थोड़ी नहीं है। इनमेंसे बराकई और धलेश्वरी ही प्रधान हैं। इनकी भी अनेक छोटी छोटी शाखाएं हैं।

श्रीहट्टमें बहुतसे हावर हैं। जो सब मैदान वर्षाके जलसे भर जाते हैं, उन्हींको हावर कहते हैं। हावरके जिस अंशमें हमेशा जल रहता है, वह बिल कहलाता है। जिलका हावर, झिनका हावर, हाइल हावर, हाकालुकि हावर, मकानकान्दी हावर, छुङ्गियाजुरिका हावर, और शनिका हावर प्रधान हैं। 'अमृतकुण्ड' नामका एक ह्रद भी है। जयन्तियाके तप्तकुण्डका जल गरम होता है। माधब, हलहलि आदि प्रपात मशहूर हैं। जादुकाटा नदीके किनारे मरुभूमिका एक नमूना दिखाई देता है। अनेक स्थान बालुकाराशिसे समाच्छादित हैं। वहां वृक्षादि एक भी नहीं लगता।

श्रीहट्टका प्रधान उत्पन्न द्रव्य धान है। शालि, आछरा, आमन, बागदार, आशु आदि जातिके धान भी काफी उपजते हैं। इसके सिवा तीसी, सरसों, ईख कलाय, पटसन आदिकी भी खेती होती है।

फलोंमें श्रीहट्टको कमला नीबू भारत-विख्यात है। ऐसा मीठा रसात्मक कमलानीबू श्रीहट्टके सिवा और कहीं भी नहीं होता। श्रीहट्टके कमलाकी मिठासकी बात आईन-इ-अकबरी, रियाज उससलातिन आदि पारसी ग्रन्थोंमें उल्लिखित है।

श्रीहट्टके जलडूव नामक स्थानमें बहुत मीठा रसात्मक अनारस उत्पन्न होता है। ऐसा मीठा रसात्मक अनारस जलडूवके सिवा और कहीं भी नहीं मिलता। इसके सिवा विविध जातिके कदली, नीबू, आम्र, कटहल, बेल, बेर, जामुन, पपीता आदि फल भी पाये जाते हैं।

शाकसब्जीमें कुम्हड़ा, लौकी, बैंगन, मानकच्चू, ओल, सेम, करैला, आलू, सकरकन्द, नाली और पालं शाक, कोवी, शालगम आदि उत्पन्न होते हैं।

मसालेमें श्रीहट्टका तेजपत्र अति विख्यात है। जयन्तियामें उत्पन्न खासिया पान प्रसिद्ध है। मिर्च और मलाङ्क नामकी लहसुन जातिका मसाला सर्वत्र आदरणीय ।

श्रीहट्टके जंगलमें नाना जातिके मूल्यवान् वृक्ष देखे जाते हैं। चाम, जारइल, पुमा, पंता, कौवाठोठू, काईमूला, पलान, नागकेशर, वंशवट (रबर), वट आदि विख्यात हैं। पहाड पर इसके सिवा विविध प्रकारके बांस और बेंत उत्पन्न होते हैं। प्रति वर्ष वे नदीमें वहा कर लाये जाते हैं। गवर्मेण्टने इन जंगली द्रव्यों पर कर लगा दिया है।

श्रीहट्टका शिल्पसम्भार एक समय बहुत विस्तृत था, किन्तु विलायती शिल्पका प्रतिद्वन्द्विताले उसका बिलकुल ह्रास हो गया है। लस्करपुरकी ऊनी चादर आज भी श्रीहट्टके सूत्रशिल्पके नामकी रक्षा करती है। यह ऊनी ढाकाई चादरसे कम नहीं होती। श्रीहट्टके मणिपुरी खेस और मसहरि बडी ही सुन्दर और प्रसिद्ध होती है। जुगियानी रिजाई या जोड़ी चादर यहां सभी जगह मिलती है।

पहले श्रीहट्टकी लकड़ीसे जहाज और नावें बनती थीं। १७८० ई०में ग्यारह हजार मन लादनेवाला एक जहाज श्रीहट्टमें बनाया गया था। मन्द्राज दुर्भिक्षमें बीस जहाज चावल और धान लाद कर वहां गये थे। नवाब अलिवर्दी खांके समय श्रीहट्टके कुछ महालोंकी आयसे जंगी जहाज चलानेकी प्रथा थी। आज भी हविगञ्जकी नाव उल्लेखयोग्य है। इसके सिवा पलंग, चौकी, अलमायरा, टेबिल, चेयर आदि भी प्रसिद्ध हैं। श्रीहट्टके काठके बने हुए खिलौने बहुत सुन्दर होते हैं। बांस और बेंतके बने शिल्पोंमें शीतलपाटी ही विख्यात है। ऐसी पाटी श्रीहट्टके सिवा और कहीं भी नहीं मिलती। श्रीहट्टका पत्तेका छाता बहुत कार्योपयोगी और मजबूत होता है। श्रीहट्टके बांसके बने मुडा या चेयर और कुशासन अनेक कामोंमें आते हैं।

श्रीहट्टमें हाथीदांतके बने पाशे, पाटी, कंगही, पंखे आदि शिल्पनैपुण्यके सुन्दर उदाहरण हैं। पहले यहां गैंडेके चमडेसे बढ़िया ढाल बनता था, पर अभी उसका कारबार बंद हो गया है। रियाज-उस-सलातिनमें लिखा है, कि-इस स्थानसे यह ढाल भारत भरमें जाता था। उत्कृष्ट काले रंगके लिये इस ढालका आदर था। जो जाति यह ढाल तैयार करती थी, आज भी वह ढालकर कहलाती है।

धातव शिल्पके १८४ पाचगांके बढ़ई द्वारा प्रस्तुत 'खाड्ग', 'दाव' बदरपुरके 'कटोरे', कटनाई और ब्रह्मनानके पीतलके बरतन प्रसिद्ध हैं। पाचगांका जनार्दन बढ़ई १०३८ हिजरीमें जहानकोप नामक प्रसिद्ध कमान बना कर यशस्वी हो गया है। इसके सिवा श्रीहट्टके अगरका इतर और चायका उल्लेख करना भी आवश्यक है। इस अगरके इतरका अरब आदि स्थानोंमें बड़ा ही आदर है। चाय विलायत भेजी जाती है।

खनिज द्रव्योंमें सिलेटका चूना अति विख्यात है। 'सिलेट-चून'-का सभी आदर करते हैं। इसकी प्रधानतः छातकसे रफ्तनी होती है।

इसके सिवा यहां जगह जगह कोयलेकी खान भी है। सिलेट और कछाड़की सीमा पर मिट्टीका तेल मिलता है। यहांके पहाड़ों पर नमककी खान है। पहले कई स्थानोंमें उस खानका नमक काममें लाया जाता था, परन्तु अभी कहीं भी नहीं।

सिलेट, वालागञ्ज, अजमीरगञ्ज, हविगञ्ज, मौलवी बाजार, नबिगञ्ज और बनियाचङ्गमें नाव द्वारा अन्तर्वाणिज्य और रेलवे तथा ष्टीमर द्वारा बहिर्वाणिज्य चलता है। नारायणगञ्जसे प्रति दिन एक ष्टीमर सिलेटकी ओर जाता है। यहांके लोकलबोर्डके अधीन १२०० मील रास्ता गया है। इसकी सहायतासे प्रायः सभी जगह जाया जाता है। पबलिक वर्क्स डिपार्टमेण्टके अधीन भी प्रायः १२० मील विस्तृत पथ है।

यहां प्रधानतः कपड़े, कागज, औषध, चीनी, लवण, मिश्री, जूते आदि, शराब, गांजे, अफीम, चीनी और एनामेल बरतन, लवङ्ग, इलायची, तमाकू, नारियल, सुपारी आदिको आमदनी होती है।

रफतनीमें चावल, मधु, चाय, इतर, कमलानीबू, चून, घृत, शीतलपाटी, सूखी मछली, भैंसका सींग, चमड़ा और हाथो प्रधान है। मछलीमें रोहू, कतली, चीतल, बयार, घाघट, सोल प्रधान हैं।

पक्षियोंके मध्य विहङ्गराज पक्षीका नाम आईन-इ अकबरीमें भी आया है। यह पक्षी नाना प्रकारके जीवजन्तुओंका शब्द अनुकरण करनेमें समर्थ है। मैना और सुग्गा मनुष्यकी तरह बोल सकता है। शेरगञ्ज, श्यामा और दैयेल अच्छा अच्छा गाना गाता है। इसके सिवा कोयल, धनेश्वर, उल्लू, मुर्गा, शालिक, तीतर, हंस आदि भी पाये जाते हैं।

पशुओंमें हाथो ही प्रधान हैं। इसके सिवा विभिन्न जातिके बाघ, भालू, गैंड़े, हरिण, जंगली गाय, वन बिलाव, नाना जातिके बन्दर और बनमानुष आदि पहाड़ पर पाये जाते हैं।

इस जिलेमें ५ शहर और ८३३० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या २२ लाखसे ऊपर है। इनमेंसे सैकड़े पीछे ५३ मुसलमान और ४७ हिन्दू हैं। लुसाई, कुकी, गारो, खासिया और सिण्टें तथा टिपरा पहाड़ी जातिमें गिनी जाती हैं। इन लोगोंकी संख्या आठ हजारसे कम नहीं होगी।

लालुं जाति अभी समतल भूमि पर बस गई है। इनका स्वभाव भी बहुत कुछ नम्र हो गया है।

मणिपुरी जातिने बंगाली संसर्गमें आ कर बहुत कुछ सभ्यता सीख ली है। इस जिलेमें नाना स्थानोंमें इनका उपनिवेश है। हिन्दू अधिवासियोंमें ब्राह्मण, कायस्थ, वैद्य, दास, साहु या साहा, तंबोली, तेली, नाई, गणक, भाट, कैवर्त्त, कुम्हार, कुशियारी या राढ़, कंपानी, गाड़ोवान, तांती, मयरा, महरा, माली, योगी, नमःशूद्र, शांखारी, सूंडी, माली, डोम, पाटनी, धोबी और वढ़ई आदिकी जातियोंकी संख्या ही अधिक है।

कुशियारी या राढ़ जाति पहले पहाड़ी जाति थी। इस जातिके लोग बलवान् और परिश्रमी होते हैं। श्रीहट्टके जलडूब नामक स्थानमें ही इन लोगोंका वास है। यह जाति बङ्गालके और किसी भी जिलेमें नहीं पाई जाती।

महरा जाति भी दूसरी जगह नहीं मिलती। कहते हैं, कि राजा सुबिद्नारायणने इस जातिकी सृष्टि की थी।

साहागण अपनेको वैश्य जातिके बतलाते हैं। किन्तु सिलेटके करीमगञ्ज, दक्षिण सिलेट और उत्तर सिलेटके साहु अन्य स्थानोंके साहासे सम्पूर्ण भिन्न हैं। राजा सुबिद्नारायणके समय ये लोग किसी सामाजिक विवादमें वैद्य और कायस्थ जातिसे भिन्न हो गये थे।

इस्लाम-धर्मावलम्बियोंमें निम्नलिखित जातिके लोग सिलेटमें रहते हैं, यथा—कुरेशी, सैयद, मुगल, पठान, शेख, माहिमाल, जोला, गाइन, नागरछि, मीरशिकारी और बेज। खृष्टान धर्मावलम्बियोंमें रोमन कैथलिक चर्चके ईसाइयोंका एक बहुत पुराना उपनिवेश है। हिन्दू-धर्मावलम्बियोंमें शैव, शाक्त और वैष्णवकी संख्या ही ज्यादा है। शाक्तोंमें वामाचारी मत भी है। इस मतमें मद्यपानादि दूषणीय नहीं है।

किशोरीभजन नामक एक उपसम्प्रदायी अपनेको वैष्णवधर्मी बतलाते हैं। विशुद्ध वैष्णवमतके साथ किशोरीभजनका कोई सामञ्जस्य या साधारण सादृश्य भी नहीं है। इस कल्पित मतसे एक स्त्रीको साधनके सहाय स्वरूप ग्रहण करना होता है जो विशुद्ध वैष्णव मतसे एकान्त वर्जनीय है। इस जिलेमें जगन्मोहनी नामक एक और धर्मसम्प्रदाय प्रचलित है। मुसलमानोंमें प्रायः सभी सुन्नी सम्प्रदायके हैं, सियाकी संख्या बहुत थोड़ी है।

सिलेटमें अनेक तीर्थकल्प स्थान हैं जहां कभी कभी स्थानीय और प्रतिवेशी जिलोंके अनेक लोग जाते हैं।

वामजङ्घा महापीठ—यह हालजोरका कालीवाड़ी नामसे ही मशहूर है। जयन्तियाके बाउरभाग परगनेमें यह पीठ अवस्थित है। यहां सतीकी बांई जांघ गिरी थी। इस स्थानकी भैरवीका नाम जयन्ती और भैरव क्रमदीश्वर है। जयन्तीके नामानुसार उक्त अञ्चल जय

न्तिया कहलाता है तथा उसके उत्तरवर्त्ती पर्वतका नाम भी जयंतिया पर्वत है।

ग्रीवापीठ—सिलेट शहरसे प्रायः डेढ़ मील दक्षिण गोटाटिकटके जैनपुर नामक स्थानमें देवीकी ग्रीवा गिरी थी, इसीसे यह स्थान महापीठरूपमें गिना जाता है।

तन्त्रमें लिखा है—

'ग्रीवा पपात श्रीहट्टे सर्वसिद्ध प्रदायिनी।
देवी तत्र महालक्ष्मीः सर्वानन्दश्च भैरवः ॥"

इस महापीठके पास ही ईशान कोणमें सर्वानन्द भैरव विराजित हैं।

ठाकुरवाड़ी—यह स्थान सिलेटके अन्तर्गत ढाका-दक्षिण परगनेमें अवस्थित है। श्रीचैतन्य महाप्रभुके पिता मह उपेन्द्र मिश्रका मकान यहीं पर था।

पणातीर्थ—यह स्थान सुनामगंजके अन्तर्गत है। अद्वैतप्रकाशमें लिखा है, कि अद्वैत पण करके तीर्थोंको लानेके कारण यह पणा नामसे प्रसिद्ध हुआ।

निर्माई शिव—यह शिव १४५४ ई०में निर्माई नाम्नी किसी त्रिपुरराजकुमारी द्वारा स्थापित हुआ था। इनके नाम पर बहुतसे लोग मानसिक रख कर भी आश्चर्य फल पाते हैं। शिवरात्रि उपलक्षमें यहां एक बड़ा मेला लगता है।

ऊनकोटी तीर्थ—यह त्रिपुरराज्यके अन्तर्गत है। यहां बहुतसे देवविग्रह थे। कालापहाड़के अत्या चारसे अनेक मूर्त्ति विकलाङ्ग हो गई हैं।

सिद्धेश्वर शिव—यह शिव सिद्धेश्वर नामसे प्रसिद्ध है और श्रीहट्ट कछाड़ सीमाके बदरपुर नामक स्थानमें कपिलमुनि द्वारा स्थापित हुआ है। यहीं पर कपिल मुनिका आश्रम था। यथा—वायुपुराणमें लिखा है—

"यत्र तेपे तपः पूर्वं सुमहत् कपिलो मुनिः।
यत्र वै कपिलं तीर्थं तत्र सिद्धेश्वरो हरः ॥"

हाटकेश्वर शिव—यह शिव प्राग्ज्योतिषके भौम राजाओं तथा श्रीहट्टके अन्तिम हिन्दूराजा गौड़गोविन्द द्वारा पूजित होते थे।

"नकुलेशः कालीपीठे श्रीहट्टे हाटकेश्वरः।"

महालिङ्गार्चानतन्त्रमें शिवके अष्टोत्तर शतनामके मध्य इन्हींका नाम है। सिलेटसे यह शिव जयन्तियामें लाये गये और पीछे वहांसे चूड़खाई नामक स्थानमें स्थापित हुए। आज भी चूड़खाईमें ये विराजमान हैं। वारुणी-उपलक्षमें यहां एक मेला लगता है।

बरवक्रतीर्थ—यह सिलेटमें एक प्रधान नदका नाम है। इस नदको शास्त्रमें पुण्यसलिल बताया है। १७वीं सदीमें साम्प्रदायिक विप्रवर्ग बरवक्रतीर्थकी यात्रा कर यहां आये थे। बरवक्रमाहात्म्य नामक वायुपुराणमें एक आधुनिक अध्याय है। इसके बरवक्र नामक सम्बन्धमें उक्त पुराणमें लिखा है—

"यस्दैवं नदराजस्य वक्रे वक्रे च पुण्यदः।
तीर्थः प्रशस्तो विख्यातो बरवक्रस्ततः स्मृतः ॥"

इन सबको छोड़ तुङ्गेश्वर महादेव, पञ्चखण्ड और जगन्नाथपुरका वासुदेव, पथरियाका माधवतीर्थ, जयन्तियाके तप्तकुण्ड आदि तीर्थ स्वरूप समझे जाते हैं।

सिलेटमें बहुतसे अखाड़े या देवस्थान हैं। उनमेंसे विथङ्गलका अखाड़ा सर्वप्रधान है। इसके सिवा युगल-टीलाका अखाड़ा आदि भी प्रसिद्ध हैं।

मुसलमान तीर्थोंमें शहरमें अवस्थित शाहजलालकी दरगाह ही विख्यात है। यह भारतवर्षीय मुसलमान-तीर्थोंमें एक प्रधान स्थान समझा जाता है। दूरदूरान्तर-से भी यात्रिगण यह दरगाह देखने आते हैं। दिल्लीके अन्तिम सम्राट् महम्मद शाहके पुत्र फिरोज शाह ८५०-ई०में यह तीर्थ देखनेको आये थे। सुदूर हैदरावादसे निजाम बहादुरके मन्त्री भी इस दरगाहके दर्शन कर गये हैं।

ऐतिहासिक कथा।

सिलेट अति प्राचीन देश और महापीठ स्थान है। बहुत पहलेसे यह कामरूपके शासनाधीन चला आता था।

श्रीहट्टमें साम्प्रदायिक ब्राह्मणोंका लाना ही जैंपुर राज-वंशीयकी एक प्रधान कीर्त्ति है। राङ्गामाटी विजेताके पौत्र-का नाम डुङ्गुरफा (प्रथम) था। आर्य भाषामें वे ही आदि धर्मपा कहे गये हैं। आदि धर्माने एक यज्ञानुष्ठान करनेके लिये मिथिलासे पांच ब्राह्मण ला कर सङ्कल्पित यज्ञ समाप्त किया। पीछे उक्त पांच ब्राह्मणको उन्होंने

कुछ जमीन दी। वह जमीन पांच ब्राह्मणोंमें विभक्त होनेसे पञ्चखण्ड नामसे प्रसिद्ध हुई। जो पांच विप्र आये थे उनके नाम थे, श्रीनन्द, आनन्द, गोविन्द, श्रीपति और पुरुषोत्तम। इनका गोत्र यथाक्रम वत्स, वात्स्य, भरद्वाज, कृष्णात्रेय और पराशर था। ये लोग इस देशमें एक वर्ष रहनेके बाद अपने अपने स्त्री पुत्रादि लानेके लिये स्वदेश गये। लौटते समय विशेष अनुरोध करने पर वे कात्यायन, काश्यप, मौद्गल्य, स्वर्णकौशिक और गौतम गोत्रीय और भी पांच ब्राह्मणोंको साथ लाये। इन दश गोत्रीय ब्राह्मणोंसे श्रीहट्टके साम्प्रदायिक विप्रोंकी उत्पत्ति और विस्तृति हुई। प्रवाद है—आदि धर्मपाका पूर्वोक्त यज्ञ ५१ त्रिपुराब्दमें हुआ था।

प्रथम हुक्क फाकी १७वीं पीढीके बाद उस वंशमें धर्मधर नामक एक राजा हुए। इनके समयमें पूर्वोक्त मिथिलागत वात्स्य गोत्रीय निधिपति नामक एक द्विज विशेष तपःशक्तिसम्पन्न और सिद्ध व्यक्ति थे। धर्मधरने उनके गुण पर विमोहित हो उन्हें एक दानपत्रमें भनकुल प्रदेश नामक श्रीहट्टका एक सुविस्तृत भूभाग दान किया (११६४ ई०)। इस दानप्राप्त भूमिके बलसे निधिपति-वंशीय विशेष शक्तिसम्पन्न हो उठे। इनके पुत्र-पौत्रादिने विशेष ऐश्वर्यशाली हो कर अन्तमें उस प्रदेशका शासनभार ग्रहण किया था।

इस समयके कुछ बाद धर्मधरके पुत्र-कीर्त्तिधरके समय गयासुउद्दीनने सबसे पहले इस देश पर आक्रमण किया। कीर्त्तिधरने पराजित हो कर यह प्राचीन राजधानी (कैलासगढ) छोड दी तथा कसबामें नया राजपाट बसाया। इनके समय तक ही लैपुर वंशीय राजाओंकी बात श्रीहट्ट इतिहासके अंशरूपमें गिनना कर्त्तव्य है।

इस समय श्रीहट्ट अनेक खण्डराज्योंमें विभक्त था, उनमेंसे एकका नाम 'मगध' था जो अभी विलुप्त हो गया है। आमाक्ष्यानन्द और बाबरद नामक प्राचीन पत्रालीग्रन्थमें इसका नाम आया है। २—'असुई', और 'उदिसि', ओलन्दाज गवर्नर कृत प्राचीन मानचित्रमें इन दो देशोंके नाम मिलते हैं। ४—मुवाज्जमाबाद (अर्थात् पुण्य स्थान), एक मसजिदकी प्रस्तरलिपिसे इस नामका पता चला है। ५—भाटो, आईन-इ अकबरीमें यह नाम आया है। किन्तु इन सब विलुप्त खण्ड राज्योंका कोई विवरण मालूम नहीं। परन्तु श्रीहट्टमें हविगञ्ज आदि निम्न अञ्चल भाटी कहलाता है।

इसके सिवा आजमरदन नामक एक और खण्ड राज्य था। आजमरदन अभी अजमीरगञ्ज समझा जाता है। १२५३ ई०में मालिक इयाजवेग इस राज्य पर आक्रमण कर बहुतसा लूटका माल ले गया था।

आगे चल कर सिलेटमें तीन खण्डराज्य बहुत मशहूर हो गये, १ गौड, यह उत्तर सिलेट सबडिविजन ले कर सगठित था; २ लाउड या वनियाचंग, यह सुनामगञ्ज हविगंज सबडिविजनमें तथा ३ जयन्तिया, गौडराज्यके उत्तर पूर्वांशमें विस्तृत था। इसके सिवा इटा और प्रतापगढ आदि छोटे छोटे राज्य गौडके अधीन थे।

गौडराज्य राजा गोविन्द गौडराज्यके अंतिम राजा थे। गौड गोविन्द नामसे भी उनकी प्रसिद्धि थी। श्रीहट्ट शहरके उत्तर मजुमदारि नामक स्थानके पास गडदुआर कह कर एक स्थान है। यहां गौड गोविन्दका गढ़ या दुर्ग था। इसका एक और दुर्ग टीलेके ऊपर बना था, इसीसे वह स्थान टीलागढ नामसे प्रसिद्ध हुआ है।

मुसलमानी इतिहासमें चार शाह जलालकी बात मिलती है। १ ला बोखारा देशका रहनेवाला, २ रा शाह जलाल तात्रित देशवासी, ३ रा शाह जलाल येमेनदेशी और ४ था गजनेया देशका रहनेवाला था।

सिलेटमें ३रा शाह जलाल ही आया। अरबके येमेन देशमें उसका जन्म हुआ था। बचपनमें ही उसके मातापिता मर गये थे। मामा सैयद अहमद कबीरने उसका लालन पालन किया। अहमद कबीर एक प्रसिद्ध साधु पुरुष था। प्रथम शाह जलाल बोखारा देशमें जन्म हुआ। वही कबीरका गुरु था। कबीरने पीछे अपने भाजे (३य) शाह जलालको अपने शिष्यरूपमें साधन भजनकी शिक्षा दी थी। एक दिन उसके आश्रममें एक बाघ एक हरिनको भगा लाया गुरुके

कहनेसे शाह जलालने बाघको तमाचा मार कर भगा दिया। अपने शिष्यकी क्षमता अपनी आंखोंसे देख कबीरने उसे भारतवर्षमें जा कर धर्मप्रचार करने कहा।

गुरुके आदेशानुसार शाह जलाल येमेनि भारतवर्ष आया। सिलेट तक आते आते उसके साथियोंकी संख्या ३६० हो गई। जब वह प्रयाग पहुंचा, तब सेनाके साथ सिकन्दर शाह भी वहां आ धमका था। दोनों एक ही उद्देशसे एक ही जगह जा रहे थे। यहां दोनोंकी अकस्मात् भेंट हो गई। सिकन्दर भी शाह जलालका शिष्य बन गया।

इस प्रकार जब वे सिलेट पहुंचे, तब गौड़गोविन्दने शाह जलालके पास एक बड़ा धनुष भेज कर कहा, कि यदि वे या उनके साथीमेंसे कोई भी इस लोहेके धनुष पर गुण चढ़ा सकेगा, तो वे विना युद्धके देश छोड़ देंगे। शाह जलालने स्वयं यह यश लेना नहीं चाहा। उसके आदेशसे नासिरुद्दीन शाहने आसानीसे उस प्रकाण्ड लौहधनु पर गुण चढ़ा कर लौटा दिया।

गौड़गोविन्द सचमुच डर गये और भागनेकी तैयारी करने लगे। उन्होंने नदीमें नावोंका चलाना बंद करवा दिया जिससे वे लोग नदी पार न कर सकें। किन्तु उद्योगी साधु पुरुषको वे बाधा न दे सके। अपनी अपनी उपासनाके लिये वे लोग जो चमड़ेके आसन लाये थे उन्हींको जलमें बहा कर एक एक कर सभी पार कर गये।

गौड़गोविन्द यह संवाद पा कर अपना घर द्वार छोड़ पेंचागढ़ नामक निभृत जंगली दुर्गमें भाग गये। शाह जलालने अनुचरोंके साथ शहरमें पहुंच कर तीन दिन ईश्वरकी आराधना की। पीछे मीनारके टीला पर स्थित मकान आक्रान्त और विध्वस्त किया गया। तभीसे इस प्रकार जनश्रुति प्रचलित है, कि शाह जलालकी अजानकी प्रतिध्वनिसे सप्ततल उच्च मकान गिर पड़ा था।

शाह जलालने सम्राट्के भांजे सिकन्दरको सिलेटका शासनभार समर्पण किया। सिकन्दरकी मृत्युके बाद उसका अनुचर हैदरगाजी सिलेटका शासनकर्त्ता हुआ। हैदरगाजीके बाद भी कई वर्षों तक शाह जलालकी दरगाहके प्रधान व्यक्तियोंके ऊपर ही इस देशशासनका भार रहा। किन्तु इनकी शासनक्षमता बहुत दूर तक फैल गई थी, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।

अंगरेज ऐतिहासिकके मतसे शाह जलालका सिलेट आक्रमण १३८४ ई०में हुआ। इस समय २य सामसुद्दीन वङ्गदेशके नवाब थे। किन्तु विशेष प्रमाणके साथ किसीने हम सेकहा है, कि श्रीहट्टविजय १म सामसुद्दीन के मृत्युवर्ष अर्थात १३५८ ई०में हुई थी और कोई उसके भी पूर्ववर्त्ती बतेते हैं।

सिकन्दर और हैदरगाजीके बाद हीड्स पेण्डियर नामक एक व्यक्ति श्रीहट्टके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए थे। वे शाह जलालकी दरगाहके सामनेवाली अपूर्ण मसजिद निर्माण करा रहे थे, पर दैवदुर्घटनासे वह पूरी होने न पाई।

जब सैयद हुसेन शाह बङ्गालके अधीश्वर थे, उस समय उनका मंत्री रुकन खाँ नामक एक व्यक्ति सिलेट का शासन करनेके लिये भेजा गया था। पीछे गहर खाँने श्रीहट्टका शासन किया। गहरपुर परगना इसीके नाम पर बसाया गया। गहर खाँके परवर्त्ती शासनकर्त्ता महम्मद खाँने परगनेका महम्मदाबाद नाम रखा। सम्राट् अकबरके समयसे श्रीहट्टके शासनकर्त्ता अमीन नामसे प्रसिद्ध हुए। श्रीहट्ट शहरमें एक प्रधान अमीन रहता था। अवस्थाभेदमें उसके एकसे अधिक सहकारी रहता थे, ये लोग भी अमीन कहलाते थे।

अकबरके समय श्रीहट्टजिला आठ भागोंमें विभक्त हुआ था। एक एक भाग एक एक महाल कहलाता था। इन आठ महालोंके नाम ये थे,—प्रतापगढ़ (पञ्चखण्ड), लाउड, हाविली सिलेट, जयन्तिया, सतर खण्डन (सराइल), बाजुआ या बाहुआ शहर, बनियाचङ्ग, हरिनगर। इन आठ महालोंका राजस्व १६७०४० दाम निरूपित था। इस निर्दिष्ट राजस्वके सिवा श्रीहट्टसे प्रतिवर्ष ११०० घुड़सवार, १९० हाथी और ४२९२० पैदल सिपाही दिल्ली भेजे जाते थे। इस समय श्रीहट्टमें खोजा और कौन दास दासी काफी मिलती थी।

अकबरके समय जो अमीन-पद पर नियुक्त थे, उन्हें कामरूपके राजा नरनारायणके सेनापति चिलारायके

साथ भीषण युद्ध करना पड़ा था। पीछे वे हार स्वीकार कर कर देनेके लिये वाध्य हुए थे। इसके बाद १५६१ ई०में उन्हें त्रिपुरराज अमर माणिक्यके साथ लड़ना पड़ा था।

सम्राट् औरङ्गजेबके समय लुत्फउल्ला खां, जान महम्मद खा, फरहाद खां, महाफता खां, नूरउल्ला खां और सैयद महम्मद अली खा, अब्दुल हेम खां, लसादक खां, करतलब खां और कारगुजर खां ये सब अमीन कहलाते थे। इनमेंसे बहुतेरे नायब फौजदार थे। फरहाद खांने श्रीहट्टकी शाहजलालकी दरगाह पर बड़ी मसजिद तथा कुछ पुल भी बनवाये थे।

सम्राट् बहादुर शाहके समय मोतिउल्ला खां श्रीहट्टके अमीन थे। उनके बाद ये सब अमीर हुए, शुकुरउल्ला खा, हरेकृष्ण दास, समसेर खा, सुजाउद्दीन खां, सैयद रफिउल्ला खा आदि। नवाब हरेकृष्ण दास श्रीहट्टके दस्तिदार वंशीय थे। शुकुर उल्लाको पदच्युत करके उन्हें इस पद पर बैठाया गया था। सिर्फ तीन वर्ष शासन करनेके बाद शुकुरउल्ला द्वारा वे मारे गये पीछे श्रीहट्टका शासनभार तीन व्यक्तिके ऊपर सौंपा गया। इन्होंका युक्त नाम सादेकुलहर माणिक, सादेक उल्ला, हरदयाल और माणिकचन्द्र दीवान था। इन्हें एक साथ मिल कर काम करने कहा गया था। माणिकचन्द्र दीवान श्रीहट्टके स्वर्गीय जनहितैषी राजा गिरिशचन्द्रके पूर्वपुरुष थे। इनके बाद और भी कई अमीनोंके नाम पाये जाते हैं। अमीनोंके हाथसे ही इष्टइण्डिया कम्पनी-ने शासनभार ग्रहण किया।

१५वीं सदीको लाउड देशमें दिव्यसिंह नामक एक ब्राह्मण राजा राज्य करते थे, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य अद्वैता चार्यके पिता कुबेराचार्य उनके मन्त्री थे। ये राजा दिव्यसिंह अन्तमें वैष्णव धर्म ग्रहण कर कृष्णदास नामसे प्रसिद्ध हुए। इनका रचित बाल्यलीला-सूत्र तथा बङ्गला विष्णुभक्तिरत्नावली आज भी उनकी महिमा घोषणा करती है।

बनियाचङ्गके केशववंशीय राजोंने बहुत दिनों तक लाउड राज्यका शासन किया। बनियाचङ्गमें पहले आबादी नहीं थी, केशवमिश्रने ही यहां प्रजाको बसाया था। वे कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण थे और नाव पर चढ़ कर इस देशमें आये थे। उनकी नाव परके एक वणिक् और नौकाचालक चंजातीय आदमी ही, उस स्थानके प्रथम उपनिवेशकारी थे इसीसे वह स्थान बनिया चङ्ग कहलाया। केशवमिश्रके पुत्र दक्ष, दक्षके नकुल और नकुलके पुत्र कल्याण थे। कल्याणके बाहुधर और पद्मनाभ नामक दो पुत्र हुए। पद्मनाभने दिल्लीसे कर्ण खांकी उपाधि पाई थी। कर्ण खाके पुत्र प्रसिद्ध गोविन्द खा थे।

इस समय जगन्नाथपुरमें जयसिंह और विजयसिंह नामक दो भाई उक्त अञ्चलके राजा थे। लाउड प्रथमतः इन लोगोंके अधिकारमें था। पीछे गोविन्द खांने लाउड पर आक्रमण किया जिससे दोनोंमें विवादका सूत्रपात हुआ। इस विवादका सम्वाद दिल्ली पहुंचा था। गोविन्द खा दिल्लीमें लाये जा कर मुसलमानीधर्ममें दीक्षित हुए। हबिब खा उनको नाम रखा गया। इसीसे बनियाचङ्गके हिन्दू राजे मुसलमान हुए। नकुल-के कल्याणके अलावा गणपति नामक एक और पुत्र था। इन्हींके वंशधर बनियाचङ्गमें रहते हैं।

१६४४ ई०में लाउड राज्य पर खासिया जातिने आक्रमण किया और उसे तहस नहस कर डाला। राजभवन ढहढूह गया और लाउड छोड़ दिया गया। इस समयसे बनियाचङ्गकी विशेष समृद्धि हुई थी।

लाउड़में अद्वैताचार्यका मकान था, लाउडमें ही ईशान् नागर द्वारा अद्वैतप्रकाश रचा गया।

जयन्ती,—यह श्रीहट्टका गौरवास्पद स्थान था। अंगरेजोंके आनेके बाद बहुत समय तक जयन्ती अपनी स्वाधीनता रक्षा करनेमें समर्थ हुआ था।

जयन्ती ही पहले जो हिन्दुराज्य था, उसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। ११वीं सदीमें यहां कामदेव नामक एक हिन्दूराजा थे। कविराज नामक एक कवि उनकी सभामें रहते थे। पीछे क्रमशः ब्राह्मणवंशीय केदारेश्वर, धनेश्वर, कन्दर्पराय और जयन्तीरायने राज्य किया।

१६वीं सदीके प्रारम्भमें पहाड़ी सिण्टें जातिने जयन्तिया पर आक्रमण किया। पर्वतराय उन लोगोंके प्रथम राजा थे। पर्वत परसे उतर कर जयन्तियामें राज्य

करनेके कारण उनका पर्वतराय नाम हुआ। इसके बाद जिन्होंने जयन्तियाका शासन किया, वे बूढ़े पर्वतराय नामसे प्रसिद्ध हुए। पीछे राजा बड़े गोसाई हुए। इनके समयमें रामजङ्घा महापीठ प्रकाशित हुआ। अनन्तर विजयमाणिकने राजसिंहासन सुशोभित किया। त्रिपुराके महाराज विजयमाणिक्यने जयन्तियाके विजयमाणिक्यका राज्य आक्रमण किया था। आखिर दोनोंमें संधि हो गई। विजयमाणिकके समय कामरूपके कोचराज नरनारायणके सेनापति चिलारायने जयन्तिया पर आक्रमण किया और उसे करद राज्य बना लिया था। विजयमाणिक्यकी मृत्युके बाद उनके लड़के प्रतापरायने १५६६ ई० तक जयन्तियाका शासन किया। पीछे धन माणिक राजा हुए। धन माणिकके समय कछाड़राज शत्रुदमनने जयन्तिया फतह किया था। १६१२ ई०में उनकी मृत्यु हुई। पीछे उनके लड़के यशोमाणिक राजा हुए। इन्होंने अहोमराज सुसेंफाके साथ अपनी कन्याकी व्याहा। कहते हैं, कि इन्होंने ही जयन्तेश्वरी मूर्त्तिकी स्थापना की। अनन्तर सुन्दरराय और उनके बाद छोटे पर्वत राय जयन्तियाके राजा हुए। पश्चात् यथाक्रम यशोमन्त राय, बानसिंह, प्रतापसिंह लक्ष्मीनारायण और रामसिंहने राज्य किया। रामसिंहके समय कछाड़के साथ जयन्तियाका विवाद खड़ा हुआ। जयन्तियापतिने कछाड़राजको कैद किया। इस पर कछाड़की रानीकी प्रार्थनासे अहोमराज रुद्रसिंहकी सेनाने जयन्तियामें प्रवेश किया। दोनों पक्षमें तुमुल संग्राम छिड़ा। इस युद्धमें प्रजा लोगोंने उत्तेजित हो कर स्वदेशकी स्वाधीनता रक्षाके लिये प्राण विसर्जन किये थे। रामसिंहके बाद जयनारायण राजा हुए। बादमें द्वितीय बड़े गोसाईं सिंहासन पर बैठे। वे लीलापुरी नामक एक संन्यासीसे संन्यासग्रहण कर राजपुरी नामसे प्रसिद्ध हुए। इनकी स्त्री रानी काशासतीके दिये हुए देवत्र और ब्रह्मत्रका आज भी जयन्तियामें बहुतेरे उपभोग करते हैं। अनन्तर राजा छत्रसिंह और उनके बाद यात्रानारायण राजा हुए। पीछे द्वितीय रामसिंह जयन्तियाके सिंहासन पर बैठे। इन्होंने फूपी नामक स्थानमें १७६८ ई०को रामेश्वर शिव स्थापन किया तथा बहुतसी जमीन देवत्रमें दान दी। उक्त मठ फूपीका मठ कहलाता है। इनके समयमें जयन्तियामें एक वृटिश प्रजाकी बलि दी गई थी। गवर्मेण्टने इसकी खोज तो नहीं ली, पर भविष्यमें ऐसी दुर्घटना नहीं होनेकी कड़ी चेतावनी दे दी। इसके बाद राजेन्द्रसिंह जयन्तियाके राजा हुए। उनके समय भी देवीके निकट नरबलि चढ़ाई गई। इस बार गवर्मेण्टने जयन्तियामें सेना भेजी, किन्तु राजेन्द्रसिंहने बिना युद्धके आत्मसमर्पण किया। १८३५ ई०में इस प्रकार जयन्तिया अंगरेजोंके हाथ आया।

अंगरेजीशासन—१७६५ ई०में इष्ट इण्डिया कम्पनीने बङ्गाल विहार और उड़ीसाकी दीवानी पाई। श्रीहट्ट भी इसी समय हाथ लगा। प्रसिद्ध अंगरेज औपन्यासिक थेकरके पितामह मि० थेकारे ढाका बोर्ड द्वारा श्रीहट्टके शासनकर्ता नियुक्त हुए। उस समय इस पद पर जो नियुक्त होते थे, उन्हें 'रेसिडेण्ट' कहते थे। उसके बादके शासनकर्त्ताओंके नाम ये हैं—मि० सम्नार, मि० हालण्ड और मि० लिण्डसे। ये उस समयकी अनेक बातें लिपिबद्ध कर गये हैं। उन्हें पढ़नेसे मालूम होता है, कि उस समय ढाकासे श्रीहट्ट जानेमें नावको बड़े बड़े हद पार करने होते थे। उन्होंने एक हदकी चौड़ाई सौ मील बताई है। दिग्दर्शनयन्त्रकी सहायतासे उन्हें दिशाओंका निर्णय करना पड़ा था। श्रीहट्ट पहुंच कर पहले वे शाहजलालकी दरगाह पर गये और ५ सुवर्ण-मुद्रा सलामीमें दी, क्योंकि वहांकी वैसी ही रीति थी। पहले अमीन लोग भी श्रीहट्टमें आ कर दरगाह पर सलामी देते और वहांसे शासनके लिये 'टीका' लेते थे। उस समय श्रीहट्टमें कौड़ीका प्रचार था, किन्तु लिण्डसे साहबने उसे उठा दिया था। श्रीहट्टका राजस्व उस समय २५०००० रु० निर्दिष्ट हुआ था। इतने रुपये ढाकामें नाव पर लाद कर भेजना बड़ा ही असुविधाजनक था। लिण्डसे साहबने श्रीहट्टवासी द्वारा एक दल देशी सेना खड़ी की थी। यही सेना दल पीछे चेरापुञ्जी शहरमें लाया गया। आज भी वह 'सिलेट लाइट इनफेन्ट्री' नामसे प्रसिद्ध है।

उनके समयमें श्रीहट्टके मुसलमान बागी हो गये और उन्होंने 'अंगरेजी राज्य'-को ध्वंस करनेकी युद्ध-घोषणा

कर दी थी। किन्तु लिण्डसे साहबने ५० सिपाहियोंके साथ युद्धक्षेत्रमें जा कर दलपतिको मार डाला। इस पर यह दल तितर बितर हो कर जहां तहां भाग गया और अंगरेजी राज्यको ध्वंस करनेकी चेष्टा नहीं की। यह दंगा मुहर्रम पर्वमें हुआ था।

लिण्डसेके बाद जान विलियम साहब श्रीहट्ट आये उनके समयमें दशसाला बंदोबस्त हुआ। उन्होंने श्रीहट्ट-में २६३६३ महालका ३१६६११ रु० राजस स्थिर कर चिरस्थायी प्रबंध कर दिया।

श्रीहट्टमें भिन्न भिन्न श्रेणीमें दशसाला महाल विभक्त हुए। उन सब महालोंके नाम ये थे,—बाजिना, तोपखाना, बखला, जायसीर, मोदरसा, शिवोत्तर, दुर्गोत्तर, विष्णु-उत्तर, खारिज जमा, इनाम, खास महल, सादी, मोरजाई, खुशबाग, नानकर, रसुम जामिनी, खोरपोष, खानेबाडी, हुड महान, तनखा मोरजाई, छेगा, बक्स नजर, पञ्चतन इत्यादि। इन सबके सिवा प्रायः १७७० निष्कर महाल रखे गये थे।

अंगरेजी अमलमें कभी कभी कुकि जाति प्रजाके ऊपर घोर अत्याचार करती थी, इस कारण गवर्मेण्टको हथियारोंसे उसका दमन करना पड़ा था। १८२० ई०में इस अत्याचारका सूत्रपात हुआ।

१८५७ ई०में चट्टग्रामका एक दल विद्रोही सिपाही त्रिपुरा होता हुआ श्रीहट्ट पहुंचा। लातु नामक स्थानमें कर्नल बिंने एक दल सेनाके साथ उन लोगों पर धावा बोल दिया। किन्तु एक विद्रोहीकी गोलीसे वे पहले ही रणस्थलमें खेत रहे। पीछे सूबेदार अयोध्यासिंहने बड़े पराक्रम और कौशलसे उक्त विद्रोहियोंको तितर बितर कर श्रीहट्टसे निकाल भगाया।

१८७१ ई०में कुकियोंने श्रीहट्टके कछाडियापाडा पर आक्रमण कर नादिरशाही चलाई और कछाडके बङ्गला पर छापा मार कर साहबकी हत्या की। पीछे वे लोग उनकी एक कुमारी कन्याको पकड़ कर अपने साथ ले गये। इस-के बाद गवर्मेण्टने बड़े उद्यमसे कुकियों पर चढ़ाई कर दी और उनके अनेक स्थान छीन लिये। वही सब स्थान अभी लुसाई डिष्ट्रिक्टमें मिला दिये गये हैं। इससे उन लोगोंको फिर किसी प्रकारका अत्याचार करनेका साहस नहीं हुआ।

१८७४ ई०में श्रीहट्ट आसामप्रदेशमें मिलाया गया और एक डिपटी कमिश्नरके जिलेका शासनभार सुपुर्द हुआ। १८७७ ई०में श्रीहट्ट जिलेको चार सब डिविजनमें विभक्त किया गया। १८८२ ई०में सदर डिविजन दो भागोंमें विभक्त हो कर पांच सब-डिविजन हुआ है।

श्रीहट्टमें १८६९ ई०को एक बार भूकम्प हुआ जिससे लोगोंकी महती क्षति हुई थी। किन्तु वह भूकम्प १८९७ ई०की १२वीं जूनके भयंकर भूकम्पके सामने कुछ भी न था। इस भूकम्पसे श्रीहट्ट शहर बिलकुल उजाड़-सा हो गया था, प्राचीन और ऐतिहासिक सभी कीर्त्तियां विलुप्त हो गई थीं तथा बहुतेरे मनुष्योंके प्राण गये थे। मृत्युसंख्या सरकारी गणनाके अनुसार ५४५ हुई थी।

जनसाधारणकी सुशिक्षाके लिये यहां एक कालेज, १० हाई स्कूल, ४२ मिडिल स्कूल, १४ मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल तथा ३८ अपर प्राइमरी और ७६० लोअर प्राइमरी स्कूल हैं। बालिकाकी शिक्षाके लिये एक मिडिल इङ्ग-लिश और ६० प्राइमरी स्कूल हैं। स्कूलके सिवा ४५ दातव्य चिकित्सालय, ५ अस्पताल और १४० डाक-घर हैं।

२ सिलेट जिलेका उत्तरी उपविभाग। यह अक्षा० २४° ३६´ से २५° ११´ उ० तथा देशा० ९१° ३८´ से ९२° २६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १०५५ वर्गमील। इसके उत्तरमें खासिया और जयन्तिया पहाड़ है। जन-संख्या ५ लाखके करीब है। इस उपविभागका अधिकांश समतल मैदान है। बहुत कम हिस्सेमें फसल लगती है। शासनकार्यकी सुविधाके लिये यह तीन थानोंमें विभक्त है,—सिलेट, कानाइरघाट और बालागञ्ज।

३ उक्त जिलेका दक्षिणी उपविभाग। यह अक्षा० २४° ७´ से २४° ४०´ उ० तथा देशा० ९१° ३७´ से ९२° १५´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ८४० वर्गमील और जन-संख्या ४ लाखके करीब है। इस उपविभागके पूरबमें अधिक वर्षा होती है। इसमें तीन थाने और १०२ ग्राम लगते हैं।

४ उक्त जिलेका सदर। यह अक्षा० २४° ५३´ उ० तथा देशा० ९१° ५२´ पू०के मध्य सुरमा नदीके दाहिने किनारे

-अवस्थित है। सिलेटसे कछाड तक जो रास्ता गया है, वह इसी शहर हो कर। इसकी जनसंख्या १५ हजारके लगभग है। शहरमें २ हाई स्कूल, १ राजा गिरीशचन्द्र राय द्वारा स्थापित सेकेण्ड-ग्रेड कालेज और ४ छापे-खाने हैं।

सिलेट-नागरी—सिलेटके मुसलमान समाजमें प्रचलित प्राचीन नागरी लिपि। प्रायः सत्तर वर्ष हुए, मुन्शी अब दुल करीम नामक किसी श्रीहट्टवासीने इस विकृत नागराक्षरका 'सिलेटनागरी' नाम रख कर छापनेका अक्षर तैयार कराया था। पहले ही अरबी फारसी पुस्तककी तरह इस अक्षरमें दो एक ग्रन्थ लेथो प्रेसमें छपे थे, किन्तु अक्षरकी ढलाई होनेके बादसे ही इस अक्षरका मुद्रायन्त्रके आश्रयमें बहुत प्रचार हो गया है। पहले यह अक्षर सिर्फ श्रीहट्टशहरके आस पासमें प्रचलित था। छपनेके बाद अभी श्रीहट्ट जिलेमें तमाम कछाड, त्रिपुरा, नोआखाली, चट्टग्राम, मैमनसिंह और ढाका अर्थात् पद्माके पूरब सर्वत्र बङ्गभूमिमें यह अक्षर मुसलमानोंके बीच प्रचलित हो गया है।

सिलेट नागरीमें सिर्फ ३२ अक्षर हैं, पांच स्वर और २७ व्यञ्जन। अनुस्वार और ५ स्वर-चिह्न, आकार, एक इकार (ि), एक उकार (ु), एकार और ऐकार होते है।

सिलेबिस—भारत महासागरस्थ पूर्वद्वीपपुञ्जके अन्तर्गत एक बहुत बड़ा द्वीप। यह अक्षा० १° ४५' से ५° ४५' उ० तथा देशा० ११९° १०' से १२६° ४५' पू०के बीच बोर्नियो द्वीपके पूरब माकेसर प्रणालीके मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५७२५० वर्गमील है। इसकी लम्बाई ७६८ मील और चौड़ाई १०० मील है। इसको आकृति ठीक फरिंगे-सी है। इस कारण इसके उत्तरमें एक, पूरबमें दो और दक्षिणमें एक उपसागर हैं। दक्षिण उपसागरका नाम बोनि, पूरबके दो-का नाम गोरङ्गतलु या तोलिनी और कोडला या तोमैकु तथा उत्तरके उपसागरका नाम टमी पालोस है। ये चारों उपसागर जिस देशभाग द्वारा घिरा है, वह चार प्रायोद्वीपाकारमें संगठित है। पूर्वांशकी तरह पश्चिमांशमें कोई उपसागर नहीं है। परन्तु दक्षिणमें मन्दार प्रदेशके समुद्रकूलके जलभागको मन्दारोपसागर कहते हैं।

इस द्वीपके पूर्वांशमें उपसागर और विस्तृत समुद्र रहने पर भी इस अंशमें व्यवसाय-वाणिज्य नहीं चलता, इस कारण पाश्चात्य वणिकोंके निकट यह आज भी अज्ञात है। पश्चिम उपकूलदेशमें सिलेबिसी-वासीके साथ यूरोप-वासीका वाणिज्यव्यवसाय चलता है। इस द्वीपके मध्यस्थलमें एक पर्वतमाला देखी जाती है। उसका सर्वोच्च शिखर लोम्पोबातङ्ग समुद्रपृष्ठसे ८२०० फुट ऊंचा है। बोणि उपसागर और बोर्नियोकी मध्यवर्ती समुद्रप्रणालीके मध्यगत प्रायोद्वीप भागमें लवय या तापङ्गदानो नामक एक बड़ा ह्रद दिखाई देता है। उसकी लम्बाई २५ मील और चौड़ाई ८।१० मील है। जलकी गहराई ३० फुट है। इस ह्रदसे बहुतसी छोटी छोटी नदियां बोणि उपसागरमें गिरती हैं। उन सब नदियोंमें छोटी छोटी नावोंसे लोग आते जाते हैं। यह प्रदेश तृणाच्छादित प्रान्तरभूमसे परिपूर्ण है। गौएं तथा जंगली घोड़े, इस स्थानमें हमेशा विचरण किया करते हैं।

सिलेबिस द्वीपमें और भी कितनी छोटी छोटी नदियां हैं। उन नदियोंमें सदङ्ग नदी ही सबसे बड़ी है। किन्तु यहां कोई वाणिज्य न रहनेके कारण लोग उस नदीसे कम आते जाते हैं। यह नदी माकेसर प्रणाली-में गिरती है। छिनरण नदी लवय ह्रदसे निकल कर बोणि उपसागरमें गिरती है। यह नदी वाणिज्य प्रधान है तथा प्रायः ४० टन बोझ लाद कर नावें आती जाती हैं।

यहां तांबे और टीनकी खान पाई गई है। सोना और लोहा भी काफी मिलता है। पर्वतके ऊपर बहुतसे जङ्गल हैं। उन जङ्गलोंमें घर बनाने लायक काष्ठ मिलता है, किन्तु शाल या सेगुन काष्ठ बहुत कम देखा जाता है। सागू, कोको, मिर्च, लवङ्ग, सुपारी, कपूर आदि द्रव्य यहां उत्पन्न होते हैं। इन सब द्रव्योंके वाणिज्य लोभसे आकृष्ट हो वैदेशिक वणिक् इस देशमें आया करते हैं।

सुमात्रा, जावा और बोर्नियो द्वीपमें जिस जातिके लोगोंका वास है, यहांके अधिवासी भी उस जातिके अन्तर्गत हैं। इन्हें दाढ़ी मूंछ नहीं होती, लंबे लंबे शरीरके बाल होते और गात्रवर्ण हरिद्राभ पिङ्गल होता

है। अवस्थाभेदसे इन लोगोंमें कुछ शिक्षित और जंगली असभ्य लोग भी देखे जाते हैं। यहां तक, कि यदि इन्हें नरमांसलोलुप राक्षस कहा जाय, तो भी कोई अत्युक्ति न होगी। बूगी, मन्दार, माकेसर और बोप्तन द्वीपवासी बहुत कुछ सभ्य हो कर खेती बारी करते हैं। इन लोगोंमेंसे दक्षिण-पश्चिम प्रायोद्वीपांशमें जो रहते हैं, वे अधिकतर सभ्य और सुशिक्षित हैं। ये लोग बूगी जातिकी निकाली हुई नई वर्णमालामें लिखते पढ़ते हैं।

यहांके पार्वत्यप्रदेशमें जिस जंगली जातिका वास है, मलयद्वीपवासीने उसका याक् (यक्ष) नाम रखा है। मध्य सिलेविसवासी वर्वरोंको सभ्य लोग तुराजा (वर्वर) कहते हैं। ये लोग नरमांसभोजी थे। नरमुण्ड की खोजमें ये वन वनमें घूमा करते थे। सिलेविसके अधिवासीको छोड़ यहांके उपकूलदेशमें मलय जातियां आ कर बस गई हैं। ये सभी प्रायः मत्स्यजीवी धीवर हैं।

उन्नत सिलेविस-वासियोंने मलय और यवद्वीपवासीकी सभी शिल्पकलायें सीख ली हैं। ये लोग स्त्रीपुरुष काम करते हैं, रूईसे सूत कात कर कपड़े बिनने और उन्हें रंगाते हैं। वे सब कपड़े यूरोपके नाना स्थानोंमें विक्रयार्थ भेजे जाते हैं। देश उष्णप्रधान है तथा पवनमय होनेके कारण खेती-बारीमें विशेष सुविधा नहीं है। इस कारण देशवासी नाव द्वारा ही साधारणतः वैदेशिक वाणिज्य ले कर व्यस्त रहते हैं। ये लोग निकटवर्ती द्वीपोंमें कार्पासवस्त्र, स्वर्णचूर्ण, खाद्योपयोगी-पक्षीके घोसले, कच्छपके खोल, चन्दनकाष्ठ, काफी, चावल और विपज नामक द्रव्य ले कर जाते हैं।

डि कूटेने सिलेविसका जो विवरण दिया है, उससे जाना जाता है, कि बूगी आदि प्राचीन सिलेविसवासी उस समय हिन्दूधर्मकी छाया अवलम्बन कर चलते थे। उस समय भी मुसलमानी प्रभावसे वे लोग इसलामधर्ममें दीक्षित नहीं हुए। हाथ जोड़ कर ऊपर मुंह किये भगवद्‌की आराधना तथा शवदेह दाह और अस्थि-समाधि दान आदि आचार हिन्दूधर्मके आश्रयमें संक्रमित हुए हैं, ऐसी धारणा होती है। इसके सिवा उन लोगोंकी भाषामें भी धर्मतत्त्वके अनेक शब्द संस्कृतमूलक देखे जाते हैं। उनमेंसे कुछ मलय और यववासीके गृहीत संस्कृत शब्द सामान्य विकृताकारमें पढ़े जाते हैं।

१५४० ई०में पुर्त्तगीज नाविकदल जब पहले पहल सिलेविस देखने आया, उस समय उन लोगोंने माकेसर राज्यकी राजधानी गोआ नगरमें कुछ औपनिवेशिक मुसलमान वणिकोंको देखा था। कहते हैं, कि १६०३ ई०में उक्त देशके राजा तथा १६१६ ई०के बाद उनके अधीनस्थ प्रजावृन्दने इसलामधर्म ग्रहण किया था। उसके बादसे यहांके अधिवासियोंके आचार-व्यवहारमें हेर-फेर हो गया है।

१६०७ ई०में बहुत थोड़े-से ओलन्दाज वणिक् सिलेविस द्वीपमें वाणिज्यके लिये आये। किन्तु उन लोगोंने अपनी वाणिज्यभित्तिको दृढ़ करनेके लिये माकेसरराज अथवा उपकूलदेशवासी राजाओंसे कोई बन्दोबस्त नहीं किया। इसके प्रायः ३० वर्ष बाद ओलन्दाजोंने गोआकी माकेसर जातिके अधिनायकके साथ वाणिज्य सम्बन्धमें एक पक्की संधि कर ली। १६६० ई०में उन लोगोंने माकेसर राज्य जीत कर पुर्त्तगीजोंको निकाल भगाया। इस समयसे ले कर प्रायः दो सदी तक ओलन्दाज लोग यहां अपना आधिपत्य फैलानेके लिये युद्धविग्रहमें उलझे रहे थे। १८४६ ई०में माकेसरमें तथा १८४९ ई०में मेनाडो और केमा नामक स्थानमें ओलन्दाजोंने बन्दर स्थापन कर स्थानीय वाणिज्यकी बड़ी उन्नति की। इस बन्दरमें वैदेशिक वाणिज्य पर किसी प्रकारका शुल्क नहीं लगता।

सिलौंध (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बड़ी मछली जो भारत और बर्माकी नदियोंमें पाई जाती है। यह छः फुट तक लंबी होती है।

सिलोच्च (हिं० पु०) एक पर्वत जो गंगा तट पर विश्वामित्रके सिद्धाश्रमसे मिथिला जाते समय रामको मार्गमें मिला था।

सिलौआ (हिं० पु०) सनके मोटे रेशे जिससे टोकरी बनाई जाती है।

सिलौट (हिं० पु०) १ सिल। २ सिल तथा बट्टा।

सिलौटा (हिं० पु०) सिलोट देखो।

सिलौटी (हिं० स्त्री०) भांग, मसाला आदि पीसनेकी छोटी सिल।

सिल्क (अं० पु०) १ रेशम। २ रेशमी कपड़ा।

सिल्प (सं० पु०) शिल्प देखो।

सिल्की (सं० स्त्री०) शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।

सिल्ला (हिं० पु०) १ अनाजकी वालियां या दाने जो फसल कट जाने पर खेतमें पड़े रह जाते हैं और जिन्हें चुन कर कुछ लोग निर्वाह करते हैं। २ खलियानमें गिरा हुआ अनाजका दाना। ३ खलियानमें बरसानेके स्थान पर लगा हुआ भूसेका ढेर जिसमें कुछ दाने भी चले जाते हैं।

सिल्ली (हिं० स्त्री०) १ पत्थरका सात आठ अंगुल लम्बा छोटा टुकड़ा जिस पर घिस कर नाई उस्तरेकी धार तेज करते हैं, हथियारकी धार चोखी करनेका पत्थर। २ आरेसे चीर कर पेड़ोंसे निकाला हुआ तख्ता, फलक, पटरी। ३ पत्थरकी छोटी पतली पटिया। ४ नदीमें वह स्थान जहां पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। ५ फटकनेके लिये लगाया हुआ अनाजका ढेर। ६ एक प्रकारका जलपक्षी जिसका शिकार किया जाता है। यह हाथ भरके लगभग लम्बा होता है और तालों-के किनारे दलदलोंके पास पाया जाता है। यह मछली पकड़नेके लिये पानीमें गोता लगाता है।

सिल्वेरा (आंटोनिओ डि)—एक पुर्त्तगीज सेनापति। १५३८ ई०में गुजरातराज रूप महम्मद दीउने जब दुर्ग पर आक्रमण किया, तब सेनापति सिल्वेराने असीम साहससे शत्रुसेनाको विमुख किया था। गुजराती-सेना उनका भीमवेग सहन न कर भाग गई।

सिल्ह (सं० पु०) १ सिलारस नामक गन्धद्रव्य, कपितैल। २ सिलारसका पेड़।

सिल्हक (सं० पु०) सिलारस नामक गन्धद्रव्य, कपि-तैल।

सिल्हकी (सं० स्त्री०) १ वह पेड़ जिससे शिलारस निकलता है। २ शल्लकी निर्यास, कुंदरु।

सिवईं (हिं० स्त्री०) गुंधे हुए आटेके सूतके से सूखे लच्छे जो दूधमें पका कर खाये जाते हैं, सिवैंयाँ।

सिवक (सं० पु०) १ सीनेवाला। २ दरजी।

सिवर (सं० पु०) हस्ती, हाथी।

सिवलिङ्गी (सं० स्त्री०) शिवलिङ्गी देखो।

सिवस (सं० पु०) १ वस्त्र, कपड़ा। २ श्लोक, पद्य।

सिवा (सं० स्त्री०) शिवा देखो।

सिवा (अ० अव्य०) १ अतिरिक्त, छोड़ कर, अलावा। (वि०) २ अधिक; ज्यादा, फालतू।

सिवाइ (अ० अव्य०) सिवाय, सिवा देखो।

सिवाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मिट्टी।

सिवान (हिं० पु०) १ किसी प्रदेशका अंतिम भाग जिसके आगे दूसरा प्रदेश पड़ता है, हद, सरहद। २ गांव-के अन्तर्गत भूमि। ३ किसी गावके छोर परकी भूमि। ४ फसल तैयार हो जाने पर जमींदार और किसानमें अनाजका बटवारा।

सिवान—युक्तप्रदेशके बलिया जिलान्तर्गत बांसडिहा तहसीलका एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २६° ०१' ३६" उ० तथा देशा० ८४° ०७' १४" पू०के मध्य विस्तृत है। अरबराज्यके मदिना नगरसे आये हुए एक शेख वंशधर द्वारा यह नगर स्थापित हुआ। यहां १५ चीनीके कार-खाने हैं।

सिवाय (अ० क्रि० वि०) १ अतिरिक्त, अलावा, छोड़ कर। (वि०) २ आवश्यकतासे अधिक, जरूरतसे ज्यादा, बेशी। ३ अधिक, ज्यादा। ४ ऊपरी, बालाई, मामूलीसे अतिरिक्त। (पु०) ५ वह आमदनी जो मुकर्रर वसूलीके ऊपर हो।

सिवार (हिं० पु० स्त्री०) पानीमें बालोंके लच्छोंकी तरह फैलानेवाला एक तृण। यह नदियोंमें प्रायः होता है। इसका रंग हलका हरा होता है। यह चीनी साफ करने तथा दवाके काममें आता है। वैद्यकमें यह कसैला, कड़ुवा, मधुर, शीतल, हलका, स्निग्ध, नमकीन, दस्ता-वर, घावको भरनेवाला तथा त्रिदोषको नाश करनेवाला कहा गया है।

सिवाल (हिं० पु० स्त्री०) सिवार देखो।

सिवाला (हिं० पु०) शिवका मन्दिर।

सिवालिक—हिमालयपाद-मूलस्थ शैलसानु। यह युक्त-प्रदेशके देहरादून जिला, पंजाबके होशियारपुर जिला तथा

सिरमूर राज्यमें गंगानदीके तटसे विपाशा नदीकूल तक विस्तृत है। यह प्रायः २०० मील लंबा है। इसकी सबसे ऊंची चोटी ३५०० फुट है। देहरादून जिलेमें इस पर्वतके मोहन नामक सङ्कट होते हुए सहारनपुरसे देहरा और मसूरी जाया जाता है। गङ्गाके पूरब प्रायः ६०० मील विस्तृत स्थानमें सिवालिकके समयुगका समस्तर दृष्टिगोचर होता है। इस पर्वतके टर्शियारि डिपाजिटमें गैंडेसे बड़े जीवोंके शरीरकी हड्डी और अन्यान्य चतुष्पद जीवदेह पाई गई हैं। शिवालिक देखो।

सिवाली (हिं० पु०) एक प्रकारका मरकत या पन्ना जिसका रंग कुछ हलका होता है और जिसमें कभी कभी ललाईकी भी कुछ आभा रहती है।

सिवि (सं० पु०) शिवि देखो।

सिविर (सं० पु०) शिविर देखो।

सिविल (अं० वि०) १ नगर-सम्बन्धी, नागरिक। २ नगरकी शांतिके समय देख रेख या चौकसी करनेवाला। ३ मुलकी, माली। ४ सभ्य, शालीन, मिलनसार।

सिविल-सर्जन (अं० पु०) सरकारी बड़ा डाक्टर जिसे जिले भरके अस्पतालों, जेलखानों तथा पागलखानोंको देखनेका अधिकार होता है।

सिविल सर्विस (अं० स्त्री०) अङ्गरेजी सरकारकी एक विशेष परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण व्यक्ति देशके प्रबन्ध और शासनमें ऊंचे पद पर नियुक्त होते हैं।

सिवीलियन (अं० पु०) १ सिविलसर्विस-परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। २ देशके शासन और प्रबन्ध-विभागका कर्मचारी, मुलकी अफसर।

सिवैयाँ (हिं० स्त्री०) सिवईं देखो।

सिषाधयिषा (सं० स्त्री०) साधयितुमिच्छा साध-सन् अ, टाप्। साधनेच्छा, साधन करनेकी अभिलाषा।

"सिषाधयिषया शून्या सिद्धिर्यत्र न विद्यते।
स पक्षस्तत्र वृत्तित्वज्ञानादनुमितिर्भवेत् ॥"
(भाषापरि० ७०)

सिषाधयिषु (सं० त्रि०) साधयितुमिच्छुः साधि सन्-उस्। साधन करनेमें इच्छुक।

सिषासतु (सं० त्रि०) विभाग करनेमें इच्छुक।

सिषासनि (सं० पु०) सम्यक् भजनशील।

सिषासु (सं० त्रि०) धनलाभ करनेमें इच्छुक।

सिसेवयिषु (सं० त्रि०) सेवयितुमिच्छुः सेवि सन्-उ। सेवा करानेमें इच्छुक।

सिष्ट (हिं० स्त्री०) वंसीकी डोरी।

सिष्णासु (सं० त्रि०) स्नान करनेमें इच्छुक।

सिष्णु (सं० त्रि०) सोम द्वारा आसिच्यमान।

सिसंग्रामयिषु (सं० त्रि०) युद्ध करनेमें इच्छुक, युद्धार्थी।

सिसकना (हिं० क्रि०) १ भीतर ही भीतर रोनेमें रुक रुक कर निकलती हुई सांस छोड़ना। २ रोक रोक कर लंबी सांस छोड़ते हुए भीतर ही भीतर रोना, शब्द निकाल कर न रोना, खुल कर न रोना। ३ जी धड़कना, धकधकी होना, बहुत भय लगना। ४ उलटी सांस लेना, हिचकियां भरना, मरनेके निकट होना। ५ तरसना, प्राप्तिके लिये रोना, पानेके लिये व्याकुल होना।

सिसकारना (हिं० क्रि०) १ जीभ दबाते हुए वायु मुंहसे छोड़ना, सीटीका-सा शब्द मुंहसे निकालना, सुसकारना। २ इस प्रकारके शब्दसे कुत्तेको किसी ओर लपकाना, लहकारना। ३ जीभ दबाते हुए मुंहसे सांस खींच कर सी-सी शब्द निकालना, अत्यन्त पीड़ा या आनन्दके कारण मुंहसे सांस खींचना, शीत्कार करना।

सिसकारी (हिं० स्त्री०) १ सिसकारनेका शब्द, जीभ दबाते हुए मुंहसे वायु छोड़नेका शब्द, सीटीका-सा शब्द। २ कुत्तेको किसी ओर लपकानेके लिये सिटीका शब्द। ३ जीभ दबाते हुए मुंहसे सांस खींचनेका शब्द, अत्यन्त पीड़ा या आनन्दके कारण मुंहसे निकाला हुआ सी सी शब्द, शीत्कार।

सिसकी (हिं० स्त्री०) १ भीतर ही भीतर रोनेमें रुक रुक कर निकलती हुई सांसका शब्द, खुल कर न रोनेका शब्द, रुकती हुई लंबी सांस भरनेका शब्द। २ सिसकारी, शीत्कार।

सिसियांद (हिं० स्त्री०) मछलीकी-सी गंध, विसायंध।

सिसुमारचक्र (सं० पु०) शिशुमारचक्र देखो।

सिसृक्षा (सं० स्त्री०) स्रष्टुमिच्छा, सृज सन् अ, टाप्। सृष्टि करनेकी इच्छा, रचने या बनानेकी इच्छा।

सिसृक्षु (सं० त्रि०) स्रष्टुमिच्छुः सृज-सन्-उ। सृष्टि करनेकी इच्छा रखनेवाला, रचनाका इच्छुक।

सिसोदिया (हिं० पु०) गुहलौत राजपूतोंकी एक शाखा। इसकी प्रतिष्ठा क्षत्रिय कुलोंमें सबसे अधिक है और इसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ और आधुनिक राजधानी उदयपुर है। क्षत्रियोंमें चित्तौड़ या उदयपुरका घराना सूर्यवंशीय महाराज रामचन्द्रकी वंशमें माना जाता है। पहले गुजरातके वल्लभीपुर नामक स्थान में जाना जाता है। वहांसे वाप्पारावलने आ कर चित्तौडको तत्कालीन मोरी शासकसे ले कर अपनी राजधानी बनाई। मुसलमानोंके आने पर भी चित्तौड़ स्वतन्त्र रहा और हिन्दू शक्तिका प्रधान स्थान माना जाता था। चित्तौड़में बड़े, बड़े पराक्रमी राणा हो गये हैं। राणा समरसिंह, राणा कुम्भा, राणा सांग आदि मुसलमानोंसे बड़ी वीरतासे लड़े थे। प्रसिद्ध वीर महाराणा प्रताप किस प्रकार अकबरसे अपनी स्वाधीनताके लिये लड़े, यह प्रसिद्ध हुई है। सिसोद नामक स्थानमें कुछ दिन बसनेके कारण गुहिलौतोंकी यह शाखा सिसोदिया कहलाई।

सिस्न (सं० पु०) शिश्न देखो।

सिस्नासु (सं० त्रि०) स्ना-सन् उ। स्नान करनेमें इच्छुक।

सिस्य (हिं० पु०) शिष्य देखो।

सिसवाली—राजपूतानेके कोटा राज्यान्तर्गत एक नगर। यह कोटासे ३५ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है।

सिहद्दा (फा० पु०) वह स्थान जहां तीन हद्दें मिलती हों।

सिहपर्णी (सं० स्त्री०) वासक वृक्ष, अडूसा।

सिहरना (हिं० क्रि०) १ ठंढसे कांपना। २ कम्पित होना, कांपना। ३ भयभीत होना। ४ रोंगटे खड़े होना।

सिहरा (हिं० पु०) सेहरा देखो।

सिहरी (हिं० स्त्री०) १ शीत-कम्प, ठंढके कारण कंप कंपी। २ कम्प, कंपकंपी। ३ भय, दहलना। ४ लोमहर्ष, रोंगटे खड़े होना। ५ जूड़ी, बुखार।

सिहरू (हिं० पु०) सिन्दुवार, संभालू।

सिहली (हिं० स्त्री०) शीतली लता, शीतली जटा।

सिहान (हिं० पु०) लोहकिट्ट, मंडूर।

सिहाना (हिं० क्रि०) १ ईर्ष्याका दृष्टिसे देखना। २ अभिलाषकी दृष्टिसे देखना, ललचना।

सिहिकना (हिं० क्रि०) सूखना।

सिहुण्ड (सं० पु०) स्नुही वृक्ष, सेहुंड़का पेड़।

सिहोड (हिं० पु०) सेहुण्ड थूहर।

सिहोन्दा—युक्तप्रदेशके बांदा जिलेका एक प्राचीन ध्वस्त नगर। यह केन नदीके दाहिने किनारे बांदा नगरसे ११ मील दक्षिणमें अवस्थित है। स्थानीय किंवदन्तीसे जाना जाता है, कि भारतयुद्धके समय यह नगर बहुत ही समृद्धिशाली था। अभी यहां जो सब ध्वस्त कीर्त्तियां देखी जाती हैं, उनमेंसे प्रायः बहुतोंका निर्माण मुसलमानी अमलमें हुआ था। मुगल शासनकालमें यह नगर एक सरकारका प्रधान विचार केन्द्र था। १६३० ई०में खाँ जहान्‌ने विद्रोही हो कर यहां मुगल-सेनाके साथ युद्ध किया। औरङ्गजेबके बादमें यह स्थान श्रीभ्रष्ट हो गया। मुसलमानके कीर्त्तिस्वरूप यहां ७०० मसजिद और ६०० कूप देखे जाते हैं। निकटवर्त्ती शैलशृङ्ग पर एक बड़े दुर्गका ध्वस्त स्तूप दिखाई देता है। नगरके पास ऐसे ही एक दूसरे शैलशिखर पर देवी अङ्गुलेश्वरीका मन्दिर विद्यमान है। पहले यहां तहसीलकी कचहरी थी, सिपाही विद्रोहके बाद सीवान ग्राममें उठ गई है।

सिहोर—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ विभागान्तर्गत भव नगर राज्यका एक नगर। यह अक्षा० २१° ४३´ उ० तथा देशा० ७२° पू०के मध्य विस्तृत है। भवनगरसे यह १३ मील पश्चिम पड़ता है। जनसंख्या १० हजारसे ऊपर है। यह स्थान अति प्राचीन कालमें सारस्वतपुर नामसे प्रसिद्ध था। पीछे सिंहपुरी कहलाने लगा। भवनगरकी प्रतिष्ठाके पहले इसी नगरमें उक्त राजवंशधर राज्य करते थे। वर्त्तमान नगरसे आध मील दक्षिण प्राचीन नगर अवस्थित है। यहां तांबे और पीतलके बरतनका कारबार है। भवनगरमें गोण्डाल रेलवेका एक स्टेशन रहनेसे स्थानीय वाणिज्यकी बड़ी सुविधा हो गई है।

सिहोर—मध्यभारत एजेन्सीके भूपाल राज्यान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ११´ ५५´´ उ० तथा देशा० ७७° ७´ १४´´ पू०के मध्य सवेण नदीके दाहिने किनारे अवस्थित

है। यहांसे सागर, असीरगढ़, मौ, इन्दोर, देवास और सङ्कोच जानेका विस्तृत पथ रहनेसे स्थान वाणिज्य प्रधान हो गया है। भूपाल पालिटिकल एजेन्सीका यह सदर है और यहां सेनावास है।

सिहोरा—बम्बई प्रदेशके रेवाकान्था विभागके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। भूपरिमाण १६ मील है। यहा म ी, मेस्री और गोमा नदी बहती है। यहांके सरदार गायकवाड राजाको वार्षिक ४८००) रु० कर देते हैं।

सिहोरा—१ मध्यप्रदेशके जब्बलपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २२ १६ से २३ ५५ उ० तक देशा० ७६ ४६ से ८० १८ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ११६७ वर्गमील और जनसंख्या २ लाखके करीब है। इसमें सिहोरा नामक एक शहर और ७०६ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका सदर। यह अक्षा० २३ २६ उ० तथा देशा० ८० ६ पू०के जब्बलपुर शहरसे रेल-लाइन द्वारा २६ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या ५५६५ वर्गमील है। १८६७ ई०में यहा म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है। शहरमें एक मिडिल स्कूल, एक बालिका स्कूल और एक चिकित्सालय है।

सिहोरा—मध्यप्रदेशके भंडारा जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २१ २४ उ० तथा देशा० ७६ ५८ पू० भंडारा नगरसे ३० मील उत्तर पूर्व अवस्थित है। यहां सूती कपड़ा बुननेका कारबार है।

सिह्ल (सं० पु०) स्वनामख्यात गन्धद्रव्य, शिलारस। गुण—कटु, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण, शुक्र और कान्तिवर्द्धक, वृष्य, सुस्वरकारक, स्वेद, कुष्ठ, ज्वर, दाह और ग्रहनाशक। (भावप्र०)

सिह्लक (सं० पु०) सिह्ल, शिलारस।

सिह्ली (सं० स्त्री०) सल्लकी।

सिह्लभूमिका (सं० स्त्री०) सल्लकी।

सींक (हिं० स्त्री०) १ मूंज या सरपतकी जातिके एक पौधेके बीचका सीधा पतला काड जिसमें फूल या घूआ लगता है, मूंज आदिकी पतली तीली। इस कांडका येटा मोटी सूईके बराबर होता है और यह कई कामोंमें आता है। बहुत सी तीलियोंको एकमें बांध कर झाड़ू बनाते हैं। २ किसी तृणका सूक्ष्म काड, किसी घासका महीन डंठल। ३ किसी घास फूसके महीन डंठलका टुकड़ा, तिनका। ४ नाकका एक गहना, लौंग, कील। ५ कपड़े परकी खड़ी महीन धारी। ६ शंकु, तीली, सूईकी तरह पतला लंबा खंड।

सींकपार (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चत्तख।

सींकर (हिं० पु०) सींकमें लगा फूल या घूआ।

सींका (हिं० पु०) पेड पौधोंकी बहुत पतली उपशाखा या टहनी जिसमें पत्तियां गुछी रहती या फूल लगते हैं, डांडी।

सीकिया (हिं० पु०) एक प्रकारका रंगीन कपड़ा जिसमें सीक सी महीन सीधी धारियां बिलकुल पास पास होती हैं। (वि०) २ सींक-सा पतला।

सींग (हिं० पु०) १ खुरवाले कुछ पशुओंके सिरके दोनों ओर शाखाके समान निकले हुए कड़े नुकीले अवयव जिनसे वे आक्रमण करते हैं, विषाण। जैसे,—गायके सींग, हिरनके सींग। सींग कई प्रकारके होते हैं और उनकी योजना भी भिन्न भिन्न उपादानोंकी होती है। गाय, भैंस आदिके पोले सींग ही असली सींग हैं जो अस्थिधातु और चूने आदिसे संघटित ततुओंके योगसे बने होते हैं और बराबर रहते हैं। बारहसिंगोंके सींग हड्डीके होते हैं और हर साल गिरते और नये निकलते हैं। २ सींगका बना एक बाजा जो फूंक कर बजाया जाता है, सिंगी। ३ पुरुषकी इन्द्रिय।

सींगड़ा (हिं० पु०) १ बारूद रखनेका सींगका चोंगा, बारूददान। २ एक प्रकारका बाजा जो मुंहसे बजाया जाता है, सिंगी।

सींगना (हिं० क्रि०) सींग देख कर चोरीके पशु पकड़ना, चोरीके चौपायोंकी शिनाख्त करना।

सींगरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका लोबिया या फली जिसकी तरकारी होती है, मोगरेकी फली, सींगर।

सींगी (हिं० स्त्री०) १ हरिनके सींगका बना बाजा जो मुंहसे बजाया जाता है, सिंगी। २ वह पोला सींग जिससे जिराह शरीरसे दूषित रक्त खींचते हैं। ३ एक प्रकारकी मछली जिसके मुंहके दोनों ओर सींगसे निकले रहते हैं, तोमड़ी।

सींघन (हिं० पु०) घोड़ोंके माथे पर दो या अधिक भौंरीवाला टीका।

सींच (हिं० स्त्री०) १ सींचनेकी क्रिया या भाव, सिंचाई। २ छिड़काव।

सींचना (हिं० क्रि०) १ पानी देना, पानीसे भरना, आबपाशी करना, पटाना। २ छिड़कना; पानी आदि डालना या छितराना। ३ पानी छिड़क कर तर करना, भिगोना।

सींची (हिं० स्त्री०) सींचनेका समय।

सी (हिं० वि० स्त्री०) १ सम, समान, तुल्य। (स्त्री०) २ वह शब्द जो अत्यन्त पीड़ा या आनन्द रसास्वादके समय मुंहसे निकलता है, शीत्कार, सिसकारी। ३ बीजकी बोआई।

सीकचा (फा० पु०) लोहेकी छड़।

सीकर (सं० पु०) १ जलकण, पानीकी बूंद, छींट। २ पसीना, स्वेद, कण।

सीकल (हिं० पु०) १ डालका पका हुआ आम। (स्त्री०) २ हथियारोंका मोरचा छुड़ानेकी क्रिया, हथियारकी सफाई।

सीकसी (हिं० पु०) ऊसर।

सीका (हिं० पु०) १ सोनेका एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है। २ ऊपर टांगनेकी सुतड़ी आदिकी जाली जिस पर दूध दही आदिका बरतन रखते हैं, छीका, सिकहर।

सीकाकाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका वृक्ष। इसकी फलियां रीठेकी भांति सिरके बाल आदि मलनेके काममें आती हैं। कुछ लोग इसे सातला भी मानते हैं।

सीकी (हिं० स्त्री०) १ छोटा सीका या छीका, छोटा सिकहर। (पु०) २ छेद, सूराख। ३ मुंह, मुंहड़ा।

सीकुर (हिं० पु०) गेहूं, जौ आदिकी बालके ऊपर निकले हुए बालकेसे कड़े सूत, शूक।

सीख (हिं० स्त्री०) १ सिखानेकी क्रिया या भाव, शिक्षा, तालीम। २ वह बात जो सिखाई जाय। ३ परामर्श, सलाह।

सीख (फा० स्त्री०) १ लोहेकी लंबी पतली छड़, शलाका, तीली। २ वह पतली छड़ जिसमें गोद कर मांस भूनते हैं। ३ शंकु, बड़ी सूई, सूआ। ४ लोहेकी छड़ जिससे जहाजके पेंदेमें आया हुआ पानी नापते हैं।

सीखचा (फा० पु०) १ लोहेकी सीख जिस पर मांस लपेट कर भूनते हैं। २ लोहेकी छड़।

सीखना (हिं० क्रि०) १ ज्ञान प्राप्त करना, जानकारी प्राप्त करना, किसीसे कोई बात जानना। २ किसी कार्यके करनेकी प्रणाली आदि समझना, काम करनेका ढंग आदि जानना।

सीखा (सं० स्त्री०) शिखा, चोटी।

सीगा (अ० पु०) १ सांचा, ढांचा। २ व्यापार, पेशा। ३ विभाग, महकमा। ४ एक प्रकारके वाक्य जो मुसलमानोंके विवाहके समय कहे जाते हैं। ५ सिगार देखो।

सीगारा (हिं० पु०) १ मोटा कपड़ा। २ सिगार देखो।

सीचन (हिं० पु०) खारी पानीसे मिट्टी निकालनेका ढंग।

सीचापू (सं० स्त्री०) यक्षिणी। (शुक्लयजु० २४।२५)

सीझ (हिं० स्त्री०) १ सीझ देखो। (पु०) २ थूहर, सेहुंड़ा।

सीजना (हिं० क्रि०) सीझना देखो।

सीझ (हिं० स्त्री०) सीझनेकी क्रिया या भाव, गरमीसे गलाव।

सीझना (हिं० क्रि०) १ आंच या गरमी पा कर गलना, पकना, चुरना। २ आंच या गरमीसे मुलायम पड़ना, ताव खा कर नरम पड़ना। ३ ताप या कष्ट सहना, क्लेश झेलना। ४ कायक्लेश सहना, तप करना। ५ सूखे हुए चमड़ेका मसाले आदिमें भींग कर मुलायम होना। ६ ऋणका निपटारा होना। ७ सरदीसे गलना, बहुत ठंढ खाना।

सीट (अं० स्त्री०) बैठनेका स्थान, आसन।

सीट (हिं० स्त्री०) सीटनेकी क्रिया या भाव, डींग।

सीटना (हिं० क्रि०) डींग मारना, शेखी मारना।

सीटपटांग (हिं० स्त्री०) बढ़ बढ़ कर की जानेवाली बातें, घमंड भरी बात।

सीटी (हिं० स्त्री०) १ वह पतला महीन शब्द जो ओठोंको गोल सिकोड़ कर नीचेकी ओर आघातके साथ वायु निकालनेसे होता है। २ इसी प्रकारका शब्द जो किसी बाजे या यन्त्र आदिके भीतरकी हवा निकालनेसे होता है। ३ वह बाजा या खिलौना जिसे फूंकनेसे उक्त प्रकारका शब्द निकले।

सीठ (हिं० स्त्री०) सीठी देखो।

सीठना (हिं० पु०) अश्लील गीत जो स्त्रियां विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं, सीठनी, विवाहकी गाली।

सीठनी (हिं० स्त्री०) विवाहकी गाली।

सीठा (हिं० वि०) नीरस, फीका, बिना स्वादका, बेजायका।

सीठापन (हिं० पु०) नीरसता, फीकापन।

सीठी (हिं० स्त्री०) १ किसी फल, फूल, पत्ते आदिका रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश, वह वस्तु जिसका रस या सार निचुड़ गया हो, खूद। २ नीरस वस्तु, फीकी चीज। ३ निस्सार वस्तु, सारहीन पदार्थ।

सीड़ि (हिं० स्त्री०) सील, तरी, नमी।

सीढ़ी (हिं० स्त्री०) १ किसी ऊंचे स्थान पर क्रम क्रमसे चढ़नेके लिये एकके ऊपर एक बना हुआ पैर रखनेका स्थान, निसेनी, जीना। २ बांसके दो बल्लोंका बना लंबा ढांचा जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर रखनेके लिये डंडे लगे रहते हैं और जिसे भिड़ा कर किसी ऊंचे स्थान तक चढ़ते हैं, बांसकी बनी पैड़ी। ३ उत्तरोत्तर उन्नतिका क्रम, धीरे धीरे आगे बढ़नेकी परंपरा। ४ एक गराडोदार लकड़ी जो गिरदानककी आड़के लिये लपेटनके पास गड़ी रहती है। ५ हैंड प्रेसका एक पुर्जा जिस पर टाइप रख कर छापनेका प्लेटन लगा रहता है। ६ घुड़ियाके आकारका लकड़ीका पाया जो खंडसालमें चीनी साफ करनेके काममें आता है।

सीतपकड़ (हिं० पु०) एक रोग जो हाथीको शीतसे होता है।

सीतलचीनी (हिं० स्त्री०) शीतलचीनी देखो।

सीतलपाटी (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी बढ़िया चिकनी चटाई। २ पूर्व बंगाल और आसामके जङ्गलोंमें होनेवाली एक प्रकारकी झाड़ी जिससे चटाई या सीतलपाटी बनती है। ३ एक प्रकारका धारीदार कपड़ा।

सीतलबुकनी (हिं० स्त्री०) १ सत्तू, सतुआ। २ संतोंकी बानी।

सीतला (हिं० स्त्री०) शीतला देखो।

सीता (सं० स्त्री०) सिनोतीति सिञ् बन्धे बाहुलकात् क, दीर्घश्च। (उण् ३।९०) १ लाङ्गलपद्धति। २ जनकराजनन्दिनी, रामचन्द्रकी पत्नी। पर्याय—वैदेही, मैथिली, जानकी, धरणीसुता, भूमिसम्भवा।

ये मिथिलाराज राजर्षि जनककी कन्या और त्रिलोकविश्रुत रघुकुलतिलक भगवान् श्रीरामचन्द्रकी महिषी थीं। त्रिभुवनेश्वरी लक्ष्मीदेवीके अंशसे इनका जन्म हुआ था। इन्हींके असामान्य पातिव्रत्य और उस पातिव्रत्यकी अग्निपरीक्षाके ऊपर महर्षि वाल्मीकिकी रामायण प्रतिष्ठित है। जगत्‌के महाकाव्य, खण्डकाव्य, काव्य, उपन्यास और इतिहासमें यदि किसीका पूत चरित्र, अनन्त माहात्म्य और अनाडम्बर गाम्भीर्यसे परिपूर्ण है भी तो वह इन्हीं सीताका चरित्र। सीताका चरित्र ऐतिहासिक है या काल्पनिक, यह ले कर अनेक तर्क वितर्क चले हैं और चल रहे हैं।

वाल्मीकि सीताके जन्मप्रसङ्गमें राजर्षि जनककी ओरसे कहते हैं—मेरे हल द्वारा खेत जोतते समय एक कन्या उत्पन्न हुई। सीता (लाङ्गलपद्धति)-से मिलनेके कारण उनका नाम सीता रखा गया। जमीनसे निकल कर मेरी वह आत्मजा क्रमशः बढ़ने लगी।" भविष्यमें भगवती सीतादेवीकी जो सर्वसहामूर्त्ति देखनेमें आयेगी, सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान् वाल्मीकिको वह पहले ही मालूम हो गया था। सीता जो नीरवसे निर्विवादसे सह गई हैं, सर्वसहा वसुन्धराके सिवा और कोई भी उसे सह नहीं सकता। इसीसे मालूम होता है, कि कविने इनके इस प्रकार जन्मवृत्तान्तकी अवतारणा की है। नहीं तो सत्यपरायण राजर्षि जनक किस प्रकार सीतादेवीको 'आत्मजा' कह कर पुकारते? चाहे जो हो लाङ्गलके मुखसे या जनकके औरससे सीताकी उत्पत्ति क्यों न हुई हो, पर यह बात ठीक है, कि जनकके घरमें उनका लालन-पालन हुआ था।

राजर्षिके पूर्वपुरुष देवरात थे। दक्षयज्ञके समय महादेवने जिस धनुषका व्यवहार किया था, वे उस धनुषके अधिकारी हुए थे। क्रमशः उत्तराधिकारसूत्रसे वह हरधनु जनकके हाथ लगा। साधारण लोगोंके

लिये उस धनुषमें गुण चढ़ाना बिलकुल असम्भव था। अलोकसामान्या कन्याको अनन्यसाधारण पतिके हाथ सौंपनेकी इच्छासे पिताने उसे 'वीर्यशुल्का' बना रखा अर्थात् जो इस हरधनु पर ज्या चढ़ा सकेंगे, वे ही इस सुन्दरीललामभूता कन्यारत्नको पायेंगे, इस प्रकार पण किया।

सीताकी वयोवृद्धिके साथ उनकी सद्गुणावली और सम्मोहन सौन्दर्यके सौगन्धसे आकृष्ट हो नाना देशोंसे बड़े बड़े राजचक्रवर्त्ती और परशुराम रावण आदि जैसे धुरन्धर वीर आ कर हरधनु उठानेकी व्यर्थ चेष्टा करने लगे।

इधर अयोध्यापति रघुकुलतिलक राजा दशरथके घरमें चार महापुरुषोंने जन्म लिया। इनमेंसे बड़े श्री रामचन्द्र थे। तीसरे भाई लक्ष्मणकी वीरत्व-कहानी सुन कर शत्रु मित्र सभी मुग्ध हो जाते थे। राक्षसोंके अत्याचारसे यज्ञकी रक्षा करनेके लिये महर्षि विश्वामित्र एक दिन दशरथके पास आये और उनसे रामलक्ष्मणके लिये प्रार्थना की।

ऋषि आश्रममें जा कर दोनों भाइयोंने यज्ञकी रक्षा की और भयंकर रूपवाली दुराचारिणी ताडकाका वध किया। पीछे वहांसे दोनों भाई विश्वामित्रके साथ राजर्षि जनककी सभामें गये। महर्षिका अभिप्राय था, कि राजर्षि श्रीरामचन्द्रके हाथ सीतादेवीको समर्पण करें, जनककी भी एकान्त इच्छा थी—किन्तु कन्याको उन्होंने 'वीर्यशुल्का' बना रखा था।

जो धनुष देखते ही त्रिभुवनविजयी बड़े बड़े धुरंधर वीर अपनी हार स्वीकार कर गये हैं, वह विराट् धनुष देख कर श्रीरामचन्द्रने कहा, 'यह दिव्य धनुर्वर मैं हाथसे छूता हूं। केवल यही नहीं, मैं इसे उठाने और टङ्कार देनेकी भी कोशिश करूंगा।'

इतना कह कर विस्मय-विस्फारित हजारों नेत्रोंके सामने बालक रामने वह विराट् धनुष आसानीसे उठाया, गुण चढ़ाया और टङ्कार दिया। पीछे उसे तोड़ कर जमीन पर फेंक दिया। पर्वत विदीर्ण होनेसे पार्श्ववर्त्ती स्थानोंमें जैसा भीषण भूमिकम्प उत्पन्न होता है, इस टङ्कारसे वहां भी वैसा ही हुआ।

रामचन्द्रका वीर्य देख कर मुग्ध और विस्मित जनकने कहा, 'दशरथात्मज रामको स्वामिरूपमें पा कर मेरी कन्या सीता जनककुलकी कीर्त्ति बढ़ायेगी, कौशिक "सीता वीर्यशुल्का" कह कर मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, वह आज सार्थक हुई। प्राणसे भी बढ़ कर प्यारी सीताको मैं रामचन्द्रके हाथ ही समर्पण करूंगा।'

राजा दशरथको यह संवाद जतानेके लिये अयोध्यामें आदमी भेजा गया। परमसन्तुष्ट राजा उपाध्याय और पुरोहितोंके साथ शीघ्र ही विदेह-नगर पहुंचे। महासमारोहसे उत्तरफल्गुनी नक्षत्रमें 'अयोनिसम्भवा' 'सुरसुतोपमा, वीर्यशुल्का' सीतादेवी श्रीरामचन्द्रके हाथ अर्पित हुई। 'सर्वाभरणभूषिता' सीताको ला कर अग्निके सामने राजर्षिने रामचन्द्रको सम्बोधन कर कहा, 'तुम्हारा मङ्गल हो, मेरी दुहिता यह सीता तुम्हारी सहधर्मिणी हो; तुम अपने हाथसे इसका हाथ पकड़ो। यह महाभागा अत्यन्त प्रतिव्रता होगी और छायाकी तरह सर्वदा तुम्हारा अनुगमन करेगी।'

आकाशमें देवता और मर्त्यमें ऋषिमहापुरुषोंके मुखसे 'साधु साधु' शब्द निकला—देव-दुन्दुभिध्वनिके साथ अन्तरीक्षसे असंख्य पुष्पवृष्टि हुई।

प्रातःकाल होने पर जनकसे बिदाई ले कर महाराज दशरथ पुत्र और पुत्रवधूके साथ अयोध्याकी ओर चल दिये।

पिता, माता, आत्मीय स्वजन, पौरजन, प्रजावर्गको सन्तुष्ट करते हुए रामचन्द्रने सीताके हृदयमन्दिरमें अधिष्ठित हो अनेक वर्ष सुखसे बिताये। क्षण क्षणमें दम्पती के प्रेम और प्रीतिका आकर्षण अधिक बलवान् होता गया। एक तो सीता रामको प्राणसे भी बढ़ कर प्यारी थी, दूसरे उनमें अनन्य साधारण रूप और गुण थे, इस कारण राम सीतागतप्राण हो कर उन्हें प्यार करने लगे। दोनोंके ही हृदयमें प्रीति दिन पर दिन बढ़ने लगी।

जगत्में जो आदर्शपुरुष हैं, केवल महान् लक्ष्यके साथ जो एकीभूत हो जाते हैं, उन्हें अग्निपरीक्षामें उत्तीर्ण होना पड़ता है। यह विधाताका विधान है। सीता रामगतप्राणा आदर्श साध्वी थीं। स्वामीमें उन्होंने

आत्मविलोप कर दिया था। भगवान्‌ने उनकी परीक्षा आरम्भ कर दी।

रामके चरित्रमाहात्म्य पर मुग्ध हो राजा दशरथने उन्हें राज्याभिषेक देनेका संकल्प किया। इस संवादसे राज्य भरमें एक आनन्दोल्लासका हिल्लोल बह गया—किन्तु कैकेयीकी सहचारी मन्थराके हृदयमें ईर्षाकी तरंग उमड आई। दासीके कुटिल परामर्शसे कैकेयी रामका अभिषेक रोकनेके लिये उठ खड़ी हुई। केवल यही नहीं, राजभोग, राजसुखका त्याग कर रामचन्द्रको चौदह वर्ष वल्कल पहन कर वनमें रहना होगा, निष्ठुरा कैकेयीने दशरथसे ऐसी प्रार्थना भी की।

चरित्रगुणसे सीताने श्वशुर आदि गुरुजनोंका भी चित्ताकर्षण किस प्रकार किया था, राम वनवासके पहले दशरथने कैकेयीको सम्बोधन कर जो कहा था, इसोसे वह स्पष्ट झलकता है। सीता आदर्शपत्नी, आदर्श कुलवधू थीं। स्वामीके सुखसे ही सुखी रहती थीं। राज्याभिषेक अथवा वनगमनके संवादसे वे जरा भी विचलित नहीं हुईं—राजा हों, या वनवासी ही हों, उनके स्वामी उन्हींके हैं—सर्वदा सभी अवस्थाओंमें वे स्वामीकी मङ्गलाकाङ्क्षिणी थीं।

राम सीताके साथ सुखसे विश्रम्भालाप कर रहे थे, इसी समय सुमन्त्र आया और कैकेयीकी निर्घात वाणी सुनानेके लिये उन्हें ले गया। जाते समय शुभाकाक्षिणी पत्नीने कहा,—(उस समय भी सबोंको मालूम था, कि अभिषेक होगा) "लोककर्त्ता ब्रह्माने जिस प्रकार वासवका राजसूयाभिषेक किया था, राजा दशरथ भी उसी प्रकार ब्राह्मणनिषेवित राज्य पर अभिषेक करें। आपको दीक्षित, व्रतसम्पन्न, श्रेष्ठाजिनधारी, शुचि, कुरङ्गशृङ्गपाणि देख कर मैं बड़ी प्रसन्नतासे भजना करूंगी। वज्रधर आपके पूर्व दिक्‌की, यम दक्षिण दिक्‌, वरुण पश्चिम दिक्‌की और कुबेर उत्तर दिक्‌की रक्षा करें।'

कैकेयीके सामने वन जानेकी प्रतिज्ञा करके रामचन्द्र लौटे और अपनी माताके पास विदाई लेने आये। इधर तब भी 'राज्याभिषेक होगा' सीताके मनमें ऐसी ही धारणा थी—देवकार्य समाप्त करके वे हृष्टमनसे, कृतज्ञचित्तसे स्वामीकी बाट जोह रही थीं। रामचन्द्रने आ कर जब अन्तःपुरमें प्रवेश किया, तब उनकी शोकसन्तप्त मुखच्छवि और चिन्ताव्याकुलित इन्द्रियां देख कर व्याकुल आशङ्कासे जानकीका सर्वाङ्ग सिहर उठा। जननीसे विदाई लेते समय श्रीरामचन्द्र आत्मसंयम रखनेमें समर्थ हुए थे—किन्तु सद्योद्भिन्नयौवना एकान्तानुरक्ता पत्नी को ऐसा एक दुःसह संवाद सुनानेमें वे स्वभावतः ही बड़ संकुचित हो गये,—उन्होंने देखा, कि साधारण स्त्रीजन सुलभ आशा आकांक्षासे उनका भी हृदय उद्वेलित हो गया है। आनन्दमय अभिषेकमें—स्वामीके मुख पर ऐसा भावान्तर देख वैदेही स्वभावतः ही विचलित हो गई—उन्होंने पूछा,—

"उधर आपके अभिषेककी तैयारी हो रही है.और इधर आप ऐसे उदास? ऐसा मलिन और अप्रफुल्ल वदन तो मैंने आपका पहले कभी नहीं देखा था। इसका क्या कारण है, सच सच मुझसे कहिये।" रामचन्द्रने उनसे चौदह वर्षके लिये भरतको राज्याभिषेक और अपने वनवासकी बात कह दी। रामचन्द्रको मालूम था, कि यह दारुण संवाद सुननेसे सीता साधारण स्त्रीका तरह फूट फूट कर रोयेगी, अपने अदृष्टको धिक्कारेगी और दिन रात विलाप करती रहेगी। परन्तु सीतामें उनमेंसे एक भी लक्षण दिखाई न दिया।

श्रीरामचन्द्रने यह भूल कर भी नहीं सोचा था, कि पत्नी फिर उनकी सहगामिनी होगी, पर जब देखा, कि वे भी जानेके लिये तैयार हैं, तब रामचन्द्र वनका क्लेश बताते हुए सीताको भांति भांतिका उपदेश देने लगे, "पिताने भरतको युवराज-पद प्रदान किया है, अतएव वे ही हम लोगोंके राजा हैं, उन्हें विशेषरूपसे प्रसन्न करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। मेरे लिये व्याकुल न हो कर तुम व्रतोपवास और लौकिक कार्यादिमें समय बिताना। धर्म और सत्यव्रतनिरत हो कर यहीं पर रहना—जो काम करनेसे दूसरोंका अनिष्ट हो, वह काम भूल कर भी न करना।"

अभिषेकके बदले वनवासकी बात सुन कर सीता जरा भी विचलित न हुई—किन्तु स्वामीही उनके प्राण थे, इस कारण स्वामीकी उक्त उक्ति पर दुःखित हो कर बोली, 'मुझे नीच प्रकृतिका जान कर आपने जो उपदेश

दिया उससे मैं अपनी हंसी रोक नहीं सकती। मैं क्या ऐसी नीच प्रकृतिकी हूं, कि आप वन जायेंगे और मैं राजप्रासादमें राजसुखका भोग करूंगी ! मैं जानती हूं, कि पत्नी स्वामीकी ही भाग्यानुवर्त्तिनी है; अतएव आपके साथ मैं भी वन जाऊंगी।'

"न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजनः।
इह प्रेत्य च नारीणां पतिरेको गतिः सदा॥"

पिता, पुत्र, आत्मा, माता, सखीजन कोई भी स्त्रीका अवलम्बन नहीं है,-- स्वामी ही उसको एकमात्र गति है। अतएव वन जानेसे आप मुझे न रोकें, वनपथका क्लेश सहती हुई मैं आगे चलूंगी। स्वामी सुखसे रहें या दुःखसे, उनके पदतलमें रहना ही स्त्रीका समस्त स्वर्गीय और पार्थिव सुख है।

सीताकी भक्ति और दृढ़ता देख कर रामचन्द्र मुग्ध और स्तम्भित हो गये, किन्तु उन्होंने सोचा, वनमें जानेसे कैसा कैसा कष्ट झेलना पड़ेगा, शायद सीताको यह मालूम नहीं है, यदि समझा कर उसे बता दिया जाय, तो वह सङ्कल्पसे निवृत हो सकती है, इसी आशासे वे सीताको समझाने बुझाने लगे, "वनवास कैसा भीषण विपदुसंकुल है, यह तुम्हें अब तक मालूम नहीं है, इसीसे तुम वन जानेका हठ करती हो। वनमें क्षण क्षण हथेली पर प्राण ले कर घूमना होता है—वहां सिंह बाघ आदि हिंस्र जन्तु मनुष्य देखनेसे ही उन पर टूट पड़ते हैं।" सीताने हंस कर उत्तर दिया, "पितृगृहमें रहते समय मैं भिखारिनके मुखसे वनवासके दोषगुण सभी सुन चुकी हूं। आपने जो सब भय दिखलाये, उनकी जरा भी परवाह नहीं करती। आपके साथ रहनेसे देवाधिपति महेन्द्र भी मेरा अपमान करनेका साहस नहीं कर सकते। यह अच्छी तरह समझ लें, कि आप यदि मुझे साथ न ले जायंगे, तो मैं आत्महत्या करूंगी, अवश्य करूंगी।"

इतना कहने पर भी स्वामीको अविचलित देख साध्वीके नेत्रोंसे अविश्रान्त अश्रुधारा बहने लगी। रामचन्द्र उन्हें तरह तरहसे सान्त्वना देनेकी चेष्टा करने लगे। इस पर सीता अभिमानसे, क्रोधसे, क्षोभसे गरज उठी, 'आपको पुरुष जान कर ही पिताने मुझे आपके हाथ सौंपा था। उन्हें क्या मालूम, कि अन्तमें आप इस प्रकार स्त्रीजनोचित कापुरुषताके वशवर्त्ती होंगे! मुझे क्या आपने सिर्फ विहारशय्यासङ्गिनी समझ रखा है? मैं आपके साथ वन जाऊंगी, अवश्य जाऊंगी—मुझे आप सत्यवानकी वशवर्त्तिनी पत्नी सावित्री सरीखी समझ लें।' इस पर उनके आंसू पोंछते हुए सोहागान्ध स्वामीने कहा, "किसीका भय खा कर जो मैं तुम्हें अपने साथ ले जाना नहीं चाहता हूं, सो नहीं, तुम्हारी रक्षा करनेकी मुझमें पूरी ताकत है।

आकाङ्क्षाकी परितृप्तिसे सीताके आनन्दका पारावार न रहा! धनरत्न वस्त्रालङ्कार जो कुछ था, बड़े आनन्दसे वे लोगोंके बीच बांटने लगीं।

अब लक्ष्मण उनके साथ वन जानेके लिये हठ करने लगे। रामने उन्हें रोकनेकी बड़ी कोशिश की, पर व्यर्थ। अनन्तर भाई और सहधर्मिणीको साथ ले श्रीरामचन्द्र वन जानेके लिये तैयार हो गये। कैकेयीने अपने हाथसे मुनिपरिधेय चीर ला दिया था, उसे श्रीरामचन्द्रने सहर्ष पहना और अपना कुल राजकीय वस्त्र फेंक दिया। बड़ेका पदानुसरणकारी लक्ष्मणने भी तुरत ही मुनिवेशमें अपनेको सजाया। किन्तु जानकी जिन्हें चीर पहनना बिलकुल ही मालूम न था, कैकेयीका दिया हुआ चीरवास ग्रहण कर बड़ी दुःखित हुईं। अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे उन्होंने स्वामीसे कहा, 'किस प्रकार चीर पहना जाता है, मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं है।' इस पर रामचन्द्रने आगे आ कर स्वयं चीरवस्त्र पहना दिया। सीताको इस वेषमें देख कर पुरजनवासी फूट फूट कर रोने लगे।

सीताको आलिङ्गन कर मस्तक सूंघती हुई सास कौशल्या देवीने कहा, "पतिव्रता सत्यवादिनी रमणियोंका दृढ़ विश्वास है, कि एकमात्र स्वामी ही स्त्रियोंके सुखमोक्षदाता आराध्य देवता हैं।"

कृताञ्जलिपुटसे सीताने उत्तर दिया, "माता! पितालयसे ही मैं स्वामिसेवा सीख आई हूं। फिर भी आपका उपदेश पालन करनेमें मैं तनिक भी पराङ्मुख न होऊंगी।"

अन्तमें गुरुजनसे बिदाई ले कर तीनों रथ पर सवार हुए और दण्डकारण्यकी ओर चल दिये।

क्रमशः वे लोग गङ्गाके किनारे पहुंचे। यहां रथको विदा करके रामचन्द्रने नाव द्वारा गङ्गा पार करनेका सङ्कल्प किया। इस पर सारथि सुमन्त्रने बड़ी आपत्ति की, पर रामचन्द्रने कुछ भी न सुना।

गङ्गा पार कर वे सभी पैदल चलने लगे। जो एक कमरेसे दूसरे कमरेके सिवा और कहीं भी पैदल नहीं जाती थी, जिनके पादपद्म प्रफुल्ल कुसुम सदृश कोमल हैं, आज वे जनकनन्दिनी, दशरथ पुत्रवधू परम आनन्दसे कण्टक कङ्कराकीर्ण पथसे पैदल जा रही हैं!

क्रमशः वे लोग चित्रकूट पर्वत पर जा पहुंचे। यहां फलमूल अपर्याप्त था, पर्वतसे स्वादिष्ट जलवाले झरने झरझरा रहे थे। मधुर विहङ्गमोंके कूजनसे दिङ्मण्डल गूंज उठता था। स्थानमाहात्म्यसे सभी मुग्ध हो गये। यहीं पर रहनेका सङ्कल्प करके वे लोग महर्षि वाल्मीकिके आश्रममें उपस्थित हुए। रामके आदेशसे लक्ष्मणने एक पर्णकुटी बनाई। स्थानकी मधुरता पर अयोध्या-परित्यागका दुःख भी वे लोग भूल गये। एक दिन रामने सीताको सम्बोधन कर कहा, "प्रिये! यहां तुम्हारे और लक्ष्मणकी सहायतासे यदि वर्षों रह भी जायें, तो शोकानल मुझे दग्ध नहीं कर सकता।"

इसी बीच राजा दशरथकी मृत्यु हो गई। मातुलालयसे भरतको अयोध्या लाया गया। किन्तु उन्होंने रामविहीन अयोध्यामें रहना पसन्द नहीं किया। वे परिजनोंके साथ चित्रकूट पर्वत पर आये। रामचन्द्रने उन्हें मधुर वचनोंसे लौटा कर चित्रकूट पर्वत छोड़ दिया।

अब वे लोग अत्रिमुनिके आश्रममें पहुंचे। अत्रिने उन लोगोंका बड़ा आदर सत्कार किया। उनकी पत्नी महाभागा धर्मनिरता अनसूया सीताको पुत्रीके समान देखने लगी।

दण्डकारण्य पास ही था। रामचन्द्रने सुना, कि यहां बहुतसे राक्षस रहते हैं। मुनिऋषियोंने अपनेको राक्षसके अत्याचारसे बचानेके लिये रामचन्द्रसे अनुरोध किया। रामचन्द्र भी पत्नी और भ्राताके साथ दण्डकारण्यमें चल दिये।

दण्डकारण्यके मुनिऋषियोंने उनका अच्छा सत्कार किया। उन्हींके आश्रममें रात बिता कर बहुत सवेरे वे राक्षसका दमन करनेके लिये सीता और लक्ष्मणको ले कर घने जंगलमें घुसे। यहां पर्वतके समान ऊंचा एक राक्षस रहता था। इन तीनोंको देखते ही वह टूट पड़ा और पल भरमें सीतादेवीको गोदमें ले कर कहा, "दो तापसका एक रमणीके साथ वास करना कदापि सङ्गत नहीं है। तुम लोग पापी और अधर्मचारी हो, इस सुन्दरीसे मैं विवाह करूंगा। मैं विराध राक्षस हूं; हत्या करके तुम दोनोंका रक्तपान करूंगा।" सीतादेवी राक्षसके पञ्जेमें आ कर कदली वृक्षके समान कांपने लगी। उनके अङ्गमें परपुरुषका स्पर्श देख रामचन्द्र बड़े व्याकुल हो उठे। उन्हें सान्त्वना दे कर लक्ष्मण विराधके साथ युद्ध करने लगे। राम भी चुप बैठ न सके, दोनों भाइयोंके साथ राक्षसका बहुत देर तक युद्ध होता रहा। अन्तमें विराधका वध कर रामचन्द्रने सीताका आलिङ्गन किया और उन्हें सान्त्वना दी।

अनन्तर वे लोग नाना स्थानोंमें घूमते हुए, नाना मुनिऋषियोंसे सत्कृत और सम्मानित होते हुए दण्डकारण्यके निविड़ प्रदेशमें प्रवेश करने लगे। स्वामीको राक्षसवधमें प्रतिश्रुत और उद्यत देख धर्मतत्त्वाभिज्ञा जानकीने एक दिन उनसे कहा, "नाथ! आपको महामोहने घेर लिया है, अकारण आप जीवहिंसामें लिप्त रहते हैं! ऋषियोंको वचन दे कर आप राक्षसका वध करनेके लिये दण्डकारण्यकी ओर जा रहे हैं। किन्तु मेरी बात सुनिये, आप इस अकारण जीवक्षयका संकल्प छोड़ दीजिये। शास्त्र कहते हैं, कि शास्त्रसंयोग अग्निसंयोगकी तरह विकारका हेतु है। आप सभी जानते हैं, आपको उपदेश देना मेरी धृष्टतामात्र है, मैं आपको केवल स्मरण दिलाती हूं। आर्त्तोंको बचानेके लिये क्षत्रियोंका अस्त्रधारण करना कर्त्तव्य है, परन्तु अभी आप तापस हैं, अयोध्या लौट कर क्षात्रधर्मका पालन कीजियेगा। यदि अभी मुनियोंका धर्म प्रतिपालन करेंगे, तो मेरे श्वशुर और सासको अक्षय आनन्दलाभ होगा। किन्तु मैं स्त्री स्वभावसुलभ चञ्चलतावशतः ही ऐसा कहती हूं। देवर लक्ष्मणके साथ सलाह करके जो अच्छा समझें, वही करें।"

साध्वी पत्नीकी मङ्गलमयी बातें सुन कर श्रीराम-

चन्द्रने उत्तर दिया, "प्रिये! तुमने ही तो क्षात्रधर्मके विषयमें कहा है, कि क्षतसे जो त्राण करता है, वही क्षत्रिय है। राक्षसके उत्पातसे प्रपीड़ित जीवनसंशय मुनिऋषियोंने मुझे परित्राणके लिये अनुरोध किया है। क्षात्रधर्मके वशवर्ती हो कर मैंने भी स्वीकार कर लिया है। प्रतिज्ञा करके प्राण रहते मैं उसकी अन्यथा नहीं कर सकता, सत्य मेरे प्राणसे भी बढ़ कर प्रिय है। जरूरत होने पर मैं तुम्हें, लक्ष्मणको और तो क्या अपने प्राण तकको भी छोड़ सकता हूं, किन्तु सत्यसे भ्रष्ट कदापि नहीं हो सकता।"

इस प्रकार रामचन्द्रने दश वर्ष वनमें विताये। अन्तमें सुतीक्ष्ण ऋषिसे पथसंक्रान्त उपदेश ले कर वे अगस्त्य ऋषिके आश्रममें पहुंचे। पीछे अगस्त्यके वतलाये हुए रास्तेसे उनके आश्रमसे दो योजन दूरवर्त्ती विविध फल मूलोदकसुलभ 'पञ्चवटी' वनमें गये। वहा वे कुटी निर्माण कर सतीसाध्वी सीता और भाई लक्ष्मणके साथ रहने लगे। इसके आस पासमें कोई आश्रम नही था, इससे यहा सीताको एक भी सङ्गिनी नहीं मिली। इसके पहले जहा वे गई थीं, वहा मुनिपत्नी और मुनिकन्याओंके सच्चे स्नेह और यत्नसे वे वनवासका दुःख भूल गई थीं, सारा दिन उन लोगोंके साथ इधर उधर घूम फिर कर शामको थकी मांदी आश्रम लौटतीं और अपने अतुल्य स्वामीके देवोपम महत्त्वका गीत गा कर श्रान्तिक्लान्ति दूर करती तथा चित्तको प्रसन्न रखती थीं।

यहीं पर रामायणकी मूलभित्ति आरम्भ हुई। राक्षस-राज रावणकी बहन शूर्पणखाके नाक कान काट कर और उसके रक्षक खरदूषणादि चौदह हजार राक्षसोंका विनाश कर रामने सीताके अलौकिक सौन्दर्यके प्रति रावणके लोभ और दृष्टिको आकर्षण किया। रामके कठोर शासनसे राक्षसकुल उनको भीम-मूर्त्ति सर्वत्र देखने लगे। पीछे उन लोगोंने रावणके पास जा रो रो कर कुल बातें कह सुनाईं।

रावण सीताहरणका उद्योग करने लगा। उसके आदेशसे मारीच राक्षस विचित्र स्वर्ण-मृगका रूप धारण कर रामके आश्रमके पास आया और इधर उधर चौकड़ी भरने लगा। उसे देख सीता परम पुलकित हुई और स्वामी तथा देवरको स्वर्णमृग पकड़ लानेके लिये अनुरोध करने लगी। राम सीताकी रक्षाका भार लक्ष्मणके ऊपर सौंप भागते हुए मृगके पीछे पीछे दौड़े।

रामके शरसे आहत हो कर मारीचने प्राणत्याग किया। प्राण निकलते समय भी वह एक चाल खेल गया, रामके कण्ठका अनुकरण कर, 'हा सीते! हा लक्ष्मण, कह कर जोरसे चीत्कार करने लगा।

स्वामीके कण्ठसे निकले जैसे आर्त्तनादको सुन कर सीता बेचैन हो गई। उन्होंने लक्ष्मणसे कहा, "तुम अभी तुरत जाओ और भाईकी सहायता करो।" लक्ष्मण मायावी मारीचको जानते थे। सीताके विशेष अनुरोध करने पर भी वे उन्हें अकेली छोड़ जानेको राजी न हुए। तब स्वामीको विपद् आशङ्कासे अभिभूत हो सीता लक्ष्मणको कठोर दुर्वाक्यमें तिरस्कार करने लगी, "भाई को विपन्न जान कर भी तुम उनकी रक्षामें नहीं जाते। आज मैं अच्छी तरह समझ गई, कि तुम विषरस-युक्त कनकघट की तरह हो ऊपरसे तो अटूट प्रेम, पर भीतरसे उनके जानी दुश्मन हो। मेरे ही लोभसे तुम उनकी मदद करने नहीं जाते,—मेरे ही लोभसे तुम उनकी मृत्यु देखना चाहते हो।" उनके दुर्वाक्य सुन कर लक्ष्मणके नेत्रोंसे आंसू बह चले। उन्होंने शोकसे विह्वल भाभी सीताको सान्त्वना देनेकी चेष्टा की और कहा, "देवी! आपके स्वामी देवता, यक्ष, रक्ष, गन्धर्व आदिके मध्य हैं, आप निश्चिन्त रहें उनके लिये व्यर्थ चिन्ता न करें, वे शीघ्र ही सकुशल लौट आयेंगे। वह कण्ठस्वर उनका नहीं, मायावी राक्षसका है।"

विधाताके विधानको कोई भी रोक नहीं सकता। लक्ष्मणके आश्वास वाक्यसे आश्वस्त न हो सीता फिर विलाप करने लगी और लक्ष्मणको कोसने लगी, "तुम निश्चय हो भरतके गुप्तचर हो, मुझे पानेकी इच्छासे तुम रामके साथ साथ घूमते हो; किन्तु यह जान लेना, तुम्हारी यह आशा निराशामात्र है; विना रामके मैं क्षण भी जी नहीं सकती।"

सीताकी ऐसी वाक्ययन्त्रणा न सहते हुए लक्ष्मणने कहा, 'आप मेरी देवी हैं, आपको मैं यथायथ उत्तर नहीं दे सकता। राम जहां हैं, मैं भी वहीं जाता हूं। किन्तु

लौट कर फिर मैं आपको देखूंगा, ऐसी आशा नहीं है।" इसके बाद उन्हें अभिवादन कर और वनदेवताओं पर उनकी रक्षाका भार सौंप कर क्षुब्ध लक्ष्मण श्रीराम-की खोजमें चले।

सुयोग देख कर उत्तम गेरू वस्त्र पहने, शरीरमें विभूति लगाये, लंबी लंबी शिखा बढाये, छाता, लाठी और कमण्डलु हाथमें लिये, खड़ाऊं पहने संन्यासीके वेशमें दशानन आया और ब्रह्मनामका उच्चारण करते हुए "भिक्षां देहि" कह कर अरक्षिता सीताके सामने खड़ा हो गया।

सीताके मनोहर दन्त और ओष्ठ, चन्द्रतुल्य वदन, पद्मपलाश नयनयुगल पद्मासनभ्रष्टा लक्ष्मीकी तरह देह-लावण्य देख कर रावण एकदम विमोहित हो गया। अन्तमें उसने अब्राह्मणोचित भाषामें उनके रूपलावण्य-की सुख्याति गा कर कहा, 'तुम्हारे रूप पर मैं पागल हो गया हूं—राक्षस सेवित इस स्थानका त्याग कर तुम मेरे साथ चलो।'

स्वामीकी अमङ्गल आशङ्का पर सीतादेवी उदास थी, इस कारण रावणकी कुत्सित प्रार्थना पर उन्होंने कान नहीं दिया। किन्तु द्वार पर ब्राह्मणवेशी अतिथिको उपस्थित देख सीतादेवीने उसे पाद्यासन दे कर अर्च्चना की, पीछे भोजनके लिये आग्रह करती हुई कहा, 'यह सिद्धान्न भोजन कर मुझे परितृप्त कीजिये।'

अरक्षिता सीताको बलपूर्वक हरण करनेकी इच्छासे रावण एक चाल सोचने लगा। उसने पूछा, "तुम कौन हो? किसकी स्त्री हो?" उत्तर नहीं देनेसे अपना समझ कर अतिथि शाप देंगे, इस डरसे जानकीने आत्मपरिचय, स्वामीका परिचय, राज्याभिषेककी कथा, वनवास आदि सभी बातें सच सच कह दीं। अन्तमें सीताने कहा, "आप कौन हैं? किस वंशमें उत्पन्न हुए हैं? आपका गोत्र क्या है? किस कारण इस निर्जन काननमें अकेले घूम रहे हैं?" इस बार रावणने अपना यथार्थ परिचय दिया, 'देवासुर, नर, यक्ष, रक्ष, गन्धर्व जिसके भयसे भयभीत रहते हैं, मैं वही समुद्रपरिवेष्टित, पर्वतशिखरस्थित लङ्का नगरीका अधीश्वर राक्षसपति रावण हूं। तुम आओ, मेरे साथ चलो। नाना दिग्देशोंसे जिन सब सुरसुन्दरियोंको ला कर मैंने अपना अन्तःपुर भर दिया है, उन सबोंमें प्रधान हो कर तुम परम सुखसे कालयापन करोगी। पांच हजार परिचारिका तुम्हारी परिचर्य्या करेगी।'

व्रीडाविनम्र, कोमलाङ्गी सीताके सर्वाङ्गसे सतीत्व की तीव्र ज्वाला छूटने लगी। त्रिभुवनभय रावणको तृणवत् तुच्छ ज्ञान कर वे गरज उठीं, "तू शृगाल है, मैं सिंहिनी हूं। तू मुझे पानेका लोभ करता है! वस्त्रके अंचलमें प्रज्वलित अग्नि पकड़नेकी चेष्टा करता है। सिंह और शृगालमें, समुद्र और गोष्पदमें, चन्दन और कीचड़में, हाथी और बिल्लीमें, सोने और लोहेमें, गरुड़ और काकमें, हंस और शकुनीमें जो प्रभेद है, मेरे स्वामी रघुनन्दन राम और तुझमें वही प्रभेद है। मरनेके लिये ही आज तुझे यह लोभ हुआ है।" इतना कह क्रोध, घृणा और क्षोभसे वे फूट फूट कर रोने लगीं।

क्रुद्ध रावण भौंहें मार कर फिर कहने लगा, 'मेरे भयसे इन्द्र आदि देवगण डरा करते हैं, मैं जहां रहता हूं, वहां हवा शङ्कितभावसे बहती है, डरके मारे सूर्य चन्द्रमाकी तरह कोमल और स्निग्ध हो जाता है, वृक्षके पत्ते हिलते तक भी नहीं, नदीका जल भी स्तम्भित हो जाता है। तुम्हारा स्वामी निर्वीर्य, राज्यभ्रष्ट, फलमूला-हारी ब्रह्मचारी है। युद्धमें वह मेरी एक अङ्गुलिके समान भी नहीं होगा। मुझे निराश न करो – आखिर पछता-ओगी।'

क्रोधसे लाल लाल आंखें कर सीताने परुषवाक्यमें उत्तर दिया। वे जो निःसहाय थी, स्वामी-देवर कोई भी नहीं थे, इस ओर सतीका जरा भी लक्ष्य नहीं था, "इन्द्रकी शचीको हरण कर वरन् जीवित रह सकते हो; किन्तु रामकी सीताको हरण कर अमृत पान करने पर भी तेरी रक्षा नहीं।'

अनुनय विनयसे कार्यसिद्धि होनेको नहीं, देख कर रावणने लाल लाल बीस नेत्र, बीस बाहु, दश मुख, नील मेघ सदृश कृतान्त तुल्य भयङ्कर राक्षसमूर्त्ति धारण की। कुछ काल इस मूर्त्तिसे सीताकी ओर देख कर उस-ने कहा, 'किस गुण पर राज्यच्युत विफल मनोरथ अल्पायुः रामके प्रति इतनी अनुरक्त हो? आओ, अनन्त-

शक्तिसम्पन्न अतुल वैभवशाली देवदानवत्रास इच्छारूपी लङ्केश्वरकी सर्वप्रधाना महिषी, सर्वमयकर्त्री बनो।' इतना कह कर पापिष्ठ रावणने बाएं हाथसे रामप्रियाके घने बड़े बड़े केश और दाहिने हाथसे हाथीकी सूंडके समान दोनों उरुको जोरसे पकड़ा। पास हीमें उसका मायामय रथ भी सुसज्जित खड़ा था। सीताको गोदमें उठा कर उसने उसी रथ पर बैठा लिया।

प्रचण्ड वेगसे रथ जाने लगा। उद्भ्रान्तचित्ता उन्मादिनी शोकाकुला सीता देवर लक्ष्मण और स्वामी रामको स्मरण कर जोरसे आर्त्तनाद करने लगीं। पुष्पित कर्णिकारतरुओं, हंससारसशोभित गोदावरी और वनदेवताको सम्बोधन कर वे चीत्कार कर कहने लगीं, 'मेरे स्वामी रामको देखने पर कहना, तुम्हारी सीता विह्वला हो कर रावण द्वारा हर गई है।' वृक्ष पर सोये हुए रामभक्त वृद्ध जटायुको देख कर उन्होंने कहा, 'रामलक्ष्मणको मेरी दुरवस्थाकी बात अवश्य कहना।'

जटायुने प्राणपणसे सीताकी रक्षाके लिये चेष्टा की। आखिर आहत हो कर वह अर्द्धमृत अवस्थामें रामकी आगमन-प्रत्याशामें वहीं पड़ा रहा।

रावण और जटायुका जब युद्ध हो रहा था, तब सीता रथ परसे उतर कर 'हा राम, हा लक्ष्मण, रक्षा करो' कहती हुई भागने लगी। जटायुको मार कर रावण सीताकी ओर दौड़ा, केश पकड़ कर उन्हें फिर रथ पर बिठाया। सीता अपने दोनों हाथोंसे अलङ्कार इस उद्देश्य पर जमीन पर फेंकने लगीं, कि रामचन्द्रको मालूम हो जाय, कि रावण किस ओर उन्हें लिये जा रहा है।

रथ परसे सीताने पर्वत पर बैठे हुए पांच वानरोंको देखा। वे लोग शायद मेरा संवाद रामचन्द्रको दे सकेंगे, इस आशासे उन्होंने रावणसे अलक्षित हो अपना सुवर्णप्रभ उत्तरीय, कौशेय वस्त्र और सभी अलङ्कार उस ओर फेंक दिये।

रथ क्रमशः पम्पानदी पार कर लङ्काकी ओर जाने लगा। आखिर वह तिमिकुम्भीरसे समाकीर्ण समुद्र पार कर लङ्का पहुंचा। सीतादेवीको सीधे अन्तःपुर ले जा कर रावणने कुछ विकटदर्शना पिशाचीसे कहा, "बिना मेरे अनुमतिके पुरुष या स्त्री कोई भी इन्हें देखने न पावे। धनरत्न वस्त्रालङ्कार जब ये चाहें, तब ही इन्हें ला कर देना। यदि कोई अप्रिय वचन कहेगा तो मैं उसकी जान ले लूंगा।" स्वामीसे साध्वीका मन विच्युत करनेके लिये मूर्ख दशानन प्राणपनसे चेष्टा करने लगा।

घृणा, क्षोभ और रोषके मारे वस्त्राञ्चलसे मुंह ढक कर रामगतप्राणा सीता अश्रुवर्षण करने लगीं। रावण फिर कहने लगा, "सुन्दरी! धर्मनाशके भयसे तुम डरो मत। मैं ऋषियोंके सम्मत प्रथानुसार तुमसे विवाह करूंगा। यह देखो, जो रावण कभी भी किसी स्त्रीके निकट सिर न झुकाता था, आज उसके दशों मस्तक तुम्हारे चरणों पर लोट रहे हैं! प्रसन्न हो कर सिर्फ एक बार मेरी ओर देखो।" घृणित नेत्रोंसे देख कर सीताने उत्तर दिया, "रे दुष्ट राक्षसाधम! तू चाहे कितना ही दर्प क्यों न कर ले, यह निश्चय जानना, देवदानवोंके अवध्य हो कर रहने पर भी रघुकुलतिलक सत्यप्रतिज्ञ धर्मप्राण महावीर रामके साथ शत्रुता करके प्राण रहते तू परित्राण नहीं पायेगा। मौत आ कर तेरे सिरके पास नाच रही है। सवंश तुम्हारा निधन होनेका समय आ पहुंचा, इसीसे तू ऐसा धर्मरहित कार्य करता है।"

इस पर क्रुद्ध व्यर्थकाम रावणने भय दिखला कर कहा, 'सुनो! एक वर्षके भीतर यदि तुम मेरी अनुगना नहीं हुई, तो पाचक मेरे प्रातर्भोजनके लिये तुम्हें खण्ड खण्ड कर रींधेगा।' इसके बाद उसने विकटदर्शना राक्षसियोंसे कहा, 'इसे अशोकवन ले जाओ। मीठी बातसे हो, चाहे भय दिखा कर हो, जिससे यह मेरी बात मान जाये, वही करनेकी कोशिश करना।'

रावणके आदेशानुसार राक्षसियां सीताको अशोकवन ले गईं। ऊंचे ललाट, बड़ी बड़ी नाक, पिङ्गल नेत्र, लंबे ओंठवाली सहचरियोंकी वीभत्स्य आकृति देख कर सीताके प्राण सूख गये, किन्तु सतीत्व जिनका जीवन है, सतीधर्म जिनका व्रत है, उन्हें प्राणकी ममता बिलकुल नहीं होती। सीता अनन्त दुःख, असह्य ताड़ना और निदारुण उत्पातके मध्य भी अचल अटल भावमें रामकी मानसमूर्त्तिकी पूजा करने लगीं।

राक्षसियोंकी ताड़नासे, अनिद्रा अनाहारसे, रावणके मर्मदाही प्रस्तावसे सीताका शरीर क्रमशः सूखता गया। रावणने उन्हें दश महीनेका समय दिया था, सीताके इस प्रकार दश मास बीत गये।

उनकी खोजमें हनुमान् आ कर जब अशोकवनमें छिपके रहते थे, तब एक दिन वस्त्रालङ्कारसे सुसज्जित दशानन सीताके सामने आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही जानकी वाताहत कदलीकी तरह कांपने लगीं। जीर्णवस्त्र पहने, किसी प्रकार दोनों ऊरु द्वारा उदरदेश और दोनों स्तन ढके वे अविश्रान्त अश्रु वर्षा करने लगीं। उनका शरीर श्रीभ्रष्ट हो गया था, शरीर पर एक भी आभूषण नहीं था, फिर भी उनकी सौन्दर्यछटासे कामातुर रावण की आंखें चकाचौंध हो गईं। नाना प्रकारसे इशारेबाजी करके मधुर वचनसे राक्षसराज कहने लगा, 'तुम कोमल हो, इस अवस्थामें तुम्हें रहना उचित नहीं। तुम्हारा यौवन, तुम्हारी रूपमाधुरी देख कर कौन नहीं विचलित होगा? तुम्हारा जो जो अङ्ग देखता हूं, मेरी आंखें उसी उसी पर लिपट जाती हैं। त्रिभुवनको मथ कर मैं जो सब अमूल्य रत्नराजी लाया हूं, वे सभी तुम्हारे पदप्रान्तमें हैं। यदि आज्ञा मिले, तो उज्ज्वल वसनभूषणसे तुम्हारा सुन्दर शरीर सजवा दिया जाय।'

इसकी दुर्नीति बात सुन कर सीतादेवी पहले तो रोने लगीं, पर पीछे घृणा और क्षोभसे कम्पितकण्ठसे कहने लगीं, 'मैं पतिव्रता परपत्नी हूं। मन्दोदरीकी धर्म रक्षा करना जैसा तुम्हारा कर्त्तव्य है, मेरी धर्मरक्षा करना भी तुम्हारा वैसा ही कर्त्तव्य है। धनसम्पदका लोभ दिखा कर तुम मुझे प्रलुब्ध नहीं कर सकोगे, यदि प्राणकी ममता है, तो अभी जा कर मेरे स्वामीसे मित्रता कर लो। वज्रपातसे महावृक्षका जिस प्रकार उद्धार नहीं है, रामके हाथसे भी उसी प्रकार तुम्हारा उद्धार नहीं।'

सीताकी बात सुन कर रावण परुष स्वरमें कहने लगा, "अब सिर्फ दो मास रह गये हैं। बादमें तुम्हें मेरी अङ्कशायिनी होनी ही पड़ेगी, नहीं तो मेरे प्रात-भोजनके लिये तुम्हें खण्ड खण्ड कर काटा जायेगा।"

क्रोधसे लाल लाल आंखें कर रावणने सीताकी ओर वक्रदृष्टिपात किया। श्मशानके चैत्यवृक्षकी तरह वह भयानक दिखाई देने लगा। वह भीषण स्वरसे गरज कर बोल उठा, 'रे रामाभिलाषिणि! आज ही तुम्हारा वध करूंगा।' इसी समय धान्यमालिनी राक्षसी आई और रावणको आलिङ्गन कर दूसरी जगह ले गई। जाते समय दशाननने राक्षसियोंसे कह दिया, 'सीता जिससे शीघ्र ही मेरी वशीभूता हो तुम लोग मिल कर उसीकी चेष्टा करना।'

रावणका आदेश पा कर राक्षसियां सीताको हर हालतसे तंग करने लगीं। सीता अश्रु विसर्जन कर मुंहसे एक शब्द भी निकाले बिना सब कुछ सहन करने लगीं।

अनन्तर आंसू पोंछ कर शोकसन्तप्त हृदयसे सीता एक शीशम वृक्षके तले जा बैठीं। यहां भी उन्हें शान्ति नहीं मिली। राक्षसियां यहां भी आ कर उन्हें तंग करने लगीं। पीछे सीता शीशम वृक्षके पास ही एक अशोक वृक्षकी विपुल कुसुमित शाखा पकड़ कर 'हा राम, हा राम' कह फूट फूट कर रोने लगीं।

इसी समय समीपवर्त्ती शीशमवृक्षकी घनी पत्तियोंमें छिपे सीताकी खोजमें आये महावीर हनुमान्ने रामकी महिमा कीर्त्तन करना आरम्भ कर दिया। चिराभिलषित रामनाम सुन कर सीताका शरीर पुलकित हो उठा, दोनों आंखें डबडबा आईं—इस शत्रु-राक्षसपुरीमें फिर कौन उन्हें मधुर रामनाम सुनाने आया? विस्मयसे विमुग्ध जानकीने घुंघराले बालोंसे ढके मुखमण्डलको उठा कर ऊपरकी ओर प्यासे नेत्रोंसे देखा, इधर उधर देख कर पीछे पवनतनय रामभक्त हनुमान्को देख पाया। अब प्राणत्याग नहीं किया गया।

किन्तु प्रथम दर्शन पर हनुमान्को मायावी रावण समझ भयसे संज्ञाशून्य हो सीता मृतप्राय हो गईं, पीछे बहुत देर बाद संज्ञा लाभ कर विह्वलभावसे चारों ओर देखने लगीं।

दूरसे सीताको प्रणाम कर हनुमान् धीरे धीरे वृक्ष परसे उतरे और सीताके सामने खड़े हो हाथ जोड़ कर बोले, "पद्मपलाशलोचने! तुम कौन हो? हीन मलिन कौशेय वस्त्र पहन कर अशोककी शाखा क्यों पकड़ी खड़ी हो? स्वच्छिद्र कलसीकी तरह तुम्हारे कमल नेत्रोंसे

अविरल जलधार बह रही है, इसका कारण क्या? क्या तुम राममहिषी सीता देवी हो?" अनन्तर सीता देवीने संक्षेपमें आत्मपरिचय दिया और यह भी कहा, कि रावणने उन्हें और दो मासका समय दिया है। इतने दिनोंके भीतर भी यदि उन्हें रामदर्शन लाभ न हो, तो फिर वे इस प्राणको धारण नहीं करेंगी। हनुमान्के मुखसे स्वामी और देवरका कुशलसंवाद जान कर जानकी का हृदय आनन्दसे परिपूर्ण हो गया। उनके सभी दुःख, सभी कष्ट मानों एक ही मुहूर्त्तमें अवसान हो गये।

किन्तु इधर हनुमान् जितना ही नजदीक आते गये, उधर उतना ही सीताके मनमें यह 'मायावी रावण तो नहीं है!' ऐसी आशङ्का और उद्वेग होता गया। डर के मारे वे वृक्षशाखाका त्याग कर जमीन पर बैठ गईं। सीता फिर उनसे कहने लगी, 'सच सच कहो तुम कौन हो? क्या तुम सचमुच मेरे जीवनसर्वस्व रामकी बात कहनेके लिये ही मेरे पास आये हो?' इसके उत्तरमें रामका गुणानुकीर्त्तन कर और अपना यथायथ परिचय दे कर रामभक्त हनुमान् उनकी आशङ्का दूर करनेकी चेष्टा करने लगे। अनन्तर कुछ निडर हो कर जानकीने कहा, "कहो, किस प्रकार राम लक्ष्मणके साथ तुम लोगोंका परिचय और सौहार्द हुआ? तथा उनके शरीर पर जो विशेष विशेष चिह्न हैं, वह मुझे कहो, तब ही मेरा संदेह दूर होगा।" सीतादेवीके आदेशानुयायी कार्य्य करके और रामकी दी हुई अंगूठी अभिज्ञानस्वरूप उनके हाथमें दे कर महावीरने उनको सभी शङ्का, सभी सन्देह दूर किये। रामनामाङ्कित अङ्गुरीय देख कर स्वामीको ही उन्होंने मानो फिर पा लिया, ऐसा उन्हें आनन्द हुआ, वदनमण्डल राहुविमुक्त चन्द्रमाकी तरह फिर उज्ज्वल और प्रफुल्ल हो उठा। हनुमान् प्रमुख वानर वीरोंको धन्यवाद दे कर सीतादेवीने रामचन्द्रका कुल हाल पूछा और पीछे यह प्रश्न किया, 'मेरे प्राणनाथ मुझे भूल तो नहीं गये हैं? मेरा वे उद्धार करेंगे तो?' उत्तरमें हनुमान्ने कहा, 'देवी आपके कारण उन्हें जो शोक हुआ है, उस शोकसे आत्महारा हो आज उनकी सिंहाक्रान्त हस्तीकी तरह अवस्था हो गई है। आपको छोड़ उनका दूसरा ध्यान, दूसरी चिन्ता और कुछ भी नहीं है। अर्द्धा-शन अनशनमें ही प्रायः उनका दिन बीतता है—मधु, मांस आदि वे छूते तक भी नहीं। उन्हें रात दिन कभी नींद नहीं आती, यदि कुछ आती भी है तो 'हा सीते हा सीते!' कह कर उठ बैठते हैं।'

यह सुन कर सीताके दोनों नेत्रोंसे हर्ष और विषाद की अविरल धारा बहने लगी। हनुमान्को सम्बोधन कर उन्होंने कहा, 'तुम्हारी बातें अमृतमय और विषमय हैं।' किन्तु सीताका वदनमण्डल मेघविमुक्त शारद चन्द्रकी तरह शोभा पाने लगा। स्वामीके उत्साह, बल, विक्रम, पौरुष सभी वे अच्छी तरह जानती थीं। धर्मकी अवश्यम्भावी जय पर भी उनका दृढ़ विश्वास था। अब उन्हें समझनेमें देर न लगी, कि उनके सिंहविक्रम स्वामी निश्चय ही उन्हें राक्षसके हाथसे उद्धार कर सकेंगे। पीछे जब हनुमान्ने उन्हें पीठ पर चढ़ा कर स्वामीके पास ले जानेकी प्रार्थना की, तब उन्होंने यह कह आपत्ति की, "मुझे पीठ पर चढ़ा कर जब तुम वायुवेगसे आकाशमार्गमें चलोगे, तब शायद डरके मारे तुम्हारी पीठ परसे गिर कर कहीं प्राण भी खो बैठूं। स्त्रीको ले कर भागता देख कर राक्षस लोग निश्चय—ही तुम्हारा पीछा करेंगे, उस समय तुम्हें अपना ही प्राण बचाना कठिन हो जायेगा। विशेषतः यदि तुम मेरा उद्धार करोगे, तो लोग यह कह कर रामचन्द्रकी हंसी उड़ायेंगे—वे सीताका उद्धार न कर सके, इससे उनकी यशोहानि होगी। फिर स्वेच्छासे मैं परपुरुषका शरीर छूना नहीं चाहती। तुम जाओ, जिससे रामचन्द्र स्वयं आ कर मुझे ले जायें, उसीकी चेष्टा करना।" इतना कह कर सीताने कपड़ेमेंसे एक शिरोरत्न निकाल कर हनुमान्के हाथ दे दिया और कहा, 'इसे रामचन्द्रको देना और मेरे इस असह्य शोककी बात तथा राक्षसोंके हाथसे मेरी लाञ्छनाका कथा उनसे सविस्तार कहना। राहमें तुम्हारा कल्याण हो।'

हनुमान्के मुखसे सीताका संवाद पा कर राम दलबलके साथ लङ्का द्वार पर आ धमके। उस समय रावणने एक दिन सीताका मन मोहनेके लिये एक नई चाल चली।

सीता अशोकवृक्षके नीचे शोकसंतप्त हृदयसे मुंह

नीचे किये बैठी थीं, पासमें ही घोर राक्षसीका दल उन्हें घेरे हुए था। इसी समय कुचक्री दशाननने जा कर धृष्ट वाक्यमें कहा, "आज युद्धमें तुम्हारा राम मारा गया है। इतने दिनोंके बाद मेरे हाथसे तुम्हारा आशामूल सर्वथा छिन्न और दर्प चूर्ण हुआ। अब तुम्हारी क्या आशा रही? आओ; अभी बुद्धिमतीकी तरह आ कर मुझे स्वामी मानो।" और पासमें आज्ञाकारी विद्युज्जिह्वाको दण्डायमान देख कर कहा, 'रामका छिन्न मस्तक ला कर सीताके सामने रखो।' आज्ञा पाते ही रामका मायामुण्ड और धनुर्बाण सीताके सामने रखा गया। रावणने फिर कहा, 'जो होनेको था, हो गया, अब मुझे आत्मसमर्पण करो।' छिन्नमूल कदली वृक्षकी तरह भूपतित हो सीता रोने और विलाप करने लगीं। हठात् कोई विशेष राजकार्य उपस्थित हो जानेसे रावणको वहांसे प्रस्थान करना पड़ा। उसके प्रस्थानके साथ ही साथ मायामुण्ड और धनुर्बाण भी अन्तर्हित हो गया।

विभीषणप्रिया सरमा रावणकी आज्ञासे सीताके रक्षाकार्यमें नियुक्त थी। सीताको इस प्रकार मोहित और शोकाकुल देख कर उसे बड़ी दया आई—वह प्राणपणसे सीताको सान्त्वना देने लगी और बोली, 'मैंने अन्तरीक्षसे देखा है, कि समुद्रका किनारा वानरसेनासे परिवेष्टित है, राम और लक्ष्मण कुशलसे हैं। मायावी राक्षसने माया दिखला कर तुम्हें विमोहित करनेकी चेष्टा की है। तुम धीरज धरो, शीघ्र ही मुक्तिलाभ करोगी।' वारिपातसे दावानलदग्ध धरणीकी तरह सरमाके इन आश्वास वचनोंसे सीताका शोकदग्ध हृदय शान्त और शीतल हुआ।

रामरावणमें भीषण संग्राम छिड़ा,—लङ्का धीरे धीरे वीरशून्य हो गई,—एवं रावण मारा गया। विभीषणको राजपद पर अभिषिक्त कर रामचन्द्र ससैन्य कुशलपूर्वक हैं, यह संवाद कहनेके लिये हनुमानको सीताके पास भेजा।

आनन्दके मारे सीता पहले कुछ भी बोल न सकीं, उनके दोनों गालों हो कर अश्रु प्रबल वेगसे बहने लगा। अन्तमें वह बाष्परुद्ध कण्ठसे बोलीं 'पृथिवी पर ऐसा कोई धनरत्न है जिसे दे कर मैं यह आनन्द प्रकाश कर सकूं।" हनुमान् जब सीताको तंग करनेवाली राक्षसियोंको सजा देने लगे; तब बाधा दे कर सीताने कहा, "स्वेच्छासे नहीं, प्रभुकी आज्ञासे इन लोगोंने मुझे कष्ट दिया है, इसलिये ये अपराधी नहीं हैं।" जाते समय हनुमानको उन्होंने कहा था, 'अपने मालिकसे कहना, कि उनका पूर्णचन्द्रानन देखनेके लिये मैं छटपटा रही हूं।' हनुमानकी बात सुन कर राम कुछ समय मुंह नीचे किये चुप हो रहे, उनके राजीवलोचन कुछ आर्द्र हो उठे, दीर्घ निश्वास त्याग कर उन्होंने विभीषणसे कहा, "वस्त्रालङ्कारसे सुसज्जित कर सीताको यहां ले आओ।" विभीषणके मुखसे रामका आदेश सुन कर अश्रुपूर्ण नयनोंसे जानकीने कहा, "नहीं, इसी तरह अस्नात अवस्थामें ही मैं स्वामीको देखना चाहती हूं।"

किन्तु ऐसा हुआ नहीं। उनका बहुत दिनोंका अमार्जित केशकलाप तैल-संपृक्त और सुमार्जित किया गया। आखिर रत्नालङ्कारसे विभूषित हो कर सीतादेवी शिविका पर चढ़ीं और बहुत दिनोंके आकांक्षित स्वामीके दर्शनको चलीं। उन्हें देखनेके लिये वानरसेना किल किल करने लगी। जब कुछ नजदीक आईं, तब स्वामीके आदेशानुसार जानकी पैदल ही कम्पित कलेवरसे जा कर स्वामीके सामने खड़ी हो गईं।

किंतु कहां वह आकांक्षित आलिङ्गन, कहां उस सान्त्वनाकी वाणी? सीताने सुना, कि उनके स्वामी कह रहे हैं, "तुम राक्षसके घर बहुत दिन रह चुकी हो, इसलिये मुझे तुम्हारे चरित्र पर संदेह हो गया है। तुम्हारा शरीर रावणसे स्पर्श होनेके कारण मेरे लायक न रह गया है—मेरा परमप्रीतिभाजन होने पर भी आज तुम मेरे नेत्रोंको पीड़ादायक हो गई हो। तुम्हारा जो उद्धार किया है, सो तुम्हारे लिये, वंशकी गौरवरक्षाके लिये। मैं अपना कर्त्तव्य कर चुका, अब तुम जहां चाहो जा सकती हो।"

देवोपम स्वामीकी यह वज्रके समान बात सुन कर पतिपरायणा सीताके हृदयमें भारी चोट लगी—लज्जा और दुःखसे वह मृतप्राय हो गईं। गद्गद कण्ठसे, परन्तु साध्वीरमणी-जनोचित तेजसे, उन्होंने स्वामीसे कहा, "स्त्रीके प्रति ऐसी कठोर उक्ति सिर्फ निम्न श्रेणीके

लोगोंके मुखमें ही शोभा पाती है। यदि ऐसी ही इच्छा थी, तो हनुमान् जब लंका गया था, तब यह बात उसके हाथ क्यों नहीं कहला भेजी? यदि भेजी होती तो आपको इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ता।" पीछे उन्होंने सजलनेत्रोंसे देवर लक्ष्मणकी ओर देख कर कहा, 'भाई लक्ष्मण! चिता शीघ्र तैयार करो। यह लाञ्छित देहभार अब मैं वहन नहीं कर सकती।' इस पर रामने कुछ भी आपत्ति नहीं की। चिता धधकने लगी। प्रदक्षिण कर और स्वामीको छोड़ कभी भी किसीको हृदयमें स्थान नहीं दिया; फिर भी वही स्वामी दुष्टा कह कर मुझ पर संदेह करते हैं। हे सर्वसाक्षी हुताशन, आप जानते हैं, मैं विशुद्धचरित्रा हूं—आप मुझे स्थान दें' इस प्रकार प्रार्थना करने पर अग्निप्रवेश किया।

मुहूर्त भरमें स्वर्णप्रतिमा अग्निमें विलीन हो गई। अन्तस्तलोत्थित जिस स्नेह और प्रेमके उत्सको श्रीरामचन्द्रने अब तक सम्मानके कठोर हस्तसे दबा रखा था, अभी वह शोकावेगमें भी मुखोंसे ऊपरकी ओर निकल गया। आकुल हो कर राम जानकीको लौटा देनेके लिये अग्निदेवका आवाहन करने लगे। अग्निदेवने सीताको लौटा दिया। स्वर्गसे उतर कर देवताओंने सीताकी महिमा गाई और रामको मुग्ध तथा पुलकित किया। अग्निपरीक्षासे सीताका सतीत्व उज्ज्वलरूपमें चमक उठा।

अनन्तर बंधुबान्धव, भक्त और अनुगतोंको साथ ले कर सस्त्रीक और सभ्रातृक रामचन्द्र पुष्पक-रथ पर चढ़े और अयोध्याकी ओर रवाना हुए। पूर्वपरिचित दण्डकारण्यके नाना स्थानोंका परिदर्शन कर दम्पती सभी दुःख, सभी ज्वाला भूल गये।

राम राजपद पर अभिषिक्त हुए। किन्तु विधाताने उनके और जानकीके अदृष्टमें सुख नहीं लिखा था। गुप्तचर भद्रके मुखसे पुरवासियों द्वारा प्रचारित सीताका निन्दावाद सुन कर राम फिर विचलित हो उठे और उन्होंने सीताको त्याग करनेका सङ्कल्प कर लक्ष्मणसे कहा, 'इसे वाल्मीकिके तपोवनमें रख आओ।' सीताको उस समय पांच महीनेका गर्भ था। तपोवन दिखानेका बहाना करके लक्ष्मण सीताको रथ पर चढ़ा गङ्गाके किनारे ले गये। दूसरे किनारे माताके समान जानकीको छोड़ जाना होगा, सोच कर लक्ष्मण अपने आंसू रोक न सके। उन्हें रोते देख सीताने कारण पूछा। इस पर लक्ष्मणने उनके चरणों पर गिर उन्हें विसर्जन करनेका दारुण संवाद कह सुनाया।

सीताको विश्वास नहीं हुआ; पहले पाषाणप्रतिमाकी तरह वे अचल अटल भावमें खड़ी रहीं। किन्तु पीछे वे अपनेको सम्हाल न सकीं—शोकसे विह्वल हो वे रोने लगीं, उनके ललाटदेशसे अजस्र पसीना छूटने लगा। वह रूंधे गलेसे बोलीं, "बिना रामके मैं किस प्रकार वनवास-दुःख सहन कर सकूंगी? यह जान कर, सुन कर, दयामय हो कर भी तुम मुझे ऐसे विपद्-समुद्रमें फेंक रहे हो। ऋषिकन्या जब इस विसर्जनका कारण पूछेंगी, तो मैं क्या कहूंगी, प्रभो? जब तुमने परित्याग कर दिया, तब गङ्गागर्भ ही मेरा उपयुक्त स्थान है। किन्तु तुम्हारा सन्तान जो मेरे गर्भमें है! तुम मेरे स्वामी हो, इहलोक और परलोकके देवता हो। तुम्हारा अभिप्राय-साधन मेरे प्राणसे भी बढ़ कर प्रिय है। जाओ, लक्ष्मण जाओ, इस दुःखिनीका परित्याग कर जाओ, राजाका आदेश पालन करो। अपने अग्रजको सान्त्वना देना, मेरे दुःखसे वे जिससे विह्वल न हों, उसकी चेष्टा करना।"

अनन्तर लक्ष्मण वहांसे अयोध्या लौटे और वाल्मीकि सीताको आश्रममें ले गये। यथासमय वहां उनके कुश-लव नामक यमज पुत्र उत्पन्न हुए।

इस तरह बारह वर्ष बीत गये। पीछे श्रीरामचन्द्रने राजसूययज्ञका अनुष्ठान किया। लवकुशको साथ ले महर्षि वाल्मीकि निमन्त्रित हो यज्ञस्थलमें पहुंचे। उनकी रची हुई रामायण-गाथा बालक लवकुशने मुखसे गा कर सभामें जितने आदमी बैठे थे, सबोंको मोहित कर दिया। उत्सुक हो कर रामचन्द्रने उन दोनोंका परिचय पूछा। पूछनेसे मालूम हुआ, कि ये ही रामायण-कथित उनके पुत्रद्वय लव और कुश हैं। अब सीताको फिर ग्रहण करनेके लिये रामके मनमें तीव्र आकाङ्क्षाका उदय हो आया। उन्होंने सोचा, कि सबके सामने सीताको विशुद्धचरित्रताकी परीक्षा करके उन्हें फिर अन्तःपुरमें स्थापन करेंगे।

दूसरे दिन सवेरे महर्षिगण और निमन्त्रित राजन्यवर्ग-से परिवेष्टित हो रामचन्द्र यज्ञस्थल पर उपस्थित हुए। इसी समय सीतादेवीको साथ लिये महर्षि वाल्मीकि वहां पधारे। फिरसे परीक्षा देनी होगी, सुन कर एक बार परीक्षा देने पर भी स्वामीके मनका सन्देह दूर नहीं हुआ, सोच कर अभिमानिनी साध्वीके मनमें गहरी चोट पहुंची।

सभाके बीच शुककरसे खड़ी हो उन्होंने कातरभावसे प्रार्थना की, "माता वसुन्धरे! मुझे तुमने अपने गर्भमें धारण किया था। तुम जानती हो, कि कायमनोवाक्यसे मैंने स्वामीकी ही अर्चना की है, अब हे मा! दुःख सहा नहीं जाता, मुझे अपने गर्भमें फिर स्थान दो।" उनके पदतलमें वसुन्धरा दो भागोंमें विभक्त हुई। आदर्श-साध्वीने दुःखका जीवन ले कर पातालमें प्रवेश किया।

महाभारत और सभी पुराणोंमें थोड़ा बहुत सीता-का पवित्र चरित कीर्त्तित हुआ है। उनमेंसे पद्मपुराणके पातालखण्डमें ५५ से ६७ अध्याय, ब्रह्म-पुराणमें १५४-१५७ अ०, अग्निपुराणमें ७५-११७ अ०, गरुड़पुराण पूर्वखण्डमें १४७ अ०, शिवपुराण ३१ अध्याय, श्रीमद्भागवत और देवीभागवतके ६म स्कन्धमें दूसरे दूसरे पुराणादिसे कुछ विस्तृत भावमें लिखा गया है। सच पूछिये तो सभी आख्यायिका एक-सी है, मगर प्रभेद है भी तो बहुत थोड़ा जो विस्तार हो जानेके भय से लिपिबद्ध न किया गया।

बौद्धजगत्में रामसीताकी कथा है, किन्तु वहां सीता-को दशरथकी कन्या, पर रामको सहधर्मिणी बताया है। जैन लोग सीताको मन्दोदरीकी कन्या बताते हैं। रवि-षेण रचित जैन-पद्मपुराणमें सीताचरित वर्णित है।

पुराण और रामचन्द्र देखो।

३ नदीभेद, सीता नदी। कालिकापुराणमें इस नदी-का उत्पत्ति-विवरण इस प्रकार लिखा है। हिमालयके शिखर पर जो देवताओंकी एक बड़ी सभा हुई थी, वहां विधाताके वाक्यानुसार सीता नामक एक देवनदीकी उत्पत्ति हुई। चन्द्रमा जब यक्ष्मारोगसे आक्रान्त हुए, तब उन्हें पहले देवताओंने इसी सीतासलिलमें स्नान करा कर ब्रह्माके वाक्यानुसार वह जल पान कराया था। चन्द्रमाके स्नान करनेसे वह सीताजल अमृत हो वृह-ल्लोहित सरोवरमें गिरा। उस मानस सरोवरमें उक्त अमृतजलके गिरनेसे वह बहुत बढ़ गया। ब्रह्माके देखते रहते उस स्थानसे एक अनिन्द्य सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई। ब्रह्माने उसका चन्द्रभागा नाम रखा।

(कालिकापु०) चन्द्रभागा देखो।

४ लक्ष्मी। ५ उमा। ६ शाखाधिदेवता। ७ मदिरा। ८ गङ्गास्रोत।

सीता—१ हिमवत्प्रदेशवाही एक नदी। कालिकापुराणमें लिखा है, कि राजा सुदर्शन भूमि फाड़ कर कनखला नाम्नी गङ्गाकी शाखाको खाण्डवीपुरमें लाये। खाण्डवी पुरके दक्षिण कनखलाके साथ सीतानदी मिल गई।

२ यारकन्द प्रवाहित एक नदी। यह अभी जाकृजा-र्तिस नामसे प्रसिद्ध है। चीनपरिव्राजक यूएनचुवङ्गने "सि-तो" शब्दसे इसका उल्लेख किया है।

सीता—एक स्त्रीकवि। भोजप्रबन्धमें इसका उल्लेख मिलता है। वामनालङ्कारवृत्तिग्रन्थमें "मासैः शशाङ्क" आरम्भक जो श्लोक वर्णित है, अलङ्कारतिलक मतसे वह सीतादेवीका लिखा है।

सीताकुण्ड—भागलपुर जिलेके मन्दरशैल पर अव-स्थित एक पुण्यतोया सरोवर। यह निकटवर्त्ती भूमि-भागसे ५०० फुट ऊंचेमें उक्त शैलवक्ष पर अवस्थित है। यह चतुष्कोण तथा १०० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है। पर्वतवक्ष काट कर यह पुष्करिणी बनाई गई है। स्थानीय लोगोंके मुखसे सुना जाता है, कि श्रीरामचन्द्र वनवासकालमें इस शैल पर पत्नीके साथ कुछ दिन ठहरे थे। सीतादेवी इस कुण्डमें स्नान करती थी, इसीसे इसका नाम सीताकुण्ड और इतना माहात्म्य हुआ। इस कुण्डके उत्तर पर्वतके ऊपर चोल द्वारा मधुसूदन देवका मन्दिर पहले पहल प्रतिष्ठित हुआ। कालापहाड़ जब मन्दिरको ध्वंस करने आया, तब पंडा लोगोंने देव-मूर्त्तिको कुण्डमें छिपा रखा, पीछे दूसरा मन्दिर सबल पुरके जमींदारों द्वारा कजराली दिग्गीके पास बनाया गया। सीताकुण्डके उत्तर शङ्खकुण्ड नामक प्रस्रवण है।

सीताकुण्ड—विहार और उड़ीसाके मुङ्गेर जिलेका एक उष्ण प्रस्रवण और कुण्ड। यह मुङ्गेर नगरसे ५ मील

पूरबमें अवस्थित है। कुण्ड ईंटोंसे बंधा हुआ है। इसके पास और भी चार कुण्ड हैं जिनका जल शीतल और गंदा रहता है। किन्तु सीताकुण्डका जल उष्ण और स्वच्छ है। सीताकुण्ड तीर्थ होनेके बाद वे चारों कुण्ड बनाये गये हैं। उन चारोंके नाम हैं, रामकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, भरतकुण्ड और शत्रुघ्नकुण्ड। रामचन्द्रको रावणवध करनेका जो पाप हुआ था, उसे विमोचन करनेके लिये वे कष्टहारिणीमें स्नान करने आये थे। देवताओंने यहां सीतादेवीको पूजा ग्रहण नहीं की। इसीसे सीतादेवीने यहां पुनः देवताओंके सामने अग्निपरीक्षा दी थी। सीता देवीके अग्निकुण्डमें कूद पड़नेसे अग्नि बुझ गई और उसके भीतरसे जलधारा निकली। वही जलधारा अग्निके रहनेके कारण उष्ण हो गई है।

कष्टहारिणीमें स्नान कर सभी तीर्थयात्री सीताकुण्डमें स्नान करने आते हैं। मैथिल-ब्राह्मण उन लोगोंकी याजकता करते हैं। डा० बुकानन हमिल्टनने कुण्डजलका ताप परीक्षा करके देखा है। उससे जाना जाता है, कि वर्षाके प्रारम्भमें वह जल अपेक्षाकृत ठंढा रहता है और वर्षा जाने पर फिर तापकी अधिक वृद्धि हो जाती है। उनकी दी हुई तालिका नीचे उद्धृत की गई है—

तारीख	समय	वायुताप	जलताप	
७वीं अप्रिल	सूर्योदय	६८°	फा० १३०°	जलगर्भके जिस स्थानमें हमेशा बुदबुद उठते हैं।
२०वीं "	सूर्यास्त	८४°	" १२२°	
२८वीं "	"	९०°	" ९२°	इस समय बहुतेरे स्नान करते हैं।
२१वीं जुलाई	"	९०°	" १३२°	
२१वीं सितम्बर	संध्या	८८°	" १३८°	इस समय जल उबलता है।

मुङ्गेर नगरके दक्षिण जो शैलमाला दिखाई देती है, उसमें और भी कितने गरम सोते देखे जाते हैं। उनमेंसे ऋषिकुण्ड और भीमबांध उल्लेखयोग्य हैं। ऋषिकुण्डके जलका ताप ११०° से ११४° तक चढ़ जाता है और भीमबांधका गर्भस्थ जल १४४° से १५०° डिग्री तक उत्तप्त होते देखा गया है। मुङ्गेर देखो।

सीताकुण्ड—चम्पारण जिलेका एक पुण्य स्थान। यह मोतिहारीसे १२ मील पूरब पड़ता है। यहां प्रति वर्षके वैशाख महीनेमें तीन दिन तक मेला लगता है। यात्री लोग उस कुण्डके किनारे रामलक्ष्मणकी मूर्त्तिपूजा करने आते हैं। इस कुण्डमें सीतादेवीने विवाहके पहले स्नान किया था।

सीताकुण्ड—१ बङ्गालके चट्टग्राम जिलान्तर्गत सीताकुण्ड शैलका सर्वोच्च शिखर। यह अक्षा० २२° ३७´ ४०´´ उ० तथा देशा० ९१° ४१´ ४०´´ पू०के मध्य विस्तृत है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ११५५ फुट है। यह शैलशिखर हिन्दूके निकट पवित्र तीर्थ समझा जाता है। सीताकुण्ड शैलशिखर पर खड़ा हो कर सवेरेका सूर्योदय और शामका सूर्यास्त देखनेमें बड़ा ही मनोरम लगता है।

२ उक्त शैल परका एक प्रस्रवण और कुण्ड। यह अभी सूख गया है अथवा भर दिया गया है। क्योंकि उसका जल तैलाक्त है और स्वास्थ्यकर नहीं है। किन्तु आज भी उस कुण्डस्थानका माहात्म्य विलुप्त नहीं हुआ है। इसी पर्वत पर सुप्रसिद्ध चन्द्रनाथतीर्थ है; इस कारण सीताकुण्ड और चन्द्रनाथ समपर्यायवाचक हो गय है। किंवदन्ती है, कि भगवान् श्रीरामचन्द्र और देवादिदेव महादेवने इस तीर्थभूमिमें विहार किया था। चन्द्रनाथमें यह रम्य विहारस्थान है। प्रति वर्षके फाल्गुन मासमें शिवचतुर्दशी पर्वोपलक्षमें यहां बड़ी धूमधाम होती है तथा प्रायः २० हजार तीर्थयात्री इकट्ठे होते हैं। चैत्र और कार्त्तिकमें तथा सूर्य और चन्द्रग्रहणकालमें बहुतसे लोग स्नान करने आते हैं। इस पर्वत पर चढ़नेमें पहले लोगोंको बहुत कष्ट होता था। स्थानीय लोगोंका विश्वास है, कि सीताकुण्ड या चन्द्रनाथ शैल पर एक बार आरोहण करनेसे फिर पुनर्जन्म नहीं होता। अभी चन्द्रनाथ शैल पर चढ़नेके लिये सीढ़ी बनवा दी गई है।

यहां प्रति वर्ष चैत्रसंक्रान्तिमें पर्वतवासी बौद्धोंको एक सभा लगती है। उन लोगोंका विश्वास है, कि तथागतके तिरोधानके बाद इस शैलपृष्ठ पर गौतमबुद्धका देहावशेष जलाया गया था। बङ्गालके अन्यान्य स्थानवासी जिस प्रकार मृतकी हड्डी गंगाजलमें अथवा काशीमें

में फेंकना पुण्यजनक समझ कर देशान्तरसे गङ्गाके किनारे लाते हैं, उसी प्रकार बौद्ध लोग दूरदेशसे अपने अपने आत्मीय गणकी हड्डो ला कर उस बुद्धदेहदाह-कुण्डमें फेंक देते हैं। उन लोगोंका विश्वास है, कि इसीसे प्रेतको पुण्यलाभ होगा तथा वह सुखसे स्वर्गलोकमें वास करेगा।

उस शैल पर भरतकुण्ड नामक स्थानमें एक प्रस्रवण देखा जाता है। इसके भी जलमें तेल-सा स्वाद आता है, पर ठढा है। यहां प्रस्तरस्तरमेंसे एक प्रकारका दुर्गन्ध वाष्प निकलता है जो अग्नि लगाने पर जलने लगता है। चन्द्रनाथ देखो।

सीतागौरीव्रत—व्रतविशेष।

सीताजानि (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीतातीर्थ—एक तीर्थ। वायुपुराणान्तर्गत सीतातीर्थ-माहात्म्यमें इसका उल्लेख है।

सीताद्रव्य (सं० क्ली०) खेतीके उपादान, काश्तकारीको सामान।

सीताधर (सं० पु०) हलधर, बलरामजी।

सीताध्यक्ष—प्राचीन कालमें भारतवर्षमें जब हिन्दू राजे राज्य करते थे, उस समय वे राजा अपने लिये कुछ जमीन रख लेते थे और वेतनभोगी कर्मचारीकी देखरेखमें उस जमीनमें सभी प्रकारके धान, पुष्प, फल, मूल, शाक, पटसन, कपास आदि उपजाते थे। उस खास जमीनका नाम 'सीता' रखा गया था और जिसके ऊपर इस 'सीता'की देख-रेखका भार था, उसे सीताध्यक्ष कहते थे।

सीतानगर—मध्यप्रदेशके दामो जिलेकी दामो तहसील-के अन्तर्गत एक नगर।

सीतानगरम्—मन्द्राज प्रदेशके कृष्णा जिलान्तर्गत एक शैलप्रदेश। यह अक्षा० १६° २८' से १६° २६' ४०" उ० तथा देशा० ८८° ३८' से ८८° ३८' पू०के मध्य कृष्णा नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। इस शैलमालाकी बगलमें उन्दवल्लीकी गुहा नामसे परिचित बहुत-सी गुहाएं हैं तथा पर्वतगात्रक्षोदित एक चार तल्लेका मन्दिर देखा जाता है। यह गुहा-मन्दिर अभी विष्णु उपासकोंके अधिकारमें है तथा मन्दिरमें विष्णुमूर्त्ति स्थापित है।

सीतानवमीव्रत—व्रतविशेष।

सीतानाथ (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीतापति (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीतापहाड (हिं० पु०) एक पर्वत जो बंगालके चटगांव जिलेमें है।

सीतापुर—१ युक्त प्रदेशके अयोध्या विभागका एक भाग। यह अक्षा० २६° ५३' से २८° ४२' उ० तथा देशा० ७६° ४४' से ८१° २३' पू०के मध्य विस्तृत है। सीतापुर, हरदोई और खेरी जिला ले कर यह संगठित है। इसके उत्तरमें नेपाल राज्य, पूरबमें बहराइच जिला, दक्षिणमें बाराबंकी, लखनऊ और उनाव जिला तथा पश्चिममें फर्रुखाबाद, शाहजहानपुर और पिलिभीत जिला है। इस विभागमें कुल २१ नगर और ५८२४ ग्राम लगते हैं।

२ युक्तप्रदेशके सीतापुर विभागके अन्तर्गत एक जिला। यह अक्षा० २७° ६' से २७° ५४' उ० तथा देशा० ८०° १८' से ८१° २४' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २२५० वर्गमील है। इसके उत्तरमें खेरी जिला, पूरबमें बहराइच जिलेके मध्यवर्त्ती घर्घरा नदी, दक्षिण और पश्चिममें बाराबंकी, लखनऊ और हरदोई जिलेको मध्यवर्त्ती गोमती नदी है। सीतापुरनगर यहांका विचारसदर और खैराबाद अन्यतम वाणिज्य-प्रधान नगर है।

सीतापुर जिला उत्तर-पश्चिमसे दक्षिण पूर्वमें ७० मील विस्तृत है। सारे जिलेको एक विस्तृत प्रान्तर-भूमि कहनेमें भी कोई अत्युक्ति न होगी। इसका उत्तर-पश्चिम प्रान्त समुद्रपृष्ठसे ५०५ फुट ऊंचा है तथा यह क्रमशः निम्न हो कर दक्षिण-पूर्वप्रान्तमें ४०० फुट हो गया है।

घर्घरा यहांकी प्रधान नदी है। वर्षाके समय यह नदी ४से ६ मील तक फैल जाती है। चौका नदी घर्घरा नदीसे ८ मील पश्चिम एक सीधमें बह कर बाराबंकी जिलेके बहरामघाट नामक स्थानमें एक दूसरेसे मिल गई है। घर्घराको छोड इस जिलेकी और किसी भी नदीमें बडी बडी नावें यातायात नहीं कर सकती हैं। उत्पत्तिस्थानसे ले कर सङ्गम तक दोनों नदीके

बीच कुछ जलस्रोतोंने एक दूसरेको संयोजित किया है। घर्घरासङ्गमको छोड़ कर क्रमशः पश्चिमको ओर जानेसे हम गोण, चेल, केवानी, सरायण और गोमती नदीकी अववाहिकाभूमि देख पाते हैं।

चूनका कंकड (nodular limestone) यहांका प्रधान खनिजद्रव्य है। इसके सिवा यहां और कोई द्रव्य देखनेमें नहीं आता।

अयोध्या प्रदेशके इतिहाससे ही इस जिलेका इतिहास सम्बंध रखता है, इसलिये यहां उसका पुनरुल्लेख नहीं किया गया। अयोध्या देखो।

इस जिलेके पूरब चौका और कौरियाला नदीके मध्यस्थलमें राइकवाड नामको एक प्रभावशाली जातिका वास है। वह देशभाग उत्तर और दक्षिण कुन्दरी कहलाता है। राइकवाड लोगोंने यहां प्रायः दो सदी तक राज्य किया था। वारावंकी और बहराइच जिलेके रामनगर और चौंदी सम्पत्तिके अधिकारी राइकवाड़वंशके बड़े घर हैं। उस वंशकी एक शाखा सीतापुर, मल्लापुर, छाहलारी और रामपुर नामक स्थानमें वास करती है।

जिलेके उत्तर सीतापुर, लहारपुर, हरग्राम, चन्द्रा और तम्बौर परगनेमें प्रतापशाली गौड़ ब्राह्मण रहते हैं। मुगल-सम्राट् आलमगीर बादशाहके शासनकालके अन्तिम समयमें ये लोग नारकंडझाडी नामक स्थानसे इस देशमें आ कर बस गये। सीतापुर और लोहारपुरमें अपनी शक्ति अक्षुण्ण रख कर गौड़ लोग क्रमशः उत्तर-पश्चिमकी ओर अग्रसर हुए तथा कुचडा तक उन लोगोंने अपनी विजयवैजयन्ती उड़ाई। इसके बाद जब बलदृप्त गौड़ोंने मुहम्मदीके मुसलमान राजाको परास्त कर वह प्रदेश अधिकार कर लिया, तब रोहिला लोग उक्त मुसलमानराजके सहायक हो कर गौड़ों पर आक्रमण करने अग्रसर हुए। कुकड़ा नगरसे २० मील उत्तर मैलानी नामक स्थानमें गौड़ लोगोंने अफगानोंके हाथसे पराभव स्वीकार किया। इस युद्धमें उन लोगोंकी ओरसे बहुत आदमी हताहत हुए थे।

इस समय अयोध्याके नवाबोंके आदेशसे नाजिम शीतलप्रसाद देश लूटनेको निकले। गौड़ोंने इस समय चौराहरके राजाके साथ मिल कर उन्हें रोकनेकी चेष्टा की। चौराहर नगरके पास दोनों पक्षमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें गौड़ लोग दलबलके साथ परास्त हुए। इस समय खैरीगढ़ दुर्गकी निम्नवाहिनी नदीके किनारे उनमेंसे एक कैदी सरदारका शिरश्छेद किया गया था। तभीसे गौड़ब्राह्मण शान्तभाव अवलम्बन कर निरीह भूमिपालरूपमें विद्यमान हैं।

सीतापुर, सिधौली, महोली महमूदाबाद, मिसरिख, बिस्वान, लहरपुर, तम्बौर, थानागांव, हरगांव और निमखार नामक स्थानमें पुलिसके थाने हैं। १८७१ ई०में यहां भयंकर बाढ़ आई थी तथा जुलाईसे सितम्बर मास तक समस्त देशभाग जलमग्न रहा। उससे प्रायः जिलेकी बारह आना फसल नष्ट हो गई, बहुतसे मवेशियोंकी जान गो गई।

इस जिलेमें ६ शहर और २३०२ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ११ लाखसे ऊपर है। यहांकी प्रधान उपज बाजरा, जुआर, ईख, गेहूं, चना और जुनहरी है। विद्याशिक्षाकी ओर यहांके लोगोंका उतना ध्यान नहीं है। अभी कुल मिला कर ३०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा ११ अस्पताल हैं।

३ अयोध्या प्रदेशके उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २७° १६´ से २७° ५१´ उ० तथा देशा० ८०° ३२´ से ८१° १´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५७० वर्गमील और जनसंख्या तीन लाखसे ऊपर है। इसमें सीतापुर, खैराबाद और लहरपुर नामक तीन शहर और ६०८ ग्राम लगते हैं। यहांकी प्रधान नदी घाघरा है।

४ उक्त जिलेकी उक्त तहसीलका एक परगना। इसके पूर्व और दक्षिण प्रान्तमें सरायण नदी बहती है। कहते हैं, कि दशरथतनय रामचन्द्रने वनवास कालमें सीताके साथ यहां कुछ दिन वास किया था। राजा विक्रमादित्यने सीतारामकी उस पवित्र वनवासभूमिके ऊपर एक नगर बसा कर सीता देवीके सम्मानार्थ उसका सीतापुर नाम रखा। १२वीं सदीके शेषभागमें दिल्लीश्वर पृथ्वीराजके आत्मीय गोहेलदेव नामक किसी चौहान राजपूतने यह देश आक्रमण कर स्थानीय कुर्मी अधिवासियोंको मार भगाया। गोहेलदेव तथा उनके

वंशधरोंने यहां प्रायः ५ सदी तक राज्य किया। मुगल-सम्राट् औरङ्गजेब बादशाहके अमलमें चन्द्रसेनपरिचालित गौड़राजपूतोंने इस देशमें आ कर चौहानोंको तख्त परसे उतार दिया। उस समय केवल सीतापुर, मयादत् नगर और तेहर नामक स्थान चौहानोंके अधिकारमें थे।

चन्द्रसेनके चार पुत्र थे। उन्हीके वंशधर अभी प्रायः सभी परगनोंके अधिकारी हैं। राजा टोडरमल्लने पहले सीतापुरको परगनोंमें विभक्त किया था।

५ उक्त जिलेकी तहसीलका प्रधान नगर और विचार सदर। यह अक्षा० २७° ३४' ३० तथा देशा० ८०° ४०' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या २२ हजारसे ऊपर है। नगर और सेनावास आम्रकाननके मध्यस्थलमें अवस्थित है। शहरमें म्युनिसपलिटी और पांच स्कूल हैं।

सीतापुर—युक्तप्रदेशके बांदा जिलान्तर्गत एक नगर। यह पवित्र चित्रकूट शैलके नीचे पैशुनी नदीके बाएं किनारे अवस्थित है। यहां बहुतसे प्राचीन देवमन्दिर विद्यमान हैं। स्थानीय लोग उन मन्दिरोंके देवताकी बडी भक्ति करते हैं तथा तीर्थयात्राके उद्देशसे वहां जाते हैं।

इस नगरके पूर्व अहवन या अहवंश नामक एक प्रतापशाली क्षत्रिय राजवंशकी उत्पत्ति हुई। ये लोग गुजरातवासी चावडक्षत्रिय कहलाते हैं। कर्मसूत्रसे इस देशमें आ कर इन लोगोंने निमखार, औरङ्गाबाद और महोली परगना, खैराबादका कुछ अंश तथा खेरी और हरदोई जिलेका कुछ स्थान अधिकार कर वहां अपना प्रभाव फैलाया था। इस राजवंशकी १०६ पीढी तक एक वंशलता पाई जाती है। इस वंशके प्रधान मितौलीके राजा लोणसिंहने अङ्गरेजोंके विरुद्ध अस्त्र धारण किया था, इसीसे १८५६ ई०में सिपाहीयुद्धके बाद अङ्गरेज-गवर्मेण्टने उन्हें राज्यसे भगा दिया तथा उनका राज्य भी कुछ लोगोंमें बांट दिया गया। उनके भाईने अंगरेजराजसे अपना खोया हुआ राज्य फिर पानेकी कोशिश की, किन्तु उनके सभी प्रयत्न निष्फल गये। इस लोणसिंहकी अधिकृत सम्पत्ति २७०० ग्रामोंमें विभक्त थी।

सीतापुरमें अहन या अहवंशकी जो शाखा विद्यमान है, उनका प्रभाव या प्रतिपत्ति कुछ भी नहीं है। वे लोग आज भी कुमार उपाधिसे जनसाधारणमें सम्मानित होने पर भी यथार्थमें अन्तःसारशून्य हो गये हैं। खेरीकी अदालतमें जब कोई मुकदमा पेश होता है, तब इन लोगोंको पुरानी दस्तावेज दाखिल करनी होती है। उन सब दस्तावेजोंमें मुगलसम्राट् अकबर और जहांगीरने अहवंशके सरदारको महाराज कह कर सम्मानित किया है। उनके अधिकृत परगने अयोध्याके नवाबों द्वारा कुछ मुगल कर्मचारियोंको और अहवंशके अधीनस्थ कायस्थ कर्मचारियोंको दिये हैं।

सीतापुरके मध्यांशमें कुछ क्षत्रियवंशने अपनी प्रधानता विस्तार की थी। एक ओर चौहानवंशने और दूसरी ओर तम्बौर नगरमें रघुवंशीय गणने राज्य स्थापन किया था। बिश्वन् और खैराबादको छोड प्रायः सभी परगनोंमें एक न एक स्वतन्त्र क्षत्रियवंशकी तूती बोलती थी। इन सब वंशोंके प्रधान अर्थात् सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति ठाकुर कहलाते थे। वे लोग ही अपने अपने दलके नेता थे। स्थानीय मुसलमान शासनकर्त्ताओंने उनका दल भंग कर अधिकृत परगना विभिन्न रूपमें विभक्त कर दिया था। किन्तु वे लोग दक्षिण अयोध्याके कानहपुरिया, सोमवंशीय और बाई जातिकी तरह प्रभावसम्पन्न गोष्ठीका अधिकार घटा न सके। इन सब छोटे छोटे क्षत्रियवंशमें गुण्डलामी परगनेका बच्छिलवाडी और बीर नगरको बाई, मालयनका पमार, रामकोट और कुरोनाका जानावर तथा माच्छ्रेताका कच्छवाह, बाई, जानवर और राठोरगण प्रसिद्ध थे। जानावर लोग सरायण नदीके पश्चिम और बाई लोग पूर्वकी ओर रहते थे। वे लोग तथा बाच्छिल और रघुवंशीगण यहांके पूर्वतन अधिवासी माने जाते हैं। पमार, कच्छवाह और गौड़ लोग राजपूतानेसे इस देशमें आ कर बस गये थे। इन लोगोंमेंसे सिर्फ मितौलीके अहवन-राज, इतौजाके पमार-राज तथा बौन्दीके रायकवाड राज स्वजातिसमाज पर कर्तृत्व करनेमें समर्थ तथा सामाजिकों द्वारा विशेष-रूपसे सम्मानित हुए। किन्तु आश्चर्यका विषय है, कि स्वजातिमें सभी राजे वंशपरम्परागत नहीं होते थे। स्वजातिमें जो वीर्यवान् और विक्रमशाली होते थे, उन्हींको राजाका

उपाधि मिलती थी। अभी वह प्रथा उठ गई है। सभी निर्जीव—उपाधिधारी मात्र हैं।

विख्यात सिपाही-विद्रोहके समय १८५७ ई०में यहांकी बारकके देशी सिपाहीके दलने ३री जूनको विद्रोही हो अंगरेजों पर आक्रमण कर दिया। श्रीयुत ले कर भागते हुए अंगरेज लोग उनकी गोलीके शिकार बनें। केवल थोड़े से अंगरेजोंने लखनऊ नगरमें भाग कर राजभक्त जमींदारोंके यहां आश्रय लिया था। १८५८ ई०-की १३वीं अप्रिलको सर होट ग्राण्ट विश्वाननें नगरके निकट विद्रोहियोंको सम्पूर्णरूपसे परास्त किया। तभी-से यहां शान्ति विराजती है। सिपाहीविद्रोह देखो।

सीतापुर यहांका प्रधान नगर और विचारसदर हैं। खैराबाद, लोहारपुर, बिश्वान, आलम-नगर, टामसनगंज, महमूदाबाद और पैतेपुर नगर यहांके अन्यान्य स्थानोंके वाणिज्यकेन्द्र हैं। यहा जमींदारके सिवा २३ तालुक-दार हैं।

उत्पन्न नाना प्रकारके शस्योंके अलावा यहां तमाकू-की अच्छी खेती होती है। यहाका पीनी तमाकू बड़ा ही उत्कृष्ट और प्रसिद्ध है। बिश्वानका ताजिया देशविख्यात है। इसके सिवा यहां सूती कपड़े बिनने और छींट छापनेका कारबार हैं।

सीताफल (सं० क्ली०) १ शरीफा। २ कुम्हड़ा।

सीतावर्द्दी—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलान्तर्गत नागपुर नगरके पासका एक विख्यात रणक्षेत्र और अंगरेजी सेनाका सेनावास। यह अक्षा० २१° ६' उ० तथा देशा० ७९° ८' पू०के मध्य अवस्थित है। नागपुर देखो।

सीतामऊ—मध्यभारतके पश्चिम मालव एजेन्सीके अन्त-र्गत एक देशी सामन्तराज्य। यह अक्षा० २३° ४८' से २४° ८' उ० तथा देशा० ७५° १५' से ७५° ३२' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३५० वर्गमील है। इसके उत्तरमें इन्दोर और ग्वालियर राज्य, दक्षिणमें जौरा और देवास, पूरबमें झालावार राज्य तथा पश्चिममें ग्वालियर है। मीना-सरदार सातजीके नामानुसार इसका सीता-मऊ नाम पड़ा है।

यहांके सरदार जोधपुर-वंशधर राठोर सरदार हैं। रतलाम और सैलानाके राजाके साथ इनका निकट-सम्बन्ध है। रतलामके राजा रतनसिंहके प्रपौत्र केशो-दासने इस राज्यको स्थापित किया। औरङ्गजेबने १६९५ ई०में उन्हें तितरोदी, नाहरगढ़ और अलोत-परगने दे कर सनद दी थी। पीछे मराठा चढ़ाईके समय नाहर-गढ़ और अलोत परगने ग्वालियर और देवासके प्रधानोंने छीन लिये। पिण्डारीयुद्धके बाद सर जान मालकोलम बीचमें पड़ कर दौलतराव सिन्धिया और सीतामऊके राजा राजसिंहमें मेल करा दिया। राजसिंह को अपना परगना वापस मिला और वे सिन्धियाको ३३०००) रु० कर स्वरूप देनेको राजी हुए। यह कर पीछे घटा कर २७०००) कर दिया गया। १८५७ ई०के गदरमें मदद पहुंचानेके कारण राजा राजसिंहको २०००) हजार रुपयेको खिलअत मिली। बिना कोई सन्तान छोड़े वे इस लोकसे चल बसे। पीछे वृटिश सरकारने उसी वंशकी दूसरी शाखाके बहादुरसिंहको गद्दी पर बैठाया। इस पर ग्वालियर राजने अपना अपमान बतलाते हुए आपत्ति की। १८८७ ई०में बहादुर सिंहने माल पर जो कर लगता था, उसे उठा दिया, केवल अफीम और टिम्बर लकड़ी पर रहने दिया। १८९९ ई०में उनका देहान्त हुआ। पीछे शार्दुलसिंह सिंहासन पर बैठे। इन्होंने सिर्फ दश मास राज्य किया था। अनन्तर वृटिश सर कारने रामसिंहको सिंहासन पर बैठाया। ये काछी--बरोदाके ठाकुरके द्वितीय पुत्र हैं। १८८० ई०में इनका जन्म हुआ। इन्दोरके दली कालेजमें इन्होंने शिक्षा प्राप्त की है। हिज हाइनेस और राजा इनकी उपाधि है। ११ तोपोंकी इन्हें सलामी मिलती है।

इस राज्यकी जनसंख्या २३ हजारसे ऊपर है। इस में सीतामऊ नामक एक शहर और ८९ ग्राम लगते हैं। सैकड़े पीछे ९८ मनुष्य रांगड़ी या मालवी भाषा बोलते हैं। ब्राह्मण और राजपूत ही यहांकी प्रधान जाति है। राज्यकार्यकी सुविधाके लिये यह राज्य तीन तहसीलमें विभक्त है। प्राणदण्डके सिवा राजा स्वयं कुल विचार-कार्य सम्पादन करते हैं। राज्यकी आय १ लाखसे ऊपर है।

२ उक्त राज्यका एक शहर। यह अक्षा० २४° १' उ०

तथा देशा० ७५° २१' पू०के मध्य विस्तृत है। इन्दोरसे यह १३२ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या ५ हजारसे ऊपर है। शहर एक दीवारसे घिरा है। उस दीवारमें सात फाटक हैं। कहते हैं, कि १४६५ ई०में मीनासरदार सातजीने यह दीवार खड़ी करवाई थी। यह शहर पीछे गजमालोद भूमियाके हाथ लगा ये सब भूमिया सोङ्गरा राठोर थे। ये लोग मालवा आये और १५०० ई०में सीतामऊ पर अधिकार कर बैठे। १६५० ई०में रतनसिंहके पिता महेश दास राठोर स्त्रीके साथ झालोरसे ओङ्कारनाथ जा रहे थे। सीताके बीमार पड़ जानेसे वे सीतामऊमें ठहर गये। यहीं उनकी स्त्रीका देहान्त हुआ। पीछे उन्होंने स्वर्गीया स्त्रीके स्मारकमें यहां एक मन्दिर बनवाना चाहा, परन्तु गजमलोद भूमियाने अनुमति नहीं दी। इस पर वे बहुत बिगड़े और भूमियाका काम तमाम करनेका संकल्प कर लिया। इस उद्देशसे उन्होंने भूमियाको अपने यहां निमन्त्रण किया और वहीं यमपुरका मेहमान बनाया। पीछे वे सीतामऊ पर अधिकार कर बैठे।

शहरमें एक स्कूल, धर्मशाला, अस्पताल और सरकारी डाक और तार-घर है।

सीतामढ़ी—१ तिरहुत प्रदेशके मुजफ्फरपुर जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २६° १६' से २६° ५३' उ० तथा देशा० ८५° ११' से ८५° ५०' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १०१६ वर्गमील और जनसंख्या १० लाखके करीब है। इसमें एक शहर और ६१६ ग्राम लगते हैं।

१८६५ ई०में यह पहले पहल स्थापित हुआ। इसमें शेवहर, सीतामढ़ी, बेलामोच पकौनी तथा अली नामक चार थाने हैं।

२ उक्त उपविभागका एक शहर। यह अक्षा० २६° ३५' उ० तथा देशा० ८५° २६' पू०के मध्य लखनदेई नदीके पश्चिमी किनारे अवस्थित है। जनसंख्या १० हजारसे ऊपर है। यहां प्रधानतः हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयोंका वास है। उनमेंसे फिर हिन्दूकी संख्या ही ज्यादा है। शहरमें म्युनिस्पलिटीका प्रबंध है। चावल, सरसों, तिल, चमड़े और नेपाली वस्तुओंकी यहां बहुतायतसे खरीद बिक्री होती है। साखू लकड़ीको वर्षाकालमें नदी-जलमें बहा कर यहां जमा करते और बेचते हैं। प्रति वर्ष चैत्रमासके शुक्लपक्षकी नवमी तिथिमें यहां एक बड़ा मेला लगता है। इस मेलेको रामनवमीका मेला कहते हैं।

प्रवाद है, कि सीतासे सीतामढ़ी नामकी उत्पत्ति हुई है। एक दिन राजा जनकका नौकर खेत जोत रहा था। हल लगनेसे एक मृण्मय पात्र जो उसीके अंदर था, फूट गया। उसके फूटते ही सीतादेवी उत्पन्न हुई। एक पुराने तालावको दिखा कर आज भी लोग कहा करते हैं, कि यहीं पर पहले पहल सीतादेवी पाई गई थीं। शहरमें एक फौजदारी कचहरी, एक मुन्शफ कचहरी, एक थाना, एक भट्ठिखाना, डाकघर, डाक्टरखाना, एक स्कूल और एक छोटा जेल है।

सीतामुढ़ी—गया जिलेका एक ग्राम। यह पुनावासे १४ मील दूर तथा नवादा और गया राहनेके पार्श्ववर्त्ती नदगुड़ा नामक ग्रामसे कुछ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। यहां एक उपयुक्त मैदानमें एक बड़े ग्रेनाइट पत्थर पर खोदी हुई एक बड़ी गुहा है। बराबर गुहाएं जिस समय बनाई गई थीं, यह भी उसी समयकी बनी है।

सीताम्पेट्टा—मन्द्राजप्रदेशके विजागापाटम् जिलेका एक गिरिपथ। यह अक्षा० १८° ४०' उ० तथा देशा० ८३° ५५' पू०के मध्य विस्तृत है। विजागापाटम्से गञ्जाम और जयपुर जानेका यही प्रधान रास्ता है। इस रास्तेसे बैलगाड़ी पर माल लाद कर दूसरी जगह भेजा जाता है।

सीतायज्ञ (सं० पु०) हल जोतनेके समय होनेवाला एक यज्ञ।

सीतारमण (सं० पु०) रामचन्द्रजी।

सीताराम—१ आर्याविंशतिकाव्यके प्रणेता। २ जानकीपरिणयनाटकके प्रणेता। ३ वैराग्यरत्न और साहित्यबोध नामक अलंकार ग्रन्थके प्रणेता। ४ समयाचारनिरूपण नामक तन्त्रशास्त्रके प्रणेता।

सीतारामचन्द्र (राजा बहादुर)—रामचन्द्रचम्पूके प्रणेता विश्वनाथ सिंहके प्रतिपालक एक हिन्दू नरपति।

सीतारामनगरम्—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके विजगापट्टम् जिलेके बोब्बिली तालुकान्तर्गत एक प्राचीन नगर। बोब्बिलीसे ६ मील उत्तरमें यह अवस्थित है। यहां एक प्राचीन दुर्ग और बहुतेरी शिलालिपियां विद्यमान हैं।

सीताराम परलोकर—वेदमुख नामक ग्रन्थके प्रणेता।

सीतारामपल्ली—मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके गञ्जाम जिलान्तर्गत एक नगर। इसका प्राचीन नाम सत्यपुरम् है। पीछे यह छत्रपुर नामसे विख्यात हुआ। छत्रपुर देखो।

सीतारामपुर—बङ्गालके वर्द्धमान जिलान्तर्गत रानीगंज विभागकी एक कोयलेकी खान। १८४७ ई०में यहां पहली बार खान खोदी गई थी। इसके बाद १८६४ ई०में यहां और चार खान काट कर कोयला निकालनेको व्यवस्था हुई। किन्तु उससे जो कोयला निकला, वह उतना अच्छा न होनेके कारण कम्पनीने उसका काम बंद कर दिया। इष्ट-इण्डिया रेलवेके हवडा (कलकत्ता) स्टेशनसे सीतारामपुर स्टेशन १३८ मील दूर पड़ता है। यहांसे उक्त रेलवेकी ग्राण्डकार्ड लाइन निकल कर गयाधामके पाससे होती हुई मुगलसराय स्टेशनमें मिल गई है।

सीतारामराज—विजयनगरके एक राजा। आनन्दराजके मरने पर उनके नाबालिग पोष्यपुत्र विजयराम राजसिंहासन पर बैठे। किन्तु नाबालिग होनेके कारण उनके वैमात्रेय भाई सीतारामराज ही राज्य करने लगे। किन्तु १७८४ ई०में सीतारामको सिंहासन परसे उतार दिया गया। १७९० ई०में वे फिर एक बार राजप्रतिनिधिका काम करने बुलाये गये, परन्तु १७९३ ई०में उन्हें मन्द्राजमें भेज दिया गया। विजयनगर देखो।

सीताराम राय (राजा)—बङ्गमें एक प्रसिद्ध कायस्थ राजा। सम्भ्रान्त उत्तर-राढ़ोय कायस्थ कुलमें इनका जन्म हुआ था। राजदानी रामदाससे सात पीढ़ी नीचे और राजा सीताराम रायके प्रपितामह रामराम दासने ही नवाबोंसे पहले पहल विश्वासखासको उपाधि पाई थी। उनके पुत्र हरिश्चन्द्र कार्यदक्षताके पुरस्कार स्वरूप नवाब द्वारा 'राय रायां'की उपाधिसे विभूषित हुए। सीतारामके पिता उदयनारायण भी पितृ-अर्जित यह उपाधि पानेमें समर्थ हुए थे। वे भूषणाके फौजदारके अधीन राजस्व उगाहनेमें नियुक्त हो कर भूषणा आये और सूर्यकुण्डमें मकान बनवा कर रहने लगे।

वंशावलीकी पर्यालोचना करनेसे अनुमान किया जाता है, कि सीतारामने १६५७ या ५८ ई०में मामाके घर जन्म ग्रहण किया। पिता उदयनारायण उस समय भूषणामें थे। सीताराम जब कुछ जवान हुए उस समय साइस्ता खाँ ढाकाका नवाब था। पठान करीम खाँने विद्रोही हो कर फौजदार और नवाबके प्रेरित सैन्यदलको कई बार परास्त किया। सीतारामको इस बातकी बड़ी स्पर्द्धा हुई, कि वे विद्रोहीका दमन कर सकेंगे। नवाबने उन्हें ७ हजार पदातिक ढाली सेनाका नायक बना कर विद्रोह-दमनके लिये भेजा।

सीतारामकी ही विजयपताका उड़ने लगी। युद्धमें करीम खां परास्त और निहत हुआ। उसका दुर्ग और धनागार लूट कर विजयी सीताराम नवाबके पास लौटे। नवाबने प्रसन्न हो कर उन्हें पुरस्कारस्वरूप चाकला भूषणाके अन्तर्गत नलदी परगना जागीरमें दिया और रायरायांकी उपाधि प्रदान की।

जागीर पा कर सीताराम, रामरूपघोष और मुनिराम नामके दो कर्मचारियोंको साथ ले कर भूषणा आये। फकीर महम्मद अली भी उनके साथ था। आते समय राहमें एक दल दस्युसे सीतारामको मुठभेड़ हो गई। दस्युकी हार हुई। दस्यु-दलपति बकरके साहस और युद्धकौशलसे मुग्ध हो उन्होंने उसे गले लगाया। बकरने भी प्रतिज्ञा की, कि आजसे वह चोरी डकैती छोड़ कर शीघ्र ही उनसे मिलेगा।

सीतारामने शीघ्र ही कालीगङ्गाके तीरवर्त्ती विस्तीर्ण शस्यक्षेत्रमें दिग्गी और पुष्करिणी खुदवाई तथा बड़ी बड़ी इमारत बनवा कर हरिहरनगर नामसे एक बहुत बड़े नगरकी प्रतिष्ठा की। बहुतसे देवालय भी यहां स्थापित और प्रतिष्ठित हुए।

दस्युका दमन कर सीतारामने उच्चचरित्र और युद्ध-निपुण दलपतियोंको अपनी सेनामें भर्त्ती किया। इस काममें बकरने उन्हें खासी मदद पहुंचाई।

जब वे इस व्यापारमें उलझे थे, उसी समय उनके माता और पिता दोनोंका ही स्वर्गवास हुआ। पिताके वार्षिक-श्राद्धमें सीतारामने बहुत रुपये खर्च किये थे तथा छः हाथी भी दान किये थे। पहले ब्राह्मण लोग श्राद्धके दिन कायस्थके घर भोजन नहीं करते थे, परन्तु सीतारामने वह प्रथा उठा कर उसी दिन ब्राह्मणभोजनकी प्रथा चलाई।

सीतारामके दलयुद्धलनसे नवाब बड़े सन्तुष्ट हुए। उनकी श्रीवृद्धि पर फौजदार क्षुब्ध हो गया। इसीसे बंधु-बांधवोंके साथ परामर्श करके उन्होंने स्थिर किया, कि कार्यारम्भके पहले बादशाहके साथ मिल कर उनका प्रीतिभाजन हो जावें। तदनुसार वे रामरूप और मुनिरामको साथ ले कर संन्यासीके वेशमें नाना तीर्थोंका पर्यटन करते हुए दिल्ली बादशाह औरङ्गजेबके दरबारमें पहुंचे।

गुणग्राही नवाब सईस्ता खांके पत्रसे बादशाहको सीतारामकी वीरताका हाल पहले ही मालूम हो गया था। अभी उनके मुखसे निम्न बङ्गकी दुरवस्थाकी बात सुन कर सम्राट्ने उन्हें 'राजा' उपाधिके साथ फरमान, निम्न बङ्गके सुनियम और सुश्रृङ्खला स्थापन तथा प्रजापालनका अधिकार किया।

देश लौट कर सीताराम खाई और दीवारसे घिरी हुई राजधानी बनाने लायक उपयुक्त स्थान खोजने लगे। आखिर फकीर महम्मद अलीके निर्वाचनानुसार नारायणपुरमें राजधानी बनाई गई। उसी फकीरके नामानुसार सीतारामने उसका महम्मदपुर नाम रखा। पीछे उन्होंने यहां मन्दिर बनवा कर लक्ष्मीनारायण विग्रहकी प्रतिष्ठा की।

कुलपञ्जिका और गुरुकुलपञ्जीमें सीतारामके विवाहके सम्बन्धमें तीन स्त्रियोंका उल्लेख है। किन्तु घोरपुरमें 'आदङ्गबाटी' या 'नयारानी-बाटी' नामक सीतारामका मकान था। उसीसे मालूम होता है, कि उनके और भी दो पत्नी थी।

दिल्लीसे लौटने ही सीताराम सैन्यसंख्या बढ़ाने लगे। धीरे धीरे उनकी बेलदार सेनाकी संख्या बीस हजार हो गई।

जमींदारके हिसाबसे सीताराम एक प्रकारके आदर्श स्थानीय थे। उनके राज्यमें हिन्दू मुसलमान दोनों धर्मके आदमी थे, उन लोगोंके प्रति इनका निरपेक्ष शासन था। वे हिन्दूके लिये देवालय और मुसलमानके लिये मसजिद बनवाते थे। दिग्गी पुष्करिणी खुदवा कर, गोलागञ्ज बाजार बसा कर और रास्ता घाट बनवा कर वे प्रजाकी श्रीवृद्धिके लिये यथासाध्य चेष्टा करते थे।

भूषणामें मुकुन्दरायके वंशधर जब आपसमें झगड़ने लगे, तब दुर्बल पक्षने आ कर इनसे सहायताकी प्रार्थना की थी। अतः दुर्बलका पक्ष अवलम्बन कर इन्होंने प्रबल पक्षके साथ विवाद छेड़ दिया। फलतः उनमेंसे कितने फौजदारके आश्रयमें भाग गये, कुछ सीतारामकी अधीनता स्वीकार कर महम्मदपुरमें ही रहने लगे। इस कार्यके पुरस्कारस्वरूप उन्हें पोकतानी, रोकनपुर, रूपापात और रसूलपुर परगना मिले। गृहविवादसे ये दौलत खाँ पठानके वंशधरोंसे भी चार परगना जमींदारीके मालिक बन बैठे। मुकुन्दरायके ही उत्तर-पुरुष परमानन्दसे इन्होंने मकिमपुर परगना पाया था। समाद्दार उपाधिधारी एक ब्राह्मण साह उजियाल परगनेके मालिक थे। उनकी मृत्युके बाद गृहविवादसे तंग आ कर उनकी पत्नीने इस परगनेका शासनभार भी सीतारामको सुपुर्द किया।

एक दूसरेकी सहायता करेंगे, इस शर्त्त पर सीतारामने चाचडाराज मनोहर राय, नदियाके राजा रामचन्द्र, नाटोरके राजा रामजीवन और पुंटिया तथा ताहेरपुरके राजा आदिके साथ सन्धि कर ली।

किन्तु संधि होनेसे ही क्या होता जाता? राजा लोग तो इनकी श्रीवृद्धि पर मन ही मन जलते थे। इनकी जमींदारी दिन पर-दिन बढ़ती जा रही है, राज्यमें नये नये नगर और ग्राम बसाये जा रहे हैं, ये सब बातें इनके शत्रु पक्षने जा कर फौजदार आबू तोरपके कानोंमें भर दीं। फौजदार भी मुर्शिदाबादमें नवाब कुली खाँसे वसूलीको अनुमतिके लिये बार बार पत्र लिखने लगा। बादशाही और निजदत्त सनदकी बात याद कर बहुत दिनों तक तो इन पत्रोंकी ओर ध्यान नहीं दिया, किन्तु पीछे दाक्षिणात्य जयके लिये सम्राट् औरङ्गजेबने बार बार तकाजे भेजे। इससे तंग आ कर और मुनिरामके मुखसे तथा तत्कर्तृक कलुषितकर्णसे फौजदारके पत्रमें सीतारामका स्वाधीन होनेका अभिप्राय और कौशल जान कर मुर्शिद कुली खाँ सनदकी कुछ बात भूल गया और सीतारामके दखली सभी परगनोंका यथारीति कर वसूल करनेके लिये आबू तोरपको हुकुम दिया। तदनुसार आबू तोरपने कर माग भेजा। इधर पहलेसे ही फौजदारकी दुरभिसन्धि जान कर सीतारामने मुख्तार मुनिरामको मुर्शिद-

कुली खांके दरबारमें सनदकी बात तथा आज भी कर देनेमें छः वर्ष बाकी हैं, इत्यादि बात उठानेके लिये कई पत्र दिये। ऊपरसे तो मुनिराम सीतारामको चिकनी चुपडी बातोंसे आश्वासन देता, पर भीतरसे उनके विरुद्ध नवाबको उत्तेजित किया करता था। पहले जब फौजदारने करके लिये तकाजा भेजा, तब मुनिरामकी बात पर निर्भर कर सीतारामने कहला भेजा, कि खडेरा आदि परगनेका कर आबादी सनदके अनुसार और भी छः वर्ष बाद देना होगा; नलदी परगना उन्होंने जागीरमें पाया था, इसके लिये तो कर देना ही नहीं पड़ेगा। रामपाल आदि परगने उन्हें युद्धमें मिले हैं, इसलिये निष्कर हैं, बाकी परगने उनके निजी नहीं हैं, केवल सुशासन और सुश्रृङ्खला स्थापन करनेके लिये ही उन्होंने कुछ नाबालिग और विधवाके पक्षसे अपने हाथ लिये हैं। इन सब परगनोंमें श्रृङ्खला स्थापित करनेमें उन्हें बहुत रुपये खर्च करने पड़े हैं, इस कारण और भी कुछ वर्ष नहीं बीतनेसे राजस्व देना मुश्किल है।

अल्पबुद्धि परचालित फौजदार क्रोधसे अधीर हो उठा। एक दिन सीताराम सभामें बैठे थे, देश देशके गुणी, ज्ञानी, पण्डित और वणिक् भी शोभा दे रहे थे, इसी समय फौजदारके आदमीने आ कर कहा, कि सात दिनके भीतर कौडी कौड़ी राजस्व नहीं चुकता देनेसे बाल बच्चा समेत उन्हें हाजतमें ठूंस दिया जायेगा और धान मिला हुआ चावल खानेको मिलेगा तथा उनकी जमीदारी जब्त की जायेगी। इस उक्ति पर सीताराम जैसे पुरुष सिंह बड़े ही विचलित हो उठे। फौजदारके आदमीके चले जाने पर अशुभ मुहूर्त्तमें उनके मुखसे निकल गया, "आबू तोरपके कटे सिरका दाम दश हजार रुपया।"

फिर क्या था, प्रधान सेनापति मेनाहातीने फौरन दश हजार सेना ले कर भूषणाके किलेको घेर लिया। दोनों पक्षमें सारा दिन युद्ध चलता रहा। आखिर हिन्दू-सेनाकी ही जीत हुई। इस युद्धमें छः सौ फौजदारी सेनाकी जान गई। आबू तोरपका कटा सिर राजपद पर रखा गया।

इसी भूषणा-युद्धके बाद ही आग और भी भभक उठी। नबाबके जमाई आबू तोरपकी मृत्युका संवाद पा कर मुर्शिद कुली खाने सीतारामको परास्त और कैद करनेके लिये सेना भेजी। अवस्था जान कर सीताराम भी पहले होसे तैयारी करने लगे। भूषणाविजयके बाद स्वयं सीताराम भूषणामें और मेनाहाती महम्मदपुरके दुर्गमें ससैन्य रहते थे। दिल्लीसे बक्सअली खां नामक जो सेनापति आया था, उसकी खबर पा कर अमीन बेगको महम्मदपुरका और रूपचन्द ढलीको भूषणाके दुर्गकी रक्षामें नियुक्त कर सीतारामने मेनाहाती, बक्तर आदिके साथ बक्सअलीके विरुद्ध यात्रा कर दी। पद्मा नदीके किनारे दोनोंमें गहरी मुठभेड हुई। इस युद्धमें सीतारामने दोनों हाथोंसे काले खां और झुमझुम खां नामक दो बड़ी बडी कमान दागी थी। बहुत-सी मुसलमानी सेनाके मारे जाने पर बक्सअली नौ दो ग्यारह हो गया। भूषणाके उत्तर फिर युद्ध छिड़ा, इस बार भी मुसलमानोंकी हार हुई। बक्सअलीने भाग कर जान बचाई।

मुर्शिदाबादमें यह संवाद पहुंचने पर मुर्शिदकुलीने सिंहरामके अधीन बहुत-सी सूबादारी सेना और रानी-भवानीके वंशके प्रतिष्ठाता रघुनन्दनके विश्वस्त कर्मचारी दयारामके अधीन एक दल जमींदारी सेना जल और स्थलपथसे सीतारामके विरुद्ध भेजी गई। इस बार चारों ओरके सीतारामके पतनाकांक्षी जमींदार भीतर ही भीतर उनके विरुद्ध कार्रवाई कर रहे थे। शत्रुकी गति-विधिके ऊपर लक्ष्य रखनेके लिये सीतारामने जो सब चर नियुक्त किये थे, उन्हें भी इन लोगोंने रिश्वत दे कर काबूमें कर लिया था। अतः सीतारामके यह संवाद पानेके बहुत पहले ही नवाबी सेना बे-रोकटोक भूषणा और महम्मदपुरके पास आ धमकी। सम्मुख युद्धमें प्रवृत्त न हो कर नवाब पक्षवालोंने इस बार सीतारामके साथ भेद-नीतिका पन्थ अवलम्बन किया। बड़ी धूर्त्तता-से उन लोगोंने महावीर मेनाहातीकी हत्या की। उस समय सीताराम भूषणामें थे। बन्धु, बांधव और सेना-पति मेनाहातीके मारे जाने पर बड़े दुःखित हुए। मेना-हातीकी मृत्युके तीन दिन बाद सीतारामने सङ्कल्प किया, कि वे ससैन्य भूषणा छोड कर महम्मदपुर चले आवेंगे। किन्तु यह संवाद चाहे जिस तरह हो नबाब-

के कानोंमें पहुंचा। वे लोग बिलकुल तैयार हो रहे।

रातको सीताराम भूषणाके दुर्गसे निकले। आध मील आने पर एक नदी मिली। कुछ सेना नदी पार कर गई और कुछ पार करना चाहती ही थी, इसी समय सामने और पीछेसे सूबेदारी और जमींदारी सेनाने उन्हें घेर लिया। जो सब सेना नदीके दूसरे किनारे थी, उनके आने तक सीताराम युद्ध करते रहे। अंधेरी रातको शत्रु-मित्र पहचानना मुश्किल था। युद्ध घमासान चलने लगा। बकर, फ़रहाद, फकीर और अर्मान बेगको असामान्य रणकौशल और सीतारामके अतुल पराक्रमसे मुगलसेना हार खा कर भाग गई। विजयी सीतारामने आ कर महम्मदपुरमें प्रवेश किया। किन्तु इस युद्धमें उनका प्रभूत बलक्षय और युद्धोपकरण विनष्ट हुआ।

चारों ओरके जमींदारोंने सीतारामका विनाश करनेका दृढ सङ्कल्प कर लिया। रसद संग्रहका उपाय तक भी बंद हो गया। सीताराम किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये। इस समय मुसलमान सेनाने हठात् आ कर महम्मदपुर घेर लिया। ढाका और मुर्शिदाबादकी सेनाने आ कर उनकी मदद की।

इस प्रकार अतर्कित भावसे आक्रान्त हो सीताराम सहोदरोपम विश्वस्त सेनापतियोंके साथ प्राणपणसे युद्ध करने लगे। इस युद्धमें कमान, बंदूक, गुलाल, तीर, असि, बल्लम, बर्छा आदि काममें लाये गये थे। कहते हैं, कि स्वयं रानीने गुरुदेवकी बगलमें खडी हो कर कामान दागी थी। किन्तु अगणित नवाब सेनाके सामने मुट्ठी भर सेना कब तक ठहर सकती थी। धीरे धीरे एक एक कर सीतारामकी सेना और सेनापति पड़ने लगे, जब तक अस्त्र रहा, जब तक हाथको कुछ मिलता गया, तब तक महावीर सीतारामके सामने कोई भी अग्रसर नहीं हो सका। अन्तमें वे मल्लयुद्धमें प्रवृत्त हुए। बहुतसे मुसलमान वीरोंने आ कर उन्हें पकड़ लिया। इस प्रकार राजा सीताराम बन्दी हुए।

बन्दी अवस्थामें सीताराम मुर्शिदाबाद लाये गये। इसके बाद उनके परिणाम सम्बन्धमें नाना प्रकारकी किंवदन्ती प्रचलित है। किन्तु उनके श्राद्धोपलक्षमें उनके पुत्र बलराम दासने जो सब जमीन दान की थी, उसकी सनद देख कर यहां तक ठीक ठीक जाना जा सकता है, कि न कि महम्मदपुरमें न राढमें,-- मुर्शिदाबादमें ही सीतारामका देहान्त हुआ।

राजनैतिक क्षेत्रमें सीतारामका आसन ऊंचा था। देश जब मुसलमानी अत्याचारसे तंग तंग आ रहा था, मुसलमानोंकी छाया छूनेसे भी जब हिन्दूको स्नान करना होता था,—तब भी सीताराम मुसलमानोंको प्राणसे चाहते थे तथा हिन्दूमुसलमानकी धर्मगत पृथक्ता ठीक रहने पर भी उन्होंने दोनोंके जातिगत हिंसाद्वेष आदि दोषोंका निराकरण करनेमें प्राणपणसे चेष्टा की है। केवल यही नहीं, वे हिन्दूके विभिन्न धर्ममत तथा साम्प्रदायिकता जातिभेदकी छोटी गण्डी पार कर बहुत ऊपर चढ गये थे। उनके देवालयमें शिवमूर्तिकी बगलमें ही राधाकृष्णका विग्रह स्थापन, उनके सैन्यदलमें ब्राह्मण, चंडाल, हाडी, डोमका समान अधिकार, उनकी देवोत्तर जमीनमें ब्राह्मणकायस्थ शूद्रकी विभिन्नताका नाश— ये सब उनको सर्वत्र समान दृष्टिका परिचय देते हैं।

कायस्थ-समाजकी उन्नति करनेके लिये भी सीतारामने कोई कसर उठा नहीं रखी। यशोहरके अन्तर्गत चांचडा-राजकी प्रजा पीताम्बरने इसके परिवारकी किसी रमणीको मुसलमान धर्ममें दीक्षित किया। चांचडाराजके समाजका आदमी होने पर भी चांचडाराजने इस अपराधके लिये पीताम्बरको स्थानमें लेना नहीं चाहा। निरुपाय पीताम्बरने उदार हृदयवाले राजा सीतारामकी शरण ली। सीतारामने स्वसमाज ले कर उनके घर भोजन किया और पीछे समाजमें ले लिया। उत्तरराढ़ी और बङ्गज कायस्थोंमें वैवाहिक आदान-प्रदान स्थापन करनेके लिये भी सीतारामने यथेष्ट चेष्टा की थी।

उनके समय राज्यमें शिल्प-वाणिज्यकी भी यथेष्ट उन्नति हुई थी। उस समय इङ्गलैण्डमें भी कागज बनानेकी कलका आविष्कार नहीं हुआ था, किन्तु पाट, कपड़ा और पुराना कागज सडा कर यहां एक प्रकारका कागज तैयार किया जाता था। उसका नाम था भूषणाई कागज। इस कागजकी लंबाई २०।२२ इञ्च और

चौड़ाई १०।१२ इञ्च थी। रंग सफेद और पीला होता था। सबसे पहले भूषणामें प्रस्तुत होनेके कारण कागजका 'भूषणाई' नाम रखा गया था। वस्त्र-शिल्पकी भी बड़ी उन्नति हुई थी। सीतारामके अमलमें सनतूत और कपासकी खेती अधिक होती थी तथा जगह जगह रेशमी वस्त्र, सूती वस्त्र, रंगीन साड़ी और छींट बनती थी। सूत्रधर और कर्मकारका व्यवसाय भी जोरों चलता था। गाड़ी, पालकी, नाव, बकस, सिन्धुक आदि, कटारी, सड़की, बल्लम, खड्ग, खुर, छुरी, कमान, बन्दूक आदि तथा नाना प्रकारके कारुकार्यखचित स्वर्णरौप्यके आभूषण तथा पात्र बनाये जाते थे। यहांकी काली सुराही आदि यूरोपमें भी भेजी जाती थी। युद्धका बारूद गोला आदि महम्मदपुरमें ही बनता था। पटसन, रुई, नाना प्रकारकी साकसब्जी, चावल, दाल आदि यहां बहुतायतसे उत्पन्न होता था।

सीतालोष्ठ (सं० क्ली०) जुते हुए खेतका मिट्टीका ढेला।

सीतावट (सं० पु०) प्रयाग और चित्रकूटके बीच एक स्थान जहां वटवृक्षके नीचे राम और सीता दोनों ठहरे थे।

सीतावर (सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीतावल्लभ (सं० पु०) सीतापति, श्रीरामचन्द्र।

सीताहार (सं० क्ली०) एक प्रकारका पौधा।

सीतीनक (सं० पु०) १ मटर। २ दाल।

सीतीलक (सं० पु०) सतीलक, मटर।

सीत्कार (सं० पु०) सीत्-कृ भावे घञ्। वह शब्द जो अत्यन्त पीड़ा या आनन्दके समय मुंहसे सांस खींचनेसे निकलता है, सी सी शब्द, सिसकारी।

सीत्कार बाहुल्य (सं० पु०) वंशीके छः दोषोंमेंसे एक दोष। छः दोष ये हैं—सीत्कार, बाहुल्य, स्तब्ध, विस्तार, खंडित, लघु और अमधुर।

सीत्कृत (सं० क्ली०) सीत्-कृ-क्त। सीत्कार देखो।

सीत्य (सं० क्ली०) सीता-यत्। १ धान्य, धान। (त्रि०) सीतया समितं (नौ वयोधर्मेति। पा ४।४।९१) इति यत्। २ कृष्ट क्षेत्रादि, जोता हुआ खेत।

सीथ (हिं० पु०) पके हुए अन्नका दाना, भातका दाना।

सीद (सं० क्ली०) ब्याज पर रुपया देना, सूदखोरी।

सीदना (हिं० क्रि०) दुःख पाना, कष्ट झेलना।

सीदन्तीय (सं० क्ली०) सामभेद।

सीदी (हिं० पु०) शक जातिका मनुष्य।

सीध (सं० क्ली०) आलस्य, काहिली, सुस्ती।

सीध (हिं० स्त्री०) १ ठीक सामनेकी स्थिति, सन्मुख विस्तार या लम्बाई। २ लक्ष्य, निशाना।

सीधा (हिं० वि०) १ जो विना कुछ इधर उधर मुड़े लगातार किसी ओर चला गया हो, जो टेढ़ा न हो। २ जो किसी ओर ठीक प्रवृत्त हो, जो ठीक लक्ष्यकी ओर हो। ३ जो कुटिल या कपटी न हो, जो चालबाज न हो, भोला भाला। ४ शान्त और सुशील, शिष्ट, भला। ५ जो नटखट या उग्र न हो, जो बदमाश न हो, शान्त प्रकृतिका। ६ जो दुर्बोध न हो, जो जल्दी समझमें आवे। ७ दहिना, बांयाका उलटा। ८ जिसका करना कठिन हो, सुकर, आसान। (क्रि० वि०) ९ ठीक सामनेकी ओर, सम्मुख। (पु०) १० विना पका हुआ अन्न। ११ वह विना पका हुआ अनाज जो ब्राह्मण या पुरोहित आदिको दिया जाता है।

सीधापन (हिं० पु०) सीधा होनेका भाव, सिधाई, सरलता, भोलापन।

सीधु (सं० पु०) शीधु पृषोदरादित्वात् शस्य स। मद्यविशेष, गुड़ या ईखके रससे बना मद्य, गुड़की शराब। आसव, अरिष्ट, सुरा आदि भेदसे मद्य बहुत प्रकारका होता है। वैद्यकमें लिखा है, कि सीधु दो प्रकारका होता है, पक्वरससीधु और अपक्वरससीधु। प्रस्तुत प्रणाली—इक्षुरस सिद्ध कर जो सीधु तैयार होता है, उसे पक्वरससीधु और अपक्व इक्षुरस द्वारा जो सीधु तैयार होता है, उसे सीतरससीधु कहते हैं।

पक्वरससीधु—श्रेष्ठगुणदायक, स्वर और वर्णप्रसादक, अग्निवर्द्धक, बलकारक, वायु और पित्तवर्द्धक, सद्यःस्निग्धकारक, रुचिजनक, विबन्ध, मेद, शोष, अर्शः, शोथ, उदर और कफरोगनाशक। सीतरससीधु—पक्वरससीधुसे अल्पगुणदायक, विशेषतः लेखनगुणयुक्त।

सीधुगन्ध (सं० पु०) वकुल, मौलसिरी।

सीधुपर्णी (सं० स्त्री०) काश्मरीवृक्ष, गम्भारी।

सीधुपुष्प (सं० पु०) १ कदम्ब, कदम। २ वकुल, मौलसिरी।

सीधुपुष्पी (सं० स्त्री०) धातकी, धव, धौ।
सीधुरस (सं० पु०) आम्रवृक्ष, आमका पेड़।
सीधुराक्ष (सं० पु०) मातुलुङ्गवृक्ष, बिजौरा नीबू।
सीधुराक्षिक (सं० क्ली०) कसीस।
सीधुवृक्ष (सं० पु०) स्नुही वृक्ष, थूहर।
सीधुसंज्ञ (सं० पु०) वकुल वृक्ष, मौलसिरी।
सीधे (हिं० क्रि० वि०) १ सीधमें, बराबर सामनेकी ओर, सम्मुख। २ बिना कहीं मुड़े या रुके। ३ मुलायमियतसे, नरमीसे। ४ शिष्टताके साथ, शान्तिके साथ। ५ बिना और कहीं होते हुए।
सीध्र (सं० क्ली०) अपान, मलद्वार, गुदा।
सीन (अं० पु०) १ दृश्य, दृश्यपट। २ थियेटरके रंगमंचका कोई परदा जिस पर नाटकगत कोई दृश्य चित्रित हो।
सीनरी (अं० स्त्री०) प्राकृतिक दृश्य।
सीना (हिं० क्रि०) १ कपड़े, चमड़े आदिके दो टुकड़ोंको सूईके द्वारा तागा पिरो कर जोड़ना, टांकोंसे मिलाना या जोड़ना, टांका मारना। (पु०) २ एक प्रकारका कीड़ा जो ऊनी कपड़ोंको काट डालता है, सीवां। ३ एक प्रकारका रेशमका कीड़ा, छोटा पाट।
सीना (फा० पु०) वक्षस्थल, छाती।
सीनातोड़ (हिं० पु०) कुश्तीका एक पेच। जब पहलवान अपने जोड़की पीठ पर रहता है, तब एक हाथसे वह उसकी कमर पकड़ता है और दूसरे हाथसे उसके सामनेका हाथ पकड़ और खींच कर झटकेसे गिराता है।
सीनापनाह (फा० पु०) जहाजके निचले खंडमें लंबाईके बल दोनों ओरका किनारा।
सीनाबंद (फा० पु०) १ अंगिया, चोली। २ गरेबानका हिस्सा। ३ वह घोड़ा जो अगले पैरोंसे लंगड़ाता हो।
सीनाबांह (हिं० पु०) एक प्रकारकी कसरत जिसमें छाती पर थाप देते हैं।
सीनियर (अं० वि०) १ वयस्क, बड़ा। २ श्रेष्ठ, पदमें ऊंचा।
सीनी (फा० स्त्री०) तश्तरी, थाली।
सीप (सं० पु०) १ तर्पणार्थ जलपात्र, वह लम्बोतरा पात्र जिसमें देवपूजा या तर्पण आदिके लिये जल रखा जाता है। २ तालके सीपका संपुट जो चम्मच आदिके समान काममें लाया जाता है।
सीप (हिं० पु०) १ कड़े आवरणके भीतर बंद रहनेवाला शंख, घोंघे आदिकी जातिका एक जलजंतु जो छोटे तालाबों और झीलोंसे ले कर बड़े बड़े समुद्रों तकमें पाया जाता है, सीपी, सितुही। विशेष विवरण शुक्ति शब्दमें देखो।
२ सीप नामक सामुद्री जलजन्तुका सफेद कड़ा, चमकीला आवरण या संपुट जो बटन, चाकूके बेंट आदि बनानेके काममें आता है।
सीपसुत (सं० पु०) मोती।
सीपिज (हिं० पु०) मोती।
सीपी (हिं० स्त्री०) सीप देखो।
सीवी (हिं० स्त्री०) वह शब्द जो पीड़ा या अत्यन्त आनन्दके समय मुंहसे सांस खींचनेसे उत्पन्न होता है, सी-सी शब्द, सिसकारी।
सीमा (हिं० पु०) दहेज।
सीमन् (सं० पु०) सीयते इति सि (नामन् सीमन् व्योमन्निति। उण् ४।१५०) इति मनिन् प्रत्ययेन साधुः। १ किसी प्रदेश या वस्तुके विस्तारका अन्तिम स्थान, सिवाना। पर्याय—मर्यादा, अवधि, आघाट। २ स्थिति। (माघ ३।५७) ४ क्षेत्र। ५ अण्डकोष। ६ वेला।
सीमन्त (सं० पु०) १ केशका वर्त्म, स्त्रियोंकी मांग। सीम-अन्त संधि हो कर सीमान्त हो सकता था, किन्तु 'सीमन्तः केशवेशेषु' इस सूत्रके अनुसार केशविन्यास अर्थमें निपातप्रयुक्त यह पद सिद्ध हुआ। २ संस्कार विशेष, हिन्दुओंमें एक संस्कार जो प्रथम गर्भस्थितके चौथे, छठे या आठवें महीनेमें किया जाता है। सीमन्तोन्नयन देखो।
३ प्रत्यङ्गविशेष। वैद्यकमें लिखा है, कि सीमन्त १४ हैं। यथा—गुल्फदेशमें १, जानुमें १ और वङ्क्षणमें १, इसी प्रकार दूसरे पदमें ३ और दोनों बाहुमें ६ करके ६, त्रिकदेशमें १ और मस्तकमें १, यही १४ सीमन्त हैं। अस्थिसंघात जितने हैं, सीमन्त भी उतने ही हैं। किसीके मतसे अस्थिसंघात १८ हैं और किसीके मतसे ३०६। किन्तु शल्यतन्त्रके मतसे ३०० हैं। इनमें और पादमें १२० खण्ड, श्रोणी, पार्श्व, पृष्ठ, उदर और वक्ष इन सब स्थानोंमें ११७, ग्रीवाके ऊपर ६३, पैरकी उंगलियोंमेंसे प्रत्येकमें तीन करके १५, तलकूर्च्च और गुल्फदेशमें

कुल मिला कर १०, पार्ष्णिदेशमें १, जङ्घामें २, जानु और ऊरुप्रदेशमें एक एक, इसी प्रकार प्रति सक्थिमें ३० करके ६०, दोनों बाहुमें भी इसी प्रकार ६०, कटिदेशमें ५, उनमेंसे गुह्य, योनि और दोनों नितम्बमें ४ तथा अवशिष्ट एक कटिदेशके निम्न भागमें त्रिकस्थानमें अवस्थित, प्रत्येक पार्श्वमें ३६, पृष्ठमें ३०, वक्षमें ८, अक्ष नामक २ खण्ड, ग्रीवादेशमें ६ खण्ड, कण्ठमें ४, दोनों हनूमें २, दन्तमें ३२, नासिकामें ३, तालुमें १, गण्ड, कर्ण और शङ्खमें एक एक खण्ड तथा मस्तकमें ६ खण्ड, ये सब अस्थिसंघात सीमन्तक कहलाते हैं। (सुश्रुत शारीरस्था०)

भावप्रकाशमें लिखा है, कि अस्थिका मिलनस्थान सीवित है अर्थात् सिलाई की जाती है, इसीसे उसका नाम सीमन्त हुआ है। (भावप्र०)

सीमन्तक (सं० क्ली०) सीमन्ते कायति शोभते इति कै-क। १ सिन्दूर। (पु०) २ नरकावास। ३ मांग निकालनेकी क्रिया। ४ जैनोंके सात नरकोंमेंसे एक तरफ का अधिपति। ५ एक प्रकारका मानिक या रत्न।

सीमन्तवान् (सं० त्रि०) जिसे मांग हो, जिसकी मांग निकली हो।

सीमन्तित (सं० त्रि०) सीमन्तोऽस्य सञ्जातः तारकादित्वादितच्। मांग निकला हुआ।

सीमन्तिनी (सं० स्त्री०) सीमन्तोऽस्या अस्तीति इनि-ङीप्। नारी, स्त्री। स्त्रियां मांग निकालती हैं, इससे उन्हें सीमन्तिनी कहते हैं।

सीमन्तोन्नयन (सं० क्ली०) सीमन्तस्य उन्नयनं उत्तोलनं यत्र। संस्कारविशेष, दश प्रकारके संस्कारोंमें-से तीसरा संस्कार। यह संस्कार गर्भावस्थामें करना होता है। गर्भाधान संस्कारके बाद गर्भनिश्चय होने से पुंसवन संस्कार करके पीछे सीमन्तोन्नयन संस्कार करना होता है। इस संस्कारमें सीमन्त अर्थात् वधू की मांग उठाई जाती है, इसलिये इस संस्कारका नाम सीमन्तोन्नयन हुआ है। ब्राह्मणादि वर्णमें यह संस्कार प्रायः विलुप्त हो गया है, पूर्ववङ्गमें कहीं कहीं यह संस्कार अब भी होते देखा जाता है।

यह संस्कार गर्भके चौथे, छठे या आठवें मासमें करना होता है। गर्भके तृतीय मासमें पुंसवन संस्कार करके चतुर्थ मासमें यह संस्कारकार्य करे। यदि इसमें असमर्थ हो, तो छठे मासमें, इसमें भी असमर्थ होनेसे अष्टम मासमें कर सकते हैं। चौथे, छठे और आठवें इन तीन महीनोंमेंसे किसी महीनेमें अवश्य करना चाहिये। इसी संस्कारकार्य द्वारा जातबालकका गर्भवासजनित दोष दूर होता है।

यदि चौथे, छठे या आठवें महीनेमें भी यह सीमन्तोन्नयन न किया जाय, तो नवें मासमें प्रायश्चित्त करके यह संस्कार करे। यह संस्कार किये बिना यदि बालक जन्म ले, तो उस बालकको गोद पर रख कर यह संस्कार करे। ऐसा भी यदि नहीं किया जाय, तो नामकरण और अन्नप्राशनादि संस्कारकालमें यह संस्कार करनेके बाद दूसरा संस्कार करे। पूर्ववर्त्ती संस्कार किये बिना परवर्त्ती संस्कार न होगा। फलतः जब तक बालक जन्म न ले, तब तक सीमन्तोन्नयनका काल है। यदि किसी स्त्रीका सीमन्तोन्नयन संस्कार न हो कर गर्भ विनष्ट हो जाय और फिरसे उसके गर्भ होने पर गर्भस्पन्दनके बाद ही यह संस्कार करे। इसमें उक्त काल नियम आदिका विचार नहीं करना होता।

पहले कहा जा चुका है, कि पुंसवन संस्कारके बाद यह संस्कार कर्त्तव्य है। यदि पुंसवन संस्कार न किया जाय, तो जिस दिन सीमन्तोन्नयन होगा, उस दिन महाव्याहृतिहोमरूप प्रायश्चित्त करके पहले पुंसवन संस्कार करे। ये सब संस्कार पिताको करना कर्त्तव्य है। पिता यदि नहीं कर सके, तो भाई आदि इसका अनुष्ठान करें। (संस्कारतत्त्व)

संस्कार कार्यमात्र ही ज्योतिषोक्त शुभदिन देख कर करना होता है। अतएव यह संस्कार चतुर्थादि तीन मासमें विधेय होने पर भी उक्त सभी मासोंमें जो दिन शुभ होगा, उसी दिन यह संस्कार करना होता है। ज्योतिष-मतसे शुभदिनमें—मासाधिपति बलवान् तथा चन्द्र शुभग्रह द्वारा दृष्ट होने पर उक्त मासमें रिक्ता भिन्न तिथिमें, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, हस्ता, मूला, श्रवणा, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुष्या, आर्द्रा और अनुराधा नक्षत्रमें, मकर और मेष भिन्न लग्नमें, मिथुन, तुला और कन्याराशिके नवांशमें

रवि, मङ्गल और वृहस्पतिवारमें, युतयामित्रवेध, दश-योगभङ्ग, दिनदग्धा, मासदग्धा, चंद्रदग्धा, त्र्यहस्पर्श, व्याघातादि निषिद्ध योग भिन्न दिनमें सीमन्तोन्नयन प्रशस्त है। लग्नके नवम, पञ्चम, चतुर्थ, सप्तम और दशममें शुभग्रह रहनेसे तथा तृतीय, षष्ठ, दशम और एकादशमें पापग्रह रहनेसे चंद्र तारा शुद्ध होने पर यह संस्कार करना आवश्यक है।

शुभदिनमें प्रातःकालमें प्रातःकृत्यादि समाप्त करके षोडशमातृकापूजा, वसुधारा और वृद्धिश्राद्ध करना होगा। इसके बाद यदि गर्भाधान और पुंसवन संस्कार न हो, तो उसके प्रायश्चित्तस्वरूप शाट्यायन-होम करके यह संस्कारकार्य करे। अनन्तर विरूपाक्ष जप पर्यन्त कुशण्डिका शेष करके कृतस्नाना वधूको अग्निके पश्चिम तथा अपने दक्षिण उत्तराग्रकुशा पर पूर्वमुखसे बैठावे और संस्कारपद्धतिके अनुसार प्रकृत कर्म समाप्त करे।

सामवेदीय, यजुर्वेदीय और ऋग्वेदीयके सीमन्तो न्नयनमें मंत्रकी कुछ कुछ भिन्नता है। होमादि सभी कार्य पद्धतिमें जिस प्रकार लिखे हैं, उसीके अनुसार करने होंगे।

सीमन्धरस्वामी (सं० पु०) जैनाचार्यभेद।

सीमलिङ्ग (सं० क्ली०) सीमाका चिह्न, हदका निशान।

सीमा (सं० स्त्री०) सीयते इति सि (नामन् सीमन् व्योमन्निति। उण् ४।१५०) इति मनिन् प्रत्ययेन स घु (डाबु भाभ्यामन्यतरस्या। पा ४।१।१३) इति पाक्षिकी डाप्। १ किसी प्रदेश या वस्तुके विस्तारका अन्तिम स्थान, हद, सरहद। जिसकी जो अधिकृत भूमि है, उसके अन्त भागको सीमा कहते हैं। शास्त्रमें लिखा है, कि सीमा-हरण नहीं करना चाहिये, सीमाहरणसे सब प्रकारका पातक होता है। सीमाविवाद शब्द देखो। २ स्थिति। ३ क्षेत्र। ४ वेला, समुद्रवेला, तीर। ५ मुष्क, अण्डकोष।

सीमाकृषाण (स० त्रि०) क्षेत्रकर्षक, खेत जोतनेवाला।

सीमागिरि (सं० पु०) सीमापर्वत। सीमान्तप्रदेशमें जो सब पर्वत अवस्थित हैं, उन्हें सीमापर्वत कहते हैं।

सीमातिक्रम (सं० पु०) सीमायाः अतिक्रमः। सीमाका अतिक्रम।

सीमातिक्रमणोत्सव (सं० पु०) युद्धयात्रामें सीमा पार करनेका उत्सव, विजययात्रा, विजयोत्सव। प्राचीन कालमें विजया-दशमीको क्षत्रिय राजा अपने राज्यकी सीमा लांघते थे।

समाधिप (सं० पु०) सीमायाः अधिपः। सीमाध्यक्ष।

सीमान्त (सं० पु०) १ सीमाका अन्त, वह स्थान जहां सीमाका अंत होता हो, जहा तक हद पहुंचती हो, सरहद। २ गांवकी सीमा। ३ गावके अन्तर्गत दूरकी जमीन, सिवाना।

सीमान्तपूजन (सं० पु०) वरका पूजन या अगवानी जब वह बारातके साथ गांवकी सीमाके भीतर पहुंचता है।

सीमान्तबन्ध (स० पु०) आचरणका नियम या मर्यादा।

सीमान्तर (सं० क्ली०) अपर सीमा, भिन्न सिवाना।

सीमापहारिन् (सं० त्रि०) सीमा अपहरणकारी। सीमा-पहर्त्ता इहकालमें राजद्वारमें दण्ड तथा परकालमें नरक भोग करता है।

सीमापाल (सं० पु०) सीमारक्षक, सीमापालक।

सीमाब (फा० पु०) पारा।

सीमाबद्ध (सं० पु०) रेखासे घिरा हुआ, हदके भीतर किया हुआ।

सीमालिङ्ग (सं० क्ली०) सीमास्थित चिह्न। सीमास्थल पर जो सब चिह्न रहते हैं, उसे सीमालिङ्ग कहते हैं।

सीमाविवाद (सं० पु०) सीमा-सम्बन्धी विवाद, सरहद-का झगड़ा, अठारह प्रकारके व्यवहारों या मुकदमोंमेंसे एक। स्मृतियोंमें लिखा है, कि यदि दो गावोंमें सीमा सम्बन्धी झगडा हो, तो राजाको सीमा निर्देश करके झगड़ा मिटा डालना चाहिए। इस कामके लिये जेठका महीना श्रेष्ठ बताया गया है। सीमास्थल पर बड़, पीपल, साल, पलास आदि बहुत दिन टिकनेवाले पेड़ लगाने चाहिए। साथ ही तालाब कूआं आदि बनवा देने चाहिए, क्योंकि ये सब चिह्न शीघ्र मिटनेवाले नहीं हैं।

सीमावृक्ष (सं० पु०) वह वृक्ष जो सीमा पर लगा हो, हद बतानेवाला पेड़। मनुसंहितामें सीमा स्थान पर बहुत दिन टिकनेवाले पेड़ लगानेका विधान है। बहुधा सीमा विवाद सीमा परका वृक्ष देख कर मिटाया जाता था।

सीमासन्धि (सं० स्त्री०) दो सीमाओंका एक जगह मिलान।

सीमासेतु (सं० पु०) वह पुश्ता या मेंड जो सीमा निर्देश करता है, हदबंदी।

सीमिक (सं० पु०) स्यमु शब्दे (स्यमेः सम्प्रसारणञ्च। उणा २।४३) इति किनन्, धातो सम्प्रसारणं दीर्घश्च। १ एक प्रकारका वृक्ष। २ दीमक, एक प्रकारका छोटा कीड़ा। ३ दीमकोंका लगाया हुआ मिट्टीका ढेर।

सीमीक (सं० पु०) सीमिक देखो।

सीमोल्लङ्घन (सं० पु०) १ सीमाका उल्लंघन करना, सीमाको लांघना, हद पार करना। २ विजययात्रा। ३ मर्यादाके विरुद्ध कार्य करना।

सीय (हिं० स्त्री०) सीता, जानकी।

सीयक (हिं० पु०) मालवाके परमार राजवंशके दो प्राचीन राजाओंके नाम जिनमेंसे पहला दशवीं शताब्दी-के आरम्भमें और दूसरा ग्यारहवीं शताब्दीके आरम्भमें था। इसी दूसरे सीयकका पुत्र मुञ्ज था जो प्रसिद्ध राजा भोजका चाचा था।

सीर (सं० पु०) सी बन्धे (शुषिचिमिभ्यो दीर्घश्च। उणा २।२५) इति क्रन् दीर्घश्च। १ सूर्य। २ अर्क वृक्ष, आकका पौधा। ३ हल। ४ हल जोतनेवाला बैल।

सीर (हिं० स्त्री०) १ वह जमीन जिसे भूस्वामी या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो अर्थात् जिस पर उसकी निजकी खेती होती आ रही हो। २ वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारोंमें बंटती हो। ३ साझा, मेल। (पु०) ४ रक्तकी नाड़ी, रक्तकी नली। ५ चौपायोंका एक संक्रामक रोग। ६ पानीकी काट।

सीरक (सं० पु०) १ शिशुमार, सूंस। २ हल। ३ सूर्य।

सीरदेव—एक प्रसिद्ध वैयाकरण। ये परिभाषावृत्ति नामक व्याकरणके रचयिता थे। माधवीयधातुवृत्तिमें इसका उल्लेख मिलता है।

सीरधर (सं० पु०) १ हल धारण करनेवाला। २ बलराम।

सीरध्वज (सं० पु०) १ चन्द्रवंशीय राजविशेष, राजा जनक। विष्णुपुराणके मतसे इनके पिताका नाम ह्रस्वरोम और पुत्र भानुमान् था। ये पुत्रके लिये यज्ञभूमि कर्षण करते थे, इसलिये इन्हें सीता नामक कन्या उत्पन्न हुई थी।

भागवतके मतानुसार इनके पुत्र कुशध्वज थे। ये यज्ञार्थभूमि कर्षण करते थे, वह भूमि कर्षण या जोतते समय सीराग्रसे सीतादेवी उत्पन्न हुईं, इसीसे इनका नाम सीरध्वज हुआ। (भागवत ९।१३।१८) जनक देखो। २ बलराम।

सीरन (हिं० पु०) बच्चोंका पहनावा।

सीरनी (हिं० स्त्री०) मिठाई।

सीरपति (सं० पु०) हलाधिष्ठाता या स्वामी, कृषक।

सीरपाणि (सं० पु०) हलधर, बलदेव।

सीरभृत् (सं० पु०) १ हलधर, बलदेव। (त्रि०) २ हल धारण करनेवाला।

सीरवाह (सं० पु०) सीर-वह-अण्। १ हल धारण करनेवाला, हलवाहा। २ जमींदारकी ओरसे उसकी खेतीका प्रबन्ध करनेवाला कारिंदा।

सीरवाहक (सं० पु०) हलवाहक, हलवाहा, किसान।

सीरा (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम।

सीरा (हिं० पु०) १ पका कर मधुके समान गाढ़ा किया हुआ चीनीका रस, चाशनी। २ मोहनभोग। ३ चारपाईका वह भाग जिधर लेटनेमें सिर रहता है, सिरहाना।

सीरिन् (सं० पु०) हलधर, बलदेव।

सीरोसा (हिं० पु०) एक प्रकारकी मिठाई।

सील (हिं० स्त्री०) १ भूमिमें जलकी आर्द्रता, सीड़, तरी। (पु०) २ लकड़ीका एक हाथ लम्बा औजार जिस पर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती हैं।

सील (अं० पु०) १ मुद्रा, मुहर। २ एक प्रकारकी समुद्री मछली जिसका चमड़ा और तेल बहुत काममें आता है।

सीलन्ध (सं० पु०) मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। वैद्यकमें यह श्लेष्मावर्द्धक, वृष्य, पाकमें मधुर और गुरु, वातपित्तहर, हृद्य और आमवातकारक कही गई है।

सीलमावत् (सं० त्रि०) रज्जुभूत औषधि द्वारा जो बद्ध हो।

सीला (हिं० पु०) १ अनाजके वे दाने जो फसल कटने पर खेतमें पड़े रह जाते हैं और जिन्हें तपस्वी या गरीब लोग चुनते हैं, सिल्ला। २ खेतमें गिरे दानोंको चुन कर निर्वाह करनेकी मुनियोंकी वृत्ति। (वि०) ३ आर्द्र, गीला, तर।

सीवक (सं० त्रि०) सीवनकारी, सीनेवाला, सिलाई करनेवाला।

सीवड़ो (हिं० पु०) ग्रामका सीमान्त, सिवाना।

सीवन (सं० क्ली०) १ सूचीकर्म, सीनेका काम, सिलाई। पर्याय—सेवन, स्यूति, ऊति, स्युति। २ सीनेसे पड़ी हुई लकीर, कपड़ेके दो टुकड़ोंके बीचका सिलाईका जोड़। ३ संधि, दरार, दराज। ४ वह रेखा जो अण्ड कोशके बीचोबीचसे ले कर मलद्वार तक जाती है।

सीवना (हिं० पु०) १ सिवना देखो। (क्री०) २ सीना देखो।

सीवनी (सं० स्त्री०) सिव-उणुर् स्त्रियां ङीप्। वह रेखा जो लिङ्गके नीचेसे गुदा तक जाती है। सुश्रुतमें यह चार प्रकारकी कही गई है—गोफणिका, तुन्नसेवनी, वेल्लित और ऋजुग्रन्थि।

सींवी (हिं० स्त्री०) सींवी देखो।

सीस (सं० क्ली०) सीसक, सीसा।

सीस (हिं० पु०) १ मस्तक, माथा, सिर। २ कन्धा। ३ अन्तरीप।

सीसक (सं० क्ली०) सात धातुमेंसे एक धातु। सीसा नामकी धातु।

भावप्रकाशमें लिखा है, कि रमणीय सर्पकन्याको देखनेसे वासुकीका जो वीर्य स्खलित हुआ, उसीसे सर्वरोग-नाशक सीसककी उत्पत्ति हुई।

सीसकको शोधन और मारण करके औषधके काममें लाया होता है। अशुद्ध सीसकका व्यवहार करनेसे नाना प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होती है, इस कारण यथाविधान शोधन कर उसे काममें लावे।

शोधनप्रणाली—सीसकको अग्निकी आंचमें गला कर तेल, मट्ठा, कांजी, गोमूत्र और कुलथी कलायका काढ़ा तथा अकवनका दूध, इनमेंसे प्रत्येक द्रव्यमें यथाक्रम तीन तीन बार निक्षेप करनेसे यह शोधित होता है।

मारण-प्रणाली—पानके रससे मैनसिल पीस कर सीसेके ऊपर लेपन कर ३२ बार पुट-पाक करनेसे सीसा भस्म होता है।

अन्यविध—एक मिट्टीके बरतनमें सीसा रख कर अग्निमें उसे गला ले, पीछे उसके चौथाई भागके बराबर इमली और पीपलके पेड़की छालका चूर्ण डाले। अनन्तर उसे अग्नि पर रख कर एक पहर तक लोहेका हत्था चलाता रहे। ऐसा करनेसे सीसा भस्म होता है। इसके बाद उस भस्मके बराबर मैनसिल मिला कर इनो कांजो में पीसे और पीछे गजपुटमें पाक करे। इस प्रकार ६० बार पाक करनेसे, सीसा भस्म होता है।

मारित सीसेका गुण—लघु, सारक, रुक्ष, चक्षुका हितकारक, कुछ पित्तप्रकोपक तथा कुष्ठ, मेह, कफ, कृमि, पाण्डु और श्वासरोगनाशक। विशेषतः यह मेहरोगमें विशेष उपकारी है। चाहे कोई मेह क्यों न हो, इसका सेवन करनेसे जरूर फायदा दिखाई देता है। मारित सीसेका सेवन करनेसे सौ हाथीका बल आ जाता है, आयु और रतिशक्ति बढ़ती है, अग्निदीप्ति और व्याधिविनष्ट देहको पुष्टि होती है तथा मृत्यु पर्यन्त स्थगित रहती है।

सीसकभस्म—सीसेका पत्तर बना कर उसमें धवका पत्ता पीस कर लेप दे, पीछे अपामार्गक्षार चतुर्थांश मिला कर अड़ूसकी लकड़ीसे एक पहर तक मिलावे और अड़ूसके रसमें सात बार पुट दे, तो सिन्दूरके समान भस्म होता है; अथवा अड़ूसके पत्तोंके रसमें तीन बार गजपुट देनेसे सीसाभस्म होता है। यह वीर्य, आयु और कान्तिवर्द्धक तथा मेहनाशक होता है।

राजनिघण्टके मतसे—सीसक रांगेके समान गुणयुक्त, उष्ण, कफ और वातनाशक, अर्शोघ्न, गुरु, लेखन, वर्णनील, मृदु, स्निग्ध, निर्मल, गुरु और दोषसंशोधनमें उत्कृष्ट है।

सीसक पीटनेसे फैल सकता है और तारके रूपमें भी हो सकता है पर कुछ कठिनतासे। इसका रंग भी जल्दी बदला जा सकता है। इसकी चद्दरें, नलियां और बन्दूककी गोलियां आदि बनती हैं। इसका घनत्व ११.३७ और परमाणु मान २०६.४ है। सीसा दूसरे धातुओंके साथ बहुत जल्दी मिल जाता है और कई प्रकारकी मिश्र धातुएं बनानेमें काम आता है। छापेकी टाइपकी धातु इसीके योगसे बनती है।

सीसज (सं० पु०) सिन्दूर।

सीसताज (फा० पु०) वह टोपी या ढक्कन जो शिकार

पकड़नेके लिये पाले हुए जानवरोंके सिर चढ़ा रहता है और शिकारके समय खोला जाता है, कुलहा।

सीसताण (सं० पु०) अफगानिस्तान और फारसके बीचका प्रदेश, सीस्तान।

सीसत्रान (हिं० पु०) शिरस्त्राण, टोप।

सीसपत्र (सं० क्ली०) सीसक, सीसा धातु।

सीसपत्रक (सं० क्ली०) सीसक, सीसा धातु।

सीसफूल (हिं० पु०) सिर पर पहननेका फूलके आकारका एक गहना।

सीसम (हिं० पु०) शीशम देखो।

सीसमहल (अ० पु०) वह मकान जिसकी दीवारोंमें चारों ओर शीशे जड़े हों।

सीसर (सं० पु०) १ एक बालग्रह जिसका रूप कुत्तेका माना गया है। २ सरमा नामकी देवताओंकी कुतियाका पति।

सीसल (हिं० पु०) एक प्रकारका पेड़ जो केवड़े या केतकीकी तरहका होता है और जिसका रेशा बहुत काम आता है, रामबांस।

सीसा (हिं० पु०) एक मूल धातु जो बहुत भारी और नीलापन लिये काले रंगकी होती है।

विशेष विवरण सीसक शब्दमें देखो।

सीसी (हिं० स्त्री०) १ पीड़ा या अत्यन्त आनन्दके समय मुंहसे सांस खींचनेसे निकला हुआ शब्द, शीत्कार, सिसकारी। २ शीतके कष्टके कारण निकला हुआ शब्द।

सीसोपधातु (सं० पु०) सिन्दूर, ईंगुर।

सीसौदिया (हिं० पु०) सीसोदिया देखो।

सीह (हिं० स्त्री०) १ महक, गंध। २ साही नामक जन्तु, सेही।

सीहगोस (फा० पु०) एक प्रकारका जन्तु जिसके कान काले होते हैं।

सिहुण्ड (सं० पु०) सेहुण्डवृक्ष, स्नुही, थूहर।

सुंखड़ (हिं० पु०) साधुओंका एक सम्प्रदाय।

सुंघनी (हिं० स्त्री०) तंबाकूके पत्तेकी खूब बारीक बुकनी जो सूंघी जाती है, हुलास, नस्य।

सुंघाना (हिं० क्रि०) आघ्राण कराना, सूंघनेकी क्रिया कराना।

सुंडस (हिं० पु०) लदुये गधेकी पीठ पर रखनेकी गद्दी।

सुंडा (हिं० पु०) लदुए गधेकी पीठ पर रखनेकी गद्दी या गद्दा।

सुंडाली (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली।

सुंडी बेंत (हिं० पु०) एक प्रकारका बेंत जो बंगाल, आसाम और खसियाकी पहाड़ी पर पाया जाता है।

सुंधावट (हिं० स्त्री०) सोंधे होनेका भाव, सोंधापन, सोंधी महक।

सुंधिया (हिं० स्त्री) १ एक प्रकारका ज्वर। २ गुजरातमें होनेवाली एक प्रकारकी वनस्पति जो पशुओंके चारेके काममें आती है।

सुंबा (हिं० पु०) १ इस्पंज। २ दागी हुई तोप या बंदूककी गरम नलीको ठंढा करनेके लिये उस पर डाला हुआ गीला कपड़ा, पुचारा। ३ तोपकी नली साफ करनेका गज। ४ लोहेका एक औजार जिससे लुहार लोहेमें सूराख करते हैं।

सुंबी (हिं० स्त्री०) छेनी जिससे लोहेमें छेद किया जाता है।

सुंभी (हिं० स्त्री०) लोहा छेदनेका एक औजार जिसमें नोक नहीं होती।

सुंसारी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका लंबा काला कीड़ा जो अनाजके लिये हानिकारक होता है।

सु (सं० पु०) १ उत्कर्ष, उन्नति। २ सुन्दरता, खूबसूरती। ३ हर्ष, आनन्द, प्रसन्न। ४ समृद्धि। ५ कष्ट, तकलीफ। ६ पूजा। ७ अनुमति, आज्ञा। (त्रि०) ८ सुन्दर, अच्छा। ९ उत्तम, श्रेष्ठ। १० शुभ, भला। (सर्व०) ११ सो, वह।

सु प्रादि उपसर्गके मध्य एक उपसर्ग। यह उपसर्ग धातुके पहले रहनेसे इस उपसर्गके अनुसार धातुका अर्थ होता है। मुग्धबोधटीकामें दुर्गादासने पूजा, अनायास और अतिशय सु उपसर्गका यह तीन अर्थ किया है।

सुअनजर्द (फा० पु०) सोनजर्द देखो।

सुअर (हिं० पु०) सूअर देखो।

सुअरदंता (हिं० पु०) एक प्रकारका हाथी जिसके दांत पृथ्वीकी ओर झुके रहते हैं। ऐसा हाथी ऐबी समझा जाता है।

सुअवसर (सं० पु०) अच्छा अवसर, अच्छा मौका।
सुआ (हिं० पु०) सुग्गा देखो।
सुआद (हिं० पु०) स्मरण, याद।
सुआरव (सं० त्रि०) उत्तम शब्द करनेवाला, मीठे स्वरसे बोलने या बजनेवाला।
सुआसन (सं० पु०) बैठनेका सुन्दर आसन या पीढ़ा।
सुआहित (हिं० पु०) तलवारके ३२ हाथोंमेंसे एक हाथ।
सुई (हिं० स्त्री) सूई देखो।
सुईगांव—१ बम्बई प्रदेशके गुजरात विभागके पालनपुरके अन्तर्गत एक देशी सामन्तराज्य। इसके उत्तर और पूर्वमें वाऊ राज्य, दक्षिणमें वाड़वास राज्य तथा पश्चिममें लवणमय रणप्रदेश है। भूपरिमाण २२० मील है। यहांके राजवंश और वाऊ राज्यके राणा ज्ञाति-सम्पर्क हैं। करीब ५ सौ वर्ष पहले राणा सद्गाजिने अपने छोटे लड़के पञ्चाजिको इस प्रदेशका राज्यभार अर्पण किया। १६वीं सदीके प्रारम्भमें खोसा नामक दस्यु-जातिके साथ मिल कर सुईगाँवके सरदारोंने विशेष उपद्रव और अत्याचार करना शुरू किया। उसके प्रति-विधानके लिये १८२६ ई०में कर्नल माइलसने वहां दल-बलके साथ जा कर सरदार ठाकुरको कई शर्तोंमें आवद्ध किया था। तभीसे ये लोग शान्त हैं। इन्हें दत्तक लेनेका अधिकार नहीं है, ज्येष्ठ पुत्र ही राज्याधिकारी होते हैं।

२ उक्त सुईगांव राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ६´ उ० तथा देशा० ७१° २१´ पू०के मध्य विस्तृत है। उत्तर-गुजरातमें अंगरेज-शक्ति प्रतिष्ठित होनेके बादसे सुईगांवमें राजधानी बसाई गई थी। १८१९ ई०में यहां भयानक भूमिकम्प हुआ। तभीसे नगर और उसके आसपासके स्थान लवणमय हो गये। प्रायः १५ फुट जमीनके नीचे सभी जगह क्षारा जल निकलते देखा जाता है। पालनपुरके पालिटिकल सुपरिण्टेण्डेण्टकी देखरेखमें यह राज्य शासित होता है।
सुऊति (सं० स्त्री०) शोभनरक्षण, उत्तमरूप रक्षा।
सुक (हिं० पु०) १ शुक, तोता, कीर, सुग्गा। २ व्यास-पुत्र, शुकदेव मुनि। ३ एक राक्षस जो रावणका दूत था। ४ शिरीषवृक्ष, सिरसका पेड़।

सुकक्ष (सं० पु०) अंगिरा वंशमें उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेदके कई मन्त्रोंके द्रष्टा थे।
सुकङ्कवत् (सं० पु०) पर्वतभेद। यह पर्वत मेरुके दक्षिण पार्श्वमें अवस्थित है।
सुकचरण (हिं० पु०) संकोच, लज्जा।
सुकचर—कलकत्तासे उत्तर पाणिहाटी ग्रामके निकट गंगा-तीर पर अवस्थित एक गण्डग्राम।
सुकटि (सं० त्रि०) अच्छी कमरवाली जिसकी कमर सुन्दर हो।
सुकटु (सं० पु०) १ शिरीष वृक्ष, सिरसका पेड़। (त्रि०) २ अतिशय कटु, बहुत कड़ुआ।
सुकड़ना (हिं० क्रि०) सिकुड़ना देखो।
सुकण्टका (सं० स्त्री०) १ घृतकुमारी, घीकुआर। २ पिण्डीखजूर, पिण्डखजूर।
सुकण्ठ (सं० त्रि०) १ जिसका कण्ठ सुन्दर हो। २ जिसका स्वर मीठा हो, सुरीला। (पु०) ३ रामचन्द्रके सखा, सुग्रीव।
सुकण्ठी (सं० स्त्री०) गन्धर्वी। गन्धर्वियोंका कण्ठ-स्वर बहुत मीठा होता है।
सुकण्डु (सं० पु०) कण्डूरोग।
सुकथा (सं० स्त्री०) उत्तम कथा, सुवाक्य।
सुकन्द (सं० पु०) कसेरु।
सुकन्दक (सं० पु०) १ पलाण्डु, प्याज। २ वाराही-कन्द, गिर्थोली कन्द, गेंठी। ३ सुथालू। ४ धरणीकन्द। ५ महाभारतके अनुसार एक प्राचीन देशका नाम। ६ इस देशका निवासी। (भारत भीष्मपर्व ६।५८)
सुकन्दकरण (सं० पु०) श्वेतपलाण्डु, प्याज।
सुकन्दन (सं० पु०) १ वैजयन्ती तुलसी। २ वर्वर, बबई तुलसी।
सुकन्दा (सं० स्त्री०) १ लक्ष्मणाकन्द, पुत्रदा। २ वन्ध्याकर्कोटकी, बांझ ककोड़ा।
सुकन्दिन् (सं० पु०) सूरण, जमींकन्द, ओल।
सुकन्यक (सं० त्रि०) जिसे सुन्दरी कन्या हो।
सुकन्या (सं० स्त्री०) १ शर्याति राजाकी कन्या और च्यवन ऋषिकी पत्नी। (भागवत ९।३ अ०) २ शोभना कन्या, सुन्दरी कन्या।

सुकपर्दा (सं० स्त्री०) शोभनकवरीयुक्ता स्त्री, वह स्त्री जिसने उत्तमतासे केश बांधे हो। (शुक्लयजु० ११।५६)

सुकपिच्छक (हिं० पु०) गंधक।

सुकपोल (सं० त्रि०) शोभन कपोलविशिष्ट, जिसका कपोल सुन्दर हो।

सुकमल (सं० क्ली०) उत्तम पद्म, अच्छा कमल।

सुकर (सं० त्रि०) सु कृ (ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्। पा ३।३।१२३) इति खल्। सुखकर, सुसाध्य, जो अनायास किया जा सके।

सुकरता (सं० स्त्री०) १ सुकरका भाव, सहजमें होनेका भाव, सौकर्य। २ सुन्दरता।

सुकरा (सं० स्त्री०) सुशीला गाभी, अच्छी और सीधी गौ।

सुकरीहार (हिं० पु०) गलेमें पहननेका एक प्रकारका हार।

सुकर्ण (सं० त्रि०) सु शोभनौ कर्णौ यस्य। शोभनकर्णविशिष्ट, जिसके कान सुंदर हों।

सुकर्णक (सं० पु०) १ हस्तीकंद, हाथीकंद। (राजनि०) (त्रि०) २ सुन्दर कर्णविशिष्ट, जिसके कान सुंदर हों, अच्छे कानोंवाला।

सुकर्णराज—सह्याद्रिवर्णित राजभेद। (सह्या० ३१।३२)

सुकर्णिका (सं० स्त्री०) १ मूषिककर्णी, मूसाकानी। २ महाबला।

सुकर्णी (सं० स्त्री०) इंद्रवारुणी, इंद्रायन।

सुकर्म (सं० पु०) १ सत्कर्म, अच्छा काम। २ देवताओंको एक श्रेणि या कोटि।

सुकर्मन् (सं० पु०) १ विषकम्भ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे सातवां योग। ज्योतिषमें यह योग सब प्रकारके कार्योंके लिये शुभ माना जाता है। कोष्ठीप्रदीपमें लिखा है, कि जो बालक इस योगमें जन्म लेता है, वह परोपकारी, कलाकुशल, यशस्वी, सत्कर्म करनेवाला और सदा प्रसन्न रहनेवाला होता है। २ उत्तम कर्म करनेवाला मनुष्य। ३ विश्वकर्मा। ४ विश्वामित्र।

सुकर्म्मिन् (सं० त्रि०) १ अच्छा काम करनेवाला। २ धार्मिक, पुण्यवान्। ३ सदाचारी।

सुकल (सं० त्रि०) १ दाता और भोक्ता, जो अपनी सम्पत्तिका उपयोग दान और भोगमें करता है। २ मधुर पर अस्फुट शब्द करनेवाला। ३ अविकल।

सुकल (हिं० पु०) एक प्रकारका आम जो सावनके अन्तमें होता है।

सुकल्प (सं० त्रि०) १ अति निपुण। (भाग० १०।१४।१७) (पु०) २ उत्तम कल्प।

सुकल्पित (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे कल्पित।

सुकवाना (हिं० क्रि०) आश्चर्यान्वित होना, अचम्भेमें आना।

सुकवि (सं० पु०) सु शोभनः कविः। उत्तम काव्यकर्त्ता, अच्छा कवि।

सुकष्ट (सं० त्रि०) १ अतिशय कष्टयुक्त व्याधि। (पु०) २ अतिशय कष्ट, भारी तकलीफ।

सुकाज (हिं० पु०) उत्तम कार्य, अच्छा काम।

सुकाण्ड (सं० पु०) १ कारवेल्ल लता, करेलेकी लता। (त्रि०) २ सुन्दर काण्डयुक्त, सुन्दर डालवाला।

सुकाण्डिका (सं० स्त्री०) काण्डीरलता, कारवेल्ललता, करेलेकी लता। (राजनि०)

सुकाण्डिन् (सं० पु०) १ भ्रमर, भौंरा। (त्रि०) २ सुन्दर काण्डयुक्त, सुन्दर डालवाला।

सुकातिज (हिं० पु०) मोती।

सुकान्ति (सं० त्रि०) उत्तम कान्तिविशिष्ट, सुन्दर कान्तिवाला।

सुकामव्रत (सं० क्ली०) वह व्रत जो किसी उत्तम कामनासे किया जाता है, काम्यव्रत।

सुकामा (सं० स्त्री०) १ त्रायमाणा लता, त्रायमान। २ शोभन कामयुक्त।

सुकार (सं० त्रि०) १ सहज साध्य, सहजमें होनेवाला। २ सहजमें वशमें आनेवाला। ३ सहजमें प्राप्त होनेवाला। (पु०) ४ अच्छे स्वभावका घोड़ा। ५ कुङ्कु मशालि।

सुकाल (सं० पु०) १ सुसमय, उत्तम समय। २ वह समय जो अन्न आदिकी उपजके विचारसे अच्छा हो, अकालका उलटा।

सुकालिन (सं० पु०) पितरोंका एक गण। मनुके अनुसार ये शूद्रोंके पितर माने जाते हैं। (मनु ३।१९७)

सुकालुका (सं० स्त्री०) जोड़ीक्षुप, भटकटैया। (राजनि०)

सुकाशन (सं० त्रि०) अतिशय दीप्तिशाली, बहुत प्रकाशमान, बहुत चमकीला।

सुकाष्ठक (सं० क्ली०) १ देवकाष्ठ। (राजनि०) २ सुन्दर काष्ठ, उत्तम दारु।

सुकाष्ठा (सं० स्त्री०) १ कटुकी, कुटकी। २ काष्ठ कदली, कठकेला। (राजनि०)

सुकिंशुक (सं० त्रि०) उत्तम किंशुक वृक्षनिर्मित वस्तु।

सुकी (हिं० स्त्री०) सारिका, तोतेकी मादा, सुग्गी।

सुकीर्त्ति (सं० स्त्री०) १ शोभना स्तुति, अच्छी स्तुति। (ऋक् २।२८।१ सायण) (त्रि०) सु शोभना कीर्त्तिर्यस्य। २ उत्तम कीर्त्तियुक्त, अच्छा यशवाला।

सुकुआर (हिं० वि०) सुकुमार देखो।

सुकुचा (सं० स्त्री०) सुन्दर स्तनविशिष्टा, वह स्त्री जिसका स्तन सुन्दर हो। (भारत वनपर्व)

सुकुट्ट (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपदका नाम। (भारत वनपर्व)

सुकुड़ना (हिं० क्रि०) सिकुड़ना देखो।

सुकुन्तल (सं० पु०) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम।

सुकुन्द (सं० पु०) सल्लकीनिर्यास, राल, धूना।

सुकन्दक (सं० पु०) पलाण्डु, प्याज। (शब्दरत्ना०)

सुकुन्दन (सं० पु०) बर्बरी, बबुई तुलसी।

सुकुमार (सं० त्रि०) १ अति मृदु, जिसके अंग बहुत कोमल हों, नाजुक। (अमर) (पु०) २ उत्तम बालक, नाजुक लड़का। ३ पुण्ड्रेक्षु, ईख। ४ वनचम्पक, वनचम्पा। ५ श्लक्ष्ण। ६ श्यामाक। ७ राजमाष, कंगनी। ८ दैत्यविशेष। ९ नागविशेष। १० मोदकौषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—आध पल निसोथ, ईखकी चीनी और मधु एक पल, इलायची और मिर्च एक निष्क, इन सब द्रव्योंको एक साथ मिला कर मीठी आँचमें गर्म कर दो कर्ष भर भोजन करे। इसका सेवन करनेसे अल्प विरेचन, रक्तपित्त और वायुरोग प्रशमित होता। (क्ली०) ११ तमालपत्र। १२ तमालपत्र, तंबाकूका पत्ता। १३ अलंकारशास्त्रोक्त गुणभेद। जो काव्य कोमल अक्षरों या शब्दोंसे युक्त होता है, वह सुकुमार-गुणविशिष्ट कहलाता है।

सुकुमारक (सं० क्ली०) १ तमालपत्र, तंबाकूका पत्ता। २ तेजपत्र, तेजपत्ता। (राजनि०) (पु०) ३ शालिभेद, साठी धान। ४ सुन्दर बालक, अच्छा लड़का।

सुकुमारता (सं० स्त्री०) सुकुमार होनेका भाव या धर्म, कोमलता, नजाकत।

सुकुमारवन (सं० क्ली०) एक कल्पित वन। यह भागवतके अनुसार मेरुके नीचे है। कहते हैं, कि इसमें भगवान् शंकर भगवती पार्वतीके साथ क्रीड़ा किया करते हैं। (भाग० ९।१।२५)

सुकुमारा (सं० स्त्री०) १ जाती, जूही। २ नवमालिका, चमेली। ३ कदली, केला। ४ स्पृक्का। ५ मालती।

सुकुमारिका (सं० स्त्री०) कदली वृक्ष, केलेका पेड़।

सुकुमारी (सं० स्त्री०) १ नवमालिका। २ चमेली। शंखिनी नामकी ओषधि। (गरुड़पु० २०८ अ०) ३ स्पृक्का नामक गन्धद्रव्य। ४ एक प्रकारकी कली। ५ वनमल्लिका। ६ महाकारवेल्लक, बड़ा करेला। ७ इक्षु, ईख। ८ कदली वृक्ष, केलेका पेड़। ९ विसगन्ध नामक फलदार पेड़। १० स्पृक्का नामक गन्धद्रव्य। ११ कन्या, लड़की, बेटी। (त्रि०) १२ कोमलाङ्गी, कोमल अंगों वाली।

सुकुमारीक (सं० त्रि०) उत्तम कुमारीयुक्त, जिसे अच्छी कुमारी हो।

सुकुरीरा (सं० स्त्री०) वह अलंकार या आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिरमें शृङ्गारके लिये पहनती हैं।

सुकुर्कुर (सं० पु०) बालकोंका एक प्रकारका रोग जिसकी गणना बालग्रहोंमें होती है।

सुकुल (सं० क्ली०) १ उत्तमकुल, श्रेष्ठ वंश। (त्रि०) २ उत्तम कुलोत्पन्न, जो उत्तम कुलमें उत्पन्न हो।

सुकुलता (सं० स्त्री०) सुकुलका भाव, कुलीनता।

सुकुलदेद (हिं० पु०) एक प्रकारका वृक्ष।

सुकुवार (हिं० पु०) सुकुमार देखो।

सुकुवार (हिं० पु०) सुकुमार देखो।

सुकुसुमा (सं० स्त्री०) स्कन्दकी एक मातृकाका नाम।

सुकृत (सं० त्रि०) सुष्ठु करोतीति कृ (सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः पा ३।२।८९) इति क्विप्, तुगागमः। १ धार्मिक, पुण्यवान्। २ उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला।

सुकृत (सं० क्ली०) सु कृ-क्त। १ पुण्य, सत्कार्य, भला

काम। दैव, पैत्र या मानुष विषयमें जो कुछ पुण्य कर्मका अनुष्ठान किया जाता है, उसे सुकृत कहते हैं। २ दान। ३ पुरस्कार। ४ दया, मेहरबानी। (त्रि०) ५ धार्मिक, पुण्यवान्। ६ भाग्यवान्, किस्मतवर। ७ जो उत्तम रूपसे किया गया हो।

सुकृतकर्मन् (सं० क्ली०) १ पुण्य कर्म, सत्कार्य, शुभ काम। (त्रि०) २ पुण्यात्मा, धर्मात्मा।

सुकृतद्वादशी (सं० स्त्री०) व्रतविशेष। यह व्रत द्वादश तिथिमें कर्त्तव्य है।

सुकृतव्रत (सं० क्ली०) वह व्रत जो द्वादशी तिथिमें किया जाता है।

सुकृतात्मन् (सं० त्रि०) सुकृत कर्मकारी, पुण्यात्मा।

सुकृति (सं० स्त्री०) सु कृ क्तिन्। शुभ कार्य, अच्छा काम।

सुकृतित्व (सं० क्ली०) सुकृतिका भाव या धर्म।

सुकृतिन् (सं० त्रि०) सुकृतमस्यास्तीति इनि। १ पुण्य वान्, धार्मिक, सत्कर्म करनेवाला। २ भाग्यवान्, तकदीर-वर। ३ बुद्धिमान्, अक्लमंद। (पु०) ४ दशवें मन्व न्तरके एक ऋषिका नाम।

सुकृत्य (सं० क्ली०) १ उत्तम कार्य, पुण्य, धर्मकार्य। (भागवत १०।४९।३३) (पु०) २ एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सुकृत्या (सं० स्त्री०) शोभनकर्मा, उत्तम कर्मा।

सुकृत्वन् (सं० त्रि०) सु-कृ-क्वनिप् तुकच्। शोभन कर्मा, शुभ कर्मकार।

सुकृष्ट (सं० त्रि०) अच्छी तरह कर्षित या जोता हुआ।

सुकृष्ण (सं० त्रि०) अतिशय कृष्णवर्ण, घोर काला।

सुकेत (सं० पु०) आदित्य, सूर्य। (तैत्तिरीय स० ५।३।३)

सुकेत—पञ्जाब गवर्मेण्टके पालिटिकल एजेण्टकी देखरेख-में परिचालित एक पहाड़ी राज्य। यह अक्षा० ३१° २३' से ३१° ३५' उ० तथा देशा० ७६° ४९' से ७७° २६' पू०के मध्य सतलज नदीके उत्तरी किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण ४२० वर्गमील और जनसंख्या ६० हजारके लगभग है। इसमें २ शहर और २८ ग्राम लगते हैं। राजस्व एक लाख रुपयेसे ज्यादा है। अधिवासियोंमें हिन्दूकी संख्या ही ज्यादा है, कुछ मुसलमान और ईसाई भी हैं।

१२०० ई०के पहले तक सुकेत मण्डि राज्यके साथ संयुक्त था। किन्तु इन दोनों राज्योंमें मेल जरा भी नहीं था, वरन् युद्धविग्रह ही लगातार चला करता था। इसका फल यह हुआ, कि उसी साल दोनों राज्य अलग अलग हो गये। कालक्रमसे सिख-शक्ति ही यहां प्रबल हो उठी, किन्तु १८४६ ई०में लाहोरमें अङ्गरेज गवर्मेण्ट-के साथ सिखोंकी जो संधि हुई, उस संधिके अनुसार सुकेत अंगरेजोंके हाथ आया और उसी साल पुत्र-पौत्रादि क्रमसे भोग दखल करनेके स्वत्वके साथ यह राज्य राजपूतराज उग्रसिंहको दिया गया। उग्र सिंहकी मृत्युके बाद उनके लड़के रुद्रसेन सिंहासन पर बैठे। १८७८ ई०में उन्हें सिंहासनच्युत करके उनके लड़के दस्त निकन्दन सेनको राजपद दिया गया। इन्हें सरकारकी ओरसे ११ सलामी तोपें मिलती हैं। २३ घुड़सवार और ६३ पदातिक रखनेका इन्हें अधिकार है। यहांके राजवंश गौड़के सेनराजवंशीय कहलाते हैं।

सुकेत—पंजाबके काङ्गड़ा जिलेकी एक पर्वतश्रेणी।

सुकेतन (सं० पु०) भागवतके अनुसार सुनीथ राजाके पुत्रका नाम। कहीं कहीं इनका नाम निकेतन भी मिलता है। (भागवत ९।१८।८)

सुकेतु (सं० त्रि०) १ मनुष्यों और पक्षियोंकी बोली समझनेवाला। २ उत्तम केशयुक्त, उत्तम केशोंवाला। (पु०) ३ चित्रकेतु राजाका पुत्र। (भारत ८ प०) ४ ताड़का राक्षसीका पिता। ५ सागरका पुत्र। ६ नन्दि-वर्द्धनका पुत्र। ७ केतुमन्तका पुत्र। ८ सुनीथ राजाका पुत्र

सुकेश (सं० पु०) १ सुकेशि देखो। (त्रि०) २ उत्तम केशोंवाला, जिसके बाल सुन्दर हों।

सुकेशा (सं० स्त्री०) सुन्दर केशयुक्ता, वह स्त्री जिसके बाल सुंदर हों।

सुकेशि (सं० पु०) स्वनामख्यात राक्षसभेद, सुकेश राक्षस। रामायणमें लिखा है, कि सुकेशि विद्युत्केशका लड़का था। सन्ध्याकी कन्या सालकटङ्कटाके साथ विद्युत्केशका विवाह हुआ। कुछ दिन बाद उसे गर्भ रहा, गर्भवती हो कर ही वह राक्षसी मंदरपर्वत पर गई और वहां मेघतुल्य गर्भ त्याग कर विद्युत्केशके साथ विहार करनेके लिये उस स्थानसे दूसरी जगह चली गई।

इधर वह बालक मातापिताले परित्यक्त हो रो रहा था। इस समय आकाशपथसे वृष पर चढ़े महादेव पार्वतीके साथ जा रहे थे, उन्हें बालककी क्रंदन-ध्वनि सुनाई दी। पीछे पार्वतीके अनुरोध करने पर महादेव ने उस शिशुको उसकी माताके समान चिरजीवी और उसे आकाशगमनकी शक्ति प्रदान की। उसी समय पार्वतीने राक्षसोंको वर दिया, कि राक्षस-कन्या तुरत गर्भधारण करेंगी और तुरत ही प्रसव भी करेंगी। वह प्रसूत सन्तान माताके समान वयःप्राप्त होगी। सुकेश इस प्रकार वर पा कर बड़ा ही गर्वित हुआ। सुकेशने ग्रामनी नामक गन्धर्वकी देवता नाम्नी कन्यासे विवाह किया। इस कन्याके गर्भसे माल्यवान्, सुमाली और माली नामक पुत्र उत्पन्न हुए। ये लोग ही राक्षसोंके पूर्वपुरुष हैं। (रामायण ७।४-६ स०)

सुकेशिन् (सं० त्रि०) सुकेश अस्त्यर्थे इनि। सुंदर केशविशिष्ट, जिसके बाल सुन्दर हों।

सुकेशी (सं० स्त्री०) १ महाभारतके अनुसार स्वर्गकी एक अप्सरा। २ उत्तम केशयुक्ता नारी, वह स्त्री जिसके बाल बहुत सुंदर हों।

सुकेशीभार्य (सं० त्रि०) जिसकी पत्नी सुकेशी हो।

सुकेसर (सं० पु०) १ सिंह, शेर। (त्रि०) २ सुन्दर केशयुक्त।

सुकोमल (सं० त्रि०) अतिशय कोमल, बहुत मुलायम।

सुकोली (सं० स्त्री०) १ क्षीरकाकोली नामक कंद। २ शोभन बदरी, सुन्दर बेर।

सुकोशला (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नगरीका नाम।

सुकोशा (सं० स्त्री०) कोशातकी, तुरई, तरोई।

सुकौड़ि (सं० पु०) एक प्रकारका सूखा चंदन जो वैद्यकमें मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको दूर करनेवाला तथा शीतल और सुगन्धिदायक बताया गया है।

सुक्कान (हिं० पु०) पतवार।

सुक्कानी (हिं० पु०) मल्लाह, माझी।

सुक्ख (हिं० पु०) सुख देखो।

सुक्त (सं० क्ली०) कंदादिकृत संधानविशेष। यह सुक्त गुड़ादिभेदसे चार प्रकारका है, गुड़सुक्त, इक्षुरससुक्त, मधुसुक्त और माध्वीसुक्त। मधु आदिको एक निशुद्ध नये बरतनमें गुड़, क्षौद्र और काञ्जिक आदिके साथ रख कर तीन दिन धानके ढेरमें छोड़ देनेसे वह सुक्त सुक्त होता है। गुण—रक्तपित्त और कफनाशक, वायुका अनुलोमकारी, अत्युष्ण, तीक्ष्ण, रुक्ष, अम्ल, रुचिकर, दीपन, पाण्डु और कृमिनाशक। यह एक प्रकार का अम्ल आचार विशेष है। (वाभट सू०)

सुक्ता (सं० स्त्री०) सुक्तिका, इमली।

सुक्ति (सं० पु०) १ एक प्राचीन पर्वतका नाम। (स्त्री०) २ शुक्ति देखो।

सुक्र (हिं० पु०) १ शुक्र देखो। २ अग्नि।

सुक्रतु (सं० त्रि०) शोभनकर्त्ता, उत्तम कर्म करनेवाला।

सुक्रतूया (सं० स्त्री०) शुभ कर्म करनेकी इच्छा।

सुक्रित (हिं० पु०) सुकृत देखो।

सुक्रीड़ा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुक्रुद्ध (सं० त्रि०) अतिशय क्रुद्ध।

सुक्लेश (सं० त्रि०) अतिशय क्लेशविशिष्ट, जिसे बड़ी तकलीफ हो।

सुक्वण (सं० पु०) सुशब्द, उत्तम ध्वनि।

सुक्षत (सं० त्रि०) अतिशय क्षत।

सुक्षत्र (सं० त्रि०) १ शोभन धनोपेत, अत्यन्त धन शाली। २ सुराज्यशाली। ३ शक्तिशाली, बलवान्, दृढ़। (पु०) ४ नरमित्रके पुत्रका नाम।

सुक्षत्रिय (सं० पु०) उत्तम क्षत्रिय।

सुक्षय (सं० पु०) सुन्दर यज्ञशाला, बढ़िया यज्ञ-मंडप।

सुक्षिति (सं० त्रि०) १ शोभननिवास, उत्तम निवास-विशिष्ट, जो सुन्दर स्थानमें रहता हो। २ उत्तम पुत्र पौत्रादिविशिष्ट, जिसे यथेष्ट पुत्रपौत्रादि हों, धन धान्य और संतान आदिसे सुखी। (ऋक् १०।२०।१०) (स्त्री०) ३ शोभनाक्षिति, सुन्दर निवास। (ऋक् १।४०।८)

सुक्षुब्ध (सं० त्रि०) अतिशय क्षुब्ध, अत्यन्त क्षोभयुक्त।

सुक्षेत्र (सं० क्लीं०) १ शोभन क्षेत्र, उत्कृष्ट क्षेत्र। (पु०) २ दशवें मनुके पुत्रका नाम। (मार्कण्डेयपु० ६४।१५) ३ वास्तुभेद, वह घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तरकी ओर दीवारें या मकान आदि हों, पूर्व ओरसे खुला हुआ मकान। यह बहुत शुभ माना जाता है।

सुक्षेत्रिया (सं० स्त्री०) अपनी शुभक्षेत्रविषयक इच्छा।

सुक्षेम (सं० क्लो०) सुमङ्गल । (बृहत्स० १०१२)
सुक्षोभ्य (सं० त्रि०) अति क्षोभणीय ।
सुखंडरा (हिं० पु०) वैश्योंकी एक जाति ।
सुखंडो (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका रोग जिसमें शरीर सूख कर कांटा हो जाता है । यह रोग बच्चोंको बहुत होता है । (वि०) २ बहुत दुबला पतला ।
सुखंद (हिं० वि०) सुखदायी, आनन्ददायक ।
सुख (सं० क्ली०) सुखयतीति सुख-अच् । १ आत्म या मनो वृत्तिगुणविशेष, वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा होती है, दुःखका उलटा, आराम ।

सुख आत्माका धर्म है या मनका धर्म, यह विषय ले कर दार्शनिकोंमें बड़ा ही मतभेद है । कोई कहते हैं, कि यह आत्मवृत्तिगुणविशेष है । न्याय और वैशेषिक दर्शनके मतसे सुख आत्माका गुण है । आत्माके २४ गुण हैं जिनमें सुख एक है । यह सुख दो प्रकारका है, नित्य और जन्य । उनमेंसे नित्य सुख परमात्माके विशेष सुख और जन्यसुख जीवात्माके विशेष सुखके अन्त र्गत है ।

सांख्य और पातञ्जलके मतसे यह प्रकृतिका धर्म है । सत्वगुणका धर्म सुख है । सत्त्व, रज और तमोगुणकी साम्यावस्थाका नाम प्रकृति है । प्रकृतिसे हो यह जगत् उत्पन्न हुआ है अतएव यह जगत् सुख है, दुःख है और मोहमय है । जागतिक सभी पदार्थों में सुख, दुःख और मोह है । जिसमें सत्वगुणका भाग अधिक है, वह सुखमय और जिसमें रजोगुण अधिक वह दुःखमय है ।

जो अनुकूलवेदनीय समझा जाता है, उसे सुख और जो प्रतिकूलवेदनीय समझा जाता है, उसे दुःख कहते हैं ।

गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने इस सुखके तीन प्रकारके विभाग किये हैं सात्त्विक, राजसिक और तामसिक । इसका लक्षण—

जो सुख पहले विषकी तरह और पीछे अमृतके समान मालूम होता है तथा जिस सुखसे आत्मविष- यिणी बुद्धिकी प्रसन्नता होती है, वही सात्त्विक सुख है । यह सुख ज्ञान, वैराग्य ध्यान और समाधि द्वारा साधित होता है । विषय और इन्द्रियके संयोगसे जिस सुखकी उत्पत्ति होती है तथा जो सुख पहले अमृतके समान और पीछे विषवत् मालूम होता है, वह राजस सुख है । शब्दादि विषय और श्रवणादि इन्द्रियके सम्बन्धसे जो सुख उत्पन्न होता है अर्थात् सुस्वर सुनने, सुरूप देखने, सुस्वादु चखने, सुगन्ध सूंघने, सुकोमल छूने या स्त्री सङ्गमादिसे जिस सुखकी उत्पत्ति होती है, उसका नाम राजस सुख है । जो सुख शुरू और आखिर- में बुद्धिको मोहमुग्ध करता है तथा निद्रा और आल- स्यादिसे उत्पन्न होता है, वही तामस सुख है । जो सुख आत्मज्ञानसे या विषयेन्द्रियसंयोगसे उत्पन्न न हो कर केवल निद्रा, आलस्य और उन्मादसे उत्पन्न होता है, उसीको तामस सुख कहते हैं ।

इन तीन प्रकारके सुखोंमें जिससे सात्त्विक सुख लाभ होता है, उसकी चेष्टा करना कर्त्तव्य है । संसारमें विषयेन्द्रियसम्पर्कजनित जो सुख लाभ होता है, शास्त्रने उसे सुख नामक दुःख कहा है । पातञ्जलदर्शनमें लिखा है, कि एकमात्र सन्तोषसे ही अनुत्तम सुख लाभ होता है । सन्तोष शब्दका अर्थ तृष्णाक्षय, वासनाका नाश है ।

सुखके वैदिक पर्याय—शिम्बाता, शतरा, शातपन्ता, शिलगु, स्यूमक, शेवृध, मय, सुम्न, सुदिन, शूष, शुन, शग्म, भेषज, जलाष, स्योन, सुम्र शेव, शिव, श, क ।

२ आरोग्य । ३ स्वर्ग । ४ वृद्धिनामै वध । ५ जल । (त्रि०) ६ सुखविशिष्ट, सुखी ।
सुख आसन (हिं० पु०) सुखपाल, पालकी, डोली ।
सुखकन्द (सं० त्रि०) सुखमूल, सुख देनेवाला ।
सुखकन्दन (सं० त्रि०) सुखकन्द देखो ।
सुखकन्दर (सं० त्रि०) सुखका घर, सुखका आकार ।
सुखकर (सं० त्रि०) १ सुकर, जो सहजमें सुखसे किया जाय । २ सुखद, सुख देनेवाला ।
सुखकरण (सं० त्रि०) सुख उत्पन्न करनेवाला, आनंद देनेवाला ।
सुखकरन (सं० त्रि०) सुखकरण देखो ।
सुखकारक (सं० त्रि०) सुखदायक, सुख देनेवाला ।
सुखकारिन् (सं० त्रि०) आनन्ददायक, सुख देनेवाला ।
सुखकृत् (सं० त्रि०) सुकर, जो सुख या आराममें किया जाय, सहज ।

सुखक्रिया (सं० स्त्री०) १ सुखजनक क्रिया, आराम देनेवाला काम। २ सुखसे किया जानेवाला काम, सहज काम।

सुखग (सं० त्रि०) सुखसे जानेवाला, आरामसे चलने या जानेवाला।

सुखगन्ध (सं० त्रि०) सुगन्धयुक्त, जिसकी गन्ध आनन्द देनेवाली हो।

सुखगम (सं० त्रि०) सुगम, सहज।

सुखगम्य (सं० त्रि०) १ सुखसे जाने योग्य, आरामसे जाने योग्य। २ जिसमें सुखपूर्वक गमन किया जा सके।

सुखग्राह्य (सं० त्रि०) सुखसे ग्रहण योग्य, जो सहजमें लिया जा सके।

सुखङ्कर (सं० त्रि०) सुखं करोतीति कृ-खच् मुम्। सुखकर, सुकर, सहज।

सुखङ्करी (सं० स्त्री०) १ जीवन्ती, डोडी। २ सुशकरी।

सुखङ्घुण (सं० पु०) शिवखट्टाङ्ग। (त्रिका०)

सुखचर (सं० त्रि०) १ सुखसे चलनेवाला, आरामसे चलनेवाला। (पु०) २ ग्रामविशेष। सुकचर देखो।

सुखचार (सं० पु०) सुखेन चरत्यनेनेति चर-घञ्। उत्कृष्टाश्व, उत्तम घोड़ा।

सुखच्छाय (सं० त्रि०) सुखकर छायायुक्त।

सुखच्छेद्य (सं० त्रि०) सुख द्वारा छेदन योग्य, सुखसे छेदने लायक।

सुखजनक (सं० त्रि०) सुखदायक, आनन्ददायक, सुखद।

सुखजननी (सं० स्त्री०) सुख उपजानेवाली, सुख देनेवाली।

सुखजात (सं० त्रि०) १ जातसुख, सुखी, प्रसन्न। (क्ली०) २ सुखकी उत्पत्ति।

सुखज्ञ (सं० त्रि०) सुखका जाननेवाला, सुखका ज्ञाता।

सुखड़—धर्मसम्प्रदायभेद। सुदड देखो।

सुखडरन (हिं० वि०) सुखदायक, सुख देनेवाला।

सुखता (सं० स्त्री०) सुखका भाव या धर्म, सुखत्व।

सुखद (सं० क्ली०) सुखं ददातीति दा क। १ विष्णुका स्थान। २ विष्णुका आसन। (पु०) ३ विष्णु। ४ एक प्रकारका ताल। यह ध्रुवताल है। इसमें २० अक्षर रहते हैं। इन अक्षरोंके मध्य एक गुरु, शृङ्गार और वीर-रसमें यह ताल गाया जाता है। (त्रि०) ५ सुखदाता, सुख देनेवाला, आरामदेह।

सुखदा (सं० स्त्री०) सुखद-टाप्। १ सुख देनेवाली। (स्त्री०) २ गंगा। ३ स्वर्गवेश्या। ४ शमीवृक्ष। ५ एक प्रकारका छंद।

सुखदात (सं० त्रि०) सुखदाता देखो।

सुखदाता (सं० त्रि०) सुखदेनेवाला, आनन्द देनेवाला।

सुखदान (सं० त्रि०) सुख देनेवाला, आनन्द देनेवाला।

सुखदानी (स० त्रि० स्त्री०) १ सुख देनेवाली, आनन्द देनेवाली। (स्त्री०) २ एक प्रकारका वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें ८ सगण और १ गुरु होता। इसे सुन्दरी, मल्ली और चन्द्रकला भी कहते हैं।

सुखदाय (सं० त्रि०) सुखदायक देखो।

सुखदायक (सं० त्रि०) १ सुखद, सुख देनेवाला। (पु०) २ एक प्रकारका छन्द।

सुखदायिन् (सं० त्रि०) सुखद, सुख देनेवाला।

सुखदायिनी (सं० स्त्री०) १ सुखदा, सुख देनेवाली। (स्त्री०) २ मांसरोहिणी नामकी लता, रोहिणी।

सुखदास (हिं० पु०) एक प्रकारका धान जो अगहन महीनेमें तैयार होता है और जिसका चावल बरसों तक रह सकता है।

सुखदेनी (सं० त्रि०) सुखदायिनी देखो।

सुखदेव मिश्र—शृङ्गारलता नामक अलंकार ग्रन्थके रचयिता।

सुखदैन (सं० त्रि०) सुखदायिन् देखो।

सुखदैनी (सं० त्रि) सुख देनेवाली, आनन्द देनेवाली।

सुखदोह्या (सं० स्त्री०) सुखसंदोह्या गाभी, वह गाय जिसको दुहनेमें किसी प्रकारका कष्ट न हो। बहुत सहजमें दूही जा सकनेवाली गौ।

सुखधाम (सं० पु०) १ सुखका घर, आनन्द सदन। २ वह जो स्वयं सुखमय हो या जो बहुत अधिक सुख देनेवाला हो। ३ वैकुण्ठ, स्वर्ग।

सुखन (सं० क्ली०) सुख।

सुखनाथ (स० पु०) मथुरास्थित एक देवमूर्त्ति।

सुखनिविष्ट (सं० त्रि०) सुखेन निविष्टः । सुख द्वारा निविष्ट, सुखयुक्त, सुखी ।

सुखपर (सं० त्रि०) सुख परं प्रधान यस्य । सुखी ।

सुखपाल (सं० पु०) एक प्रकारकी पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवालेके शिखरका-सा होता है ।

सुखपूर्वक (सं० क्रि० वि०) सुखसे, आनन्दसे, आराम-के साथ, मजेमें ।

सुखपेय (सं० त्रि०) सुखेन पेयः । सुपेय, जिसके पीने-में सुख हो ।

सुखप्रकाशमुनि—सुप्रसिद्ध चित्सुख मुनिके शिष्य । इन्हों-ने तत्त्वप्रक्रियाव्याख्या, न्यायदीपावलितात्पर्यटीका, न्याय-मकरन्दविवेचनी, प्रत्यक्तत्त्वदीपिकाकारिका, भावद्योत-निका आदि ग्रन्थ लिखे हैं ।

सुखप्रणाद (सं० पु०) १ सुखकर ध्वनि । (त्रि०) २ सुखकर ध्वनियुक्त ।

सुखप्रद (सं० त्रि०) सुखद, सुख देनेवाला ।

सुखप्रबोधक (सं० त्रि०) सुख प्र-बुध णिच् ण्वुल् । सुख-से प्रबोधनकारी, जो बिना दुःखसे निद्रा भङ्ग कराते हैं ।

सुखप्रवेप (सं० त्रि०) मृदु कम्पनयुक्त, जो थोड़ा कांपता हो ।

सुखप्रश्न (सं० पु०) सुखकी बात पूछना ।

सुखप्रसव (सं० पु०) सुखसे प्रसव, बिना कष्टके बच्चा जनना ।

सुखप्रसवन (सं० क्ली०) सुख प्र-सू ल्युट् । सुखप्रसव ।

सुखप्रसवा (सं० स्त्री०) सुखेन प्रसवो यस्याः । सुखसे प्रसव करनेवाली स्त्री, आरामसे सन्तान जननेवाली स्त्री ।

सुखप्रसुप्त (सं० त्रि०) सुखसुप्त, सुखसे सोया हुआ ।

सुखबद्ध (सं० त्रि०) प्रीतिकर, आनन्ददायक ।

सुखबुद्धि (सं० स्त्री०) सुबुद्धि, सुखकारी बुद्धि ।

सुखबोध (सं० पु०) सुखेन बोधः । १ सहजसे जो जाना जाय । २ सुखसे जागरण ।

सुखबोधन (सं० क्ली०) सुखबोध ।

सुखभक्ष (सं० पु०) १ श्वेत शिग्रु, सफेद सहिंजन । (राजनि०) सुखेन भक्षयतीति भक्ष-अच् । (त्रि०) २ सुख द्वारा भक्षणकारी, सुखसे खानेवाला ।

सुखभञ्ज (सं० पु०) श्वेत मरिच, सफेद मिर्च ।

सुखभागिन् (सं० त्रि०) सुखं भजते भज णिनि । सुख-भोगी, सुखी ।

सुखभाज् (सं० त्रि०) सुखं भजते भज-विण । सुख-भोगी, सुखी ।

सुखभुज् (सं० त्रि०) सुखभोगकारी, सुखी ।

सुखभू (सं० त्रि०) सुखद ।

सुखभेद्य (सं० त्रि०) सुखसे भेदने लायक । कच्चा घड़ा, दुर्जन और अरि ये सब सुखभेद्य हैं ।

सुखभोग (सं० पु०) सुखस्य भोगः । सुखोंका भोग, सुखलाभ ।

सुखभोजन (सं० क्ली०) सुखसे भोजन करना ।

सुखमा (हिं० स्त्री०) १ शोभा, छवि । २ एक प्रकारका वृत्त । इसमें एक तगण, एक यगण, एक भगण और एक गुरु होता है । इसे वामा भी कहते हैं ।

सुखमानिन् (सं० त्रि०) आत्मनां सुख मन्यते मन-णिनि । सुखविवेचनाकारी, सुख माननेवाला, हर अवस्थामें सुखी रहनेवाला ।

सुखमुख (सं० पु०) यक्ष । (तारनाथ)

सुखमोद (सं० पु०) शोभाञ्जन वृक्ष, लाल सहिंजन । (राजनि०)

सुखमोदा (सं० स्त्री०) शल्लकी वृक्ष, सलई ।

सुखयितृ (सं० त्रि०) सुख-णिच्-तृन् । सुखदायक, सुख देनेवाला ।

सुखयित्री (सं० स्त्री०) सुख देनेवाली ।

सुखरथ (सं० त्रि०) सुन्दर अक्षद्वारयुक्त रथविशिष्ट । (ऋक् ५।३०।१)

सुखरात्रि (सं० स्त्री०) दीपान्विता अमावस्याकी रात । कार्त्तिक मासकी अमावस्याकी रात्रिको सुखरात्रि कहते हैं । इस अमावस्या तिथिमें स्नान, पितरोंके उद्देशसे तर्पण, पार्वणश्राद्ध, सायंकालमें उल्कादान और प्रदोषमें लक्ष्मीपूजा करनी होती है ।

ब्रह्मपुराणमें लिखा है, कि कार्त्तिक मासकी अमावस्या तिथिमें भगवान् केशवने देवताओंको अभय दिया था । देवगण अभय पा कर क्षीरोदार्णवसानुमें सुखसे सोये थे और लक्ष्मीने भी दैत्यभयसे मुक्त हो कर अम्बुजोदरमें

सुखसे शयन किया था, इसी कारण तभीसे इस रात्रिको सुखरात्रिका कहते हैं। इस सुखरात्रिके दिन शिशु, बाल, वृद्ध और आतुरको छोड़ कर और कोई भी भोजन नहीं करे। इस दिन प्रदोषकालमें लक्ष्मीपूजा करके चारों ओर दीपावली द्वारा सुशोभित करना होता है। प्रदोषकालमें लक्ष्मीपूजा करके ब्राह्मण, ज्ञाति और बन्धु-बान्धवको भोजन करा कर स्वयं भोजन करे।

सुखरात्रिमें यथाविधान लक्ष्मीपूजा करके सुखसे सो जावे और पीछे प्रातःकालमें भविष्योक्त कर्म करे।

सुखरूप (सं० त्रि०) सौम्यमूर्त्ति।

सुखलाना (हिं० क्रि०) सुखाना देखो।

सुखवंत (हिं० वि०) १ सुखी, प्रसन्न, खुश। २ सुखदायक, आनन्द देनेवाला।

सुखवत् (सं० त्रि०) सुखयुक्त, सुखी, प्रसन्न।

सुखवत्ता (सं० स्त्री०) सुखका भाव या धर्म, सुख, आनंद।

सुखवन (हिं० पु०) वह बालू जिसे लिखे हुए अक्षरों आदि पर डाल कर उनकी स्याही सुखाते हैं।

सुखवर्चक (सं० पु०) सर्जिक्षार, सज्जी मिट्टी।

सुखवर्मन् (सं० पु०) १ एक राजा। (राजतर० ४।७०७) २ सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन कवि।

सुखवह (सं० त्रि०) सुखदाता, आनन्द देनेवाला।

सुखवादिन् (सं० पु०) वह जो इन्द्रिय सुखको ही सबकुछ समझता या मानता हो, वह जो भोग विलास आदिको ही जीवनका मुख्य उद्देश्य समझता हो, विलासी।

सुखसार (हिं० वि०) प्रसन्न, सुखी खुश।

सुखवास (सं० पु०) सुखः सुखकरो वासो यस्य। १ फलविशेष तरबूज। पर्याय—शाखावृन्त। २ वह स्थान जहांका निवास सुखकर हो, आनन्दका स्थान, सुखकी जगह।

सुखवासन (सं० पु०) सुखं वासयतीति वस णिच् ल्यु। सुखावासन गन्धद्रव्य।

सुखविष्णु—सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन कवि।

सुखवोध्य (सं० त्रि०) सहज बोधयोग्य।

सुखशयन (सं० क्लो०) सुखकर शय्या।

सुखशया (सं० स्त्री०) सुखसे सोनेवाली स्त्री।

सुखशय्या (सं० स्त्री०) सुकोमल दुग्धफेननिभशय्या।

सुखशर्मन्—सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन कवि।

सुखशायिन् (सं० त्रि०) सुखं शेते शी णिनि। सुखशयनकारी, सुखसे सोनेवाला।

सुखशायिनी (सं० स्त्री०) सुखसे सोनेवाली।

सुखशीत (सं० त्रि०) सुखकर अथच शीतल।

सुखश्रव (सं० त्रि०) श्रुतिसुखकर, सुखश्रवणयुक्त।

सुखश्रव्य (सं० त्रि०) सुखश्रवणयोग्य।

सुखसंवृद्ध (सं० त्रि०) जो सुखसे वृद्धिप्राप्त हुए हों।

सुखसंवेश (सं० त्रि०) श्रुतिसुखकर।

सुखसंसुप्त (सं० त्रि०) सुखसे सोया हुआ।

सुखसंस्थ (सं० त्रि०) सुखसे रहनेवाला।

सुखसंस्पर्श (सं० पु०) सुखजनक संस्पर्श, जो स्पर्श सुखकर हो।

सुखसञ्चार (सं० त्रि०) १ सुखसे सञ्चरण करनेवाला। (पु०) २ सुखसे विचरण।

सुखसञ्चारिन् (सं० त्रि०) सुखसे सञ्चरणशील, आनन्दपूर्वक विचरण करनेवाला।

सुखसन्दुह्या (सं० स्त्री०) सुशीला गाभी, जो गाय सुखसे दूही जाय, जिस गायको दूहनेमें किसी प्रकारकी कठिनाई न हो।

सुखसन्दोह्या (सं० स्त्री०) सुखेन सन्दोह्या। सुशीला गाय। पर्याय—सुव्रता, सुखदुह्या, सुखदोह्या। (हेम)

सुखसम्बोध्य (सं० त्रि०) सुखबोध्य, जो सुखसे जाना जाय।

सुखसलिल (सं० क्लो०) उष्णोदक, गरम जल। पानी गरम करनेसे उसमें कोई दोष नहीं रह जाता। वैद्यकमें ऐसा जल बहुत उपकारी बताया गया है और इसलिये सुखसलिल कहा गया है।

सुखसाध्य (सं० त्रि०) सुखेन साध्यः। जिसका साधन सुखकर हो, जिसके साधनमें कोई कठिनाई न हो, सहज।

सुखसुप्त (सं० त्रि०) सुखेन सुप्तः। सुखसे सोया हुआ।

सुखसुप्ति (सं० स्त्री०) सुखेन सुप्तिः। सुखनिद्रा, सुखकी नींद।

सुखसेचक (सं० त्रि०) सुखसे सेचन करनेवाला।

सुखसेव्य (सं० त्रि०) सुखेन सेव्यः। सुखसे सेवन करने योग्य।

सुखस्थ (सं० त्रि०) सुखे तिष्ठतीति स्था-क। सुखसे रहनेवाला, सुखी।

सुखस्पर्श (सं० पु०) सुखजनक स्पर्श।

सुखस्वाप (सं० पु०) १ सुखसे सोना। (त्रि० सुखः स्वापो। २ सुखसुप्त, सुखसे सोया हुआ।

सुखहस्त (सं० त्रि०) सुखकर।

सुखा (सं० स्त्री०) सुखमस्त्यस्यामिति अच्-टाप्। वरुणपुरी।

सुखाकर—गादाधरीटीकाके रचयिता।

सुखागत (सं० क्ली०) सुख आ-गमभावे क, सुख आगत। सुखसे आगमन।

सुखाजात (सं० पु०) शिव।

सुखादि (सं० त्रि०) शोभन हविर्भक्षयिता, उत्तम हवि भक्षण करनेवाला। (ऋक् १।८७।६)

सुखादित (सं० त्रि०) सुखाद-क। सुभक्षित, आनन्द पूर्वक खाया हुआ। (शुक्लयजु० १२।७८)

सुखाधार (सं० पु०) सुखानामाधारः। १ स्वर्ग। (त्रि०) २ सुखका, आधार जिस पर सुख अवलम्बित हो।

सुखानन्द (सं० पु०) १ शाक्त आचार्यभेद। २ यन्त्रमोहके रचयिता। ३ एक प्रसिद्ध वैष्णवभक्त। भविष्यभक्तिमाहात्म्यमें इस भक्तका चरित्र वर्णित है।

सुखाना (हिं० क्रि०) १ किसी गीली या नम चीजको धूप या हवामें अथवा आग पर इस प्रकार रखना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना जिससे उसकी आर्द्रता या नमी दूर हो या पानी सूख जाय। जैसे,—धोती सुखाना, दाल सुखाना, जल सुखाना। २ कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। जैसे,—इस चिन्ताने तो मेरा सारा खून सुखा दिया।

सुखानी (हिं० पु०) मलाह, माझी।

सुखान्त (सं० पु०) १ वह जिसका अन्त सुखमय हो, सुखद परिणामवाला। २ पाश्चात्य नाटकोंके दो भेदोंमें से एक वह नाटक जिसके अन्तमें कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग, अभीष्टसिद्धि, राज्य प्राप्ति आदि) हो, दुःखान्तका उलटा।

सुखाप्लव (सं० त्रि०) सुखसे भासमान।

सुखाभ्युदयिक (सं० त्रि०) सुख और अभ्युदययुक्त। (मनु १२।८८) वैदिक सभी कर्म दो श्रेणीमें विभक्त हैं,—प्रवृत्त और निवृत्त। प्रवृत्तिमूलक जो सब कर्म हैं, उनका अनुष्ठान करनेसे सुख और अभ्युदयलाभ तथा निवृत्तिमूलक कर्मसे निःश्रेयोलाभ होता है।

सुखाम्बु (सं० क्ली०) उष्ण जल, गरम पानी। (सुश्रुत)

सुखायत (सं० पु०) सुख-आ यम क्त। सुशिक्षित अश्व, सीखा और सधा हुआ घोड़ा।

सुखाराध्य (सं० त्रि०) सुखसे आराधनीय, आनन्दपूर्वक जिनकी आराधना की जाय।

सुखारि (सं० त्रि०) उत्तम हवि भक्षण करनेवाला।

सुखारी (हिं० वि०) १जिसे यथेष्ट सुख हो, सुखी, प्रसन्न। २ सुखद, सुख देनेवाला।

सुखारोहण (सं० त्रि०) सोपान, सहजसे जिस पर चढ़ा जाय।

सुखार्थिन् (सं० त्रि०) सुखकामी, सुख चाहनेवाला, सुखकी इच्छा करनेवाला।

सुखार्थिनी (सं० स्त्री०) सुख चाहनेवाली।

सुखाला (हिं० वि०) सुखदायक, आनन्ददायक।

सुखालुका (सं० स्त्री०) जीवन्तीभेद, डोडी।

सुखावगम (सं० पु०) सुखप्राप्ति, सुखलाभ।

सुखावत् (सं० त्रि०) सुखवत्।

सुखावती (सं० स्त्री०) बौद्धोंके अनुसार एक स्वर्ग।

सुखावतीदेव (सं० पु०) बुद्धदेव जो सुखावती नामक स्वर्गके अधिष्ठाता माने जाते हैं।

सुखावतीश्वर (सं० पु०) १ बुद्धदेव। २ बौद्धोंके एक देवता।

सुखावबोध (सं० पु०) सुखका अवबोध, सुखज्ञान।

सुखावल (सं० पु०) पुराणानुसार नृचक्षु राजाके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु० ४।२१।३)

सुखावह (सं० पु०) सुखदाता, सुख देनेवाला, आराम देनेवाला।

सुखावृत (सं० त्रि०) सुख द्वारा आवृत, सुखी।

सुखाश (सं० पु०) १ वरुण। २ राजतिनिश, तरबूज। ३ सुखभोजन, वह जो खानेमें बहुत अच्छा जान पड़े। (त्रि०) ४ जिसे सुखकी आशा हो।

सुखाशक (सं० पु०) राजतितिश, तरबूज।

सुखाशा (सं० स्त्री०) सुखकी आशा, आरामकी उम्मीद।

सुखाश्रय (सं० त्रि०) सुखाधार, जिस पर सुख अवलम्बित हो।

सुखासन (सं० क्ली०) १ सुखद आसन, वह आसन जिस पर बैठनेसे सुख हो। २ नाव पर बैठनेका उत्तम आसन। ३ पालकी, डोली।

सुखासिका (सं० स्त्री०) १ स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती। २ आराम, सुख।

सुखासीन (सं० त्रि०) सुखसे बैठा हुआ।

सुखिआ (हिं० वि०) सुखिया देखो।

सुखित (हिं० वि०) शुष्क, सूखा हुआ।

सुखिता (सं० स्त्री०) सुखी होनेका भाव, सुख, आनन्द।

सुखित्व (सं० क्ली०) सुखी होनेका भाव सुख, सुखिता।

सुखिन (सं० त्रि०) सुखविशिष्ट, सुखयुक्त, सुखी।

सुखिया (हिं० वि०) जिसे सब प्रकारका सुख हो, सुखी, प्रसन्न।

सुखिर (हिं० पु०) सांपके रहनेका बिल, बांबी।

सुखी (सं० त्रि०) सुखिन देखो।

सुखान (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोंच चिपटी होती है।

सुखीनल (सं० पु०) पुराणानुसार राजा नृचक्षुके पुत्रका नाम।

सुखेतर (सं० क्ली०) सुखसे भिन्न अर्थात् दुःख, क्लेश, कष्ट।

सुखेन (सं० पु०) सुषेण देखो।

सुखेलक (सं० पु०) एक प्रकारका वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें न, ज, भ, ज, र आता है। इसे प्रभद्रिका और प्रभद्रक भी कहते हैं।

सुखेष्ट (सं० पु०) शिव, महादेव।

सुखैषित (सं० त्रि०) सुखाविष्ट।

सुखोच्छेद्य (सं० त्रि०) सुखेन उच्छेद्यः। सुख द्वारा उच्छेदनीय।

सुखोत्सव (सं० पु०) १ पति, स्वामी। (त्रिका०) २ आनन्दोत्सव।

सुखोदक (सं० क्ली०) सुखोष्णजल, सुख सलिल, गरम जल। (रत्नमाला)

सुखोदर्क (सं० त्रि०) जिसका उत्तरकाल सुखकर हो, जिसका भविष्यकाल शुभ हो।

सुखोद्य (सं० त्रि०) सुखसे उच्चारण योग्य, जिसके उच्चारणमें कोई कठिनाई न हो।

सुखोद्भिज्ज (सं० पु०) सर्ज्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी।

सुखोषित (सं० त्रि०) सुख वस-क्त। सुखसे रहा हुआ।

सुख्य (सं० पु०) सुख देखो।

सुख्याति (सं० स्त्री०) सु शोभनो ख्यातिः। प्रशंसा, यश, प्रसिद्धि, शोहरत।

सुग (सं० क्ली०) १ विष्ठा। २ सुखगन्तव्य देशादि, वह स्थान जहां सुखसे जाया जाय। (त्रि०) ३ सुन्दरगामी, अच्छी तरह जानेवाला। ४ सुगायक, अच्छा गानेवाला। (भागवत १०।१२।३४)

सुगण (सं० त्रि०) सु गणयतीति गण-क्विप्। सुन्दर गायक, अच्छा गवैया।

सुगणक (सं० पु०) उत्तम गणक, वह जो अच्छी गणना करते हों।

सुगत (सं० पु०) सु शोभनं गत गमनं ज्ञानं वा अस्येति। १ बुद्धदेव। २ बुद्ध भगवान्‌के धर्मको माननेवाला, बौद्ध। (त्रि०) ३ सुंदर गमनविशिष्ट, अच्छी तरह जानेवाला।

सुगतदेव (सं० पु०) बुद्धदेव।

सुगतावदान (सं० क्ली०) बौद्धोंका एक सूत्रग्रन्थ।

सुगति (सं० पु०) १ अतीतकल्पीय अर्हत्‌विशेष। (हेम) २ एक ग्रंथकर्त्ता। स्मार्त्त रघुनन्दनने इनका नाम उल्लेख किया है। ३ गयके पुत्रका नाम। (भागवत ५।१५।१४) (त्रि०) ४ शोभन गतिशील, अच्छी तरह जानेवाला। (स्त्री०) ५ सद्गति, मरनेके उपरान्त होनेवाली उत्तम गति, मोक्ष। ६ एक वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें सात मात्राएं और अन्तमें एक गुरु होता है। इसे शुभगति भी कहते हैं।

सुगन (हिं० पु०) छकड़ेमें गाड़ीवानके बैठनेकी जगहमें सामने आड़ी लगी हुई वह लकड़िया जिनकी सहायतासे बैल खोल देने पर भी गाड़ी खड़ी रहती है।

सुगना (हिं० पु०) सहिजन देखो।

सुगन्ध (सं० क्ली०) शोभनो गन्धो यस्य । १ गन्धतृण विशेष, गंधेज घास, अगिया घास । २ क्षुद्र जीरक, छोटा जीरा । ३ एलवालुक, एलुआ । ४ वृहद् गन्धतृण । ५ नीलोत्पल । ६ श्रीखण्डचन्दन, श्वेतचन्दन । ७ शबरचन्दन । ८ गन्धराज । ६ ग्रन्थिपर्ण, गठिवन । (पु०) १० रक्त शिग्रु, लाल सहिंजन । ११ गन्धक । १२ चणक, चना । १३ भूतृण । १४ भूपलाश । १५ कुन्दुरु १६ सुगंध गंधशल्लकीनिर्यास, धूना । १७ कृमिभेद, एक प्रकारका कोडा । (भावप्र०) १८ शालिधान्य विशेष, वासमती चावल । १६ मरुवक, मरुआ । २० शिलारस । २१ श्वेतकेतकी, केवडा । २२ अति मुक्तक । २३ कसेरू । २४ धवल यावनाल, सफेद ज्वार । २५ तुंबुरु । (राजनि०) २६ अच्छी और प्रिय महक, सुवास, सौरभ, खुशबू । गन्ध देखो । २७ वह पदार्थ जिससे अच्छी महक निकलती हो । (त्रि०) २८ सुगन्धित, सुवासित, खुशबूदार ।

सुगन्धक (सं० पु०) १ रक्ततुलसी, गंधतुलसी । २ गंधक । ३ कर्कोटक, ककोडा । ४ शालिधान्यभेद, साठी धान । ५ धरणीकन्द, कंदालु । ६ वृहद् गन्धतृण । ७ द्रोणपुष्पी, गूमा, गोमा । ८ नागरङ्ग वृक्ष, नारङ्गी ।

सुगन्धकेशर (सं० पु०) रक्त शिग्रु, लाल सहिंजन ।

सुगन्धकोकिला (सं० स्त्री०) एक प्रकारका गन्धद्रव्य गंधकोकिला । भावप्रकाशमें इसका गुण गंधमालती-के समान अर्थात् तीक्ष्ण, उष्ण और कफनाशक बताया गया है ।

सुगन्धगण (सं० पु०) सुगंधित द्रव्योंका एक गण या वर्ग । इसमें कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, गन्धमार्जार-वीर्य, चोरक, श्रीखण्डचंदन, पीला चंदन, शिलाजतु, लाल चंदन, अगर, काला अगर, देवदारु, पतंग, सरल, तगर, पद्माक, गूगल, सरलका गोंद, राल, कंदुरु, शिलारस, लोबान, लौंग, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, बडी इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, सुगंध वाला, खस, बालछड, केसर, गोरोचन, नख सुगंध, चीरन, नेत्रवाला, जटामासी, नागरमोथा, मुलेठी, दारु हलदी, कचूर, कपूर कचरी आदि सुगंधित पदार्थ कहे गये हैं ।

सुगन्धगन्धक । (सं० पु०) गन्धक । (वैद्यकनि०)

सुगन्धगन्धा (सं० स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारु हलदी ।

सुगन्धचन्द्रा (सं० स्त्री०) सुगंध शटी, गंधेज घास ।

सुगन्धतृण (सं० क्ली०) गंधतृण, रूसा घास ।

सुगन्धतैलनिर्यास (सं० क्ली०) जवादि नामक गंध-द्रव्य । (राजनि०)

सुगन्धत्रय (सं० क्ली०) चंदन, बला और नागकेसर इन तीनोंका समूह ।

सुगन्धत्रिफला (सं० स्त्री०) जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनोंका समूह ।

सुगन्धन (सं० क्ली०) जीरक, जीरा ।

सुगन्धनाकुली (सं० स्त्री०) एक प्रकारका रासना ।

सुगन्धपत्रा (सं० स्त्री०) १ शतावरी, सतावर । २ क्षुद्र-जम्बू, कठजामुन । ३ वृहती, बनभंटा । ४ क्षुद्र दुरालभा, छोटी धमासा । ५ जीरक, जीरा । ६ वृद्धदारु, विधारा । ७ रुद्रजटा, रुद्रलता, ईश्वरी । ८ अपराजिता । ६ रक्ता-पराजिता, लाल अपराजिता ।

सुगन्धपत्री (सं० स्त्री०) १ जातीपत्री, जावित्री । २ रुद्र-जटा ।

सुगन्धप्रियङ्गु (सं० स्त्री०) फूलप्रियंगु, गंध प्रियंगु, फूलफेन । वैद्यकमें इसे कसैला, कटु, शीतल और वीर्य जनक तथा वमन, दाह, रक्तविकार, ज्वर, प्रमेह, मेद रोग आदिको नाश करनेवाला बताया है ।

सुगन्धफल (सं० क्ली०) कक्कोल, कंकोल । (वैद्यकनि०)

सुगन्धवाला (हि० स्त्री०) क्षुप जातिको एक प्रकारकी वनौषधि । यह पश्चिमोत्तर प्रदेश, सिंध, पश्चिमी प्रायःद्वीप, लंका आदिमें अधिकतासे होती है । सुगंधि के लिये लोग इसे बगीचोंमें भी लगाते हैं । इसका पौधा सीधा, गांठ और रोएंदार होता है तथा पत्ते कमड़ीके पत्तोंके समान ११—३ इंचके घेरेमें गोलाकार, कटे किनारेवाले तथा ३ से ५ नोकवाले होते हैं । पत्रदंड लंबा होता है और शाखाओंके अन्तमें लंबे सींकों पर गुलाबी रंगके फूल होते हैं । बीजकोष कुछ लंबाई लिये गोलाकार होता है । वैद्यकमें इसका गुण शीतल, रूखा, हलका, दीपक तथा केशोंको सुंदर करनेवाला और कफ,

पित्त, हुल्लास, ज्वर, अतिसार, घाव, विसर्प, हृद्रोग, आमातिसार, रक्तस्राव, रक्तपित्त, रक्तविकार, खुजली और दाहको नाश करनेवाला बताया गया है।

सुगन्धभूतृण (सं० क्ली०) गन्धतृण, रूसा घास, अगिया घास। गुण—सुगन्धि ईषत्तिक्त, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न और श्रमनाशक।

सुगन्धमय (सं० त्रि०) सुगन्धित, सुवासित, खुशबूदार।

सुगन्धमुख्या (सं० स्त्री०) कस्तूरिका, मृगनाभि, कस्तूरी। (वैद्यकनि०)

सुगन्धमूत्रपतन (सं० पु०) सुगन्धमार्जार, एक प्रकारका विलाव जिसका मूत्र गन्धयुक्त होता है, मुश्क विलाव।

सुगन्धमूल (सं० क्ली०) लवलीफल, हरफारेवडी। पर्याय—पाण्डु, कोमलवल्कला, घना, स्निग्धा। वैद्यकमें इसे रुधिर विकार, बवासीर, कफपित्तनाशक तथा हृदयको हितकारी बताया गया है।

सुगन्धमूला (सं० स्त्री०) १ स्थलपद्मिनी, स्थल कमल। २ रास्ना। ३ आमलकी, आवला। ४ लवलीवृक्ष, हरफा रेवडी। ५ गन्धपलाशी, कपूरकचरी। (भावप्र०)

सुगन्धमूली (सं० स्त्री०) गन्धपलाशी, कपूर कचरी।

सुगन्धमूषिका (सं० स्त्री०) छछूंदरा।

सुगन्धरा (हिं० पु०) एक प्रकारका फूल।

सुगन्धरोहिष (सं० क्ली०) रोहिष तृण, गधेज घास, अगिया घास।

सुगन्धवल्कल (सं० क्ली०) गुडत्वक्, दालचीनी।

सुगन्धवैरजात्य (सं० क्ली०) रोहिष तृण, गधेज घास।

सुगन्धशालि (सं० पु०) स्वनामख्यात शालिधान्य-विशेष, बासमती चावल। इसका भात पकानेके समय इसकी सुगंधि चारों ओर फैल जाती है, सब चावलोंमें यह श्रेष्ठ है। जैसा यह बारीक, वैसी ही इसमें सुगन्ध होता है। वैद्यकमें यह चावल बलकारक तथा कफ, पित्त और ज्वरनाशक बताया गया है। (राजनि०)

सुगन्धषट्क (सं० क्ली०) वैद्यकके अनुसार छः सुगन्धि द्रव्य, यथा—जायफल, कंकोल (शीतल चीनी), लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी।

सुगन्धसार (सं० पु०) शालवृक्ष, सागौन।

सुगन्धा (सं० स्त्री०) १ रास्ना। २ स्पृक्का, असबरग। ३ कृष्णजीरक, काला जीरा। ४ तिलवासिनीशालि। ५ शल्लकी वृक्ष, सलई। ६ गन्धपलाशी, कपूर कचरी। ७ वन्ध्याकर्कोटकी, बाँझ ककोडा। ८ नील सिन्धुवार, निर्गुंडी। ९ जटी, रौंठ। १० रुद्रजटा शंकरजटा। ११ एलवालुक, एलुआ। १२ शतपुष्पी, सौंफ। १३ नाकुली नामक कन्दशाक। १४ वनमल्लिका, सेवती। १५ स्वर्ण यूथिका, पीली जूही। १६ माधवीलता। १७ सफेद अनन्तमूल। १८ काली अनन्तमूल। १९ मातुलुङ्ग, बिजौरा नीबू। २० गङ्गापत्रीतृण। २१ नवमल्लिका, नेवारी। २२ तुलसी। २३ गन्धकोकिला। २४ सोम राजी, बकुची। २५ हुगली जिलेमें स्थित एक प्रसिद्ध ग्राम। २६ पीठस्थानस्थित देवीभेद। देवीभागवतके अनुसार इस देवीका स्थान माधववनमें है।

"कोटवी कोटतीर्थे तु सुगन्धा माधवे वने।" (७।३०।६८)

सुगन्धाढ्य (सं० त्रि०) सुगन्धित सुवासित, खुशबूदार।

सुगन्धाढ्या (सं० स्त्री०) १ वृत्तमल्लिका, त्रिपुरमाली। २ बटपत्रमल्लिका। ३ सुगंध शालिधान्यविशेष, बासमती चावल। (राजनि०)

सुगन्धामलक (सं० क्ली०) मिलित औषधविशेष। आंवला सुखा कर उसका छिलका सब औषधोंके साथ मिलाना होता है। (राजनि०)

सुगन्धार (सं० पु०) गन्धारदेश।

सुगन्धि (सं० पु०) शोभनो गन्धो यस्य (गन्धस्येदुत् पूतिसु सुरभिभ्यः। पा ५।४।१३५) इति इत्। १ सुगंध, अच्छी महक, खुशबू। पर्याय—इष्टगन्ध, सुरभि, घ्राणतर्पण। (अमर) यद्यपि यह शब्द संस्कृतमें पुलिङ्ग है, पर हिन्दी में इस अर्थमें स्त्रीलिंग ही बोला जाता है। २ परमात्मा। ३ मदकार। (क्ली०) ४ एलवालुक, एलुवा। ५ मुस्ता, मोथा। ६ कसेरू। ७ गन्धतृण, अगिया घास। ८ धान्यक, धनिया। ९ पिप्पलीमूल, पीपलामूल। १० आम्र, आम। ११ बर्बर चन्दन, बरबर चन्दन। १२ तुम्बुरू, तुम्बरू। १३ अनंतमूल। (स्त्री०) १४ बर्बरिका, बबई, वन तुलसी। १५ चिर्भटिका, कचरिया, गोरख ककडी। (राजनि०) (त्रि०) १६ सुगंधयुक्त, सुगन्धित, खुशबूदार।

सुगन्धिक (सं० क्ली०) सु शोभनो गन्धो यस्य इत् ततः स्वार्थे कन्। १ उशीर, खस। २ कह्लार, कुमुदिनी,

लाल कमल। २ पुष्करमूल, पुष्करमूल। ४ गौरसुवर्ण शाक। ५ सुवर्ण नामक सुगन्धपत्र। ६ पलबालुक, पलुआ। ७ कृष्णजीरक, काला जीरा। ८ मुस्तक, मोथा। (राजनि०) (पु०) ६ शिह्लक शिलारस। १० महाशालि, वासमती चावल। ११ गन्धपाषाण, गन्धक। १२ तुरुष्क नामक गन्धद्रव्य। १३ सुगन्धार्जक वृक्ष। १४ पुन्नाग, सुलतान चंपक। १५ कपित्थ, कैथ। (वै० नि०)

सुगन्धिका (सं० स्त्री०) सुगन्धिक-टाप्। १ कृष्ण निर्गुण्डी, काली निसोथ। २ कस्तूरी, मृगनाभि। (वैद्यकनि०) ३ श्वेतशारिवा, सफेद अनन्तमूल। ४ श्वेत केतकी, केवडा। (सुश्रुत कल्पस्था० ४ अ०) ५ सिंह, केसरी।

सुगन्धिकुसुम (सं० पु०) १ पीत करवीर, पीला कनेर। (क्ली०) २ सुगन्धि पुष्पमाल, सुगन्धित फूल।

सुगन्धिकुसुमा (सं० स्त्री०) स्पृक्का, असवरग। (जटाधर)

सुगन्धिकृत (सं० क्ली०) शिह्लक, शिलारस।

सुगन्धित (सं० त्रि०) सुगधयुक्त, जिसमें अच्छी गन्ध हो, खुशबूदार।

सुगन्धिता (सं० स्त्री०) सुगन्धि, अच्छी महक, खुशबू।

सुगन्धितेजन (सं० क्ली०) रोहिष तृण, अगिया घास।

सुगन्धित्रिफला (सं० स्त्री०) जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंका समूह।

सुगन्धिन् (सं० त्रि०) सुगन्धोऽस्त्यस्य इनि। सुगन्धित, खुशबूदार।

सुगन्धिनी (सं० स्त्री०) सुगन्धिन् ङीष्। १ आराम-शीतला नामका शाक जिसे सुनंदिनी भी कहते हैं। २ स्वर्णकेतकी।

सुगन्धिपुष्प (सं० क्लो०) १ केलिकदम्ब, धारा कदंब। २ वह फूल जिसमें सुगन्धि हो, खुशबूदार फूल।

सुगन्धिफल (सं० क्लो०) शीतल चीनी, कबाबचीनी।

सुगन्धिमातृ (सं० स्त्री०) पृथिवी।

सुगन्धिमूल (सं० क्लो०) उशीर, खस।

सुगन्धिमूषिका (सं० स्त्री०) छछूंदर,

सुगन्धी (हिं० स्त्री०) सुगन्धि, अच्छी महक, खुशबू।

सुगन्धेश (सं० पु०) सुगन्धाप्रतिष्ठित देवमूर्त्तिभेद।

सुगभस्ति (सं० त्रि०) दीप्तिशाली, प्रकाशमान, चमकीला।

सुगम (सं० त्रि०) सुखेन गम्यते प्राप्यते सु-गम-खच्। १ सरल, जो सहजमें जाना, किया या पाया जा सके। २ जो सहजमें आनेयोग्य हो, जिसमें गमन करनेमें कठि-नता न हो।

सुगमता (सं० स्त्री०) सुगम होनेका भाव, सरलता, आसानी।

सुगमन (सं० त्रि०) १ शोभनगमनयुक्त। (क्ली०) २ सुन्दर गमन।

सुगम्भीर (सं० त्रि०) अति गम्भीर प्रकृतिका।

सुगम्य (सं० त्रि०) सुखेन गम्यते गम यत्। सुगम, जिसमें सहजमें प्रवेश हो सके, सरलतासे जानेयोग्य।

सुगर (सं० क्ली०) हिंगुल, शिङ्गरफ।

सुगरूप (हिं० पु०) एक प्रकारकी सवारी जो प्रायः रेतीले देशोंमें काम आती है।

सुगर्भक (सं० क्ली०) त्रपुष, खीरा।

सुगल (हिं० पु०) वालिका भाई सुग्रीव।

सुगव (सं० त्रि०) शोभन गोयुक्त, सुन्दर गाभोविशिष्ट।

सुगवि (सं० पु०) विष्णुपुराणके अनुसार प्रसुश्रुतके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु० ४।४।४७)

सुगव्य (सं० त्रि०) शोभन गोसमूहयुक्त, जिसे सुन्दर गायें हों। (ऋक् १।१६२।२२)

सुगहन (सं० त्रि०) निविड़, घना।

सुगहना (सं० स्त्री०) कुम्भा।

सुगहनावृत्ति (सं० स्त्री०) कुम्भा, वह घेरा या बाढ़ जो यज्ञस्थलमें अस्पृश्यों आदिको रोकनेके लिये लगाई जाती है।

सुगातुया (सं० स्त्री०) शोभन मार्गेच्छा, सुन्दर पथकी इच्छा। (ऋक् १।६७।२)

सुगात्र (सं० त्रि०) सुन्दर गात्रयुक्त, जिसका वदन सुन्दर हो।

सुगाध (सं० त्रि०) जिसमें सुखसे स्नान किया जा सके अथवा जिसे सहजमें पार किया जा सके।

सुगाना (हिं० क्रि०) संदेह करना, शक करना।

सुगार्हपत्य (सं० क्ली०) शोभनगार्हपत्ययुक्त।

सुगालि—वेदिया और यूरोपीय जिपसीके समान एक घूमनेवाली जाति। साधारणतः मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके

आर्काट जिलेके नाना स्थानोंमें ये देखे जाते हैं। ये विभिन्न वेशभूषा कर इधर उधर घूमते और मौका पा कर चोरी भी कर डालते हैं।

सुगीता (सं० क्लो०) १ सुन्दर गान। (भागवत ४।१५।१६) २ अच्छी तरह गाना।

सुगीति (सं० स्त्री०) अति मनोरम गीत, सुन्दर गाना।

सुगीतिका (सं० स्त्री०) एक छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें १५+१० के विरामसे २५ मात्राएं और आदिमें लघु और अन्तमें गुरु लघु होते हैं।

सुगु (सं० त्रि०) जिसे सुन्दर गाय हो। (ऋक् १।१२५।२)

सुगुणिन (सं० त्रि०) उत्तम गुणयुक्त, अच्छा गुणवाला।

सुगुण्डा (सं० स्त्री०) गुण्डासिनी तृण, गुंडाला।

सुगुप्त (सं० त्रि०) १ खूब छिपाया हुआ। २ सुन्दर-रूपसे रक्षित, अच्छी तरह रखा हुआ।

सुगुप्ता (सं० स्त्री०) कपिकच्छु, किवाच, कौंछ।

सुगुरु (सं० त्रि०) १ उत्तम गुरुयुक्त, जिसने अच्छे गुरुसे मन्त्र लिया हो। (पु०) २ उत्तम गुरु, उत्तम शिक्षक।

सुगूढ (सं० त्रि०) अतिशय गुप्त।

सुगृह (सं० पु०) १ एक प्रकारकी बत्तख या हंस। (क्ली०) २ सुन्दर आलय, सुन्दर घर। (त्रि०) ३ सुन्दर गृहविशिष्ट, अच्छा घरवाला।

सुगृहपति (सं० पु०) सुन्दर गृहपालक अग्नि।

सुगृहिन् (सं० त्रि०) १ सुन्दर गृहविशिष्ट, सुन्दर घरवाला। २ सुन्दरी स्त्रीविशिष्ट, सुन्दर स्त्रीवाला। (पु०) ३ प्रतुद जातीय पक्षिविशेष। (सुश्रुत सू० ४६ अ०)

सुगृहीत (सं० त्रि०) सु-ग्रह-क्त। अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ।

सुगृहीतनामन् (सं० पु०) सुगृहीतं नाम यस्य। १ वह जिसका नाम शुभकी कामना कर लिया जाता है। २ प्रातः-स्मरणीय, पुण्यश्लोक।

सुगेवृध (सं० त्रि०) सुखविषयमें वर्द्धनशील।

सुगो (सं० स्त्री०) सु शोभना गौः (न पूजनात्। ५।४।६९) इति पूजनार्थे समासान्ता भावः। पूजनीया गाभी।

सुगोप (सं० त्रि०) अच्छा तरह रक्षा करनेवाला।

सुगोप्य (सं० त्रि०) अतिशय गोप्य, अत्यन्त गोपनीय

सुगौतम (सं० पु०) गौतम, शाक्यमुनि। (ललितवि०)

सुग्गापंखी (हिं० पु०) एक प्रकारका धान जो अगहनके महीनेमें होता है और जिसका चावल बरसों तक रह सकता है।

सुग्गासाप (हिं० पु०) एक प्रकारका साप।

सुग्म्य (सं० त्रि०) १ सुखसे जानेमें समर्थ। (ऋक् १।११३।४) (क्ली०) २ सुख। (निघण्टु ३।६)

सुग्रथित (सं० त्रि०) १ सुन्दर रूपसे ग्रथित। २ सुदृढ़ सक्त।

सुग्रन्थि (सं० पु०) १ चोरक नामक गन्धद्रव्य। (राजनि०) (त्रि०) २ सुन्दर ग्रन्थियुक्त। (क्ली०) ३ पिप्पलीमूल, पीपलामूल।

सुग्रह (सं० पु०) फलित ज्योतिषके अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह। जैसे,—बृहस्पति, शुक्र आदि। मानवका ग्रह सुग्रह रहनेसे शुभ होता है और कुग्रह रहनेसे विपद ग्रस्त होना पड़ता है।

सुग्रहण (सं० क्ली०) अच्छी तरह ग्रहण करना या लेना।

सुग्रीव (सं० पु०) १ विष्णुका घोड़ा। (भारत ३।२।१४) २ शाखामृगेश्वर, वानरपति, रामचन्द्रका सखा, बालीका छोटा भाई। श्रीरामचन्द्रने सुग्रीवके साथ मित्रता करके रावणका संहार किया। रामायणमें लिखा है, कि देवपति इन्द्रसे बालीका और प्रभाकर सूर्यदेवसे सुग्रीवका जन्म हुआ। भगवान् ब्रह्मा एक दिन मेरुशृङ्ग पर योग साधन कर रहे थे, हठात् उनके दोनों नेत्रोंसे अश्रुजल टपक पड़े। उस जलसे उसी समय एक दिव्य वानरकी उत्पत्ति हुई। उसके जन्म लेते ही ब्रह्माने उससे कहा, 'तुम इस पर्वत पर फलमूल खा कर सुखसे अवस्थान करो।' ऋक्षराज उसका नाम था। ब्रह्माके आज्ञानुसार वह वानर उसी पर्वत पर रहने लगा। कुछ दिन बाद वह वानर प्याससे व्याकुल हो उत्तर मेरुशिखर पर गया, वहां एक मनोहर सरोवर था। जल पीते समय वानरको अपने मुंहकी छाया दिखाई दी। वह छाया मूर्त्ति देख कर वह बड़ा बिगड़ा और बोला, 'मेरा शत्रु तू कौन है? अभी तुम्हारा संहार करूंगा।' इतना कह कर वह वानर स्वभावसुलभ चपलतावशतः उस हृदमें कूद पड़ा। जब वह हृदसे निकला, तब उसका पुंरूप जाता रहा, अपूर्व स्त्रीमूर्त्ति उसने धारण की। वह वानर लक्ष्मीसे भी सौन्दर्यशालिनी हो कर सौन्दर्य विकाश

द्वारा दशों दिशाओंको प्रकाशित कर वहां रहने लगा। उस समय देवराज इन्द्र ब्रह्माके चरणोंकी वन्दना कर उसी पथसे आ रहे थे तथा सूर्य भी परिभ्रमण करते करते उस क्षीणमध्याके सामने आ पहुंचे। इन्द्र और सूर्य दोनों ही इसे देख कर कामके वशवर्त्ती हुए। रमणीके रमणीय रूप देख कर सुरेन्द्रयुगलका सर्वाङ्ग क्षुब्ध हो गया। वे बिलकुल अधैर्य हो गये। इन्द्रका वीर्य स्खलित हो उसके मस्तक पर गिर पड़ा। उस वीर्यसे उसी समय एक वानरकी उत्पत्ति हुई। वह वीर्य वाल अर्थात् केश पर गिरा था, इसीसे उस वानरका वाली नाम हुआ। सूर्यने भी मदनके वशीभूत हो उस ललनाके ग्रीवादेशमें वीज निषिक्त किया। ग्रीवादेशमें निषिक्त वीजसे उत्पन्न होनेके कारण इसका सुग्रीव नाम हुआ। वाली और सुग्रीवके उत्पन्न होनेके बाद ऋक्षराजने फिरसे पुंभाव धारण किया यह ऋक्षराज वाली और सुग्रीवका पिता और माता दोनों ही था। पीछे वह वानर अपने दोनों पुत्रों को ले कर ब्रह्माके पास गया। ब्रह्माने उन्हें किष्किन्ध्या जानेका हुकुम दिया। विश्वकर्माने ब्रह्माके आदेशसे रमणीय किष्किन्ध्यापुरी बनवाई थी। वाली बड़ा और सुग्रीव छोटा था, इसीसे वाली यहां आ कर वानरोंका राजा, सुग्रीव उसका अनुगामी तथा नल, नील, गय गवाक्ष, हनुमान् आदि सहचर हुए।

वाली बहुत बलवान् तथा सबोंसे प्रायः अपराजेय था। एक असुरके साथ वर्षों युद्धमें व्यापृत रहनेके कारण सुग्रीव वालीका मारा जाना समझ कर राज्यशासन करने लगा। इधर वाली बहुत दिनोंके बाद उस असुरको वध कर घर लौटा और सुग्रीवका यह आचरण देख कर उसे देशसे निकाल भगाया। वह वालीके भयसे भीत हो कर ऋष्यमूक पर्वत पर बड़े कष्टसे दिन बिताने लगा।

रामचंद्रके वनवासके समय रावण सीताको हर ले गया। उनकी खोजमें राम-लक्ष्मण चारों ओर भटक रहे थे। इसी समय ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमानके साथ लक्ष्मणकी भेंट हो गई। हनुमानने सुग्रीवके साथ रामचंद्रकी मित्रता करा दी। वालीका वध कर सुग्रीवको राज्य प्रदान करेंगे, रामचंद्रने ऐसी प्रतिज्ञा की। सुग्रीवने भी वचन दिया, कि वह वानरोंकी सहायतासे सीताको ढूंढ़ निकालेगा और हर हालतसे रामचंद्रको मदद पहुंचायेगा। इस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध हो दोनोंने मित्रता कर ली। रामचन्द्रने वालीका वध कर सुग्रीवको राज्य दिया। पीछे सुग्रीवने वानरोंको चारों ओर भेजा। वानर सारी पृथ्वी पर सीताकी खोज करने लगे। अनंतर हनुमान्‌ने समुद्र लांघ कर सीताका पता लगाया। इसके बाद रामचंद्रने सुग्रीवकी सहायतासे वानरों द्वारा समुद्र बंधन किया और रावणका सवंश संहार कर सीताको उद्धार किया। सीता-उद्धार होनेके बाद रामचंद्रने सुग्रीव, अङ्गद, विभीषण और वानरोंके साथ अयोध्या लौट कर राज्यभार ग्रहण किया। रामके राजा होने पर सुग्रीव किष्किन्ध्या-राज्यका अधीश्वर बन राज्यशासन करने लगा। (रामायण)

वाली और रामचन्द्र देखो।

३ शुम्भ और निशुम्भका दूत। चण्डीमें इसका विवरण लिखा है। (मार्कण्डेयपु० सग्रीवसंवाद नामक ८५ अ०) ४ अर्हत् पिता। ये वर्त्तमान युगके नियम जिनके पिता थे। (हेम) ५ शिव। ६ इंद्र। ७ राजहंस। ८ असुर। ९ पर्वतविशेष। १० अस्त्रविशेष। ११ नागभेद। (त्रि०) १२ सुंदर ग्रीवाविशिष्ट, जिसकी गरदन सुन्दर हो।

सुग्रीवा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुग्रीवी (सं० स्त्री०) दक्षकी एक पुत्री और कश्यपकी पत्नी जो घोड़ों, ऊंटों तथा गधोंकी जननी कही जाती है। (गरुड़पु० ६ अ०)

सुग्रीवेश (सं० पु०) सुग्रीवस्य ईश्वरः। श्रीरामचंद्र।

सुग्न (सं० त्रि०) सुग्नायतीति सुग्नै (आतश्चोपसर्गे। पा ३।१।१३६) इति क। अत्यंत हर्षक्षयविशिष्ट।

सुघट (सं० त्रि०) सुखेन घटते खल्। १ सुन्दर, सुडौल, अच्छा बना हुआ। २ जो सहजमें हो या बन सकता हो।

सुघटित (सं० त्रि०) जिसका निर्माण सुंदर हो, अच्छी तरहसे बना हुआ।

सुघड़ (हिं० वि०) १ सुंदर, सुडौल। २ निपुण, कुशल, प्रवीण।

सुघड़ई (हिं० स्त्री०) १ सुंदरता, सुडौलपन, अच्छी बनावट। २ निपुणता, चतुरता।

सुघड़ता (हिं० स्त्री०) १ सुघड़ होनेका भाव, सुन्दरता, मनोहरता। २ निपुणता, कुशलता, सुघड़पन।

सुघड़पन (हिं० पु०) सुघड़ होनेका भाव, सुघड़ाई। निपुणता, दक्षता, कुशलता।

सुघड़ाई (हिं० स्त्री०) सुघड़ई देखो।

सुघड़ापा (हिं० पु०) १ सुन्दरता, सुघड़ाई, सडौलपन। २ दक्षता, निपुणता, कुशलता।

सुघर (हिं० वि०) सुघड़ देखो।

सुघरता (हिं० स्त्री०) सुघड़ता देखो।

सुघरपन (हिं० पु०) सुघड़पन देखो।

सुघराई (हिं० स्त्री०) १ सुघड़ई देखो। २ सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी। इसके गानेका समय दिनमें १० से १६ दंडतक है।

सुघराई कान्हड़ा (हिं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक राग इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सुघराई टोडी (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी।

सुघरी (हिं० स्त्री०) १ शुभ समय, अच्छी घड़ी। (वि० स्त्री०) २ सुन्दर, सुडौल।

सुघोर (सं० त्रि०) अतिशय घोर, बहुत गाढ़ा।

सुघोष (सं० पु०) १ चौथे पाण्डव नकुलके शंखका नाम (गीता १ अ०) २ एक बुद्धका नाम। ३ एक प्रकारका यन्त्र। (क्लिष्टा०) ४ सुस्वर, सुन्दर आवाज। (त्रि०) ५ सुस्वरयुक्त, जिसका सुन्दर स्वर हो, अच्छे गले या आवाजवाला।

सुघोषवत (सं० त्रि०) सुघोषविशिष्ट।

सुङ्गवंश—मौर्यवंशके अन्तिम राजा वृहद्रथका विश्वासघातकतापूर्वक विनाश कर उनका प्रधान सेनापति पुष्पमित्र (किसीके मतसे पुष्यमित्र) सिंहासन पर बैठा। पुष्पमित्रसे इस प्रकार प्रतिष्ठित राजवंश ही इतिहासमें सुङ्गवंश नामसे परिचित है।

मौर्यवंशके अधीन प्रायः सभी देशोंमें सुङ्गराजाओंका अधिकार प्रतिष्ठित हुआ था। पञ्जाब-सीमान्त पर मौर्योंका या सुङ्गोंका कभी कोई आधिपत्य था या नहीं, इस विषयमें विशेष संदेह है। पुष्पमित्रने जब सिंहासन अधिकार किया, तब यह राज्य दक्षिणमें मंदाकिनी (ऐतिहासिकोंके मतसे) वर्त्तमान नर्मदा पर्यन्त विस्तृत था तथा गङ्गामातृक देश (वर्त्तमान विहार, तिरहुत तथा आगरा और अयोध्याप्रदेश) इसके अन्तर्गत थे। मौर्योंकी तरह सुङ्गोंके समयमें भी पाटलीपुत्रमें ही इसप्रदेशकी राजधानी थी। सुङ्गवंशका विलोप करके वसुदेवने कण्वराजवंशकी प्रतिष्ठा की।

पुष्पमित्र और भारतवर्ष देखो।

सुचंग (हिं० पु०) घोड़ा।

सुचक्र (सं० त्रि०) शोभन चक्रयुक्त, उत्तम चक्रयुक्त रथ।

सुचक्षस् (सं० त्रि०) सुदर्शन, देखनेमें सुन्दर।

सुचक्षुस् (सं० पु०) १ उडुम्बर, गूलर। २ शिव, महादेव। (शिवका सहस्रनाम) ३ विद्वान् व्यक्ति, पंडित। (क्ली०) ४ शोभन चक्षु, सुन्दर आंख। (त्रि०) ५ सुन्दर चक्षुविशिष्ट, जिसके नेत्र सुन्दर हों, सुन्दर आंखोंवाला। (स्त्री०) ६ एक नदीका नाम।

सुचञ्चुका (सं० स्त्री०) महाचञ्चु, बड़ा चञ्चुक शाक।

सुचतुर (सं० त्रि०) अतिशय चतुर, बड़ा चालाक।

सुचना (हिं० क्रि०) सञ्चय करना, इकट्ठा करना।

सुचन्दन (सं० क्ली०) पतङ्ग या वक्कम नामकी लकड़ी जिसका व्यवहार औषध और रंग आदिमें होता है, रक्तसार, सुरंग।

सुचन्द्र (सं० पु०) १ समाधिभेद। २ देवगन्धर्वभेद। ३ सिंहिकाका पुत्र। ४ हेमचंद्रका पुत्र और धूम्राश्वका पिता।

सुचन्द्रा (सं० स्त्री०) बौद्धोंके अनुसार एक प्रकारकी समाधि। (शतसाहस्रप्र०)

सुचरित (सं० त्रि०) १ शोभन चरितयुक्त, सच्चरित्र, सुंदर चरित्र। २ उत्तमरूपसे आचरित। (क्ली०) ३ साधु आचरण। ४ उत्तम चरित्र।

सुचरितमिश्र—कुमारिलके श्लोकवार्त्तिककी काशिका नामकी टीकाके रचयिता।

सुचरित्र (सं० त्रि०) सुचरित देखो।

सुचरिता (सं० स्त्री०) पतिपरायणा स्त्री, साध्वी, सती।
सुचर्मन् (सं० पु०) १ भूर्जदल, भोजपत्र। (राजनि०) (त्रि०) २ शोभन चर्मविशिष्ट, सुंदर चमड़ावाला।
सुचा (हिं० वि०) शुचि देखो।
सुचाना (हिं० क्रि०) १ किसीको सोचने या समझने प्रवृत्त करना, सोचनेका काम दूसरेसे कराना। २ दिखलाना। ३ किसीका ध्यान किसी बातकी ओर आकृष्ट करना।
सुचार (हिं० वि०) सुचारु, सुंदर, मनोहर।
सुचारा (सं० स्त्री०) यदुवंशी श्वफल्कको पुत्री जो अक्रूरकी सास थी। (भागवत ६।२४।१७)
सुचारु (सं० त्रि०) १ अति मनोहर, बहुत सुंदर, बहुत खूबसूरत। (पु०) २ रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र। ३ बाहुका पुत्र। ४ प्रतीर्थ। ५ विश्वक्सेनका पुत्र।
सुचाल (हिं० स्त्री०) उत्तम आचरण, अच्छी चाल, सदाचार।
सुचाली (हिं० वि०) १ जिसके आचरण सुंदर हों, अच्छे चाल चलनवाला। (स्त्री०) २ पृथ्वी।
सुचि (हिं० वि०) १ शुचि देखो। (स्त्री०) २ सूई।
सुचिकरमा (हिं० वि०) शुचिकर्मा देखो।
सुचित (हिं० वि०) १ जो किसी कामसे निवृत्त हो गया हो। २ निश्चिंत चिंतारहित, बेफिक्र। ३ एकाग्र, स्थिर, सावधान। ४ शुद्ध, पवित्र।
सुचितई (हिं० स्त्री०) १ सुचित होनेका भाव, निश्चिन्तता, बे-फिक्री। २ एकाग्रता, स्थिरता, शांति। ३ छुट्टी, फुर्सत।
सुचितो (हिं० वि०) १ जिसका चित्त किसी बात पर स्थिर हो, जो दुविधामें न हो, स्थिर चित्त। २ निश्चिन्त, चिन्तारहित, बे फिक्र।
सुचित्त (सं० त्रि०) १ जिसका चित्त स्थिर हो, स्थिर चित्त, शान्त। २ जो किसी कामसे निवृत्त हो गया हो, जो छुट्टी पा गया हो।
सुचित्र (सं० त्रि०) सुन्दर चित्रयुक्त, सुन्दर चित्र-विशिष्ट।
सुचित्रक (सं० पु०) १ मत्स्यरङ्गपक्षी, मुर्गाबी। २ चित्रसर्प, चितला साप। (त्रि०) ३ सुन्दर चित्रयुक्त।

सुचित्रबीजा (सं० स्त्री०) विडङ्ग, वायविडंग।
सुचित्रा (सं० स्त्री०) चिर्भिटा या फूट नामक फल।
सुचिन्तित (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे चिन्तित, अच्छी तरह सोचा विचारा हुआ।
सुचिन्तितार्थ (सं० पु०) १ मारके एक पुत्रका नाम। (ललितवि०) (त्रि०) २ जिसने अच्छी तरह अर्थ समझा हो।
सुचिमंत (हिं० पु०) शुद्ध आचरणवाला, सदाचारी, शुद्धाचारी।
सुचिर (सं० त्रि०) १ दीर्घकालस्थायी, बहुत दिनों तक रहनेवाला। २ प्राचीन, पुराना। (क्ली०) ३ अति दीर्घकाल, बहुत अधिक समय।
सुचिरम् (सं० अव्य०) दीर्घकाल तक, अधिक समय तक।
सुचिरायुस् (सं० पु०) सुचिर आयुर्यस्य। देवता।
सुची (हिं० स्त्री०) शची देखो।
सुचीरा (सं० स्त्री०) सुचारा देखो।
सुचीर्णध्वज (सं० पु०) कुष्माण्डोंके एक राजाका नाम।
सुचुक्रिका (सं० स्त्री०) तिन्तिडी, इमली।
सुचुटी (सं० स्त्री०) १ चिमटा। २ संडसी।
सुचेतन (सं० त्रि०) १ सुदृश्य। २ शोभन ज्ञानयुक्त, अच्छी समझवाला। (पु०) ३ विष्णु।
सुचेतस् (सं० त्रि०) १ सुन्दर चित्तयुक्त, उत्तम चित्त-वाला। २ सन्तुष्ट चित्त। ३ सतर्क, होशियार, चौकन्ना। (त्रि०) ४ उत्तम चित्त।
सुचेता (सं० त्रि०) सुचेत देखो।
सुचेतु (सं० क्ली०) सुन्दर ज्ञान, अच्छी समझ।
सुचेतुन (सं० क्ली०) उत्तम ज्ञान, अच्छी समझ।
सुचेलक (सं० पु०) १ शोभन वस्त्र, सुन्दर और महीन कपड़ा। (त्रि०) २ उत्तम वस्त्रयुक्त, जिसका कपड़ा सुन्दर हो।
सुचेष्टरूप (सं० पु०) बुद्धदेव। (ललितवि०)
सुचक्षुी (सं० स्त्री०) शतद्रु नदी। (शब्दरत्ना०)
सुच्छद (सं० त्रि०) सुन्दर आच्छादनविशिष्ट, सुन्दर प्रलेपयुक्त।
सुच्छदिस् (सं० त्रि०) सुख। (ऋक् ७।६६।१३)

सुच्छम (हिं० पु०) घोड़ा।

सुजड़ (हिं० पु०) तलवार।

सुजड़ी (हिं० स्त्री०) कटारी।

सुजन (सं० पु०) सुन्दरो जनः। साधु, सज्जन, भला मानस, शरीफ।

सुजन (हिं० पु०) आत्मीयजन, परिवारके लोग।

सुजनता (सं० स्त्री०) सुजनस्य भावः तल्-टाप्। सुजनका भाव, सौजन्य, भद्रता, भलमनसत।

सुजनम्मन्य (सं० त्रि०) आत्मानं सुजनं मन्यते मन् खश् मुमागमः। अपनेको सुजन समझनेवाला।

सुजनविनोद—टाड साहबके राजस्थानके मतसे राष्ट्रकूटाधिपति नयनपालने जब कान्यकुब्ज अधिकार किया, उस समयसे राठोर जाति भी कामध्वज उपाधिसे भूषित हुई है। उनके वंशधरोंने १३ कामध्वज उपाधिधारी शाखाकी सृष्टि हुई। पञ्चम शाखाके प्रवर्त्तक सुजनविनोद थे। इनके उत्तराधिकारिगण ज्यरक्षतोय कामध्वज कह कर परिचित हुए।

सुजनसिंह—शिशोदिया-वंशीय मेवारराजके पुत्र। इनके पिताका नाम वीर अजयसिंह था। बड़े भाईके लड़के चित्तौरविजयी महावीर हमीरको राजटीका दे कर स्वदेशभक्त अजयसिंहने गृहविवाद निपटानेके लिये पुत्र सुजनसिंहको देशान्तर भेज दिया। सुजनसिंहने स्वदेशसे वहिष्कृत हो दाक्षिणात्यमें आ कर एक छोटा राज्य बसाया। किन्तु कालक्रमसे इसी छोटे राज्यने प्रबल प्रतापान्वित हो दिल्लीके सिंहासन तकको कंपा दिया था। महाराष्ट्रकुलके प्रतिष्ठाता महावीर शिवाजी सुजनसिंहके ही वंशधर थे।

सुजनिमान (सं० त्रि०) शोभनजन्मा, उत्तम जन्मयुक्त।

सुजनी (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी बड़ी चादर जो कई परतकी होती और बिछानेके काम आती है। यह बीच बीचमें बहुत जगहोंमें सी हुई रहती है।

सुजन्तु (सं० पु०) पुराणानुसार जह्नुके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु०)

सुजन्मन् (सं० त्रि०) १ सुजातक, जिसका उत्तम रूपसे जन्म हुआ हो, उत्तम रूपसे जन्मा हुआ। २ विवाहित स्त्री पुरुषका औरस पुत्र। ३ सत्कुलोद्भव, अच्छे कुलमें उत्पन्न। ४ सुन्दर, खूबसूरत।

सुजय (सं० पु०) सु जि अच्। उत्तम रूपसे जय, सुजेय।

सुजल (सं० क्ली०) १ पद्म, कमल। २ (त्रि०) सुन्दर जलसम्बंधी। ३ सुन्दर जलयुक्त।

सुजल्प (सं० पु०) वह भाषण जो सहृदयता, उत्साह, उत्कंठा तथा भावपूर्ण हो, उत्तम भाषण।

सुजस (हिं० पु०) सुयश देखो।

सुजा उद्दौला—अयोध्याके नवाब सफदर जङ्गका पुत्र। १७३१ ई०में इसका जन्म हुआ। अहमदशाह अबदलीको भगा कर सफदरने अहमदशाहको दिल्लीके सिंहासन पर बैठाया और आप उसका प्रधान वजीर बन गया। सफदरकी मृत्युके बाद उनका लड़का सुजा उद्दौला अयोध्याका नवाब हुआ। (१७५४ ई०के सितम्बर मासमें) इसी समय बादशाह द्वितीय आलमगीरकी मृत्युके बाद उसका लड़का शाह आलम दिल्लीकी मसनद पर बैठा। कुछ दिन बाद सम्राट्ने सुजा उद्दौलाको बुला कर पितृअर्जित वजीरके पद पर अभिषिक्त किया अनन्तर सम्राट्के दरबारमें अपने बड़े लड़केको प्रतिनिधिस्वरूप रख कर सुजा उद्दौला अपनी जागीर अयोध्या लौटा। महाराष्ट्र शक्ति विध्वस्त करके अहमदशाह अबदलीने जब दिल्ली पर दखल जमाया, तब सुजा उद्दौलाने युद्धमें उनकी मदद पहुंचाई थी, इस कारण अबदलीने भी उसे वजीरकी उपाधिसे भूषित किया था।

इधर प्रभूत शक्ति सञ्चय कर महाराष्ट्रसेनापति दत्त सिन्धिया रोहिलाराज्यकी ओर अग्रसर हुआ। विपदसे घिरा देख नाजीब उद्दौलाने अयोध्याके नवाब सुजा उद्दौलासे सहायताके लिये बार बार प्रार्थना की।

विपद्ग्रस्त और सुजा उद्दौला वर्षाके समय रोहिला पतिकी सहायतार्थ लखनऊसे रवाना हुआ। किन्तु पथघाट उस समय इतना दुर्गम हो गया था, कि अधिक दूर आगे बढ़ नहीं सका और शाहाबादमें छावनी डाल कर वर्षाकाल बिताना चाहा।

१७५६ ई०के अक्तूबर मासके शेष भागमें अथवा नवम्बर मासके प्रथममें सुजा उद्दौलाने महाराष्ट्रोंके विरुद्ध दो बड़ी बड़ी सेना भेजी। घमसान युद्ध छिड़ा। महाराष्ट्रसेना हार खा कर भाग गई। उनकी धनसम्पत्ति अस्त्र-शस्त्र कुल विजेताओंके हाथ

लगी। अनन्तर सभी रोहिला सरदार सुजा उद्दौलाके समीप उपस्थित हुआ। प्रबलपराक्रान्त महाराष्ट्रोंका मुकाबला करना असम्भव है, सुजा उद्दौलाने इस प्रकार कह कर रोहिलोंको उन लोगोंके साथ सन्धिस्थापन करनेकी सलाह दी। तदनुसार दोनों पक्षमें सन्धिका प्रस्ताव चलने लगा। इसी समय संवाद आया, कि अहमदशाह अबदली लाहोरके पास आ धमका है और सन्धिका पालन नहीं किया गया। दत्तसिन्धियाने दलबलके साथ दिल्लीपथसे अबदलीके विरुद्ध यात्रा की। रोहिलाओंने जा कर अबदलीका साथ दिया। क्रमशः ससम्भ्रमसे आमन्त्रित हो सुजा उद्दौलाने भी उनका दल पुष्ट किया। राहमें भीषण युद्ध छिड़ा, महाराष्ट्रगण हार खा कर जिधर तिधर भाग गये। यह घटना १७६१ ई०के जनवरी मासमें घटी।

१७६३ ई०में बादशाह शाह आलम और सुजा उद्दौला बुन्देलाराजके अधीनस्थ झांसी और महाराष्ट्रोंके अधीनस्थ कालिञ्जर दुर्ग आक्रमण करनेके लिये निकले। कालिञ्जरके राजाने बहुत नकद रुपये दे कर और वार्षिक कर देना स्वीकार कर सुजा उद्दौलाके साथ मेल कर लिया। धीरे धीरे झांसी काल्पी आदि जिले शाह आलम और सुजा उद्दौलाके राज्यभुक्त हुए।

इधर बङ्गालको नवाबी ले कर बहुत दिनोंसे गोल माल चल रहा था। नवाब सिराज उद्दौलाको सिंहासनच्युत करके अंगरेजोंने मीरजाफरको नवाब बनाया। कुछ दिन बाद उसके साथ भी मनमुटाव हो जानेसे मीर कासिम अली सिंहासन पर बैठाया गया। किन्तु वह शीघ्र ही उन लोगोंके अधीनता पाशसे अपनेको विमुक्त करनेकी चेष्टा करने लगा। पटनामें अंगरेज बंदियोंको समरू द्वारा निष्ठुरतासे मरवा कर कासिम अली दिल्लीके सम्राट् और अयोध्याके नवाबकी सहायता पानेके लिये वाराणसीकी ओर भाग गया।

जब वह वाराणसीके पास आया, उस समय कालिञ्जर दुर्गके सम्बन्धमें बन्दोबस्त करनेके लिये सम्राट् और सुजा उद्दौला यमुनातीरवर्ती बीबीपुर घाट पर डेरा डाले हुए थे। भविष्यमें इसका उपयुक्त प्रतिदान देनेका आश्वासन दे कर कासिम अलीने अंगरेजोंके विरुद्ध उन लोगोंसे सहायता मांगी।

उसकी प्रार्थना स्वीकार कर सम्राट् और नवाब सुजा उद्दौलाने ससैन्य अंगरेजोंके विरुद्ध यात्रा कर दी। सुननेमें आता है, कि सम्राट्की इच्छा नहीं थी—सुजा उद्दौलाने ही उसे बाध्य किया था। जो हो, उन लोगोंका आगमन-संवाद पा कर पटनाके अंगरेजोंने सिताब रायको भेज कर उन्हें निरस्त करनेकी चेष्टा की; किंतु जब देखा, कि ये लोग प्रतिनिवृत्त होनेके नहीं, तब वे लोग पटनाका परित्याग कर १२ मील दूरवर्ती बांच पहाड़ी नामक स्थानमें गये और युद्ध ठान देनेके लिये तैयार हो गये। तीन दिन तक सुजा उद्दौलाकी सेनाके साथ अंगरेजोंका तुमुल युद्ध होता रहा।

इधर वर्षाके शुरू होनेसे सम्राट् और सुजा उद्दौलाने जहां छावनी डाली थी, वहां बहुत जल जमा होने लगा। अब बाध्य हो कर उन्होंने वाराणसीसे ६० मील पूरब बक्सर नामक स्थानमें छावनी डाली। इस प्रकार युद्धका आयोजन करनेमें ही अनेक दिन बीत गये और रुपये भी बहुत खर्च हुए। सेना वेतनके लिये तंग करने लगी। इस पर सुजा उद्दौलाने पूर्व प्रतिज्ञाको याद दिलाते हुए सेनाका खर्च देनेके लिये मीर कासिमको लिख भेजा। पीछे जब उसने देखा, कि मीरकासिम प्रतिश्रुति रक्षा करनेमें प्रस्तुत नहीं है, तब उसे कैद कर उसके हाथी, घोड़े आदि जो कुछ थे, वही बेच कर सेनाका खर्च चलाने लगा।

वर्षाके आरम्भमें मेजर हेकटर मनरोके अधीन अंगरेजी सेना भी बक्सरमें आ धमकी। यह १७६४ ई०को २२वीं अक्तूबरकी बात है। इस युद्धमें दोनों पक्षके बहुतेरे हताहत हुए। पहले विजयलक्ष्मी सुजा उद्दौलाकी ही तरफ थी। सुजा उद्दौलाने हुकुम दिया, कि एक विपक्ष भी जान ले कर भागने न पावे। शत्रुपक्षका विनाश करता हुआ महावीर ईशा हठात् किसीके हाथसे आहत हो कर जमीन पर गिर पड़ा—सुजा उद्दौलाकी सेना हतोत्साह और विशृङ्खल हो गई; अंगरेजोंके हृदयमें नये उत्साह और बाहुमें नये बलका संचार हुआ। कोई उपाय न देख सुजा उद्दौला और सम्राट् कर्मनाशा पार कर दूसरे किनारे चले गये। कर्मनाशाके ऊपर एक पुल था, सुजा उद्दौलाके हुकुमसे वह पुल तोड़वा दिया

गया। हार खा कर भी बचे खुचे मुसलमान कापुरुष-पूर्वक भाग गये। नवाबके परित्यक्त शिविर, कमान, बन्दूक आदि अङ्गरेजोंके हाथ लगे। यह घटना १७६४ ई०की २३वीं अक्तूबरको घटी थी।

सुजा उद्दौला और सम्राट् भाग कर वाराणसी पहुंचे। वहांसे नवाब फिर इलाहाबाद गया और तीन मास वहां रह कर नई सेना संग्रह करने लगा।

इधर सम्राट् यद्यपि प्रकाश्य भावसे कुछ नहीं कह सकते थे, फिर भी सुजा उद्दौलाकी कर्तृत्वपरिचालनासे उन्हें भारी विरक्ति हो गई थी। बक्सर युद्धके बाद सुजा उद्दौलाके हाथसे विमुक्त होनेके लिये उन्होंने अङ्गरेजोंके साथ सन्धि कर ली। चुनार दुर्ग दखल कर अंगरेज लोग सम्राट्को हस्तगत करके जौनपुरकी ओर अग्रसर हुए—नये बलसे बलिष्ठ हो कर सुजा उद्दौला भी उसी ओर दौड़ पड़ा।

परन्तु उसकी मुगलसेना अंगरेजोंके साथ सन्धि करनेके लिये उससे अनुरोध करने लगी। परन्तु इसने कुछ भी कान नहीं दिया। इस पर मुगल सेना बागी हो गई। कोई उपाय न देख नवाब जौनपुरसे लखनऊ भाग गया।

वहांसे उसने सपरिवार हाफिज रहमत रोहिलाके अधीन बरेलीकी ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंचनेके बाद समस्त अधीन परिजनोंको रख कर वह गढ़मुक्तेश्वरकी ओर रवाना हुआ। वहां महाराष्ट्र दलपतियोंसे भेंट कर वह फर्रुखाबाद चला गया। फर्रुखाबादमें अहमद खां, महम्मद खां, हाफिज रहमत्, दुन्दि खां आदि रोहिला तथा अफगान सरदारोंसे सुजा उद्दौलाने सहायता मांगी—किन्तु अंगरेजोंके विरुद्ध उसे सहायता देनेसे सभी इनकार करते गये। पीछे सुजा उद्दौला महाराष्ट्रोंको ले कर गंगातीरवर्ती कोरा नामक स्थानमें उपस्थित हुआ। इलाहाबादसे अंगरेज लोग भी वहां आ पहुंचे।

दोनों पक्षमें युद्ध छिड़ गया। कुछ देर युद्ध करनेके बाद महाराष्ट्रगण तथा अन्यान्य साहाय्यकारी भाग खड़े हुए। निरुपाय हो नवाबने अङ्गरेजोंके साथ सन्धिका प्रस्ताव कर भेजा। युद्धके व्ययस्वरूप २५ लाख, सेनाओंके पारितोषिकस्वरूप २५ लाख और सेनापतिको ८ लाख रुपये देनेकी उसने इच्छा प्रकट की। अनुचर समरूको ले कर पहले सन्धिस्थापनमें कुछ गोलमाल चला, पीछे नवाबने उसे नौकरीसे हटा दिया। अब दोनों पक्षोंमें सन्धि हो गई। नवाबसे इलाहाबाद और निकटवर्ती १२ लाख रुपयेका कुछ महाल तथा कोरा जिला ले कर सम्राट् शाह आलमको दिया गया। अयोध्याप्रदेशमें फिर नवाबका अधिकार प्रतिष्ठित हुआ। इस प्रकार कई वर्ष सुखसे बीत गये।

अब महाराष्ट्रोंकी लुब्धदृष्टि फिर बलवती हो उठी। १७७२ ई०में उन लोगोंने रोहिला-सरदार नाजीब उद्दौलाके लड़के जाबिता खां पर आक्रमण कर दिया। कटिहार तक उन लोगोंका आगमनसंवाद पा कर सुजा उद्दौला आगे बढ़ा और शाहाबादमें सेना डाल कर रहने लगा। जाबिता खांके परिवार और परिजनवर्ग महाराष्ट्रोंके पंजेमें आये, उसने स्वयं भाग कर शाहाबादमें सुजा उद्दौलासे साहाय्य प्रार्थना की। सुजाने महाराष्ट्रोंको कटिहार छोड़ देने लिखा। उत्तरमें उन्होंने कहला भेजा, कि युद्धमें उनके पचास लाख रुपये खर्च हुए हैं। उनसे रुपये नहीं मिलनेसे वे कटिहार नहीं छोड़ सकते। बहुत अनुरोध करने पर वे ४० लाख रुपये ले कर राजी हो गये सही, किन्तु रुपया-परिशोधके जामिनमें सुजा-उद्दौलाको कहा गया, कि उन्हें अपनी मुहराङ्कित और स्वाक्षरयुक्त एक दस्तावेज लिख देनी होगी। इस पर सुजा उद्दौलाने कहला भेजा, कि हाफिज रहमत् यदि उन्हें भी इसी मर्मकी एक दस्तावेज लिख दें, तो वे महाराष्ट्रोंके प्रस्तावके अनुसार कार्य कर सकते हैं। हाफिजने सरदारोंकी सलाहसे एक दस्तावेज लिख कर और उस पर अपना दस्तखत बना कर सुजा उद्दौलाके पास भेजी। सुजा उद्दौलाने भी अपनी ओरसे एक दस्तावेज लिख कर महाराष्ट्रोंके पास भेज दी। उसमें लिखा था, कि जाबिता खांके परिवारको मुक्ति दे कर और कटिहारका परित्याग कर जब महाराष्ट्रगण यमुना पार कर शाहजहानाबाद पहुंचेंगे, उसी समय नवाब मराठोंको ४० लाख रुपये देंगे।

उधर महाराष्ट्रोंने कटिहारसे निकल कर नवाबके

राज्य पर आक्रमण करनेकी इच्छा प्रकट की। सुजा उद्दौला भी चुप नहीं बैठा, वह भी महाराष्ट्रों पर आक्रमण करनेके लिये निकल पड़ा। सुजा उद्दौलाकी अग्रगामी सेनाने भी आ कर साथ दिया।

दोनों पक्षमें घमसान युद्ध छिड़ गया। युद्धमें हार खा कर होलकर भाग चला। नवाबी सेनाके अधिनेता जेनरल चैमपियन और महबूब अली खाने नदी पार कर सिन्धियाको आक्रमण और परास्त किया। कुल माल असबाब फेंक सिन्धिया जान ले कर भागा।

१७७· ई०में सुजा उद्दौलाने नाना प्रकारसे प्रलुब्ध कर कटिहारके छोटे बड़े सभीको काबूमें कर लिया। इसके बाद पार्श्ववर्त्ती कुछ स्थानोंके प्रधानों तथा कर्मचारियोंको भी उसने अपने पक्षमें कर लिया। इस प्रकार अपनी बलवृद्धि कर वह इटावा जीतनेके लिये निकला। वहां जो अल्पसंख्यक महाराष्ट्र सिपाही थे, वे नवाबका आगमन-संवाद पा कर नौ दो ग्यारह हो गये। बिना किसी खून खराबीके इटावा नवाबके हाथ आया और वह इसके सुशासनका बंदोबस्त करने लगा। रागें अड़ा कर हाफिज रहमतने लिख भेजा, "नवाबको मालूम नहीं, कि पानीपत युद्धके बाद अहमद शाह दुर्रानीने यह प्रदेश मुझे दिया था। उस युद्धके बाद पार्श्ववर्त्ती और भी कितने स्थान मेरे दखलमें आये थे। अभी यद्यपि अवस्थाविपर्ययसे यह स्थान मेरे दखलसे निकल कर महाराष्ट्रोंके हाथ चला गया है, तथापि मैं शीघ्र ही इसके पुनरुद्धारकी चेष्टा करने जा रहा हूं।" सुजाउद्दौलाने जवाब दिया, 'महाराष्ट्रोंसे मैंने यह देश अधिकार किया है। अतएव तुम्हें इसमें कुछ भी आपत्ति या असन्तोष करना उचित नहीं। कटिहारके लोगोंसे सहायता पा कर मैं बिना युद्धके इस विषयकी मीमांसा नहीं कर सकता, इसी कारण जल्दबाजीमें युद्ध करनेके अभिप्रायसे ४० लाख रुपयेमें जो अभी २५ लाख बाकी है उसे चुकानेके लिये नवाब उसे तंग करने लगा और कहा कि इसके बाद इटावाके विषय पर विचार किया जायेगा।

नवाबका अभिप्राय समझनेमें रहमतको देर न लगी। उसने भी लिख भेजा, "जितना रुपया आपने महाराष्ट्रोंको दिया है, उतना मैं पहले ही आपको भेज चुका हूं। जो रुपया उन्हें अब भी नहीं मिला है, अथवा जिसके लिये वे खोज नहीं करते, उस रुपयेको ले कर मेरे साथ युद्ध करना नवाबको उचित नहीं। परन्तु यदि नवाब युद्ध ही चाहते हैं, तो मैं भी तैयार हूं।' यह पत्र पा कर सुजा उद्दौला दलबलके साथ कोरियागञ्जके पास गङ्गा पार करनेकी तैयारी करने लगा। हाफिज रहमतने भी नगरके बाहर आ कर छावनी डाली।

सुजा उद्दौलाके सहकारी अंगरेजी सेनाके अधिनायक चैमपियन तथा कटिहारके दीवान पहाड़सिंहने रहमतसे अनुरोध किया, कि नवाबको रुपये दे दीजिये अथवा दो तीन मासमें देनेका वादा कीजिये। उत्तरमें रहमतने लिखा, "हाथमें रुपया नहीं है, रहनेसे दे देता, किन्तु इस रुपयेके लिये किसीको भी तंग करना, किसीसे साहाय्य लेना अथवा सुजा उद्दौलाके निकट सिर झुकाना मैं घृणाका काम समझता हूं। भगवान्‌के विचारके ऊपर निर्भर करके मैं प्राण तक भी निछावर करनेको तैयार हूं।" इसके बाद उसने अपने कर्मचारियों और सेनाओंको हुकुम दिया, 'जिसकी इच्छा हो, वह मेरे साथ युद्धमें जा सकता है। और जिसको इच्छा नहीं, उसकी मेरे यहां जरूरत नहीं। मेरे शत्रुकी संख्या बहुत है और मित्रकी संख्या बहुत ही कम। किन्तु मैं इसकी परवाह नहीं करता।'

१७७४ ई०की २४वीं मार्चको बहुत थोड़ी सी सेना ले कर उसने बरेलीसे आनवलकी ओर यात्रा कर दी। युद्धका संवाद पा कर मौ तथा फर्रुखाबाद निवासी बहुत-से अफगानोंने आ कर उसका साथ दिया। उसके अधीन सुखशान्ति थी, इसी कारण बिना बुलाये ही कितने राजपूत जमींदार आ कर उसका दल पुष्ट करने लगे। इस प्रकार दिनों दिन उसकी सैन्यसंख्या बढ़ने लगी। ताण्डासे यात्रा कर किशोरघाटके निकट वह रामगङ्गा पार हुआ और बरेलीसे ७ कोस पूर्ववर्त्ती फरीदपुर नामक स्थानमें पहुंचा। इसके बाद सगल नदी पार कर उसने कड़ा नामक स्थानके चारों ओरकी वनभूमिमें खेमा डाला। इधर सुजा उद्दौला भी तिलाढ़ पहुंचा। दोनों पक्षमें अभी सिर्फ सात आठ कोसका

अन्तर था। दो तीन दिनके बाद नवाब गिरिआीन नामक स्थानमें उपस्थित हुआ। रहमतने भी यहां आ कर खुले मैदानमें शत्रुके सामने छावनी डाली।

दोनोंमें युद्ध छिड़ गया। विश्वासघातकता कर उसके दलके अधिकांश लोग युद्धक्षेत्रमें सुजा उद्दौलाके पक्षमें मिल गये। जो पचास सिपाही बच गये, उन्हीं को ले कर रहमत्ने अतुल विक्रमसे युद्ध किया। उसके दोनों लड़के नवाबके हाथसे बंदी हुए थे। नवाबने यथोपयुक्त सम्मान दिखला कर उन्हें खिलअत दी। इसके बाद बुंदेलखण्डमें जा कर रोहिलाराज्यका शासनभार मीर्जा वसीर खांके ऊपर सौंपा।

इसके कुछ दिन बाद नवाब सुजा उद्दौला बीमार पड़ा और एक मास तेरह दिन रोग भोगके बाद इस लोकसे चल बसा। (१७७५ ई०की २८वीं जनवरी)

सुजाक (फा० पु०) सुजाक देखो।

सुजा खां (सुजा उद्दीन खां) मुर्शिदकुली खांका जमाई और उत्तराधिकारी। खोरासानके प्रसिद्ध तुर्कवंशमें इसका जन्म हुआ था। घटनाचक्रसे इसके माता पिता भारतवर्षमें दक्षिणापथमें आये थे और यहीं बुर्हानपुर नामक स्थानमें सुजाउद्दीनने जन्मग्रहण किया। इसके बाल्य जीवनके सम्बन्धमें केवल इतना ही जाना गया है, कि बंगालके नवाब मुर्शिद कुली खांकी इस पर बड़ी मेहरबानगी रहती थी, इस कारण अपनी कन्या जिन्नेतुन्निसा बेगमका विवाह उसने सुजा खांके साथ कर दिया। तभीसे ससुरके आश्रयमें ही यह प्रतिपालित होने लगा। बंगालके दीवानी पद पर बैठते ही कुली खां जमाईको पहले उड़ीसाकी नायब दीवानी और पीछे नाजिमी पर प्रतिष्ठित किया। कोमल प्रकृति और न्यायपरायण होने पर भी दुर्दम कामलालसासे इसका चरित्र कलङ्कित हो गया। धार्मिक जिन्नेतुन्निसा स्वामीके इस व्यवहारसे तंग आ कर मुर्शिदाबादमें आ रहने लगी। कुली खांका भी जमाई परसे अनुराग जाता रहा। बालक असदुल्लाको ही दौहित्रको उसने बादशाही दीवानी पद पर प्रतिष्ठित कर रखा था। मृत्युके समय जमाईको सूबेदार न बना कर उसीको बना गया।

इधर सुजा खां भी उड़ीसामें बैठ कर बङ्गालके नवाबी पदके लिये दिल्ली दरबारसे सनद लानेकी चेष्टा कर रहा था। किन्तु उसके यह सनद पानेके पहले ही श्वशुरकी मृत्यु हो गई। पीछे पुत्र सरफराज खां बङ्गालकी मसनद पर बैठा। पहले इतस्ततः करने पर भी पीछे सुजा खांने पुत्र तकी खांके ऊपर उड़ीसाका शासनभार सौंप सरफराजके विरुद्ध युद्धयात्रा की। राहमें मेदिनीपुरमें बादशाही सनद पा कर उसका उत्साह और भी बढ़ गया, किंतु पुत्र सरफराजने युद्ध नहीं किया, धार्मिक माता और मातामहीके परामर्शसे आगे बढ़ कर उसने पिताको नवाब कह कर अभिवादन किया। सुजा खांका चित्त परिष्कार हो गया। (१७२५ ई०)

नवाबी मसनद पर बैठ कर सुजाने खूब धीर और गम्भीरभावसे कार्य करना शुरू किया। वह उड़ीसासे चुन चुन कर उपयुक्त लोगोंको ला उच्च राजकार्य पर नियुक्त करने लगा। कुली खांके अमलमें कुछ जमींदार बन्दी और नजरबंदी हुए थे। नियमितरूपसे राजस्व भेजा करेंगे, उन लोगोंसे इस प्रकार प्रतिश्रुति ले कर उन्हें छोड़ दिया गया। पीछे बादशाहको संतुष्ट करनेके लिये उसने बहुतसे महामूल्य उपढौकन दरबारमें भेजे। सन्तुष्ट हो कर बादशाहने उसे 'मोतो मल उलमुल्क सुजा उद्दीन बाहादुर आसदजङ्ग'की उपाधि दे कर कृतार्थ किया।

सुजा खां परम दयालु और न्यायपरायण नवाब था। उसके विचारमें हिन्दू-मुसलमान, धनी निर्धनमें कुछ भी प्रभेद न था। इसी गुणसे वह सबोंका प्रीतिभाजन हो गया था।

बङ्गालका सिंहासन पानेके कुछ समय बाद ही बादशाहने उसे फिर १७३० ई०में पटनाका सूबादार बनाया। उस समय अलिवर्दी खांको उसने नायब सूबादार बना कर पटना भेजा था। इसके सुशासनसे इस प्रान्तकी खूब श्रीवृद्धि होने लगी। अवाध्य जमींदारगण भी बाध्य और वशीभूत हुए।

कर्मचारियोंके विरुद्ध अभियोग खड़ा होने पर सुजा खां स्वयं उसका अनुसंधान और विचार करते थे। कुली खांके अमलमें नाजिर अहमद नामक एक व्यक्ति लोकके काममें नियुक्त था। जमींदारोंका उत्पीड़ित

कर उसने काफी सम्पत्ति दाखिल कर ली थी और मुर्शिदाबादके पास ही भागीरथीके पश्चिमी किनारे एक बड़ी वृक्षवाटिका और एक विशाल मसजिद बनवाई थी। उसके अत्याचारका पता लगा कर सुजा खांने उसे प्राणदण्ड और सम्पत्ति जब्त करनेका हुकुम दिया। सुखस्वच्छन्दताकी ओर उसकी सदा समान दृष्टि रहती थी। कुली खांका प्रासाद तोड़ कर उसने वहां सुंदर और एक बड़ी अट्टालिका बनवाई। वसन्तविहारके लिये नाजिर अहमदका उद्यान और मसजिद उसके प्रमोदभवनमें परिणत हुई थी। ज्यों ज्यों उसकी उमर बढ़ती गई, त्यों त्यों उसका भोगविलास भी बढ़ता गया। यहां तक कि, अन्तमें उसे राजकार्य देखनेका समय भी नहीं मिलता था। मन्त्री लोग राज्यशासन करते थे और आप बेगममण्डलमें आमोदसागरमें गोता खाता था। पानभोजनमें, गीतवाद्यमें, व खुशामदोंको प्रसन्न रखनेमें तथा उत्सवादि व्यापारमें वह जलकी तरह अर्थव्यय करता था, परन्तु सद्व्यय भी उसका कम नहीं था। अपने जन्मदिनके उपलक्षमें वह दरिद्रोंको अपनी तौलके बराबर सोना-चांदी दान करता था। पण्डितों और फकीरोंके प्रति भी उसको विशेष श्रद्धा और दया थी। प्रति दिन सोनेके पहले गजदन्तनिर्मित एक स्मारक लिपिमें वह दूसरे दिन किसको किसका पुरस्कार होगा, वह उसे लिख रखता था।

उसके फौजदारने मार हटाये त्रिपुराके निर्वासित राजपुत्र जगत्‌रामके साथ मिल कर त्रिपुराके कुछ अंश दखल कर लिये थे।

ढाकाके नवाब नाजिमके दीवान यशोवन्तके सुशासनगुणसे इस प्रान्तकी भी विशेष श्रीवृद्धि हुई। नवाब साइस्ता खांके अमलमें रुपयेमें आठ मन चावल मिलता था। इसके समयमें भी वैसा ही हुआ। जमींदार लोग सभी सुजाके निरपेक्ष विचार और सुशासनके गुण पर आकृष्ट थे; केवल वीरभूमके जमींदार ही बागी हो गये थे। किन्तु शीघ्र ही उन्हें परास्त कर लाख रुपया जुर्माना वसूल किया गया।

कुली खांने जमींदारोंके विपक्षमें जो सब सुनियम निकाले थे, सुजाने उन्हें कार्यमें परिणत किया। इस समय कुछ अतिरिक्त आबोवाब स्थापित हुए जिनसे उन्नीस लाख रुपये अधिक आमदनी आई थी। वाणिज्यका शुल्क वसूल करनेके लिये भी कुछ नई चौकी स्थापन की गई, इससे भी राजस्वकी वृद्धि हुई थी।

१७३९ ई०में उसका देहान्त हुआ। मृत्यु आसन्न हो कर उसने स्वयं अपना समाधि-मन्दिर और तत्संलग्न मसजिद बनवा रखी थी तथा कर्मचारी और अनुचरवर्गको पासमें बुला कर उन्हें क्षमा करने कहा और सभीको दो महीनेका वेतन पुरस्कारमें दिया। उसकी मृत्युके बाद उसका लड़का सरफराज खां सिंहासन पर बैठा।

सुजागर (सं० वि०) जो देखनेमें बहुत सुन्दर जान पड़े। प्रकाशमान, सुशोभित।

सुजात (सं० त्रि०) सु जन-क्त। १ जिसका जन्म उत्तम रूपमें हुआ हो, उत्तम रूपसे जन्मा हुआ। २ विवाहित स्त्रीपुरुषसे उत्पन्न। ३ स्वकुलाङ्गार, अच्छे कुलमें उत्पन्न। ४ सुन्दर। (पु०) ५ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ६ भरतके एक पुत्रका नाम। ७ साड़।

सुजातक (सं० क्ली०) सौंदर्य, सुन्दरता।

सुजातका (सं० स्त्री०) कुङ्कुमशालि, शालिधान्य।

सुजातरिपु (सं० पु०) युधिष्ठिर।

सुजातवक्त्र (सं० पु०) एक वैदिक आचार्यका नाम।

सुजाता (सं० स्त्री०) सुजात टाप्। १ सौराष्ट्र मृत्तिका, गोपीचन्दन सोरठकी मिट्टी। २ बुद्ध भगवान्‌के समयकी एक ग्रामीण कन्या जिसने उन्हें बुद्धत्व प्राप्त करनेके उपरान्त भोजन कराया था। ३ उद्दालक ऋषिकी पुत्रीका नाम।

सुजाति (सं० स्त्री०) १ उत्तम कुल, उत्तम जाति। (पु०) २ वीतिहोत्रका एक पुत्र। (त्रि०) ३ उत्तम जातिका, अच्छे कुलका।

सुजातिया (हिं० वि०) १ उत्तम जातिका, अच्छे कुलका। २ स्वजातिका, अपनी जातिका।

सुजान (हिं० वि०) १ चतुर, समझदार, सयाना। २ निपुण, कुशल, प्रवीण। ३ विज्ञ, पण्डित। ४ सज्जन। (पु०) ५ पति या प्रेमी। ६ परमात्मा, ईश्वर।

सुजानगढ़—राजपूतानेके अन्तर्गत बीकानेर राज्यका एक शहर। यह बीकानेर नगरसे ८० मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है।

सुजानता (हिं० स्त्री०) सुजान होनेका भाव या धर्म, सुजानपन।

सुजानपुर—पञ्जाबके गुरुदासपुर जिलेका एक शहर। यह गुरुदासपुर नगरसे २३ मील पूर्वोत्तर कोणमें तथा पठानकोटसे ४ मील दक्षिण-उत्तरकोणमें वारी दोआबके एक विस्तृत मैदानमें बसा हुआ है। यहां हिन्दूकी अपेक्षा मुसलमानोंकी संख्या प्रायः दूनी है। यहांसे रावि नदी हो कर चावल, पटसन और हल्दीकी नाव द्वारा प्रचुर परिमाणमें रफतनी होती है।

सुजानो (हिं० वि०) विज्ञ, पंडित, ज्ञानी।

सुजावल—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत कराची जिलेके शाहबन्दर महकमेके अधीन एक तालुक। क्षेत्रफल २६७ वर्गमील है। यहां दो फौजदारी अदालत और कई थाने हैं। राजस्व ५०००० हजार रुपयेसे अधिक है।

सुजामि (सं० त्रि०) भाई बहन आदि आत्मीयस्वजनयुक्त।

सुजामुठा—मेदिनीपुर जिलान्तर्गत एक प्रसिद्ध ग्राम। इस ग्रामके सामने हलदियारपुरखालके बायें किनारे हो कर जो १५ मील विस्तृत बांध गया है, वह सुजामुठा-जलामुठा बांध कहलाता है।

सुजाव (हिं० पु०) पुत्र।

सुजावा (हिं० पु०) बैलगाड़ीमेंको वह लकड़ी जो पैंजनी आर फड़में जड़ी रहती है।

सुजिह्व (सं० त्रि०) १ शोभन जिह्वाविशिष्ट, जिसकी जिह्वा या जीभ सुन्दर हो। २ मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला।

सुजीर्ण (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे जीर्ण, अच्छी तरह पचा हुआ।

सुजीव (सं० क्ली०) शोभन जीवनविशिष्ट।

सुजीवन्ती (सं० स्त्री०) सुनहरी जीवन्ती, पीली जीवन्ती पर्याय—स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्ती, हेमवल्ली, हेमपुष्पी, हेमा, सौम्या। वैद्यकके अनुसार यह बलवीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी तथा वात, रक्त, पित्त और दाहको दूर करनेवाली है।

सुजीवित (सं० क्ली०) १ सुजीव भावे क्त। १ उत्तम जीवन, सफल जन्म। (त्रि०) २ उत्तम रूपसे जीवित।

सुजुष्ट (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे सेवित।

सुजूर्णि (सं० त्रि०) अतिशय वेगविशिष्ट या अतिशय पुरातन। (ऋक् ४।६।३)

सुजोर (हिं० वि०) दृढ़, मजबूत।

सुज्ञ (सं० त्रि०) १ सुविज्ञ, जो अच्छी तरह जानता हो, भली भांति जाननेवाला। २ विद्वान्, पंडित।

सुज्ञान (सं० क्ली०) १ उत्तम ज्ञान, अच्छी जानकारी। २ सामभेद। (लाट्या० ४।६।१४)

सुज्येष्ठ (सं० पु०) भागवतके अनुसार शुङ्गवंशी राजा अग्निमित्रके एक पुत्रका नाम। (भागवत १२।१।१५)

सुज्येष्ठ्य (सं० पु०) अग्निमित्रके एक पुत्रका नाम।

सुज्योतिस् (सं० त्रि०) दिवस, दिन।

सुझाना (हिं० क्रि०) ऐसा उपाय करना जिससे दूसरेको सूझे, दूसरेके ध्यान या दृष्टिमें लाना, दिखाना।

सुटुकना (हिं० क्रि०) १ सुड़कना देखो। २ सिकुड़ना देखो। ३ चाबुक मारना, सुटका मारना।

सुठ (हिं० वि०) सुठि देखो।

सुडसुडाना (हिं० क्रि०) सुडसुड शब्द उत्पन्न करना।

सुडीनक (सं० क्ली०) पक्षियोंके उड़नेका एक ढंग या प्रकार।

सुडौल (हिं० वि०) सुन्दर डौल या आकारका, जिसकी बनावट बहुत अच्छी हो, जिसके सब अंग ठीक और बराबर हों।

सुढंग (हिं० पु०) १ अच्छी रीति, अच्छा ढंग। (वि०) २ अच्छे ढंगका, अच्छी चालका, सुन्दर, सुघड़।

सुढर (हिं० वि०) १ प्रसन्न और दयालु; जिसकी अनुकम्पा हो। २ सुडौल।

सुणघड़िया (हिं० पु०) सुनार।

सुत (सं० पु०) सूयते इति सू-क्त। १ पुत्र, आत्मज, बेटा। २ पिता और माताको पुन्नाम नरकसे त्राण करता है, इसलिये सुतको पुत्र कहते हैं। ३ दशवें मनुका पुत्र। ४ जन्मकुण्डलीमें लग्नसे पांचवां घर। (त्रि०) ५ पार्थिव। ६ उत्पन्न, जात।

सुतफरी (हिं० स्त्री०) स्त्रियोंके पहननेकी जूती।

सुतजीवक (सं० पु०) सुतं जीवयतीति जीव-णिच्-ण्वुल्। पुत्रजीव वृक्ष, पितौंजिया।

सुतत्व (सं० क्लो०) सुतस्य भावः त्व। सुतका भाव या धर्म।

सुतदा (सं० स्त्री०) १ सुत या पुत्र देनेवाली। (स्त्री०) २ पुत्रदा देखो।

सुतनय (सं० त्रि०) १ सुपुत्रयुक्त, अच्छा पुत्रवाला। (पु०) २ सपुत्र, अच्छा लड़का।

सुतना (हिं० पु०) १ सूथन देखो। (क्रि०) २ सुतना देखो।

सुतनु (सं० स्त्री०) १ सुन्दर शरीरवाली स्त्री, कृशाङ्गी। २ आहुककी पुत्री और अक्रूरकी पत्नीका नाम। ३ वसुदेवकी एक उपपत्नीका नाम। ४ उग्रसेनकी एक कन्याका नाम। (पु०) ५ एक गन्धर्वका नाम। ६ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। ७ एक बंदरका नाम। (त्रि०) ८ शोभन शरीरयुक्त, सुन्दर शरीरवाला।

सुतनुता (सं० स्त्री०) १ सुतनु होनेका भाव। २ शरीरकी सुन्दरता।

सुतन्तु (सं० पु०) १ विष्णु। २ शिव, महादेव। ३ एक दानवका नाम। ४ सह्याद्रि-वर्णित बहुतेरे राजाका नाम।

सुतन्त्रि (सं० पु०) १ वह जो तारके बाजे (वीणा आदि) बजानेमें प्रवीण हो, वह जो तंत्रवाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २ वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो।

सुतप (सं० पु०) सुतपस् देखो।

सुतपस् (सं० पु०) सुष्ठु तपतीति सु-तप (गतिकारकयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं। उण् ४.२२६) इति असि। १ सूर्य। २ एक मुनिका नाम। ३ रौच्य मनुके एक पुत्रका नाम। ४ विष्णु।

सुतपस्विन् (सं० त्रि०) अत्यन्त तपस्या करनेवाला, बहुत अच्छा और बड़ा तपस्वी।

सुतपा (सं० त्रि०) सोमपान करनेवाला

सुतपादिका (सं० स्त्री०) छोटी जातिकी एक प्रकारकी हंसपदी लता।

सुतपावन् (सं० त्रि०) सोमपान करनेवाला।

सुतपेय (सं० क्लो०) १ सोमपान, यज्ञमें सोम पीनेकी क्रिया। (ऋक् ४।४४।३) (त्रि०) २ सतकर्त्तृक पेय, पुत्रके पीने योग्य।

सुतप्त (सं० त्रि०) अतिशय तप्त, अत्यन्त गरम।

सुतमिस्रा (सं० स्त्री०) घोर अन्धकार, घोर अंधियाली रात।

सुतम्भर (सं० पु०) १ एक प्राचीन वैदिक ऋषिका नाम। (ऋक् ५।४४।१३) (त्रि०) २ पुत्रपालक।

सुतयाग (सं० पु०) वह यज्ञ जो पुत्रकी इच्छासे किया जाता है, पुत्रेष्टि यज्ञ।

सुतर (सं० त्रि०) सु-तृ-ण्वुल्। सुखसे तैरने या पार करने योग्य, जो सुखसे या आरामसे पार किया जा सके।

सुतरण (सं० त्रि०) १ सुखसे तैरने या पार करने योग्य। (ऋक् ४।१६।६) (क्लो०) २ सुखसे तैरना या पार करना।

सुतरां (हिं० अव्य०) सुतराम् देखो।

सुतराम् (सं० अव्य०) सु द्विवचनविभज्येत्यादिना तरप्। १ अतः, इसलिये, निदान। २ अपि तु, किं बहुना, और भी। ३ अवश्य। ४ अत्यन्त। ५ अगत्या, लाचार।

सुतरी (हिं० पु०) १ वह बैल जिसका ऊंटका-सा रंग हो। यह मध्यम श्रेणीका, मजबूत और तेज माना जाता है। (स्त्री०) २ वह लकड़ी जो पाईमें साँथी अलग करनेके लिये साँथीके दोनों तरफ लगी रहती है। इसे परिभाषामें सुतरी कहते हैं। ३ सुतारी देखो। ४ सुतली देखो।

सुतरेशाही (हिं० पु०) सुथरेशाही देखो।

सुतर्कारी (सं० स्त्री०) देवदालीलता, घघरबेल, सोनैया।

सुतर्दन (सं० पु०) कोकिल, कोयल। (त्रिका०)

सुतर्मन् (सं० त्रि०) सुष्ठु तारयिता। (ऋक् ८।४२।३)

सुतल (सं० पु०) शोभनं तलं यत्र। १ अट्टालिकाबन्ध, अट्टालिकाका मूल पत्तन। २ नागलोकभेद, पातालभेद। श्रीमद्भागवतके मतसे यह पाताल छठा है। भागवतके अनुसार इस पाताल लोकके स्वामी विरोचनके पुत्र बलि हैं। (भाग० ५।२४ अ०)

देवी भागवतमें लिखा है, कि यह पाताल तीसरा है। अतल, वितल और सुतल, यह तीन पाताल है। अधोदेशमें सुतल पाताल प्रतिष्ठित है। विष्णु भगवान्‌ने बलिको पाताल भेज कर संसारकी सारी सम्पद दी थी और स्वयं उसके द्वार पर पहरा देते थे। एक बार रावणने इसमें प्रवेश करना चाहा था, पर विष्णु भगवान्‌ने उसे अपने पैरके अंगूठेसे हजारों योजन दूर फेंक दिया। विशेष विवरण लोक शब्दमें देखो।

सुतली (हिं० स्त्री०) रूई, सन या इसी प्रकारके और रेशोंके सूतों या डोरोंको एकमें बट कर बनाया हुआ लंबा और कुछ मोटा खंड जिसका उपयोग चीजें बांधने, कूएंसे पानी खींचने, पलंग बुनने तथा इसी प्रकारके और कामोंमें होता है ; रस्सी, डोरी।

सुतवत् (सं० त्रि०) सुतविशिष्ट, जिसे पुत्र हो।

सुतसस्करा (सं० स्त्री०) सात पुत्र प्रसव करनेवाली स्त्री, वह स्त्री जिसके सात पुत्र हों।

सुतश्रेणी (सं० स्त्री०) मूषिकपर्णी, मूसाकानी। गुण—चक्षुष्य, कटु, आखुविष, व्रणदोष और नेत्ररोगनाशक।

सुतसोम (सं० त्रि०) अभिषुत सोमयुक्त। (ऋक् १।२।२)

सुतसोमवत् (सं० त्रि०) अभिषुत सोमयुक्त।

सुतस्थान (सं० क्ली०) ज्योतिषोक्त लग्नावधि पञ्चम स्थान। लग्नसे पञ्चम स्थानमें पुत्रकन्यादिका विषय जाना जाता है, इसीसे इसको सुतस्थान कहते हैं। ज्योतिषमें इस सुतस्थानका विशेष विवरण और विचार लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर नहीं लिखा गया। इस सुतस्थानमें केवल पुत्र कन्याका ही नहीं, वरन् विद्या, बुद्धि, मन्त्रणा, प्रणयिनी इत्यादिका भी विचार करना होता है। इस सुतस्थानमें शुभग्रह तथा सुताधिपतिग्रह शुभ भावस्थ होनेसे सुसन्तान जन्म लेती है। इसका विपरीत होनेसे फल भी विपरीत ही होता है।

सुतस्थानमें उच्च और मित्रगृहस्थित ग्रहकी दृष्टि रहनेसे सुतस्थान शुभ नीच तथा शत्रुगृहगत ग्रहकी दृष्टिसे सुतभावका अशुभ फल होता है। उस सुतस्थानके नवांश अथवा उस स्थान पर जिन सब बलवान् शुभग्रहकी दृष्टि रहती है, उनसे दूनी सन्तान; सुतस्थान पर पापग्रहके योग या दृष्टिसे सन्तान कृश और रुग्न, शुभाशुभ मिश्र ग्रहके योग या दृष्टिसे मिश्र अर्थात् मध्यविध सन्तान होती है। सुतस्थान पर जितने ग्रहोंकी पूर्णदृष्टि रहती है, उतनी ही संतान होती है, बलवान् पुंग्रहकी दृष्टिसे पुत्र, बलवान् स्त्रीग्रहकी पूर्णदृष्टिसे कन्या जन्म लेती है। पञ्चमपति, लग्नपति और सप्तमपति इनकी दशा और अन्तर्दशा तथा इनके साथ जिन सब ग्रहोंका संबंध है, उनकी दशा और अन्तर्दशासे पुत्रकन्याका जन्म होता है तथा इनके शुभाशुभसे संतानको रोग या संतानका नाश होता है।

रवि आदि ग्रहोंके सुतस्थानमें रहनेसे जो ग्रह शुभ है, उस ग्रहयोगमें शुभफल और जो ग्रह अशुभ है, उसमें अशुभ, पञ्चमपति यदि अशुभ ग्रह हो कर भी अपने घरमें या उच्च स्थानमें रहे। तो विशेष शुभ होता है। फिर यदि अशुभग्रह नीच या शत्रुगृहमें सुतस्थानमें रहे, तो सुतसंबंधमें विशेष अशुभ हुआ है।

(पराशर, जातककौमुदीप्र०)

सुतहा (हिं० पु०) १ सूतका व्यापारी, सूत बेचनेवाला। २ सुतुही देखो। (वि०) ३ सूत-सम्बन्धी, सूतका।

सुतहार (सं० पु०) सुतार देखो।

सुतहिबुक-योग (सं० पु०) विवाहका एक योग। विवाहके समय लग्नमें यदि कोई दोष हो और सुतहिबुकयोग हो, तो सारे दोष दूर हो जाते हैं। विवाहके समय अर्थात् जिस लग्नमें विवाह होगा, उस समय लग्नमें तथा लग्नसे चौथे, पाचवें, नवें और दशवेंमें वृहस्पति किंवा शुक्र रहे, तो सुतहिबुकयोग होता है। इसमें लग्नके सभी दोषोंका नाश और सुखकी वृद्धि होती है।

विवाहमें सुतहिबुक योग देख कर दिन स्थिर करना आवश्यक है। सुतहिबुकयोग न होनेसे उस लग्नमें विवाहका दिन स्थिर न करना चाहिए।

सुतही (हिं० स्त्री०) सुतुही देखो।

सुतहौनिया (हिं० पु०) सुथौनिया देखो।

सुता (सं० स्त्री०) सूयते स्म या सू-क्त, टाप्। १ कन्या, पुत्री, लड़की। २ श्वेत दूर्वा, सफेद दूब। ३ दुरालभा। ४ सखी, सहेली।

सुतात्मज (सं० पु०) सुतस्य सुताया वा आत्मजः। १ पौत्र, लड़केका लड़का, पोता। २ दौहित्र, लड़कीका लड़का, नाती।

सुतात्मजा (सं० स्त्री०) सुतस्य सुताया वा आत्मजा। १ पौत्री, लड़केकी लड़की, पोती। २ दौहित्री, लड़कीकी लड़की, नतनी।

सुतान (सं० त्रि०) उत्तम तानयुक्त।

सुतानुटी—दक्षिणवङ्गालका एक परगना। मुगलोंके अमानेमें जब मुगल साम्राज्यका राजस्व निर्धारण करनेके लिये

बैनाइशी-प्रथा शुरू हुई, तब परगनेमें सुतानुटीका नाम और राजस्व निर्द्धारित हुआ था। पीछे जब अंगरेज वणिक् कलकत्तेमें व्यापार करने आये, सुतानुटी परगनेमें ही आ कर उन्होंने प्रथम वास किया था। क्रमशः बङ्गालमें बे-रोक टोक वाणिज्य चलानेके लिये उन्होंने सुलतानसे प्रार्थना की। १६९८ ई०के जुलाई मासमें शाहजादा आजिम उस्वानने १६ हजार रुपये दे कर कलकत्ता, गोविन्दपुर और सुतानुटी ग्राम खरीद लिये। सुतानुटी ग्राम अभी कलकत्तेके अन्तर्गत है। अङ्गरेजी अमलमें जो २४ परगने ले कर जिला २४ परगना संगठित हुआ, उनमें सुतानुटी परगना एक हैं।

सुतापति (सं० पु०) कन्याका पति, जामाता, दामाद।

सुताभाव (सं० पु०) पुत्र और कन्याका अभाव, पुत्र और कन्याका न रहना।

सुतार (सं० त्रि०) १ अत्यन्त उज्ज्वल। २ अत्यन्त उच्च। ३ जिसकी आंखकी पुतलियां सुन्दर हों। (पु०) ४ एक प्रकारका सुगन्धि द्रव्य। ५ एक आचार्यका नाम। ६ सांख्यदर्शनके अनुसार एक प्रकारकी सिद्धि। यह गौण सिद्धि पांच प्रकारकी है। गुरुसे अध्यात्म शास्त्रके यथावत् अक्षर ग्रहण करनेका नाम अध्ययन, इस प्रकार अध्ययनका नाम तारसिद्धि, जो अध्यात्मशास्त्र विधिपूर्वक गुरुसे पढ़ाया जाता है, उसका ठीक ठीक अर्थ समझनेका नाम शब्द, और इस शब्दको ही सुतार कहते हैं।

सुतार (हिं० पु०) १ बढ़ई। २ शिल्पकार, कारीगर। ३ हुदहुद नामक पक्षी। (वि०) ४ उत्तम, अच्छा।

सुतारका (सं० स्त्री०) १ बौद्धोंकी चौबीस शासनदेवियोंमेंसे एक देवीका नाम। (हेम) (त्रि०) २ शोभन ताराको युक्त।

सुतारा (सं० स्त्री०) १ सांख्यके अनुसार नौ प्रकारकी तुष्टियोंमेंसे एक। २ सांख्यके अनुसार आठ प्रकारकी सिद्धियोंमेंसे एक। सुतार देखो।

सुतारी (हिं० स्त्री०) १ मोचियोंका सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २ सुतार या बढ़ईका काम। (पु०) ३ शिल्पकार, कारीगर।

सुतार्थी (सं० त्रि०) पुत्रार्थी, पुत्रकी कामना करनेवाला, जिसे पुत्रकी अभिलाषी हो।

सुताल (सं० त्रि०) शोभन तालविशिष्ट, सुन्दर तालवाला।

सुताली (हिं० स्त्री०) सुतारी देखो।

सुतावत् (सं० त्रि०) १ अभिषुत सोमयुक्त। (ऋक् १।३।५) २ सुतायुक्त, कन्याविशिष्ट, लड़कीवाला।

सुतासुत (सं० पु०) पुत्रीका पुत्र, दौहित्र, नाती।

सुतिक्त (सं० पु०) १ पर्पटक, पित्तपापड़ा। (राजनि०) (त्रि०) २ अतिशय तिक्त, बहुत तीता।

सुतिक्तक (सं० पु०) १ पारिभद्र, फरहद। २ भूनिम्बवृक्ष, चिरायता। ३ पर्पटक, पित्तपापड़ा।

सुतिक्ता (सं० स्त्री०) १ कोषतकी, तोरई। २ शल्लकी, सलई।

सुतिन् (सं० त्रि०) सुतविशिष्ट, पुत्रवान्।

सुतिनी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके पुत्र हो, पुत्रवती।

सुतिया (हिं० स्त्री०) सोने या चांदीका एक गहना जो स्त्रियां गलेमें पहनती हैं, हंसली।

सुती (सं० त्रि०) १ पुत्रेच्छु, पुत्रकी इच्छा करनेवाला। २ पुत्रवदाचरणकर्त्ता।

सुतीक्ष्ण (सं० पु०) १ शोभाञ्जन, सहिंजन। २ श्वेत शिग्रु, सफेद सहिंजन। ३ अगस्त्य मुनिके भाई जो वनवासके समय श्रीरामचन्द्रसे मिले थे। (त्रि०) ४ अतिशय तीक्ष्ण, बहुत तेज।

सुतीक्ष्णक (सं० पु०) सुतीक्ष्ण कन्। १ सुतीक्ष्ण देखो। २ मुष्कक या मोखा नामक वृक्ष।

सुतीक्ष्णका (सं० स्त्री०) सर्षप, सरसों।

सुतीर्थ (सं० त्रि०) १ उत्तम सोपानयुक्त। (क्ली०) २ उत्तम तीर्थ।

सुतीर्थक (सं० क्ली०) उत्तम तीर्थ।

सुतीर्थराज (सं० पु०) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

सुतुआ (हिं० पु०) सुतुही देखो।

सुतुक (सं० त्रि०) उत्तम पुत्रविशिष्ट। (ऋक् १।१४८।५)

सुतुकन (सं० त्रि०) सुतुक, उत्तम पुत्रविशिष्ट। (निरुक्त)

सुतुङ्ग (सं० पु०) १ नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड़। २ ग्रहोंका उच्चांशविशेष। ग्रहोंका राशिविशेषमें रहनेको

तुङ्ग कहते हैं। तीस अंशमें एक अंश सुतुङ्ग कहलाता है। ग्रहोंके सुतुङ्गमें रहनेसे विशेष शुभफल होता है। किस राशिका कितना अंश सुतुङ्ग है, उसका विषय ज्योतिषमें इस प्रकार लिखा है,—

रविकी मेषराशि तुङ्गस्थानमें, मेषमें रवि रहनेसे तुङ्गस्थ होते हैं। मेषराशि ३० अंश है, इस तीस अंशमें प्रथम १० अंश सुतुङ्ग है। इन अंशोमें रहनेसे सुतुङ्गस्थ हो जाते हैं। इसका फल अत्यन्त शुभ माना गया है। वृषराशि चन्द्रका तुङ्गस्थान है। इस वृषराशिके प्रथम ३ अंशोंमें चन्द्र रहनेसे सुतुङ्ग होता है। इसी प्रकार मङ्गलकी मकरराशि तुङ्ग है तथा इस मकरका २८ अंश सुतुङ्ग है। कन्याराशि बुधका तुङ्ग स्थान है। उस कन्याका १५ अंश सुतुङ्ग है। वृहस्पतिका कर्कट तुङ्ग है और उस कर्कटका ५ अंश सुतुङ्ग है। शुक्रका मीन तुङ्गस्थान है। उस मीनका २७ अंश सुतुङ्ग है। शनिकी तुला तुङ्गस्थान है, उस तुलाका २० अंश सुतुङ्ग है। ग्रहगणके उक्त राशिके उक्त अंशमें शुभफल होता है। तुङ्गस्थ ग्रह शुभफलद है, सुतुङ्गस्थ ग्रह विशेष शुभफलद है। ग्रहोंके सुतुङ्ग भागका त्याग करनेसे फलको भी न्यूनता होती है।

ग्रहोंके फलनिर्णय करनेमें ग्रहगण सुतुङ्ग हैं या सुनीच, यह स्थिर कर फल निरूपण करे। (उत्कृत्यमु०)

(त्रि०) ३ अतिशय उच्च।

सुतुही (हिं० स्त्री०) १ सीपी जिससे प्रायः छोटे बच्चोंको दूध पिलाते हैं। २ वह सीप जिससे अचारके लिये कच्चा आम छीला जाता है। इसे बीचमें घिस कर इसके तलमें छेद कर लेते हैं और उसी छेदके चारों ओरके तेज किनारोंसे आम छीलते हैं, सीपी। ३ वह सीप जिसके द्वारा पोस्तसे अफीम खुरची जाती है, सतुआ, सुती।

सुतून (फा० पु०) स्तम्भ, खंभा।

सुतूलिका (सं० स्त्री०) शोभनतूलिका, सुन्दर तुलली।

सुतृप (सं० त्रि०) सु-तृप्-किप्। सुन्दररूपसे तपक।

सुतेकर (सं० त्रि०) ऋत्विक्, यज्ञकारी। (ऋक् १०।७१।६)

सुतेगृभ् (सं० त्रि०) अभिषुत रस द्वारा गृहीत, यज्ञवशिष्ट सोमरस द्वारा गृहीत। (ऋक् ५।३।४४)

सुतेजन (सं० पु०) सु-तिज-ल्यु। १ धन्वनवृक्ष, धामिन। २ बहुत नुकीला तीर। (त्रि०) ३ नुकीला। ४ धारदार, तेज।

सुतेजस् (सं० पु०) सु तिज (गतिकारकयोरिति। उण् ४।२२६) इति असि। १ जैनोंके अनुसार गत उत्सर्पिणीके दशवें अर्हत्का नाम। २ गृत्समदका पुत्र। ३ आदित्यभक्ता, हुरहुर। (राजनि०) ४ बहुत तेज या धारदार।

सुतेजित (सं० त्रि०) सुतीक्ष्ण, तेज।

सुतेमनस् (सं० पु०) एक वैदिक आचार्यका नाम।

सुतेरण (सं० त्रि०) सोममें रमणाण।

सुतैला (सं० स्त्री०) महाज्योतिष्मती, बड़ी मालकगनी।

सुतोय (सं० त्रि०) १ सुंदर तोयविशिष्ट, उत्तम जलयुक्त। (वृहत्स० १६।१३) (पु०) २ उत्तम जल।

सुतोष (सं० पु०) १ सन्तोष, सब्र। (त्रि०) २ संतुष्ट, प्रसन्न।

सुत्य (सं० पु०) यज्ञके लिये सोमरस निकालनेका दिन।

सुत्रात (सं०त्रि०) सु-त्रै क्त। सुन्दर रूपसे त्रात, रक्षित।

सुत्रात्र (सं० त्रि०) शोभन त्राण, उत्तम त्राण।

सुत्रामन् (सं० पु०) सु त्रै मनिन्। १ इन्द्र। २ शोभन त्राणकर्त्ता, वह जो उत्तमरूपसे रक्षा करता हो। (शुक्लयजु० १०।३१) ३ पुराणानुसार एक मनुका नाम।

सुत्वन् (सं० पु०) सु (सुयजोर्ड्वनिप्। पा ३।२।१०३) इति ड्वनिप्। १ यज्ञस्नानी, वह जिसने यज्ञके अन्तमें यज्ञस्नान किया हो। (भरत) २ सोमपायी।

सुथना (हिं० पु०) सुथन देखो।

सुथनी (हिं० स्त्री०) १ स्त्रियोंके पहननेका एक प्रकारका ढीला पायजामा, सूथन। २ पिण्डालु रतालू।

सुथरा (हिं० वि०) स्वच्छ, निर्मल, साफ। इस शब्दका प्रयोग प्रायः 'साफ' शब्दके साथ होता है।

सुथराई (हिं० स्त्री०) स्वच्छता, सुथरापन, सफाई।

सुथरापन (हिं० पु०) स्वच्छता, सुथराई, सफाई।

सुथरेशाही (हिं० पु०) गुरु नानकके शिष्य सुथराशाहका चलाया सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदायके अनुयायी या माननेवाले जो प्रायः सुथराशाह और गुरुनानक आदिके बनाये हुए भजन गा कर भिक्षा मांगते हैं।

सुदंशित (सं० त्रि०) सु दंश क्त। अतिशय दंशित।

सुदंष्ट्र (सं० त्रि०) १ शोभन दंष्ट्र विशिष्ट, सुन्दर

दांतोंवाला। (पु०) २ कृष्णका पुत्र। ३ संवरका एक पुत्र। ४ एक राक्षसका नाम।

सुदंष्ट्रा (सं० स्त्री०) एक किन्नरीका नाम।

सुदंसस् (सं० त्रि०) शोभनकर्मा। (ऋक् १।६२।७)

सुदक्ष (सं० त्रि०) अतिशय दक्ष, निपुण, कार्यकुशल।

सुदक्षिण (सं० पु०) १ वह यज्ञ आदि जिसमें प्रभूत दक्षिणा दी जाती है। २ उत्तम दान। (ऋक् ७।२१।३) ३ पौण्ड्रक राजाका पुत्र। (भागवत १०।६६।२८) ४ विदर्भका एक राजा।

सुदक्षिणा (सं० स्त्री०) १ प्रचुर दक्षिणा। २ दिलीपकी पत्नी। रघुवंशमें लिखा है, कि राजा दिलीपने वशिष्ठके आश्रममें सुदक्षिणाके साथ सुरभिकन्या नन्दिनीकी सेवा कर पुत्रलाभ किया। ३ पुराणानुसार श्रीकृष्ण-की एक पत्नीका नाम।

सुदग्धिका (सं० स्त्री०) दग्धा, कुरह नामक वृक्ष।

सुदच्छिन (हिं० पु०) सुदक्षिण देखो।

सुदण्ड (सं० पु०) वेत्र, बेंत।

सुदण्डिका (सं० स्त्री०) गोरक्षी, गोरख इमली।

सुदत् (सं० त्रि०) शोभना दन्ता यस्य (वयसि दन्तस्य दतृ। पा ५।४।१४१) इति दतृ। १ उत्तम दन्तयुक्त, सुन्दर दांतोंवाला। (पु०) २ शोभन दन्त, सुन्दर दाँत।

सुदती (सं० स्त्री०) सुदन्ती, सुन्दर दांतोंवाली।

सुदत्त (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे दत्त, अच्छी तरह दिया हुआ।

सुदत्र (सं० त्रि०) शोभन दान, कल्याण दान।

सुदन्त (सं० पु०) १ नट, वह जो अभिनय करता हो। २ नर्त्तक, नाचनेवाला। (त्रि०) ३ शोभन दन्तयुक्त, सुंदर दांतोंवाला।

सुदन्ती (सं० स्त्री०) १ एक दिग्गजकी हथनीका नाम। २ हस्तिनी, हथनी।

सुदमन (सं० पु०) आम्र वृक्ष, आमका पेड़।

सुदरसन (हिं० पु०) सुदर्शन देखो।

सुदरसनपानि (हिं० पु०) सुदर्शनपाणि देखो।

सुदरिद्र (सं० त्रि०) अति दरिद्र, बड़ा दीन।

सुदर्भा (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारका तृण जिसे इक्षुदर्भा भी कहते हैं। (राजनि०) (त्रि०) २ सुन्दर कुशयुक्त।

सुदर्शन—१ विन्ध्यपार्श्वस्थित एक ग्राम। (भविष्यब्र० ख० ८।२६) २ देशभेद। यह देश मेरुके दक्षिण और निषधके उत्तरमें अवस्थित है। (ब्रह्माण्डपु० ४५।२४)

सुदर्शन (सं० क्ली०) १ इन्द्रनगर। (पु० क्ली०) २ विष्णु का चक्र। यह चक्र अत्यन्त तेजस्कर है। मत्स्यपुराणमें लिखा है—

दिवाकरने कहा था, कि यदि मेरे प्रति आपका अनु-ग्रह हो, तो मेरा तेज कुछ कम कर दीजिये। इस पर उन्होंने कहा था, 'तुम्हारा तेज दूर कर लोकानन्दकर बना देता हूं।' इतना कह कर विश्वकर्मा द्वारा दिवाकरको चक्रभ्रमि पर चढ़ा कर उन्होंने उनका तेज घटा दिया था। पीछे वह तेज विष्णुके चक्ररूपमें तथा शिवके त्रिशूल और इन्द्रके वज्ररूपमें परिणत हुआ। यह दैत्य दानव आदिको संहार करनेमें समर्थ और सहस्रकिरण-स्वरूप है। अतएव मत्स्यपुराणके मतसे दिवाकरके तेजसे इस सुदर्शन चक्रकी उत्पत्ति हुई।

वामनपुराणमें लिखा है, कि भगवान् विष्णुने कहा था,—जो अस्त्र है उससे असुरोंका वध नहीं किया जायेगा। अतएव अस्त्रके लिये तुम सभी अपना अपना तेज दे दो। इस पर सभी देवताओंने अपना अपना तेज दे दिया। यह सब तेज एकत्र होनेसे विष्णुने अपना तेज मोचन किया। महादेवने इन सब तेज द्वारा एक अनुत्तम शस्त्र बनाया। सुदर्शनचक्र उसका नाम रखा गया। यह अत्यन्त भयानक तेजस्कर है। पीछे महा-देवने उसके अवशिष्ट तेज द्वारा वज्र निर्माण किया। शिवने यह सुदर्शनचक्र शिष्टकी रक्षा और दुष्टोंका पालन करनेके लिये विष्णुको प्रदान किया। (वामनपु० ७६ अ०)

हरिभक्तिविलासमें लिखा है, कि वैष्णव लोग यह चक्रचिह्न धारण करें। आग पर तपे हुए धातुमय चक्रसे शरीर पर यह चिह्न करना होगा। वह चक्र बारह अर, छः कोण और तीन वलय दे कर बनावे।

गरुडपुराणमें (३३ अ०) सुदर्शनपूजाकी व्यवस्था है।

३ सुमेरु। ४ जम्बूवृक्ष। ५ वृसार्हत पिता, जिनों-के मध्य बलदेव। ६ मत्स्य। (त्रि०) सुखेन दृश्यतेऽसौ सु-दृश् अन। ७ सुदृश्य, मनोहर। ८ उत्तम दर्शन-विशिष्ट। (भागवत ४।२४।५१)

सुदर्शनकवि—एक प्राचीन संस्कृत कवि। इनकी कवितामें पाण्ड्यराज वीरपाण्ड्यका उल्लेख है। हरिहर इस कविकी सुख्याति कर गये हैं।

सुदर्शनचूर्ण (सं० क्लो०) वैद्यकके अनुसार ज्वरकी एक प्रसिद्ध औषध। कहते हैं, कि इसके सेवनसे सब प्रकारके ज्वर यहां तक कि विषम ज्वर भी दूर हो जाता है। इसके सिवा खांसी, सांस, पाण्डु, हृद्रोग, बवासीर, गुल्म आदि रोग भी नष्ट होते हैं।

सुदर्शनदण्ड (सं० क्लो०) वैद्यकके अनुसार ज्वरकी एक औषध।

सुदर्शनद्वीप (सं० क्लो०) जम्बूद्वीप।

सुदर्शनपुर—मलदके अन्तर्गत एक नगर। यहां द्वारवासिनी देवी अवस्थित हैं। (देशावली० १२३।१२)

सुदर्शनपाणि (सं० पु०) हाथमें सुदर्शनचक्र धारण करनेवाले श्रीकृष्ण।

सुदर्शन भट्ट—वेदान्तभाष्यके रचयिता। इनकी लिखी विष्णुसहस्रनामभाष्यटीका भी मिलती है।

सुदर्शना (सं० स्त्री०) सुदृश भार्याया शासियुश्चीति युच्टाप्। १ सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका। यह क्षुप जातिकी वनस्पति है। यह रोएंदार होती है। पत्ते तीनसे छः इंचके घेरेमें गोलाकार तथा त्रिकोणाकारसे होते हैं। इसमें गोल फूलोंके गुच्छे लगते हैं जिनका रंग नारंगीका-सा होता। वैद्यकके अनुसार इसका गुण—मधुर, गरम और कफ, सूजन या वातरक्तको दूर करनेवाला है। २ आज्ञा, आदेश, हुकम। ३ औषधविशेष। ४ शुक्ल पक्षकी रात्रि। ५ एक प्रकारकी मदिरा। ६ पद्म सरोवर। ७ इन्द्रपुरी, अमरावती। ८ जम्बूवृक्ष। ९ एक गन्धर्वोंका नाम। (त्रि० स्त्री०) १० जो देखनेमें सुन्दर हो, सुन्दरी।

सुदर्शन आचार्य—एक प्रसिद्ध दाक्षिणात्य पण्डित। इनका दूसरा नाम वैनार और इनके पिताका नाम वाग्विजय था। इनकी लिखी आपस्तम्बगृह्यसूत्रटीका, आह्निकसार, छान्दोग्योपनिषद्भाष्य, तिथिनिर्णय, भागवतपुराणभाष्य, मन्त्रप्रश्नभाष्य, विदेहमुक्त्यादिकथन, वेदांतसंग्रहटीका, श्राद्धनिर्णय, संक्षिप्तवेदान्त और सुबालोपनिषद्व्याख्या मिलती हैं। रङ्गराजके आदेशसे इन्होंने श्रुत-प्रकाशिका नामकी श्रीभाष्यटीका भी लिखी।

सुदर्शनी (सं० स्त्री०) सुष्ठु दर्शनं यस्याः, ङीष्। अमरावती, इन्द्रपुरी।

सुदल (सं० पु०) १ मोरट या क्षीर मोरट नामकी लता। २ मुचकुन्द। ३ सेना, दल। (त्रि०) ४ उत्तम दलयुक्त, अच्छे दलों या पत्तोंवाला।

सुदला (सं० स्त्री०) १ शालपर्णी, सरिवन। २ सेवती।

सुदशन (सं० त्रि०) शोभन दंतविशिष्ट, सुन्दर दांतोंवाला।

सुदशना (सं० स्त्री०) सुंदर दांतोंवाली।

सुदानु (सं० त्रि०) उत्तम दानयुक्त। (ऋक् ४।४।७)

सुदान्त (सं० पु०) १ शाक्यमुनिके एक शिष्यका नाम। २ शतधन्वाका पुत्र। ३ एक प्रकारकी समाधि। (त्रि०) ४ अति शान्त, बहुत सीधा।

सुदान्तसेन (सं० पु०) एक प्रसिद्ध शिल्पी।

सुदामडा धांधुलपुर—बम्बई प्रदेशके काठियावाड विभागान्तर्गत झालावर प्रांतका एक छोटा सामंतराज्य। इसमें २७ ग्राम लगते हैं। भूपरिमाण १३५ वर्गमील है। यहांके सरदार छः अंशोंमें विभक्त हैं। जूनागढ़के नवाबको वार्षिक ७४३ रु० और वृटिशगवर्मेण्टको २३८१ रु० करमें देने पड़ते हैं।

सुदामन् (सं० पु०) सुष्ठु ददातीति दा (आतो मनिन् क्वनिप् वनिपश्च। पा ३।२।७४) इति मनिन्। १ मेघ, बादल। २ एक पर्वत। ३ श्रीकृष्णका एक गोपसखा। ४ एक दरिद्र ब्राह्मण। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि यह ब्राह्मण दरिद्रतासे बड़ा कातर हो द्वारकामें श्रीकृष्णका शरणागत हुआ। भगवान् कृष्णने तुरत उसका दुःख दूर कर दिया। (कृष्णजन्मख० ११२ अ०) ५ समुद्र, सागर। ६ ऐरावत, इन्द्रका हाथी। ७ कंसका एक माली जो श्रीकृष्णसे उस समय मथुरामें मिला था, जब वह कंसके बुलानेसे वहां गया था। ८ एक गंधर्वका नाम। (त्रि०) ९ उत्तम रूपसे दान करनेवाला, खूब देनेवाला।

सुदामन्—प्राचीन जनपदभेद।

सुदामन (सं० पु०) १ राजा जनकके एक मन्त्रीका नाम। २ एक प्रकारका दैत्यास्त्र।

सुदामनपुर—युक्तप्रदेशके अयोध्याविभागके राय बरेली जिलान्तर्गत दालमौ तहसीलका एक बड़ा ग्राम। सुदामन सिंह नामक किसी जानवर राजपूत द्वारा यह ग्राम करीब ५०० वर्ष पहले स्थापित हुआ।

सुदामा (सं० स्त्री०) १ रामायणके अनुसार उत्तर भारतको एक नदीका नाम। २ स्कन्धकी एक मातृका। (पु०) ३ सुदामन देखो।

सुदामिनी (सं० स्त्री०) भागवतके अनुसार शमीककी कन्याका नाम। (भागवत ६।२४।४३)

सुदाय (सं० पु०) सु दा-घञ्, युगागमः। १ विवाहके अवसर पर कन्या या जामाताको दिया जानेवाला दान, दहेज। २ वह जो उक्त प्रकारके दान करे। ३ उत्तम दान। ४ यज्ञोपवीत संस्कारके समय ब्रह्मचारीको दी जानेवाली भिक्षा।

सुदारु (सं० पु०) १ विन्ध्य पर्वतका एक अंश, पारिपात्र पर्वत। पर्याय—पारियात्रिक। (हेम) २ उत्तम काष्ठ। (त्रि०) ३ उत्तम काष्ठयुक्त। (क्ली०) ४ देवदारु-काष्ठ, देवदार।

सुदारुण (सं० त्रि०) १ अत्यन्त क्रूर या भयानक। (पु०) २ एक प्रकारका दैवास्त्र।

सुदावन (सं० त्रि०) सुदामन देखो।

सुदास (सं० त्रि०) १ शोभन दानयुक्त, उत्तम दानविशिष्ट। (ऋक् १।४७।७) २ ईश्वरको सम्यक् रूपसे पूजा या आराधना करनेवाला। (पु०) ३ दिवोदासका पुत्र तथा त्रित्सुका राजा। ४ ऋतुपर्णका पुत्र। ५ सर्वकामका पुत्र। ६ बृहद्रथका एक पुत्र। ७६ यवनका पुत्र। ८ एक प्राचीन जनपद।

सुदासना—१ बम्बई प्रदेशके महीकान्था पालिटिकल एजेन्सीके अन्तर्गत एक देशीय राज्य। यह महीकान्थाके नातीमारवाड़ विभागके मध्य स्थापित है तथा पश्चिममें पालनपुर तक विस्तृत है। यहां गेहूं, जुनहरी, धान, चना, ईख और मड़ुआ आदि उत्पन्न होते हैं।

यहांके सरदार अपनेको दन्तराज राणा पञ्जाबके पुत्र उमरसिंहके वंशधर बतलाते हैं। उन लोगोंने सुदासना तथा अन्यान्य कई ग्राम उत्तराधिकारसूत्रमें पाया था। अम्बाभवानीके देवमन्दिरमें तीर्थयात्रिगण पूजादानोपलक्षमें जो धन चढ़ाते हैं, ये राजगण उसका चतुर्थांश पाते हैं। यहांके सामन्त ठाकुर पर्वतसिंह (१८८४ ई०में) परमारकुलके वरद्वंशी राजपूत थे। आप विज्ञ और साधुचरित्र थे, स्वयं राजकार्यकी पर्यालोचना करते थे। यहांके सामन्त बड़ौदाके गायकवाड़को वार्षिक १०३६ रु० और इदरके राजाको ३६१ रु० कर देते हैं।

२ उक्त सामंतराज्यका प्रधान नगर। यह सरस्वती नदीके किनारे अवस्थित है। इस नगरसे ५॥० मील उत्तर पूर्व मोक्षेश्वर महादेवका गुहामंदिर तथा ईंट और बेलपत्थरका बना हुआ एक ध्वस्त सङ्घाराम दिखाई देता है। यहां एक अक्षयवट भी है। हिन्दू तीर्थयात्राके उद्देशसे यहां आते और महादेवके शिर पर तथा अश्वत्थवृक्षके मूलमें सरस्वतीका पवित्र जल चढ़ाते हैं। प्रति वर्ष देवोद्देशसे यहां एक मेला लगता है।

सुदास्तर (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे हविर्दानकारी।

सुदि (सं० स्त्री०) सुदी देखो।

सुदिन (सं० क्ली०) शुभ दिन, अच्छा दिन, मुबारक दिन।

सुदिनता (सं० स्त्री०) सुदिनका भाव।

सुदिनाह (सं० क्ली०) पुण्य दिन, पुण्याह, शुभ दिन।

सुदिव (सं० त्रि०) शोभनदीप्तिविशिष्ट, बहुत दीप्तिमान्, चमकीला। (ऋक् १०।३।५)

सुदिवस (सं० क्ली०) सुदिन, शुभ दिन।

सुदिवानन्दि (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सुदिह (सं० त्रि०) १ सुतीक्ष्ण। २ बहुत उज्ज्वल या चिकना।

सुदी (हिं० स्त्री०) शुक्लपक्ष, किसी मासका उजाला पक्ष।

सुदीति (सं० स्त्री०) १ सुदीप्ति, उज्ज्वल दीप्ति। (ऋक् ५।१।२१) (त्रि०) २ शोभन दीप्तिविशिष्ट, बहुत दीप्तिमान्, चमकीला। (ऋक् ३।२।१३) (पु०) ३ आङ्गिरस गोत्रके एक ऋषिका नाम।

सुदीधिति (सं० त्रि०) उज्ज्वल दीप्तिविशिष्ट, बहुत चमकीला। (ऋक् ३।६।१)

सुदीप्ति (सं० स्त्री०) बहुत अधिक प्रकाश, खूब उजाला।

सुदीर्घ (सं० त्रि०) १ अतिशय दीर्घ, बहुत लंबा। (क्ली०) २ चिचिण्डक, चिचड़ा। (भावप्र०)

सुदीर्घघर्मा (सं० स्त्री०) असनपर्णी, कोयल लता।

सुदीर्घफला (सं० स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी।

सुदीर्घफलिका (सं० स्त्री०) वार्त्ताकु विशेष, एक प्रकारका बैंगन।

सुदीर्घराजीवफला (सं० स्त्री०) कर्कटिका भेद, एक प्रकारकी ककड़ी।

सुदीर्घा (सं० स्त्री०) १ चीना ककड़ी। २ अति दीर्घ, बहुत लंबी।

सुदुःख (सं० त्रि०) अतिशय दुःखयुक्त, बहुत दुःखी।

सुदुःखित (सं० त्रि०) अतिशय दुःखविशिष्ट, बहुत दुःखी।

सुदुकूल (सं० त्रि०) सुन्दर दुकुलयुक्त।

सुदुघ (सं० त्रि०) अच्छा दूध देनेवाली, बहुत दूध देनेवाली।

सुदुघा (सं० स्त्री०) अच्छा और बहुत दूध देनेवाली गाय।

सुदुराधर्ष (सं० पु०) सु-दुर आ धृष् खल्। अति दुर्द्धर्ष।

सुदुरासद (सं० त्रि०) अतिशय दुष्प्राप्य।

सुदुरुक्ति (सं० स्त्री०) अति दुरुक्ति, अति दुर्वाक्य कथन।

सुदुर्गम (सं० त्रि०) अति दुर्गम, जहां बहुत कष्टसे जाया जाय।

सुदुर्जय (सं० त्रि०) सु-दुर-जि-खल्। जो बहुत कष्टसे जय किया जाय।

सुदुर्ज्ञेय (सं० त्रि०) सुष्ठु दुःखेन ज्ञायते ज्ञा-यत्। अति दुर्ज्ञेय।

सुदुर्दर्श (सं० त्रि०) सु दुर दृश-खल्। अति दुर्दर्श, जो बहुत कष्टसे देखा जाय। (गीता १४.५२)

सुदुर्बुद्धि (सं० त्रि०) अति दुर्बुद्धि, मन्द बुद्धि।

सुदुर्भाग (सं० त्रि०) अति मंद भाग्य, बड़ा हतभागा।

सुदुर्भगा (सं० स्त्री०) अतिशय मंदभाग्या नारी।

सुदुर्मनस् (सं० त्रि०) सुदुर्मननो यस्य। अति दुर्मना, उद्विग्नचित्त।

सुदुर्विद (सं० त्रि०) सु-दुर-विद खल्। जो बहुत क्लेशसे जाना जाय।

सुदुस्तार (सं० त्रि०) अति दुस्तर, जो बहुत दुःखसे तरण किया जाय।

सुदुस्त्यज (सं० त्रि०) सुदुःखेन त्यज्यते त्यज खल्। बहुत दुःखसे त्याज्य, जो बहुत दुःखसे छोड़ा जाय।

सुदूर (सं० त्रि०) अतिशय दूर, बहुत दूर।

सुदूरमूल (सं० क्ली०) धमासा, हिंगुआ।

सुदृढ (सं० त्रि०) बहुत दृढ़, खूब मजबूत।

सुदृढत्वचा (सं० स्त्री०) गाम्भारी, गम्हार। (राजनि०)

सुदृश् (सं० त्रि०) १ सुन्दर चक्षुर्युक्त, सुन्दर आंखेवाला। (क्ली०) २ शोभनचक्षु, सुन्दर आँख।

सुदृशीक (सं० त्रि०) सुष्ठु दर्शनीय। (ऋक् ४।१६।१४)

सुदृशीकरूप (सं० त्रि०) सुष्ठु दर्शनीय रूपविशिष्ट।

सुदृशीकसंदृश् (सं० त्रि०) सुष्ठु दर्शनोय तेजोयुक्त।

सुदृश्य (सं० त्रि०) सुशोभनो दृश्य। सुन्दर, देखनेमें सुश्री।

सुदृष्ट (सं० त्रि०) सु-दृश्-क्त। अच्छी तरह देखा हुआ।

सुदृष्टि (सं० स्त्री०) सुशोभनो दृष्टिः। १ शुभदृष्टि, उत्तम दृष्टि। (त्रि०) सु-दृष्टिर्यस्य। २ दूरदर्शी। ३ दूरदृष्टि।

सुदेल्ल (सं० पु०) सुदेष्ण पर्वतका एक नाम। (महाभारत)

सुदेव (सं० त्रि०) १ सुक्रीड, उत्तम क्रीडा करनेवाला। (ऋक् १०।९५।१४) (पु०) २ उत्तम देवता। ३ एक काश्यप। ४ अक्रूरका एक पुत्र। ५ देवकका एक पुत्र। ६ अम्बरीषका एक सेनापति। ७ हर्यश्वका पुत्र और काशीका राजा। ८ परावसु गन्धर्वके नौ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्माके शापसे हिरण्याक्ष दैत्यके घर उत्पन्न हुआ था। ९ पौण्डक वासुदेवका एक पुत्र। १० विष्णुका एक पुत्र। ११ एक ब्राह्मण जिसने दमयन्तीके कहनेसे राजा नलका पता लगाया था।

सुदेवन (सं० क्ली०) सुष्ठु देवनं। सुन्दर क्रीडा।

सुदेवा (सं० स्त्री०) १ अरिहकी पत्नी। २ विकुंठनकी पत्नी।

सुदेवी (सं० स्त्री०) भागवतके अनुसारनाभिकी पत्नी और ऋषभकी माता।

सुदेश (सं० पु०) १ सुन्दर देश, उत्तम देश, अच्छा मुल्क। २ उपयुक्त स्थान, उचित स्थान। (त्रि०) ३ सुन्दर।

सुदेष्ण (सं० पु०) १ रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र। (भागवत १०।६१।८) २ एक प्राचीन जनपदका नाम। ३ पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

सुदेष्णा (सं० स्त्री०) १ बालिकी पत्नी। २ विराट्की पत्नी और कीचककी बहन।

सुदेष्णु (सं० स्त्री०) सुदेष्णा देखो।

सुदेस (सं० पु०) सुदेश देखो।

सुदेह (सं० पु०) १ सुन्दर शरीर, सुन्दर देह। (त्रि०) २ कमनीय, सुन्दर।

सुदैव (सं० पु०) १ सौभाग्य, अच्छा भाग्य, अच्छी किसमत। २ अच्छा संयोग।

सुदोग्ध्री (सं० त्रि०) अधिक दूध देनेवाली।

सुदोघ (सं० त्रि०) १ दानशील, उदार। (स्त्री०) २ बहुत दूध देनेवाली गाय।

सुदोह (सं० त्रि०) सुख या आराममे दुहने योग्य, जिसे दुहनेमें कोई कष्ट न हो।

सुदोहन (सं० स्त्री०) सुख या आराममे दूहने योग्य गाभि, वह गाय जिसे दूहनेमें कोई कष्ट न हो।

सुद्दो (अ० स्त्री०) वह पेटका जमा हुआ सूखा मल जो फुली कर निकाला जाय।

सुद्दान्त (हिं० स्त्री०) जनाना।

सुद्धि (सं० स्त्री०) १ सुध देखो। २ शुद्धि देखो।

सुद्यु (सं० पु०) पुरुवंशी राजा चारुपदके पुत्रका नाम।

सुद्युत (सं० त्रि०) सुदीप्त, खूब प्रकाशमान्।

सुद्युम्न (सं० पु०) वैवस्वत मनुका पुत्र जो इड नाम से प्रसिद्ध है। अग्निपुराणमें इसकी कथा इस प्रकार लिखी है—एक बार हिमालयमें महादेवजी पार्वतीजीके साथ क्रीडा कर रहे थे। उस समय वैवस्वत मनुका पुत्र इड शिकारके लिये वहां आ पहुंचा। महादेवजीने उसे शाप दिया जिससे वह स्त्री हो गया तथा उसी वन में घूमने लगा। एक बार सोमका पुत्र बुध उसे देख कामासक्त हो गया और उसके सहवाससे उसके गर्भसे पुरूरवाका जन्म हुआ। पीछे बुधकी आराधना करने पर महादेवजीने उसे शापमुक्त कर दिया और वह फिर पुरुष हो गया।

सुद्योत्मन् (सं० त्रि०) अतिशय द्युतिमान्।

सुद्रविणस् (सं० त्रि०) सुन्दर धनादि।

सुद्रष्ट (सं० त्रि०) कृपालु, दयावान्।

सुद्रु (सं० पु०) शोभन दारु, सुन्दर काष्ठ।

सुद्विज (सं० पु०) उत्तम द्विज, साधु ब्राह्मण।

सुढंग (हिं० पु०) अच्छा ढंग।

सुध (हिं० स्त्री०) १ स्मृति, स्मरण, याद। २ चेतना, होश। ३ पता, खबर। ४ सुधा देखो। (वि०) ५ शुद्ध देखो।

सुधन (सं० त्रि०) १ उत्तम धनविशिष्ट, बहुत धनी, बड़ा अमीर। (क्ली०) २ शोभन धन, प्रचुर धन। (पु०) ३ परावसु गन्धर्वके नौ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्माके शापसे (कोलकरूपमें) हिरण्याक्ष दैत्यके नौ पुत्रोंमेंसे एक हुआ था।

सुधनुस् (सं० पु०) १ राजा कुरुका एक पुत्र जो सूर्यकी पुत्री तपतीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। (भागवत ९।२२।४) २ गौतम बुद्धके एक पूर्वज।

सुधन्वा (सं० त्रि०) १ प्रौढ धानुष्क, उत्तम धनुष धारण करनेवाला। (पु०) २ विश्वकर्मा। (मेदिनी) ३ विष्णु। ४ विदुर। (भागवत ३.२१।२५) ५ आङ्गिरस। ६ वैराज का एक पुत्र। ७ कुरुका एक पुत्र। ८ शाश्वतका एक पुत्र। ९ संभूतका एक पुत्र। १० व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्रीसे उत्पन्न एक जाति। ११ एक राजा जिसे मान्धाताने परास्त किया था।

सुधन्वाचार्य (सं० पु०) व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्रीसे उत्पन्न एक संकर जाति।

सुधबुध (हिं० स्त्री०) होश हवास, चेत, ज्ञान।

सुध देखो।

सुधर (सं० पु०) एक अर्हत्का नाम। (तारनाथ)

सुधर (हिं० पु०) बया नामक पक्षी।

सुधरना (हिं० क्रि०) दोष या त्रुटियोंका दूर होना, संशोधन होना, बिगड़े हुएका बनना।

सुधराई (हिं० स्त्री०) १ सुधरनेकी क्रिया, सुधरनेका काम, सुधार। २ सुधारनेकी मजदूरी।

सुधर्म (सं० पु०) १ उत्तम धर्म, पुण्य कर्त्तव्य। २ जैन तीर्थङ्कर महावीरके दश शिष्योंमेंसे एक। ३ किन्नरोंके एक राजाका नाम। (त्रि०) ४ धर्मनिष्ठ, धर्मपरायण।

सुधर्मन् (सं० पु०) सुष्ठु धर्मो यस्य (धर्मादनिच् केवलात् । पा ५।४।१२४) इति अनिच् । १ देवसभा । २ कुटुम्बी । ३ क्षत्रिय । ४ गृहस्थ । ५ दशार्णोंका एक राजा । ६ दृढ़नेमिका पुत्र । ७ जैनोंके एक गणाधिप । (त्रि०) ८ धर्मपरायण, अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला ।

सुधर्मा (सं० स्त्री०) देवसभा ।

सुधर्मिन् (सं० त्रि०) धर्मपरायण, धर्मनिष्ठ ।

सुधर्मिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशय धार्मिक ।

सुधर्मी (सं० स्त्री०) देवसभा ।

सुधवाना (हिं० क्रि०) दोष या त्रुटि दूर कराना, शोधन, दुरुस्त कराना ।

सुधांशु (सं० पु०) सुधायुक्ता अंशवो यस्य । १ चन्द्रमा । (अमर) २ कर्पूर, कपूर ।

सुधांशुतैल (सं० क्ली०) कर्पूर तैल, कपूरका तेल ।

सुधांशुरत्न (सं० क्ली०) मौक्तिक, मोती । (राजनि०)

सुधा (सं० स्त्री०) सुखेन धीयते पीयते इति धेट पाने (आतश्चोपसर्गे । पा ३।३।१०६) इत्यङ्, टाप् । १ अमृत, पीयूष, अमी । अमृत देखो । २ मकरन्द । ३ मूर्विका, मरोड़फली । ४ स्नुही, थूहर । ५ गंगा । ६ इष्टका, ईंट । ७ विद्युत्, बिजली । ८ रस, अर्क । ६ दूध । १० जल । ११ हरीतकी, हर्रे । १२ शालपर्णी, सरिवन । १३ विष, जहर, हलाहल । १४ पृथ्वी, धरती । १५ मधु, शहद । १६ धाम, घर । १७ एक प्रकारका वृत्त । १८ आमलकी, आँवला । १६ चूना । २० गुडूची गिलोय । २१ रुद्रकी स्त्री । २२ पुत्री । २३ वधू ।

सुधाई (हिं० स्त्री०) सीधापन, सिधाई ।

सुधाकण्ठ (सं० पु०) कोकिल, कोयल । (हेम)

सुधाकर (सं० पु०) चन्द्रमा ।

सुधाकार (सं० पु०) १ चूना पोतनेवाला, सफेदी करनेवाला । २ मिस्त्री, राज, मजूर ।

सुधाक्षार (सं० पु०) चूनेका खार ।

सुधाक्षालित (सं० त्रि०) सफेदी किया हुआ, जिस पर चूना पुता हुआ हो ।

सुधाङ्ग (सं० पु०) चन्द्रमा । (त्रिका०)

सुधाजीविन् (सं० पु०) सुधा जीव-णिनि । वह जो चूना पोत कर जीविका निर्वाह करता हो, सफेदी करनेवाला मजदूर ।

सुधात (सं० त्रि०) सुधौत, अच्छी तरह धोया या साफ किया हुआ ।

सुधातु (सं० त्रि०) १ प्रचुर दक्षिणा आदि द्वारा यज्ञ पोषण करनेवाला । (पु०) सु शोभनो धातुः । २ स्वर्ण, सोना । (शुक्लयजु० १।१२)

सुधातुदक्षिण (सं० त्रि०) स्वर्णदक्षिण, जो यज्ञादिमें सुवर्ण दक्षिणा देता हो । (शुक्लयजु० १।७६)

सुधातृ (सं० त्रि०) सु-धा तृच् । सुन्दर रूपसे विधान करनेवाला ।

सुधादीधिति (सं० पु०) सुधांशु, चन्द्रमा ।

सुधाद्रव (सं० पु०) एक प्रकारकी चटनी । (मृच्छकटिक)

सुधाधर (सं० पु०) १ चन्द्रमा । (त्रि०) २ जिसके अधरोंमें अमृत हो ।

सुधाधरण (सं० पु०) चन्द्रमा ।

सुधाधवल (सं० त्रि०) १ चूनेके समान सफेद । २ चूना पुता हुआ, सफेदी किया हुआ ।

सुधाधवलित (सं० त्रि०) सुधाधवल देखो ।

सुधाधाम (सं० पु०) चन्द्रमा ।

सुधाधार (सं० पु०) १ चन्द्रमा । २ सुधाका आधार, अमृतपात्र ।

सुधाधारा (सं० स्त्री०) अमृतधारा ।

सुधाधी (सं० त्रि०) सुधाके समान अमृतके तुल्य ।

सुधाधौत (सं० त्रि०) चूना किया हुआ, सफेदी किया हुआ ।

सुधानजर (हिं० वि०) कृपालु, दयावान् ।

सुधाना (हिं० क्रि०) १ शोधनेका काम दूसरेसे कराना, दुरुस्त कराना, ठीक कराना । लग्न या कुण्डली आदि ठीक कराना ।

सुधानिधि (सं० पु०) सुधाया निधिः । १ चन्द्रमा । २ समुद्र । ३ दंडक वृत्तका एक भेद । इसमें ३२ वर्ण होते हैं और १६ बार क्रमसे गुरु लघु आते हैं ।

सुधानिधिरस (सं० पु०) वैद्यकमें एक प्रकारका रस । यह पारे, गन्धक, सोनामक्खी और लोहे आदिके योगसे बनता है । इसका व्यवहार रक्तपित्तमें किया जाता है ।

सुधापयस् (सं० क्ली०) स्नुही क्षीर, थूहरका दूध ।

सुधापाणि (सं० पु०) धन्वन्तरि, पीयूषपाणि । पुराणोंमें

अनुसार समुद्रमथनके समय धन्वन्तरि हाथमें सुधा या अमृत लिये हुए निकले थे, इसीसे उनका नाम सुधापाणि या पीयूषपाणि पड़ा।

सुधापाषाण (सं० पु०) सफेद खली।

सुधाभवन (सं० पु०) अस्तरकारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति (सं० स्त्री०) सफेदी की हुई दीवार।

सुधाभुज् (सं० पु०) अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाभृति (सं० पु०) १ चन्द्रमा। २ यज्ञ।

सुधाभोजिन् (सं० पु०) अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधामन् (सं० पु०) १ एक प्राचीन ऋषिका नाम। २ रैवतक मन्वन्तरके देवताओंका एक गण। (मार्कण्डेयपु० ७५ अ०) ३ क्रौञ्चद्वीपके अन्तर्गत एक वर्षके राजाका नाम।

सुधामय (सं० त्रि०) सुधा स्वरूपे मयट्। १ अमृत स्वरूप, सुधासे भरा हुआ। २ चूनेका बना। (पु०) ३ राजभवन, राजप्रासाद। (शब्दरत्ना०)

सुधामयूख (सं० पु०) चन्द्रमा।

सुधामित्र (सं० पु०) पाणिनिके काश्यादिगणोक्त एक नाम।

सुधामुखी (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुधामूली (सं० स्त्री०) सालम मिस्री, सालब मिस्री।

सुधामोदक (सं० पु०) यवास शर्करा, शीरखिश्त।

सुधामोदकज (सं० पु०) तवराज खाण्ड, तुरञ्जबीनकी खाड़।

सुधाय (सं० पु० सुधा। (तैत्तिरीयब्र० ५।५।१०।७)

सुधायोनि (सं० पु०) सुधा योनि र्यस्य। चन्द्रमा।

सुधार (सं० त्रि०) सुन्दर धारायुक्त।

सुधार (सं० पु०) सुधारनेकी क्रिया या भाव, दोष या त्रुटियोंका दूर किया जाना, इसलाह।

सुधारक (हिं० पु०) १ वह जो दोषों या त्रुटियोंका संशोधन या सुधार करता हो, संस्कारक। २ वह जो धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक सुधार या उन्नतिके लिये प्रयत्न या आन्दोलन करता हो।

सुधारना (हिं० क्रि०) १ दोष या बुराई दूर करना, बिगड़े हुएको बनाना, संवारना। (वि०) २ सुधारनेवाला, ठीक करनेवाला।

सुधारश्मि (सं० पु०) सुधांशु, चन्द्रमा।

सुधारा (हिं० वि०) सरल, सीधा।

सुधाराम—बङ्गालके नोआखाली जिलेका प्रधान नगर और विचारसदर। यह अक्षा० २२° ४६´ ३० तथा देशा० ६१° ७´ पू०के मध्य नोआखाली खाल नामक एक शाखा नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ७ हजार के करीब है। १८७६ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। पहले यहां सुधाराम मजूमदार नामक एक विख्यात वदान्य जमींदार रहते थे। उस समय यह स्थान समुद्रके किनारे बसा था। समुद्रतीरका खारा जल स्थानवासीका स्वास्थ्यकर नहीं होगा, यह जान कर उन्होंने यहां एक दिग्गी खुदवाई। उसका जल मीठा है। सुधारामके नामानुसार ही पीछे दिग्गीसे नगरका नाम भी सुधाराम हुआ। अभी नगर समुद्रतटसे प्रायः १० मील दूर हट गया है। नगरसे समुद्रतीरभूमि तक देशभाग पीछे चरसे निकल पड़ा है, वह सहजमें जाना जाता है। वर्षाकालमें समुद्रसे बाढ़का जल नोआखाली-में प्रवेश करके सुधाराम नगरसे और भी उत्तर तक जाता है। पुर्त्तगीज आधिपत्यकालमें तथा उसके बाद यहां बहुतसे मुसलमान आ कर बस गये। उसके निदर्शनस्वरूप यहां बहुत-सी मसजिद देखी जाती हैं। शहरमें सरकारी कार्यालय और एक कारागार है।

नोआखाली और पुर्त्तगीज देखो।

सुधालता (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी गिलोय।

सुधाव (हिं० पु०) संशोधन, सुघराई, बनाव।

सुधावत् (सं० पु०) पाणिनिके बाह्वादिगणोक्त एक नाम।

सुधावर्षिन् (सं० पु०) १ ब्रह्मा। २ एक बुद्धका नाम। (त्रि०) ३ सुधावर्षणकारी, अमृत बरसानेवाला।

सुधावास (सं० पु०) १ चन्द्रमा। २ त्रपुषी, खीरा।

सुधावासा (सं० स्त्री०) त्रपुषी, खीरा।

सुधाशर्करा (सं० स्त्री०) खली, खरी।

सुधास्रवा (सं० पु०) अमृत बरसानेवाला।

सुधासदन (सं० पु०) चन्द्रमा।

सुधासित (सं० त्रि०) चूना पुता हुआ, सफेदी किया हुआ।

सुधासिन्धु (सं० पु०) अमृतसमुद्र।

सुधासू (सं० पु०) सुधां सूते सू-क्विप्। अमृत उत्पन्न करनेवाला, चन्द्रमा।

सुधासूति (सं० पु०) १ चन्द्रमा। २ यज्ञ। ३ पद्म, कमल।

सुधास्पर्धिन् (सं० त्रि०) अमृतके समान मधुर, अमृतकी बराबरी करनेवाला।

सुधास्रवा (सं० स्त्री०) १ प्रतिजिह्वा, गलेके अंदरकी घंटी, कौवा। (त्रिका०) २ रुदन्ती, रुद्रवन्ती।

सुधाहर (सं० पु०) गरुड।

सुधाहृत (सं० पु०) गरुड। (हेम)

सुधि (हिं० स्त्री०) सुध देखो।

सुधित (सं० त्रि०) सु-धा-क्त। १ सुव्यवस्थित। २ सुधा या अमृतके समान।

सुधिति (सं० पु० स्त्री०) कुठार, कुल्हाडी।

सुधी (सं० पु०) १ पण्डित, विद्वान् व्यक्ति। (त्रि०) २ उत्तम बुद्धिविशिष्ट, अच्छी बुद्धिवाला, चतुर। ३ धार्मिक। (स्त्री०) ४ सुन्दर बुद्धि।

सुधीर (सं० त्रि०) सुशोभनो धीरः। अतिशय धीर, जिसमें यथेष्ट धैर्य हो।

सुधुम्नानी (सं० स्त्री०) पुराणानुसार पुष्करद्वीपके सात खंडोंमेंसे एक।

सुधुर् (सं० त्रि०) अतिशय दारिद्रनाशक, गरीबी दूर करनेवाला। (ऋक् १।७३।१०)

सुधूपक (सं० पु०) श्रीवेष्ट।

सुधूम (सं० पु०) स्वादु नामक गन्धद्रव्य।

सुधूम्रवर्णा (सं० स्त्री०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक जिह्वाका नाम।

सुधृत् (सं० पु०) मिथिलापति महावीर्यका पुत्र।

सुधृत (सं० त्रि०) सु-धृ-क्त। मजबूतीसे पकडा हुआ।

सुधृति (सं० पु०) १ एक राजाका नाम जो मिथिलाके महावीरका पुत्र था। २ राज्यवर्द्धनका पुत्र।

सुधृष्टम (सं० त्रि०) अतिशय धृष्ट, धृष्टतम।

सुधोद्भव (सं० पु०) धन्वन्तरि। समुद्र मन्थनके समय धन्वन्तरि सुधा लिये हुए निकले थे। इसीसे इन्हें सुधोद्भव कहते हैं।

सुधोद्भवा (सं० स्त्री०) हरीतकी, हर्रे।

सुधौत (सं० त्रि०) सु-धाव क्त। उत्तमरूपसे धौत, अच्छी तरह धोया या साफ किया हुआ।

सुन (हिं० वि०) सुन्न देखो।

सुनक्का (हिं० पु०) चौपायोंका एक रोग जो उनके कंठमें होता है, गरारा, घुरकवा।

सुनकातर (हिं० पु०) एक प्रकारका सांप।

सुनकिरवा (हिं० पु०) एक प्रकारका कीडा जिसके पर पन्नेके रंगके होते हैं।

सुनक्षत्र (सं० सं० क्ली०) १ शुभनक्षत्र, उत्तम नक्षत्र। (पु०) २ एक राजाका नाम जो मरुदेवका पुत्र। ३ निरमित्रका पुत्र। (त्रि०) ४ शुभ नक्षत्रविशिष्ट, उत्तम नक्षत्रवाला।

सुनक्षत्रा (सं० स्त्री०) १ कार्त्तमासका दूसरा नक्षत्र। २ कार्त्तिकेयकी एक मातृका।

सुनखर्चा (हि० पु०) एक प्रकारका धान जो आश्विनके अन्त और कार्त्तिकके आरम्भमें होता है।

सुनगुन (हिं० स्त्री०) १ किसी बातका भेद, टोह, सुराग। २ कानाफूसी।

सुनजर (हिं० वि०) कृपालु, दयावान्।

सुनत (अ० स्त्री०) सुन्नत देखो।

सुनना (हिं० क्रि०) १ श्रवणेन्द्रियके द्वारा शब्दका ज्ञान प्राप्त करना, कानोंके द्वारा उनका विषय ग्रहण करना। २ भली बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना। ३ किसीके कथन पर ध्यान देना, किसीकी उक्ति पर ध्यानपूर्वक विचार करना, ध्यान देना।

सुनन्द (सं० क्ली०) १ बलभद्रका मूषल। २ कुम्भ दैत्यका मूषल जो विश्वकर्माका बनाया हुआ माना जाता है। (पु०) ३ श्रीकृष्णका एक पार्षद्। ४ एक देवपुत्र। ५ एक बौद्धश्रावक। ६ बारह प्रकारके राजभवनोंमेंसे एक। यह सुनन्द नामक राजप्रासाद राजाओंके लिये विशेष शुभकर माना गया है। कहते हैं, कि इसमें रहनेवाले राजाको कोई परास्त नहीं कर सकता। युक्तिकल्पतरुके अनुसार इस भवनकी लम्बाई राजाके हाथके परिमाणसे ५१ हाथ और चौडाई ४० हाथ होनी चाहिये। इस गृहके अधिष्ठाता देवता भौम हैं। इस

गृहमें २० द्वार तथा उन्हें रक्तवर्ण चित्र द्वारा अंकित रक्तवर्ण पटवस्त्र द्वारा आवृत करना चाहिये।

सुनन्दन (सं० पु०) १ कृष्णके एक पुत्रका नाम । २ पुरीष भीरुका एक पुत्र। ३ भूनन्दनका भाई।

सुनन्दा (सं० स्त्री०) सु-ष्ठु नन्दयति या नन्द-अच् टाप्। १ उमा, गौरी। २ उमाकी एक सखी। ३ कृष्णकी एक पत्नी। ४ वाहु और वालिकी माता। ५ भरतकी पत्नी। ६ सर्वार्थसिद्ध नन्दकी बड़ी स्त्री। ७ चेदिके राजा सुवाहुकी वहन। ८ सार्वभौमकी पत्नी। ९ प्रतीपकी पत्नी। १० नारी, स्त्री, औरत। ११ एक नदीका नाम। १२ सफेद गौ। १३ एक तिथि। १४ गोरोचना, गोरोचन। १५ अर्कपत्री, इसरौल।

सुनन्दिनी (सं० स्त्री०) १ आरामशीतला नामक पत्रशाक। २ एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें स ज स ज ग रहते हैं। इसे प्रबोधिता और मंजुभाषिणी भी कहते हैं।

सुनफा (सं० स्त्री०) ज्योतिषका एक योग।

सुनबहरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका रोग जिसमें पैर फूल जाता है, श्लीपद, फीलपा।

सुनय (सं० पु०) १ सुनीति, उत्तम नीति। २ परिप्लव राजाका पुत्र। (भागवत ९।२२।४२) ३ ऋतका एक पुत्र। ४ खनित्रका पुत्र।

सुनयश्री (सं० पु०) एक बौद्धाचार्यका नाम।

सुनयन (सं० पु०) १ मृग, हरिन। (त्रि०) २ शोभन नयनविशिष्ट, सुंदर आंखोंवाला।

सुनयना (सं० स्त्री०) १ राजा जनककी पत्नी। २ नारी, स्त्री, औरत।

सुनर (सं० पु०) अर्जुन।

सुनवाई (हिं० स्त्री०) १ सुननेकी क्रिया या भाव। २ किसी शिकायत या फरियाद आदिका सुना जाना। ३ मुकदमे आदिका पेश हो कर सुना जाना।

सुनवैया (हिं० वि०) १ सुननेवाला। २ सुनानेवाला।

सुनस (सं० त्रि०) सुन्दर नासिकाविशिष्ट, सुन्दर नाकवाला।

सुनसर (हिं० पु०) एक प्रकारका गहना।

सुनसान (हिं० वि०) १ जहाँ कोई न हो, निर्जन, खाली। २ उजाड़, वीरान। (पु०) ३ सन्नाटा।

सुनह (सं० पु०) जह्नुका एक पुत्र। (हरिवंश)

सुनहरा (हिं० वि०) सुनहला देखो।

सुनहरी (हिं० वि०) सुनहला देखो।

सुनहला (हिं० वि०) सोनेके रंगका, सोनेका-सा।

सुनाई (हिं० स्त्री०) सुनवाई देखो।

सुनाकृत (सं० पु०) कर्पूरक, कचूर।

सुनाद (सं० पु०) १ शङ्ख। (त्रि०) २ उत्तम शब्दयुक्त, उत्तम शब्दवाला।

सुनाना (हिं० क्रि०) १ दूसरेको सुननेमें प्रवृत्त करना, कर्णगोचर कराना। २ खरी खोटी कहना।

सुनानी (हिं० स्त्री०) सुनावनी देखो।

सुनाभ (सं० पु०) १ मैनाक पर्वत। २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ३ वरुणका एक मन्त्री। ४ गरुडका एक पुत्र। (क्ली०) ५ सुदर्शनचक्र। ६ एक प्रकारका मंत्र जिसका प्रयोग अस्त्रों पर किया जाता था। (त्रि०) ७ सुन्दर नाभियुक्त।

सुनाभक (सं० पु०) सुनाभ स्वार्थे कन्। सुनाभ देखो।

सुनाभा (सं० स्त्री०) कटभी, करही।

सुनाभि (सं० त्रि०) सुन्दर नाभियुक्त।

सुनाम (सं० क्ली०) यश, कीर्त्ति, ख्याति।

सुनामद्वादशी (सं० स्त्री०) एक व्रत जो वर्षको वारहों शुक्ला द्वादशियोंको किया जाता है। अगहन महीनेको शुक्ला द्वादशीको इस व्रतका आरम्भ कर आखिर प्रति मासको शुक्ला द्वादशी तिथिमें यह व्रत करना होता है। अग्निपुराणमें इसका बड़ा माहात्म्य लिखा है। विधिपूर्वक जो इस व्रतका अनुष्ठान करते हैं वे राजसूय यज्ञका फललाभ करते हैं।

सुनामन् (सं० त्रि०) १ यशस्वी, कीर्त्तिशाली। (पु०) २ सुकेतुके एक पुत्रका नाम। (भारत) ३ कंसके आठ भाइयोंमेंसे एक। ४ वैनतेयका एक पुत्र। ५ स्कन्दका पार्षद।

सुनामिका (सं० स्त्री०) त्रायमाणा लता, त्रायमान।

सुनाम्नी (सं० स्त्री०) देवककी पुत्री और वासुदेवकी पत्नी। (हरिवंश)

सुनायक (सं० पु०) १ कार्त्तिकेयके एक अनुचरका

नाम। २ वैनतेयके एक पुत्रका नाम। ३ एक दैत्यका नाम।

सुनार (सं० पु०) सुष्ठु नालमस्य लस्य रः। १ कुतिया-का दूध। २ चटक पक्षी, गौरा, गौरैया। ३ सर्पाण्ड, सापका अंडा।

सुनार (हिं० पु०) सोने, चांदीके गहने आदि बनानेवाली जाति, स्वर्णकार।

सुनारी (हिं० स्त्री) १ सुनारका काम। २ सुनारकी स्त्री।

सुनाल (सं० क्ली०) लामज्जक, रक्त कमल, लाल कमल।

सुनालक (सं० पु०) १ वकपुष्प वृक्ष, अगस्त। (त्रि०) २ सुन्दर नालयुक्त।

सुनावनी (हिं० स्त्री०) १ कहीं विदेशसे किसी सम्बन्धी आदिकी मृत्युका समाचार आना। २ वह स्थान आदि कृत्य जो परदेशसे किसी सम्बन्धीकी मृत्युका समाचार आने पर होता है।

सुनास (सं० त्रि०) सुन्दर नासिकायुक्त, सुन्दर नाक-वाला।

सुनासा (सं० स्त्री०) काकनासा, कौआ ठोंठी।

सुनासिक (सं० त्रि०) सुन्दर नासिकायुक्त, सुन्दर नाकवाला।

सुनासिका (सं० स्त्री०) १ काकनासा, कौआ ठोंठी। २ शोभन नासिका, सुन्दर नाक।

सुनासीर (सं० पु०) १ इन्द्र। (अमर) २ देवता।

सुनिक (सं० पु०) रिपुञ्जयका एक मन्त्री।

सुनिकृष्ट (सं० त्रि०) सु-नि-कृष-क्त। अति निकृष्ट, अतिशय निन्दित।

सुनिखात (सं० त्रि०) सु-नि-खन क्त। सुष्ठु रूपसे निखात, अच्छी तरह प्रोथित।

सुनितम्बिनी (सं० स्त्री) शोभन नितम्बविशिष्टा स्त्री, वह स्त्री जिसका चूतड सुन्दर हो।

सुनिद्र (सं० त्रि०) उत्तम निद्रायुक्त, जिसे अच्छी नींद आई हो, अच्छी तरह सोया हुआ।

सुनिद्रा (सं० स्त्री०) उत्तम रूपसे निद्रा, खूब नींद।

सुनिधा (सं० स्त्री०) सुन्दर निधान। (ऋक् ३।२६।१२)

सुनिनद (सं० त्रि०) सुन्दर नाद या शब्द करनेवाला।

सुनिभृत (सं० अव्य०) अतिशय निभृत।

सुनियत (सं० त्रि०) सु-नि-यम क्त। अतिशय नियत।

सुनिरज (सं० त्रि०) आसानीसे पाने योग्य।

सुनिरूपित (सं० त्रि०) सु-नि-रूप-क्त। उत्तम रूपसे निरूपित, जिसका अच्छी तरह निर्णय हो चुका हो।

सुनिरूहन (सं० क्ली०) वस्तिभेद।

सुनिर्मथ (सं० पु०) अतिशय मन्थन। (ऋक् ३।२६।१२)

सुनिर्मल (सं० त्रि०) अतिशय निर्मल, खूब स्वच्छ।

सुनिर्मित (सं० पु०) १ देवपुत्रभेद। (ललितवि०) (त्रि०) २ जो अच्छी तरह बना हुआ हो।

सुनिर्यासा (सं० स्त्री०) लिङ्गिनी नामक वृक्ष।

सुनिशित (सं० त्रि०) सुतीक्ष्ण, खूब तेज।

सुनिश्चय (सं० पु०) सु-निर्-चि अच्। दृढ निश्चय।

सुनिश्चल (सं० त्रि०) अति स्थिर, दृढ।

सुनिश्चित (सं० त्रि०) दृढनिश्चित, दृढतासे निश्चय किया हुआ, भली भांति निश्चित किया हुआ।

सुनिश्चितपुर (सं० क्ली०) काश्मीरका एक प्राचीन नगर।

सुनिषण्ण (सं० त्रि०) सु नि सद्-क्त। १ अच्छी तरह बैठा हुआ। (क्ली०) २ शिरियारी, चौपतिया या सुसना नामका साग। महाराष्ट्र—कुरडाहक, खडकतिरा। तैलङ्ग—सुनिषण्णमने शाकमु। उत्कल—छुलछुनिया। कहते हैं, कि यह साग खानेसे अच्छी नींद आती है, इसीसे इसका नाम सुनिषण्ण (जिससे अच्छी नींद आवे) पडा है। गुण—अविदाही, लघु, स्वादु, कषाय, रुक्ष, दीपन, वृष्य, रुचिकर, ज्वर, श्वास, मेह, कुष्ठ और भ्रमनाशक, निद्राकारक। (भाव०) राजवल्लभके मतसे यह त्रिदोषनाशक, अविदाही और संग्राहक माना गया है। ३ शैवाल, सेवार।

सुनिषण्णक (सं० पु०) सुनिषण्ण देखो।

सुनिष्क (सं० त्रि०) सुन्दर अलङ्कारविशिष्ट।

सुनिष्टप्त (सं० त्रि०) सु निर् तप-क्त। अतिशय उत्तप्त, बहुत गरम।

सुनिष्ठुर (सं० त्रि०) अतिशय निष्ठुर, बडा निर्दय।

सुनिस्त्रिंश (सं० पु०) तेज धारवाली तलवार।

सुनीच (सं० पु०) किसी ग्रहका किसी राशिमें किसी

विशेष अंशका अवस्थान। ज्योतिषमें लिखा है, कि ग्रहोंके राशिमें अवस्थान करनेसे उसे उच्च या नीच कहते हैं। रवि मेषराशिमें रहनेसे उच्चस्थ तथा तुलामें रहनेसे नीचस्थ होता है। इस तुला राशिके अंशविशेषमें अवस्थान करनेसे सुनीचस्थ होता है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रहका ही सुनीचांश है। यदि ग्रहगण उक्त सुनीच स्थानमें रहे, तो वलहीन तथा ग्रह सुनीचस्थ ग्रह अनिष्ट फलप्रद होता है। (सत्कृत्यमुक्ता०)

सुनीत (सं० त्रि०) १ सुनीतिसहित, सुनीतियुक्त। (पु०) २ एक राजाका नाम, जो सुवलका पुत्र था। (विष्णुपुराण) (क्ली०) ३ बुद्धिमत्ता, समझदारी। ४ नीतिमत्ता।

सुनीति (सं० स्त्री०) शोभना नीतिः। १ उत्तम नीति। २ राजा उत्तानपादकी पत्नी और ध्रुवकी माता। विष्णुपुराणमें लिखा है, कि राजा उत्तानपादकी दो पत्नियां थीं—सुनीति और सुरुचि। सुरुचिको राजा बहुत चाहता था और सुनीतिसे बहुत घृणा करता था। सुनीतिको ध्रुव नामक एक पुत्र हुआ जिसने तप द्वारा भगवान्‌को प्रसन्न कर राजसिंहासन प्राप्त किया।

विशेष विवरण ध्रुव शब्दमें देखो।

(पु०) ३ शिव। ४ विदूरथका एक पुत्र। (त्रि०) ५ उत्तम नीतिविशिष्ट।

सुनीथ (सं० त्रि०) सुष्ठु नयति धर्ममिति सु नी (हनिकुषिनीरमि काशिभ्यः क्थन्। उण् २।२) इति क्थन्। १ नीतिमान्, न्यायपरायण। (पु०) २ ब्राह्मण। ३ कृष्णका एक पुत्र। ४ शिशुपालका एक नाम। ५ सन्ततिका पुत्र। ६ सुवलका एक पुत्र। ७ एक दानवका नाम। ८ एक प्रकारका वृक्ष।

सुनीथा (सं० स्त्री०) मृत्युकी पुत्री और अंगकी पत्नी।

सुनील (सं० क्ली०) १ लामज्जक, लाल कमल। (पु०) २ दाड़िम वृक्ष, अनारका पेड़। (त्रि०) ३ अत्यन्त नीलवर्ण, बहुत नीला।

सुनीलक (सं० पु०) १ नील भृङ्गराज, काला भँगरा। २ नीलासन। ३ नीलकान्तमणि, नीलम।

सुनीला (सं० स्त्री०) १ अतसी, तीसी। २ नीलापराजिता, नीली अपराजिता, नीली कोयल। ३ चणिका तृण, चनिका घास। (राजनि०)

सुनु (सं० क्ली०) जल।

सुनेत्र (सं० पु०) १ धृतराष्ट्रका एक पुत्र। २ वैनतेयका एक पुत्र। ३ तेरहवें मनुका एक पुत्र। (मार्क०पु०) ४ सुव्रतका पुत्र। (विष्णुपु०) ५ मारका एक पुत्र। (ललितवि०) ६ चक्रवाक, चकवा। (हरिवंश) (त्रि०) ७ सुन्दर नयनयुक्त, सुन्दर नेत्रोंवाला।

सुनेत्रा (सं० स्त्री०) सांख्यके अनुसार नौ तुष्टियोंमेंसे एक।

सुनैया (हिं० वि०) सुननेवाला, जो सुने।

सुनोची (हिं० पु०) एक प्रकारका घोड़ा।

सुनौ (सं० त्रि०) १ शोभन नौकाविशिष्ट, जिसे सुंदर नाव हो। (स्त्री०) २ शोभन नौका, सुंदर नाव।

सुन्द (सं० पु०) १ एक वानरका नाम। (रामायण लङ्का ४१ स०) २ एक राक्षसका नाम। (रामायण १।२० स०) ३ संह्लादका पुत्र। (हरिवंश ३।७२) ४ विष्णु। (भारत० १३।१४९।६८) ५ एक असुर जो निसुंदका पुत्र और उपसुंदका भाई था। सुन्द और उपसुन्द दोनों बड़े वलवान असुर थे। इन्हें कोई हरा नहीं सकता था। तिलोत्तमा नामकी अप्सराके लिये दोनों आपसमें ही लड़ कर मर गये थे। उपसुन्द देखो।

सुन्दर (सं० त्रि०) सु उन्द-क्लेदने अर, शकन्ध्वादित्वात् साधुः। १ मनोहर, मनोज्ञ, जो देखनेमें अच्छा लगे, खूबसूरत। २ अच्छा, भला, बढ़िया ३ श्रेष्ठ, शुभ। (पु०) ४ कामदेव। ५ एक नागका नाम। ६ वृक्षविशेष। इस वृक्षकी लकड़ी बड़ी मजबूत और टिकाऊ होती है। ७ लङ्काका एक पर्वत।

सुन्दर—इस नामके बहुतेरे संस्कृत ग्रंथकारोंके नाम। १ सिद्धांतसेतुकाके रचयिता। २ अनङ्गमङ्गलभाणके प्रणेता। ३ औआगिरि उपाधिसे भूषित एक प्रसिद्ध आलङ्कारिक। इन्होंने १५९६ ई०में अभिराममणि नाटक और १६१३ ई०में नाट्यप्रदीपकी रचना की। ४ एक प्रसिद्ध तान्त्रिक। १५५६ ई०में इन्होंने दक्षिणकालिकासपर्याकल्पलता लिखी। ५ मौनमन्त्रावबोधके प्रणेता। ६ वाराणसी दर्पणकाव्यके रचयिता।

७ साधु सुन्दरगणि नामसे प्रसिद्ध एक जैनाचार्य। ये साधु कीर्त्तिके शिष्य थे। इन्होंने भक्तिरत्नाकर, शब्दरत्नाकर और १६२४ ई०में धातुरत्नाकर लिखा। ८ सुन्दरजामातृ मुनि नामसे प्रसिद्ध सौम्यजामातृ मुनिके शिष्य तथा अध्यात्मचिन्तामणिकी टीकाके रचयिता। ९ सर्वाङ्गयोगप्रदीपिकाके रचयिता। १० गोविन्दके पुत्र, एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि। इन्होंने मुक्तिपरिणयनाटक, रासमुन्दरमहाकाव्य और विनोदरङ्गप्रहसन रचा। ११ गोविन्ददेवके पुत्र। ये विश्वरूपतीर्थके शिष्य थे। इन्होंने ऋतुवर्या हठतत्त्वकौमुदीकी रचना की। १२ विश्वनाथदेवके पुत्र तथा हठसङ्केतचन्द्रिकाके प्रणेता। १३ सुन्दरराज नामसे प्रसिद्ध। ये कुशिकगोत्र माधवाचार्यके पुत्र थे। इन्होंने आपस्तम्बशुल्वप्रदीप और अद्वैतदीपिकाकी टीका लिखी।

सुन्दरक (सं० त्रि०) १ सुन्दर देखो। (पु०) २ एक तीर्थका नाम। ३ एक हृदका नाम। (भारत)

सुन्दर काण्ड (सं० पु०) रामायणके पांचवें काण्डका नाम जो लंकाके सुन्दर पर्वतके नाम पर रखा गया है।

सुन्दरता (सं० स्त्री०) सुन्दरस्य भावः तल् टाप्। सुन्दर होनेका भाव, सौन्दर्य, खूबसूरती।

सुन्दरत्व (सं० क्ली०) सुन्दरता, सौन्दर्य।

सुन्दरनन्द (सं० पु०) सुन्दरानन्द देखो।

सुन्दरपाण्ड्यदेव (स० पु०) पाण्ड्यवंशीय प्रसिद्ध राजा। पाण्ड्यवंश देखो।

सुन्दरपुर (सं० क्ली०) १ एक प्राचीन नगरका नाम। (कथास०) २ मनोरम नगर।

सुन्दरम्मन्य (सं० त्रि०) सुन्दरमानी, जो अपनेको सुन्दर मानता या समझता हो।

सुन्दरवंश (स० पु०) १ एक देशका नाम। २ इस देशका निवासी।

सुन्दरवती (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम।

सुन्दरवन—वङ्गकी अरण्यानीसमाकुल विस्तीर्ण जलाभूमि यह अक्षा० २१° ३१' से, २२° ३८' उ० तथा ८८° ५' से ९०° २८' पू०के मध्य गाङ्गेय डेल्टाके दक्षिण मैदानमें अवस्थित समुद्रके किनारे हुगलीके मुहानेसे ले कर मेघनाके मुहाने तक विस्तृत है। भूपरिमाण ६५२६ वर्गमील है। इसके उत्तरमें चौबीस परगना, खुलना और वाखरगंज जिला, पश्चिममें हुगलीका और पूरबमें मेघनाका मुहाना तथा दक्षिणमें वङ्गोपसागर है। इसकी लम्बाई १६५ मील और चौड़ाई ८१ मील है। एक विशिष्ट कमिश्नरके ऊपर इस स्थानका शासनभार सपुर्द है।

चट्टग्रामके उपकूल पर जो सब वन हैं, उन्हें समुद्रतीरवर्त्ती होनेके कारण 'समुद्रवन' कहते हैं। इससे मालूम होता है, कि इस अरण्यखण्डका नाम भी पहले 'समुद्रवन' था तथा कालक्रमसे 'सुन्दरवन' हुआ है।

यह विस्तीर्ण भूखण्ड प्रति दिन समुद्रजलसे स्नात हो कर समुद्रवाहित वालुकाकण द्वारा क्रमशः उच्च होता जाता है। इसके अभ्यन्तर प्रदेशमें असंख्य तालाव और जलाभूमि है, किन्तु वे सभी धीरे धीरे सूखते जा रहे हैं। उत्तर-दक्षिणवाही नदी नाला और नदीके मुहानेसे सारा प्रदेश मानो एक विस्तीर्ण जलाधारके जालसे समाच्छन्न-सा मालूम होता है। इस प्रकार विभक्त हो कर यहां छोटे बड़े तथा भिन्न भिन्न आकृतिके असंख्य द्वीप और उपद्वीप बन गये हैं। इस विस्तीर्ण भूखण्डको आबाद करके वासोपयोगी बनानेकी कोशिश हो रही है। बरिशालकी ओर प्रायः समुद्रोपकूल पर्यन्त ही जङ्गल विमुक्त हो गया है। इसके सिवा समस्त उत्तर प्रान्त तकमें खेतीबारी होती है।

सुन्दरवनका समुद्र समीपवर्त्ती अंश दुर्भेद्य जङ्गलसे समाच्छन्न और नदीनालासे विभक्त है। यहां नाना जातिके वृक्ष उत्पन्न होते हैं। पार्श्ववर्त्ती जिलेके लोग आ कर पेड़ काटते और उसे जला कर कोयला बनाते हैं। वह कोयला पीछे बड़ी बड़ी नावों पर लाद कर देशविदेशमें भेजा जाता है। सुन्दरीवृक्ष ही यहां बहुतायतसे उत्पन्न होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती, इससे नाव या घर बनानेके काममें अधिक आती है। इस विस्तीर्ण अरण्यके एक अंश (क्षेत्रफल १५८१ वर्गमील) का गवर्मेण्टने Reserved forests नाम रख कर खास-महाल बना रखा है। अवशिष्टका भी कुछ अंश Protected forest (सरक्षित वन) नामसे अरण्य विभागके तत्त्वावधानमें संस्थापित किया गया है।

प्राकृतिक गठन और अवस्थानके अनुसार सुन्दरवन प्रधानतः तीन भागोंमें विभक्त हो सकता है। यथा (१) पश्चिम विभाग, हुगली, यमुना और कालिन्दी नदीका मध्यवर्ती भूभाग इसके अन्तर्गत है। (२) यमुना और बलेश्वर नदका मध्यवर्ती मध्यविभाग और (३) पूर्वविभाग—बलेश्वरसे मेघना तक विस्तृत है। इनमेंसे पूर्व और पश्चिम विभाग अपेक्षाकृत उच्च है, मध्यविभाग की ओर जितना ही कदम बढ़ाते हैं, उतनी ही जमीनकी निम्नता विशेषरूपसे मालूम होती है। यह अंश प्रायः जलाकीर्ण है। पश्चिम विभागकी नदीका जल एकदम खारा है। बांध बांध कर आबादी जमीनको खारेपनके आक्रमणसे रक्षा की जाती है।

यहांके नदीनालोंका विस्तृत विवरण देना कष्टकर है। हुगली, बलेश्वर, मालञ्च, बाङ्करा, मातला, राङ्गा-दुनी, सप्तमुखी, रायमङ्गल और गयासुवा नदी प्रधान हैं।

यहां नाना जातिके पशु-पक्षी देखे जाते हैं, पशुओंमें बाघ, चीताबाघ, भैंस, सूअर, गैंडा, वनविलाव, नाना जातिके हरिण, साही नामक जन्तु, उद्बिलाव, वानर आदि; पक्षियोंमें गिद्ध, चील, हड़गीला, बाज, उल्लू, पेचक, जङ्गली कबूतर, सुग्गा, जंगली मुर्गा तथा भिन्न भिन्न प्रकारके जलचर पक्षी प्रधान हैं। गोक्षुरा आदि नाना जातिके सर्प सर्वदा दिखाई देते हैं। जलमें मछली, कुम्भीर आदिका अभाव नहीं है।

इतिहास पढ़नेसे जाना जाता है, कि सुन्दरवनको आबाद करनेकी चेष्टा बहुत दिनोंसे चली आ रही है। १४५९ ई०में खांजहान् नामक एक मुसलमान प्रधानने आबादकार्यमें प्रथम हस्तक्षेप किया।

१८०७ ई०में फिर जनसाधारण गवर्मेण्टसे जमीन बन्दोबस्त लेनेको दरखास्त करने लगे। अभीसे आबाद और खेतीबारी बड़े ठिकानेसे चलने लगी। १८७२ ई०-में सुन्दरवनके कमिश्नरने जो रिपोर्ट भेजी, उसमें देखा गया, कि इन थोड़े वर्षोंमें ही १०८९ वर्गमील अर्थात् तृतीयांश परिमित भूमि आबाद हो कर शस्योत्पादन करती है। उस समय यहां ४३१ मालिकाना स्वत्व हो गया था तथा वर्षमें ४१७५७० रु०से ऊपर राजस्व वसूल होता था। पीछे और भी कितने लोगोंने जा कर जमीन बंदोबस्त ली है। उस समय जो सब स्थान अनाबादी थे, अभी उसके भी अनेक स्थानोंमें शस्य श्यामल क्षेत्र शोभा पाता है, पशुपक्षीके कलरवके बदलेमें मधुर मनुष्यकण्ठ सुनाई देता है।

इसका जो जो अंश जिस जिस जिलेके अन्तर्गत है, उस उस अंशके लोग उसी जिलेकी मर्दुमशुमारीमें गिने गये हैं। हिन्दुओंमें नमःशूद्र और मुसलमानोंमें फर-जिरा आ कर यहां आबाद और कृषिकार्य करते हैं। पूर्वांशमें आराकान उपकूलसे आये हुए मगकी संख्या भी उतनी कम नहीं है।

कलकत्तेसे पूर्ववङ्गमें कम किराये पर वाणिज्य द्रव्य भेजने अथवा वहांसे लानेमें सुन्दरवनकी नदी द्वारा भेजना होता है। इस कारण ये सब स्थानीय बन्दररूप स्थान क्रमशः श्रीसम्पन्न होते जा रहे है। इनमेंसे चौबीस परगना और सुन्दरवनकी सीमान्त रेखाके ऊपर प्रतिष्ठित वासड़ा और बसन्तपुर तथा खुलना जिलेके अन्तर्भुक्त सुन्दरवनका प्रतिष्ठित चांदखाली और मोरेलगञ्ज उल्लेख-योग्य है।

शस्यके मध्य यहां आउस और आमन दोनों जातिके धान अधिक उपजते हैं, परन्तु इनमें भी फिर आउसकी अपेक्षा आमनकी खेती ही ज्यादा होती है। आउस केवल पूर्वविभागकी कुछ ऊंची जमीनमें उपजता है। मध्यप्रदेशके धानमें दोनों प्रान्तप्रदेशका धान बहुत बारीक होता है।

यहांकी प्रायः सभी नदियाँ ज्वार भाटेके अधीन हैं; ज्वार भाटा देख कर यहां नावें चलाई जाती हैं।

रेलपथसे मातलातीरवर्ती पोर्ट केनिङ्ग और डायमण्ड-हारबर तथा आखोराबाका और भैरवतीरवर्ती खुलना तक जाया जाता है।

जो सब मनुष्य विभिन्न देशसे आ कर यहां बस गये हैं और खेतीबारी करते है, उन लोगोंकी अवस्था खराब नहीं हैं, धीरे धीरे उन्नत हो रही है।

सुन्दरवर्ण (सं० पु०) १ देवपुत्रभेद। (ललितवि०) २ उत्तम वर्ण।

सुन्दरशुक्र (सं० पु०) एक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकारका का नाम।

सुन्दरसेन (सं० पु०) राजपुत्रभेद। (कथासरित्सा०)
सुन्दरहचि (सं० पु०) राजपुत्रभेद। (तारनाथ)
सुन्दराया (हिं० पु०) सुन्दरता।
सुन्दरारण्य (सं० क्ली०) सुंदर नामक अरण्य, सुन्दर।
सुन्दरी (सं० स्त्री०, १ नारीभेद, रूपलावण्यसम्पन्न स्त्री। २ तरुभेद। ३ हरिद्रा। ४ त्रिपुरसुन्दरी। ५ योगिनी-विशेष। तन्त्रमें लिखा है, कि यथाविधान सुन्दरीका साधन करनेसे सभी अभिलाष सिद्ध होते हैं। गुरुके उपदेशानुसार यथाविधान इस योगिनीको पूजा कर मधुमिश्रित मल्लिका, मालती और जातिपुष्प द्वारा होम करनेसे वागीशत्व लाभ होता है तथा इससे मूकव्यक्ति भी वाचाल होता है। जवा या करवीर पुष्पको घृतमिश्रित कर उससे होम करने पर त्रिभुवनस्थित सभी लोग मोहित होते हैं। कर्पूर और कुंकुममिश्रित मृगमद द्वारा होम करनेसे सौभाग्य, विलास और मदनविजयी हो सकता है। चम्पक और पाटलपुष्प द्वारा होम करनेसे महती श्रीलाभ और जगत् स्तम्भित होता है। श्रीखण्ड, गुग्गुल, कर्पूर और अगुरु द्वारा होम करनेसे नाग, असुर और सुरनारी वशीभूत होती है। इस प्रकार लाख बार होम करनेसे दरिद्र व्यक्ति राज्यलाभ करता है, एक पल त्रिमधु द्वारा होम करनेसे दुर्गमजनितभय विनाश, रात्रिकालमें गुरुके उपदेशानुसार त्रिमधु और रुधिराक्त छागमांस द्वारा होम करनेसे परराज्य और महादुर्ग वशीभूत, पृथक् पृथक् दुग्ध, मधु, दधि और घृत द्वारा होम करनेसे परमायु, धन, आरोग्य और सुखसमृद्धि लाभ तथा क्रमशः दुग्ध और मधु द्वारा होम करनेसे मृत्युभय निवारण, मधुमिश्रित दधि द्वारा होम करनेसे सौभाग्य और धनलाभ केवल शर्करा द्वारा होम करनेसे शत्रुस्तम्भन होता है।

चन्दनचर्चित अक्षमालाकी पूजा करके उस अक्षमाला द्वारा लाख बार जप करनेसे सुन्दरी रमणी साधकका मन उद्भ्रान्त कर डालती है। उस अक्षमाला द्वारा दो लाख बार जप करनेसे पातालतलवासिनी नागकन्या वहां उपस्थित हो कर उस साधकको उद्भ्रान्त करनेकी चेष्टा करती है। साधक उससे उद्भ्रान्त न हो कर पुनः एक लाख बार जप करनेसे देवकन्या वहां आ कर खड़ी हो जाती हैं और वे देवकन्या उस साधकको नाना प्रकारके भाव विलास द्वारा उद्भ्रान्त करनेकी चेष्टा करती हैं। साधक उस समय भी यदि स्थिर हो कर फिरसे तीन लाख बार जप कर सके, तो स्वर्गमर्त्यस्थ सभी नरनारी उसके वशीभूत होती हैं।

पांच प्रकारके सुन्दरीमन्त्र कहे गये हैं, इस कारण यह पञ्च सुन्दरीमन्त्र कहलाता है। इस पञ्च सुन्दरीके नाम ये हैं—माया, सृष्टि, स्थिति, संहृति और निराख्या इनमेंसे प्रत्येकका मन्त्र भी भिन्न प्रकारका है। तंत्रसारमें इन सब साधनोंका विस्तृत विवरण लिखा है।

सुन्दरेश्वर (सं० पु०) शिवजीकी एक मूर्त्ति।
सुन्दरौदन (सं० क्ली०) अच्छा भात, अच्छी तरह पका हुआ चावल।
सुन्न (सं० पु०) राजभेद। (राजतर० ७।८६५)
सुन्न (हिं० वि०) १ स्पन्दनहीन, निर्जीव, जड़वत्। (पु०) २ शून्य, सिफर।
सुन्नत (अ० स्त्री०) मुसलमानोंकी एक रस्म। इसमें लड़केकी लिङ्गेन्द्रियके अगले भागका बढ़ा हुआ चमड़ा काट लिया जाता है, इसे खतना भी कहते हैं।
सुन्नसान (हिं० वि०) सुनसान देखो।
सुन्ना (हिं० क्रि०) १ सुनना देखो। (पु०) २ बिंदी, सिफर।

सुन्नी—मुसलमान लोग प्रधानतः जिन दो भागों या सम्प्रदायोंमें विभक्त हैं, उन्हींमेंसे एकका नाम सुन्नी है। सुन्नत (सुन्ना) नामक महम्मदके सम्बन्धमें प्रचलित प्रवादका जो ग्रन्थ है, उस ग्रंथको ये लोग कुरानकी तरह प्रामाणिक समझते हैं। इनके समाजमें यह ग्रंथ विशेषरूपमें प्रचलित और समादृत है। किंतु दूसरा सम्प्रदाय शिया प्रामाणिकता बिलकुल स्वीकार नहीं करता। महम्मदके ठीक परवर्त्ती आबूबकर, उमार, ओसमान और अली नामक चार खलीफोंके उत्तराधिकारसूत्रमें उस पद पर आरूढ होनेके सम्बंधमें भी इन दोनों सम्प्रदायोंके बीच विशेष मतभेद है। सुन्नियोंके मतसे ये चारों महम्मदकी तरह उत्तराधिकारी हैं, किन्तु शिया लोगोंका विश्वास है, कि महम्मदके जमाई अलीको पहले वञ्चित करके ही

प्रथम तीन व्यक्तियोंने खलीफाका पद अधिकार किया था। इमामके नियोग या निर्वाचनके सम्बन्धमें सुन्नियोंका ऐसी धारणा है, कि सर्वसाधारणके हित पालनके लिये जब इस पदकी आवश्यकता है, तब इस पदके अधिकारीको महम्मदका वंशधर होता हो होगा, ऐसे नियमके अधीन न करके सर्वसाधारणके निर्वाचनाधीन करना ही युक्तिसङ्गत है। इन लोगोंका विश्वास है, कि सर्वशेष इमामका आज भी जन्म नहीं हुआ, यीशूके पुनरुत्थानके साथ साथ होगा। साधु महापुरुष इजमा और कियासके ऊपर इनकी विशेष श्रद्धा है। महम्मद कुरानकी जन सब विधि व्यवस्थासे तथा प्रवाद जनश्रुतिकी परिष्कार मीमांसा नहीं कर गये थे, चार खलीफा (आबूहनीफा, मौलिक, सौफो और इब्नई हम्बल)-ने उन सब विषयोंकी व्याख्या की थी। इन लोगोंके मत अनुसार सुन्नी सम्प्रदाय फिर चार उपसम्प्रदायोंमें विभक्त हुए हैं। भारतवर्ष, तुर्किस्तान, तुरुष्क और अरब देशमें सुन्नियोंका तथा पारस्यमें सिया लोगोंका विशेष प्रादुर्भाव है। यद्यपि दोनों ही सम्प्रदायमें सैयद, शेख, मुगल, पठान सभी हैं, तथापि इन दोनों दलके लोग कभी भी एक साथ बैठ कर उपासना नहीं करते। आबूबेकर, उमार, ओसमान और अली खलीफा मानते हैं, इसीसे सुन्नीका नाम चारइयारी भी है, सिया लोगोंको भी उसी प्रकार तीन यारोंकी आख्या दी जाती है। दक्षिण भारतवर्षमें सुन्नी लोग बड़ी धूमधामसे मुहर्रम मनाते हैं।

सुन्वत् (सं० त्रि०) सुञो यज्ञ संयोगे (पा ३।२।१३२) इति सुनोतेः शतृ। यज्ञकर्त्ता।

सुपक (हिं० वि०) सुपक्व, अच्छी तरह पका हुआ।

सुपक्व (सं० त्रि०) सुपच क्त। १ अच्छी तरह पका हुआ। (पु०) २ सुगन्धित आम।

सुपक्ष (सं० पु०) सुन्दर पक्षविशिष्ट, जिसके सुन्दर पङ्ख हों, सुंदर पंखोंवाला। (अथर्व० १३।२।२)

सुपक्ष्मन् (सं० त्रि०) सुंदर पक्ष्मविशिष्ट, जिसकी पलकें सुंदर हों, सुंदर पलकोंवाला।

सुपङ्ख (सं० त्रि०) १ सुंदर तीरोंसे युक्त। २ सुंदर परोंसे युक्त।

सुपच (हिं० पु०) १ चाण्डाल, डोम। २ भङ्गी।

सुपट (सं० त्रि०) १ सुंदर वस्त्रोंसे युक्त, अच्छे वस्त्रों-वाला। (पु०) २ सुंदर वस्त्र।

सुपड़ा (हिं० पु०) लंगरका अंकुड़ा, जो जमीनमें धंसता जाता है।

सुपत (हिं० त्रि०) प्रतिष्ठायुक्त, मानयुक्त।

सुपतिक (हिं० पु०) रातको पड़नेवाला डाका।

सुपत्थ (सं० पु०) सुपथ देखो।

सुपत्नी (सं० त्रि०) उत्तम पतिविशिष्ट, जिसका पति सुंदर हो।

सुपत्र (सं० पु०) १ आदित्यपत्र, हुरहुरका एक भेद। २ पल्लिवाह तृण। ३ इंगुदीवृक्ष, गोंदी, हिंगोट। ४ एक पौराणिक पक्षी। (क्ली०) ५ तेजपत्र, तेजपत्ता। (त्रि०) ६ उत्तम पत्रविशिष्ट, सुंदर पत्तोंसे युक्त। ७ जिसके पङ्ख सुंदर हों, सुन्दर पंखोंवाला।

सुपत्रक (सं० पु०) शिग्रु, सहिंजन।

सुपत्रा (सं० स्त्री०) १ रुद्रजटा। २ शतावरी, सतावर। ३ पालकका साग। ४ शमी, छोंकर, सफेद कीकर। ५ शालपर्णी, सरिवन।

सुपत्रिका (सं० स्त्री०) जतुका, पपड़ी।

सुपत्रित (सं० त्रि०) पंखों या तीरोंसे युक्त, जिसमें पङ्ख या तीर हों।

सुपत्रिन् (सं० त्रि०) पंखों या तीरोंसे भली भांतियुक्त।

सुपत्री (सं० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा, गङ्गापत्री।

सुपथ (सं० पु०) १ सन्मार्ग, उत्तम पथ, अच्छा रास्ता। २ एक वृत्तका नाम जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरुका होता है। (त्रि०) ३ उत्तम पथ-विशिष्ट, समतल, हमवार।

सुपथ्य (सं० पु०) १ आम्रवृक्ष, आमका पेड़। (क्ली०) २ उत्तम पथ्य, वह आहार या भोजन जो रोगीके लिये हितकर हो।

सुपथ्या (सं० स्त्री०) १ श्वेत चिल्लीशाक, सफेद बथुआ। २ लघु वास्तूक, लाल बथुआ।

सुपद्द (सं० त्रि०) उत्तम पादयुक्त, सुन्दर पैरोंवाला।

सुपद (सं० त्रि०) १ सुन्दर पैरोंवाला। २ तेज चलने वाला।

सुपद्म (सं० स्त्री०) १ उत्तम पदविन्यास। (त्रि०) २ उत्तम पदविन्यासयुक्त।

सुपद्म (सं० पु०) १ पद्मनाभदत्तकृत व्याकरणविशेष। यह व्याकरण अत्यन्त उत्कृष्ट है। इस व्याकरणमें वैदिक प्रकरणके सिवा और सभी विषय बड़ी सुन्दरतासे संन्यस्त हैं। पद्मनाभने यह व्याकरण प्रणयन कर खुद ही सुपद्मपञ्जिका नामकी इसकी एक टीका की है। विष्णुमिश्रकृत टीका इसकी प्रशस्त टीका है। यह पाणिनिके मतानुसार लिखी गई है। (पु० क्ली०) २ शोभन पद्म, सुन्दर कमल। (त्रि०) ३ शोभन पद्मविशिष्ट।

सुपद्मा (सं० स्त्री०) वचा, वच।

सुपनक (हिं० वि०) स्वप्न देखनेवाला, जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना (हिं० पु०) स्वप्न देखो।

सुपरकाश (हिं० पु०) ताप, गरमी।

सुपरडंट (अं० पु०) सुपरिंटेंडेंट देखो।

सुपरण (हिं० पु०) सुपर्ण देखो।

सुपरन (हिं० पु०) सुपर्ण देखो।

सुपरमतरिता (सं० स्त्री०) बौद्धोंकी एक देवीका नाम।

सुपर रायल (अं० पु०) छापेखानेमें कागज आदिकी एक नाप जो २२ इंच चौड़ी और २६ इंच लंबी होती है।

सुपरिंटेंडेंट (अं० पु०) निरीक्षण करनेवाला, निगरानी करनेवाला।

सुपरिभाष (सं० त्रि०) उत्तम वाक्यविशिष्ट।

सुपरिवृत (सं० त्रि०) सर्वतोभावसे विशिष्ट।

सुपरुष (सं० त्रि०) अतिशय परुष, बड़ा निठुर।

सुपर्ण (सं० पु०) १ गरुड़। २ मुर्गा। ३ पक्षी, चिड़िया। ४ स्वर्णपुष्प, अमलतास। ५ नागपुष्प, नागकेसर। ६ विष्णु। ७ किरण। ८ एक असुरका नाम। (भागवत ७।२।१४) ९ देवगन्धर्व। १० एक पर्वतका नाम। ११ सोम। (ऋक् १०।११४।४) १२ वैदिक १०३ मन्त्रोंके एक द्रष्टाका नाम। १३ अश्व, घोड़ा। १४ अन्तरिक्षके एक पुत्र। १५ सेनाकी एक प्रकारकी व्यूह रचना। १६ सुंदर पत्र या पत्ता। सुंदर किरणोंसे युक्त होनेके कारण इस शब्दका प्रयोग चंद्रमा और सूर्यके लिये भी होता है। (त्रि०) १७ सुंदर पत्तोंवाला। १८ सुंदर परोंवाला।

सुपर्णक (सं० पु०) १ गरुड़ या कोई दिव्य पक्षी। २ आरग्वध, स्वर्णपुष्प, अमलतास। ३ सप्तपर्ण, सतवन, सतौना। (त्रि०) ४ सुंदर पत्तोंवाला। ५ सुंदर पंखोंवाला।

सुपर्णकुमार (सं० पु०) जैनियोंके एक देवता। (हेम)

सुपर्णकेतु (सं० पु०) १ विष्णु। विष्णु भगवान्‌की ध्वजामें पतु या गरुड़ जी विराजते हैं, इसीसे विष्णुका नाम सुपर्णकेतु पड़ा। २ श्रीकृष्ण।

सुपर्णयातु (सं० पु०) एक दैत्यका नाम।

सुपर्णराज (सं० पु०) पक्षिराज, गरुड़।

सुपर्णसद्‌ (सं० त्रि०) १ पक्षी पर चढ़नेवाला। (पु०) २ विष्णु।

सुपर्णसुवन (सं० त्रि०) पक्षीका डेरा।

सुपर्णा (सं० स्त्री०) १ पद्मिनी, कमलिनी। २ गरुड़की माताका नाम। ३ एक नदीका नाम।

सुपर्णाख्य (सं० पु०) नागपुष्प, नागकेसर। (त्रिका०)

सुपर्णाण्ड (सं० पु०) शूद्रा माता और सूत पितासे उत्पन्न पुत्र।

सुपर्णिका (सं० स्त्री०) १ स्वर्ण जीवंती, पीली जीवंती। २ पलाशी। ३ शालपर्णी, सरिवन। ४ रेणुका, रेणुक बीज। ५ बाकुची, बकुची।

सुपर्णिन् (सं० पु०) गरुड़।

सुपर्णी (सं० स्त्री०) १ कमलिनी, पद्मिनी। २ गरुड़की माता, सुपर्णा। ३ पक्षियोंकी माता, मादा चिड़िया। ४ रात्रि, रात। ५ एक देवी जिसका उल्लेख कद्रूके साथ मिलता है। इसे कुछ लोग छंदोंकी माता वाग्देवी भी मानते हैं। ६ अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक। ७ रेणुका, रेणुक बीज। ८ पलाशी।

सुपर्णीतनय (सं० पु०) सुपर्णीके पुत्र, गरुड़।

सुपर्णेय (सं० पु०) सुपर्णीके पुत्र, गरुड़।

सुपर्व्वण (सं० त्रि०) सुपर्व्वन् देखो।

सुपर्वत (सं० पु०) १ साध्यगणभेद। (हरिवंश) २ उत्तम पर्वत।

सुपर्व्वन् (सं० पु०) १ देवता। २ बाण, तीर। ३ वंश, बांस। ४ पर्व। ५ धूम्र, धूआं। (त्रि०) ६ सुन्दर पर्वों या अध्यायवाला। ७ सुन्दर जोड़ोंवाला।

सुपर्व्वा (सं० स्त्री०) १ श्वेतदूर्वा, सफेद दूब। (राजनि०) (त्रि०) २ सुन्दर पर्व्व या अध्यायविशिष्ट।

सुपल्लवित (सं० त्रि०) अति सुन्दरभावसे भरा हुआ।

सुपलाश (सं० त्रि०) उत्तम पर्णविशिष्ट, सुन्दर पत्तोंवाला।

सुपवित्र (सं० क्ली० १ अतिशय पवित्र। २ चतुर्द्दशाक्षर पादक छन्दोभेद। इस छन्दके पहले १२ अक्षर गुरु और बाकी २ लघु होते हैं तथा इस छन्दके ८वें और ६ठे अक्षरमें यति होती है।

सुपह (हिं० पु०) राजा।

सुपाकिनी (सं० स्त्री०) आम्रहरिद्रा, आँबा हलदी, अमिया हलदी।

सुपाक्य (सं० क्ली०) विडलवण, विरिया या सांचर नोन, कटोला नमक।

सुपाणि (सं० त्रि०) शोभन हस्तविशिष्ट सुन्दर हाथोंवाला।

सुपात्र (सं० क्ली०) १ वह जो किसी कार्यके लिये योग्य या उपयुक्त हो, विद्या और तपस्यादि गुणयुक्त व्यक्ति। शास्त्रमें लिखा है, कि सुपात्रको दान देना चाहिए, कुपात्रको देनेसे वह दान निष्फल होता है। २ सुन्दर भाजन। (त्रि०) ३ उत्तम पात्रयुक्त, उत्तम पात्रविशिष्ट।

सुपान (सं० त्रि०) सु-पा (आतो युच्। पा ३।३।१२८) इति युच्। पानयोग्य, पीने लायक।

सुपानान्न (सं० क्ली०) उत्तम पान और अन्न।

सुपार (सं० त्रि०) सहजमें पार होने योग्य, जिसे पार करनेमें कोई कठिनता न हो। (ऋक् ३।५०।३)

सुपारक्षत्र (सं० त्रि०) अत्यन्त दुःखसे उत्तीर्ण धन और बलयुक्त। (ऋक् ७।८७।६)

सुपारग (सं० त्रि०) १ अतिशय पारग, उत्तम रूपसे पार करनेवाला। (पु०) २ शाक्य मुनि।

सुपारण (सं० त्रि०) १ सुपाठ्य। (क्ली०) २ उत्तम पारण, उत्तम भोजन।

सुपारा (सं० स्त्री०) सांख्यके अनुसार नौ तुष्टियोंमेंसे एक।

सुपारी (हिं० स्त्री०) १ नारियलकी जातिका एक पेड़ जो ४०से १०० फुट तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते नारियलके समान ही झाड़दार और एकसे दो फुट तक लंबे होते हैं। सीका ४-६ फुट लंबा होता है। इसमें छोटे फूल लगते हैं। फल १॥—२ इंचके घेरेमें गोलाकार या अंडाकार होते हैं और उन पर नारियलके समान ही छिलके होते हैं। इसके पेड़ बंगाल, आसाम, मैसूर, कनाडा, मालाबार तथा दक्षिण भारतके अन्य स्थानोंमें होते हैं। सुपारी टुकड़े करके पानके साथ खाई जाती है। यों भी लोग खाते हैं। यह औषधके काममें भी आती है। इसका संस्कृत पर्याय—घोंटा, पूग, क्रमुक, गुवाक, खपुर, सुरञ्जन, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, वल्कतरु, दृढवल्क, चिक्कण, पूगी, गोपदल, राजताल, छटाफल, क्रमु, क्रमुकी, अकोट, तन्तुसार। वैद्यकके अनुसार यह भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ पित्तनाशक, मोहकारक, रुचिकारक, दुर्गन्ध तथा मुंहकी निरसता दूर करनेवाली है। २ लिङ्गका अग्रभाग जो प्रायः सुपारीके आकारका होता।

सुपारीका फूल (हिं० पु०) मोचरस या सेमरका गोंद।

सुपारीपाक (हिं० पु०) एक पौष्टिक औषध। इसके बनानेकी विधि इस प्रकार है—पहले आठ टके भर चिकनी सुपारीका कपड़छान चूर्ण, आठ टके भर गौके घीमें मिला कर उसे तीन बार गायके दूधमें डाल कर धीमी आंचमें खोवा बनाते हैं। फिर बंग, नागकेसर, नागरमोथा, चन्दन, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, आंवला, कोयलके बीज, जायफल, धनिया, चिरौंजी, तज, पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, वंशलोचन, दोनों जीरे (प्रत्येक पांच पांच टंक) इन सबका महीन कपड़छान चूर्ण उक्त खोवेमें मिला कर ५० टंक भर मिस्रीकी चाशनीमें डाल कर एक टके भरकी गोलियां बनायी जाती हैं। एक गोली सबेरे और एक गोली शामको खाई जाती है। इसके सेवनसे शुक्रदोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, मन्दाग्नि और अर्शका निवारण हो कर शरीर पुष्ट होता है।

सुपार्श्व (सं० पु०) १ जैनियोंके २४ जिनों या तीर्थङ्करोंमेंसे सातवें तीर्थङ्कर। २ प्लक्षवृक्ष, पाकर। ३ पक्षिविशेष, सम्पातिका बेटा। (रामायण किष्किन्धाका० ५६.४०) ४ देवी भागवतके अनुसार एक पीठस्थान। यहांकी देवी

का नाम नारायणी है। (देवीभागवत ७।३०।६६) ५ इलावृत वर्षके एक पर्वतका नाम। (विष्णुपु० २।२।१७) ६ गजदण्ड, गर्दभाण्ड, पारास पीपल। ७ रुक्मरथका एक पुत्र। ८ श्रुतायुका पुत्र। ९ दृढनेमिका पुत्र। १० एक राक्षसका नाम। (त्रि०) ११ सुंदर पार्श्ववाला।

सुपार्श्व—जैन लोगोंके चौबीस जिन या तीर्थङ्कर। इक्ष्वाकु वंशमें ज्येष्ठ मासकी शुक्ला द्वादशीमें विशाखा नक्षत्र और तुलाराशिमें वाराणसी नगरमें ९ मास १९ दिन गर्भवासके बाद इनका जन्म हुआ। इनके पिताका नाम प्रतिष्ठराज और माताका नाम पृथिवी देवी था। राजा इनकी उपाधि थी। शरीर काञ्चनवर्णाभ था। ये विवाहित थे। ज्येष्ठ मासकी शुक्ला त्रयोदशीको वाराणसीधाममें इनका दीक्षा-कार्य सम्पन्न हुआ। दीक्षातपःस्वरूप दो दिन इन्हें उपवासी रहना पड़ा था। तीसरे दिन महेन्द्रालयमें इन्होंने दुग्ध द्वारा प्रथम पारण किया था। एक हजार साधु इनकी दीक्षाके साथ थे, नौ मास छद्मस्थ हो कर रहनेके बाद सुपार्श्वने वाराणसी क्षेत्रमें फाल्गुनकी कृष्णापष्ठी तिथिको ज्ञान लाभ किया। इसके बाद इन्होंने समेत शिखर पर कायोत्सर्ग आसन पर बैठ फाल्गुनकी कृष्णा सप्तमी तिथिमें मोक्षलाभ किया। इनके प्रथम गणधरका नाम विदर्भ और प्रथमा आर्याका नाम सोमा है। इनके गणधरकी कुल संख्या ९५, इनके अनुवर्त्ती साधुकी संख्या ३०००००, साध्वीकी ४३००००, चतुर्दशपूर्वोंकी २०३०, केवलकी ११०००, श्रावककी २५७००० और श्राविकाकी संख्या ४९३००० है। विशेष विवरण जैन शब्दमें देखो।

सुपार्श्वक (सं० पु०) १ जैनियोंके २४ जिनों या तीर्थङ्करोंमेंसे सातवें तीर्थङ्कर। (हेम) २ गर्दभाण्ड, पारास पीपल (भावप्र०)

सुपाव (सं० त्रि०) १ सुपवित्र। २ अच्छी तरह शोधा हुआ।

सुपाश (सं० पु०) उत्तम पाशविशिष्ट।

सुपाशा (सं० स्त्री०) उत्तम पाशविशिष्टा।

सुपास (हिं० पु०) सुख, आराम, सुभीता।

सुपासी (हिं० वि०) आनन्ददायक, सुख देनेवाला।

सुपिङ्गला (सं० स्त्री०) १ जीवन्ती, डोडी शाक। २ ज्योतिष्मती, मालकंगनी।

सुपित्र्य (सं० त्रि०) योग्य पितासे उत्पन्न।

सुपिप्पल (सं० त्रि०) शोभन फलविशिष्ट, सुन्दर फलयुक्त। (शुक्लयजु० ६।२)

सुपिश (सं० त्रि०) शोभन अवयवयुक्त या सुंदर अलंकारविशिष्ट। (ऋक् १।६४।८)

सुपिष्ट (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे पिष्ट, अच्छी तरह पीसा हुआ।

सुपिस (सं० त्रि०) १ सुगति। २ सुंदर पेषणयुक्त, अच्छी तरह पीसा हुआ।

सुपीत (सं० क्ली०) सु-पा-क्त। १ गर्जरमूलक, गाजर। (पु०) २ पीतझिण्टी क्षुप, पीली कटसरैया। (राजनि०) ३ पीतसार या चन्दन। ४ ज्योतिषके पाँचवें मुहूर्त्तका नाम। (त्रि०) ५ उत्तम रूपसे पीया हुआ। ६ बिलकुल पीला, गहरा पीला।

सुपीन (सं० त्रि०) बहुत मोटा या बड़ा।

सुपीवन् (सं० त्रि०) सु-पा (आतो मनिन् क्वनिप् वनिपश्च। पा ३।२।७४) इति क्वनिप्। शोभन पानकर्त्ता, अच्छी तरह पीनेवाला।

सुपीवस (सं० त्रि०) अति बलविशिष्ट, बड़ा ताकतवर।

सुपुंसी (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति सुपुरुष हो।

सुपु (सं० त्रि०) अतिशय पवित्रकारक, खूब पवित्र करनेवाला। (शुक्लयजु० १।३)

सुपुट (सं० पु०) १ कोलकन्द, चमार आलू। २ विष्णुकन्द।

सुपुटा (सं० स्त्री०) वनमल्लिका, सेवती।

सुपुत्र (सं० पु०) १ उत्तम पुत्र, वह पुत्र जो विद्याविनयादिसे युक्त हो। २ जीवक वृक्ष। (त्रि०) ३ उत्तम पुत्रविशिष्ट, जिसका पुत्र सुन्दर और उत्तम हो।

सुपुत्रिका (सं० स्त्री०) १ जतुका लता, पपड़ी। (राजनि०) २ शोभन कन्याविशिष्ट, सुन्दर या उत्तम पुत्रीवाली।

सुपुरुष (सं० पु०) १ सुन्दर पुरुष। २ सत्पुरुष, सज्जन, भला मानस।

सुपुर्द (हिं० पु०) सपुर्द देखो।

सुपुष्करा (सं० स्त्री०) स्थलपद्मिनी, स्थल कमलिनी।

सुपुष्कल (सं० त्रि०) प्रचुर, प्रभूत। (भागवत ११।६।३१)

सुपुष्ट (सं० त्रि०) अतिशय पुष्ट, जो खूब पुष्ट हो।

सुपुष्टि (सं० स्त्री०) अति पुष्टि, अच्छी तरह पोषण।

सुपुष्प (सं० क्ली०) शोभनं पुष्पमस्य। १ लवङ्ग, लौंग। २ आढुल, तरवट, तरवड। ३ प्रपौण्डरीक, पुंडेरिया, पुंडेरी। ४ तूत, शहतूत। ५ स्त्रियोंका रजः। (पु०) ६ ब्रह्मदारु। ७ शिरीष सिरिस। ८ हरिद्रु, हलदुआ। ९ मुचुकुन्दवृक्ष। १० शुक्लार्कवृक्ष, सफेद आक। ११ राजतरुणी, बड़ी सेवती। १२ परिषाश्वत्थ, परास पीपल। १३ पारिभद्र, फरहद। १४ देवदारु, देवदार। (त्रि०) १५ सुन्दर पुष्पों या फूलोंवाला, जिसमें सुन्दर फूल हों।

सुपुष्पक (सं० पु०) १ शिरीष वृक्ष, सिरीस। २ मुचकुन्द। ३ श्वेतार्क, सफेद आक। ४ गर्दभाण्ड, परास पीपल। ५ राजतरुणी, बड़ी सेवती। ६ हरिद्रु, हलदुआ।

सुपुष्पा (सं० स्त्री०) सुपुष्प-टाप्। १ कोशातकी, तरोई, तुरई। २ द्रोणपुष्पी, गूमा। ३ शतपुष्पा, सौंफ। ४ शतावरी, वनसेवती। (वैद्यकनि०)

सुपुष्पिका (सं० स्त्री०) १ पाटला, पाढर। २ वृद्धदारु, विधारा। ३ महिषवल्ली, पाताल गारुडी। ४ वनशण, वनसनई। ५ शतपुष्पी, सौंफ। ६ मिश्रेया, सोआ।

सुपुष्पी (सं० स्त्री०) १ श्वेतापराजिता, सफेद कोयल लता। २ जीर्णफञ्जी, विधारा। ३ शतपुष्पी, सौंफ। ४ मिश्रेया, सोआ। ५ द्रोणपुष्पी, गूमा। ६ कदली, केला।

सुपुष्प (सं० पु०) बुद्ध। (ललितवि०)

सुपूत (सं० क्ली०) सु-पु भावे-क्त। अत्यन्त पूत या पवित्र।

सुपूत (हिं० वि०) सुपुत्र, सपूत, अच्छा पुत्र।

सुपूती (हिं० स्त्री०) १ सुपूत होनेका भाव, सपूत-पन। २ अच्छे पुत्रवाली स्त्री।

सुपूर (सं० पु०) १ वीजपूर, बिजौरा नीबू। (त्रि०) २ सहजमें पूर्ण होने योग्य।

सुपूरक (सं० पु०) १ चूर्णकविशेष, एक प्रकारका चूर्ण। २ मातुलुङ्ग, बिजौरा नीबू। ३ वकपुष्पवृक्ष, अगस्त।

सुपूर्ण (सं० त्रि०) सु पूर-क्त। अतिशय पूर्ण, एकदम पूरा। (शुक्लयजु० ३।४९)

सुपृक्ष (सं० त्रि०) सुन्दर अन्नयुक्त। (ऋक् ७।३७।७)

सुपेली (हिं० स्त्री०) छोटा सूप।

सुपेश (सं० पु०) शोभन रूप, सुन्दर।

सुपेशस् (सं० त्रि०) सुपेश (मिथुनेऽसिः पूर्ववच्च सर्वं। उण् ४।२२१) इति असि। शोभन रूपयुक्त, सुन्दर। खूबसूरत। (ऋक् १।४८।१३)

सुपैदा (हिं० पु०) सफेदा देखो।

सुपोष (सं० त्रि०) बहुमूल्याई हिरण्यादियुक्त।

सुप् (सं० क्ली०) लिङ्गोत्तर प्रयुज्यमान प्रत्ययविशेष। पाणिन्यादि व्याकरणके मतसे इक्कीस विभक्तिका नाम सुप् है। शब्दके उत्तर त्रिलिङ्ग अर्थात् स्त्री, पुं और क्लीव लिङ्गमें सुप् प्रत्यय होता है। यह विभक्ति प्रथमाके एकवचनमें सु तथा सप्तमीके बहुवचनमें सुप् हो कर अन्तिम अक्षर प् ले कर सुप् यह नाम हुआ है। सुप् प्रत्यय होनेसे उसके उत्तर विहित जो सब कार्य होता है, वह व्याकरणके सुबन्त प्रकरणमें कहा गया है। यह विभक्ति प्रथमासे सप्तमी पर्यन्त निर्दिष्ट हुई है। फिर यह एकवचन, द्विवचन और बहुवचनभेदसे तीन प्रकार की है। यह विभक्ति एकवचन होनेसे एकको बोधक, द्विवचन होनेसे दो-को बोधक और बहुवचन होनेसे बहुको बोधक होती है। एक, दो या बहु, ये सुप् विभक्ति द्वारा ही जाने जाते हैं।

सुप्त (सं० त्रि०) स्वप-क्त। १ निद्रित, सोया हुआ। पर्याय—निद्राण, शयित। क्षुधित, तृषित, कामी, विद्यार्थी कृषिकारक, भाण्डारी और प्रवासी इन्हें सोते हुएमें उठानेसे दोष नहीं होता। किन्तु मक्षिका, भ्रमरी, सर्प, राजा, बालक, स्वकार्यसे विमुख और मूर्ख इन्हें कभी भी सोये हुएमें उठाना नहीं चाहिए।

"एकः स्वादु न भुञ्जीत नैकः सुप्तेषु जागृयात्।"

(चाणक्य श्लोक)

२ सोनेके लिये लेटा हुआ। ३ ठिठुरा हुआ। ४ बन्द, मुर्दा हुआ। ५ अकर्मण्य, बेकार। ६ सुस्त। (क्ली०) ७ निद्रा, नींद।

सुप्तक (सं० क्ली०) सुप्त-स्वार्थे कन्। निद्रा, नींद।

सुप्तघातक (सं० त्रि०) १ हिंस्र, खूंखार। २ निद्रित अवस्थामें हनन या वध करनेवाला।

सुप्तघ्न (सं० त्रि०) सुप्तं हन्ति हन्-टक्। १ सुप्तघातक देखो। (पु०) २ एक राक्षसका नाम।

सुप्तच्युत (सं० त्रि०) सुप्तं च्युतः। जिसकी नींद टूट गई हो।

सुप्तजन (सं० पु०) अर्द्धरात्रि। इस समय प्रायः लोग सोये रहते हैं।

सुप्तज्ञान (सं० क्ली०) स्वप्न। निद्रितावस्थामें जो स्वप्न दिखाई देता है, वह जाग्रत् अवस्थाके समान ही ज्ञान पड़ता है, इसीसे उसे सुप्तज्ञान कहते हैं।

सुप्तता (सं० स्त्री०) १ सुप्त होनेका भाव। २ निद्रा, नींद।

सुप्तप्रबुद्ध (सं० त्रि०) निद्रोत्थित, जो सो कर उठा हो।

सुप्तप्रलपित (सं० क्ली०) निद्रितावस्थामें होनेवाला प्रलाप, सोये सोये बकना।

सुप्तमालिन् (सं० पु०) पुराणानुसार तेईसवें कल्पका नाम।

सुप्तवाक्य (सं० क्ली०) निद्रित अवस्थामें कहे हुये शब्द या वाक्य।

सुप्तविग्रह (सं० त्रि०) निद्रित, सोया हुआ।

सुप्तविज्ञान (सं० क्ली०) सुप्ते निद्रावस्थायां यत् विज्ञानं। स्वप्न, सपना, ख्वाब।

सुप्तस्थ (सं० त्रि०) सुप्त स्था-क। निद्रित, सोया हुआ।

सुप्ताङ्ग (सं० पु०) वह अंग जिसमें चेष्टा न हो, निश्चेष्ट अंग।

सुप्ताङ्गता (सं० स्त्री०) सुप्ताङ्गका भाव, अंगोंकी निश्चेष्टता।

सुप्ति (सं० स्त्री०) स्वप क्तिन्। १ स्पर्शता। २ निद्रा, नींद। ३ विश्वास, उंघाई। ४ अंगकी निश्चेष्टता, सुप्ताङ्गता। ५ प्रत्यय, विश्वास, एतबार।

सुप्तोत्थित (सं० त्रि०) निद्रोत्थित, निद्रासे जागरित, जो अभी सो कर उठा हो।

सुप्रकाश (सं० त्रि०) सुप्रकाशो यस्य। उत्तम प्रकाश-युक्त, उत्तम दीप्तियुक्त।

सुप्रकेत (सं० त्रि०) ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।

सुप्रगमन (सं० त्रि०) सुप्र-गम-ल्युट्। अच्छी तरह गया हुआ।

सुप्रगुप्त (सं० त्रि०) सम्यक् गुप्त, खूब छिपा हुआ।

सुप्रचेतस् (सं० त्रि०) बहुत बुद्धिमान्, बहुत समझदार।

सुप्रच्छन्न (सं० त्रि०) सु प्र-छद क्त। अतिशय गुप्त।

सुप्रज (सं० त्रि०) सुप्रजस् देखो।

सुप्रजस् (सं० त्रि०) सु-प्रजा असि (पा ५।४।१२२) उत्तम सन्ततिविशिष्ट, उत्तम और बहुत संतानसे युक्त, उत्तम और अधिक संतानवाला।

सुप्रजा (सं० स्त्री०) १ उत्तम संतान, अच्छी औलाद। २ उत्तम प्रजा, अच्छी रिआया।

सुप्रजात (सं० त्रि०) १ सुजाता, सुजन्मा। २ बहु सन्तानविशिष्ट, बहुत-सी संतानोंवाला, जिसके बहुत-से बाल बच्चे हों।

सुप्रजावनि (सं० त्रि०) पुत्रके समान प्रजाको माननेवाला। (शुक्लयजु० ५।१२)

सुप्रजावत् (सं० त्रि०) सुप्रजा अस्त्यर्थे मतुप् मस्य व। पुत्रपौत्रादि लक्षण प्रजाविशिष्ट। (ऋक् १।१११।२)

सुप्रज्ञ (सं० त्रि०) उत्तम प्रज्ञाविशिष्ट, बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रज्ञा (सं० स्त्री०) सु शोभना प्रज्ञा। उत्तम प्रज्ञा, अच्छा ज्ञान।

सुप्रणीति (सं० स्त्री०) १ सुन्दर प्रणयनयुक्त। (ऋक् ५।४३।१८) (त्रि०) २ सुखसे प्रणयनके योग्य।

सुप्रतर (सं० त्रि०) सु प्र तॄ खल्। सहजमें पार होने योग्य।

सुप्रतरा (सं० स्त्री०) सहजमें पार होने योग्य नदी।

सुप्रतर्क (सं० स्त्री०) न्याययुक्त वाक्य, युक्तियुक्त वाक्य।

सुप्रतार (सं० त्रि०) सुप्रतर देखो।

सुप्रतिगृहीत (सं० त्रि०) सु प्रति-ग्रह क्त। उत्तम रूपसे परिगृहीत, जो अच्छी तरह लिया गया हो।

सुप्रतिचक्ष (सं० त्रि०) सुप्रतिदर्शन।

सुप्रतिच्छिन्न (सं० त्रि०) सु-प्रति छिद्-क्त। सुविभक्त।

सुप्रतिष्ठ (सं० त्रि०) सु शोभना प्रतिष्ठा यस्य। दृढ़ प्रतिज्ञ, जो अपनी प्रतिज्ञासे न हटे।

सुप्रतिज्ञा (सं० स्त्री०) दृढ़ प्रतिज्ञा।

सुप्रतिभा (सं० स्त्री०) १ मदिरा, शराब। २ उत्तम प्रतिभा। (त्रि०) ३ प्रतिभाविशिष्ट।

सुप्रतिम (सं० पु०) एक राजाका नाम।

सुप्रतिश्रय (सं० त्रि०) सुन्दर आश्रयविशिष्ट, सुन्दर गृहयुक्त।

सुप्रतिष्ठ (सं० त्रि०) सु शोभना प्रतिष्ठा यस्य। १ उत्तम प्रतिष्ठावाला, जिसकी लोग खूब प्रतिष्ठा या आदर सम्मान करते हों। २ सुविख्यात, बहुत प्रसिद्ध, मशहूर। ३ सुन्दर टांगोंवाला। (पु०) ४ सेनाकी एक प्रकारकी व्यूहरचना। ५ एक प्रकारकी समाधि।

सुप्रतिष्ठा (सं० स्त्री०) १ प्रसिद्धि, सुनाम, शोहरत। २ उत्तम स्थिति। ३ अभिषेक। ४ स्कन्दकी एक मातृकाका नाम। ५ मंदिर या प्रतिमा आदिकी स्थापना। ६ एक वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें पांच वर्ण होते हैं। इसमेंसे तीसरा और पांचवां गुरु तथा पहला, दूसरा और चौथा वर्ण लघु होता है। (छन्दोम०)

सुप्रतिष्ठान (सं० त्रि०) १ उत्तम स्थितिविशिष्ट। (शुक्लयजु० ५।८५) (क्ली०) २ उत्तम प्रतिष्ठा, अच्छी इज्जत।

सुप्रतिष्ठित (सं० त्रि०) सु प्रति स्था क्त। १ उत्तमरूपसे प्रतिष्ठित। २ सुन्दर टांगोंवाला। (पु०) ३ उदुम्बर, गूलर। ४ एक प्रकारकी समाधि। ५ देवपुत्रविशेष।

सुप्रतिष्ठितचरित्र (सं० पु०) एक बोधिसत्वका नाम।

सुप्रतिष्ठित (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुप्रतीक (सं० पु०) १ ईशान कोणका दिग्गज। (अमर) २ शिव। ३ कामदेव। (त्रि०) ४ साधु, सज्जन। (भागवत १०।८।३१ स्वामी) ५ सुरूप, सुन्दर, खूबसूरत।

सुप्रतीकिनी (सं० स्त्री०) सुप्रतीक नामक दिग्गजकी स्त्री।

सुप्रतीत (सं० त्रि०) सु प्रति इन-क्त। अतिशय प्रत्ययुक्त।

सुप्रतुर् (सं० त्रि०) सुष्ठु धनदाता। (ऋक् ८।२४।६)

सुप्रतूर्त्ति (सं० त्रि०) अतिशय हिंसाविशिष्ट।

सुप्रत्यवसित (सं० त्रि०) सु प्रति-अव-सो-क्त। जो अच्छी तरह खाया गया हो।

सुप्रदि (सं० त्रि०) बड़ा दानी, बहुत उदार, दाता।

सुप्रदर्श (सं० त्रि०) प्रियदर्शन, जो देखनेमें सुन्दर हो, खूबसूरत।

सुप्रदोहा (सं० स्त्री०) सहजमें दुही जानेवाली गाय, जिस गायको दूहनेमें कोई कठिनाई न हो।

सुप्रधृष्य (सं० त्रि०) सु प्र धृष-क्यप्। जो सहजमें अभिभूत या पराजित किया जा सके, आसानीसे जीता जानेवाला।

सुप्रपाण (सं० त्रि०) सहजमें पीनेके योग्य।

सुप्रबुद्ध (सं० त्रि०) सु प्र बुध-क्त। १ अतिशय प्रबुद्ध, अत्यन्त बोधयुक्त। जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। (पु०) २ शाक्य बुद्ध। (ललितवि०)

सुप्रभ (सं० त्रि०) सुष्ठु प्रभा यस्य। १ सुन्दर प्रभा या प्रकाशयुक्त। २ सुरूप, सुन्दर, खूबसूरत (पु०) ३ जैनियोंके नौ बलों (जिनों)मेंसे एक। ४ पुराणानुसार शाल्मली द्वीपके अन्तर्गत एक वर्ष। (लिङ्गपु० ४६।४१) ५ एक जैन तीर्थङ्करका नाम। ६ एक दानव का नाम। (क्ली०) ७ पद्मकाष्ठ। (वैद्यकनि०)

सुप्रभदेव—शिशुपालवधके रचयिता महाकवि माघके पितामह। ये भी एक अच्छे पण्डित थे।

सुप्रभपुर (सं० क्ली०) एक नगरका नाम।

सुप्रभा (सं० स्त्री०) १ वकुची, सोमराजी। (राजनि०) २ अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक। ३ स्कन्दकी एक मातृका नाम। ४ सात सरस्वतियोंमेंसे एक। ५ सुन्दर प्रकाश। (पु०) ६ एक वर्णका नाम जिसके देवता सुप्रभ माने जाते हैं।

सुप्रभात (सं० क्ली०) सुष्ठु प्रभात। १ शुभसूचक प्रातःकाल। २ मङ्गलसूचक प्रभात। ३ प्रातःकाल पढ़ा जानेवाला स्तोत्र। प्रातःकाल निद्रासे उठ कर जिससे उस दिन शुभ हो, उसके लिये ब्रह्मादि देवगण तथा कवि प्रभृति ग्रहोंके निकट जो प्रार्थना की जाती है, उसे सुप्रभात कहते हैं।

साधारणतः हम लोगोंके देशकी स्त्रियां सवेरे शय्यात्याग करते समय "प्रभाते यः स्मरेन्नित्यं दुर्गा दुर्गाक्षरद्वयम्। आपदस्तस्य नश्यन्ति तमः सूर्योदये यथा।" इस वाक्यका अनुसरण कर पहले तीन बार दुर्गाका नामोच्चारण करती हैं, पीछे अहल्यादि पञ्चकन्या और नलादि पुण्य श्लोकका नाम लेती तथा नाना देवताओंका स्मरण और नमस्कार करती हैं। अङ्गरेज लोग जब आपसमें मिलते हैं, तब एक दूसरेका अभिनन्दन करनेके लिये 'Good morning" अर्थात् सुप्रभात कहते हैं।

सुप्रभाता (सं० स्त्री०) १ पुराणानुसार एक नदीका नाम। (भागवत ५।२०।४) २ शोभन प्रभातयुक्ता रात्रि, वह रात जिसकी प्रभात सुन्दर हो।

सुप्रभाव (सं० पु०) सर्वशक्तिमान, जिसमें सब प्रकार की शक्तियां हों।

सुप्रयस् (सं० त्रि०) शोभनान्न, सुन्दर अन्नविशिष्ट।

सुप्रयावन (सं० त्रि०) सुन्दर रूपसे मिश्रणकारी, अच्छी तरह मिलानेवाला। (ऋक् ५।४४।१३)

सुप्रयुक्त (सं० त्रि०) सु-प्र-युज क्त। उत्तम प्रयोगयुक्त।

सुप्रयुक्तशर (सं० पु०) सुप्रयुक्तः शरो येन। वह जो वाण चलानेमें सिद्धहस्त हो, अच्छा धनुर्धर।

सुप्रयोगविशिख (सं० पु०) सुप्रयुक्तशर देखो।

सुप्रयोगा (सं० स्त्री०) विन्ध्यपर्वतके पादसे निकल कर दाक्षिणात्यमें बहनेवाली एक नदी। (मत्स्यपु० ११४।२६

सुप्रलम्भ (सं० पु०) सु-प्र-लभ-खल् (उपसर्गात् खल् घञोः। पा ७।१।६७) इति नुम्। सुप्रलभ्य, जो अनायास प्राप्त किया जा सके, सहजमें मिल सकनेवाला।

सुप्रलाप (सं० पु०) सु-प्र-लप-घञ्। सुवचन, सुन्दर भाषण। (अमर)

सुप्रवाचन (सं० त्रि०) अच्छा बोलनेवाला।

सुप्रवृद्ध (सं० त्रि०) सु-प्र-वृध-क्त। अतिशय वृद्ध, बहुत बूढ़ा।

सुप्रसन्न (सं० पु०) १ कुवेर। (त्रि०) २ अत्यन्त प्रफुल्ल। ३ अत्यन्त निर्मल। ४ हर्षित, बहुत प्रसन्न।

सुप्रसन्नक (सं० पु०) कृष्णार्जक, वनबर्वरिका, जंगली बबैरी।

सुप्रसरा (सं० स्त्री०) प्रसारिणीलता, गन्धप्रसारिणी पसरन। (राजनि०)

सुप्रसाद (सं० पु०) १ शिव। २ विष्णु। ३ एक असुरका नाम। ४ स्कन्दका एक पार्षद। सु-प्र-सद घञ्। ५ सुप्रसन्नता, अत्यन्त प्रसन्नता। (त्रि०) ६ अत्यन्त प्रसन्नता या कृपालु।

सुप्रसादा (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम। (भारत)

सुप्रसारा (सं० स्त्री) प्रसारिणी लता।

सुप्रसिद्ध (सं० त्रि०) सुविख्यात, बहुत प्रसिद्ध, बहुत मशहूर।

सुप्रसू (सं० त्रि०) १ सुजात, शोभनजन्मा। २ सहज। ३ उत्तम प्रसूति।

सुप्राकार (सं० पु०) सुन्दर प्राचीर।

सुप्राकृत (सं० त्रि०) अति साधारण, बहुत मामूली।

सुप्राच् (सं० त्रि०) प्रशस्य आगमनयुक्त।

सुप्रात (सं० त्रि०) सुन्दर प्रातविशिष्ट।

सुप्रातर् (सं० अव्य०) शोभन प्रातःकाल, सुन्दर प्रातःकाल।

सुप्राप (सं० त्रि०) सुखेन प्राप्यते सु-प्र-आप् खल्। सुप्रापण, सहजमें पाने योग्य।

सुप्राप्य (सं० त्रि०) सु-प्र-आप यत्। सुगमतासे जाने योग्य।

सुप्रायण (सं० त्रि०) सु-प्र-अय-ल्युट्। सुगमतासे जाने योग्य। (ऋक् २।३।५)

सुप्रावर्ग (सं० त्रि०) शोभन वर्जनविशिष्ट, जो अच्छी तरह छोड़ा गया हो।

सुप्रावी (सं० त्रि०) अच्छी तरह रक्षा करनेवाला।

सुप्राव्य (सं० त्रि०) सुप्रावी देखो।

सुप्रिय (सं० त्रि०) १ अतिशय प्रिय, बहुत प्यारा। (पु०) २ बौद्धोंके अनुसार एक गन्धर्वका नाम।

सुप्रिया (सं० स्त्री०) १ एक अप्सराका नाम। (भारत १।१२३।६०) २ सोलह मात्राओंका एक वृत्त। इसमें अन्तिम वर्णके अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं। यह एक प्रकारकी चौपाई है।

सुप्रीत (सं० त्रि०) अत्यन्तसु-तुष्ट। (शुक्ल यजु० ७।१५)

सुप्रीतिकर (सं० त्रि०) १ किन्नरराजभेद। (त्रि०) २ अतिशय प्रीतिकारक।

सुप्रीमकोर्ट (अं० पु०) प्रधान या उच्च न्यायालय, सबसे बड़ी कचहरी। ईष्ट इंडिया कम्पनीके राजत्व कालमें कलकत्तेमें सुप्रीमकोर्ट था जिसमें तीन जज बैठते थे। पीछे महारानी विक्टोरियाके राजत्व कालमें सुप्रीमकोर्ट तोड़ दिया गया और उसके स्थान पर हाईकोर्टकी स्थापना की गई।

सुप्रैतु (सं० त्रि०) अच्छी तरह जानेवाला।

सुप्रौढ़ (सं० त्रि०) अति वृद्ध, बहुत बूढ़ा।

सुफरा (हि० पु०) टेबुल पर बिछानेका कपड़ा।

सुफल (हिं० पु०) १ कर्णिकार, छोटा अमलतास। २ दाडिम, अनार। ३ बदर, बेर। ४ मुद्ग, मूंग। ५ कपित्थ कैथ। ६ बादाम। ७ मातुलुङ्ग, बिजौरा नीबू। (त्रि०) ८ सुन्दर फलवाला। ९ कृतकार्य, कृतार्थ, कामयाब। (स्त्री०) १० सुन्दर फल। ११ अच्छा परिणाम।

सुफलक (सं० पु०) एक यादव जो अक्रूरका पिता था।

सुफला (सं० स्त्री०) १ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। २ कुष्माण्डी, कुम्हड़ा, पेठा। ३ काश्मीरी, गम्भारी। ४ कदली, केला। ५ कपिलद्राक्षा, मुनक्का। (राजनि०) (त्रि०) ६ सुन्दर या बहुत फल देनेवाली, अधिक फलों-वाली। ७ सुन्दर फलवाली।

सुफाल (सं० पु०) सुन्दर फाल, सुन्दर फलक।

सुफि—सूफी देखो।

सुफेद (हिं० पु०) सफेद देखो।

सुफेन (सं० क्ली०) समुद्रफेन।

सुबड़ी (हिं० पु०) हलकी चाँदी, ताँबा मिली हुई चांदी।

सुबणभट्ट—मोहरम्मुद्गारके आचार्य पद्मनाभतीर्थका पूर्वनाम।

सुबन्त (सं० क्ली०) पद विशेष। व्याकरणकी विधिके अनु-सार जिन सब शब्दोंके अन्तमें सुप् आदि विभक्ति होती हैं, उन्हें सुबन्त कहते हैं।

सुबन्ध (सं० पु०) १ तिल। (त्रि०) २ अच्छी तरह बंधा हुआ।

सुबन्धु (सं० पु०) १ उत्तम बन्धु, अच्छा मित्र। २ एक प्राचीन ऋषिका नाम। (त्रि०) ३ उत्तम बंधुओं-वाला, जिसके अच्छे बंधु या मित्र हों।

सुबन्धु—वासवदत्ताके प्रणेता एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि। मङ्खने इनका उल्लेख किया है।

सुबन्धु महाकवि—वन्धर्कामुदी नामक छन्दःशास्त्रके रचयिता।

सुबभ्रु (सं० त्रि०) १ धूसर। २ चिकनी भौंहवाला।

सुबरनी (हिं० स्त्री०) छड़ी।

सुबर्हिस् (सं० त्रि०) सुन्दर यज्ञयुक्त।

सुबल (सं० पु०) १ गान्धारका एक राजा जो शकुनि-का पिता और धृतराष्ट्रका ससुर था। २ पुराणानुसार भौत्य मनुके पुत्रका नाम। (मार्क० पु०) ३ सुमतिके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु०) ४ वैनतेयका पुत्र एक पक्षी। (भारत) ५ शिवजीका एक नाम। ६ श्रीकृष्णका एक सखा। (त्रि०) ७ अत्यन्त बलवान्, बहुत मजबूत।

सुबलगढ़—युक्तप्रदेशके बिजनौर जिलान्तर्गत एक बड़ा ग्राम। यह अक्षा० २९° ४४' उ० तथा देशा० ७८° १५' पू०के मध्य हरिद्वार जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यहां एक ध्वस्त दुर्गका निदर्शन पाया जाता है। यह नगर जो एक समय सुसमृद्ध था, वह ध्वस्त स्तूपोंसे अनुमान किया जाता है। आज भी नगरवेष्टित प्राचीरांश लोगों-के नजर आता है।

सुबलचन्द्र आचार्य—राधासौन्दर्यमञ्जरीके रचयिता।

सुबलपुर—कोशल राज्यका एक प्राचीन नगर।

सुबह (अ० स्त्री०) प्रातःकाल, सवेरा।

सुबहान (हिं० पु०) सुभान देखो।

सुबहान अल्ला (अ० अव्य०) अरबीका एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य प्रकट करते हुए किया जाता है, वाह वाह! क्यों न हो।

सुबहुशस् (सं० अव्य०) सुबहु-शस्। अनेक बार, बहु बार। (मार्क० पु०)

सुबहुश्रुत (सं० त्रि०) सर्वशास्त्रज्ञ, ज्ञानी।

सुबाल (सं० पु०) १ एक देवता। २ एक उपनिषद्का नाम। ३ उत्तम बालक। (त्रि०) ४ निर्बोध, अबोध, अज्ञान। (क्ली०) ५ उपनिषद्भेद।

सुबालक (सं० पु०) १ उत्तम बालक। २ एक कामशास्त्रके रचयिता।

सुबास (सं० स्त्री०) १ सुगन्ध, अच्छी महक। (पु०) २ एक प्रकारका धान जो अगहन महीनेमें होता है और जिसका चावल वर्षों तक रह सकता है। ३ सुन्दर निवासस्थान।

सुबासना (सं० स्त्री०) सुगन्ध, अच्छी महक।

सुबासना (हिं० क्रि०) सुवासित करना, सुगन्धित करना, महकाना।

सुबासिक (सं० त्रि०) सुवासित, सुगन्धित, खुशबूदार।

सुबासित (सं० त्रि०) सुवासित देखो।

सुबाहु (सं० त्रि०) १ शोभन बाहुयुक्त, दृढ़ या सुन्दर बाहोंवाला, जिसकी बाहें अच्छी और मजबूत हों। (ऋक् ३।३२।७) (पु०) २ शोभन बाहु, सुन्दर बाहु। ३ एक नागासुर। ४ धृतराष्ट्रका पुत्र और चेदिका राजा। (भारत १५०) ५ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। (भाग० १०।६१।१४) ६ एक बोधिसत्त्वका नाम। ७ स्कन्दका एक पार्षद। ८ एक राक्षसका नाम। ९ एक दानवका नाम। १० एक यक्षका नाम। ११ शत्रुघ्नका एक पुत्र। १२ प्रतिबाहुका एक पुत्र। १३ एक वानरका नाम। १४ कुवलयाश्वका एक पुत्र। (स्त्री०) १५ एक अप्सराका नाम।

सुबाहुक (सं० पु०) एक यक्षका नाम।

सुबाहुशत्रु (सं० पु०) श्रीरामचन्द्रका एक नाम।

सुबीता (हिं० पु०) सुभीता देखो।

सुबीज (सं० क्ली०) सु शोभनं बीजं। १ उत्तम बीज (पु०) २ महादेव (भारत १३।१७। ६) ३ खसखस, पोस्त दाना। (त्रि०) ४ उत्तम बीजयुक्त, उत्तम बीजवाला, जिसके बीज उत्तम हों।

सुबीता (हिं० पु०) सुभीता देखो।

सुबुक (फा० वि०) १ हलका, कम बोझका, भारीका उलटा। २ सुंदर, खूबसूरत। (पु०) ३ घोड़ेकी एक जाति। इस जातिके घोड़े मेहनती और हिम्मती होते हैं। इनका कद मझोला होता है। दौड़नेमें ये बड़े तेज होते हैं। इन्हें दौड़ाक भी कहते हैं।

सुबुकरंदा (हिं० पु०) लोहेका एक औजार जो बढ़इयोंके पेचकशकी तरहका होता है। इसकी धार तेज होती है। इससे बरतनोंको रेत आदि छीलते हैं।

सुबुद्धि (सं० त्रि०) सु शोभना बुद्धिर्यस्य। १ बुद्धिमान, उत्तम बुद्धिवाला। (स्त्री०) २ उत्तम बुद्धि, अच्छी अक्ल। (पु०) ३ मारके एक पुत्रका नाम।

सुबुद्धिमिश्र—हरत्परीक्षानामक अलङ्कारशास्त्रके प्रणेता।

सुबुध (सं० त्रि०) १ सतर्क, सावधान। २ बुद्धिमान, अक्लमंद।

सुबू (सं० पु०) सुबह देखो।

सुबूत (हिं० पु०) सबूत देखो।

सुबूत (अ० पु०) वह जिससे कोई बात साबित हो, प्रमाण।

सुबोध (सं० पु०) सु-बुध घञ्। १ उत्तम बोध, अच्छी बुद्धि, अच्छी समझ। (भागवत ११।२०।३६) (त्रि०) सु-बोध-यत्य। २ उत्तम ज्ञानयुक्त, अच्छी बुद्धिवाला। ३ जो कोई बात सहजमें समझ सके, जिसे अनायास समझाया जा सके।

सुबोधन (सं० क्ली०) सु शोभनं बोधनं। १ अच्छी तरह जानना। (त्रि०) २ अच्छी तरह जाना हुआ।

सुबोधिन् (सं० त्रि०) सु-बुध णिनि। उत्तम बोधयुक्त, अच्छा ज्ञानवान्।

सुबोधिनी (सं० स्त्री०) अच्छा ज्ञानवाली।

सुब्रह्मणीय (सं० त्रि०) सु ब्रह्मण्ययुक्त।

सुब्रह्मण्य (सं० त्रि०) १ ब्रह्मण्ययुक्त, जिसमें ब्रह्मण्य हो। (पु०) २ विष्णु। ३ शिव। ४ कार्त्तिकेय। ५ उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियोंमेंसे एक। ६ दक्षिण भारतका एक प्राचीन प्रान्त।

सुब्रह्मण्य—ऐक्यवाद, भगवद्भक्तिसारसंग्रह, श्रुतिसंक्षिप्तवर्णन, श्रुतिस्तुतिव्याख्याटीका और सर्वोपनिषत्सार नामक ग्रन्थके प्रणेता।

सुब्रह्मण्य आचार्य—सत्यभामाभ्युदयटीकाकर्त्ता।

सुब्रह्मण्यक्षेत्र—दाक्षिणात्यके दक्षिण कनाड़ा विभागान्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ। सुब्रह्मण्यतीर्थ देखो।

सुब्रह्मण्यतीर्थ—दक्षिण भारतके दक्षिण कनाड़ा जिलेके कोडग विभागस्थ घाट शैलपादमूलस्थ एक देवस्थान। यह त्रिचीनपल्लीसे करीब १२ योजन उत्तरमें अवस्थित है। यहां भगवान नारायणदेवके उद्देशसे प्रति वर्ष एक मेला लगता है। स्कन्दपुराणान्तर्गत सुब्रह्मण्यक्षेत्रमाहात्म्य और सुब्रह्मण्यमाहात्म्य नामक ग्रन्थमें इस तीर्थका विशेष विवरण दिया हुआ है।

सुब्रह्मण्य पण्डित—षडशीति नामक दीधितिके प्रणेता।

सुब्रह्मण्य यज्वन्—कविशाब्दिकभूषण नामक काव्यके रचयिता।

सुब्रह्मण्य शास्त्री—शरच्चन्द्रिका नामक अलङ्कारके प्रणेता।

सुब्रह्मन् (सं० पु०) १ देवपुत्रभेद। (ललितवि०) २ पुरोहितभेद। (त्रि०) ३ उत्तम ब्रह्मण्ययुक्त।

सुब्रह्मवासुदेव (सं० पु०) ब्रह्मरूप वसुदेवके पुत्र। श्रीकृष्णने परब्रह्म वसुदेवके घर जन्म लिया था, इसलिये उनका यह नाम हुआ है।

सुभक्ष्य (सं० क्ली०) सुशोभन भक्ष्य। उत्तम भोज्य द्रव्य।

सुभग (सं० लि०) सुष्ठु भगं श्रीर्यस्य। १ सुदृश्य, सुन्दर, मनोहर। (हेम) २ ऐश्वर्यशाली। ३ भाग्यवान्, खुशकिस्मत। ४ प्रिय, प्रियतम। ५ सुखद, आनंददायक (पु०) ६ टङ्कण, सोहागा। ७ गंधक। ८ चम्पक, चम्पा। ६ रक्तझिण्टी, लाल कटसरैया। १० पीतझिण्टी, पीली कटसरैया। ११ अशोक। १२ शिव। १३ सुबलके एक पुत्रका नाम। १४ जैनोंके अनुसार वह कर्म जिससे जीव सौभाग्यवान् होता है। (श्लो०) १५ शैलज नामक गंधद्रव्य। (राजनि०)

सुभगङ्करण (सं० लि०) सुभगं करोत्यनेन सु-भग-कृ (आढ्य सुभग स्थूलपलितेत्यादि। पा ३।२।५६) इति ख्युन्। जिस उपायसे सुन्दर या प्रिय किया जाता है।

सुभगता (सं० स्त्री०) १ सुभग होनेका भाव। २ सौन्दर्य, सुंदरता, खूबसूरती। ३ प्रेम। ४ स्नेहके द्वारा होनेवाला सुख।

सुभगदत्त (सं० पु०) भौमासुरका पुत्र।

सुभगमानिन् (सं० लि०) आत्मानं सुभगं मन्यते सुभग-मन-णिनि। अपनेको सुंदर समझनेवाला।

सुभगम्भविष्णु (सं० लि०) असुभगो सुभगो भवति सुभग भू (कर्त्तरि भुवः खिष्णुच् खुकञौ। पा ३।२।५७) इति खिष्णुच्। पहले जो असुभग था पीछे उसे सुभग होना।

सुभगम्भावुक (सं० लि०) सुभग-भू-खुकञ्। सुभगम्भविष्णु।

सुभगम्मन्य (सं० लि०) आत्मानं सुभगं मन्यते सुभग-मन् खश्। सुभगमानी।

सुभगसेन (सं० पु०) एक प्राचीन राजा जो सिकन्दरके आक्रमणके समय पश्चिम भारतके एक प्रान्तमें शासन करता था।

सुभगा (सं० स्त्री०) १ पतिप्रिया स्वामीकी सोहागिनी कामिनी, वह स्त्री जो अपने पतिको प्रिय हो। मलमासतत्त्वमें लिखा है, कि जिस वर्षमें वृहस्पति मघा नक्षत्र परित्याग कर सिंह राशिमें अवस्थान करता है, उस वर्षमें यदि कन्याका विवाह किया जाय, तो वह स्त्री सुभगा और स्वामीकी सुप्रिया होती है। २ कैवर्त्तीमुस्तक, केवटी मोथा। ३ शालपर्णी, सरिवन। ४ हरिद्रा, हल्दी। ५ नीलदूर्वा, नीली दूब। ६ तुलसी, सुरसा। ७ प्रियंगु, दहिङ्गना, वनिता। ८ मृगनाभि, कस्तूरी। ६ सुवर्णकदली, सोना केला। १० वनमल्ली, वेला, मोतिया। ११ जातीपुष्प, चमेली। १२ स्कन्दकी एक मातृकाका नाम। १३ पांच वर्षकी कुमारी। १४ एक प्रकारकी रागिणी।

सुभगानन्दनाथ (सं० पु०) १ तान्त्रिकोंके अनुसार एक भैरवका नाम। काली पूजाके समय इनकी पूजाका भी विधान है। २ कादिमतन्त्रटीका और तन्त्रराजटीका-ग्रंथके रचयिता। ये प्रकाशानन्दके गुरु थे।

सुभगासुत (सं० पु०) सुभगायाः सुत। सौभागिनेय।

सुभगाह्वया (सं० स्त्री०) १ कैवर्त्तिका लता। मालव देशमें यह सुरङ्गी लता कहलाती है। २ शालपर्णी, सरिवन। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ सुवर्णकदली, सोना केला। ५ तुलसी। ६ नीलदूर्वा, नीली दूब। (राजनि०)

सुभग्ग (सं० पु०) सुभग देखो।

सुभङ्ग (सं० पु०) नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़।

सुभट (सं० पु०) सु शोभनो भटः। महान् योद्धा, अच्छा सैनिक।

सुभट—दूताङ्गदछायानाटकके रचयिता।

सुभटदत्त—एक पण्डित। ये शृङ्गाररथ और जयरथके गुरु तथा त्रिभुवनदत्तके पुत्र थे।

सुभटवत् (सं० लि०) अच्छा योद्धा।

सुभटवर्मा—एक हिन्दू नरपति। ये अर्जुनवर्मदेवके पिता थे तथा १२वीं सदीके अन्त और १३वींके प्रारम्भमें विद्यमान थे।

सुभट्ट (सं० पु०) अत्यन्त विद्वान् व्यक्ति, बहुत बड़ा पण्डित।

सुभड (हिं० पु०) सुभट, शूरवीर।

सुभद्र (सं० पु०) सुष्ठु भद्रं यस्मात्। १ विष्णु। २ सनत्कुमारका नाम। ३ वसुदेवका एक पुत्र जो पौरवीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। (भागवत ६।२४।४७) ४ इध्मजिह्वके एक पुत्रका नाम। ५ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। ६ प्लक्षद्वीपके अन्तर्गत एक वर्षका नाम। ७ कल्याण, मङ्गल। ८ सौभाग्य। (लि०) ६ भाग्यवान्। १० सज्जन, भला।

सुभद्रक (सं० पु०) १ देवरथ। २ विल्ववृक्ष, बेलका पेड़। ३ सह्याद्रिवर्णित एक राजा।

सुभद्रा (सं० स्त्री०) १ श्यामालता, अनन्तमूल। २ काश्मरी, गंभारी। ३ धृतमन्ता, मकड़ा घास। ४ दुर्गा का एक रूप। ५ पुराणानुसार एक गौका नाम ६ सङ्गीतमें एक श्रुतिका नाम। ७ दुर्गमकी पत्नी। ८ अनिरुद्धकी पत्नी। ९ एक ज्वरका नाम। १० बालि-की पुत्री और अवीक्षितकी पत्नी। ११ एक नदी। १२ श्रीकृष्णकी बहन और अर्जुनकी पत्नी। इनका विवरण महाभारतमें यों लिखा है,—

वृष्णि और अन्धक वंशीय राजगण किसी समय रैवतक पर्वत पर नाना प्रकारके उत्सव मना रहे थे। अर्जुन भी उसी समय वहां पहुंचे। इस पर्वतविहार कालमें अर्जुन सखियोंसे परिवृत नाना प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित सुभद्राको देख कर मोहित हो गये। श्रीकृष्णने अर्जुनका यह भाव देख कर व्यङ्गसे कहा, 'यह क्या! अरण्यचारी व्यक्तिका मन भी कन्दर्पसे आलोड़ित होता है? यह कन्या सारणकी सहोदरा और मेरी बहन है। सुभद्रा इसका नाम है। यदि इसके प्रति तुम्हारा मन ढल गया हो, तो कहो, मैं स्वयं जा कर पितासे यह बात निवेदन करूं।'

अर्जुनने श्रीकृष्णकी यह बात सुन कर कहा, 'वसुदेव-कन्या अनुपमा है। यह किसको नहीं मोहित कर सकती? हे जनार्दन! किस उपायसे सुभद्राको लाभ किया जा सकता है, कहो, यदि मनुष्यका साध्य हो, तो मैं उसे भली भांति करूंगा।'

इस पर वासुदेव बोले, 'पार्थ! क्षत्रियोंको स्वयम्वर विवाह हो कहा गया है, किन्तु यहां वह नहीं होगा। क्योंकि, स्वयम्वरके समय सम्भव है, सुभद्रा किसी दूसरेके गले वरमाला पहना सकती है। अतएव शूर क्षत्रियोंने बलपूर्वक कन्या हरण कर जो विवाह करना श्रेय बतलाया है, तुम यदि उसी विधानके अनुसार इस कन्याका हरण कर विवाह करो, तो सर्वोत्तम होगा।' अनन्तर अर्जुनने कृष्ण और युधिष्ठिरकी अनुमति पा कर अस्त्रशस्त्रसे सज्जित हो सुभद्राका हरण किया।

सुभद्राको हृत देख उनके सैनिकोंमें बड़ी सनसनी फैल गई और उन्होंने वसुदेव आदिको इसकी खबर दी। सबोंने अर्जुनकी निन्दा की, पीछे वे युद्धकी तैयारी करने लगे। किन्तु इस पर कृष्णने कुछ भी नहीं कहा, वे चुप हो रहे। बलरामने कृष्णकी यह अवस्था देख कर कहा, 'कृष्ण! क्या कारण है, कि तुम कुछ भी नहीं बोलते, ऐसे उदास हो कर क्यों बैठे हो?' श्रीकृष्णने जवाब दिया, 'तुम लोग व्यर्थ कोलाहल मचाते हो। अर्जुनने जो कुछ किया है, वह अच्छा ही किया है, धर्मकी उससे हानि नहीं है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं जो भरतवंशीय शान्तनुनन्दन कुन्तिभोज-दौहित्र अर्जुनको मित्ररूपमें पानेकी इच्छा न करता हो। अतएव मेरा विचार यही होता है, कि यह सम्बन्ध हम लोगोंके पक्षमें विशेष श्लाघनीय है। अर्जुनके विरुद्ध युद्धयात्रा न करके वरन् उनकी सम्वर्द्धना करना ही युक्तिसंगत है।'

श्रीकृष्णकी इस बात पर सभी युद्ध करनेसे रुक गये और अर्जुनके पास चल दिये। अर्जुन यादवोंके आदर सत्कारसे बड़े प्रसन्न हो द्वारकापुरी गये और वहां यथाविधान सुभद्रासे विवाह किया। पीछे वे एक वर्ष ठहरे। सुभद्राके गर्भसे अभिमन्युका जन्म हुआ। भारतसंग्राममें सप्तरथी द्वारा अन्याय समरमें अभिमन्युने प्राणत्याग किया। अभिमन्यु देखो।

सुभद्रा—एक स्त्री कवि। सुभाषितमुक्तावलीमें इसका उल्लेख मिलता है।

सुभद्राणी (सं० स्त्री०) त्रायती, त्रायमाण लता।

सुभद्रिका (सं० स्त्री०) १ श्रीकृष्णकी छोटी बहन २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें न न र ल ग होता है।

सुभद्रेश (सं० पु०) अर्जुन। (हेम)

सुभर (सं० त्रि०) सु-भृ-अप्। सुपूर्ण, एकदम भरा हुआ। (ऋक् ३।३।४)

सुभव (सं० त्रि०) १ उत्तमरूपसे उत्पन्न। (शुक्लयजु० ७।३) (पु०) २ साठ संवत्सरोंमेंसे अन्तिम संवत्सरका नाम। षष्टिसम्वत्सर देखो। ३ एक इक्ष्वाकु वंशी राजाका नाम।

सुभसत्तरा (सं० स्त्री०) सुभगा स्त्री, वह स्त्री जो पतिको अत्यंत प्रिय हो। (ऋक् १०।८६।६)

सुभा (सं० स्त्री०) १ सुधा। २ शोभा। ३ परनारी। ४ हरीतकी, हड।

सुभा—यूफ्रेतिस नदीके पूर्वी किनारे पर बसनेवाली एक बेदौन जाति। अलजाजिराके साम्मारोंसे इन लोगोंका चिर विवाद है, इसलिये अनजेरा इनको यथासाध्य रक्षा करते और आश्रय देते हैं। ये लोग बहुतेरे भेंड और ऊंट तथा अच्छे अच्छे घोड़े पालते हैं। कोई कोई परिवार अनाज भी उपजाता है।

सुभग (सं० त्रि०) भाग्यवान्, खुश किस्मत।

सुभागा (सं० स्त्री०) रौद्राश्वकी एक पुत्रीका नाम।

सुभागी (हिं० वि०) भाग्यशाली, भाग्यवान्, खुश किस्मत।

सुभागीन (हिं० पु०) भाग्यवान्, सुभग, अच्छे भाग्यवाला।

सुभाग्य (सं० त्रि०) सु शोभनो भाग्यं यस्य। १ अत्यंत भाग्यशाली, बहुत बड़ा भाग्यवान्। (पु०) २ सौभाग्य देखो।

सुभाञ्जन (सं० पु०) सु शोभनं अञ्जनं यस्मात्। शोभाञ्जन वृक्ष, सहिंजनका पेड़।

सुभान (अ० अव्य०) धन्य, वाह वाह।

सुभानु (सं० त्रि०) १ सुन्दर या उत्तम प्रकाशसे युक्त, सुप्रकाशमान्। (पु०) २ चतुर्थ हुतास नामक युगके दूसरे वर्षका नाम। यह वर्ष फलदायक तथा रोगप्रद माना गया है। (बृहत्संहिता ८।३३) ३ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। (भाग० १०।६१।१०) ४ सह्याद्रिवर्णित एक राजाका नाम।

सुभावित (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे भावना की हुई।

सुभाषण (सं० क्ली०) सु-भाष-ल्युट्। १ सुन्दर भाषण। (पु०) २ युयुधानके एक पुत्रका नाम।

सुभाषित (सं० पु०) १ एक बुद्धका नाम। (त्रिका०) (त्रि०) सु-भाष-क्त। २ सुन्दररूपसे कहा हुआ, अच्छी तरह कहा हुआ। ३ सुन्दर वाक्यविशिष्ट। (क्ली०) ४ सुवाक्य।

सुभाषितगवेषिन् (सं० पु०) बौद्ध अवदानोक्त राजभेद।

सुभाषिन् (सं० त्रि०) सुभाषते भाष-णिनि। मिष्टभाषी, मधुर बोलनेवाला।

सुभास् (सं० त्रि०) सुप्रकाशमान्, खूब चमकीला।

सुभास (सं० पु०) १ सुधन्वाके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु० ४।५।१२) २ एक दानवका नाम। (त्रि०) ३ सुप्रकाशमान्, खूब चमकीला।

सुभिक्ष (सं० पु०) ऐसा काल या समय जिसमें भिक्षा या भोजन खूब मिले और अन्न खूब हो, सुकाल।

सुभिक्षा (सं० स्त्री०) सु भिक्ष-घञ् टाप्। १ धातुपुष्पिका, धौके फूल। २ सुन्दर भिक्षा।

सुभिषज् (सं० त्रि०) उत्तम चिकित्सक, अच्छी चिकित्सा करनेवाला।

सुभी (हिं० क्रि०) शुभकारक, मंगलकारक।

सुभीत (सं० त्रि०) सु भी क्त। अतिशय भीत, खूब डरा हुआ।

सुभीता (हिं० पु०) १ सुगमता, आसानी, सहूलियत। २ सुअवसर, सुयोग। ३ आराम, चैन।

सुभीम (सं० त्रि०) १ अति भीषण, बहुत भयावना। (पु०) २ एक दैत्यका नाम।

सुभीमा (सं० स्त्री०) श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम।

सुभीरक (सं० पु०) पलाश वृक्ष, ढाकका पेड़।

सुभीरु (सं० त्रि०) अतिशय भीरु, बहुत डरपोक।

सुभुक्त (सं० त्रि०) सु भुज क्त। जिसने अच्छी तरह खाया हो।

सुभुज (सं० त्रि०) शोभन बाहुविशिष्ट, सुन्दर भुजाओंवाला। (रघु ६।५५)

सुभुजा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुभू (सं० त्रि०) १ सुजात। २ महत्, बड़ा। (ऋक् ४।५५।३) ३ उत्कृष्ट भूमिविशिष्ट। (स्त्री०) ४ उत्कृष्ट भूमि।

सुभूत (सं० क्ली०) सु भू भावे क्त। उत्तम होना, साधु होना।

सुभूता (सं० स्त्री०) उत्तर दिशाका नाम जिसमें प्राणी भले प्रकार स्थित होते हैं। (छान्दोग्य)

सुभूति (सं० स्त्री०) १ उन्नति, तरक्की। २ कुशल, क्षेम, मंगल। (पु०) ३ कोषकारभेद। ४ वसुभूतिका पुत्र। ५ बौद्धाचार्यभेद।

सुभूतिक (सं० पु०) बिल्व वृक्ष, बेलका पेड़।

सुभूतिचन्द्र—सुप्रसिद्ध जैनटीकाकार। इन्होंने अमरकोष की एक टीका लिखी। माधवीय धातुवृत्तिमें इनका उल्लेख मिलता है।

सुभूम (सं० पु०) कार्त्तवीर्य जो जैनियोंके आठवें चक्रवर्त्ती थे। (हेम)

सुभूमि (सं० स्त्री०) १ उत्कृष्ट भूमि। (पु०) २ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु०) (त्रि०) ३ उत्तम भूमिविशिष्ट।

सुभूमिक (सं० क्ली०) एक प्राचीन जनपदका नाम जो महाभारतके अनुसार सरस्वती नदीके किनारे था।

सुभूमिप (सं० पु०) १ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश) (त्रि०) २ उत्कृष्ट भूमिपति, उत्कृष्ट भूमिरक्षक।

सुभूषण (सं० क्ली०) १ सुन्दर भूषण, उत्तम अलंकार। (त्रि०) २ सुन्दर भूषणोंसे अलंकृत, जो अच्छे अलंकार पहने हो। (पु०) ३ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश)

सुभूषित (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे भूषित, भली भाँति अलंकृत।

सुभृत (सं० त्रि०) जिसका उत्तम रूपसे अन्न वस्त्रादि द्वारा भरण पोषण होता है। (ऋक् ४.५०।७)

सुभृश (सं० क्ली०) १ बाढ़। २ अतिशय, अत्यन्त, बहुत अधिक।

सुभेषज (सं० क्ली०) उत्तम भेषज, उत्तम औषध।

सुभोग्य (सं० त्रि०) सुखसे भोगने योग्य, अच्छी तरह भोगनेके लायक।

सुभोज (सं० त्रि०) १ उत्तम भोजनयुक्त। (पु०) २ उत्तम भोजन।

सुभोजन (सं० क्ली०) उत्तम रूपसे भोजन।

सुभोजस् (सं० त्रि०) सुन्दर भोजनयुक्त या सुन्दर भोगयुक्त। (अथ० ४।२६।१)

सुभौम—जैनियोंके एक चक्रवर्त्ती राजाका नाम जो कार्त्तवीर्यका पुत्र था। जैन हरिवंशमें लिखा है, कि जब परशुरामने कार्त्तवीर्यार्जुनका वध किया, तब कार्त्तवीर्यकी पत्नी अपने बच्चे सुभौमको ले कर कुशिकाश्रममें चली गई और वहीं उसका लालन पालन तथा शिक्षा हुई। बड़े होने पर सुभौमने अपने पिताके वधका बदला लेने के लिये बीस बार पृथ्वीको ब्राह्मण शून्य किया और इस प्रकार क्षत्रियोंका प्राधान्य स्थापित किया।

सुभ्र (सं० पु०) शुभ्र देखो।

सुभ्र (हिं० पु०) जमीनमेंका बिल।

सुभ्राज (हिं० पु०) देवभ्राजके एक पुत्रका नाम।

सुभ्रू (सं० स्त्री०) सुष्ठु भ्रूर्यस्याः वा ऊङ्। १ नारी, स्त्री, औरत। २ उत्तम भ्रू, सुन्दर भौंह। ३ स्कन्दकी एक मातृकाका नाम। (त्रि०) ४ सुन्दर भ्रूविशिष्ट, सुंदर भौंहोंवाला, जिसकी भवें सुन्दर हों।

सुम (सं० क्ली०) सुष्ठु मातीति मा-क। १ पुष्प। (पु०) २ चन्द्रमा। ३ नभः, आकाश।

सुम (हिं० पु०) एक प्रकारका पेड़ जो आसाममें होता है और जिस पर 'मूगा' (रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं।

सुम (फा० पु०) घोड़े या दूसरे चौपायोंके खुर, टाप।

सुमख (सं० त्रि०) उत्तम यज्ञविशिष्ट। (ऋक् १।६४।१)

सुमखोरा (फा० पु०) वह घोड़ा जिसकी एक आँखकी पुतली बेकार हो गई हो।

सुमगध (सं० पु०) बौद्ध सूत्रग्रन्थविशेष।

सुमगधा (सं० स्त्री०) अनाथपिण्डिककी पुत्रीका नाम।

सुमङ्गल (सं० त्रि०) १ अत्यन्त शुभ, कल्याणकारी २ सदाचारी। (पु०) ३ एक प्रकारका विष।

सुमङ्गला (सं० स्त्री०) सुमङ्गल टाप्। १ मकड़ा नामक नाम। २ स्कन्दकी एक मातृकाका नाम। ३ एक अप्सराका नाम। ४ कामाख्यास्थित नदीविशेष। यह नदी हिमालय से निकल कर मणिकूट पर्वतके पूर्व ओर बह चली है। मणिकूट पर्वत पर चढ़ कर जो इस नदीको देखते हैं, उन्हें गङ्गास्नानका फल होता है, तथा अन्तकालमें वे स्वर्गको जाते हैं। (कालिकापु० ८१ अ०)

सुमङ्गली (हिं० स्त्री०) विवाहमें सप्तपदी पूजाके बाद पुरोहितको दी जानेवाली दक्षिणा। सप्तपदी पूजाके बाद कन्या-पक्षका पुरोहित वरके हाथमें सेंदुर देता है और वर उसे वधूके मस्तकमें लगा देता है। इसके उपलक्षमें पुरोहितको नेग दिया जाता है, उसे सुमङ्गली कहते हैं।

सुमङ्गा (सं० स्त्री०) पुराणानुसार एक नदीका नाम।

सुमणि (सं० त्रि०) १ उत्तम मणिविशिष्ट। (पु०) २ उत्तम मणि। ३ स्कन्दके एक अनुचरका नाम।
सुमण्डल (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम।
सुमत् (सं० त्रि०) स्वयं। (ऋक् १।१४२।७)
सुमन (सं० त्रि०) १ उत्तम ज्ञानसे युक्त, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्। (स्त्री०) २ सुमति देखो।
सुमतराश (फा० पु०) घोड़ेके नाखून या खुर काटनेका औजार।
सुमति (सं० पु०) शोभना मतिर्यस्य। १ वर्त्तमान अवसर्पिणीके पांचवें अर्हत् या गत उत्सर्पिणीके तेरहवें अर्हत्का नाम। २ एक दैत्यका नाम। ३ इक्ष्वाकुवंशी राजा काकुत्स्थके एक पुत्रका नाम। ४ विदूरथका एक पुत्र। ५ सूतके एक पुत्र या शिष्यका नाम। ६ सावर्णा मन्वन्तरके एक ऋषिका नाम। ७ भरतके एक पुत्रका नाम। ८ सुपार्श्वके एक पुत्रका नाम। ९ दृढ़सेनके एक पुत्रका नाम। १० जनमेजयके एक पुत्रका नाम। ११ सोमदत्तके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) १२ सुंदर मति, सुबुद्धि, अच्छी बुद्धि। १३ विष्णुयशकी पत्नी। सुमतिके गर्भसे कल्किरूपमें भगवान् जन्मग्रहण कर कलिका क्षय करेंगे। (कल्किपु० २अ०) कल्कि देखो। १४ सगरकी पत्नीका नाम। पुराणोंके अनुसार यह साठ हजार पुत्रोंकी माता थी। १५ क्रतुकी पुत्रीका नाम। १६ मेल। १७ भक्ति प्रार्थना। १८ सारिका, मैना। (त्रि०) १९ अत्यन्त बुद्धिमान् अच्छी बुद्धिवाला।
सुमतिक्षय (सं० पु०) विष्णु। (हेम)
सुमति बाई (हिं० स्त्री०) एक भक्तिनका नाम जो ओड़छाके राजा मधुकर शाहकी रानी गणेश बाईकी सहचरी थी।
सुमतिमेरु (सं० पु०) हलका एक भाग।
सुमतिमेरुगणि (सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैनाचार्य।
सुमतिरेणु (सं० पु०) १ एक यक्षका नाम। २ एक नागासुरका नाम।
सुमतिविजय—मेघदूतावचूरि और सुगमान्वया नामकी रघुवंशकी टीकाके प्रणेता। ये विक्रमपुरके रहनेवाले थे।

सुमतिशील (सं० पु०) एक बौद्धाचार्य।
सुमतिहर्ष—हर्षरत्नगणिके शिष्य। इन्होंने १६२२ ई०में करण कुतूहलवृत्तिकी रचना की। इसके अलावा इनकी लिखी श्रीपतिकृत जातकपद्धतिकी टीका, हरिभद्ररचित ताजिकसारकी टीका और होरामकरन्दटीका मिलती है।
सुमतीन्द्रयति—रसिकरञ्जनी नामकी उदाहरणटीका तथा साहित्यसाम्राज्य नामक ग्रन्थके प्रणेता। ये सुरेन्द्रपूज्यपादके शिष्य थे।
सुमतीवृध (सं० त्रि०) उत्तम बुद्धि वृद्धिकारक, अच्छी बुद्धि बढ़ानेवाला। (शुक्लयजुः २१।२२)
सुमत्क्षर (सं० त्रि०) जो स्वयं क्षरित हो।
सुमदंशु (सं० त्रि०) अति दीर्घावयव।
सुमद (सं० त्रि०) १ मदोन्मत्त, मतवाला। (पु०) २ एक वानर जो रामचन्द्रकी सेनाका सेनापति था।
सुमदन (सं० पु०) सु-मद-णिच्-ल्यु। आम्र वृक्ष, आमका पेड़। (राजनि०)
सुमदना (सं० स्त्री०) कालिकापुराणके अनुसार एक नदीका नाम। (कालिकापु० ७८ अ०)
सुमदनात्मजा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।
सुमद्दुम (हिं० वि०) स्थूल, मोटा, तोंदल।
सुमद्गण (सं० त्रि०) सुन्दर गणयुक्त।
सुमद्र (सं० अव्य०) मद्राणां समृद्धिः (अव्ययं विभक्ति समीपसमृद्धीति। पा २।१।६) इति अव्ययीभावः। मद्रदेशकी समृद्धि।
सुमद्रथ (सं० त्रि०) सुन्दर रथयुक्त।
सुमधुर (सं० क्ली०) १ अतिशय मधुर वाक्य, सान्त्व। (त्रि०) २ अतिशय मधुर रसयुक्त, बहुत मीठा। (पु०) ३ जीव शाक। (राजनि०)
सुमध्य (सं० त्रि०) सुमध्यम, सुन्दर मध्यभागविशिष्ट।
सुमध्या (सं० स्त्री०) सुमध्यमा नारी।
सुमध्यम (सं० त्रि०) उत्तम कटिदेशविशिष्ट, सुन्दर कमरवाला।
सुमध्यमा (सं० स्त्री०) सुन्दर कमरवाली।
सुमनःपत्र (सं० क्ली०) जातीपुष्प पत्र, जावित्री।
सुमनःपत्रिका (सं० स्त्री०) जातीपत्री, जावित्री।

सुमनःप्रधान (सं० पु०) जातीपल्लव, जाती फूलकी शाखा।

सुमनःफल (सं० क्ली०) १ जाती फल, जायफल। (पु०) २ कपित्थ, कैथ।

सुमन (सं० पु०) १ गोधूम, गेहूं। २ धुस्तूर, धतूरा। (ति०) ३ मनोहर, सुन्दर।

सुमनचाप (सं० पु०) कामदेव, जिसका धनुष फूलोंका माना गया है।

सुमन—सह्याद्रिखण्डवर्णित एक राजा।

सुमनस् (सं० पु०) शोभन मनो यस्य। १ देवता। २ पण्डित। ३ पूतिकरञ्ज। ४ निम्ब, नीम। ५ महाकरञ्ज। ६ गोधूम, गेहूं। ७ एक दानवका नाम। ८ ऊरु और आग्नेयीके पुत्रका नाम। ९ उल्मुकके पुत्रका नाम। १० हर्यश्वके पुत्रका नाम। ११ प्लक्षद्वीपके अन्तर्गत एक पर्वत। १२ एक नागासुरका नाम। १३ मित्र। (स्त्री०) १४ पुष्प। पुष्प अर्थमें सुमनस् शब्द नित्य बहुवचनान्त होता है, किन्तु स्थलविशेषमें एकवचनान्त भी देखनेमें आता है, पर ऐसा करना उचित नहीं। दूसरे यह शब्द स्त्रीलिङ्ग होने पर भी क्लीवलिङ्गमें इसका प्रयोग देखा जाता है।

महाभारतमें लिखा है, कि मन अत्यन्त आह्लादित होता और श्रीदान करता है, इसीसे पुष्पको सुमनस् कहते हैं। जो देवताओंको पुष्प चढ़ाते हैं, उन पर देवता प्रसन्न होते हैं। (भारत १३।९८।२०-२१)

१५ जाती, चमेली। १६ शतपत्री। (त्रि०) १७ उत्तम मनवाला, सहृदय। मनोहर, सुन्दर।

सुमनःसधुज (हिं० पु०) कामदेव।

सुमनस्क (सं० पु०) प्रसन्न, सुखी।

सुमना (सं० स्त्री०) १ जातीपुष्प, चमेली। २ शतपत्री, सेवती। ३ कबरी गाय। ४ मधुकी पत्नी और वीरव्रतकी माताका नाम। ५ दमकी पत्नीका नाम। ६ कैकयीका वास्तविक नाम।

सुमना—प्लक्ष द्वीपके अन्तर्गत पर्वतभेद।

सुमनामुख (सं० त्रि०) सुन्दर मुखवाला।

सुमनायन (सं० पु०) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

सुमनास्य (सं० पु०) एक यक्षका नाम।

सुमणिक (सं० त्रि०) सुन्दर मणिसे युक्त, उत्तम मणियोंसे जड़ा हुआ।

सुमनोक्षघोष (सं० पु०) बुद्धदेव।

सुमनोत्तरा (सं० स्त्री०) राजाओंके अन्तःपुरमें रहनेवाली स्त्री।

सुमनोमुकुल (सं० क्ली०) जातीपुष्पका मुकुल, चमेली फूलकी कली। (सुश्रुत सू० ३६ अ०)

सुमनोमुख (सं० पु०) एक यक्षका नाम।

सुमनोरजस् (सं० क्ली०) पराग पुष्परेणु। (अमर)

सुमनोहर (सं० त्रि०) अतिशय मनोहर, बड़ा सुन्दर।

सुमनौकस् (सं० पु०) देवलोक, स्वर्ग।

सुमन्त—सह्याद्रिवर्णित एक राजाका नाम।

सुमन्त्र देखो।

सुमन्तु (सं० पु०) १ मुनिविशेष। यह मुनि अथर्ववेदके शाखा-प्रचारक और वज्रवारक रूपमें प्रसिद्ध थे।

जैमिनि, सुमन्तु, वैशम्पायन, पुलस्त्य और पुलह ये पांच मुनि वज्रवारक हैं, अर्थात् इनका नाम लेनेसे वज्रका भय नहीं रहता। पैठीनसि, हलायुध आदिके ग्रन्थमें एक सुमन्तुकृत स्मृतिका उल्लेख मिलता है। २ जह्नुके पुत्रका नाम। (त्रि०) ३ अत्यन्त अपराधी।

सुमन्तु—सह्याद्रि वर्णित एक राजाका नाम।

सुमन्त्र (सं० पु०) १ कल्किदेवका बड़ा भाई। कवि, प्राज्ञ और सुमन्त्र ये तीन कल्किके बड़े भाई थे। कल्किदेवने इन भाइयोंके साथ मिल कर अधर्मका नाश और धर्मका संस्थापन किया था। (कल्किपु० २, ३ अ०) २ राजा दशरथका मंत्री और सारथि। जब रामचन्द्र वनको जाने लगे थे, तब यही सुमंत्र उन्हें रथ पर बैठा कर कुछ दूर छोड़ आया था।

राम और दशरथ देखो।

सुमन्त्रक (सं० पु०) कल्किका बड़ा भाई। कल्किपुराणमें लिखा है, कि कल्किने अपने तीन बड़े भाइयों (प्राज्ञ, कवि और सुमन्त्रक) के सहयोगसे अधर्मका नाश और धर्मकी स्थापना किया था।

सुमन्त्रित (सं० त्रि०) जिसके सम्बन्धमें उत्तम रूपसे मन्त्रणा की गई हो।

सुमन्त्रिन् (सं० त्रि०) उत्तम मन्त्री, मंत्रणा कुशल।

सुमन्थन (सं० पु०) मन्दर पर्वत।

सुमन्दबुद्धि (सं० त्रि०) सु मन्दा बुद्धिर्यस्य। अतिशय मन्द बुद्धि।

सुमन्दभाज् (सं० त्रि०) अति मन्द भाग्य, हतभाग्य।

सुमन्दा (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी शक्ति।

सुमन्द्र (सं० पु०) १ सु मधुर ध्वनि। २ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें १६+११ के विरामसे २७ मात्राएं तथा अन्तमें गुरु लघु होते हैं। यह सरसी नामसे प्रसिद्ध है। होलीमें जो कबीर गाये जाते हैं, वे प्रायः इसी छन्दमें होते हैं।

सुमनस् (सं० त्रि०) शोभनमति, सुन्दर बुद्धिविशिष्ट।

सुमन्यु (सं० त्रि०) १ अत्यन्त क्रोधी, बहुत, गुस्सेवर।

सुमफटा (हिं० पु०) एक प्रकारका रोग जो घोड़ोंके खुरके ऊपरी भागसे तलवे तक होता है। यह अधिकतर अगले पांवोंके अंदर तथा पिछले पांवोंके खुरोंमें होता है। इससे घोड़ोंके लंगड़े हो जानेकी संभावना रहती है।

सुमर (सं० पु०) १ वायु, हवा। २ सहज मृत्यु।

सुमरन (हिं० पु०) सुमरनी देखो।

सुमरना (हिं० क्रि०) १ स्मरण करना, चिंतन करना, ध्यान करना। २ बार बार नाम लेना, जपना।

सुमरनी (हिं० स्त्री०) नाम जपनेकी छोटी माला जो सत्ताइस दानोंकी होती है।

सुमरा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली जो भारतकी नदियों और विशेषकर गरम झरनोंमें पाई जाती है। यह पांच इंच तक लम्बी होती है। इसे महुवा भी कहते हैं।

सुमरीचिका (सं० स्त्री०) सांख्यके अनुसार पांच बाह्य तुष्टियोंमेंसे एक।

सुमल्लिक (सं० पु०) एक प्राचीन जनपदका नाम।

सुमसायक (सं० पु०) कामदेव।

सुमसुखड़ा (हिं० वि०) १ जिसके खुर सूख कर सिकुड़ गये हों। (पु०) २ एक प्रकारका रोग जिसमें घोड़ेके खुर सूख कर सिकुड़ जाते हैं।

सुमह (सं० पु०) जह्नुके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश)

सुमहत् (सं० त्रि०) अति महान्, अनेक, बहुत।

सुमहस् (सं० त्रि०) सु शोभनं महः तेजो यस्य। अति तेजोयुक्त, अत्यंत प्रकाशमान। (ऋक् ४।११।२)

सुमहाकपि (सं० पु०) एक दानवका नाम।

सुमहातपस् (सं० त्रि०) सुमहत् तपो यस्य। महा तपस्वी।

सुमहात्मन् (सं० त्रि०) अति महात्मा, उच्च आत्माका।

सुमहोदय (सं० त्रि०) अतिशय नाशविशिष्ट।

सुमहाबल (सं० त्रि०) अतिशय बलशाली, बड़ा बलवान्।

सुमहाबाहु (सं० त्रि०) सु महान्तौ बाहू यस्य। सुदीर्घ बाहु, जिसकी भुजा लम्बी हो।

सुमहामनस् (सं० त्रि०) सु महत् मनो यस्य। मनस्वी।

सुमहारथ (सं० पु०) अतिशय वीर पुरुष।

सुमहासत्त्व (सं० त्रि०) सु महत् सत्त्वं यस्य। अतिशय बलशाली, बड़ा बलवान्।

सुमागधा (सं० स्त्री०) अनाथपिण्डिककी कन्या।

सुमागधी (सं० स्त्री०) मगधमें प्रवाहित एक नदी।

सुमातृ (सं० त्रि०) १ उत्तम मातायुक्त, सुंदर मातावाला। (ऋक् १०।७८।६) (स्त्री०) २ उत्तम माता।

सुमात्रा—पूर्वद्वीपपुञ्जके (The Eastern Archipelago) सम्मुख भागमें अवस्थित एक द्वीप।

मलय उपद्वीप और चीनसागरको भारत महासमुद्रसे पृथक् रख कर सुमात्रा पेनङ्गकी एक सामानन्तर रेखासे आरम्भ हो कर बङ्कमकी समान्तराल रेखा तक विस्तृत है। इसकी लम्बाई ६२५ भौगोलिक मील और चौड़ाई गड़में ६० मील है। वर्गफल लगभग १२८५६० भौगोलिक वर्गमील है। पश्चिम प्रान्तमें जो संलग्न-प्रायद्वीप है, उन्हें लेनेसे जमीनका परिमाण और भी ५००० मील बढ़ जायेगा। इसके दक्षिण पश्चिम सीमा पर कुछ निम्न भूमि है—उसके बाद पहाड़ ही पहाड़ नजर आता है। यहां जितने पहाड़ हैं, उनमेंसे अम्बक सबसे बड़ा है। उसकी ऊंचाई १२३६३ फुट है।

समूचा द्वीप बहुतसे छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त है। इनमेंसे अचीन, दिल्ली, लङ्कात् और सिधाक उल्लेखयोग्य हैं। १६०२ ई०में अचीनके साथ अंगरेजोंका राजनैतिक सम्बन्ध संस्थापित हुआ। १८१५ ई०में यहां जो राष्ट्र विप्लव खड़ा हुआ उसके फलसे दुर्बल कामासक्त राजा

जोहर शाहको तख्त परसे उतार कर राजवंशके साथ सम्पर्क रहनेवाले सीक-अल् आलम शाह नामक एक धनाढ्य वणिक् पुत्र सिंहासन पर बैठाया गया। किन्तु दीर्घकालव्यापी परामर्श और बन्दोबस्तके बाद राज्यच्युत राजाको फिरसे सिंहासन पर बैठाया गया तथा उनके साथ अंगरेजोंकी सन्धि स्थापित हुई। दिल्ली, लङ्कात् और सियाकके साथ भी इनकी सन्धि हुई थी, परन्तु १८२४ ई०में ओलन्दाजोंके साथ जो सन्धि हुई, उसके बाद सुमात्राके साथ अंगरेजोंका सम्बन्ध बिलकुल जाता रहा। यहां इससे कम पन्द्रह विभिन्न जातिके लोग रहते हैं। जनसंख्या २५ लाखसे ७० लाख तक निर्द्धारित हुई है।

सुमात्राके उपकूल पर विभिन्न स्थानसे निम्नलिखित मनुष्य आ कर वास करते हैं—

	भौगोलिक वर्गमील	यूरोपीय	भारतवासी	चीन	अरब	अन्यान्य
पदं	२२०७	१३७२	६३७००७	३६६७	७७	७०७
नापानेलि		२०२	१३१०१२	७६६	२६	१३७
वेनकुलेन	४०५	१५६	१४२५०१	५६६	१७	२
लामपं	४७५	७७	१२५४०१	२४६	१८	१४
पालेमवं	२५५८	२८०	६२,६००	४२४५	१६४१	१५४
पूर्वोपकूल	७६८	४३५	११००७१	२६६५७		२४
पश्चि	६०८	२२८	४७४३००	३५०६	२२२ ८	६

मलयवंशीय ही यहांके प्रधान अधिवासी हैं। उनका नाम ओरा मलय है। ये लोग सुमात्राके समग्र मध्य और वन्य प्रदेशमें वास करते हैं। जिस विस्तीर्ण भूमिखण्ड पर इन लोगोंका वास है, उसकी लम्बाई २६५ वर्गमील और चौड़ाई १६० मील है। इन्हें प्रधानतः चार भागोंमें विभक्त किया जा सकता है, १म—जो पर्वतश्रेणी पर वास करते हैं। यथा—(१) मेनंकवाऊ; (२) रापुलो बुया बंदर और गुर्ण सुङ्गेई पागुका मलय, (३) कारिञ्चि; (४) बैया। २य—पर्वतश्रेणीके पश्चिम सीमान्त पार्वत्य देशवासी, ३य—निम्न अथवा पूर्व प्रदेशके मलय और ४र्थ—उत्तरखण्डके पूर्वोपकूलवासी मलय।

यहां बाट्टा नामक एक और जातिके लोगोंका वास है। दैहिक गठनमें उन लोगोंके साथ मलय उपद्वीपवासी विनुआ लोगोंका उतना वैसादृश्य नहीं है। किंतु बुद्धि और मानसिक शक्तिका विकाश इन्हीं लोगोंमें अधिकतर दिखाई देता है। इन लोगोंकी भाषाकी एक वर्णमाला है। यह भाषा किसी दूसरी भाषासे नहीं निकली है, इससे कई उपभाषाकी उत्पत्ति हुई है। भूत, प्रेत और भवितव्यके पूर्वाभास पर इनका विश्वास है।

कमरिं और कमरिं उलुके अधिवासियोंकी भाषा, अक्षर और उच्चारणमें बाट्टा लोगोंकी भाषाका बहुत कुछ मेल खाता है। यहांका नृत्य (मेनारी) और गीत (वारम बास) अन्यान्य स्थानोंके नृत्यगीतसे विभिन्न है। यहांकी युवतियां, अन्यान्य जिन सब स्थानोंमें संगीतकी चर्चा होती है, उन सब स्थानोंकी युवतियोंसे देखनेमें अच्छी और हाव-भावमें अधिकतर तृप्तिदायिनी मालूम होती हैं। इनका कण्ठस्वर भी अपेक्षाकृत श्रवणानंददायक होता है। यहांकी लड़कियां किसी व्यक्तिविशेष या घटनाका उपलक्ष करके अच्छी अच्छी कविता गा कर कर्णकुहरको परितृप्त कर सकती हैं। पूर्वकालमें इन लोगोंमेंसे सुलतानकी उपपत्नी बनाई जाती थी। सुमात्रावासी बाघसे बड़े डरते और उसे भक्तिकी दृष्टिसे देखते हैं। व्याघ्रका प्रचलित नाम (रहिम या मोचिं) वे कदाचित् लेते हैं। इस प्रकार विश्वास करके हो या उन्हें प्रसन्न करके भुलानेके उद्देशसे हो, वे लोग व्याघ्रको सतोया (जंगली जंतु), यहां तक, कि 'नेनेक' (पूर्वपुरुष) नामसे भी पुकारते हैं।

मलय भाषाको छोड़ सुमात्रा और पार्श्ववर्त्ती द्वीपोंमें और भी कमसे कम नौ भाषा प्रचलित हैं। इनमेंसे पांच भाषाका अनुशीलन होता है। इनके सिवा और भी कुछ चालित भाषा भी प्रचलित है। सुमात्राका जो अंश पश्चिमद्वीपके समीपवर्त्ती है, वहां लमपुं जातिका वास है। इन लोगोंकी वर्णमालामें १६ मूल वर्ण और २५ संयुक्त वर्ण होते हैं कुल मिला कर ४४ वर्ण हैं। सुमात्राके पश्चिम प्रान्तस्थित द्वीपोंमें कुछ भाषा प्रचलित है—इनकी कोई वर्णमाला नहीं है। जैसे, पगद्वीपकी नीयास जाति और मारमोंकी भाषा। बट्टालोग नरखादक होने पर भी आश्चर्यकी बात है, कि उनमें लिखित भाषाका

प्रचार नहीं है। सुमात्रामें अचीन और मलय भाषा अरबी अक्षरोंमें लिखी जाती है। रेजा लोगोंकी भी स्वतन्त्र भाषा और वर्णमाला है।

इन लोगोंमें कुछ अद्भुत रीति प्रचलित है। सुमात्रा-वासी कभी भी अपना नाम नहीं लेते। जब कभी कोई वैदेशिक उनका नाम पूछता है, तब वे भारी मुश्किल में पड़ जाते हैं।

प्राच्य देशवासी सुमात्राको इन्दालस और पुलो पर्चा या प्रीचो कहते हैं। यह स्थान बहुत दिनोंसे सुवर्णके लिये विख्यात है। यहां जमीनके अन्दर से काफी सोना निकलता है। ताँबे, लोहे और टानकी खान भी हैं। आग्नेय पर्वतोंके समीपवर्ती प्रदेशमें गन्धक बहुतायतसे पाई जाती है। मिट्टीसे सोरा निकाला जाता है, कोयला भी यहां यथेष्ट मिलता है।

सुमात्रा द्वीपमें प्रायः १५ आग्नेय पर्वत हैं। इनमेंसे दम्पो (१०४४० फुट), इन्द्रपुल (१२१४० फुट) तलं (८४८० फुट) और मेराही (६७०० फुट) विशेष उल्लेख योग्य हैं।

मि० जार्ज विण्डसर अर्लने प्रमाणित किया है, कि सुमात्रा और तत्समीपवर्ती द्वीपावली कम गहराई-के सागरसे एशिया महादेशके साथ संयुक्त है। मि० वालेशने दिखलाया है, कि इस द्वीपमालाके कुछ एशियाके साथ और कुछ अष्ट्रेलियाके साथ मिले हैं। सुमात्रा, जावा और वोर्नियोमें जो सागर बहता है, वह इतना छिछला है, कि इसमें जहां तहां जहाज लंगर डाल कर रह सकता है। सुमात्राके हाथी, तापिर (कुछ अंश सूअर जैसा और कुछ गैंडा जैसा) और गैंडेके साथ एशिया महादेशके दक्षिण प्रान्तके किसी किसी स्थानके इस जातिके जन्तुके साथ विशेष सादृश्य है। एशिया महादेशके दक्षिणांशमें जो सब स्वभावजात द्रव्यादि, जीवजन्तु, पक्षी और पतङ्गादि देखनेमें आते हैं, यहां भी वही सब हैं। कई जगह वे देखनेमें ठीक एक से लगते हैं तथा एक ही जातिके अन्तर्भुक्त हैं। दैहिक और मानसिक शक्तिके स्फुरण और विकाशमें तथा चरित्रके बलमें मलय जातियां पापुयानोंसे बहुत उन्नत हैं। क्रमशः मलय जातियां पापुयानोंके मध्य भी अपनी अपनी उन्नत सभ्यता, भाषा और आचार व्यवहारका प्रचार कर रही हैं।

यूरोपीयगण १५वीं सदीसे सुमात्राका हाल जानते हैं परंतु भारतवासीके निकट यह हजारों वर्ष पहलेसे परिचित है। रामायणमें इस भूभागको 'सुवर्णद्वीप' और ब्रह्माण्डादि महापुराणमें मलयद्वीपके अन्तर्गत कहा है। इसी सुमात्रामें लङ्कापुरी प्रतिष्ठित थी तथा रावणके अधःपतनके बाद भी भारतवासी स्वर्णलाभकी आशासे और देवदर्शनके उद्देशसे यहां हमेशा आया करते थे। उपनिवेश शब्दमें विस्तृत विवरण देखो। सुमात्राका पुरातत्त्व उतना मालूम नहीं। ओलन्दाज गवमेंटकी प्रकाशित विवरणीसे जाना जा सकता है, कि 'वर्म्म' उपाधिधारी आर्यक्षत्रियराजगण ८वींसे ११वीं सदी तक सुमात्राके नाना स्थानोंमें शासन परिचालन कर गये हैं। नाना स्थानोंकी प्राचीन ध्वस्त देवकीर्तियोंसे उसकी परिचायक शिलालिपि आविष्कृत हुई है। उसे पढ़नेसे जाना जाता है, कि यहां ब्राह्मण और श्रमण दोनों ही धर्म एक दिन विशेष प्रबल थे।

सुमाद्रेय (सं० पु०) सहदेव।

सुमानस (सं० त्रि०) सहृदय, अच्छे मनका।

सुमानिका (सं० स्त्री०) एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें सात अक्षर होते हैं जिनमेंसे पहला तीसरा, पांचवां और सातवां अक्षर लघु तथा अन्य अक्षर गुरु होते हैं।

सुमानिन् (सं० त्रि०) स्वाभिमानी, बड़ा अभिमानी।

सुमाय (सं० त्रि०) १ मायायुक्त। २ अत्यंत बुद्धिमान्। (पु०) ३ असुर। ४ विद्या।

सुमायक (स० पु०) सुमाय देखो।

सुमारुत (सं० क्ली०) शोभमान मरुतोंका गण।

सुमार्ग (सं० पु०) उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता।

सुमार्त्स्न (सं० त्रि०) अत्यन्त सुन्दर।

सुमाल (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपदका नाम।

सुमालती (सं० स्त्री०) एक वर्ण वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें छः अक्षर होते हैं जिनमेंसे दूसरा और पांचवां अक्षर लघु तथा बाकी गुरु होते हैं।

सुमालिन्—सुमाली देखो।

सुमालिनी (सं० स्त्री०) १ सुमाली देखो। २ एक गन्धर्वोंका नाम।

सुमाली (सं० पु०) राक्षसविशेष। इसका हाल रामायणमें यों लिखा है,—राक्षसश्रेष्ठ सुकेशने ग्रामणी नामक गन्धर्वकी कन्या देववतीको ब्याहा। देववतीके गर्भसे तीन पुत्र उत्पन्न हुए, माल्यवान्, सुमाली और माली। सुमालीकी स्त्री केतुमती थी। सुमाली आदि राक्षसगण महादेवके वरसे गर्वित हो देवता, ऋषि, नाग और यक्षोंको भगाने लगे। तब उन लोगोंने कोई उपाय न देख महादेवकी शरण ली। महादेव देवताओंको ले कर विष्णुके पास गये, सबोंने अपना अपना दुखड़ा रोया। विष्णुने उन्हें अभय दे कर कहा, 'शिवके वरसे राक्षसगण बड़े गर्वित हो गये हैं, मैं शीघ्र ही उनका विनाश करूंगा।'

सुमाली आदि राक्षसगण देवताओंका यह वृत्तान्त सुन कर उन लोगोंको विनाश करनेके लिये सभी युद्धसज्जासे सज्जित हो अग्रसर हुए। देवता और राक्षसमें तुमुल संग्राम छिड़ गया। पीछे स्वयं विष्णु इन राक्षसोंका वध करनेके लिये देवताओंके साथ मिल गये। अब विष्णुके साथ तुमुल संग्राम चलने लगा। विष्णुने सुदर्शनचक्रसे मालीका शिर काट डाला। मालीका सब मरे विष्णु द्वारा निहत देख माल्यवान् और सुमाली राक्षस आकाशसे शीघ्र ही सागरजलमें कूद पड़े पीछे विष्णुके भयसे भयभीत हो सुमाली बहुत दिनों तक पातालमें रहा।

एक दिन सुमाली अपनी अविवाहिता कैकसी नाम की कन्याको ले कर मर्त्यलोक गया और वहां चारों ओर परिभ्रमण कर लङ्काके अधीश्वर बन सुखसे रहने लगा। इसी समय कुवेरको देख कर वह पुनः डरके मारे पातालपुरमें घुस गया।

अनन्तर सुमालीने कोई उपाय न देख कन्यासे कहा, 'पुत्रि! तुम्हारा विवाहकाल प्रायः बीत चला, इसलिये तुम प्रजापति-कुल-सम्भूत पुलस्त्यनन्दन विश्रवाके पास जा कर उन्हें अपना पति वरो।' कन्या पिताका यह आदेश पा कर विश्रवामुनि जहां तपस्या करते थे, वहीं गई। विश्रवाने योगबलसे कन्याके आनेका कारण जान कर कहा, 'तुम दारुण समयमें आई हो। इससे तुम खलस्वभाव भीषणाकृति राक्षस प्रसव करोगी। परन्तु कनिष्ठ पुत्र मेरे वंशानुरूप धर्मात्मा होगा।'

अनन्तर उस कन्याके गर्भ और विश्रवाके औरससे रावण, कुम्भकर्ण और शूर्पणखा तथा सबसे पीछे विभीषणने जन्मग्रहण किया। रावण और कुम्भकर्णने घोर तपस्या करके ब्रह्मासे वर पाया और उस वरसे वे अत्यन्त गर्वित हो उठे। पीछे सुमाली रावणके वर पानेका हाल सुन कर निर्भय हो गया और अनुचरोंके साथ पातालसे बाहर निकला।

सुमालीके उपदेशसे रावणने कुवेरको परास्त कर लङ्का पर अधिकार जमाया। पीछे वह देव दानव आदिसे अपराजेय हो कर इसी लङ्कापुरीमें सुखसे रहने लगा। अनन्त सभी राक्षस पहलेकी तरह दृप्त हो उठे। (रामायण उत्तराकाण्ड ६-२० स०) रावण और कुम्भकर्ण देखो। २ असुरविशेष, सुमाली, माली आदि असुरगण वृत्रासुरके अनुचर और अत्यन्त दुर्द्धर्ष थे।

सुमाली—अरबजातिभेद। अफ्रिकाके उपकूलमें, आदेन और अरब देशके पश्चिम उपकूलमें इन लोगोंका वास है। जो समुद्रके किनारे रहते हैं, वे क्रीतदास अथवा क्रीतदासके वंशधर हैं। ये लोग पहले अफ्रिका महादेशके अभ्यन्तर भागमें रहते थे, पीछे दासव्यवसायी उन्हें यहाँ ले आये हैं। ये लोग कमरमें एक खण्ड सफेद धोती बांध कर लज्जा निवारण करते हैं। उसकी एक छोर छाती और कंधेसे होती हुई पीठको और लटकी रहती है। इसी प्रकार एक वस्त्रके अलावा स्त्रियां कमरमें एक पतला चमड़ा भी लपेट लेती हैं और वक्षःस्थलको एक दूसरे चमड़ेसे ढकती हैं। पुरुष लंबे लंबे घुंघराले बाल रखते हैं। भेड़की चर्बीसे वे बालोंको चिकने करते हैं। बालोंके ऊपरी भाग पर एक मांस सिद्ध करनेके लोहेकी सीककी तरह रखते हैं। इससे कंघेका काम भी चलता है और बाल भी यथा-स्थान पर रहते हैं।

सुमाल्य (सं० पु०) १ नन्दके पुत्र एक राजाका नाम। भागवतमें लिखा है, कि कलिमें नवनन्द अर्थात् जो नन्दवंशी राजा इस पृथ्वीका शासन करेंगे। राजा नन्दके

सुमाल्यप्रमुख आठ पुत्र होंगे तथा ये सभी पृथ्वीका शासन करेंगे। (१२।२।११-१२) (क्ली०) २ उत्तम माल्य, सुन्दर माला। (त्रि०) ३ उत्तम माल्यधारी, सुन्दर माला पहननेवाला।

सुमाल्यक (सं० पु०) पुराणके अनुसार एक पर्वतका नाम।

सुमित (सं० त्रि०) सु-मा क्त। १ निर्मित, बना हुआ। (ऋक् १०।३०६) २ उत्तम रूपसे घरमें स्थापित।

सुमिति (सं० स्त्री०) सु मा-क्तिन्। सुन्दर बुद्धि या सुन्दर परिमाण। (ऋक् ३।८।३)

सुमित्र (सं० पु०) १ चौबीस अर्हत्। पिताओंके अन्तर्गत बीसवां अर्हत्-पिता। (हेम) २ इक्ष्वाकु वंशके अन्तिम राजा सुरथके पुत्रका नाम। (विष्णुपु० ४।२६ अ०) ३ एक मन्त्रद्रष्टा ऋषिका नाम। ४ सौवीरके एक राजाका नाम। ५ मिथिलापति। ६ अभिमन्युके सारथिका नाम। ७ गदके एक पुत्रका नाम। ८ शमीकका एक पुत्र। ९ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। १० अग्निमित्रका एक पुत्र। ११ वृष्णिका एक पुत्र। १२ एक दानवका नाम। १३ श्यामका एक पुत्र। (त्रि०) १४ उत्तम मित्रोंवाला। (ऋक् १।६१।१२)

सुमित्र—सौराष्ट्रके अन्तिम राजा। भागवतमें इन्हे अन्तिम राजा कहा है। इन्होंने राजपूतानेमें जा कर मेवाड़के राणावंशकी स्थापना की थी। कर्नल टाडके अनुसार ये विक्रमादित्यके (खृ० पू० ५७ अ०)के समसामयिक थे।

सुमित्रभू (सं० पु०) १ जैनियोंके चक्रवर्ती राजा सगरका नाम। २ वर्तमान अवसर्पिणीके बीसवें अर्हत्का नाम।

सुमित्रा (सं० स्त्री०) १ राजा दशरथकी पत्नी, लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता। राजा दशरथकी कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा ये तीन प्रधाना महिषी थीं। सुमित्राके गर्भसे दो पुत्र हुए, ज्येष्ठ लक्ष्मण और कनिष्ठ शत्रुघ्न। दशरथ देखो। २ मार्कण्डेयकी माता। ३ जयदेवकी माता।

सुमित्रानन्दन (सं० पु०) लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमित्र्य (सं० त्रि०) जिसके अच्छे मित्र हों, उत्तम मित्रवाला। (ऋक् १०।६५।३)

सुमिरनी (हिं० स्त्री०) सुमरनी देखो।

सुमीन (सं० पु०) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

सुमुख (सं० पु०) १ गरुडके एक पुत्रका नाम। (भागवत ५।१०।१२) २ गणेश। ३ एक नागासुर। (शब्दरत्ना०) ४ शिव। ५ द्रोणके एक पुत्रका नाम। ६ एक असुर। ७ किन्नरोंका राजा। ८ पण्डित, आचार्य। ९ एक ऋषि। १० एक वानर। ११ एक प्रकारका शाक। १२ एक राजाका नाम। १३ राजिका, राजसर्षप, राई। १४ एक प्रकारका जलपक्षी। १५ श्वेत तुलसी। १६ वनबर्बरी, वनतुलसी। (क्ली०) १७ नखक्षतविशेष, नाखूनका जखम। १८ सुन्दर मुख। (त्रि०) १९ सुन्दर मुखवाला। २० मनोज्ञ, मनोहर, सुन्दर। २१ कृपालु, अनुकूल २२ प्रसन्न।

सुमुखसू (सं० पु०) १ गरुड। उत्तमानन पिता।

सुमुखा (सं० स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री। २ सुन्दर आननयुक्ता, सुन्दर चेहरावाली। ३ दर्पण, आइना।

सुमुखी (सं० स्त्री०) सुमुख (स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्। पा ४।१।५४) इति ङीष्। १ वह स्त्री जिसका मुख सुन्दर हो, सुंदर मुखवाली स्त्री। २ संगीतमें एक प्रकारकी मूर्छना। ३ एक अप्सराका नाम। ४ नील-अपराजिता, नीली कोयल। ५ शङ्खपुष्पी, शंखाहुली, कौड़ियाली। ६ एक वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें ११ अक्षर होते हैं जिनमेंसे पहला, आठवाँ तथा ग्यारहवां लघु और अन्य अक्षर गुरु होते हैं।

सुमुण्डीक (सं० पु०) असुरविशेष।

सुमुष्टि (सं० पु०) १ विषमुष्टि, बकायन। (त्रि०) २ उत्तम मुष्टियुक्त, दृढ़ मुष्टि।

सुमुहूर्त्त (सं० पु० क्ली०) शुभमुहूर्त्त, उत्तम समय।

सुमूर्त्ति (सं० पु०) शिवके एक गणका नाम।

सुमूल (सं० पु०) १ श्वेत शिग्रु, सफेद सहिंजन। (क्ली०) २ उत्तम मूल। (त्रि०) ३ उत्तम मूलवाला, जिसकी जड़ अच्छी हो।

सुमूलक (सं० क्ली०) गर्जर, गाजर।

सुमूला (सं० स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन।

सुमूर्षित (सं० त्रि०) विडम्बित, वञ्चित, प्रतारित।

सुमृग (सं० स्त्री०) वह भूमि जहां बहुतसे जङ्गली जानवर हों, शिकार खेलनेके लिये अच्छा मैदान।

सुमृडीक (सं० त्रि०) अति सुखायुक्त, बहुत सुखी।

सुमृत्यु (सं० पु०) १ उत्तम मृत्यु। (त्रि०) २ उत्तम मृत्युयुक्त, जिसकी मृत्यु उत्तमरूपसे हुई हो।

सुमृष्ट (सं० त्रि०) सु मृज-क्त। सुपरिष्कृत।

सुमेक (सं० त्रि०) सुदीप्त, अतिशय दीप्त। (ऋक् ४।६।३)

सुमेखल (सं० पु०) १ मुञ्जतृण, मूंज। (त्रि०) २ उत्तम मेखलायुक्त।

सुमेघ (सं० पु०) १ उत्तम मेघ। (त्रि०) २ उत्तम यज्ञ विशिष्ट। (ऋक् ८।५।६)

सुमेघ (सं० पु०) रामायणके अनुसार एक पर्वतका नाम।

सुमेध (सं० स्त्री०) सुमेधा देखो।

सुमेधस् (सं० स्त्री०) १ ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी। (त्रि०) २ सुबुद्धि, उत्तम बुद्धिवाला।

सुमेधा (सं० त्रि०) १ सुबुद्धि, बुद्धिमान्। (ऋक् १०।४३।६) २ चाक्षुष मन्वन्तरके एक ऋषिका नाम। ३ पांचवें मन्वन्तरके विशिष्ट देवता। ४ वेदमितके एक पुत्रका नाम। ५ पितरोंका एक गण या भेद।

सुमेरु (सं० पु०) सुष्ठु मिनोति क्षिपति ज्योतींषि इति सु-मि (मिपीभ्यां रुः। उण् ४।१०१) इति रु। १ पर्वत विशेष, पृथिवीका मध्यस्थ पर्वत। पर्याय—मेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय, अमराद्रि, भूस्वर्ग। २ पृथिवीका उत्तरीय प्रान्त। ३ जपमाला मध्यस्थित गुटिका। ४ सर्वश्रेष्ठ। ५ विद्याधर विशेष। ६ शिव। (त्रि०) ७ अति सुन्दर।

सुमेरु पर्वतका विषय श्रीमद्भागवतमें इस प्रकार लिखा है—

यह भूमण्डल एक प्रकाण्ड पद्मस्वरूप है। सप्त द्वीप उसका कोष है। इसकी लम्बाई दश लाख योजन और चौड़ाई लाख योजन है। इस द्वीपमें नौ वर्ष हैं। वे सब वर्ष सीमापर्वत द्वारा एक दूसरेसे विभक्त हैं। उन नौ वर्षोंमें इलावृत नामक वर्ष अभ्यन्तरवर्ष है। उसके मध्यस्थलमें कुल पर्वतके राजा सुमेरु नामक एक पर्वत है। यह पर्वत सुवर्णमय है। उसकी ऊंचाई उक्त द्वीपके विस्तारके बराबर है। इस पर्वतका मस्तक भाग बत्तीस हजार योजन, मूलदेश सोलह हजार योजन और मध्यभाग सहस्र योजन है। यह भूमण्डल स्वरूप प्रकाण्ड कमलकी कर्णिकाकी तरह खड़ा है।

उक्त सुमेरु पर्वतके चारों ओर मन्दर, मेरु मन्दर, सुपार्श्व और कुमुद नामक चार अवष्टम्भ पर्वत हैं। उन पर्वतोंमेंसे प्रत्येककी चौड़ाई और ऊंचाई दश हजार योजन है। इन चार पर्वतोंमें पूर्व और पश्चिम ओरका पर्वत दक्षिणोत्तर और दक्षिणोत्तर ओरका पर्वत पूर्व-पश्चिमकी ओर विस्तृत है।

उक्त चार पर्वतों पर यथाक्रम आम्र, जम्बू, कदम्ब और वट ये चार वृक्ष हैं। उन सब वृक्षोंका विस्तार सौ योजन है। यहां चार उद्यान हैं। उन सब उद्यानोंके नाम हैं,—नन्दन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र। देवगण इन सब उद्यानोंमें सुर बालाओं-के साथ विहार करते हैं। उन लोगोंके उद्यानमें जाते समय गन्धर्वगण उनकी महिमा गाते हैं।

उक्त मन्दर पर्वतकी गोद पर देवचूत नामक एक वृक्ष है। उसकी ऊंचाई भी ग्यारह सौ योजन है। मेरु पर्वत पर जो जम्बूवृक्ष है, उन वृक्षोंके फल अति स्थूल और बीज अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। वे फल ऊपरसे नीचे गिर कर फट जाते हैं। उनके रससे जम्बूनदी नामक नदी बह गई है। उस नदीके दोनों किनारेकी मिट्टी जम्बूफलके रससे तराबोर हो वायु और सूर्य द्वारा अच्छी तरह परिपाक होता है और पीछे उससे जम्बूनद नामक सुवर्ण उत्पन्न होता है। इस सुवर्ण द्वारा सुर बालाओंके नाना प्रकारके अलङ्कार बनते हैं।

कुमुद पर्वत पर शतवल्श नामक जो वटवृक्ष है, उसके स्कन्धदेशसे दधि, दुग्ध, घृत, मधु, गुड़, अन्न आदि, वसन भूषण, शयन, आसनादि सभी अभिलषित वस्तु निकल कर पर्वतके अग्रभागसे निकली हुई नदियों में गिरती हैं और उन नदियोंसे इलावृत-वर्षवासी लोगों का बड़ा उपकार होता है। क्योंकि वे सब वस्तु खानेसे उन्हें अङ्गवैवर्ण्य, क्लान्ति, घर्म, जरा, रोग, अपमृत्यु, शीत या उष्ण जन्य वैवर्ण्य कुछ भी नहीं होता। यावज्जीवन वे लोग अत्यन्त सुखसे दिन बिताते हैं।

सुमेरुके मूलदेशमें कुरङ्ग, कुरर आदि पर्वत चारों ओर खड़े हैं। वे सब पर्वत कर्णिकाकी तरह अवस्थित हो सुमेरु पर्वतके केशर स्वरूप हो रहे हैं।

इस सुमेरुके पूर्व ओर जठर और देवकूट पर्वत है। प्रत्येक पर्वत उत्तर ओर अठारह योजन विस्तृत और दो हजार योजन उच्च है। इसी प्रकार पश्चिमको ओर पवन और पारियात्र पर्वत हैं। दक्षिण ओर कैलाश और करवीर गिरि हैं। वे सब पर्वत पूर्वकी ओर विस्तृत हैं। उत्तरी दिशामें त्रिश्रृङ्ग और मकर पर्वत हैं। इसी प्रकार मूलसे हजार योजन छोड़ कर चारों ओर अग्निकी परिधिकी तरह उन आठ पर्वतोंसे वेष्टित हो सुमेरु पर्वत शोभा दे रहा है। इस सुमेरु पर्वतके मस्तक पर भगवान् ब्रह्माकी पुरी विरचित है। इसका विस्तार सहस्र अयुत योजन है। वह पुरी चौकोन और सोनेकी बनी है। उस पुरीके पीछे चारों ओर इन्द्रादि आठ लोकपालकी आठ पुरी हैं। इन सब पुरियोंका वर्ण इन्द्र प्रभृति दिक्पालोंके वर्णानुरूप है तथा प्रत्येकका परिमाण ब्रह्मपुरी परिमाणका चतुर्थांश है अर्थात् ढाई हजार योजन है। (भागवत० ५।१६ अ०)

भागवतमें और भी लिखा है, कि मानसोत्तरमें सुमेरुके पूरव इन्द्रसम्बन्धिनी जो पुरी है, उसका नाम देवधानी है, दक्षिण ओर यमसम्बन्धिनी जो पुरी है, संयमनी उसका नाम है। पश्चिम ओरकी वरुणसम्बन्धिनी पुरीका नाम निम्लोचनी और उत्तर ओरकी इन्द्रसम्बन्धिनी पुरीका नाम विभावरी है। उन सब पुरियोंमें सुमेरुके चारों ओर विशेष विशेष समयमें सूर्यका उदय, मध्याह्न, अस्त और अर्द्धरात्र हुआ करता है। वे सब उदयादि ही प्राणियोंकी प्रवृत्ति और निवृत्तिके कारण हैं। अर्थात् सूर्यका उदयादि उपलक्ष करके ही प्राणियोंकी चेष्टादि हुआ करती है। किन्तु जो सब प्राणी सुमेरु पर अवस्थित हैं, दिवाकर उन्हें दिवा मध्यगत हो ताप देते हैं।

यह सुमेरु पर्वत सुवर्णमय है। इसके तीन प्रधान शृङ्गों पर इक्कोस स्वर्ग विराजित हैं। देवगण उन सब स्वर्गोंमें सुखसे रहते हैं। यह पर्वत सभी पर्वतोंमें श्रेष्ठ हैं। (नरसिंह पु० ३० अ०) मत्स्यपुराण ८५ अ०, कूर्मपुराण आदिमें इसका विशेष विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां पर नहीं लिखा गया।

इस सुमेरु पर्वत और लङ्कासे सूर्यकी रेखाकी कल्पना की जाती है जिसके द्वारा सूर्यकी गति जानी जाती है। सूर्य शब्द देखो।

सुमेरु—भौगोलिकगण शीतप्रधान सुमेरु प्रदेशको जिस वृत्तरेखा द्वारा विभक्त करते हैं, उसका नाम सुमेरुमण्डल है और उस प्रदेशका सर्वोत्तरकेन्द्र प्रकृत उत्तर मेरु या सुमेरु कहलाता है। सुमेरुमण्डल अक्षा० ६६° ३२' उ० से सुमेरुकेन्द्र तक विस्तृत है। जो कल्पित वृत्तरेखा उसे वेष्टन की हुई है, सुमेरु केन्द्रसे उसकी दूरी १४०८ भौगोलिक मील है। इस विस्तीर्ण प्रदेशके ऐसे लाखों वर्गमील स्थान हैं जो आज भी लोगोंके अज्ञात हैं। प्रचण्ड शीत पड़ने और बर्फके ऊपर जाने आनेमें बड़ी दिक्कत होनेसे किसीको भी उसके आविष्कार करनेका साहस नहीं होता। फिर भी इस विषयमें पाश्चात्य भौगोलिकगण अभी शिरतोड़ परिश्रम कर रहे हैं।

सुमेरु प्रदेश दक्षिणकी ओर आ कर यूरोप और अमेरिकाकी उत्तरसीमान्त रेखा पार कर भी कुछ दूर नीचे उतर आया है। इसकी दक्षिण सीमा इन सब महादेशोंके अंश और उत्तर अटलाण्टिक महासमुद्रको तथा डेभिस और वेरिं प्रणालीकी जलराशि द्वारा परिवेष्टित है। सुमेरु मण्डलकी परिधिकी कुल लम्बाई ८६४० मील है—उनमेंसे अटलाण्टिक महासागरके ६६०, डेभिस प्रणालीको १६५ और वेरिं प्रणालीकी ४५ मील हैं। यह जो विस्तीर्ण भूमिखण्ड कालरको तरह इसे वेष्टन किये हुए है, इससे तथा एशिया, यूरोप और अमेरिकाके सुमेरु प्रान्तवर्ती अंशोंके उत्तर जो सब द्वीपपुञ्ज हैं उनसे बर्फ-स्रोतकी गति और प्रवाह-पथ बहुत कुछ नियन्त्रित होता है। अटलाण्टिक महासागर और डेभिस प्रणालीके मध्य ग्रीनलेण्डका सुविस्तीर्ण भूभाग अवस्थित है। यह सुमेरु सीमान्त रेखाको पार कर ५८ ४८' उ० अक्षा० रेखा पर विदाय (फेयर-वेल अन्तरीप)में आ शेष हुआ है।

सुमेरुप्रदेशका क्षेत्रफल ८२०१८८३ वर्गमील है, उनमेंसे आज भी अर्द्धपरिमित स्थान आविष्कृत नहीं हुए हैं। जहां तक मालूम हुआ है, उससे यहांके शीतातप, वायु, बर्फ और अधिवासियोंके सम्बन्धमें निम्नलिखित बातें संक्षेपमें कही जा सकती हैं—

शीतातप—सुमेरुप्रदेशके जिस अंशमें उत्तर अमेरिका और जिस अंशमें पूर्वसाइबेरिया है, उन दोनों अंशमें शीतकी बड़ी ही अधिकता है। बेरिं प्रणाली और स्पिटसवर्जन सागरोंके मध्यवर्त्ती प्रदेशमें शीतकी प्रबलता बहुत कम है। इस वैषम्यका कारण यह है, कि प्रथमोक्त प्रदेश वर्फसे एकदम ढका है। वहां जो वर्फ जमता है, वह भी एक जगह स्थिर न रह कर नाना स्थानोंमें घूमता रहता है। वायुप्रवाहकी गति द्वारा भी शीतातपका परिमाण और वर्फकी गतिविधि अच्छी तरह जानी जाती है। जब वर्फसे ढके हुए अभ्यन्तर प्रदेशमें वायु बहने लगती है, तब ठंढ ज्यादा पड़ती है। ग्रीनलैण्डके चारों ओर शीतका विशेष तारतम्य देखा जाता है। एक मेरुप्रदेशान्तर्गत अमेरिका और पारिद्वीपपुञ्जका ग्रनलैण्ड शीत और दूसरी ओर गल्फष्ट्रीमकी अवस्थितिके कारण सुखोष्णता मालूम होती है। दक्षिणदिक्‌से जो वायु बहती है, उसमें शीतकी अधिकता देखी जाती है। किंतु पूर्व और दक्षिणपूर्व ओरसे जो वायु बहती है, उससे ताप बढ़ता है।

वर्फ—समुद्रका जल जब जमना शुरू होता है, तब उससे लवणका भाग पृथक् हो जाता है और २८° डिग्रीमें जल जम कर वर्फमें परिणत होता है। यहां नाना भावोंमें वर्फका समावेश देखा जाता है। कभी कभी वर्फ एक साथ इतना जम जाता है, कि वह समुद्रकी तरह अपार असीम सा मालूम होता है। कभी कभी खण्ड-खण्ड वर्फकी राशि आ कर वायुप्रवाहकी शक्तिमें मिल जाती है। एक वर्षमें जो वर्फ जमता है, उसकी गहराई साधारणतः ७ फुट तक होती है, किन्तु क्रमशः वह गहराई बढ़ती जाती है। वर्फसमुद्रकी गहराई ८०से १०० फुट तक देखी गई है। बड़े बड़े वर्फका खण्ड समुद्रके जलमें बहता दिखाई देता है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ६०से ३०० फुट तक होती है। ग्रीनलैण्डका प्रधान वर्फखण्ड ६२० फुट गहरा और १८४२० फुट चौड़ा है। ग्रीष्मऋतुके समय यह प्रति दिन प्रायः ४७ फुट करके बढ़ता है।

स्रोत—सुमेरुप्रदेशके समुद्रमें मुक्त जलका स्रोत हमेशा उत्तरकी ओर बहता है, किन्तु वर्फके जलका स्रोत ठीक उसका विपरीतगामी है। अमेरिका और एशियाके उत्तरप्रान्तमें बहुत-सी विस्तृत नदियोंके मुहानोंसे अनवरत उष्ण जलस्रोत आ कर वर्फोंको उपकूलसे बहुत दूर बहा ले जाता है। नोरवे और लैपलैण्डसे जो जलप्रवाह निकल कर उत्तरकी ओर गया है, उसके लिये इन दोनों स्थानोंका उपकूल प्रदेश वर्फसे विमुक्त रहता है। सुमेरु प्रदेशसे जो दक्षिणाभिमुखी स्रोत बहता है, वह डेभिस प्रणाली और ग्रीनलैण्डके पूर्ववर्त्ती समुद्रपथसे अग्रसर हो पीछे एक डेभिसप्रणाली हो कर हो दक्षिणकी ओर बह गई है। ग्रीनलैण्डके पूर्व-उपकूलसे जो स्रोत दक्षिणकी ओर बहता है, उसके साथ बहुतसे वर्फके खण्ड बहते देखे जाते हैं। ग्रीनलैण्डका यह स्रोत पश्चिमकी ओर जा कर फेयरवेल अन्तरीपके उत्तरसे ६४° ६′ तक बह गया है और वहां बाफिनस-बे नामक उपसागरसे जो स्रोत आता है, उसीके साथ मिला है। यह सम्मिलित स्रोत वर्फोंको अपने साथ बहाते लाब्राडो उपकूलसे ले कर दक्षिणकी ओर न्युफाउण्डलैण्ड तक चला गया है। सुमेरु प्रदेशसे जो एक और दक्षिणाभिमुखी स्रोत बहता है, वह पारिद्वीपोंकी सभी प्रणाली और खाड़ी तथा पयुरी और हेकला प्रणाली होता हुआ बाफिनसवे और डेभिसप्रणाली तक आया है।

वर्फका समुद्र—जो अपरिमेय वर्फकी राशि इस प्रदेशमें जमा होती है, उनमेंसे बहुत थोड़ा इस दक्षिणाभिमुखी स्रोत द्वारा निम्नदेशमें आता है। अधिकांश क्रमागत मिलित, वर्द्धित और स्तूपीकृत हो समुद्र-पृष्ठ पर एक अद्भुत महादेशमें परिणत होता है। जगह जगह वर्फका पहाड़ सौ फुट तक ऊपर उठ गया है।

उपकूलके अधिवासी—यूरोप, एशिया और अमेरिकाका जो अंश मेरुदण्डके मध्य पड़ता है, वहीं मानवजातिका वास दृष्टिगोचर होता है। इसके सिवा ये लोग यूशियाके उपकूल तथा डेभिसप्रणाली और बाफिनस-बे उपसागरके दोनों किनारे भी बस गये हैं। साधारणतः मछली पकड़ कर इन्हें जीवनधारण करना पड़ता है। यही कारण है, कि ये लोग खास कर समुद्रके किनारे ही वास करते हैं। स्पिटसबर्जन, फ्रान्सजोसेफलैण्ड और नव जेमब्लाके लोग नहीं दिखाई देते। यूरोपका जो

अंश मेरुमण्डलके अन्तर्गत है, उसके अधिवासीको लाप कहते हैं। सामोयेद लोग कारासागरके किनारे और यालमस उपद्वीपमें वास करते हैं। लाप तथा सामोयाद लोग वल्गा हरिण पोसते हैं तथा शीत आरंभ होने पर समुद्रतीर छोड़ अभ्यन्तर प्रदेशमें प्रवेश करते हैं। साइबेरियाके किनारे एक समय जो आबादी थी, उसका प्रमाण मिलता है। ये लोग एकदम निर्वंश हो गये हों या अभ्यन्तर प्रदेशकी ओर हट गये हों। वर्त्तमान कालमें कलमासे बेरिं प्रणाली तक विस्तृत साके तचेर्मोके शिविरके वास नहीं आनेसे मनुष्यका साक्षात् नहीं होता। एसकिमो नामकी एक जातिको 'मेरुमण्डलस्थ अमेरिकाके सर्वांश और ग्रीनलैण्डके किनारे वास करते देखा जाता है। अमेरिकाके उत्तर जो द्वीपपुञ्ज है उसमें तथा चतुष्पार्श्ववर्त्ती विस्तीर्ण प्रदेशमें आबादी बिलकुल नहीं है। १८१८ ई०में जान रसने जिनका आर्कटिक हाइलैण्डका नाम रखा था, मालूम होता है, कि वही जाति पृथिवीकी सर्वोत्तर प्रदेशवासी है। ये लोग ग्रीनलैण्डके उपकूल पर ७६ से ७९ तक वास करते हैं। डेनमार्कके एसकिमो लोग औपनिवेशिकोंके साथ मिल गये हैं। उसके फलसे जिस वर्णसङ्कर जातिका उद्भव हुआ है, १८५५ ई०में उसकी संख्या कुल अधिवासियोंमें सैकड़े पीछे ३०के हिसाबसे निर्द्धारित हुई थी। अभी शुद्ध औपनिवेशिक कोई है या नहीं, सन्देह है। ग्रीनलैण्डके पूर्वी किनारे कुछ विक्षिप्त परिवार भी देखे जाते हैं।

अभी सुमेरुप्रदेश चिरतुषारमण्डित जनसाधारणके वसवासयोग्य नहीं होने पर भी अति पूर्वकालमें इस स्थानका प्राकृतिक संस्थान ऐसा नहीं था। भूतत्त्वविदोंने प्रमाणित किया है, कि आज जो स्थान चिर् तुषारमय होनेसे जनसाधारणका कष्टदायक और असह्य है तथा उपादेय फलमूल वृक्षादि उत्पादनके अनुपयोगी है, वह उत्तर महादेश (Arctic Regions) एक समय आर्य जातिका नन्दनकानन (Paradise) समझा जाता था। प्रायः बारह हजार वर्ष पहले इस चिरसुन्दर भूभागमें हिमप्रलय होनेसे सम्पूर्ण प्राकृतिक विपर्यय हो गया है। जिस समय हिमप्रलय नहीं रहा, जब तक तुषारसम्पातसे उक्त प्रदेशका प्राकृतिक परिवर्त्तन नहीं हुआ, उस अतीत एशिया और यूरोपका सर्वोत्तर भूभाग शीतलग्रीष्म तथा उष्णशीत ऋतुमण्डित था अर्थात् चिरवसन्तविराजित सभी उपादेय फलमूलोंका उद्यान स्वरूप था वह भी प्रायः २१ हजार वर्ष पहलेकी बात है। सुपण्डित बालगङ्गाधर तिलक महाशयने जगत्के आदिग्रंथ ऋक्संहितासे प्रमाण प्रसङ्ग उद्धृत किया। उस प्राचीन कालसे ही वैदिक आर्यों में सभ्यताका स्रोत बहता था, तभीसे लोग नाना यागयज्ञ और ज्योतिषिक तत्त्वसे अवगत थे। उस सुदूर अतीतकालमें हिमप्रलयके समय भीषण तुषार समुद्रको तरङ्गने आ कर चिरवसन्त विराजित सुमेरुको विध्वस्त और लाखों प्राणीका संहार किया। उस समय उस लोकक्षयकर दारुण तुषारप्लावनसे जिन सब महात्माओंने आत्मरक्षामें समर्थ हो पामिर नामक एशियाके सर्वोच्च स्थानमें आ उपनिवेश स्थापन किया, उन्होंने अथवा उनके वंशधरोंने उस आदि वासभूमिके नामानुसार नववासका भी 'सुमेरु' नाम रखा था। इस सुमेरुका विवरण नाना पुराणोंमें आया है तथा यही स्थान अभी 'पामिर' कहलाता है।

वेद और वर्षा लिपि शब्द देखो।

सुमेरुजा (सं० स्त्री०) सुमेरु पर्वतसे निकली हुई नदी।

सुमेरुवृत्त (सं० पु०) वह रेखा जो उत्तर ध्रुवसे २३॥० अक्षांश पर स्थित है।

सुमेरुसमुद्र (सं० पु०) पृथ्वीके उत्तरमेरुका चतुष्पार्श्ववर्ती समुद्र, उत्तर महासागर। (Arctic ocean)

सुम्न (सं० क्ली०) १ सुख। (ऋक् १।१०७।१) २ सुखेच्छा।

सुम्नयु (सं० त्रि०) अपने धनका अभिलाषी।

सुम्नहू (सं० त्रि०) सुखसुर, आनन्दवर्द्धक।

सुम्नावत् (सं० त्रि०) सुखयुक्त, सुखी।

सुम्नावती (सं० स्त्री०) सुखविशिष्टा।

सुम्नी (सं० त्रि०) सुम्न अस्त्यर्थे इनि। १ दयालु, कृपालु। २ अनुकूल।

सुम्पलुण्ड (सं० पु०) कपूर, कपूर।

सुम्म (सं० पु०) देशविशेष। (शब्दरत्ना०)

सुम्मा (हि० पु०) बररा।

सुम्मी (हिं० स्त्री०) १ सुनारोंका एक औजार जिससे वे

घुंडी और बरेओंको नोक उभाडते हैं। २ सुंबी देखो।
सुम्मीदार सबरा (हिं० पु०) वह सबरा जिससे कसेरे बरतनमें सुंदकी निकालते हैं।
सुम्मुनि (सं० पु०) राजभेद। (राजतर०)
सुम्ह (हिं० पु०) एक जातिका नाम।
सुम्हार (हिं० पु०) एक प्रकारका धान जो युक्त-प्रदेशमें होता है।
सुयज् (सं० त्रि०) सु यज्-क्विप्। शोभन यागकारी।
सुयज्ञुम् (सं० पु०) महाभारतके अनुसार भूमन्युके पुत्रका नाम।
सुयज्ञ (सं०पु०) सु शोभनो यज्ञः। १ उत्तम यज्ञ। २ रुचि प्रजापतिके एक पुत्रका नाम जो आकूतिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। ३ वसिष्ठके एक पुत्रका नाम। ४ ध्रुवके एक पुत्रका नाम। ५ उशीनरके एक राजाका नाम। (त्रि०) ६ उत्तमता या सफलतासे यज्ञ करनेवाला, जिसने उत्तमतासे यज्ञ किया हो।
सुयज्ञा (सं० स्त्री०) महाभौमकी पत्नीका नाम।
सुयत (सं० त्रि०) सु यम क्त। १ सुसंयत, उत्तमरूपसे संयत। २ जितेन्द्रिय।
सुयतात्मव्रत् (सं० पु०) ऋषि।
सुयन्तु (सं० त्रि०) सुगमन, उत्तम गमनविशिष्ट।
सुयन्त्रित (सं० त्रि०) १ सुनियमित। २ उत्तम वाद्य या वाद्यध्वनियुक्त।
सुयम (सं० त्रि०) १ शोभन नियमन। २ लोकतत्त्वसञ्चार। (पु०) ३ देवगणभेद। रुचि नामक प्रजापतिकी भार्या आकूती थी। इसी आकूतिसे सुयज्ञका जन्म हुआ। इस सुयज्ञसे सुयम देवगणकी उत्पत्ति हुई है। (भागवत २।७।२)
सुयमा (सं० स्त्री०) प्रियंगु।
सुयवस (सं० त्रि०) १ शोभनान्न, सुष्ठु रूपसे यज्ञमार्गगामी। २ शोभन तृणविशिष्ट।
सुयवसाद (सं० त्रि०) शोभन घासादिभक्षक।
सुयवसिन् (सं० त्रि०) शोभन तृणयुक्त।
सुयवस्यु (सं० त्रि०) शोभन तृणाभिलाषी।
सुयश (सं० त्रि०) १ अति यशस्वी, उत्तम यशवाला, सुनाम। (पु०) २ अशोकवर्द्धनके पुत्र।
सुयशा (सं० स्त्री०) १ दिवोदासकी पत्नीका नाम। २ एक अर्हत्की माताका नाम। ३ परीक्षितकी एक स्त्रीका नाम। ४ एक अप्सराका नाम। ५ अवसर्पिणी।
सुयष्टव्य (सं० पु०) रैवत मनुके एक पुत्रका नाम।
सुयाति (सं० पु०) नहुषके पुत्रका नाम। (हरिवंश)
सुयाम (सं० त्रि०) १ अतिशय विस्तृत, बहुत फैला हुआ। (ऋक् ३।७।६) (पु०) २ ललितविस्तरके अनुसार एक देवपुत्रका नाम।
सुयामुन (सं० पु०) १ विष्णु। २ वत्सराज। ३ प्रासाद, राजभवन। ४ एक प्रकारका मेघ। ५ एक पर्वतका नाम।
सुयाशुभ्रा (सं० स्त्री०) अतिशय शोभन मुखयुक्ता या अतिशय शोभनपुत्रविशिष्टा, जिसके मुंह या पुत्र अच्छे हों। (ऋक् १०।८६।६)
सुयुक्त (सं० त्रि०) सु युज-क्त। उत्तमरूपसे मिलित, अच्छी तरह मिला हुआ।
सुयुक्ति (सं० स्त्री०) सु युज क्तिन्। उत्तम मन्त्रणा, अच्छी सलाह।
सुयुज् (सं० त्रि०) १ सम्यक् प्रयुक्त। २ सुष्ठुरूपसे प्रयुज्यमान।
सुयुद्ध (सं० क्ली०) न्यायसङ्गत युद्ध, धर्मयुद्ध। मन्वादि धर्मशास्त्रमें लिखा है, कि सुयुद्धसे मङ्गल साधन और कूटयुद्धसे अधोगति होती है।
सुयोग (सं० पु०) सुन्दर योग, संयोग, अच्छा मौका।
सुयोग्य (सं० त्रि०) बहुत योग्य, लायक, काबिल।
सुयोधन (सं० पु०) धृतराष्ट्रके ज्येष्ठ पुत्र, कुरुराज दुर्योधन। दुर्योधन देखो।
सुरंग (हिं० स्त्री०) सुरङ्ग देखो।
सुर (सं० पु०) सुष्ठु राति ददात्यभीष्टमिति रा-क, वा सुनातीति सुञ् अभिषवे (सु सूधाञ् गृधिभ्यः क्रन्। उण् २।२४) इति क्रन्। १ देवता। २ सूर्य। ३ पण्डित। ४ स्वर, ध्वनि। सुरके साथ गान करना होता है। सुर तालल्यसे गाया हुआ गीत सुननेमें मीठा लगता है। ५ पुराणानुसार एक प्राचीन नगरका नाम जो चन्द्रप्रभा नदीके तट पर था। ६ अग्निका एक विशिष्ट रूप।
सुरक (सं० त्रि०) १ सुरावर्ण। २ सुरा प्रकार, सुरा।

(पु०) ३ नाक परका वह तिलक जो भालकी आकृति-का होता है।

सुरक (हिं० स्त्री०) सुरकनेकी क्रिया या भाव।

सुरकन्दल—राजभेद। (सह्याद्रि० ३३।१४२)

सुरकना (हिं० क्रि०) १ किसी तरल पदार्थको धीरे धीरे हवाके साथ खींचते हुए पीना। २ हवाके साथ धीरे धीरे ऊपरकी ओर धीरे धीरे खींचना।

सुरकरी (सं० पु०) देवताओंका हाथी, दिग्गज। इन्द्रादि अष्टदिक्पालके ८ हाथी हैं, ये सब हाथी सुरराज कहलाते हैं।

सुरकरीन्द्रदर्पापहा (सं० स्त्री०) गङ्गा। गङ्गाने ऐरावतका दर्प नाश किया था।

सुरकानन (सं० पु०) देवताओंके विहार करनेका वन।

सुरकामिनी (सं० स्त्री०) अप्सराभेद।

सुरकारु (सं० पु०) सुराणां कारु शिल्पी। देवशिल्पी विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक (सं० क्ली०) इन्द्रधनुष।

सुरकार्य (सं० क्ली०) देवताओंका कार्य।

सुरकाष्ठ (सं० क्ली०) देवकाष्ठ, देवदारु।

सुरकुनठ (सं० पु०) वृहत्संहिताके अनुसार ईशान कोणमें स्थित एक देशका नाम।

सुरकुल (सं० पु०) देवताओंका निवासस्थान।

सुरकृत (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।

सुरकृत (सं० त्रि०) सुरेण कृतः। देवगण द्वारा अनुष्ठित।

सुरकृता (सं० स्त्री०) सुरेण कृता। गुडूची, गिलोय।

सुरकेतु (सं० पु०) १ इन्द्रध्वज, इन्द्रकी ध्वजा। (वृहत्स० ४३।४१) २ इन्द्र।

सुरक्त (सं० त्रि०) सु-रञ्ज-क्त। १ अतिशय रक्तविशिष्ट। २ अतिशय अनुरक्त।

सुरक्तक (सं० पु०) १ कोषाम्र, कोशम। २ स्वर्णगैरिक, सोनगेरू।

सुरक्ष (सं० पु०) १ ऋषिभेद। २ पर्वतभेद। (मार्क० पु०) (त्रि०) ३ उत्तम रक्षायुक्त, जिसकी भली भांति रक्षा की गई हो।

सुरक्षण (सं० पु०) उत्तमरूपसे रक्षा करनेकी क्रिया, रखवाली, हिफाजत।

सुरक्षित (सं० त्रि०) सु-रक्ष-क्त। जिसकी भली भांति रक्षा की गई हो, अच्छी तरह रक्षा किया हुआ।

सुरक्षी (सं० पु०) उत्तम या विश्वस्त रक्षक, अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरखण्डनिका (सं० स्त्री०) वीणाभेद, एक प्रकारकी वीणा जो सुरमण्डलिका भी कहलाती है।

सुरखा (फा० वि०) १ सुर्ख देखो। २ एक प्रकारका लंबा पौधा जिसमें पत्ते बहुत कम होते हैं।

सुरखाव (फा० पु०) १ चकवा। (स्त्री०) २ एक नदी का नाम जो बलखमें बहती है।

सुरखाली—सुन्दरवनके उत्तरांशमें अवस्थित एक बड़ा ग्राम। यहां हाट बाजार है।

सुरखिया (फा० पु०) एक प्रकारका पक्षी जो सिरसे गरदन तक लाल होता है। इसकी पीठ भी लाल होती है, पर चोंच पीली और पैर काले होते हैं।

सुरखिया बगला (हिं० पु०) एक प्रकारका बगला जिसे गाय बगला भी कहते हैं।

सुरखी (फा० स्त्री०) १ ईंटोंका बनाया हुआ महीन चूरा जो इमारत बनानेके काममें आता है। २ सुर्खी देखो।

सुरखुरू (फा० वि०) सुर्खरू देखो।

सुरगज (सं० पु०) देवहस्ती, देवताओं या इन्द्रका हाथी।

सुरगण (सं० पु०) देवगण, देवसमूह।

सुरगण्ड (सं० पु०) रोगविशेष, एक प्रकारका फोड़ा।

सुरगति (सं० स्त्री०, दैवगति, भावी।

सुरगवेसा (हिं० स्त्री०) अप्सरा।

सुरगर्भ (सं० पु०) देव-सन्तान।

सुरगाय (हिं० स्त्री०) कामधेनु।

सुरगायक (सं० पु०) सुराणां गायक। गन्धर्व।

सुरगिरि (सं० पु०) सुराणां गिरिः। सुमेरु पर्वत, देवताओंके रहनेका पर्वत।

सुरगी (हिं० पु०) देवता।

सुरगीनदी (हिं० स्त्री०) गंगा।

सुरगुरु (सं० पु०) सुराणां गुरुः। देवताओंके गुरु बृहस्पति।

सुरगुरुदिवस (सं० पु०) बृहस्पतिवार।

सुरगृह (सं० पु०) देवगृह, मन्दिर, सुरकुल।
सुरगैया (हिं० स्त्री०) कामधेनु।
सुरग्रामणी (सं० पु०) सुराणां ग्रामणी नेता। देवताओंका नेता, इन्द्र।
सुरङ्ग (सं० क्ली०) सुष्ठु रङ्गो यस्मात्। १ हिंगुल, सिंगरफ। २ पतङ्ग, बक्कम। ३ नागरङ्ग, नारंगी। ४ गर्त्तविशेष। (त्रि०) ५ जिसका रङ्ग सुन्दर हो, सुन्दर रंगका। ६ सुन्दर, सुडौल। ७ रसपूर्ण।
सुरङ्ग (हिं० स्त्री०) १ जमीन या पहाड़के नीचे खोद कर या बारूदसे उड़ा कर बनाया हुआ रास्ता जो लोगोंके आने जानेके काममें आता है। २ किले या दीवार आदिके नीचे जमीनके अन्दर खोद कर बनाया हुआ वह तंग रास्ता जिसमें बारूद आदि भर कर और उसमें आग लगा कर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३ वह सूराख जो चोर लोग दीवारमें बनाते हैं, सेंध। ४ एक प्रकारका यन्त्र। इसमें बारूदसे भरा हुआ एक पीपा होता है और जिसके ऊपर एक तार निकला हुआ होता है। यह यन्त्र समुद्रमें डुबा दिया जाता है और इसका तार ऊपरकी ओर उठा रहता है। जब किसी जहाजका पेंदा इस तारसे छू जाता है, तो अपनी भीतरी विद्युत्शक्तिकी सहायतासे बारूदमें आग लग जाती है। इसके फटनेसे ऊपरका जहाज फट कर डूब जाता है। इसका व्यवहार प्रायः शत्रुओंके जहाज नष्ट करनेमें होता है।
सुरङ्गद (सं० पु०) पतङ्ग, बक्कम, आल।
सुरङ्गधातु (सं० पु०) गैरिक धातु, गेरूमिट्टी।
सुरङ्गम—समाधिभेद। (शतसा० प्रज्ञापा० ८ अ०)
सुरङ्गयुज् (सं० पु०) सेंध लगानेवाला, चोर।
सुरङ्गा (सं० स्त्री०) १ सन्धि, सेंध। २ कैवर्त्तिका लता।
सुरङ्गिका (सं० स्त्री०) १ मूर्वालता, मुर्री, चुरनहार। २ उपोदिका, पोईका साग। ३ श्वेत काकमाची, सफेद मकोय।
सुरङ्गी (सं० स्त्री०) १ काकनासा, कौआठाठी। २ पुन्नाग, सुलतान चंपा। ३ रक्त शोभाञ्जन, लाल सहिजन। ४ आलका पेड़ जिससे आलका रंग बनता है।
सुरचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुष।
सुरजःफल (सं० पु०) पनस वृक्ष, कटहल।
सुरज (हिं० वि०) सुरजन देखो।
सुरजन (सं० पु०) १ देवताओंका वर्ग, देवसमूह। (त्रि०) २ सज्जन, सुजन। ३ चतुर, चालाक।
सुरजनपन (हिं० पु०) १ सज्जनता, भलमनसत। २ चालाकी, होशियारी, चतुराई।
सुरजनी (सं० स्त्री०) सु शोभना रात्रिः। रात्रि, अच्छी या चांदनी रात।
सुरजस् (सं० त्रि०) सुन्दर पुष्प परागविशिष्ट, जिसमें उत्तम या प्रचुर पराग हो।
सुरजा (सं० स्त्री०) १ अप्सराभेद। २ चट्टलस्थ नदीभेद। (भ० ब्रह्मख०)
सुरजित्—राजभेद। (सह्याद्रि० ३३।९६)
सुरज्येष्ठ (सं० पु०) सुरेषु ज्येष्ठः। देवताओंमें बड़े, ब्रह्मा।
सुरझन (हिं० स्त्री०) सुलझन देखो।
सुरझना (हिं० क्रि०) सुलझना देखो।
सुरञ्जन (सं० पु०) गुवाक वृक्ष, सुपारी।
सुरटीप (हिं० स्त्री०) स्वरका आलाप, सुरकी तान।
सुरण (सं० त्रि०) स्तूयमान। (ऋक् १।३।९)
सुरत (सं० क्ली०) १ रमण, रतिक्रीड़ा, कामकेलि, संभोग। मानवोंके शरीरमें रमणेच्छा नित्यप्रति उपस्थित होती है। उस इच्छाको रोक कर मैथुन नहीं करनेसे मेदरोग, मेदोवृद्धि और शरीरकी शिथिलता होती है। विधिपूर्वक यदि सुरतक्रीड़ा की जाय, तो परमायुवृद्धि, वार्द्धक्यकी अल्पता, पुष्टि, वर्णकी प्रसन्नता और बलवृद्धि तथा सभी मांस स्थिर और उपचित होता है।

हेमन्त ऋतुमें वाजीकरण औषधका सेवन कर कामवेगके अनुसार यथासम्भव मैथुन करना कर्त्तव्य है। शिशिर ऋतुमें इच्छानुसार, वसन्त और शरत्कालमें तीन दिनके बाद वर्षा और ग्रीष्ममें १५ दिनके बाद सुरतक्रीड़ा प्रशस्त है। इसके सिवा साधारण विधान यह है कि केवल ग्रीष्मऋतुको छोड़ और सभी ऋतुओंमें तीन दिनके अन्तर पर तथा ग्रीष्ममें १५ दिनके अन्तर मैथुन करना चाहिये।

सन्ध्याकाल, पर्वदिन, प्रत्यूष, अर्द्धरात्र और दिवार्द्ध-कालमें सुरत-क्रीड़ा विशेष निषिद्ध है। प्रकाश्य और अति लज्जाकर स्थान तथा जिस स्थानके पास कोई गुरु-लोक रहते हों और जहां आर्त्तनाद सुने जाते हों, वे सब स्थान भी निन्दनीय हैं।

जो स्थान अति निभृत, पर रमणियोंकी गीतध्वनि-से मनोहर और सद्गन्धप्राप्त है तथा जो स्थान सुख वायु बहनेसे मनोरम है और जहां मन हमेशा प्रसन्न रहता है, वैसा ही स्थान सुरत-क्रीड़ाके लिये हितकर है।

२ एक बौद्ध भिक्षुका नाम। ३ चम्पारण्यका एक प्राचीन ग्राम। (त्रि०) ४ क्रीड़ायुक्त, क्रीडाविशिष्ट।

सुरत (हिं० स्त्री०) ध्यान, याद।

सुरतग्लानि (सं० स्त्री०) रति या संभोग जनित ग्लानि या शिथिलता।

सुरतताली (सं० स्त्री०) १ दूती। २ शिरोमाल्य, सेहरा।

सुरतप्रिय (सं० त्रि०) रमणप्रिय।

सुरतरङ्गिणी (सं० स्त्री०) १ गंगा देवी। २ सुरतक्रीड़ा-की सङ्गिनी।

सुरतरु (सं० पु०) देवतरु, कल्पवृक्ष।

सुरतरुवर (सं० पु०) कल्पवृक्ष।

सुरता (सं० स्त्री०) १ देवता, देवताका भाव, धर्म या कार्य। २ सुरसमूह, देवसमूह। ३ सुष्ठु रता, संभोग-का आनन्द। ४ एक अप्सराका नाम।

सुरता (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी बांसकी नली जिसमें-से दाना छोड़ कर बोया जाता है। (स्त्री०) २ चिन्ता, ध्यान। ३ चेत, सुध।

सुरतात (सं० पु०) १ देवताओंके पिता, कश्यप। २ देव-ताओंके अधिपति, इन्द्र।

सुरतान (हिं० स्त्री०) स्वरका आलाप, सुर टीप।

सुरतान्त (सं० पु०) रति या संभोगका अन्त।

सुरति (हिं० स्त्री०) १ भोगविलास, विहार। २ स्मरण, सुधि चेत।

सुरतिगोपना (सं० स्त्री०) वह नायिका जो रति-क्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों आदिसे यह बात छिपाती हो।

सुरति-ध्व (सं० पु०) रतिक्रीड़ाके समय होनेवाली भूषणों-की ध्वनि।

सुरतिवंत (हिं० वि०) कामातुर।

सुरतिविचित्रा (सं० स्त्री०) मध्याके चार भेदोंमेंसे एक, वह मध्या जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती (हिं० स्त्री०) खानेका तंबाकूके पत्तों का चूरा जो पानके साथ या यों ही चूना मिला कर खाया जाता है, खैनी। अनुमान किया जाता है, कि पुर्त्तगालवालोंने पहले पहल इसका प्रचार सूरत नगरमें किया था, इसीसे इस-का यह नाम पड़ा।

सुरतुङ्ग (सं० पु०) सुरपुन्नाग वृक्ष।

सुरतोषक (सं० पु०) १ कौस्तुभ मणि। (त्रि०) २ देवता प्रीतिकारक।

सुरत्न (सं० क्ली०) १ स्वर्ण, सोना। २ माणिक्य। (त्रि०) ३ शोभन रत्नोपेत, उत्कृष्ट रत्नयुक्त, उत्तम रत्नों से युक्त। ४ सर्वश्रेष्ठ।

सुरत्राण (हिं० पु०) सुरत्राता देखो।

सुरत्राता (हिं० पु०) १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ इन्द्र।

सुरथ (सं० पु०) चन्द्रवंशीय राजभेद। ब्रह्मवैवर्त-पुराणमें लिखा है, कि ब्रह्माके पुत्र अत्रि और अत्रिके पुत्र चन्द्र थे। चन्द्र राजसूय यज्ञ करके द्विजराज नामसे प्रसिद्ध हुए। चंद्रकी अपना गुरुपत्नी तारासे बुधका जन्म हुआ। बुधके पुत्र चैत्र और यही चैत्र सुरथके पिता थे। राजा सुरथ स्वारोचिष मन्वन्तरमें कोलापुराधि-पति थे। इन्होंने पृथ्वी पर पहले पहल दुर्गा पूजा की तथा दुर्गा देवीके वरसे ये सावर्णि नामक मनु हुए।

मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि समस्त क्षितिमण्डल पर राजा सुरथ राजचक्रवर्त्ती थे। कोलविध्वंसी राजाओंने उन्हें युद्धमें परास्त कर राज्यसे निकाल भगाया। राजाने राज्यभ्रष्ट हो मेधस मुनिका आश्रय लिया। पीछे मुनिके उपदेशसे वे नदी-पुलिनमें गये और वहां इन्होंने महामाया भगवतीकी मृण्मयी मूर्त्ति बना कर उनकी पूजा की। सावर्णि शब्द देखो। राजा सुरथका यह वृत्तान्तसम्वलित देवीमाहात्म्य-चण्डी सम्भ्रान्त हिंदूके घरमें प्रायः रोज पढ़ी जाती है।

देवीभागवतमें लिखा है, कि स्वारोचिष मन्वन्तरमें चैत्रवंश समुद्भव महाबलिष्ठ पराक्रान्त सुरथ नामक एक विख्यात राजा थे। उनके कुछ तेजस्वी शत्रुओंने दल बल ले कर उनके कोला नामक नगर पर छापा मारा। दोनोंमें तुमुल संग्राम छिड़ा। राजा सुरथकी पराजय हुई। पीछे उनके मंत्रिओंने कुल खजाना चुरा लिया।

राजा बड़े चिन्तित हुए और आखेटके बहाने अकेले घोड़े पर सवार हो वनमें चले गये। इस वनमें मेधस मुनिका आश्रम था। मुनिने राजाको तनमनसे देवी दुर्गाका पूजन करनेका उपदेश दिया।

तदनुसार राजा सुरथने इन्द्रियोंको संयत कर समाहित चित्तसे उन सर्वकामनादायिनी भगवतीकी शरण ली। वे भक्तिपूर्वक देवीकी मृण्मयी मूर्त्ति बना कर पूजा करने लगे और पूजाके बाद अपने शरीरसे शोणित निकाल कर बलि देने लगे। जगज्जननी जगन्माया प्रसन्न हो कर राजाके सामने प्रकट हुईं और उनसे वर मांगने कहा। राजाने निष्कण्टक राज्य और मोहविनाशक परमज्ञानके लिये प्रार्थना की। इस पर देवीने कहा, 'राजन्! इस जन्ममें मेरे वरसे तुम निष्कण्टक राज्यलाभ करोगे और तुम्हें मोहविनाशक ज्ञानकी उत्पत्ति होगी तथा दूसरे जन्ममें तुम सूर्यासे जन्म ले कर सावर्णि नामक विख्यात मनु होगे और उस मन्वन्तरके अधिपति हो कर अनेक सन्तान सन्तति लाभ करोगे।' भगवती इस प्रकार सुरथको वर दे कर अन्तर्हित हो गईं। भगवतीके वरसे राजाने फिरसे अपना राज्य पाया और कुछ समय राज्य भोगके बाद इस लोकसे प्रस्थान किया। पीछे ये ही सूर्यपुत्र सावर्णिमनु हो कर उत्पन्न हुए। जो राजा सुरथका वृत्तान्त पढ़ते या दूसरोंको सुनाते हैं, उनके प्रति महामाया भगवती प्रसन्न होती हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणसे जाना जाता है, कि मेधस-शिष्य राजा सुरथने नदीके किनारे दुर्गादेवीकी मृण्मयी मूर्त्ति बना कर यथाविधान उनकी पूजा की और मेष, महिष, कृष्णसार, गण्डार, छाग, मीन, कुष्माण्ड और पक्षी आदिकी बलि चढ़ाई। पूजाके बाद उस मृण्मयी मूर्त्ति को जलमें विसर्जन कराया गया।

मेधस मुनिके उपदेशसे राजा सुरथ और समाधि वैश्यने भगवती महामायाकी आराधना की। दुर्गापूजा शरत् और वसन्त इन दोनों ही समयमें होती है। किंतु राजा सुरथने किस समय यह पूजा की थी, उसका कोई विशेष उल्लेख देखनेमें नहीं आता। किंतु प्रवाद है, कि उन्होंने वसन्तकालमें देवीकी पूजा की थी। पीछे रामचन्द्रने रावणका वध करनेके लिये अकालमें देवीका बोधन कर शरत्कालमें पूजन किया था। तभीसे वसन्त और शरत्कालमें देवीकी यह पूजा चली आ रही है। दुर्गा देखो।

२ एक पर्वत। (कालिकापु० ७८ अ०)

सुरथा (सं० स्त्री०) १ एक अप्सराका नाम। २ पुराणानुसार एक नदीका नाम।

सुरथाकार (सं० क्ली०) एक पर्वतका नाम।

सुरथान (हिं० पु०) स्वर्ग।

सुरदार (हिं० वि०) जिसके गलेका स्वर सुन्दर हो, सुस्वर, सुरीला।

सुरदारु (सं० क्ली०) देवदारु वृक्ष।

सुरदास—सूरदास देखो।

सुरदीर्घिका (सं० स्त्री०) आकाशगंगा, मन्दाकिनी।

सुरदुन्दुभि (सं० स्त्री०) १ तुलसी। २ देवताओंका नगाड़ा।

सुरदेवी (सं० स्त्री०) योगमाया जिसने यशोदाके गर्भसे अवतार लिया था और जिसे कंस पटकने चला था।

सुरदेश (हिं० पु०) स्वर्ग, देवलोक।

सुरद्रु (सं० पु०) सुरद्रुम, देवदारु।

सुरद्रुम (सं० पु०) १ देवनल, बड़ा नरकट, बड़ा नरसल। २ कल्पवृक्ष।

सुरद्विप (सं० पु०) १ देवहस्ती, देवताओंका हाथी। २ ऐरावत।

सुरद्विष् (सं० पु०) १ देवताओंका शत्रु, असुर, राक्षस। २ राहु।

सुरधनुस् (सं० क्ली०) इन्द्रधनुष। (जटाधर)

सुरधामन (सं० क्ली०) देवलोक, स्वर्ग।

सुरधुनी (सं० स्त्री०) गंगा।

सुरधूप (सं० पु०) राल, सर्जरस, धूना। (राजनि०)
सुरधेनु (सं० स्त्री०) देवताओंकी गाय, कामधेनु।
सुरध्वज (सं० पु०) सुरकेतु, इन्द्रध्वज।
सुरनगर (सं० पु०) स्वर्ग।
सुरनदी (सं० स्त्री०) सुराणां नदी। १ गंगा। २ आकाश-गंगा।
सुरनन्दा (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम। (शब्दरत्ना०)
सुरनाथ (सं० पु०) इन्द्र।
सुरनायक (सं० पु०) सुराणां नायकः। सुरपति इन्द्र।
सुरनारी (सं० स्त्री०) देवाङ्गना, देवबाला, देववधू।
सुरनाल (सं० पु०) देवनल, बड़ा नरसल।
सुरनाह (सं० पु०) देवराज इन्द्र।
सुरनिम्नगा (सं० स्त्री०) गङ्गा। (अमर)
सुरनिर्गन्ध (सं० पु०) पत्रक, तेजपत्ता।
सुरनिर्झरिणी (सं० स्त्री०) आकाश गंगा।
सुरनिलय (सं० पु०) सुमेरु पर्वत जहां देवता रहते हैं।
सुरन्धक (सं० क्ली०) जनपदभेद।
सुरपति (सं० पु०) सुराणां पतिः। देवराज इन्द्र।
सुरपतिगुरु (सं० पु०) सुरपते र्गुरुः। इन्द्रगुरु, बृहस्पति।
सुरपतिचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुष।
सुरपतितनय (सं० पु०) १ इन्द्रका पुत्र, जयन्त। २ अर्जुन।
सुरपतित्व (सं० क्ली०) सुरपतिका भाव या पद।
सुरपथ (सं० क्ली०) आकाश।
सुरपन (हिं० पु०) पुन्नाग, सुरंगी, सुलतान चम्पा।
सुरपर्ण (सं० क्ली०) एक प्रकारका सुगन्धित शाक। यह क्षुप जातिकी सुगन्धित वनस्पति है। वैद्यकके अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कृमि, श्वास और कासको नाशक तथा दीपक है। (राजनि०)
सुरपर्णिक (सं० पु०) पुन्नाग वृक्ष।
सुरपर्णिका (सं० स्त्री०) पुन्नाग, सुलताना चम्पा।
सुरपर्णी (सं०स्त्री०) सुरप्रियं पर्णमस्याः ङीष्। १ पलासी। २ पुन्नाग, पुलाक।
सुरपर्वत (सं० पु०) सुरप्रियः पर्वतः। सुमेरु पर्वत।
सुरपादप (सं० पु०) सुराणां पादपः। कल्पवृक्ष, देवद्रुम।
सुरपाल (सं० पु०) इन्द्र।

सुरपुन्नाग (सं० पु०) एक प्रकारका पुन्नाग जिसके गुण पुन्नागके समान ही होते हैं।
सुरपुर (सं० क्ली०) सुराणां पुर। अमरावती।
सुरपुरकेतु (सं० पु०) इन्द्र।
सुरपुरोधस् (सं० पु०) सुराणां पुरोधाः। देवताओंके पुरोहित, बृहस्पति।
सुरप्रतिष्ठा (सं० स्त्री०) सुराणां प्रतिष्ठा। देवप्रतिष्ठा।
सुरप्रवीर (सं० पु०) तपसके पुत्र अग्निका नाम।
सुरप्रिय (सं० पु०) सुराणां प्रियः। १ अगस्त्य, अगस्तिया। २ इन्द्र। ३ बृहस्पति। ४ एक प्रकारका पक्षी। ५ एक पर्वतका नाम। (त्रि०) ६ देवद्रव्य, जो देवताओंको प्रिय हो।
सुरप्रिया (सं० स्त्री०) १ जाती पुष्प, चमेली। २ स्वर्ण-रम्भा, सोना केला। (राजनि०) ३ एक अप्सराका नाम।
सुरफाक्ताल (हिं० पु०) मृदंगका एक ताल। इसमें तीन आघात और एक खाली होता है।
सुरबहार (फा० पु०) सितारकी तरहका एक प्रकारका बाजा।
सुरबुली (हिं० स्त्री०) एक पौधा जो बंगाल और उड़ीसे से ले कर मद्रास और सिंहल तक होता है। इसकी जड़की छालसे एक प्रकारका सुन्दर लाल रंग निकलता है जिससे मछलीपट्टन, नेलोर आदि स्थानोंमें कपड़े रंगे जाते हैं। इसे चिरवल भी कहते हैं।
सुरबृच्छ (हिं० पु०) सुरवृक्ष देखो।
सुरबेल (हिं० स्त्री०) कल्पलता।
सुरभङ्ग (हिं० पु०) प्रेम, आनन्द, भय आदिमें होनेवाला स्वरका विपर्य्यास जो सात्विक भावोंके अन्तर्गत है।
सुरभवन (सं० पु०) सुराणां भवन। १ देवताओंका निवासस्थान, मन्दिर। (बृहत्सं० ७६।४) २ सुरपुरी, अमरावती।
सुरभान (हिं० पु०) १ इन्द्र। २ सूर्य।
सुरभि (सं० क्ली०) सुरभ-इन्। १ स्वर्ण, सोना। २ गन्धाश्म, गंधपाषाण। ३ साधुगंध। ४ सुगन्धि, खुशबू। ५ चम्पक, चंपा। ६ वसन्त ऋतु। ७ जातीफलवृक्ष, जायफल। ८ शमीवृक्ष, सफेद कीकर। ९ कदम्बवृक्ष।

१० कणगुग्गुल। ११ गंधतृण, रोहिस घास। १२ वकुल वृक्ष, मौलसिरी। १३ राल, धूना। १४ चैत्रमास। १५ गंधफल। १६ वर्बरचन्दन। (स्त्री०) १७ मुरा नामक गंधद्रव्य, मुरामांसी, किसी किसी पुस्तकमें मुराकी जगह 'सुरा' पाठ देखनेमें आता है। १८ शल्लकी, सलई। १९ मातृभेद। २० गो, गाभी, गाय। २१ रुद्रजटा। २२ वनमालिका। २३ तुलसी। २४ पाठा नामक एक प्रकारका सुगन्धित पत्र। २५ गङ्गापत्री। २६ पृथ्वी। २७ गोमाता। २८ वनमल्लिका। २९ एलवालुक, एलुवा। ३० महामरी। ३१ कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम। ३२ सुरा, शराव। ३३ गायोंकी अधिष्ठात्री देवी तथा गो जातिकी आदिजननी।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि एक दिन नारदने भगवान्‌से पूछा था, 'भगवन्! सुरभि कौन है? इसकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई है?' भगवान्‌ने कहा था,—सुरभि गाभियोंकी अधिष्ठात्री देवी और गोजातिकी आदि गो प्रसू है। यह गोलोकमें उत्पन्न हुई थी। पूर्वकालमें एक दिन राधिकानाथ राधाके साथ गोपाङ्गनासे परिवृत हो पुण्यतम वृन्दारण्यमें क्रीडा करने गये। वहां उन्हें क्षीर-पानकी हठात् इच्छा हुई और उससे इच्छामय राधा-नाथके वाम पार्श्वसे इस गोमाता सवत्सा सुरभि देवीकी उत्पत्ति हुई। इस वत्सका नाम मनोरथ रखा गया। सुदाम नामक गोपने सहसा सवत्सा सुरभिको देख कर रत्नभाण्डमें उसका दूध दूहा। वह दूध सुधारससे भी स्वादिष्ट और जन्म मृत्यु-जरानाशक था। राधिकारमण वह दूध पी कर बडे प्रसन्न हुए। भगवान्‌की इच्छासे सुरभिके लोमकूपसे लक्षकोटि सवत्सा कामधेनु उत्पन्न हुई। इन्हीं कामधेनुओंके पुत्रपौत्रादि सर्वत्र परिव्याप्त हो गये हैं तथा उन्हीं सब गाभियोंका दुग्ध पान कर अभी जगत्‌की रक्षा होती है। इसी प्रकार गोसमूहकी सृष्टि हुई।

भगवान्‌ने सुरभिकी सृष्टि कर इनकी पूजा की थी। तभीसे त्रिलोकमें सुरभि पूजा प्रचलित चली आ रही है। दीपान्विता अमावस्याके दूसरे दिन सुरभिकी पूजा करनेसे सभी कामनाएं सिद्ध होती हैं।

तिथितत्त्वमें रघुनन्दनने लिखा है, कि कोजागरी लक्ष्मी पूर्णिमाके दिन जिन्हें गाभी है, उन्हें सुरभिकी पूजा करनी चाहिये। इस लक्ष्मीके पूजाकालमें सुरभि की भी पूजा होती है।

(त्रि०) ३४ सुगंधित, सुवासित। ३५ मनोरम, सुन्दर। ३६ उत्तम, श्रेष्ठ। ३७ सदाचारी, गुणवान्। ३८ विख्यात, मशहूर।

सुरभिकन्दर (सं० पु०) पर्वतभेद।

सुरभिका (सं० स्त्री०) स्वर्णकदली, सोना केला।

सुरभिकान्ता (सं० स्त्री०) वासन्ती पुष्पवृक्ष, नेवारी।

सुरभिगन्ध (सं० क्ली०) १ तेजपत्र, तेजपत्ता। (त्रि०) २ सुगन्धित, सुवासित, खुशबूदार।

सुरभिगन्धा (सं० स्त्री०) जातीपुष्प, चमेली।

सुरभिगन्धि (सं० त्रि०) सुरभिर्गन्धो यस्य (गन्धस्येदुत्पूति-सु सुरभिभ्यः। पा ५।४।१३५) इति इकारः। उत्तम गन्धविशिष्ट, खुशबूदार।

सुरभिचूर्ण (सं० क्ली०) सुगन्धिचूर्ण।

सुरभिच्छद (सं० पु०) कपित्थ, कैथ।

सुरभित (सं० त्रि०) सुगंधित, सुवासित।

सुरभितनय (सं० पु०) सुरभिपुत्र, बैल, साँड।

सुरभितनया (सं० स्त्री०) गो, गाय।

सुरभिता (सं० स्त्री०) १ सुरभिका भाव। २ सुगंधि, खुशबू।

सुरभित्रिफला (सं० स्त्री०) जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोंका समूह।

सुरभित्वच् (सं० स्त्री०) गुजरेला, बडी इलायची।

सुरभिदारु (सं० पु०) धूप सरल। वैद्यकके अनुसार यह सरल, कटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, वात, त्वचा रोग, सूजन और व्रणका नाशक है। यह कोठेको भी साफ करता है।

सुरभिन्तर (सं० त्रि०) अत्यन्त सुगंधि।

सुरभिपत्रा (सं० स्त्री०) राजजम्बू वृक्ष, गुलाब जामुन।

सुरभिपुत्र (सं० पु०) १ साँड। २ बैल।

सुरभिमञ्जरी (सं० स्त्री०) श्वेत तुलसी।

सुरभिमत् (सं० त्रि०) १ सुगन्धित, सुवासित। (पु०) २ अग्नि।

सुरभिमास (सं० पु०) चैत्रमास, चैतका महीना।

सुरभिमुख (सं० पु०) वसन्तऋतुका आरम्भ।
सुरभिवल्कल (सं० क्ली०) गुडत्वक्, दालचीनी।
सुरभिवाण (सं० पु०) कामदेव।
सुरभिशाक (सं० पु०) एक प्रकारका सुगन्धित शाक।
सुरभिषक् (सं० पु०) देवताओंके वैद्य, अश्विनीकुमार।
सुरभिष्म (सं० त्रि०) शोभन गंधविशिष्ट, खुशबूदार।
सुरभिसमय (सं० पु०) वसन्त। (साहित्यद०)
सुरभिस्रवा (सं० स्त्री०) शल्लकी, सलई।
सुरभी (सं० स्त्री०) सुरभि वा ङीष्। १ सुगन्धि, खुशबू। २ शल्लकी, सलई। ३ पृथक्शिम्बा, केवाच। ४ तुलसीभेद, बबई तुलसी। ५ मांचिकाशाक, मोया। ६ रुद्रजटा, शंकर जटा। ७ सुगन्धित शालिधान्य। ८ मुरामांसी, एकाङ्गी। ९ एलवालुक, एलुवा। १० रास्ना, रासन। ११ गो, गाय। सुरभि देखो। १२ चंदन।
सुरभीगोत्र (सं० क्ली०) १ बैल। २ सांड।
सुरभीपट्टन (सं० क्ली०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन नगरका नाम। (भारत सभाप०)
सुरभीपुट (सं० पु०) गोलोक।
सुरभीमूत्र (सं० क्ली०) गोमूत्र, गोमूत।
सुरभीरसा (सं० स्त्री०) शल्लकी, सलई।
सुरभीसुत (सं० पु०) १ सांड। २ बैल।
सुरभूप (सं० पु०) १ इन्द्र। २ विष्णु।
सुरभूरुह (सं० पु०) १ देवदारु। २ कल्पवृक्षादि।
सुरभूषण (सं० क्ली०) देवताओंके पहननेका मोतियोंका हार। यह चार हाथ लंबा होता है और जिसमें १००८ दाने होते हैं।
सुरभोग (सं० पु०) अमृत।
सुरमई (फा० वि०) १ सुरमेके रंगका, हलका नीला, सफेदी लिये नीला या काला। (पु०) २ एक प्रकारका रंग जो सुरमेके रंगसे मिलता जुलता या हलका नीला होता है। ३ इस रंगमें रंगा हुआ एक प्रकारका कपड़ा जो प्रायः अस्तर आदिके काममें आता है। ४ इस रंगका कबूतर। (स्त्री०) ५ एक प्रकारकी चिड़िया। यह बहुत काली होती है और इसकी गरदन हरे रंगकी और चमकदार होती है।
सुरमई कलम (फा० स्त्री०) सुरमा लगानेकी सलाई, सुरमचू।

सुरमचू (फा० पु०) सुरमा लगानेकी सलाई।
सुरमणि (सं० पु०) चिंतामणि।
सुरमणीय (सं० पु०) सु रम-अनीयर्। अतिरमणीय।
सुरमय (सं० त्रि०) बहुत अधिक रमणीय, बहुत सुन्दर।

सुरमन्दिर (सं० पु०) देवमन्दिर, देवगृह।
सुरमा (नदी)—श्रीहट्ट जिलेकी बराक नदीकी प्रधान शाखा। कछाड़से श्रीहट्ट प्रवेश कर बराक सुरमा और कुशियारा इन दो शाखाओंमें विभक्त हुई है। वर्षाके समय सुरमा नदी हो कर छातक पर्यन्त स्टीमर और बड़ी बड़ी नावें जाती आती हैं। इसमें छोटी छोटी नावें बारहो मास चल सकती हैं। सुरमाके किनारे श्रीहट्ट, छातक और सुनामगञ्ज ये तीन शहर अवस्थित हैं। छातक और सुनामगंजके बन्दरमें खासिया पर्वतके चून, आलू और कमला नीबू संगृहीत हो कर बंगालके नाना स्थानोंमें भेजे जाते हैं।

सुरमा (फा० पु०) एक प्रकारका प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्रायः नीले रंगका होता है और जिसका महीन चूर्ण स्त्रियां आंखोंमें लगाती हैं। यह फारसमें लहौल, पंजाबमें झेलम तथा बरमामें टेनासरिम नामक स्थानमें पाया जाता है। यह बहुत भारी, चमकीला और भुरभुरा होता है। इसका व्यवहार कुछ औषधोंमें तथा कुछ धातुओंको दृढ़ करनेमें होता है। प्रायः छापेके सीसेके अक्षरोंमें उन्हें मजबूत करनेके लिये इसका मेल दिया जाता है। आज कल बाजारोंमें जो सुरमा मिलता है, वह प्रायः काबुल और बुखारेके गलेना नामक धातुका चूर्ण होता है।

भारतीय मुसलमानोंका विश्वास है, कि सर्वोत्कृष्ट सुरमा अरबदेशसे सिनाई वा हार पर्वतसे आता है। उनमें ऐसी जनश्रुति प्रचलित है, कि इस पर्वत पर रहते समय मूसा (मोजेस) ने भगवान्‌का स्वरूप देख पाया था। भगवान्‌ने कहा, कि उसका यह मानुषी चक्षु उस दिव्य ज्योतिकी प्रखरता सहन नहीं कर सकेगा। इस कारण वे पर्वतकी एक दरारमेंसे उस ज्योतिकी सिर्फ एक किरण फेंकने लगे। पर्वतके

जिस स्थान पर वह प्रस्तर ज्योति पड़ी थी, वह स्थान गल कर रसाञ्जनमें परिणत हुआ।

सुरमा (हि० पु०) एक प्रकारका पक्षी।

सुरमा-इ-इसपाहानि—चकचकमें खानेसे उत्पन्न लोहेका चूर्ण। मुसलमान लोग इससे अक्षिपत्र सुरञ्जित करते हैं।

सुरमादानी (फा० स्त्री०) लकड़ी या धातुका शीशी-नुमा पात्र जिसमें सुरमा रखा जाता है।

सुरमानी (सं० त्रि०) अपनेको देवता समझनेवाला।

सुरमा वेली—ब्रह्मपुत्रकी उपत्यकामें अवस्थित जिला। प्रकृत आसामके जिलोंसे विभिन्नरूपमें निर्देश करनेके लिये श्रीहट्ट और कछाड़ जिलेका एकत्र सुरमा वेली नाम रखा गया है। एक कम ऊंचाईके पहाड़से सुरमा-वेली मणिपुर उपत्यकासे विच्छिन्न हुई है।

सुरमा सफेद (फा० पु०) १ एक प्रकारका खनिज पदार्थ जो जिप्सम नामसे प्रसिद्ध है। इसका रंग पीलापन लिये सफेद होता है। इससे 'पेरिस प्लाष्टर' बनाया जा सकता है जिससे पलस्टी टाइप और रबड़की मोहर के सांचे बनाए जाते हैं। यह मुख्यतः शीशे और धातु-की चीजें जोड़नेके काममें आता है। २ एक खनिज पदार्थ जो फिटकरीके समान होता है तथा काबुलके पहाड़ों पर पाया जाता है। आँखोंकी जलन, प्रमेह आदि रोगों-में इसका प्रयोग होता है।

सुरमृत्तिका (सं० स्त्री०) सौराष्ट्रमृत्तिका, गोपीचन्दन।

सुरमेदा (सं० स्त्री०) महामेद।

सुरमौर (हिं० पु०) विष्णु।

सुरम्य (सं० त्रि०) सु-रम-यत्। अति मनोज्ञ, बहुत सुन्दर।

सुरया (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी दांती जो झाड़ी काटनेके काममें आती है।

सुरयान (सं० पु०) देवताओंकी सवारीका रथ।

सुरयुवती (सं० स्त्री०) अप्सरा।

सुरयोषित (सं० स्त्री०) सुरस्त्री, अप्सरा।

सुरराज (सं० पु०) इन्द्र। (भाग० १०।७४।२१)

सुरराज (सं० पु०) सुरपति, इन्द्र।

सुरराजगुरु (सं० पु०) इन्द्रगुरु, बृहस्पति।

सुरराजता (सं० स्त्री०) सुरराजका भाव या पद, इन्द्रत्व, इन्द्रपद।

सुरराजन् (सं० पु०) सुरराज, इन्द्र।

सुरराजवस्ति (सं० पु०) इन्द्रवस्ति, पिंडली।

सुरराजवृक्ष (सं० पु०) पारिजात वृक्ष।

सुरराजा (हि० पु०) इन्द्र।

सुररिपु (सं० पु०) देवताओंके शत्रु, राक्षस।

सुररूख (हिं० पु०) कल्पवृक्ष।

सुरर्षभ (सं० पु०) १ शिव। २ इन्द्र।

सुरर्षि (सं० पु०) देवर्षि। नारद, तुम्बुरु, कोलाहल आदि सुरर्षिमें गिने जाते हैं।

सुरलता (सं० स्त्री०) महाज्योतिष्मती लता।

सुरला (सं० स्त्री०) १ गंगा। २ नदीविशेष।

सुरलासिका (सं० स्त्री०) १ वंशीवाद्य, वंशीध्वनि। २ वंशी, बांसुरी।

सुरली (हिं० स्त्री०) सुन्दर क्रीड़ा।

सुरलोक (सं० पु०) स्वर्ग। स्वर्गमें देवादि सुखपूर्वक रहते हैं, इसीसे सुरलोक नाम पड़ा है।

सुरलोकसुन्दरी (सं० स्त्री०) अप्सरा।

सुरवधू (सं० स्त्री०) देवताओंकी पत्नी, देवाङ्गना।

सुरवर (सं० पु०) देवताओंमें श्रेष्ठ, इन्द्र।

सुरवर्त्म (सं० पु०) देवताओंका मार्ग, आकाश।

सुरवल्लभा (सं० स्त्री०) श्वेतदूर्वा, सफेद दूब।

सुरवल्ली (सं० स्त्री०) तुलसी।

सुरवस (हिं० पु०) जुलाहोंकी वह पतली हलकी छड़ी, पतला बांस या सरकंडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करनेमें होता है।

ताना तैयार करनेके लिये जो लकड़ियां जमीनमें गाड़ी जाती हैं, उनमेंसे दोनों सिरों पर रहनेवाली लकड़ियां तो मोटी और मजबूत होती हैं जिन्हें पाइया कहते हैं, और इनके बीचमें थोड़ी थोड़ी दूर पर जो चार चार पतली लकड़ियां एक साथ गाड़ी जाती हैं, वे सुरवस या सुरस कहलाती हैं।

सुरवा (हिं० पु०) छोटी करछीके आकारका लकड़ीका बना हुआ एक प्रकारका पात्र जिससे हवन आदिमें घीकी आहुति देते हैं। इसका संस्कृत नाम स्रुवा है।

सुरवाड़ी (हिं० स्त्री०) सूअरोंके रहनेका स्थान, सूअरवाड़ा।

सुरवाणी (सं० स्त्री०) देववाणी, संस्कृत भाषा।

सुरवाल (फा० पु०) पायजामा, पैजामा।

सुरवास (सं० पु०) देवस्थान, स्वर्ग।

सुरवाहिनी (सं० स्त्री०) गङ्गा।

सुरविटप (सं० पु०) कल्पवृक्ष।

सुरवीथी (सं० स्त्री०) नक्षत्रोंका मार्ग।

सुरवीर (सं० पु०) इन्द्र।

सुरवृक्ष (सं० पु०) कल्पतरु।

सुरवेला (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नदीका नाम।

सुरवेश्म (सं० पु०) स्वर्ग, देवलोक।

सुरवैरी (सं० पु०) देवताओंके शत्रु, असुर।

सुरशत्रु (सं० पु०) असुर।

सुरशत्रुहन् (सं० पु०) सुरशत्रु' हन्ति हन क्विप्। शिव, महादेव।

सुरशयनी (सं० स्त्री०) आषाढ़ मासके शुक्ल पक्षकी एकादशी, विष्णुशयनी एकादशी।

सुरशाखी (सं० पु०) कल्पवृक्ष।

सुरशिल्पी (सं० पु०) विश्वकर्मा।

सुरश्मि (सं० त्रि०) शोभन अंशुविशिष्ट सोम।

सुरश्रेष्ठ (सं० त्रि०) १ विष्णु। २ शिव। ३ धर्म। ४ गणेश। ५ इन्द्र।

सुरश्रेष्ठा (सं० स्त्री०) ब्राह्मी।

सुरस (सं० क्ली०) १ बोल, हीरा बोल, बर्बर रस। २ त्वक्, दालचीनी। ३ पत्र, तेजपत्र। ४ सुगन्धतृण, रूसा घास। ५ तुलसी। (पु०) ६ सिन्धुवार, संभालू। ७ मोचरस, शाल्मली वृक्षका निर्यास। ८ पीतशाल। (त्रि०) ६ सरस, रसीला। १० स्वादिष्ट, मधुर। ११ सुन्दर।

सुरसंत (हिं० स्त्री०) सरस्वती।

सुरसख (सं० पु०) देवताओंके सखा, इन्द्र।

सुरसतजनक (हिं० पु०) ब्रह्मा।

सुरसत्तम (सं० पु०) देवताओंमें श्रेष्ठ, विष्णु।

सुरसदन (सं० पु०) देवताओंके रहनेका स्थान, स्वर्ग।

सुरसद्म (सं० पु०) स्वर्ग।

सुरसमिध् (सं० स्त्री०) देवकाष्ठ, देवदारु।

सुरसम्भवा (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सुरसर (हिं० पु०) मानसरोवर।

सुरसरसुता (सं० स्त्री०) सरयू नदी।

सुरसरि (सं० स्त्री०) १ गङ्गा। २ कावेरी नदी।

सुरसरित् (सं० स्त्री०) सुराणा सरित्। गङ्गा।

सुरसरिता (सं० स्त्री०) सुरसरित् देखो।

सुरसर्षपक (सं० पु०) देवसर्षप, एक प्रकारकी सरसों।

सुरसा (सं० स्त्री०) १ तुलसी। २ रास्ना, रासन। ३ मिश्रेया, सौंफ। ४ ब्राह्मी। ५ महा शतावरी, सतावर। ६ श्वेत यूथिका, जूही। ७ पुनर्णवा। ८ सर्पगन्धा। ६ श्वेतत्रिवृता, सफेद निसोथ। १० शल्लकी वृक्ष, सलई। ११ निर्गुण्डी, नील सिंधुवार। १२ वृहती, वनभंटा। १३ कण्टकारी, भटकटैया। १४ एक प्रकारकी रागिणी। १५ दुर्गाका एक नाम। १६ रुद्राश्वकी एक पुत्रीका नाम। १७ पुराणानुसार एक नदीका नाम। १८ अंकुशक नोचेका नुकीला भाग। १६ एक वृक्षका नाम। २० एक प्रसिद्ध नागमाता। रामायणमें लिखा है, कि नागमाता सुरसा देवी समुद्रतलमें रहती थी। जब हनुमान् सीताकी खोजमें लङ्का गये, तब देवताओंने नागमाता सुरसासे कहा था, कि, वायुपुत्र हनुमान् समुद्रके ऊपरी भागसे जा रहा है। आप अति भयानक राक्षसका रूप धारण कर उसे चाहते रोकें, हम लोग उसकी बुद्धि, बल और विक्रम देखना हैं। अनन्तर नागमाता देवताओंके कथनानुसार अत्यन्त भीषण राक्षसीका रूप धारण कर हनुमान्‌को रोकती हुई बोली, 'कपिवर! देवताओंने मुझे तुम्हें खानेके लिये भेजा है, इसलिये तुम तैयार हो जाओ, मेरे मुंहमें प्रवेश करो।' सुरसाकी बात सुन कर हनुमान् बड़े प्रसन्न हुए और बोले, 'मैं अभी रामके आज्ञानुसार दूत बन कर जा रहा हूं, सौगन्ध खा कर कहता हूं', कि सीताका सम्वाद ला कर और रामचन्द्रका दर्शन कर जब लौटूंगा, तब निश्चय ही तुम्हारे मुंहमें प्रवेश करूंगा। इस पर सुरसाने एक भी न सुनी और वह बोली, 'मैंने ऐसा वर पाया है, कि कोई भी मुझे अतिक्रम नहीं कर

सकता ।' अनन्तर हनुमान्‌ने कहा, कि जब तुम नहीं मानती हो, तब मैं तैयार हूं, तुम मुंह बाओ, प्रवेश करता हूं। पीछे हनुमान् दश योजन विस्तृत सुरसाको देख स्वयं भी दश योजन हो गये। सुरसाने बीस योजन मुंह बा दिया। हनुमान यह देख कर तीस योजन हो गये। इस प्रकार दोनों अपना अपना पराक्रम दिखलाने लगे।

अनन्तर हनुमान् कोई उपाय न देख अपने शरीरको सिकुड़ा कर अंगुष्ठ प्रमाण हो गये और सुरसा देवीके शरीरमें घुस कर फिर निकले और बोले, 'देवि! मैं आपके शरीरमें घुस गया था, इसलिये आपका वर सुफल हो गया। अब मैं जाता हूं।' सुरसाने हनुमान्‌को अपने मुखविवरसे वहिर्गत देख अपना रूप धारण कर कहा, 'भद्र! तुम्हारा कल्याण हो, तुम अपना उद्देश्य सिद्ध करके शीघ्र ही रामके पास जाओ।' इस प्रकार हनुमान् सुरसाको कौशलसे जीत कर वहांसे चल दिये।

(रामायण सुन्दरका० १ अ०)

२१ अप्सराविशेष। (भारत १।१२३।६०) २२ राक्षसीविशेष। हारीतके चिकित्सित स्थानमें लिखा है, कि हिमवान्‌के उत्तरी किनारे सुरसा नामकी एक राक्षसी है। इसके नूपुर शब्दसे गर्भवती स्त्री आसानीसे प्रसव करती है।

सुरसाग्र (सं० क्ली०) सिन्दुवारमञ्जरी, संभालूकी मंजरी।

सुरसाग्रज (सं० क्ली०) सुरसाग्रणी, सफेद तुलसी।

सुरसादिवर्ग (सं० पु०) वैद्यकमें कुछ विशिष्ट ओषधियोंका एक वर्ग।

सुरसारी (सं० स्त्री०) सुरसरी देखो।

सुरसाद्य (सं० पु०) वृक्षगणविशेष, सम्हालू, तुलसी, ब्राह्मी, वनभंटा, कंटकारी और पुनर्नवा इन सबका समूह।

सुरसाहब (हिं० पु०) देवताओंके स्वामी।

सुरसिन्धु (सं० पु०) गङ्गा।

सुरसुत (सं० पु०) देवपुत्र।

सुरसुन्दर (सं० त्रि०) १ अति मनोज्ञ, अत्यन्त सुन्दर। (पु०) २ सुन्दर देवता।

सुरसुन्दरी (सं० स्त्री०) १ अप्सरा। २ दुर्गा। ३ योगिनीविशेष। तन्त्रमें इस सुरसुन्दरीकी साधन प्रणाली लिखी है। गुरुके उपदेशानुसार यह सुन्दरी साधन करनेसे सभी अभिलाष सिद्ध होते हैं।

सुरसुन्दरीगुटिका (सं० स्त्री०) वैद्यकके अनुसार वाजीकरण या बलवीर्य बढ़ानेकी एक ओषधि। यह अभ्रक, सोनामक्खी, हीरे, सोने और पारेको समभागमें ले कर हिज्जल (समुद्रफल) के रसमें घोंट कर पुटपाक द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

सुरसुत (सं० पु०) देवपुत्र।

सुरसुरभी (हिं० स्त्री०) देवताओंकी गाय, कामधेनु।

सुरसुराना (हिं० क्रि०) १ कीड़ों आदिका रेंगना। २ खुजली होना।

सुरसुराहट (हिं० स्त्री०) १ सुरसुर होनेका भाव। २ खुजलाहट। ३ गुदगुदी।

सुरसुरी (हिं० स्त्री०) १ सुरसुराहट देखो। २ एक प्रकारका कीड़ा जो चावल, गेहूं आदिमें होता है।

सुरसेनप (हिं० पु०) देवताओंके सेनापति, कार्त्तिकेय।

सुरसेना (सं० स्त्री०) देवताओंकी सेना।

सुरसैनी (हिं० स्त्री०) सुरशयनी देखो।

सुरस्कन्द (सं० पु०) असुर।

सुरस्त्री (सं० स्त्री०) अप्सरा।

सुरस्त्रीश (सं० पु०) सुरस्त्रीणामीशः। इन्द्र।

सुरस्थान (सं० क्ली०) सुराणां स्थानं। स्वर्ग, देवलोक।

सुरस्रवंती (सं० स्त्री०) आकाशगंगा।

सुरस्रोतस्विनी (सं० स्त्री०) गंगा।

सुरस्वामी (सं० पु०) देवताओंके स्वामी, इन्द्र।

सुरहरा (हिं० वि०) जिसमें सुरसुर शब्द हो, सुरसुर शब्दसे युक्त।

सुरही (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी सोलह चित्ती कौड़ियां जिनसे जुआ खेलते हैं। २ सोलह चित्ती कौड़ियोंसे होनेवाला जूआ। इस जूएमें कौड़ियां मुट्ठीमें उठा कर जमीन पर फेंकी जाती हैं और उनकी चित्त पटकी गिनतीसे हार जीत होती है। प्रायः बड़े जुआरी

लोग इसीसे जुआ खेलते हैं। ३ चमरी गाय। ४ एक प्रकारकी घास जो पहली जमीनमें होती है।

सुरहोनी (हिं०) पुन्नाग जातिका एक पेड जो पश्चिम घाटमें होता है। यह प्रायः डेढ सौ फुट तक ऊंचा होता है।

सुरा (सं० स्त्री०) सु अभिषवे क्रन्, स्त्रियां टाप् यद्वा सुष्ठु राजन्त्यनयेति सुरे शब्दे (आतश्चोपसर्गे। पा ३।३।११६) इत्यङ् टाप्। १ मद्य, शराब। मद्यका साधारण नाम सुरा है, किन्तु वैद्यक मतसे मद्य, सुरा, आसव और अरिष्टमें थोडा प्रभेद है। फिर कहीं कहीं एक ही अर्थमें व्यवहृत होता है। शास्त्रानुसार सुरापान विशेष निषिद्ध है। अन्यान्य पाप करनेसे प्रायश्चित्त द्वारा वह दूर होता है, किन्तु सुरापानमें मरणान्त प्रायश्चित्त है। महाभारतमें लिखा है, कि दैत्योंने शुक्राचार्यको सुरा पिला कर पीछे कचकी हत्या कर उसका मांस उन्हें खिलाया था। अनन्तर शुक्राचार्यको जब इसका पेता चला, तब उन्होंने सुराको शाप दिया, कि आजसे जो ब्राह्मण मोहवशतः सुरापान करेगा, वह धर्मच्युत और ब्रह्महत्यापातकमें लिप्त तथा इहपरलोकमें निन्दित होगा। मैंने ब्राह्मणके धर्मविषयमें यह सीमा और मर्यादा स्थापन की। (भारत आदिप० ७६ अ०) इससे जाना जाता है, कि सुरा ब्राह्मणोंकी अपेय है। मद्य देखो।

कविकल्पलतामें लिखा है, कि सुरापान करनेसे अङ्गवैकल्य, वचन और गमनका स्खलन, लज्जा और मानच्युति, प्रेमाधिक्य और भ्रान्ति होती है।

२ जल, पानी। ३ पीनेका पात्र। ४ सर्प।

सुराकर (सं० पु०) १ नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड। २ मद्योत्पत्तिस्थान, भट्ठी जहां शराब चुआई जाती है।

सुराकर्म (सं० क्ली०) सुरा द्वारा यज्ञीय कर्मभेद।

सुराकार (सं० पु०) सुराप्रस्तुतकारक, शराब चुआने वाला।

सुराकुम्भ (सं० पु०) वह पात्र या घडा जिसमें मद्य रखा जाता है, शराब रखनेका घडा।

सुराख (फा० पु०) छिद्र, छेद।

सुराग (हिं० पु०) १ गाढ प्रेम, अत्यन्त प्रेम। २ सुन्दर राग। (अ० पु०) ३ सूत्र, टोह, पता।

सुरागाय (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी दो नसली गाय। इसकी पूंछ गुप्फेदार होती है जिससे चंवर बनता है। यह एक प्रकारके जंगली सांड—जो तिब्बत और हिमालयमें होते हैं और जिनके बाल लवे और मुलायम होते हैं—और भारतीय गायके संयोगसे उत्पन्न हैं। यह प्रायः पहाडों पर ही रहती है। मैदानका जल-वायु इसके अनुकूल नहीं होता।

सुरागार (सं० क्ली०) १ सुरागृह, वह स्थान जहां मद्य बिकता है, शराबखाना। (मार्कण्डेयपु० ५१।३५) २ देवताओंका घर।

सुरागृह (सं० क्ली०) सुरागृह, सुरागार।

सुराग्रह (सं० पु०) मद्य पीनेका एक प्रकारका पात्र।

सुराग्र्य (सं० पु०) अमृत।

सुराघट (सं० पु०) सुराकुम्भ देखो।

सुराङ्गना (सं० स्त्री०) १ देवपत्नी। २ अप्सरा।

सुराचार्य (सं० पु०) बृहस्पति।

सुराजक (सं० पु०) सुष्ठु राजते इति राज-ण्वुल्। भृङ्गराज, भंगरा।

सुराजन् (सं० पु०) सुष्ठुपूजितो राजा न (पूजनात्। पा ५।४।६९) इति न टच्। १ शोभनराज, उत्तम राजा। (त्रि०) २ सुन्दर नृपतियुक्त देशादि।

सुराजिका (सं० स्त्री०) छिपकली।

सुराजीव (सं० पु०) विष्णु।

सुराजीवी (सं० पु०) शराब चुआने या बेचनेवाला, शौण्डिक, कलवार।

सुराज्य (सं० पु०) वह राज्य जिसमें प्रधानतः शासितोंके हित पर दृष्टि रख कर शासन कार्य किया जाता हो, वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शान्ति विराजित हो।

सुराति (सं० त्रि०) अतिशय दाता, बडा दानी।

सुराथी (हिं० स्त्री०) लकडीका वह डंडा या लबेदा जिससे अनाजके दाने निकालनेके लिये बाल आदि पीटते हैं।

सुरालय (सं० पु०) शौण्डिकालय, शराबखाना।

सुराध (सं० पु०) असुरभेद।

सुराधम (सं० त्रि०) सुरोत्तम, सुराश्रेष्ठ।

सुराधस् (सं० त्रि०) १ उत्तम धनविशिष्ट, खूब धनी, अमीर। २ उत्तम दान देनेवाला, बहुत बड़ा दाता। (पु०) ३ एक ऋषिका नाम।

सुराधानी (सं० स्त्री०) मद्यका कलसी, शराब रखनेकी गगरी।

सुराधिप (सं० पु०) देवताओंके अधिपति इन्द्र।

सुराधीश (सं० पु०) सुरोंके अधिपति, इन्द्र।

सुराध्यक्ष (सं० पु०) १ ब्रह्मा। २ कृष्ण। ३ शिव।

सुराध्वज (सं० पु०) सुरापानचिह्न, मद्यपानका वह चिह्न जो प्राचीनकालमें मद्य-पान करनेवालोंके मस्तक पर लोहेसे दाग कर किया जाता था। मनुने मद्यपानकी गणना चार महापातकोंमें की है, और कहा है, कि राजाको उचित है, कि मद्य-पान करनेवालेके मस्तक पर मद्यपानका चिह्न गुरुपत्नीसे गमन करनेवालेके ललाट पर भगाकार चिह्न, सुवर्ण चुरानेवाले पर कुत्तेका पदचिह्न और ब्राह्मणघातीके ललाट पर कबन्धपुरुषका चिह्न लोहेसे दाग कर अङ्कित करा दे। यही चिह्न सुराध्वज कहलाता था।

सुरानक (सं० पु०) देवताओंका आनक या नगाड़ा।

सुरानीक (सं० पु०) देवताओंकी सेना।

सुरान्त (सं० पु०) राक्षस। (भागवत ६।१०।१८)

सुराप (सं० पु०) सुरां पिबतीति पा क। १ सुरापायी, शराबी। २ बुद्धिमान्, मनीषी।

सुरापगा (सं० स्त्री०) देवताओंकी नदी, गंगा।

सुरापाण (सं० क्ली०) सुरायाः पानं (वा भाव करणयोः। पा ८।४।१०) इति विभाषया णत्व। १ मद्यपान, शराब पीना। २ अपदंश, मद्यपान करनेके समय खाये जानेवाले चटपटे पदार्थ।

सुरापान (सं० पु०) सुरा पानं येषां (पानं देशे। पा ८।४।९) इति णत्वं। १ भूमा। २ पूर्व देशके लोग। ३ सुरापाण देखो।

सुरापात्र (सं०पु०) मदिरा रखने या पीनेका पात्र।

सुरापाना (सं० पु०) पूर्व देशके लोग। सुरापान करनेके कारण इस देशके लोगोंका यह नाम पड़ा है।

सुरापी (सं० त्रि०) सुराप देखो।

सुरापीथ (सं० पु०) सुरापान, शराब पीना।

सुराबलि (सं० पु०) यज्ञमें सुरा उत्सर्ग।

सुराब्धि (सं० पु०) सुरासमुद्र। पुराणोंके अनुसार यह सात समुद्रोंमेंसे तीसरा है। मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि लवण समुद्रसे दूना इक्षु समुद्र और इक्षु समुद्रसे दूना सुरा समुद्र है।

सुराभाग (सं० पु०) सुराया भागः। सुराका अग्रभाग, शराबकी माड़।

सुराम (सं० त्रि०) सुष्ठु रमणसाधन।

सुरामण्ड (सं० पु०) सुराका अग्रभाग, शराबकी मांड।

सुरामत्त (सं० त्रि०) मद्योन्मत्त, शराबके नशेमें चूर।

सुरामुख (सं० पु०) १ वह जिसके मुंहमें शराब हो। २ एक नागासुरका नाम।

सुरामेह (सं० पु०) प्रमेहरोगविशेष। कहते हैं, कि इस रोगमें रोगीको शराबके रंगका पेशाब होता है। पेशाब शीशीमें रखनेसे नीचे गाढ़ा और ऊपर पतला दिखलाई पड़ता है। पेशाबका रंग मटमैला या लाली लिये होता है।

सुरामेही (सं० त्रि०) सुरामेह अस्त्यर्थे इनि। सुरामेहरोगविशिष्ट, जिसे सुरामेह रोग हुआ हो।

सुरायुध (सं० क्ली०) देवताओंका अस्त्र।

सुरारणि (सं० स्त्री०) देवताओंकी माता, अदिति।

सुरारि (सं० पु०) १ असुर, राक्षस। २ एक दैत्यका नाम।

सुरारिघ्न (सं० पु०) असुरहन्ता, विष्णु।

सुरारिहन्ता (सं० पु०) असुरोंका नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहन् (सं० पु०) असुरोंका नाश करनेवाले, शिव।

सुरारी (हिं० पु०) एक प्रकारकी बरसाती घास जो राजपूताने और बुंदेलखण्डमें होती है। यह चारेके लिये बहुत अच्छी समझी जाती है। इसे लप भी कहते हैं।

सुरार्द्दन (सं० पु०) असुर।

सुरार्ह (सं० क्ली०) १ हरिचन्दन। २ स्वर्ण, सोना। ३ कुंकुमागुरुचन्दन।

सुरार्हक (सं० पु०) १ वर्वरक, बबई। २ वैजयन्ती, तुलसी।

सुराल (सं० पु०) श्वेत सर्जरस, राल, धूना।

सुरालय (सं० पु०) १ सुमेरुपर्वत, देवताओंका वास-

स्थान। २ देवमन्दिर। ३ सुराका आलय, शरावकी दूकान।

सुरालिका (सं० स्त्री०) सातला या सतला नामकी बेल जो जंगलोंमें होती है। इसकी पत्तियां खैरकी पत्तियोंके समान छोटी छोटी होती हैं। इसका फल पोला होता है और इसमें एक प्रकारकी पतली चिपटी फली लगती है। फलीमें काले बीज होते हैं जिसमेंसे पीले रंगका दूध निकलता है। वैद्यकके अनुसार यह लघु, तिक्त, कटु तथा कफ, पित्त, विस्फोटक, व्रण और शोथको नाश करनेवाली है।

सुराव (सं० पु०) १ एक प्रकारका घोडा। २ उत्तम ध्वनि।

सुरावत् (सं० त्रि०) सुरा प्रस्तुतकारी, शराव बनानेवाला।

सुरावती (सं० स्त्री०) सुरावनि देखो।

सुरावनि (सं० स्त्री०) १ कश्यपकी पत्नी और देवताओंकी माता अदिति। २ पृथ्वी।

सुरावारि (सं० पु०) सुरासमुद्र। सुराब्धि देखो।

सुरावास (सं० पु०) सुमेरु, सुरनिलय।

सुरावृत (सं० पु०) सूर्य।

सुरावृध (सं० त्रि०) सुरापान द्वारा वृद्ध।

सुराश्रय (सं० पु०) सुमेरु।

सुराष्ट्र (सं० पु०) शोभनं राष्ट्रं यस्य। १ एक प्राचीन देशका नाम जो भारतके पश्चिममें था। किसीके मतसे यह सूरत और किसीके मतसे काठियावाड है। २ श्रीरामचन्द्रके परिवारविशेष। श्रीरामचन्द्रकी पूजामें श्रीरामयंत्र अङ्कित होनेसे उस यंत्रके पद्मदलमें सुराष्ट्रकी पूजा करनी होती है। (त्रि०) ३ जिसका राज्य अच्छा हो।

सुराष्ट्रज (सं० क्ली०) १ गोपीचन्दन, सौराष्ट्र मृत्तिका। २ कृष्ण मुद्ग, काली मूंग। ३ रक्त कुलत्थ, लाल कुलथी। ४ एक प्रकारका विष। (त्रि०) ५ सुराष्ट्र देशमें उत्पन्न।

सुराष्ट्रजा (सं० स्त्री०) गोपी चन्दन।

सुराष्ट्रोद्भवा (सं० स्त्री०) फिटकरी।

सुरासन्धान (सं० पु०) शराव चुआनेकी क्रिया।

सुरासमुद्र (सं० पु०) सुराब्धि देखो।

सुरासव (सं० पु०) एक प्रकारका आसव। सुश्रुतके मतसे इसका गुण—तीक्ष्ण, हृद्य, मूत्रवर्द्धक, कफ और वायुनाशक, मुखप्रिय और स्थिरमद।

सुरासार (सं० पु०) मद्यका सार जो अङ्गूर या माडीके खमीरसे बनता है (Alcohol)। बिना खमीरके मद्य नहीं बनता। येष्ट (सुरामण्ड) की सहायतासे मीठे तरल पदार्थोंके रासायनिक उपादान फिरसे यथास्थान पर सन्निवेशित होते हैं, इस प्रक्रियाको खमीर उठाना कहते हैं। इससे स्पिरिट (सार) या शुद्ध सुरासार उत्पन्न होता है। किन्तु उस समय भी यह अन्यान्य उपादानोंके साथ बहुत कुछ मिला रहता है। बार बार चुआई करके इसे विश्लिष्ट करना होता है।

रासायनिक हिसाबसे सुरासारका अर्थ है अङ्गजन, अङ्गारजन और जलजन इन तीन पदार्थोंका क्रियाहीन संमिश्रण। इससे एक प्रकारका 'इथर' उत्पन्न होता है। किन्तु साधारणतः इसके द्वारा 'इथिलिक एलकोहल' या मद्यसार (Spirit या Wine) ही समझा जाता है। जिन सब उपादानों द्वारा मद्य बनाया जा सकता है, उनके शर्करा गुणविशिष्ट अंशके ऊपर सुरामण्ड (Yeast) प्रस्तुत करनेके प्रधान उपकरण बेंगके छत्राककी क्रिया द्वारा जो खमीर उठता है उससे सुरासार उत्पन्न होता है। बाजारमें तीन प्रकारके शक्तिसम्पन्न सुरासार मिलते हैं—शुद्ध सुरासार, विशुद्ध सुरासार तथा अर्द्धमात्रा जल और अर्द्धमात्रा सुरासारका संमिश्रण शुद्ध सुरासारमें जल बिलकुल नहीं रहता। सुरासारके वजनमें सैकडे पीछे १६ भाग जल मिलानेसे विशुद्ध सुरासार उत्पन्न होता है। प्रूफस्पिरिट शुद्ध सुरासारमें सैकडे पीछे ५०.७६ भाग जल मिला रहता है। बारूदके ऊपर सुरासार ढाल कर और उसमें आग लगा कर सुरासारकी शक्ति-परीक्षा की जाती है। बारूदका जल उठनेसे सुरासारको Proof (प्रमाण) कहते हैं। किन्तु सुरासारमें यदि जलका अंश अधिक रहे, तो बारूद नहीं जलेगी; तब उसे Under Proof कहते हैं। साधारणतः यह रासायनिक कार्योंमें और अरक बनानेमें व्यवहृत होता है।

सुरासुर (सं० पु०) सुर और असुर, देवता और दानव।

सुरासुरगुरु (सं० पु०) १ शिव । २ कश्यप ।
सुरासोम (सं० पु०) सुराकृत सोम ।
सुरास्पद (सं० पु०) देवमन्दिर, देवगृह ।
सुराही (अ० स्त्री०) १ जल रखनेका एक प्रकारका प्रसिद्ध पात्र । यह प्रायः मिट्टीका और कभी कभी पीतल या जस्ते आदि धातुओंका भी बनता है । यह बिलकुल गोल हंडीके आकारका होता है, पर इसका मुंह ऊपरकी ओर कुछ दूर तक निकला हुआ गोल नलीके आकारका होता है । प्रायः गरमीके दिनोंमें पानी ठंढा करनेके लिये इसका उपयोग होता है । इसे कहीं कहीं कुज्जा भी कहते हैं । २ सोने या चांदीका बना हुआ छोटा लंबोतरा टुकड़ा । यह सुराहीके आकारका होता है और बाजू, जोशन या बरेखोंके लटकने हुए सूतमें घुंडीके ऊपर लगाया जाता है । ३ कपड़ेकी एक प्रकारकी काट जो पानके आकारकी होती है । इसमें मछलीकी दुमकी तरह कुछ कपड़ा तिकोना लगा रहता है । ४ नैचेमें सबसे ऊपरकी ओर वह भाग जो सुराहीके आकारका होता है और जिस पर चिलम रखी जाती है ।
सुराहीदार (फा० वि०) सुराहीके आकारका, सुराहीकी तरहका गोल और लंबोतरा ।
सुराह्व (सं० पु०) १ देवदारु । २ मरुवक, मरुआ । ३ हरिद्रु वृक्ष, हलदुवा ।
सुराह्वय (सं० पु०) सुराह्व देखो ।
सुरि (सं० त्रि०) अतिशय धनी, बड़ा अमीर ।
सुरी (सं० स्त्री०) देवपत्नी, देवाङ्गना ।
सुरीक (सं० पु०) एक प्रसिद्ध कवि ।
सुरीला (हिं० वि०) मीठे सुरवाला, जिसका सुर मीठा हो ।
सुरुक्म (सं० क्ली०) शोभन दीप्ताभरण, सुन्दर और चमकीला गहना ।
सुरुङ्ग (सं० पु०) शोभाञ्जनवृक्ष, सहिंजन ।
सुरुङ्गयुक् (सं० पु०) सुरङ्गयुक् देखो ।
सुरुङ्गा (सं० स्त्री०) सुरङ्गा, सेंध ।
सुरुङ्गाहि (सं० पु०) चौरविशेष, सेंध लगानेवाला चोर ।
सुरुङ्गदला (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नदीका नाम ।
सुरुचम (सं० त्रि०) अच्छी तरह प्रकाशित, प्रदीप्त ।
सुरुख (हिं० वि०) अनुकूल, सदय ।
सुरुखरू (फा० वि०) जिसे किसी काममें यश मिला हो, यशस्वी ।
सुरुच् (सं० पु०) १ उज्ज्वल प्रकाश, अच्छी रोशनी । (त्रि०) २ सुन्दर प्रकाशवाला ।
सुरुचि (सं० त्रि०) १ उत्तम रुचियुक्त, जिसकी रुचि उत्तम हो । २ स्वाधीन । (स्त्री०) ३ राजा उत्तानपादकी स्त्री । राजा उत्तानपादके दो स्त्री थी, सुरुचि और सुनीति । सुरुचि राजाकी अत्यन्त प्रियतमा महिषी थीं । इनके पुत्रका नाम उत्तम और सुनीतिके पुत्रका नाम ध्रुव था । (भागवत ४।८ अ०) ध्रुव शब्दमें विशेष विवरण देखो । ४ उत्तम रुचि । ५ अत्यन्त प्रसन्नता । (पु०) ५ एक गंधर्व राजाका नाम । ६ एक यक्षका नाम ।
सुरुचिर (सं० त्रि०) १ अतिशय मनोहर, सुन्दर । २ उज्ज्वल, प्रकाशमान ।
सुरुज (सं० त्रि०) अस्वस्थ, बहुत बीमार ।
सुरुजमुखी (हिं० पु०) सूर्यमुखी देखो ।
सुरुद्रि (सं० स्त्री०) शतद्रु या वर्त्तमान सतलज नदी ।
सुरुन्दला (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम ।
सुरुल (हिं० पु०) मूंगफली पौधेका एक रोग । इसमें कुछ कीड़ोंके खानेके कारण उसके पत्ते और डंठल टेढ़े हो जाते हैं । इस पौधेमें यह रोग प्रायः सभी जगहोंमें होता है और इससे बड़ी हानि होती है ।
सुरुवा (हिं० पु०) १ शोरवा देखो । २ सुरवा देखो ।
सुरूप (सं० त्रि०) १ सुन्दर रूपयुक्त खूबसूरत । २ विद्वान् बुद्धिमान् । (क्ली०) सुशोभनरूपमस्य । ३ तूल, कपास । ४ परिपाश्वत्थ, पलास पीपल । (पु०) ५ शिवका एक नाम । ६ एक असुरका नाम । ७ कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति । कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरुरवा, नलकूवर और शाम्ब ये सुरूप कहलाते हैं ।
सुरूपक (सं० त्रि०) सुरूप देखो ।
सुरूपकृत्नु (सं० त्रि०) शोभन रूपोपेत कर्मके कर्त्ता ।
सुरूपता (सं० स्त्री०) सुरूप होनेका भाव, सुन्दरता, खूबसूरती ।

सुरूपा (सं० त्रि०) १ शोभन रूपोपेता, सुन्दररूपवाली। (स्त्री०) २ शालपर्णी, सरिवन। ३ भार्गी, वामनटी। ४ वनमल्लिका, सेवती। ५ वार्षिकी मल्लिका, बेला। ६ पुराणानुसार एक गौका नाम।

सुरूहक (सं० पु०) गर्दभाश्व, खच्चर।

सुरेक्णस् (सं० त्रि०) शोभन धनयुक्त। (ऋक् ६।१६।२६)

सुरेखा (सं० स्त्री०) १ शुभ रेखा, हाथ पांवमें होनेवाली वे रेखाएं जिनका रहना शुभ समझा जाता है। (वृहत्स० ७ अ०) २ सुन्दर रेखा।

सुरेज्य (सं० पु०) वृहस्पति। (वृहत्स० ८।२३)

सुरेज्ययुग (सं० पु०) फलित ज्योतिषके अनुसार वृहस्पतिका युग जिसमें पांच वर्ष हैं। इन पांचों वर्षों के नाम ये हैं—अङ्गिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता।

सुरेज्या (सं० स्त्री०) तुलसी। (राजनि०)

सुरेणु (सं० पु०) १ त्रसरेणु। २ एक प्राचीन राजाका नाम। (स्त्री०) ३ त्वाष्ट्रीकी पुत्री और विवस्वान्की पत्नी। ४ एक नदी जो सप्त सरस्वतियोंमें समझी जाती है।

सुरेणुपुष्पध्वज (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार किन्नरोंके एक राजाका नाम।

सुरेतना (हिं० क्रि०) खराब अनाजसे अच्छे अनाजको अलग करना।

सुरेतर (सं० पु०) सुरादितरः। असुर।

सुरेतस् (सं० त्रि०) अधिक सामर्थ्यवान्, बहुत वीर्यवान्।

सुरेन्द्र (सं० पु०) १ सुरपति इन्द्र। २ लोकपाल, राजा।

सुरेन्द्रक (सं० पु०) कटु शूरणविशेष। काटनेवाला जमीकन्द।

सुरेन्द्रकन्द (सं० पु०) सुरेन्द्रक देखो।

सुरेन्द्रगोप (सं० पु०) इन्द्रगोपकीट, बीरबहूटी।

सुरेन्द्र चाप (सं० क्ली०) इन्द्रधनुष।

सुरेन्द्रजित् (सं० पु०) १ गरुड। २ इन्द्रजित्, इन्द्रविजयी।

सुरेन्द्रता (सं० स्त्री०) सुरेन्द्र होनेका भाव या धर्म, इन्द्रत्व।

सुरेन्द्रपूज्य (सं० पु०) वृहस्पति।

सुरेन्द्रमाला (सं० स्त्री०) एक किन्नरीका नाम।

सुरेन्द्रलोक (सं० पु०) सुरेन्द्रस्य लोकः। इंद्रलोक।

सुरेन्द्रवज्रा (सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्तका नाम जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं।

सुरेन्द्रवती (सं० स्त्री०) शची, इन्द्राणी।

सुरेभ (सं० क्ली०) १ रङ्ग। (पु०) २ सुरहस्ती, देवहस्ती।

सुरेश्वट (सं० पु०) पूगवृक्षविशेष, रामपूग।

सुरेश (सं० पु०) सुराणामीशः। १ सुरेश्वर, इंद्र। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कृष्ण। ५ लोकपाल।

सुरेशलोक (सं० पु०) सुरेशस्य लोकः। इन्द्रलोक।

सुरेश्वर (सं० पु०) १ देवताओंके स्वामी, इन्द्र। २ ब्रह्मा। ३ शिव। ४ रुद्र। (त्रि०) ५ देवताओंमें श्रेष्ठ।

सुरेश्वरधनुस् (सं० क्ली०) इन्द्रधनुष।

सुरेश्वरी (सं० स्त्री०) १ स्वर्गगङ्गा। २ दुर्गा। ३ लक्ष्मी।

सुरेष्ट (सं० पु०) १ श्वेतरक्त वक वृक्ष, सफेद और लाल अगस्तका पेड। २ सुरपुन्नाग। ३ शिवमल्ली, बडी मौलसिरी। ४ शाल वृक्ष, साखू।

सुरेष्टक (सं० पु०) शाल, साखू।

सुरेष्टा (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी अनिष्टकारी घास जो गर्मीके मौसिममें पैदा होती है। २ गाय।

सुरैत (हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिससे विवाह संबंध न हुआ हो, बल्कि जो यों ही घरमें रख ली गई हो, उपपत्नी, रखनी, रखेली।

सुरैतवाल (हिं० पु०) सुरैतका लडका।

सुरैतवाला (हिं० पु०) सुरैतवाल देखो।

सुरैतिन (हिं० स्त्री०) सुरैत देखो।

सुरोचन (सं० पु०) १ यज्ञवाहुके एक पुत्रका नाम। २ एक वर्षका नाम।

सुरोचना (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

सुरोचि (हिं० वि०) सुन्दर।

सुरोचिस् (सं० पु०) वशिष्ठके पुत्र, एक ऋषि।

सुरोत्तम (सं० पु०) १ सूर्य। २ देवताओंमें श्रेष्ठ, विष्णु।

सुरोत्तमा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुरोत्तर (सं० पु०) चन्दन।

सुरोद (सं० पु०) सुरासमुद्र, मदिराका सागर।

सुरोदक (सं० क्ली०) १ सुरासमुद्र। २ मद्य जल, शराब-

का पानी । (वि०) २ सुराजलविशिष्ट, जिसमें शराबका पानी हो ।

सुरोध (सं० पु०) पुराणानुसार तंसु के एक पुत्रका नाम ।

सुरोधस (सं० पु०) सोमप्रवर्त्तक एक ऋषिका नाम ।

सुरोमन् (सं० त्रि०) १ सुन्दर रोमविशिष्ट, जिसके रोम सुन्दर हों । (पु०) २ एक यक्षका नाम ।

सुरोपण (सं० पु०) देवताओंके एक सेनापतिका नाम ।

सुरौकस् (सं० पु०) १ सुरालय, स्वर्ग । २ देवमन्दिर ।

सुर्ख (फा० वि०) १ रक्त वर्णका, लाल । (पु०) २ गहरा लाल रंग ।

सुर्खरू (फा० वि०) १ जिसके मुंह पर तेज हो, तेजस्वी । २ प्रतिष्ठित, सम्मान्य । ३ किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके कारण जिसके मुंहकी लाली रह गई हो ।

सुर्खरूई (फा० स्त्री०) १ सुर्खरू होनेका भाव । २ यश, कीर्त्ति । ३ मान, प्रतिष्ठा ।

सुर्खा (फा० पु०) एक प्रकारका लाल कबूतर ।

सुर्खाब (फा० पु०) सुरखाब देखो ।

सुर्खी (फा० स्त्री०) १ लाली, ललाई । २ लेख आदिका शीर्षक जो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकोंमें प्रायः लाल स्याहीसे लिखा जाता था । ३ रक्त, लहू । सुरखी देखो ।

सुर्खीदार सुरमई (फा० पु०) एक प्रकारका सुरमई या बैंगनी रंग जो कुछ लाली लिये होता है ।

सुर्जना (हिं० पु०) सहिंजन देखो ।

सुर्ती (हिं० वि०) समझदार, होशियार ।

सुर्ती (फा० स्त्री०) सुरती देखो ।

सुर्मा (फा० पु०) सुरमा देखो ।

सुर्रा (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी मछली । २ थैली, बटुआ ।

सुलंक (हिं० पु०) सोलङ्क देखो ।

सुलंकी (हिं० पु०) सोलङ्की देखो ।

सुलक्ष (सं० पु०) सुलक्षण ।

सुलक्षण (सं० त्रि०) १ शुभ लक्षणोंसे युक्त, अच्छे लक्षणोंवाला । २ भाग्यवान्, किस्मतवर । (पु०) ३ शुभ लक्षण, शुभ चिह्न । ४ एक प्रकारका छन्द । इसके प्रत्येक चरणमें १४ मात्राएं होती हैं । सात मात्राओंके बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है ।

सुलक्षणत्व (सं० पु०) सुलक्षणता, सुलक्षणका भाव ।

सुलक्षणा (सं० स्त्री०) १ पार्वतीकी एक सखीका नाम । (त्रि०) २ शुभ लक्षणोंसे युक्त, अच्छे लक्षणोंवाली ।

सुलक्षणी (सं० त्रि०) सुलक्षणा देखो ।

सुलगना (हिं० क्रि०) १ प्रज्वलित होना, दहकना । २ बहुत अधिक संताप होना ।

सुलगाना (हिं० क्रि०) १ प्रज्वलित करना, जलाना । २ संतप्त करना, दुःखी करना ।

सुलग्न (सं० पु०) १ शुभ मुहूर्त्त, अच्छी सायत । (त्रि०) २ दृढ़तासे लगा हुआ ।

सुलच्छ (हिं० वि०) सुन्दर ।

सुलच्छन (हिं० वि०) सुलक्षण देखो ।

सुलच्छनी (हिं० वि०) सुलक्षणा देखो ।

सुलझन (हिं० स्त्री०) सुलझनेकी क्रिया या भाव, सुलझाव ।

सुलझना (हिं० क्रि०) किसी उलझी हुई वस्तुकी उलझन दूर होना या खुलना, गुत्थीका खुलना ।

सुलझाना (हिं० क्रि०) जटिलताओंको दूर करना, उलझन या गुत्थी खोलना ।

सुलझाव (हिं० पु०) सुलझनेकी क्रिया या भाव, सुलझन ।

सुलटा (हिं० वि०) उलटाका विपरीत, सीधा ।

सुलतान (फा० पु०) सम्राट्, बादशाह ।

सुलतानगंज—भागलपुर जिलेका एक प्रसिद्ध कसबा। यह अक्षा० २५° १५′ उ० तथा देशा० ८६° ४५′ पू०के मध्य भागलपुर शहरसे १४ मील पश्चिम गंगाके दाहिने तट पर बसा हुआ है। इस नामका ई० आई० आर० का यहां कसबेसे दक्षिण स्टेशन भी है। इसका पुराना नाम जह्नुक्षेत्र है। यह हिन्दुओंका परम पवित्र स्थान है। आबादी चार हजारसे ऊपर है। प्राचीन हिन्दू इतिहासकी दृष्टिसे यहां तीन अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण स्थान हैं। प्रथम अजगवीनाथ महादेवका, द्वितीय विक्रमशिलाका और तृतीय कर्णगढ़का ।

सुलतानगंजमें गंगाकी मध्य धारासे कुछ हाथ दाहिनी तरफ हट कर एक प्रबल वेगवती धारामें पहाड़का एक टुकड़ा, अनन्त कालसे, पड़ा हुआ है। इसी टुकड़े पर जह्नु ऋषिका स्थान है। पुराणोंमें उल्लेख है कि, जिस समय अपने पितरोंके उद्धारार्थ महाराज भगीरथ अपनी उत्कट तपस्यासे गंगाजीको कलिकल्मष-नाशिनी वारिधारा मर्त्यधाममें ले कर आ रहे थे, उस समय इस टुकड़े पर ऋषिवर जह्नु ध्यानावस्थित थे। गंगाकी धारामें जब यह स्थान आप्लुत हो चला और आसनासीन ऋषि पर भी जब धाराकी चढ़ाई होनेको हुई, तब जह्नुका ध्यान टूटा और उन्होंने योगावेशमें आ कर गंगाजीको अपनी अञ्जलिमें उठा कर पान कर लिया। यह देख कर भगीरथ बड़े व्यग्र और कातर हो पड़े। अन्तको उन्होंने जह्नुकी सविनय स्तुति की। दयापरवश हो, जह्नुने कहा—"अच्छा, गंगाजीको तो मैंने पान कर लिया। मुखके द्वारा निकालनेसे तो वह उच्छिष्ट हो जायंगी। हां, लीजिये, मैं अपनी जंघा चीर कर गंगाको निकाल देता हूं।" ऋषिने ऐसा ही किया। धारा पूर्वाभिमुखिनी हुई और तभीसे गङ्गाका एक नाम जह्नुतनया या जाह्नवी हुआ और यह टुकड़ा भी गंगाका एक नया पितृगृह हुआ। कदाचित् इसीलिये गंगाको इस स्थानसे ऐसा प्रेम हुआ कि, वह इसे कभी भी नहीं छोड़ती और अपने अभय क्रोड़में सदा इसे धारण किये रहती है। केवल सन् १८६६ और १९०२-०३ ई०में इस स्थानके चारों ओरसे हट कर गंगा उत्तरकी ओर चली गयी थी, परन्तु उस समय भी इस टुकड़ेके नीचेसे एक धारा निकल कर गंगाकी धारामें मिल गयी थी।

'आनन्द-सागर'में लिखा है कि, लङ्कामें विजयश्री धारण कर अयोध्या लौटने पर और कुछ दिन राज कार्य देख चुकने पर श्रीरामचन्द्र तीर्थाटनको निकले। यात्रा-प्रसङ्गमें रामजी इस आश्रम पर पहुंचे और उन्होंने गंगा मध्य स्थित वैद्यनाथेशका दर्शन किया।" इस आश्रमके रहनेवाले महन्त और साधु भी वैद्यनाथकी ही मूर्त्ति यहां मानते हैं, परन्तु आज कल "अजगवीनाथ" नामसे ही यहांके महादेवजीकी प्रसिद्धि है।

अजगव शब्दका अर्थ है धनुष्। इसलिये अजगवीनाथका अर्थ हुआ धनुष-धारी शंकर। यह सब कुछ है, परंतु इस पहाड़के टुकड़े पर शंकरजीका मन्दिर कब बना, इसका ठीक पता नहीं लगता। हां, इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि वर्तमान मंदिर ईंटोंसे बना हुआ है, इसलिये बहुत पुराना नहीं हो सकता। लोग कहते हैं, कि सोलहवीं शताब्दीमें बाबा हरनाथ भारतीने इस मंदिरको बनाया था। इसी समय यहांके शेषनाग और गौरीशंकरके भी मंदिर बने। घाटकी सीढ़ियां रंगपुरके जमींदार श्रीयुत् अन्नदाप्रसादसेनकी बनवायी हुई हैं। मंदिरमें एक गुफा भी है, जो बहुत दूर तक चली गई है, परंतु अब वह बंद कर दी गयी है। अजगवीनाथ महादेवके लिङ्गको पश्चिम तरफ दीवारमें गणेश और पर्वतीकी मूर्त्तियां हैं और एक स्तम्भ भी है। शिवलिङ्गके पूर्व दो लिङ्ग ऐसे स्थापित हैं, जो महन्तोंकी समाधि कहे जाते हैं। मन्दिरमें राधाकृष्णकी भी मूर्त्ति है। दरवाजेसे उत्तर संगमर्मरकी पार्वती मूर्त्ति है। पास ही गज भर ऊंची दशभुजी दुर्गाजीकी मूर्त्ति है। इस आश्रममें इन मूर्त्तियोंको छोड़ कर जह्नु, महावीर, शेषशायी, लक्ष्मी आदि देवताओंकी अनेकानेक मूर्त्तियां हैं। इसके सिवा इस पर्वतखण्डके चारों ओर अगणित बौद्धकालीन मूर्त्तियां पत्थरोंमें खुदी हुई हैं। यत्र-तत्र पालीभाषाका लेख भी खुदा हुआ है। ऐसी अवस्थामें यह अनुमान होता है कि, किसी समय यहां बौद्धों का बोलबाला था, परन्तु पीछे सनातनियोंने यहां अपना अटूट अड्डा जमा लिया। जो हो, परन्तु आज कल तो यह स्थान हिन्दुओंके प्रधान तीर्थोंमें हो चला है और यहां समस्त संसारके हिंदू दर्शनको आते हैं।

कुछ वर्ष हुए, बनैलीराजकी राज-माताने हजारोंकी लागतसे एक स्वर्ण-पताका बनवा कर मन्दिर-शिखर पर उड्डीन कराई है। कहा जाता है कि, बादशाह अकबरने इस मन्दिरकी रक्षाका एक ताम्रपत्र दिया था, जिसे देख कर ही प्रसिद्ध देशद्रोही काला पहाड़ने १५६७ ई०में इस मन्दिरको विनष्ट नहीं किया। वास्तवमें यह मन्दिर रक्षणीय और कवित्वका मर्म-स्पर्शी अधिकरण है। ब्रह्मपुत्र नदीमें भी एक उमानाथ भैरवका रमणीय मन्दिर है

परन्तु तुलनामें इस मन्दिरका यह पासंग भी नहीं है। यों तो सारा सुलतानगंज या जह्नुपुरी हृदय-हारिणी पर्वत मालाओं और सुभगश्यामल आम्रवनोंसे परिवेष्टित है, परन्तु इस आश्रमकी छटा और जटा, साज और सज्जा, बिलकुल निराली और नवेली है। एकान्त शान्त प्रकृति क्रोड़ है। आश्रमके मनोज्ञ शिला-खण्डोंमें तपो भवन बने हुए हैं, जिनमें केवल विगत-राग भक्तोंकी विमल गलध्वनि सुनायी देती है—"आनन्द घन गिरिजापति-महेश।" दूसरी ओर है शिला-खण्डोंसे टकरा कर जल-लहरीकी मेघ-मन्द्र-ध्वनि। गल-ध्वनि और जल-ध्वनिका यह मधुर मिलन सुन कर हृदय बल्लियों उछलने लगता है। पेटमें ब्रह्मानन्दकी गुदगुदी पैदा हो जाती है। क्या ही अनोखा स्थान है, न यहां दुरत्यया मायाका लेश, न दीन दुःखियोंके हाहाकारकी आशंका। सचमुच ब्रह्माने अपना सारा बुद्धि वैभव खर्च कर इस दिव्य धामकी रचना की है। इस जह्नुपुरीकी दूसरी खूबी है विक्रमशिला। यद्यपि कुछ लोग राजगृह जानेके रास्तेमें पड़नेवाले "शिलाव" को विक्रम शिला और कुछ लोग भागलपुरसे २४ मील पश्चिम पत्थरघाटको विक्रम-शिला कहते हैं, परन्तु अधिकांश विद्वान् सुलतानगंजके जह्नु-आश्रमके पूर्व किनारेकी व्यास-कर्ण या ओड़ली पहाड़ी पर ही विक्रम-शिलाका अस्तित्व मानते हैं। इस पहाड़ीको चाहे जिस स्थान पर खोदिये, कुछ न कुछ बौद्ध कालीन चिह्न पाइयेगा। यहींसे चीन यात्री फाहियान चम्पानगर गया था। द्वितीय चन्द्र-गुप्त विक्रमने यहां एक विशाल बौद्ध विद्यालय स्थापित किया था और व्यास कर्णकी जगह विक्रम-शिला नाम रखा था। यहांके भग्नावशेषमें उसी समयकी एक रमणीय बौद्ध-मूर्त्ति मिलती है। यह बिमडिमके अजायबघरमें रखी हुई है। विक्रम-शिला विश्वविद्यालयमें योगविद्याकी व्यवस्थित शिक्षा दी जाती थी। इसी विश्व विद्यालयके छात्रोंने तिब्बत पर बौद्ध धर्मकी धाक जमायी थी। कुछ लोगोंकी राय है, कि महाराज महीपालने इसे बनवाया था। इसमें ८०० सौ भवन और १०० सौ पण्डित अध्यापक थे। बीचमें विज्ञानमन्दिर था। विद्यार्थियोंको मुफ्त भोजन मिलता था। यहांके अध्यक्ष प्रसिद्ध पर्यटक बौध्द दीपांकुर और बुद्धज्ञान पादाचार्य थे। तिब्बतके लामा यहां आते थे। एक बृहत् पुस्तकालय भी था। बौद्ध ग्रन्थोंमें विक्रम शिलाका जैसा प्राकृतिक वर्णन मिलता है, वैसा ही यहां है। पत्थरोंमें खुदी हुई पाली भाषासे भी यहीं विक्रम-शिला मालूम पड़ती है। कुछ दिन हुए यहांका कुछ उत्तरी हिस्सा टूट कर जब गङ्गामें गिरा, तब एक कोठरीमें बहुत-सा चावल मिला था। एक बारकी खोदाईमें एक ताम्रपत्र भी मिला था जो कलकत्तेके अजायबघरमें है। एक बारकी खोदाईमें बुद्ध की पीतलकी मूर्त्ति मिली थी। जो माचेस्टरमें है। इन सब प्रसङ्गोंसे यहीं विक्रम-शिलाका स्थान मालूम पड़ता है। ऐसे विचित्र और पवित्र स्थानको ११९९ ई०में बख्तियार खिलजीने पुस्तकालयके साथ ध्वस्त कर एक मसजिद बनवायी जो अब तक मौजूद है। अनन्त कालकी अनन्त वीर्यशालिनी आत्माओंकी अनन्त गिरि-निर्झरों और सागरसरिताओंको चीरती फाड़ती आ इकट्ठी होनेवाली ध्वनिकी रक्षा करनेवाली इस विक्रम शिलाका यह हृदय-द्रावी उपसंहार है। अहो सकल कलन कराल कालस्य कौडनम्।

सुलतानगंजमें तीसरा प्राचीन स्मृति-चिह्न है कर्णगढ़। चम्पानगरमें भी एक कर्णगढ है, परन्तु यहांके कर्णगढ़से उससे जमीन आसमानका-सा अन्तर है। ठीक गंगाके किनारे गढ बना हुआ है। इस गढ़का नाम आज कल कृष्णगढ़ है, जिसकी इमारतें भारत-प्रसिद्ध धर्म्मभक्त बनेली राजके राजा कलानन्द सिंहके कनिष्ठ पुत्र श्रीमान् कुमार कृष्णानन्द सिंह बहादुर बनवा रहे हैं। खोदाईमें जो मिट्टीके बर्त्तन मिलते हैं, उनसे मालूम होता है, कि इस गढ पर कई बौद्ध राजा वास कर चुके हैं। कुमार बहादुर धर्म्म-भक्त, सच्चरित, उन्नत मना, विद्या-प्रेमी और उदार-हृदय हैं। भारतमें ऐसे सदाचारी कुमार दुर्लभ हैं। आप अच्छे मल्ल और मृगया-प्रवीण हैं। २४ वर्षकी उम्रमें ही आप सात बाघ मार चुके हैं, सो भी पैदल ही। आपने एक बङ्गाल टाइगरको तो बीस फीटकी दूरीसे पैदल ही मारा था। १२।११।२६ को आपने पुत्ररत्न भी प्राप्त किया है। बच्चा कुमारका नाम 'कुमार विजयानन्द सिंह बहादुर है।

आपका पावर हाउस देखने लायक है। स्टेशनके पास आप का एक कृष्णानन्द-हाई-स्कूल है। बनेली-राज्य हाई स्कूल-का आधा व्यय आपने दिया है। आप सुलतानगंजमें एक "संस्कृत महाविद्यालय" भी चला रहे हैं। आपका मिथिला प्रेस नामका अपटुडेट प्रेस है, जहांसे हिन्दीमें सर्व प्रथम चारों वेदोंका सनातन धर्मानुसार अनुवाद निकल रहा है। यहींसे विहारकी एकमात्र सर्वश्रेष्ठ "गंगा" नामकी हिन्दी मासिक पत्रिका भी निकल रही है। इन दोनों विराट कार्योंका सम्पादन-भार कुमार बहादुरने, उन महोपदेशक पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी वेदान्तशास्त्रीको दे रखा है, जो हिन्दीके विख्यात लेखक, हिन्दीमें दर्शन-शास्त्रोंके सर्वोच्च ग्रंथ "दर्शनपरिचय" के प्रणेता और अफ्रीका, वर्मा, मोरिशस, रीयूनियन, लङ्का आदिमें हिन्दू सभ्यताके प्रसिद्ध प्रचारक विद्वान् हैं। कुमार बहादुरके प्राइवेट-सेक्रेटरी वही व्याकरण-तीर्थ पण्डित गौरीनाथ झा हैं, जो प्रख्यात विद्वान्, मैथिल ब्राह्मण श्रोत्रिय कुलावतंस वर्तमान दरभङ्गा महाराज-का छठी पीढीमें गद्दी पर आसीन महाराज माधव सिंह जीके दौहित्रपुत्र हैं। धार्मिक कार्योंमें पण्डितजीकी पूर्ण श्रद्धा है। कुमार बहादुरके प्रत्येक सत्कार्यमें आप अग्रगामी रहते हैं। अन्य राज-कुमार मसूरी और दार्जिलिङ्गमें स्वर्गका आनंद मनाने जाते हैं और कुमार कृष्णानन्द सिंह बहादुरको अपने कृष्णगढ़में ही यह आनन्द सुलभ है। गढ़के चारों ओर अनन्त शांति विराजती है।

यहां डाक और तारघर, अस्पताल, चावल और आटेकी कल तथा एक थाना है।

सुलतानपुर—१ युक्तप्रदेशके फैजाबाद विभागका एक जिला। यह अक्षा० २५° ५९'से २६° ४०' उ० तथा देशा० ८१° ३२'से ८२° ४१' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १७१३ वर्गमील है। इसके उत्तरमें बारा-बंकी और फैजाबाद, पूर्वमें आजमगढ़ और जौनपुर, दक्षिणमें जौनपुर और प्रतापगढ़ तथा पश्चिममें राय-बरेली और बाराबंकी है। इसकी लम्बाई ८० मील और चौड़ाई ३८ मील है।

इसका पृष्ठदेश प्रायः समतल है। प्राकृतिक दृश्य सर्वत्र एक-सा नहीं है। अभी इस जिलेमें कोई विस्तीर्ण वन-विभाग देखनेमें नहीं आता। किन्तु सुना जाता है, कि १०० वर्ष पहले अमेठीके राजगृहसे लख-नऊ पथ तक एक प्रकाण्ड जङ्गलमयभूमि विस्तृत थी। यहां बड़े बड़े सुन्दर वृक्षोंका सुरक्षित उद्यान है। आम, जामुन और महुआ इन तीन प्रकारके फलवान् वृक्षोंका ही यहां विशेष आदर है। इसके सिवा प्रति ग्राममें पुराने वट, पाकड़, पीपल, बेल, कहुवे, बबूल और निम्ब वृक्ष भी अधिक संख्यामें देखे जाते हैं। पशुपक्षियोंमें लकड़बग्घा, नीलगाय, जंगली सूअर, हरिण, कृष्णसार और शशक तथा तीतर, जंगली राजहंस आदि दृष्टि गोचर होते हैं। खनिज द्रव्यमें एकमात्र कंकर नामक चूनपत्थर ही पाया जाता है।

इस जिलेमें १ शहर और २४५८ ग्राम लगते हैं। जन संख्या १० लाखसे ऊपर है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सिख और जैन-धर्मावलम्बी लोग ही देखे जाते हैं। हिन्दूकी संख्या सैकड़े पीछे ९० है। इनमें भी फिर ब्राह्मणोंकी संख्या ही ज्यादा है।

जिलेमें दो प्रधान तीर्थस्थान हैं। गोमती नदीके दाहिने किनारे सीताकुण्डतीर्थ अवस्थित है। रामचन्द्रके वन जाते समय सीता देवीने यहां स्नान किया था। उस उपलक्षमें यहां प्रति वर्षके ज्येष्ठ और कार्तिक मासमें १०,२० हजार आदमी स्नान करने आते हैं। गोमतीके तीरवर्ती राजापति ग्रामके गोपाप नामका जो घाट है, वह भी परम पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है। कहते हैं, कि लङ्कासे लौटते समय रामचन्द्र यहां स्नान कर रावणवधजनित पापसे विमुक्त हुए थे। यहां भी सीता-कुण्डकी तरह वर्षमें दो बार मेला लगता है।

यह एक तालुकदार (जमींदार)-प्रधान स्थान है। इसका पूर्वांश बछगोति और राजकुमार राजपूतोंकी, मध्यांश अमेथिया राजपूतोंकी तथा पश्चिमांश कानहु-पुरिया राजपूतोंकी तालुकदारीके अन्तर्गत है। १३६३ ग्राममें तालुकदारी स्वत्व, ३०४ ग्राममें जमींदारी स्वत्व, ५४२ ग्राममें पट्टीदारी स्वत्व और ३१७ ग्राममें भाया-चार स्वत्व प्रचलित है।

यहां बहुत-सी सड़कें गई हैं, इनमेंसे फैजाबादसे

इलाहाबाद तक जो बड़ी सड़क गई है, वही विशेषरूपसे उल्लेखयोग्य है। गोमतीके जलपथसे बारहों महीने बड़ी बड़ी नावें जाती आती हैं। इसके सिवा अयोध्या और रोहिलखण्ड रेलवे इस जिलेके बीचसे गई है, इस कारण यहां वाणिज्यद्रव्यकी आमदनी और रफतनीमें बड़ी सुविधा है। अनाज, रूई, गुड़ और देशी वस्त्रका ही यहां प्रधान व्यवसाय होता है। जिलेमें पारकिसगंज बाजार एक प्रधान बन्दर है और धीरे धीरे इसकी उन्नति होती जा रही है।

यहां १३ दीवानी और राजस्वसंक्रान्त तथा १० फौजदारी अदालत है, विद्याशिक्षाकी ओर लोगोंकी दृष्टि क्रमशः आकृष्ट होती जा रही है। अभी कुल मिला कर २०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा आठ अस्पताल और दातव्य-चिकित्सालय हैं। आबहवा स्वास्थ्यकर है। रोगोंमें ज्वर यहांकी प्रबल व्याधि है। वर्षाके शेष और शीतारम्भके पहले आमाशय और उदरामयका अधिक प्रकोप देखा जाता है। कुष्ठरोगकी संख्या भी कम नहीं है। प्लेग और हैजेका उतना प्रादुर्भाव नहीं होता।

२ उक्त जिलेका प्रधान शहर। यह अक्षा० २६° १५´ उ० तथा देशा० ८२° ५ पू० गोमतीके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या १० हजारके लगभग है। यह शहर आधुनिक है। प्राचीन शहर गोमतीके बांए किनारे अवस्थित था। लोग उसे कुशपुर या कुशभवनपुर कहा करते थे। कहते हैं, कि रामचंद्रके पुत्र कुशने इस पुरीको बसाया था। पीछे यह भरवंशीय राजाओंके हाथ आया। अनंतर १२वीं सदीमें मुसलमानोंने उनसे छीन लिया और शहरमें आग लगा कर छारखार कर डाला। पीछे विजेताके नामानुसार नया नगर सुलतानपुर कहलाने लगा। मुसलमान ऐतिहासिकोंके ग्रंथमें कहीं कहीं सुलतानपुरका उल्लेख देखनेमें आता है। १८५७ ई०के गदरमें अधिवासियोंने दो अंगरेज कर्मचारियोंके प्राण ले लिये थे, इस कारण गदरके बाद शहर भूमिसात् कर डाला गया।

वर्त्तमान शहर उसी जगह बसा हुआ है, जहां पहले सैन्यावास था। यहां भी हिंदूकी संख्या ज्यादा है। अभी शहरकी बड़ी उन्नति हो गई है। सड़कके दोनों किनारे आम तथा अन्यान्य छायेदार पेड़ लगे हैं। दश एकड़ जमीन पर एक साधारण उद्यान बनाया गया है।

सुलतानपुर—पञ्जाबके कांगड़ा जिलान्तर्गत कुलु तहसीलका शहर। यह अक्षा० ३१° ५८´ उ० तथा देशा० ७७° १०´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या डेढ़ हजारके लगभग है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ४०९२ फुट है। १७वीं सदीमें कुलु राजा जगत्सिंहने इसे बसाया था। पहले कुलुओं, पीछे सिखों तथा बादमें अङ्गरेजोंके जमानेमें यह जिलेके शासनकेन्द्ररूपमें अवस्थित था। अभी व्यास नदीके और भी ऊर्द्ध्वदेशमें नगर नामक स्थानमें महकमेका सदर स्थापित हुआ है। यहां कांगड़ा, लाहुल और लादखके अनेक व्यवसायियोंकी दूकानें हैं। समतल प्रदेश और मध्य एसियाके बीच इस पथसे वर्षमें प्रायः आठ लाख रुपये मालकी आमदनी रफतनी होती है। यहां रघुनाथजीका एक मंदिर है। प्रतिवर्ष अक्तूबरके महीनेमें ८० देवमूर्त्तियां यहां इकट्ठी होती हैं। इस समय यहां एक बड़ा मेला लग जाता है। शहरमें डाकघर, डाक्टरखाना, सराय, मध्य अङ्गरेजी विद्यालय और एक थाना है।

सुलतानपुर—१ पंजाबके कपूरथला राज्यकी एक तहसील। यह अक्षा० ३१° ६´ से ३१° २३´ उ० तथा देशा० ७५° ३´ से ७५° ३२´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १७६ वर्गमील और जनसंख्या ७५ हजारसे ऊपर है। इसमें सुलतानपुर नामक एक शहर और १७८ ग्राम लगते हैं। यह बहुत उपजाऊ तहसील है। कुएंका जल ही कृषिकार्यके काममें आता है।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० ३१° १३´ उ० तथा देशा० ७५° १२ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है। ११वीं सदीमें महमूद गजनीके सेनापति सुलतान खां लोदीने इसे बसाया था। जालन्धर दुआवमें यह एक मशहूर स्थान था। यहां जहांगीरकी बनाई हुई एक सराय और दो पुल हैं। १७३९ ई०में नादिरशाहने इसे जला कर छारखार कर डाला था। शहरमें एक मिडिल स्कूल और एक चिकित्सालय है।

सुलतानपुर—पञ्जावप्रदेशके गुड़गांव जिलेका एक ग्राम। यहांके लवणाक्त कूपसे प्रति वर्ष पांच लाख मन लवण तैयार होता है। यह लवण दिल्ली, दोआबके उद्वर्वांश, रोहिलखण्ड, पञ्जाबके पूर्वांश तथा अयोध्या और मिर्जापुरमें व्यवहृत होता है।

सुलतानपुर—युक्तप्रदेशके शहारनपुर जिलेके अधीन लकूर तहसीलका एक शहर। यह शहारनपुरसे ६ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। १४५० ई०के समय सुलतान बहलोल लोदीने इसकी प्रतिष्ठा की। यहांके जैन और सारङ्गी महाजन धनकुबेर कह कर प्रसिद्ध हैं। ये लोग पञ्जाबके साथ लवण और चीनीका व्यवसाय चलाते हैं।

सुलतानपुर—बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलान्तर्गत शहादा तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० २१°३८´ उ० तथा देशा० ७४° ३५´ पू०के मध्य शहादासे १० मील उत्तरमें अवस्थित है। जनसंख्या चार सौके करीब है।

सुलताना चंपा (हिं० पु०) एक प्रकारका पेड़। यह मद्रास प्रान्तमें अधिकतासे होता है और कहीं कहीं संयुक्त प्रान्त तथा पंजाबमें भी पाया जाता है। इसके हीरकी लकड़ी लाली लिए भूरे रंगकी और बहुत मजबूत होती है। यह इमारत, मस्तूल आदि बनानेके काममें आती है। रेलकी लाइनके नीचे पटरीकी जगह रखनेके भी काममें आती है। संस्कृतमें इसे पुन्नाग कहते हैं। पुन्नाग देखो।

सुलतानी (फा० स्त्री०) १ राज्य, बादशाही। २ एक प्रकारका बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा। (वि०) ३ लाल रंगका।

सुलफ (हिं० वि०) १ लचीला, लचनेवाला। २ कोमल, नाजुक।

सुलफा (फा० पु०) १ वह तमाकू जो चिलममें बिना तवे रखे भर कर दिया जाता है। २ सूखा तमाकू जिसे गांजेकी तरह पतली चिलममें भर कर पीते हैं, ककड़। ३ चरस।

सुलफेबाज (हिं० वि०) गांजा या चरस पीनेवाला, गंजेड़ी या चरसी।

सुलब (हि० पु०) गंधक।

सुलभ (सं० त्रि०) सु-लभ खल् (न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम्। पा ७।१।६८) इति नुमागमो न। १ सुखालभ्य, सहजमें मिलनेवाला। २ सहज, सुगम। ३ साधारण, मामूली। ४ उपयोगी, लाभकारी। (पु०) ५ अग्निहोत्रकी अग्नि।

सुलभता (सं० स्त्री०) १ सुलभका भाव, सुलभत्व। २ सुगमता, आसानी।

सुलभत्व (सं० पु०) १ सुलभका भाव, सुलभता। २ सुगमता, सरलता।

सुलभा (सं० स्त्री०) १ माषपर्णी, जंगली उड़द। २ धूम्रपत्रा, तमाकू। ३ तुलसी। ४ वैदिककालकी एक ब्रह्मवादिनी स्त्रीका नाम। ५ वार्षिकी मल्लिका, बेला।

सुलभेतर (सं० त्रि०) १ जो सहजमें प्राप्त न हो सके, दुर्लभ। २ कठिन। ३ महंघे, महंगा।

सुलभ्य (सं० त्रि०) सुगमतासे मिलने योग्य, सहजमें मिलनेवाला।

सुललित (सं० त्रि०) सु ललितः यत्र। अति सुन्दर, खूब खूबसूरत।

सुलस—स्वीडेन देशका एक प्रकारका लोहा।

सुलह (फा० स्त्री०) १ मेल, मिलाप। २ वह मेल जो किसी प्रकारकी लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर हो। ३ दो राजाओं या राज्योंमें होनेवाली संधि।

सुलहनामा (फा० पु०) १ वह कागज जिस पर दो या अधिक परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रोंकी ओरसे मेलकी शर्तें लिखी रहती हैं, संधिपत्र। २ वह कागज जिस पर परस्पर लड़नेवाले दो व्यक्तियों या दलोंकी ओरसे समझौतेकी शर्तें लिखी रहती हैं; अथवा यह लिखा रहता है, कि अब हम लोगोंमें किसी प्रकारका झगड़ा नहीं है।

सुलाक (फा० पु०) छिद्र, सूराख।

सुलाखना (हिं० क्रि०) सोने या चांदीको तपा कर परखना।

सुलाना (हि० क्रि०) १ निद्रित कराना, सोनेमें प्रवृत्त करना। २ डाल देना, लिटाना।

सुलाभ (सं० त्रि०) सुलभ, सहजमें मिलनेवाला।

सुलाभिका (सं० स्त्री०) शोभन लोमयुक्ता।

सुलाभिन् (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सुलिखित (सं० त्रि०) १ उत्तमरूपसे लिखित, अच्छी तरह लिखा हुआ। २ वैद्यकोक्त लेखनगुणविशिष्ट।

सुलून (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे छिन्न।

सुलूक (अ० पु०) सलूक देखो।

सुलेक (सं० पु०) एक आदित्यका नाम।

सुलेख (सं० त्रि०) १ सुन्दर रेखायुक्त। २ सुन्दर लेखायुक्त।

सुलेखक (सं० पु०) अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला, जिसकी रचना उत्तम हो।

सुलेमाँ (फा० पु०) सुलेमान देखो।

सुलेमान (फा० पु०) १ यहूदियोंका एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। कहते हैं, कि इसने देवों और परियोंको वशमें कर लिया था और यह पशु-पक्षियों तकसे काम लिया करता था। इनका जन्म खृ० पू० १०३३ और मरण खृ० पु० ९७५ माना जाता है। २ बलुचिस्तान और पञ्जावके बीचका एक पहाड़।

सुलेमान शैल देखो।

सुलेमान कर्राणी—कर्राणी नामक अफगान जातिका विहारका एक शासनकर्त्ता। दिल्ली-सम्राट् शेरशाह और उसके लड़के सलीम शाह कर्राणी जातिको बड़ी प्रीति की निगाहसे देखते थे। सलीमशाहके समय दो कर्राणी भाइयोंका भाग्य चमक उठा। बड़ेका नाम ताज खां कर्राणी और छोटेका सुलेमान कर्राणी था। ताज खां कर्राणी शम्भलका और सुलेमान विहारका शासनकर्त्ता नियुक्त हुआ।

१५५५ ई०में दिल्लीका सम्राट् महम्मद आदिलशाहने जब विहारकी ओर यात्रा की, तब सुलेमान बङ्गेश्वर बहादुर शाहके साथ जा मिला। दोनों पक्षमें मुङ्गेरके पास जो युद्ध हुआ, उसमें शाही सेना हार खा कर दिल्लीकी ओर भाग गई।

बहादुर शाहकी मृत्युके बाद उसका लड़का जलालउद्दीन बंगालकी मसनद पर बैठा। इसके साथ भी सुलेमानका अच्छा सद्भाव था। किन्तु उसके मरनेके बाद जब उसके लड़केको मार कर गयासुद्दीनने बंगालका सिंहासन दखल किया, तब सुलेमान बङ्गदेश जीतनेके लिये बड़े भाई ताज खांको एक दल सुशिक्षित सेनाके साथ गौड़ भेजा। बिना खून खराबीके बङ्गदेश सुलेमानके पदानत हुआ। पीछे इसने बड़े भाईको बङ्गालका शासनकर्त्ता बना कर भेजा। एक वर्षके बाद जब ताज खांकी मृत्यु हुई, तब यह स्वयं आ कर बङ्गालके सिंहासन पर बैठा। (१५६४ ई०) कुछ दिन बाद ही यह राजधानी गौड़से टाण्डा उठा ले गया। इस टाण्डा को कोई कोई कुशपुर टाण्डा भी कहते हैं।

सुलेमानने जब बंगाल देश अधिकार किया, उस समय अकबर शाह भारतवर्षके सम्राट् थे। उनका सैन्यदल विद्रोही प्रदेशोंको धीरे धीरे दिल्लीके अधीन कर रहा था। कूटनीति सुलेमानने बहुमूल्य उपढौकनके साथ एक दूत भेज कर सम्राट्के प्रति भक्ति और आनुगत्य प्रगट किया। इस पर सम्राट्ने उसे अपना प्रतिनिधि बनाया।

इस प्रकार सारे बङ्गाल और विहारका राजा हो कर सुलेमानने रोहतास दुर्ग पर आक्रमण करनेका संकल्प किया। उच्चाकांक्षी सुलेमान बङ्गाल और विहार ले कर तृप्त नहीं हो सका। १५५७-६८ ई०में उसने उड़ीसा पर आक्रमण किया और विश्वासघातकतासे उसे दखलमें कर लिया। उड़ीसाके अन्तिम हिन्दूराजा मुकुन्ददेव युद्धमें परास्त और निहत हुए।

दूसरे वर्ष सुलेमानने कुचविहार पर आक्रमण किया और उसे लूटा। किन्तु उसे हठात् खबर मिली, कि उड़ीसाके लोग बागी हो गये हैं। अब उसने टांडासे एक दल सेना भेज कर उड़ीसाको फिरसे दखल किया। इसके बाद राज्यकी आभ्यन्तरीण उन्नतिकी ओर उसका ध्यान दौड़ा। इस समय प्रजा सुख शान्तिसे रहती थी। १५७३ ई०में इसकी मृत्यु हुई। पीछे इसका लड़का बाजिद खां बङ्गालके सिंहासन पर बैठा।

सुलेमान शैल—अफगानिस्तान और पंजाब प्रदेशकी मध्यवर्त्ती गिरिमाला। ऐतिहासिक इसीको भारतवर्षकी पश्चिमी सीमा कहा है। यह पर्वतमाला डेरा इस्माइल खाँ, डेरा गाजी खाँ और डेरा जतका सीमान्तदेश है। यह अक्षा० ३१° ३५' ३६" से ३२° ४०' ५६" उ० तथा देशा० ६९° ५८' २६" से० ७०° ०' ४५" पू० तक विस्तृत है। डेरा इस्माइल शहरके ठीक पश्चिम इसका उच्चतम शिखर तख्त-ए-सुलेमान अवस्थित है। इसकी दोनों चोटी समुद्रपृष्ठसे यथाक्रम ११२९५ और

११०७० फुट ऊंची है। पूरब वृटिश अधिकारके सीमान्त प्रदेशमें यह बहुत कुछ ऋजु भावमें विस्तृत है। इसके बहिर्भागमें कुछ कम ऊंचाईकी शैलश्रेणी एक सीधमें उत्तरसे दक्षिणकी ओर चली गई है तथा सबसे पश्चिम प्रधान पर्वतश्रेणी अफगानिस्तानकी ओर कन्धहार उपत्यकामें क्रमनिम्न भावमें फैली है। सुलेमान शैल साधारणतः प्रस्तरमय है। इसके पार्श्वदेशमें एक भी वृक्ष दिखाई नहीं देता। प्रान्तभागमें जो सब सुंडिपथ हैं, उन में एक बिन्दु भी जल नहीं रहता। इसके मध्य हो कर अनेक गिरिसङ्कट चले गये हैं। इनके एक ओर वृटिशराज्य और दूसरी ओर उन लोगोंके साथ बन्धुत्वसूत्रमें आवद्ध स्वाधीन पार्वत्य जातिका अधिकार है। सुलेमानके पूर्वपार्श्वसे जो सब जलस्रोत निकले हैं, वे सिन्धुनदमें जा गिरे हैं। फिर पश्चिम पार्श्वकी जलधारा हेलमन्द नदीमें मिलती है अथवा इसके पहले ही पारस्य और बेलुचिस्तानको मध्यवर्त्ती मरुभूमिमें जा कर विलीन हो जाती है। यहांकी नदियोंमें कुरमई उल्लेखयोग्य है। शुष्क गिरिशृङ्गसे निकल कर यह नदी उत्तर-दक्षिण प्रायः ३५० मील तक चली गई है। सुलेमानके दक्षिणांशकी जलधाराएं एकदम समुद्रमें जा मिलती हैं।

सुलेमानी (फा० पु०) १ सफेद आंखवाला घोड़ा। २ एक प्रकारका दोरंगा पत्थर जिसका कुछ अंश काला और कुछ सफेद होता है। (वि०) ३ सुलेमानका, सुलेमान संबंधी।

सुलोक (सं० पु०) स्वर्ग।

सुलोचन (सं० त्रि०) १ सुन्दर चक्षुविशिष्ट, सुन्दर आंखोंवाला। (पु०) २ हरिण। ३ दुर्योधन। ४ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। (भारत १।६७।६०) ५ रुक्मिणीके पिताका नाम। ६ चकोर।

सुलोचना (सं० स्त्री०) माधव राजाकी स्त्री। राजा विक्रमके पुत्र माधव थे। समुद्रपार्श्वमें प्लक्षद्वीपमें गुणाकर नामक एक अति यशस्वी राजा रहते थे। उनकी पत्नीका नाम सुशीला था। इसी सुशीलाके गर्भसे सुलोचनाका जन्म हुआ। माधवने गन्धर्वविधानसे सुलोचनाके साथ विवाह किया। ये आदर्श भार्या कहलाती थी।

सुलोचनी (हिं० वि०) सुन्दर नेत्रोंवाली, जिसके नेत्र सुन्दर हों।

सुलोम (सं० त्रि०) उत्तम लोमविशिष्ट, जिसके रोएं सुन्दर हों।

सुलोमधि (सं० पु०) राजभेद। (विष्णुपु०)

सुलोमन् (सं० त्रि०) सुलोम देखो।

सुलोमनी (सं० स्त्री०) जटामासी, बालछड़।

सुलोमश (सं० त्रि०) शोभन लोमयुक्त, जिसके रोएं सुन्दर हों।

सुलोमशा (सं० स्त्री०) १ काकजंघा। २ जटामासी।

सुलोमा (सं० स्त्री०) १ ताम्रवल्ली। २ मासच्छदा। ३ मासरोहिणी।

सुलोह (सं० क्ली०) एक प्रकारका बढ़िया लोहा।

सुलोहक (सं० क्ली०) पित्तल, पीतल।

सुलोहित (सं० पु०) १ सुन्दर रक्तवर्ण, अच्छा लाल रंग। (त्रि०) २ सुन्दर रक्तवर्णयुक्त, सुन्दर लाल रंगवाला।

सुलोहिता (सं० स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक जिह्वाका नाम।

सुलोही (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सुल्तान (फा० पु०) सुलतान देखो।

सुल्फ (हि० पु०) १ बहुत चढ़ी या तेज लय। २ नाव, किश्ती।

सुल्हण (सं० पु०) एक प्राचीन कविका नाम।

सुवंश (सं० पु०) १ वासुदेवके एक पुत्रका नाम। (भागवत ६।२४।५०) २ उत्तम वंश, उत्तम कुल।

सुवंशघोष (सं० पु०) उत्तम वंशीध्वनिविशिष्ट।

सुवंशेक्षु (सं० पु०) श्वेतेक्षु, सफेद ईख।

सुव (सं० पु०) सुवन देखो।

सुवक्ता (हिं० वि०) सुन्दर बोलनेवाला, उत्तम व्याख्यान देनेवाला।

सुवक्त्र (सं० पु०) १ वनबर्बरी, वनतुलसी। २ शिव। (त्रि०) ३ सुन्दरानन, सुन्दर मुंहवाला।

सुवक्ष (सं० त्रि०) विशाल वक्ष, जिसकी छाती सुन्दर या चौड़ी हो।

सुवक्षा (सं० स्त्री०) मयदानवकी पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषणकी माताका नाम।

सुवच (सं० त्रि०) जिसके उच्चारणमें कोई कठिनता न हो, सहजमें कहा जानेवाला।

सुवचन (सं० त्रि०) १ सुवक्ता, वाग्मी। २ मिष्टभाषी।

सुवचनी (सं० स्त्री०) एक देवीका नाम। बङ्गदेशकी स्त्रियां जब किसी विपद्में पड़ती हैं, तब उससे विमुक्त होनेकी आशामें वे इस देवीकी पूजा करती हैं। किसी शुभ कार्यके प्रारंभ या शेषमें इनकी पूजा होती है। सत्यनारायणकी जिस प्रकार अनेक पांचाली हैं, उसी प्रकार इनकी भी अनेक पांचाली देखनेमें आती हैं। किन्तु सत्यनारायणका जिस प्रकार रेवाखण्डोक्त मूल-विधान देखा जाता है, इनका उस प्रकार कुछ मूल नहीं मिलता। किन्तु आचारमार्त्तण्डमें शुभसूचनी पूजाका विधान देखनेमें आता है। मालूम होता है, कि शुभसूचनी और सुवचनी दोनों एक ही होगी। कोई कोई शुभचण्डीका अपभ्रंशरूप सुवचनी समझते हैं।

सुवचस् (सं० पु०) सुवचन देखो।

सुवचस्या (सं० स्त्री०) शोभनवाक्यके योग्य।

सुवचा (सं० स्त्री०) एक गन्धर्वीका नाम।

सुवज्र (सं० पु०) इन्द्रका एक नाम।

सुवटा (हिं० पु०) सुआटा देखो।

सुवना (हिं० पु०) सुवर्ण, सोना।

सुवदन (सं० त्रि०) १ सुन्दर वदनविशिष्ट, सुन्दर मुखवाला। (पु०) २ बर्बरक, वनतुलसी।

सुवदना (सं० स्त्री०) १ छन्दोभेद। इस छन्दके प्रति चरणमें २० अक्षर रहते हैं। इसके सातवें चौदहवें और बीसवें अक्षरमें यति तथा ५, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १७, १८, १९वां अक्षर लघु और बाकी गुरु होते हैं। २ सुन्दर स्त्री।

सुवन (सं० पु०) सुते विश्वमिति (सू सू सू धू भ्रस-जाय-च्छन्दांस। उण् २।८०) इति क्युन्। १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चन्द्रमा।

सुवपु (हिं० स्त्री०) १ एक अप्सराका नाम। (वि०) २ सुन्दर शरीरवाला, सुदेह।

सुवयस (सं० स्त्री०) दृष्टार्त्तवा मध्यमा नारी, प्रौढ़ा स्त्री।

सुवरदाना (हिं० पु०) वह दाना जिसमें वाल नहीं रहता।

सुवरूथ (सं० त्रि०) सुरक्षण, उत्तम आश्रययुक्त।

सुवर्च्चक (सं० पु०) १ स्वर्जिकाक्षार, सज्जी। २ एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सुवर्च्चना (सं० स्त्री०) सुवर्चला देखो।

सुवर्च्चल (सं० पु०) १ देशविशेष। २ सौवर्चल लवण, काला नमक।

सुवर्च्चला (सं० स्त्री०) १ सूर्यपत्नी। २ परमेष्ठीकी पत्नी और प्रतीहकी माताका नाम। ३ ब्राह्मी। ४ तीसी अतसी। ५ आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सुवर्चस् (सं० त्रि०) १ शोभन तेजोविशिष्ट, तेजस्वी शक्तिवान्। (पु०) २ गरुड़के एक पुत्रका नाम। ३ स्कंदके एक पारिषदका नाम। ४ दशवें मनुके एक पुत्रका नाम। ५ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम।

सुवर्चसिन् (सं० त्रि०) १ सुवर्चस् देखो। (पु०) २ शिवका एक नाम।

सुवर्चा (सं० पु०) सुवर्च्चस् देखो।

सुवर्च्चिक (सं० पु०) स्वर्जिकाक्षार, सज्जी।

सुवर्च्चिका (सं० स्त्री०) १ जतुका, पहाड़ी लता। २ स्वर्जिकाक्षार, सज्जी।

सुवर्च्ची (सं० पु०) सुवर्च्चक देखो।

सुवर्जिका (सं० स्त्री०) जतुका, पहाड़ी लता।

सुवर्ण (सं० क्ली०) शोभनो वर्णो यस्य। धातुविशेष, सोना। सभी धातुओंमें यह सर्वोत्तम है। इसका वर्ण अधिक सुन्दर और उज्ज्वल होता है। हिब्रूके प्राचीन शास्त्रोंमें, ईसाइयोंकी बाइबिलमें इजिप्तकी सुप्राचीन चित्र-लिपिमें, पहाड़ियाके भूगर्भसे निकले हुए सुवर्ण पात्रोंमें इसका निदर्शन है, कि यह अति प्राचीनकालसे व्यवहृत होता आ रहा है, ग्रीक लोग स्वर्ण और रौप्यके एक स्वाभाविक संमिश्रणका विषय जानते थे। इसका नाम उन लोगोंने इलेक्ट्रम रखा था। इसका रंग पीलापन लिये सफेद होता और इसमें सैकड़े पीछे २०से ४० अंश चांदी मिली रहती है।

जितनी धातु हैं, उनमें एकमात्र स्वर्ण ही पीताभ है। किन्तु अन्य धातुओंके साथ मिलनेसे इसके वर्णमें कुछ तारतम्य दिखाई देता है। थोड़ी चांदी मिलानेसे इसकी उज्ज्वलता कुछ कम हो जाती है, फिर तांबा मिलनेसे वह बहुत कुछ बढ़ जाती है। यह प्रायः सीसेकी तरह नरम

होता है, किन्तु किसी धातुके मिलनेसे कुछ कठिन हो जाता है। विशुद्ध अवस्थामें एक ग्रेन स्वर्णको पीटनेसे ५६ वर्गइञ्च और $\frac{१}{२८२०००}$ इञ्च मोटा पत्तर बनता है। फिर उस एक ग्रेन सोनेको ५०० फुट लम्बे तारमें भी बदला जाता है तथा एक खण्ड चांदीका तार जड कर एक औंस सोनेको १३०० मील तक लम्बा किया जा सकता है। इसका आणविक गुरुत्व नाना भावोंमें निर्द्धारित हुआ है। यथा—१९६.६७, १९६.३, १९६.५ और १९६.०। १२४०° सेण्टिग्रेड तापसे यह गलता है। इसकी ताडितपरिचालिका शक्ति १५.१° सेण्टि है, तापमें ७३.९९ निर्द्धारित हुई है। किन्तु इसमें यदि हजार भागमेंसे कुछ भाग चांदी भी मिली रहे, तो वह परिचालिका शक्ति सैकडे पीछे १० घट जाती है। इसकी उत्तापपरिचालिका शक्ति ५३.२ और आपेक्षिक उत्ताप ०.३२४ है। एक काचके घरमें जहां काच गलाया जाता है, वहां एक औंस परिमित विशुद्ध सोना रख कर देखा गया है, कि दो महिनेमें भी इसके वजनमें कोई फर्क नहीं पडता। इससे जाना जाता है, कि गलित अवस्थामें भी सोना वाष्प हो कर नहीं उडता। सोनेको खूब सूक्ष्म अंशमें विभक्त करके भी सालफ्युरिक (गंधकजात) एसिड तथा कुछ नाइट्रिक एसिड (यवक्षारिक अम्ल)-के साथ मिश्रित उत्ताप प्रयोग करनेसे यह गल जाता है। परीक्षा द्वारा देखा गया है, कि स्वर्ण अपने घनफलका ०.४८ परिमाण जलजन और ०.२० परिमाण यवक्षारजन अपसारित कर सकता है। प्रकृतिलब्ध स्वर्ण साधारणतः धातव अवस्थामें पाया जाता है। यूरोप और अमेरिकाके किसी किसी स्थानमें यह टेलारिम सीसक और रौप्यके साथ मिश्रित अवस्थामें भी देखा जाता है। प्रकृतिलब्ध स्वर्ण साधारणतः घनक्षेत्र स्फटिक आकारमें मिलता है। इसमें भी फिर अष्टाग्र आकृति ही अधिक देखी जाती है। सोनेके बड़े बड़े खण्डको Nuggets (नाल) और $\frac{१}{४}$ से $\frac{१}{८}$ औंससे कमको Golddust (स्वर्णरेणु) कहते हैं। कुछ कोणवाले इन सब नालोंको छोड अन्य आकृतिमें भी स्वर्णखण्ड पाया जाता है। ये सब फिर कभी कभी इतने पतले होते हैं, कि जलमें बहानेसे उसी समय न डूब कर बहुत धीरे धीरे डूबते हैं। अतः स्रोतमें बहा होनेसे यह बहुत दूर तक चला जाता है। इसीको खनिक लोग बहता सोना कहते हैं।

खनिज द्रव्योंमें सिलभनाइट या ग्राफिक टेलिउरियम, केलाभेराइट और फोलियेट टेलिउरियम इन्हीं सबके साथ स्वर्ण अधिक परिमाणमें मिश्रित देखा जाता है। पहलेमें सैकडे पीछे २४से २६ भाग, दूसरेमें ४२ भाग और अन्तिममें ५से ९ भाग स्वर्ण रहता है; किन्तु ये सब खनिज द्रव्य सर्वत्र नहीं मिलते केवल ट्रान्सिल-भानियाके नागियागमें तथा ओफेन बनियामें-रेड क्लाउड, कलोरेडो और कालिफोर्णियामें आज तक यह पाया जाता है।

एक दूसरे खनिज द्रव्यमें भी थोडा बहुत सोना मिला हुआ देखा गया है। इसे Auriferous (सुवर्णवाही) कहते हैं। इनमेंसे गालेना (सीसक और क्षय संयुक्त गंधकका प्राकृतिक संमिश्रण) और लौह पाइराइटज (अन्यान्य धातुके साथ गंधकका प्राकृतिक संमिश्रण) ही प्रधान है।

सोनेकी खानमें तथा स्रोत सञ्चित पदार्थादि जम कर मिट्टीके ऊपर जो स्तर बनता है, उसमें भी सोना पाया जाता है। जिस खानमें स्फटिक मणि रहती है, वहां अथवा स्लेट या स्फटिकनिभ प्रस्तरमय पहाड़की कन्दरामें ही साधारण सोना अधिक परिमाणमें मिलता है। कभी कभी यह अविमिश्र अवस्थामें रहता है, किन्तु अधिकांश स्थलोंमें ही लोहा, तांबा, चुम्बक शक्तिविशिष्ट पाइराइट, सिमूलक्षारज पाइराइटज, गालेना, आकर लब्ध असंस्कृत रौप्य आदिके साथ मिश्रित अवस्थामें पाया जाता है।

शेषोक्त स्थानसे पृथिवीके प्रायः सभी देशोंमें स्वर्ण इकट्ठा किया जाता है। अति प्राचीनकालसे ही भारतवर्षकी सुवर्णख्याति विश्वव्याप्त हो गई थी। स्वर्ण संग्रहके लिये सलोमन राजा जो अफिर नामक स्थानमें जहाज भेजते थे, उसका उल्लेख बाइबिलमें है। बहुतोंका विश्वास है, कि यह अफिर भारतवर्षके मलबार उपकूलका ही कोई बंदर या सौवीर था। ७७ ई०में प्लिनिने जो न्यारेइ जाति-अध्युषित सुवर्णरौप्य खनिबहुल देशका उल्लेख किया था, अच्छी तरह प्रमाणित हुआ है,

कि यह न्यारिह जाति मलवारको नायरके सिवा और कोई नहीं है। शिलालिपि, ताम्रशासन आदिसे जाना जाता है, कि ११वीं सदीको दाक्षिणात्यमें बहुतसे सोने निकाले और इकट्ठे किये जाते थे। बहुत-से लेखक लिख गये हैं, कि उस समय इस देशमें बहुत-सी तथा बहुत प्राचीन सोनेकी खान थी। १६वीं सदीमें लिखित आईन इ-अकबरी पढ़नेसे मालूम होता है, कि यद्यपि उस समय विदेशसे सोने इस देशमें आते थे, तथापि उत्तरवर्त्ती पार्वत्य प्रदेशों और तिब्बतमें काफी सोने मिलते थे। चलनीमें गङ्गा, सिन्धु और अन्यान्य बहुत सी नदियोंका बालू चाल कर स्वर्णरेणु निकाला जाता था। आज भी कई जगह इसी तरह सुवर्ण संग्रह किया जाता है। किन्तु इसमें जितना परिश्रम लगाया जाता है, उतना लाभ न देख कर लोगोंका ध्यान इस ओरसे हट गया है। फिर भी अभी दक्षिणभारतवर्षमें खानसे सोना निकालनेकी नई कोशिश हो रही है।

भारतवर्षमें कई जगह सोना निकलता है। यथा—

छोटानागपुर—यहांके सभी प्रस्तरमय स्वाभाविक मृत्तिका स्तूपमें ही सुवर्ण विजड़ित मालूम होता है। परन्तु मानभूम, सिंहभूम, गाङ्गपुर, यशपुर, और उदयपुरके पहाड़ ही सुवर्णप्राप्तिके लिये बहुत कुछ प्रसिद्ध हैं।

समस्त मानभूमके विशेषतः इसके दक्षिणांशके नदीसैकत सुवर्णकणासे जगमगा रहे हैं। यशपुर राज्यमें कभी कभी बहुतसे बड़े बड़े सोनेके ताल पाये जाते हैं। १६ वीं सदीके प्रथम भागमें यहांके राजा खानसे सोना निकालते थे। जिस स्तरमें सोना मिलता है, उसमें मिट्टीके साथ प्रस्तर और स्फटिकखण्ड भी मिले रहते हैं।

उदयपुर राज्यमें नदीतीरवर्त्ती और नदीगर्भस्थ बालू कणके साथ सुवर्णरेणु मिला है। इस बालूको धो कर बहुतसे लोग बड़ी आसानीसे जीविका निर्वाह करते हैं।

छत्तीसगढ़ विभाग—सम्बलपुर जिलेकी महानदीतटवर्त्ती सम्बलपुर शहरमें और एबे नदी तटवर्त्ती ताहुद ग्राममें बालू धो कर स्वर्णसंग्रहकी प्रथा प्रचलित है। रायपुर जिलेमें कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वर्णसे ही गुजारा चलाते हैं। यहां महानदीके तीरवर्त्ती राजिम नामक स्थानमें सुवर्णकणा मिलती है।

ऊपर गोदावरी जिला—भद्राचलम् और मारिगुडम इन दो स्थानोंमें सुवर्ण मिलता है।

महिसुर—उरिगाम नामक ग्राममें बालू धो कर तथा मारकरपम नामक स्थानमें जमीनके अन्दरसे सुवर्ण संग्रह किया जाता है। चुदिकोटसे ले कर राम समुद्र तक सुविस्तृत स्थानमें मृत्तिकाके सर्वोपरिस्थ स्तरमें ही सुवर्णरेणु मिश्रित देखे जाते हैं। १८८० ई०से बहुत सी कम्पनियां प्रतिष्ठित हो कर स्वर्णसंग्रह करके विदेशमें भेजने लगी हैं।

हैदराबाद—गोदावरी और इसकी शाखानदियोंके गड्ढे तथा किनारे पर सुवर्णरेणु मिलता है। डाक्टर वाकर साहबका कहना है, कि १७९० ई०में मूंगापेटके समीपवर्त्ती गोदालोर नामक ग्राममें एक सोनेकी खान आविष्कृत हुई थी।

मन्द्राज—प्राचीन कालमें मन्द्राजने सोनेकी खानके लिये विशेष प्रसिद्धि लाभ की थी। तिवाकुरमें स्फटिक क्षेत्रके ऊद्र्ध्वतनस्तरमें सुवर्णरेणु देखनेमें आता है। मदुरा जिलेमें दो जगह पालकनाद्मे और वेगाई नदीकी बालुकाराशिमें सुवर्णरेणु संगृहीत होते हैं। सलेम जिलेमें एक समय कंजामालिया नामक पहाड़के ऊपर यह बहुमूल्य धातु पाई जाती थी।

मलवार और वैनाद जिला—पहले ही कहा जा चुका है, प्लिनिके समय जो यहां सुवर्ण मिलता था, उसके अनेक प्रमाण हैं। परन्तु १७९२-९३ ई०के पहलेका विवरण नहीं रहनेसे इस अञ्चलके सुवर्णकी बातें एकदम अनालोचित हैं। उसी साल सरकारी कमिश्नरकी जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उससे जाना जाता है, कि उस समय नीलाम्बरके राजाने अपने राज्यमें जो सोना मिलता था, उस पर राजकर लगाया था। बुकानन लिख गये हैं, कि १८०१ ई०में मलवारमें सोनेकी खान थी। सामान्य राजकर दे कर एक नायब इन सब खानोंसे सोना निकालता था। १८३० ई०में मि० बेवर नामक एक अंगरेजने लिखा था, कि कोयम्बतोरमें तथा नीलगिरि और कुण्डगिरिमालाके दक्षिण और पश्चिमप्रदेशमें २००० हजार वर्गमील परिमित

जमीनमें सुवर्ण मिलता है। १८७६-८० ई०में ब्राइस्मिथ ने धैनाद् अञ्चलके सुवर्णक्षेत्रोंको अच्छी तरह देख कर अपना मत प्रकट किया है, कि यहां मिट्टीके साथ स्वर्ण रेणु अधिक मात्रामें विजड़ित हैं।

बम्बई प्रदेश—दक्षिण महाराष्ट्रदेशके धारवार, बेलगाव और कलादगि जिलेमें तथा काठीवाड़ अञ्चलमें बहुत-से पहाड़ों पर सुवर्ण मिलता है।

धारवार जिला—इस जिलेमें तीन पहाड़ पर सोना पाया जाता है।

कालादगि जिला—यहांकी नदीसे कनवर्त्ती वालुकाकणाके साथ सुवर्णरेणु विजड़ित मालूम होता है।

पञ्जाब—यहांकी रावी और अन्यान्य दो एक नदियोंको छोड़ प्रायः सभी नदियोंके वालूमें सुवर्णरेणु मिश्रित है।

वालू धो कर सुवर्ण संग्रहकी प्रथा यहां बहुत दिनोंसे चली आ रही है। पहले सिखराजत्वके समय प्राप्त सोनेका चौथाई भाग राजस्व स्वरूप दिया जाता था। उससे राजस्वकी बहुत वृद्धि हो गई थी। किन्तु अभी बहुत ही थोड़ा राजकर वसूल होता है। १८६०-६१ ई०में ४४४) रु० और १८६१-६२ ई०में ५३०) रु० राज खजानेमें आये थे। अबुलफजलका कहना है, कि सम्राट् अकबरके समय लाहोर सूबाका वालू धो कर सुवर्ण संग्रह किया जाता था। अभी बन्नू जिला, पेशावर जिला, हजारा जिला, रावलपिण्डी जिला, झेलम जिला, काङ्गड़ा जिला, अम्बाला जिला और गुरुगांव जिलामें सोना मिलता है।

काश्मीर—आईन इ अकबरीमें अबुल फजलने लिखा है, कि अकबरके समय काश्मीर सूबेमें पदमाटी, पुरोलि और गुल्कुटेमें सुवर्ण पाया जाता था। यहां एक नये ढंगसे सुवर्णरेणु संग्रह किये जाते थे। जिन सब नदियोंके जलमें ये सब बह कर आते थे, उनके नीचे रोएंदार पशुका चमड़ा गाड़ कर रखा जाता था। इसके रोओंमें स्वर्णरेणु जल जाते थे। पीछे उस चमड़ेको सुखा कर झाड़ देनेसे ही सुवर्ण जमीन पर गिर पड़ते थे। अभी काश्मीर-महाराजके राज्यमें एकमात्र लादक-में ही स्वर्णसंग्रहकी प्रथा प्रचलित है।

उत्तरपश्चिम प्रदेश—कुमायुन् और गढ़वालकी कुछ नदियोंमें वालूके साथ स्वर्णरेणु मिला हुआ देखा जाता है।

मुरादाबाद जिला—इसके उत्तर सीमान्तवर्त्ती रामगङ्गाकी शाखाओंमें विशेषतः कोह और ढेलामें स्वर्ण मिलता है।

नेपाल, सिकिम और दार्जिलिंग—हिमालयके उत्तर-पश्चिमांशकी तरह यहां भी सोना मिलता है। हिमालयके अधोदेशमें अवस्थित होनेके कारण चम्पारण जिलेकी बात इसी साथ कही जाती है।

आसाम—स्वर्णके लिये आसाम बहु प्राचीन कालसे प्रसिद्ध है। दरङ्ग, शिवसागर, लखिमपुर इन सब स्थानोंमें ऐसी बहुत थोड़ी नदी है जिसमें सोना नहीं मिलता हो।

ब्रह्मदेश—यहांके सभी विभागोंमें सुवर्ण मिलता है।

तिब्बत—बहु प्राचीन कालसे ही तिब्बतसे भारतवर्षमें सुवर्णकी आमदनी होती है। १८६७-६८ ई०में यहां जो पैमाइशी प्रथा शुरू हुई, उससे थक जालुं, थक नियानमो और थक सारलुङ्गमें बड़ी बड़ी सोनेकी खान आविष्कृत हुई। इन सब खानोंसे तिब्बतवासी सोना निकालते थे। १ली सदीमें हेरोदोतस, प्लिनि आदि भी यहां सुवर्णप्राप्तिकी बातका उल्लेख कर गये हैं। तिब्बती लोग जो स्वर्ण संग्रह करते हैं, उसे वे प्रयोजनीय शस्य या वस्त्रके बदलेमें भारतवर्षके उत्तराञ्चलवासियोंके निकट बेचते हैं। लामाकी गवर्मेण्ट खानमें काम करनेके लिये एक साथ तीन वर्षका अधिकार देती है। जिसे यह अधिकार मिलता है, उसे सार-पान कहते हैं। थक्जालुं की खानोंमें जो सुवर्ण मिलता है, उसका आपेक्षिक गुरुत्व साधारणतः ७-७३ से ज्यादा नहीं होता।

यूरोप, एशिया और अफ्रिकाके मध्य रूस राज्यमें ही अधिक सोना मिलता है। इसमें भी फिर अधिक भाग एशिया खण्डमें ही संग्रहीत होता है। ऊरलशैलमालाके पूर्वांशके उत्तर दक्षिणमें प्रायः छः सौ मील विस्तृत स्थानमें ही बहुत-सी सोनेकी खान हैं। फिर यहां भी भियास्क, कमेनस्क, वेरेजोभस्क, निजनी तागिलस्क और वोगस लाउस्क यही सब स्थान प्रधान सुवर्ण-

केन्द्र कह कर प्रसिद्ध हैं। ओरल प्रदेशमें जो सब खान हैं, उनमेंसे मियास्कके समीपवर्त्ती स्मोलेनस्कको खान तथा आउसपेनस्ककी खानसे ही अधिक सोना निकाला जाता है। मियास्कमें जो सोनेके ताल पाये जाते हैं, वे बहुत बड़े होते हैं। आउसपेनस्कमें सोनेके साथ मरकत मणि, पाटल वर्णका टोपाज पत्थर और अन्यान्य बहुमूल्य पत्थर पाये जाते हैं।

यूरोपखण्डमें इङ्गलैण्डके कार्नवाल, विकलो और हेलमसडेल आदि स्थानोंमें छोटे छोटे सोनेके टुकड़े पाये जाते हैं। आलपाइनसे राइन दानियुब आदि जिन सब नदियोंकी उत्पत्ति हुई है, उनके जलमें तथा फरासी देशकी नदियोंमें सोना मिलता है। आलप्स पर्वतके जिस ओर इटली देश है उस ओर लागो माजियरके ऊपर सेलानजास्का और भालटो नामक स्थानमें पेष्टारेणा खान नामकी बहुतसी खानें हैं। यहांसे गत कई वर्षों तक वर्षमें २०००से ३००० हजार औंस तक सोना निकाला गया है। अभी आलेमण्ट नामक स्थानमें स्वर्णमिश्रित एक तांबेका खान आविष्कृत हुई है।

उत्तर अमेरिकाके अटलाण्टिक महासागरकी ओर कुइबेकके पास चडियर नामकी नदीमें तथा नव-स्कोशियामें सोना संग्रह किया जाता है। किन्तु प्रशान्त महासागरकी ओर ही यह अधिक परिमाणमें मिलता है। मेक्सिकोसे ले कर अलास्का तक प्रायः सभी स्थान सुवर्णके लिये विख्यात है। परन्तु उपकूलके साथ समान्तराल भावमें प्रवाहित स्याक्रामेण्टके समीपवर्त्ती प्रदेशमें ही यह बहुतायतसे मिलता है।

टिटिकाका हृदके तीरवर्त्ती धाराश्रियामें स्फटिकमणिके साथ बहुमूल्य सोना पाया गया है। अभी वेनिज्वेलके कारावालमें तथा फरासी गायेनाके सेण्टइलाई नामक स्थानमें भी सोनेकी खान आविष्कृत हुई है। ब्राजिलमें भी फकोठिङ्क नामक पत्थरके पहाड़ पर बहुतसी सोनेकी खान देखी गई है।

अफ्रिका महादेशके पश्चिमी किनारे काफी सोना संग्रह किया जाता है। अष्ट्रेलियाके पूर्व उपकूलमें उत्तर-दक्षिण बहुत दूर तक विस्तृत स्थानमें सोना मिलता है। क्विन्सलैण्डके सीमान्तदेशमें अवस्थित पर्वतका पूर्व प्रान्त, इधर दक्षिणमें वेडउड, आइलेड, टाम्वा रूम और मारे नदीके समीपवर्त्ती स्थान भी सुवर्णके लिये विख्यात हैं।

१८८५ ई०में दक्षिण अफ्रिकामें (ट्रान्सभाल) तथा प्रायः उसी समय दक्षिण भारतके (महिसुर) कोलर में सुवर्ण खान आविष्कृत हुई। अभी इन सब स्थानोंमें सुवर्ण संग्रहके लिये चेष्टा हो रही है। ट्रान्सभालकी सुवर्णखान अद्वितीय है। कोलरका सुवर्णक्षेत्र आविष्कार होनेके बाद भारतवर्षमें भी कम सोना संग्रह नहीं होता। यहांसे प्रति वर्ष ६९८२०८ पौण्ड सोना पाया गया था, परन्तु अभी १६ लाख पौण्ड पाया जाता है। कनाडाके वृटिश कलम्बियामें जो सब खान आविष्कृत हुई हैं उनमें भी प्रति वर्ष १५८३३५०० पौंड करके सुवर्ण है। अमेरिकाके युक्तराज्यमें भी कुछ नई खान आविष्कृत हो जानेसे उनमें काफी सोना मिलता है।

खानसे जो सोना निकाला जाता है, वह रौप्य आदि अन्यान्य धातव पदार्थोंके साथ मिला रहता है। इन मिली हुई धातुओंसे जिस उपायसे शुद्ध सोना निकाला जाता है, उसे विशुद्धीकरण कहते हैं। अति प्राचीन कालमें फिटकरी मिली हुई मिट्टीके साथ खानसे निकाले हुए सोनेको दग्ध कर विशुद्ध स्वर्ण निकाला जाता था। प्लिनिका कहना है, कि उनके समयमें विशुद्ध करनेके लिये सोनेको उसके तिगुने लवणमें डाल, पीछे उसे एक मिट्टीके बरतनमें रख आंच पर चढ़ाना होता था। इसके बाद फिर एक भाग मृण्मय लवणके साथ मिला कर उसमें आंच देनी होती थी। अनन्तर ठंढ लगनेसे ही लवण गल जाता था और चांदीका अंश क्लोराइड आकारमें पृथक् हो जाता था। इसी प्रकार विशुद्ध सोना मिलता था। अभी नाइट्रिक एसिड और सल्फ्युरिक एसिडकी सहायतासे सोना विशुद्ध किया जाता है।

अनेक समय सुवर्ण पारेके साथ भी मिश्रित अवस्था में पाया जाता है। केम्बिस कपड़े पर या मृगचर्मके ऊपर बिछा कर पारेका अंश बहुत कुछ कम कर लिया जाता है। पीछे एक बरतनके भीतरी भागके फायर क्ले नामक अग्निकी उत्तापसह मृत्तिका और काष्ठभस्मका प्रलेप दे कर उसमें पारे और सोनेके कठिन सम्मिश्रणको

प्रवेश कराना होता है। उसमें एक जलपूर्ण पात्र और दूसरेमें एक नलका संयोग रखना होता है। उस समय अग्निका उत्ताप लगनेसे ही चुआई शुरू होती है। इस प्रकार प्रति सम्मिश्रणसे साधारणतः सैकड़े पीछे ३० या ४० भाग सुवर्ण मिलता है।

सोने और चांदीके स्वाभाविक मेलसे जो मिश्रधातु उत्पन्न होती है, उसे इलेकट्रम कहते हैं। सोनेके साथ बहुत-सी धातु मिली रहती है।

सोने, चांदी और तांबे इन त्रिविध धातुके संयोगसे जो मिश्र धातु बनती है, वही विशेष प्रयोजनीय है। वर्त्तमान समयमें जिस सोनेसे सिक्का बनता है, वह एकदम विशुद्ध नहीं है, उसमें १००० भागमेंसे ८०० भाग सोना रहता है, बाकी दो सौ भाग चांदी और तांबेका संमिश्रण है। इङ्गलैण्डमें १२५७ ई०को जब सुवर्णमुद्राका प्रथम प्रचार हुआ, उस समय सिर्फ विशुद्ध सोना व्यवहृत होता था। अभी हजार भागमें सुवर्ण ६१६०६ भाग व्यवहृत होता है।

केवल अलङ्कारादि विलासकी सामग्री बनानेमें ही जो सोना व्यवहृत होता है, सो नहीं, जीवनरक्षाके विषयमें भी इसकी उपकारिता है। बहुत प्राचीन कालसे ही भारतवर्षमें तथा यूरोपखण्डमें औषध रूपमें भी इसका व्यवहार चला आता है। प्राचीन रोममें माताएं छोटी छोटी सन्तानके गलेमें सुवर्णखण्ड लटका रखती थीं। उनका विश्वास था, कि ऐसा करनेसे कोई इनका अनिष्ट नहीं कर सकेगा, हिन्दू वैद्य इसे बलकारक तथा शक्ति, सौन्दर्य, बुद्धि, मेधा और शृङ्गारशक्तिवर्द्धक समझते हैं। कांजी, तेल, गोमूत्र, मट्ठे आदिके साथ इसे मिला कर और पीछे उस मिले हुएको गरम और ठंढा कर जारित सुवर्ण तैयार होता है। अनन्तर पारेके साथ मिला कर यह उत्तप्त किया जाता है तथा इसके साथ थोड़ी गंधक मिला कर सूक्ष्म चूर्ण किया जाता है। एक ग्रेनसे दो ग्रेन मात्रामें यह औषध रूपमें व्यवहृत होता है। इसके सिवा अन्यान्य अनेक औषधोंके साथ भी मिलानेसे उसके गुण और शक्तिकी वृद्धि होती है। स्वर्णसिन्दूर और मकरध्वज कैसा उपकारी और बलकारी औषध है, वह किसी भी भारतवासीसे छिपा नहीं है।

सुवर्णमारण—सुवर्णके बहुत पतले पत्तरको उससे दूने पारेमें मिला कर कञ्चनरस द्वारा मर्दन करते करते पिण्डाकृति करे, पीछे दोनोंके बराबर गंधक चूर्ण उस पिण्डके ऊपर और नीचे रखे। बादमें उस पिण्डाकृतिको मूषामें रख ऊपरसे कर्दमाक्त वस्त्रखण्डसे मूषाके सन्धिस्थलको अच्छी तरह बन्द कर दे। इसके बाद ३० बनगोइंठेसे पुटपाकमें पाक करना होगा। इस प्रकार चौदह बार पुटपाक करनेसे सुवर्णनिरुत्थ भस्म होता है अर्थात् वह फिर किसी तरह प्रकृतिस्थ नहीं हो सकता।

वैद्यमतसे स्वर्णगुण—शीतवीर्य, कामुक व्यक्तिका हितसम्पादक, बलकारक, गुरु, रसायन, मधुर, तिक्त, कषाय रस, मधुर विपाक, पिच्छिल, पवित्र, शरीरका उपचयकारक, चक्षुका हितकारक, मेधाजनक, स्मृतिशक्तिवर्द्धक, बुद्धिप्रदायक, हृदयग्राही, आयुष्कर, कान्तिजनक, वाक्शुद्धिकारक, वयःस्थैर्यसम्पादक, कृश व्यक्तिका पुष्टिकारक, स्थावर और जङ्गम विषक्षयकारक, उन्माद, त्रिदोषज्वर और राजयक्ष्मानाशक। सुवर्ण यदि उक्त रूपसे शोधित न हो, तो उससे बलवीर्यनाश आदि सभी प्रकारके अनिष्ट होते हैं। (भावप्र० द्वितीयभाग)

वैद्यक मतसे अनेक औषधोंमें सुवर्ण व्यवहृत होता है। औषधमें यदि सुवर्णका व्यवहार करना हो, तो उसे पहले शोधन-मारणादि कर लेना होता है।

पुराकालमें सप्तऋषियोंकी रूप-यौवनसम्पन्ना पत्नी देख कर अग्निका रेत पृथ्वी पर स्खलित हो सुवर्णरूपमें परिणत हुआ था।

अशोधित सुवर्ण सेवन करनेसे बलवीर्य नष्ट होता है, अनेक प्रकारके रोगोंकी उत्पत्ति होती है, कोई काम करनेमें जी नहीं लगता, यहां तक, कि मृत्यु भी हो जाया करती है, अतएव औषधके लिये कभी भी निकृष्ट स्वर्ण ग्रहण न करे।

सुवर्णशोधन—सुवर्णका अत्यन्त बारीक पत्तर बना कर उसे अग्निमें जलावे, पीछे यथाक्रम तिल तैल, मट्ठे, कांजी, गोमूत्र और कुलथी कलायके काढ़ेमें तीन तीन बार डुबावे अर्थात् एक एक बार जलावे, पीछे एक एक बार उक्त तरल पदार्थमें निक्षेप करे। इससे सुवर्ण शोधन होता है।

सुवर्ण सभी धातुओंमें श्रेष्ठ है। यूरोपकी तरह भारतवर्षमें भी बहुत प्राचीनकालसे सुवर्णधारणकी प्रथा चली आती है। हिन्दूका विश्वास है, कि सुवर्णधारण करनेसे लक्ष्मीकी वृद्धि होती है।

मातृकाभेदतन्त्रमें लिखा है, कि पहले पारेको ला कर पत्थरके ऊपर रखे। इस पारेके ऊपर सर्वगन्धमया-त्मक मन्त्र आठ हजार बार जप करना होगा। पीछे स्वयं-म्भूपुष्पसंयुक्त अरुणसन्निभ रक्तवर्ण वस्त्र पर वह पारा दो मिट्टीके बरतनमें रख पुष्पयुक्त सूत द्वारा पूरण करे तथा धान्यरज और मृत्तिका द्वारा उस बरतनमें लेप कर धूपमें सुखा ले। दूसरी बार फिर लेप चढ़ा कर अग्निमें डाल दे। अष्टमी या नवमी रात्रिको डालना मना है। ऐसा करनेसे उक्त पारा स्वर्णरूपमें परिणत होता है।

सुवर्ण नहीं चुराना चाहिये, चुरानेसे बड़ा भारी पाप होता है। शास्त्रमें सुवर्णदानका अनन्त फल कहा है।

२ हरिचन्दन। ३ स्वर्णगैरिक। ४ धन, सम्पत्ति। ५ नागकेशर। ६ अस्सी रत्ती सोना, एक भरी सोना। पर्याय—बिल्व। ७ सोलह माशेका मान। (पु०) ८ स्वर्णकर्ष। ९ वृक्षविशेष। १० धतूरा। ११ कणगुग्गुल। १२ काले धतूरेका पौधा। १३ गौरसर्षप शाक, पीली सरसोंका साग। १४ हरिद्रा, हल्दी। १५ उशीर, खस। १६ एक वृत्तका नाम। १७ एक देवगन्धर्वका नाम। १८ दशरथके एक मन्त्रीका नाम। १९ अन्तरीक्षके एक पुत्रका नाम। २० एक मुनिका नाम। (त्रि०) २१ सुन्दरवर्ण या रंगदार, उज्ज्वल। २२ सोनेके रंगका, पीला।

सुवर्णक (सं० क्ली०) सुवर्णमिव इवार्थे कन्। १ पित्तल, पीतल। यह देखनेमें सोनेके समान होता है। २ सुवर्ण, सोना। ३ सुवर्णकर्ष, सोनेका एक प्राचीन तौल जो सोलह माशेकी होती थी। ४ आरग्वध वृक्ष, अमलतास। ५ सुवर्णक्षीरी। (त्रि०) ६ सुन्दर वर्णयुक्त, सुन्दर रंग-का। ७ स्वर्णसम्बन्धी, सोनेका।

सुवर्णकदली (सं० स्त्री०) चम्पकरम्भा, चंपा केला। इसका गुण—मधुर, शीतल, स्वल्प भक्षणसे दीपनकारक, तृष्णा और दाहनाशक, कफवर्द्धक, बलकारक और गुरु। (राजनि०)

सुवर्णकमल (सं० क्ली०) १ रक्त कमल, लाल पद्म। वैद्यकमतमें यह शीतल, मधुर, वर्णकारक, कफ, पित्त, तृष्णा, दाह, रक्तदोष, विषदोष और विस्फोटकनाशक माना गया है। २ सुवर्णनिर्मित पद्म, सोनेका बना हुआ कमल।

सुवर्णकरणी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी जड़ी। इसका गुण यह बताया जाता है, कि यह रोगजनित विवर्णता को दूर कर सुवर्ण अर्थात् सुन्दर कर देती है।

सुवर्णकर्त्तृ (सं० पु०) सुवर्णकार, सुनार। मनुमें लिखा है, कि इनका अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिये। जो लालचवश इनका अन्न ग्रहण करते हैं, उनकी आयुका नाश होता है। क्योंकि मनुमें लिखा है, कि राजाका अन्न भोजन करनेसे तेजका और स्वर्णकारका अन्न भोजन करनेसे आयुका नाश होता है।

सुवर्णकर्ष (सं० पु०) सोनेकी एक प्राचीन तौल जो सोलह माशेकी होती थी।

सुवर्णकार (सं० पु०) सोनेके गहने बनानेवाले, सुनार।

सुवर्णकेतकी (सं० स्त्री०) रक्तवर्ण केतकी, लाल केतकी।

सुवर्णकेश (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक नागासुरका नाम।

सुवर्णक्षीरिणी (सं० स्त्री०) १ स्वर्णक्षीरी, कटुपर्णी, कटेरी। इसके पत्ते अनन्तमूलके पत्तेके समान होते है। २ वृक्षविशेष, स्यालकांटा। इसका क्षीर सुवर्णवर्ण तथा चक्षुका हितकर और वृष्य होता है।

सुवर्णखाली—मैमनसिंह जिलेके पश्चिम एक सर्वप्रधान वाणिज्य स्थान। यह यमुना नदीके किनारे नसीराबाद (मैमनसिंह) शहरसे ४० मील पश्चिममें अवस्थित है। मैमनसिंह और इस स्थानके मध्य आने जानेकी कोई विशेष सुविधा नहीं है, तब जो एक रास्ता गया है, वह उतना खराब नहीं है। सुवर्णखाली जिलेके मध्य यह एक प्रधान बन्दर समझा जाता है। यहां पण्यद्रव्यकी आमदनी और रफ्तनी दोनों है।

सुवर्णगणित (सं० क्ली०) बीजगणितका वह अंग जिसके अनुसार सोनेकी तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब लगाया जाता है।

सुवर्णगर्भ (सं० पु०) बोधिसत्त्वभेद।

सुवर्णगिरि (सं० पु०) १ राजगृहके एक पर्वतका नाम।

२ अशोककी एक राजधानी जो किसीके मतसे राजगृहमें और किसीके मतसे पश्चिमी घाटमें थी।

सुवर्णगैरिक (सं० क्ली०) गैरिकभेद, लाल गेरू। गुण-मधुर, शीतल, कषाय, व्रणरोपण, विस्फोटक, अर्श, अग्नि और दाहनाशक तथा स्निग्ध, चक्षुका हितकर, दाह, पित्तास्र, कफ, हिक्का और विषनाशक।

वैद्यक शास्त्रमें लिखा है, कि बालकोंको यदि हिचकी आती हो, तो इसका चूर्ण मधुके साथ पीस कर चटा देनेसे वह हिचकी जल्द दूर हो जाती है।

सुवर्णग्राम—ढाका जिलेके नारायणगञ्ज महकमेमें अवस्थित एक ग्राम। अभी यह पैनाम नामक एक छोटे ग्राममालमें बदल गया है। इसका डाक नाम सोनारगांव है। महम्मद-इ-बख्तियार खिलजी द्वारा ११९९ ई०में वङ्ग विजयके पहले यहां किसी स्वाधीन हिन्दूराजाकी राजधानी थी। अभी भी विक्रमपुरके अधिवासी बड़े गौरवसे राजधानी परिखा आदि दिखलाते हैं। जनसाधारण इसे बल्लालवाड़ी नामसे पुकारते हैं।

मुसलमान ऐतिहासिकोंका ग्रन्थ पढ़नेसे जाना जाता है, कि १२७९ ई०में तुघरिल अथवा सुलतान मघिसुद्दीन सुवर्णग्राममें रह कर पूर्ववङ्गका शासन करता था। आजनगर जीतनेसे उसे मोटी रकम हाथ लगी। आज तक दिल्लीमें जो राजकर भेजा जाता था, उसे बन्द कर इसने अपनेको स्वाधीन राजा घोषित किया।

गयासुद्दीन् बलबन् उस समय दिल्लीके सिंहासन पर अधिष्ठित थे। विद्रोहीके विरुद्ध उन्होंने एक दल सेना भेजी। तुघरिलने उन्हें मार भगाया। पीछे दिल्ली-से एक दूसरा दल उसके विरुद्ध भेजा गया, परन्तु वह भी निराश हो लौट गया। अब सम्राट् स्वयं आ कर सुवर्णग्राममें अवस्थित हुए। इस समय दनुजरायने दल बल ले कर सम्राट्का साथ दिया। युद्धमें हार खा कर तुघरिल खा भाग चला, किन्तु पीछे वह पकड़ा गया और प्राणदण्डकी उसे सजा मिली (१२८२ ई०)। इसके बाद बलबन्ने आ कर तुघरिलके वंशधरों, अनुचरों तथा जिन सब फकीरोंने उसे बागी होनेके लिये उभारा था, उन्हें यमपुर भेजा। इस प्रकार विद्रोहका दमन कर उन्होंने अपने द्वितीय पुत्र बघरा खाको वङ्गके सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया।

बघरा खाकी मृत्युके बाद उसके लड़के खास कर लक्ष्मणावतीमें ही रहते थे। १३१८ ई०में साहबुद्दीन बघरा खां सुवर्णग्रामके सिंहासन पर बैठा, किन्तु उसका भाई गयासुद्दीन बहादुर उसे तख्त परसे उतार बहादुर शाह नामसे स्वयं राजा बन बैठा। उस समय गयासुद्दीन तुगलक शाह दिल्लीके सम्राट् थे। वे राज्य-च्युत गयासुद्दीन बहादुरका पक्ष ले कर १३२३ ई०में स्वयं सुवर्णग्राम आ धमके। बहादुर शाहने आत्मसमर्पण किया। पीछे उसे गलेमें रस्सी बांध कर दिल्ली भेज दिया गया। फते खा नामक अपने एक पोष्यपुत्र-को सुवर्णग्रामके सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर सम्राट् दिल्ली लौटे। किसी किसीका कहना है, कि उन्होंने इस समय (किसीके मतसे १३३० ई०) में वङ्गाल प्रदेशको लक्ष्मणावती, सातगांव और सोनारगांव इन तीन अंशोंमें विभक्त कर प्रत्येक विभागके लिये एक एक स्वतन्त्र शासनकर्त्ता नियुक्त किया था। कहते हैं, कि फते खाने बहराम खा उपाधि ग्रहण कर चौदह वर्ष तक न्याय और धर्मके साथ सोनारगांवका राज्य किया था। यहीं पर १३३८ ई०में उसकी मृत्यु हुई।

अनन्तर उसके भूतपूर्व सिलादर फखरुद्दीन मुबारक-ने सिंहासन अधिकार कर मुबारकशाह उपाधिग्रहण की। यह संवाद पा कर सम्राट्ने लक्ष्मणावतीके शासनकर्त्ता कादिर खाको इसके विरुद्ध भेजा। युद्धमें फखरुद्दीन हार खा कर भाग चला। किंतु इसके बाद मुबारकने बड़े कौशलसे कादिर खाकी सेनाओंको रिश्वतसे वशी-भूत कर उसे मार डाला और सुवर्णग्राम अधिकार कर लिया। अनन्तर १३३९से १३४९ ई० तक वह स्वाधीन भावसे सुवर्णग्रामका शासन करता रहा। उसकी मृत्यु-के बाद उसका लड़का इख्तियारुद्दीन गाजी शाह सिंहासन पर बैठा। उसके राजत्वकालके सम्बन्धमें कुछ भी मालूम नहीं। १३५१ ई०में समसुद्दीन इलियस शाह-ने उसे परास्त कर सुवर्णग्राम तथा धीरे धीरे समस्त वङ्गदेश अधिकार कर लिया। १३५२-१३५६ ई० तक इसने सुवर्णग्रामसे स्वाधीनभावमें अपने नामकी मुद्रा चलाई। सबसे पहले इसीके अमलमें दिल्लीके सम्राट-को वङ्गदेशकी स्वाधीनता स्वीकार कर लेनी पड़ी।

इसकी प्रचलित मुद्रामें 'हजरत् इ जलाल' कह कर सुवर्णग्रामका उल्लेख देखनेमें आता है। समसुद्दीनकी मृत्युके बाद उसका लड़का सिकन्दर शाह वङ्गालकी मसनद पर बैठा। शायद इसीके समय सुवर्णग्रामसे बारह मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित मुआज्जमाबादमें राजधानी उठ कर चली गई थी।

गयासुद्दीन नामक सिकन्दरका एक पुत्र था। यह पिताके विरुद्ध बागी हो गया। १३६७ ई०में सुवर्णग्राम से भाग कर उसने एक दल सेना इकट्ठी की और पिताके विरुद्ध युद्धयात्रा कर दी। वर्त्तमान ढाका जिलेके जाफरगंज नामक स्थानके पास गोआलपाड़ा नामक स्थानमें पिता पुत्रमें मुठभेड़ हो गई। युद्धमें घायल हो कर मुमूर्षु अवस्थामें सिकन्दर शाह राजधानी लौटा और आजम शाह उपाधि ग्रहण कर गयासुद्दीन वङ्गालकी मसनद पर बैठा। कवि हाफिजके साथ इसका पत्र व्यवहार होता था। पीछे कविको ला कर इसने अपने दरबारमें प्रतिष्ठित किया। आज भी सुवर्णग्रामके लोग इस नवाबका समाधि स्थान दिखलाते हैं।

१५ वीं सदीमें धार्मिक और पण्डित लोगोंका वासस्थान होनेके कारण सुवर्णग्रामकी विशेष ख्याति थी। शायद इसी समय मुसलमान पीर, काजी आदि आ कर यहां मिले थे। सोनारगाँवके ध्वंसावशेषके भीतरी और वनभागका अनुसंधान करनेसे कमसे कम डेढ़ सौ फकीरोंकी समाधि पाई जाती है।

१५८२ ई०में टोडरमलने जब वङ्गाल देशकी भावली जमीनका बन्दोबस्त किया, तब यह भूभाग सरकार सुवर्णग्राम कहलाने लगा। इसके पश्चिम ब्रह्मपुत्र नदी, उत्तरमें श्रीहट्ट और पूरबमें स्वाधीन त्रिपुराराज्य इस सरकारमें गिना जाता था। ढाका शहर उस समय इसके अन्तर्भुक्त नहीं था। विक्रमपुर परगनेका वलदा खाल, दक्षिण साहबाजपुर और दाक्षिणा, त्रिपुरा जिलेका नूरपुर और नोआखाली जिलेका जगदिया, ये सब स्थान ले कर उस समय सुवर्णग्राम संगठित हुआ था। इसके कुछ समय बाद ही राजधानी सुवर्णग्रामका ध्वंस होना शुरू हुआ। १५८६ ई०में मि० राल्फ-फिच नामक एक यूरोपीय सुवर्णग्राम देखने आये। उनके वर्णनसे जाना जाता है, कि उस समय भी यहां जैसा बारीक और उमदा कपड़ा तैयार होता था, वैसा भारतवर्षमें और कहीं भी नहीं मिलता था। यहांके मकान बहुत छोटे छोटे तथा घाससे ढके होते थे। अधिवासी खूब धनी थे। ये लोग मांस नहीं खाते और न किसी पशुकी ही हत्या करते थे। भात, दूध और उड़द इनका प्रधान भोजन था। १८३९ ई० तक भी सुवर्णग्रामके मसलिन कपड़ेकी ख्याति अक्षुण्ण थी।

१७८५ ई०में रेनेलने जो मानचित्र निकाला, उसमें देखा जाता है, कि ब्रह्मपुत्र उस समय भैरव बाजारके नीचे मेघनाके साथ मिला हुआ है। सौ वर्ष पहले भी इस राह हो कर कलकत्तेसे आसाम नावें जाती आती थीं। सुवर्णग्रामके जंगलमें जहां तहां बद्धजलपरिपूर्ण नाले देखनेमें आते हैं। इससे प्रतीत होता है, कि उन्नतिके समय नगरमें बहुत सी खाई और खाड़ी बहती थी। जहां एक दिन पूर्वबङ्ग और समस्त वङ्गकी राजधानी थी, आज वहां दुर्भेद्य वनखण्ड शोभा दे रहा है। यहां की आबादी बहुत थोड़ी है। बालक बालिकायें प्लीहा रोगसे पीड़ित रहा करती हैं। कुल मिला कर यहांकी आबहवा अच्छी नहीं है। यहांके गुलाब जामुनकी अच्छी सुख्याति सुननेमें आती है। पान भी यहांका बहुत मशहूर है। यहांकी मूंगकी दाल जैसी अच्छी होती है, वैसी पूर्ववङ्गमें और कहीं भी नहीं मिलती। जिस मसलिन कपड़ेकी इतनी सुख्याति थी, आज वह लुप्तप्राय हो गया है।

सोनारगांवमें हिन्दू मुसलमानके अवस्थान सम्बन्ध में कुछ विशेषता है। गमापाड़ाके उत्तर और पश्चिम जितने महल्ले हैं, उनमें $\frac{9}{10}$ भाग ही मुसलमान है। इधर दक्षिण और पूर्व महल्लोंमें हिन्दूकी संख्या ज्यादा है। वैरागमें एक भी मुसलमान दिखाई नहीं देता। अधिवासियोंमें ब्राह्मण, साहा, भूंइमाली, नापित आदि देखे जाते हैं। ब्राह्मणकी संख्या अधिक है।

विक्रमपुर और वङ्गदेश देखो।

सुवर्णगोत्र (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक प्राचीन राज्यका नाम।

सुवर्णदल (सं० क्लो०) वङ्ग, रांगा।

सुवर्णचम्पक (सं० पु०) स्वर्णचम्पक।

सुवर्णचूड (सं० पु०) १ स्वर्णचूड पक्षो। २ गरुड़के एक पुत्रका नाम।

सुवर्णचूल (सं० पु०) सुवर्णचूड देखो।

सुवर्णजीविक (सं० पु०) सुवर्णवणिक्, सोनेका व्यापारी।

सुवर्णज्योतिस् (सं० त्रि०) सुवर्णकी तरह ज्योतिर्विशिष्ट।

सुवर्णता (सं० स्त्री०) सुवर्णका भाव या धर्म, सुवर्णत्व।

सुवर्णतिलका (सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी।

सुवर्णदुग्धो (सं० स्त्री०) स्वर्णक्षीरिणी नामक क्षुप, कटेरी, सटकटैया।

सुवर्णद्वीप (सं० पु०) सुमात्रा टापूका प्राचीन नाम। सुमात्रा देखो।

सुवर्णधेनु (सं० स्त्री०) दान देनेके लिये सोनेकी बनाई हुई गौ।

सुवर्णनकुली (सं० स्त्री०) महाज्योतिष्मती लता, बड़ी मालकंगनी।

सुवर्णनाभ (सं० पु०) एक वैदिक ग्रन्थकार। सौवर्णनाभ देखो।

सुवर्णपक्ष (सं० पु०) १ स्वर्णपक्ष, गरुड़। (त्रि०) २ सोनेके पंखोंवाला, जिसके पर सोनेके हों।

सुवर्णपत्र (सं० पु०) एक प्रकारका पक्षो।

सुवर्णपद्म (सं० क्लो०) १ रक्तपद्म, लाल कमल। २ सोनेका कमल। प्रवाद है, कि मन्दाकिनीमें स्वर्णपद्म प्रस्फुटित होता है। (नैषध १स०)

सुवर्णपद्मा (सं० स्त्री०) स्वर्गगङ्गा।

सुवर्णपार्श्व (सं० क्लो०) जनपदभेद।

सुवर्णपालिका (सं० स्त्री०) सुवर्णपात्रविशेष, एक प्रकारका सोनेका बना हुआ बरतन।

सुवर्णपुष्प (सं० पु०) राजतरुणी पुष्प वृक्ष, बड़ी सेवती।

सुवर्णप्रभास (सं० पु०) १ बौद्धोंके अनुसार एक यक्षका नाम। २ एक बौद्धशास्त्र।

सुवर्णप्रसर (सं० क्लो०) एलवालुक, एलुआ।

सुवर्णप्रसव (सं० क्लो०) एलवालुक, एलुआ।

सुवर्णफला (सं० स्त्री०) सुवर्णकदली, चंपा केला।

सुवर्णवणिक्—वङ्गवासी स्वनामप्रसिद्ध वणिक् जातिविशेष। इस जातिमें प्रवाद है, कि महाराज आदिशूर जब बङ्गालके सिंहासन पर बैठे, उस समय अयोध्याके समीपवर्त्ती रामगढ़ नामक स्थानमें कुशलचन्द्र आढ्य नामक एक सद्गतिपन्न व्यवसायी रहता था। सनक, सनातन और सनत्कुमार नामक उसके तीन पुत्र थे। वे यथाक्रम काञ्चन, मणि और गंध द्रव्यका व्यवसाय करते थे।

ब्रह्मपुत्रतीरवर्त्ती जो स्थान पीछे सुवर्णग्राम कहलाया, सनक वहां रहता था। अनेक कारणोंसे आदिशूरके साथ उसका विशेष सद्भाव हो गया तथा उसी सम्प्रीतिके निदर्शन स्वरूप महाराज आदिशूरने उन्हें 'सुवर्णवणिक्' की और उसके बनाये हुए स्थानको 'सुवर्णग्राम' की आख्या दी। तभीसे सनकके वंशधर सुवर्णवणिक् कहलाते हैं।

किसी किसी बौद्ध साहित्यिकके मुखसे सुना गया है, कि ये लोग बौद्ध थे। इसी राजशक्तिकी सहायता पा कर ब्राह्मणोंने इन्हें पतित कर दिया था। अभी ये लोग वैष्णव और कृष्णभक्त हो गये हैं।

सुवर्णवलय (सं० पु०) सुवर्णनिर्मित वलय, सोनेका बाला।

सुवर्णविन्दु (सं० पु०) १ विष्णु। २ सुवर्णकणिका।

सुवर्णभू (सं० स्त्री०) देशविशेष। बृहत्संहिताके अनुसार सुवर्णभू, वसुवन, दिविष्ठ, पौरव आदि देश रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रोंमें अवस्थित हैं।

सुवर्णमाक्षिक (सं० क्लो०) स्वर्णमाक्षिक, सोनामक्खी।

सुवर्णमापक (सं० पु०) बारह धानका एक मान जिसका व्यवहार प्राचीन कालमें होता था।

सुवर्णमित्र (सं० क्लो०) सुहागा जिसकी सहायतासे सोना जल्दी गल जाता है।

सुवर्णमुखरी (सं० स्त्री०) नदीभेद।

सुवर्णमेखली (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुवर्णमोचा (सं० स्त्री०) सुवर्ण-कदली, चंपा केला।

सुवर्णयूथिका (सं० स्त्री०) पीतवर्ण यूथिका, सोनजूही। गुण—स्वादिष्ट, त्रिदोषनाशक, तिक्त, कटुपाक, लघु, मधुर, तुवर, हृद्य, पित्तघ्न, कफ और वातवर्द्धक, व्रण, अस्त्र, मुख, दन्त, अक्षि और शिरोरोग तथा विषनाशक।

सुवर्णरत्नाकरछत्रकूट (सं० पु०) भविष्य बुद्धभेद।

सुवर्णरम्भा (सं० स्त्री०) सुवर्णकदली, चम्पा केला।

सुवर्णरूप्यक (सं० पु० क्ली०) द्वीपभेद। सुमात्रा देखो।

सुवर्णरेख (सं० पु०) उज्ज्वलदत्तधृत वैयाकरणभेद।

सुवर्णरेखा—एक नदी। यह लोहरडगा जिलेके रांची नामक स्थानसे दश मील दक्षिण पश्चिम-कोणसे निकल कर उत्तरपूर्वकी ओर बह गई है और बहुत दूर तक उस उच्च भूमिके ऊपरसे बहती हुई हुन्डुरघोघ नामक एक सुन्दर जलप्रपातरूपमें निम्नदेशमें गिरी है। यहांसे यह लोहरडगा और हजारीबाग जिलेके सीमान्त रेखारूपमें पूर्वकी ओर बह कर जहां लोहरडगा, हजारीबाग और मानभूम इन तीन जिलाओंका सम्मिलन हुआ है, वहां तक आई है। यहां गति परिवर्त्तित करके यह फिर दक्षिणाभिमुखी हो गई है तथा लोहरडगाके सीमान्त रेखारूपमें मानभूम तक जा कर मयूरभंजके मैदानमें घुस गई है। इसके बाद उत्तर प्रान्तसे सिंहभूममें प्रवेश कर यह दक्षिण पूर्वकी ओर ८० मील तक बह गई है। यहां नदीगर्भ प्रस्तर समाकीर्ण है, स्रोतका वेग भी प्रखर है। सिंहभूम पार कर सुवर्णरेखा मेदिनीपुरके जङ्गल-समाकीर्ण पश्चिमप्रदेशको धोती हुई बालेश्वरमें पहुंची है। यहां इसका गतिपथ एकदम टेढ़ा कुबड़ा है—पूरब और पश्चिममें बहुत दूर तक इसी गतिसे जा कर पीछे अक्षा० २१° ३४´ ४५´´ उ० तथा देशा० ४७° २३ पू० बङ्गोपसागरमें विलीन हो गई है। इसकी लम्बाई ३१७ मील है और ११३०० वर्गमील परिमित स्थानकी जल-राशि आ कर इसके कलेवरको बढ़ाती है। इसकी शाखाओंमें छोटानागपुरकी काञ्ची और कडकडी तथा सिंहभूमकी खड़काई और सञ्जय यही चार प्रधान हैं। जहां यह बङ्गोपसागरमें मिली है, वहांसे १६ मील तक ज्वार भाटा खेला करता है तथा इसमें बारहों महीने बड़ी बड़ी देशी नावें आती जाती हैं। वर्षाके समय ५०।६० मन माल लाद कर नाव मयूरभञ्ज तक आती है।

सुवर्णरेखा—सुवर्णरेखा नदीके किनारे समुद्रसे १२ मील और स्थलपथसे ६ मीलकी दूरी पर अवस्थित एक बन्दर। पूर्वकालमें मालूम होता है, कि उड़ीसाके उपकूलवर्त्ती बन्दरोंमें इसीकी प्रधानता थी। १६वीं सदीके प्रथम भागमें यहां एक पुर्त्तगीज उपनिवेश प्रतिष्ठित हुआ था। सुवर्णरेखाके मुहाने पर चर पड़ जानेसे पिपली बन्दर विनष्ट हो गया। १८वीं सदीके प्रथमार्द्ध तक भी यह एक परित्यक्त और विगतश्री ग्राम जैसा विद्यमान था, किन्तु सुवर्णरेखाके कमिक परिवर्त्तनसे इसका अभी कोई भी चिह्न दिखाई नहीं देता। अभी इसके सागरसङ्गमके पास जो चर पड़ गये हैं, उनके दक्षिण-पूर्व जो एक अप्रशस्त प्रणाली है, उसके सिवा इस नदीमें प्रवेश करनेका और कोई भी पथ नहीं है। यहांके वाणिज्यकी अवस्था धीरे धीरे खराब होती जा रही है। यहां आमदनी बिलकुल नहीं है, रफतनी कुछ कुछ होती है।

सुवर्णरेतस् (सं० पु०) शिव। (भारत)

सुवर्णरेतस (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिविशेष।

सुवर्णरोमन् (सं० पु०) १ मेष, भेड़। २ महारोमके पुत्र। (विष्णुपु०) (त्रि०) ३ सुनहरे रोएं वाला वाला।

सुवर्णलता (सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी।

सुवर्णवर्ण (सं० पु०) १ विष्णु। (त्रि०) २ सोनेके रङ्गका, सुनहरा।

सुवर्णवर्णा (सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।

सुवर्णशिरस् (सं० त्रि०) सुवर्णमण्डित शिरोयुक्त, जिसका शिखर सोनेसे मढ़ा हुआ हो।

सुवर्णशिलेश्वर (सं० क्ली०) तीर्थविशेष।

सुवर्ण-श्री—आसामप्रदेशके उत्तर पूर्वांशकी एक प्रधान नदी। यह ब्रह्मपुत्रकी प्रधान शाखा समझी जाती है और तिब्बतके पार्वत्यप्रदेशके अभ्यन्तर भागसे निकल कर पूरबकी ओर बहुत दूर तक चली गई है। पीछे दक्षिणाभिमुखी हो आसामकी उत्तर सीमान्तवर्त्ती पर्वत रेखाको भेद कर मिरि पहाड़से लखीमपुर जिला होती हुई शिवसागर जिलेमें ब्रह्मपुत्रके साथ मिला है। मिलनेके पहले इसने लोहित प्रणालीके साथ माजुलि चर नामक एक बड़ा द्वीप बना दिया है। बहुत पहलेसे सुवर्णश्रीके गर्भमें

वालुका कण मिलता आ रहा है। पहले इसके किनारे बहुत-से खड्गके पेड़ थे। इस नदीमें कभी कभी हठात् बाढ़ आ जाती है जिससे आस पासके प्रदेशोंका भारी नुकसान होता है।

सुवर्णष्ठीवी (सं० पु०) सृञ्जयके एक पुत्रका नाम।

सुवर्णसञ्ज (सं० क्ली०) सुवर्णकर्ण देखो।

सुवर्णसानूर (सं० क्ली०) काश्मीरका एक ग्राम।

सुवर्णसिद्ध (सं० पु०) वह जो इन्द्रजाल या जादूके बलसे सोना बना या प्राप्त कर सकता हो।

सुवर्णसूत्र (सं० क्ली०) सुवर्णनिर्मित सूत्र, सोनेका सूत।

सुवर्णसिन्दूर (सं० क्ली०) स्वर्णसिन्दूर।

सुवर्णस्तेय (सं० पु०) सोनेकी चोरी जो मनुके अनुसार पांच महापातकोंमेंसे एक है।

सुवर्णस्तेयी (सं० पु०) सोना चुरानेवाला जो मनुके अनुसार महापातकी होता है।

सुवर्णस्थान (सं० पु०) १ एक प्राचीन जनपदका नाम। २ सुमात्रा द्वीपका एक प्राचीन नाम।

सुवर्णहलि (सं० पु०) एक प्रकारका वृक्ष।

सुवर्णा (सं० स्त्री०) १ कृष्णागुरु, काला अगर। २ वाट्यालक, बरियारा, बला। ३ स्वर्णक्षीरी, सत्यानासी। ४ हरिद्रा, हल्दी। ५ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन। ६ अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एकका नाम। ७ इक्ष्वाकुकी पुत्री और सुहोत्रकी पत्नीका नाम।

सवर्णाकर (सं० पु०) सोनेकी खान जिससे सोना निकलता है।

सुवर्णाख्य (सं० पु०) सुवर्णस्य आख्या इव आख्या यस्य। १ नागकेशर। २ धुस्तूर वृक्ष, धतूरेका पेड़। (क्ली०) ३) तीर्थविशेष।

सुवर्णाभ (सं० पु०) सुवर्णस्य आभेव आभा यस्य। १ राजावर्त्तमणि, रेवटी। २ शङ्खपदके एक पुत्रका नाम।

सुवर्णार (सं० पु०) रक्तकाञ्चन वृक्ष, कचनार।

सुवर्णालु (सं० पु०) आलुलताभेद।

सुवर्णावभासा (सं० स्त्री०) एक गन्धर्वीका नाम।

सुवर्णाह्वा (सं० स्त्री०) सुवर्णा इति आह्वा यस्याः। स्वर्णयूथिका, सोनजूही।

सुवर्णिका (सं० स्त्री०) स्वर्णजीवन्ती।

सुवर्णी (सं० स्त्री०) सुष्ठु वर्णो यस्याः गौरादित्वात् ङीष्। आखुपर्णी, मूसाकानी।

सुवर्ण्य (सं० त्रि०) सुवर्णमर्हति सुवर्णादन्तादित्वात् यत् (पा ५।१।६६)। सुवर्णार्ह, सुवर्णयोग्य।

सुवर्त्तुल (सं० पु०) १ तरबूज। २ अतिशय वर्त्तुल, एकदम गोल।

सुवर्त्मन् (सं० क्ली०) सीधा पथ।

सुवर्मा (सं० क्ली०) १ उत्तम वर्म। २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) ३ उत्तम कवचसे युक्त, जिसके पास उत्तम कवच हो।

सुवर्ण (सं० पु०) १ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। २ एक बौद्ध आचार्यका नाम। ३ उत्तम वर्षा।

सुवर्षा (सं० स्त्री०) १ मल्लिका पुष्पवृक्ष, मोतिया। २ उत्तम वर्षा।

सुवल्लरी (सं० स्त्री०) पुत्रदात्री लता।

सुवल्लि (सं० स्त्री०) शोभना वल्लिः। १ सोमराजी। २ पुत्रदात्री लता। ३ कटुकवल्ली।

सुवल्लिका (सं० स्त्री०) १ अतुका नामकी लता। २ सोमराजी।

सुवल्लिज (सं० पु०) प्रवाल, मूंगा।

सुवसन (सं० त्रि०) १ शोभन निवास। "राज्ञः सुवसनस्य दातृन्" (ऋक् ६।५१।४) 'सुवसनस्य शोभननिवासस्य' (सायण) २ उत्तम वसनविशिष्ट, जिसके पास उत्कृष्ट वस्त्र हो। (क्ली०) ३ सुन्दर वसन, उत्तम वस्त्र।

सुवसन्त (सं० पु०) शोभनो वसन्तो यत्र। १ चैत्रावली, चैत्रपूर्णिमा। २ सुन्दर वसन्त काल। ३ सुजातीय वसन्त रोग।

सुवसन्तक (सं० पु०) शोभनो वसन्तो यत्र कप्। १ वासन्ती, नेवारी। २ मदनोत्सव जो चैत्रपूर्णिमाको होता था।

सुवसन्ता (सं० स्त्री०) १ माधवी लता। २ श्वेत जाति, चमेली।

सुवह (सं० त्रि०) सुखेन उह्यते इति सु-वह खल्। १

सुखवाह्य, सहजमें वहन करने या उठाने योग्य। २ धैर्यवान्, धीर।

सुवहा (सं० स्त्री०) सुखं वहति सौगन्धमिति सु-वह-अच् टाप्। १ शेफालिका। २ रास्ना, रासन। ३ गोधापदी। ४ शलकी, भलई। ५ वीणा। ६ त्रिवृता, निसोथ। ७ एलापर्णी। ८ रुद्रजटा। ९ हंसपदी। १० गंधनाकुली। ११ सुगली। १२ नीलसिन्धुवार। १३ तालमूली। १४ गन्धरास्ना।

सुवह्नि (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे बद्ध, दृढबद्ध।

सुवहन् (सं० त्रि०) शोभन वहन, शोभन वहनयुक्त। 'सुवह्लेन्द्रो विश्वान्यतिदुर्गहाणि' (ऋक् ६।२२।७) 'सुवह्ना शोभन वहनः' (सायण)

सुवाक्य (सं० त्रि०) सु शोभनं वाक्यं यस्य। शोभनवाक्यविशिष्ट, मधुरभाषो।

सुवाच् (सं० त्रि०) १ शोभन स्तोत्रयुक्त। "प्रथमा सुवाचा मिथाचा" (ऋक् १०।११०।७) 'सुवाचा शोभनस्तोत्रौ' (सायण) सुशोभना वाक् यस्य। २ शोभनवाक्ययुक्त, मधुरभाषो। (स्त्री०) सुशोभना वाक्। ३ मधुर वचन।

सुवाचस् (सं० त्रि०) सुवाक्य। (ऋक् १।१८८।७)

सुवाजिन् (सं० त्रि०) सुपक्षयुक्त शर, पत्र लगा हुआ तीर।

सुवाथु—पंजाबके सिमला जिलेका एक पहाड़ी सेना-निवास और स्वास्थ्यकर स्थान। इसका प्राचीन नाम सुवास्तु है। कालकासे सिमला तक जो एक पुराना रास्ता गया है, उसके ऊपर कसौलीसे ६ मील और सिमला शहरसे २३ मील दूर पर अवस्थित है। १८१६ ई०के गुर्खा युद्धसे यह सेना निवासरूपमें व्यवहृत होता आ रहा है। कौआज-भूमिके ऊपर जो एक छोटा दुर्ग था, वह अभी सेनाओंके भंडारगृहमें परिणत हो गया है। यहां अमेरिकाके पादरियों द्वारा प्रतिष्ठित एक विद्यालय और एक कुष्ठाश्रम है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ४५०० फुट है।

सुवामा (सं० स्त्री०) वर्त्तमान रामगंगा नदीका प्राचीन नाम।

सुवार्त्ता (सं० स्त्री०) १ कृष्णकी एक स्त्रीका नाम। २ उत्तम वार्त्ता, शुभसंवाद।

सुवालुका (सं० स्त्री०) दाडी नामक लताभेद।

सुवास (सं० पु०) शोभनो वासो। १ शोभन गंध, अच्छी महक। २ उत्तम निवास, सुन्दर घर। ३ महादेव। ४ एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें न, ज, ल होता है। (त्रि०) ५ सुन्दर वस्त्रोंसे युक्त।

सुवासक (सं० पु०) तरबूज।

सुवासकुमार (सं० पु०) कश्यपके एक पुत्रका नाम।

सुवासन (सं० पु०) दशवें ब्रह्मसावर्णि मनुके एक पुत्रका नाम।

सुवासरा (सं० स्त्री०) हालीं नामका पौधा, चसुर।

सुवासस् (सं० त्रि०) शोभन वस्त्रविशिष्ट, उत्तम कपड़ावाला।

सुवासा (सं० स्त्री०) शोभन वस्त्रविशिष्टा उत्तम कपड़ावाली।

सुवासिका (हिं० वि०) सुगन्ध करनेवाली, सुवास करनेवाली।

सुवासित (सं० त्रि०) सुगन्धयुक्त, खुशबूदार।

सुवासिनी (सं० स्त्री०) १ युवावस्थामें भी पिताके यहां रहनेवाली स्त्री, चिरंटी। २ सधवा स्त्री।

सुवासी (हिं० वि०) उत्तम या भव्य भवनमें रहनेवाला।

सुवास्तु—पंजाबके पेशावर जिलेकी एक नदी। इसका दूसरा नाम लुन्दी है। वृटिश राज्यके बहिर्भागमें जिस पहाड़ द्वारा पंजकोरासे सुवास्तुप्रदेश विच्छिन्न हुआ है, उस पहाड़के क्रमागत पूर्वप्रान्तसे इसकी उत्पत्ति हुई है। सुवास्तु उपत्यकामें जितनी जलधाराएं नीचेकी ओर आई हैं, उनका सभी जल आ कर इसके कलेवरको बढ़ाता है। यह मिटनीके उत्तर देशमें जा कर पेशावर जिलेमें घुस गई है तथा पीछे निशथ नामक स्थानमें जा कर काबुल नदीमें विलीन हो गई है। इसके तीरवर्त्ती प्रदेश बहुत ही निम्न और जलमय हैं। धान ही यहांका प्रधान अनाज है।

सुवास्तु—पञ्जाबकी एक उपत्यका। दक्षिण पश्चिमकी ओर यह क्रमशः नीचेकी ओर उतर कर वृटिशसीमान्त रेखाके पास पूर्व-पश्चिमकी ओर कुछ टेढ़ी हो गई है।

कुटेरा राज्य और इन उपत्यकाके बीच एक बहुत ऊंची शैलश्रेणी खडी है। सुवास्तु प्रदेश यूसुफक वंशधर यूसुफजाई नामक जातिके शासनाधीन है। यहांकी प्रधान नदीका नाम भी सुवास्तु है। १८७८ ई० तक जालस उपत्यका नामसे भी इसका उत्तरांश दाटो सरदारके अधीन था। दक्षिण-पश्चिम अंशमें आलादन्दके खा राज्य करते थे तथा दक्षिणपूर्वांश अर्थात् वहजई नामक थाना खा लोगोंके अधीन था। सेनाके हिसाबमें सुवास्तुक अधिवासियोंका स्थान उतना ऊंचा नहीं है। जलवायुके दोषसे ये लोग दुर्वल हैं। वूनाके पहाडियोंकी अवस्था बहुत अच्छी है। सुवास्तु उपत्यकाके ऊर्द्ध्वांशके अधिवासियोंका नाम तरवाल है। इन लोगोंकी भाषा कोहिस्तानी कहलाती है। कोई कोई पुस्तु भाषा भी समझते हैं।

वृहत्संहितामें लिखा है, कि ऐन्द्रवर्गमें भूमिकम्प होनेसे काशी, युगन्धर और सुवास्तु आदि देशोंमें रोगकी उत्पत्ति है।

सुवास्तुक (सं० पु०) राजभेद। (भारत)

सुवाह (सं० पु०) १ स्कन्दानुचरभेद। २ उत्कृष्ट घोटक, अच्छा घोडा। (त्रि०) ३ शक्तिशाली या वीर, सहजमें उठानेयोग्य।

सुवाहन (सं० पु०) एक मुनि।

सुविक्रम (सं० त्रि०) १ शोभन विक्रमयुक्त, अत्यन्त साहसी, शक्तिशाली। (पु०) २ वत्सप्राके एक पुत्रका नाम।

सुविक्रान्त (सं० त्रि०) सु वि-क्रम क्त। १ अत्यन्त विक्रमशाली, अतिशय पराक्रमी। (पु०) २ शूर, वीर। ३ वीरता, वहादुरी।

सुविक्लव (सं० त्रि०) अतिशय विह्वल, बहुत बेचैन।

सुविख्यात (सं० त्रि०) बहुत प्रसिद्ध, बहुत मशहूर।

सुविगुण (सं० त्रि०) १ गुणहीन, योग्यतारहित। २ अत्यन्त दुष्ट, नीच।

सुविग्रह (सं० त्रि०) सुन्दर शरीरविशिष्ट, सुरूप।

सुविचक्षण (सं० त्रि०) अति विचक्षण, बहुत बुद्धिमान्।

सुविचार (सं० पु०) १ सूक्ष्म या उत्तम विचार। २ अच्छा फैसला, सुन्दर न्याय। ३ रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न कृष्णके एक पुत्रका नाम।

सुविज्ञ (सं० त्रि०) अतिशय विज्ञ, बहुत चतुर।

सुविज्ञान (सं० त्रि०) १ जो सहजमें जाना जा सके। २ अतिशय चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञेय (सं० त्रि०) १ जो सहजमें जाना जा सके, सहजमें जानने योग्य। (पु०) २ शिवजीका एक नाम।

सुवित (सं० त्रि०) १ सहजमें पहुंचने योग्य, सहजमें पाने लायक। (पु०) २ अच्छा मार्ग, सुपथ। ३ कल्याण। ४ सौभाग्य।

सुवितत (सं० त्रि०) सुविस्तृत, अच्छी तरह फैला हुआ।

सुवितल (सं० पु०) विष्णुकी एक प्रकारकी मूर्त्ति।

सुवित्त (सं० क्ली०) १ उत्तम धन। (त्रि०) २ उत्तम धनी, बडा अमीर।

सुवित्ति (सं० पु०) एक देवताका नाम।

सुविद् (सं० पु०) १ पण्डित, विद्वान्। (स्त्री०) २ गुणवती नारी।

सुविद (सं० पु०) सु-विद् क। १ सौविद, अन्तःपुर या रनिवासका रक्षक, कंचुकी। २ एक राजाका नाम। ३ तिलक पुष्पवृक्ष।

सुविदग्ध (सं० त्रि०) बहुत चतुर, बहुत चालाक।

सुविदत् (सं० पु०) राजा।

सुविदत्र (सं० त्रि०) सु-विद् (सुविदेः कत्रन्। उण् ३।१०८) इति कत्रन्। १ कुटुम्ब। २ धन। ३ ज्ञान। (त्रि०) ४ अतिशय सावधान। ५ सहृदय। ६ उदार, दयालु।

सुविदत्रिय (सं० त्रि०) १ शोभन ज्ञानार्ह। २ शोभन ज्ञानयुक्त।

सुविदर्भ (सं० पु०) प्राचीन जातिका नाम।

सुविदला (सं० स्त्री०) विवाहिता स्त्री, वह स्त्री जिसका व्याह हो गया हो।

सुविदल्ल (सं० क्ली०) अन्तःपुर, जनाना महल।

सुविदित (सं० त्रि०) सु विद्-क्त। उत्तम रूपसे ज्ञात, अच्छी तरह जाना हुआ।

सुविदीर्ण (सं० त्रि०) सु विद्-क्त। अतिशय विदीर्ण, एकदम फटा हुआ।

सुविद्ध (सं० त्रि०) सु-विध क्त। उत्तमरूपसे विद्ध, अच्छी तरह छेदा हुआ।

सुविद्दुनारायण—श्रीहट्टान्तःपाती मौलवी बाजार (दक्षिण श्रीहट्ट) उपविभागके अन्तर्गत राजनगरके अन्तिम राजा।

सुविद्य (सं० त्रि०) उत्तम विद्वान् अच्छा पण्डित।

सुविद्या (सं० स्त्री०) उत्तम विद्या।

सुविद्युत् (सं० पु०) असुरविशेष।

सुविद्वस् (सं० त्रि०) सु विद् क्वसु। अतिशय विद्वान्।

सुविध (सं० त्रि०) सुशील, सत्स्वभाव, नेक मिजाज।

सुविधान (सं० क्ली०) सु वि-धा-ल्युट्। सुनियम।

सुविधि (सं० पु०) जैनियोंके अनुसार वर्त्तमान अवसर्पिणीके नवें अर्हत्का नाम।

सुविनीत (सं० त्रि०) १ अतिशय विनय, अत्यन्त नम्र। २ सुशिक्षित, अच्छी तरह सिखाया हुआ।

सुविनीता (सं० स्त्री०) वह गौ जो सहजमें दुही जा सके।

सुविपुल (सं० त्रि०) प्रभूत, अनेक, बहुत।

सुविभ्र (सं० त्रि०) शोभनमेघोपेत।

सुविभक्त (सं० त्रि०) सु-वि भज क्त। उत्तमरूपसे विभक्त।

सुविभात (सं० त्रि०) सुप्रभात।

सुविभीषण (सं० त्रि०) अति भयानक।

सुविभु (सं० पु०) एक राजाका नाम जो विभुका पुत्र था।

सुविविक्त (सं० त्रि०) दत्तोत्तर, जिसका उत्तर अच्छी तरह दिया गया हो।

सुविवृत (सं० त्रि०) सर्वत्र प्रसृत। (ऋक् १।१०।७)

सुविशाला (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

सुविशुद्ध (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक लोकका नाम।

सुविश्रम्भी (सं० पु०) शिवका एक नाम।

सुवीज (सं० पु०) १ अमानम। २ महादेव। (भारत १३।१७।३६) ३ सुन्दर बीज। (त्रि०) ४ सुन्दर बीजयुक्त।

सुवीर (सं० त्रि०) १ शोभन पुत्रयुक्त, अच्छे पुत्र वाला। २ अतिशय वीर, महान् योद्धा। (पु०) ३ स्कन्दका एक नाम। ४ शिवजीके एक पुत्रका नाम। ५ द्युतिमान्के एक पुत्रका नाम। ६ शिबिके एक पुत्रका नाम। ७ योद्धा, वीर। ८ एकवीर वृक्ष। ९ कांछकी लड़ी।

सुवीरक (सं० क्ली०) सु वीर-शौर्य्य ण्वुल्। १ सौवीराञ्जन, सुरमा। २ बदर, बेर। ३ बदरी वृक्ष, बेरका पेड़।

सुवीरज (सं० क्ली०) सौवीराञ्जन, सुरमा।

सुवीरता (सं० स्त्री०) शोभन वीरसद्भाव।

सुवीराम्ल (सं० क्ली०) काञ्जिक, काञ्जी।

सुवीर्य (सं० क्ली०) १ शोभन वीर्य, उत्तम वीर्य। २ बदरी फल, बेर। (त्रि०) ३ शोभन वीर्यविशिष्ट, बहुत बड़ा बहादुर। (ऋक् १।३६।६)

सुवीर्या (सं० स्त्री०) १ वनकार्पासी वनकपास। २ महाशतावरी बड़ी सतावरी। ३ नाडी हिंगु, कल पत्ता हींग।

सुवृक्ति (सं० स्त्री०) सुन्दररूपसे दोषरहित।

सुवृक्ष (सं० पु०) सुन्दर वृक्ष, फलपुष्पादियुक्त वृक्ष, फलफूलोंसे लदा हुआ पेड़।

सुवृजन (सं० त्रि०) अधिक वर्जनविशिष्ट।

सुवृत् (सं० त्रि०) शोभन वर्त्तनयुक्त। (ऋक् १।३७।७)

सुवृत्त (सं० पु०) १ शूरण, ओल। २ छन्दोभेद। इस छन्दके प्रति चरणमें १६ अक्षर रहते हैं जिनमेंसे १, ७, ८, ९, १०, ११, १४, १७वां अक्षर गुरु तथा बाकी अक्षर लघु होते हैं। (त्रि०) ३ सच्चरित्र। ४ गुणवान्। ५ साधु। ६ सुन्दर छंदोंबद्ध।

सुवृत्ता (सं० स्त्री०) १ शतपत्री, सेवती। २ काकोली द्राक्षा, किशमिस। ३ एक अप्सराका नाम। ४ एक वृत्तका नाम। सुवृत्त देखो।

सुवृत्ति (सं० स्त्री०) १ उत्तम वृत्ति, उत्तम जीविका। २ पवित्र जीवन, सदाचार। (त्रि०) ३ जिसकी वृत्ति या जीविका उत्तम या पवित्र हो। ४ सदाचारी, सच्चरित्र।

सुवृद्ध (सं० पु०) १ दक्षिण दिशाके दिग्गजका नाम। (त्रि०) २ बहुत वृद्ध। ३ बहुत प्राचीन।

सुवृध् (सं० त्रि०) शोभन रूपसे वर्द्धनकारक।

सुवृष्ट (सं० क्ली०) सुवृष्टि, सुवर्षण।

सुवेगा (सं० स्त्री०) १ महाज्योतिष्मती लता, मालकंगनी। २ एक गिद्धनीका नाम।

सुवेणा (सं० स्त्री०) हरिवंशके अनुसार एक नदीका नाम। महाभारतमें भी इसका उल्लेख है।

सुवेद (सं० त्रि०) सुविज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञानमें पारंगत।

सुवेदन (सं० त्रि०) भलीभांति सूचित करना, जताना।

सुवेदस् (सं० पु०) वैदिक ऋषिभेद।

सुवेन (सं० स्त्री०) अतिशय कमनीय। (ऋक् १०।५६।३)

सुवेल (सं० पु०) १ त्रिकूट पर्वत। यह रामायणके अनुसार समुद्रके किनारे लङ्कामें था और जहां रामचन्द्र जी सेना सहित ठहरे थे। (त्रि०) २ प्रणत, बहुत झुका हुआ। ३ नम्र, शान्त।

सुवेश (सं० पु०) १ श्वेतेक्षु, सफेद ईख। (त्रि०) २ सुन्दर वेशयुक्त वस्त्रादिसे सुसज्जित। ३ सुन्दर रूपवान्।

सुवेशता (सं० स्त्री०) सुवेशका भाव या धर्म।

सुवेशी (सं० त्रि०) सुवेश देखो।

सुवेसल (हिं० वि०) सुन्दर, मनोहर।

सुवेहा—अयोध्या प्रदेशके बाराबंकी जिलेका एक शहर। यह गोमती नदीके पास सुलतानपुरसे ५२ मील उत्तर पश्चिम तथा बाराबंकी शहरसे ३० मील पूरबमें अवस्थित है। यहां बहुत-सी दिग्गा, पुष्करिणी और कूप हैं। सप्ताहमें दो दिन हाट लगती है। इस हाटमें स्थानीय वस्तु बिकने आती है। डाकघर, थाना, रजिष्ट्री आफिस, उच्च अङ्गरेजी विद्यालय और एक दुर्ग भी है। यहां हिन्दू-मुसलमानोंकी संख्या प्रायः समान है। कोई कोई अनुमान करते हैं, कि मुसलमानी आक्रमणके पहले सुवेहा भरराज्यके अन्तर्भुक्त था। चौधरी उपाधिधारी मुसलमान तालुकदारगण ही यहांके प्रधान जमींदार हैं। ये लोग सैयद सलारके वंशधर कह कर अपना परिचय देते हैं। किन्तु १६१६ ई०से पहलेका कोई लिखित इतिहास नहीं मिलता। उसी साल सम्राट् शाहजहांने इस वंशके शेख नासिरको सुवेहा परगनेका चौधरी बनाया।

सुवैण (हिं० पु०) मित्रता, दोस्ती

सुवैया (हिं० वि०) सोनेवाला।

सुवो (हिं० पु०) शुकपक्षी, सुग्गा।

सुव्यक्त (सं० त्रि०) सुप्रकाशित, बहुत स्पष्ट।

सुव्यवस्थित (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे व्यवस्थित, जिसकी व्यवस्था भलीभांति की गई हो।

सुव्याहृत (सं० त्रि०) १ सुन्दर रूपसे कथित, भलीभांति कहा हुआ। २ उत्तम व्रतविशिष्ट। (पु०) ३ स्कन्दानुचरविशेष। ४ रौच्यमनुका पुत्रविशेष। (मार्क०पु० ९५।३१) ५ ब्रह्मचारी।

सुव्यूहमुखा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

सुव्यूहा (सं० स्त्री०) सुव्यूहमुखा देखो।

सुव्रत (सं० पु०) १ वर्त्तमान अवसर्पिणीके २०वें अर्हत्का नाम। सुमित्रराजके औरस और पद्मावती (किसीके मतसे सोमा)-के गर्भसे ज्येष्ठ मासकी कृष्णाष्टमी, श्रवणानक्षत्र और मकरराशिमें राजगृह नगरमें इनका जन्म हुआ। इन्हें मुनि सुव्रत भी कहते हैं। विशेष विवरण जैन शब्दमें देखो। २ स्कन्दके एक अनुचरका नाम। ३ एक प्रजापतिका नाम। ४ रौच्य मनुके एक पुत्रका नाम। ५ उशीनरके एक पुत्रका नाम। ६ प्रियव्रतके एक पुत्रका नाम। ७ ब्रह्मचारी। ८ भावी उत्सर्पिणीके ११वें अर्हत्का नाम। (त्रि०) ९ दृढतासे व्रत पालन करनेवाला। १० धर्मनिष्ठ। ११ विनीत, नम्र। घोड़ा या गाय आदि पशुओंके लिये यह अर्थ व्यवहृत होता है।

सुव्रता (सं० स्त्री०) १ सहजमें दूही जानेवाली गाय। २ गन्धपलाशी, कपूर कचरी। ३ गुणवती और पतिव्रता पत्नी। ४ एक अप्सराका नाम। ५ दक्षकी एक पुत्रीका नाम। ६ वर्त्तमान कल्पके १५वें अर्हत्की माताका नाम।

सुशंस (सं० त्रि०) शोभन स्तुतिविशिष्ट।

सुशंसिन् (सं० त्रि०) सुन्दर स्तवविशिष्ट।

सुशक (सं० त्रि०) सहजमें होने योग्य, सुकर, आसान।

सुशक्त (सं० त्रि०) शक्तिशाली, ताकतवर।

सुशक्ति (सं० स्त्री०) १ उत्तम शक्ति, खूब ताकत। (त्रि०) २ शोभन शक्तिविशिष्ट, अत्यन्त शक्तिशाली।

सुशब्द (सं० त्रि०) अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला, जिसकी आवाज अच्छी हो।

सुशमि (सं० पु०) शोभन कर्म, सुन्दर कार्य्य।

सुशाण (सं० त्रि०) शोभन रश्मियुक्त।

सुशरण्य (सं० पु०) महादेव, शिव।

सुशरीर (सं० त्रि०) सुडौल, सुदेह।

सुशर्मन् (सं० पु०) १ राजाका नाम। २ निन्दित ब्राह्मण। वेदहीन क्रूरकर्मा ब्राह्मणोंके वंशमें जो ब्राह्मण जन्म लेता है उसका नाम सुशर्मा है। ३ एक मनुके पुत्रका नाम। ४ एक वैशालिका नाम। ५ एक काण्वका नाम। (त्रि०) ६ शृ शृ हिंसे (अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते। पा ३।२ ७३) इति मनिन्। ६ शोभन सुखविशिष्ट, सुन्दर मुंहवाला।

सुशल्य (सं० पु०) खदिर, खैर।

सुशवी (सं० स्त्री०) १ कृष्णजीरक, मंगरैला। २ कारवेल्ल, करैला। ३ सूक्ष्म कृष्णजीरक, काली जीरी। ४ करञ्जवृक्ष।

सुशस्त (सं० त्रि०) १ उत्तम स्तुतिविशिष्ट। २ प्रशस्त।

सुशस्ति (सं० स्त्री०) शोभन स्तव। (ऋक् १।२।७) (त्रि०) २ शोभन स्तुतिविशिष्ट। (ऋक् ५।४६।६)

सुशाक (सं० क्ली०) १ आर्द्रक, अदरक। २ चञ्चुक्षुप, चेंच। ३ भिण्डा क्षुप, भिंडी। ४ तण्डुलीय शाक, चौलाईका साग।

सुशान्त (सं० त्रि०) अतिशय शान्त, स्थिर।

सुशान्ता (सं० स्त्री०) राजा शशिध्वजकी पत्नीका नाम।

सुशान्ति (सं० स्त्री०) १ उत्तम शान्ति। २ तीसरे मन्वन्तरके इन्द्रका नाम। ३ अजमीढके एक पुत्रका नाम। ४ शान्तिके एक पुत्रका नाम।

सुशारद (सं० पु०) शालङ्कायनगोत्रज वैदिक आचार्यभेद।

सुशासित (सं० त्रि०) सु-शास-क्त। उत्तम रूपसे शासित।

सुशास्य (हिं० वि०) सहजमें शासित या नियन्त्रित होने योग्य।

सुशिक्षित (सं० त्रि०) सु-शिक्ष क्त। उत्तम रूपसे शिक्षित, जिसने विशेष रूपसे शिक्षा पाई हो।

सुशिख (सं० पु०) १ अग्नि। (त्रि०) २ उत्तम शिखायुक्त।

सुशिखा (सं० स्त्री०) १ मयूरशिखा, मोरकी चोटी। २ कुक्कुटशिखा, मुर्गेकी कलगी। ३ सुन्दर केश।

सुशिप (सं० त्रि०) शोभन नासिकाविशिष्ट, अच्छी नाकवाला।

सुशिम्बिका (सं० स्त्री०) शिम्बीभेद।

सुशिरस् (सं० त्रि०) १ सुन्दर सिरवाला जिसका सिर सुन्दर हो। (पु०) २ वह बाजा जो मुंहसे फूंक कर बजाया जाता हो।

सुशिल्प (सं० त्रि०) १ उत्तम शिल्पविशिष्ट। (शुक्लयजु। २।२६) २ उत्तम शिल्प।

सुशिश्वि (सं० त्रि०) सुन्दर रूपसे वर्द्धित।

सुशिष्ट (सं० त्रि०) सु शास-क्त। अतिशय शिष्ट, बहुत नम्र।

सुशिष्टि (सं० त्रि०) सुशासनमें वर्त्तमान।

सुशीत (सं० क्ली०) १ शीत चन्दन, हरिचंदन। २ ह्रस्व प्लक्ष वृक्ष, पाकर। ३ जलवेतस, जलबेंत। (त्रि०) ४ अतिशय शीतल, बहुत ठंढा।

सुशीतल (सं० क्ली०) १ गन्धतृण। २ सफेद चन्दन। ३ नागदमनी। (त्रि०) ४ अत्यन्त शीतल, बहुत ठंढा।

सुशीतला (सं० स्त्री०) १ ह्रस्व त्रिपुषलता, खीरा। २ कर्कटी, ककड़ी।

सुशीता (सं० स्त्री०) १ शतपत्री, सेवती। २ स्थल कमल।

सुशीम (सं० पु०) १ शीतगुण, शैत्य। २ चन्द्रकान्तमणि। ३ हिम, शीतल। ४ सर्पभेद। (त्रि०) ५ शीतगुणविशिष्ट।

सुशीमकामा (सं० त्रि०) अत्यन्त कामभावापन्न।

सुशील (सं० पु०) १ एक चोलराज। (त्रि०) २ उत्तम शीलवाला। ३ उत्तम स्वभाववाला, शीलवान्। ४ सच्चरित, साधु। ५ विनीत, नम्र। ६ सरल, सीधा।

सुशीलता (सं० स्त्री०) १ सुशीलका भाव, सुशीलत्व। २ सच्चरित्रता। ३ नम्रता।

सुशीला (सं० स्त्री०) १ श्रीकृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक। २ राधाकी एक अनुचरीका नाम। ३ यमकी पत्नीका नाम। ४ सुदामाकी पत्नीका नाम।

सुशीलिन् (सं० त्रि०) उत्तम स्वभावसम्पन्न।

सुशोविका (सं० स्त्री०) कन्दविशेष, गेंठी।

सुशुक्वन् (सं० त्रि०) दीप्त। (ऋक् ५।८७।३)

सुशुक्वणि (सं० त्रि०) रश्मिप्रसारक।

सुशृङ्ग (सं० त्रि०) १ उज्ज्वल शृङ्गविशिष्ट, सुन्दर सींगोंवाला। (पु०) २ शृङ्गी ऋषि।

सुश्रत (सं० त्रि०) सु-श्र-क्त। सुतप्त, बहुत गरम।
सुशेरु (सं० पु०) कंकड़।
सुशेव (सं० त्रि०) अत्यन्त सुखकर।
सुशेव्य (सं० त्रि०) सुखके लिये हितकर।
सुशोक (सं० त्रि०) शोभन दीप्तियुक्त।
सुशोण (सं० त्रि०) अतिशय रक्तवर्ण, बहुत लाल।
सुश्चन्द्र (सं० त्रि०) शोभन आह्लादयुक्त।
सुश्रम (सं० पु०) १ धर्मके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु०) (त्रि०) २ अतिशय श्रमविशिष्ट।
सुश्रव (सं० त्रि०) विशिष्ट सुस्वरयुक्त।
सुश्रवस् (सं० त्रि०) १ शोभन हविर्विशिष्ट, उत्तम हविसे युक्त। २ प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान्। (पु०) ३ एक प्रजापतिका नाम। ४ एक ऋषिका नाम। ५ एक नागासुरका नाम। (स्त्री०) ६ एक वैदर्भीका नाम जो जयत्सेनकी पत्नी थी।
सुश्रवस्या (सं० स्त्री०) शोभन अन्नेच्छा।
सुश्रात (सं० त्रि०) सुश्रत, अत्यन्त तप्त।
सुश्रान्त (सं० त्रि०) सु-श्रम-क्त। अतिशय श्रान्त।
सुश्राव्य (सं० त्रि०) जो सुननेमें अच्छा जान पड़े।
सुश्री (सं० त्रि०) १ बहुत सुन्दर, शोभायुक्त। २ बहुत धनी, बड़ा अमीर।
सुश्रीक (सं० त्रि०) १ सुन्दर श्रीयुक्त। (पु०) २ शल्लकी, सलई।
सुश्रीका (सं० स्त्री०) शल्लकी, सलई।
सुश्रुण (सं० त्रि०) सुप्रसिद्ध, अत्यन्त दुर्जयनिपय।
सुश्रुत (सं० त्रि०) सु-श्रु-क्त। १ जो अच्छी तरह सुना गया हो। २ प्रसिद्ध, मशहूर। (क्ली०) ३ गोष्ठी श्राद्धके अन्तमें ब्राह्मणसे यह कहना, कि अब तृप्त हो गये न?

श्राद्धके बाद ब्राह्मणको तृप्ति प्रश्न करना होता है, वे तृप्त हुए हैं या नहीं, यह पूछना होता है। पितामाताके एकोद्दिष्ट श्राद्धमें 'स्वदितं' यह कह कर तृप्तिका प्रश्न करे। गोष्ठीश्राद्धमें 'सुश्रुत' और वृद्धिश्राद्धमें 'सम्पन्न' और दैवोद्देश श्राद्धमें 'रुचित' कह कर तृप्तिका प्रश्न करना होता है।

(पु०) ४ विश्वामित्र मुनिके पुत्र, आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्रके एक प्रसिद्ध आचार्य।

समुद्रमन्थनकालमें धन्वन्तरि उत्पन्न हुए। पीछे उन्होंने देवताओंके लिये विश्वामित्रके पुत्र महात्मा सुश्रुतको आयुर्वेदशास्त्रका उपदेश दिया। सुश्रुतने धन्वन्तरिसे आयुर्वेद सीख कर जनसाधारणकी भलाईके लिये उसे प्रकाशित किया।

भावप्रकाशमें लिखा है, कि इन्द्रने मर्त्यलोकमें जीवोंको व्याधिप्रपीड़ित देख धन्वन्तरिको समस्त आयुर्वेदकी शिक्षा दी और उनसे कहा, 'तुम काशीधाममें दिवोदास नामक क्षत्रिय हो कर जन्मग्रहण करो।' तदनुसार धन्वन्तरिने काशीधाममें जन्मग्रहण किया। पीछे विश्वामित्र आदि मुनियोंको ज्ञानचक्षु द्वारा मालूम हुआ, कि इस वाराणसीमें धन्वन्तरि आ कर दिवोदास काशीराज नामसे विख्यात हुए हैं। अनन्तर विश्वामित्र मुनिने जीवलोकको रोगसे प्रपीड़ित देख अपने पुत्र सुश्रुतसे कहा, 'वत्स सुश्रुत! तुम विश्वेश्वरके प्रियतम स्थान काशीधाममें जाओ। जो क्षत्रियाके गर्भसे जन्म ले कर दिवोदास नामसे वहांके राजसिंहासन पर अभिषिक्त हुए हैं, वे आयुर्वेद-विशारद स्वयं धन्वन्तरि हैं, इसलिये तुम लोकोपकारके लिये उनके पास जा आयुर्वेदशास्त्र सीखो और उसके प्रचारसे देशका महान् उपकार करके परोपकाररूपी एक बड़ा यज्ञ सम्पादन करो।'

सुश्रुत पितृ-आज्ञा श्रवण कर वाराणसीधाम गये। आयुर्वेद सीखनेके लिये और भी एक सौ मुनिपुत्र उनके साथ हो लिये। दिवोदासने बड़े यत्नपूर्वक सबोंको आयुर्वेद सिखा दिया। पीछे वे मुनिपुत्र आयुर्वेदशास्त्रमें सम्यक् ज्ञान लाभ कर पीछे राजाको अभिनन्दन कर अपने अपने घर लौटे।

सुश्रुतने पहले एक आयुर्वेदविषयक तन्त्र प्रणयन किया। सुश्रुत उसका नाम रखा गया। इस संहिता में सूत्रस्थान, शारीरस्थान, चिकित्सितस्थान और कल्पस्थान नामक चार स्थान हैं। आदि सुश्रुतसंहिता नहीं मिलती अभी जो ग्रन्थ मिलता है, उसका सङ्कलन पीछे हुआ है। चिकित्सा करनेमें जो जो विषय जानना आवश्यक है, एक सुश्रुतग्रन्थमें हो वह विस्तृत भावसे विशेषरूपसे लिखा गया है।

सुश्रुतसंहिता (सं० स्त्री०) आचार्य सुश्रुतका बनाया आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रन्थ।
सुश्रुति (सं० स्त्री०) उत्तम श्रुति।
सुश्रुम (सं० पु०) धर्मके एक पुत्रका नाम।
सुश्रोण (सं० स्त्री०) हरिवंशके अनुसार एक नदीका नाम।
सुश्रोणि (सं० स्त्री०) १ देवताभेद। (त्रि०) २ सुन्दर नितम्बवाली।
सुश्रोतु (सं० त्रि०) सम्यक् श्रोता। (ऋक् १।१२।२)
सुश्लिष्ट (सं० त्रि०) सु-श्लिष-क्त। १ सुदृढ। २ अतिशय श्लेषयुक्त।
सुश्लोक (सं० त्रि०) १ शोभन श्लोकयुक्त, जिसमें उत्तम श्लोक हो। २ पुण्यात्मा, पुण्यकीर्त्ति। ३ सुप्रसिद्ध, मशहूर।
सुश्लोक्य (सं० क्ली०) उत्तम श्लोककथन।
सुश्व (सं० त्रि०) शोभनंश्वोऽस्य। आगामी कल्य जिसके पक्षमें शुभ हो।
सुषसद् (सं० त्रि०) शोभन गृहयुक्त, उत्तम घरवाला।
सुषख (सं० त्रि०) शोभन बन्धुविशिष्ट।
सुषण (सं० त्रि०) दानयुक्त।
सुषणन (सं० त्रि०) सुसम्भजन।
सुषद् (सं० त्रि०) सम्यक् उपवेशनयोग्य, अच्छी तरह बैठने लायक।
सुषदुमन (सं० पु०) एक ऋषिका नाम।
सुषन्धि (सं० पु०) १ रामायणके अनुसार मान्धाताके एक पुत्रका नाम। २ पुराणानुसार प्रसुश्रुतके एक पुत्रका नाम।
सुषम (सं० त्रि०) सुष्ठु समं सर्वं यस्मात् (सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः। पा ८।३।८८) इति षत्व। १ शोभन, बहुत सुन्दर। २ सम, समान। (पु०) ३ छन्दोभेद। इस छन्दके प्रति चरणमें दश अक्षर रहते हैं। उनमेंसे ३, ४, ८ और ९वां अक्षर गुरु, बाकी लघु होते हैं।
सुषमदुःषमा (सं० स्त्री०) जैन मतानुसार तृतीय अवसर्पिणी और चतुर्थ उत्सर्पिणीकी कथा।
सुषमा (सं० स्त्री०) १ परम शोभा, अत्यन्त सुन्दरता। २ एक वृत्तका नाम जिसके प्रत्येक चरणमें दश अक्षर रहते हैं जिनमें ३, ४, ८ और ९वां गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं। ३ एक प्रकारका पौधा। ४ जैनोंके अनुसार कालका एक नाम।
सुषमाशाली (सं० त्रि०) जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता हो।
सुषवी (सं० स्त्री०) सु-सू अच्, गौरादित्वात् ङीष्। १ कारवेल्ल, करेला। २ कृष्णजीरक, मंगरेला। ३ जीरक, जीरा। ४ क्षुद्र कारवेल्ल, करेली।
सुषव्य (सं० त्रि०) शोभन दक्षिण हस्तविशिष्ट, जिसका दाहिना हाथ सुन्दर हो।
सुषह (सं० त्रि०) सुखसे अभिभव करनेमें समर्थ।
सुषाढ (सं० पु०) शिवजीका एक नाम।
सुषामन् (सं० पु०) १ राजभेद। (ऋक् ८।२४।२२) (क्ली०) २ सुसामन्। (त्रि०) ३ शोभन सामयुक्त।
सुषारथि (सं० पु०) उत्तम सारथि। (शुक्लयजु० ३४।६)
सुषि (सं० स्त्री०) सुषि बाहुलकात् कि। बिल, सूराख।
सुषिक (सं० पु०) १ शीतलता, ठंढक। (त्रि०) २ शीतल, ठंढा।
सुषिक्त (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे सिक्त।
सुषित (सं० त्रि०) सुषित देखो।
सुषिनन्दि (सं० पु०) विष्णुपुराणके अनुसार एक राजाका नाम।
सुषिर (सं० क्ली०) १ वंश, बांस। २ वेतस, बेंत। ३ अग्नि, आग। ४ इन्दुर, चूहा। ५ संगीतमें वह यन्त्र जो वायुयुक्त जोरसे बजता हो। ६ छिद्र, छेद। ७ वायुमण्डल। ८ लवङ्ग, लौंग। ९ काष्ठ, लकड़ी। (त्रि०) १० छिद्रयुक्त, छेदवाला।
सुषिरच्छेद (सं० पु०) एक प्रकारकी वंशी।
सुषिरविवर (सं० पु०) बिल, विशेष कर सांपका बिल।
सुषिरा (सं० स्त्री०) १ नलिका, विद्रुम लता। २ नदी।
सुषिरीका (सं० स्त्री०) पक्षिविशेष।
सुषीम (सं० पु०) १ सर्पविशेष। २ चन्द्रकान्तमणि। (त्रि०) ३ शीतगुणयुक्त, ठंढा। ४ मनोज्ञ, मनोरम।
सुषुत (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे अभिषुत।
सुषुति (सं० स्त्री०) सुप्रसव या शोभन ऐश्वर्य्य।
सुषुप्सु (सं० त्रि०) सोनेकी इच्छा करनेवाला, निद्रातुर।

सुषुप्त (सं० क्लो०) सु-स्वप भावे क्त। घोर निद्रित, गहरी नींदमें सोया हुआ।

सुषुप्ति (सं० स्त्री०) सु-स्वप क्तिन्। सुनिद्रा, गाढ़ा नींद। नैयायिकोंका कहना है, कि सुषुप्तिकालमें सभी ज्ञानोंका अभाव होता है, क्योंकि उस समय किसी भी ज्ञानका कारण नहीं रहता। उस समय क्या बहिरिन्द्रिय, क्या अन्तरिन्द्रिय किसीकी क्रिया नहीं होती, इसलिये किस प्रकार ज्ञानका उदय होगा। किन्तु पातञ्जलदर्शनकार कहते हैं, कि यह ठीक नहीं है, क्योंकि सुषुप्ति अवस्थाके बाद जब जाग्रदवस्था होती है, तब सुषुप्तिका विषय स्मरण हो जाता है, इस कारण स्वीकार करना पड़ेगा, कि यह एक प्रकारका अनुभवविशेष है, क्योंकि अनुभव नहीं होनेसे कभी भी स्मरण नहीं हो सकता।

वैदान्तिकगण इसे स्वीकार करते हैं तथा वे कहते हैं, कि सुषुप्तिकालमें सच्चिदानन्द आत्मतत्त्वका स्मरण होता है। वे लोग उसे अज्ञानकी वृत्ति बतलाते हैं। यह अवस्था उन लोगोंके मतसे आनन्दमय कोष है। चित्त जाग्रदवस्थामें त्वक् इन्द्रियमें, स्वप्नकालमें मेध्या नाडीमें और सुषुप्तिकालमें पुरीतत् नामक नाडीमें रहता है। (पातञ्जलद०) शास्त्रमें सुषुप्तिके साथ मुक्तिकी तुलना की गई है, अर्थात् सुषुप्तिकालमें जिस प्रकार कोई ज्ञान नहीं रहता, उसी प्रकार मुक्ति होनेसे बहिर्विषयक किसी भी प्रकारका ज्ञान नहीं रहता। वेदान्तदर्शनमें इस सुषुप्तिका विषय विशेषरूपसे आलोचित हुआ है।

जीवकी तीन अवस्था है,—जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति। नाडी, पुरीतत् और ब्रह्म ये तीनों ही सुषुप्ति स्थान कहे गये हैं, किन्तु उनमेंसे नाडी और पुरीतत् ये दोनों सुषुप्ति स्थान ब्रह्मप्राप्तिके द्वारस्वरूप हैं। वस्तुतः ब्रह्म ही सुषुप्तिको अनपायी मुख्य और अद्वितीय स्थान है। जीव सुषुप्तिकालमें प्रतिदिन ब्रह्मलोक लाभ करता है, परन्तु यह उसे मालूम नहीं। जब सुषुप्ति होती है, उस समय जब किसी भी प्रकारका ज्ञान ही नहीं रहता, तब जाग्रदवस्थामें उसका स्मरण होना बिलकुल असम्भव है, इस कारण शास्त्रमें सुषुप्तिकी तुलना मोक्षसे की गई है। जीव सुप्त हो कर फिरसे अपने काममें लग जाते हैं।

सुषुप्सु (सं० त्रि०) निद्रातुर, सोनेकी इच्छा करनेवाला।

सुषुप्सा (सं० स्त्री०) शयनका अभिलाषा, सोनेकी इच्छा।

सुषुमत् (सं० त्रि०) सोमयुक्त या शोभन प्रसवयुक्त।

सुषुम्न (सं० त्रि०) सुषुम्न या सुधन। (ऋक् १०।१०४।५)

सुषुम्ना (सं० स्त्री०) नाडीभेद। इडा, पिङ्गला और सुषुम्ना यही तीन प्रधान नाडी हैं। यह नाडी मेरुके बाह्य देशमें तथा इडा और पिङ्गला नाडीके मध्यदेशमें अवस्थित है। यह नाडी त्रिगुणमयी और चन्द्रसूर्याग्निस्वरूप है।

योगिस्वरोदयमें है, कि मेरुके बाह्यमें पिङ्गलाके साथ इडा नाडी और ब्रह्मद्वारावधि भानुमण्डद्वारा सुषुम्ना नाडी अवस्थित है। जिस समय नासिकाप्रदेशमें कभी बाईं ओरसे और कभी दाहिनी ओरसे वायु बहती है, उस समय सुषुम्ना नाडीमें श्वास बहता है, स्थिर करना होगा। यह समय अति अशुभ है, इस समय कोई भी काम करनेसे सफल नहीं होता। अतएव इस समय कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिये। जो योगाभ्यास करते हैं, वे नाडीकी गति आदि स्थिर नहीं कर सकनेसे कुछ भी स्थिर नहीं कर सकते।

सुषू (सं० स्त्री०) सु-सूते सू क्विप् षत्वं। सुप्रसव।

सुषूत (सं० त्रि०) अग्निहोत्रार्थ उत्तमरूपसे प्रेरित।

सुषूति (सं० स्त्री०) सु-सू-क्तिन्। शोभन प्रसव।

सुषूमा (सं० स्त्री०) शोभनरूपसे प्रसवकारिणी।

सुषेक (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे सिञ्चन करनेमें समर्थ।

सुषेचन (सं० त्रि०) शोभन उदकसे युक्त।

सुषेण (सं० पु०) १ विष्णुका एक नाम। २ एक गन्धर्वका नाम। ३ एक यक्षका नाम। ४ एक नागासुरका नाम। ५ दूसरे मनुके एक पुत्रका नाम। ६ श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। ७ शूरसेनके एक राजाका नाम। ८ परीक्षितके एक पुत्रका नाम। ९ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। १० वसुदेवके एक पुत्रका नाम। ११ विश्वगर्भके एक पुत्रका नाम। १२ शम्बरके एक पुत्रका नाम। १३ एक वानरका नाम। रामायण आदिके अनुसार यह वरुणका पुत्र, बालीका ससुर और सुग्रीवका वैद्य था। इसने राम-रावणके युद्धमें रामचन्द्रको

विशेष सहायता की थी। १४ करमर्द्दकवृक्ष, करौंदा। १५ वेतसलता, बेंत।

सुषेण कविराज (सं० पु०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण।

सुषेणिका (सं० स्त्री०) कृष्ण त्रिवृता, काली निसोथ।

सुषेणी (सं० स्त्री०) त्रिवृता, निसोथ।

सुषोम (सं० त्रि०) शोभन सोमयुक्त।

सुषोमा (सं० स्त्री०) नदीविशेष। (भागवत ५।१६।१७)

सुष्कन्त (सं० पु०) धर्मनेतके एक पुत्रका नाम।

सुष्ट (सं० पु०) अच्छा, भला।

सुष्टु (सं० त्रि०) उत्तमरूपसे स्तूयमान।

सुष्टुत (सं० स्त्री०) सु स्तु-क्त, षत्वं तस्य ट। उत्तमरूपसे स्तुत, जिसका भली भांति स्तव किया गया हो।

सुष्टुति (सं० स्त्री०) शोभन स्तुतियोग्य।

सुष्टुभ् (सं० त्रि०) शोभन स्तवविशिष्ट।

सुष्ठान (सं० क्ली०) सुस्थान। (ऋक् ६।६७।२७)

सुष्ठु (सं० अव्य०) सु स्था (अपदुःसुषुस्थः। उण् १।२६३) इति कु, सुषमादित्वात् षत्वं। १ अतिशय, अत्यन्त। २ भली भांति, अच्छी तरह। ३ यथायोग्य, ठीक ठीक। (पु०) ४ प्रशंसा, तारीफ। ५ सत्य।

सुष्ठुता (सं० स्त्री०) १ मङ्गल, कल्याण। २ सौभाग्य। ३ सुन्दरता।

सुष्म (सं० क्ली०) रज्जु, रस्सी।

सुष्मन्त (सं० पु०) धर्मनेतके एक पुत्रका नाम।

सुसंयत (सं० त्रि०) सु-सम्-यम-क्त। यथाविधि संयमविशिष्ट।

सुसंवृद्ध (सं० त्रि०) अतिशय वृद्धिविशिष्ट।

सुसंशित (सं० त्रि०) सुतीक्ष्ण। (ऋक् ५।१६।५)

सुसंस्कृत (सं० त्रि०) १ घृतादि नाना द्रव्योंसे सुसंस्कृत व्यञ्जनादि। २ उत्तम संस्कारविशिष्ट। ३ स्वरवर्णादि संस्कारयुक्त मन्त्र।

सुसकल्ला (हिं० पु०) खरगोश, खरहा।

सुसका (हिं० पु०) हुक्का।

सुसक्थ (सं० त्रि०) सुन्दर सक्थिविशिष्ट।

सुसङ्काश (सं० त्रि०) अतिशय प्रकाशमान।

सुसङ्कुल (सं० पु० क्ली०) १ अति सङ्कुल। २ अतिसङ्कीर्ण। ३ अतिशय लोकादि द्वारा निरवकाश। (पु०) ४ महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम।

सुसङ्क्षेप (सं० पु०) शिवका एक नाम।

सुसङ्ग—बङ्गके मैमनसिंह जिलेका एक परगना। इसका क्षेत्रफल २८८८०३ एकड़ या ४५१०२५ वर्गमील है। इसके अधीन २३ जमींदार हैं। राजस्व वार्षिक प्रायः २२०००) रु० है। यह स्थान नेतकोणा महकमेके अन्तर्गत है। यहां बहुतसे छोटे छोटे पहाड़ हैं। इन सब पहाड़ों पर बहुतसे जंगली हाथी पकड़े जाते हैं। सुसङ्ग परगनेमें दुर्गापुर, नारायणडहर और पूर्वदहोला ये हो तीन ग्राम उल्लेखयोग्य हैं। दुर्गापुर सामेश्वरी नदीके किनारे अवस्थित है। यहीं पर सुसङ्गकी राजपुरी है। पुरी बड़ी होने पर तहस नहस हो गई है। इस परगनेके मध्य यही ग्राम प्रधान है। नारायणडहर नसिराबाद शहरसे १८ मील पूर्व उत्तरमें अवस्थित एक छोटा ग्राम है। यहांके मजुमदार उपाधिधारी जमींदार हो अभी परगनेके मध्य विशेष प्रतिपत्तिशाली हैं। यहां बहुत सी प्राचीन अट्टालिकाएं देखी जाती हैं। पूर्वदहोला एक बड़ा ग्राम है। यहां कुछ पक्के मकान, दिग्गी, पुष्करिणी और राजदहोल बिल नामक एक बड़ा बिल है। इसका जल अति निर्मल और स्वच्छ होता है। सुसङ्गके महाराज जमीनकी उन्नति करनेके लिये बहुत रुपये खर्च करते हैं। मैमनसिंह जिलेके उत्तर सीमान्तवर्त्ती गारो पहाड़ भी उन्हीं लोगोंके अधिकारमें था। अभी इस राजपरिवारकी पूर्वश्री जाती रही। ये लोग अभी भी आर्यविद्याका आदर करते हैं। वर्त्तमान महाराज सुशिक्षित, शिल्पनिपुण और गुणग्राही व्यक्ति हैं। वारेन्द्र ब्राह्मण समाजमें इस राजवंशका बड़ा सम्मान है।

सुसङ्ग (सं० पु०) उत्तम सङ्गति, अच्छी सोहबत।

सुसङ्गत (सं० त्रि०) सु-सम्-गम-क्त। १ उत्तमरूपसे सङ्गत, अच्छी तरह मिला हुआ। २ अतिशय युक्तियुक्त वाक्य। ३ अति सौहार्द।

सुसङ्गता (सं० त्रि०) अच्छी तरह मिली हुई।

सुसङ्गति (सं० स्त्री०) सत्सङ्ग, साधुसङ्ग, अच्छी संगत।

सुसङ्गृहीत (सं० त्रि०) सु सम् ग्रह क्त। उत्तमरूपसे संरक्षित, अच्छी तरह संग्रह किया हुआ।

सुसज्जित (सं० त्रि०) शोभायमान, भली भांति सजाया हुआ।

सुसताना (हिं० क्रि०) श्रम मिटाना, थकावट दूर करना।

सुसती (फा० स्त्री०) सुस्ती देखो।

सुसत्या (सं० स्त्री०) राजा जनककी पत्नी।

सुसनि (सं० त्रि०) दयालु।

सुसनितृ (सं० त्रि०) अभिलषित धनदाता, मुंहमांगा धन देनेवाला। (ऋक् ३।१८।५)

सुसनिता (सं० स्त्री०) शोभन भजन। (ऋक् १०।३६।९)

सुसन्तस्त (सं० त्रि०) सु सम्-त्रस-क्त। अतिशय भीत, एकदम डरा हुआ।

सुसन्दृश (सं० त्रि०) अनुग्रह दृष्टि द्वारा सबोंके द्रष्टा।

सुसन्ध (सं० त्रि०) सत्यप्रतिज्ञ।

सुसन्धि (सं० पु०) सुषन्धि देखो।

सुसन्नत (सं० त्रि०) सु-सम् नम-क्त। अतिशय नत, बहुत झुका हुआ।

सुसम (सं० त्रि०) सुषम देखो।

सुसमय (सं० पु०) सुभिक्ष, अच्छा समय।

सुसमिद्ध (सं० त्रि०) १ अति प्रज्वलित। २ अग्निका एक नाम। (ऋक् १।१३।१)

सुसमुब्ज (सं० त्रि०) संकुचित सर्वाङ्ग।

सुसमृद्ध (सं० त्रि०) विशेष समृद्धिशाली।

सुसम्पद् (सं० स्त्री०) सुष्ठु सम्पत्, प्रादिसमास। सौभाग्य। पर्याय—परभाग।

सुसम्पिष्ट (सं० त्रि०) सु-सम् पिष-क्त। उत्तम रूपसे चूर्णित, अच्छी तरह चूर किया हुआ।

सुसम्पूर्ण (सं० त्रि०) सु सम-पृ क्त। जो अच्छी तरह समाप्त हुआ हो।

सुसम्प्रीत (सं० त्रि०) १ अतिशय सन्तुष्ट। २ अत्यन्त प्रणयविशिष्ट।

सुसम्भव (सं० पु०) बौद्धराजभेद।

सुसंस्पृष्ट (सं० त्रि०) सुष्ठु रूपसे संस्पृष्ट।

सुसरण (सं० क्ली०) सु सृ-ल्युट्। १ शोभन गमन, अच्छी गति। (पु०) २ शिवका एक नाम।

सुसरा (हिं० पु०) ससुर देखो।

सुसरार (हिं० स्त्री०) ससुराल देखो।

सुसरारि (हिं० स्त्री०) ससुराल देखो।

सुसराल (सं० स्त्री०) ससुरका घर, ससुराल।

सुसरी (हिं० स्त्री०) १ ससुरी देखो। २ सुरसुरी देखो।

सुसर्तु (सं० स्त्री०) ऋग्वेदके अनुसार एक नदीका नाम।

सुसर्मा—सुशर्मा देखो।

सुसह (सं० त्रि०) १ सुखसह जो सहजमें उठाया या सहन किया जा सके। (पु०) २ शिवका एक नाम।

सुसहाय (सं० त्रि०) उत्तम सहायविशिष्ट।

सुसाइटी (अं० स्त्री०) सोसाइटी देखो।

सुसाध्य (सं० त्रि०) सु-साध-यत्। सुखसाध्य, जिसका सहजमें साधन किया जा सके।

सुसायम् (सं० क्ली०) उत्तम सायंकाल।

सुसार (सं० पु०) १ रक्तखदिर वृक्ष, लाल खैरका पेड़। २ इन्द्रनीलमणि, नीलम। (त्रि०) ३ अतिशय सार-विशिष्ट।

सुसारवत् (सं० पु० स्फटिक, बिल्लौर।

सुसावित्र (सं० क्ली०) सवितृ-सम्बन्धीय उत्तम कर्म।

सुसिकता (सं० स्त्री०) १ शर्करा, चीनी। २ उत्तम बालुका, बढ़िया बालू।

सुसिक्त (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे सिक्त।

सुसित (सं० त्रि०) उत्तम वर्णविशिष्ट।

सुसिद्ध (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे सिद्ध।

सुसिद्धि (सं० स्त्री०) साहित्यमें एक प्रकारका अलंकार। जहां परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा भोगता है, वहां यह अलंकार माना जाता है।

सुसिर (सं० पु०) दन्तरोगविशेष। यह वाग्भटके अनुसार पित्त और रक्तके कुपित होनेसे होता है। दांतोंकी जड़ फूल जाती है, उसमें बहुत दर्द होता है, खून निकलता है और मांस कटने या गिरने लगता है।

सुसीता (सं० स्त्री०) शतपत्री, सेवती।

सुसीम (हिं० वि०) शीतल, ठंढा।

सुसीमा (सं० स्त्री०) १ जैनोंके अनुसार छठे अर्हत्‌की माताका नाम। २ शोभन सीमा। ३ उत्तम सीमा।

सुसुकना (हिं० क्रि०) सिसकना देखो।

सुसुख (सं० त्रि०) सु शोभनं सुखं यस्य। उत्तम सुखविशिष्ट।

सुसुडी (हिं० स्त्री०) जौमें लगनेवाला एक प्रकारका कीड़ा। यह जौके सार-भागको खा जाता।

सुसुनिया—बांकुडा जिलेका एक पहाड। यह पूर्वसे पश्चिमकी ओर एक साथमें प्रायः दो मील तक विस्तृत है और कारा पहाड़के पास अवस्थित है। पैमाइशी मान चलमें इसकी ऊंचाई समुद्रपृष्ठसे १४४२ फुट है। ऊपरमें बड़े बड़े वृक्ष लगे हैं। केवल दक्षिणांशका कुछ स्थान परिष्कार करके वहांसे प्रस्तरखण्ड उठा लिये गये हैं। यह पहाड ऐसा खड़ा है, कि कोई भी सवारी वहां नहीं जा सकती, परन्तु पैदल आसानीसे जा सकते हैं। पहाड़के ऊपर ४थी सदीके अक्षरोंमें उत्कीर्ण पुष्करणाधिपति चन्द्रवर्माकी लिपि है। उसे पढ़नेसे जाना जाता है, कि उन्होंने इस पहाडके ऊपर 'चक्रस्वामी'की प्रतिष्ठा की थी।

सुसुप्रिया (सं० स्त्री०) जाती पुष्प, चमेली।

सुसूक्ष्म (सं० पु०) १ परमाणु। (त्रि०) २ अत्यन्त सूक्ष्म, बहुत बारीक।

सुसूक्ष्मपत्रा (सं० स्त्री०) जटामासी, आकाशमासी।

सुसूक्ष्मेश (सं० पु०) विष्णुका एक नाम।

सुसेन—सुषेण देखो।

सुसेवित (सं० त्रि०) सु-सेव क्त। उत्तम रूपसे पूजित।

सुसेव्य (सं० त्रि०) सु-सेव-यत्। सुखसेव्य, उत्तम रूपसे सेवनीय।

सुसैन्धवी (सं० स्त्री०) सिन्धुदेशजात उत्कृष्ट घोटकी, सिन्धुदेशकी अच्छी घोड़ी।

सुसो (हिं० पु०) खरगोश, खरहा।

सुसंभोग (सं० क्ली०) दाम्पत्यसुख, पति पत्नी सम्बंधी सुख।

सुस्कन्दन (सं० पु०) वर्वरवृक्ष।

सुस्कन्ध (सं० त्रि०) सु स्कन्धो यस्य। उत्तम स्कन्धयुक्त।

सुस्कन्धमार (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार एक मारका नाम।

सुस्त (फा० वि०) १ दुर्बल, कमजोर। २ चिन्ता या लज्जा आदिके कारण निस्तेज, उदास। ३ जिसका वेग, प्रबलता या गति आदि कम हो अथवा घट गई हो। ४ अस्वस्थ, रोगी। ५ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, जो जल्दी कोई बात न समझता हो। ६ जिसकी गति मन्द हो, धीमी चालवाला। ७ जिसमें तत्परताका अभाव हो, आलसी।

सुस्तना (सं० स्त्री०) सु-शोभनौ स्तनौ यस्याः टाप्। १ शोभन स्तनविशिष्टा, सुन्दर छातियोंवाली स्त्री। २ दृष्टार्त्तवा कन्या, वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।

सुस्तनी (सं० स्त्री०) सुस्तना देखो।

सुस्तपाव (हिं० पु०) स्लोथ नामक जन्तुका एक भेद। इन जन्तुओंके कटीले दांत नहीं होते, पर जो कुचलनेवाले दांत होते हैं, वे छोटे छोटे और कुंद होते हैं। ऊपर और नीचेके जबड़ोंमें आठ आठ डाढ़ें होती हैं, पर उनमें ठोस हड्डी और दांतोंकी जड नहीं होती।

सुस्तरीछ (हिं० पु०) एक प्रकारका रीछ जो पहाड़ों पर पाया जाता है। इसका शरीर खुरखुरा और बेडौल होता है। इसके हाथोंमें बहुत शक्ति होती है जिससे यह अपना आहार इकट्ठा कर सकता है। इसके पंजे लम्बे और मजबूत होते हैं, जिनसे यह अपने रहनेके लिये मांद भी खोद लेता है।

सुस्ताना (हिं० क्रि०) सुसताना देखो।

सुस्ती (फा० स्त्री०) १ सुस्त होनेका भाव। २ शिथिलता, काहिली। ३ बीमारी।

सुस्तुत (सं० पु०) सुपार्श्वके एक पुत्रका नाम।

सुस्थ (सं० त्रि०) सुखेन तिष्ठतीति स्था-क। १ नीरोग, स्वस्थ। २ सुस्थित, भलीभांति स्थित। ३ सुन्दर। ४ सुखी, प्रसन्न।

सुस्थचित्त (सं० त्रि०) जिसका चित्त सुखी या प्रसन्न हो।

सुस्थता (सं० स्त्री०) १ सुस्थ होनेका भाव या धर्म। २ नीरोगता, आरोग्य। ३ कुशल क्षेम। ४ प्रसन्नता, आनन्द।

सुस्थमानस (सं० त्रि०) सुस्थचित्त देखो।

सुस्थल (सं० पु०) एक प्राचीन जनपदका नाम।

सुस्थान (सं० क्ली०) सु शोभनं स्थानं। सुन्दर स्थान।

सुस्थावती (सं० स्त्री०) सङ्गीतमें एक प्रकारकी रागिनी-का नाम।

सुस्थित (सं० त्रि०) सु स्था-क्त। १ उत्तम रूपसे अव-स्थित, दृढ़, अविचल। २ स्वस्थ, नीरोग। ३ भाग्यवान्। (पु०) ४ वह वास्तु या भवन जिसके चारों ओर वीथिका या मार्ग हो। ५ घोड़ेका एक ग्रह। इससे ग्रस्त होने पर वह बराबर हिनहिनाया और अपने आपको देखा करता है। ६ एक जैनाचार्यका नाम। जैन देखो।

सुस्थितत्व (सं० क्ली०) १ सुखसे अवस्थान। २ सुख, प्रसन्नता। ३ निवृत्ति।

सुस्थिति (सं० स्त्री०) सु-स्था-क्ति। १ उत्तम स्थिति, अच्छी अवस्था। २ मंगल, कुशल क्षेम। ३ प्रसन्नता, आनन्द।

सुस्थिर (सं० त्रि०) १ अत्यन्त स्थिर या दृढ़। २ स्वस्थ, नीरोग। ३ बद्ध, दृढ़मूल।

सुस्थिरवर्मन् (सं० पु०) वासवदत्तावर्णित स्थिरवर्माके एक पुत्रका नाम।

सुस्थिरा (सं० स्त्री०) रक्तवाहिनी नस, लाल रग।

सुस्थेय (सं० त्रि०) सु स्था यत्। सुखसे अवस्थान-योग्य।

सुस्ना (सं० पु०) सुष्ठु स्नात्यनेन रूक्षत्वात् सु-स्ना-क्विप्। शमिधान्यभेद, खेसारी। गुण—वायुवर्द्धक, रूक्ष, कषाय और गुरु। (राजनि०)

सुस्नात (सं० त्रि०) १ जिसने यज्ञके उपरान्त स्नान किया हो। २ जिसने अच्छी तरह स्नान किया हो।

सुस्नुष (सं० त्रि०) शोभन स्नुषायुक्त।

सुस्पर्श (सं० त्रि०) सुखस्पर्श।

सुस्पष्ट (सं० त्रि०) अतिस्फुट।

सुस्मित (सं० त्रि०) सु स्मि-क्त। हंसमुख, हंसोड़।

सुस्मिता (सं० स्त्री०) हास्यमुखी स्त्री, हंसोड़ औरत।

सुस्रोता (सं० स्त्री०) हरिवंशके अनुसार एक नदीका नाम।

सुस्वध (सं० पु०) पितरोंकी एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा (सं० स्त्री०) १ कल्याण, मङ्गल। २ सौभाग्य, खुशकिस्मती।

सुस्वन (सं० त्रि०) सु-स्वनो यस्य। १ उत्तम शब्द या ध्वनियुक्त। २ बहुत ऊंचा, बुलंद। ३ सुन्दर। (पु०) ४ शङ्ख।

सुस्वप्न (सं० पु०) उत्तम स्वप्न, शुभ स्वप्न। शास्त्रमें लिखा है, कि जो स्वप्न देखनेसे नाना प्रकारका मङ्गल होता है, वही सुस्वप्न है। सुस्वप्न देखनेसे उसे प्रकाश नहीं करना चाहिये, करनेसे विपत्तिकी सम्भावना है, विशेषतः काश्यपगोत्रके निकट तो इसे प्रकाश करना बिलकुल ही मना है।

"उक्त्वा काश्यपगोत्रे च विपत्तिं लभते ध्रुवं।" (स्वप्नाध्याय)

सुस्वर (सं० त्रि०) १ सुन्दर या उत्तम स्वरयुक्त, सुकण्ठ, सुरीला। (पु०) २ उत्तम स्वर। ३ गरुड़के एक पुत्रका नाम। ४ शङ्ख। ५ जैनोंके अनुसार वह कर्म जिस-से मनुष्यका स्वर मधुर और सुरीला होता है।

सुस्वरता (सं० स्त्री०) १ सुस्वरका भाव या धर्म। २ वंशीके पांच गुणोंमेंसे एक।

सुस्वरु (सं० त्रि०) शोभन स्तुतिविशिष्ट।

सुस्वादु (सं० त्रि०) अत्यन्त स्वादयुक्त, बहुत स्वादिष्ट, खुश जायका।

सुस्वाप (सं० पु०) सुनिद्रा, गाढ़ी नींद।

सुस्विन्न (सं० त्रि०) विशेषरूपसे पक्व।

सुहंगा (हिं० वि०) सस्ता, जो महंगा न हो।

सुहड़ (हिं० पु०) शूरवीर, सुभट।

सुहत (सं० त्रि०) सु हन-क्त। उत्तम रूपसे हत।

सुहनु (सं० पु०) एक असुरका नाम जिसका उल्लेख महाभारतमें है।

सुहन्तु (सं० अव्य०) हंसी, नामका वज्र।

सुहबत (अ० स्त्री०) सोहबत देखो।

सुहर (सं० पु०) एक असुरका नाम।

सुहराना (हिं० क्रि०) सहलाना देखो।

सुहव (सं० त्रि०) १ शोभन आह्वान। (ऋक् ४।१६।१५) २ उत्तम स्तवयुक्त। (ऋक् ३।३५।३)

सुहवि (सं० पु०) १ एक आङ्गिरसका नाम। २ भूमन्यु-के एक पुत्रका नाम।

सुहवितुनामन् (सं० त्रि०) शीतनाह्वान नामधेय।

सुहव्य (सं० त्रि०) शोभन अन्नयुक्त या शोभन हविर्विशिष्ट।

सुहस्ता (सं० त्रि०)१ शोभन हस्तविशिष्ट, सुन्दर हाथोंवाला। (पु०) २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम।

सुहस्ती (सं० पु०) जैनोंके १० पूर्वोमेंसे एक। जैन देखो।

सुहस्त्य (सं० पु०) वैदिक कालके एक ऋषिका नाम।

सुहा (हिं० पु०) लाल नामक पक्षी।

सुहाग (हिं० पु०) १ स्त्रीकी सधवा रहनेकी अवस्था, सौभाग्य, अहिवात। २ वह वस्त्र जो वर विवाहके समय पहनता है, जामा। ३ माङ्गलिक गीत जो वर पक्षकी स्त्रियां विवाहके अवसर पर गाती हैं।

सुहागन (हिं० स्त्री०) सुहागिन देखो।

सुहागा (हिं० पु०) एक प्रकारका क्षार जो गरम गंधकी सोतोंसे निकलता है। विशेष विवरण सोहागा शब्दमें देखो।

सुहागिन (हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा स्त्री।

सुहागिनी (हिं० स्त्री०) सुहागिन देखो।

सुहाता (हिं० वि०) सह्य, जो सहा जा सके।

सुहान (हिं० पु०) १ वैश्योंकी एक जाति। २ सोहान देखो।

सुहाना (हिं० क्रि०) १ शोभायमान होना, शोभा देना। २ अच्छा लगना, भला मालूम होना।

सुहारी (हिं० स्त्री०) सादी पूरी नामका पकवान। इसमें पीठी आदि नहीं भरी रहती।

सुहाल (हिं० पु०) एक प्रकारका नमकीन पकवान जो मैदेका बनाता है। यह बहुत मोयनदार होता है और इसका आकार प्रायः तिकोना होता है।

सुहाली (सं० स्त्री०) सुहारी देखो।

सुहाव (हिं० पु०) सुन्दर हाव।

सुहावना (हिं० वि०) सुहावना, भला।

सुहावना (हिं० वि०) जो देखनेमें भला मालूम हो, सुन्दर।

सुहावनापन (हिं० पु०) सुहावना होनेका भाव, सुन्दरता।

सुहावल—मध्यभारतके बघेलखण्ड एजेन्सीके अधीन एक राज्य और शहर। इसका दूसरा नाम सोहावल है। यह शहर सतना नदीके किनारे और सतना सौगांव राजपहाड़ोंकी बगलमें अवस्थित है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई १०५६ फुट है। इस नगरकी रक्षाके लिये पहले यहां एक दुर्ग प्रतिष्ठित था, अभी उसका ध्वंसावशेष मात्र रह गया है।

सुहास (सं० त्रि०) शोभन हास्ययुक्त, सुन्दर या मधुर मुसकानवाली।

सुहासिन् (सं० त्रि०) सुहास अस्त्यर्थे इनि। अतिशय हास्ययुक्त, मधुर मुसकानवाला।

सुहासी (हिं० वि०) चारुहासी, सुन्दर हंसनेवाला।

सुहित (सं० त्रि०) सु धा-क्त। १ विहित, किया हुआ। २ तृप्त, संतुष्ट। ३ उपयुक्त, ठीक।

सुहिता (सं० स्त्री०) १ अग्निजिह्वाविशेष। २ रुद्रजटा।

सुहिया (हिं० स्त्री०) सुहा देखो।

सुहिरण्य (सं० त्रि०) अति रमणीय धनविशिष्ट।

सुहुत (सं० त्रि०) होमार्थ नियुक्त।

सुहुताद् (सं० त्रि०) सुहुतहविर्भक्षक।

सुहू (सं० त्रि०) १ सुष्ठु आह्वानयुक्त। (शुक्लयजु १।३०) २ सुष्ठु आह्वानयुक्त जिह्वा। (पु०) ३ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम।

सुहृद् (सं० पु०) १ मित्र, बंधु। २ अच्छे हृदयवाला। ३ महादेव। (भारत १३।१७।६६) ज्योतिषके अनुसार लग्नसे चौथा स्थान। इससे यह जाना जाता है, कि मित्र आदि कैसे होंगे। चतुर्थ स्थानमें शुभग्रह तथा चतुर्थाधिपति शुभभावस्थ होनेसे सुहृद्भाव शुभ होता है। इसका विपरीत होनेसे अशुभ जानना चाहिये।

सुहृदय (सं० त्रि०) १ उन्नतमना, अच्छे हृदयवाला। २ सहृदय, स्नेहशील।

सुहृद्बल (सं० क्ली०) मित्ररूप सैन्य।

सुहेला (हिं० वि०) १ सुहावना, सुन्दर। २ सुखदायक, सुखद। (पु०) ३ मङ्गल गीत। ४ स्तुति, स्तव।

सुहोतृ (सं० त्रि०) १ देवताओंके उत्तम स्तोता। २ उत्तम होता, जो उत्तम रूपसे हवन करता हो। (पु०) ३ भुमन्युके एक पुत्रका नाम। ४ वितथके एक पुत्रका नाम।

सुहोत्र (सं० पु०) १ एक वैदिक ऋषिका नाम। २ एक बार्हस्पत्यका नाम। ३ एक आत्रेयका नाम। ४ एक कौरवका नाम। ५ सहदेवके एक पुत्रका नाम। ६ भुमन्युके एक पुत्रका नाम। ७ बृहत्क्षत्रके एक पुत्र

का नाम। ८ बृहद्रिपुके एक पुत्रका नाम। ९ सुधन्वाके एक पुत्रका नाम। १० एक दैत्यका नाम। ११ एक वानरका नाम। १२ वितथके एक पुत्रका नाम। १३ क्षत्रवृद्धके एक पुत्रका नाम।

सुह्म (सं० पु०) १ पुराणोक्त प्राचीन जनपदभेद, राढ़देश। दिग्विजयप्रकाशके मतसे गौडके पश्चिम, वीरभूमके पूरब और दामोदरका उत्तरका भूभाग ही सुह्म कहलाता है। भारतटीकाकार नीलकण्ठके मतसे सुह्म ही राढ़देश है। २ यवनोंकी एक जाति।

सुह्मक (सं० पु०) सुह्म देखो।

सूंइस (सं० स्त्री०) सूंस देखो।

सूंघना (हिं० क्रि०) १ घ्राणेन्द्रिय या नाक द्वारा किसी प्रकारकी गंधका ग्रहण या अनुभव करना, महक लेना। २ बहुत कम भोजन करना।

सूंघा (हिं० पु०) १ वह जो नाकसे केवल सूंघ कर यह बतलाता हो, कि अमुक स्थान पर जमीनके अन्दर पानी या खजाना आदि है। २ सूंघ कर शिकार तक पहुंचनेवाला कुत्ता। ३ भेदिया, जासूस, मुखबिर।

सूंड (हिं० स्त्री०) हाथीकी नाक। यह बहुत लम्बी होती और नीचेकी ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। यह लम्बाईमें प्रायः हाथीकी ऊंचाई तक होती है। इसमें दो नथने होते हैं। हाथी इससे हाथका भी काम लेता है। यह इतनी मजबूत होती है, कि हाथी इससे पेड़ उखाड़ सकता है और भारीसे भारी चीज उठा कर फेंक सकता है। इसीसे वह खानेकी चीजें उठा कर मुंहमें रखता और दमकलकी तरह पानी फेंकता और पीता है। इससे वह जमीन परसे सूई तक उठा सकता है।

सूंडहल (हिं० पु०) हाथी।

सूंडा (हिं० पु०) हाथीकी सूंड या नाक।

सूडाल (हिं० पु०) शुंडाल देखो।

सूंडी (हिं० स्त्री०) कपास, अनाज, रेंडी, ऊख आदिके पौधोंको हानि पहुंचानेवाला एक प्रकारका सफेद कीड़ा।

सूंधो (हिं० स्त्री०) सज्जी मिट्टी।

सूंस (हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जन्तु। यह ८से १२ फुट तक लंबा होता है। इसके हरएक जबड़ेमें तीस दांत होते हैं। यह पानीके बहावमें पाया जाता है और एक जगह नहीं रहता। श्वास लेनेके लिये यह पानीके ऊपर आता है और पानीकी सतह पर बहुत थोड़ी देर तक रहता है। शीतकालमें कभी कभी यह जलके बाहर निकल आता है। इसकी आंखें बहुत कमजोर होती हैं और यह मरमैले पानीमें नहीं देख सकता। इसका आहार मछलियां और झिंगवा है। यह जालमें फंसा कर या बर्छियोंसे मार कर पकड़ा जाता है। इसका तेल जलाने तथा कई दूसरे कामोंमें आता है। विशेष विवरण शिशुमार शब्दमें देखो।

सू (सं० स्त्री०) सू-क्विप्। १ सूति, प्रसव। २ क्षेप। ३ प्रेरण।

सूअर (हिं० पु०) १ एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी वन्य जन्तु। विशेष विवरण शूकर शब्दमें देखो। २ एक प्रकारकी गाली। जैसे,—सूअर कहींका।

सूअरबियान (हिं० स्त्री०) १ वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती हो, बरसवियानी, बरसाइन। २ हर साल अधिक बच्चे जननेकी क्रिया।

सूअरमुखा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बड़ी ज्वार।

सूआ (हिं० पु०) १ बड़ी सूई। २ सांग।

सूआन (हिं० पु०) एक प्रकारका बड़ा वृक्ष। यह बरमा, चटगांव और श्याममें होता है। इसके पत्ते प्रति वर्ष झड़ जाते हैं। इसकी लकड़ी इमारत और नावके काममें आती है। इससे एक प्रकारका तेल भी निकलता है।

सूई (हिं० स्त्री०) १ एक लोहेका छोटा पतला तार जिसके एक छोरमें बहुत बारीक छेद होता है और दूसरे छोर पर तेज नोक होती है। छेदमें तागा पिरो कर इससे कपड़ा सिया जाता है। २ पिन। ३ महीन तारका कांटा, तार या लोहेका कांटा जिससे कोई बात सूचित होती है। ४ सूईके आकारका एक तार जिससे पगड़ीकी चुनन बैठाते हैं। ५ अनाज, कपास आदिका अंखुआ। ६ सूईके आकारका एक पतला तार जिससे गोदना गोदा जाता है।

सूई डोरा (हिं० पु०) मालखम्भकी एक कसरत। पहले सीधी पकड़के समान मालखंभके ऊपर चढ़नेके समय एक बगलमेंसे पांव मालखंभको लपेटते हुए बाहर निका

लना और सिरको उठाना पड़ता है। उस समय हाथ छूटनेका बड़ा डर रहता है। इसमें पीठ मालखंभकी तरफ और मुंह लोगोंकी तरफ होता है। जब पाव नीचे आ चुकता है, तब ऊपरका उलटा हाथ छोड़ कर मालखंभको छातीसे लगाये रहना पड़ता है। यह पकड़ बड़ी ही कठिन है।

सूकर (सं० पु०) १ वाण। २ वायु, हवा। ३ कमल। ४ हृदके एक पुत्रका नाम।

सूकर (सं० पु०) १ शूकर, सूअर। २ कुम्भकार, कुम्हार। ३ मृगभेद, एक प्रकारका हिरन। ४ एक नरकका नाम। ५ सफेद धान।

सूकरक (सं० पु०) एक प्रकारका शालिधान्य।

सूकरकन्द (सं० पु०) वाराहीकन्द।

सूकरक्षेत (सं० पु०) एक प्राचीन तीर्थका नाम जो मथुरा जिलेमें है और जो अब 'सोरो' नामसे प्रसिद्ध है।

सूकरखेत (हिं० पु०) सूकरक्षेत्र देखो।

सूकरता (सं० स्त्री०) सूअर होनेका भाव, सूअरकी अवस्था, सूअरपन।

सूकरदंष्ट्र (सं० पु०) एक प्रकारका गुदभ्रंश (कांच निकलनेका) रोग जिसमें खुजली और दाहके साथ बहुत दर्द होता है और ज्वर भी हो जाता है।

सूकरनयन (सं० पु०) काठमें किया जानेवाला एक प्रकारका छेद। (बृहत्सं० ७९।३४)

सूकरपादिका (सं० स्त्री०) १ कोलशिम्बी, सेम। २ कपिकच्छु, किवाच, कौंछ।

सूकरमुख (सं० क्ली०) नरकभेद। (भागवत ५।२६।७)

सूकराक्रान्ता (सं० स्त्री०) वराहक्रान्ता।

सूकराक्षिता (सं० स्त्री०) एक प्रकारका नेत्ररोग।

सूकरास्या (सं० स्त्री०) एक बौद्ध-देवीका नाम जिसे वाराही भी कहते हैं।

सूकराह्वय (सं० पु०) ग्रन्थिपर्ण, गठिवन।

सूकरिक (सं० पु०) एक प्रकारकी चिड़िया।

सूकरिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया।

सूकरी (सं० स्त्री०) १ शूकरी, सूअरी, मादा सूअर। २ वराहक्रान्ता। ३ वाराहीकन्द, गेंठी। ४ एक देवीका नाम, वाराही। ५ एक प्रकारकी चिड़िया।

सूकरेष्ट (सं० पु०) १ एक प्रकारका पक्षी। २ कसेरू।

सूक्त (सं० त्रि०) १ शोभनोक्तिविशिष्ट, उत्तम रूपसे कथित, भलिभांति कहा हुआ। (पु०) २ उत्तम कथन, उत्तम भाषण। ३ महद्वाक्य। ४ वेदमन्त्रों या ऋचाओंका समूह, वैदिक स्तुति या प्रार्थना। यह अग्निसूक्त, पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, देवीसूक्त आदिके भेदसे बहुत प्रकारका है। देवदेवीकी पूजा और महास्नानके समय यह सब सूक्त पाठ करना होता है। ऋग्वेदमें विष्णुसूक्त, भूसूक्त, आदित्यसूक्त, सोमसूक्त आदि सहस्र सहस्र सूक्त तथा यजुर्वेदमें कुमारसूक्त, पितृसूक्त, पावमानी सूक्त आदि हैं। इन सब सूक्तोंका जप कर उन्हीं सब देवताओंकी उपासना करनी होती है।

सूक्तचारी (सं० त्रि०) उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी (सं० त्रि०) वह ऋषि जिसने वेदमन्त्रोंका अर्थ किया हो, बढ़िया कथन।

सूक्तभाज् (सं० स्त्री०) वैदिक सूक्तविशिष्ट।

सूक्तवाक्य (सं० क्ली०) १ यथोचित वाक्य। (भागवत ५।१।१० टीकामें स्वामी) २ वैदिक स्तोत्रादिरूप वाक्य।

सूक्तवाच् (सं० त्रि०) सूक्त वचनयुक्त।

सूक्ता (सं० स्त्री०) शारिका, मैना।

सूक्तानुक्रमणी (सं० स्त्री०) वैदिक सूक्तोंकी अनुक्रमणिका।

सूक्ति (सं० स्त्री०) सु उक्ति, युक्तियुक्त वाक्य, बढ़िया कथन।

सूक्तिक (सं० पु०) एक प्रकारका करताल या झांझ।

सूक्तोक्ति (सं० स्त्री०) सूक्तवाक्य, वेदोक्त स्तोत्रवाक्य।

सूक्तोक्थ (सं० त्रि०) सूक्त द्वारा वाच्य।

सूक्ष्म (सं० क्ली०) सूच्यते इति सूच पैशुन्ये (सूचेः स्मन्। उण् ४।१७६) इति स्मन्। १ कैतव, छल, कपट। २ अध्यात्म। ३ एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्तिको सूक्ष्म चेष्टासे लक्षित करानेका वर्णन होता है। (पु०) ३ परमाणु, अणु। ४ परब्रह्म। ५ लिङ्गशरीर। ६ शिवका एक नाम। ७ एक दानवका नाम। ८ निर्मली। ९ जीरक, जीरा। १० अरिष्टक, रीठा। ११ जैनियोंके अनुसार एक प्रकारका कर्म जिसके उदयसे मनुष्य सूक्ष्म जीवोंकी योनिमें जन्म लेता है। १२ पूग, सुपारी। १३ वह ओषधि जो रोमकूपके मार्गसे शरीरमें प्रविष्ट करे। १४ बृहत्संहिताके अनुसार

एक देशका नाम। (त्रि०) १५ बहुत बारीक या महीन।

सूक्ष्मकृष्णफला (सं० स्त्री०) क्षुद्र जम्बू, छोटा जामुन, कठ जामुन।

सूक्ष्मकोण (सं० पु०) वह कोण जो समकोणसे छोटा हो।

सूक्ष्मघण्टिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र शणपुष्पी, सनई।

सूक्ष्मचक्र (सं० क्ली०) एक प्रकारका चक्र।

सूक्ष्मतण्डुल (सं० पु०) १ पोस्तदाना, खसखस। २ सर्जरस, राल, धूना।

सूक्ष्मतण्डुला (सं० स्त्री०) १ पिप्पली, पीपल। २ सर्जरस, राल, धूना।

सूक्ष्मता (सं० स्त्री०) सूक्ष्म होनेका भाव, बारीकी, महीनपन।

सूक्ष्मतुण्ड (सं० पु०) सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका कीड़ा।

सूक्ष्मदर्शकयन्त्र (सं० क्ली०) एक यन्त्र जिसके द्वारा देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं, अणुवीक्षण यन्त्र, खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता (सं० स्त्री०) सूक्ष्मदर्शी होनेका भाव, सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझनेका गुण।

सूक्ष्मदर्शिन् (सं० त्रि०) सूक्ष्मं पश्यतीति दृश णिनि। १ कुशाग्रबुद्धि, सूक्ष्म विषयको समझनेवाला, बारीक बातको सोचनेवाला। २ अत्यन्त बुद्धिमान्।

सूक्ष्मदल (सं० पु०) देवसर्षप, एक प्रकारकी सरसों।

सूक्ष्मदला (सं० स्त्री०) दुरालभा, धमासा।

सूक्ष्मदारु (सं० क्ली०) सूक्ष्मकाष्ठफलक, काठकी पतली पटरी।

सूक्ष्मदृष्टि (सं० स्त्री०) १ वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझमें आ जायें। (पु०) २ वह जो सूक्ष्मसे सूक्ष्म बातें देख या समझ लेता हो।

सूक्ष्मदेही (सं० पु०) १ परमाणु जो विना अणुवीक्षणयन्त्र के दिखाई नहीं पड़ता। (त्रि०) २ सूक्ष्म शरीरवाला, जिसका शरीर बहुत सूक्ष्म या छोटा हो।

सूक्ष्मनाभ (सं० पु०) विष्णु। (हेम)

सूक्ष्मपत्र (सं० पु०) १ धन्याक, धनिया। २ वनजीरक, काली जीरी। ३ देवसर्षप। ४ लघुबदर, छोटा बेर। ५ सुरपर्ण, मारीपत्र। ६ वनबर्बरी, जंगली बबरी। ७ लोहितेक्षु, लाल ऊख। ८ ककुन्दर, कुकरौंदा। ९ कीकर, बबूल। १० दुरालभा, धमासा। ११ माष, उड़द। १२ अर्कपत्र।

सूक्ष्मपत्रक (सं० पु०) १ पर्पटक, पित्तपापड़ा। २ वनबर्बरी, वनतुलसी।

सूक्ष्मपत्रा (सं० स्त्री०) १ वृद्धदारक, विधारा। २ क्षुद्रजम्बू, वनजामुन। ३ शतमूली। ४ बृहती। ५ दुरालभा, धमासा। ६ रक्तापराजिता, लाल अपराजिता। ७ अपराजिता या कोयल नामकी लता। ८ जारक क्षुप, जीरेका पौधा। ९ बला। १० क्षुद्र उपोदिका, पोई।

सूक्ष्मपत्रिका (सं० स्त्री०) १ शतपुष्पा, सौंफ। २ शतावरी, सतावर। ३ लघु ब्राह्मी। ४ क्षुद्रोपोदिका, पोई। ५ आकाशमांसी।

सूक्ष्मपर्णी (सं० स्त्री०) १ शतावरी, सतावर। २ आकाशमांसी।

सूक्ष्मपर्णा (सं० स्त्री०) १ वृद्धदारु, विधारा। २ क्षुद्र शणपुष्पिका, छोटी सनई। ३ बृहती, वनभंटा।

सूक्ष्मपर्णी (सं० स्त्री०) रामदूती, राम तुलसी।

सूक्ष्मपाद (सं० त्रि०) छोटे पैरोंवाला, जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्मपिप्पली (सं० स्त्री०) वनपिप्पली जंगली पीपल।

सूक्ष्मपुष्पा (सं० स्त्री०) शणपुष्पी, सनई।

सूक्ष्मपुष्पी (सं० स्त्री०) १ यवतिका नामकी लता। २ शंखिनी।

सूक्ष्मफल (सं० पु०) १ भूकर्बुदार, लिसोड़ा। २ सूक्ष्मबदर, छोटा बेर।

सूक्ष्मफला (सं० स्त्री०) १ भूम्यामलकी, भुईं आंवला। २ तालीसपत्र। ३ महाज्योतिष्मती लता, मालकंगनी।

सूक्ष्मबदरी (सं० स्त्री०) भूबदरी, झरबेर।

सूक्ष्मबीज (सं० पु०) पोस्तदाना, खसखस।

सूक्ष्मभूत (सं० क्ली०) आकाशादि शुद्ध भूत जिनका पंचीकरण न हुआ हो। सांख्यके अनुसार पञ्च तन्मात्र अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध तन्मात्र ये अलग अलग सूक्ष्मभूत हैं। इन्हीं पञ्च तन्मात्रसे पञ्च महाभूतोंकी उत्पत्ति हुई है। पञ्चीकृत होने पर आकाशादिभूत स्थूल भूत कहलाते हैं। विशेष विवरण तन्मात्र शब्दमें देखो।

सूक्ष्ममक्षिक (सं० पु०) मशक, मच्छड़।

सूक्ष्ममक्षिका (सं० स्त्री०) मशक, मच्छड़ ।
सूक्ष्ममति (सं० त्रि०) तीक्ष्ण बुद्धि, जिसकी बुद्धि तेज हो ।
सूक्ष्ममूला (सं० स्त्री०) १ जयन्ती । (राजनि०) २ ब्राह्मी ।
सूक्ष्मलोभक (सं० पु०) जैनमतानुसार मुक्तकी चौदह अवस्थाओंमेंसे दसवीं अवस्था ।
सूक्ष्मवल्ली (सं० स्त्री०) १ ताम्रवल्ली । २ जतुका नामकी लता । ३ लघु कारवेल्ल, करैला ।
सूक्ष्मवस्त्र (सं० क्ली०) महीन कपड़ा ।
सूक्ष्मशरीर (सं० क्ली०) शरीर दो प्रकारका है, स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर । स्थूल शरीरका नाश होनेसे यह सूक्ष्म शरीर विद्यमान रहता है । महत्तत्त्व, अहङ्कार, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय और मन, यह ग्यारह इन्द्रियां तथा पञ्चतन्मात्र अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध तन्मात्र, इन अठारहकी समष्टि ही सूक्ष्मशरीर है ।
वेदान्त और शरीर देखो ।
सूक्ष्मशर्करा (सं० स्त्री०) सूक्ष्म शर्करा । बालुका, बालू ।
सूक्ष्मशाखा (सं० पु०) जलवव्वूर, एक प्रकारको बबूरी ।
सूक्ष्मशालि (सं० पु०) अनुधान्यविशेष, एक प्रकारका महीन सुगन्धित चावल जिसे सोरी कहते हैं । वैद्यकके अनुसार यह मधुर, लघु तथा पित्त, अर्श और दाहनाशक है ।
सूक्ष्मषट्चरण (सं० पु०) पक्ष्मयूक, एक प्रकारका सूक्ष्म कीड़ा जो पलकोंकी जड़में रहता है ।
सूक्ष्मस्फोट (सं० पु०) विचर्चिका रोग, एक प्रकारका कोढ़ ।
सूक्ष्मा (सं० स्त्री०) १ यूथिका, जूही । २ क्षुद्रैला, छोटी इलायची । ३ करुणी नामका पौधा । ४ बालुका, बालू । ५ मूसली, तालमूली । ६ सूक्ष्म जटामासी । ७ विष्णुकी नौ शक्तियोंमेंसे एक ।
सूक्ष्माक्ष (सं० पु०) सूक्ष्म दृष्टिविशिष्ट, तीव्र दृष्टि, तेज नजर ।
सूक्ष्मात्मा (सं० पु०) शिव, महादेव ।
सूक्ष्माह्वा (सं० स्त्री०) महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि ।
सूक्ष्मेक्षिका (सं० स्त्री०) सूक्ष्म दृष्टि, तेज नजर ।
सूक्ष्मैला (सं० स्त्री०) सूक्ष्मा एला, छोटी इलायची ।
सूखना (हिं० क्रि०) १ आर्द्रता या गीलापन न रहना, नमी या तरीका निकल जाना, रसहीन होना । २ जलका बिलकुल न रहना या बहुत कम हो जाना । ३ नष्ट होना, बरबाद होना । ४ कृश होना, दुबला होना । ५ तेज नष्ट होना, उदास होना । ६ सन्न होना, डरना ।
सूखर (सं० पु०) एक शेर स्फरराय । सुखड़ देखो ।
सूखा (हिं० वि०) १ जिसमें जल न रह गया हो, जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो । २ जिसका रस या आर्द्रता निकल गई हो, रसहीन । ३ हृदयहीन, कठोर, रूढ़ । ४ निरा, केवल । ५ तेजरहित उदास । ६ कोरा । (पु०) ७ वृष्टिका अभाव, अवर्षण, पानी न बरसना । ८ नदीके किनारेकी जमीन, नदीका किनारा, जहां पानी न हो । ९ ऐसा स्थान जहां जल न हो । १० भाग । ११ खाना अंग न लगनेसे या रोग आदिके कारण होनेवाला दुबलापन । १२ एक प्रकारकी खांसी जो बच्चोंको होती है जिससे वे प्रायः मर जाते हैं, हब्बा डब्बा । १३ सूखा हुआ तंबाकूका पत्ता जो चूना मिला कर खाया जाता है ।
सूच (सं० पु०) कुशका अङ्कुर ।
सूच (हिं० वि०) निर्मल, पवित्र ।
सूचक (सं० त्रि०) १ ज्ञापक, बोधक, बतानेवाला, सूचना देनेवाला । (पु०) सिद्ध (सिवेष्टेश्च । उण् ४।६३) इति वुन्. टेरन्त्यश्च, ततः स्वार्थे कन् । २ सूची, सूई । ३ सीनेवाला, दरजी । ४ नाटककार, सूत्रधार । ५ कथक । ६ विश्वासघातक, दुष्ट । ७ गुप्तचर, भेदिया । ८ पिशुन, चुगलखोर । ९ बुद्ध । १० सिद्ध । ११ पिशाच । १२ कुक्कुर, कुत्ता । १३ बिडाल, बिल्ली । १४ काक, कौआ । १५ सियार, गीदड़ । १६ कटहरा, जंगला । १७ छज्जा, बरामदा । १८ ऊंची दीवार । १९ आयोगव माता और क्षत्रिय पितासे उत्पन्न पुत्र । २० सूक्ष्म शालिधान्य, एक प्रकारका महीन चावल, सोरी ।
सूचन (सं० क्ली०) सूच-ल्युट् । १ गन्धन, सुगन्धि फैलानेकी क्रिया । २ ज्ञापन, बताने या जतानेकी क्रिया ।
सूचना (सं० स्त्री०) सूच-णिच् युच्-टाप् । १ विद्धकरण, बेधना, छेदना । २ दृष्टि । ३ गन्ध । ४ अभिनय । ५ अङ्गभङ्गी, संकेत या चिह्नादि द्वारा बताना । ६ हिंसा । ७ भेद लेना । ८ ज्ञापन, वह बात जो

किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय, प्रकट करने या जतलानेके लिये कही हुई बात। ६ वह पत्र आदि जिस पर किसीको बताने या सूचित करनेके लिये कोई बात लिखी हो, विज्ञापन, इश्तहार।

सूचनापत्र (सं० पु०) वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगोंको बताई जाय, वह पत्र जिसमें किसी प्रकारकी सूचना हो, विज्ञापन, विज्ञप्ति, इश्तहार।

सूचनीय (सं० त्रि०) सूचना करनेके योग्य, जताने लायक।

सूचयितव्य (सं० त्रि०) सूचनीय देखो।

सूचि (सं० स्त्री०) सूच-णिच् (अच इः। उण् ४।१३८) इति इ। १ व्यधनी, सीवनी, सूई। २ एक प्रकारका नृत्य। ३ शिखा। ४ केतकी पुष्प, केवड़ा। ५ सेनाका एक प्रकारका व्यूह जिसमें थोड़े से बहुत तेज और कुशल सैनिक अग्र भागमें रखे जाते हैं और शेष पिछले भागमें होते हैं। ६ कटहरा, जंगला। ७ दरवाजेकी सिटकिनी। ८ एक प्रकारका मैथुन। ९ शूर्पकार, सूप बनानेवाला। १० दृष्टि, नजर। ११ निषाद पिता और वैश्या मातासे उत्पन्न पुत्र। १२ श्वेतदर्भ, कुशा। १३ सूची देखो।

सूचि (हिं० वि०) पवित्र, शुद्ध।

सूचिक (सं० पु०) सौचिक, सिलाईके द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला, दरजी।

सूचिका (सं० स्त्री०) १ सूचि, सूई। २ हस्तिशुण्ड, हाथीकी सूंड। ३ केतकी, केवड़ा। ४ एक अप्सराका नाम।

सूचिकाधर (सं० पु०) सूचिकायाः शुण्डस्य धरः। हस्ती, हाथी।

सूचिकाभरण (सं० क्ली०) औषधविशेष। यह औषध ज्वराधिकारकी एक प्रकारकी अन्तिम औषध है। जब किसी दूसरी औषधसे रोगीके रोगका उपशम न हो कर उसकी वृद्धि होती है, तब ही सूचिकाभरणका प्रयोग करना होता है। इस औषधसे जो आरोग्य नहीं होते, उनकी मृत्यु निश्चित है। यह औषध अनेक प्रकारकी होती है।

सन्निपात, विसूचिका, अतिसार आदि रोगोंकी यह अन्तिम औषध है। कई जगह देखनेमें आता है, कि मृतप्राय रोगीको सूचिकाभरण प्रयोग करनेसे हाथो हाथ फल मिलता है। इस औषधका सेवन करनेसे जो जीवन लाभ करते हैं, उन्हें सर्वदा शैत्यक्रिया करनी चाहिये। वैद्य इस औषधका प्रयोग कर रोगीके पास रहे, क्योंकि यह औषध सेवन करनेसे रोगज विकार विनष्ट हो कर विषकी क्रिया आरंभ होती है। अतः उस समय जिससे विषज विकार दूर हो, उसीकी चेष्टा करनी होगी।

सूचिकामुख (सं० क्ली०) १ शङ्ख। (त्रि०) २ सूच्यास्य।

सूचिगृहक (सं० क्ली०) सूचका घर।

सूचित (सं० त्रि०) सूच-क्त। १ ज्ञापित, जिसकी सूचना दी गई हो, जताया हुआ, बताया हुआ। २ हिंसित, जिसकी हिंसा की गई हो। ३ बहुत उपयुक्त या योग्य।

सूचिन् (सं० पु०) सूच णिनि। १ सूचक, सूचना देने वाला। २ पिशुन, खल।

सूचिपत्र (सं० क्ली०) सूचीपत्र देखो।

सूचीपत्रक (सं० पु०) १ श्वेतेक्षु, एक प्रकारका ऊख। २ शिरियारी, चौपतिया, सिनिवार शाक। ३ सूचीपत्र देखो।

सूचीपुष्प (सं० पु०) केतकी पुष्प, केवड़ा।

सूचिभेद्य (सं० त्रि०) १ सूईसे भेदन होने योग्य। २ बहुत घना।

सूचिमल्लिका (सं० स्त्री०) नवमल्लिका, नेवारी।

सूचिरदन (सं० पु०) नेवला।

सूचिरोमा (सं० पु०) वराह, सूअर।

सूचिवत् (सं० पु०) गरुड़।

सूचिवदन (सं० पु०) १ नकुल, नेवला। २ मशक, मच्छड़।

सूचिशालि (सं० पु०) शालिधान्यविशेष, एक प्रकारका महीन चावल। (राजनि०)

सूचिशिखा (सं० स्त्री०) सूईकी नोक।

सूचिसूत्र (सं० क्ली०) सूईमें पिरोने या सीनेका धागा।

सूची (सं० स्त्री०) सिव (सिवष्टेरू च। उण् ४।९३) इति चट्, टेरूपत्वञ्च टित्वात् ङीप्। १ सीवनद्रव्य, कपड़ा बीननेकी सूई। २ सुश्रुतके अनुसार सूईके

आकारका एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा शरीरके क्षतोंमें टांके लगाये जाते थे। ३ पिङ्गलके अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छन्दोंकी संख्याकी शुद्धता और उनके भेदोंमें आदि-अन्त लघु या आदि-अन्त गुरुकी संख्या जानी जाती है। ४ साक्षीके पांच भेदोंमेंसे एक भेद, वह साक्षी जो विना बुलाये स्वयं आ कर किसी विषयमें साक्ष्य दे, स्वयमुक्ति। ५ दृष्टि, नजर। ६ केतकी, केवड़ा। ७ सेनाका एक प्रकारका व्यूह जिसमें सैनिक सूईके आकारमें रखे जाते हैं। ८ शुक्ल दर्भ, सफेद कुश। ९ एक ही प्रकारकी बहुत-सी चीजों या उनके अंगों, विषयों आदिकी नामावली, तालिका, फेहरिस्त।

सूचीक (सं० पु०) मच्छड आदि ऐसे जंतु जिनके डंक सूईके समान होते हैं।

सूचीकर्म (सं० पु०) सिलाई या सूईका काम जो ६४ कलाओंमेंसे एक है।

सूचीदल (सं० पु०) सितावर या सुनिषण्णक नामक शाक, शिरियारी।

सूचीपत्र (सं० पु०) १ वह पत्र या पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकारकी बहुत-सी चीजों अथवा उनके अंगों की नामावली हो, तालिका। २ व्यवसायियोंका वह पत्र या पुस्तक आदि जिसमें उनके यहां मिलनेवाली सब चीजोंके नाम, दाम और विवरण आदि दिये रहते हैं, तालिका, फेहरिस्त। ३ इक्षुविशेष, एक प्रकारकी ईख। गुण—वातवर्द्धक, कफ और पित्त-नाशक, कषाय, विदाही। (सुश्रुत) ४ सुनिषण्ण शाक, सितावर नामका शाक।

सूचीपत्रक (सं० पु०) सूचीपत्र देखो।

सूचीपत्रा (सं० स्त्री०) सूचीपत्र-टाप्। गण्डदूर्वा, गाडर दूब।

सूचीपद्म (सं० पु०) सेनाका एक प्रकारका व्यूह।

सूचीपाश (सं० पु०) सूईका छेद या नाका जिसमें धागा पिरोया जाता है।

सूचीपुष्प (सं० पु०) सूचिपुष्प देखो।

सूचीभेद (सं० पु०) सूचिभेद्य देखो।

सूचीमुख (सं० क्ली०) १ हीरक, हीरा। २ एक नरकका नाम। भागवतमें लिखा है, कि यह नरक बड़ा दुःखदायी है। ३ सूईकी नोक या छेद जिसमें धागा पिरोया जाता है। (पु०) ४ सितकुशा, कुशा। (राजनि०)

५ सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका अस्त्र। इसका व्यवहार खून और मवाद निकालनेके लिये होता है। इस अस्त्रकी नोक सूईकी नोकके समान पतली होती है।

सूचिरोमन (सं० पु०) सूचिरोमा देखो।

सूचिवक्त्र (सं० पु०) १ स्कन्दके एक अनुचरका नाम। २ एक असुरका नाम।

सूचीवक्त्रा (सं० पु०) वह योनि जिसका छेद इतना छोटा हो कि वह पुरुषके संसर्गके योग्य न हो। वैद्यकके अनुसार यह बीस प्रकारके योनि रोगोंमेंसे एक है।

सूच्छित (सं० त्रि०) समुन्नत, अतिशय उच्छित।

सूच्य (सं० त्रि०) सूच-यत्। सूचनाके योग्य, जताने लायक।

सूच्यग्र (सं० पु०) सूईका अग्र भाग, सूईकी नोक।

सूच्यग्रस्तम्भ (सं० पु०) मीनार।

सूच्यग्रस्थूलक (सं० पु०) एक प्रकारका तृण, जूर्णा, उलूक।

सूच्याकार (सं० त्रि०) सूईके आकारका, लंबा और नुकीला।

सूच्यार्थ (सं० पु०) साहित्यमें किसी पद आदिका वह अर्थ जो शब्दोंकी व्यञ्जना शक्तिसे जाना जाता है।

सूच्यास्य (सं० पु०) मूषिक, चूहा।

सूच्याह्व (सं० पु०) शिरियारी, सुनिषण्णकशाक, सितवर।

सूजंध (हिं० स्त्री०) सुगन्ध, खुशबू।

सूजन (हिं० स्त्री०) १ सूजनेकी क्रिया या भाव। २ सूजनेकी अवस्था, फुलाव, शोथ।

सूजना (हिं० क्रि०) रोग, चोट या वात प्रकोप आदिके कारण शरीरके किसी अंगका फूलना, शोथ होना।

सूजा (हिं० पु०) १ बड़ी मोटी सूई, सूआ। २ लोहेका एक औजार जिसका एक सिरा नुकीला और दूसरा चिपटा और छिदा हुआ होता है। इससे कूचबन्द लोग कूंचेको छेद कर बाँधते हैं। ३ रेशम फेरनेवालोंका सूजेके आकारका लोहेका एक औजार जो मझेमें

लगा रहता है। ४ खूंटा जो छकड़ा गाड़ीके पीछेकी ओर उसे टिकानेके लिये लगाया जाता है।

सूजाक (फा॰ पु॰) मूत्रेन्द्रियका एक प्रदाहयुक्त रोग जो दूषित लिङ्ग और योनिके संसर्गसे उत्पन्न होता है। इस रोगमें लिङ्गका मुंह और छिद्र सूज जाता है, ऊपर की खाल सिमट जाती है तथा उसमें खुजली और पीड़ा होती है। मूत्रनालीमें बहुत जलन होती है और उसे दबानेसे सफेद रंगका गाढ़ा और लसीला मवाद निकलता है। यह पहली अवस्था है। इसके बाद मूत्रनालीमें घाव हो जाता है जिससे मूत्रत्याग करनेके समय अत्यन्त कष्ट और पीड़ा होती है। इन्द्रिय-के छेदमेंसे पीबके समान पीला गाढ़ा या कभी कभी पतला स्राव होने लगता है। शरीरके भिन्न भिन्न अंगोंमें पीड़ा होने लगती है। कभी कभी पेशाब बन्द हो जाता है या रक्तस्राव होने लगता है। स्त्रियोंको भी इससे बहुत कष्ट होता है, पर उतना नहीं जितना पुरुषोंको होता है। इसका प्रभाव गर्भाशय पर पड़ता है जिससे स्त्रियां बन्ध्या हो जाती हैं।

सूजी (हिं॰ स्त्री॰) १ गेहूंका दरदरा आटा जो हलुआ, लड्डू तथा दूसरे पकवान बनानेके काममें आता है। २ सूई। ३ वह सूआ जिससे गडेरिये लोग कम्बल-की पट्टियां सीते हैं। ४ एक प्रकारका सरेस जो माड़ और चूनेके मेलसे बनता है और बाजेके पुर्जे जोड़नेके काममें आता है। (पु॰) ५ कपड़ा सीनेवाला, सूचिक, दरजी।

सूझ (हिं॰ स्त्री॰) १ सूझनेका भाव। २ दृष्टि, नजर। ३ मन में उत्पन्न होनेवाली अनूठी कल्पना, उद्भावना, उपज।

सूझना (हिं॰ क्रि॰) १ दिखाई देना, देख पड़ना, नजर आना। २ ध्यानमें आना, ख्यालमें आना। ३ छुट्टी पाना, मुक्त होना।

सूझबूझ (हिं॰ स्त्री॰) देखने और समझनेकी शक्ति, समझ, अक्ल।

सूझा (हिं॰ पु॰) फारसी संगीतमें एक मुकाम (राग)-के पुत्रका नाम।

सूट (अं॰ पु॰) पहननेके सब कपड़े विशेषतः कोट और पतलून आदि।

सूटकेस (अं॰ पु॰) एक प्रकारका चिपटा बक्स जिसमें पहननेके कपड़े रखे जाते हैं।

सूड़ (हिं॰ स्त्री॰) सूंड़ देखो।

सूडो (हिं॰ पु॰) शुकपक्षी तोता।

सूत (सं॰ पु॰) १ सारथि, रथ हांकनेवाला। २ त्वष्टा। ३ वर्णसङ्कर जातिविशेष। मनुके अनुसार इसकी उत्पत्ति क्षत्रियके औरस और ब्राह्मणीके गर्भसे है। रथ हांकना ही इसकी वृत्ति है। ४ बन्दी, स्तुतिपाठक, भाट, चारण। ये लोग प्राचीन कालमें राजाओंको स्तुतिपाठ द्वारा निद्रासे उठाते थे। ५ विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम। ६ सूर्य। ७ पारद, पारा। ८ पुराणवक्ता। वेदव्यासने पुराणशास्त्र प्रणयन किया। वे सब पुराण सूतने यज्ञाव सान पर ऋषियोंको सुनाये थे। कूर्मपुराणमें लिखा है—

ब्रह्माके आदेशसे जब वेणपुत्रने यज्ञ आरम्भ किया और वह यज्ञ जब विस्तृत हुआ, तब हरिने स्वयं पुराण कहनेके लिये सूतरूपमें जन्मग्रहण किया। ये सूत सभी शास्त्रोंके प्रवक्ता, गुणवत्सल और धार्मिक थे। इन्होंने मुनियोंसे कहा था, 'हे मुनिगण! आप मुझे पूर्वोद्भूत सनातन जानना।' इस समय कृष्णद्वैपायन व्यासने कहा था, कि मेरे वंशमें जो सब पुत्र वेदवर्जित होंगे, उनकी पुराणवक्तृत्ववृत्ति होगी।

अग्निपुराणके मतसे ब्रह्माके पौष्कर यज्ञमें यज्ञीय हविसे पुराणवेत्ता द्विज सूत उत्पन्न हुए थे। वेदादिशास्त्रके वक्ता और त्रिकालज्ञ सकलतत्त्वज्ञ थे। तीर्थयात्रा प्रसङ्गमें ये नैमिषारण्य गये और वहां ऋषियोंको पुराण सुनाये।

विष्णुपुराणमें लिखा है, कि पितामह दैवत वैण्य पृथुके यज्ञमें सूतिसे सूतकी उत्पत्ति हुई। जहां यज्ञीय सोम रहता है, उस स्थानको सूति कहते हैं। (विष्णुपु॰ १।१३ अ॰) मत्स्यपुराणका भी यही मत है।

वह्निपुराणमें लिखा है, कि पृथुके यज्ञमें सूतिसे सूत और मागधकी उत्पत्ति हुई। ऋषियोंने जब पृथुका स्तव करनेके लिये सूतसे कहा, तब सूतने उत्तमरूपसे स्तव किया था। राजा पृथुने इस स्तवसे अत्यन्त प्रसन्न हो कर उसे अनूपदेश प्रदान किया था।

पुराणवेत्ता सूतकी उत्पत्तिके विषयमें इस प्रकार

विविध प्रकारका मत देखनेमें आता है। एकमात्र सूतने ही ऋषियोंसे सभी पुराण वर्णन किये थे। ९ सूतकार, बढ़ई।

(त्रि०) १० प्रसूत, उत्पन्न। ११ प्रेरित, प्रेरणा किया हुआ।

सूत (हिं० पु०) १ रूई, रेशम आदिका महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है, तंतु, सूता। २ रूईका बटा हुआ तार जिससे कपड़ा आदि सीते हैं, तागा, धागा। ३ बच्चोंके गलेमें पहननेका गंडा। ४ करधनी। ५ नापनेका एक मान। चार सूतकी एक पट्टन, चार पट्टनका एक तसू और चौबीस तसूका एक इमारती गज होता है। ६ पत्थर पर निशान डालनेकी डोरी। संगतराश लोग इसे कोयला मिले हुए तेलमें डुबा कर इससे पत्थर पर निशान कर उसकी सीधमें पत्थर काटते हैं। ७ लकड़ी चीरनेके लिये उस पर निशान डालनेकी डोरी। ८ थोड़े अक्षरों या शब्दोंमें ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो। (वि०) ९ भला, अच्छा।

सूतक (सं० क्ली०) १ जन्म। २ जननाशौच, वह अशौच जो संतान होने पर परिवारवालोंको होता है। स्मृतिमें लिखा है, कि मृताशौचके बाद यदि सूतका शौच हो, तो उस मृताशौच द्वारा सूतका शौच अपनीत होता है, केवल सूतिका अर्थात् प्रसूता स्त्रीका अशौच नहीं जाता। इसके सिवा और सबोंका अशौच जाता है। शास्त्रमें लिखा है, कि अशौचावस्थामें किसी धर्मकर्मका अनुष्ठान नहीं करना चाहिये, किन्तु सूतकाशौचमें अनेक कार्य किये जा सकते हैं।

३ मरणाशौच जो परिवारमें किसीके मरने पर होता है। ४ सूर्य या चन्द्रमाका ग्रहण, उपराग।

सूतक गेह (सं० पु०) सूतिकागार देखो।

सूतका (सं० स्त्री०) सूतक-टाप्। सद्यःप्रसूता, वह स्त्री जिसने अभी हालमें प्रसव किया हो।

सूतकागृह (सं० क्ली०) सूतिकागार देखो।

सूतिकादि लेप (सं० पु०) वैद्यकमें फिरंग वात पर लगानेका लेप जिसमें पारा, हिंगुल, हीरा कसीस तथा आंवलासार गंधक पड़ती है। इसके बनानेकी विधि यह है, कि उक्त चीजें शुद्ध करके खरल की जाती हैं। अनन्तर सूखी बुकनी या पानी आदिमें भिगो कर फिरंग वात पर लगाई जाती है।

सूतकान्न (सं० पु०) १ वह खाद्य पदार्थ जो सन्तान जन्मके कारण अशुद्ध हो जाता है। २ सूतकीके घरका भोजन।

सूतकाशौच (सं० क्ली०) सूतकजन्य अशौच, जननाशौच। ब्राह्मणी, क्षत्रिया और वैश्याके पुत्र प्रसव करने पर बीस रातमें वे स्नान कर शुद्ध होती हैं। २१वें दिन उन्हें अशौच नहीं रहता, किन्तु कन्या जनने पर ब्राह्मणी आदि सबोंको एक मास अशौच होगा। शूद्राके पुत्रकन्या दोनों ही जन्म लेने पर मासाशौच होता है। किंतु ब्राह्मणके लिये ऐसी अवस्थामें केवल दश दिन अशौच कहा गया है। पुत्रकन्या जन्म ले कर यदि जीवित रहे, तो इसी प्रकार अशौच होता है। जन्म लेनेके बाद यदि वह अशौच कालमें ही मर जाय, तो अशौचके सम्बंधमें विधि भिन्न प्रकारकी कही गई है। ब्राह्मणी, क्षत्रिया और वैश्याके पुत्र प्रसवमें बीस दिन अशौच होने पर अङ्गास्पृश्यत्व दश दिन और शूद्राका अङ्गास्पृश्यत्व तेरह दिन होता है। (शुद्धितत्त्व)

स्त्रियोंके प्रसवके अनुपयुक्त कालमें यदि मृत संतान प्रसव हो, तो उसे गर्भस्राव कहते हैं। यह गर्भस्राव होने पर सूतकाशौच इस प्रकार कहा गया है—गर्भस्राव का काल प्रथममासावधि अष्टम मास तक है। उसके ऊपरका काल प्रसवकाल है। यदि ६ मासके मध्य स्त्रीका गर्भस्राव हो जाय, तो जितने मासका गर्भ था, उतने दिनों तक उसे अशौच होगा। किन्तु यह अशौच केवल उस स्त्रीके लिये है, दूसरे किसीके लिये नहीं। उसके बाद अर्थात् ६ मासके बाद ८ मासके भीतर गर्भस्राव होनेसे स्त्रीको स्वजातयुक्त अशौच, सगुण सपिण्डगणोंको सद्यःशौच और निर्गुण सपिण्डको एकाह अशौच होगा। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम और षष्ठ मासमें गर्भस्रावको जगह स्त्रीके माससमसंख्यक दिन अशौचके बाद ब्राह्मणीको एक दिन, क्षत्रियाको दो दिन, वैश्याको तीन दिन और शूद्राको छः दिन तक दैव और पैत्र कर्ममें अधिकार नहीं रहता। किंतु लौकिक कर्म माससमसंख्यक दिनके बाद कर सकते हैं

पूर्णसूतकाशौचके मध्य यदि पूर्ण सूतकाशौच हो, तो पूर्वाशौचकाल द्वारा ही शुद्धि होगी। अपने पुत्र अथवा कन्याके जन्म लेने पर उस अशौचके मध्य यदि सपिण्डके पुत्र या कन्या जन्म ले, तो अपने पुत्रकन्या-जननाशौचान्त दिनमें ही शुद्धि होगी।

यदि जननाशौचके मध्य कोई दूसरा जननाशौच हो, और पूर्वजात सन्तानकी उक्त अशौचकालमें मृत्यु हो जाय, तो पिता और माताको जाताशौच होता है तथा सपिण्डवर्ग स्नानमात्रसे ही शुद्ध होते है। फिर यदि परजात बालक अशौचके मध्य मरे, तो सबोंको जनना-शौच समभावमें रहेगा। यदि सपिण्डके जननाशौचके प्रथमार्द्धमें अपने पुत्रका जन्म हो, तो सपिण्डाशौचकी शुद्धिके दिनमें ही शुद्धि, परार्द्धमें होनेसे अपने अशौच-कालके बाद शुद्धि होगी।

सूतकी (सं० लि०) १ घर या परिवारमें सतान जन्मके कारण जिसे अशौच हो। २ परिवारमें किसी मृत्यु-के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतग्रामणी (सं० पु०) गांवका मुखिया।

सूतज (सं० पु०) कर्ण।

सूततनय (सं० पु०) कर्ण। अधिरथ सारथिने कर्ण को पाला था, इसीसे कर्ण सूत-तनय या सूतपुत्र कह-लाते हैं।

सूतता (सं० स्त्री०) १ सूतका भाव, धर्म या कार्य। २ सारथिका कार्य।

सूतदार परगना (हिं० पु०) सोने या चांदीके नक्काशों-की छेनी जो तराशनेके काममें आती है।

सूतदुहितृ (सं० स्त्री०) सूतकन्या, सूतपुत्री।

सूतधार (हिं० पु०) बढ़ई।

सूतनन्दन (सं० पु०) १ कर्ण। २ उग्रश्रवा।

सूतपुत्र (सं० पु०) सूतस्य पुत्रः। १ कर्ण। २ कीचक। ३ सारथि। ४ सारथिका पुत्र।

सूतपुत्रक (सं० पु०) कर्ण।

सूतफूल (हि० पु०) महीन आटा, मैदा।

सूतराज् (सं० पु०) पारद, पारा।

सूतलड (हिं० पु०) अरहट, रहंट।

सूतवशा (सं० स्त्री०) गाभो, गाय।

सूतसव (सं० पु०) एकाहयागभेद, एक दिनमें होनेवाला एक प्रकारका यज्ञ।

सूता (हिं० पु०) १ कपास, रेशम आदिका तार जिससे कपड़ा बुना जाता है, तंतु, सूत। २ एक प्रकारका भूरे रंगका रेशम जो मालदह (बंगाल) से आता है। ३ जूतेमें वह बारीक चमड़ा जिसमें टूकका पिछला हिस्सा आ कर मिलता है। ४ वह सापी जिससे डोडेमेंकी अफीम काछते हैं (स्त्री०) ५ वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो, प्रसूता।

सूति (सं० स्त्री०) सू क्तिन्। १ सोमाभिषवभूमि, वह स्थान जहां सोमरस निकाला जाता था। २ जनन, प्रसव ३ जन्म। ४ सीवन, सीना। ५ फल या फसलकी उत्पत्ति, पैदावार। ६ सोमरस निकालनेकी क्रिया। ७ उत्पत्तिका स्थान या कारण, उद्गम। (पु०) ८ विश्वा-मित्रके एक पुत्रका नाम। ९ हंस।

सूतिका (सं० स्त्री०) सू-क्त टाप्, ततः स्वार्थे कन्, यद्वा सूतं प्रसवोऽस्त्यस्यामिति ठन्। १ नवप्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसने अभी हालमें बच्चा जना हो। सूतिका शब्दसे जितना दिन प्रसूतिके सन्तानप्रसवजन्य अशौच रहता है, उतना हो दिन समझना होगा। यदि कोई सूतिकान्न भोजन करे, तो एक मास व्रती हो कर रहनेसे उसका पाप दूर होता है।

शास्त्रमें लिखा है, कि सूतिका स्त्रीको अवलोकन, उसके साथ आलाप और उसे स्पर्श नहीं करना चाहिये, करनेसे यथाविधान प्रायश्चित्त करना होता है। २ वह गाय जिसने हालमें बछड़ा जना हो। ३ रोगविशेष। सूतिकारोग शब्द देखो।

सूतिकागार (सं० क्ली०) वह कमरा या कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा जने, सौरी, प्रसवगृह। वैद्यकके अनुसार सूतिकागार आठ हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा होना चाहिए तथा इसके उत्तर और पूर्वकी ओर द्वार होने चाहिए।

सूतिकागृह (सं० क्ली०) प्रसवालय, वह घर जिसमें गर्भ-वती बच्चा जनती है। वैद्यकमतसे सूतिकागृहका दरवाजा ८ हाथ लंबा और ६ हाथ चौड़ा पूर्व और उत्तर मुखका होना चाहिये।

सुश्रुतके शारीरस्थानमें लिखा है, कि सूतिकागृह निर्माण विषयमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रके लिये यथाक्रम श्वेत, रक्त, पीत और कृष्णवर्णकी भूमि प्रशस्त है। बिल्व, वट, तिन्दुक और भल्लातक इन चार प्रकारके काष्ठोंसे यथाक्रम उक्त चार वर्णोंके सूतिकागारमें पलंग बनावे। उस घरकी दीवार अच्छी तरह लेप पोत दें। उसका दरवाजा पूर्व अथवा दक्षिण मुखका होगा। इस घरकी लंबाई ८ हाथ और चौड़ाई ४ हाथ होगी। उसे वन्दनवारसे सुशोभित करना होगा। ऐसे ही घरमें गर्भवती स्त्रीको सन्तान प्रसव करना चाहिये।

गर्भवती स्त्रीको नवम मासमें जिस दिन साध्र भक्षण कराया जाता है, उसी शुभ दिनमें प्रसवगृहका निर्माण शुरू कर देना चाहिये। ज्योतिस्तत्त्वमें लिखा है, कि जहां बालक प्रसूत होगा, वहां बालककी रक्षा करनेके लिये काकजङ्घा, काकमाचिका, कोषातकी, बृहती, यष्टिमधु इन सब वृक्षोंका मूल अच्छी तरह पीस कर प्रसवस्थल पर लेपन और रक्षामन्त्र द्वारा रक्षा करे।

साधभक्षणादिमें यदि सूतिकागृहका निर्माण आरम्भ न किया जाय, तो पीछे शुभ दिन देख कर वह घर बनाना आवश्यक है। अशुभ दिनमें सूतिकागृह कभी भी नहीं बनाना चाहिये।

सूतिकागेह (सं० क्ली०) सूतिकाया गेहं। प्रसवगृह।

सूतिकाभवन (सं० क्ली०) सूतिकाया भवनं। प्रसवगृह।

सूतिकारिरस (सं० पु०) सूतिकारोगकी औषधविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—पारा, गन्धक, अबरक और तांबा, इनको समान भाग ले कर हंसपदीके रसमें घोटे। पीछे धूपमें सुखा कर उड़द भरकी गोली बनावे। इसका अनुपान अदरकका रस है। इस औषधका सेवन करनेसे सूतिका रोग, ज्वर, तृष्णा, अरुचि और शोथ नष्ट हो कर अग्नि की दीप्ति होती है। (भैषज्यरत्ना०)

सूतिकारोग (सं० पु०) नवप्रसूता स्त्रीका एक रोग। गर्भवती स्त्रीके सन्तान प्रसव करने पर यदि यथाविधान उसकी परिचर्या न की जाय, तो यह रोग उत्पन्न होता है।

अनुचित आचरण, दोषजनक द्रव्य, विषमाशन और अजीर्णावस्थामें भोजन आदिसे प्रसूता स्त्रियोंके जो सब रोग होते हैं, वे अतिकष्टसाध्य हैं और सूतिकारोग कहलाते हैं। प्रसूता नारीको हितकर आहारविहार करना चाहिये तथा व्यायाम, मैथुन, क्रोध और शीतलसेवा उसके लिये बिलकुल निषेध है।

प्रसवके बाद उसका शरीर तीक्ष्णताप्रयुक्त रूक्ष होनेसे शोणित विशुद्ध न हो कर स्थानगत वायु द्वारा नाभि का अधोभाग रुद्ध हो जाता है तथा पार्श्व और वस्तिदेशमें सूई चुभने-सी वेदना होती है। प्रसवकी ऐसी अवस्था होनेसे उसको मक्कल कहते हैं। प्रसवके बाद ज्वर, शोथ, अग्निमान्द्य, अतीसार, ग्रहणी, शूल, आनाह, बलक्षय, कास, पिपासा, गात्रभार, गात्रवेदना तथा नासिका और मुखसे कफस्राव आदि जो सब पीड़ा उत्पन्न होती है, उसीको सूतिका रोग कहते हैं। ये सब सूतिका रोग बल और मांसक्षीणा स्त्रीको होनेसे उसको जान पर खतरा है।

प्रसूता नारी दुष्ट रक्तस्राव द्वारा शुद्ध होनेसे डेढ़ मास तक उसे आहारविहारादिमें सावधान होना चाहिये। स्निग्ध अथच अल्प भोजन और स्नेह-अभ्यङ्ग प्रति दिन करना उसके लिये हितकर है। भगवान् धन्वन्तरिने कहा है, कि प्रसूता नारी १५ दिनके बाद या फिरसे रजोदर्शन होने पर ही सूतिकासे मुक्त होती है। सूतिका रोगिणीके सभी उपद्रव विनष्ट तथा वर्ण प्रसन्न और बलाधान होनेके चार महीनेके बाद पथ्यादिका कठोर नियम परित्याग करना होता है।

सुश्रुतमें लिखा है, कि प्रसूता स्त्रीके अनुचित आहार विहारादिजन्य अर्थात् शरीरमें अधिक हवा और ठढ लगने, अपरिष्कार वस्तु खाने, भूख नहीं रहते हुए भी भोजन करने और क्षीणाग्नि अवस्थामें गुरुपाक द्रव्य खाने आदि कारणोंसे नाना प्रकारके सूतिकारोग उत्पन्न होते हैं। कुत्सित सूतिकागृह भी सूतिकारोगका एक प्रधान कारण है। ज्वर, शोथ, अग्निमान्द्य, अतीसार, ग्रहणी, शूल, आनाह, बलक्षय, कास, पिपासा, गात्रभार, गात्रवेदना और नासिका मुख द्वारा कफस्राव आदि जो सब उपद्रव प्रसवके बाद उत्पन्न होते हैं, वही सूतिकारोग है। ज्वरादि निदानके लक्षणानुसार इन सब

रोगोंमेंसे कौन रोग प्रधान है, वह स्थिर करना होगा।

सूतिकाज्वरमें सूतिकादशमूल या सहचरादिपाचन, सूतिकारिरस, वृहत् सूतिकाविनोद और ज्वररोगोक्त पुटपाकका विषम ज्वरान्तक-लौह आदि औषधका प्रयोग करे। गात्रवेदनाकी शान्तिके लिये दशमूल-पाचन तथा लक्ष्मीविलासरस आदि औषध सेवन करना उचित है। कासशान्तिके लिये सूतिकान्तक रस तथा कासरोगोक्त शृङ्गाराभ्र आदि औषध, अतिसार, ग्रहणी आदि रोगोंमें अतिसारादि रोगोक्त कुछ औषध तथा जीरकादि मोदक, जीरकाद्यरिष्ट, सौभाग्यशुण्ठीमोदक, आदिका प्रयोग करे। सूतिकारोगमें जिस जिस रोगकी अधिकता देखी जाती है, उस उस रोगनाशक औषधका अच्छी तरह सोच विचार कर प्रयोग करना आवश्यक है।

पथ्यापथ्य—सूतिकारोगमें रोगविशेषानुसार उस उस रोगके पथ्यापथ्यका प्रतिपालन करना होता है, अर्थात् सूतिकारोगमें ज्वर प्रबल होनेसे ज्वररोगमें जो सब पथ्य निषिद्ध है, इसमें भी उसे निषिद्ध जानना होगा। इस प्रकार सभी विषयोंमें जानना होता है। साधारण सूतिकावस्थामें पुराने चावलका भात, मसूरकी दालका जूस, बैंगन, कच्ची मूली, डूमर, परवल, कच्चे केलेकी तरकारी, अनार तथा अग्निदीपक और वातश्लेष्मनाशक द्रव्य भोजन करे।

निषिद्ध कर्म—गुरुपाक, तीक्ष्णवीर्य खाद्य भोजन, अग्निसन्ताप, परिश्रम, शीतलसेवा और मैथुन ये सब सूतिकारोगमें विशेष निषिद्ध हैं। प्रसवके बाद तीन या चार मास तक प्रसूताको बड़ी सावधानीसे रहना आवश्यक है। (सुश्रुत)

भैषज्यरत्नावलीके सूतिकारोगाधिकारमें सूतिका दशमूलपाचन, सहचरादि, अमृतादि, देवदार्वादि क्वाथ, वज्रकाञ्जिक, भद्रकटाद्यवलेह, पञ्चजीरकगुड, सौभाग्य शुण्ठी, वृहत् सौभाग्यशुण्ठी, जीरकाद्यमोदक, वृहत् सूतिकाविनोद, सूतिकारिरस, सूतिकाहररस, सूतिकान्तकरस, महाभ्रवटी, रसशार्दूल, महारसशार्दूल, भद्रोत्कटाद्य घृत, धातक्यादि तैल और जीरकाद्यरिष्ट ये सब औषध कही गई हैं। रोगीकी अवस्थाके अनुसार इन सब औषधोंमेंसे किसी भी औषधका सेवन करनेसे सूतिकारोग अति शीघ्र प्रशमित होता है।

सूतिकाल (सं० पु०) प्रसव करने या बच्चा जननेका समय।

सूतिकावल्लभरस (सं० पु०) सूतिका रोगकी एक औषध। यह औषध वृहत्सूतिकावल्लभ भी कहलाता है।

सूतिकावास (सं० पु०) प्रसवगृह।

सूतिकाषष्ठी (सं० स्त्रि०) सूतिकागृहमें उत्पन्न बालकके छठे दिनमें पूजनीया देवीविशेष। पुत्र या कन्याके जन्म लेने पर छठे दिन सूतिकागृहमें जो षष्ठीदेवीकी पूजा की जाती है, उसीको सूतिकाषष्ठी कहते हैं। छठे दिन सूतिकाषष्ठीपूजाका विधान शास्त्रमें लिखा है, किन्तु अधिकांश स्थलोंमें देखा जाता है, कि प्रसूता स्त्रीके अशौच दूर होने पर यह षष्ठीपूजा होती है। शास्त्रमें लिखा है, कि अशौचमें कोई कार्य नहीं करना चाहिये, किन्तु इस षष्ठीकी पूजा अशौचमें होनेसे भी कोई दोष नहीं होता, वरन् अशौचमें ही यह पूजा करनेका विधान है। इस सूतिकाषष्ठी पूजाका विधान कृत्यतत्त्वमें रघुनन्दनने निर्देश किया है। शास्त्रमें इस सूतिकाषष्ठीकी पूजा छठी रातको ही करने कहा है, किन्तु छठे दिनमें पूजा न हो कर अशौचान्तके दिन अर्थात् ब्राह्मणोंके पुत्र जनने पर २२वें दिनमें और कन्या जनने पर ३१वें दिनमें भी हो सकती है।

कहीं कहीं ऐसा व्यवहार है, कि उक्त २२वें या ३१वें दिन सोम शुक्रवारमें हो, तो उस दिन षष्ठीपूजा नहीं होगी उसके दूसरे दिन होगी, परन्तु इसका कोई प्रमाण देखनेमें नहीं आता।

सूतिकाहररस (सं० पु०) सूतिका रोगकी एक औषध। इसमें हिंगुल, हरताल, शम्ब-भस्म, लौह, खर्पर, धतूरेके बीज, यवक्षार और सुहागेका लावा बराबर बराबर पड़ता है। इन चीजोंमें बहेड़ेके क्वाथकी भावना दे कर मटरके बराबर गोली बनाते हैं। कहते हैं, कि इसके सेवनसे सूतिका रोग दूर हो जाता है।

सूतिगृह (सं० क्ली०) सूतिकागार देखो।

सूतिमारुत (सं० पु०) प्रसव-पीड़ा, बच्चा जननेके समयकी पीड़ा।

सूतिमास (सं० पु० प्रसवमास, वह मास जिसमें किसी स्त्रीको सन्तान उत्पन्न हो।

सूतिवात (सं० पु०) सूतिमारुत देखो।

सूती (हिं० वि०) १ सूतका बना हुआ। (स्त्री०) २ सीपो। ३ वह सीपी जिससे डोडेमेंसे आफीम काछते हैं। ४ सूतकी पानी, भाटिन।

सूतीघर (हिं० पु०) सतिकागार देखो।

सूत्कार (सं० पु०) सीत्कार देखो।

सूत्त (सं० त्रि०) सु-दा (अच उपसर्गात् तः। पा ७।४।४७) इति त। सुदत्त, उत्तम रूपसे दिया हुआ।

सूत्तर (सं० त्रि०) बहुत श्रेष्ठ, बहुत बढ़कर।

सूत्थान (सं० त्रि०) १ चतुर होशियार। (क्ली०) २ सुन्दर रूपसे उत्थान।

सूत्य (सं० क्ली०) १ सुरापान, शराब चुआनेकी क्रिया। २ वर्तार शब्द।

सूत्यलावती (सं० स्त्री०) मार्कण्डेयपुराणके अनुसार एक नदी। यह मलय पर्वतसे निकली है।

सूत्य (सं० क्ली०) सुत्य देखो।

सूत्या (सं० स्त्री०) १ यज्ञके उपरान्त होनेवाला स्नान, अवभृत। २ सोमरस निकालनेकी क्रिया। ३ सोमरस पीनेकी क्रिया।

सूत्याशौच (सं० क्ली०) जननाशौच, सूतिकाशौच।

सूत्र (सं० क्ली०) सूत्र-णिच्, 'पचत्' इत्यच्, यद्वा षिवु (षिविमुच्योर्टेरू च। उण् ४।१६२) इति ष्ट्रन, टेरूत्व। १ सूत, तन्तु, तागा, डोरा। २ यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत, जनेऊ। ३ व्यवस्था, नियम। ४ कटिभूषण, करधनी। ५ रेखा, लकीर। ६ प्राचीनकालका एक मान। ७ एक प्रकारका वृक्ष। ८ निमित्त, कारण, मूल। ९ पता, सुराग। १० थोड़े अक्षरों या शब्दोंमें कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो, सारगर्भित संक्षिप्त पद या वचन। हमारे यहांके दर्शन आदि शास्त्र तथा व्याकरण सूत्ररूपमेंही ग्रथित हैं। ये सूत्र देखनेमें तो बहुत छोटे वाक्योंके रूपमें होते हैं, पर उनमें बहुत गूढ़ अर्थ गर्भित होते हैं।

सूत्रक (सं० क्ली०) सूत्रमेव सूत्र स्वार्थे कन्। १ सूत, तंतु, तार। २ हार। ३ आटे या मैदेकी बनी हुई सिवई।

सूत्रकण्ठ (सं० पु०) १ ब्राह्मण। सूत्रकण्ठस्थ रहनेके कारण अथवा गलेमें यज्ञसूत्र पहननेके कारण ब्राह्मणसूत्रकण्ठ कहलाते हैं। २ खञ्जरीट, खञ्जन। ३ कपोत, कबूतर।

सूत्रकर्त्तृ (सं० स्त्री०) सूत्र-प्रणेता, सूत्रग्रन्थके रचयिता।

सूत्रकर्मन् (सं० क्ली०) १ बढ़ईका काम। २ मेमार या राजका काम।

सूत्र कर्मकृत् (सं० पु०) १ बढ़ई। २ गृहनिर्माणकारी, वास्तुशिल्पी, मेमार, राज।

सूत्रकार (सं० पु०) १ वह जिसने सूत्रोंकी रचना की हो, सूत्र रचयिता। २ कीटभेद, मकड़ी। ३ बढ़ई। ४ तन्तुवाय, जुलाहा।

सूत्रकृत् (सं० पु०) १ सूत्ररचयिता, सूत्रकार। २ बढ़ई। ३ राज, मेमार।

सूत्रकोण (सं० पु०) डमरू। (हारावली)

सूत्रकोणक (सं० पु०) सूत्रकोण देखो।

सूत्रकोश (सं० पु०) सूतकी अंटी, पेचक, लच्छा।

सूत्रक्रीड़ा (सं० स्त्री०) एक प्रकारका सूतका खेल जो ६ कलाओंमेंसे एक है।

सूत्रखण्डमोदक (सं० पु०) खण्ड लड्डुकविशेष।

सूत्रगण्डिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका लकड़ीका औज़ार जिसका उपयोग प्राचीनकालमें तन्तुवाय लोग कपड़ा बुननेमें करते थे।

सूत्रग्रन्थ (सं० पु०) मूल सूत्ररूपमें रचितग्रन्थ, वह ग्रन्थ जो सूत्रोंमें हो।

सूत्रग्रह (सं० पु०) सूत्रधारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रजाल (सं० क्ली०) सूताका जाल।

सूत्रण (सं० क्ली०) १ सूत्र बनाने या रचनेकी क्रिया। २ सूत बटनेकी क्रिया।

सूत्रतन्तु (सं० पु०) सूत्रमेव तन्तुः। सूत, सूत, तार।

सूत्रतर्कुटी (सं० स्त्री०) तर्कुटी, तकला, टेकुवा।

सूत्रदरिद्र (सं० त्रि०) सूत्रहीन, जिसमें सूत कम हो, झंझरा।

सूत्रधर (सं० पु०) १ वह जो सूत्रोंका पण्डित हो। २ सूत्रधार देखो। (त्रि०) ३ सूत्र या सूत धारण करनेवाला।

सूत्रधार (सं० पु०) १ शचीपति, इन्द्र। २ नाट्यशालाका व्यवस्थापक या प्रधान नट। यह भारतीय नाट्य शास्त्रके अनुसार पूर्व रंग अर्थात् नान्दी पाठके उपरान्त खेले जानेवाले नाटककी प्रस्तावना करता है। विशेष

विवरण नाटक शब्दमें देखो। ३ पुराणानुसार एक वर्ण-सङ्कर जाति जो लकडी आदि बनाने और चीरने या गढनेका काम करती है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, इस जातिकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पितासे है।

आधुनिक ब्रह्मवैवर्त्तमें सूत्रधारकी गिनती हीन जाति में की गई है, फिर भी अति पूर्वकालमें यह जाति वैसी हीन नहीं समझी जाती थी। उस समय इस जातिके लोग रथकार माने जाते थे। गदाधरकृत पारस्करगृह्य-सूत्रभाष्यमें 'एवं रथकारस्तु उपनयन' इस प्रकार रथकार-के उपनयनकी व्यवस्था रहनेसे इस जातिको हीन वर्ण नहीं मान सकते।

सूत्रधारी (सं० स्त्री०) १ सूत्रधार अर्थात् नाट्यशाला-के व्यवस्थापककी पत्नी, नटी। (पु०) २ सूत्रधारण करनेवाला।

सूत्रधृक् (सं० पु०) १ सूत्रधार देखो। २ वास्तुशिल्पी. मेमार, राज।

सूत्रपत्रकर (सं० क्ली०) टिन।

सूत्रपत्रणी (सं० स्त्री०) पित्तल, पीतल।

सूत्रपात (सं० पु०) प्रारम्भ, शुरू।

सूत्रपिटक (सं० पु०) बौद्ध सूत्रोंका एक प्रसिद्ध संग्रह। त्रिपिटक देखो।

सूत्रपुष्प (सं० पु०) कार्पास, कपासका पौधा।

सूत्रभिद् (सं० पु०) सौचिक, कपडे सोनेवाला, दरजी।

सूत्रमध्यभू (सं० पु०) यक्षधूप, शल्लकी निर्यास, धूना।

सूत्रमय (सं० त्रि०) सूत्र-स्वरूप।

सूत्रयन्त्र (सं० क्ली०) १ सूतका बना जाल। २ करघा, ढरकी।

सूत्रयी (सं० त्रि०) सूत्र जानने या रचनेवाला।

सूत्रला (सं० स्त्री०) तकुंटी, तकला, टेकुवा।

सूत्रवाप (सं० पु०) सूत्रवपन, सूत बुननेकी क्रिया, बुनाई।

सूत्रविक्रयिन् (सं० त्रि०) सूत्रविक्रयकारी, सूत बेचने-वाला।

सूत्रविद् (सं० पु०) सूत्रोंका ज्ञाता या पण्डित।

सूत्रवीणा (सं० स्त्री०) सूत्रवद्धा वीणा, प्राचीन कालकी एक प्रकारकी वीणा जिसमें तारकी जगह बजानेके लिये सूत लगे रहते थे।

सूत्रवेष्टन (सं० क्ली०) १ करघा, ढरकी। २ बुननेकी क्रिया, वयन।

सूत्रशाख (सं० पु०) शरीर।

सूत्रस्थान (सं० क्ली०) सुश्रुतोक्त प्रथम स्थान। इस स्थानमें आयुर्वेदके सूत्र सूचित हुए हैं, इसीसे इसका नाम सूत्रस्थान हुआ है। सुश्रुतके सूत्रस्थानमें इसका विशेष विवरण लिखा है।

सूत्राङ्क (सं० क्ली०) उत्तम कांस्य, बढिया कांसा।

सूत्रात्मा (सं० पु०) १ जीवात्मा। २ एक प्रकारकी परम सूक्ष्म वायु जो धनञ्जयसे भी सूक्ष्म कही गई है।

सूत्रामन (सं० पु०) सु-त्रै (सर्वधातुभ्योमनिन्। उण् ४।१४४) इति मनिन्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घत्व। इन्द्र।

सूत्रालङ्कार (सं० पु०) १ बौद्ध ग्रन्थविशेष। २ सूत्र द्वारा ग्रथित अलङ्कार।

सूत्राली (सं० स्त्री०) १ गलसूत्र, गलेमें पहननेको मेखला। २ माला, हार।

सूत्री (सं० पु०) १ काक, कौआ। २ सूत्रधार देखो। (त्रि०) ३ सूत्रयुक्त, जिसमें सूत्र हो।

सूत्रीय (सं० त्रि०) सूत्र-सम्बन्धीय, सूतका।

सूथन (हिं० स्त्री०) १ पायजामा, सुथना। (पु०) २ एक प्रकारका पेड जो बरमा, श्याम और मणिपुरके जंगलोंमें मिलता है। इसकी लकडी बहुत अच्छी होती है और इसका रस वार्निशका काम देता है। इसका दूसरा नाम 'खेऊ' भी है।

सूथनी (हिं० स्त्री०) १ स्त्रियोंके पहननेका पायजामा, सुथना। २ एक प्रकारका कन्द।

सूथार (हिं० पु०) बढई, सुनार।

सूद (सं० पु०) १ सूपकार, रसोइया। २ व्यञ्जन, पकी हुई दाल, रसा, तरकारी आदि। ३ सारथ्य, सारथिका काम। ४ अपराध, पाप। ५ लोध्र, लोध। ६ दोष, ऐब।

सूद (फा० पु०) १ लाभ, फायदा। २ वृद्धि, ब्याज।

सूदक (सं० त्रि०) विनाश करनेवाला।

सूदकर्म (सं० क्लो०) रन्धन, पाककी क्रिया, भोजन बनाना।

सूदकशाला (हिं० स्त्री०) पाकशाला, रसोईघर।

सूदखोर (फा० पु०) वह जो खूब सूद या व्याज लेता हो।

सूदत्व (सं० पु०) सूद या रसोइयेका पद या काम, रसोई दारी।

सूदन (सं० क्लो०) सूद ल्युट्। १ अङ्गीकरण, अङ्गीकार या स्वीकार करनेकी क्रिया। २ हनन, वध या विनाश करनेकी किया। ३ निक्षेपण, फेंकनेकी क्रिया। ४ हिन्दीके एक प्रसिद्ध कविका नाम। ये मथुराके रहनेवाले थे। इनका लिखा सुजानचरित' वीररसका एक प्रसिद्ध काव्य है।

सूदशाला (सं० स्त्री०) पाकशाला, रसोईघर।

सूदशास्त्र (सं० क्लो०) पाकशास्त्र, भोजन बनानेकी कला।

सूदा (हिं० पु०) ठगोंके गरोहका वह आदमी जो यात्रियों-को फुसला कर अपने दलमें ले आता है।

सूदाध्यक्ष (सं० पु० पाकशालाध्यक्ष, रसोइयोंका मुखिया या सरदार। पर्याय—पौरोगव, पुरोगम। मत्स्यपुराण-में लिखा है, कि सूदाध्यक्ष अति शुचि, दक्ष, चिकित्सा-शास्त्रपरायण तथा पाककार्यमें विशेष कुशल होगा।

सूदित (सं० त्रि०) १ आहत, जख्मी। २ विनष्ट, जो नष्ट हो गया हो। ३ निहत जो मार डाला गया हो।

सूदितृ (सं० त्रि०) सूद तृच्। १ पाचक, रसोइया। २ घातक, वध या विनाश करनेवाला।

सूदी (फा० वि०) १ व्याजू, जो सूद या व्याज पर हो। २ व्याज पर लिया हुआ।

सूद्गातृ (सं० पु०) उत्तम उद्गाता। (कृष्णयजु०)

सूधा (हिं० वि०) १ साधा, सरल। २ जो टेढ़ा न हो, सीधा। ३ इस प्रकार पड़ा हुआ कि मुंह, पेट आदि शरीरका अगला भाग ऊपरकी ओर हो, चित। ४ सम्मुख-का, सामनेका। ५ जो उलटा न हो, जो ठीक और साधा रण स्थितिमें हो। ६ जो सीधी रेखामें चला गया हो, जिसमें वक्रता न हो।

सूधे (हिं० क्रि०) सीधेसे।

सून (सं० क्लो०) सू क्त (ओदितश्च। पा ८।२।४५) इति निष्ठा तस्य नत्वं। १ प्रसव, जनन। २ पुष्प, फूल। ३ कलिका, कली। ४ फल। ५ पुत्र। (त्रि०) ६ विक-सित, खिला हुआ। ७ जात, उत्पन्न।

सून (हिं० पु०) एक प्रकारका बहुत बड़ा सदा बहार पेड़। यह शिमलेके आस पासके पहाड़ों पर बहुत होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और इमारतोंमें लगती है। इसका दूसरा नाम 'चिन' भी है।

सूनर (सं० त्रि०) जो सुखसे लिया जाय।

सूनवत् (सं० त्रि०) सू क्त-वतु, तस्य न। जात, उत्पन्न।

सूना (सं० स्त्री०) सूयते स्मेति सू क्त, टाप्। १ पुत्री, बेटी। सुञ्ज पीड़ने (सुञो दीर्घश्च। उण् ३।१३) इति न, दीर्घश्च धातोः। २ वधस्थान, बूचड़ स्थान, कसाई स्थान। ३ गलशुण्डिका, जीभी। ४ मृगादि मांस विक्रय, हरिण आदिके मांसकी बिक्री। ५ मृगपशु मारनेका स्थान। ६ हत्या, घात। ७ मांस बेचनेका स्थान। ८ गृहस्थके यहां ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा, झाड़ूमेंसे कोई चीज जिसमें जीवहिंसा की संभावना रहती है। गृहस्थ चाहे कितनी ही साव-धान से क्यों न रहें, उन्हें पञ्चसूनाजनित पाप होगा ही। प्रति दिन जिस प्रकार पञ्चसूनाजनित पाप होता है, उसी प्रकार पञ्च महायज्ञका अनुष्ठान करनेसे वह पाप जाता रहता है। किन्तु जो गृहस्थ पञ्च महायज्ञका अनुष्ठान नहीं करता, उसे इस पापके लिये नरक जाना पड़ता है। महायज्ञ देखो।

सूना (हिं० वि०) १ जनहीन, सुनसान। (पु०) २ निर्जन स्थान, एकान्त।

सूनादोष (सं० पु०) चूल्हा, चक्की, ओखली, झाड़ू और पानीके घड़ेसे होनेवाली जीवहिंसाका दोष या पाप। पञ्चसूना देखो।

सूनापन (सं० पु०) १ सूना होनेका भाव। २ एकान्त, सन्नाटा।

सूनावत् (हिं० पु०) मांसविक्रयी, व्याध।

सूनिक (सं० पु०) व्याध, मांस बेचनेवाला।

सूनिन् (सं० पु०) मांसविक्रयी, व्याध। इसके हाथ से दान नहीं लेना चाहिये, लेनेसे पतित होना पड़ता है।

सूनु (सं० पु०) सूयते इति सू (सुवः कित्। ३।३५)

इति नु, सच कित्। १ पुत्र, बेटा। २ अनुज, छोटा भाई। ३ सूर्य। ४ अर्कवृक्ष, आक। ५ दौहित्र, नाती। ६ एक वैदिक ऋषिका नाम। ७ वह जो सोमरस चुवाता हो।

सूनू (सं० स्त्री०) सूनु बाहुलकात् ऊङ्। कन्या, पुत्री।

सूनृत (सं० क्ली०) १ सत्य और प्रिय भाषण जो जैन धर्मानुसार सदाचरणके पांच गुणोंमेंसे एक है। २ आनन्द, मङ्गल। (त्रि०) ३ सत्य और प्रिय। ४ अनुकूल, दयालु।

सूनृता (सं० स्त्री०) १ सत्य और प्रिय भाषण। २ सत्य। ३ धर्मकी पत्नीका नाम। ४ एक अप्सराका नाम।

सूनृतावत् (सं० त्रि०) सत्य और प्रियवाक्ययुक्त।

सून्मद (सं० त्रि०) उन्मत्त, पागल।

सून्माद (सं० त्रि०) उन्मादरोगविशिष्ट, पागल।

सूप (सं० पु०) सौति रसानि सु (कुसुभ्यामिच्च। उण् ३।२६) इति च, चकारात् कित् दीर्घत्वञ्च। १ मूंग, मसूर, अरहर आदिकी पकी हुई दाल। दली हुई और भूसी निकाली हुई मूंग मसूर आदिको दाल कहते हैं। इस दालको जलमें सिद्ध कर लवण, अदरक और हींग मिला कर पाक करे। इसीको सूप कहते हैं। यह सूप विष्टम्भ, रूक्ष और शीतवीर्य होता है। बिना दली हुई, पर भूसी निकाली हुई दाल सिद्ध करनेसे वह लघु होती है। (भावप्र०)

२ दालका जूस, रसा। ३ रसेकी तरकारी आदि, व्यञ्जन। ४ बरतन, भांड। ५ पाचक, रसोइया। ६ बाण, तीर।

सूप (हिं० पु०) १ अनाज फटकनेका बना हुआ पात्र, सरई या सीकका छाज। २ कपडे या सनका झाडू जिससे जहाजके डेक आदि साफ किये जाते हैं। ३ एक प्रकारका काला कपडा।

सूपक (हिं० पु०) रसोइया।

सूपकर्तृ (सं० पु०) सूपस्य कर्त्ता। सूपकार।

सूपकार (सं० पु०) पाककर्त्ता, रसोइया। जो इङ्गिताकारतत्त्वज्ञ अर्थात् इशारेसे कुल समझ जाता है, जो बलवान्, शूर और कठिन है तथा पाक भली भांति कर सकता है, उसीको सूपकार कहते हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके प्रकृतिखण्डमें लिखा है, कि जो ब्राह्मण शूद्रका पाक कर जीविका निर्वाह करते हैं, वे नीच सूपकार हैं। यह सूपकार पतित और महापातकी होता है, इसके हाथका अन्न नहीं खाना चाहिये।

सूपकृत् (सं० पु०) सूपं करोतीति कृ क्विप् तुक् च। पाचक, रसोइया।

सूपगन्धि (सं० त्रि०) सूपस्य अल्पः गंधो यत्र (अल्पाख्यायां। पा ५।४।१३६) इति समासान्त इ। अल्प सूपगंधयुक्त।

सूपचर (सं० त्रि०) उत्तम उपचारयुक्त।

सूपचरण (सं० त्रि०) उत्तम उपचरणविशिष्ट।

सूपचार (सं० त्रि०) उत्तम उपचारयुक्त।

सूप झरना (हिं० पु०) सूपकी तरहका सरईका एक बरतन। सूपसे इसमें अन्तर इतना ही है, कि हर दो सरइयोंके बीचमें एक सरई नहीं होती जिसके कारण सूपके बीचमें ही झरना-सा बन जाता है। इसमें बारीक अनाज नीचे गिर जाता और मोटा ऊपर रह जाता है।

सूपडा (हिं० पु०) सूप, छाज।

सूपधूपक (सं० पु०) हींग।

सूपधूपन (सं० क्ली०) सूपस्य धूपनमस्मादिति। हिंगु, हींग।

सूपनखा (हिं० स्त्री०) शूर्पणखा देखो।

सूपपर्णी (सं० स्त्री०) मुद्गपर्णी, वनमूंग।

सूपप्रलम्भ (सं० त्रि०) शोभन प्रलम्भ, सुप्रतिष्ठ।

सूपविष्ट (सं० त्रि०) सुखोपविष्ट, सुखसे बैठा हुआ।

सूपशास्त्र (सं० पु०) पाकशास्त्र, भोजन बनानेकी कला।

सूपश्रेष्ठ (सं० पु०) मुद्ग, मूंग।

सूपसंस्कृत (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे संस्कारविशिष्ट।

सूपसदन (सं० त्रि०) उत्तम स्थानयुक्त।

सूपस्कर (सं० त्रि०) उत्तम उपस्करविशिष्ट।

सूपस्थ (सं० त्रि०) उत्तम सेवा। (शुक्लयजु० २१।६०)

सूपस्थान (सं० त्रि०) १ सुन्दररूपसे उपस्थानयुक्त। (क्ली०) २ पाकशाला, रसोईघर।

सूपाङ्ग (सं० क्ली०) सूपस्य अङ्गं तत्साधनत्वात्। सूप-धूपन, हींग।

सूपा (हिं० पु०) शूर्प, सूप।

सूपाय (सं० त्रि०) सदुपाय, उत्तम उपाययुक्त।

सूपायन (सं० त्रि०) १ उत्तम प्राप्तिविशिष्ट। (ऋक् १।१।९) २ उत्तम उपायनविशिष्ट।

सूपावसान (सं० त्रि०) उत्तम विश्रामस्थानविशिष्ट।

सूपिक (सं० पु०) १ पकी हुई दाल या रसा आदि। २ सूपकार, रसोइया।

सूपीय (सं० त्रि०) सूप्य, सूपसम्बन्धीय।

सूपोदन (सं० पु०) दाल और भात।

सूप्य (सं० त्रि०) सूप (विभाषा हविरपूपादिभ्यः। पा ५।१।४) इति यत्। १ सूप-सम्बन्धी। २ दाल या रसेके लायक। (पु०) ३ रसेदार खाद्य पदार्थ।

सूफ (अ० पु०) १ ऊन, पशम। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावातमें डाला जाता है।

सूफी—धर्मसम्प्रदायविशेष। इन लोगोंका मत भारतीय वैदान्तिककी तरह ज्ञानमूलक है। पाश्चात्यधर्मतत्त्वविद् मल् चिरणीने लिखा है, कि ये लोग आत्मज्ञानमार्गी हैं तथा यह मत वेदान्तके पुनराविर्भाव मात्र है। किसी किसीके मतसे ग्रीक 'sofos' सफस शब्दसे तथा किसी-के मतमें अरबी पशमवाचक सुफ शब्दसे सूफी शब्दकी उत्पत्ति हुई है। अंतिम मतका कारण यह है, कि दर-वेशोंमेंसे बहुतेरे ही ऊनकी पोशाक पहनते हैं। ये लोग बहुत कुछ हिन्दूके योगी और ईसाइयोंके साथ मिलते जुलते हैं। सूफी सम्प्रदायके दर्शनशास्त्रका नाम तसा ओयफ है। कुरान और हादिसके कुछ दुर्बोध्य श्लोकोंको ले कर यह बनाया गया है। इसके मतसे एकमात्र ईश्वर ही सत्पुरुष हैं, पार्थिव जगत्में जो कुछ देखा जाता है, वह उसी सत्पुरुषसे उत्पन्न हुआ है और पीछे इसी सत्पुरुषमें आ कर फिर लीन होगा। इस कारण इस धर्ममतको तरिकत् या मोक्षमार्ग कहते हैं। आध्यात्मिक उन्नतिके स्तरानुसार इस सम्प्रदायके साधक सालिक (फकीर परिव्राजक) और मनाजिल नामक दो भागोंमें विभक्त हैं। इस मतमें बाह्यक्रियाकर्मका अनुष्ठान-बाहुल्य नहीं धर्ममतावलम्बी अभ्यन्तरमें जगद्व्यापक जन ईशसत्ताका अस्तित्व मालूम कर मन ही मन उनकी अर्चना करते हैं। भगवत् प्रेम, भगवान्के साथ मिलन, जीवात्माके क्षय और परमात्माके लय, भगवान्के अनन्त जीवन लाभ आदि पर सूफी लोग विश्वास करते हैं।

ये लोग अद्वैतवादी हैं, सभी भूतोंमें, सभी दृष्ट जगत्में ये लोग भगवानका अस्तित्व स्वीकार करते हैं। सूफी-मत बहुत प्राचीन है। गवरोंने इन्हें वाहिया-दरन्, रोशन दिल और हिन्दुओंने ज्ञानेश्वर या आत्मज्ञानीकी आख्या दी है। ग्रीक लोग प्राचीन कालसे ही इन्हें प्लेटोके मतावलम्बी समझते आ रहे हैं। १ली सदीके शेष भागमें इस योगमार्गाश्रयी दैवतत्त्वानुसन्धित्सु सम्प्रदायका अभ्युत्थान हुआ। अरबियोंने इन्हें सूफीकी आख्या दी है। ३री सदीके बीतते न बीतते इसने पुष्ट कले-वर धारण किया। पीछे मुसलमान लोग इस मतका एक घोर आन्दोलन खडा कर सूफीमतको उन्नतिकी चरमसीमा पर लाये। उसीके फलसे कितने पाण्डित्य-पूर्ण ग्रन्थ प्रचारित हुए।

तुरुष्क देशमें सूफीमतका प्रभाव बहुत फैल गया। महम्मदीय सभ्यताका यही एक प्रकृष्ट निदर्शन है।

कुस्तुनतुनियामें इनके दो सौ मठ और तुरुष्क देशमें बत्तीस स्वतन्त्र शाखा हैं। वे लोग फकीर कहलाते हैं। प्रत्येक उपसम्प्रदायका स्वतन्त्र विद्यालय, स्वतन्त्र शिक्षाप्रणाली, स्वतन्त्र परिभाषा, स्वतन्त्र आचार व्यवहार, स्वतन्त्र महापुरुष आदि हैं। १९वीं सदीको तुरुष्कमें मुसलमानका जो पुनरभ्युत्थान हुआ है, वह भी इसी सूफी सम्प्रदायकी चेष्टासे।

भारतवर्षमें सूफी सम्प्रदायके प्रति वैसी श्रद्धा देखनेमें नहीं आती। मुल्लाशाह नामक एक सूफी कवि और साधकका १६६१-६२ ई०को लाहोरमें देहान्त हुआ। सम्राट् शाहजहाकी लडकीके फतीमाने उसके मकबरेके ऊपर स्मृतिस्तम्भ खडा करवाया।

सूब (हिं० पु०) तांबा।

सूबडा (हिं० पु०) वह चांदी जिसमें तांबे और जस्ते-का मेल हो।

सूबडी (हिं० स्त्री०) पैसेका आठवां भाग, दमडी।

सूवा (फा० पु०) १ किसी देशका कोई भाग या खंड, प्रान्त, प्रदेश । २ सूबेदार देखो ।

सूबेदार (फा० पु०) १ किसी सूबे या प्रान्तका बड़ा अफसर या शासक, प्रादेशिक शासक । २ एक छोटा फौजी ओहदा ।

सूबेदार मेजर (फा० पु०) फौजका एक छोटा अफसर ।

सूबेदारी (फा० स्त्री०) १ सूबेदारका ओहदा या पद । २ सूबेदारका काम । ३ सूबेदार होनेकी अवस्था ।

सुभर्व (सं० त्रि०) शोभन भक्षणयुक्त ।

सूम (सं० क्ली०) सू-(इषियुधीति । उण् ११४०) इति मक् । १ क्षीर, दूध । २ आकाश । ३ जल ।

सूम (अ० वि०) कृपण, कंजूस, बखील ।

सूमय (सं० त्रि०) सुसुख । (ऋक् ८।६६।११)

सूमलू (हिं० पु०) चित्रा या चीता नामक पौधा ।

सूमी (हिं० पु०) एक बहुत बड़ा पेड़ । यह मध्य तथा दक्षिण भारतके जंगलोंमें होता है । इसकी लकडी इमारतोंमें लगती और मेज, कुर्सी आदि बनानेके काममें आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं।

सूय (सं० क्ली०) १ यज्ञ । २ सोमरस निकालनेकी क्रिया ।

सूरंजान (फा० पु०) केसरकी जातिका एक पौधा । इसका कंद दवाके काममें आता है । यह पश्चिमी हिमालयके समशीतोष्ण प्रदेशोंमें पहाड़ोंकी ढाल पर घासोंके बीच उगता है और एक बालिश्त ऊंचा होता है । फारसमें भी यह बहुत होता है । इसमें बहुत कम पत्ते होते हैं और प्रायः फूलोंके साथ निकलते हैं । फूल लंबे होते हैं और सी कोंमें लगते है । इसकी जड़में लहसुनके समान, पर उससे बड़ा कंद होता है जो कड़वा और मीठा दो प्रकारका होता है । मीठा कंद फारससे आता है और खानेकी दवाके काममें आता है । कड़वा कंद केवल तेल आदिमें मिला कर मालिशके काममें आता है। इसके बीज विषैले होते हैं, इससे बड़ी सावधानीसे थोड़ी मात्रामें दिये जाते हैं । यूनानी चिकित्साके अनुसार सूरंजान रूखा, रुचिकर तथा वात, कफ, पाण्डुरोग, प्लीहा, सन्निपात आदिको दूर करनेवाला माना जाता है ।

सूर (सं० पु०) सूत जगदिति सू (सु सू धाञ् गृधिभ्यः क्रन् । उण् २।२४) इति क्रन् । १ सूर्य । (ऋक् १।११६।१२) २ अर्कवृक्ष, आक, मदार । ३ वर्त्तमान अवसर्पिणीके सत्रहवें अर्हत् कुन्थुके पिताका नाम । ४ पण्डित, आचार्य । ५ मसूर । ६ सूरदास देखो । ७ अंधा । सूरदास अंधे थे, इससे 'अंधा'-के अर्थमें यह शब्द प्रचलित हो गया । ८ छप्पय छन्दके ७१ भेदोंमेंसे ५५वें भेदका नाम । इसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएं होती हैं ।

सूर (हिं० पु०) १ शूल देखो । २ पठानोंकी एक जाति ।

सूरकन्द (सं० पु०) कन्दविशेष, जमीकंद, सूरन, ओल ।

सूरकान्त (सं० पु०) सूर्यकान्त देखो ।

सूरकुमार (हिं० पु०) वसुदेव ।

सूरकृत् (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम ।

सूरचक्षस् (सं० त्रि०) सूर्यके समान प्रकाशमान ।

सूरज (हिं० पु०) १ सूर्य । सूर्य देखो । २ एक प्रकारका गोदना जो स्त्रियां दाहिने हाथमें गुदाती हैं । ३ सूरदास देखो । ४ शनि । ५ सुग्रीव ।

सूरज भगत (हिं० पु०) एक प्रकारकी गिलहरी जो लम्बाईमें १६ इंच होती है और भिन्न भिन्न ऋतुओंके अनुसार रंग बदलती है । वह नेपाल और आसाममें पाई जाती है ।

सूरजमुखी (हिं० पु०) १ एक प्रकारका पौधा । इसमें पीले रंगका बहुत बड़ा फूल लगता है । यह ४।५ हाथ ऊंचा होता है । इसके पत्ते डंठलकी ओर चौड़े और आगेकी ओर पतले तथा कुछ खुरदुरे और रोईंदार होते हैं । फूलका मंडल एक बालिश्तके करीब होता है । बीच में एक स्थूल केन्द्र होता है जिसके चारों ओर गोलाईमें पीले पीले दल निकले होते हैं । सूर्यास्तके लगभग यह फूल नीचेकी ओर झुका जाता है, सूर्योदय होने पर फिर ऊपर उठने लगता है । इसमें कुसुमके-से बीज पड़ते हैं । इसके बीज हर ऋतुमें बोये जा सकते है, पर गरमी और जाड़ा इसके लिये अच्छा है। यह पौधा दूषित वायुको शुद्ध करनेवाला माना जाता है। वैद्यकमें यह उष्णवीर्य, अग्निदीपक, रसायन, चरपरा, कड़ुवा, कसैला, रूखा, दस्तावर, स्वर शुद्ध करनेवाला तथा कफ, वात, रक्तविकार,

खाँसी, ज्वर, विस्फोटक, कोढ़, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म आदिका नाशक कहा गया है। २ वह हलकी बदली जो संध्या सबेरे सूर्यमंडलके आस पास दिखाई पड़ती है। ३ एक प्रकारकी आतिशबाजी। ४ एक प्रकारका छत्र या पंखा।

सूरजसुत (हिं० पु०) सुग्रीव।

सूरजसुता (हिं० स्त्री०) सूर्यसुता देखो।

सूरजा (सं० स्त्री०) सूर्याकी पुत्री यमुना।

सूरण (सं० पु०) जमीकन्द, ओल। कार्तिक मासमें ओल नहीं खाना चाहिये, खानेसे गोमांसभक्षण सदृश पातक होता है। सूरन देखो।

सूरत (सं० त्रि०) सु-रम (गौरमतेः को दमे पूर्वपदस्य च दीर्घः। उण् ५।१४) इति क, सुशब्दस्य च दीर्घः। दयालु, मेहरबान।

सूरत (फा० स्त्री०) १ रूप, आकृति, शक्ल। २ छवि, शोभा, सौन्दर्य। ३ अवस्था, दशा, हालत। ४ युक्ति, उपाय, ढंग।

सूरत (अ० स्त्री०) कुरानका कोई प्रकरण।

सूरत (हिं० पु०) एक प्रकारका जहरीला पौधा। यह दक्षिण हिमालय, आसाम, बरमा, लंका, पेराक और जावामें होता है। इसे चोरपट्टा भी कहते हैं। चोरपट्टा देखो।

सूरत—बम्बई प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २०° १७ से २१° २८´ ३० तथा देशा० ७२° ३५´ से ७३° २६´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १६५३ वर्गमील है। इसके उत्तरमें भड़ौंच जिला और बड़ौदानामक देशी राज्य; पूर्वमें बड़ौदा, राजपिपला, वासदा और धर्मपुर राज्य, दक्षिणमें थाना जिला और पुर्त्तगीजाधिकृत दमन नामक प्रदेश तथा पश्चिममें अरब उपसागर है। बड़ौदा राज्यका कुछ अंश निकल आने पर इसे उत्तर पश्चिम और पूर्व-दक्षिण इन दो अंशोंमें विभक्त किया गया है।

यह जिला समुद्रगर्भसे निकला है। इसका पृष्ठदेश समतल है। यहां कृषिजीवीकी संख्या बहुत थोड़ी है, अधिवासी प्रधानतः नाविकका कार्य और सूखी मछली बेच कर गुजारा चलाते हैं।

यहां तासी और किम नदी ही उल्लेखयोग्य है। ये दोनों नदियां जिलेके उत्तरसे बह गई हैं। किमके जलमें नावोंके आने जानेकी सुविधा नहीं है, खेतीबारी में भी उससे कोई मदद नहीं मिलती। तासी नदी सूरत जिलेमें ५०से ७० मील तक बह गई है। इनमेंसे ३२ मील तक स्रोतका जल आता जाता है। यहांकी जमीन बड़ी उपजाऊ है। पश्चिम-भारतवर्षमें नर्मदाके बाद ही तासी नदी पुण्यतोया समझी जाती है। जिलेके दक्षिणमें कोई नदी या खाई नहीं है, किन्तु कुछ गहरे और नावें आने जाने योग्य वारिपथ आवश्यक हैं। इसके सिवा देशमें बहुत-सी पुष्करिणी और छोटे छोटे जलाशय हैं।

सूरत शहर और साथ साथ सूरत जिला अति प्राचीनकालमें पाश्चात्य जातियोंके संस्रवमें आया था। बहुत दिनोंसे यह भारतवर्षका एक प्रधान सामुद्रिक बन्दर कहलाता आ रहा है। ख०पू० १५० अब्दमें ही ग्रीकदेशीय भौगोलिक टलेमी सूरत शहरके पुलिपुल, शायद फूलवाड़ नामक अंशके वाणिज्यका हाल लिख गये हैं। मुसलमान ऐतिहासिकोंके मतसे कुतुबुद्दीन अनहिलवार राजपूतराजको परास्त कर दक्षिण रन्दर और सूरत शहर तक आगे बढ़ा था। यह १३वीं सदीकी बात है। इससे जाना जाता है, कि सूरत शहर उसके भी बहुत पहले बसाया गया था। किन्तु यह शहर कब बसाया गया, ठीक ठीक मालूम नहीं। १३४७ ई०को जब गुजरातमें विद्रोह खड़ा हुआ, तब बादशाही सेनाओंने इसे लूट पाट कर उजाड़ सा बना दिया था। इसके बाद १३७ ई०में उस समयके शासनकर्त्ता फिरोज तुगलकने भीलोंके आक्रमणसे बचानेके लिये यहां एक दुर्ग बनवाया। कुतुबुद्दीनके समय यहां एक स्वाधीन हिन्दू राजा थे। सूरत नगरसे १३ मील पूरब कामरेज नामक स्थानमें उनकी पक्ष हुई था। युद्धमें आत्मसमर्पण करने पर मुसलमान सम्राट्ने उन्हें राज्य लौटा दिया। पीछे सूरत कब मुसलमान शासनकर्त्ताके अधीन हुआ, ठीक तौरसे नहीं कहा जा सकता।

वारबोसा नामक एक पुर्त्तगीज-परिव्राजकने १५१६ ई०में सूरतके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है,—यह एक

विशेष उल्लेखयोग्य और प्रधान सामुद्रिक बन्दर है। मलवार और अन्यान्य सभी बन्दरोंसे यहां बहुसंख्यक वाणिज्यपोत लङ्गर डालते हैं। इसके दो वर्ष पहले एक वार तथा १५३० और १५३२ ई०में पुर्त्तगालोंने दो बार इस शहरमें आग लगा कर इसे छार-खार कर डाला था। इस कारण अहमदशाहके आदेशसे १५४६ ई०में एक मजबूत किला बनवाया गया। १५७२ ई०में मिर्जा लोगोंने जब सम्राट् अकबरके विरुद्ध अस्त्र धारण किया, तब सूरत उन लोगोंके हाथ आ गया। दूसरे वर्ष सम्राट्ने बहुत दिनों तक घेरा डालनेके बाद इसे फिर दखल किया। अनन्तर १६० वर्ष तक सूरत मुगल बादशाहके अधीन शान्ति और शृङ्खलाके गुणसे भारतवर्षका एक प्रधान वाणिज्यकेन्द्र बना रहा। अकबरकी राजस्वसम्बन्धी पैमाइशी रिपोर्टमें सूरतको ही प्रथम श्रेणीका बन्दर बताया है उस समय यहां दो विभिन्न शासनकर्त्ता थे।

अंगरेजोंके आगमनसे ले कर औरङ्गजेबके शासन-काल तक पचास वर्षके भीतर सूरत अत्यन्त श्री-सम्पन्न और शक्तिशाली हो उठा। नाना स्थानोंसे लोग यहां वाणिज्य व्यवसायके लिये आने लगे। बड़ी बड़ी अट्टालिकाएं बनाई गईं। भिन्न भिन्न दिशासे स्थल-वाणिज्यके गाड़ी छकड़े आते और माल लाद कर आगरा, दिल्ली, रोहिलखण्ड और लाहोरकी ओर जाते थे। भारतवर्षके मलवार और कोङ्कण उपकूलसे यहां वाणिज्य-पोत हमेशा आते जाते थे। बहिर्जगत्के साथ भी उस समय इसका घनिष्ठ संस्रव था। सुमात्रा, सिंहल, अरबदेश और पारस्य उपसागरसे तथा यूरोपके नाना स्थानोंसे आये हुए वणिकोंके वाणिज्य कोलाहलसे सूरत रात दिन गूंजा करता था।

पाश्चात्य जातियोंमेंसे बहुतेरे ही अपने साथ लाये हुए मालका केवल थोड़ा ही अंश यहां बेचती थीं। यहां-से वे लोग स्वदेशीय बन्दरमें बेचनेके लिये गुजराती माल ले कर चले जाते थे। एकमात्र ओलन्दाज लोग ही उस समय यहां स्थायिरूपसे व्यवसाय चलाते थे। फरासी लोग भी धीरे धीरे अड्डा जमानेके फिक्रमें थे।

औरङ्गजेबके समय मरहठोंने कई बार इस पर ऊधम मचाया। १६६४ ई०में प्रबल पराक्रान्त शिवाजीने आ कर दिन तक सूरतको लूटा। पीछे १६६६ ई०में वे फिर यहांसे प्रचुर धनरत्न ले कर स्वदेश लौटे। इसके बाद प्रायः प्रति-वर्ष महाराष्ट्रोंका अशुभ आगमन होने लगा। अंगरेज वणिक् भी इन्हें रोकनेका कोई भी चेष्टा न कर रिश्वतसे वशीभूत करनेकी चेष्टा करते थे। किन्तु इतने अत्या-चारके बाद भी १७वीं सदीके शेष भाग तक सूरत परम समृद्धिशाली नगरके रूपमें ही गिना जाता था। उस समय भी जनसंख्या दो लाखसे कम नहीं थी।

इधर बम्बई बन्दरकी क्रमशः श्रीवृद्धि होने और सूरतमें इस प्रकार धीरे धीरे अत्याचार बढ़ जानेसे अंगरेज वणिकोंका ध्यान बम्बईकी ओर आकृष्ट होने लगा। १६८४ ई०में विलायतसे यह हुकुम आया, कि सूरतके बदलेमें बम्बईको ही कम्पनीका प्रधान वाणिज्य-केन्द्र बनाना होगा। १६८७ ई०में यह हुकुम कार्यमें परिणत हुआ। इस समय ओलन्दाज लोग ही बहुत दिनों तक यहांके प्रधान व्यवसायी थे।

औरङ्गजेबकी मृत्युके बाद महाराष्ट्र जाति सूरतके दरवाजे पर आ धमकी। पहिले तो मुगलराजके अधीन शासनकर्त्ताओंने बहुत दिनों तक उन लोगोंके साथ युद्ध कर किसी तरह इसकी रक्षा की। पीछे १७३३ ई०में तेगबखत नामक शासनकर्त्ताने खुल्लम खुल्ला मुगलकी अधीनता तोड़ कर सूरतमें सब स्वाधीन राज्यकी प्रतिष्ठा की। उसकी मृत्यु पर्यन्त (१७४३ ई०) इस देशमें जरा भी अशान्ति और विशृङ्खला न थी। इसके बाद राज-सिंहासन ले कर प्रायः रोज युद्धविग्रह चलने लगा। अङ्गरेज और ओलन्दाज भी उसमें साथ देते थे। पश्चिम भारतवर्षमें उस समय महाराष्ट्रोंका बोलबाला था। आखिर उनकी अनुमति ले कर अङ्गरेजोंने सूरत पर आक्र-मण कर दिया। थोड़ी-सी बाधा देनेके बाद ही नवाबने आत्मसमर्पण किया और वे लोग सूरतके कार्यतः अधी-श्वर हो बैठे। नवाबोंका नाममात्रके लिये १८०० ई० तक आधिपत्य चला था।

अङ्गरेजी शासनके प्रथम युगमें फिर सूरत श्रीसम्पन्न हो उठा। अत्याचार-अनाचार दूर तथा चीनदेशके साथ रूईकी रफ्तनी व्यवसाय प्रतिष्ठित हो जानेसे फिर इस

देशके प्रति लोगोंकी दृष्टि आकृष्ट हुई। जनसंख्या और आयतनमें अर्थ और गौरवमें सूरतने प्रधानता प्राप्त की। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो भारतवर्षके मध्य जनबलमें यही सर्वप्रधान नगर था। किन्तु १८वीं सदीके शेषभागमें मध्य और दक्षिण भारतवर्षमें जो युद्ध हुआ, उसमें तथा १७८२ ई०के प्रबल तूफान और १७९० ई०के दुर्भिक्षमें यहांसे धीरे धीरे वणिक् व्यवसायोंने बम्बईमें आ कर बसना शुरू कर दिया। इस प्रकार सूरत क्रमशः फिर श्रीहीन होने लगा।

१७९९ ई०में नवाबके साथ जो बन्दोबस्त हुआ उसमें अङ्गरेज ही यहांके सर्वमय कर्त्ता हो बैठे। नवाब केवल नाममात्रके लिये नवाब रह कर अङ्गरेज प्रदत्त वृत्ति ले कर ही सन्तुष्ट थे। १८४२ ई०में नवाबकी उपाधिका भी लोप हुआ। यहां एक लेफ्टेनाण्ट गवर्नर नियुक्त हुए थे। उस समय केवल सूरत और रन्देर अङ्गरेजोंके शासनाधीन था। धीरे धीरे बसई और पूनाके सन्धिलब्ध स्थान इसके साथ मिल कर वर्त्तमान सूरत जिलेमें परिणत हो गया है। १८०८ ई०में यहां एक कलक्टर और एक जज मजिष्ट्रेट नियुक्त हुए। १८२३ ई०में उत्तर गुजरातमें जो दुर्भिक्ष हुआ, उसीमें सूरत शहरका वाणिज्यगौरव एकदम जाता रहा। १८२५ ई०के आरम्भ होते न होते यहां बहिर्वाणिज्यके मध्य केवल बम्बई शहरमें रूईकी रफ्तनी चलने लगी। १८३७ ई०में ऐसी अचानक आग धधकी, कि १० मील परिमित स्थान एकदम छारखार हो गया। इसके कुछ समय बाद ही फिर ताप्तीमें बाढ़ आ कर सारे शहरको बहा ले गई। इन दोनों घटनाओंमें करीब पांच करोड़ रुपयेका नुकसान हुआ। सम्भ्रान्त हिन्दू और पारसी महाजन सूरतका त्याग कर बम्बईमें जा वास करने लगे। किन्तु १८४० ई०से फिर इसकी श्री धीरे धीरे लौटने लगी। १८६८ ई०में गुजरातमें रेलवे खुल जानेसे व्यवसाय वाणिज्यका स्रोत फिर उमड़ आया।

इस जिलेमें ८ शहर और ७७० ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ६ लाखसे ऊपर है। अधिवासियोंमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अनार्य हिन्दू, जैन, खृष्टान, यहूदी और बौद्ध धर्मावलम्बी लोग देखे जाते हैं। आठ शहरोंमें सूरत, बुलसर, रान्देर, बारदोली और पारसी प्रधान हैं। बुलसर आन्द्रा नदीके किनारे एक सामुद्रिक बन्दर है। रान्देर ताप्ती नदीके किनारे सूरत नगरसे दो मीलकी दूरी पर अवस्थित है। यहां म्युनिस्पलिटी है और रूईका कारबार जोरों चलता है। इस जिलेमें जितने हिन्दू तीर्थ हैं, उनमें वोबन नामक स्थान ही सर्वप्रधान है। यहां एक बड़ा देवमन्दिर है। बुलसरके समीपवर्त्ती परनेरा नामक स्थानमें एक टूटा फूटा किला है। सूरतका समुद्र बन्दर सुयाली ताप्ती नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। उनाई ग्राममें प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है। यहां प्रधानतः गुजराती ही भाषा प्रचलित है।

वाणिज्य व्यवसाय प्रधानतः सूरत और बुलसर शहरों तथा बड़ौदा राज्यके अन्तर्भुक्त बिलिमोरा बन्दरमें चलता है। स्थानीय वणिक् लोग ही प्रधान व्यवसायी हैं। यहां वर्षमें करीब साढ़े चार करोड़ रुपयेकी रफ्तनी होती है। एकमात्र सूरत और बुलसरसे दो वर्षमें ढाई करोड़ रुपयेसे अधिक मूल्यके रफ्तनी और करीब दो करोड़ रुपयेकी आमदनी होती है। रफ्तनीमें धान, गेहूं, मटर, आदि, महुआ फल, बहादुरी काष्ठ और बांस ही प्रधान है। विदेशसे जो सब द्रव्य लाये जाते हैं, उनमें तमाकू, रूईका बीज, लोहा, नारियल और यूरोपका द्रव्यजात ही अधिक व्यवहृत होता है।

सूरतका बूटेदार रेशमी वस्त्र प्राचीन कालमें विशेष विख्यात और आदृत था। रेशमी कपड़ेके ऊपर सोने और चांदीका फूल उखाड़ा जाता था। यहां नाना प्रकारके रंगीन रूईके कपड़े भी तैयार होते थे। नडीन्ब मसलिन के लिये विशेष प्रसिद्ध था। सूरतमें गैंडेके चमड़ेका बढ़िया ढाल बन कर तीस—पचास रु० करके बिकता था। एक समय यहां जहाज बनानेका काम भी जोरों चलता था। पारसी लोगोंने ही प्रधानतः सभी कार्योंमें दक्षता लाभ की थी। वर्त्तमान समयमें सूत कातना और कपड़ा बुनना ही यहांका प्रधान शिल्पकार्य है। प्रायः सभी रमणियां इन दोनों कार्योंमें निपुण हैं। अभी यहां इन दोनों कार्योंके लिये कल भी खुल गई है। हस्तचालित तांतमें रेशमी और कारुकार्यविशिष्ट वस्त्रादि तैयार होते हैं।

वर्त्तमान समयमें बम्बई-बड़ोदा और मध्यभारत

रेलवे इस जिलेके मध्यसे चलती है। सूरत शहरसे गोगो हो कर भाऊनगर तक एक छोमर आता जाता है।

कलक्टर ही इस जिलेके प्रधान शासनकर्त्ता है। इसके सिवा वे फिर बम्बई-गवर्नरके एजेण्ट (गुमाश्ता) स्वरूप भी काम करते हैं। जमींदारोंकी उपाधि मिरमिया है। जमींदार और कृषकोंमें जो मध्यवर्त्ती श्रेणी है, उसका नाम देशाई है।

साधारण शिक्षाकी ओर लोगोंकी दृष्टि धीरे धीरे आकृष्ट होती जा रही है। स्त्रीशिक्षाकी ओर भी लोगोंका ध्यान कम नहीं है। अभी कुल मिला कर ५८० स्कूल हैं। जिनमेंसे ६ हाई स्कूल, ३० मिडिल और चार सौसे ऊपर प्राइमरी स्कूल हैं। इसके सिवा यहां एक अस्पताल और बारह चिकित्सालय हैं।

२ सूरत जिलेका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २१° १२´ उ० तथा देशा० ७२° ५०´ पू०के मध्य ताप्तीके बायें किनारे अवस्थित है। जनसंख्या लाखसे ऊपर है। शहरमें म्युनिसपलिटी है। जिलेके शासन और विचार विभाग सम्बन्धीय आफिस आदि भी यहां प्रतिष्ठित हैं। वर्त्तमान समयमें यह बम्बई प्रदेशके अन्तर्भुक्त है। एक समय यह भारतके वहिर्वाणिज्यके केन्द्रस्वरूप था। यद्यपि अभी वह गौरवका कारण नहीं है, तथापि आज भी यह एक प्रधान बन्दर कह कर प्रसिद्ध है।

जहां कलनादिनी ताप्ती हठात् पश्चिमकी ओर घुम कर समुद्रकी ओर दौड़ी है, वहां अरब उपसागरसे जलपथमें १४ मील और स्थलपथसे १० मील दूर सूरत शहर अवस्थित है। इसका जो अंश ताप्तीके स्निग्ध जलसे आप्लुत रहता है, उसके मध्यस्थलमें जो किला है वह अपना सिर उठाये सूरतके पूर्व गौरवकी विघोषणा करता है। नदीवक्षपरसे देखनेसे इसका मनोहर दृश्य हृदयको गद्गद् बना देता है। खान्देश जब गुजरात राजाओंके शासनाधीन था, उस समय १५४० ई०में खुदावंद खां नामक एक तुरकी सेनाके नकशाके अनुसार किला बनाया गया। १८ २ ई० तक यह दुर्ग पहले मुगलराजके और पीछे अंगरेजके सैन्यावास रूपमें गिना जाता था। अभी यहां सरकारी आफिस प्रतिष्ठित है। सूरतका जो अंश नदीके किनारे अवस्थित है, वह सवा मील लंबे एक वृत्तांशके जैसा है। एक समय दो दुर्ग-प्राकार द्वारा यह सुरक्षित था। भीतरका प्राचीर अभी लुप्तप्राय हो गया है। इसके बहिर्भागमें बहिःप्राकार द्वारा सुरक्षित जो अंश है, वह इसका उपकण्ठ था। अन्तःप्राकारका अन्तर्भुक्त स्थान ही असल शहर है। यहां लोगोंकी घनी बस्ती है। उच्च श्रेणीके हिन्दू और धनाढ्य पारसीकी सुन्दर सुन्दर अट्टालिका सूरत शहरकी शोभा बढ़ा रही है। राजपथ उतना चौड़ा नहीं होने पर भी खूब साफ सुथरा रहता है। उपकण्ठके मकान इधर उधर विक्षिप्त हैं। पहले यहां बहुतसे सुन्दर बाग थे, अभी वे शस्यक्षेत्रमें परिणत हो गये हैं। यहांकी कच्ची सड़क दोनों बगलकी जमीनसे बहुत नीची है। वर्षाके समय इन सब सड़कों पर जलस्रोत बहता है। अन्य ऋतुमें इतनी धूल जम जाती है, कि जाने-आनेमें बड़ी दिक्कत होती है। शहरके पश्चिम प्रान्तमें सैन्यावास और कूच-कवायदका मैदान है।

शहरमें दो दातव्य अस्पताल हैं। दिल्ली जानेके रास्ते पर जो घंटा-घर है, वह खां बहादुर बरजोरो मेरवानजो फ्रेजरके खर्चसे १८७१ ई०में बनाया गया है। उसकी ऊंचाई ८० फुट है। यहांके ऐनड्रूज पुस्तकालयसे लोगोंका बड़ा उपकार होता है। शहरमें ४ हाई स्कूल, १ मिशन स्कूल, ४ मिडिल स्कूल, १ शिल्प-स्कूल, २५ वर्नाक्युलर स्कूल और ५ मुद्रायन्त्र हैं। इसके अलावा कलक्टर और जजकी अदालत, छोटी अदालत, दो सब-जजकी अदालत, एक सिविल अस्पताल और एक जनाना-अस्पताल है।

सूरता (हिं० स्त्री०) सीधी गाय।

सूरति (हिं० स्त्री०) सुध, स्मरण, याद।

सूरती खपरा (हिं० पु०) खपरिया।

सूरदास—एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इनकी गणना अष्टछाप अर्थात् ब्रजके आठ कवियोंमें है। उन आठ कवियोंके नाम ये थे,—सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास। भावकी सरलता और गाम्भीर्यमें तथा अकृत्रिम भगवद्भक्ति और प्रेमकी आकुलतामें तुलसीदास जैसे सूरदास भी भारतवासीके मन मोहने आ रहे हैं। इन दोनों-

की कवितामें कवित्व-शक्तिका असन्यसाधारण स्फुरण और विकाश है। तुलसीदास एकान्त रामसेवक और सूरदास एकान्त कृष्णसेवक थे।

भक्तमालटीका और चौरासीवार्त्ता नामक ग्रन्थमें सूरदासजीका वृत्तान्त लिखा है। तदनुसार वे सारस्वत ब्राह्मण श्रेणीके अन्तर्भुक्त थे। उनके मातापिता गऊघाट या दिल्लीमें भिक्षावृत्ति कर अपना गुजारा चलाते थे। सूरदास जीका जन्म सम्वत् १५४० (१४८३ ई०) में हुआ था।

किन्तु आईन-इ-अकबरी पढ़नेसे जाना जाता है, कि इनके पिता बाबा रामदास सम्राट् अकबरकी सभामें सङ्गीतालाप करते थे। इससे जाना जाता है, कि उनकी भिक्षावृत्तिका प्रवाद बिलकुल निराधार है। आईन इ-अकबरी १५९६ ९७ ई०में समाप्त हुई। इसमें सूरदास और उनके पिताका जैसा उल्लेख है, उससे मालूम होता है, कि उस समय भी वे दोनों जीवित थे। इस हिसाबसे प्रवादोक्त सूरदासकी जन्मतिथि भ्रान्तियुक्त प्रतीत होता है। ग्रीयरसनके मतसे सूरदासका जन्म १६५० ई०में हुआ था।

सूरदासने अपने वंशका परिचय इस प्रकार दिया है—जगात् वंशोद्भव ब्रह्मराव और ब्रह्मभट्ट उनके आदि पुरुष थे। उनके वंशमें सुरूप और सुविख्यात चन्द (चादभट्ट) ने जन्मग्रहण किया। चाद कविको पृथ्वीराजने ज्वाला प्रदेश प्रदान किया। उनके चार पुत्र थे, बड़े पितृभक्त सिंहासन पर बैठे। द्वितीय पुत्रका नाम गुणचन्द्र, गुणचन्द्रके पुत्रका नाम शीलचन्द्र और शीलचन्द्रके पुत्रका नाम वीरचन्द्र था। वे रणथम्भरके अधिपति हम्मीरके साथ खेल धूप और आमोद प्रमोद किया करते थे। इनके वंशमें हरिश्चन्द्रका जन्म हुआ। वे आगरामें रहते थे। हरिश्चन्द्रके वीरपुत्र रामचन्द्र (वैष्णव प्रथानुसार वे पीछे रामदास कहलाये)-का वाम गोपाचलमें था। उनके सात पुत्र थे—(१) कृष्ण, (२) उदारचन्द्र, (३) सुरूप, (४) बुद्धि, (५) देव, (६) संभुन और (७) सूरजचन्द्र (सूरदास)।

इससे देखा जाता है, कि जिस वंशमें चादकविका जन्म हुआ, उसी वंशसे सूरदास उत्पन्न हुए। इनके प्रतिष्ठाताका नाम ब्रह्मराव था। 'जगात्' और 'राव' ये दोनों शब्द 'भाट' शब्दके प्रतिशब्द हैं और ब्रह्मभाट सदासे ब्राह्मण कहलाते आये हैं। अतएव सूरदास ब्रह्मभट्ट वंशोद्भव हैं, इसमें जरा भी सन्देह नहीं रह सकता।

सूरदास अन्धे थे, किन्तु जन्मान्ध थे या पीछे अंधे हुए थे, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। परन्तु रीवा नरेश महाराज रघुराजसिंहने रामरसिकावलीमें भक्तमालके आधार पर लिखा है—"जनम ह्वा ते हैं नैनविहीना" चौरासी वार्त्तामें इनके जन्मान्ध होनेका वर्णन नहीं है। अबुल फजलके मतानुसार सूरदासके पिता रामदास ग्वालियरसे तथा बदाउनीके मतानुसार लखनऊसे सम्राट् अकबरकी सभामें आये।

बाल्यकालमें सूरदासने आगरा शहरमें अपने पितासे सङ्गीतविद्या, फारसी और मातृभाषा सीखी। पिताकी मृत्युके बाद ये भजन लिखनेमें प्रवृत्त हुए। इस समय बहुतसे लोग आ कर इनके शिष्य बन गये। जनश्रुतिके अनुसार इन्होंने इस समय 'भजन'के अलावा 'नलदमयन्ती'का उपाख्यान भी लिखा था। स्वरचित कविता और गजलमें ये अपना नाम 'सूरस्वामी' लिखते थे। कहते हैं, कि इस समय वे आगरासे मथुराके रास्ते पर ६ कोस दूरवर्त्ती गौऊघाट नामक स्थानमें रहते थे। जब इन्होंने ये सब भजन लिखे, उस समय इनकी चढ़ती जवानी थी। इसके कुछ समय बाद ही इन्होंने वल्लभाचार्यका शिष्यत्व ग्रहण किया। इस समयसे वे 'सूरदास' 'सूर' 'सूरजदास' और कभी कभी पहलेकी तरह 'सूरस्वामी' कह कर भी अपना नाम लिखने लगे। १६९३ ई०में सन्तदास नामक जो एक कवि आविर्भूत हुए थे, बहुतोंका विश्वास है, कि वह सन्तदास सूरदासका नामान्तर मात्र है। कविता मिला कर देखनेसे एक सी मालूम होती है। इस समय इन्होंने भागवतपुराणका मातृभाषामें अनुवाद कर और स्वरचित भजनावलीको एकत्र कर 'सूरसागर' नामसे उसका प्रचार किया। ६७ वर्षकी अवस्थामें इन्होंने 'सूरसारावली' लिखी।

'दृष्टकूट'में अपने वंशका परिचय देते हुए इन्होंने अपने सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है, "मुसलमानोंके साथ मेरे पिताका जो युद्ध हुआ, उसमें मेरे छः भाई मारे गये,

केवल अंधा और निकम्मा मैं सूरदास ही जीवित रह गया। मैं एक कूपमें गिर पड़ा था। छः दिन तक तो किसीने मुझे नहीं निकाला, सातवें दिन स्वयं यदुपति श्रीकृष्णने आ मुझे निकाला और दिव्यदृष्टि दे कर कहा, 'वत्स! जो इच्छा हो, वर मांगो'। मैंने निवेदन किया, 'प्रभो! यदि मुझ पर प्रसन्न हैं, तो यही वर दीजिये जिससे मैं एकान्त मनसे आपकी आराधना कर सकूं, मेरे शत्रु विनष्ट हों और अपने आराध्य देवताके रूपके सिवा जिससे मेरे नेत्र और कोई दूसरी वस्तु देखना न चाहे।' मेरी प्रार्थना सुन कर कृपासिन्धुने कहा, 'तथास्तु, दक्षिणपथके एक पराक्रान्त ब्राह्मण द्वारा तुम्हारा शत्रु विनष्ट होगा।' इतना कह कर और मेरा नाम 'सूरजदास', 'सूर' 'सूरश्याम' रख कर वे अन्तर्द्धान हो गये। इसके बाद मुझे सब कुछ अन्धकार ही अंधकार दिखाई देने लगा। अनन्तर मैं व्रजधाम चला गया। महात्मा प्रभु विट्ठलनाथने 'अष्टछाप' में मेरा भी नाम सन्निवेशित किया। उपरोक्त वार्ताका प्रमाण उनकी स्वरचित कविता ही है जो इस प्रकार है—

"परो कूप पुकार काहू सुनी ना संसार।
सातवें दिन आय यदुपति कियो आपु उधार॥
दिव्य चरख दै कही सिसु सुनु जोग वर जो चाह।
हौ कही प्रभु भगति चाहत सत्रु नास स्वभाइ॥
दूसरी ना रूप देखों देखि राधाश्याम।
सुनत करुणा सिन्धु भाखी एवमस्तु सुधाम॥
प्रबल दच्छिन विप्र कुल तैं शत्रु ह्वै हैं नास।
अखिल बुद्धि विचार विद्यामान मानै मास॥"

कविके हिसाबसे सूरदासका स्थान बहुत ऊंचा है। भाव, भाषा, छन्द और शब्दके ऊपर इनका असामान्य अधिकार था। कहीं कहीं इनकी भाषा ऐसी दुर्बोध्य है, कि सहजमें उसका भाव समझमें नहीं आता। कहीं कहीं ऐसी सरल और प्राञ्जल है, कि विस्मित हुए बिना रहा नहीं जाता। भावसम्पद्में तुलसीदास बड़े और भाषाके लालित्य तथा माधुर्यालङ्कारमें सूरदास श्रेष्ठ हैं।

इनके शेष जीवनके सम्बन्धमें भी एक प्रवाद प्रचलित है। अंध अवस्थामें इनके एक लेखक थे। वे मुखसे जो कहते थे, लेखक उसे लिपिबद्ध करते जाते थे, किन्तु अनेक समय ऐसी नौबत आ जाती थी, कि लेखक उपस्थित ही नहीं होते थे, परन्तु यह उन्हें मालूम नहीं कवि अपना काव्य कहने जाते और स्वयं कृष्ण आ कर उनके लेखकका काम करते थे। अन्तमें एक दिन सूरदासको मालूम हो गया, कि वक्तव्य विषय उनके मुखसे निकलनेके पहले ही लेखक उसे ठीक ठीक लिखते जा रहे हैं। अब उन्हें समझनेमें देर न लगी, कि ये लेखक अन्तर्यामी कृष्णके सिवा दूसरे कदापि नहीं हो सकते। इसलिये उन्होंने झटसे लेखककी बांह पकड़ ली, परन्तु कृष्ण बांह छुड़ा कर अन्तर्द्धान हो गये। इस उपलक्षमें सूरदासके मुखसे जो उच्च अङ्गकी कविता निकली, वह इस प्रकार है—

"बाह छुडाये जात हो, निबल जानिकै मोहिं।
हिरदै से जब जाइ हो, मर्द बदौंगो तोहिं॥"

प्रवाद है, कि राजा टोडरमलने सूरदासको शाण्डिलका अमोल बनाया था। उसके साथ साथ यह भी कहा जाता है, कि धर्मजीवनमें प्रवेश कर इन्होंने वसूल किये हुए सभी रुपये वृन्दावनके मदनमोहन-मन्दिरमें दान कर दिये और सम्राट्के दरबारमें पत्थरके टुकड़ेसे परिपूर्ण एक सन्दूक भेज दिया। टोडरमलने उसे कैद कर लिया, किन्तु पीछे गुणग्राही सम्राट्ने उन्हें माफी दे दी।

गोकुलमें रहते रहते ये वृद्धावस्थाको प्राप्त हुए। जब इन्होंने अपनी आयुका समय निकट आया जान लिया, तब ये पारासोलीको चले गये। गोस्वामीजीको यह सवाद मिलने पर वे भी पारासोली पहुंचे। उसी समय किसीने सूरदासजीसे पूछा, 'आपने अपने गुरुजीके लिये कोई छन्द नहीं बनाया है।' इस पर सूरदासजीने कहा' 'मैंने सभी छन्द गुरुजी होके लिये बनाये हैं, क्योंकि श्रीकृष्णचन्द्र और गुरुजीमें मैं कोई भेद नहीं देखता।' अनन्तर विट्ठलनाथ जीसे कुछ कथोपकथन करनेके उपरान्त इन्होंने १५६३ ई०में शरीर त्याग किया।

सूरन (हिं० पु०) एक प्रकारका कंद जो सब शाकोंमें श्रेष्ठ माना गया है। जमीकंद, ओल। सूरन भारतवर्षमें प्रायः सर्वत्र होता है, पर बंगालमें अधिक होता है। इसके पौधे २ से ४ हाथ तक होते हैं। पत्तोंमें बहुतसे कटाव होते हैं। इसके दो भेद हैं। सूरन जंगली

भी होता है जो खाने योग्य नहीं होता और बेतरह फैला होता है। खेतके सूरनकी तरकारी, अचार आदि बनते हैं जिन्हें लोग बड़े चावसे खाते हैं। वैद्यकमें यह अग्निदीपक, रूखा, कसैला, खुजली उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, विष्टम्भकारक, विशद, रुचिकारक, लघु, प्लीहा तथा गुल्मनाशक और अर्श (बवासीर) रोगके लिये विशेष उपकारी माना गया है। दाद, खाज, रक्तविकार और कोढ़वालोंके लिये इसका खाना निषिद्ध है।

सूरपुत्र (सं० पु०) सूर्यके पुत्र सुग्रीव।

सूरवार (हिं० पु०) पायजामा, सूथन।

सूरमस (सं० पु०) एक प्राचीन जनपद और उसके निवासी।

सूरमा (हिं० पु०) योद्धा, वीर, बहादुर।

सूरमापन (हिं० पु०) वीरत्व, शूरता, बहादुरी।

सूरवर्मा (सं० पु०) एक प्राचीन संस्कृत कवि।

सूरस (हिं० पु०) परियाकी लकड़ी।

सूरसागर (हिं० पु०) हिन्दीके महाकवि सूरदास कृत ग्रन्थका नाम जिसमें श्रीकृष्णलीला अनेक राग रागिनियोंमें वर्णित है।

सूरसावंत (हिं० पु०) १ युद्ध-मन्त्री। २ नायक, सरदार।

सूरसुत (सं० पु०) १ शनि ग्रह। २ सुग्रीव।

सूरसुता (सं० स्त्री०) सूर्यकी पुत्री, यमुना।

सूरसूत (सं० पु०) १ सूर्यके सारथि, अरुण। २ सूर्यके पुत्र।

सूरसेन (सं० पु०) शूरसेन देखो।

सूरा (हिं० पु०) एक प्रकारका कीड़ा जो अनाजके गोलेमें पाया जाता है। यह किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुचाता, अनाजके व्यापारी इसको शुभ समझते हैं।

सूरा (अ० पु०) कुरानका कोई एक प्रकरण।

सूराख (फा० पु०) १ छिद्र, छेद। २ शाला, खाना, घर।

सूरिजान (फा० पु०) सूरंजान देखो।

सूरि (सं० पु०) सू (सूङ्ः क्रि। उण् ४।६४) इति क्रिः। १ पण्डित, विद्वान्। २ यादव। ३ सूर्य। ४ वृहस्पति। ५ कृष्ण। ६ ऋत्विज्, यज्ञ करनेवाला।

सूरिन (सं० पु०) सूर-इनि। पण्डित, विद्वान्।

सूरी (सं० स्त्री०) सूर क्कि, ङाप्। १ राजसर्षप, राई। २ विदूषी, पंडिता। ३ सूर्यकी पत्नी। (पुंयोगादाख्यायां। पा ४।१।४८) इति ङीष्, सूर्या तिष्यागण्डेति यलोपः। ४ कुन्ती।

सूरेठ (हिं० पु०) बांसकी हाथ भरकी एक लकड़ी जिससे बहेलिये चोंगोंमेंसे लासा निकालते हैं।

सूर्क्षण (सं० क्ली०) सूर्क्ष ल्युट्। अनादर।

सूर्क्ष्य (सं० पु०) सूर्क्ष्य-घञ्। माष, उड़द।

सूर्प (सं० पु० क्ली०) १ शूर्प, सूप। २ परिमाणविशेष, दो द्रोण परिमाण। (वैद्यक)

सूर्पाक्ष (सं० पु०) एक राक्षस। (रामा० ४।१२।११)

सूर्पारक—पश्चिम-भारतमें समुद्रोपकूलवर्त्ती एक प्राचीन बन्दर। यह भरोचसे ६ मील दूर पड़ता है। तीन हजार वर्ष पहलेसे यह स्थान वाणिज्य-केन्द्र कहलाता था। टलेमीने Soupara नामसे इसका उल्लेख किया है। इसका वर्त्तमान नाम सुपार है। सुपार देखो।

सूर्मि (सं० स्त्री०) सूर्मी देखो।

सूर्मी (सं० स्त्री०) १ लोहेकी बनी स्त्रीकी प्रतिमूर्त्ति। मनुने लिखा है, कि गुरुपत्नीसे व्यभिचार करनेवाला अपने पापको कह कर तपी हुई लोहेकी शय्या पर शयन करे अथवा तपी हुई लोहेकी स्त्रीकी प्रतिमूर्त्तिका आलिंगन करे। इस प्रकार मरनेसे उसका पाप नष्ट होता है। २ पानीका नल।

सूर्य (सं० पु०) सरति आकाशे, सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति वा, सृ गतौ सू प्रेरणे वा (राजसूयसूर्यमृषोद्येति। पा ३।१।११४) इति क्यप् प्रत्ययेन साधुः। १ अर्क-वृक्ष, मदार। २ ताम्र, तांबा। ३ सुवर्ण, सोना। ४ सूर्यावर्त्त वृक्ष, हुरहुरका पौधा। ५ बलिके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश ३।७४) ६ दानवविशेष। (अग्निपु० कश्यपीयवंश) ७ ग्रहविशेष, सूर्यदेव, रविग्रह।

बृहज्जातक मतसे सूर्यका वर्ण रक्तश्याम मिश्रित है। ये पूर्वदिक्‌पुरुष, क्षत्रिय जाति, सत्त्वगुणविशिष्ट और सिंहराशिके अधिपति हैं। धान्यादि और सुवर्णादय तथा चतुष्पाद, गो और भूमिस्वामी, चतुष्कोणाकृति, मध्याह्नकालमें प्रबल, वृद्ध, रणचारी और तिक्तरसप्रिय हैं।

ग्रहयागतत्त्वमें लिखा है, कि ये वर्त्तुलाकार और मण्डलमध्यस्थित हैं। इनकी जन्मभूमि कलिङ्गदेश है, गोत्र काश्यप, वर्ण रक्तवर्ण, जाति ब्राह्मण, पूर्वमुख, बलि गुडौदन, धूप गुग्गुल, गंध रक्तचन्दन, समिध अर्क अर्थात् सूर्यका होम अर्कके समिध द्वारा करना होता है। ध्यान इस प्रकार है—

"द्युमणिं काश्यप रक्तं कालिंगं द्वादशाङ्गुलं।
पद्महस्तद्वयं पूर्वाननं सप्ताश्ववाहनं।
शिवाधिदैवतं ध्यायेद्वह्निप्रत्यधिदैवतं।"

इनका मन्त्र—"आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्मयेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।" (ग्रहयागसंस्कारतत्त्व) ग्रहयागकालमें सूर्यके उद्देशसे याग करनेमें उक्त मन्त्रसे याग करना होता है।

भगवान् सूर्य सबोंके एकमात्र उपास्य देवता हैं। प्रतिदिन सन्ध्याकालमें ब्राह्मणादि द्विजातिगण सन्ध्योपासनामें जिस गायत्रीका जप करते हैं, वह भगवान् सूर्यदेवकी ही उपासना है। गायत्रीके उपासनाकालमें ब्राह्मणादि तीन वर्ण प्रार्थना करते हैं, कि भगवान् सूर्यसे ही भूः भुवः स्वः यह त्रिलोक प्रसूत हुआ है। अतएव उनका हम लोग ध्यान करते हैं, कि वे भगवान् सूर्य हम लोगोंकी बुद्धिको धर्मार्थकाममोक्षमें नियोजित करें। सन्ध्योपासनामें भगवान् सूर्यकी ही इस प्रकार उपासना की जाती है। भगवान् सूर्य ही प्रत्यक्ष देवता हैं।

भगवान् सूर्य ज्योतिश्चक्रमें उक्त रूपसे अवस्थित हो लोकसमूहकी रक्षा करते हैं। मार्कण्डेयपुराणमें भगवान् सूर्यका उत्पत्तिविवरण इस प्रकार लिखा है—

पहले प्रजापति ब्रह्माने विविध प्रजासृष्टिकी कामनासे अपने दक्षिण अंगुष्ठसे दक्षकी और वाम अंगुष्ठसे उनकी पत्नीकी सृष्टि की। अदिति दक्षकी कन्यारूपमें उत्पन्न हुई। कश्यपसे अदितिके गर्भसे भगवान् सूर्यने जन्मग्रहण किया। भगवान् सूर्यसे ही इस जगत्का आविर्भाव हुआ है, उन्हींसे यह प्रतिष्ठित हुआ है, वे ही सनातन विष्णु हैं, अदितिने पहले इनकी आराधना की थी, इसीसे वे अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुए।

विरूपशा, परमा, विद्या, ज्योतिर्भा, शाश्वती, स्फुटा, कैवल्य, ज्ञान, आविर्भूं, प्रकाम्य, सम्वित्, बोध, अवगति इत्यादि सूर्यके रूप हैं। ब्रह्मा ही जगत्के स्रष्टा और प्रभु हैं। पहले उनके मुखसे 'ओं' यह महान् शब्द निकला। उससे पहले 'भूः', पीछे 'भुवः' और 'स्व' शब्द उत्पन्न हुए। यह तीन व्याहृति ही सूर्यकी स्वरूप है। उस 'ओं' से ही सूर्यका सूक्ष्मरूप आविर्भूत हुआ है। पीछे उससे महः, जन, तपः, सत्य इत्यादि भेदसे यथाक्रम स्थूल और स्थूलतर सप्त मूर्त्तिका आविर्भाव हुआ है। इन सब रूपोंका आविर्भाव और तिरोभाव हुआ करता है। 'ओं' ही उनका सूक्ष्मरूप है। वही सबोंके आदि और अन्त है। उस परम रूपका कोई आकार प्रकार नहीं, वही साक्षात् परब्रह्म है।

अनन्तर ब्रह्माके वदनसे ऋक् और दक्षिण मुखसे सभी यजुः प्रबलवेगसे प्रादुर्भूत हुए। इनका वर्ण काञ्चन सदृश है। ये भी परस्पर असंहत हैं। पीछे ब्रह्माके पश्चिम वदनसे साम और तत्तद्छन्द आविर्भूत हुए। इसके बाद ब्रह्माके उत्तर वदनसे भृङ्ग और अञ्जनपुञ्जसन्निभ अथर्वगण प्रकट हुए।

इसके बाद वह आदि तेज जिसका नाम ओं है, उसके स्वभावसे जो तेज उत्पन्न हुआ, वह उल्लिखित आद्य तेजको सम्यक्रूपसे आवरण कर अवस्थान करने लगा। पीछे यजुर्मय तेज और साममय तेज परस्पर मिल कर उस परम तेज पर अधिष्ठित हुआ। अनन्तर वह शान्तिक, पौष्टिक और आभिचारिक इस त्रितयमें तथा ऋक् आदि त्रितयमें लय हो गया। उसीसे तत्क्षणात् जब वह गभीर अन्धकार विनष्ट हुआ, तब सारा जगत् सुनिर्मल हो उठा और उसके अधः, ऊर्द्ध्व और तिर्यक् स्पष्टरूपसे चमकने लगा अनन्तर वह छन्दोमय तेज मण्डलीभूत हो कर परम तेजके साथ मिल गया। इस प्रकार आदिमें उत्पन्न होनेके कारण सूर्यका नाम आदित्य हुआ। वह अव्ययात्मक तेज ही इस विश्वका कारण है। यह ऋक्, यजुः और सामाख्य प्रातः, मध्याह्न और अपराह्न इन तीनों कालमें ताप देते हैं। पूर्वाह्नमें सभी ऋक् शान्तिक, मध्याह्नमें यजु, पौष्टिक और सायाह्नमें सभी साम आभिचारिक विन्यस्त हुए हैं। मध्यन्दिन और अपराह्न इन दोनों समयमें आभिचारिक तथा अपराह्नमें साम द्वारा पितरोंका

कार्य करे। ब्रह्मा सृष्टिकालमें ऋक्मय, विष्णु स्थिति कालमें यजुर्मय और रुद्र अन्त कालमें साममय होते हैं।

इस कारण वे वेदात्मा, वेदसंस्थित और वेदविद्यामय परम-पुरुष माने गये हैं। इसीसे वे सृष्टि स्थिति और प्रलयके हेतु हैं तथा रजः सत्त्वादि गुणका आश्रय करके ब्रह्म और विष्णु आदि संज्ञाको प्राप्त हुए हैं। वे वेद और अखिलमर्त्यमूर्त्ति हैं, फिर वे अमूर्त्ति हैं, वे आत्म और विश्वके आश्रय हैं तथा ज्योतिःस्वरूप वेदान्तगम्य और परात्पर हैं। देवगण सर्वदा उनका स्तव करते हैं।

उस सूर्यके तेजसे जब अधः और ऊर्द्ध्व संतप्त हो उठा, तब पितामह ब्रह्मा सृष्टिकी कामनासे सोचने लगे, कि मेरे इस चराचर जगत्‌की सृष्टि करनेसे वह आदित्यके इस तेजसे उसी समय विनष्ट होगा। प्राणिगण प्राण हीन होंगे सभी जल सूख जायगा, इधर विना जलके विश्वकी पुष्टि नहीं होगी। इस प्रकार चिन्ता कर ब्रह्मा सूर्यका स्तव करने लगे। सूर्यने ब्रह्माके तेजसे अपना परम तेज घटा कर अल्प तेज धारण किया। अनन्तर ब्रह्मा यथाविधान सृष्टिकार्यमें प्रवृत्त हुए।

ब्रह्माने इस जगत्‌की सृष्टि करके यथाविधान वन, आश्रम, समुद्र, पर्वत और द्वीपोंके विभाग तथा देव, दैत्य, उरगादिके रूप और स्थानकी कल्पना की। पहले ब्रह्माके मरीचि नामक एक पुत्र हुआ। कश्यप उनका नाम रखा गया। दक्षकी तेरहवीं कन्या कश्यपकी पत्नी थीं।

अदितिने देवताओंको, दितिने दैत्योंको, दनुने दानवों को प्रसव किया। अदिति और दितिके पुत्र सारे जगत्‌में फैल गये। अदितिके पुत्र देवगण ही प्रधान थे। दिति और दनुके पुत्रोंने मिल कर देवताओंके साथ युद्ध ठान दिया। इस युद्धमें देवताओंको हार हुई। पीछे अदिति संतानकी मङ्गल कामनासे सूर्यकी आराधना करने लगीं।

भगवान् सूर्यने उनके स्तवसे प्रसन्न हो कर उनसे कहा, 'मैं आपके गर्भसे सहस्रांशसे जन्म ले कर शत्रुओंका शीघ्र ही विनाश करूंगा।' अनंतर अदितिके तपस्या बंद करने पर सूर्यका सौषुम्न नामक कर उनके उदरमें प्रविष्ट हुआ। देवजननी अदिति भी समाहिता हो कर शौच अवलम्बन करती हुई कृच्छ्र चान्द्रायणादिका अनुष्ठान कर वह गर्भ वहन करने लगी। यह देख कश्यपने कुछ क्रुद्ध हो अदितिसे कहा, 'तुम प्रति दिन उपवासादि करके इस गर्भाण्डको मारोगी क्या?' इस पर अदिति बड़ी बिगड़ी और बोली, 'तुम जो यह गर्भाण्डको देखते हो, इसे मैं नहीं मारूंगी, यही गर्भाण्ड विपक्षोंकी मृत्युका कारण होगा।

अदितिने यह बात कह कर उसी समय गर्भाण्ड त्याग कर दिया। गर्भाण्ड तेजसे जलने लगा। कश्यपने उदीयमान भास्करकी तरह प्रभाविशिष्ट उस गर्भको देख कर प्रणाम किया। पीछे सूर्यने पद्मपलाशप्रतिम कले वरमें उस गर्भाण्डसे प्रगट हो अपने तेजसे दिङ्मुखका परिव्याप्त किया। इसी समय आकाशवाणी हुई, 'हे मुने! इस अण्डको मारित अर्थात् मार डालेंगे, ऐसा तुमने कहा है, इसीसे इसका नाम मार्त्तण्ड होगा। यह पुत्र जगत्‌में सूर्यका कर्म और यज्ञभागहारी असुरोंका विनाश करेगा।'

अनन्तर प्रजापति विश्वकर्मा सूर्यके पास गये और अपनी संज्ञा नामकी कन्याको उनके हाथ सौंप दिया। संज्ञाके गर्भ और सूर्यके औरससे तीन सन्तान उत्पन्न हुई, दो पुत्र और एक कन्या। कन्याका नाम यमुना और दोनों पुत्रोंके नाम वैवस्वत मनु और यम थे। संज्ञा सूर्यका तेज सहन न कर सकनेके कारण अपनी जगह पर छायाको छोड़ पिताके घर चली गई।

संज्ञा और छाया देखो।

विश्वकर्मा द्वारा कुल हाल मालूम होने पर सूर्यने उनसे अपना तेज क्षय करनेको कहा। भगवान् सूर्यका रूप पहले मण्डलाकार था। विश्वकर्मा सूर्यकी आज्ञा पा कर शाकद्वीपमें उन्हें भ्रमि अर्थात् चाक पर चढ़ा कर तेज घटानेको उद्यत हुए। जब समस्त जगत्‌के नाभि स्वरूप भगवान् सूर्य भ्रमि पर चढ़ कर घूमने लगे, तब सागर, पर्वत और काननके साथ सारी पृथिवी आकाश की ओर उठी, ग्रहों और तारोंके साथ आकाश नीचेको गिरा, सभी समुद्रोंका जल बह गया। बड़े बड़े पहाड़ फट गये, और उनकी चोटियां चूर चूर हो गईं। इस प्रकार आकाश, पाताल और मृत्यु-भुवन सभी आकुल हो उठे। समस्त जगत्‌को ध्वंस होते देख ब्रह्माके साथ

सभी देवगण सूर्यका स्तव करने लगे। विश्वकर्माने भी सूर्यका नाना प्रकारसे स्तव कर सोलह भाग मण्डलस्थ किया। १५ भाग तेज शाणित होनेसे सूर्यका शरीर अत्यन्त कान्तिविशिष्ट हो गया। पीछे विश्वकर्माने उनके १५ भाग तेज द्वारा विष्णुका चक्र, महादेवका शूल, कुवेरकी शिविका, यमका दण्ड और कार्त्तिकेयका शक्ति वाण बनाया। अनन्तर उन्होंने अन्यान्य देवताओंके भी परम प्रभाविशिष्ट अस्त्र बनाये।

इस प्रकार भगवानका तेज घट जानेसे वे परम कमनीय दिखाई देने लगे। संज्ञा सूर्यकी यह कमनीय मूर्त्ति देख कर बड़ी प्रसन्न हुई।

इसके सिवा भविष्यपुराणके ब्राह्मपर्वमें, वराहपुराणके आदित्योत्पत्ति नामाध्यायमें, विष्णुपुराणके ३य अंश १०म अध्यायमें, कूर्मपुराणके ४०वें अध्यायमें, गरुड़पुराणके १०१वें अध्यायमें और ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके श्रीकृष्णजन्मखण्ड ५६वें अध्यायमें सूर्यकी उत्पत्ति और माहात्म्यादिका विशेष विवरण लिखा है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां वह नहीं लिखा गया। विभिन्न पुराणोंमें सूर्यकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कुछ कुछ पृथकता देखी जाती है।

श्रीमद्भागवतमें लिखा है, कि ब्रह्माण्डके मध्यस्थलमें भगवान् सूर्यदेव अवस्थित हैं। स्वर्ग और मर्त्त्यमें जो अन्तर है, वही ब्रह्माण्डका मध्य स्थान है। सूर्य और अन्तगोलक इन दोनोंके मध्य स्थानका परिमाण पचीस करोड़ योजन है।

कालचक्रसे भ्रमणशील सूर्यके गतिक्रमसे राशिसञ्चार और उससे लोकयात्रा निरूपित होती है। भूमण्डलका संस्थान पचास करोड़ योजन और उसकी ऊंचाई पचीस करोड़ योजन है। चनेके दो दलमेंसे एक दलका जितना परिमाण है, दूसरे दलका भी उतना ही परिमाण होता है। भूमण्डलके परिमाणानुसार स्वर्गमण्डलका भी परिमाण वैसा ही है। इन दोनोंके मध्य जो आकाश है, वह उन दोनों पार्श्वमें संलग्न है। सूर्यदेव उस आकाशके मध्यस्थलमें रह कर त्रिलोकको ताप देते हैं तथा अपनी किरण द्वारा त्रिभुवनको प्रकाशित करते हैं। सूर्य ही एकमात्र उत्तरायण, दक्षिणायन और विषुवलक्षक मन्द, शीघ्र और समान गति द्वारा यथाकालमें आरोहण, अवरोहण और समान स्थानमें आरोहणादिको प्राप्त हो कर मकरादि राशिमें सभी अहोरात्रोंको दीर्घ, ह्रस्व और समान करते हैं। सूर्य जब मेष और तुलाराशिमें जाते हैं, तब सभी अहोरात्र अत्यन्त वैषम्याभावप्रयुक्त प्रायः समान हो जाते हैं। जब वे वृषादि पञ्च राशियोंमें परिभ्रमण करते हैं, तब सभी दिन बढ़ते हैं तथा मासमें एक एक घड़ी करके रात छोटी होती है। सूर्य जब वृश्चिकादि पञ्च राशियोंमें अवस्थान करते हैं, तब सभी अहोरात्रका विपर्यय होता है, अर्थात् जब तक दक्षिणायन रहता है, तब तक दिन बड़ा और उत्तरायण तक रात बड़ी होती है।

इस प्रकार सूर्यको मन्द, शीघ्र और समान गति द्वारा मानसोत्तर पर्वतका परिमाण नौ करोड़ इक्यावन लौ योजन है। उक्त मानसोत्तर पर सुमेरुके पूरब इन्द्रसम्बन्धिनी पुरी है। देवधानी उसका नाम है। दक्षिण ओरकी यमसम्बन्धिनी पुरीका नाम संयमनी, पश्चिम और निम्लोचनी नामक वरुणकी, उत्तरमें विभावरी नामक चन्द्रकी पुरी है। इन सब पुरियोंमें सुमेरुके चारों ओर विशेष विशेष समयमें उदय, मध्याह्न, अस्त और अहोरात्र हुआ करता है। ये सब उदय आदि ही प्राणियोंकी प्रवृत्ति और निवृत्तिके कारण हैं। अर्थात् सूर्यके उदयादि उपलक्ष्य करके ही प्राणियोंकी चेष्टादि हुआ करती है।

जो सब प्राणी सुमेरु पर रहते हैं, सूर्य दिवा मध्यगत हो कर उन्हें ताप देते हैं। यद्यपि वे बाईं ओर चलते हैं अर्थात् नक्षत्राभिमुख हो कर जानेमें सुमेरु बाईं ओर पड़ता है, ज्योतिश्चक्रको चारों ओर घुमानेमें प्रति दिन एक एक बार दक्षिणकी ओर जाते हैं। अतएव चक्रगतिके कारण बहुत दूरसे सूर्य भूमिसंलग्नकी तरह जो दिखाई देते हैं, वही उनका उदय है। उनके आकाशारूढ़की तरह दर्शन ही मध्याह्न है, भूमिप्रविष्टकी तरह दर्शन ही उनका अस्त है। वहांसे अधिक दूर जाना ही अर्द्धरात है। वेदमें भी समुद्रतीरस्थ दृष्टिक्रमसे कहा है, कि "हे सूर्यदेव! तुम प्रातःकालमें जलके मध्यसे उदित और सायंकालमें जलके मध्य प्रविष्ट होते हो।' श्रुतिकी यह उक्ति

लौकिक व्यवहारसिद्ध है, यथार्थ नहीं। सूर्य जहां उदय होते हैं, मध्याह्नकालमें उसके प्राणियोंको कड़ी धूप देते हैं, उसके समसूत्रपात स्थानमें अर्द्धरात्र होने पर वहांके व्यक्तियोंको उसी समय निद्रित करते हैं।

जब सूर्य ऐन्द्री पुरीसे चलते हैं, तब पन्द्रह घड़ीके मध्य यमसम्बन्धीय पुरीमें दो करोड़ सैंतीस लाख पचहत्तर हजार योजन भ्रमण करते हैं। इसी प्रकार वहांसे वरुणसम्बन्धिनी पुरी जा कर फिरसे ऐन्द्री पुरीमें लौटते हैं। इस प्रकार सोमादि ग्रहगण सूर्यको केन्द्र बना कर नक्षत्रोंके साथ ज्योतिश्चक्रमें उदय और उनके साथ अस्त होते हैं।

इस प्रकार सूर्यका वेदमयरथ एक मुहूर्तमें पूर्वोक्त ऐन्द्रादि चारों पुरियोंके ओर ३४ लाख ८ सौ योजन भ्रमण करता है। उस रथके सिर्फ एक चक्र है। उसका नाम सम्वत्सर, द्वादश मास है। छः ऋतु उनकी छः नेमि है, तीन चातुर्मास्य उसकी नाभि हैं। उसके अक्षका एक भाग सुमेरुके मस्तक पर और अन्य भाग मानसोत्तर पर्वत पर स्थापित है। उस मानसोत्तर पर्वत पर सूर्यरथ स्थापित होनेसे कोल्हूकी तरह हमेशा घूमा करता है। सूर्यरथके दो अक्ष हैं जिनमेंसे प्रथम अक्ष सुमेरु और मानसोत्तर तक विस्तृत है। उसका परिमाण १ करोड़ ५७ लाख ५० हजार योजन है। द्वितीय अक्षका परिमाण उसका चतुर्थांश है। प्रथम अक्षमें द्वितीय अक्षका पूर्वभाग निबद्ध है और कोल्हूकी तरह ध्रुवलोकमें वायुपाश द्वारा उसका ऊपरी भाग संलग्न है। उस रथका नीड़ अर्थात् रथीका उपवेशन स्थान ३६ लाख योजन आयत है, ऊंचाई उसका चतुर्थांश है। उस रथके युगका परिमाण उतना ही योजन है। उस रथ पर गायत्री आदि सात घोड़े अरुण द्वारा योजित हो कर सूर्यदेवको वहन करते हैं। अरुण सूर्यके सारथीका काम करते हैं।

सूर्यमण्डलसे लाख योजनसे दो लाख योजन ऊपरमें चन्द्रमा अवस्थित हैं। वे दो दिनमें सूर्यका एक मास और एक दिनमें सूर्यका एक एक पक्ष भोग करते हैं। जब चन्द्रमण्डलकी कलाएं बढ़ती हैं, तब देवताओंका दिन और क्षयशील अवस्थामें पितरोंका दिन होता है। चन्द्रमा इस प्रकार शुक्ल और कृष्णपक्ष द्वारा देव और पितृसम्बन्धीय दिन रात बनाते हैं। चन्द्रमा अन्न और अमृतमय हैं, इसीसे वे जीवके प्राण हैं। षोडशकल चन्द्र मनोमय, अन्नमय और अमृतमय हैं। और तो क्या, वे देव, पितृ, मनुष्य, भूत, पशु, पक्षी, लता, गुल्म आदिके प्राणको आप्यायित अर्थात् पुष्ट करते हैं।

सूर्यको केन्द्र बना कर सभी ग्रह अवस्थित रहते हैं। अभिजित चन्द्रमण्डलसे दो लाख योजन ऊपर सभी नक्षत्र सुमेरुके दक्षिण और कालचक्र पर ईश्वरकर्तृक योजित हो कर भ्रमण करते हैं। उन सब नक्षत्रोंकी संख्या अभिजित् नक्षत्र ले कर अट्ठाईस है।

नक्षत्रमण्डलसे दो लाख योजन ऊपर शुक्रग्रह अवस्थित हैं। सामनेमें यदि सूर्य किसी नक्षत्रका भोग करते हों, तो यह ग्रह उनके पिछेकी ओर भोग करता है। एक साथ भोग करनेका समय होनेसे वे अत्याचारी हो कर अर्थात् क्रमश नक्षत्रोंको अतिक्रम कर भोग करते हैं। उनके सञ्चारसे प्रायः वृष्टि हुआ करती है।

शुक्रग्रहका जैसा संस्थान और गति है, बुधग्रहकी भी वैसी ही गति होती है। अर्थात् बुधग्रह कभी सूर्यके आगे और पीछे, कभी एक साथ विचरण करता है। यह बुध शुक्रग्रहसे दो लाख योजन ऊपरमें अवस्थित है। बुध जब सूर्यसे अतिचारी हो जाता है, तब प्रबल वायु निर्जल मेघाडम्बर और अनावृष्टि होती है।

बुधके ऊपर मङ्गल, मङ्गलके ऊपर वृहस्पति, वृहस्पतिके ऊपर शनिग्रह, इनमेंसे प्रत्येक एक दूसरेसे दो दो लाख योजन ऊपरमें अवस्थित हैं। शनिग्रहके उत्तर ग्यारह लाख योजनकी दूरी पर ऋषिगण रहते हैं, वे सब ऋषि सभी लोगोंको शान्ति प्रदान कर भगवान् विष्णुके परम पदकी आराधना करते हैं। सूर्यके नीचे अयुत योजनके फासले पर राहुग्रह नक्षत्रकी तरह भ्रमण करते हैं। सूर्यमण्डल इस राहुग्रहके अधोभागको ऊपर रख कर ताप पहुंचाता है। यह सूर्यमण्डल दश हजार योजन और चन्द्रमण्डल बारह हजार योजन विस्तीर्ण है। राहुमण्डलकी विस्तृति उससे भी ज्यादा है। उस राहुने अमृतपानके समय चन्द्रसूर्यके मध्य प्रविष्ट हो कर व्याघात कर दिया था। विष्णुको जब यह मालूम हुआ, तब उन्होंने

चन्द्र और सूर्यको रक्षा करनेके लिये सुदर्शनचक्र प्रयोग किया। उस चक्रका तेज अत्यन्त दुःसह है। वह सर्वदा घूमता रहता है। राहु वहां चन्द्रसूर्य-को ग्रहण करनेके लिये सिर्फ एक मुहूर्त्त ठहरता है, पोछे डरके मारे दूर हट जाता है। इस प्रकार चन्द्र और सूर्यके बीचमें जो राहुग्रह रहता है, उसीको लोग ग्रहण कहते हैं। राहुको ऋजु और वक्र अवस्थितिसे ही सर्वग्रास और अर्द्धग्रास होता है। सच पूछिये, तो यह ग्रास नहीं है, लोकप्रतीतिमात्र है। क्योंकि, उस चन्द्र सूर्यसे राहु बहुत दूरमें रहता है। इसी प्रकार सूर्यमण्डल अवस्थित है। शिशुमारके आकारमें ज्योतिश्चक्र अवस्थित है इस ज्योतिश्चक्रका केन्द्र ध्रुव है। इस ध्रुवको केन्द्र बना कर अन्यान्य सभी ग्रह विद्यमान हैं। इस ध्रुवके बाद सूर्य ही प्रधान हैं। सूर्यको उक्त प्रकारसे केन्द्र बना कर अन्यान्य ग्रहगण विद्यमान हैं। इसी एक सूर्यसे दिन-रात, मास, पक्ष, ऋतु, अयन, वत्सर, वृष्टि, सुख, दुख आदि हुआ करते हैं। सूर्य ही इन सबके एकमात्र विधानकर्त्ता हैं। सूर्य ग्रहोंके साथ गतिके अनुसार उक्त प्रकारका फल देते हैं। अतएव एकमात्र भगवान् सूर्य ही प्रत्यक्ष देवता हैं, सबोंको उनकी उपासना करना एकान्त कर्त्तव्य है। (भागवत ५।२०।३०)

पाश्चात्य मत।

पाश्चात्य वैज्ञानिकोंके मतसे यह एक पदार्थमय मण्डल है। यह इतना उत्तप्त है, कि इसके अभ्यन्तरस्थ पदार्थ ऐसी वाष्पीय अवस्थामें रहते हैं, कि इनके मध्य कभी भी किसी प्रकारका रासायनिक संयोग कभी भी संघटित नहीं हो सकता, तथापि इसका गुरुत्व और घनत्व बहुत ज्यादा है। जिन सब वाष्पों द्वारा इसका अवयव संगठित है, वे परस्पर अंशोंके आकर्षणसे ऐसे दृढभावमें संश्लिष्ट और संपिष्ट हैं, कि इसके फलसे सूर्यका जो घनत्वके समान है और केन्द्रस्थलमें यह मालूम होता है, कि धातव पदार्थकी अपेक्षा कम घना नहीं है।

आलोकमण्डल परिवेष्टित जिस सूर्यको हम साधारणतः देखा करते हैं, यह प्रकृत सूर्यका एक सामान्य अंशमात्र है। ग्रहणकालीन पर्यवेक्षणके फलसे जाना गया है, कि आलोकमण्डलके बाहर भी दो विभिन्न आवरण हैं। पहलेका नाम वर्णमण्डल है। यह प्रधानतः जलयान द्वारा संगठित हुआ है। दूसरेका नाम आभामण्डल है। इन दोनों आवरणके बहिर्भागमें विशेषतः सूर्यमण्डलस्थके विषुवरेखाके समक्षेत्रमें एक पदार्थमय विस्तारका होना भी प्रमाणित हुआ है। दूसरेका आवरण जिस पदार्थसे संगठित है, वह इस पदार्थसे बनाया है किसी दूसरे पदार्थसे कह नहीं सकते।

Spectroscope द्वारा सूर्यमण्डलकी यह जो गठन-प्रणाली मालूम हुई है, इसके फलसे दो सम्पूर्ण विभिन्न मतकी सृष्टि हुई है। प्रथम मतानुसार सूर्यका प्रकृत वायुमण्डल वर्णमण्डल द्वारा ही सीमाबद्ध है तथा भूपृष्ठ पर जो सब रासायनिक उपादान देखनेमें आते हैं, प्रधानतः उन सब उपादानज वाष्पसे ही यह वायुमण्डल बना है। कभी कभी आभामण्डल और विषुवरेखा संक्रान्त जो विस्तार देखनेमें आता है, इस मतानुसार वह सौर उपाङ्गके सिवा और कुछ भी नहीं है। द्वितीय मतानुसार यह वायुमण्डल आभामण्डलकी भी प्रान्त सीमा तक विस्तृत है। उत्ताप नीचेकी ओर क्रमशः अधिक मालूम पड़ता है। आलोकमण्डलके निकट यह इतना ज्यादा है, कि यहां रासायनिक उपादान परस्पर विच्छिन्न और अभ्यन्तर संहतिविच्युत हो सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंशमें परिणत हो जाते हैं। इस कारण निम्नप्रवाही वाष्पस्रोत क्रमशः अधिक अविमिश्र और ऊर्द्ध्वप्रवाही स्रोत क्रमशः अधिक विमिश्र होते हैं। इसी कारण इस सौर वायुमण्डलका जो प्रदेश हमारे पार्थिव उपादानके अनुरूप वाष्प देखनेमें आता है तथा आभामण्डलके सीमान्त देशमें ये वाष्प एकदम कठिन अवस्थामें परिणत हो जाते हैं।

यह सहज ही जाना जा सकता है, कि इन दोनों मतके अनुसार सूर्यका माध्यमिक घनत्व कभी एक नहीं हो सकता। सौर वायुमण्डल यदि सचमुच आलोकमण्डल द्वारा सीमाबद्ध होता हो, तो उसका घनत्व १·४४४ मानना होगा। किंतु आभामण्डलको भी यदि हम इस वायुमण्डलके अन्तर्भुक्त कर लें और आलोकमण्डलसे इसकी ऊंचाई यदि अर्द्धकोटि मील मानें, तो

सूर्यका आयतन पूर्वोक्त मतानुरूप आयतनसे दश गुना अधिक हो जाता है, अतः इस अवस्थामें सूर्यका घनत्व सिर्फ $\frac{१०४४४}{१०}$ होगा।

सौरमण्डलमें कौन कौन पदार्थ हैं, इस सम्बन्धमें पर्यवेक्षण द्वारा प्रधानतः दो प्रकारके मतकी सृष्टि हुई है। पहले मतसे इसमें लोहा, तांबा, जस्ता, निकेल, बारियम, सोडियम, कालशियम् और मागनेसियम् तथा दूसरे मतसे जलयान, माङ्गनिज, टाइटेनियम, कोबाल्ट, क्रोमियम, निकेल, मागनेसियम, कालसियम, लोहा और सोडियम हैं। अभी जो नव पर्यवेक्षण किया गया है, उसके फलसे और भी अनेक नये नये पदार्थ आविष्कृत हुए हैं। अम्लजान भी है या नहीं, उस विषयमें आज तक भी कोई मीमांसा नहीं हुई है।

सूर्यमण्डलका अभ्यन्तर प्रदेश एकदम अदृश्य है साधारणतः हम लोग सिर्फ ऊपरी भागको जो आलोकमण्डल कहलाता है, देखते हैं। वर्णमण्डल और आभामण्डल नामक जिन दो आवरणोंकी बात कही गई है, वह साधारणतः हम लोगोंकी दृष्टि पर नहीं पड़ता। पहलीको केवल Spectroscope नामक यन्त्रकी सहायतासे और दूसरीको पूर्णग्रहणके समय देख पाते हैं। वर्णमण्डल रक्ताभ है। यह कुछ स्वतःज्योतिष्मान् वाष्प द्वारा संगठित है। आभामण्डल कुछ सूक्ष्मातिसूक्ष्म पदार्थकी शृङ्खलारहित समष्टिमात्र है।

आलोकमण्डल जो निरवच्छिन्न कोई कठिन पदार्थ या गलित धातुकी तरह कोई साधारण तरल पदार्थ नहीं है, वह एक तरह निश्चितरूपसे हो जाना गया है। क्योंकि उन दोनोंसे कोई पदार्थ होनेसे जिस प्रचण्ड भावसे वह ताप विकीरण करता है, उसके फलसे देखते न देखते वह एकदम शीतल हो जाता। वह यदि जलकी तरह किसी स्वच्छ तरल पदार्थसे संगठित होता, तो इससे जो ताप विकीर्ण होता है, वह इसके पृष्ठदेशसे कुछ गज ऊपरसे निकलता और कुछ मिनट या घंटेके मध्य ही यह पृष्ठदेश बिलकुल ठंढा हो जाता। यथार्थमें हम लोग चाहे जिस तरहसे आलोकमण्डलको संगठित क्यों न समझें, वह यदि बराबर एक ही अवस्थामें रहता, तो प्रति दिन कई हजार डिग्री उत्ताप खो कर क्रमशः शीतलताको प्राप्त होता। वस्तु जिस पदार्थसे ताप विकीरण होता है, उस पदार्थके परिपूरणके लिये प्रतिदिन जो इसमें एक स्रोत Convection current बहता है, वह अच्छी तरह जाना जा सकता है।

सूर्यान्तर्गत प्रदेश अक्षरेखाके चारों ओर प्रति दिन घूमते हैं, किन्तु सभी प्रदेश ठीक एक ही वेगसे नहीं घूमते। एक बार अक्षरेखाके चारों ओर घूम आनेमें मेरु समीपवर्त्ती प्रदेशोंको जितने समयकी आवश्यकता होती है, विषुवरेखाके समीपवर्त्ती प्रदेशोंको उससे बहुत कम समय लगता है। इसके कारणके सम्बन्धमें १८०१ ई०को एमडेनने कहा है, कि आलोकमण्डलके मेरुसमीपवर्त्ती प्रदेश विषुवरेखा-संलग्न प्रदेशसे अधिक उत्तप्त होनेसे ही इस प्रकार गति-विभिन्नता देखी जाती है। इसके सिवा और भी बहुतोंने अन्य प्रकारके कारण दिखलानेकी चेष्टा की है, परन्तु अभी तक कोई भी मत ठीक नहीं माना गया है।

आलोकमण्डलमें बहुतसे दाग देखनेमें आते हैं। इन दागोंकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें नाना प्रकारके मत प्रचलित हैं। बहुत दिनों तक ऐसा ही विश्वास बना रहा, कि ये सब आलोकमण्डलके ऊपर शीतल पदार्थके पतनसे उत्पन्न दाग या गहरविशेष हैं। सौरवायुमण्डलके निम्न प्रदेशसे जो उत्तप्त वाष्प ऊपरकी ओर उठता है। वह इसके ऊपरवाले शीतल प्रदेशमें आता और वहां जम कर सरल हो जाता है तथा इसके पतन द्वारा अन्तमें इसके दाग बन जाते हैं। आलोकमण्डलमें प्रायः सभी जगह इसी प्रकार दाग पड़ते हैं, किन्तु सभी स्थानके दाग आयतनमें समान नहीं होते। प्रथम अवस्थामें बड़े बड़े दाग छोटे छोटे फोटोकी तरह दिखाई देते हैं। कभी कभी ऐसे बहुतसे फोटो एक साथ देखनेमें आते हैं। ये सब पीछे एक दूसरेसे मिल कर एक बड़े दागमें परिणत हो जाते हैं। जिन सब शीतल पदार्थोंके पतन द्वारा सूर्यमण्डलका यह विपर्यय होता है, वे सूर्यालोकाक्रान्त वायुमण्डलसे अपेक्षाकृत शीतल हैं और सबसे ऊपरी स्तरमें उत्पन्न होते हैं, वे स्वयं ही केवल विपर्यय ही करते हैं सो नहीं। पतनके

समय उनके साथ वायुमण्डलका जो सङ्घर्ष होता है, उससे भी एक उत्तापकी सृष्टि होती है तथा उस उत्तापसे उत्तप्त हो कर कुछ वाष्प ऊपरकी ओर उठता है और पीछे फिर ठंढा हो कर तथा जम कर आलोकमण्डलके ऊपर पड़ता और एक नई गड़बड़ी पैदा कर देता है। इन दागोंके कारण सूर्यमण्डलका प्रान्त देश कुछ अंधकाराच्छन्न-सा मालूम होता है। इसके सिवा मेरुप्रदेशके समीपवर्ती प्रदेश भी चित्र विचित्र दागोंसे समाकीर्ण दिखाई देते हैं। अन्यान्य अंशोंके साथ तुलनामें ये सब दाग बहुत कम आलोक और ताप देते हैं। दागके साथ साथ फिर सूर्यमण्डलमें कुछ *Faculae* (गुम्फुजाकृति) तथा भिन्न भिन्न प्रकारकी स्फीति भी देखनेमें आती है। बहुतों का विश्वास है, कि शीतल पदार्थों के पतनके समय वायुमण्डलके साथ उसका जो संघर्ष होता है, उससे उत्तप्त हो कुछ वाष्प ऊपरकी ओर उठता है तथा वाष्पके इस ऊर्द्ध्व प्रवाह द्वारा ही इन सब स्फीतियोंकी सृष्टि होती है। Faculae प्रधानतः सौर विषुवरेखासे ३० डिग्रीके मध्य ही दिखाई देता है। अन्यान्य स्फीति सूर्यचक्रमें प्रायः सभी जगह दिखाई देती हैं। ऐसा मालूम होता है, कि दागोंके साथ इनका एक विशेष सम्बन्ध है। दाग ३०० डिग्रीके मध्य ही देखनेमें आते हैं तथा विषुवरेखाके पास दोनों ही अल्प परिमाणमें नजर आते हैं।

इसके सिवा आलोकमण्डलमें फिर कुछ छिद्र तथा प्रच्छन्न दाग भी दृष्टिगोचर होते हैं। ये सब सूर्यमण्डलमें सभी जगह संघटित हो सकते हैं।

हेल की प्रवर्त्तित प्रणालीसे Monochromatic आलोक द्वारा सूर्यमण्डलका फोटोग्राफ लिया जाता है। इससे ऐसी आशा की जाती है, कि इसके सम्बन्धमें अनेक विषय स्पष्टरूपसे जाने जा सकते हैं।

वर्णमण्डलमें प्रधानतः जलयान, हलियम और कालसियम इन तीन धातुओंका अस्तित्व मालूम हुआ है। *Helium* एक खनिज पदार्थ है, यह नारवे देशमें पाया जाता है। इसके सिवा कुछ कुछ लोहा, मागनेसियम और सोडियम आदि और भी कुछ पदार्थ देखनेमें आते हैं।

सूर्यके चारों ओर जो एक अद्भुत उज्ज्वलता देखी जाती है, वह असल आभामण्डल नहीं है, उसका प्रक्षेपण मात्र है। किसी एक निर्दिष्ट स्थानमें हम जो देखते हैं वह असल आभामण्डलका ठीक रूप नहीं है। यह हम लोगोंके चक्षुसे आभामण्डल पर्यन्त विस्तृत दृष्टिरेखाके उभय पार्श्वस्थ पदार्थों का सम्मिलित क्रियाफलमात्र है।

आभामण्डलमें बहुत-सी किरणोंका जटिल संमिश्रण देखनेमें आता है। अनेक समय फिर इन रश्मियोंकी काली रेखा दिखाई देती है। इसमें कोई काली रेखा या उस सम्बन्धमें आज भी कुछ स्थिर नहीं हुआ है।

करोणाकी उज्ज्वलताके सम्बन्धमें बहुतोंका ख्याल है, कि यह स्वतन्त्र उज्ज्वल है, किन्तु इसके ऊपर सूर्यरश्मि प्रतिफलित हो कर इसकी उज्ज्वलताको बढ़ाती है।

करोणास्थ पदार्थ भी सूर्यके साथ साथ अक्षरेखाके चारों ओर घूमता है या नहीं, इस सम्बन्धमें वैज्ञानिक लोग तीन विभिन्न अवस्था सम्भवपर समझते हैं। १म, घूम सकता है, २य, नहीं भी घूम सकता है और ३य, उल्काखण्डकी तरह निर्दिष्ट कक्षसे माध्याकर्षणके प्रभावसे सूर्यके चारों ओर भी घूम सकता है।

भारतीय ज्योतिषिक मत।

ज्योतिषशास्त्रमें सूर्यका विषय विशेष भावमें आलोचित हुआ है। ग्रहोंके मध्य सूर्य ही एकमात्र प्रबल और तेजस्वी हैं। सूर्यके तेजसे अन्यान्य सभी ग्रह निष्प्रभ या अस्तमित होते हैं। सूर्य सौर जगत्के प्रधान ग्रह हैं तथा जगत्के मध्यभागमें अवस्थित हैं। पृथ्वी इस सूर्यके चारों ओर परिभ्रमण करती है, किन्तु हम लोग उस गतिका अनुभव नहीं कर सकते। गतिके स्वाभाविक नियमानुसार अर्थात् किसी चलती हुई वस्तु पर चढ़ कर जिस प्रकार अचल वस्तु चलती हुई दिखाई देती है, उसी प्रकार सचल पृथ्वी पर आरूढ़ हो कर सूर्य भ्रमण करते हैं, यही देखनेमें आता है, पृथिवी चलती है, इसका पता हम लोगोंको नहीं चलता। इसी नियमसे प्रातःकालमें सूर्यको पूर्वकी ओर सायंकालमें पश्चिमकी ओर अस्त होते देखते हैं। जिस जिस पथसे सूर्य आकाशमण्डलमें जाते देखे जाते हैं, वही वास्तविक

भूकक्ष अथवा अयनमण्डल है। यह चक्राकार है, किन्तु सम्पूर्ण गोल नहीं है. कहीं कहीं कुछ वक्र है। उसके उत्तरदक्षिण कुछ दूर तक फैला हुआ जो एक कल्पित चक्र उसे घेरे हुए है, उसको राशिचक्र कहते हैं।

राशिचक्र और अयनमण्डल दोनों बारह भागों और तीन सौ अंशोंमें विभक्त है। प्रत्येक भागको राशि कहते हैं। प्रत्येक राशिका परिमाण ३० अंश है। उक्त बारह राशिके नाम ये हैं,—मेष, वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनुः, मकर, कुम्भ और मीन। सूर्य एक वर्षमें इन बारह राशियोंका परिभ्रमण करते हैं तथा प्रति दिन एक एक अंश जाते हैं। इस प्रकार ३६० दिनमें सूर्यका एक बार राशिचक्र परिभ्रमण किया जाता है।

यह राशिचक्र और कुछ भी नहीं है, उसी आकारके कुछ नक्षत्र हैं। ६८ नक्षत्रोंका जो एक मेषाकार नक्षत्र पुञ्ज नभोमण्डलमें दिखाई देता है, इस राशिचक्रके जिस भागमें नक्षत्रपुञ्ज रहता है, उसका नाम मेषराशि है। इस प्रकार अन्यान्य राशिविषयमें भी जानना होगा।

राशि शब्द देखो।

उक्त मेषादि द्वादश नक्षत्रपुञ्ज अचल हैं, किन्तु उनकी प्रायः तीन विकला करके एक वात्सरिक गति है। आकाशमण्डलके मध्यमण्डलमें राशिचक्र रहता है। उस चक्रके उत्तर-दक्षिण और भी असंख्य तारे हैं। इसके सिवा प्राचीन हिन्दूज्योतिर्विदोंने असामान्य बुद्धिकौशलसे २७ नक्षत्र या नक्षत्रपुञ्ज द्वारा राशिचक्रको और भी सूक्ष्म रूपसे विभक्त किया है। इनमेंसे प्रत्येक नक्षत्रका परिमाण १३ अंश २० कला है, अतएव सवा दो नक्षत्रकी एक एक राशि होती है। सूर्य एक एक मासमें इन सवा दो नक्षत्रका तथा १३ दिन कुछ दण्ड एक एक नक्षत्र भोग करते हैं।

उक्त सत्ताईस नक्षत्रोंमें विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, श्रवणा, पूर्वभाद्रपद, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्या, उत्तरफल्गुनी और चित्रा, इन बारह नक्षत्रोंसे वैशाख आदि बारह मासोंका नाम हुआ अर्थात् विशाखासे वैशाख, ज्येष्ठासे ज्येष्ठ और पूर्वाषाढ़ासे आषाढ़ इत्यादि। सूर्यके सायन और निरयन राशिचक्रका आदि अन्त नहीं है, परन्तु किसी विशेष निर्दिष्ट स्थानसे उसका आद्यान्त निरूपण किया जाता है। हम लोगोंके देशमें अश्विनी नक्षत्रके प्रथम अंशसे राशिचक्रका आरम्भ निरूपित होता है। पृथिवीके निरक्षवृत्तकी तरह उस चक्रके मध्य भागमें पूर्वपश्चिम व्याप्त एक सरलरेखा कल्पित होती है, उसका नाम विषुवरेखा है। प्रति वर्ष अयनमण्डलके जिन दो स्थानोंमें विषुव रेखा मिलती है, उसको क्रान्तिपातस्थलमें सूर्यके आगमनसे दिन रात समान होती है। अभी ९वीं या १०वीं चैत्र एक बार और ९वीं या १०वीं आश्विनको फिर एक बार क्रान्तिपात होता है। अतएव उन दो दिनोंमें दिवारात्रिका मान समान होता है। चैत्रमासके क्रान्तिपातको वासन्तिक और आश्विन मासके क्रान्तिपातको शारदीय क्रान्तिपात कहते हैं।

१३८१ वर्ष पहले चैत्र और आश्विन मासके ३० या ३१ दिनमें अश्विनी नक्षत्रके प्रथमांशमें और चित्रा नक्षत्रके षष्ठांशमें ४० कलामें ये दोनों क्रान्तिपात होते थे, अर्थात् उन दोनों नक्षत्रोंके उल्लिखित अंशके मध्य विषुवरेखाकी अवस्थिति थी और उन दोनों स्थलमें उसके साथ अयनमण्डलका संयोग होता था।

भारतीय ज्योतिर्विदोंका कहना है, कि अश्विनीनक्षत्रके प्रथमांशमें जो क्रान्तिपात होता है, सूर्यके वहां आनेसे महाविषुवसंक्रान्ति और चित्रानक्षत्रके उक्तांशादिमें जो क्रान्तिपात होता है, सूर्यके वहां उपस्थित होनेसे जलविषुवसंक्रांति होती है। आज भी यह नियम इस देशमें चला जाता है। किन्तु अभी उन दोनों स्थलोंमें विषुवरेखाके साथ अयनमण्डलका सम्मिलन नहीं होता। उनका संलग्न यूरोपीय मतानुसार प्रति वर्ष ५० विकला, १५ अनुकला है। हिन्दूज्योतिर्विदोंके मतसे अयनमण्डलके पश्चिमांशमें हट जाता है। अर्थात् उस परिमाणसे प्रति वर्ष विषुवरेखाके सञ्चालनकी कल्पना की जाती है तथा उसको अयनांश कहते हैं।

अयनांशकी गणनामें उक्त प्रकारकी विभिन्नता होनेका कारण यह है, कि अश्विनी अचल नक्षत्र है, तथापि उनके ३ विकलासे कुछ अधिक परिमाणमें एक स्वाभाविक गति है। उस गतिको क्रान्तिपातके वार्षिक सञ्चालनमें जोड़ कर हिन्दू ज्योतिषियोंने उस सञ्चालनका परिमाण ५४ विकला स्थिर किया है।

अभी ९वीं या १०वीं चैतको अश्विनी नक्षत्रके प्रथम अंशसे प्रायः २१ अंशके फासले पर जो स्थान इस देशमें मीनराशिका ६ अंशभुक्त कहा गया है, उसी स्थानमें वासन्तिक क्रान्तिपातमें उपस्थित होनेसे दिन और रात बराबर होती है। इस कारण इङ्गलैण्ड या अन्यान्य देशोंमें उस दिनसे रविका मेषसंक्रमण और उस स्थानसे मेषराशिका आरम्भ स्थिर हुआ है। सूर्यको इस प्रकारकी गति स्थिर करनेको सायनमत कहते हैं।

इस देशमें चैत्रमासके ३०वें या ३१वें दिनमें सूर्य जब अश्विनी नक्षत्रके प्रथमांशमें आते हैं, तब उस अंशसे मेषराशिका आरम्भ गिना जाता है। इसीको निरयण कहते हैं। हिन्दुओंमें शेषोक्त मत प्रचलित रहनेका कारण यह है, कि सायन मतानुसार किसी एक अपरिवर्त्तनीय स्थानसे मेषराशिका आरम्भ नहीं होता। प्रतिवर्ष उसका आरम्भ दूसरी दूसरी जगह होता है। इस सम्बन्धमें निरयण प्रणाली ही उत्कृष्ट है। क्योंकि अचल अश्विनी नक्षत्रसे मेषसंक्रान्तिकी गणना करनेके कारण एक ही स्थानसे मेषारम्भ गिना जाता है। फलतः उक्त दोनों मतमें प्रभेद यह है, कि सायनमतानुसार अभी जिस दिन मेष संक्रान्ति होती है, उससे प्रायः २१ दिन बाद निरयण मतानुसार वह संक्रान्ति होती है। सायन मतमें अभी जहां मेषारम्भ होता है, निरयण मतसे वहांसे प्रायः २१ अंश पीछे मेषारम्भ होता है। सायन मतानुसार वासन्तिक क्रान्तिपात चाहे अयनमण्डलसे कितनी ही दूर पश्चिम क्यों न हट जाय, वहींसे मेषराशि-आरम्भ निर्दिष्ट होगा। अतएव उस मतानुसार काल क्रमसे बारह राशिकी सीमा परिवर्त्तित होती है। यहां तक, कि अभी जिस स्थानको सायनमतावलम्बी मेषराशि कहते हैं, १३००० हजार वर्ष पीछे उनकी गणनामें वह स्थान तुलाराशिके अन्तर्गत होगा।

निरयणके मतसे बारह प्राचीन कालमें मेषादि बारह राशिका कोई परिवर्त्तन नहीं है। प्राचीन कालमें मेषादि बारह नक्षत्रोंके अधीनस्थ जो मेष आदि बारह राशि निर्द्धारित हुई थी, अभी भी वे सब राशि उन सब स्थानोंके अन्तर्गत हैं।

अतएव पक्षपातशून्य हो विचार कर देखनेसे यह अवश्य स्वीकार करना होगा, कि सायन और निरयण इन दोनों मतमेंसे राशिकी स्थिरताके सम्बन्धमें निरयण मत ही उत्कृष्ट है।

सायनचक्र परिवर्त्तनशील है। प्राचीन ज्योतिर्विदोंने ऋतुके अनुसार राशिचक्र विभाग किया था। वे लोग वसन्त ऋतुके आविर्भावसे मेषराशिका आरम्भ निर्द्धारण करते थे तथा उसी नियमानुसार सायनमतसे वासन्तिक क्रान्तिपातसे राशिचक्रका आरम्भ होता है। इस देशमें भी एक समय यह मत प्रचलित था। पुरा कालमें जब कृत्तिकानक्षत्रमें वासन्तिक क्रान्तिपात होता था तब उस नक्षत्रसे ज्योतिर्विद्गण राशिचक्र या मेषारम्भकी गणना करते थे। पीछे जब उक्त क्रान्तिपात अश्विनीनक्षत्रमें हटने लगा, तब फिर राशिचक्रका नूतन संस्कार हुआ था। उसी समयसे अश्विनीनक्षत्रसे मेषका आरम्भ गिना जाता है। किन्तु अभी वह क्रान्तिपात उत्तरभाद्रपद नक्षत्रके ६ अंशमें हट जाता है, अतएव उक्त राशिचक्रका कुछ परिवर्त्तन होना आवश्यक है।

निरयणकी गणनामें और एक सुविधा यह है, कि वैशाखादि बारह राशिमें पर्यायक्रमसे अवस्थितिका कोई परिवर्त्तन नहीं होता। वैशाख मासमें रवि मेषराशिमें अवस्थान तथा अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रके एक पादका भोग करते हैं। इसी प्रकार वे बारह महीनेकी बारह राशिमें अवस्थान तथा २७ नक्षत्रका भोग किया करते हैं। यही सूर्यकी वार्षिकी गति है। उक्त प्रकारसे वार्षिकी गति द्वारा सूर्य एक बार राशिचक्रका परिभ्रमण करते हैं।

इसके द्वारा सौरमास स्थिर हो जानेसे वैशाखादि बारह महीनोंमेंसे कोई भी एक नाम उल्लिखित होने पर उस मासमें सूर्य जो राशिभोग करते हैं, वही समझा जायेगा तथा किसी राशिका उल्लेख करनेसे तत्सम्बन्धीय सौरमास भी सङ्केतमें उल्लिखित होता है। जिस प्रकार वैशाख मास कहनेसे मेष राशि समझी जाती है, उसी प्रकार मेषराशि कहनेसे भी उसके अधीनस्थ वैशाख मास समझा जायेगा।

पहले ही कहा जा चुका है, कि पृथिवीके निरक्ष वस्त-

की तरह राशिचक्रका भी एक निरक्षवृत्त कल्पित होता है। उस कल्पित वृत्तका नाम विषुवरेखा है। उस रेखाके उत्तर दक्षिण २३ अंश २८ कलाके अन्तर पर दो विन्दुकी कल्पना की जाती है। उनमेंसे एक विन्दु उत्तरायणान्त विन्दु है अर्थात् सूर्यके उत्तर जानेकी अन्तिम सीमा है। उससे अधिक सूर्य और उत्तरकी ओर नहीं जा सकते। दूसरा दक्षिणायनान्तविन्दु है, सूर्यके दक्षिण जानेकी शेष सीमा है। उन दोनों विन्दुओंके मध्य जो एक कल्पित रेखा है, उसका नाम अयनान्तवृत्त है। सूर्य जिस पथसे उत्तरको ओर जाते हैं उसको उत्तरायण और जिस पथसे दक्षिणको ओर जाते हैं, उसको दक्षिणायन कहते हैं। सूर्यके उत्तरायण और दक्षिणयनमें दोनों प्रकारकी गति है। उत्तरायणके आरम्भ होनेसे पृथिवीके निरक्षवृत्तके उत्तरस्थित भारतवर्षकी तरह अन्यान्य देशोंमें दिनका परिमाण बढ़ता और रात्रिका परिमाण घटता है। उस समय दक्षिणस्थ देशोंमें दिवारात्रिकी ह्रास वृद्धिके विषयमें उसका ठीक विपर्यय होता है अर्थात् रात्रिका परिमाण बढ़ता और दिवा-मान घटता है।

१३८१ वर्ष पहले माघ और श्रावण मासके प्रथम दिनमें अयनपरिवर्त्तन होता था, अर्थात् १ली माघको सूर्यके मकर राशिमें प्रवेशसे ले कर आषाढ़के शेषमें मिथुन राशिके शेषांशमें गत होने तकका काल उत्तरायण और १ली श्रावणको सूर्यके कर्कट राशिमें प्रवेशसे ले कर पौष मासके शेषमें धनुराशिके शेषांशमें गत होने तकका काल दक्षिणायन कहलाता था तथा आज भी कहलाता है।

किन्तु अभी उक्त निर्दिष्ट समयसे प्रायः २१ दिन पहले अयनपरिवर्त्तन हुआ करता है। अतएव धनुराशिके प्रायः ६ अंशमें आरम्भ हो कर मिथुन राशिके प्रायः ६ अंशमें उत्तरायण और मिथुनराशिके उक्त अंशसे आरम्भ हो कर धनुराशिके प्रायः ६ अंशमें दक्षिणायन शेष होता है। अतएव इस देशकी पंजिकामें उत्तरायण और दक्षिणायनका आरम्भ और शेष जिस समय प्रदर्शित होता है वह प्रामाणिक नहीं है।

पहले लिख आये हैं, कि राशिचक्र ३६० अंशोंमें विभक्त है। सूर्य ३६५ दिन १५ दण्ड ३१ पल ३१ विपल २४ अनुपलमें उस राशिचक्रको अतिक्रमण करते हैं। यही रविकी वार्षिकी गति है। फिर ५९ कला ८ विकला राशिचक्रकी वक्रिमाके कारण सूर्यकी गति कभी तेज और कभी मन्द होती है। इस कारण उक्त गतिको मध्यगति कहते हैं। सूर्यकी दैनिक शीघ्रगति १ अंश १ कला ५ विकला है तथा वह एक मास करके प्रत्येक राशिका भोग करते हैं। वे सब भी एक निर्दिष्ट गतिके अनुसार परिभ्रमण किया करते हैं।

सूर्य जिस दिन जिस वार जिस अंशसे भ्रमण करना शुरू करते हैं, २८ वर्ष पीछे वे उसी दिन उसी वार को उसी पूर्व निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचते हैं। तभीसे मास संख्या और संक्रांति आदि पुनः उसी प्रकार हुआ करती हैं। चन्द्रमा भी उसी प्रकार १९ वर्ष पीछे उक्त स्थानमें लौटते हैं। उस समयसे पूर्णिमा, अमावास्यादि तिथि और सभी नक्षत्र पूर्व प्रकारसे होते हैं। इस राशिचक्रमें मङ्गलादि ग्रहोंकी जो वक्र और शीघ्र आदि गति कही गई है, वह सूर्यकी स्थितिके अनुसार स्थिर होती है। सूर्य जब उनके द्वितीय राशिस्थ अर्थात् ६० अंशके मध्य रहते हैं, तब उनकी शीघ्र गति, तृतीय राशिस्थ, ६०से ९० अंशके मध्य रहनेसे सरल गति; चतुर्थ राशिस्थ ९०से १२० अंशके मध्य रहनेसे मन्द गति, पञ्चम और षष्ठ राशिस्थ १२०से १८० अंशके मध्य रहनेसे वक्रगति, सप्तम और अष्टम राशिस्थ १८०से २४० अंशके मध्य रहनेसे अतिवक्रगति, नवम और दशम राशिस्थ २४०से ३०० अंशके मध्य रहनेसे पुनः सरल गति तथा एकादश और द्वादश राशिस्थ ३०० अंशसे और ३६० अंशके मध्य रहनेसे सूर्य द्वारा आकृष्ट हो वे पुनः शीघ्रगतिको प्राप्त होते हैं।

सूर्य जिस राशिके जितने अंशमें रहते हैं, उसकी अपेक्षा पश्चाल्लिखित अधिकांशमें मङ्गल, वृहस्पति, शनि और वक्रगामी बुध तथा शुक्रके रहनेसे उनके पश्चिम ओर अस्त तथा अल्पांशमें रहनेसे पूर्वकी ओर उदय होते हैं।

इसका विपरीत होनेसे शीघ्रगामी बुध और शुक्र तथा चन्द्र इन तीन ग्रहोंके सूर्यराश्यंशकी अपेक्षा निम्न लिखित अल्पांशमें स्थित होनेसे उनका पूर्व ओर अस्त तथा अधिकांशमें रहनेसे पश्चिमकी ओर उदय होता है।

सूर्य राश्यंशकी अपेक्षा जिस जिस ग्रहका जितना अंश कमी बेशी होनेसे उनका जिस जिस ओर उदय और अस्त होता है, उसकी तालिका नीचे दी गई है।

ग्रह	अल्पांश	उदय	अधिकांश	अस्त
मंगल	१७	पूर्व	१७	पश्चिम
बृहस्पति	११	,,	११	,,
शनि	१५	,,	१५	,,
बुधवक्री	१२	,,	१२	
शुक्रवक्री	८	,,	८	,,
चन्द्र	१२	पश्चिम	१२	पूर्व
बुधशीघ्र	१४	,,	१४	,,
शुक्रशीघ्र	१०	,,	१०	,,

पश्चिमकी ओर अस्त होनेके १५ दिन पहले बृहस्पति वृद्ध, १७ दिनमें अस्तमित, पीछे बाल्यप्राप्त अर्थात् पूर्वकी ओर उदित और १५ दिन बाद उसका बाल्यत्याग होता है। शीघ्र गतिविशिष्ट शुक्रके अस्त होनेसे पादास्त होता है। महास्त होनेके १५ दिन पहले वृद्ध तथा पीछे पूर्वकी ओर उदित हो कर ५ दिनके मध्य उसका बाल्य त्याग होता है। सूर्यके दिशांशके मध्य जिस किसी ग्रहके रहनेसे सूर्य अपने योग या आकर्षण-शक्तिके प्रभावसे जब उनका कुछ बल अपहरण करता है, तब वह ग्रह सूर्यके प्रबल तेजसे दग्ध या अस्तमित होता है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि एक सूर्यसे ही काल शीतग्रीष्मादि ऋतु आदि सभी होते हैं। सूर्यके एक उदयसे ले कर दूसरे उदय तक जो ६० दण्डकाल है, उसे सावन दिन कहते हैं। ३० सावन दिनका एक मास, १२ सावन मासका एक वर्ष होता है। सूर्य राशिचक्रमें मेषराशिके प्रथम अश्विनीनक्षत्रमें प्रवेश कर जो ३६५ दिन १५ दण्ड ३१ पल ३१ विपल २४ अनुपलमें समस्त राशिचक्रका भ्रमण करते हुए फिरसे अश्विनीनक्षत्रमें लौटते हैं, उसका नाम सौरवर्ष है। राशिचक्रकी वक्रिमाके कारण सूर्यका प्रत्येक राशियोगकाल समान नहीं है। इसीसे सौर मासकी विभिन्नता होती है। सौरवर्षमें ३६५ दिनसे अधिक जो १५ दण्ड ३१ पल ३१ विपल २४ अनुपल है, वह साधारण गणनामें छोड़ दिया जाता है। इस कारण प्रत्येक चौथे वर्षमें एक दिन अधिक ले कर ३६६ दिनका वह वर्ष होता है। जिस वारमें वर्ष आरम्भ होता है उसी वारमें वर्षका शेष होता है। अतएव दूसरा वर्ष उस वारके पीछेके वारमें शेष होता है। सूर्यकी गतिके अनुसार इसी प्रकार दिन, मास और वर्ष होता है।

सूर्य राशिचक्रके जिस अंशमें रहते हैं, चन्द्रमाके उसके १२ अंशके मध्य पहुंचनेसे अमावस्या होती है। उक्त दोनों ग्रह समसूत्रमें एक राशिमें अवस्थित होनेसे अमावस्या होती है। अर्थात् उक्त दोनों ग्रह एक राशिस्थ हो कर जब एक ही अंशगत होता है, तब उसे प्रकृत अमावस्या कहते हैं। उसी प्रकार सूर्यके १६८ अंशसे ले कर १८० अंश तक अर्थात् १२ अंशोंके मध्य चन्द्रमाके उपस्थित होनेसे पूर्णिमा होती है तथा सूर्यसे ठीक १८० अंशगत होनेसे उसको प्रकृत पूर्णिमा कहते हैं।

चन्द्र और सूर्य इन दोनोंकी ही गति है। पहले कहा जा चुका है, कि ५९ कला ८ विकला १० अनुकला करके सूर्यकी तथा १३ अंश १० कला १४ विकला करके चन्द्रमाकी दैनिक गति है। अतएव सूर्यसे निकल कर अर्थात् प्रकृत अमावस्याके बाद चन्द्रमा १२ अंश ११ कला ६ विकला १० अनुकला करके सूर्यकी तथा १३ अंश १० कला और १४ विकला करके चन्द्रकी दैनिक गति है। इसलिये सूर्यसे निकल कर अर्थात् प्रकृत अमावस्याके बाद चन्द्रमा १२ अंश ११ कला ६ विकला करके सूर्यकी अपेक्षा प्रति दिन तेज जाता है, इसको तिथि कहते हैं। चन्द्र और सूर्यकी जिस मध्यगतिका उल्लेख किया गया है, उसकी अपेक्षा उनकी गति कभी मन्द, कभी तेज होती है, इस कारण सभी तिथियां समान नहीं हैं। कभी ६० दण्डसे अधिक और कभी उससे कम होती है।

सूर्यकी गतिके अनुसार राशियोंका उदयकाल निर्णीत होता है। सूर्य जिस राशिमें रहते हैं, सूर्योदय होने पर उस राशिका तथा सूर्यास्त होने पर उसकी सप्तम राशिका उदय होता है। किन्तु पृथिवी अपने मेरुदण्ड पर एक नक्षत्र दिवारात्रिके मध्य एक बार घूमती है, अतएव सभी जगह उस उदय राशिसे क्रमशः बारह राशिका उदय होता है।

निरयणके मतानुसार सूर्य वैशाखादि बारह महीनेमें मेषादि बारह राशियोंमें रहते हैं, अर्थात् समस्त वैशाख मासमें, मेषराशिमें पीछे ज्येष्ठ मासमें, वृषराशिमें, उसके बाद आषाढमासमें मिथुनराशिमें इस प्रकार एक दूसरे मासमें एक दूसरी राशिमें क्रमशः वास करते हैं। प्रत्येक राशिका जो लग्नमान निर्दिष्ट है उसमें मासके दिनसंख्यानुसार भाग देनेसे भागफल जो पलादि होगा, उसीको रविकी दैनिक भुक्ति कहते हैं।

पृथिवीके निरक्षवृत्तके निकटस्थ देशोंमें ग्रहनक्षत्रादिका उदय जिस प्रकार सरल भावमें देखा जाता है, अक्षांशके दूरताप्रयुक्त अन्यान्य देशोंमें उनका उदय उस प्रकार सरल भावमें दिखाई नहीं देता। अर्थात् निरक्षवृत्तमें ग्रहोंकी यथार्थ स्थिति देखी जाती है, अक्षांशभेदसे वैसी स्थिति नहीं देखी जाती, उन्हें कभी राशिचक्रके अधिकांशमें और कभी न्यूनांशमें देख पाते हैं।

पहले ही कहा जा चुका है, कि पृथिवीके निरक्षवृत्तकी तरह आकाशमण्डलमें एक निरक्षवृत्त कल्पित हुआ है। जब लङ्कामें ४ दण्ड ३६ पल २ विपलमें मेषराशिका ३० अंश उदय होता है, तब नभःस्थ निरक्षवृत्तका केवल २७ अंश ५४ कला उदय होता है। इसको सूर्यकी माध्याह्निक रेखाका सरल उत्थान कहते हैं। राशिचक्र उस निरक्षवृत्तकी तरह सम्पूर्ण सरल नहीं है। इसी कारण कहीं कहीं प्रत्येक लग्नमानमें कुछ कुछ पृथक्ता देखी जाती है।

लङ्का पृथिवीके निरक्षवृत्तके समीप होनेके कारण भारतवासियोंने लङ्काके लग्नमानका अवलम्बन कर इस देशका लग्नमान स्थिर किया है, इसीसे उक्त खण्डका नाम लङ्कोदयखण्डा है। अक्षांशभेदसे भिन्न भिन्न देशमें राशियोंका लग्नमान भिन्न भिन्न हुआ करता है, किन्तु सभी जगह जो खण्डा निर्दिष्ट हुआ है, उस खण्डाका अवलम्बन कर लग्न निरूपण करना होगा। फलतः सभी देशोंमें निर्दिष्ट खण्डाका अवलम्बन करनेके बाद द्वादश राशिका लग्नमान स्थिर करना होता है। उक्त द्वादश राशिका जो लग्नमान निर्दिष्ट हुआ है, उतना ही परिमाणकाल सूर्य अवस्थान करते हैं। जिस राशिमें सूर्य उदय होते हैं उसकी सातवीं राशिमें अस्त होते हैं।

सूर्य सौर जगत्के मध्य प्रधान ग्रह हैं, इसीसे उनका नाम आदित्य हुआ है। यह आत्मा, दीप्ति, आरोग्य, क्षमता, सम्मान, मित्र और पदवृद्धिकारक है या सूर्य ही द्वारा जातकके पिताका शुभाशुभ, राजा या क्षमताशाली व्यक्तियोंकी अनुकूलता या प्रतिकूलताका विचार किया जाता है।

सूर्यके गोचर फल और उसकी स्फुटसाधन प्रणाली आदिका विषय रवि शब्दमें और जातकका विषय जातक शब्दमें देखो।

सूर्यपूजा

सूर्य ही एकमात्र सौर जगत्में प्रधान हैं, इसीसे शास्त्रमें कहा है, कि देवपूजादि चाहे जो कोई कार्य क्यों न किया जाय, उसमें पहले सूर्यार्घ्य दे कर पीछे अन्य देवताकी पूजा करनी होती है। सूर्यकी पूजा किये बिना अन्य देवताकी पूजा करनेसे वह पूजा निष्फल होती है। देवपूजास्थलमें पहले सूर्यकी, पीछे गणेश आदिकी पूजा करनी होती है।

"आरोग्यं भास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात्।
ज्ञानञ्च शङ्करादिच्छेन्मुक्तिमिच्छेज्जनार्दनात्॥"

सूर्यके निकट आरोग्य, अग्निके निकट धन, शङ्करके निकट ज्ञान और विष्णुके निकट मुक्तिकी कामना करे। इस वचनानुसार सूर्य आदि देवगण उक्त फल शीघ्र ही देते हैं। बिल्वपत्र द्वारा सूर्यकी पूजा नहीं करनी चाहिये।

अशौचापगम आदि स्थलोंमें भी पहले सूर्यार्घ्य दे कर पीछे अन्यकर्म करनेका अधिकार है। स्त्री, शूद्रादि सबोंके सूर्यार्घ्य देनेमें अधिकार है। सूर्यकी पूजा करनेवालेको सामान्य पूजापद्धतिके नियमानुसार पूजा कर सूर्यपूजाकी पद्धतिके अनुसार पूजा करनी चाहिये।

तन्त्रशास्त्रके मतसे सौर अर्थात् जो सूर्योपासक हैं, उनके मतसे सूर्य ही सृष्टि, स्थिति और संहारके कर्त्ता है। एकमात्र उनकी उपासना द्वारा ही सभी कामना सिद्ध होती है और अन्तमें मोक्षलाभ होता है।

सूर्यकी पूजा और पूजापद्धति तन्त्रसारमें सविस्तार लिखी है। विस्तार हो जानेके भयसे उसका उल्लेख यहां नहीं किया गया। इसके सिवा प्रति रविवारको सूर्य

उद्देशमें पूजा कर अर्घ्यदान करनेकी विधि देखा जाती है, उसे सूर्य्यार्घ्यदान प्रयोग कहते हैं।

कविकल्पलतामें लिखा है, कि सूर्य्यका वर्णन करनेमें निम्नोक्त सभी विषयका वर्णन करना होता है। यथा—अरुणता, रविमणिप्रकाश, चक्रवाकप्रीति, पद्मप्रकाश, पथिकप्रीति, लोकप्रीति, तापार्त्ति, चन्द्र और दीपका अप्रकाश, औषधिका अप्रकाश, पेचकार्त्ति, तमोऽभाव, चौरार्त्ति, कुमुदार्त्ति और कुलटार्त्ति।

८ सूर्य्यकी दीप्ति। ९ बारहकी संख्या।

सूर्य्यकमल (सं० पु०) सूरजमुखी फूल।

सूर्य्यकर (सं० पु०) सूर्य्यकी किरण।

सूर्य्यकान्त (सं० पु०) सूर्य्यः कान्तो यस्य, सूर्य्यस्य कान्तः प्रियो वा। १ एक प्रकारका स्फटिक या बिल्लौर सूर्य्यके सामने रखनेसे जिसमेंसे आंच निकलती है, सूर्य्यकान्त मणि। पर्याय—सूर्य्यमणि, सूर्य्याश्मन्, दहनोपम, तपनमणि, तापन, रविकान्त, दीप्तोपल, अग्निगर्भ, ज्वलनाश्मन्, अर्कोपल। गुण—उष्ण, निर्मल, रसायन, वातश्लेष्महर, मेध्य, सूर्य्यका प्रिय। (राजनि०) २ पुष्पविशेष, एक प्रकारका फूल। ३ मार्कण्डेयपुराणके अनुसार एक पर्वतका नाम।

सूर्य्यकान्ति (सं० स्त्री०) १ सूर्य्यकी दीप्ति या प्रकाश। २ पुष्पविशेष। ३ तिलका फूल।

सूर्य्यकाल (सं० पु०) सूर्य्योपलक्षितः कालः। १ दिवस, दिन। २ फलितज्योतिषमें शुभाशुभ निर्णयके लिये एक चक्र।

सूर्य्यकालानलचक्र (सं० क्ली०) एक ज्योतिषचक्र जिससे मनुष्यका शुभाशुभ जाना जाता है। स्वरोदयमें इस चक्रका विशेष विवरण लिखा है। एक पुरुष अंकित कर उसके स्थानमें सभी नक्षत्र विन्यास कर अपने अपने नक्षत्र द्वारा फल निरूपण करना होता है।

विशेष विवरण स्वरोदयग्रन्थमें देखो।

सूर्य्यकेतु (सं० त्रि०) १ सूर्य्यविहित ध्वजयुक्त। (पु०) २ राजभेद।

सूर्य्यकान्त (सं० पु०) १ एक प्रकारका ताल। २ एक प्राचीन जनपद। रथकान्त देखो।

सूर्य्यक्षय (सं० पु०) सूर्य्यमण्डल।

सूर्य्यगङ्गातीर्थ (सं० क्ली०) पुण्यतीर्थविशेष।

सूर्य्यगढ़—मुङ्गेरके पश्चिम एक इतिहास-प्रसिद्ध स्थान। यह एक बड़ा ग्राम है और अक्षा० २५° १५' २५" उ० तथा देशा० ८६° १६' ?' पू०के मध्य फैला हुआ है। तारीख-इ-दाउदीके अनुसार मुङ्गेरसे इसकी दूरी एक कोससे कुछ अधिक या कम होगी। हजरत ६६४ हिजरीमें बङ्गाधिपति २य बहादुर शाहके साथ 'इससे ४ मील पश्चिम (शायद फतेपुर नामक स्थानमें) आदलीका युद्ध हुआ था। इस युद्धमें सुलेमान कररानीने बहादुर शाहको मदद पहुंचाई थी। आदली परास्त हुआ और पीछे मारा गया। इस युद्धकी तारीखके विषयमें मतभेद है। तारीख-इ दाउदीके अनुसार ८ वर्ष राज्य करनेके बाद ९६८ हिजरामें आदली मारा गया था और बदाउनीका कहना है, कि ९६२ हिजरीमें आदलीकी मृत्यु हुई।

सूर्य्यगढ़—मध्यप्रदेशके चन्दा जिलान्तर्गत अहीरी राज्यके उत्तर जो अभ्रभेदी मनोरम गिरि विराजित हैं, उसका नाम सूर्य्यगढ़ है। १७०० ई०के लगभग साधु बरिया और मूल बरिया नामक दो सरदार उस समयके राजा राम शाहके विरुद्ध बागी हो गये और आस पासके प्रदेशोंको लूटने लगे। आखिर राम शाहने अपने आत्मीय कोक शाहको अहीरी राज्यका सरदार बना कर उसकी सहायतासे सूर्य्यगढ विध्वस्त और विद्रोहियोंका विनाश किया।

सूर्य्यगर्भ (सं० पु०) १ एक बोधिसत्वका नाम। २ एक बौद्धसूत्रका नाम।

सूर्य्यग्रह (सं० पु०) सूर्य्यरूपो ग्रहः। १ नव ग्रहोंमेंसे प्रथम ग्रह सूर्य्य। सूर्य्यस्य ग्रहः ग्रहणं। २ सूर्य्योपराग, सूर्य्यग्रहण। ३ राहु और केतु। ४ जलपात्र या घड़ेका पेंदा।

सूर्य्यग्रहण (सं० क्ली०) सूर्य्यस्य ग्रहणं। सूर्य्यका ग्रहण। विशेष विवरण ग्रहण शब्दमें देखो।

सूर्य्यचक्षु (सं० पु०) रामायणके अनुसार एक राक्षसका नाम। (रामा० ६।६६।१३)

सूर्य्यज (सं० पु०) सूर्य्याज्जायते इति जन-ड। १ मनु।

२ यम। ३ रैवन्त। ४ सुग्रीव। ५ शनि ग्रह। ६ कर्ण।

सूर्यजा (सं० स्त्री०) सूर्य-जन-ड, टाप्। यमुना नदी।

सूर्याजी—शिवाजीके सेनानायक तानाजी मालुश्रीका छोटा भाई। शिवाजी जब सिंहगढ़ दुर्गकी ओर लोलुप दृष्टिपात कर रहे थे, उस समय उदिवान् इसका अध्यक्ष था। देशके अन्यान्य दुर्गोंकी अपेक्षा यह खूब सुरक्षित था। शिवाजी यह अच्छी तरह जानते थे, कि इसे अधिकार करना सहज नहीं है। एक दिन जब वे इसी ऊहापोहमें पड़े हुए थे, तब महावीर तानाजीने आ कर प्रस्ताव किया, कि यदि मेरे छोटे भाई सूर्याजीके अधीन एक हजार चुनी हुई मावली सेना भेजी जाय, तो वे आसानीसे दुर्गजय कर सकेंगे। शिवाजी इस प्रस्ताव पर सहमत हुए। तदनुसार १६७० ई०के फरवरी मासमें १ हजार मावली सेना ले कर दोनों भाइयोंने रायगढ़से विभिन्न पथ हो कर सिंहगढ़की ओर यात्रा कर दी। दुर्गके पास ही दोनों भाई फिर मिले। तानाजी अपने सैन्यदलको दो भागोंमें विभक्त कर एक भाग सूर्याजीके अधीन वहीं छोड़ गये। जाते समय उन्होंने कहा था, कि जरूरत नहीं होनेसे इन्हें यहीं पर अपेक्षा करनी होगी।

इधर तानाजीने आ कर दुर्ग पर चढ़नेकी कोशिश की और बड़ी मुश्किलसे वे दुर्ग पर चढ़े। वहां दोनों पक्ष प्राणपणसे युद्ध करने लगे। आखिर तानाजी शत्रुके शरसे घायल हो कर जमीन पर गिर पड़े। हतोत्साह मावली सेना भागनेकी तैयारी करने लगी। ठीक इसी समय बाकी सैन्यदल ले कर सूर्याजी वहां आ धमके। उनके उत्साहसे उद्दीपित और उनके बलसे बलिष्ठ हो कर मावली सेना पुनः शत्रु पर टूट पड़ी। तुमुल संग्राम छिड़ गया। तीन सौ मावली और पांच सौ राजपूत हताहत होनेके बाद सूर्याजीके बाहुबलसे सिंहगढ़ दुर्ग शिवाजीके हाथ लगा। महाराष्ट्रपतिने सेना और सेनानायकोंको विशेष पुरस्कार दिया। तानाजीके प्रति शोक प्रकाश करते हुए उन्होंने कहा, "सिंहगढ़ मैंने दखल किया सही, पर सिंहको भी खो बैठा।" पीछे उन्होंने सूर्याजी को सिंहगढ़का अधिनायक बना कर सम्मानित किया। सूर्याजीने वीरत्वकी पराकाष्ठा दिखला कर पुरन्दर दुर्ग शिखर पर शिवाजीकी विजय-पताका फहराई।

सूर्यतनय (सं० पु०) सूर्यस्य तनयः। १ शनिग्रह। २ सावर्णि मनु। ३ रैवन्त। ४ सुग्रीव। ५ कर्ण।

सूर्यतनया (सं० स्त्री०) सूर्यस्य तनया। यमुना।

सूर्यतपस् (सं० पु०) मुनिविशेष।

सूर्यतापिनी (सं० स्त्री०) एक उपनिषद्का नाम।

सूर्यतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष। महाभारतके वन पर्वमें इस तीर्थका उल्लेख है। यह अतिशय पुण्य तीर्थ है।

सूर्यतेजस् (सं० त्रि०) सूर्यके समान तेजःसम्पन्न, महातेजस्वी।

सूर्यत्वच् (सं० त्रि०) सूर्यसंवृत या सूर्य रश्मि सदृश।

सूर्यत्वचस् (सं० त्रि०) सूर्यके समान तापयुक्त।

सूर्यदास—पद्यावलीधृत एक प्राचीन संस्कृत कवि।

सूर्यदास पण्डित—एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, ज्ञानराज पण्डितके पुत्र और पार्थपुरवासी नागनाथके पौत्र। इन्होंने निम्नलिखित ग्रन्थोंकी रचना की,—बालकबोधिका नामक रुचिरललितटीका, गणित मालती, (१५४२ ई० में) गणितामृतकूपिका नामक लीलावतीटीका, ग्रह विनोद, ताजिकालङ्कार, नृसिंहचम्पू, परमार्थप्रपा नामक भगवद्गीताटीका, भक्तिशतक, रामकृष्णविलोमकाव्य, वेदान्तशतश्लोकटीका, शृङ्गारतरङ्गिणी नामक अमरुशतक टीका, सिद्धान्तशिरोमणिटीका, सिद्धान्तसारसमुच्चय, सूर्यप्रकाशक नामक भास्करकी बीजगणितटीका और सूर्यभट्टीय नामक ज्योतिर्ग्रन्थ।

सूर्यदेव (सं० पु०) भगवान् श्रीसूर्य।

सूर्यदेवत्य (सं० त्रि०) सूर्यदेवता-सम्बन्धी।

सूर्यध्वज (सं० पु०) १ शिव। २ महाभारतके अनुसार एक प्रसिद्ध राजा।

सूर्यध्वजपताकिन् (सं० पु०) शिव।

सूर्यनक्षत्र (सं० क्ली०) सूर्यके साथ नक्षत्रका योग।

सूर्यनगर—काश्मीर राज्यकी राजधानी, श्रीनगरका दूसरा नाम। श्रीनगर देखो।

सूर्यनन्दन (सं० पु०) सूर्यस्य नन्दनः। १ शनि। २ कर्ण।

सूर्यनाभ (सं० पु०) दानवविशेष। (हरिवंश)

सूर्यनारायण (सं० पु०) सूर्य रूपी नारायण।

सूर्यनारायण—१ एक दिन प्रबन्ध और प्रासभारतकाव्यके रचयिता। २ वेदतैजस नामक व्यासशिक्षा-भाष्य प्रणेता।

सूर्यनेत्र (सं० पु०) गरुड़के एक पुत्रका नाम।

सूर्यपण्डित—रामकृष्णकाव्यके रचयिता। सूर्यदास देखो।

सूर्यपति (सं० पु०) सूर्यः पतिर्यस्य। सूर्य देवता।

सूर्यपत्नी (सं० स्त्री०) संज्ञा, छाया।

सूर्यपत्र (सं० पु०) १ अर्कपत्रो, इसरमूल। २ सूर्यावर्त्त-क्षुप, आदित्यभक्ता, हुरहुर। ३ मदारका पौधा।

सूर्यपर्णी (सं० स्त्री०) १ अर्कपत्री, इसरमूल। २ माषपर्णी, वन उड़द, मखवन।

सूर्यपर्वन् (सं० क्ली०) वह काल जिसमें सूर्य किसी नई राशिमें प्रवेश करता है।

सूर्यपाद (सं० पु०) सूर्यकी किरण।

सूर्यपुत्र (सं० पु०) १ वरुण। २ शनि। ३ यम। ४ अश्विनीकुमार। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

सूर्यपुत्री (सं० स्त्री०) सूर्यस्य पुत्री। १ यमुना। २ विद्युत, बिजली।

सूर्यपुर (सं० क्ली०) काश्मीरके एक प्राचीन नगरका नाम।

सूर्यपुराण (सं० क्ली०) एक छोटा ग्रन्थ जिसमें सूर्य-माहात्म्य वर्णित है।

सूर्यपुर—चौबीस परगने जिलेकी एक खाल। इसके तीरवर्ती एक गांवका भी यही नाम है। यहाँ धानका कारबार जोरों चलता है।

सूर्यपूजा (सं० स्त्री०) सूर्यस्य पूजा। सूर्यकी अर्चना, सूर्योपासना।

सूर्यप्रदीप (सं० पु०) एक प्रकारका ध्यान या समाधि।

सूर्यप्रभ (सं० पु०) १ श्रीकृष्णकी पत्नी लक्ष्मणाके प्रासाद या भवनका नाम। २ एक नागका नाम। ३ एक बोधिसत्वका नाम। ४ एक प्रकारकी समाधि। (त्रि०) ५ सूर्यके समान दीप्तिमान्।

सूर्यप्रभाव (सं० त्रि०) १ सूर्यसे उत्पन्न। (पु०) २ शनि। ३ कर्ण।

सूर्यप्रशिष्य (सं० पु०) जनकका एक नाम।

सूर्यफणिचक्र (सं० क्ली०) सभी कार्योंका शुभाशुभज्ञापक चक्रविशेष। शुभ या अशुभ कोई कार्यानुष्ठान करनेमें इस चक्र द्वारा उस कार्यका भला बुरा जाना जा सकता है। विशेषतः युद्धमें यात्रा करते समय इस चक्रमें शुभाशुभ देख कर युद्धयात्रा करनी होती थी। युद्धयात्रा कालमें परीक्षा करके इस चक्रमें यदि अशुभ प्रतीत हो, तो युद्धमें निश्चय हो पराजय होती है। स्वरोदयमें इस चक्रका विशेष विवरण लिखा है।

सूर्यबलिराम—रहस्यत्रयवाक्यार्थके रचयिता।

सूर्यबिम्ब (सं० पु०) सूर्यस्य बिम्बः। सूर्यका मण्डल। (वृहत्सं० ३।११)

सूर्यभक्त (सं० पु०) १ बन्धूक पुष्प वृक्ष, दुपहरिया। २ सूर्यका उपासक।

सूर्यभक्तक (सं० पु०) सूर्यभक्त देखो।

सूर्यभक्ता (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सूर्यभा (सं० त्रि०) सूर्यके समान दीप्तिमान्।

सूर्यभागा (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम।

सूर्यभानु (सं० पु०) १ रामायणके अनुसार एक यक्षका नाम। (रामायण ७।१४.२५) २ एक राजाका नाम।

सूर्यभ्राज् (सं० त्रि०) सूर्यकी रश्मिविशिष्ट।

सूर्यभ्राता (सं० पु०) ऐरावत हाथीका नाम।

सूर्यमणि (सं० पु०) सूर्यप्रिया मणिः। १ सूर्यकान्त मणि। (हेम) २ एक प्रकारका पुष्प वृक्ष।

सूर्यमण्डल (सं० क्ली०) सूर्यस्य मण्डलं। सूर्यसन्निधिवेष्टन, सूर्यका घेरा। पर्याय—परिवेश, परिधि, उपासूर्य, कमण्डलु। सूर्यके चारों ओर जो मण्डलाकार वेष्टन या घेरा है, उसीको सूर्यमण्डल कहते हैं। सूर्य-मण्डल शिशिर कालमें ताम्र अथवा कपिल वर्ण, वसन्तकालमें हरित्कुंकुम सदृश वर्ण, ग्रीष्मकालमें कुछ पाण्डुवर्ण और स्वर्णाभ, वर्षाकालमें शुक्लवर्ण, शरत्कालमें पद्मगर्भ छवि तथा हेमन्तकालमें रक्तवर्ण होनेसे शुभकारक होता है। किन्तु वर्षाकालमें यदि यह स्निग्ध हो, तो अशुभ फल माना जाता है। रुक्ष या श्वेतवर्ण होनेसे ब्राह्मणोंका विनाश, रक्तका आभा-विशिष्ट होनेसे क्षत्रियोंका, पीतवर्ण होनेसे वैश्यका और

कृष्णवर्ण होनेसे शूद्रका नाश होता है। ग्रीष्मकालमें सूर्यमण्डलके रक्तवर्ण होनेसे प्राणियोंका भय, वर्षाकालमें कृष्णवर्ण होनेसे अनावृष्टि और हेमन्तकालमें पीतवर्ण होनेसे रोगभय होता है। यदि वर्षाकालमें सूर्यमण्डल इन्द्रचाप द्वारा खण्डित देहरूपमें दिखाई दे, तो राजाओंका विरोध होता है। किन्तु उसके निर्मल किरणविशिष्ट होनेसे शीघ्र ही वृष्टि होती है। यदि वर्षाकालमें सूर्यमण्डल शिरीषपुष्पकी तरह आभाविशिष्ट हो, तो सद्योवृष्टि तथा मयूरपुच्छकी तरह आभाविशिष्ट हो, तो बारह वर्ष अनावृष्टि होती है। सूर्यमण्डलके श्यामवर्ण होनेसे देशमें कीटभय और भस्मतुल्य वर्णविशिष्ट होनेसे परराष्ट्रसे भय होता है। शुक्ल, रक्त, पीत और कृष्ण इन चार वर्णोंमें किसी भी प्रकारके वर्णका एक चिह्न यदि सूर्यमण्डलमें दिखाई देता हो, तो दुर्भिक्ष, दो दिखाई देनेसे राजाका विनाश, उससे अधिक दिखाई देनेसे ब्राह्मणादि चारों वर्णोंका विनाश तथा नाना प्रकारका अमङ्गल होता है। सूर्यमण्डल नाना वर्णसे रञ्जित या धूम्रवर्ण होनेसे यदि शीघ्र वृष्टि न हो, तो युद्धविग्रहादि द्वारा सारी पृथिवी विध्वस्त होती है। यदि छत्र, ध्वज और चामर आदि चिह्नों द्वारा सूर्यमण्डल विद्ध हो, तो राजपरिवर्त्तन होता है तथा उसके स्फुलिङ्ग या धूमादि द्वारा आच्छन्न होनेसे सभी लोगोंकी मृत्यु होती है। सूर्यमण्डल घटाकार दिखाई देनेसे प्राणी भूखके मारे प्राण त्याग देते हैं, खण्डाकार होनेसे राजाका विनाश, किरणहीन होनेसे भय, तोरणरूप होनेसे नगर-विनाश और छत्राकार होनेसे देशविनाश होता है। सूर्यमण्डलमें यदि काली रेखा दिखाई दे, तो पहले राजाका विनाश होता है। इत्यादि प्रकारसे सूर्यमण्डलके लक्षण द्वारा देश, राजा और पृथिवीस्थ प्राणियोंका शुभाशुभ निरूपण करना होता है। (बृहत्स० ३ अ०)

ब्राह्मणादि प्रातर्मध्याह्न और सायंकाल सूर्यमण्डलमें अवस्थित गायत्रीका ध्यान कर उनका जप करते हैं। तान्त्रिक संध्यामें सूर्यमण्डलमें अभीष्ट देवीकी चिन्ता कर गायत्रीका जप करना होता है।

सूर्यमन्दिर—सूर्यदेवका मन्दिर। भारतवर्षके नाना स्थानोंमें सूर्यमन्दिर हैं। उनमेंसे मूलतान, कोणार्क और भिनमालका सूर्यमन्दिर प्रधान और प्रसिद्ध है। मूलतान और कोणार्क शब्दमें वहांके सूर्यमन्दिरका परिचय दिया गया है। यहां भिनमालके सूर्यमन्दिरका परिचय दिया जाता है,—छठीसे नवीं सदी तक जिस इतिहास प्रसिद्ध श्रीमालमें गुजरातके गुर्जरोंकी राजधानी था, उसका दूसरा नाम भीलमाल है। यह आबुशैल-श्रेणीसे प्रायः पचास मील पश्चिममें अवस्थित है। यहां प्राचीन भारतकी अनेक गौरवस्मृति आज भी विद्यमान है। यहांका विध्वस्त सूर्यमन्दिर अभी भी दर्शकोंके हृदयमें अभूतपूर्व विस्मयका सञ्चार करता है।

सूर्यमल्ल—एक जाट सरदार। इसने सादिद खांके नामानुसार सादिदगढ़ नामक प्राचीन लोदी दुर्ग अधिकार किया और इसका 'रामगढ़' नाम रखा। अभी भी कोयेल शहरसे प्रायः दो मील उत्तर यह दुर्ग अवस्थित है। १७५७ ई०में मुरसानराज कृपासिंहको विताड़ित कर सूर्यमलने यह राज्य भी दखल किया परन्तु १७६१ ई०में कृपासिंहने फिर अपने राज्य पर अधिकार जमाया।

रामगढ़ अधिकारके बाद दो वर्ष बीतते न बीतते १७५९ ई०में अहमदशाह अबदलीने आ कर कोयेलसे सूर्यमलको निकाल भगाया। किन्तु जब दुर्रानी फिर कन्धहार लौट गये तो अपनी जाट सेना ले कर सूर्यमल यमुना पार कर गया और आगरा अधिकार कर दोआबकी ओर बढ़ा। रोहिला सरदार नजीब उद्दौलाने यमुना तीरवर्ती तप्पल और जेब नामक स्थानके मध्यस्थलमें आ उसे रोका। किन्तु उसके पास थोड़ी सी सेना थी। इस कारण कुछ दिन बाद उत्तरकी ओर हट जाना ही उसने अच्छा समझा। सूर्यमल भी थोड़ी सेना ले कर मीरट जिलेकी हिन्डाल नदीके तीरवर्ती सहोदर तक अग्रसर हुआ। बाकी सेना ले कर उसके लड़के जवाहिरने सिकन्दरा पर अधिकार जमाया। एक दिन सहोदरमें आखेट करते समय अकस्मात् मुगलसेनाने आ कर सूर्यमलको घेर लिया। कुछ काल लड़ाई करनेके बाद ही जाटाधिपति दलबलके साथ मारा गया। उसका मस्तक ध्वजाग्रमें लटका कर मुगलसेना आगे बढ़ी। डरके मारे जाट सेना दोआब जीतनेकी आशा छोड़ कर स्वदेश भाग गई। सूर्यमलकी

मृत्युके बाद उसका लड़का जवाहिर जाटोंका दलपति हुआ था। (१७६४ ६५ ई०)

सूर्यमल्ल—गुजरात जिलेके लूनावाद गद्दीका दावा करनेवाला एक व्यक्ति। इसने कुछ सेना संग्रह कर लूनावादराज पर आक्रमण कर दिया। किन्तु हार खा कर वह पालो नामक स्थानमें जा छिपा। १८५७ ई०-के गदरके समय लेफटनाण्ट आलवान जब यहां आये, तब सूर्यमलने उन्हें रोकनेको चेष्टा की थी, फलतः ग्राम छार-खार कर डाला गया।

सूर्यमाल (सं० पु०) शिव, महादेव। (भारत शिवसहस्र)

सूर्यमास (सं० पु०) सौरमास देखो।

सूर्यमुखी (सं० पु०) सूरजमुखी देखो।

सूर्यरथ (सं० पु०) सूर्यका रथ। (भाग० ५।२०।३०)

सूर्यरश्मि (सं० पु०) १ सूर्यकी किरण। २ सविताका एक नाम। (त्रि०) ३ सूर्यकी रश्मिके समान रश्मि विशिष्ट। (ऋक् १०।१३६।१)

सूर्यराम—कर्मविपाकसारके प्रणेता।

सूर्यर्क्ष (सं० क्ली०) वह नक्षत्र जिसमें सूर्यकी स्थिति हो।

सूर्यर्च (सं० स्त्री०) सूर्यप्रकाशिका ऋक्। सूर्यप्रकाशक ऋकमन्त्र। (भाग० ५।७।१३)

सूर्यलता (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सूर्यलोक (सं० पु०) सूर्यस्य लोकः। सौरभुवन। काशीखण्डमें लिखा है, कि सूर्यलोक चारों ओर कदम्ब पुष्पके केशरकी तरह है। यह स्थान सूर्यकी किरणों द्वारा सर्वदा देदीप्यमान रहता है। इस लोकमें सूर्य दो लोलापद्म धारण किये हुए हैं। उनका रथ ६ हजार योजन विस्तृत और एक पहियेका है। उस रथमें सात घोड़े लगे हैं। अरुण उनकी लगाम पकड़ कर रथके ऊपर बैठे हुए हैं, जो यथाविधान सूर्यकी उपासना करते हैं उन्हें सूर्यलोककी प्राप्ति होती है। (काशीख० ६ अ०)

सूर्यलोचना (सं० स्त्री०) एक गन्धर्वीका नाम।

सूर्यवंश (सं० पु०) सूर्यस्य वंशः। सूर्यकी सन्तति। पुराणमें इस प्रकार लिखा है—परमेश्वरसे ब्रह्मा, ब्रह्माके पुत्र मरीचि, मरीचिके पुत्र कश्यप और कश्यप-के पुत्र सूर्य हैं। सूर्यके पुत्र वैवस्वत मनु हैं। ये सत्ययुगके राजा थे। त्रेतायुगमें इनके पुत्र इक्ष्वाकु

हुए। इक्ष्वाकु अयोध्याका शासन करते थे। त्रेता और द्वापरके सन्धिकालमें श्रीरामचन्द्र दशरथके पुत्र-रूपमें अवतीर्ण हुए। द्वापर युगके आरम्भमें इनके पुत्र कुश हुए। कुशके वंश सुमित्र तकने कलियुगके हजार वर्ष तक राज्य किया था। उन्होंसे इस वंशकी निवृत्ति हुई है।

जगत् प्रलयके बाद एकमात्र पुरुष परमब्रह्म ही विद्यमान थे। कल्पके अन्तमें इसके सिवा और कुछ भी न था। फिरसे सृष्टिके प्रयासमें उन परम पुरुषकी नाभिसे एक हिरण्मय पद्मकोष निकला। उससे चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्न हुए। ब्रह्माके मनसे मरीचिका जन्म हुआ। मरीचिके पुत्र कश्यप हुए। कश्यपकी पत्नी दक्ष-कन्या अदिति थीं। उनके गर्भ और कश्यपके औरससे सूर्यका जन्म हुआ। उन्हों सूर्यने संज्ञाके गर्भमें मनुने जन्म ग्रहण किया। मनु अनपत्य थे। वशिष्ठने इनके पुत्रार्थ मित्रावरुणके उद्देशसे यज्ञानुष्ठान किया। मनुके इक्ष्वाकु आदि १० पुत्र हुए।

इक्ष्वाकुवंश—इक्ष्वाकुका वंश अति विस्तीर्ण है। इक्ष्वाकुके एक सौ पुत्र हुए। उन पुत्रोंमें विकुक्षि, निमि आदि श्रेष्ठ थे। इन सौ पुत्रोंमें पचीसने विन्ध्य और हिमालय पर्वतके मध्यवर्ती आर्यावर्त्तके सामने समुद्र पर्यन्त एक एक मण्डलमें राज्य किया। उसी प्रकार पीछे भी २५ने राज्य किया, किन्तु मध्यस्थलमें ज्येष्ठ तीनने और अन्यान्य भागमें अन्यान्य पुत्रोंने राज्य किया था।

अग्निपुराणमें सूर्यवंशका वर्णन इस प्रकार आया है—ब्रह्माके पुत्र मरीचि, मरीचिके पुत्र कश्यप और कश्यपके पुत्र सूर्य थे। सूर्यकी चार स्त्री थी,—राज्ञी, प्रभा, संज्ञा और सुवर्णा। राज्ञी रैवतकी कन्या थी। इसके गर्भसे रेवन्त नामक पुत्र और प्रभासे प्रभात नामक पुत्र हुए। विश्वकर्माकी कन्या संज्ञा थी। संज्ञाके गर्भसे वैवस्वत मनु तथा यम और यमुना नामक दो यमज सन्तान उत्पन्न हुई। इसके सिवा शनि, तपती, विष्टि और अश्विनीकुमारने भी जन्मग्रहण किया। छायाके गर्भसे सावर्णि मनुका जन्म हुआ। वैवस्वत मनुके इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त और प्रांशु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। नाभागसे इष्टनम, सत्तम, करुष और

पृषध्र नामक महापराक्रमी पुत्रने जन्मग्रहण किया। ये सब पुत्र अयोध्याके राजा थे।

मनुके इला नामकी एक कन्या थी। बुद्धके औरस और इलाके गर्भसे पुरुरवाका जन्म हुआ। पीछे राजा सुद्युम्नके औरस और इलाके गर्भसे उत्कल, गय और विनताश्व नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। इन तीन पुत्रोंमेंसे उत्कलने उत्कलमें, विनताश्वने समस्त पश्चिम दिशामें और गयने गयापुरीमें राज्य किया। वशिष्ठके आदेशसे सुद्युम्नको प्रतिष्ठान नामक पुरी मिली। पीछे यह पुरी उन्होंने पुरुरवाको दे दी।

नरिष्यन्तके पुत्र शकगण, नाभागके पुत्र वैष्णव और धृष्टके पुत्र अम्बरीष थे। अम्बरीष अत्यन्त प्रजारक्षक राजा थे। धृष्टसे ही धार्ष्टक कुल उत्पन्न हुआ है। शर्यातिके पुत्र सुकन्य और आनर्त्त तथा आनर्त्तके पुत्र वेरोही थे। इन्होंने आनर्त्त देशका शासन किया था। कुशस्थलीमें इनकी राजधानी थी। इनकी कन्याका नाम रेवती था। द्वारावतीमें बलरामने इनके साथ विवाह किया।

मनुके पुत्रोंमें इक्ष्वाकुके पुत्र विकुक्षिने इन्द्रत्व पाया था। विकुक्षिके पुत्र ककुत्स्थ, ककुत्स्थके पुत्र सुयोधन, सुयोधनके पुत्र पृथु, पृथुके पुत्र विश्वगश्व, विश्वगश्वके पुत्र आयु, आयुके पुत्र युवनाश्व, युवनाश्वके पुत्र श्रावस्त थे। उन्होंने अपने नामानुसार श्रावस्तिका नगरी बसा कर वहां राजधानी स्थापन की। श्रावस्तके पुत्र वृहदश्व, वृहदश्वके पुत्र कुवलयाश्व हुए। उन्होंने पुराकालमें धुन्धुमारत्व प्राप्त किया था। धुन्धुमार राजा तीन हुए, दृढ़ाश्व, दण्ड और कपिल। दृढ़ाश्वके पुत्र हर्यश्व और प्रमोदक, हर्यश्वके पुत्र निकुम्भ, निकुम्भके पुत्र संहताश्व, संहताश्वके दो पुत्र अकृशाश्व और रणाश्व, रणाश्वके पुत्र युवनाश्व, युवनाश्वके पुत्र मान्धाता और मुकुन्द, मुकुन्दके अनम्यु और सम्भूत, सम्भूतके पुत्र सुधन्वा, सुधन्वाके त्रिधन्वा, त्रिधन्वाके तरुण, तरुणके सत्यव्रत, सत्यव्रतके सत्यरथ, सत्यरथके पुत्र हरिश्चन्द्र, हरिश्चन्द्रके पुत्र रोहिताश्व, रोहिताश्वके पुत्र वृक, वृकके पुत्र बाहु, बाहुके पुत्र सगर थे। सगरकी पत्नीका नाम प्रभा था। प्रभाके गर्भसे ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए। और्व्य मुनिने सन्तुष्ट हो कर वर दिया था जिससे सगरके असमञ्जस नामक एक पुत्र हुआ। सगरके ६० हजार पुत्र पृथिवी खनन करते करते कपिल मुनिके शापसे भस्म हुए। असमञ्जसके पुत्र अंशुमान्, अंशुमान्के पुत्र दिलीप, दिलीपके पुत्र भगीरथ थे। यही भगीरथ महीतल पर गङ्गाजीको लाये थे। भगीरथके पुत्र नाभाग, नाभागके पुत्र अम्बरीष, अम्बरीषके पुत्र सिन्धुद्वीप, सिन्धुके पुत्र अयायु, अयायुके पुत्र ऋतुपर्ण, ऋतुपर्णके पुत्र कल्मासपाद, कल्मासपादके पुत्र सर्वकर्मा, उनके पुत्र अनरण्य, अनरण्यके पुत्र निघ्न, निघ्नके पुत्र अनमित्र, अनमित्रके रघु, रघुके दिलीप, दिलीपके अज, अजके दीर्घबाहु, दीर्घबाहुके अजपाल, अजपालके दशरथ थे। इन्हीं दशरथके घर भगवान् विष्णुने राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न इन चार मूर्त्तियोंमें जन्म लिया। वाल्मीकिने नारदके आदेशसे इन्हींका चरित्र अवलम्बन कर रामायणकी रचना की। सीताके गर्भसे रामचन्द्रके कुश लव नामक यमज पुत्र हुए। कुशके पुत्र अतिथि, अतिथिके पुत्र निषध, निषधके पुत्र नल, नलके नभ, नभके पुण्डरीक, पुण्डरीकके सुधन्वा, सुधन्वाके देवानिक, देवानिकके अहीनाश्व, अहीनाश्वके सहस्राश्व, सहस्राश्वके चन्द्रलोक, चन्द्रलोकके तारापीड़, तारापीड़के चन्द्रपर्वत, चन्द्रपर्वतके पुत्र भानुरथ और भानुरथके पुत्र श्रुतायु हुए।

ये सब राजगण इक्ष्वाकुके वंशधर थे तथा ये लोग ही सूर्यवंश कह कर जगत्‌में प्रसिद्ध हैं।

सूर्यवंशका विवरण मत्स्यपुराणके ११वें अध्याय और गरुड़पुराणके १४१वें अध्यायमें विस्तृत भावसे लिखा है।

सूर्यवंशी—वर्त्तमान राजपूतोंकी एक शाखा। अयोध्याके सुविख्यात सूर्यवंशमें ये लोग अपनी उत्पत्ति बतलाते हैं। नेपालके मल्लराजवंश भी इसी प्रकार दावा करते हैं। उन लोगोंका कहना है, कि यूएनचुअंगने सूर्यवंशके लिच्छवी नामक शाखासम्भूत जिस अंशुवर्माको वैशालीमें राज्य करते देखा था, ये लोग उसी अंशुवर्माके वंशधर हैं। जिस प्रवादके ऊपर निर्भर कर के कर्नैल टाडने सूर्यवंशधरोंका इतिहास लिखा है, उस प्रवादके

अनुसार २४ ई० तक सूर्यवंशधरोंने अयोध्या शासन किया था। उसी साल राजा कनकसेन बहुतसे अनुचरोंको ले कर पश्चिमकी ओर अयोध्यासे गुजरात गये थे। पीछे सूर्यवंशधर धीरे धीरे चित्तोर जा पहुंचे। किन्तु इन लोगोंके अयोध्या त्यागके समयको ले कर कुछ गोलमाल है। क्योंकि सुविख्यात उज्जयिनीराज विक्रमादित्यके अयोध्यादर्शनके सम्बन्धमें जो जनश्रुति प्रचलित है, उससे जाना जाता है, कि अयोध्या जा कर उन्होंने देखा,—यह निर्जन अरण्यमें परिणत हो गया है और बहुत रूपमें पूर्वतन देवमन्दिर और राजप्रासादका स्थान निर्णय कर वहां उन्होंने नई अयोध्याकी प्रतिष्ठा की। यह खृ० पू० ई० के बाद नहीं हो सकता। जो हो, सूर्यवंशके अयोध्या त्यागके सम्बन्धमें इसी एक जनश्रुतिके ऊपर निर्भर करना होता है।

वर्त्तमान समयमें चित्तोरके सिवा उत्तर-पश्चिम प्रदेशके अनेक स्थानोंमें सूर्यवंशीय लोग देखनेमें आते हैं, इनमेंसे यथार्थमें कोई सूर्यवंशीय हैं या नहीं, कह नहीं सकते। अध्यापक भाण्डारकरने प्रमाणित किया है, कि मेवाड़के राणा तक रामचन्द्रके वंशधर नहीं हैं। सच पूछिये, तो वे सूरत-ब्राह्मण हैं। इन्हीं लोगोंकी जब यह अवस्था है, तब दूसरेके सम्बन्धमें तो सविशेष सन्देह होना ही चाहिये।

मध्यप्रदेशके रामटेक नामक स्थानमें भी किसी समय मालूम होता है, कि सूर्यवंशधरोंका प्रभाव विस्तृत था। यहां एक सुप्राचीन दुर्गका ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान है। अम्बालाकी ओरसे इस दुर्ग पर चढ़नेमें एक वृक्षराजि समाकीर्ण पहाड़के नीचेसे जाना होता है। इस पहाड़के ऊपर एक सुरक्षित ग्रीष्मावास देखनेमें आता है। प्रवाद है, कि किसी सूर्यवंशीय राजाने इसे बनवाया था। रामटेककी कुछ अतिप्राचीन अट्टालिका भी सूर्यवंशधरोंकी बनाई हुई मानी जाती है।

सूर्यवंशी लाड—दक्षिण गुजरात या लाटवासी जाति विशेष। ये लोग भी सूर्यवंशसे उत्पन्न कह कर अपना परिचय देते हैं। इनका दूसरा नाम खटिक या कसाई है। प्रायः समस्त गुजरात जिलेमें ये लोग देखे जाते हैं। इनमेंसे अधिकांश काले होते हैं। इनकी भाषा मराठी है, परन्तु ये कनाडी और हिन्दी भाषा भी जानते हैं। ये लोग मिट्टी और पत्थरका घेरा बना कर छोटे छोटे घरमें वास करते हैं। किन्तु ये खूब साफ सुथरा रहते और घर-द्वार भी परिष्कार रखते हैं। इन लोगोंमें जो खेती-बारी करते हैं, केवल उन्हीं के पास गोमहिषादि देखनेमें आते हैं। रोटी ही इनका प्रधान खाद्य है। रोटीके साथ कभी दाल और कभी तरकारी भी खाते हैं, किन्तु भात बहुत कम खाते हैं। भातको ये लोग पोशाकी खाद्य समझते हैं। उत्सव या पर्वोपलक्षमें ही भात, पोली, आम या इमलीका 'सार' और मैदेका पायस खाया जाता है। नये वर्षके प्रथम दिनमें इन लोगोंके मध्य मैदेका पायस खानेकी प्रथा विशेषरूपसे प्रचलित है। आश्विन मासमें 'मार' नवमी तिथिको ये भवानी देवीके नाम बकरा उत्सर्ग कर उसका मांस खाते हैं। बकरेके सिवा ये हरिण, खरहे, कबूतर, हंस आदि घरेल पक्षी तथा मछली भी खाते हैं। कभी कभी उत्सवके समय मद्यपान भी चलता है। इन लोगोंमें भांग, गांजा और अफीमका भी प्रचार है। पुरुष मस्तक मुंडवाते हैं, केवल एक शिखा छोड़ दी जाती है।

आश्विन मासमें 'नवरात्र' उपलक्षमें ये लोग भवानीका उत्सव मनाते हैं। उपास्य देवतामें गणेश ही प्रधान हैं। आश्विन मासमें 'गणेश-चतुर्थी'के दिन मूर्त्ति खरीद कर गणपतिकी पूजा की जाती है। ब्राह्मणोंके प्रति इन लोगोंको विशेष श्रद्धा है। वे ही विवाहादि कार्य्य कराते हैं। ज्योतिषमें इनका अटल विश्वास है। कोई नया कार्य्य करनेमें पहले ज्योतिषीका मत ग्रहण किया जाता है। भूतमें भी इनका यथेष्ट विश्वास है। प्रसवके बाद इनकी स्त्रियोंको दो सप्ताहसे छः सप्ताह तक 'सौरी घर'में रहना होता है। पांचवें दिन घरके बाहर एक प्रौढ़ा स्त्री 'सटवाई' (षष्ठी) देवीकी पूजा करती है। गृहकर्त्ताकी अवस्था अच्छी होनेसे इस उपलक्षमें आत्मीय स्वजनोंको भोज दिया जाता है। मौका मिल जाने पर ये लड़कीकी एकदम कच्ची उमरमें ही शादी करते हैं। एक माससे ले कर १६ वर्ष तक लड़कीका विवाह करनेकी प्रथा है। लड़की-

के विवाहमें २५) से १००) रु० तक खर्च होता है, किन्तु लड़केके विवाहमें इससे ज्यादा खर्च करना होता है। जो सब खटाक मराठोंके संस्रवमें रहते हैं, वे मृतदेहको जलाते हैं; किन्तु जिनका आचार-व्यवहार लिङ्गायतों सा हो गया है, वे मृतदेहको दफनाते हैं।

सूर्यवंश्य (सं० त्रि०) सूर्यवंशे भव यत्। सूर्यवंशमें उत्पन्न।

सूर्यवक्त्र (सं० पु०) १ सूर्यमुख। २ एक प्रकारकी ओषधि।

सूर्यवन (सं० क्ली०) सूर्यके उद्देशसे उत्सृष्ट वनभेद।

सूर्यवत् (सं० त्रि०) सूर्ययुक्त, सूर्यविशिष्ट।

सूर्यवर (सं० पु०) एक प्रकारकी ओषधि।

सूर्यवर्चस् (सं० पु०) १ एक गन्धर्वका नाम। (भारत) २ एक ऋषिका नाम। ३ सामभेद। (त्रि०) ४ सूर्यके समान दीप्तिमान्।

सूर्यवर्ण (सं० त्रि०) सूर्यके समान वर्णविशिष्ट।

सूर्यवर्मन् (सं० पु०) १ त्रिगर्तोके एक राजाका नाम। (भारत) २ डामरपतिभेद। (राजतर०)

सूर्यवल्लभा (सं० स्त्री०) १ आदित्यभक्ता, हुरहुर। २ पद्मिनी, कमलिनी।

सूर्यवल्ली (सं० स्त्री०) १ अर्कपुष्पी, दधियार। २ क्षीरकाकोली।

सूर्यवान् (सं० पु०) रामायणके अनुसार एक पर्वतका नाम।

सूर्यवार (सं० पु०) सूर्यस्य वारः। आदित्यवार, रविवार।

सूर्यविकासिन् (सं० त्रि०) प्रस्फुटित, सूर्यके आलोकमें विकसित।

सूर्यविघ्न (सं० पु०) विष्णु।

सूर्यविलोकन (सं० पु०) एक माङ्गलिक कृत्य जिसमें बच्चेको सूर्यका दर्शन कराया जाता है। यह बच्चेके चार महीने होने पर किया जाता है।

सूर्यवृक्ष (सं० पु०) १ अर्कवृक्ष, आक, मदार। २ अर्कपुष्पी, अंधाहुली, दधियार।

सूर्यवेश्म (सं० पु०) सूर्यमण्डल।

सूर्यव्रत (सं० क्ली०) १ एक व्रत जो सूर्य भगवान्के प्रीत्यर्थ रविवारको किया जाता है। हेमाद्रि व्रतखण्ड और व्रतमालामें इस व्रतका विधान है। २ ज्योतिषमें एक चक्र।

सूर्यशत्रु (सं० पु०) एक राक्षसका नाम। (रामायण)

सूर्यशिष्य (सं० पु०) १ याज्ञवल्क्यका एक नाम। २ जनकका एक नाम।

सूर्यशोभा (सं० स्त्री०) १ सूर्यका प्रकाश, धूप। २ एक प्रकारका फूल।

सूर्यश्री (सं० पु०) विश्वेदेवाममें एक। (भारत)

सूर्यसंक्रम (सं० पु०) सूर्यस्य संक्रमः। सूर्यका एक राशिसे दूसरी राशिमें प्रवेश। सूर्यका संक्रम होनेसे उस दिन संक्रांति होती है। इसलिये संक्रान्ति का नाम सूर्यसंक्रान्ति है। जिस कालमें सूर्यका संक्रमण होता है, वह काल बड़ा पवित्र है।

संक्रान्ति देखो।

सूर्यसंक्रान्ति (सं० स्त्री०) सूर्यका एक राशिसे दूसरी राशिमें प्रवेश। संक्रान्ति देखो।

सूर्यसम्भव (सं० क्ली०) १ कुंकुम, केसर। (पु०) २ सूर्य। ३ अर्कवृक्ष, आकका पेड़। ४ ताम्र, तांबा। ५ एक प्रकारका मानिक या चुन्नी।

सूर्यसदृश (सं० त्रि०) १ सूर्यके समान तेजस्वी। (पु०) २ लीलावज्रका एक नाम।

सूर्यसामन (सं० क्ली०) सामभेद।

सूर्यसारथि (सं० पु०) सूर्यस्य सारथिः। अरुण।

सूर्यसावर्णि (सं० पु०) मनुविशेष। सूर्यके औरस तथा सवर्णाके गर्भसे इस मनुका जन्म हुआ। ये आठवें मनु हैं। मार्कण्डेयपुराणमें इस मनुका विवरण लिखा है। सावर्णि देखो।

सूर्यसावित्र (सं० पु०) १ विश्वेदेवामेंसे एक। २ प्रसिद्ध ग्रन्थका नाम। इसके तत्त्वका उपदेश पहले पहल सूर्यसे प्राप्त कहा गया है।

सूर्यसिंह—योधपुरके एक विद्योत्साही राजा। ये कवि श्रीवल्लभके प्रतिपालक थे। योधपुर देखो।

सूर्यसिद्धान्त (सं० पु०) ज्योतिषोक्त सिद्धान्तग्रन्थविशेष। यह ग्रन्थविशेष समादृत और मान्य है। इस सिद्धान्त ग्रन्थमें सम्यक् व्युत्पत्ति लाभ कर सकने पर सूर्य प्रभृति

ग्रहोंकी गति और स्फुट आसानीसे साधन किया जा सकता है।

सूर्यसुत (सं० पु०) १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव।

सूर्यसूक्त (सं० पु०) ऋग्वेदके एक सूक्तका नाम जिसमें सूर्यकी स्तुति की गई है।

सूर्यसूत (सं० पु०) सूर्यका सारथि, अरुण।

सूर्यसूरि (सं० पु०) सूर्यदास देखो।

सूर्यसेन—एकचक्रका अधिपति। इनके ही आश्रयमें अहल्याडनाथने निर्णयामृतकी रचना की।

सूर्यस्तुत् (सं० पु०) एक दिनमें होनेवाला एक प्रकारका यज्ञ।

सूर्यस्तुति (सं० पु०) सूर्यस्य स्तुतिः। सूर्यका स्तव। जो प्रति दिन भक्तिपूर्वक सूर्यका स्तव पाठ करता है, उसे व्याधिका भय नहीं रहता तथा दुःसाध्य व्याधि होने पर भी जल्द वह आरोग्य होता है।

सूर्यस्तोत्र (सं० क्ली०) सूर्यस्य स्तोत्रं। सूर्यका स्तव या पाठ।

सूर्यहृदय (सं० क्ली०) आदित्यहृदयस्तव। सूर्यके सब स्तवोंमें यही स्तव श्रेष्ठ है। भविष्योत्तरपुराणके श्रीकृष्णार्जुन संवादमें यह स्तव लिखा है।

सूर्यांशु (सं० पु०) सूर्यकी किरण।

सूर्या (सं० स्त्री०) १ सूर्यकी पत्नी, संज्ञा। कई मन्त्रोंमें यह सूर्यकी कन्या भी कही गई हैं। कहीं ये सविता या प्रजापतिकी कन्या और अश्विनीकुमारोंकी स्त्री कही गई हैं और कहीं सोमकी पत्नी। एक मन्त्रमें इनका नाम ऊर्जानी आया है और ये पूषाकी भगिनी कही गई हैं। सूर्या सावित्री ऋग्वेदके सूर्यसूक्तकी द्रष्टा मानी जाती हैं। २ इन्द्रवारुणी। ३ नवपरिणीता, नवोढ़ा। ४ वाक्, वाक्य। (निघण्टु १।११)

सूर्याकर (सं० पु०) रामायणके अनुसार एक प्राचीन जनपद।

सूर्याक्ष (सं० पु०) १ विष्णु। (हरिवंश) २ एक राजाका नाम। (महाभारत) ३ एक बन्दरका नाम। (रामायण) (त्रि०) ४ सूर्यके समान आंखोंवाला।

सूर्याग्नि (सं० पु०) सूर्य और अग्नि।

सूर्याचन्द्रमस् (सं० पु०) सूर्य और चन्द्र।

सूर्याणी (सं० स्त्री०) सूर्यकी पत्नी, संज्ञा।

सूर्यातप (सं० पु०) सूर्यस्य आतपः। सूर्यकी गरमी, धूप।

सूर्यात्मज (सं० पु०) १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव।

सूर्याद्रि (सं० पु०) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

सूर्यापीड़ (सं० पु०) परीक्षितके एक पुत्रका नाम।

सूर्याभासा (सं० पु०) सूर्य।

सूर्यायाम (सं० पु०) सूर्यास्तका समय।

सूर्यार्घ्य (सं० क्ली०) सूर्याय देयमर्घ्यं। सूर्यके उद्देशसे दिया जानेवाला अर्घ्य। प्रति दिन संध्योपासनाके बाद ब्राह्मणादि द्विजातिको सूर्यार्घ्य देना होता है। देव पूजामें पहले सूर्यार्घ्य दे कर पीछे अन्य पूजा करनी होती है। इसके सिवा रोगादि शान्तिके लिये सूर्यके उद्देशसे ७० अर्घ्य देनेका विधान है। अर्घ्यके विधानानुसार अर्घ्य सजा कर हंस, भानु, सहस्रांशु, तपन, तापन, रवि, विकर्त्तन और विवस्वान् इत्यादि ७० नामों पर ७० मन्त्रका पाठ कर सूर्यके उद्देशसे अर्घ्य दे। यथाविधान जो सूर्यार्घ्य देते हैं, वे जन्मजन्मार्जित घोर व्याधिसे विना चिकित्साके आरोग्य लाभ करते हैं और मरनेके बाद सूर्यलोक जाते हैं।

सूर्यालोक (सं० पु०) सूर्यस्य आलोकः। १ सूर्यका प्रकाश। २ आतप, गरमी।

सूर्यावर्त्त (सं० पु०) १ क्षुपविशेष, हुलहुलका पौधा। गुण—विषघ्नत्व। (राजव०) २ ब्रह्मसोंचली, सूवर्चला। ३ गजपिप्पली, गजपीपल। ४ एक प्रकारका ध्यान या समाधि। ५ एक प्रकारका जलपात्र। ६ एक प्रकारके सिरकी पीड़ा, आधासीसी। यह रोग वातज कहा गया है इसमें सूर्योदयके साथ ही मस्तकमें दोनों भवोंके बीच पीड़ा आरंभ होती है और सूर्यकी गरमी बढ़नेके साथ साथ बढ़ती जाती है। सूरज ढलनेके साथ ही पीड़ा घटने लगती है और शान्त हो जाती है। यह रोग बड़ा कष्टसाध्य है। शिरोरोग चिकित्साके विधानानुसार चिकित्सा करनी चाहिये।

सूर्यावर्त्तरस (सं० पु०) श्वास रोगकी एक रसौषध। यह पारे, गंधक और तांबेके संयोगसे बनती है। इसका सेवन करनेसे श्वासकास जल्द आराम होता है।

सूर्यावर्त्ता (सं० स्त्री०) आदित्यभक्ता, हुरहुर । (राजनि०)

सूर्याश्वस्तु (सं० त्रि०) सूर्यके साथ रथ पर रहनेवाला । (ऋक् ७।६८।३)

सूर्याश्मन् (सं० पु०) सूर्यकान्त मणि । (हेम)

सूर्याश्व (सं० पु०) सूर्यका घोड़ा, वाताट, हरित् । (त्रिका०)

सूर्यासूक्त (सं० क्ली०) सूर्यका स्तोत्ररूप वैदिकमन्त्र ।

सूर्यास्त (सं० क्ली०) सूर्यका डूबना, सूर्यके छिपनेका समय, सायंकाल ।

सूर्यास्तमय (सं० क्ली०) सूर्यास्त, सायंकाल ।

सूर्याह्व (सं० क्ली०) १ ताम्र, तांबा । (त्रिका०) (पु०) २ अर्कवृक्ष, आक, मदार ।

सूर्याह्वा (सं० स्त्री०) महेन्द्रवारुणी लता, बड़ी इन्द्रायन ।

सूर्येन्दुसङ्गम (सं० पु०) सूर्य या चन्द्रमाका संगम या मिलन अर्थात् दोनोंकी एक राशिमें स्थिति, अमावस्या ।

सूर्योढ (सं० पु०) १ वह अतिथि जो सूर्यास्त होने पर अर्थात् सन्ध्या समय आता है । २ सूर्यास्तका समय ।

सूर्योत्थान (सं० पु०) सूर्योदय, सूर्यका चढ़ना ।

सूर्योदय (सं० पु०) १ सूर्यका उदय या निकलना । २ सूर्यके निकलनेका समय, प्रातःकाल ।

सूर्योदयगिरि (सं० पु०) वह कल्पित पर्वत जिसके पीछेसे सूर्यका उदित होना माना जाता है, उदयाचल ।

सूर्योद्गमन (सं० क्ली०) सूर्यका उदय, सूर्यका प्रकाश ।

सूर्योद्यान (सं० क्ली०) सूर्यवन नामक तीर्थ ।

सूर्योपनिषद् (सं० स्त्री०) एक उपनिषद्‌का नाम ।

सूर्योपस्थान (सं० क्ली०) वैदिक सन्ध्योक्त सूर्यको एक प्रकारकी उपासना । प्रातः, मध्याह्न और सायंकालकी सन्ध्या करते समय सूर्याभिमुख हो एक पैरसे खड़े हो कर सूर्यकी उपासना करनेका विधान है । (आह्निकतत्त्व) सन्ध्या देखो ।

सूर्योपासक (सं० पु०) सूर्यकी उपासना करनेवाला, सूर्यपूजक, सौर ।

सूर्योपासना (सं० स्त्री०) सूर्यकी आराधना या पूजा ।

सूर्म्य (सं० त्रि०) ज्योतन वहवाग्निभव । (शुक्लयजु०)

सूल (हिं० पु०) १ बरछा, भाला, साग । २ कोई चुभनेवाली नुकीली चीज, कांटा । ३ भाला चुभनेकी-सी पीड़ा, कसक । ४ दर्द, पीड़ा । ५ मालाका ऊपरी भाग, मालाके ऊपरका फुलरा ।

सूलधर (हिं० पु०) शूलधर देखो ।

सूलधारी (हिं० पु०) शूलधर देखो ।

सूलना (हिं० क्रि०) १ भालेसे छेदना, पीड़ित करना । २ भालेसे छिदना, पीड़ित होना, व्यथित होना ।

सूली (हिं० स्त्री०) १ प्राणदण्ड देनेकी एक प्राचीन प्रथा जिसमें दण्डित मनुष्य एक नुकीले लोहेके डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुगरा मारा जाता था । २ फांसी । ३ एक प्रकारका नरम लोहा जिसकी छड़ें बनती हैं । (पु०) ४ दक्षिण दिशा ।

सूवर (हिं० पु०) सूअर देखो ।

सूवा (हिं० पु०) १ फारसी संगीतके अनुसार २४ शोभाओंमेंसे एक । २ शुक, तोता, सुग्गा ।

सूषणि (सं० स्त्री०) सुखप्रसवकारिणी देवी ।

सूषा (सं० स्त्री०) सवित्री, प्रजननिली देवी ।

सूस (हिं० पु०) मगरकी तरहका एक बड़ा जलजन्तु जो गङ्गामें बहुत होता है, सूंस । इसका रंग काला होता है और यह प्रायः जलके ऊपर आया करता है, पर किनारे पर नहीं आता । यह घड़ियाल या मगरके समान जलके बाहरके जन्तु नहीं पकड़ता । शिशुमार देखो ।

सूसमार (हिं० पु०) सूस ।

सूसी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका धारीदार या चारखानेदार कपड़ा ।

सूहा (हिं० पु०) १ एक प्रकारका लाल रंग । २ सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग । किसीके मतसे यह विभास और मालश्रीके मेलसे और किसी किसीके मतसे विभास और वागीश्वरीके मेलसे बना है । इसमें गान्धार, धैवत और निषाद तीनों कोमल लगते हैं । इसके गाने का समय ६ दण्डसे १० दण्ड तक है । हनुमत्‌के मतसे यह दीपक रागका और अन्य मतोंसे हिंडोल या भैरव रागका पुत्र है । कुछ लोगोंने इसे रागिनी कहा है और भैरवकी पुत्रवधू बताया है । (वि०) ३ विशेष प्रकारके लाल रंगका, लाल ।

सूहा कान्हड़ा (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिनी । इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

सूहा टोड़ी (हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक सङ्कर रागिनी। इसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

सूहाबिलावल (सं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग।

सूहा श्याम (हिं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक सङ्कर राग। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सूही (हिं० स्त्री०) सूहा देखो।

सृक (स० पु०) सृ-गतौ (सृदम् शुषि सृपिभ्यः कक्। उण् ३।४१) इति कक्। १ कैरव। २ वाण, तीर। ३ पद्म, कमल। ४ वायु, हवा। ५ वज्र। (त्रि०) ६ शरणशील।

सृकण्डु (सं० पु०) कण्डुरोग, खुजली।

सृकाविन् (सं० त्रि०) वज्रके साथ जानेवाला।

सृकाल (सं० पु०) शृगाल, गीदड़।

सृकाहस्त (सं० त्रि०) आयुधहस्त। (शुक्लयजु० १६।२१)

सृक (सं० क्ली०) सृक्कन् देखो।

सृकणी (सं० स्त्री०) सृक्कन् देखो।

सृक्कन् (सं० क्ली०) सृज वाहुलकात् कनिन्। ओठोंका छोर, मुंहका कोना।

सृक्कि (स० क्ली०) सृक्कणी, ओठोंका छोर। (अमर)

सृक्था (स० स्त्री०) जोंक।

सृक्व (सं० क्ली०) ओठोंका छोर, मुंहका कोना। (भरत)

सृक्वण (सं० क्ली०) सृज-क्वनिप्। ओठोंका छोर, मुंहका कोना।

सृक्वन् (सं० स्त्री०) सृक्कन् देखो।

सृक्विणी (सं० स्त्री० सृक्कन् देखो।

सृग (सं० पु०) सृ वाहुलकात् गक्। भिन्दिपाल।

सृग (हिं० पु०) माला, गजरा, हार।

सृगाल (सं० पु०) सृज वाहुलकात् कालन्, न्यङ्कादित्वात् कुत्वं। १ जम्बूक, सियार, गीदड़। २ एक दैत्यका नाम। ३ कायर, भीरु, डरपोक। ४ दुःशील मनुष्य, बदमिजाज आदमी। ५ प्रतारक, धूर्त्त, धोखेबाज। ६ करवीरपुरके राजा वासुदेवका नाम। (हरिवंश) ७ एक प्रकारका वृक्ष।

सृगालकण्टक (सं० पु०) सत्यानासीका पौधा, कटेरी।

सृगालकोलि (स० पु०) बेरका पेड़ या फल।

सृगालघण्टी (स० स्त्री०) कोकिलाक्ष, तालमखाना।

सृगालजम्बू (सं० स्त्री०) १ गोड़ुम्बा, तरबूज। २ झड़बेरी, छोटा बेर।

सृगालरूप (सं० पु०) शिव, महादेव।

सृगालवदन (स० पु०) एक असुरका नाम।

सृगालवास्तुक (सं० क्ली०) बथुआ सागका एक भेद।

सृगालविन्ना (सं० स्त्री०) पृश्निपर्णी, पिठवन।

सृगालवृन्ता (सं० स्त्री०) सृगालविन्ना देखो।

सृगालिका (सं० स्त्री०) १ सियारिन, गीदड़ी। २ लोमड़ी। ३ पृश्निपर्णी, पिठवन। ४ भूमिकुष्माण्ड, विदारीकन्द। ५ पलायन, भगदड़। ६ दङ्गा फसाद, हंगामा।

सृगालिनी (सं० स्त्री०) सियारिन, गीदड़ी।

सृगाली (सं० स्त्री०) १ सियारिन, गीदड़ी। २ लोमड़ी। ३ विदारीकन्द। ४ कोकिलाक्ष, तालमखाना। ५ पलायन, भगदड़। ६ उपद्रव, हंगामा।

सृङ्का (सं० स्त्री०) शब्दयुक्ता रत्नमयी माला।

सृज् (सं० पु०) सृज क्विप्। सृष्टिकर्त्ता।

सृजकाक्षार (स० पु०) सर्ज्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी।

सृजय (स० पु०) एक प्रकारका पक्षी।

सृजया (सं० स्त्री०) नीलमक्षिका।

सृजवान् (सं० पु०) द्युतिमानके एक पुत्रका नाम।

सृजिकाक्षार (सं० पु०) सर्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी।

सृज्य (सं० त्रि०) सृज-यत्। १ जो उत्पन्न किया जानेवाला हो। २ जो छोड़ा या निकाला जानेवाला हो।

सृञ्जय (सं० पु०) १ मनुके एक पुत्रका नाम। २ ययातिवंशके कालनरके एक पुत्रका नाम। ३ पुराणोक्त एक वंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे और जिस वंशके लोग भारतयुद्धमें पाण्डवों की ओरसे लड़े थे। ४ देववातके एक पुत्रका नाम। ५ महाराज श्वित्यके पुत्रका नाम। महर्षि पर्वत और देवर्षि नारदके साथ इनकी मित्रता थी। एक दिन दोनों मुनि राजा सञ्जयके यहां गये। राजाकी एक अविवाहिता कन्या उनके सामने आ खड़ी हुई। नारदकी प्रार्थना करने पर राजाने वह सुन्दरी कन्या उन्हें दे दी। महर्षि पर्वत भी उस कन्याके प्रति आसक्त थे। अतः पर्वतने नारदको शाप दिया और नारदने पर्वतको। दोनोंके शापका यह फल हुआ, कि एकको छोड़ कर दूसरा स्वर्गका नहीं जा सकता है।

राजा सृञ्जयके बहुत दिनों तक कोई पुत्र नहीं हुआ। नारदके वरसे सृञ्जयकी रानीके एक सुवर्णष्ठीवी नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। यह पुत्र असाधारण तेजःसम्पन्न था। इसका मूत्र थूक आदि सभी सुवर्णमय होता था। एक बार सुवर्णके लोभसे चोर राजभवनमें घुसे और राजकुमार सुवर्णष्ठीवीको उठा ले गये। वनमें ले जा कर उन लोगोंने राजकुमारको खंड खंड कर डाला, परन्तु उन लोगोंको लाभ कुछ भी नहीं हुआ। इससे क्रुद्ध हो कर वे आपसमें मर काट करके मर गये। देवर्षि नारदने सृञ्जयको समझाया तथापि उन्हें किसी प्रकारकी शान्ति नहीं हुई। अन्तमें नारदने राजकुमारको जीवित कर दिया। (महाभारत)

सृणिक (सं० पु०) सृणि स्वार्थे कन्। १ अंकुश। (स्त्री०) २ निष्ठीवन, थूक, लार।

सृणी (सं० स्त्री०) सृणि कृदिकारादिति ङीष्। दातो, हंसिया।

सृणीक (सं० पु०) १ वायु। २ अग्नि। ३ वज्र। ४ मदोन्मत्त या उन्मत्त व्यक्ति।

सृणीका (सं० स्त्री०) थूक, लार।

सृण्य (सं० त्रि०) आयुधकुशल। (ऋक् ४।२०।३)

सृत् (सं० त्रि०) सृ-क्विप् तुक् च। गमनकारी, जानेवाला।

सृत (सं० त्रि०) १ जो खिसक गया हो, सरका हुआ। २ गत, जो चला गया हो।

सृतञ्जय (सं० पु०) १ शान्तनुवंशीय राजभेद, राजा कर्मजित्‌के पुत्र। (भागवत ९।२२।४७)

सृता (सं० स्त्री०) पलायन, गमन।

सृति (सं० स्त्री०) सृ-क्तिन्। १ आवागमन। २ मार्ग, रास्ता। ३ जन्म। ४ निर्माण। (भागवत ३।२।१३)

सृत्य (सं० क्ली०) १ स्रोत। २ सरण।

सृत्वन् (सं० पु०) सृ गतौ (शीङ्क्रुशीङ्हीति। उण् ४।११३) इति क्वनिप्। १ विसर्ग, सरकना। २ वृद्ध। ३ प्रजापति।

सृत्वर (सं० त्रि०) सृ गतौ (इनशजिसर्तिभ्यः क्वरप्। पा ३।२।१६३) इति क्वरप्। गमनकर्त्ता, जानेवाला।

सृत्वरी (सं० स्त्री०) सृ क्वरप् सृ क्वनिप् वा ङीप्। १ माता। २ गमनकर्त्री, जानेवाली।

सृदर (सं० पु०) दृ विदारणे (कृदरादयश्च। उण् ५।४१) इति अ प्रत्ययेन निपातनात्। सर्प साप।

सृदाकु (सं० पु०) सृ (सर्तेर्दुकच। उण् ३।७८) इति काकुदुर्गागमश्च। १ वायु। २ वज्र। ३ अग्नि। ४ प्रतिसूर्यक, सूर्योदयके समय जो लाल सूर्यके समान दिखाई देता है, उसे प्रतिसूर्यक कहते हैं। ५ मृग। ६ गोध, गोह। ७ वनाग्नि, दावानल। (स्त्री०) ८ नदी।

सृप (सं० पु०) १ एक असुर। (हरिवंश) २ चन्द्रमा।

सृपमन् (सं० पु०) १ सर्प। २ शिशु। ३ तपस्वी।

सृपाट (सं० पु०) १ सृपाटी, परिमाणविशेष। २ रक्षाधार।

सृपाटिका (सं० स्त्री०) चञ्चु, चोंच।

सृपाटी (सं० स्त्री०) १ परिमाणभेद। २ रक्षाधार।

सृप्र (सं० पु०) सृप गतौ (स्फायितञ्चिवञ्चीति। उण् २।१६) इति रक्। १ चन्द्रमा। (उज्ज्वल) २ मधु, शहद। (त्रि०) ३ स्निग्ध, चिकना। ४ जिस पर हाथ वा पैर फिसले।

सृप्रकरस्न (सं० त्रि०) प्रसृत बाहु।

सृप्रदानु (सं० त्रि०) दानयुक्त, दानी।

सृप्रबन्धुर (सं० त्रि०) विस्तीर्ण पुरोभाग।

सृप्रभोजस (सं० त्रि०) प्रसृत धन, पर्याप्त धनविशिष्ट।

सृप्रा (सं० स्त्री०) एक नदीका नाम, सिप्रा नदी।

सृबिन्द (सं० पु०) एक दानव जिसे इन्द्रने मारा था।

सृमर (सं० पु०) सृ गतौ (सृघस्य दः क्मरच्। पा ३।२।१६०) इति क्मरच्। १ एक प्रकारका पशु, बाल मृग। २ एक असुरका नाम।

सृमल (सं० पु०) एक असुरका नाम।

सृष्ट (सं० त्रि०) सृज-क्त। १ निर्मित, रचित। २ युक्त। ३ निश्चित, सङ्कल्पमें दृढ़, तैयार। ४ बहुत। ५ भूषित, अलंकृत। ६ छोड़ा हुआ, निकाला हुआ। ७ त्यक्त, त्यागा हुआ। ८ उत्पन्न, पैदा। ९ तिन्दुक, तेंदू।

सृष्टमारुत (सं० त्रि०) पेटकी वायुको निकालनेवाला।

सृष्टि (सं० स्त्री०) सृज क्तिन्। १ निर्माण, रचना, बनावट। २ उत्पत्ति, पैदाइश, बनने या पैदा होनेकी

क्रिया या भाव। ३ जगत्‌का आविर्भाव, संसारकी उत्पत्ति, दुनियाकी पैदाइश। ३ प्रकृति, निसर्ग, कुदरत। ५ उत्पन्न जगत्, संसार, दुनियां। ६ दानशीलता, उदारता। ७ एक प्रकारकी ईंट जो यज्ञकी वेदी बनानेके काममें आती थी। ८ गम्भारीका पेड़, खभारी। (पु०) ६ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम।

सृष्टिकर्त्ता (सं० पु०) १ सृष्टि या संसारकी रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २ ईश्वर।

सृष्टिकृत् (सं० पु०) १ सृष्टिकर्त्ता। २ पर्पटक, पित्त पापड़ा।

सृष्टितत्त्व (सं० क्ली०) सृष्टिका विषय। जबसे मनुष्यने चिन्ता करना आरम्भ किया है, तबसे ही उसकी धीशक्ति, कल्पना और बुद्धि अपने और विश्वसाम्राज्यके सृष्टिकर रहस्योद्‌घाटनकी चेष्टा करती आ रही है।

भगवान् मनुने कहा है, कि यह परिदृश्यमान विश्व संसार एक समय गाढ़े अंधकारसे ढका था। उस समयकी अवस्थाका पता लगाना कठिन है, किसी भी लक्षण द्वारा उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। उस समय यह तर्क और ज्ञानसे अतीत हो कर मानो प्रगाढ़ निद्रामें निद्रित था। पीछे स्वयम्भू अव्यक्त भगवान् महाभूतादि चौबीस तत्त्वोंमें इस विश्वसंसारको धीरे धीरे प्रकट कर उस तमोभूत अवस्थाके विध्वंसक हो प्रकाशित हुए।

प्रजा सृष्टिकी कामनासे स्वयं शरीरी भगवान्‌ने निजी-देहसे जलकी सृष्टि की और उसमें बीज डाल दिया। उस बीजसे सुवर्णोपम सूर्यसदृश तेजोमय एक अंडा निकला। उस अंडेमें भगवान्‌ने स्वयं सर्वलोकपितामह ब्रह्माके रूपमें जन्मग्रहण किया।* इस ब्रह्माण्डमें ब्राह्म मानका एक वर्ष रह कर भगवान् ब्रह्माने आत्मगत ध्यानबलसे उसे दो खंडोंमें कर डाला। ऊर्द्धखण्डमें स्वर्गादिलोक और अधोखण्डमें पृथिव्यादि तथा मध्यदेशमें आकाश, अष्टदिक् और शाश्वत समुद्रोंकी उन्होंने सृष्टि की। इसके बाद उन्होंने महत्त्वके विकाश और आत्मानुभव मनका उद्धार किया। पीछे विषयग्रहणक्षम इन्द्रियादि, अनन्तकार्यक्षम अहङ्कार और देवमनुष्यादि जीवकी उत्पत्ति हुई। विशेष विवरण पृथिवी शब्दमें देखो। इसी प्रकार संख्यातीत मन्वन्तर तथा विश्वकी सृष्टि और लय हुआ।

स्थावरजङ्गमात्मक विश्वकी सृष्टिके सम्बन्धमें यही हुआ भगवान् मनुका योगलब्ध ज्ञान। अंडेके भीतरसे जब भगवान् निकले, तब उनके सहस्र शिर, सहस्र नेत्र और सहस्र बाहु थीं। ये ही हुए पुरुष, और उनके साथ ही साथ सुगठित, सुनियन्त्रित और सुशृङ्खलित तथा असीम और अनन्त विराट्‌रूप प्रकट हुआ। यही हम लोगोंका विश्व हुआ। इसके भीतर ऐसी शक्ति और ऐसी विभूति विद्यमान है। इस कारण विश्वको भी भगवान्‌का द्वितीय रूप कहा जाता है। इसके दोनों चक्षु हम लोगोंके चन्द्र और सूर्य हैं।

वैशेषिक और न्यायमतसे सृष्टिक्रम,—जब यह जगत् ध्वंस हो कर प्रलयकालमें पहुंचता है, तब एक मात्र परमेश्वर ही रह जाते हैं। इस प्रलयकालके अवसान पर भगवान्‌की सिसृक्षा अर्थात् सृष्टि करनेकी इच्छा होती है। उस समय प्रलयके कारण अदृष्टका कार्य होनेसे वह फिर भोगप्रयोजक अदृष्टकी वृत्ति नहीं रोक सकता, अतएव भोगप्रयोजक अदृष्टवृत्ति लाभ करनेमें समर्थ होता है अर्थात् फलोन्मुख होता है। उस अदृष्टयुक्त आत्माके संयोगसे पहले वायवीय परमाणुमें कर्मकी उत्पत्ति होती है, पवन परमाणुओंके परस्पर संयोगसे द्व्यणुकादि क्रमशः महान् वायु उत्पन्न तथा अनवरत कम्पमान हो कर आकाशमें अवस्थित होता है। तिर्य्यग्गमन वायुका स्वभाव है। उस समय और किसी भी द्रव्यकी उत्पत्ति नहीं होती, जिससे वायुका वेग प्रतिहत हो सके। अतएव वायु सर्वदा कम्पमान् हो कर ही अवस्थित रहती है। वायु सृष्टिके बाद इस प्रकार आप्य या जलीय परमाणुसे कम की उत्पत्ति हो कर द्व्यणुकादि क्रमशः महान् सलिलराशि उत्पन्न और

* "सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात् सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः।
अप एव ससर्ज्जादौ तासु बीजमवासृजत्।
तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभं।
तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः॥"
(मनु १।८-९)

वायुके वेगसे कम्पमान हो कर वायुमें अवस्थित होता है। पीछे उक्त प्रणालीके अनुसार पार्थिव परमाणुके संयोगसे निविड़ अवयव महा पृथिवी उत्पन्न हो कर जलराशिमें अवस्थान करता है। अनन्तर इस प्रकार दीप्यमान तेजोराशि समुत्पन्न हो कर उसी जलराशिमें रह जाता है। पीछे परमेश्वरके सङ्कल्पमात्रसे ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्माकी उत्पत्ति होती है। ब्रह्मा अत्यन्त ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्यसम्पन्न हो कर ही उत्पन्न होते हैं। वे महेश्वर द्वारा सृष्टि-कार्यमें नियुक्त हो कर प्राणियोंके कर्मानुसार धीरे धीरे समस्त जगत्की सृष्टि करते हैं, प्राणियोंके भोगके लिये सृष्टि और स्थिति होती है।

प्राणिगण जिस प्रकार समस्त दिन परिश्रम कर रात्रिमें विश्राम करते हैं उसी प्रकार जगत्के स्थिति-कालमें पुनः पुनः दुःखादि भोगसे परिक्लिष्ट प्राणियोंके कुछ समय विश्रामके लिये अर्थात् दुःखादि दूर करनेके लिये महेश्वरकी संजिहीर्षा अर्थात् संहार करनेकी इच्छा होती है। इसी कारण प्रलय उपस्थित होता है। इसीसे पुराणादिशास्त्रमें सृष्टि और प्रलय दिन और रात्रिरूपमें वर्णित हुआ है।

ब्रह्माके देह विसर्जनकालमें सभी भुवनोंके अधिपति महेश्वरकी संजिहीर्षा अर्थात् संहारकी इच्छा होती है। उस समय समस्त जीवात्माके अदृष्टोंकी वृत्ति निरोध अर्थात् प्रलयके कारण अदृष्ट द्वारा सृष्टि और स्थितिसे अदृष्टका कार्य प्रतिबद्ध होता है। भोगप्रयोजक या भोगके कारण अदृष्ट प्रलयप्रयोजक या प्रलयके कारण अदृष्ट द्वारा प्रतिबद्ध होनेसे भोगप्रयोजक अदृष्ट फिर भोग सम्पादन नहीं कर सकता। उस समय प्रलयके कारण अदृष्टयुक्त आत्मा अर्थात् प्राणिवर्गके संयोगसे शरीर और इन्द्रियके आरम्भक परमाणु सभी कार्योंकी उत्पत्ति होती है। उस क्रमसे आरम्भक संयोग निवृत्त होता है। उस समय देह और इन्द्रिय विनष्ट हो कर तदारम्भक परमाणुमात्र अवशिष्ट रहता है। इस प्रकार पृथिव्यारम्भक परमाणुसे क्रम हो कर आरम्भक संयोग निवृत्ति क्रमसे महापृथिवी नष्ट होती इस प्रणालीसे पृथिवीके बाद जल, जलके बाद तेज, तेजके बाद वायु नष्ट होती है। उस समय सिर्फ चार प्रकारके परमाणु विभक्त रूपमें तथा धर्म अधर्म और भावनाख्य संस्कारयुक्त आत्म और नित्य पदार्थ रह जाते हैं यही प्रलयावस्था है। इस प्रकार प्रलयावस्थाके बाद उक्त क्रमसे सृष्टि होती है। इसी तरह सृष्टि, स्थिति और प्रलय हुआ करता है। (वैशेषिकद०)

न्यायवैशेषिक परमाणु कारणवादी है, एकमात्र परमाणुसे जगत्की सृष्टि होना स्वीकार करते हैं। परमेश्वरकी इच्छासे परमाणु द्वारा जगत्की सृष्टि और लय होता है। जब प्रलय होता है, तब भी यह परमाणुराशि विद्यमान रहती है।

सांख्य और पातञ्जल मतसे—प्रकृति और पुरुषके संयोगसे सृष्टि होती है। एक दूसरेकी अपेक्षा करनेके कारण प्रकृति और पुरुषका परस्पर संयोग होता है। प्रकृति परिणामशील है, प्रकृतिका सर्वदा परिणाम होता है। क्षण काल भी प्रकृति बिना परिणत रह नहीं सकती। प्रकृतिका यह परिणाम दो प्रकारका है। स्वरूप परिणाम और विरूप परिणाम। जब प्रकृतिका विरूप परिणाम आरम्भ होता है, तब इस जगत्की सृष्टि होती है तथा इस विरूप-परिणामसे ही फिर जब स्वरूप परिणाम आरम्भ होता है, तब इस प्रकार सृष्टिके बाद प्रलय और प्रलयके बाद सृष्टि होती है, यह बीजाङ्कुर न्यायवत् अनादि है। प्रकृति और पुरुषको अन्ध और पंगु कहा गया है। दृक्शक्तिसम्पन्न पंगु गतिशक्तिसम्पन्न अन्धके कंधे पर चढ़ कर पथ दिखलाता है, अन्ध तदनुसार चलता है। इस प्रकार दोनोंकी ही अभिलाषा सिद्ध होती है। प्रकृति और पुरुषका संयोग भी इसी तरह है। पुरुषको दृक्शक्तियुक्त और क्रिया शून्य होनेसे पंगु तथा प्रकृतिको क्रियाशक्तियुक्त और दृष्टि शक्ति शून्य होनेसे अन्ध कहा गया है। इस संयोगसे ही प्रकृति महदादि अचेतन हो कर भी चेतनकी तरह तथा पुरुष स्वभावतः अकर्त्ता हो कर भी गुण कर्त्तृत्वमें कर्त्ताकी तरह प्रतीयमान होता है।

यह सृष्टि दो प्रकारकी है, प्रत्यय और तन्मात्र। बुद्धि-तत्त्व सृष्टिकी तरह प्रत्यय सृष्टि, भूत और भौतिक-

सर्गकी तरह तन्मात्र सृष्टि है। विशेष विवरण सांख्य-दर्शन शब्दमें देखो।

प्रकृतिका विरूप परिणामावस्थामें उक्त प्रकारसे सृष्टि हुआ करती है। जब तक पुरुषके विवेकसाक्षात्कार नहीं होता, तब तक प्रकृति पुरुषको नहीं छोड़ती। पुरुषके विवेकसाक्षात्कार होनेसे फिर सृष्टि होनेको नहीं। (साङ्ख्यद०) पातञ्जलदर्शनका भी यही मत है।

वेदान्तमतसे—एक ब्रह्म ही जगत्‌की सृष्टि, स्थिति और प्रलयका कारण है। एक परब्रह्मसे ही जगत्‌की सृष्टि, स्थिति और प्रलय हुआ करता है। सृष्टिके आरम्भमें एक ब्रह्म ही थे। ब्रह्मा की इच्छा हुई, कि एक मैं अनेक हूंगा, उनकी इस इच्छासे ही जगत्‌की सृष्टि आरम्भ हुई। पहले ब्रह्मसे पृथिवी, इसी प्रकार धीरे धीरे चराचर जगत्‌की सृष्टि हुई है।

एक ब्रह्मसे जगत्‌की सृष्टि हो कर वह ब्रह्ममें अवस्थित हैं और पीछे ब्रह्ममें ही लीन होगा। जीव अविद्याके कारण ब्रह्मस्वरूप मालूम नहीं कर सकता, मायामें मोहित हो कर आबद्ध रहता है। ज्ञान होनेसे ही वह मुक्तिलाभ करता है। वेदान्त शब्द देखो।

इसके सिवा प्रत्येक पुराणमें ही सृष्टिक्रम विशेष भावमें लिखा है। क्योंकि पुराणके लक्षणमें लिखा है, कि सृष्टि और प्रलयका वर्णन करना होगा। सभी पुराणोंमें सृष्टिप्रणालीके सम्बन्धमें कुछ कुछ प्रभेद है, परन्तु अन्यान्य विषयमें मतकी कुछ कुछ विभिन्नता रहने पर भी एक परमेश्वरसे ही जो जगत्‌की सृष्टि हुई है, उसमें जरा भी सन्देह नहीं।

संहिता, दर्शन और पुराणादि शास्त्रोंका यही मत है, कि "द्यावाभूमी जनयन् देव एक आस्ते विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता" (श्रुति) एक देवता हैं, इसीसे इस स्वर्ग, मर्त्य, रसातल और चराचर जगत्‌की उत्पत्ति हुई है तथा वे ही रक्षा करते हैं। पुराण और सर्ग शब्द देखो।

जैनदर्शनके मतसे 'द्व्यणुक, त्रसरेणु आदि उत्पन्न हो कर आकाशमात्रमें फैल जाते हैं तथा उससे वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल और जलसे पृथिवी उत्पन्न हुई है।'

ब्रह्माण्डादि विभिन्न पुराणोंमें भी निखिल विश्वका तमोमयत्व और अनादि अनन्त परिव्याप्तत्व कल्पित हुआ है। उन सब पुराणोंके मतसे गुणसाम्य (प्रलय) उपस्थित होने पर ही सृष्टिकाल आरम्भ होता है तथा सूक्ष्म और महद्‌गुणसंयुक्त अव्यक्त समावृत महत्तत्त्वका उद्भव होता है। यह जो महत्तत्त्व है, वही हुआ सत्त्व-गुणप्रकाशक मन तथा इसी मनको कारण और सृष्टि-कर्त्ता कहते हैं। धीरे धीरे इससे भूततन्मात्र और उससे पञ्चतन्मात्रकी उत्पत्ति होती है तथा पीछे अंडेकी सृष्टि होने पर भूतोंके आदिकर्त्ता हिरण्यगर्भ आदिपुरुष जीवात्माओंकी सृष्टि करते हैं। पृथिवी देखो।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणके प्रकृतिखण्डके सप्तम अध्यायमें भगवान् नारायणने नारदसे कहा है, "विश्वके सर्वोच्च भाग में गोलक और वैकुण्ठधाम अवस्थित है। केवल इसी का ध्वंस नहीं है। इसके सिवा अन्य सभी अंश कृत्रिम और नश्वर है। प्राकृत प्रलयके समय ब्रह्माण्ड विलयको प्राप्त होता है। पीछे सृष्टिके प्रारम्भमें भगवान् विष्णु आत्मा द्वारा महाविराट् पुरुषकी सृष्टि करते हैं।"

नैयायिकोंके मतसे पृथिवी दो प्रकारकी है—परमाणु-स्वरूपा और अवयवशालिनी। इनमेंसे परमाणुस्वरूपा पृथिवी नित्या और अवयवशालिनी पृथिवी अनित्या है।

वर्त्तमान नेपाली बौद्धधर्ममें भी भगवान्‌की इस इच्छाके ऊपर ही जगत्‌को प्रतिष्ठित किया गया है। स्वयं परमपुरुष महाशून्य अनादि और अनन्त हैं। उनके ज्ञान और शक्ति दोनों ही पूर्ण हैं। पूर्ण ज्ञानरूपमें उनका नाम आदिबुद्ध और पूर्णशक्तिरूपमें उनका नाम आदिधर्म या आदिप्रज्ञा है। ये दोनों ही अनादि और अनन्त हैं तथा एक दूसरेका साहाय्य रहने पर भी दोनों ही सम्पूर्ण विभिन्न हैं। महाशून्यकी इच्छामात्रसे ही आदिबुद्ध और आदिप्रज्ञाकी सहायतासे ऐशी-शक्तिसम्पन्न बुद्ध (और देवगण) उत्पन्न हुए। आदि बुद्ध सर्वदा निवृत्तिमें सुषुप्त हैं। जगत्सृष्टिके लिये पञ्च बुद्धको आत्मासे विस्फूरित करके ही वे शान्त होते हैं। यथार्थमें वे ही विश्वके मूलीभूत प्रथम और प्रधान कारण हैं, फिर भी स्थूल दृष्टिसे वे ही पञ्च बुद्ध सृष्टिके कर्त्ता माने जाते हैं। वे परस्पर भ्रातृभावमें सम्बद्ध हैं।

परन्तु चतुर्थ भ्रातासे ही वर्त्तमान विश्वके कर्त्ता बोधिसत्त्व पद्मपाणिका उद्भव हुआ है, इसीसे उनकी विशेष रूपमें पूजा की जाती है।

आदिबुद्ध प्रत्येक बुद्धको पुत्ररूपमें एक एक बोधिसत्त्व सृष्टि करनेकी क्षमता देते हैं। तदनुसार पञ्चबुद्ध पञ्च बोधिसत्त्व सृष्टि और उन्हें अपनी ऐसी शक्ति तथा विभूति दे कर आदिबुद्धमें विलीन हो जाते हैं। तभीसे वे लोग उसी अवस्थामें विराज करते हैं। ब्रह्माण्डके साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। बोधिसत्त्व ही जगत्‌की सृष्टि, रक्षा और पालन करते आ रहे हैं। मयूरभञ्जमें जो महिमाधर्मीगण रहते हैं, वे लोग भी यथार्थमें बौद्ध हैं। सृष्टितत्त्वके सम्बन्धमें उन लोगोंकी ऐसी धारणा है —

एकमात्र स्वयम्भू महाशून्य ही जगत्‌के आदिभूत कारण हैं। सृष्टिके पहले कोई विभूति नहीं थी। जब सृष्टि करनेकी इच्छा हुई, तब उन्होंने विभूति प्रकाश करनेके लिये मूर्त्ति धारण की तथा पीछे धर्मनाममें आत्म-प्रकाश किया। इस अवस्थामें उनके ललाटदेशके पसीनेसे विश्वकी आदिशक्तिस्वरूपा एक रमणी उत्पन्न हुई। उसी रमणीसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर उत्पन्न हुए। पीछे जगत्‌की सृष्टि और पालनका भार उन्हींको सौंपा गया। तदनुसार इन लोगोंने जगत्‌की सृष्टि की और आज तक वे उसकी रक्षा करते आ रहे हैं।

ग्रीसके प्राचीन युगके दार्शनिक सृष्टि-तत्त्वकी आलोचना करते समय दो प्रकारके सिद्धांत पर पहुंचे थे। प्रथम मतमें जगत्‌का रूप और स्थितिकाल दोनों ही अनादि और अनन्त हैं। अर्थात् जिस अवस्थामें हम जगत्‌को देखते हैं, वह बराबर उसी अवस्थामें है और रहेगा। आरिष्टटल ही इस मतके प्रथम प्रवर्त्तक हैं। उनका कहना है, कि जिसका कारण अनादि और अनन्त है, वह स्वयं भी अनादि अनन्त है। यथार्थमें इन्हें वे स्वयम्भूसे स्फूरित समझते हैं। प्लेटोके मतसे अनन्त कालसे जो अपरिवर्त्तनीय (Idea) परिवर्त्तनशील पदार्थके साथ सम्मिलित आ रहा है जगत् उसीके अनादि और अनन्त बहिःप्रकाशमान हैं। अलेकसन्द्रियामें ३री सदीका जो न्यु प्लेटोनिक दार्शनिक सम्प्रदायका उद्भव था, उनके मतानुसार ईश्वर और जगत् दोनों ही समान रूपमें अनादि अनन्त हैं। फिर जेनोफेनिस आदिके मतसे भगवान् और ब्रह्माण्ड एक और अभिन्न हैं। अभी जर्मनीमें भी इसी मतका प्रचलन देखा जाता है।

द्वितीय मतानुसार भगवान्‌के साथ साथ पदार्थको भी अनादि अनन्त माना जाता है। किन्तु प्रथम मतकी तरह पदार्थके वर्त्तमान रूपको भी उस तरह न समझ कर समयाधीन अर्थात् दृष्ट माना जाता है। इस मतके समर्थकोंका कहना है, कि विश्वब्रह्माण्ड प्रथमतः एक शृङ्खला और नियमरहित जड़-पिण्डवत् था। हेसिआडके मतसे इस जड़पिण्डसे पहले एरिबस और वायु तथा पीछे वायु और दिवा ये उत्पन्न हुए। हम लोगोंकी श्रुति, स्मृति और जैनमतमें जिस स्वाभाविक शक्तिका उल्लेख देखनेमें आता है, दार्शनिक एपिक्युरसके अनुवर्त्ती पाश्चात्य दार्शनिकोंने उस अन्धशक्तिको ही विश्वब्रह्माण्डका सृष्टिकर्त्ता माना था। ष्टोइकसम्प्रदाय भगवान् और पदार्थ इन दोनोंको ही सृष्टिका मूल कारण समझते हैं। इनमेंसे प्रथम क्रियाशील और द्वितीय क्रियारहित है तथा द्वितीयके ऊपर प्रथम जो क्रिया करता है, उसीके फलसे जगत् उत्पन्न हुआ है। फिनिसीय, बबिलोनीय और इजिप्सीयगण भी हेसिअडकी तरह जड़पिण्डसे जगत्‌की उत्पत्ति पर विश्वास करते थे।

तृतीय मतानुसार आदिमें एक भगवान् ही थे। उनके मुखसे निकली हुई बातसे ही इस परिदृश्यमान जगत्‌का उद्भव हुआ है। उन्होंने कहा, 'आलोक हो' उसी समय आलोककी उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार उनकी बातसे सभी पदार्थोंकी सृष्टि हुई है। यह मत हिन्दू ऋषियोंका परिकल्पित भगवदिच्छाका ही रूपान्तर जैसा प्रतीत होता है। एट्रासकान, आदि पारसीक और यहूदी भी इसी मतके समर्थक थे। ग्रीक लोगोंके मतसे आनाक्सागोरसने ही सबसे पहले इस मतका प्रचार किया। रोमवासियोंमें भी इसी मतकी प्रधानता देखी जाती है। ईसाइयोंके धर्मग्रन्थमें भी जगत्सृष्टिके सम्बन्धमें यही मत विशदरूपसे विवृत हुआ है। पहले जेनेसीसमें देखा जाता है कि भगवान्‌की शक्तिमय बातसे

'नास्ति'से 'अस्ति' हुआ। उनके मुखसे जो कुछ निकला वह उसी समय हो गया। रूपविहीन जड पिण्डवत् जिस पदार्थसे भगवान्‌ने आदेश कर क्रमशः विश्वब्रह्माण्डको सभी वस्तुओंकी सृष्टि की है, वह भी अनादि अनन्त नहीं है उन्हींका आदेशसंभूत है। पहले इस नियमशृङ्खलारहित जडपिण्डसे आलोककी सृष्टि हुई। किन्तु अभी यहां जिस प्रकार सिर्फ एक आधार (सूर्य) पर केन्द्रीभूत है, आदि उस प्रकार नहीं था, समग्र विश्वमय परिव्याप्त था। पीछे आकाशकी सृष्टि करके इस जडपिण्डको उन्होंने दो भागोंमें विभक्त किया, एक भाग इस आकाशके तलदेशमें और दूसरा भाग इसके ऊर्द्ध्वदेशमें प्रतिष्ठित किया गया। इसी प्रकार पृथिवी और नक्षत्रलोककी सृष्टि हुई। इसके बाद उन्होंने पृथिवीको जल और स्थलमें विभक्त कर स्थलभागके ऊपर तृण, शाक, लता और वृक्ष आदि तथा नक्षत्रलोकके सूर्यास्त आदि ग्रह, उपग्रह, नक्षत्रादिकी प्रतिष्ठा की। बादमें ब्रह्माण्डव्याप्त आलोकरश्मियोंको संग्रह कर एक सूर्यमें केन्द्रीभूत किया गया। इस प्रकार जब जगत् प्राणियोंके रहने लायक हो गया, तब भगवान्‌के आदेशसे उसमें धीरे धीरे मत्स्यादि जलजन्तु और उडनेवाले पक्षियोंका उद्भव हुआ। अनन्तर चतुष्पद और सरीसृप आदिकी सृष्टि की गई। सबसे पीछे सृष्टिव्यापारके चूडान्तस्वरूप स्त्री और पुरुषके आकारमें दो मनुष्यकी उत्पत्ति हुई। इन दोनोंको भगवान्‌ने स्थावर जङ्गम सारी सृष्टिके ऊपर प्रधानता दी। इस आदिपुरुष आदम और इवसे ही जगत्‌की सभी जातियोंकी उत्पत्ति हुई है। इसके सिवा एञ्जेल नामक मनुष्यकी अपेक्षा श्रेष्ठ, परन्तु भगवान्‌से बहुत नीचेमें अवस्थित कुछ देवदूतोंका भी उल्लेख ईसाई धर्मग्रन्थमें देखा जाता है। किन्तु उनका उत्पत्ति-विवरण कहीं भी लिपिबद्ध नहीं हुआ है।

इस प्रकार 'नास्ति'से अस्तिके उद्भवकी बात धर्मग्रन्थमें लिखी रहने पर भी प्रथम युगके नस्टिक्स नामक ईसाई लोग सहजमें उसे परिपाक न कर सके। इसीलिये देखनेमें आता है, कि हारमोजिनिशने (२री शताब्दीके शेषभागमें और ३री शताब्दीके प्रथम भागमें ये जीवित थे) जगत्‌में अशिव और अपूर्णताका कारण दिखलानेमें पदार्थको भी अनादि और अनन्त स्वीकार कर लिया है। अरिजनने यद्यपि पदार्थका अनादि अनन्तत्वको स्वीकार नहीं किया है फिर भी वे सृष्टिकार्यको समयबद्ध न करके इसे भी अनादि अनंत कह गये हैं।

आधुनिक यहूदियोंमें जगत्‌के सृष्टि विचारको ले कर नाना मतोंकी सृष्टि हुई है। किसी मतसे सप्ताह जिस प्रकार सात दिनोंमें विभक्त है, ब्रह्माण्ड भी उसी प्रकार सात हजार वर्ष तक विद्यमान रहता है। इसके बाद पुराने जगत्‌का ध्वंस और नये जगत्‌की सृष्टि होती है। एक दूसरा दल जगत्‌को अनादि और अनन्त मानता है। किन्तु तृतीय पक्षका कहना है, कि विश्वब्रह्माण्ड भगवान्‌का सृष्ट नहीं है, उनका स्फुरण मात्र है। १२वीं सदीमें सृष्टितत्त्व ले कर एक भारी तर्क वितर्क चला। उस पर एक यहूदी लेखकने कहा था, कि भगवान् और पदार्थ कोई भी अन्यान्यकी अपेक्षा नहीं करता। स्पेनदेशीय रावी (Rabpi) लोगोंमेंसे एक प्रधान व्यक्तिने सृष्टितत्त्वके सम्बन्धमें ऐसा मत दिया था, कि विश्वसृष्टिके पहले भगवान्‌ने निम्नलिखित सात पदार्थोंकी सृष्टि की थी—१ला अपना सिंहासन, २रा देवमन्दिर (Sanctuary), ३रा मेसायाका नाम, ४था स्वर्गलोक, ५वां नरक, ६ठा नियम और शासन (Law) तथा ७वां अनुताप। आकाश और नक्षत्रलोकके सम्बन्धमें उन्होंने कहा था, कि ये भगवान्‌के गात्रावरणरूप आलोकसे निकले थे। भगवन्महिमाके सिंहासनके नीचे कुछ बर्फ पडा था, उसे ले कर उन्होंने पृथिवीकी सृष्टि की थी, एक लेखकने ऐसा अभिमत भी प्रचार किया था। इसके बाद भी जेनिसिसमें लिखित दो बातोंको ले कर सृष्टितत्त्वके सम्बन्धमें दो विभिन्न सम्प्रदायकी सृष्टि हुई। एक स्वर्ग उनका सिंहासन और पृथिवी उनकी पादपीठ इस उक्तिके ऊपर निर्भर कर पृथिवीके पहले नक्षत्रलोककी सृष्टि हुई थी, ऐसा मत प्रचार किया। द्वितीय पक्षने छत बनानेके पहले दीवार बनानेकी आवश्यकता होती है, इस उक्तिके ऊपर निर्भर कर पृथिवी ही पहले सृष्टि हुई थी, ऐसा मत प्रकाश किया था।

इसके बाद आधुनिक यहूदियोंके गुरुपदवाच्य मेमोनाइडिसने सृष्टितत्त्वकी आलोचना इस प्रकार की है,—पहले सभी वस्तु एक साथ सृष्ट हुई थी, पीछे मोजेसके वर्णनानुरूप उन्हें पृथक् और श्रेणीबद्ध किया गया था। यहूदियोंके कावाला नामक ग्रन्थमें सृष्टितत्त्वके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—समूचा विश्व ही भगवान्‌का स्फूरण मात्र है अर्थात् जगद्रूपमें भगवान्‌ने आत्मप्रकाश किया है। सृष्ट वस्तुओंमेंसे जो उनके जितना ही निकट है, वह उन्हें उतना ही अधिक प्रकाश देती है। पदार्थ भगवत्‌शक्तिके सर्वशेषमें तथा सर्वापेक्षा दूरवर्त्ती स्फूरण होनेके कारण इसमें उनकी पूर्णताका विशेष अभाव है। आदम काडमन नामक कावालोंके दर्शनशास्त्रमें सृष्टिप्रकरणका विषय इस प्रकार लिखा है—भगवान्‌से पहले एक उत्स या प्रणाली विस्फुरित हुई। इस प्रथम स्फूरणसे सेफिरथ नामक दश ज्योतिःस्रोत प्रवाहित हुये। इन ज्योतिःप्रणाली हो कर भगवान्‌के प्रथम स्फूरणसे स्वर्गीय, आध्यात्मिक, दैव (angelic) और पादार्थिक ये चार प्रकारकी वस्तु निकली हैं तथा चार विभिन्न लोकोंकी सृष्टि हुई है। प्रथम लोकका नाम आजिलुथ (अर्थात् स्फुरित लोक) है, आदि लोकसे इसकी उत्पत्ति हुई है। निम्नतर जगत्‌का अपूर्णता यहां नहीं है, किन्तु उत्कर्ष सम्पूर्ण ही है। द्वितीय जगत्‌का नाम 'ब्रिया' (सृष्टिसंक्रान्त लोक) है, यहां प्रथम जगत्‌के सृष्ट आध्यात्मिक सभी प्राणी वास करते हैं। तृतीय लोकका नाम जेटसिया है—द्वितीय लोकमें जिन सब आध्यात्मिक प्राणियोंकी सृष्टि होती है, वे यहां आ कर अवस्थान करते हैं। ४थे लोकका नाम आशिया (परिदृश्यमान पार्थिव लोक) है, जिन सब पदार्थकी उत्पत्ति, गठन, गति और ध्वंस है, वह सब पदार्थ यहां विद्यमान हैं अर्थात् भगवच्छक्तिका निकृष्टतम स्फूरण ले कर यह जगत् बना है।

प्राचीन ड्रुजिसवासियोंके मतसे पहले एक गाढ़ा अनन्त तमःमात्र विद्यमान था। आथर (तमोमयी जननी) कह कर उन्होंने इस दुर्भेद्य और जगत्‌के आदि भूत अन्धकारका नामकरण किया था। किन्तु पेशी शक्तिके बल इसके अन्तस्तलमें जल और एक अत्यन्त सूक्ष्म अलक्ष्य तेज प्रवेश करता है। इसके बाद ही एक पवित्र ज्योति उदय होती है तथा वाष्पीभूत ज्योति घनीभूत हो कर विश्वब्रह्माण्डमें परिणत होती है तथा देवता स्थावर और जङ्गमकी सृष्टि करते हैं।

सलास्पा नामक प्राचीन स्कन्दनेभिय काव्यमें सृष्टि तत्त्वका विषय इस प्रकार लिखा है—पहले एक अपार अतलस्पर्शी गह्वर या शून्यमात्र विद्यमान था। इसके कुज्झटिकाच्छन्न अर्थात् कुहासेसे ढके हुए उत्तर प्रान्तका नाम था कुज्झटिका-लोक। यहां केवल रात्रि, बर्फ और कुहासा ही नजर आता था। यहां जो एक उष्ण जलका गड्ढा था उनसे बारह नदियां लगातार बहती थीं। किन्तु आलोकदेशसे रश्मि निकल कर इसके दक्षिण प्रान्तको उजाला करती थी। कालक्रमसे इस उष्णदेशसे एक अत्यन्त उष्ण तूफान बह कर उत्तर प्रान्तकी ओर बहती हुई जलराशिको पिघला देता था। उस जलसे मनुष्याकृतिविशिष्ट जमीर नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ। ठीक इसी समय 'ओउधूमब्ला' नामक एक गाय भी उत्पन्न हुई। उसके बड़े बड़े स्तनसे चार धाराओंमें जो अजस्र दूध बहता था, उसे पी कर जमीर हृष्ट, पुष्ट और वर्द्धित होता था। इसके बाद लवण और घने कुहासेसे ढके हुए प्रस्तरखण्डको चाट चाट कर इस गायने तीन दिनमें 'बुधि' नामक मनुष्याकृतिका एक श्रेष्ठ जीव प्रसव किया। बुधिके पुत्र 'बोर' का एक दैत्यरमणीसे विवाह हुआ। उसके गर्भसे ओदिन, भिलि और भी नामक तीन देवता उत्पन्न हुए। इन तीनोंने मिल कर जमीर दैत्यको मार डाला और उसके शरीरको ले कर वे उसी अतलस्पर्शी गह्वरमें चले गये। इसी समयसे यथार्थमें सृष्टिकार्य आरम्भ हुआ। इन लोगोंने जमीरके मांससे पृथिवी, रक्तसे समुद्र और नदी, बड़ी बड़ी हड्डियोंसे पर्वत, छोटी हड्डी और दांतसे पहाड़, केशसे वृक्ष, मस्तिष्कसे मेघ और दोनों भ्रूसे मनुष्यावास मिडगर्डकी सृष्टि की। उसके मस्तककी विशाल खोपड़ीसे नभोमण्डल बनाया गया। मनुष्य सृष्टिके सम्बन्धमें कहा जाता है, कि इन तीन देवताओंने एक दिन समुद्रके किनारे भ्रमण करते समय दो लकड़ीके टुकड़ेको जलमें बहते हुए देखा। पहलेने उन्हें

श्वास और जीवन, दूसरेने गति और आत्मा तथा तीसरेने वाक, दर्शन, श्रवणशक्ति और सौन्दर्य प्रदान किया। इसी तरह आदिपुरुष और आदिस्त्रीकी उत्पत्ति हुई।

जगत्सृष्टिके सम्बन्धमें बाबिलनीय और फिनिकीयगणने जो मत चलाया था, उसके साथ ईसाई धर्मग्रन्थके प्रचारित मतकी बहुत कुछ सदृशता देखी जाती है। बाबिलनीय धारणाके अनुसार भी भगवान्के आदेशसे ही धीरे धीरे जगत्के विभिन्न अंशकी उत्पत्ति तथा उन अंशोंमेंसे एक शृङ्खला और साहचर्य स्थापित हुआ था। तृतीय केयसकी तरह फिनिकीय लोगोंने एक गाढ़ तमसाच्छन्न अवस्थाकी कल्पना कर ली थी। इन लोगोंके मतसे परम स्त्री और पुरुष इन दो रूपोंमें विभक्त हुए तथा इन दोनों रूपोंके सम्मिलनसे ही जगत्का उद्भव हुआ।

ऐसा देखा जाता है, कि प्रायः सभी प्राचीन जातियोंने सृष्टिके मूलमें एक जलमय अवस्थाकी कल्पना कर ली थी। भारतीय आर्यमतानुसार आदिमें जलकी सृष्टि करके ही भगवान्ने उसमें बीज छोड़ा था। ईसाई धर्म ग्रन्थमें भी एक प्रलयप्लावनकी बात देखनेमें आती है। बाबिलनीयगणने भी इस प्रकार एक प्लावनका उल्लेख किया है। आकाडेमियोंने जलको ही जगत्की उत्पत्तिका मूल कारण बतलाया था। प्राचीन जापानी भी जलको आदिकारण बतलाते हुए कहते हैं, कि जलसे क्रमशः मिट्टीकी उत्पत्ति हुई तथा उस मिट्टीके कठिन और स्थिर होनेके पहले अर्थात् जब यह जलके ऊपर तेलकी तरह बहती थी, तब उससे एक 'असि'की और पीछे उस असिसे मृत्तिकादि परिदृश्यमान जगत्की सृष्टि हुई।

उक्त सभी मत मानवकल्पनाप्रसूत है। अभी एक बार भूतत्त्व और मानवतत्त्व आदिकी आलोचना कर सृष्टिके सम्बन्धमें किस किस अभिमतकी सृष्टि हुई है, वही देखना चाहिये।

इस परिदृश्यमान जगत्की क्रमिक उत्पत्ति और पूर्णता लाभके सम्बन्धमें भूतत्त्वविद्गण एक प्रकार स्थिर सिद्धान्त पर ही पहुंचे हैं। उन लोगोंने वाष्पको ही जगत्का मूलीभूत कारण मान कर धीरे धीरे उससे जीव और जड़जगत्की उत्पत्ति निर्द्धारण की है। इन लोगोंके मतसे पृथिवीका इतिहास, जीव और जड़जगत्के क्रमिक विकाश तथा पूर्णतालाभके हिसाबसे चार युगोंमें विभक्त है। प्रथम युगमें वाष्पसे क्रमशः विश्वब्रह्माण्डका विकाश तथा पृथिवी जीवनिवासोपयोगी हुई थी, ऐसा स्थिर हुआ है। इस युगका नाम आकियन इरा या युग है। इसके परवर्त्ती तीन युगमें पृथिवीकी अवस्था क्रमशः उन्नत और उन्नतसे क्रमश उन्नततर जीव उसमें उत्पन्न होते हैं। द्वितीय युगका नाम पेलिओजइक इरा है। इस समय कशेरुकास्थिविहीन जीव, मत्स्य, शम्बूक और वृक्षलतादिका उद्भव हुआ। तृतीय मेसोजइक युगमें सरीसृपकी ही प्रबलता थी, ऐसा अनुमान किया गया है। ४थे या अन्तिम सेनोजइक युगमें स्थूलचर्मा स्तन्यपायी जीवों तथा मानव जातिकी उत्पत्ति हुई थी, ऐसा प्रमाण पाया गया है।

ज्योतिष आलोचनाके फलसे भी एक प्रकार यही स्थिर हुआ है, कि प्रदीप्त नीहारिका-राशिकी दूसरी अवस्था होनेसे ही इस जगत्की अभिव्यक्ति हुई है। वस्तुतः श्रेष्ठ दार्शनिक पण्डित काण्टने भी यही मत प्रकट किया है, आदिमें शृङ्खला रहित वाष्पमय पदार्थ माध्याकर्षण आदि नैसर्गिक नियमके वशवर्त्ती हो कर घूमते घूमते क्रमशः घना और कठिन हो कर पृथ्वीमें परिणत हो गया है। इन लोगोंको पुरानी पृथ्वीके विलोप और नई पृथ्वीकी सृष्टिके सम्बन्धमें भी पूरा विश्वास है।

भूतत्त्वकी आलोचनाके पहले पृथिवी पर जीव-जन्तुकी सृष्टिके सम्बन्धमें ऐसी ही धारणा प्रबल थी, कि सभी जातिके प्राणी एक ही समय सृष्ट हुए हैं। परन्तु इस आलोचनाके फलसे जीवजगत्की सृष्टिके सम्बन्धमें दो विभिन्न मतोंका उद्भव हुआ है। प्रथम मतको सृष्टिवाद और द्वितीय मतको विवर्त्तनवाद कहा जा सकता है। भूतत्त्वकी आलोचना कर पृथिवीके जीवनके जो चार युग पाये गये हैं, उनसे विवर्त्तनवादके अनुसार इस प्रकार सिद्धान्त किया गया है, कि पिता और पुत्रके मध्य जो सम्बन्ध है, विभिन्न युगके प्राणियोंके मध्य भी वही सम्बन्ध है अर्थात् प्रथम युगके प्राणियोंकी देह और

शक्तिके क्रमिक परिवर्त्तन तथा उन्नतिके फलसे क्रमशः उन्नततर प्राणीकी सृष्टि होते होते अन्तमें मनुष्यकी उत्पत्ति हुई है। इस मतके प्रधान प्रवर्त्तक डारविन-का कहना है, कि वानरसे ही क्रमशः नरका उद्भव हुआ है। किन्तु सृष्टिवादसमर्थकगण कहते हैं, कि विभिन्न युगके प्राणियोंमें इस प्रकार रक्तमांसका कोई सम्बन्ध नहीं है। मानव सृष्टि करेंगे, यही कह कर भगवान्‌ने पृथिवीकी सृष्टि की, भूतत्त्वविदोंके निर्णीत भावमें इसको रूपान्तरित किया और इसमें जीवसृष्टि की तथा इस प्रकार जब मनुष्यके रहने लायक हो गई तब इस पर मनुष्यकी अवतारणा की गई।

सृष्टिदा (सं० स्त्री०) ऋद्धिनामक अष्टवर्गीय ओषधि।

सृष्टिधर (सं० पु०) पुरुषोत्तमरचित भाषावृत्तिके टीका-कार।

सृष्टिपत्तन (सं० क्ली०) एक प्रकारकी मन्त्रशक्ति।

सृष्टिप्रदा (सं० स्त्री०) सृष्टि-प्र-दा-क-। गर्भदात्री क्षुप, श्वेत कंटकारी, सफेद भटकटैया।

सृष्टिमत् (सं० त्रि०) सृष्टि अस्त्यर्थे मतुप्। सृष्टि-युक्त, सृष्टिविशिष्ट।

सृष्टिविज्ञान (सं० पु०) वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें सृष्टिकी रचना आदि पर विचार किया गया हो।

सृष्टिशास्त्र (सं० पु०) सृष्टिविज्ञान देखो।

से'क (हिं० स्त्री०) १ आंचके पास या दहकते अंगारे पर रख कर भूननेकी क्रिया। २ आंचके द्वारा गरमी पहुंचानेकी क्रिया। ३ लोहेकी कमाची जिसका व्यवहार छीपी कपड़े छापनेमें करते हैं।

से'कना (हिं० क्रि०) १ आंचके पास या आग पर रख कर भूनना। २ आंचके द्वारा गरमी पहुंचाना, आगके पास रख कर गरम करना।

से'गर (हिं० पु०) १ एक पौधा जिसकी फलियोंकी तर-कारी बनती है। २ इस पौधेकी फली। ३ बबूलकी फली या छीमी जो भैंस, बकरी, ऊंट आदिको खानेको दी जाती है। ४ एक प्रकारका अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रहता है। ५ क्षत्रियोंकी एक जाति या शाखा।

से'गरा (हिं० पु०) वह डंडा जिसमें लटका कर भारी पत्थरका धरन एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

से'जो (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी घास जो पंजाबमें चौपायोंको खिलाई जाती है। यह कपासके साथ बोई जाती है।

से'टर (अं० पु०) १ गोलाई या वृत्तके बीचका बिन्दु, केन्द्र। २ प्रधान स्थान।

से'ठा (सं० पु०) १ मूंज या सरकंडेके सींकेका निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढ़े आदि बनानेके काममें आता है, कन्ना। २ एक प्रकारकी घास जो छप्पर छानेके काममें आती है। ३ जुलाहोंकी वह पोली लकड़ी जिसमें ऊरी फंसाई जाती है, डांड।

से'ढ (हिं० पु०) एक प्रकारका खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार सुनार करते हैं।

से'त (हिं० स्त्री०) १ कुछ व्ययका न होना, पासका कुछ न लगना, कुछ खर्च न होना।

से'तमेंत (हिं० क्रि० वि०) १ विना दाम दिये, मुफ्तमें, फोकटमें। २ वृथा, फजूल, बेमतलब।

से'दुर (हिं० पु०) सिन्दूर देखो।

से'दुरा (हिं० वि०) १ सिन्दूरके रंगका, लाल। (पु०) २ सिन्दूर रखनेका डिब्बा, सिंदूरा।

से'दुरिया (हिं० पु०) एक सदाबहार पौधा जिसमें सिंदूरके रंग फूल लगते हैं। इसके पत्ते ६।७ अंगुल लंबे और ४।५ अंगुल चौड़े नुकीले और अरवीके पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। फूल दो ढाई अंगुलके घेरेमें पांच दलोंके और सिंदूरके रंगके लाल होते हैं। इस पौधेकी गुलाबी, बैंगनी और सफेद फूलवाली जातियां भी होती हैं। गरमीके दिनोंमें यह फूलता है और बरसातके अन्तमें इसमें फल लगने लगते हैं। फल लंबोतरे, गोल, ललाई लिये भूरे तथा कोमल महीन महीन कांटोंसे युक्त होते हैं। गूदेका रंग लाल होता है। गूदोंके भीतर जो बीज होते हैं, उन्हें पानीमें डालनेसे पानी लाल हो जाता है। बहुत स्थानों पर रंगके लिये ही इस पौधेकी खेती होती है। शोभाके लिये यह बगीचोंमें भी लगाया जाता है। आयुर्वेदमें यह कड़वा, चरपरा, कसैला, हलका, शीतल तथा विषदोष, वात-पित्त, वमन, माथेकी पीड़ा आदिको दूर करनेवाला माना गया है।

सेंदुरी (हिं० स्त्री०) लाल गाय।

सेंध (हिं० स्त्री०) १ चोरी करनेके लिये दीवारमें किया हुआ बड़ा छेद जिसमेंसे हो कर चोर किसी कमरे या कोठरीमें घुसता है, संधि, सुरंग। २ गोरखककड़ी, फूट। ३ पेहंटा, कचरी।

सेंधना (हिं० क्रि०) सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा (हिं० पु०) एक प्रकारका नमक जो खानसे निकलता है, सैंधव, लाहौरी नमक। इसकी खानें खेवड़ा, शाहपुर, कालानाग और कोहाटमें हैं। यह सब नमकोंमें श्रेष्ठ है। वैद्यकमें यह स्वादु, दीपक, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंके लिये हित कारी तथा त्रिदोषनाशक माना गया है। इसका दूसरा नाम 'लाहौरी नमक' भी है।

सेंधिया (हिं० वि०) १ सेंध लगानेवाला, दीवारमें छेद करके चोरी करनेवाला। (पु०) २ ककड़ी जातिकी एक बेल जिसमें तीन चार अंगुलके छोटे छोटे फल लगते हैं, कचरी, सेंध। ३ फूट। ४ एक प्रकारका विष। ५ ग्वालियरका प्रसिद्ध मराठा राजवंश जिसके संस्थापक रणजी शिन्दे थे।

सेंधी (हिं० स्त्री०) १ खजूर। २ खजूरकी शराब, मीठी शराब। ३ खेतकी ककड़ी, फूट। ४ कचरी, पेहंटा।

सेंभा (हिं० पु०) घोड़ोंका एक वातरोग।

सेंवई (हिं० स्त्री०) मैदेके सुखाये हुए सूतके-से लच्छे जो घीमें तल कर और दूधमें पका कर खाये जाते हैं।

सेंहा (हिं० पु०) १ कूआं खोदनेवाला, कुइहा। (स्त्री०) २ सेंधि देखो।

सेंहुड़ (हिं० पु०) थूहर।

से—करण और अपादान कारकका चिह्न, तृतीया और पंचमीकी विभक्ति।

से (हिं० वि०) १ समान, सदृश, सम। (स्त्री०) २ सेवा, खिदमत। ३ कामदेवकी पत्नीका नाम।

सेकंड (अं० पु०) १ एक मिनटका ६०वां भाग। (वि०) २ दूसरा।

सेक (सं० पु०) सिच-घञ्। १ जल-सिञ्चन, सिंचाव। २ जलप्रक्षेप, छिड़काव, छींटा। ३ अभिषेक। ४ वैद्यकोक्त स्नेहादि द्वारा नेत्रमें तैलादि सेचन। वैद्यकमें लिखा है, कि निमीलिताक्ष व्यक्तिके नेत्रके ऊपर चार अंगुल तक सूक्ष्म धारामें सेक देनेसे विशेष उपकार होता है। वातजन्य नेत्ररोगमें स्नेहनसेक, पित्त या रक्त जन्य नेत्ररोगमें रोपणसेक, कफज रोगमें लेखनसेक प्रदान करे। छः सौ मात्रा काल स्नेहनसेक और तीन सौ मात्रा काल रोपनसेक देना होता है।

रेंड़ीके पौधेकी पत्तो, जड़ और छालको पीस कर उससे बकरीका दूध पका कर कुछ गरम रहते नेत्र पर सेक देनेसे वातजन्य नेत्ररोग जाता रहता है।

सुश्रुतमें लिखा है, कि स्नेह पदार्थकी शरीरमें मालिश करनेको सेक कहते हैं। जिस प्रकार वृक्षमें जल सींचनेसे वह बढ़ता है, उसी प्रकार शरीरमें स्नेह द्रव्यका सेक देनेसे शरीरस्थ धातुकी वृद्धि होती है। सेक श्रमनाशक, वायु हृद्भग्न और सन्धिप्रसाधक, क्षत, अग्निदग्ध, अभिहत और घर्षणजनित व्रणका वेदनानाशक माना गया है।

५ एक प्राचीन जातिका नाम।

सेकड़ा (हिं० पु०) वह चाबुक या छड़ी जिससे हलवाहे बैल हांकते हैं, पैना।

सेकतव्य (सं० त्रि०) १ सींचने योग्य। २ जिसे सींचना या तर करना हो।

सेकपात्र (सं० क्ली०) जलसेचनाधार, सींचनेका बरतन, डोलची। (अमर)

सेकभाजन (सं० क्ली०) सेकपात्र देखो।

सेकमिश्रान्न (सं० पु०) वह खाद्य पदार्थ जिसमें दही पड़ा हो।

सेकिम (सं० क्ली०) सेक (भावप्रत्ययान्तादिमप् वक्तव्यः। पा ४।४।२०) इत्युक्तवार्त्तिकोक्त्या इमप्। १ मूलक, मूली। (हेम) (त्रि०) २ सींचा हुआ, तर किया हुआ। ३ ढाला हुआ।

सेकुवा (हिं० पु०) काठके दस्तेका लंबा करछा या डौवा जिससे हलवाई दूध औंटते हैं।

सेकुरी (हिं० स्त्री०) धान।

सेक्तृ (सं० पु०) सिच-तृच्। १ पति, शौहर। (त्रि०) २ सेचनकर्त्ता, सींचनेवाला। ३ जो गाय, घोड़ी आदिको बरदाता हो, बरदानेवाला।

सेक्तव्य (सं० त्रि०) सिच् तव्य। सेचनीय, सींचनेके योग्य।

सेक् (सं० क्ली०) सिच (दाम्नीशसयुयुजेति। पा ३।२। १८२) इति करणे ष्ट्रन्। सेकपात्र, सींचनेका बरतन, डोलची।

सेक्रेटरी (अं० पु०) १ वह उच्च कर्मचारी या अफसर जिसके अधीन सरकार या शासनका कोई विभाग हो, मन्त्री, सचिव। २ वह पदाधिकारी जिस पर किसी संस्थाके कार्य सम्पादनका भार हो। ३ वह व्यक्ति जो दूसरेकी ओरसे उसके आदेशानुसार पत्रव्यवहार आदि करे, मुंशी।

सेक्रेटेरियट (अं० पु०) किसी सरकारके सेक्रेटरियोंका कार्यालय या दफ्तर, शासक या गवनरका दफ्तर।

सेक्शन (अं० पु०) विभाग।

सेख (फा० पु०) शेख देखो।

सेखावत (फा० पु०) राजपूतोंको एक जाति या शाखा, शेखावत। इनका स्थान राजपूतानेकी शेखावाटी नामका कसबा है।

सेगव (सं० पु०) केकड़ेका बच्चा।

सेगा (अ० पु०) १ विभाग, महकमा। २ विषय, पढ़ाई या विद्याका कोई क्षेत्र। जैसे,—वह इम्तहानमें दो सेगोंमें फेल हो गया।

सेगुडी (सं० स्त्री०) क्षुद्र क्षुपविशेष। गुण—कटु, उष्ण, पृष्ठशूल, गुल्म और वातशूलनाशक तथा देहदार्ढ्यकर।

सेगोन (हिं० पु०) मटमैले रंगकी लाल मिट्टी जो नालोंके पास पाई जाती है।

सेगौन (हिं० पु०) सेगोन देखो।

सेङ्गर (सं० पु०) शृङ्गेदर राजवंश। ये लोग अपनेको ऋष्यशृङ्गके वंशधर बतलाते हैं। १७वीं सदीमें रचित नीलकण्ठके भगवन्तभास्कर या स्मृतिभास्कर नामक निबन्धमें इस वंशका संक्षिप्त इतिहास दिया गया है। भरेह नामक स्थानमें यह वंश राज्य करते थे।

सेचक (सं० पु०) सिच-ण्वुल्। १ मेघ, बादल। (त्रि०) २ सेककर्त्ता, सींचनेवाला।

सेचन (सं० क्ली०) सिच करणे ल्युट्। १ जलसिञ्चन, सिंचाई। २ मार्जन, छिड़काव, छींट देना। ३ ढलाई। ४ जल उलीचनेका बरतन, लोहंदी। ५ अभिषेक।

सेचनक (सं० क्ली०) सेचन स्वार्थे कन्। अभिषेक।

सेचनघट (सं० पु०) वह बरतन जिससे जल सींचा जाता है।

सेचनीय (सं० त्रि०) सींचने योग्य, छिड़कने लायक।

सेचित (सं० त्रि०) १ जो सींचा गया हो, तर किया हुआ। २ जिस पर छींटे दिये गये हों।

सेच्य (सं० त्रि०) १ सींचने योग्य, जल छिड़कने योग्य। २ जिसे सींचना हो, जिसे तर करना हो।

सेछागुन (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी।

सेज (हिं० स्त्री०) शय्या, पलंग और बिछौना।

सेजपाल (हिं० पु०) राजाकी शय्या या सेज पर पहरा देनेवाला, शय्यापाल।

सेजा (हिं० पु०) एक प्रकारका पेड़ जो आसाम और बंगालमें होता है और जिस पर टसरके कीड़े पाले जाते हैं।

सेझना (हिं० क्ली०) दूर होना, हटना।

सेट (सं० पु०) एक प्राचीन तौल या मान।

सेट (हिं० पु०) कांख, नाक, उपस्थ आदिके बाल या रोएं।

सेट (अं० पु०) एक ही प्रकार या मेलकी कई चीजोंका समूह।

सेटु (सं० पु०) १ खेतकी ककड़ी, फूट। २ कचरी, पेहंटा।

सेठ (हिं० पु०) १ बड़ा साहूकार, महाजन, कोठीवाला। २ बड़ा या थोक व्यापारी। ३ धनी मनुष्य, मालदार आदमी, लखपती। ४ धनी और प्रतिष्ठित वणिकोंकी उपाधि। ५ दलाल। ६ खत्रियोंकी एक जाति। ७ सुनार।

सेठन (हिं० पु०) झाड़ू, बुहारी।

सेंठा (हिं० स्त्री०) सेंठा देखो।

सेंडी (हिं० स्त्री०) सहेली, सखी।

सेढ (हिं० पु०) बादबान, पाल।

सेढ़खाना (हिं० पु०) १ जहाजमें वह कमरा या कोठरी जिसमें पाल भरे रहते हैं। २ वह कमरा या कोठरी जहां पाल काटे और बनाये जाते हैं।

सेतकुली (हिं० पु०) सर्पोंके अष्ट कुलमेंसे एक, सफेद जातिके नाग।

सेतवा (हिं० पु०) पतले लोहेकी करछी जिससे अफीम काछते हैं।

सेतवाल (हिं० पु०) वैश्योंकी एक जाति।

सेतिकर्त्तव्यताक (सं० त्रि०) इतिकर्त्तव्यताके सहित वर्त्तमान।

सेतिका (सं० स्त्री०) अयोध्या। (भूतशुद्धितन्त्र)

सेतु (सं० पु०) सिञ्-बन्धने (सितनिगमिमसीति। उण् १।७०) इति तुन्। १ जलबन्ध, मिट्टीका ऊंचा पटाव जो दूर तक चला गया हो बांध। शास्त्रमें लिखा है, कि जो सेतु या पुल बनवाते हैं, वे इन्द्रलोकमें तथा जो ईंटेका पुल बनवाते हैं, उनका स्वर्गलोकमें वास होता है। २ बन्धन, बंधाव। ३ मेंड, डाड। ४ सीमा, हदबंदी। ५ वरुणवृक्ष, बरना। ६ प्रणव, ओंकार। ७ मर्यादा, नियम या व्यवस्था। ८ द्रुह्युके एक पुत्रका नाम। ९ एक प्राचीन स्थान। १० टीका या व्याख्या।

सेतुक (सं० पु०) १ वरुण वृक्ष, बरना। २ पुल। ३ बांध, धुस्स।

सेतुकर (सं० पु०) सेतुनिर्माता, पुल बनानेवाला।

सेतुकर्म (सं० क्ली०) सेतु या पुल बनानेका काम।

सेतुखण्ड (सं० पु०) पद्मपुराणके अन्तर्गत एक प्रकरण।

सेतुज (सं० पु०) दक्षिणापथके एक स्थानका नाम।

सेतुपति—मन्द्राजप्रदेशके मदुरा जिलान्तर्गत रामनादका राजवंश। ये लोग सुप्राचीन मडववंशसे उत्पन्न हुए हैं तथा कुडम्बोंके आगमन और उनके द्वारा भगाये जानेके पहले तक सागर समीपस्थ समस्त दक्षिणापथके शासनकर्त्ता थे। १७वीं सदीके पहले तक इन लोगोंका इतिहास अन्धतमसाच्छन्न है। १६वीं सदीके प्रथम भागमें सेतुपतिवंशीय कोई भी राजा विद्यमान न थे। इस समय रामनाद भीषण जङ्गलमें परिणत हुआ था, खेतीवारी कुछ भी नहीं होती थी। डकैतोंके उपद्रवसे पथ घाट भी जनमानव शून्य हो गया था। इस समय मुत्तुकृष्णप्प मदुराके सिंहासन पर अधिरूढ थे। तीर्थयात्रिगण रामनादके भग्नराजाओं पर एक शासनकर्त्ता नियुक्त करनेके लिये इन्हें अनुरोध करने लगे। ये सब छोटे छोटे स्वाधीन दस्युप्रकृति राजगण उन्हें न्याय्य राजकर भी नहीं देते थे। अन्तमें तंग आ कर उन्होंने रामनादमें प्राचीन मडववंशीय एक व्यक्तिको सेतुपति या रामेश्वरतीर्थका रक्षक नियुक्त करनेका संकल्प किया। तदनुसार १६०४ ई०में सर्वशेष सेतुपतिके पौत्र सडायक तेवर रामनादके राजा बनाये गये। रामनाद शहरसे दश मील पश्चिममें अवस्थित पोगालुर नामक स्थानमें इनकी अभिषेकक्रिया सम्पन्न हुई। अभिषेकके बाद सडायक ७२ पोलिगर-के सरदार भी बनाये गये। इसी समयसे सेतुपति-ओंका कुछ कुछ इतिहास मिलता है।

१८७३ ई०में रामनादराज्य कोर्ट आव वार्ड्सको देखरेखमें आया। १६०४ ई०से आज तक २४ सेतुपति-योंके नाम पाये गये हैं। यथा—

१। सडयक तेवर उडैयन सेतुपति (१६०४-१६२१)। ये बुद्धिमान् और प्रतापशाली राजा थे। रामनाद अञ्चलमें जो अराजकता फैली हुई थी, उसे इन्होंने एकदम निर्मूल कर दिया था। देश भरमें शान्ति विराजने लगी। दुर्ग और प्राकारको निर्माण कर रामनाद और पोगलुर नगर, इन दोनोंको सुरक्षित किया गया। कुछ प्रधान गाँव भी इन्होंने अपने राज्यभुक्त किये थे।

२। कूत्तन सेतुपति (१६२१-१६३५)। सडयककी मृत्युके बाद उनके लड़के कूत्तन रामनादके सिंहासन पर बैठे। इनके समयमें देशकी बड़ी उन्नति हुई थी। इनके कोई पुत्र न रहनेसे भाई सडयक तेवर सिंहासन पर बैठे।

३। सडयक तेवर उर्फ दलवाई सेतुपति (१६३५-१६४५ ई०)। इन्होंने पोष्यपुत्र (भाजा) रघुनाथ तेवरको उत्तराधिकारी बनानेका अभिप्राय प्रकट किया। इस पर इनके पिताके जारजपुत्र काहोया तेविलके शासनकर्त्ता तम्बि तेवर बड़े क्रुद्ध हुए तथा मदुराधिपतिने भी इनका साथ दे कर इन्हें 'तम्बि सेतुपति' की उपाधि दी और रामनादराजके विरुद्ध सैन्य और अर्थ साहाय्य किया। युद्धमें रामनाद मदुरा सैन्यके हाथ आया और दलवाई सेतुपति पामवन नामक स्थानमें भाग गया। यहां भी

दोनोंमें फिर मुठभेड़ हुई। दलवाई हार खा कर शत्रु-के हाथ बंदी हुए और मदुरा लाये जा कर एक अंधकार गृहमें काराबद्ध अवस्थामें रहे।

३—१। इसी प्रकार तम्बि रामनादके सिंहासन पर बैठे। किन्तु शीघ्र ही दलवाईके दोनों भांजे रघु-नाथ और नारायण तेवरने उनके विरुद्ध हथियार उठाया। कोई उपाय न देख वे मदुरा भग गये। उस समय तिरु-मलय नायक यहांके सिंहासन पर अधिरूढ़ थे। अपनी भूल समझ कर उन्होंने दलवाई सेतुपतिको कारामुक्त कर फिर रामनादके सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया। १६४० ई०से देशमें फिर शान्ति विराजने लगी। इसके बाद ४।५ वर्ष शान्तिसे राज्य करनेके पश्चात् दलवाई १६४५ ई०में तम्बि तेवरके हाथसे मारे गये। अनन्तर रामनादमें फिर गोलमाल और अराजकता चलने लगी। प्रधान प्रधान मरव सरदार युद्धकी तैयारी करने लगे। यह मामला दिनों दिन बढ़ता देख मदुराराज तिरुमलय नायकने १६५६ ई०में रामनाद राज्यको तीन भागोंमें विभक्त कर दिया। रघुनाथ तेवर रामनादके सेतुपति-योंके सिंहासन पर बैठे। उनके भाई तनक तेवर और नारायण तेवर तिरुवाडानाई नामक स्थानमें रहने लगे। शिवगङ्ग नामक अंश तम्बि तेवरको दिया गया।

४। रघुनाथ उर्फ तिरुमलय सेतुपति (१६४५—१६७० ई०)। इन्होंने सम्मुख संग्राममें तञ्जोरसेनाको पराजित तथा कुछ नगरको दखल किया।

इनके शासनकालमें महिसुरके राजाने मदुरा पर आक्रमण किया। दो तुमुल युद्धमें इन्होंने राजाको परास्त कर निकाल भगाया। कृतज्ञ मदुराधिपतिने इस कारण सेतुपतिको तिरुप्पुवनम्, तिरुचूलई और पलिल-मडई नामके तीन ग्राम पुरस्कार स्वरूप दिये। रामनाद में जो नवरात्रि उत्सव देखनेमें आता है, ये ही उसके प्रवर्त्तक थे।

५। सूर्य तेवर (१६७० ई०)। रघुनाथकी अपुत्रक अव-स्थामें मृत्यु होनेसे उनके भतीजे सूर्य तेवर सिंहासन पर बैठे। तंजोरके नायकोंके साथ मदुराके दलवाइयों-का जो युद्ध चल रहा था, उस युद्धमें इन्होंने कोई ऐसा काम किया था कि क्रोधान्ध हो मदुराराजने इन्हें पकड़-वाया और त्रिचिनपल्लीमें बंदी रखा तथा पीछे गुप्त भावसे उनकी जान ले ली। सूर्यतेवरके एक भी उत्तरा-धिकारी न था, पीछे बहुत कोशिश करनेके बाद सूर्य तेवरका जारजपुत्र रघुनाथतेवर किलवन सेतुपति बनाया गया।

६। रघुनाथ तेवर किलवन सेतुपति (१६७३-१७०८)। सिंहासन पर बैठते ही रघुनाथने उन दोनों व्यक्तियोंको मरवा डाला जिसकी सहायतासे इन्होंने राज-पद पाया था। इनके हुकुमसे ईसाई मिशनरी जनडिब्रि टोकी बड़ी निष्ठुरतासे हत्या की गई। कलवरंशीय रघु-नाथकी बहन कट्टारीसे इनका विवाह हुआ था। सालेको इन्होंने पुदुकोट्टईका तोण्डमान् नियुक्त किया।

रामनादके सेतुपतियोंकी राजधानी आज तक पोगालूरमें ही थी। रघुनाथ उसे रामनादमें उठा लाये। वर्त्तमान समयमें भी रामनाद ही यहांकी राज-धानी है। निष्ठुर होने पर भी रघुनाथ एक वीर पुरुष थे। इनके राजत्वकालमें युद्ध, विद्रोह और आनुषङ्गिक अशान्ति तथा विशृङ्खला हमेशा हुआ करती थी। १७००-ई०में तंजोरके साथ एक युद्ध हुआ। १७०२ ई०में मदुरा-से एक दल और तंजोरसे एक दल सेनाने आ कर सेतु पति पर आक्रमण कर दिया, किंतु हार खा कर उन्हें भाग जाना पड़ा। १७०८ ई०में रघुनाथ सेतुपतिका देहान्त हुआ। उनके अनेक स्त्री थीं, वे सभी सती हो गईं। उनकी मृत्युके बाद पोष्यपुत्र (कदम्ब तेवरके पुत्र) तिरुवुडइया तेवर उर्फ विजय रघुनाथ तेवर सिंहासन पर बैठे।

७। विजय रघुनाथ तेवर (१७०६-१७२३)। अरुणडाङ्गि नामक स्थानमें इनके साथ तंजोरराजका युद्ध हुआ। यहां कुछ खण्ड और अनिश्चित युद्धके बाद सेतुपतिके शिविरमें महामारी फैल गई। इनको अनेक स्त्री और पुत्र यमपुरको सिधारे। आखिर ये भी स्वयं इस रोगसे आक्रांत हो रामनाद लौटे, यहां आनेके कुछ समय बाद ही इनकी मृत्यु हो गई।

८। किलवन रघुनाथके भाई ताण्डर तेवर (१७२३-२४)। इनके सिंहासनारोहण कालमें किलवन् सेतुपतिके जारज पुत्र भवानीशङ्कर तेवरने बड़ी बाधा डाली। राज्य

का कुछ अंश देनेका वचन दे कर भवानीशङ्करने तञ्जोर-राजसे सहायता ली। पीछे ताण्डरको मार कर भवानीशङ्करने अपनेको सेतुपति घोषित किया।

९। भवानीशङ्कर सेतुपति (१७२४-२८)। शशिवर्ण पेरिय उडैय तेवर नामक एक पोलिगरको इन्होंने उसके पालेयम्‌से वञ्चित किया। पीछे शशिवर्णने तञ्जोरकी राजसभामें जा कर आश्रय लिया। एक बड़े बाघसे लड़ कर ये तञ्जोरपतिके विशेष कृपाभाजन हुए। मृत सेतुपति ताण्डर तेवरके मामा और उत्तराधिकारी कुत्त तेवर भी इस समय यहीं पर रहते थे। शशिवर्ण और कुत्त दोनोंने मिल कर तञ्जोरराजसे एक दल सेनाके लिये प्रार्थना की। उदैयूर नामक स्थानमें सेतुपतिके साथ इन दोनोंका युद्ध हुआ। युद्धमें भवानीशङ्कर पराजित और बन्दी हुए।

१०। कुत्त तेवर उर्फ कुमार मुत्तु विजय रघुनाथ सेतुपति (१७२८-१७३३ ई०)। युद्धके पहले शशिवर्ण और तञ्जोर-राजके साथ जो बन्दोबस्त हुआ था, तदनुसार तंजोरराजको पाम्बगर नदीके तीरवर्त्ती प्रदेश मिले। रामनादराज्यके बाकी अंशको पांच भागोंमें विभक्त कर दो अंश राजा मुत्तुविजय रघुनाथ पेरिय उडैयरको दिये गये। इन्होंने शिवगङ्गा नामक स्थानमें अपनी राजधानी बसाई। बाकी तीन अंश ले कर वर्त्तमान रामनाद राज्य संगठित है।

११। मुत्तु कुमार विजय रघुनाथ सेतुपति (१७३४-१७४७ ई०)। कुत्तकी मृत्युके बाद उनके लड़के कुमार विजय रघुनाथने सेतुपतिका पद पाया। इनके राजत्व कालमें दलवाई सब मय कर्त्ता थे। रघुनाथकी मृत्युके बाद दलवाई कुत्त तेवरका फुफेरा भाई राक तेवर रामनादके सिंहासन पर बैठा।

१२। राक तेवर सेतुपति (१७४७-४८ ई०)। इनके राजत्व कालमें तंजोरके राजाने रामनाद पर धावा किया। दलवाई वेल्लैयन शेर्वैकारनने तंजोर राजाको पराजित किया और तिनवेल्लि जिलेके कुछ अवाध्य पोलिगरोंको सजा दी। इनके विजयलाभ और क्षमता-वृद्धि पर डर कर सेतुपतिने इन्हें राजधानीमें बुलाया। यही उनके पतनका कारण हुआ। बेरुख देख कर

सेतुपति पामबन भाग गये। किन्तु दलवाईने जा कर उन्हें पराजित और कैद किया। इसके बाद उन्हें पदच्युत कर दलवाईने किलवनवंशीय शेल्ल तेवर उर्फ विजय रघुनाथ तेवरको सिंहासन पर बिठाया।

१३। शेल्ल तेवर उर्फ विजय रघुनाथ तेवर (१७३८-१७ ० ई०)। इन्होंने बारह वर्ष राज्य किया। इनकी मृत्युके बाद इनका भांजा बारण मुत्तु रामलिङ्ग तेवर गद्दी पर बैठा।

१४। मुत्तु रामलिङ्ग सेतुपति (१७६०-१७७२, १७८०-१७९४) शेर्वैकारन दलवाई इनके राजत्वके प्रारम्भमें ही पञ्चत्वको प्राप्त हुए। पीछे दामोदर पिल्लईने दलवाई-पद प्राप्त किया। शिशुराजाके प्रतिनिधिस्वरूप उनकी माता मुत्त तिरुभये नाच्छियर राज्यशासन करने लगी। १७७० ई०में फिर तञ्जोरराजने आ कर रामनाद पर चढ़ाई कर दी। इस बार भी दामोदर पिल्लईने उन्हें एकदम परास्त कर मार भगाया। १७७३ ई०में त्रिचीनपल्लीके नवाबका पक्ष ले कर अङ्गरेज-सेनापति जोसेफ स्मिथने एक दल अङ्गरेजी सेना ले कर रामनाद पर चढ़ाई कर दी और उसे जीत लिया। इसके बाद ८ वर्ष तक अर्थात् १७७३से १७८० ई० तक यह राज्य त्रिचीनपल्लीके नवाबके ही शासनाधीन रहा। इस समय जो सब छोटे छोटे सरदार सेतुपतियोंके पक्षपाती थे, उन्होंने रामनाद जीतने और नवाबके कर्मचारियोंको निकाल भगानेकी चेष्टा की। इस पर डर खा कर नवाबने सेतुपतिको छोड़ दिया और एक दल सेनाके साथ उन्हें रामनाद भेज दिया। फलतः सरदारगण पराजित हुए और देशमें शान्ति स्थापित हुई। इस प्रकार सेतुपति फिर राजपद पर प्रतिष्ठित हुए तथा चौदह वर्ष तक अर्थात् १७९४ ई० तक इन्होंने राज्यशासन किया।

इस समय अङ्गरेज लोग यथार्थमें कर्णाटक प्रदेशके शासनकर्त्ता थे। उन्होंने सेतुपतिको बन्दीरूपमें मन्द्राज भेज दिया। रामनादराज्य भी उनके शासनभुक्त किया गया। इस बंदोबस्तके अनुसार १८०२ ई० तक राजकार्य चलता रहा। दूसरे वर्ष अङ्गरेजसरकारने सेतुपतिकी बहन रानी मङ्गलेश्वरी नाच्छियारको सिंहासन प्रदान किया।

१५। मंगलीश्वरी नाच्छियार (१८०३-१८१२ई०)। १८०३ ई०में जो चिरस्थायी बंदोबस्त हुआ, तदनुसार रानी सेतुपति और उनके उत्तराधिकारिगण अंगरेज सरकारमें प्रति वर्ष ३२४३८७-१-२ रु० पेशकश देनेको सहमत हुए। मङ्गलीश्वरीने १० वर्ष राज्य किया। बंदोबस्तके नामानुसार उन्हें 'इस्तिमरारी जमिन्दारिणी' कहा जाता था। वे अनेक सत्कार्य और भूमिदान कर गये हैं। उनकी मृत्युके बाद उनके पोष्यपुत्र अन्नस्वामी सेतुपति उर्फ मुत्तविजय रघुनाथ सेतुपति सिंहासन पर बैठे।

१६। अन्नस्वामी सेतुपति (१८१२ १८१५ ई०)। इन्हें जो गोद लिया गया था उसे कानूनन न बतलाती हुई मुत्त रामलिङ्ग सेतुपतिकी कन्या शिवकामी नाच्छियर रानीने सेतुपति होनेके लिये कम्पनीकी अदालतमें नालिश की। इस मुकदमेमें रानीकी जीत हुई। १८१५ ई०में वे रानी सेतुपति कह कर घोषित की गई।

१७। शिवकामी नाच्छियार (१८१५ १८२६ ई०)। एक वर्ष राज्य करने भी न पाई थी, कि इनके यहां बहुत पेशकश बाकी रह गया। इस कारण इनकी ओरसे सदर अदालतने चौदह वर्ष तक राज्य शासन किया। इसी समय अन्नस्वामी सेतुपतिने अपना अधिकार लौटा पाने के लिये अदालतमें अपील की। इसमें उनकी जीत हुई। किन्तु फैसला सुनानेके पहले ही इनकी मृत्यु हो गई। कोई पुत्रसन्तान न रहनेके कारण उनकी पत्नी मुत्तु वीरायि नाच्छियर सिंहासनकी अधिकारिणी ठहराई गई। किन्तु स्वयं राज्यशासन करनेमें अनिच्छा प्रकट कर इन्होंने पोष्यपुत्र रामस्वामी तेवरको सिंहासन पर बिठाया।

१८। रामस्वामी तेवर उर्फ विजय रघुनाथ रामस्वामी सेतुपति (१८२६ ई०)। सिंहासन पर बैठनेके कुछ समय बाद ही इनका देहान्त हुआ, पीछे उनकी शिशु कन्या मङ्गलीश्वरी नाच्छियार रामनादके तख्त पर बैठी।

१६। मङ्गलीश्वरी नाच्छियार (१८२६-१८३८ ई०)। इनकी ओरसे इनकी पितामही मुत्तु वीरायि नाच्छियार और मत्तु शेल्ल तेवर राजकार्य चलाने लगी। बचपन में ही मङ्गलीश्वरीका देहान्त हो गया। पीछे उनकी छोटी बहन दोरइराज नाच्छियार सिंहासन पर अधिरूढ़ हुई।

२०। दोरइराज नाच्छियार (१८३८ १८४५ ई०)। इनके प्रथम कालमें मुत्तु शेल्ल राजप्रतिनिधिस्वरूप काम करते थे, किन्तु इनकी शासननीति इष्ट-इण्डिया कम्पनीको अच्छी न लगी, इस कारण जमींदारी कोर्ट आव वार्डके अधीन की गई। दोरइराज १८४४ ई०में इस लोकसे चल बसे। इनकी मृत्युके बाद भी कुछ दिनों तक कोर्ट आव वार्ड ही राज्य शासन करता रहा। आखिर रामस्वामी सेतुपतिकी विधवा पत्नी पर्वतवर्द्धिनी नाच्छियारको रानी सेतुपति घोषित किया गया।

२१। पर्वतवर्द्धिनी नाच्छियार (१८४५ १८६८ ई०)। इन्होंने सचमुच १८४६ ई०में शासनभार ग्रहण किया। इनके समय बहुत-सा मामला मुकदमा पड़ जानेसे जमींदारी पर कुछ ऋण हो गया। पेशकश भी वसूल नहीं होता था। १८६८ ई०में इनकी मृत्यु हुई। पीछे पोष्यपुत्र मुत्त रामलिङ्ग सेतुपति गद्दी पर बैठे।

२२। मुत्त रामलिङ्ग सेतुपति (१८६८ १८७३ ई०)। सिंहासन पर बैठते ही इन्होंने देखा, कि ऋणके बोझसे जमींदारी डूबी जा रही है। किन्तु ऋण चुकानेका कोई उपाय भी नहीं था। पीछे अंगरेज-सरकार उसकी मदद करने आगे बढ़ी और जमींदारी एक स्पेसल असिष्टाण्ट कलक्टरकी देख रेखमें रखी गई। १८७३ ई०में भास्कर सेतुपति और दिनकर स्वामी तेवर नामक दो नाबालिग पुत्र छोड़ रामलिङ्ग परलोक सिधारे।

२३। भास्कर सेतुपति (१८७३ ई०में)। इनकी नाबालिगी तक जमींदारी कोर्ट आव वार्डके अधीन रही। पीछे बालिग हो कर इन्होंने स्वयं राजभार ग्रहण किया।

२४। राजेश्वर सेतुपति उर्फ मुत्तु रामलिङ्ग। ये ही वर्त्तमान सेतुपति हैं।

सेतुप्रद (हिं० पु०) कृष्णका एक नाम।

सेतुबन्ध (सं० पु०) १ वह पुल जो लंका पर चढ़ाईके समय रामचन्द्रजीने समुद्र पर बंधवाया था। रावण जब सीतादेवीको हर कर लंका ले गया, तब रामचन्द्र सीताका उद्धार करनेके लिये समुद्रके ऊपर एक पुल बंधवा कर गये थे। रामायणमें रामचन्द्रके सेतुबन्धनका विषय इस प्रकार लिखा है,—रामचन्द्रको जब

मालूम हुआ, कि रावण सीतादेवीको हर कर लंका ले गया है और वे वहां बडे कष्टसे दिन बिता रही हैं, तब उन्होंने सोचा, कि जब तक समुद्र पर सेतु नहीं बंधवाया जायगा, तब तक समुद्र पार कर लंका जाना कठिन है। यह सोच कर उन्होंने सुग्रीवके उपदेशानुसार समुद्रके ऊपरी भाग पर सेतु बनवानेका संकल्प किया। सुग्रीवने नलके ऊपर यह सेतु बनानेका भार सौंपा। नलने वानरोंकी सहायतासे लकडी और पत्थर द्वारा यह सेतु निर्माण किया था।

नलने पहले दिन चौदह योजन, दूसरे दिन बीस योजन, तीसरे दिन इक्कीस, चौथे दिन बाईस और पांचवें दिन तेईस योजन विस्तृत पुल बना कर लंकामें मिला दिया था। विश्वकर्मापुत्र वानरश्रेष्ठ नलने पिताकी तरह निपुणता दिखला कर समुद्र पर सेतु निर्माण किया। यह सेतु सौ योजन दीर्घ और दश योजन विस्तृत हो कर इस सुविस्तीर्ण सागरके सीमन्तकी तरह शोभा पाने लगा। देवगण नलके इस अद्भुत कर्म पर अत्यन्त आश्चर्यान्वित हो सेतुका सौन्दर्य देखने लगे। रामचन्द्र इस प्रकार सेतु बंधवा कर लंका गये और युद्धमें रावणको मार कर सीताको अपने साथ ले आये। (रामायण लंकाका०) जहांसे यह सेतु आरम्भ हुआ है, वह सेतुबन्ध रामेश्वर नामसे प्रसिद्ध है तथा हिन्दुओंके निकट एक प्रधान तीर्थ समझा जाता है। रामेश्वर शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

२ खेतमें पुल आदिको बंधाई।

सेतुबन्धन (सं० क्ली०) १ सेतुनिर्माण, पुल बांधना। २ पुल। ३ बांध, मेड।

सेतुबन्धरामेश्वर—तीर्थविशेष। रामेश्वर देखो।

सेतुभेत्तृ (सं० पु०) सेतुभङ्गकारी, पुल तोडनेवाला।

सेतुभेद (सं० पु०) सेतुभङ्ग, पुलका टूटना।

सेतुभेदिन (सं० पु०) उदुम्बरपर्णी, दंती।

सेतुमङ्गलतन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रविशेष।

सेतुवृक्ष (सं० पु०) वरुणवृक्ष, वरना।

सेतुशैल (सं० पु०) वह पहाड जो दो देशोंके बीचमें हो, सरहदका पहाड। भागवतमें मणिकूट, वज्रकूट, इन्द्र-सेन, ज्योतिष्मान्, सुवर्ण, हिरण्यष्ठीव और मेघमाल ये सब सेतुशैल कहे गये हैं। (भाग० ५।२०।४)

सेतुषामन् (सं० क्ली०) सामभेद।

सेतृ (सं० त्रि०) बन्धक।

सेत्र (सं० क्ली०) षिञ् बन्धने (दाम्नीशसयुयुजेति। पा ३।२।१८२) इति ष्ट्रन्। शृङ्खला, जंजीर, बेडी।

सेथिया (हिं० पु०) नेत्रोंकी चिकित्सा करनेवाला, आंखोंका इलाज करनेवाला।

सेदरा (फा० पु०) वह मकान जो तीन तरफसे खुला हो, तिदरी।

सेदुक (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम।

सेद्धव्य (सं० त्रि०) १ निवारण योग्य, हटाने या दूर करने योग्य। २ जिसे हटाना या दूर करना हो।

सेध (सं० पु०) सिध-घञ्। निषेध, निवारण, मनाही।

सेधक (सं० त्रि०) प्रतिरोधक, हटाने या रोकनेवाला।

सेधा (सं० स्त्री०) साही नामका जानवर जिसकी पीठ पर कांटे होते हैं, खारपुश्त।

सेन (सं० क्ली०) १ सेना। २ देह। ३ जीवन। ४ बंगालकी वैद्य जातिकी उपाधि। (पु०) ५ एक भक्त नाई। इसकी कथा भक्तमालमें इस प्रकार है—यह रीवांके महाराज राजारामकी सेवामें था और बडा भारी भक्त था। एक दिन साधुसेवामें लगे रहनेके कारण यह समय पर राजसेवाके लिये न पहुंच सका। उसी समय भगवान्ने इसका रूप धर कर राजभवनमें जा कर इसका काम किया। यह वृत्तान्त ज्ञात होने पर यह विरक्त हो गया और राजा भी परम भक्त हो गये। ६ एक राक्षसका नाम। (त्रि) ७ जिसके सिर पर कोई मालिक हो, सनाथ। ८ आश्रित, अधीन, ताबे।

सेन (हिं० पु०) बाज पक्षी।

सेनक (सं० पु०) १ वैयाकरणभेद। २ शम्बरका पुत्र।

सेनजित् (सं० त्रि०) १ सेनाजेता, सेनाको जीतनेवाला। (पु०) २ एक राजाका नाम। ३ कृष्णके एक पुत्रका नाम। ४ विश्वजित्के एक पुत्रका नाम। ५ बृहत्कर्माके एक पुत्रका नाम। ६ कृशाश्वके एक पुत्रका नाम। ७ विशदके एक पुत्रका नाम। (स्त्री०) ८ एक अप्सराका नाम।

सेनप (सं० पु०) सेनापति।

सेनपहाड़ी—वीरभूम जिलेके अन्तर्गत अजयनदके तीरस्थ केन्दुलीसे कुछ दूर पर बसा हुआ एक प्राचीन स्थान। सेनभूम देखो।

सेनभूम—वीरभूम जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन परगना। अजयनदके पश्चिमी किनारे और वीरभूमके प्रधान सदर सिउड़ीसे १६ मील दूर इस परगनेका आरम्भ है। रेनेल साहब कृत १७६४ ई०की पैमाइशोंमें यह परगना १२ मील लंबा और ७ मील चौड़ा निर्दिष्ट हुआ है। किन्तु पूर्व कालमें इसका आयतन और भी ज्यादा था। 'धर्ममङ्गल' की आलोचना करनेसे मालूम होगा, कि यहीं पर इछाई घोष शासन करते थे। पीछे मयनाके राजपुत्र लाउसेनने इछाई घोषको परास्त कर यह स्थान दखल किया था। उनके अधिकार कालमें ही सम्भवतः यह स्थान सेनभूम कहलाया है। ११वीं सदीमें लाउसेनका अभ्युदय हुआ, अतएव इसी समयसे सेनभूमकी ख्याति हुई है। सेनभूम के अन्तर्गत त्रिषष्टिगढ़ पर इछाई घोषकी राजधानी थी। यह स्थान पीछे श्यामरूपागढ़ और सेनपहाड़ी कहलाने लगा। वैद्यकुल ग्रन्थमें यह सेनपहाड़ी 'पर्वतखण्ड' नामसे परिचित है। पञ्चकोट या शिखरभूमके राजाओंकी प्रधानताके समय 'सेनभूम' उनके अधिकारभुक्त हुआ। पीछे १३वीं सदीमें पञ्चकोटपति दामोदरशेखरने नाथसेनकी सुचिकित्सा पर मुग्ध हो उन्हें यह परगना दे दिया। उन्हींसे उनके वंशधर सेनभूमके राजा कह कर सम्मानित हुए। सुप्रसिद्ध भरतमल्लिककी 'चन्द्रप्रभा' नामकी वैद्यकुलपंजिकामें उक्त सेनभूमराजवंशका वंशपरिचय दिया गया है।

सेनराजवंश—बंगालका एक हिन्दू राजवंश। इस वंशके राजे ११वीं सदीसे १४वीं सदी तक राज्य कर गये हैं। बङ्गदेश और सुवर्णग्राम शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

सेनस्कन्ध (सं० पु०) शम्बरके एक पुत्रका नाम।

सेना (सं० स्त्री०) सिञ् बंधने (कङ्गुपीति। उण् ३।१०) इति न स च नित्, टाप्। १ युद्धकी शिक्षा पाये हुए और अस्त्र शस्त्रसे सजे मनुष्योंका बड़ा समूह, सिपाहियोंका गरोह, फौज, पलटन। भारतीय युद्धकलामें सेना के चार अङ्ग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज और रथ। इन अंगोंसे पूर्ण समूह सेना कहलाता था। सैनिकों या सिपाहियोंको समय पर वेतन देनेकी व्यवस्था आज कलके समान ही थी। यह वेतन कुछ तो भत्ते या अनाजके रूपमें दिया जाता था और कुछ नकद। २ भाला, बरछी, शक्ति, साग। ३ इन्द्रका वज्र। ४ इन्द्राणी। ५ वर्त्तमान अवसर्पिणीके तीसरे अर्हत् शंभव की माताका नाम। ६ एक उपाधि जो पहले अधिकतर वेश्याओंके नामोंमें लगी रहती थी। जैसे—वसन्त सेना।

सेना (हिं० क्रि०) १ सेवा करना, खिदमत करना, टहल करना। २ आराधना करना, पूजना, उपासना करना। ३ नियम पूर्वक व्यवहार करना, काममें लाना, व्यवहार करना। ४ लिये बैठ रहना, दूर न करना। ५ किसी स्थानको लगातार न छोड़ना, पड़ा रहना। ६ मादा चिड़ियाका गरमी पहुंचानेके लिये अपने अंडों पर बैठना।

सेनाकक्ष (सं० पु०) सेनाका पार्श्व, फौजका बाजू।

सेनाकर्म (सं० क्ली०) १ सेनाका सञ्चालन या व्यवस्था। २ सेनाका काम।

सेनागोप (सं० पु०) सेनाका संरक्षक, सेनाका एक विशेष अधिकारी।

सेनाग्र (सं० क्ली०) सेनाका अग्र भाग, फौजका अगला हिस्सा।

सेनाङ्ग (सं० क्ली०) १ सेनाका कोई एक अङ्ग। जैसे,—पैदल, हाथी, घोड़े, रथ। २ फौजका हिस्सा, सिपाहियोंका दल या टुकड़ी।

सेनाचर (सं० पु०) सेनाके साथ जानेवाला सैनिक, योद्धा, सिपाही।

सेनाजीव (सं० पु०) सैन्य, सामन्त।

सेनाजीविन् (सं० पु०) वह जो सेनामें रह कर अपनी जीविका चलावे, सैनिक, सिपाही, योद्धा।

सेनाज् (सं० त्रि०) सेना भेजनेवाला।

सेनादार (फा० पु०) सेनानायक, फौजदार।

सेनाधिकारी (सं० पु०) सेनानायक, फौजका अफसर।

सेनाधिनाथ (सं० पु०) सेनापति, फौजका अफसर, सिपहसालार

सेनाधिप (सं० पु०) सेनायाः अधिपः। सेनापति, फौजका अफसर।

सेनाधिपति (सं० पु०) सेनापति, फौजका अफसर।

सेनाधीश (सं० पु०) सेनापति।

सेनाध्यक्ष (सं० पु०) सेनापति, फौजका अफसर।

सेनानायक (सं० पु०) सेनाका अफसर, फौजदार।

सेनानी (सं० पु०) सेना नयतीति नी (सत्सूद्विषेति। पा ३।२।६१) इति क्विप्। १ सेनापति, फौजका अफसर। २ कार्त्तिकेयका एक नाम। ३ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ४ एक रुद्रका नाम। ५ शम्बरके एक पुत्रका नाम। भगवान्ने गीतामें कहा है, कि सेनानीके मध्य मैं स्कन्द हूं। (गीता० १०।२४) ६ एक विशेष प्रकारका पांसा।

सेनापति (सं० पु०) १ कार्त्तिकेयका एक नाम। २ शिवका नाम। ३ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ४ हिन्दीके एक प्रसिद्ध कविका नाम। ५ सेनाका नायक, फौजका अफसर।

मत्स्यपुराणके मतसे जो ब्राह्मण या क्षत्रिय कुलीन, शीलसम्पन्न, धनुर्वेदशास्त्रमें विशेष सुशिक्षित, हस्ती और अश्वशिक्षामें विशेष कुशल, मधुरभाषी, शकुनतत्त्वज्ञ अर्थात् शुभाशुभ निमित्त देख कर जो फल समझ सकते हैं, जो चिकित्साशास्त्रकुशल, कृतज्ञ, शूर, क्लेशसहिष्णु और सरल हैं तथा जो सभी प्रकारके व्यूहरचनाकार्यमें निपुण और विशेषज्ञ हैं, वैसे गुणसम्पन्न व्यक्तिको राजा सेनापतिके पद पर नियुक्त करें। उन्हें अनुपयुक्त व्यक्तिको सेनापतिके कार्य पर कदापि नियुक्त नहीं करना चाहिये, करनेसे उनका राज्य शीघ्र ही विनष्ट होगा। मनुमें लिखा है, कि राजा स्वयं सेनापति हो कर युद्धस्थलमें सैन्य-चालना करें तथा सेनाओंको सर्वदा सुशिक्षा प्रदान, सदा पुरुषत्व प्रदर्शन, मन्त्रणा और चारचेष्टा सदा सङ्गोपन तथा सर्वदा शत्रुके छिद्रान्वेषणकी शिक्षा दें। राजा नाना प्रकारके कार्योंमें व्यापृत रहते हैं, इस कारण उपयुक्त व्यक्तिके ऊपर उन्हें सेनानायकका भार देना चाहिये। किन्तु राजाको सेनापतिके कार्यादिका सर्वदा अच्छी तरह पर्यवेक्षण करना उचित है। क्योंकि सेनापतिके ऊपर चतुरंग बल सौंपा रहता है। सेनापतिके विरुद्धाचरण करनेसे राजा विपदमें पड़ते हैं, यहां तक कि वे अन्तमें राज्यच्युत होते हैं। (शुक्रनीति कामन्दकी नीति०)

सेनापतिपति (सं० पु०) सबसे प्रधान सेनापति, बड़ा फौजदार।

सेनापत्य (सं० क्ली०) सेनापतिका कार्य या पद, सेनापतिका अधिकार।

सेनापाल (सं० पु०) सेनापति।

सेनापृष्ठ (सं० पु०) सेनाका पिछला भाग।

सेनाप्रणेतृ (सं० पु०) सेनापति।

सेनाबिन्दु (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम।

सेनाभिगोप्ता (सं० पु०) सेना-रक्षक, सेनापति।

सेनामुख (सं० क्ली०) १ सेनाका एक खंड जिसमें ३ या ६ हाथी, ३ या ६ रथ, ६ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे। २ सेनाका अग्रभाग। ३ नगरद्वारके सामनेका रास्ता।

सेनामुखी (सं० स्त्री०) देवीभेद। (राजतर०)

सेनारक्ष (सं० पु०) सेना-रक्षक, प्रहरी।

सेनावास (सं० पु०) १ वह स्थान जहां सेना रहती हो, छावनी। वृहत्संहिताके अनुसार जहां राख, कोयला, हड्डी, तुष, केश, गड्ढे न हों, जो स्थान ऊसर न हो, कंकड़ न हो; जहां हिंस्र जन्तुओं और चूहोंके बिल और वल्मीक न हों तथा जिस स्थानकी भूमि घनी, चिकनी, सुगन्धित, मधुर और समतल हो, ऐसे स्थान पर राजाको सेनावास या छावनी बनानी चाहिये। २ शिविर, डेरा, खेमा।

सेनावाह (सं० पु०) सेना वहतीति वह-णिच। सेनानायक।

सेनाव्यूह (सं० पु०) युद्धके समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेनाके भिन्न भिन्न अंगोंकी स्थापना या नियुक्ति, सैन्य विन्यास। विशेष विवरण व्यूह शब्दमें देखो।

सेनासमुदय (सं० पु०) सम्मिलित सेना, एकत्र हुई सेना।

सेनास्थ (सं० पु०) सिपाही, फौजी आदमी।

सेनास्थान (सं० क्ली०) १ छावनी। २ शिविर, खेमा, डेरा।

सेनाहन (सं० पु०) शम्बरके एक पुत्रका नाम।

सैनिका (हिं० स्त्री०) १ बाज पक्षीकी मादा, मादा बाज पक्षी। २ एक छन्द। श्येनिका देखो।

सैनी (फा० स्त्री०) १ तश्तरी, रिकाबी। २ नक्काशीदार छोटी छिछली थाली। (पु०) ३ विराटके यहां अज्ञातवास करते समयका सहदेवका रखा हुआ नाम।

सैनीय (सं० लि०) सेना-सम्बन्धी।

सैनेट (अं० स्त्री०) १ प्रधान व्यवस्थापिका सभा, कानून बनानेकी सभा। २ विश्वविद्यालयकी प्रबन्धकारिणी सभा।

सैन्द्र (सं० लि०) इन्द्रयुक्त, इन्द्रविशिष्ट।

सैन्द्रकराजवंश—दाक्षिणात्यके एक प्राचीन राजवंश। बहुतोंका विश्वास है, कि वर्त्तमान सिन्दे (सिन्धिया) राजवंश प्राचीन सेन्द्रक वंशसे ही उत्पन्न हुआ है। ७वीं सदीके शुरूसे ही इस वंशका संधान मिलता है। चालुक्यपति २य पुलिकेशीके चिपलुन ताम्रशासनमें श्रीवल्लभसेनानन्दराज नामक एक सेन्द्रकपतिका उल्लेख आया है। ये चालुक्यसम्राट् २य पुलिकेशीके मामा कहे गये हैं। गायकवाड़राजके अधिकारभुक्त नौसारी जिलेके बगुमड़ासे प्राप्त ताम्रशासनमें इस वंशकी एक छोटी वंशावलि मिलती है। यथा—१म भानुशक्ति, उसके पुत्र आदित्यशक्ति और आदित्यके पुत्र पृथिवीवल्लभ निकुम्भलशक्ति थे। यह ताम्रशासन ४०७ (चेदी) सवत् (६५५ ई०)का उत्कीर्ण है। इसके बाद चालुक्यराज १म विक्रमादित्यके १०म वर्षमें (प्राय ६८४ ई०में) उत्कीर्ण कर्णूल जिलेसे जो ताम्रशासन आविष्कृत हुआ है, उससे जाना जाता है, कि चालुक्यपतिने सेन्द्रकवंशीय राजा देवशक्तिके अनुरोधसे रट्टगिरि नामक ग्राम दान किया था। महिसुर राज्यके बडगावे नामक ग्रामसे प्राप्त सेन्द्रक महाराज पोगिल्लीका शिलालिपिमें लिखा है, कि वे चालुक्य सम्राट् विनयादित्यके (६८०से ६९७ ई०) अधीन महासामन्तरूपमें अधिष्ठित थे। वनवासे प्रदेशके अन्तर्गत नागरखण्ड विषय और येड्डूर ग्राम उनके अधिकारभुक्त था। इस शिलाफलकके शीर्ष भागमें सेन्द्रक वंशका राजचिह्न गजमूर्त्ति खोदी हुई है। लक्ष्मेश्वर शिलाफलकमें कुछ सेन्द्रकराजके नाम मिलते हैं, यथा—१म विजयशक्ति, उनके पुत्र कुन्दशक्ति और कुन्दके पुत्र दुर्गशक्ति थे। दुर्गशक्ति चालुक्यपति सत्याश्रय पुलिकेशीके समय विद्यमान थे तथा उक्त शिलाफलकमें वे 'भुजगेन्द्र' वंशोद्भव कह कर परिचित हुए हैं।

सैन्द्रिय (सं० लि०) १ इन्द्रिय-सम्पन्न, जिसमें इन्द्रियां हों, सजीव। २ पुरुषत्वयुक्त, जिसमें मरदानगी हो।

सैन्य (सं० लि०) सेनाई, सेनाके योग्य।

सेफ (सं० पु०) शेफ देखो।

सेफ (अं० पु०) लोहेका बड़ा मजबूत बक्स जिसमें रोकड़ और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

सेफालिका (सं० स्त्री०) शेफालिका देखो।

सेब (फा० पु०) नाशपातीकी जातिका मझोले आकारका एक पेड़ जिसका फल मेवोंमें गिना जाता है। यह पेड़ पश्चिमका है, पर बहुत दिनोंसे भारतवर्षमें भी हिमालय प्रदेश (काश्मीर, कुमाऊं, गढ़वाल, कांगड़ा आदि) और पंजाब आदिमें लगाया जाता है, अब सिन्ध, मध्यभारत और दक्षिण तक फैल गया है। काश्मीरमें कहीं कहीं यह जंगली भी देखा जाता है। इसके पत्ते कुछ कुछ गोल और पीछेकी ओर कुछ सफेदी लिये और रोईंदार होते हैं। फूल सफेद रंगके होते हैं जिन पर लाल लाल छींटेसे होते हैं। फल गोल और पकने पर हलके रंगके होते हैं, पर किसी किसीका कुछ भाग बहुत सुन्दर लाल रंगका होता है जिससे देखनेमें बड़ा सुन्दर लगता है। गूदा इसका बहुत मुलायम और मीठा होता है। मध्यम श्रेणीके फलोंमें कुछ खटास भी होती है। सेब फागुनसे वैशाखके अन्त तक फूलता है और जेठसे फल लगने लगते हैं। भादोंमें फल अच्छी तरह पक जाते हैं। ये फल बड़े पाचक माने जाते हैं। भावप्रकाशके अनुसार सेब वातपित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारक, भारी, पाकमें मधुर, शीतल तथा शुक्रकारक है। भावप्रकाशके अतिरिक्त किसी प्राचीन ग्रन्थमें सेबका उल्लेख नहीं मिलता। भावप्रकाशने सेब, सिंचितिकाफल आदि इसके कुछ नाम दिये हैं।

सेभ्य (सं० पु०) १ शीतलता, शैत्य, ठंढक। (वि०) २ शीतल, ठढा।

सेम (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी फली जिसकी तरकारी खाई जाती है। इसकी लता लिपटती हुई बढ़ती है। पत्ते एक एक सी के पर तीन तीन रहते हैं और वे पान के आकारके होते हैं। सेम सफेद, हरी, मटमैली आदि कई रंगोंकी होती है। फलिया लंबी, चिपटी और कुछ टेढ़ी होती हैं। यह हिन्दुस्तानमें प्रायः सर्वत्र बोई जाती है। वैद्यकमें सेम मधुर, शीतल, भारी, कसैली, बलकारी, वातकारक, दाहजनक, दीपन तथा पित्त और कफका नाश करनेवाली मानी गई है।

सेमई (हिं० पु०) १ हलका सब्ज रंग। (वि०) २ हलके हरे रंगका।

सेमन्तिका (सं० स्त्री०) सेमन्ती देखो।

सेमन्ती (सं० स्त्री०) सफेद गुलाबका फूल, सेवती।

सेमर (हिं० पु०) १ दलदली जमीन। २ सेमल देखो।

सेमल (हिं० पु०) पत्ते झाड़नेवाला एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े आकार और मोटे दलोंके लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों या डोडोंमें केवल रूई होती है, गूदा नहीं होता। विशेष विवरण शाल्मली शब्दमें देखो।

सेमल मूसला (हिं० पु०) सेमलकी जड़ जो वैद्यकमें वीर्यवर्द्धक, कामोद्दीपक और नपुंसकता नष्ट करनेवाली मानी गई है।

सेमलसफेद (हिं० पु०) सेमलका एक भेद जिसके फूल सफेद होते हैं। यह सेमलके समान ही विशाल होता है। इसका उत्पत्तिस्थान मलाया है। यह हिन्दुस्थानके गरम जङ्गलों और सिंहलमें पाया जाता है। नये वृक्षकी छाल हरे रंगकी और पुरानेकी भूरे रंगकी होती है। पत्ते सेमलके समान ही एक साथ पांच पांच सात सात रहते हैं। फूल सेमलके फूलसे छोटे और मटमैले सफेद रंगके होते हैं। इसके फल कुछ बड़े गोल, धुंधले और पांच फांकवाले होते हैं। फलोंके अंदर बहुत कोमल रूई होती है और रूईके बीचमें चिपटे बीज होते हैं। वैद्यकमें सेमलके समान ही इसके भी गुण बताये गये हैं।

सेमा (हिं० पु०) बड़ी सेम।

सेमिटिक (अं० पु०) १ मनुष्योंके आधुनिक वर्ण-विभाग मेंसे वह वर्ण जिसके अन्तर्गत यहूदी, अरब, सिरीय, मिस्री आदि लोहित समुद्रके आस पास बसनेवाली नई जातियां हैं। मूसा, ईसा और मुहम्मद इसी वर्णके थे जिन्होंने पैगंबरी मत चलाये। यह वर्ण आर्य वर्णसे भिन्न है जिसमें हिन्दू, पारसी, यूरोपीय आदि हैं। २ उक्त वर्णके लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओंका वर्ग जिसके अन्तर्गत इबरानी और अरबी तथा असीरीय, फिनिकीय आदि प्राचीन भाषाएं हैं। यह वर्ण सर्वथा भिन्न है जिसके अन्तर्गत संस्कृत, पारसी, लैटिन, ग्रीक आदि प्राचीन भाषाएं और हिन्दी, मराठी, बंगाली, पंजाबी, पश्तो, गुजराती आदि उत्तर भारतकी भाषाएं तथा अंगरेजी, फरासीसी, जर्मनी आदि योरपकी आधुनिक भाषाएं हैं।

सेमीकोलन (अं० पु०) एक विराम जिसका चिह्न इस प्रकार है, —

सेयन (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।

सेर (हिं० पु०) १ एक मान या तौल जो सोलह छटांक या अस्सी तोलेकी होती है, मनका चालीसवां भाग। २ १०६ ढोलीपान। ३ एक प्रकारका धान जो अगहन महीनेमें तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है। ४ शेर देखो। (स्त्री०) ५ एक प्रकारकी मछली।

सेर (फा० वि०) तृप्त।

सेरन (हिं० स्त्री०) एक घास जो राजपूताने, बुंदेलखंड और मध्यभारतके पहाड़ी हिस्सोंमें होती है।

सेरवा (हिं० पु०) १ वह कपड़ा जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है, भूंकी, परती। २ चारपाईकी वे पाटियां जो सिरहानेकी ओर रहती हैं। ३ दीवालीके प्रातःकाल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगानेकी रस्म जो सूप बजा कर की जाती है।

सेरसाहि (फा० पु०) दिल्लीका बादशाह शेरशाह।

सेरही (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कर या लगान जो किसानको फसलकी उपजके अपने हिस्से पर देना पड़ता था।

सेरा (हिं० पु०) चारपाईकी वे पाटियां जो सिरहानेकी ओर रहती हैं।

सेरा (फा० पु०) आबपाशी की हुई जमीन, सींची हुई जमीन।

सेराना (हिं० क्रि०) १ ठंढा होना, शीतल होना। २ तृप्त होना, तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना, जीवन समाप्त होना। ४ समाप्त होना, खतम होना। ५ चुकना, तै होना, करनेको न रह जाना। ६ मूर्त्ति आदि जलमें प्रवाह करना या भूमिमें गाड़ना। ७ ठंढा करना, शीतल करना।

सेराब (फा० वि०) १ पानीसे भरा हुआ। २ सिंचा हुआ, तराबोर।

सेराबी (फा० स्त्री०) १ भराव, सिंचाई। २ तरी।

सेराल (सं० पु०) १ हलका पीलापन। (त्रि०) २ पीताभ, हलका पीला।

सेराह (सं० पु०) दुग्ध वर्णका अश्व, दूधके समान सफेद रंगका घोड़ा।

सेरी (फा० स्त्री०) १ तृप्ति, सन्तोष। २ मनका भरना, अघानेका भाव।

सेरीना (हिं० स्त्री) अनाज या चारेका वह हिस्सा जो असामी जमींदारको देता है।

सेरु (सं० त्रि०) षिञ् बन्धने (दाधेटसिशदसदोरुः। पा ३।२।१५६) इति रु। बन्धनकर्त्ता, बांधनेवाला।

सेरुआ (हिं० पु०) वैश्य।

सेरुराह (सं० पु०) वह सफेद घोड़ा जिसके माथे पर दाग होता है।

सेरुवा (हिं० पु०) मुजरा सुननेवाला या वेश्यागामी।

सेर्ष्य सं० ति०) ईर्ष्यया सह वर्त्तमानः। ईर्ष्यायुक्त।

सेल (हिं० पु०) १ बरछा, भाला, सांग। २ बर्छी, भाला। ३ नावसे पानी उलीचनेका काठका बरतन। ४ एक प्रकारका सनका रस्सा जो पहाड़ोंमें पुल बनानेके काममें आता है। ५ हलमें लगी हुई वह नली जिसमेंसे हो कर कूंडमेंका बीज जमीन पर गिरता है।

सेल (अं० पु०) तोपका वह गोला जिसमें गोलियां आदि भरी रहती हैं।

सेलखड़ी (हिं० स्त्री०)) सिलखड़ी और खड़िया देखो।

सेलग (सं० पु०) लुटेरा, डाकू।

सेलना (हिं० क्रि०) मर जाना, चल बसना।

सेला (हिं० पु०) १ रेशमी चादर या दुपट्टा। २ साफा, रेशमी शिरोबंध। ३ वह धान जो भूसी छांटनेके पहले कुछ उबाल लिया गया हो, भुंजिया धान।

सेलिया (हिं० पु०) घोड़ेकी एक जाति।

सेलिस (सं० पु०) एक प्रकारका सफेद हिरन।

सेली (हिं० स्त्री०) १ छोटा भाला, बरछी। २ छोटा दुपट्टा। ३ गाती। ४ सूत, ऊन, रेशम या बालोंकी बद्धी या माला जिसे योगी यती लोग गलेमें डालते या सिरमें लपेटते हैं। ५ स्त्रियोंका एक गहना। ६ एक प्रकारकी मछली। ७ दक्षिण-भारतका एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी कड़ी और मजबूत होती है और खेतीके औजार बनानेके काममें आती है।

सेलु (सं० पु०) श्लेष्मान्तक, लिसोड़ा।

सेलून (अं० पु०) १ जहाजका प्रधान कमरा। २ बढ़िया कमरेके समान सजा हुआ रेलका बड़ा और लंबा डब्बा जिसमें राजा, महाराजा और बड़े बड़े अफसर सफर करते हैं। ३ सार्वजनिक आमोद-प्रमोदका स्थान। ४ जलपानका स्थान। ५ जहाजमें कप्तानके खानेकी जगह। ६ अङ्गरेजी ढङ्गके बाल बनानेवाले हज्जामोंकी दूकान। ७ वह स्थान जहां अङ्गरेजी शराब बिकती है।

सेल्ला (हिं० पु०) एक प्रकारका अस्त्र, भाला, सेल।

सेल्ह (हिं० पु०) सेल देखो।

सेल्हा (हिं० पु०) एक प्रकारका अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

सेल्ही (हिं० स्त्री०) १ छोटा दुपट्टा। २ गाती। ३ रेशम, सूत, बाल आदिकी बद्धी या माला।

सेवं (हिं० पु०) एक प्रकारका ऊंचा पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिये सफेद रङ्गकी, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। इसकी आलमारी, मेज, कुरसी और आरायशी चीजें बनती हैं। बरमामें इस पर खुदाईका काम अच्छा होता है। इसकी छाल और जड़ औषधके काममें आती है और फल खाया जाता है। इसकी कलम भी लगती है और बीज भी बोया जाता है। यह वृक्ष पहाड़ों पर तीन हजार फुट की ऊंचाई तक मिलता है। यह बरमा, आसाम, अवध,

बरार और मध्यप्रान्तमें बहुत होती है। इसे कुमार भी कहते हैं।

सेनई (हिं० स्त्री०) १ गुंधे हुए मैदेके सूतकेसे लच्छे जो घीमें तल कर और दूधमें पका कर खाये जाते हैं। २ एक प्रकारकी लम्बी घास जिसमें सावोंकी सी बालें लगती हैं जो चारेके काममें आती हैं।

सेवंढी (सं० स्त्री०) एक प्रकारका धान जो युक्त प्रदेशमें होता है।

सेवत (हि० पु०) एक राग जो हनुमत्के अनुसार मेघ रागका पुत्र है।

सेव (सं० क्ली०) सेव-घञ्। सेरिफल। सेव देखो।

सेव (हिं० पु०) सूत या डोरीके रूपमें बेसनका एक पकवान। गुंधे हुए बेसनको छेददार चौकी या झरनेमें दबाते हैं जिससे उसके तारसे बन कर खौलते घी या तेलकी कढाईमें गिरते और पकते जाते हैं। यह अधिकतर नमकीन होता है। पर गुड़में पाग कर मीठे सेव भी बनते हैं।

सेवक (सं० पु०) सेव-ण्वुल्। १ सेवा करनेवाला, खिदमत करनेवाला, भृत्य, नौकर। २ भक्त, आराधक, उपासक। ३ पड़ा रहनेवाला, छोड़ कर कहीं न जानेवाला। ४ व्यवहार करनेवाला। ५ सीनेवाला, दरजी। ६ बोरा।

सेवकाई (हिं० स्त्री०) सेवकका काम, सेवा, टहल।

सेवकालु (सं० पु०) दुग्धपेया नामक पौधा, निशाभंग।

सेवडा (हिं० पु०) १ जैन साधुओंका एक भेद। २ एक ग्रामदेवता। ३ मैदेका एक प्रकारका मोटा सेव या पकवान।

सेवती (सं० स्त्री०) गुलाबका एक भेद जिसके फूल सफेद रंगके होते हैं, सफेद गुलाब, चैती गुलाब। वैद्यकमें यह शीतल, तिक्त, कटु, लघु, ग्राहक, पाचक, वर्णप्रसाधक, त्रिदोषनाशक तथा वीर्यवर्द्धक कही गई है।

सेवधि (सं० पु०) शेवधि देखो।

सेवन (सं० क्ली०) सिव तन्तुसन्ताने ल्युट्। १ सीना, गूथना। २ उपासना, आराधना, पूजन। ३ छोड़ कर न जाना, वास करना, लगातार रहना। ४ सम्भोग, उपभोग। ५ प्रयोग, इस्तेमाल। ६ परिचर्या, खिदमत। ७ बोरा।

सेवन (हिं० पु०) सावांकी तरहकी एक घास। यह चारेके काममें आती है और इसके महीन दाने बाजरेमें मिला कर मरुस्थलमें खाये भी जाते हैं।

सेवनिन् (सं० पु०) १ उपभोगकारी। २ सिलाई करनेवाला।

सेवनी (सं० स्त्री०) सिव-ल्युट्, ङीष्। १ सूची, सूई, सिवनी। २ शरीरावयवसंयोगविशेष, शरीरके वे अंग जहां सीवनसी दिखाई देती है और इसी कारण इसका नाम सेवनी हुआ है। सेवनी शरीरमें सात है, पांच मस्तकमें, एक जीभमें और एक लिङ्गमें। इन सब स्थानोंमें अस्त्रपात करते समय उन सेवनीको बड़ी सावधानीसे छोड़ देना होगा। ३ संधिस्थान, जोड़, टांका। ४ दासी।

सेवनीय (सं० त्रि०) १ सेवार्ह, सेवाके योग्य। २ पूजाके योग्य। ३ व्यवहार योग्य। ४ सीने योग्य।

सेवर (हिं० पु०) शबर देखो।

सेवल (हिं० पु०) ब्याहकी एक रस्म। इसमें वरकी कोई सधवा आत्मीया वरके हाथमें पीतलकी एक थाली देते जिस पर एक दीया रहता है; अनन्तर उसके दुपट्टे के दोनों छोर पकड कर पहले उस थालीसे वरका माथा और फिर अपना माथा छूती है।

सेवा (सं० स्त्री०) सेव् सेवने (गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०३) टाप्। १ दसरेको। आराम पहुंचानेकी क्रिया, खिदमत, टहल। २ दूसरेका काम करना, नौकरी, चाकरी। ३ आराधना, उपासना, पूजा। ४ आश्रय, शरण। माघादि बारह मासमें भगवान् विष्णुकी किस प्रकार सेवा करनी होती है, उसका विशेष विधान पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें लिखा है। ५ रक्षा, हिफाजत। ६ संभोग, मैथुन।

सेवाकाकु (सं० स्त्री०) सेवाकालमें स्वर-परिवर्त्तन या आवाज बदलना अर्थात् कभी जोरसे बोलना, कभी मुलायिमतसे, कभी क्रोधसे और कभी दुःख भावसे।

सेवाजन (सं० पु०) सेवक, नौकर, दास।

सेवाञ्जलि (सं० पु०) भक्त या सेवकका दोनों हथेलियोंके जुड़े हुए संपुटमें स्वामी या उपास्यको कुछ अर्पण।

सेवाटहल (हिं० पु०) परिचर्या, खिदमत, सेवा शुश्रूषा।
सेवाती (हि० स्त्री०) स्वाति देखो।
सेवापन (हि० पु०) दासत्व, सेवावृत्ति, टहल।
सेवापराध—सेवा देखो। हरिभक्तिविलासमें इस सेवापराध और उसके प्रायश्चित्तका विशेष विधान लिखा है।
सेवाभृत (सं० त्रि०) सेवाकारी, सेवा टहल करनेवाला।
सेवाबंदगी (फा० स्त्री०) आराधना, पूजा।
सेवार (हि० स्त्री०) १ बालोंकी लच्छोंकी तरह पानीमें फैलनेवाली एक घास, शैवाल। यह अत्यन्त निम्न कोटि का उद्भिद है जिसमें जड आदि अलग नहीं होती। यह तृण नदियों और तालोंमें होता है और चीनी साफ करने तथा औषधके काममें आता है। वैद्यकमें सेवार कसैली, कडवी, मधुर, शीतल, हलकी, स्निग्ध, दस्तावर, नमकीन, घाव भरनेवाली तथा त्रिदोष नाशक बताई गई है। २ मिट्टीकी तह जो किसी नदीके आस पास जमी हो।
सेवारा (हि० पु०) सेवडा देखो।
सेवाल (हि० पु०) सेवार देखो।
सेवावृत्ति (सं० स्त्री०) १ दासत्व, नौकरी, चाकरीकी जीविका। (त्रि०) २ सेवा करनेवाला।
सेविंग बैंक (अं० पु) वह बैङ्क जो छोटी छोटी रकमें ब्याज पर ले। ऐसे बैङ्क डाकखानोंमें होते हैं जहां गरीब और मध्य वित्तके लोग अपनी बचतके रुपये जमा करते हैं।
सेवि (सं० क्ली०) १ बदर फल, बेर। २ सेव। गुण—बृंहण, कफकर, वृष्य, पाकमें स्वादुरस, हितकर।
सेविका (सं० स्त्री०) १ मिष्टान्नविशेष, सेवई नामक पकवान। प्रस्तुत प्रणाली—मैदेको जौकी तरह बारीक बत्ती बना कर सुखा लेना होगा। पीछे उसे क्षीरके साथ पाक कर उसमें घृत और शर्करा डाल देनी होती है। इसका गुण तर्पण, बलकर, गुरु, पित्त और वायुनाशक, ग्राहक, सन्धिकर और रुचिकर माना गया है। यह अति गुरुपाक है, इसीसे अधिक मात्रामें भोजन नहीं करना चाहिये। (भावप्र०)

इसके सिवा एक प्रकारके सेविकामोदक या सेवक लड्डूका उल्लेख देखनेमें आता है। प्रस्तुत प्रणाली—मैदेसे अधिक घृत डाल कर उसे अच्छी तरह गूंधे, पीछे उसे सूतेकी तरह बारीक बना कर पाकनिपुण व्यक्ति उसे घृतमें भुन ले। इसके बाद गुडके साथ पाक कर उसका लड्डू बनावे। इसका गुण—शरीरका उपचयकारक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, सुमिष्ट, गुरु, पित्तघ्न, वायुनाशक, रुचिजनक और प्रबलाग्नि व्यक्तियोंके पक्षमें विशेष उपकारी है। २ परिचारिका, दासी।
सेवित (सं० त्रि०) सेव क्त। १ जिसकी सेवा या टहल की गई हो, परिवेषित, उपचरित। २ आराधित, जिसकी पूजा की गई हो। ३ उपभुक्त, उपभोग किया हुआ। ४ आश्रित। ५ व्यवहृत, जिसका प्रयोग या व्यवहार किया गया हो। (क्ली०) ६ बदरफल, बेर। ७ सेव।
सेवितव्य (सं० त्रि) सेव-तव्य। १ सेवाई, सेवाके योग्य, उपासनाके योग्य। २ आश्रणीय, आश्रयके योग्य। ३ सीनेके योग्य।
सेविता (सं० स्त्री०) १ सेवित्व, सेवकका कर्म, सेवा, दासवृत्ति। २ उपासना। ३ आश्रय।
सेवितृ (सं० त्रि०) सेव तृच्। १ सेवा करनेवाला, उपासक। २ आश्रयिता। ३ उपभोक्ता।
सेविन् (सं० त्रि०) सेवते इति सेव-इनि। १ सेवा करनेवाला, सेवारत। २ पूजा करनेवाला, आराधना करनेवाला। ३ संभोग करनेवाला।
सेव्य (सं० क्ली०) सेव ण्यत्। १ वीरणमूल, खश। २ लामज्जक तृण, लामज घास। (पु०) ३ अश्वत्थ, पीपलका पेड। ४ हिज्जलवृक्ष। ५ गौरैया पक्षी। ६ सुगंधवाला। ७ समुद्रा नमक। ८ दहीका थक्का। ९ जल, पानी। १० एक प्रकारका मद्य। ११ खश्चानी, मालिक। १२ लाल चंदन।
सेव्य-सेवक (सं० पु०) स्वामी और सेवक।
सेव्या (सं० स्त्री०) सेव-ण्यत् टाप्। १ बन्दा या बादा नामक पौधा जो दूसरे पेडोंके ऊपर उगता है। २ आमलकी, आंवला। ३ एक प्रकारका जंगली अनाज या धान।
सेशन (अं० पु०) १ न्यायालय, पार्लमेंट, व्यवस्थापिका सभा आदि संस्थाओंका एक बार निरन्तर कुछ दिनों तक होनेवाला अधिवेशन, लगातार कुछ दिन चलने

वाली बैठक। २ स्कूल या कालेजकी एक साथ निरन्तर कुछ दिनों तक होनेवाली पढ़ाई।

सेशन कोर्ट (अं० पु०) जिलेकी वह बड़ी अदालत जहां जूरी या असेसरोंकी सहायतासे डाकेजनी, खून आदि फौजदारीके बड़े मामलोंका विचार होता है। इसे दौरा अदालत कहते हैं।

सेशन जज (अं० पु०) वह जज जो खून आदिके बड़े बड़े मामलोंका फैसला करता है, दौरा जज।

सेश्वर (सं० त्रि०) १ ईश्वरयुक्त। २ जिसमें ईश्वरकी सत्ता मानी गई हो।

सेश्वर सांख्य (सं० क्ली०) पातञ्जलदर्शन। इस दर्शनमें सांख्योक्त सभी विषय स्वीकृत हुए हैं तथा कपिलकृत सांख्यदर्शनमें ईश्वर प्रत्याख्यात होने पर भी इसमें ईश्वर स्वीकृत हुए हैं। इसलिये इसे सेश्वरसांख्य कहते हैं। सांख्य और पातंजल शब्द देखो।

सेषु (सं० त्रि०) इषुना सह वर्त्तमानः। इषुके साथ वर्त्तमान, इषुयुक्त वाणविशिष्ट।

सेसर (हिं० पु०) १ ताशका एक खेल जिसमें तीन तीन तास हर एक आदमीको बांटे जाते हैं और खिंदियोंको जोड़ कर हार जीत होती है। ६ आने पर सेसर होता है। आठवालेको दावका दूना और नौवालेको तिगुना मिलता है। २ जालसाजी। ३ जाल।

सेसरिया (हिं० पु०) छल कपट कर दूसरोंका माल मारनेवाला, जालिया।

सेसी (हिं० पु०) एक प्रकारका बहुत ऊंचा पेड़ जिसकी लकड़ीके सामान बनते हैं, पगूर। इसकी लकड़ी भीतरसे काली निकलती है। यह आसाम और सिलहटकी पूर्वी और दक्षिण पूर्वी पहाड़ियोंमें बहुत होता है। लकड़ीसे कई तरहकी सजावटकी और कीमती चीजें तैयार की जाती हैं। इसे आगमें जलानेसे बहुत गन्ध निकलती है।

सेह (हिं० पु०) सेहा देखो।

सेह (फा० वि०) तीन।

सेहखाना (फा० पु०) तिमंजिला मकान।

सेहत (अ० स्त्री०) १ सुख, चैन, राहत। २ रोगसे छुटकारा, रोगमुक्ति, बीमारीसे आराम।

सेहतखाना (अ० पु०) पेशाब आदि करने और नहानेधोनेके लिये जहाज पर बनी हुई एक छोटी सी कोठरी।

सेहथना (हिं० क्रि०) १ हाथसे लीप कर साफ करना, सैंतना। २ झाड़ना, बुहारना।

सेहरा (हिं० पु०) १ फूलकी या तार और गोटोंकी बनी मालाओंकी पंक्ति या जाल जो दूल्हेके मौरके नीचे लटकता रहता है। २ विवाहका मुकुट मौर। ३ वे मांगलिक गीत जो विवाहके अवसर पर वरके यहां गाये जाते हैं।

सेहरी (हिं० स्त्री०) छोटी मछली, सहरी।

सेहवन (हिं० पु०) एक प्रकारका रोग जो गेहूंके छोटे पौधोंको होता है।

सेहहजारी (फा० पु०) एक उपाधि जो मुसलमान बादशाहोंके समयमें सरदारों और दरबारियोंको मिलती थी। ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे अथवा तीन हजार सैनिकोंके नायक बनाये जाते थे।

सेहा (हिं० पु०) कूआं खोदनेवाला।

सेहिथान (हिं० पु०) वह बुहारी या कूंचा जिससे खलियान साफ किया जाता है।

सेही (हिं० स्त्री०) लोमड़ीके आकारका एक जन्तु जिसकी पीठ पर कड़े और नुकीले कांटे होते हैं, साही। क्रुद्ध होने पर यह जन्तु कांटोंको खड़े कर लेता है और इनसे चोट करता है। लम्बाईमें ये कांटे एक बालिश्त तक होते हैं।

सेहु (सं० पु०) शरीरस्थ यन्त्रभेद। (काठक)

सेहुआँ (हिं० पु०) एक प्रकारका चर्मरोग जिसमें शरीर पर भूरी भूरी महीन चित्तियां सी पड़ जाती हैं।

सेहुआन (हिं० पु०) एक प्रकारका करमकल्ला जिसके बीजसे तेल निकलता है।

सेहुण्ड (सं० पु०) स्वनामख्यात वृक्ष, थूहरका पेड़। इसका पत्ता तीक्ष्ण, दीपक, लघु, पाचन, आध्मान, अष्ठीला, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगनाशक माना गया है। (भावप्र०)

सेहुण्डा (सं० स्त्री०) सेहुण्ड, थूहर।

सैंगर (हिं० पु०) सेंगर देखो।

सैंणर (हिं० पु०) पति।

सैंतना (हिं० क्रि०) १ सञ्चित करना, एकत्र करना, बटोरना। २ हाथोंसे समेटना, इधर उधरसे सरका कर एक जगह करना, बटोरना। ३ सहेजना, सम्भाल कर रखना, सावधानीसे अपनी रक्षामें करना। ४ मार डालना, ठिकाने लगाना। ५ घन मारना, चोट लगाना।

सैंतालिस (हिं० वि०) सैंतालीस देखो।

सैंतालीस (हिं० वि०) १ जो गिनतीमें चालीससे अधिक हो, चालीस और सात। (पु०) २ चालीससे सात अधिककी संख्या या अङ्क जो इस प्रकार लिखा जाता है—४७।

सैंतालीसवाँ (हिं० वि०) जो क्रममें छियालीस और वस्तुओंके उपरान्त हो, क्रममें जिसका स्थान सैंतालीस पर हो।

सैंतिस (हिं० वि०) सैंतीस देखो।

सैंतीस (हिं० वि०) १ जो गिनतीमें तीससे सात अधिक हो, तीस और सात। (पु०) २ तीससे सात अधिककी संख्या या अङ्क जो इस प्रकार लिखा जाता है—३७।

सैंतीसवाँ (हिं० वि०) जो क्रममें छत्तीस और वस्तुओंके उपरान्त हो, क्रममें जिसका स्थान सैंतीस पर हो।

सैंपुल (अं० पु०) नमूना।

सैंयाँ (हिं० पु०) सैयाँ देखो।

सैंह (सं० त्रि०) सिंहस्यायमिति सिंह-अण्। १ सिंह-सम्बन्धी, सिंहका। (सिद्धान्तकौ०) २ सिंहके समान।

सैंहकर्ण (सं० त्रि०) सिंहकर्ण-सम्बन्धी।

सैंहल (सं० त्रि०) सिंहल अण्। सिंहलद्वीप सम्बन्धी, सिंहल द्वीपका, सिंहली।

सैंहली (सं० स्त्री०) सिंहपिप्पली, सिंह पीपल। वैद्यकके अनुसार यह कटु, उष्ण, दीपन, कोष्ठशोधक, कफ, श्वास और वायुनाशक है।

सैंहाद्रिक (सं० पु०) सिंहाचल, पर्वतभेद।

सैंहिक (सं० पु०) सिंहिकाया भवः। १ राहु। (त्रि०) २ सिंहके समान।

सैंहिकेय (सं० पु०) सिंहिका-ढक्। राहु। राहुके माताका नाम सिंहिका था।

सैंहुड (हिं० पु०) सेंहुण्ड देखो।

सैंहू (हिं० पु०) गेहूंके वे दाने जो छोटे, काले और बेकार होते हैं।

सै (हिं० स्त्री०) १ तत्त्व, सार। २ वीर्य, शक्ति, ओज। ३ बढ़ती, बरकत, लाभ।

सै—अयोध्याप्रदेशमें प्रवाहित एक नदी। यह हरदोई जिलेमें गोमती और गंगाके मध्य अक्षा० २७° १०´ उ० तथा देशा० ८०° ३२´ पू०से निकल कर दक्षिण पूर्वकी ओर रायबरेली और प्रतापगढ़ होती हुई जौनपुरमें घुस गई है तथा जौनपुर शहरसे कुछ दूर जा कर गोमती नदीमें मिली है। वर्षा कालमें रायबरेली तक १० टनका माल लाद कर नावें आ जा सकती हैं। कप्तान विलफोर्ड प्राचीन शम्बू या शुक्ति नदीको वर्त्तमान सै बतलाते हैं। उनके मतसे मेगास्थेनिजने इस नदीका Sunbus नामसे उल्लेख किया है। किन्तु ग्रीक ऐतिहासिक आरियन Sunbus नदीको यमुनाकी शाखा वर्णन कर गये हैं। एक समय गोमती और सई नदीसे लखनऊ तक लोग आते जाते थे।

सैकट (हिं० पु०) बबूलकी जातिका एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है, धौला खैर, कुमतिया। यह बंगाल, विहार, आसाम तथा दक्षिण और मध्य प्रदेश आदिमें विन्ध्यकी पहाड़ियों पर होता है।

सैक (सं० त्रि०) एकके साथ वर्त्तमान, एकयुक्त।

सैकड़ा (हिं० पु०) १ सौका समूह, शत समष्टि। २ १०६ ढोली पान।

सैकड़े (हिं० क्रि० वि०) प्रति सौके हिसाबसे, प्रतिशत, फी सदी।

सैकड़ों (हिं० वि०) १ कई सौ। २ बहुसंख्यक, गिनतीमें बहुत।

सैकत (सं० क्ली०) सिकताः सन्त्यत्रेति अण्। १ वालुकामय तट, बलुआ किनारा, रेतीला तट। २ रेतीली मिट्टी, बलुई जमीन। ३ एक ऋषिवंश। (त्रि०) सिकताः सन्त्यत्रेति (सिकताशर्कराभ्याञ्च। पा ५।२।१०४) इति अण्। ४ वालुकामय, रेतीला, बलुआ। ५ वालुका बना।

सैकतिक (सं० पु०) सैकत-ठन्। १ साधु, संन्यासी। २ क्षपणक। (त्रि०) ३ सैकत-सम्बन्धी। ४ भ्रमयु

संदेहमें रहनेवाला, संदेहजीवी, भ्रान्तजीवी। (क्ली०) ५ वह सूत्र या सूत जो मंगलके लिये कलाई या गलेमें धारण किया जाता है, मङ्गलसूत्र, गंडा या रक्षा।

सैकतिन् (सं० त्रि०) सिकतायुक्त, रेतीला, बलुआ।

सैकतिल (सं० त्रि०) सिकतायुक्त, रेतीला, बलुआ।

सैकतेष्ट (सं० क्ली०) १ आर्द्रक, अदरक। (त्रि०) २ बालुकामयप्रिय।

सैकयत (सं० पु०) पाणिनिके अनुसार एक प्राचीन जनपद या जातिका नाम।

सैकल (अ० पु०) हथियारोंको साफ करने और उन पर सान चढ़ानेका काम।

सैकलगर (अ० पु०) तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला, सान धरनेवाला, सिकलीगर।

सैका (हिं० पु०) १ घड़ेकी तरहका मिट्टीका एक बरतन जिससे कोल्हूसे गन्नेका रस निकाल कर पकानेके लिये कड़ाहोंमें डालते हैं। २ मिट्टीका छोटा बरतन जिससे रेशम रंगनेका रंग ढाला जाता है। ३ खेतसे कट कट आई हुई रबी फसलका अटाला, राशि। ४ दश ढोंके। ५ एक सौ पूले।

सैकी (हिं० स्त्री०) छोटा सैका।

सैक्य (सं० त्रि०) १ एकतायुक्त, एक मतका। २ सिञ्चन सम्बन्धी। (क्ली०) ३ शोणपित्तल, सोन पीतल।

सैक्षव (सं० त्रि०) इक्षुसहयुक्त, जिसमें चीनी हो, मीठा।

सैक्सन (अं० पु०) यूरोपकी एक जाति जो पहले जर्मनीके उत्तरीभागमें रहती थी। फिर पांचवीं और छठी शताब्दीमें इसने इंगलैंड पर धावा किया और वहां बस गई।

सैजन (हिं० पु०) सहिंजन देखो।

सैण (हिं० पु०) मित्र।

सैत (स० पु०) बौद्धराजभेद। (तारनाथ)

सैतव (रा० त्रि०) सेतु अण्। सेतु सम्बन्धी।

सैतवाहिनी (सं० स्त्री०) बाहुदा नदीका नाम।

सैथी (हि० स्त्री०) बरछी, सांग, छोटा भाला।

सैदपुरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी नाव जिसके आगे पीछे दोनों ओरके सिरके लम्बे होते हैं।

सैदापेट—१ चेङ्गलपट जिलेका एक तालुक। भूपरिमाण ३४२ वर्गमील है। यहां अधिकांश हिन्दुओंका वास है।

२ उक्त तालुकके अन्तर्गत चेङ्गलपट जिलेका प्रधान शहर और दक्षिण-भारत रेलवेका एक स्टेशन। यह अक्षा० १३°७´३२″ उ० तथा देशा० ८०° १५´ ४०″ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है।

१८६५ ई०में गवमेंण्टने यहां एक आदर्श कारखाना खोला। इसमें नाना प्रकारकी परीक्षा करके कृषि-सम्बन्धमें अनेक नये नये तत्त्व निकाले गये हैं। जनसाधारणकी भलाईके लिये १८७६ ई०में यहां एक कृषिविद्यालय खोला गया। छात्रोंकी सुविधाके लिये थोड़े ही दिनोंके मध्य कृषि-विश्वविद्यालयके रूपमें एक सुन्दर अट्टालिका और चित्रशालिका तथा रासायनिक परीक्षागार और पशु चिकित्सालय इसके साथ प्रतिष्ठित हुआ था। इस कारखानेसे उतना लाभ न होनेके कारण बहुविषयिणी वैज्ञानिक कृषिपरीक्षाका काम उठा दिया गया है। अभी केवल कार्योपयोगी सामान्य कृषिप्रणाली शिक्षा दी जाती है।

सैदाबाद—१ मथुरा जिलेकी एक तहसील। यह जिलेके शस्यशालिनी भूमिविशिष्ट अन्तर्वेदी अंशमें अवस्थित है। २ मुर्शिदाबाद जिलेके गंगातीर पर अवस्थित एक शहर। सैद्धान्तिक (सं० त्रि०) सिद्धान्त-ठक्। १ सिद्धांत-सम्बन्धी, तत्त्व-सम्बन्धी। (पु०) २ सिद्धान्तज्ञ, सिद्धान्तको जाननेवाला, विद्वान्। ३ तान्त्रिक।

सैध्रक (सं० त्रि०) सिध्रक वृक्षकी लकड़ीका बना हुआ।

सैध्रिक (सं० पु०) एक प्रकारका वृक्ष।

सैन (हिं० स्त्री०) १ अपना भाव प्रकट करनेके लिये आँख या उंगलीसे किया हुआ इंगित या इशारा, संकेत, इशारा। २ चिह्न, निशान, लक्षण।

सैनक (फा० पु०) थाली, रिकाबी, तश्तरी।

सैनभोग (हिं० पु०) शयन समयका भोग, रात्रिका नैवेद्य जो मन्दिरोंमें चढ़ता है।

सैना (हिं० स्त्री०) सेना देखो।

सैनानीक (सं० त्रि०) सेनाके अग्रभागका।

सैनान्य (सं० क्ली०) सेनानी या सेनापतिका कार्य, सैनापत्य, सेनापतित्व।

सैनापत्य (सं० क्ली०) सेनापतेर्भावः कर्म वा (पत्यन्त-पुरोहितादिभ्यो यक् । पा ५।१।१२८) इति यक् । १ सेनापतिका पद या कार्य, सेनापतित्व । सेनापतेरिदमिति (दित्यादित्यादित्येति । पा ४।१।८५) इति ण्य । (त्रि०) २ सेनापति-सम्बन्धी ।

सैनिक (सं० पु०) सेना (सेनाया वा । पा ४।४।४५) इति पक्षे ठक् । १ सेना या फौजका आदमी, सिपाही, लश्करी, तिलंगा । २ सैन्यरक्षक, प्रहरी, संतरी । ३ समवेत सेनाका भाग या दल । ४ वह जो किसी प्राणीका वध करनेके लिये नियुक्त किया गया हो । ५ शम्बरके पुत्र पुत्रका नाम (त्रि०) ६ सेना सम्बन्धी, सेनाका ।

सैनिका (हिं० स्त्री०) एक छन्दका नाम ।

सैनी (हिं० पु०) नाई, हज्जाम ।

सैनू (हिं० पु०) एक प्रकारका बूटेदार कपडा, नैनू ।

सैनेश (हिं० पु०) सेनापति ।

सैनेस ((हिं० पु०) सैनेश देखो ।

सैन्दूर (हिं० त्रि०) सिन्दूरसे रंगा हुआ, सिन्दूरके रंगका ।

सैन्धव (सं० पु० क्ली०) सिन्धु (अपाञ्ची च । पा ४।३।३३) इति अण् । १ खनामख्यात लवणविशेष । सेंधा नमक । यह लवण सिन्धुदेशमें उत्पन्न होता है, इसीसे इसका नाम सैन्धव हुआ है । गुण—वृष्य, चक्षुका दीप्तिकर, दीपन, रुचिकर, पवित्र, स्वादु, त्रिदोषनाशक, व्रणदोष और विबन्धनाशक । श्वेत और रक्त भेदसे सैन्धव दो प्रकारका है । इनमेंसे रस, वीर्य और विपाकमें श्वेत सैन्धव ही उत्तम है । (राजनि०)

सैन्धव—स्वादिष्ट, दीपन, पाचक, लघु, स्निग्ध, रुचिकर, हिम, बलकर और त्रिदोषनाशक ।

धर्मशास्त्रमें लिखा है, कि हविष्यमें इस लवणका व्यवहार किया जा सकता है । किन्तु महागुरुनिपातमें जहां अक्षारलवणाशित्वकी व्यवस्था है, वहां सैन्धवलवणका भी व्यवहार नहीं कर सकते ।

(पु०) सिन्धु (सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ । पा४।३।९३) इति अण् । २ सिन्धुदेशजात घोटक, सिंध देशका घोडा । ३ सिन्धुके राजा जयद्रथका नाम । ४ सिन्धुदेशाधिपति । (त्रि०) ५ सिन्धुदेशमें उत्पन्न । ६ सिन्धुदेशका । ७ समुद्र सम्बन्धी, समुद्रीय । ८ समुद्रमें उत्पन्न ।

सैन्धवक (सं० त्रि०) सैन्धव-सम्बन्धी ।

सैन्धवपति (सं० पु०) सिन्धु-वासियोंके राजा जयद्रथ।

सैन्धवादि चूर्ण (सं० क्ली०) चूर्णौषधविशेष । प्रस्तुत प्रणाली—लवण, हरीतकी, पीपर और चितामूल चूर्ण सम भागमें मिला कर चूर्ण करे । यह चूर्ण परिमित मात्रामें उष्ण जलके साथ सेवन करनेसे अग्नि वृद्धि होती है । नये चावलका भात या घृतपक्व मांस भोजन कर यह चूर्ण अल्प मात्रामें सेवन करनेसे उसी समय जीर्ण होता है ।

सैन्धवादि तैल (सं० क्ली०) भगन्दर रोगमें उत्कृष्ट तैलौषधविशेष ।

सैन्धवायन (सं० पु०) १ ऋषिका नाम । (भाग० १२।७।३) २ उनके वंशज ।

सैन्धवायनि (सं० पु०) सैन्धवका गोत्रापत्य ।

सैन्धवारण्य (सं० क्ली०) महाभारतके अनुसार एक वनका नाम ।

सैन्धवी (सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जातिकी एक रागिणी जो भैरव रागकी पुत्रवधू मानी गई है । यह दिनके दूसरे पहरकी दूसरी घड़ीमें गाई जाती है । इसकी स्वरलिपि इस प्रकार है—धा सा रे म म प प ध ध । सा नि ध ध प प म ग ग ग ग रे सा । धा सा रे म प ग रे ग रे म प ग रे । नि नि ध म प म ग रे । प प म रे ग ग ग रे सा । किसी किसीके मतसे यह षाडव है और इसमें रि वर्जित है ।

सैन्धी (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी मदिरा जो खजूर या ताडके रससे बनती है, ताडी । वैद्यकमें यह शीतल, कषाय, अम्ल, पित्तदाहनाशक तथा वातवर्द्धक मानी गई है ।

सैन्धुक्षित (सं० क्ली०) सामभेद ।

सैन्धुमित्रिक (सं० त्रि०) सिन्धुमित्रका अपत्य ।

सैन्धू (सं० स्त्री०) सैन्धवी देखो ।

सैन्य (सं० क्ली०) सेना एव चातुर्वर्ण्यादित्वात् ष्यञ् । १ सेना, फौज । (अमर) (पु०) सेना (सेनायां वा । पा ४।४।४५) २ सैनिक, सिपाही । ३ सेनादल, पलटन ।

४ प्रहरी, संतरी। ५ शिविर, छावनी। (त्रि०) ६ सेना-सम्बन्धी, फौजका।
सैन्यकक्ष (सं० पु०) सेनाकक्ष देखो।
सैन्यक्षोभ (सं० पु०) सेनाका विद्रोह, फौजका बगावत
सैन्यनायक (सं० पु०) सेनाका अध्यक्ष, सेनापति।
सैन्यनिवेशभूमि (सं० स्त्री०) वह स्थान जहां सेना पड़ाव डाले, शिविर, पड़ाव।
सैन्यपति (सं० पु०) सेनापति।
सैन्यपाल (सं० पु०) सेनापति।
सैन्यपृष्ठ (सं० पु०) सेनाका पश्चाभाग, फौजका पिछला हिस्सा, प्रतिग्रह।
सैन्यवास (सं० पु०) छावनी, पड़ाव।
सैन्याग्र (सं० पु०) सेनाका अग्रभाग।
सैन्यहन्तृ (सं० पु०) १ शम्बरके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) २ सैन्यहननकारी, सेनाको मारनेवाला।
सैन्याधिपति (सं० पु०) सेनापति।
सैन्याध्यक्ष (सं० पु०) सेनापति।
सैन्योपवेशन (सं० पु०) सेनाका पड़ाव।
सैफ (अ० स्त्री०) तलवार।
सैफ उद्दौला—अलाउद्दीन हसन घोरीका लड़का। इसने हसनघोरीके बाद ११४६ ई०में घोर और गजनीका आधिपत्य लाभ किया। गिजान तुर्कमानोंके साथ युद्धमें ११६३ ई०को इसकी मृत्यु हुई। इसने केवल सात वर्ष राज्य किया था।
सैफ उद्दौला—इसका असल नाम मीरन जवतअली खां है। बङ्गालके नवाब मीरजाफर अली खांका यह दूसरा लड़का था। १७६६ ई०में नजम उद्दौला उपाधि धारण कर यह मुर्शिदाबादको मसनद पर बैठा। अङ्गरेज गवर्मेण्टने इसकी वृत्ति कायम कर दी और इसके कामको देखभाल करनेके लिये नायब नियुक्त किया गया। इसके बाद यह केवल ३ वर्ष १० मास जीवित रहा। १७७० ई०में इसकी मृत्यु हुई। पीछे इसका छोटा नाबालिग भाई मुबारक उद्दौला तख्त पर बैठा।
सैफ खां—नूरजहान्‌का भाजा और बङ्गालके शासनकर्त्ता इब्राहिम खां फतेजङ्गका लड़का। नूरजहान्‌के कोई पुत्र न रहनेसे उसने सैफ खांको गोद लिया और नूरजहान्‌के यत्नसे ही सैफ दिल्लीकी सभामें लालित पालित और वर्द्धित हुआ। पीछे यह वर्द्धमानका शासनकर्त्ता बन कर आया। यहां एक दिन यह हाथी पर जा रहा था, संयोगवश हाथीके पैरके तले दब कर एक दुःखिनीकी सन्तान मर गई। दुःखिनीके नालिश करने पर सैफ खांने कान नहीं दिया। सम्राट्‌को जब यह बात मालूम हुई तब उसने माहुतको सजा देने कहा। सैफ खांने उसके बदले बालकके गरीब माता पिताको कैद कर लिया। इस सम्वाद पर दिल्लीश्वर आग बबूला हो गया और उसे लाहोर बुलवा कर उस गरीब पिता-माताके सामने हाथीके पैरसे कुचलवा कर मरवा दिया।
सैफग (हिं० पु०) लाल देवदार। इसका सुन्दर पेड़ चटगावसे सिकिम तक और कोङ्कण और दक्षिणसे महिसुर, मलवार और लङ्का तकके जङ्गलोंमें पाया जाता है। इसकी लकड़ी पीलापन लिये भूरे रंगकी होती है और मेज, कुरसी, बाजोंके सन्दूक आदि बनानेके काममें आती है।
सैफा (अ० पु०) जिल्दसाजोंका एक औजार जिससे वे किताबोंका हाशिया काटते हैं।
सैफी (अ० वि०) तिरछा।
सैम (हिं० पु०) धीवरोंके एक देवता या भूत।
सैमन्तिक (सं० पु०) सिन्दूर, सेंदुर। सधवा स्त्रियोंके सीमन्त अर्थात् मांगमें लगानेके कारण सिंदूरका यह नाम पड़ा।
सैयद (अ० पु०) १ मुहम्मद साहबके नाती हुसेनके वंशका आदमी। २ मुसलमानोंके चारों वर्गों या जातियोंमें दूसरी जाति।
सैयद अली—अमीर तैमूरका विरागभाजन हो यह सुलतान कुतुबुद्दीनके शासनकालमें सात सौ सैयदोंके साथ जन्मभूमि हमदानका परित्याग कर १३८० ई०में काश्मीर आया। यहां इसने छः वर्ष तक वास किया और इसका सुलेमान बाग नाम रखा। पारस्य लौटने समय पकलीमें इसकी मृत्यु हुई।
सैयद अहाद—दिल्लीका एक मुन्शफ। इसके पिताका नाम सैयद महम्मद मुस्तकी खां बहादुर था। इसने पुरानी दिल्ली और शाहजहानाबाद नगरके सम्बन्धमें असर

पनाशेद नामक एक किताब लिखी थी। 'सिल्सिलत्-उल-मुलुक' नामकी इसकी बनाई हुई एक और किताब मिलती है। इसके पूर्वपुरुषोंका आदिवासस्थान अरब देशमें था। वहांसे ये लोग हीरत गये और हीरतसे महामति अकबर बादशाहके अमलमें भारतवर्ष आये। तभीसे ये लोग पुरुषानुक्रमसे राजदत्त उपाधि और सम्मान लाभ करते आ रहे हैं।

सैयद अह्मद—सुप्रसिद्ध सैयद जलाल बोखारीका भाई। १६५६ ई०में दारासिकोहने इसे गुजरातका शासनकर्त्ता बनाया। आगरेके समीपवर्त्ती ताजगञ्जमें इसका मकबरा आज भी मौजूद है।

सैयद अह्मद—बरेलीका एक अधिवासी। पंजाबके सिखोंके विरुद्ध इसने धर्मयुद्ध खड़ा किया। बालाकोटमें इसकी मृत्यु हुई।

हिन्दीभाषामें तरघीर-उल-जिहाद नामकी एक किताब है। कान्यकुब्जके किसी मौलवीने इसे लिखा और साधारण मुसलमानोंको सिखोंके विरुद्ध उभाडनेके अभिप्रायसे प्रचार किया था। इस किताबसे जाना जाता है, कि सिखोंके साथ यह जो युद्ध है, वह १८२३ ई०की २१वीं दिसम्बरसे चला आता है। यह युद्ध बहुत दिनों तक चलता रहा था, दो एक युद्धमें सैयद अह्मदकी जीत भी हुई थी। किन्तु पीछे स्वयं वह इस युद्धमें मारा गया।

सैयद कबीर—एक साधु। आगरेके सुलतानगंज नामक स्थानके पास इनका मकबरा देखनेमें आता है। खोदित लिपि पढ़नेसे जाना जाता है, कि १६०६ ई०में इनका देहान्त हुआ।

सैयदनगर—युक्तप्रदेशके जलाऊं जिलेका एक प्राचीन विध्वस्त शहर। यह गुराईसे १७ मील दक्षिण पश्चिम बलिया नदीके किनारे अवस्थित है। पीत और लोहित रंगमें रंगे हुए कपड़ोंकी रफ्तनी यहांसे अधिक होती है। शासन और रक्षा कार्यके खर्चवर्चके लिये यहां सामान्य गृह-कर वसूल किया जाता है।

सैयदपुर—पूर्ववङ्गके फरीदपुर जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २३° ४५´ १०´´ उ० तथा देशा० ८९° ४३ पू०के मध्य अवस्थित है। पहले यह बारासिया नदीके किनारे बसा था, परन्तु अभी नदीसे इसकी दूरी दो तीन मीलसे कम नहीं होगी। एक समय इसकी आबादी अच्छी थी, अभी आधी घट गई है। श्रीहीन होने पर भी अभी यहां रूई, मसाले, लोहे, तांबे, पीतल और कांसेके बरतनकी आमदनी पूर्ववत् है। किन्तु ढाई मील दूरवर्त्ती बारासियाके गुआलनगरबन्दरकी जितनी ही श्रीवृद्धि होती जा रही है, इसकी अवस्था उतनी ही शोचनीय होती जाती है। पहले यहां म्युनिसपलिटी थी, पर १८८३ ई०से उठा ली गई है। यहां अच्छी अच्छी शीतलपाटी बनती है।

सैयदपुर—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेकी पश्चिमी तहसील। यह गोमती और गङ्गाके सङ्गमस्थान पर अवस्थित है। सैयदपुर, भितरी, बहरियाबाद और खानपुर ये तीन परगना ले कर यह तहसील बनी है। इसका परिमाणफल प्रायः २५० वर्गमील है। इनमेंसे आधेसे अधिक स्थानमें खेती-बारी होती है। यहां हिन्दू, मुसलमान और ईसाई, ये तीन धर्मावलम्बी लोग देखनेमें आते हैं। इस तहसीलमें ५५४ ग्राम हैं। यहां दीवानी और फौजदारी अदालत तथा दो थाने हैं।

सैयदपुर—युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेका एक ग्राम। यह सैयदपुर तहसीलके मध्य एक प्रधान स्थान है। यहां प्राचीन हिन्दू और बौद्धकीर्त्तिका ध्वंसावशेष है। यह गाजीपुर शहरसे २० मील पश्चिम, गङ्गाके उत्तरी किनारे अक्षा० २५° ३२´ ५´ उ० तथा देशा० ८३° १५´ ४०´´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां एक सरकारी दातव्य चिकित्सालय है। ध्वंसावशेषोंके मध्य एक बड़ा पत्थरका बना हुआ मकान और प्राचीन भारतके भास्करविद्याके निदर्शन स्वरूप कुछ चूर्ण और भग्नमूर्त्ति ही विशेष उल्लेखयोग्य है। शहरसे ५ मील उत्तर-पश्चिम भितरी नामक स्थानमें बालुकामय प्रस्तरका एक स्तम्भ है। इसकी ऊंचाई २८ फुट है जिनमेंसे ५॥६ फुट जमीनमें गड़ी है। इसके गातमें गुप्तवंशीय पांच राजाओंकी कीर्त्तिकहानी खोदी हुई है। गाङ्गी नदीके ऊपर मुसलमानी अमलका तीन गुम्बजवाला एक टूटा फूटा पुल है। शासन और रक्षाकार्यके लिये यहां भी कुछ गृहकर वसूल किया जाता है।

सैयदपुर-- बम्बई प्रदेशके अन्तर्भुक्त सिन्धु प्रदेशके शिकारपुर जिलान्तर्गत घटकी तालुकका एक शहर। अभी यह रोढि महकमेके अधीन एक तालुक है। इसका परिमाणफल १६८ वर्गमील है।

सैयदवाला—पञ्जाबप्रदेशके मण्टगोमारी जिलान्तर्गत गुगैरा तहसीलका एक ग्राम और म्युनिसपलिटी। यहां एक थाना भी है। यह गुगैरासे २० मील उत्तर पूर्व रावी नदीके किनारे अक्ष० ३१° ६´ ३०˝ तथा देशा० ७३° ३१´ पू०के मध्य विस्तृत है। इसमें ६५४ घर लगते है। यहांसे चिनियट तक एक रास्ता गया है। यहांके मकान साधारणतः ईंट और मिट्टीके बने हैं। शहरके चारों ओर दीवार खड़ी है। उस दीवारमें चार फाटक हैं। यहां एक स्कूल भी है।

सैयद हुसेन शहीद अमीर—मुसलमान साधु। सम्राट् हुमायूंके शासनकालमें (१५३८ ई०को ९वीं मई) इनकी हत्या की गई। आगरेके नाहकी नामक स्थानमें इनको दफनाया गया था।

सैर (सं० क्ली०) सीर-अण्। सीर या हलोंका समूह।

सैर (फा० स्त्री०) १ मन बहलानेके लिये घूमना फिरना, मनोरंजन या वायुसेवनके लिये भ्रमण। २ बहार, मौज, आनंद। ३ मनोरञ्जक दृश्य, कौतुक, तमाशा। ४ मित्रमण्डलीका कहीं बगीचे आदिमें खान पान और नाच रंग।

सैरगाह (फा० पु०) सैर करनेकी जगह।

सैरन्ध्र (सं० पु०) १ गृहदास, घरका नौकर। २ एक शंकर जाति जो स्मृतियोंमें दस्यु और आयोगवीसे उत्पन्न कही गई है।

सैरन्ध्रिका (सं० स्त्री०) परिचारिका, दासी।

सैरन्ध्री (सं० स्त्री०) १ सैरन्ध्र नामक संकर जातिकी स्त्री। २ अन्तःपुर या जनानेमें रहनेवाली दासी, अन्तःपुर-परिचारिका। ३ स्त्री कारीगर जो दूसरोंके घरोंमें काम करे, स्वतन्त्रशिल्पजीवनी। ४ द्रौपदी। सैरिन्ध्री देखो।

सैरि (सं० पु) १ कार्त्तिक महीना। २ बृहत्संहिताके अनुसार एक प्राचीन जनपदका नाम।

सैरिक (सं० पु०) सीर-ठक्। १ लाङ्गलिक, हलवाहा, किसान। सीर (हलसीरात् ठक्। पा ४।४।८१) इति ठक्। ५ लाङ्गलवाही वृषभ, हलमें जुतनेवाला बैल। ३ आकाश। (त्रि०) ४ सीर-सम्बन्धी, हल-सम्बन्धी।

सैरिन्ध्र (सं० पु०) १ एक प्राचीन जनपद। २ सैरन्ध्र देखो।

सैरिन्ध्री (सं० स्त्री०) १ अन्तःपुर या जनानेमें रहनेवाली दासी, महल्लिका। पर्याय—सैरन्ध्री, सैरिन्ध्र। २ परवेश्मस्थिता स्ववशा शिल्पकारिणी, स्त्री-कारीगर जो दूसरोंके घरोंमें काम करे, स्वतन्त्रा शिल्पजीवनी। ३ द्रौपदीका एक नाम। जब पांचों पाण्डवोंने छद्मवेशमें राजा विराटके यहां सेवा-वृत्ति स्वीकार की थी, तब द्रौपदीने भी उनके साथ ही एक वर्ष तक सैरन्ध्रीका काम किया था। इसीसे द्रौपदीका नाम सैरन्ध्री पड़ा। ४ वर्णसङ्करसम्भूता स्त्री। ये माला गूथ कर, गंध पीस कर अपनी जीविका निर्वाह करती हैं।

सैरिभ (सं० पु०) १ महिष, भैंसा। २ स्वर्ग, आकाश।

सैरिभी (सं० स्त्री०) महिषी, भैंस।

सैरिष्ठ (सं० पु०) एक प्राचीन जनपद। (मार्क०पु०)

सैरीय (सं० पु०) सैरः कर्षणतत्र भवः वृच्छात् छ। १ श्वेतझिण्टी, सफेद कटसरैया। २ नीलझिण्टी, नीली कटसरैया।

सैरीयक (सं० पु०) झिण्टी, कटसरैया।

सैरेय (सं० पु०) सैरे कर्षे भवः (सैरनद्यादिभ्यो ढक्। पा ४।२।९७) इति ढक्। झिण्टी, कटसरैया।

सैरेयक (सं० पु०) सैरेयएव स्वार्थे कन्। झिण्टी, कटसरैया।

सैर्य (सं० पु०) अश्ववाल नामक तृण।

सैल (हिं० पु०) १ शैल देखो। २ सेल देखो।

सैल (फा० स्त्री०) १ जलप्लावन, बाढ़। २ स्रोत, बहाव।

सैलकुमारी (हिं० स्त्री०) शैलकुमारी देखो।

सैलग (सं० पु०) लुटेरा, डाकू। (शुक्ल यजु० ३०।१८)

सैला (हिं० पु०) १ लकड़ीकी गुल्ली या पच्चड़ जो किसी छेद या सन्धिमें ठोंका जाय, किसी छेदमें डालने या फंसानेका टुकड़ा, मेख। २ लकड़ीका छोटा डंडा या मेज। ३ नावकी पतवारकी मुठिया। ४ वह मुंगरी जिससे कटी हुई फसलके डंठल दाना झाड़नेके

लिये पीटते हैं। ५ लकड़ीका छोटा डंडा या मेख जो हलके जूएके दोनों सिरोंके छेदोंमें इसलिये डालते हैं जिसमें जूआ बैलोंके गलेमें फंसा रहे। ६ चीरा हुआ टुकड़ा, चैला।

सैलानी (हिं० वि०) १ सैर करनेमें जिसे आनन्द आवे, सैर करनेवाला, मनमाना घूमनेवाला। २ आनन्दी, मनमौजी।

सैलाव (फा० पु०) जलप्लावन, बाढ़।

सैलावा (फा० पु०) वह फसल जो पानीमें डूब गई हो।

सैलावो (फा० वि०) १ जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो, बाढ़वाला। (स्त्री०) २ तरी, सील, सीड़।

सैलि (सं० पु०) बृहत्संहिताके अनुसार एक प्राचीन जनपदका नाम। (बृहत्स० १४।११)

सैली (हिं० स्त्री०) १ छोटा सैला। २ ढाककी जड़के रेशोंकी बनी रस्सी। ३ वह टोकरी जिसमें किसान तिन्नीका चावल इकट्ठा करते हैं।

सैवाली (सं० स्त्री०) शैवाल देखो।

सैवालिन् (सं० त्रि०) शैवालविशिष्ट।

सैस (सं० त्रि०) सीस-अण्। १ सीसक सम्बन्धी। २ सीसेका बना हुआ। (क्ली०) ३ सीसक, सीसा।

सैसक (सं० त्रि०) सैस देखो।

सैसिकत (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपद। (भारत भीष्मपर्व)

सैसिरिध (सं० पु०) सेसिकत देखो।

सैहथी (हिं० स्त्री०) शक्ति, बरछी, साँग।

सैहरेय (सं० त्रि०) सीहरोत्पन्न।

सों (हिं० अव्य०) १ सौंह देखो। (क्रि० वि०) २ संग, साथ। (सर्व०) ३ सो देखो।

सोंच (हिं० पु०) सोच देखो।

सोंचर नमक (हिं० पु०) एक प्रकारका नमक जो मामूली नमक तथा हड़, बहेड़े और सज्जीके संयोगसे बनाया जाता है, काला नमक। सौवर्च्चल-लवण देखो।

सोंटा (हिं० पु०) १ मोटी लंबी सीधी लकड़ी या बांस जिसे हाथमें ले सकें, मोटी छड़ी, डंडा, लाठी। २ भंग घोंटनेका मोटा डंडा, भंग घोटना। ३ लोबियाका पौधा, रवांस। ४ मस्तूल बनाने लायक लकड़ी।

सोंटाबरदार (फा० पु०) सोंटा या आसा ले कर किसी राजा या अमीरकी सवारीके साथ चलनेवाला, आसा बरदार, बल्लमबरदार।

सोंठ (हिं० स्त्री०) सुखाया हुआ अदरक। शुण्ठी देखो।

सोंठमिट्टी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी पीले रंगकी मिट्टी जो ताल या धानके खेतमें पाई जाती है। यह काबिस बनानेके काममें आती है।

सोंहराय (हिं० पु०) कंजूसोंका सरदार, भारी मक्खी चूस।

सोंठौरा (हिं० पु०) एक प्रकारका सूंठीका लड्डू जिसमें मेवोंके सिवा सोंठ भी पड़ती है। यह लड्डू प्रायः प्रसूती स्त्रीको खिलाया जाता है।

सोंडकहा (हिं० पु०) घी।

सोंधा (हिं० वि०) १ सुगन्धयुक्त, सुगंधित, खुशबूदार। २ मिट्टीके नये बरतन या सूखी जमीन पर पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुननेसे निकलनेवाली सुगन्धके समान। जैसे,—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना। (पु०) ३ एक प्रकारका सुगन्धित मसाला जिससे स्त्रियां केश धोती हैं। ४ एक प्रकारका सुगन्धित मसाला जो बंगालमें स्त्रियां नारियलके तेलमें उसे सुगन्धित करनेके लिये मिलाती हैं। ५ सुगन्ध, अच्छी महक।

सोंधिया (हिं० पु०) सुगन्ध तृण, रोहिष तृण, गन्धेल घास।

सोंधी (हिं० पु०) एक प्रकारका बढ़िया धान जो दलदली जमीनमें होता है।

सोंपना (हिं० क्रि०) सौंपना देखो।

सोंबनिया (हिं० पु०) एक प्रकारका आभूषण जो नाकमें पहना जाता है।

सोंह (हिं० अव्य०) सौंह देखो।

सो (हिं० सर्व०) १ वह। (अव्य०) २ इसलिये, निदान।

सो (सं० स्त्री०) पार्वतीका एक नाम।

सोऽहम् (सं०) वही मैं हूं—अर्थात् मैं ब्रह्म हूं। वेदान्तका सिद्धान्त है, कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं, दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है। जीव और कुछ नहीं ब्रह्म ही है। इसी सिद्धान्तका प्रतिपादन करनेके लिये वेदांती लोग कहा करते हैं—सोऽहम्, अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूं। उपनि

षदोंमें भी यह बात 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' रूप में कही गई है।

सोऽहमस्मि (सं०) वही मैं हूं—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूं।

सोआ (हिं० पु०) एक प्रकारका साग। इसका क्षुप १से ३ फुट तक ऊंचा होता है। इसकी पत्तियां बहुत सूक्ष्म और फूल पीले होते हैं। वैद्यकके अनुसार यह चरपरा, कड़वा, हलका, पित्तजनक, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्ममें प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाशक है।

सोई (हिं० स्त्री०) १ वह जमीन या गड्ढा जहां बाढ़ या नदीका पानी रुका रह जाता है जिसमें अगहनी धानकी फसल रोपी जाती है, डाबर। (सर्व०) २ वही देखो। (अव्य०) ३ सो देखो।

सोक (हिं० पु०) चारपाई बुननेके समय बुनावटमेंका वह छेद जिसमेंसे रस्सी या निवार निकाल कर कसते हैं। २ शोक देखो।

सोकन (हिं० पु०) सोखन देखो।

सोकना (हिं० क्रि०) सोखना देखो।

सोकन (हिं० पु०) सोखन देखो।

सोकथक (सं० त्रि०) उक्थविशिष्ट, उक्थयुक्त।

सोखता (हिं० वि०) १ सोख्ता देखो। (पु०) २ सोख्ता देखो।

सोखन (हिं० पु०) १ स्याही लिये सफेद रंगका बैल। २ एक प्रकारका जंगली धान जो नदीकी घाटीमें बलुई जमीनमें बोया जाता है।

सोखना (हिं० क्रि०) १ शोषण करना, रस खींच लेना, चूस लेना। २ पीना, पान करना।

सोखाई (हिं० स्त्री०) १ जादू, टोना। २ सोखनेकी क्रिया या भाव। ३ सोखने या सोखानेकी मजदूरी।

सोख्ता (फा० पु०) १ एक प्रकारका मोटा खुरदुरा कागज जो स्याही-सोख लेता है, स्याही सोख, ब्लटिंग पेपर। (त्रि०) २ जला हुआ।

सोगन (हिं० स्त्री०) सौगंद, कसम।

सोगिनी (हिं० स्त्री०) शोक करनेवाली, दुःखिता।

सोगी (हिं० त्रि०) शोकार्त्त, दुःखित।

सोच (हिं० पु०) १ सोचनेकी क्रिया या भाव। २ चिन्ता, फिक्र। ३ शोक, रंज, दुःख, अफसोस। ४ पश्चात्ताप, पछतावा।

सोचक (हिं० पु०) दरजी।

सोचना (हिं० क्रि०) १ किसी प्रकारका निर्णय करने, परिणाम निकालने या भवितव्यको जाननेके लिये बुद्धिका उपयोग करना। २ चिन्ता करना, फिक्र करना। ३ दुःख करना, खेद करना।

सोच विचार (हिं० पु०) समझ-बूझ, गौर।

सोचाना (हिं० क्रि०) सुचाना देखो।

सोच्छ्रय (सं० त्रि०) उच्छ्रयेण सह वर्त्तमानः। उच्छ्रययुक्त।

सोच्छ्वास (सं० त्रि०) उच्छ्वासयुक्त, उच्छ्वास-विशिष्ट।

सोज (हिं० स्त्री०) १ सूजनेकी क्रिया, भाव या अवस्था; सूजन, शोथ। २ सौंज देखो।

सोज़न (फा० पु०) १ सूई। २ कांटा।

सोज़नी (हिं० स्त्री०) सुजनी देखो।

सोजाक (सं० पु०) सुजाक देखो।

सोजिश (फा० स्त्री०) सूजन, शोथ, फुलाव।

सोझा (हिं० वि०) सरल, सीधा।

सोटा (हिं० पु०) १ सोंटा देखो। २ सुअटा देखो।

सोठ (हिं० स्त्री०) सोंठ देखो।

सोठमिट्टी (हिं० स्त्री०) सेठ मिट्टी देखो।

सोडा (अं० पु०) एक प्रकारका क्षार पदार्थ जो सज्जीको रासायनिक क्रियासे साफ करके बनाते हैं। इसके कई भेद हैं। जिसे लोग सिर धोनेके काममें लाते हैं, उसे अंगरेजीमें 'सोडा क्रिस्टल' कहते हैं। यह सज्जीको उबाल कर बनाते हैं। ठंढा होने पर साफ सोडा नीचे बैठ जाता है। जो सोडा साबुन, कागज, कांच आदि बनानेके काममें आता है, उसे 'सोडा कास्टिक' कहते हैं। यह चूने और सज्जीके संयोगसे बनता है। दोनोंको पानीमें घोल और उबाल कर पानी उड़ा देते हैं। इसी प्रकार 'बाइकारबोनेट आफ सोडियम' भी साबुन, कांच आदि बनानेके काममें आता है। यह नमकको अमोनियामें घोल कर कारबोनिक गैसकी

भापका तरारा देनेसे निकलता है। इसे एकत्र करके तपानेसे पानी और कारबोनिक गैस उड़ जाता है। जो सोडा खानेके काममें आता है, उसे "बाइकारबोनेट आफ सोडा" कहते हैं। यह सोडे पर कारबोनिक गैस-का तरारा देनेसे बनता है।

सोडावाटर (अं० पु०) एक प्रकारका पाचक पानी जो प्रायः मामूली पानीमें कारबोनिक एसिडका संयोग करके बनाते हैं और बोतलमें हवाके जोरसे बंद करके रखते हैं, विलायती पानी, खारा पानी।

सोढ़ (सं० त्रि०) सह मर्षणे क्त (सहिवहोरोदवर्णस्य। पा ६।३।११२) इति अवर्णस्य ओत्। १ सहिष्णु, सहन शील। २ जो सहन किया गया हो।

सोढर (हिं० पु०) भोंदू, बेवकूफ।

सोढवत् (सं० त्रि०) जिसने सहन किया हो, सहने-वाला।

सोढव्य (सं० त्रि०) सह्य, सहन करनेके योग्य।

सोढा (सं० त्रि०) जिसने सहन किया हो, सहनकारी।

सोढिन् (सं० त्रि०) जिसने सहन किया, सहनकारी।

सोणक (हिं० वि०) रक्त, लाल रंगका।

सोणत (हिं० पु०) रक्त, खून, लोहू।

सोत (हिं० पु०) स्रोत या सोता देखो।

सोता (हिं० पु०) १ जलकी बराबर बहनेवाली या निक-लनेवाली छोटी धारा, झरना। २ नदीकी शाखा, नहर।

सोतिया (हिं० स्त्री०) सोता।

सोती (हिं० स्त्री०) १ स्रोत, धारा, सोता। २ स्वाती देखो। (पु०) ३ श्रोत्रिय देखो।

सोतु (सं० पु०) सोम निकालनेकी क्रिया।

सोत्क (सं० त्रि०) सोत्कण्ठ, उत्कंठायुक्त, उनमना।

सोत्कण्ठ (सं० त्रि०) उत्कण्ठायुक्त, उनमना।

सोत्कर्ष (सं० त्रि०) उत्कर्षेण सह वर्त्तमानः। उत्कर्ष-युक्त, उत्तम, दिव्य।

सोत्प्रास (सं० क्लो०) १ प्रिय वाक्य, चाटु। (पु०) २ शब्दयुक्त हास्य, सशब्द हास्य। (त्रि०) ३ अतिरञ्जित, बढ़ा कर कहा हुआ। ४ व्यङ्गयुक्त, जिसमें व्यङ्ग हो।

सोत्प्रेक्ष (सं० त्रि०) उपेक्षाके योग्य, उदासीनतापूर्वक।

सोत्सङ्ग (सं० त्रि०) शोकाकुल, दुःखित।

सोत्सर्ग समिति (सं० स्त्री०) मल मूत्र आदिका इस प्रकार यत्नपूर्वक त्याग करना जिसमें किसी व्यक्तिको कष्ट या जीवको आघात न पहुंचे।

सोत्सव (सं० त्रि०) १ उत्सवयुक्त, उत्सव सहित। २ प्रफुल्ल, प्रसन्न, खुश।

सोत्सुक (सं० त्रि०) उत्सुकतायुक्त, उत्कण्ठित।

सोत्सेक (सं० त्रि०) अभिमानी, घमंडी, ऐंठू।

सोत्सेध (सं० त्रि०) उच्च, ऊंचा।

सोथ (सं० क्ली०) शोथ देखो।

सोदकुम्भ (सं० पु०) एक प्रकारका कृत्य जो पितरोंके उद्देश्यसे किया जाता है।

सोदधिल (सं० त्रि०) लघु अल्प, थोड़ा, कम।

सोदन (हिं० पु०) कशीदेके काममें कागजका एक टुकड़ा जिस पर सूईसे छेद कर बेल बूटे बनाये होते हैं। जिसे कपड़े पर बेल बूटा बनाना होता है, उस पर इसे रख कर बारीक राख बिछा देते हैं जिससे कपड़े पर निशान बन जाता है।

सोदय (सं० त्रि०) वृद्धियुक्त, ब्याज या सूद समेत।

सोदर (सं० पु०) सह समानं उदरं यस्य, सहस्य सादेशः। १ सहोदर, सगा भाई। २ ज्योतिषके मतसे लग्नावधि तृतीय स्थान। इस स्थानसे भाई बहन आदि विषयकी गणना करनी होती है इसीसे इसको सोदरस्थान कहते हैं। इस स्थानमें शुभाशुभ ग्रहके अवस्थान या उसकी दृष्टि द्वारा सोदरका शुभाशुभ जाना जा सकता है। विक्रम, दूर-गमन आदिका भी इस स्थानमें विचार किया जाता है।

सोदरा (सं० स्त्री०) सहोदरा भगिनी, सगी बहिन।

सोदरी (सं० स्त्री०) सोदरा देखो।

सोदरीय (सं० त्रि०) सोदर देखो।

सोदर्य (सं० पु०) सोदरः। (सोदरात यः। पा ४।४।१०६) इति य। सहोदर, सगा।

सोद्योग (सं० त्रि०) उद्योगी, कर्मशील।

सोद्वेग (सं० त्रि०) विचलित, चिन्तित।

सोध (सं० पु०) १ महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जन-पदका नाम। २ प्रासाद, महल।

सोधक (सं० पु०) शोधक देखो।

सोषणी (सं० स्त्री०) झाड़ू, बुहारी, मार्जनी।

सोधन (हिं० पु०) ढूंढ, खोज, तलाश।

सोधस् (हिं० पु०) जलका किनारा।

सोन (हिं० पु०) १ एक प्रसिद्ध नदका नाम। विशेष विवरण शोण शब्दमें देखो। २ सोना देखो। ३ एक प्रकार का जलपक्षी। ४ लहसुन। (स्त्री०) ५ एक प्रकारकी बेल जो बारहों महीनेमें बराबर हरी रहती है। इसके फूल पीले रंगके होते हैं। (त्रि०) ६ अरुण, रक्त, लाल।

सोनकीकर (हिं० पु०) एक प्रकारका बहुत बड़ा पेड़। यह उत्तर बंगाल, दक्षिण भारत तथा मध्य भारतमें बहुत होता है। इसके हीरकी लकड़ी मूसली-सी, पर बहुत ही कड़ी और मजबूत होती है। यह इमारत और खेतोंके औजार बनानेके काममें आती है। इसका गोंद कीकरके गोंदके समान ही होता है और प्रायः औषध आदिमें काम आता है।

सोनकेला (हिं० पु०) सुवर्णकदली, चंपा केला। वैद्यकमें यह शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह, वात, पित्त और कफनाशक माना गया है।

सोनगढ़ी (हिं० पु०) एक प्रकारका गन्ना।

सोनगहरा (हिं० पु०) गहरा सुनहरा रंग।

सोनगेरू (हिं० पु०) सोनागेरू देखो।

सोनचम्पा (हिं० पु०) सुवर्णचम्पक, पीला चम्पा। वैद्यकके अनुसार यह चरपरा, कडुवा, कसैला, मधुर, शीतल तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाला है।

सोनचिरी (हिं० स्त्री०) नदी।

सोनजरद (फा० स्त्री०) सोनजर्द देखो।

सोनजर्द (फा० स्त्री०) स्वर्णयूथिका, पीली जूही।

सोनजूही (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी जूही जिसके फूल पीले रंगके होते हैं, पर जिसमें सफेद जूहीसे सुगन्धि अधिक होती है। इसका दूसरा नाम पीली जूही है।

सोनपेड़की (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी जो सुनहलापन लिये हरे रंगका होता है, इसकी चोंच सफेद तथा पैर लाल होते हैं।

सोनभद्र (सं० पु०) सोन देखो।

सोनवर्षा—उत्तर बिहारके भागलपुर, मुङ्गेर तथा पुर्णियां इन तीन जिलोंमें फैला हुआ एक राज्य। इसका प्रधान स्थान सोनवर्षा है, जो उत्तर भागलपुरमें तिलाबे नदीके बायें तट पर स्थित है और बी० एन० डब्ल्यू० रेलवेके "मखाना बाजार" नामक स्टेशनसे ६ मील पूरबकी ओर अवस्थित है। इस स्थानका दृश्य अत्यन्त रमणीय है। कौशिकी नदीके कुटिल कटाक्षोंके कारण यहांकी रमणीयतामें कुछ त्रुटि होने पर भी यदि इस स्थानको इस प्रान्तका शिमला कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। यह राज्य बहुत ही प्राचीन है। परमार वंशसे ही सोनवर्षा-राज-वंशकी उत्पत्ति है।

प्राचीन कालमें इस वंशमें बहुतसे अति प्रतिभाशाली, प्रसिद्ध तथा शक्तिसम्पन्न महाराज हो गये हैं, जिनकी वीरता, दया तथा सब प्रकारके कार्यों का वर्णन पुराणों अर्थात् पवित्र इतिहासोंमें सुन्दर रूपसे किया हुआ है। इन परमारवंशमें चिरस्मरणीय वीर विक्रमादित्य सबसे प्रसिद्ध थे। महाराज धारनाथ, महाराज भोजदेव, महाराज जगदेव तथा महाराज चन्द्रदेवने भी इसी वंशमें जन्मग्रहण किया। चन्द्रदेवके तीन पुत्र थे—(१) वगरदेव, (२) धुरादेव और (३) नीलदेव। नीलदेव सोनवर्षाराजवंशके आदिपुरुष थे। आप धार छोड़ कर १४०४ ई०सन्में देशके इस भाग अर्थात् उत्तर बिहारमें, यहांके आदिनिवासी भौरोंको भगा कर बस गये। उत्तर भागलपुरका सम्पूर्ण भाग तथा तिरहुतका कुछ अंश आपके राज्यमें सम्मिलित था। उस स्थानका नाम, जहां आपकी राजधानी थी, नंधवार था, जो अभी तिरहुत तथा उत्तर भागलपुरमें है।

राजा नीलदेवसे ले कर अद्यपर्य्यन्त २३ राजाओंने यहां राज्य किया है जिनके नाम ये हैं,—(१) राजा नीलदेव, (२) राजा राजपति, (३) राजा त्रिपुरपति, (४) राजा महिपाल, (५) राजा यशराज, (६) राजा पृथ्वीराज, (७) रा० पपेश, (८) राजा लखेश, (९) राजा नृसिंह, (१०) राजा रामकृष्ण, (११) राजा रणजीत, (१२) राजा किशोरी, (१३) राजा रणभीम, (१४) राजा सहलसिंह, (१५) राजा अमर सिंह, (१६) राजा अर्जुन सिंह, (१७) राजा प्रह्लादसिंह, (१८) राजा फतहसिंह, (१९) राजा

नवाब सिंह, (२०) राजा मोशाहेबसिंह, (२१) राजा वैजनाथ सिंह, (२२) एच० एच० दी महाराजा सर हरवल्लभ नारायण सिंह बहादुर के० सी० आई० ई० तथा (२३) श्रीमान् राव बहादुर रुद्रप्रताप नारायण सिंह जी (वर्त्तमान)।

उपरोक्त राजाओंमेंसे निम्नलिखित बहुत ही प्रसिद्ध हुए।

राजा किशोरसिंह—सन् १६५४-५५ ई०में तत्कालीन दिल्ली-सम्राट् औरङ्गजेबने अपने राज्यकालके तीसरे वर्षमें आपको एक फर्मान तथा सनद दी थी और आपको राजा स्वीकार किया था। आपके समयसे ही प्रगन्ना निशंकपुर-कुरहामें चण्डीस्थान नामक एक विख्यात धार्मिक-स्थान चला आता है। आप हीने इस स्थानकी नींव डाली थी और प्रस्तरों पर आपका नाम भी अङ्कित है। यहां बहुत दूर दूरके लोग चण्डी भगवतीकी पूजा करनेको आया करते हैं।

राजा अमरसिंह—प्रगन्ना उत्तरखण्डका विख्यात मिट्टीके किलाका निर्माण आप हीके समयमें हुआ था।

राजा फतहसिंह—आपहीके समयमें इस वंशको वृटिश-गवर्नमेण्टसे राजकीय सम्बन्ध हुआ था और तत्कालीन गवर्नर जेनरल लार्ड कार्नवालिसके आज्ञानुसार मिति २३ अगस्त सन् १७६३ ई०को उनकी चिट्ठी तथा नोटिस द्वारा आपके साथ आपके राज्यका दमामी बन्दोबस्त किया गया था।

राजा नवावसिंह—इस वंशके कागजातोंमें बहुत ऐसे परवाने हैं जिनसे मालूम होता है, कि जब आवश्यकता हुई है, आपने वृटिश गवर्नमेण्टको बहुत कुछ सहायता की है। इन परवानोंमेंसे कुछ मिति अप्रैल, सन् १८०१ ई० तथा कुछ अगस्त १८०४ ई०के हैं।

राजा मोसाहबसिंह—आपके समयकी बहुत सनदोंसे पता लगता है, कि आवश्यकता होने पर आपने अङ्गरेजी सरकारकी बहुत कुछ सहायता की है। इन सनदोंमेंसे एक मिति १४ सितम्बर, सन् १८२५ ई० की है।

राजा वैजनाथ नारायणसिंह—राजा मोसाहबसिंहके इहलोक त्यागनेके पश्चात् आपकी बाल्यावस्थामें आपका राज्य कोर्ट आव वार्डसकी अधीनतामें था। आपके बालिग होने पर, जब आपका राज्य कोर्ट आव वार्डसकी अधीनतासे मुक्त हो गया, तब आपने वृटिश सरकारकी बहुत मदद की थी। सन् १८८५ ई०के सन्थाल उपद्रव एवं सन् १८५७-५८ ई०के सिपाही विद्रोहके अवसरों पर आपने हाथियों, सिपाहियों आदि द्वारा सरकारकी सहायता की थी। तत्कालीन भागलपुरके कमिश्नर मिस्टर यूल का मिति ७ नवम्बर, सन् १८५७ ई०का परवाना अभी भी इस वंशके कागजातोंमें विद्यमान है। मिति ११ जनवरी, सन् १८५८ ई०को मेजर रिचार्डसनके सिपाही तथा हाथियोंकी सहायता मांग भेजने पर आप स्वयं सिपाहियों एवं हाथियोंके साथ उक्त मेजरके सम्मुख उपस्थित हुए और जो आवश्यक हुआ आपने किया। मिति २२ जनवरी १८५८ ई०को अपनी राजधानी प्रत्यावर्त्तन करने पर आप अस्वस्थ हो गये और कुछ समय बाद इस लोकसे चल बसे।

एच० एच० दी महाराजा सर हरवल्लभ नारायण सिंह बहादुर के० सी० आई० ई०—आपका जन्म मिति २७ ज्येष्ठ सन् १२५३ फसलीको हुआ था। आप बहुत ही प्रतिभाशाली राजा थे। आपके समयमें राज्यकी आयमें बहुत वृद्धि हुई थी। आपको पा कर इस प्रान्तकी जनता अपनेको धन्य मानती थी। आपने अङ्गरेजी सरकार तथा जनताकी बहुत कुछ सहायता की थी। आपने भागलपुर जिला स्कूलके बनानेमें ११०००) रुपये और उच्च कोटिकी विद्या प्रचारके हेतु पटना कालेज कमिटीको ६१५०) रुपयेका दान दिया था। इसके सिवा आप भागलपुर स्कूलमें उच्च कक्षाके साहित्य प्रचारके निमित्त स्वर्णपदकके लिये १००) रुपया वार्षिक चन्दा देते थे। सरकार आपकी राजभक्तिसे प्रसन्न हो कर दो बन्दूकें तथा दो चेनोंके साथ सोनेकी एक बहुमूल्य घड़ी आपको उपहार दी थी। सन् १८७३-७४ ई०में जब सम्पूर्ण बिहारमें दुर्भिक्ष व्याप्त था, तब अपनी प्रजाकी रक्षा करनेके अतिरिक्त, आपने दुर्भिक्ष-पीड़ितोंके सहायतार्थ गवर्मेण्टको १००००) रुपया दिया था।

आपकी राज-सेवाके समान ही आपके सार्वजनीन कार्यमें कुल १०४७६०) रु०का दान तथा १,४०) रु० वार्षिक चन्दा उल्लेखनीय है।

कई वर्षोंसे अनावृष्टिके कारण इस प्रान्तमें खाद्य सामग्रीकी कमी होने पर यहांके निवासियोंको बहुत कष्ट सहन करना पड़ा था। जनताके इस कष्टको दूर करनेके लिये आपने जो उदारता दिखाई थी, उसे यहांके निवासी चिरकाल पर्य्यन्त स्मरण रखेंगे। आपने केवल अन्न होसे सहायता नहीं की थी, प्रत्युत् आपने आर्थिक सहायता भी करनेकी उदारता दिखाई थी।

आपकी इस दुर्भिक्ष सेवासे प्रसन्न हो कर ब्रिटिश-सरकारने मिति १२ मार्च सन् १७७५ ई०की सनद द्वारा आपको राजाकी उपाधिसे अलंकृत किया था।

राव बहादुर रुद्रप्रतापनारायणसिंहजी—स्वर्गीय महाराजा बहादुरके बाद यह राज्य १५ वर्षों तक कोर्ट आव वार्ड्सकी देखभालमें रहा। सन् १९२२ ई०में कोर्ट आव वार्ड्सकी अधीनताने राज्यके मुक्त होने पर आपका राज्याभिषेक हुआ। जिस दिनसे आपने इस राज्यके सिंहासनको सुशोभित किया है, राज्य तथा प्रजा दोनोंकी दिन दुदिन उन्नति हो रही है। आप अपनी प्रजाके दुःखोंको राज-कर्मचारियोंकी कृपा पर नहीं छोड़ कर स्वयं ही सुनते हैं तथा उनके कष्टोंको दूर करनेकी यथासम्भव चेष्टा भी करते हैं। सम्पूर्ण राज्यका प्रबन्ध आप स्वतः करते हैं और राज्यके प्रत्येक कार्य पर आपकी दृष्टि रहती है। आप राज-कार्य्यमें इतने पटु तथा दक्ष हैं, कि आपके विशाल राज्यमें कहीं किसी बातकी गड़बड़ी नहीं होने पाती है। आप स्वयं विद्वान् हैं और विद्वानोंका भी आदर करते हैं। राजकार्यसे अवकाश पाने पर आपका समय पुस्तकावलोकन तथा विद्या विषयकी चर्चा हीमें व्यतीत होता है। आप विद्योन्नतिके हेतु अपने राज्य तथा अन्य अन्य स्थानोंके विद्यालयोंमें प्रायः २०००) रु० वार्षिक सहायता दिया करते हैं। आप हीकी कृपासे सोनवर्षा राजपूत स्कूल चल रहा है, जिसमें राज्यसे करीब २६०००) रु० मूल्य तथा १३००) रु० वार्षिक आयकी जमींदारी, १२ बीघेके एक विस्तृत मैदानमें ४००००) रु० लागतका राजप्रासाद तुल्य मकान तथा २००००) रु० दिया हुआ है। हाल हीमें आपने १००८) मूल्यका प्रसिद्ध ग्रन्थ दान दे कर उक्त स्कूल-पुस्तकालयको धनी बना दिया है। सर्वसाधारणके उपकारार्थ आपने अपने यहां ३०००) वार्षिक लागतका एक चिकित्सालय (Dispensary) खोल रखा है, जहां बिना मूल्यके दवा वितरण की जाती है तथा अस्पताल (Hospital)में रहनेवाले अनाथ रोगियोंके पथ्यका भी खासा प्रबन्ध है। अपने राज्यके अतिरिक्त और और चिकित्सालयोंमें भी आप प्रायः २००) वार्षिक सहायता देते हैं। सन् १९२८ ई०में भागलपुर निवासियोंके जल-कष्टको दूर करनेके लिये आपने तत्कालीन भागलपुरके कलक्टर द्वारा नकद ५०००) रु०की सहायता की है। उपरोक्त सद्गुणोंके समान ही आपकी स्मरण-शक्ति भी अत्यन्त तीव्र है। इन्हीं सब सद्गुणोंके कारण आप प्रजा-प्रिय, जनता प्रिय अथवा एक ही शब्दमें-सर्व-प्रिय हो रहे हैं। आपके एक सुपुत्र श्रीमान् महाराजकुमार दौलतसिंहजी द्वारा ईश्वरने आपके जीवन-कुसुमोद्यानको और भी आनन्दमय बना दिया है।

सोनह (सं० पु०) लहसुन।

सोनहला (हिं० पु०) भटकटैयाका कांटा। पालकी ले जाते समय जब कहीं रास्तेमें भटकटैयाके कांटे पड़ते हैं, तब उनसे बचनेके लिये आगेके कहार 'सोनहुला है' कह कर पीछेके कहारोंको सचेत करते हैं। सुनहला देखो।

सोनहा (हिं० पु०) कुत्तेकी जातिका एक छोटा जंगली जानवर जो झुंडमें रहता है और बड़ा हिंसक होता है। यह शेरको भी मार डालता है। कहते हैं, कि जहां यह रहता है, वहां शेर नहीं रहते। इसे कोगी भी कहते हैं।

सोना (हिं० पु०) १ सुन्दर उज्ज्वल पीले रंगकी एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने आदि बनते हैं। विशेष विवरण सुवर्ण शब्दमें देखो। २ अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु, बहुत मंहगी चीज। ३ अत्यन्त सुन्दर वस्तु, उज्ज्वल या कान्तिमान् पदार्थ। ४ एक प्रकारका हंस, राजहंस। ५ मझोले कदका एक वृक्ष। यह बरार और दर्जिलिङ्गकी तराइयोंमें होता है। इसमें कलियां लगती हैं जिनका मुरब्बा बनता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है और इमारत तथा खेतीके औजार बनानेके काममें आती है। चीरनेके समय लकड़ीका रंग अंदरसे गुलाबी निकलता है, पर हवा लगनेसे

यह काला हो जाता है। इसका दूसरा नाम केलवार भी है। (स्त्री०) ६ एक प्रकारकी मछली जो प्रायः एक हाथ लंबी होती और भारत तथा बरमाकी नदियोंमें पाई जाती है। (क्रि०) ७ उस अवस्थामें होना जिसमें चेतन क्रियाएं रुक जाती हैं और मन तथा मस्तिष्क दोनों विश्राम करते हैं, नींद लेना, आंख लगना। ८ शरीरके किसी अंगका सुन्न होना।

सोनागेरू (हिं० पु०) गेरूका एक भेद जो मामूली गेरूसे अधिक लाल और मुलायम होता है। वैद्यकके अनुसार यह स्निग्ध, मधुर, कसैला, नेत्रोंको हितकर, शीतल, बलकारक, व्रणशोधक, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, बवासीर और रक्तपित्तको नाश करनेवाला है।

सोनापाठा (हिं० पु०) एक प्रकारका ऊंचा वृक्ष जो भारत और लंकामें सर्वत्र होता है।

विशेष विवरण स्योनाक शब्दमें देखो।

सोनापेट (हिं० पु०) सोनेकी खान।

सोनाफूल (हिं० पु०) एक झाड़ी जो आसाम और खासिया पहाड़ियों पर होती है और जिसकी पत्तियोंसे एक प्रकारका भूरा रंग निकलता है। इसकी छालके रेशोंसे रस्सियां बनती हैं। इसे गुलाबजल भी कहते हैं।

सोनामक्खी (हिं० स्त्री०) १ एक खनिज पदार्थ जो भारतमें कई स्थानोंमें पाया जाता है। विशेष विवरण स्वर्णमाक्षिक शब्द देखो। २ एक प्रकारका रेशमका कीड़ा।

सोनामाखी (हिं० स्त्री० सोनामक्खी देखो।

सोनार (हिं० पु०) सुनार देखो।

सोनी (हिं० पु०) तुनकी जातिका एक वृक्ष।

सोनेहया (हिं० पु०) वैश्योंकी एक जाति।

सोनैया (हिं० स्त्री०) देवदाली, घघर बेल। देवदाली देखो।

सोन्माद (हिं० त्रि०) उन्मादयुक्त।

सोप (हिं० पु०) एक प्रकारकी छपी हुई चादर।

सोप (अं० पु०) १ साबुन। २ झाड़ू, बुहारी।

सोपकरण (सं० त्रि०) उपकरणविशिष्ट, उपकरणयुक्त।

सोपक्रम (सं० त्रि०) उपक्रमयुक्त, उपक्रमविशिष्ट।

सोपचय (सं० त्रि०) उपचययुक्त, वृद्धि विशिष्ट।

सोपचार (सं० त्रि०) उपचारयुक्त, उपचारविशिष्ट।

सोपत (हिं० पु०) सुभीता, सुपास, आरामका प्रबन्ध।

सोपध (सं० त्रि०) १ सद्व्यय दानादि। २ व्याकरणके अनुसार उपधाके साथ वर्त्तमान। शब्दके अन्त्यवर्ण के समीपवर्त्ती जो वर्ण है, उसका नाम उपधा है। इस उपधायुक्तको सोपध कहते हैं।

सोपपत्तिक (सं० त्रि०) उपपत्तिके साथ वर्त्तमान, उपपत्तियुक्त।

सोपपद (सं० त्रि०) उपपदयुक्त, उपपदसमासयुक्त।

सोपप्लव (सं० पु०) उपप्लवेन सह वर्त्तमानः। राहुग्रस्त चन्द्र और सूर्य।

सोपम (सं० त्रि०) उपमायुक्त।

सोपवास (सं० त्रि०) उपवासेन सह वर्त्तमानः। उपवासी।

सोपसर्ग (सं० त्रि०) उपसर्गयुक्त, उपसर्गविशिष्ट।

सोपहास (सं० त्रि०) उपहासयुक्त।

सोपाक (सं० पु०) १ श्वपाक, वह व्यक्ति जो चंडाल पुरुष और पुक्कसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ हो, चंडाल। २ कोष्ठौषधि बेचनेवाला, वनौषधि बेचनेवाला।

सोपाख्य (सं० त्रि०) उपनामयुक्त।

सोपाधि (सं० त्रि०) १ उपाधियुक्त। २ प्रतिलाभेच्छादि द्वारा दानादि, वह दान जो कोई दूसरी वस्तु पानेकी इच्छासे दिया जाय।

सोपाधिक (सं० त्रि०) उपाधियुक्त।

सोपान (सं० क्ली०) उपानमुपरिगमनं, तेन सह विद्यमानं। १ सीढ़ी, जीना। २ जैनोंके अनुसार मोक्ष प्राप्तिका उपाय।

सोपानत्क (सं० त्रि०) उपानत्केन सह वर्त्तमानः। उपानत्‌विशिष्ट, खड़ाऊं या पिनामायुक्त। शास्त्रमें लिखा है, कि सर्वदा सोपानत्क हो कर चलना चाहिये, पुष्पादि चयनस्थलमें भी उपानत् धारण किया जायगा, उसमें दोष नहीं होगा। सोपानत्क हो कर कुछ भोजन न करे।

सोपानित (सं० त्रि०) सोपानसे युक्त, सीढ़ियोंसे युक्त।

सोपालम्भ (सं० पु०) उपालम्भयुक्त, उपालम्भविशिष्ट।

सोपाश्रय (सं० त्रि०) उपाश्रययुक्त, उपाश्रयविशिष्ट।

सोपि (सं० त्रि०) १ वही। २ वह भी।

सोफना (हिं० पु०) १ एकान्त स्थान, निराली जगह। २ रोग आदिमें कुछ कमी होना।

सोफियाना (अ० वि०) १ सूफियोंका, सूफी-सम्बन्धी। २ जो देखनेमें सादा पर बहुत भला लगे। सूफी लोग प्रायः बहुत सादे, पर सुन्दर ढंगसे रहते थे, इसीसे इस शब्दका इस अर्थमें व्यवहार होने लगा।

सोफी (फा० पु०) सूफी देखो।

सोब (हिं० पु०) सोप देखो।

सोभ (सं० क्ली०) गन्धर्व-नगर।

सोभन (सं० क्ली०) शोभन देखो।

सोभर (हिं० पु०) वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्रियां प्रसव करती हैं, सौरी।

सोभरि (सं० पु०) एक वैदिक ऋषि। ऋग्वेदमें इस ऋषिका उल्लेख है। (ऋक् ८।६।२६)

सोभाञ्जन (सं० पु०) शोभाञ्जन, सहिंजन। (भरत)

सोभाकारी (हिं० वि०) जो देखनेमें अच्छा हो, सुन्दर, बढ़िया।

सोभायमान (सं० त्रि०) शोभायमान देखो।

सोम (सं० क्ली०) प्रसवैश्वर्ययोः मन्। १ काञ्जिक, काञ्जी। २ स्वर्ग, आकाश। (पु०) सौति अमृतमिति सु प्रसवे (अर्त्तिस्तुसुहुस्रिति। उण् १।१३६) इति मन्। ३ चन्द्रमा। ४ सोमवार। ५ सोमरस निकालनेका दिन। ६ कुबेर। ७ यम। ८ वायु। ६ अमृत। १० जल। ११ सोमयज्ञ। १२ एक वानरका नाम। १३ एक पर्वतका नाम। १४ एक प्रकारकी औषधि। १५ अष्ट वसुओंमेंसे एक। १६ पितरोंका एक वर्ग। १७ मांड। १८ हनुमत्के अनुसार मालकोशरागके एक पुत्र-का नाम। १६ एक बहुत बडा ऊंचा पेड। इसकी लकडी अन्दरसे बहुत मजबूत और चिकनी निकलती है। चीरनेके बाद इसका रंग लाल हो जाता है। यह प्रायः इमारतके काममें आती है। आसाममें इसके पत्तों पर मूगा रेशमके कीडे पाले जाते हैं। २० एक प्रकार-का स्त्री-रोग। २१ यज्ञ द्रव्य, यज्ञकी सामग्री। २२ सोम-लतौषधि, सोमलताका रस। वेदमें यज्ञके बाद सोम रस पीनेका विधान है। (मनु ३।२५७)

अति प्राचीन कालसे सोम आर्यजातिका अति प्रिय चला आ रहा है। यह एक लता है। ऋक्संहिताके मतसे यह लता (हिमालयके उत्तर) मौञ्जवत पर्वत पर उत्पन्न होती है—

"सोमस्येव मौजवतस्य भक्षः" (ऋक् १०।३४।१)

भारतीय जनसाधारणका विश्वास है, कि यह लता अभी नहीं मिलती, इस कारण पूर्व कालमें जिस जिस यज्ञमें सोम व्यवहृत होता था, अभी वहां पूतिकाका व्यवहार होता है। आदि पारसीक आर्यों में भी यागादिमें सोम-रसका यथेष्ट प्रचलन था। अभी बम्बईवासी अग्निपूजक पारसी लोग भी उस प्राचीन सोमके पहले पारस्यसे लाई हुई एक प्रकारकी ताजी लताका व्यवहार करते हैं। वर्त्तमान यूरोपीय वैज्ञानिक और पुरातत्त्वविद्गण a·cl pias acida या Sarcos'emma viminal। इन्हीं दो प्रकारकी लताको सोम मानते हैं।

किस प्रकार सोमका आविर्भाव हुआ, ऋक्संहिता जैसे आदि प्राचीन ग्रन्थमें इसका उल्लेख है। श्येन पक्षीने देवलोकसे इन्द्रको सोम ला दिया। (४।२६।६)

जिस पक्षिराजने इन्द्रको सोम ला दिया था, उसका नाम सुपर्ण है। (८।८६।८)

अद्रिसे* ही श्येन सोमको लाया था। (१।६३।६) और वरुण वहां रख आये थे। (५।८५।२)

फिर ६म मण्डलके एक सूक्तमें लिखा है—

जहां पर्जन्य द्वारा सोम बढ रहा था, उस स्थानसे सूर्यकी कन्या सोमको चुरा लाई थी। गन्धर्वों ने वहीं लिया था और उसीमें रस निकाला था। (६।११०।३) पर्जन्य ही सोमके पिता हैं। (६।८२।३)

किन्तु अथर्वसंहिताके मतसे विराट् पुरुषसे ही सोम उत्पन्न हुआ है। (१६।६।१६)

गन्धर्व लोग ही बड़े यत्नसे सोमकी रक्षा करते थे।

किस प्रकार देवताओंने गन्धर्वोंसे सोम लाभ किया था, ऐतरेय-ब्राह्मण (१।५।१) में इस प्रकार लिखा है—

'सोम गन्धर्वोंके मध्य राजरूपमें थे। देव और ऋषिगण उन्हें पानेके लिये कोई उपाय ढूंढने लगे।

* ऋक्संहिता—३।४८।२, ५।४३।४, ६।१८।१, ६।६२।४, ६।८५।१०, ६।६८।६ आदि मन्त्रोंमें भी सोमको 'गिरिष्ठा' अर्थात् पर्वत पर स्थित कहा है।

वाक्ने कहा, 'गन्धर्व लोग स्त्रीको कामना करते हैं, मुझे पणस्वरूप स्त्रीरूपमें उन लोगोंके पास भेज कर सोमको खरीद लो।' देवताओंने इस पर आपत्ति की और कहा, 'नहीं', विना तुम्हारे किस प्रकार हम लोग रहेंगे?' वाक्ने फिर कहा, 'उसे खरीद लो। जब कभी जरूरत होगी, मैं तुम लोगोंके पास अवश्य आ जाऊंगी।' 'ऐसा ही हो', कह कर देवगण महानग्नारूपिणी वाक्को दे कर सोमराजको खरीद लाये।

फिर शतपथ ब्राह्मण (३।२।४।१-२)में लिखा है, आकाशमें ही सोम थे, उस समय देवगण यहां नहीं रहते थे; उन लोगोंने सोमको पाना चाहा—सोमको लाना ही होगा, आनेसे उन्हींके द्वारा यज्ञ किया जावेगा। अनन्तर गायत्री सोम लानेके लिये उडिया गई। सोम ले कर लौटते समय विश्वावसु गन्धर्वने उनसे छीन लिया। देवताओंको इसकी खबर लग गई। वे जानते थे, कि गन्धर्व लोग योषित्कामा हैं। इसलिये सोमको लानेके लिये उन लोगोंने वाग्देवीको भेजा। वाक् उन लोगोंसे सोमको लानेमें समर्थ हुई थीं।

शतपथब्राह्मणमें (३।७।२।८) ऐसा भी लिखा है,—आकाशमें ही सोम थे, गायत्री पक्षीरूपमें जा कर उन्हें लाई थी।

ऋग्वेदमें सोमरस और इसके अधिष्ठात्री देवताके अनेक गुण आरोपित हुए हैं, यथा—

सोमलताके रसको 'अमृतमद' कहा गया है (१।८४।४)। यह देवताओंको अत्यन्त प्रिय है (९।८५।२, ९।१०८।१५)। यह रोगीके लिये औषधस्वरूप है (८।६१।१७)। सभी देवगण इसे पान करते हैं (९।१०९।१५)। इसके अधिष्ठात्री देवता जिस किसीको नंगे देखते, उसे ढांकते हैं और जिसे आतुर देखते, उसे शान्त करते हैं। उनकी कृपासे अन्धा देख पाता और लंगडा चल सकता है (८।६८।२)। ये मनुष्य देहके रक्षक हैं और इस देहके प्रति अङ्गमें विराजमान हैं। (८।४८।९)

ऋग्वेदमें सोममें नाना प्रकारकी दैवशक्ति और क्रिया आरोपित हुई हैं। इसको असुर (९।७३।१,९।७४।७), यज्ञकी आत्मा (९।२।१०, ९।६।८) और अमृत (१।४३।९) कहा गया है। इसे पान करके ही देव और नर अमरत्व लाभ करते हैं (१।९१।१,९।१८, ८।४८।३) ऋग्वेदके जिस स्थानमें स्वर्गसुखकी कल्पना विशेष रूपसे की गई है तथा एकान्तिक भावमें इस सुखलाभके लिये प्रार्थना की गई है, वहां सोमको ही सुखका विधाता कहा गया है। यहां सोमको कैसा ऊंचा स्थान दिया गया है, वह निम्नलिखित आराधनासे ही जाना जाता है—"हे पवित्र देव, हे अक्षय और अनन्त लोक, अनन्त ज्योति और अनन्त महिमाके आधार, मुझे वहां ले जा कर स्थापन करो। हे इन्दु (सोम) इन्द्रको ओर प्रवाहित हो। जहां राजा वैवस्वत राज्य करते हैं, जहां आकाशका अवरोधन है, जहां वे सब बड़े बड़े जल प्रवाह हैं, मुझे उसी स्थानमें अमर कर रखो।"

सोम वरुण, मित्र, इन्द्र, विष्णु, मरुत्गण और अन्यान्य देवताओंको तथा वायु स्वर्ग और पृथिवी इन सबोंको उन्मत्त रखते हैं (९।९०।५, ९।९७ ४२)। इनका रस मीठा समझ कर देव और मनुष्य दोनों ही इनकी शरण लेते हैं (८।४८।१)। इन्हें पान करके ही आदित्यगण बलवान् तथा पृथिवी महो हुई है (१०।८५।२)। सोम ही इन्द्रके बंधु, सहाय और आत्मा हैं (४।२८।१२ और २, ९।८५।३)। ये इन्द्रका तेज बढ़ाते और वृत्रके साथ संग्राममें उन्हें सहायता पहुंचाते हैं (९।६।२ और ९।६१।२२)। सोम इन्द्रके साथ एक ही रथ पर घूमते हैं (९।८७।९), किन्तु इन्द्र स्वयं भी सुवर्ण अश्व तथा वायुकी तरह द्रुतगामी हैं (९।८६।३७ और ९।८८।३)।

श्रुतिमें लिखा है "अपाम सोम अमृता अभूम" (श्रुति) हम सोम पान करेंगे, सोम पान करके अमर रहेंगे। इत्यादि, श्रुतिसे जाना जाता है, कि ऋषिगण सोमपान करके अमरत्व लाभ करते थे। यज्ञमें देवताओंके उद्देशमें सोम दान किया जाता था, पीछे यज्ञके बाद ऋषिगण सोमपान करते थे।

अन्य देवताओंके साथ सोमका साहचर्य।

१।९३।१ ऋक्में देखा जाता है, कि अग्निके साथ एकत्र सोमको पूजा की जाती है। इस स्तोत्रके पञ्चम श्लोकमें लिखा है, कि इन दोनों देवताओंने मिल कर आकाशमें ज्योतिष्कनिचय स्थापन किया है। २।४०।१ ऋक्में पूषाके साथ भी सोमका साहचर्य देखनेमें आता

है। यहां इन दोनोंकी नाना प्रकारकी शक्ति और कार्योंकी बात कही गई है। १म श्लोकमें ये दोनों ऋद्धि, स्वर्ग और पृथिवीके जनक, समस्त विश्वके रक्षक तथा अमृतकी नाभि कहे गये हैं। इन दोनोंमेंसे एक आकाशमें और दूसरे पृथिवी तथा अन्तरीक्षमें रहते हैं। एकने समग्र विश्व-भुवनकी सृष्टि की है और दूसरे उनकी देखभाल करते हैं। ६।७२ और ७।१०४ सूक्तमें सोमके साथ इन्द्रका साहचर्य वर्णित किया गया है। इन सब स्तोत्रोंमेंसे प्रथममें देखा जाता है, कि ये दोनों तमोहन्ता, निन्दुकनाशन, सूर्य और आलोकके विधाता, अवलम्बन साहचर्यमें आकाशके धारणकर्त्ता तथा माता, पृथ्वीके विस्तरकर्त्ता माने गये हैं।

७।१०४ सूक्तमें राक्षस यातुधान तथा अन्यान्य शत्रु दमनके लिये इन दोनोंसे एकत्र प्रार्थना की गई है।

सोमके साथ फिर रुद्रका भी मिलन देखनेमें आता है। ६।७८ सूक्तमें इन दोनोंकी एकत्र महिमा गाई गई है। यहां "तीक्ष्णायुध, तीक्ष्णाहेति" इन दोनों देवताओंसे द्विपद और चतुष्पद जन्तुकी भलाईके लिये रोगनाशक भेषज देने तथा पाप तापसे परित्राण करनेके लिये प्रार्थना की गई है।

वैदिक युगके शेषसे ही सोम शब्द चन्द्र शब्दका अर्थ ज्ञापक होता आ रहा है। यहां तक कि, ऋक्वेदमें कई जगह सोम शब्दका ऐसा ही प्रयोग देखनेमें आता है। इसके १०।८५।२-सूक्तमें सोम शब्द इन दोनों ही अर्थोंमें व्यवहृत हुए हैं। यथा—सोमके द्वारा ही आदित्यगण बलवान् हैं, सोमके लिये ही पृथिवी मही है तथा सोम नक्षत्रोंके मध्यस्थलमें स्थापित हुए हैं। लताको पीस कर रस पान करते समय पीनेवालेको ऐसा मालूम हुआ, मानो उन्होंने सोमपान कर लिया हो। जिसे ब्राह्मणगण सोम (चन्द्र) जानते हैं, कोई भी उसे पान नहीं करते। जो तुम्हें आश्रय देते हैं, उनके द्वारा गुप्त तथा तुम अपने रक्षकोंके द्वारा रक्षित हो। हे सोम! तुम पेषण प्रस्तरकी ध्वनि सुना करते हो, परन्तु कोई भी पार्थिव प्राणी तुम्हारा स्वाद ग्रहण नहीं कर सकता। हे देव! देवतागण जब तुम्हें पान करते हैं, तब तुम्हारी और भी वृद्धि होती है। वायु सोमकी रक्षक है, मास वर्षका ही अंश है। ऋग्वेदके इस अंशको कोई कोई प्रक्षिप्त समझते हैं।

अथर्ववेदमें निम्नलिखित अंश देखनेमें आता है (११।६।७)—जिस सोम देवताको लोग चन्द्रमा कहते हैं, वे मानो मुझे मुक्ति प्रदान करते हैं। इसके सिवा शतपथ-ब्राह्मणके १।६।४।५, ११।१।३।२, तथा ११।१।४।४में भी यह बात देखनेमें आती है। यह सोमराजा जो चन्द्रमा हैं, वे ही देवताओंके अन्न हैं। १।६।३।२४में भी इस प्रकार लिखा है,—सूर्यमें अग्निकी प्रकृति और चन्द्रमें सोमकी प्रकृति विद्यमान है। १२।१।१।२में सोमको ही चन्द्र तथा ५।३।३।१२ तथा ६।४।३।१६ में चन्द्रको ब्राह्मणोंका राजा कहा है। विष्णुपुराणमें सोमका द्वित्व इस भावमें सूचित हुआ है, "ब्रह्माने सोमको ग्रह नक्षत्र का ब्राह्मण और विरुधो तथा यज्ञ तपस्याका राजा नियुक्त किया है।"

सुश्रुतमें लिखा है, कि ब्रह्मादि सृष्टिकर्त्ताओंने पहले जरा और मृत्युका विनाश करनेके लिये सोम नामक अमृतकी सृष्टि की थी। वह असाधारण शक्तिसम्पन्न एक ही सोमस्थान, नाम, आकृति और वीर्यभेदसे चौबीस प्रकारका है। यथा—१ अंशुमान्, २ मुञ्जवान्, ३ चन्द्रमा, ४ रजतप्रभ, ५ दूर्वासोम, ६ कनीयान्, ७ श्वेताक्ष, ८ कनकप्रभ, ९ प्रतापवान्, १० तालवृन्त, ११ करवीर, १२ अंशवान्, १३ स्वयम्प्रभ, १४ महासोम, १५ गरुडाहृत, १६ गायत्र, १७ त्रैष्टुभ, १८ पांक्त, १९ जागत, २० शाङ्कर, २१ अग्निष्टोम, २२ रैवत, २३ त्रिपाद् गायत्रीयुक्त, २४ उडुपति, इन २४ प्रकारके सोमोंका एक ही नियमसे सेवन करना होता है। इनमेंसे सबोंका गुण समान है। सोमसेवनविधान—इन २४ प्रकारके सोमोंमें जो जिस किसी प्रकारका सोम पान करनेकी इच्छा करें, वे घृतादि सभी प्रकारके उपकरण तथा सभी प्रकारके कर्म कर सकते हैं, ऐसा परिचारक स्थिर कर ले। प्रशस्त स्थानमें त्रिवृत गृह अर्थात् पहले एक घर निर्माण करावें, उस घरके चारों ओर बरामदे रहें और उस बरामदेवाले घरके चारों ओर फिर दूसरे बरामदेका घर हो, इस प्रकार घर बना कर उस घरमें रह सोम सेवन करें।

सोम सेवनके पहले शरीरमें जो सब दोष रहते हैं, उनकी शुद्धिके लिये वमन और विरेचनादि क्रिया करके पेयादि क्रमसे पथ्य सेवन करें। पीछे प्रशस्त तिथि, नक्षत्र, करण और मुहूर्त्तादि देख कर पूर्वोक्त उपकरणसम्पन्न हो त्रिवृत गृहके अन्तःप्रकोष्ठमें प्रवेश करें।

ऋत्विग्गण सोमको मन्त्रपूत और अभिहुत अर्थात् अग्निमें प्रक्षिप्त कर मङ्गलाचरण पढ़ें। पीछे स्वर्णसूची द्वारा उस सोमकन्दको बांध कर स्वर्णपात्रमें उसका रस इकट्ठा करें। अनन्तर वह सोमरस आस्वादन न करके एक ही बार आध सेर पान कर लें। सोमपानके बाद आचमन करके अवशिष्ट रस जलमें फेंक दें। सोमपान कर यम अर्थात् देह और इन्द्रियका संयम, नियम अर्थात् मनः सङ्कल्पादिका संयम तथा वाक्संयत हो उस गृहमें अवस्थान करे। इस प्रकार सोमपान करके सुहृद्गणपरिवेष्टित और उपास्यमान हो घरके भीतर रहें।

सोमरस पान करके शुचि और तन्मना हो निवातस्थानमें बैठे, घूमे, परन्तु दिनमें कदापि न सोवे। सायंकालमें भोजनके बाद मङ्गलपाठ श्रवण करे और सुहृदों द्वारा उपास्यमान हो कृष्णाजिनास्तृत कुशशय्या पर सोवे। प्यास लगने पर उपयुक्त मात्रामें शीतल जल पीवे। सवेरे उठ कर मङ्गल पाठ सुने तथा मङ्गल कार्य करके गो-स्पर्श कर पूर्ववत् रहे। सोम जीर्ण होने पर वमन होगा। इस वमनके साथ शोणिताक्त सभी कृमि निकल आने पर सायंकालमें ठंढा दूध पीना उचित है। इसके बाद तीसरे दिन कृमिमिश्र अतिसार होगा। इस अतिसार द्वारा अनिष्ट भोजन आदिके दोषसे मुक्त होवें। पीछे सायंकालमें स्नान कर पूर्ववत् दुग्ध पान और क्षौमवस्त्रावृत शय्या पर सोवें। चौथे दिन समूचा शरीर फूल उठेगा और सर्वाङ्गसे कृमि निकल आयेंगे। उस दिन धूल शरीरमें लगा कर शय्या पर शयन करे। सायंकालमें पूर्ववत् दुग्ध पान करना होता है। इस नियमसे पाँचवा और छठा दिन बीतेगा। दोनों वक्त केवल दुग्धपान करना होता है। सातवें दिन सोमपायी निर्मांस हो अस्थि चर्मसार होगा। पीछे उसके शरीरसे केवल निश्वास निकलता रहेगा। सोमसेवनसे जीवनमें किसी प्रकारकी हानि नहीं होगी। इस दिन सुखोष्ण दुग्धमें शरीर परिषिक्त कर गात्रमें तिल, यष्टिमधु और चन्दनका लेप तथा पहलेकी तरह दुग्ध सेवन करे। बादमें आठवें दिनके सवेरे ही शरीरको दुग्धसे परिषिक्त और चन्दनसे अनुलिप्त कर दुग्ध पान और धूलिशय्याका परित्याग कर क्षौमवस्त्रावृत शय्या पर सोवे। अनन्तर मांस आप्यायित, त्वक् अवदलित और दन्त, नख तथा सभी रोम गिर पड़ेंगे।

इसके बाद नवें दिनसे अणुतैल लगावे और सोमवल्कके क्वाथसे परिषेक करे। दशवें दिन भी ऐसा ही करना होगा। इससे चमड़ा दृढ़ हो जायेगा। ग्यारहवां दिन भी इसी प्रकार बितावे। पीछे तेरहवें दिनसे सोमवल्कके क्वाथमें परिषेक करे। सोलह दिन तक यही नियम रहेगा। इसके बाद पन्द्रहवें या अठारहवें दिन सभी दांत निकल आयेंगे। ये सब दांत चिकने, परिष्कार और दृढ़ होंगे। उस दिनसे पचीस दिन तक पुराने चावलका भात, दूध, यवागू भोजन करे। अनन्तर दोनों शाम दूधके साथ भात खाना होता है। पीछे नाखून निकलेंगे। ये सब नाखून प्रवाल, इन्द्रगोपकीट और तरुण सूर्यकी तरह वर्णविशिष्ट, दृढ़, स्निग्ध और सुलक्षणसम्पन्न होंगे। इसके बाद त्वक् और केश निकलेंगे। ये केश नीलोत्पल, अतसीपुष्प वैदूर्यसङ्काश होंगे। एक मासके बाद शिर मुड़वाना होता है। मुण्डनके बाद खसखसकी जड़, चन्दन और कृष्ण तिलके कल्क द्वारा मस्तक प्रसिक्त और दुग्धमें स्नान करे। एक सप्ताहके बाद मस्तक पर पुनः केश निकलेंगे, ये केश भौंरे जैसे काले, चिकने और घुंघराले होंगे।

अनन्तर त्रिरात्रके बाद प्रथम गृहसे निकल कर मुहूर्त्त भर बाहर रह कर फिरसे घरके भीतर घुसे। अभ्यङ्गार्थ बलातैल, उद्वर्त्तनार्थ यवपिष्ट, परिषेकार्थ सुखोष्ण दुग्ध, उत्सादनार्थ अजकर्णका कषाय, स्नानार्थ खसकी जड़ मिला हुआ कुंएका जल तथा अनुलेपनार्थ चन्दनका व्यवहार करे। आमलक-रससंयुक्त भिन्न भिन्न प्रकारका यव और सूप भोजन, दुग्ध और यष्टिमधुके साथ

कृष्णतिल पीस कर उसे व्यञ्जनादिमें डाल भोजन करे। इस नियमसे दश दिन बिताने होंगे। पीछे अभ्यन्तरसे द्वितीय प्रकोष्ठमें आ कर उक्त नियमसे दश दिन रहे। बादमें तृतीय प्रकोष्ठमें आ कर पूर्वोक्त नियमसे दश दिन अवस्थान करे। इन दिनों कुछ कुछ आतप और वायु का सेवन कर उसी समय फिर प्रकोष्ठके मध्य घुसे। रूपवान् हुए हैं या नहीं यह ख्याल कर आइनेमें कभी मुंह न देखे। पीछे और भी दश दिन कामक्रोधादि रिपुओंको दमन कर रखे। जिन २४ प्रकारके सोमोंका विषय ऊपर कहा गया है, उन सबोंको सेवनविधि पूर्वोक्त रूप अर्थात् एक ही प्रकार है। लताप्रतान विटपादिविशिष्ट सोम ही सेवनीय है। अंशुमान सोमका रस सुवर्णपात्रमें और चन्द्रमा सोमका रस रौप्यपात्रमें संग्रह करे। ऐसा होनेसे अणिमादि आठ प्रकारके ऐश्वर्य प्राप्त होंगे तथा उससे ईशान देव अनुप्रवेश करेंगे। अन्यान्य सोमका रस ताम्रपात्र, मृत्पात्र या लोहितवर्ण विस्तृत चर्मपुटकमें संग्रह करना होगा। शूद्रको छोड़ बाकी तीनों वर्ण सोमपानके अधिकारी हैं। पूर्वोक्त विधानानुसार सोमपान कर चौथे मासमें पूर्णिमा तिथिको पवित्र स्थानमें ब्राह्मणकी अर्चना और माङ्गलिक कार्य करके उक्त त्रिपुत से निकले और यथोक्त आचरण करे। तब फिर उनके सम्बन्धमें कोई विधिनिषेध नहीं रहता।

सोमपानका गुण—मनुष्य यदि पूर्वोक्त विधानसे ओषधिराज सोमका पान करे, तो उनकी आयु दश हजार वर्ष होती है। अग्नि उन्हें नहीं जला सकती, जल, विष, अस्त्र आदिसे उनके प्राण नष्ट नहीं हो सकते। उनके शरीरमें दश हजार हाथीका बल आ जाता है, क्षीरोदतीर इन्द्रभवन या उत्तर कुरुप्रदेशमें जहां वे जानेकी इच्छा करेंगे, वहीं चले जायगे। उनको गति सर्वत्र अप्रतिहत होती है।

सोमसेवी रूपमें वे कन्दर्पकी तरह और कान्तिमें द्वितीय चन्द्रकी तरह होते हैं। वे सबोंके मनको आह्लादित करते हैं। साङ्गोपाङ्ग निखिल वेद उनके आयत्त होते हैं तथा वे अमोघ सङ्कल्प देवताके समान विचरण कर सकते हैं।

सोमका लक्षण—जिन २४ प्रकारके सोमोंके नाम दिये गये हैं, उनमें सब प्रकारके सोमोंके १५ करके पत्ते हैं, ये सब पत्ते शुक्लपक्षमें उत्पन्न होते और कृष्णपक्षमें झड़ जाते हैं। शुक्लपक्षमें प्रति दिन एक एक करके पत्ता निकलता है, इस तरह पूर्णिमा तिथिमें पन्द्रह पत्ते हो जाते हैं। फिर कृष्णपक्षमें एक एक कर झड़ने लगता है। अमावस्यामें कुछ पत्ते झड़ जाते, केवल लता रह जाती है।

अंशुमान् सोम घृतगन्धि कन्दविशिष्ट और रजतप्रभ है। मुञ्जवान् सोमका कन्द कदलीकन्दकी तरह और पत्ता लहसुनकी तरह होता है। चन्द्रमा सोम सुवर्णप्रभ है। यह सोम सर्वदा जलमें विचरण करता है। गरुडाहृत और श्वेताक्ष नामक सोम पाण्डुवर्ण और सर्पनिर्मोकसदृश होता है। यह सोम वृक्षके शिरे पर चढ़नेकी हमेशा कोशिश करता है।

सभी प्रकारके सोम मानो नाना प्रकारके विचित्र मण्डलसे चित्रित हो चमकते हैं। सभी सोमोंमें पन्द्रह करके पत्ते होते हैं तथा सबोंमें क्षीर, कन्द और लता है। किन्तु पत्ते भिन्न भिन्न रंगके होते हैं।

सोमोत्पत्ति स्थान—हिमालय, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत, देवगिरि, देवसहगिरि, पारियात्र, विन्ध्यपर्वत और देवसुन्दहृद, इन सब स्थानोंमें सोम उत्पन्न होता है। वितस्ता नदीके उत्तर जो पांच बड़े बड़े पर्वत हैं, उनके अधः और मध्यदेशमें तथा सिन्धु नदमें चन्द्रमा नामक सोम शैवालकी तरह तैरता है। सिंधुनदके पास मुञ्जवान् और अंशुमान् नामक सोम पैदा होता है। काश्मीर देशमें क्षुद्रमानस नामक जो दिव्य सरोवर है, उसमें गायत्र, त्रैष्टुभ, पाङ्क्त, जागत और शाक्कर, ये सब सोम तथा सोमप्रभ और अन्यान्य सोम भी वहां उत्पन्न होते हैं। अधार्मिक, कृतघ्न, औषधद्वेषी और ब्राह्मणद्वेषी मानवको सोम नहीं मिलता।

जो जितेन्द्रिय और धार्मिक हैं, वे सदाचारपरायण हो उक्त सभी स्थानोंमें यदि तलाश करें, तो सोम पा सकते हैं। अधार्मिक व्यक्तिके लिये सोमपानकी बात तो दूर रहे, वे सोमको देख तक भी नहीं सकते। सोम

अधार्मिक द्वारा देखे जाने पर वह अन्तर्हित हो जाता है। (सुश्रुत चिकि० २६ अ०)

चरकसंहिताके चिकित्सितस्थानके प्रथम अध्यायमें सोमलताका विवरण लिखा है। यथाविधान सोम-रसायनका सेवन करनेसे देवताओंकी तरह क्षमता और दश हजार वर्षकी परमायु होती है। पुण्यवान् व्यक्ति इसका प्रभाव सहन कर सकते हैं।

चन्द्रकी तिथिके अनुसार सोमका विकाश देख कर ऋषियोंने चन्द्र या सोमको ही सोमलताका अधिदेवता स्वीकार किया है।

तैत्तिरीय-संहिता (२।३।५।१) से जाना जाता है, कि प्रजापतिने अपनी तेंतीस कन्याको ही राजा सोमके हाथ सौंपा था। किन्तु सोम सभी पत्नियोंको समान भावमें नहीं देखते थे। वहन यदि सपत्नी हो तो सपत्नीकी ज्वाला और भी दुःसह होती है। इस कारण सोमकी अन्यान्य पत्नियाँ स्वामिगृहका त्याग कर पिता प्रजापतिके घर चली गईं। श्वशुरके कोपसे आना उन्होंने अच्छा नहीं समझा, इसलिये कुपिताओंका कोप प्रशमन और मान भञ्जनके लिये वे भी उन लोगोंके पीछे पीछे चले और उन्हें लौट आनेके लिये अनुनय विनय करने लगे। किन्तु वे सब सहजमें न लौटी। उन लोगोंने सोमसे यह अङ्गीकार करा लिया, कि सभी पत्नियोंके साथ उनका समान व्यवहार रहेगा। किन्तु घर लौट कर राजा सोम इस प्रतिश्रुतिकी रक्षा न कर सके। इस अपराधसे उन्हें क्षयरोगग्रस्त होना पड़ा।

तैत्तिरीय-ब्राह्मणमें (२।३।१०।१) सोमके सम्बन्धमें अन्य प्रकारका उपाख्यान भी देखनेमें आता है। प्रजापतिने इनकी सृष्टि करनेके बाद वेदत्रयकी सृष्टि की। सोमने इन तीनों ग्रन्थको हाथमें उठा लिया। इधर सीता सावित्री उन्हें बहुत प्यार करती थी, किंतु उनके प्रणयका स्रोत श्रद्धाके प्रति ही अविचलित भावमें प्रवाहित होता था। दुःखिता सीता प्रजापतिके पास गई और अपना दुखड़ा सुनानेके लिये उनसे अनुमति प्रार्थना की। पिताके अनुमति देने पर सीताने कहा, कि वे सोमको प्यार करती हैं, परंतु सोम उनकी उपेक्षा करके श्रद्धाके प्रति ही अधिक आसक्त हैं। अनन्तर प्रजापतिने एक सोपान प्रस्तुत कर मन्त्रोच्चारणपूर्वक उसमें आकर्षणी शक्ति प्रदान की और उसे कन्याके ललाटमें लेप दिया। इस प्रकार स्वामीका मन लुभानेकी शक्ति संग्रह कर सीता जब सोमके समीप लौटीं तब सोमने बड़े आदरसे उन्हें पास बुलाया। स्वामि-सोहागिनी स्वामीके साथ रहने और उनके हाथमें क्या है, उसे जाननेकी सीताने इच्छा प्रकट की। उस समय सोम इतने प्रेमविह्वल हो गये थे, कि पत्नीकी प्रार्थना पूरी करनेमें उन्होंने कोई कसर उठा न रखी, वरन् तीनों ही वेद उनके हाथमें दे दिये, यही कारण है, कि स्त्रियां आलिङ्गनादिके मूल्यस्वरूप किसी न किसी वस्तुके लिये अवश्य प्रार्थना करती हैं। चन्द्रमा देखो।

सोमक (सं० पु०) १ स्त्रियोंका सोम नामक रोग। (निदान) सोम स्वार्थे कन्। २ सोम देखो। ३ श्री कृष्णके एक पुत्रका नाम। (भाग० १०।६१।१४) ४ राजा सहदेवके एक पुत्रका नाम। ये राजा सहदेव्य नामसे भी प्रसिद्ध थे। (ऋक् ४।१५।९) ५ द्रुपद वंश या इस वंशका कोई राजा। ६ सोमक देशके राजा। ये सोम-शूर नामसे परिचित थे।

सोमकत्व (सं० क्ली०) सोमकका भाव। (हरिवंश)

सोमकन्या (सं० स्त्री०) सोमकी कन्या।

सोमकर (सं० पु०) चन्द्रमाकी किरण।

सोमकर्मन् (सं० क्ली०) सोम प्रस्तुत करनेकी क्रिया, सोम रस तैयार करना। (निरुक्त ५।१२)

सोमकलस (सं० पु०) सोमरसपूर्ण कलस, वह घड़ा जिसमें सोमरस भरा हो।

सोमकल्प (सं० पु०) १ सोमसदृश। २ पुराणानुसार २१वें कल्पका नाम।

सोमकवि (सं० पु०) एक प्राचीन कवि।

सोमकान्त (सं० पु०) १ चन्द्रकान्तमणि। २ एक राजाका नाम। (त्रि०) ३ चन्द्रमाके समान प्रिय। ४ जिसे चन्द्रमा प्रिय हो।

सोमकाम (सं० त्रि०) १ सोमकामी, सोमपान करनेका इच्छुक। (पु०) २ सोमपान करनेकी इच्छा।

सोमकीर्त्ति (सं० पु०) महाभारतके अनुसार धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। (भारत आदिपर्व)

सोमकुल्या (सं० स्त्री०) मार्कण्डेय पुराणके अनुसार एक नदीका नाम। (मार्कं० पु० ५७।२५)

सोमकेश्वर (सं० पु०) १ सोमक देशके अधिपति। २ वामन-पुराणके अनुसार एक राजर्षिका नाम जो भरद्वाज-के शिष्य थे।

सोमक्रतु (सं० पु०) सोमयज्ञ।

सोमक्रयण (सं० त्रि०) जिसके द्वारा सोमलता क्रय की जाय।

सोमक्षय (सं० पु०) अमावस्या जिसमें चन्द्रमाके दर्शन नहीं होते।

सोमक्षीरा (सं० स्त्री०) सोमवल्ली, सोमराजी, बकुची।

सोमक्षीरी (सं० स्त्री०) सोमवल्ली, बकुची।

सोमखड्डक (सं० पु०) नैपालके एक प्रकारके शैव साधु।

सोमखण्डा (सं० स्त्री०) सोमवल्ली, बकुची।

सोमगन्धक (सं० क्ली०) रक्तोत्पल, लाल कमल।

सोमगर्भ (सं० पु०) विष्णु।

सोमगा (सं० स्त्री०) सोमराजी, बकुची।

सोमगिरि (सं० पु०) १ महाभारतके अनुसार एक पर्वत-का नाम। २ मेरुज्योति। ३ एक आचार्यका नाम।

सोमगृहिका (सं० स्त्री०) कुष्माण्ड लता, पेठा।

सोमगोपा (सं० पु०) अग्नि। (ऋक् १०।४५।५)

सोमग्रह (सं० पु०) १ घोड़ोंका एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे कांपा करते और बहुत थोड़ा खाते हैं तथा सारा शरीर ठंढा हो जाता है। २ चन्द्रमाका ग्रहण।

सोमग्रहण (सं० क्ली०) चन्द्रग्रहण।

सोमघृत (सं० क्ली०) घृतौषधविशेष। यह घृत स्त्रियोंके गर्भसञ्चार होने पर द्वितीय माससे आरम्भ कर ६ मास तक सेवन कराना होता है। इसका सेवन करनेसे गर्भ-के सभी दोष दूर हो कर बलवीर्यादिसम्पन्न सुन्दर पुत्र जन्म लेता है। इसके सिवा सभी प्रकारके योनिरोग दूर होते हैं। पुरुषगण यदि इसका सेवन करें, तो उनके सभी प्रकारके रेतोदोष प्रशमित होते हैं।

सोमचन्द्रगणि—वृत्तरत्नाकरटीकाके रचयिता। ये एक जैनपण्डित थे।

सोमचमस (सं० पु०) सोमपान करनेका पात्र।

सोमज (सं० क्ली०) सोमवत् जायते इति जन-ड। १ दुग्ध, दूध। (हेम) २ बुध ग्रह। (त्रि०) ३ चन्द्रमासे उत्पन्न, सोमजात।

सोमजा (सं० त्रि०) सोमसे उत्पन्न।

सोमजाजी (हिं० पु०) सोमयाजी देखो।

सोमजामि (सं० त्रि०) सोमबन्धु। (ऋक् १०।९३।१०।

सोमजुष्ट (सं० त्रि०) सोमदेव कर्तृक सेवित।

सोमतिलकसूरि—एक जैनसूरि। इन्होंने लघुपण्डितकृत त्रिपुरास्तोत्रटीका तथा लघुस्तव और उसकी टीका लिखी।

सोमतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष, प्रभासतीर्थ। भग वान् सोमने यहां तपस्या की थी, इसीसे इसका नाम सोमतीर्थ हुआ है। वराहपुराणके सौकरव तीर्थमाहा-त्म्य नामाध्यायमें इस तीर्थका विशेष विवरण आया है। महाभारतमें लिखा है, कि सोमतीर्थमें स्नान करनेसे राजसूययज्ञका फल लाभ होता है। यह स्थान वर्त्तमान कनाड़ा उपकूलसे कुछ दूर या पिण्डपुरी नामक स्थान-के पास अवस्थित है।

सोमदत्त—१ कौरव पक्षीय एक वीर योद्धा। भारत युद्ध-के १४वें दिन ये सात्यकिके हाथ मारे गये। देवकराज-की कन्या देवकीके स्वयम्वरके समय जब यदुवंशी वीर शिनिने वसुदेवके ब्याहके निमित्त देवकीको हरण किया था, उस समय सोमदत्तने उनका विरोध किया था। सबके सामने शिनिने सोमदत्तको लातसे मारा था। दोनोंमें खूब युद्ध हुआ। शिनि देवकीको ले कर चले गये। इनके पुत्रका नाम भूरिश्रवा था। २ एक धर्मशास्त्रके रचयिता। हेमाद्रिरचित परिशेषखण्डमें इसका उल्लेख है।

सोमदत्ति (सं० पु०) सोमदत्तका पुत्र। (भारत)

सोमदर्शन (सं० पु०) १ यक्षभेद। २ सोमदर्शन।

सोमदा (सं० स्त्री०) १ गन्धशटी, कपूर कचरी। २ एक गन्धर्वीका नाम।

सोमदिन (सं० पु०) सोमवार, चन्द्रवार।

सोमदेव (सं० पु०) १ सोम देवता। २ चन्द्रमा देवता। ३ कथासरित् सागरके रचयिताका नाम जो काश्मीरमें ११ वीं शताब्दीमें हुए थे।

सोमदैवत (सं० त्रि०) १ सोमदेवतायुक्त। (पु०) २ मृगशिरा नक्षत्र। इस नक्षत्रके अधिष्ठाता देव सोम हैं।

सोमदैवत्य (सं० त्रि०) सोमदेवतायुक्त।

सोमदैवत (सं० पु०) मृगशिरा नक्षत्र।

सोमधान (सं० त्रि०) सोमयुक्त, जिसमें सोम हो।

सोमधारा (सं० स्त्री०) सोमस्य धारेव। १ आकाश। (त्रिका०) २ स्वर्ग।

सोमधेय (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपद।

सोमन् (सं० पु०) षु प्रेरणे (नामन्सीमन्व्योमनिति। उण् ४।१५०) इति मनिन्। १ यज्ञकर्त्ता। २ चन्द्रमा।

सोमन (हिं० पु०) एक प्रकारका अस्त्र।

सोमनन्दी (सं० पु०) १ महादेवके एक अनुचरका नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरणका नाम।

सोमनन्दीश्वर (सं०पु०) शिवजीके एक लिङ्गका नाम।

सोमनाथ—बम्बई प्रदेशके अधीन काठियावाडके अन्तर्गत जूनागढ़ राज्यका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २०° ५३´ ३´´ तथा देशा ७०° २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ८ हजारसे ऊपर है। इसका नाम देवपत्तन, प्रभासपत्तन और वेरवलपत्तन भी है। काठियावाड़ उपद्वीपके दक्षिणी उपसागरकी उपकूलरेखाके पश्चिम प्रान्तमें वेरावल बन्दर है। इस बन्दरके नामानुसार ही शायद इस स्थानका नाम हुआ है। वेरावलके किनारे इन दोनों शहरोंसे प्रायः समान दूरी पर जो एक विशाल और उच्च मन्दिर देखनेमें आता है, वही इतिहास प्रसिद्ध सोमनाथका मन्दिर है। इस मन्दिरमें भगवान शिव (सोमनाथ)की लिङ्गमूर्त्ति प्रतिष्ठित है। इसकी बगलमें थोड़े ही गजके फासले पर भाटकुण्ड नामक एक जलाशय है। प्रवाद है, कि श्रीकृष्णने इसीके जलमें अपना शरीर त्याग किया था। गिरनार नामक पवित्र शैल-मन्दिरसे कुछ दूर पड़ता है। सोमनाथकी प्रतिधूलिकणाके साथ इसके चारों ओरके स्थानोंमें ही श्रीकृष्णकी स्मृति जगजगा रही है, परन्तु इनमेंसे सोमनाथ शहरके पूर्ववर्त्ती एक स्थानको ही लोक विशेष श्रद्धा और भक्तिकी दृष्टिसे देखते हैं। तीन सुन्दर जलधाराका जो सङ्गम हुआ है, उसके पासवाले स्थानको लक्ष्य कर लोग कहा करते हैं, कि कृष्णकी देह इसी स्थानमें भस्मीभूत हुई थी।

सोमनाथ आनेसे लोगोंका मन बड़ा ही निरानन्द और अप्रफुल्ल हो जाता है। यह मानों केवल समाधिक्षेत्र और ध्वंसावशेषमें परिणत हो गया है। पश्चिमके समतल मैदानमें मुसलमानोंकी कब्र भरी पड़ी है और शहरका पूर्वी भाग हिन्दूके मन्दिर और स्मृतिचिह्नसे परिपूर्ण है। समृद्धिके समय इसे सुरक्षित करनेके लिये दक्षिण मैदानमें एक दुर्ग बनवाया गया था। वह दुर्ग प्रायः समुद्रके ऊपर ही प्रतिष्ठित था। ज्वारके समय इसका निम्न भाग समुद्रके जलमें डूब जाया करता था।

सोमनाथ शिवके मन्दिरके लिये ही यह स्थान बहुत कुछ प्रसिद्ध है। हिन्दुओंके निकट यह एक परम पवित्र तीर्थस्थान समझा जाता है। मन्दिरके सम्बन्धमें विशेष विवरण महमूद शब्दमें देखो। यह मन्दिर कब और किसने बनवाया था, वह आज भी ठीक ठीक मालूम नहीं। नगर प्रतिष्ठाताका नाम और प्रतिष्ठाका समय भी निश्चितरूपसे मालूम नहीं है। ८वीं सदीके पहले इस प्रान्तकी कैसी अवस्था थी, उसका आज तक भी पता नहीं चला है। ८वींसे ११वीं सदीमें महमूदके आक्रमणके पहले तक भी इस प्रदेशका इतिहास अंधकारसे ढका हुआ है। केवल इतना ही सुननेमें आता है, कि ८वीं सदीमें काठियावाडके इस अञ्चलमें चावड नामक एक राजपूत-राजवंश राज्य करते थे। ये लोग चालुक्य या सोलांकि राजपूतोंके अधीन थे। पीछे महमूदने इस पर चढ़ाई की और इसे तहस नहस कर काफी धनरत्न ले गया। महमूद देखो। मूर्त्ति भी बहुमूल्य पत्थरकी बनी हुई थी। उसे ढाहढूह कर अधिकांश पत्थरोंसे गजनीकी जामी मसजिद बनाई गई। गजनी लौटते समय वह देवशर्मा नामक एक ब्राह्मणको इस देशका शासनकर्त्ता बना गया। चौलुक्यपति दुर्लभराजने उसे भगा कर सोमनाथका उद्धार किया। पीछे राठोरवंशोद्भव भजन वंशधरोंने सोमनाथ पर दखल जमाया। इन लोगोंके समय सोमनाथका नष्टगौरव बहुत कुछ उद्धार किया

गया था। किंतु १३०० ई०मे पुनः आलग खाँ शिकाँने सोमनाथ दखल कर मुसलमानी राज्यकी प्रतिष्ठा की। इस समयसे यहां मुसलमानी आधिपत्य बहुत जबर्दस्त हो गया। मुगलसाम्राज्य ध्वंस होनेके बाद विभिन्न समयमें माग्रोलके शेखोंने तथा पोरबन्दरके राणाओंने सोमनाथका शासन किया। अंतमें यह जूनागढ़के नवाबके हाथ लगा। तभीसे यह उन्हींके वंशधरोंके शासनाधीन चला आ रहा है।

सोमनाथरस (सं० पु०) प्रमेहरोगाधिकारकी एक रसौषध। इस औषधका सेवन करनेसे सब प्रकारका सोमरोग तथा सुदारुण बीस प्रकारके प्रमेह और मूत्राघातका शीघ्र निवारण होता है। प्रमेह और सोमाधिकारमें यह औषध सर्वोत्कृष्ट तथा प्रत्यक्ष फलप्रद है।

सोमनेत्र (सं० त्रि०) १ सोमके समान नेत्रयुक्त। २ सोम जिसका नेता या रक्षक हो।

सोमप (सं० पु०) सोमं पिबतीति पा-क। १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ विश्वेदेवामेंसे एकका नाम। ३ स्कन्दके एक परिषद्का नाम। ४ एक ऋषिवंशका नाम। ५ वृहत्संहिताके अनुसार एक जनपदका नाम। ६ हरिवंशके अनुसार एक असुरका नाम। ७ पितरोंकी एक श्रेणी।

सोमपति (सं० पु०) सोमके स्वामी इन्द्रका एक नाम।

सोमपत्र (सं० पु०) कुश जातिकी एक घास, डाभ, दर्भ।

सोमपत्नी (सं० स्त्री०) सोमस्य पत्नी। चन्द्रमाकी पत्नी।

सोमपद (सं० पु०) १ एक तीर्थका नाम जिसका उल्लेख महाभारतमें है। (भारत वनप०) २ हरिवंशके अनुसार एक लोकका नाम।

सोमपरिवाध् (सं० त्रि०) सोमके चारों ओर बाधक अर्थात् यागरहित। (ऋक् १।४३।८)

सोमपर्व्वन् (सं० क्ली०) सोम उत्सवका काल, सोमपान करनेका उत्सव या पुण्य काल। (ऋक् १।६।१)

सोमपा (सं० पु०) १ सोमयज्ञ करनेवाला। २ पितरोंकी एक श्रेणी। ३ ब्राह्मण। (त्रि०) ४ जिसने यज्ञमें सोमपान किया हो। ५ सोमपायी, सोमपान करनेवाला।

सोमपात्र (सं० क्ली०) १ सोम रखनेका बरतन। २ सोम पीनेका बरतन।

सोमपान (सं० क्ली०) सोम पीनेकी क्रिया, सोम पीना।

सोमपायिन् (सं० त्रि०) सोम पीनेवाला, सोमपान करनेवाला।

सोमपाल (सं० पु०) १ सोमका रक्षक। (ऐत० ब्रा०) २ गन्धर्व जो सोमकी रक्षा करनेवाले माने गये हैं।

सोमपावन (सं० त्रि०) सोमपान करनेवाला, जो सोमपान करता हो। (ऋक् १।३०।११)

सोमपिती (हिं० स्त्री०) रगड़ा हुआ चन्दन रखनेका बरतन।

सोमपित्सरु (सं० त्रि०) यजमानके निमित्त भूमिखननकारी या यजमानका पापनाशकारी या सोमपानपाल।

सोमपीति (सं० स्त्री०) १ सोमपान। (ऋक् १।२।३) २ सोमयज्ञ।

सोमपीतिन् (सं० पु०) सोमपान करनेवाला, सोम पीनेवाला।

सोमपीथ (सं० पु०) सोमस्य पीथः पानं। सोमपान, सोम पीनेकी क्रिया। (ऋक् १।५१।७)

सोमपीथिन् (सं० त्रि०) सोमप, सोमपान करनेवाला, सोमपायी।

सोमपुत्र (सं० पु०) सोमस्य पुत्रः। सोम या चन्द्रमाके पुत्र बुध।

सोमपुरुष (सं० पु०) १ सोमका रक्षक। २ सोमका अनुचर या दास।

सोमपुरोगव (सं० त्रि०) जिसके अग्रगामी सोम हो।

सोमपृष्ठ (सं० पु०) वह पर्वत जिस पर सोम हो।

सोमपेय (सं० क्ली०) १ सोमपान, सोम पीनेकी क्रिया। (ऋक् १।१२०।११) २ एक यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था।

सोमप्रदोष (सं० पु०) सोमवारको किया जानेवाला एक व्रत। इसमें दिन भर उपवास करके सन्ध्याको शिवजीकी पूजा कर भोजन किया जाता है। स्कन्दपुराणमें लिखा है, कि यह व्रत मनस्कामना पूर्ण करनेवाला है। आज कल लोग प्रायः श्रावणके सोमवारोंको ही यह व्रत करते हैं।

सोमप्रभ (सं० त्रि०) सोम या चन्द्रमाके समान प्रभावाला, कान्तिवान्।

सोमप्रवाक (सं० पु०) सोम यज्ञमें घोषणा करनेवाला।
सोमबन्धु (सं० पु०) १ कुमुद। २ सूर्य। ३ बुध।
सोमबेल (हिं० स्त्री०) गुलचांदनी या चांदनीका पौधा।
सोमभक्ष (हिं० पु०) सोमपान, सोमका पीना।
सोमभवा (सं० स्त्री०) नर्मदा नदीका एक नाम।
सोमभू (सं० पु०) १ जिनराजभेद। (हेम) २ बुधग्रह। (त्रि०) ३ सोमसे उत्पन्न। ४ चन्द्रवंशीय।
सोमभृत (सं० त्रि०) सोमानयनकर्त्ता, सोम लानेवाला। यजुर्वेदमें लिखा है, कि श्येन नामक देव सोमराजके अनुचर हो कर स्वर्गसे सोम लाये थे।
सोमभोजन (सं० क्ली०) १ सोमपान। (पु०) २ गरुडके एक पुत्रका नाम।
सोममख (सं० पु०) सोमयज्ञ।
सोममद (सं० पु०) १ सोमका नशा। २ सोमका रस जिसके पीनेसे नशा होता है।
सोममय (सं० त्रि०) सोमस्वरूप, सोमके समान।
सोमयज्ञ (सं० पु०) सोमात्मको यज्ञः। सोमयाग देखो।
सोमयशस् (सं० पु०) एक राजाका नाम।
सोमयाग (सं० पु०) सोमलतारसपानाङ्गक त्रैवार्षिक यज्ञविशेष। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि यज्ञ करनेमें तीन वर्ष लगता है। प्रथम वर्षमें सोमलतारसपान, द्वितीय वर्षमें फल तथा तृतीय वर्षमें जल पी कर रहना होता है। यह यज्ञ पापनाशक है। जिससे ये तीन वर्ष स्वच्छन्दतासे बीत सकें, ऐसा धन जिसके पास है, वे ही इस यज्ञके अधिकारी हैं। यह यज्ञ सभी नहीं कर सकते, क्योंकि यह यज्ञ बहुदक्षिण और बहु अन्नसाध्य है। (६०.५४-५८)
सोमयाजिन् (सं० पु०) वह जो सोमयाग करता हो, सोमयाग करनेवाला।
सोमयोग (सं० पु०) सोममिश्रण, सोमसंयोग।
सोमयोनि (सं० क्ली०) १ पीत चन्दन, हरिचन्दन। २ देवता। ३ ब्राह्मण।
सोमरक्ष (सं० त्रि०) सोमका रक्षक।
सोमरक्षि (सं० त्रि०) सोमका रक्षक।
सोमरभस (सं० त्रि०) यज्ञीय सोमपानके लिये अतिशय वेग। (ऋक् १०।७६।५)
सोमरस (सं० पु०) सोमलताका रस।
सोमराग (सं० पु०) एक प्रकारका राग।
सोमराज (सं० पु०) सोमश्चासौ राजा च। चन्द्रमा।
सोमराजन् (सं० पु०) १ सोम नामक राजा। (त्रि०) २ सोमस्वामियुक्त। (ऋक् १०।९७।१८)
सोमराजसुत (सं० पु०) चन्द्रमाका पुत्र, बुध।
सोमराजिका (सं० स्त्री०) सोमराजी।
सोमराजिन् (सं० पु०) औषधविशेष। बकुची। (Vernonia anthelmintica) इसे महाराष्ट्रमें बावची, कलिङ्गमें बाउचिगे, तैलङ्गमें तिप्पतीगे, नेलवयलिये और बम्बईमें कालीजोरा कहते हैं। इसका गुण—वात, कफ, कुष्ठ और त्वग्दोषनाशक माना गया है। (राजवल्लभ) भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—मधुर, तिक्त, कटुपाक, रसायन, विष्टम्भनाशक, शीतल, रुचिकर, श्लेष्म, अस्र और पित्तनाशक, रूक्ष, हृद्य, श्वास, कुष्ठ, मेह, ज्वर और कृमिनाशक। इसके फलका गुण—पित्तवर्द्धक, कुष्ठ, कफ और वायुनाशक, कटु, केशवर्द्धक, कृमि, श्वास, कास, शोथ, आम और पाण्डुनाशक। (भावप्र०)
सोमराजी (सं० स्त्री०) १ बकुची। (भारत) २ एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें छः वर्ण होते हैं। यह दो चरणका वृत्त है। इसे शङ्खनारी भी कहते हैं। (छन्दोम०) ३ चन्द्रश्रेणी।
सोमराजीतैल (सं० क्ली०) कुष्ठादि चर्मरोगोंकी एक तैलौषध। यह तेल मालिश करनेसे अठारह प्रकारके कुष्ठ, वातरक्त, नीलिका, पिडका, व्यङ्ग आदि चर्मरोग जल्द आराम होते हैं।
सोमराज्य (सं० क्ली०) चन्द्रलोक।
सोमरात (सं० पु०) मुनिविशेष।
सोमराष्ट्र (सं० क्ली०) जनपदविशेष।
सोमरोग (सं० पु०) स्त्रीरोगविशेष, स्त्रियोंका बहुमूत्ररोग। वैद्यक शास्त्रमें इसका विवरण लिखा है। अतिरिक्त पुरुषसंसर्ग, शोक, परिश्रम, अभिचार और गरदोष, इन सब कारणोंसे स्त्रियोंका सब शरीरगत जलीय धातु आलोडित और स्वस्थानच्युत हो कर मूत्रस्रोत द्वारा स्रावित होता है। इस सोमरोगमें मूत्रमार्ग द्वारा स्वच्छ, निर्मल, वेदनाहीन, निर्गन्ध अथच शीतल श्वेत वर्णका

पेशाव उतरता है। इसमें रोगिणी असहनशीला और बलहीना होती है। वह वेगको रोक नहीं सकती तथा मस्तककी शिथिलता, मुख और तालुकी शुष्कता, मूर्च्छा, जृम्भा, प्रलाप और चर्मकी अत्यन्त रुक्षता होती है, आहार्य या पानीय किसी भी वस्तुसे उसे तृप्ति नहीं होती। शरीर धारणका प्रधान अवलम्बन सोम नामक जो धातु देहमें रहता है, उसका क्षय होता है, इसीसे इसको सोमरोग कहते हैं।

सोमरोगका साधारण नाम बहुमूत्ररोग है। पुरुष या स्त्री दोनोंको ही यह रोग होता है। बहुमूत्र देखो।

यह रोग होनेसे सावधान हो कर सुविज्ञ चिकित्सकके उपदेशानुसार चिकित्सा करे। यह रोग प्रायः निर्दोष हो कर नहीं छूटता, कुछ दिनों तक बना रहता है। इस रोगमें कुपथ्य करनेसे रोगी शीघ्र ही मृत्यु-मुखमें पतित होता है।

सोमर्षि (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सोमल (हिं० पु०) संखियाका एक भेद जिसे सफेद संखल भी कहते हैं।

सोमलता (सं० स्त्री०) सोम एव लता। १ स्वनामख्यात लता, दिव्यौषधिविशेष। गुण—कटु, शीतल, मधुर, पित्त और दाहनाशक, पवित्र, यज्ञसाधन और रसायन। (भावप्र० राजनि०) सोम शब्द देखो। २ गुडूची, गिलोय। ३ ब्राह्मीक्षुप। (राजनि०)

सोमलतिका (सं० स्त्री०) १ सोमलता। २ गुडूची, गिलोय। (राजनि०)

सोमलदेवी (सं० स्त्री०) राजतरङ्गिणीके अनुसार एक राजपुत्रीका नाम।

सोमलोक (सं० पु०) चन्द्रलोक।

सोमवंश (सं० पु०) १ राजा युधिष्ठिर। (धरणि) २ चन्द्रवंश। चन्द्रसे जिस वंशकी उत्पत्ति हुई है, उसे सोमवंश कहते हैं। प्रायः सब पुराणोंमें ही चन्द्र और सूर्यवंशका विवरण लिखा हुआ है। चन्द्रवंश देखो।

सोमवंशीय (सं० त्रि०) १ चन्द्रवंशमें उत्पन्न। २ चन्द्रवंश-सम्बन्धी, चन्द्रवंशका।

सोमवंश्य (सं० त्रि०) सोमवंश-यत्। सोमवंशीय देखो।

सोमवत् (सं० त्रि०) १ सोमयुक्त, चन्द्रयुक्त। २ चन्द्रमाके समान।

सोमवती (सं० स्त्री०) सोमवती अमावस्या देखो।

सोमवती अमावस्या (सं० स्त्री०) सोमवारको पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य-तिथि मानी जाती है। प्रायः लोग इस दिन गङ्गास्नान और दान पुण्य करते हैं।

सोमवती तीर्थ (सं० क्ली०) एक प्राचीन तीर्थका नाम।

सोमवर्चस् (सं० त्रि०) १ सोमके समान तेजयुक्त। (पु०) २ विश्वेदेवाओंमेंसे एकका नाम। ३ एक गन्धर्वका नाम।

सोमवल्क (सं० पु०) १ श्वेत खदिर, सफेद खैर। २ कट्फल, कायफल। (मेदिनी) ३ करञ्ज। ४ रीठाकरञ्ज। ५ वर्णरक, बबूर।

सोमवल्लरि (सं० स्त्री०) सोमलता। यह पांच प्रकारकी है, ब्राह्मी, ब्रह्मी, वयःस्था, मत्स्याक्षी और सोमवल्लरी। अमरटीकामें भरतने इन पांच शब्दोंकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है—ब्रह्मा और ब्राह्मणका अतिशय प्रिय है, इसीसे इसका नाम ब्राह्मी, मछलीकी आंखकी तरह इसके फूल होते, इससे मत्स्याक्षी, इसका सेवन करनेसे चिरकाल यौवन रहता है, इससे वयःस्था, सोमयागके लिये इसकी लता ली जाती है, इससे इसका नाम सोमवल्लरी हुआ है।

'ब्राह्मी वयःस्था मत्स्याक्षी ब्रह्मी च सोमवल्लरी।' (वाचस्पति)

सोमवल्लिका (सं० स्त्री०) १ सोमराजी, बकुची। २ सोमलता।

सोमवल्ली (सं० स्त्री०) १ गुडूची, गिलोय। २ सोमलता। ३ सोमराजी, बकुची। ४ पाताल-गरुड़ी, छिरेंटी। ५ ब्राह्मी। ६ सुदर्शना। ७ श्वेत खदिर, सफेद खैर। ८ गजपिप्पली, गजपीपल। ९ वनकार्पास, वनकपास। १० लता करञ्ज, कठकरेजा।

सोमवामिन् (सं० त्रि०) १ सोम वमन करनेवाला। (पु०) २ वह ऋत्विज् जो खूब सोमपान करता हो।

सोमवायव्य (सं० पु०) एक ऋषि-वंशका नाम।

सोमवार (सं० पु०) सोमस्य वारः। सोमका भोग्य दिन। इस वारका अधिपति सोम है, इसीसे यह वार शुभवार है, इस वारमें सभी शुभ कर्म किये जा सकते हैं। केवल विद्यारम्भके लिये यह वार शुभ नहीं है,

क्योंकि ज्योतिषमें लिखा है, कि बुध और सोमवारको विद्यारम्भ करनेसे विद्याहीन होता है।

विद्यारम्भके सिवा सोमवार और सब कार्योंमें शुभ है। किन्तु यात्रास्थलमें इस वारको पूर्वकी ओर नहीं जाना चाहिये। सोमवारको पूर्वदिशामें दिक्शूल पड़ता है। सोमवारका द्वितीय और सप्तम यामार्द्ध वारवेला तथा रात्रिकालका चतुर्थ यामार्द्ध कालरात्रि है। इस समय यात्रा करनेसे मरण, विवाह करनेसे वैधव्य, व्रत करनेसे ब्रह्मवध इत्यादि अनिष्ट फल होते हैं।

सोमवारको अमावस्या पड़नेसे वह तिथि अक्षयासे भी श्रेष्ठ होती है। सोमवारको चन्द्रग्रहण और रविवारको यदि सूर्यग्रहण हो, तो चूड़ामणियोग होता है। यह विशेष शुभयोग है। चूडामणि शब्द देखो। रवि और सोमवारको पूर्णा तिथि अर्थात् पञ्चमी, दशमी, अमावस्या या पूर्णिमा तिथि होनेसे तिथ्यमृतयोग होता है।

शुक्र और सोमवारको यदि भद्रा अर्थात् द्वितीया, द्वादशी और सप्तमी तिथि हो, तो उसे पापयोग कहते हैं। (ज्योतिःसार०)

सोमवारको एकादशी तिथि होनेसे दिनदग्धा तथा कृत्तिका नक्षत्र और एकादशी तिथि होनेसे मासदग्धा होती है। यदि किसीका सोमवारको जन्म हो, तो वह देखनेमें सुन्दर, मेधावी, श्लेष्माधिकप्रकृति, स्त्रीस्वभाव और विनयी होता है। (ज्योतिष)

सोमवारव्रत (सं० क्ली०) सोमवार कर्त्तव्य व्रत। सोमवारमें कर्त्तव्य व्रतविशेष। इसे बोलचालमें 'सोमवार करना' कहते हैं। स्कन्दपुराणमें इस व्रतका विशेष विधान लिखा है। सोमवारको उपवास रह कर प्रदोष शिवपूजा करनी होती है। जो इस प्रकार जो उक्त व्रतानुष्ठान करते हैं, उनके लिये इस लोकमें दुर्लभ कुछ भी नहीं है। इस व्रतके प्रभावसे सवोंका सभी अभिलाष सिद्ध होता है।

सोमवारी (हिं० स्त्री०) १ सोमवती अमावस्या देखो। (वि०) २ सोमवार-सम्बन्धी, सोमवारका।

सोमवासर (सं० पु०) सोमस्य वासरः। सोमवार, चन्द्रवार।

सोमविक्रयिन् (सं० पु०) सोमलतारसविक्रयकर्त्ता सोमरस बेचनेवाला। मनुमें सोमरस बेचनेवाला दानके अयोग्य कहा गया है। उसे दान देनेसे दाता दूसरे जन्ममें विष्ठा खानेवाली योनिमें उत्पन्न होता है।

सोमवीथी (सं० स्त्री०) चंद्रमण्डल।

सोमवृक्ष (सं० पु०) १ कटफल, कायफल। २ श्वेत खदिर, सफेद खैर।

सोमवृद्ध (सं० त्रि०) जो खूब सोमपान करता हो, जिसकी उमर सोम पान करनेमें ही बीती हो।

सोमवेश (सं० पु०) एक प्राचीन मुनिका नाम।

सोमव्रत (सं० क्ली०) १ सोमवारव्रत। २ सामभेद।

सोमशकला (सं० स्त्री०) १ एक प्रकारकी ककड़ी। २ चंद्रख-विशिष्टा।

सोमशम्भु (सं० पु०) कर्मक्रियाकाण्ड नामक शैवधर्मशास्त्रके प्रणेता। ये ईशानशिष्य सदाशिवके शिष्य थे। १०७३ ई०में इन्होंने उक्त ग्रंथ लिखा। सर्वदर्शनसंग्रहके शैवदर्शनमें इनका उल्लेख है।

सोमशर्मन् (स० पु०) शालिशुकका पुत्र। (विष्णुपु०)

सोमशित (सं० त्रि०) सोम द्वारा तीक्ष्णीभूत।

सोमशुष्म (सं० पु०) एक वैदिक ऋषिका नाम।

सोमश्रवस् (सं० पु०) श्रुतश्रवाका पुत्र। (भारत)

सोमश्रेष्ठ (सं० त्रि०) सोमेषु श्रेष्ठः। श्रेष्ठ सोम।

सोमसंज्ञ (सं० पु०) कर्पूर, कपूर।

सोमसंस्था (सं० स्त्री०) सोमयज्ञका एक प्रारम्भिक कृत्य।

सोमसखि (सं० त्रि०) जिसके सखा सोम हों। (शुक्लयजु० ४।२०) तत्पुरुष समासमें सखि शब्दके उत्तर 'टच्' समासान्त हो कर इकारका लोप होता है।

सोमसट्टक (सं० पु०) सट्टकविशेष। प्रस्तुत-प्रणाली—दही मथ कर उसमें सोंठ, मिर्च, पीपल और चीताका चूर्ण डाल कर एक बरतनमें अच्छी तरह घोंटे, पीछे उसे साफ कपड़ेसे छान कर उसमें अनारका रस डाल दे। यह अतिशय बलकर है। (द्रव्यगु०)

सोमसद् (सं० पु०) मनुके अनुसार विराट्के पुत्र और साध्यगणके पितर।

सोमसम्भवा (सं० स्त्री०) गंधपलाशी, कपूर कचरी।

सोमसलिल (सं० क्ली०) सोमका जल, सोमरस।

सोमसव (सं० पु०) यज्ञमें किया जानेवाला एक प्रकार-का कृत्य जिसमें सोमका रस निकाला जाता था।

सोमसामन् (सं० क्ली०) सामभेद।

सोमसार (सं० पु०) १ श्वेत खादिर, सफेद खैर। २ बबूर, कीकर, बबूल।

सोमसिद्धांत (सं० पु०) १ बुद्धभेद। २ ज्योतिषोक्त सिद्धांत ग्रंथविशेष। इस सिद्धात ग्रंथमें ज्योतिषोक्त गणित और फलित आदि प्रायः सभी आवश्यकीय विषय हैं। ३ आगमशास्त्रविशेष, वह शास्त्र जिससे भविष्यकी बातें जानी जाती हैं।

सोमसिद्धान्तिन् (सं० पु०) सोमसिद्धान्तवेत्ता।

सोमसिन्धु (सं० त्रि०) विष्णु।

सोमसुत् (सं० त्रि०) सोम सुञ् मन्थने (सोमे सुञः। पा ३।२।९०) इति क्विप्। १ यज्ञकालमें सोमरस चढ़ाने-वाला ऋत्विज्। २ सोमरस निकालनेवाला।

सोमसुत (सं० पु०) चन्द्रमाके पुत्र, बुध।

सोमसुता (सं० स्त्री०) नर्मदा नदी।

सोमसुति (सं० स्त्री०) सोमका रस निकालनेकी क्रिया। (ऋक् ७।६३।६)

सोमसुत्या (सं० स्त्री०) सोमसुति देखो।

सोमसुत्वन् (सं० त्रि०) यज्ञमें सोमरस चढ़ानेवाला।

सोमसुन्दर (सं० पु०) १ एक ग्रंथकार। (त्रि०) २ चन्द्रमाके समान सुदर।

सोमसूक्त (सं० क्ली०) सोमके उद्देशसे सूक्त मंत्र।

सोमसूक्ष्मन् (सं० पु०) एक वैदिक ऋषिका नाम।

सोमसूत्र (सं० क्ली०) शिवलिङ्गकी जलधरीसे जल निकलनेका स्थान या नाली। (तन्त्रसार)

सोमसेन (सं० पु०) शम्बरके एक पुत्रका नाम।

सोमहुति (सं० स्त्री०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सोमांशु (सं० पु०) सोमस्य अंशुः। १ चन्द्रमाकी किरण। २ सोमलताका अंकुर। ३ सोम पानका एक अंग।

सोमा (सं० स्त्री०) १ सोमलता। २ महाभारतके अनुसार एक अप्सराका नाम। ३ मार्कण्डेयपुराणके अनुसार एक नदीका नाम।

सोमाकर (सं० पु०) वैदिक ज्योतिषके एकभाष्यकार।

सोमाख्य (सं० क्ली०) रक्तकैरव, लाल कमल।

सोमाङ्ग (सं० क्ली०) सोम यागका एक अंग।

सोमात्मक (सं० त्रि०) सोमस्वरूप।

सोमाद (सं० त्रि०) सोम भक्षण करनेवाला।

सोमाधार (सं० पु०) १ एक प्रकारके पितर। २ सोम-पात्र, सोमका आधार।

सोमानन्द आचार्य—आचार्यभेद। ये राजनिघण्टुके प्रणेता नरहरिके पूर्वपुरुष थे।

सोमानन्दनाथ—शिवदृष्टि नामक ग्रन्थके रचयिता। ये उत्पलदेवके गुरु तथा अभिनवगुप्तके परमेष्ठी थे। सर्व-दर्शनसंग्रहमें इनका उल्लेख मिलता है। ये वर्षादित्यके पुत्र अरुणादित्यके पौत्र तथा आनन्दके पुत्र थे।

सोमापि (सं० पु०) सहदेवके एक पुत्रका नाम।

सोमापूषण (सं० पु०) सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण (सं० त्रि०) सोम और पूषण-सम्बधी, सोम और पूषणका।

सोमाभा (सं० स्त्री०) चन्द्रावली, चन्द्रमाकी किरणें।

सोमायन (सं० पु०) महीने भरका एक व्रत। इसमें २७ दिन दूध पी कर रहने और ३ दिन तक उपवास करनेका विधान है। याज्ञवल्क्यके अनुसार यह व्रत करने-वाला पहले सप्ताह (सात रात) गौके चार स्तनोंका, दूसरे सप्ताह तीन स्तनोंका, तीसरे सप्ताह दो स्तनोंका और ६ रात एक स्तनका दूध पीये और तीन दिन उपवास करे।

सोमारुद्र (सं० पु०) सोम और रुद्र नामक देवता।

सोमारौद्र (सं० त्रि०) सोम और रुद्र-सम्बन्धी, सोम और रुद्रका।

सोमार्चिस् (सं० पु०) देवताओंके एक प्रासादका नाम।

सोमार्द्धधारिन् (सं० पु०) मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण करनेवाले शिव।

सोमाल (सं० पु०) कोल, मुलायम। (हेम)

सोमालक (सं० पु०) पुष्पराग मणि, पुखराज।

सोमावती (सं० स्त्री०) चन्द्रमाकी माताका नाम।

सोमावर्त्त (सं० पु०) वायुपुराणके अनुसार एक स्थान-का नाम।

सोमाश्रम (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक तीर्थका नाम।

सोमाश्रयायण (सं० क्ली०) १ रुद्रस्थान, शिवजीका स्थान। २ महाभारतके अनुसार एक तीर्थका नाम।

सोमाष्टमी (सं० स्त्री०) सोमवारको पड़नेवाली अष्टमी तिथि।

सोमाष्टमीव्रत (सं० क्ली०) एक प्रकारका व्रत जो सोमवारको पड़नेवाली अष्टमीको किया जाता है।

सोमास्त्र (सं० पु०) एक प्रकारका अस्त्र जो चन्द्रमाका अस्त्र माना जाता है।

सोमाह (सं० पु०) चन्द्रमाका दिन, सोमवार।

सोमाहुत (सं० त्रि०) जिसकी सोमरस द्वारा तृप्ति की गई हो।

सोमाहुति (सं० पु०) १ भार्गव ऋषिका नाम। ये मन्त्रद्रष्टा थे। (स्त्री०) २ सोमकी आहुति।

सोमाह्वा (सं० स्त्री०) महासोमलता।

सोमित्रि (सं० पु०) लक्ष्मण।

सोमिन् (सं० त्रि०) १ सोमयुक्त, जिसमें सोम हो। (पु०) २ सोमकी आहुति देनेवाला। ३ सोमयज्ञ करनेवाला, सोमयाजक।

सोमिल (सं० पु०) १ एक असुरका नाम। २ एक कवि।

सोमीय (सं० त्रि०) सोम-सम्बन्धी, सोमका।

सोमेज्या (सं० स्त्री०) सोम नामक इज्या, सोमयज्ञ।

सोमेन्द्र (सं० त्रि०) सोम और इन्द्र सम्पर्कीय।

सोमेश्वर (सं० पु०) सोमस्य ईश्वरः। काशीमें सोम द्वारा प्रतिष्ठित शिव। भगवान् सोमने काशीमें जो शिव प्रतिष्ठित किया, वही सोमेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुआ है। काशीखण्डमें लिखा है, कि जहां नलकुबेर लिङ्ग प्रतिष्ठित है, उसके पूर्व ओर सूर्येश्वर और सोमेश्वर नामक दो लिङ्ग विद्यमान हैं। इन दोनों लिङ्गोंकी पूजा करनेसे अज्ञानान्धकारराशि विनष्ट होती है। (६७ अ०)

सोमेश्वर—१ एक प्राचीन कवि। २ सङ्गीतशास्त्रके प्रणेता। शार्ङ्गदेवने इनका उल्लेख किया है। ३ एक दार्शनिक। सर्वदर्शनसंग्रहके रसेश्वर दर्शनमें इनका उल्लेख देखनेमें आता है। ४ जैमनीय न्यायमाला-विस्तरके रचयिता। ५ तन्त्रालोक और परात्रिंशिका नामक दो ग्रन्थोंके प्रणेता। ६ श्रुतशब्दार्थ समुच्चय नामक ग्रन्थके रचयिता। ये योगेश्वराचार्यके शिष्य थे। ७ भोजराजकृत सिद्धान्त-संग्रहके टीकाकार। ८ कुमारिल भट्ट कृत तन्त्रवार्त्तिककी सर्वानवद्यकारिणी नाम्नी टीकाके प्रणेता। यह ग्रंथ न्यायसुधा और राणक नामसे भी परिचित है। ग्रंथकार माधवभट्टके पुत्र थे।

सोमेश्वरदेव—१ करुणामृतप्रपा सुभाषितावलीके प्रणेता। २ रामायण-नाटकके रचयिता। ३ काव्यप्रकाशटीका, काव्यादर्श, कीर्त्तिकौमुदी, रामशतक और सुरथोत्सव नामक ग्रंथके रचयिता। ये अनहिलपाटकके अधिपति भीमदेव और धोलकाके नरराय लवणप्रसादके पुरोहित तथा गुर्जर राजमन्त्री वस्तुपाल और उनके भाई तेजोपालके आश्रित थे। इनके पिताका नाम कुमार और पितामहका नाम आमशर्मा था। आमशर्माके वृद्ध प्रपितामह सोम सुविख्यात राजा मूलराजदेवके सभापण्डित थे। राजपूतानेके मध्यस्थित अर्बुद शैलशिखर पर सोमेश्वर-प्रदत्त कुछ प्रशस्ति उत्कीर्ण होती जाती है। ये सब प्रशस्ति १२३२से १२५२ ई०के मध्य लिखी गई थीं।

सोमेश्वर भट्ट मीमांसक—एक प्रसिद्ध मीमांसाशास्त्रविद्। ये आचारकौमुदीके प्रणेता राजारामके पिता थे।

सोमेश्वरभूलोकमल्ल ३य—दाक्षिणात्यके प्रसिद्ध चालुक्य वंशके एक राजा। ये विक्रमादित्य २यके पुत्र थे। इन्होंने ११२७से ११३८ ई० तक राज्यशासन किया था। अभिलषितार्थचिन्तामणि या मानसोल्लास नामक एक ग्रन्थ इनका लिखा है।

सोमेश्वररस (सं० पु०) प्रमेहरोगाधिकारोक्त रसौषध विशेष। इस औषधका सेवन करनेसे सब प्रकारका प्रमेह, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, सब तरहका सन्निपातज्वर, भगन्दर, यकृत्, प्लीहा, उदरामय और सोमरोग जल्द आराम होता है। प्रमेहरोगाधिकारमें यह एक उत्कृष्ट औषध है। (भैषज्यरत्ना० प्रमेहरोगाधि०)

सोमोत्पत्ति (सं० स्त्री०) १ चन्द्रमाका जन्म। २ अमावस्याके उपरान्त चन्द्रमाका फिरसे निकलना।

सोमोद्गीत (सं० पु०) एक प्रकारका साम।

सोमोद्भव (सं० त्रि०) १ चन्द्रमासे उत्पन्न। (पु०) २ श्रीकृष्णका एक नाम।

सोमोद्भवा (सं० स्त्री०) नर्मदा नदी।

सोम्य (सं० त्रि०) सोम यत्। १ सोमयुक्त। २ सोमसम्बन्धी, सोमका। ३ सोमपानके योग्य। ४ सोमकी आहुति देनेवाला।

सोय (हिं० सर्व०) सो देखो।

सोया (हिं० पु०) सोआ देखो।

सोरंजान (फा० स्त्री०) सूरजान, सुरंजान देखो।

सोर (सं० पु०) वक्र गति, टेढ़ी चाल।

सोर (हिं० स्त्री०) मूल, जड़।

सोर (अ० पु०) तट, किनारा।

सरोक (सं० क्ली०) मृत्क्षारविशेष, सोरा।

सोरठ्ठ (हिं० पु०) सोरठ देखो।

सोरठ (हिं० पु०) १ भारतका एक प्रदेश जो राजस्थानके दक्षिण-पश्चिम पड़ता है, गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़का प्राचीन नाम। २ सोरठ देशकी राजधानी, सूरत। (पु० स्त्री०) ३ ओडवजातिका एक राग जो हिंडोलका पुत्र कहा गया है। इसमें गांधार और धैवत स्वर वर्जित हैं। यह पंचम, भैरवी, गुर्जरी, गांधार और कल्याणके संयोगसे बना माना जाता है। इसके गानेका समय रात १६ दंडसे २० दंड तक है वङ्गदेशके कई संगीताचार्य इसे सम्पूर्ण जातिका राग कहते हैं। कोई सोरठको षाडव जातिकी रागिणी मानते हैं।

सोरठ मल्लार (हिं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सोरठा (हिं० पु०) अड़तालीस मात्राओंका एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणमें ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरणमें तेरह तेरह मात्राएं होती हैं। इसके सम चरणोंमें जगणका निषेध है। जान पड़ता है, कि इस छन्दका प्रचार अपभ्रंश कालमें पहले सोरठ या सौराष्ट्र देशमें हुआ था, इसीसे यह नाम पड़ा।

सोरठी (हिं० स्त्री०) एक रागिणी जो सिंधूड़ा और वड़हंसके संयोगसे बनी है। हनुमत्‌के मतसे यह मेघरागकी पत्नी है।

सोरण (सं० त्रि०) कुछ कैसला, मीठा, खट्टा और नमकीन, चरपरा।

सोरन (हिं० पु०) जमींकद, सूरन।

सोरबा (फा० पु०) शोरबा देखो।

सोरभखी (हिं० स्त्री०) तोप या बन्दूक।

सोरहिया (हिं० स्त्री०) सोरही देखो।

सोरही (हिं० स्त्री०) १ जूआ खेलनेके लिये सोलह चित्ती कौड़ियोंका समूह। २ वह जूआ जो सोलह कौड़ियोंसे खेला जाता है। ३ कटी हुई फसलकी सोलह अँटियों या पूलोंका बोझ जिससे खेतकी पैदावारका अंदाज लगाते हैं। जैसे,—फी बीघा सौ सोलही।

सोरा (शोरा)—पृथिवीके नाना भागोंमें, प्रधानतः भारतवर्ष, दक्षिण अमेरिका, स्पेन, पारस्य, हंगेरी आदि स्थानोंमें स्वाभाविक अवस्थामें भिन्न जातिका जो लवण पाया जाता है, साधारणतः उसीको सोरा (salt petre) कहते हैं। चीनोंमें जो शोरा पाया जाता है, उसका प्रधान उपादान सोडियम है। घोड़ेके अस्तबलकी दीवारमें कभी कभी चूना सोडा देखनेमें आता है। भारतवर्षके नाना स्थानोंमें पोटासियम सोरा या यवक्षार मिला रहता है। यह मिट्टीके ऊपर पुष्पाकारमें या मिट्टीके प्रथम स्तरके साथ मिश्रित अवस्थामें तथा तमाकू, सूर्यमुखी आदि पौधोंमें, किसी किसी सच्छिद्र पहाड़ पर तथा वृष्टि और झरनेके जलमें देखा जाता है। क्षार बनानेकी प्रणाली द्वारा कृत्रिम उपायसे भी सोरा बनता है। इसके सिवा सिंहल, टेनेरिफ, कण्टुकि आदि स्थानोंकी जिन सब गिरिगुहामें पक्षी और अन्यान्य प्राणी जा कर रहते हैं, उन सब गुहाओंमें भी सोरा देखनेमें आता है। ठण्डे जलमें यह बहुत कम, परन्तु उष्ण जलमें अच्छी तरह गल जाता है। साधारणतः यह पतला, सफेद, भङ्गुर और अर्द्धस्वच्छखण्ड अवस्थामें पाया जाता है।

स्वाभाविक सोरा नाना अवस्थामें रहता है। परन्तु सभी अवस्थाके सोरामें जैव पदार्थका प्रभाव विद्यमान है। गंगाकी बाढ़से जो मिट्टी जम जाती है, उसमें यह यथेष्ट परिमाणमें पाया जाता है।

भारतवर्षके बाजारमें जो शोरा देखनेमें आता है,

साधारणतः यह विहार तथा युक्तप्रदेशके किसी जिले, पञ्जाब, बम्बई, मन्द्राज और ब्रह्मप्रदेशसे लाया जाता है।

बारूद आविष्कृत होनेके पहले शोरा संग्रहको ओर भारतवासीका वैसा ध्यान नहीं था। परन्तु जब बारूद आविष्कृत हुई और इसे बनानेके लिये यव क्षार की अधिक आवश्यकता आन पड़ी, तभीसे लोग सोरासंग्रहकी धुनमें लगे। सोराके सम्बन्धमें उदय चांद दत्त महाशयने अपने Meteria Medica of the Hindus नामक ग्रन्थके ८वें पृष्ठमें इस प्रकार कहा है,—

सोराके सम्बन्धमें प्राचीन हिन्दू कुछ भी नहीं जानते थे। संस्कृतमें इसका कोई सर्वसम्मत नाम नहीं मिलता। भावप्रकाशमें लिखा है, 'सुवर्चिका सर्जिक' विशेष। बोलचालमें इसीको सोरा कहते हैं। किन्तु जो सब अभिधान प्रामाण्य हैं, उनमें 'सुवर्चिका' और 'सर्जिक' एक ही पदार्थके दो विभिन्न नाम लिये गये हैं। यवक्षार सम्वलित धातव अम्ल बनानेके बारेमें कुछ आधुनिक संस्कृत सूत्र हैं। उन सूत्रोंमें इस लवणका नाम 'सोरक' लिखा है। परन्तु किसी भी प्राचीन संस्कृत अभिधानमें यह सोरक शब्द नहीं मिलता। सम्भवतः देशज सोरा शब्दको संस्कृत बना कर सोरक किया गया है। सोरकसे सोरा शब्दकी उत्पत्ति नहीं हुई है, इसीसे मालूम होता है, कि यवक्षार बनानेका तरीका भारतवर्षके लिये कितना आधुनिक है। जब युद्धके लिये बारूद काममें लाई जाने लगी, तबसे मालूम होता है, कि यह प्रस्तुत किया जा रहा है।

साधारणतः यवक्षार शब्द अंगरेजी Nitre or Salt petre शब्दके प्रतिशब्द स्वरूप व्यवहृत होता है। परन्तु दत्त महाशय इसे भूल बतलाते हैं। सोरेकी प्रयोजनीयता मालूम होनेके बाद भी बहुत दिनों तक देशी लोगोंका इसके व्यवसायकी ओर ध्यान नहीं गया। इष्ट इण्डिया कम्पनीने दो सौसे अधिक वर्ष तक इस व्यवसायको खास कर लिया था और वह प्रतिवर्ष ५००सौ रु० (८१०० थैली) का सोरा वृटिश गवर्मेण्टको देती थी। इसकी खपत बहुत कुछ राजनैतिक व्यापारके ऊपर निर्भर करती थी। युद्धकी आशङ्का होने पर बारूदकी विशेष आवश्यकता होती है, उस समय सोरेकी खपत भी ज्यादा होती है। १७५५ ई०में १४७४७ थैली-सोरा बिका था। १७६१ ई०में हालैण्डकी राजनैतिक अवस्था जब बड़ी ही आशङ्काजनक हो उठी, तब बारूद अधिक तादाद भेजनेके लिये नाना स्थानोंसे इङ्गलैण्डके व्यवसायियोंके पास तगाजा आने लगा। किन्तु गवर्मेण्टके साथ इष्ट इण्डिया कम्पनीकी जो शर्त्त थी, उसके अनुसार उन्हें इतना ज्यादा सोरा रफ्तनी करनेका अधिकार नहीं था। पीछे बारूद व्यवसायियोंने प्रिवि कौंसिलसे अनुमति ले ली, कि वे यूरोपके अन्यान्य प्रदेशोंसे सोरा मंगा सकते हैं। इस पर भी वे लोग सन्तुष्ट नहीं हुए, सोराका व्यवसाय इष्ट इण्डिया कम्पनीने जो खास कर लिया था, उसके विरुद्ध उन लोगोंने आन्दोलन खड़ा कर दिया। इस आन्दोलनके फलसे गवर्मेण्टने हुकुम निकाला, कि गवर्मेण्टके लिये वर्षमें ५०० सौ टन सोराके अलावा कम्पनीको ३५०० टन सोरा विलायतके बाजारमें ला कर बेचना होगा।

इसके कुछ वर्ष बाद जब यूरोप और अमेरिकाके नाना स्थानोंमें सोराकी आमदनी होने लगी, तब भारतीय सोरेकी खपत बहुत कुछ कम हो गई, फिर इसके ऊपर कृत्रिम उपायसे सोरा बनानेकी सुविधा हो जानेसे भारतवर्षके सोरेका बाजार मिट्टीमें मिल गया है।

बाल साहबका कहना है, कि कलकत्तेसे जो सोरा भेजा जाता है, वह उसका प्रायः $\frac{2}{3}$ अंश विहारके सारन, तिरहुत और चम्पारन जिलेसे संग्रह किया जाता है।

कानपुर, गाजीपुर, इलाहाबाद, बनारस और पंजाबसे भी थोड़ा बहुत सोरा भेजा जाता है। १८६८ ई०के लगभग मन्द्राज प्रसिडेन्सीके मदुरा जिलेमें एक यूरोपीय कम्पनी द्वारा सोरा बनाया जाता था। वर्षमें निर्दिष्ट परिमाणमें सोरा संग्रह करनेकी शर्त्त पर इस कम्पनीने सरकारसे सोरा बनानेका खास अधिकार ले लिया। किन्तु यह व्यवसाय लाभजनक नहीं होनेसे कुछ दिनोंके बाद उन्होंने इसे छोड़ दिया।

बंगाल और विहार इन दोनों स्थानोंसे ही अधिक परिमाणमें सोरा संग्रह किया जाता है और इन्हीं दोनों

स्थानोंमें इसका व्यवसाय चलता है। अतएव सोरा निकालने और उसे विशुद्ध करनेके सम्बन्धमें इन दोनों स्थानोंके लोगोंसे निकाली हुई प्रणाली ही सारे भारतवर्षकी आदर्श समझी जा सकती है। जिस प्रान्तमें वर्षाके बाद रौद्रका उत्ताप प्रबल होता है और इस कारण मिट्टीका जलीय अंश बारूदमें परिणत हो जानेसे जमीनके ऊपर यह लवण पुष्पाकारमें गठित हो सकता है, उसी प्रान्तमें सोरा बड़ी आसानीसे तैयार होता है। कृत्रिम उपायसे भी सोरा बनाया जाता है।

अच्छे सोरेका १०० अंश विश्लेषण कर निम्नलिखित उपादान पाये गये हैं—

बालू, कीचड़ आदि जो सब पदार्थ जलमें नहीं गलते	५·०
सालफेट आव सोडा	६·१
म्युरियेट आव सोडा	८·०
सोरा	७९·९
	१००·०

इनमेंसे प्रथम तीन श्रेणीका उपादान ही सोरेकी अविशुद्धताका कारण है।

कलकत्तेके बाजारमें 'कलमी' नामक जो सोरा पाया जाता है, वह 'धोवा' सोराको फिरसे जलमें गला कर तथा स्फटिकमें परिणत कर उत्पादन किया जाता है। इसमें सैकड़े पीछे ८५से ९५ भाग विशुद्ध सोरा रहता है। सोरा प्रधानतः बारूद, गोली, गोला आदि बनानेके लिये ही व्यवहृत होता है। बारूद बनानेमें पेट्रोलियम सोराके सिवा और किसी भी काममें नहीं आता। किन्तु नाइट्रिक एसिड आदि बनानेके लिये कुछ सुलभ मूल्यकी चीनी या सोडियम सोडा व्यवहृत होता है।

सोरावास (सं० पु०) विना नमकका मांसका रसा, विना नमकका शोरवा।

सोराष्ट्रिक (सं० क्ली०) सौराष्ट्रिक देखो।

सोरी (हिं० स्त्री०) बरतनमें महीन छेद जिसमेंसे हो कर पानी आदि टपक कर बह जाता हो।

सोर्णभू (सं० त्रि०) जिसकी दोनों भौंओंके बीच रोएंकी भंवरी-सी हो।

सोर्मि (सं० त्रि०) ऊर्मि युक्त, ऊर्मिविशिष्ट।

सोल (सं० त्रि०) १ शीतल, ठण्ढा। २ कसैला, खट्टा और तीता। (पु०) ३ शीतलता, ठण्ढापन। ४ कसैलापन, खट्टापन, तीतापन। ५ स्वाद, जायका।

सोलङ्क (सं० पु०) सोलाङ्कि देखो।

सोलपंगी (हिं० पु०) केंकड़ा।

सोलपोल (हिं० वि०) व्यर्थका, बेफायदा।

सोलह (हिं० त्रि०) १ जो गिनतीमें दशसे छः अधिक हो, षोडश। (पु०) २ दश और छः की संख्या या अङ्क जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

सोलह-नहाँ (हिं० पु०) वह हाथी जिसके सोलह नख या नाखून हों, सोलह नाखूनवाला हाथी। यह ऐबी समझा जाता है।

सोलहवाँ (हिं० वि०) जिसका स्थान पन्द्रहवें स्थानके बाद हो, जिसके पहले पन्द्रह और हो।

सोलह सिंगार (हिं० पु०) पूरा सिंगार जिसके अन्तर्गत अङ्गमें उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल संवारना, काजल लगाना, सेंदुरसे मांग भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, सुगन्ध लगाना, आभूषण पहनना, फूलोंकी माला पहनना, मिस्सी लगाना, पान खाना और होठोंको लाल करना ये सोलह बातें हैं।

सोलही (हि० स्त्री०) सोरही देखो।

सोलाङ्कि (सं० पु०) राजपूतानेका प्रसिद्ध राजपूत-राजवंश। विशेष विवरण शोलाङ्कि शब्दमें देखो।

सोलाना (हिं० क्रि०) सुलाना देखो।

सोल्ली (हिं० स्त्री०) पृथ्वी।

सोल्लास (सं० त्रि०) १ उल्लाससयुक्त, आनन्दित, प्रसन्न। (क्रि० वि०) २ उल्लासके साथ, आनन्दपूर्वक।

सोल्लुण्ठ (सं० त्रि०) १ परिहासयुक्त, व्यंग्यहास्ययुक्त, चुटकीके साथ। (क्ली०) २ व्यंग्य, परिहास, चुटकी।

सोल्लुण्ठन (सं० क्ली०) परिहासयुक्त वाक्य चुटकी।

सोल्लुण्ठोक्ति (सं० स्त्री०) सोल्लुण्ठा उक्तिः। व्यंग्योक्ति, परिहासयुक्त वचन, दिल्लगी, ठट्ठा।

सोवज (हिं० पु०) सावज और सौजा देखो।

सोवड (हिं० पु०) वह कोठरी जिसमें स्त्रियां बच्चा जनती हैं, सौरी।

सोवणी (हिं० स्त्री०) बुहारी, झाड़ू।

सोवा (हिं० पु०) सोआ देखो।

सोवाक (सं० पु०) सोहागा।

सोवाना (हिं० क्रि०) सुलाना देखो।

सोवारी (हिं० पु०) पन्द्रह मात्राओंका एक ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं।

सोवाल (सं० त्रि०) काले या धूएं के रंगका, धुंधला।

सोशल (अं० वि०) समाज सम्बन्धी, सामाजिक। जैसे,—सोशल कानफरेंस।

सोशलिज्म (अं० पु०) साम्यवाद देखो।

सोष (सं० त्रि०) १ क्षारमृत्तिकामिश्रित, खारी मिट्टी मिला हुआ। (क्ली०) २ क्षारमृत्तिका, खारी मिट्टी।

सोष्णीष (सं० त्रि०) १ उष्णीषयुक्त, उष्णीषविशिष्ट। (क्ली०) २ वास्तु विद्याके अनुसार एक प्रकारका भवन जिसके पूर्व भागमें वीथिका हो।

सोष्मता (सं० स्त्री०) उष्णा, गरम।

सोष्मन् (सं० त्रि०) उष्माके साथ वर्त्तमान, उष्मयुक्त।

सोष्यन्तीहोम (सं० पु०) एक प्रकारका होम जो आसन्न प्रसवा स्त्रीकी शान्तिसे किया जाता है।

सोष्णस्नानगृह (सं० पु०) उष्णजलविशिष्ट स्नानगृह, वह नहानेका घर जिसमें गरम जल हो। (राजतर० १।४०)

सोसन (फा० पु०) १ फारसकी ओरका एक प्रसिद्ध फूलका पौधा। यह भारतवर्षमें हिमालयके पश्चिमोत्तर भाग अर्थात् काश्मीर आदि प्रदेशोंमें भी पाया जाता है। इसकी जड़में से एक साथ ही कई डंठल निकलते हैं। पत्ते कोमल, रेशेदार, हाथ भरके लम्बे, आध अंगुल चौड़े और नोकदार होते हैं। फूलोंके दल नीलापन लिये लाल, छोर पर नुकीले और आध अंगुल चौड़े होते हैं। बीजकोश ५ या ६ अंगुल लम्बे, छ पहले और चोपहदार होते हैं। हकीमोंमें फूल और पत्ते औषधके काममें आते हैं और गरम, रूखे तथा कफ और वातनाशक माने जाते हैं। इसके पत्तोंका रस सिरदर्द और आँखके रोगोंमें दिया जाता है। इसे शोभाके लिये बगीचेमें लगाते हैं। फारसके शायर जीभको उपमा इसके दलसे दिया करते हैं।

सोसनी (फा० वि०) सोसनके फूलके रंगका, लाली लिये नीला।

सोसाइटी (अं० स्त्री०) १ समाज, गोष्ठी। २ सगत, सोहबत।

सोसायटी (अं० स्त्री०) सोसाइटी देखो।

सोहगी (हिं० स्त्री०) १ तिलक चढ़नेके बादकी एक रस्म जिसमें लड़केवालेके यहांसे लड़कीके लिये कपड़े, गहने, मिठाई, मेवे, फल, खिलौने आदि सजा कर भेजे जाते हैं। २ सिन्दूर, मेंहदी आदि सुहागकी वस्तुएं।

सोहञ्जि (सं० पु०) कुन्तिभोजके एक पुत्रका नाम।

सोहन (हिं० वि०) १ अच्छा लगनेवाला, सुन्दर, सुहावना। (पु०) २ सुन्दर पुरुष, नायक। ३ एक बड़ा पेड़ जो मध्यभारत तथा दक्षिणके जङ्गलोंमें बहुत होता है। इसके हीरकी लकड़ी बहुत कड़ी, मजबूत, चिकनी, टिकाऊ तथा ललाई लिये काले रंगकी होती है। यह मकानोंमें लगती तथा मेज, कुरसी आदि सजावटके सामान बनानेके काममें आती है। सोहन शिशिरमें पत्ते झाड़नेवाला पेड़ है। इसे रोहन और सूमी भी कहते हैं। (स्त्री०) ४ एक बड़ी चिड़िया जिसका शिकार करते हैं। यह विहार, उड़ीसा छोटा नागपुर और बंगालको छोड़ हिन्दुस्तानमें सर्वत्र पाई जाती है। यह कीड़े, मकोड़े, अनाज, फल, घासके अंकुर आदि सब खाती है। पूंछसे ले कर चोंच तक इसकी लम्बाई डेढ़ हाथ तक होती है और वजन भी बहुत भारी प्रायः दश सेर तक होता है। इसका मांस बहुत स्वादिष्ट कहा जाता है।

सोहन (फा० पु०) एक प्रकारकी बढ़इयोंकी रेती या रंदा।

सोहन चिड़िया (हिं० स्त्री०) सोहन देखो।

सोहन पपड़ी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मिठाई जो जमे हुए कतरोंके रूपमें और घीसे तर होती है।

सोहन हलवा (हिं० पु०) एक प्रकारकी स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरोंके रूपमें और घीसे तर होती है।

सोहना (हिं० क्रि०) १ शोभित होना, सुन्दरताके साथ होना, सजना। २ अच्छा लगना, उपयुक्त होना, फबना। ३ खेतमें उगी घास निकल कर अलग करना, निराना।

सोहना (फा० पु०) कसेरोंका एक नुकीला औजार जिस-

स वे घरिया या कुठालीमें, साचेमें गली धातु गिराने के लिये छेद करते हैं।

सोहनी (हिं० स्त्री०) १ झाडू, बुहारी। २ खेतमेंसे उगी घास खोद कर निकालनेकी क्रिया, निराई। ३ सोहिनी रागिणी। (वि० स्त्री०) ४ सुन्दर, सुहावनी।

सोहबत (अ० स्त्री०) १ संग, साथ, संगत। २ सम्भोग, स्त्री-प्रसंग।

सोहर (हिं० पु०) १ एक प्रकारका मंगल गीत जो स्त्रियां घरमें बच्चा पैदा होने पर गाती हैं, सोहला। २ मांगलिक गीत। (स्त्री०) ३ सूतिकागृह, सौरी। ४ नावके भीतरकी पाटन या फर्श। ५ नावका पाल खींचनेकी रस्सी।

सोहराना (हिं० क्रि०) सहलाना देखो।

सोहला (हिं० पु०) १ वह गीत जो घरमें बच्चा पैदा होने पर स्त्रियां गाती हैं। २ मांगलिक गीत। ३ किसी देवी देवताकी पूजामें गानेका गीत।

सोहाई (हिं० स्त्री०) १ खेतमें उगी घास निकालनेका काम, निराई। २ इस कामकी मजदूरी।

सोहाग (हिं० पु०) सुहागा देखो।

सोहागपुर—१ मध्यप्रदेशके होसङ्गाबाद जिलेकी पूर्वी तहसील। यह अक्षा० २२° १०´ से २२° ५६´ ३० तथा देशा० ७७° ५५´से ७८° ४४´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण १२४३ वर्गमील और जनसंख्या सवा लाखसे ऊपर है। इसमें २ शहर और ४२६ ग्राम लगते हैं। छतर, बारियम पगारा और पचमारी ये तीन निष्कर जमींदारी इस तहसीलके अन्तर्गत है। सरकारी खालसा जमीनका परिमाण ६४३ वर्गमील है। इनमें भी ६६७ वर्गमील जमीनके लिये गवर्मेण्टको कोई राजस्व नहीं मिलता, बाकी जमीनके लिये राजस्व देना पड़ता है। बहुत कम जमीन ऐसी है जहां धान उपजता है। यहां एक फौजदारी और दो दीवानी अदालत, तीन थाना और पांच चौकी हैं।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २२° ५२´ ३० तथा देशा० ७८° १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ७ हजारसे ऊपर है। १८६७ ई०में म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है। यहां नाना श्रेणीके और नाना धर्मावलम्बी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी और अहिन्दू अनार्य जातिके लोग देखनेमें आते हैं। इनमेंसे हिन्दूकी संख्या ही अधिक है। पहले यहां पत्थरका बना हुआ एक दुर्ग था जो अभी खण्डहरमें पड़ा है। नागपुर राजाओंके फौजदार खाँ नामक एक जागीरदारने १७६० ई०के लगभग यह दुर्ग बनाया था। १८०३ ई०में भूपालके वजीर महम्मदने एक बार इस दुर्ग पर चढ़ाई की थी, परन्तु कोई फल नहीं निकला। एक समय इस शहरमें एक टकसाल घर भी था जिसमें १३ आने मूल्यका रुपया बनता था। यहां रेशमी कपड़ा बुना जाता है और लाह भी गलाई जाती है। शहरमें एक तह सीली थानाघर और एक अच्छी सराय है। यहां ग्रेट पेनिनसुला रेलवे कम्पनीका एक स्टेशन भी है। बम्बईसे यह ४६४ मील दूर पड़ता है। इसके ६ मील पूरब शोभा पुर ग्राममें प्रति सप्ताहको एक बड़ी हाट लगती है। उस हाटमें नरसिंहपुर और पार्श्ववर्त्ती अन्यान्य स्थानोंसे देशी कपड़े बिकनेको आते हैं। शोभापुरमें एक गोंड़ राजा रहते हैं। शहरमें एक मिडिल इङ्गलिश स्कूल और एक चिकित्सालय है।

सोहागपुर—१ मध्यप्रदेशके रेवाराज्यकी एक तहसील। यह अक्षा० २२° ३८´से २३° ३६´ ३० तथा देशा० ८०° ४५´से ८२° १८´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३५.५ वर्गमील और जनसंख्या ढाई लाखके करीब है। इसमें एक शहर और ११६० ग्राम लगते हैं।

२ उक्त तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २३° १९´ ३० तथा देशा० ८१° २४´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। यह वाणिज्य प्रधान स्थान है। यहांसे गेहूं, चावल, सरसों और तीसीकी रफ्तनी तथा नमक, चीनी, तमाकू, रूई, कपड़े और मिट्टीके तेलकी आमदनी होती है।

सोहागा (हिं० पु०) स्वनामप्रसिद्ध क्षारद्रव्यविशेष। प्राचीन आयुर्वेदशास्त्रमें यह टङ्कणक्षार नामसे परिचित है। लवणकी तरह यह क्षार भी जमीनके अन्दर पाया जाता है। भिन्न भिन्न देशमें यह भिन्न भिन्न नामसे प्रसिद्ध है। यथा— बंगाल—सोहागा; दाक्षिणात्य—सोहागह, गुजरात— कुंदियाखार, टङ्कणक्षार, सिङ्गापुर—वेङ्गाराम, पुष्कर;

ब्रह्म—लरिया, लेट्स्य, तामिल—वेङ्कारम या वेङ्कारम, तेलगू विलिगारम, एलेगारम; मलयालम—पोङ्कारम, वेलङ्कारम, कणाडी—विलिगाड़ा, अरब—बुरा-कास-सागहा या बुवाक एम-मागहा:, बोरक, गिलहुस सागहा, पारस्य—टिङ्कार, तङ्कड, काश्मीर—बुत्, तिब्बत—शाल, मल, चुसाल।

सोहागा जब जलमें मिला रहता है, तब पञ्जाबवासी उसे चु-न्साले कहते हैं। डाक्टर एन्सिसनका कहना है, कि मिट्टीमें जो मिला हुआ सोहागा मिलता है, उसीका नाम शाल है। उसीको जलमें धो और परिष्कार कर लेनेसे वह चु-शाल कहलाता है। पंजाबके बाजारमें यह टिङ्काल या टिङ्कार और सोहागा नामसे बिकता है।

रसायनविज्ञानमें इसका Borate of Sodium या Biborate of Sodium ($Na_2B_4O_7, 10H_2O$) नाम रखा गया है। फरासी लोग इसे Borax या Borate de Soude, जर्मनोमें Borax और Borsaures Natron, इटलीमें Borace और स्पेनराज्यमें Borax कहते हैं। अंगरेज आदि पाश्चात्य जगत्वासीका 'बोराक्स' शब्द अरबवासीके बुराक* से लिया गया है। बालफोर साहबका कहना है, कि प्राचीन अंगरेजोंमें सोहागेका Tincal नाम पाया जाता है। यह शब्द पारसी टङ्कड अथवा संस्कृत टङ्कण शब्दसे लिया गया होगा। फिर किसी किसीका कहना है, कि तिब्बतदेशीय (तू-रशाल) (चुशाल) से यह शब्द लिया गया है। किन्तु यह समीचीन प्रतीत नहीं होता। आज भी जब पञ्जाब सीमान्तप्रदेशमें टिङ्काल नामसे साधारण सोहागेका प्रचलन देखा जाता है, तब संस्कृत टङ्कणसे जो Tincal शब्द लिया गया है, वह स्वयंसिद्ध है। टङ्कण शब्दसे टङ्काड शब्दकी उत्पत्ति हुई है इसमें जरा भी संदेह नहीं।

साधारण लवणके साथ सोहागेकी उत्पत्ति हुई है। पंजाब प्रदेशके तिब्बत सीमान्तस्थ कुछ छोटे छोटे खारे जलसे भरे हुए ह्रदके किनारे तथा तिब्बतके अन्यान्य स्थानोंमें काफी सुहागा मिलता है। पारस्य तथा चीन तिब्बत सीमान्तमें सोहागा कहीं नहीं पाया जाता। ऊपर कहे गये देशोंको छोड़ सिंहलद्वीपमें तथा अमेरिका महादेशके कालिफोर्निया और पेरुराज्यभागमें सोहागा आपेआप उत्पन्न होता है। इन सब सोहागोंको विशुद्ध और परिष्कृत कर लेना होता है। इसके सिवा कृत्रिम उपायसे भी कई जगह सोहागा बनाया जाता है। फ्रान्स राज्यमें टासकानो विभागके अन्तर्गत Monte Cerboli नामक पर्वतभागके खारे ह्रदसमूहमें सोहागा तैयार हो कर नाना स्थानोंमें विक्रयार्थ भेजा जाता है। उन स्थानोंमें जिस उपायसे सोहागा उत्पन्न होता है, उसका परिचय संक्षेपमें नीचे दिया गया है।

सर्बोली पर्वतके जिस अंशमें वह लवणजलमय ह्रदांश स्थापित है, वह पर्वतांश आग्नेयपर्वतकी उद्गारित भस्मराशिके प्रस्तर पर्यवसित स्तरसे उत्पन्न हुआ है। उस अंशकी दरारसे उष्ण जलीय वाष्प हमेशा निकलता है। वह वाष्प बड़े कौशलसे निकलते लेगुन नामक जलके गड्ढोंमें जमा रखा जाता है। वह वाष्पधूम जब जलके आकारमें घनीभूत होता है, तब उसमें बोरासिक एसिड दाना बांध कर जलसे अलग कर लिया जाता है। पीछे रासायनिक प्रक्रियासे कार्बनेट आव सोडाके साथ बोरासिक एसिडसे केवल सोहागा लिया जाता है। वैज्ञानिक कार्टियर और पेनने सबसे पहले इस प्रदेशमें कृत्रिम सोहागा बनानेकी प्रथा निकाली। आज भी उसी प्रथाके अनुसार फरासीराज्यमें सोहागा तैयार होता है। इटली-देशीय बोरासिक एसिडसे इङ्गलैण्ड राज्यमें कृत्रिम सोहागा उत्पन्न होता है। वहां परिशुद्ध उक्त एसिडके साथ सोडा भस्म मिला कर रिभार्वरी टोरी फार्नेस नामक चूल्हेके ऊपर रख आंच देनेसे एमोनिया अलग हो जाता है तथा वही उसके बदले द्वितीय पदार्थ रूपमें परिणत हो जाता है।

जिप्सम और साधारण लवणके साथ मिश्र अवस्थामें Borates of lime or Double borates of lime and Soda पाया जाता है। एसिड मिला कर उसे पृथक् कर लिया जाता है। कभी कभी जिप्सम स्तरमें

* बुराक शब्दका प्रकृत अर्थ—जो सुधे हुए आटेमें मिलानेसे उसमें सफेदी लाता है। विपरिलोन या विपरियान बुराक समझा जाता है। चादीकी सफेदी और चिकनाहट बढ़ानेके कारण सोहागेका नाम बुराक एस सागाह हुआ है।

अथवा पटाश सलटोंके साथ कंकरके आकारमें पाया जाता है। उसमें सैकड़े पीछे प्रायः ७० भाग बोरासिक एसिड विद्यमान रहता है। पूगा उपत्यकामें बहुत कम सोहागा उत्पन्न होता था। उक्त उपत्यकाके गडहेसे एक छोटी नदी निकल कर सिन्धुनदमें गिरी है। वह नदी निकल कर कुछ उष्ण प्रस्रवणोंके जलसे पुष्ट होती है। हे साहबने उसका ताप १३०, १४० और १५० से १६७ डिग्री तक परीक्षा की है। पूगा उपत्यकाके सभी स्थान प्रस्रवणके जलसे डुबे नहीं होने पर भी उक्त उष्ण जलमें यथेष्ट सोहागा पाया जाता है।

पूगाके सिवा नीतिगिरिसङ्कटके पासवाले रोडक (रुदोख) नामक स्थानमें तथा चीनसाम्राज्यके अधीन तिब्बत चाङ्गथान भूभागमें भी काफी सोहागा मिलता है। हिमालयके दूसरे किनारे जितने ह्रद हैं, उनमें कुछ न कुछ सोहागा पाया ही जाता है। तातार राज्यके अन्तर्गत मरुप्रदेशके लवणमय स्थानमें गडहा खोद रखनेसे उसमें सोहागा आ कर जम जाता है।

लाहौल, तिब्बत और स्पिति उपत्यकावासी कुनावारी और खामपो नामक भ्रमणशील पहाड़ी जातियां सोहागाका वाणिज्य व्यवसाय करनेके लिये ग्रीष्मकालमें पूगाकी खानमें जाती हैं और तातार प्रदेशमें तिब्बतके जिस जिस स्थानमें सोहागा बिकनेको आता है, उनमें से कोई कोई दल उन सब स्थानोंमें भी जाता है। वे लोग शरत्कालमें पहाड़ी रास्ता बन्द हो जानेके पहले ही अपने देशमें चले आते हैं और घरमें सोहागा परिष्कार कर सिमलाईल पर वणिकोंके हाथ बेचते हैं। उन लोगोंकी सोहागा परिष्कार-प्रणाली अति सहज और सरल है। पहले वे लोग चूर सुहागेको दो भाग गरम और एक भाग ठण्ढे मिले हुए जलमें घोल रखते हैं। जलके उत्तापसे सोहागा गल जाता है। पीछे जल जितना ही ठढा होता जाता है, सोहागा भी उतना ही दानेदार होता है। कहीं सोहागा फूट न जाये, इस भयसे उक्त खनिज सोहागेके ऊपर घीका लेप दिया जाता था, किन्तु उसमें नुकसानके सिवा कोई लाभ न देख उक्त प्रथा उठा दी गई है। युक्त प्रदेशमें जगह जगह सोहागा परिष्कार करते समय उष्ण जलके साथ चूना मिलाया जाता है। परिष्कृत सोहागेका बड़ा दाना 'चौकी' और चूर सोहागा 'रेग' कहलाता है। चौकी खूब परिष्कार रहता है, परन्तु रेग या चूर सोहागेकी धूल दूर करनेके लिये फिरसे दो एक बार उसे उष्ण जलमें सिद्ध करना होता है। तिब्बतसे युक्त प्रदेशमें जो खनिज सोहागा आता है, उसमें सौ मनमें ६० मन चौकी और ४० मन रेग पाया जाता है। उस रेगको फिरसे सिद्ध करने पर १० मन कुंज और ३० मन कखिड होती है। कखिडको फिरसे सिद्ध करने पर सिर्फ ५ मन कुंज और २५ मन मिट्टी और धूल रहती है। अनेकों स्थलोंमें सैकड़े पीछे २० मन तक धूल निकलती है।

उत्तर तिब्बतराज्यकी राजधानी लासा नगरीके दक्षिण और याम दोक-हो नामक स्थानसे हिमाचल शृङ्ग पार कर सोहागा युक्तप्रदेशमें लाया जाता है। तातार-राज्य और तिब्बतके अन्यान्य अनेक स्थानोंका सोहागा पंजाब प्रदेशमें बिकनेको आता है। पीछे उस स्थानसे कुछ बम्बई या कराची पथसे और कुछ बङ्गालके वैदेशिक वाणिज्यार्थ भेजा जाता है। यहांके बाजारमें विलायती, कानपुरी (तिब्बतीय) और कराची (नेलिया टङ्कर) नामक तीन प्रकारका जो सोहागा मिलता है, वह जनसाधारणके बड़े काममें आता है। सुश्रुतमें इसका भेषज गुण वर्णित हुआ है। यह बलकारक और अग्निमान्द्य-नाशक है। कष्टकर अजीर्ण, खांसी और दमा आदि रोगोंमें यह बड़ा लाभ पहुंचाता है। सोहागा मिले हुए जल द्वारा शरीर परका जखम धोनेसे वह शीघ्र ही भर जाता है। सोहागेको आगमें जलानेसे जो लावा फूटता है, उसे मधुमें मिला कर मुंहमें लगानेसे मुख, जिह्वा और दन्तके सभी रोग आरोग्य होते हैं। लिङ्ग और भगमें खुजली होने पर सोहागेके व्यवहारसे भारी उपकार होता है। क्योंकि, स्नायविक झिल्लीके नियमके ऊपर उसकी विरेचनशक्ति सबसे ज्यादा है। पाश्चात्य चिकित्सक कई जगह सोहागेका आभ्यन्तरिक प्रयोग अच्छा नहीं समझते, परन्तु वे लोग शोथ, उदरी और अपस्मार रोगोंमें इसका व्यवहार करते हैं। जरायुमें इसकी क्रिया अधिक है। यह रजोवर्द्धक और प्रसवका

सहाय है। रजःकृच्छ्र और बाधक वेदनामें यह बड़ा फायदा पहुंचाता है तथा स्थलविशेषमें रजोरोधक भी कहा गया है।

बोरासिक एसिड द्वारा मरहम तैयार कर डाक्टर लोग साधारणतः उसका व्यवहार करते हैं। चित्रविचर्चिका, पामा, दद्रु, कण्डु (खुजली), विसर्पिका, अरुणिका आदि रोगोंमें यह विशेष फलदायक है। बाजारमें जो सुहागा बिकता है, उसे एसेटिक एसिडके जलमें मिला कर दद्रु अथवा कण्डुस्थान धोनेसे लाभ पहुंचता है। अनेक स्थानोंमें फिटकरीकी तरह सोहागेके जलसे यदि कुल्ली की जाय, तो मुखक्षत आरोग्य होता है। डाक्टर लोग तालुमूलप्रदाहमें ग्लिसिरिन्के साथ सोहागा देते हैं जो Boro Glycerine कहलाता है।

इसके सिवा शिल्पविषयमें भी सोहागेकी उपकारिता भरपूर है। छींट छापनेमें हरिद्रादि जो सब रंग काम आता है, सोहागेके जलसे वह पक्का हो जाता है। सभी प्रकारके मिट्टीके बरतन, चीनीबरतन, लोहेके बरतन आदिको चिकने और चमकीले बनानेके लिये सोहागा ही व्यवहृत होता है। सोसेके बरतनमें यदि सोहागेकी कलाई की जाय, तो वह बहुत दिन स्थायी होता है। जिन सब धातुओंके ऊपर मोरचा या दाग पड़ जाता है, उसे परिष्कार करनेके लिये उस पात्रमें सोहागा लगा कर आगमें जलाना होता है। भारतीय जौहरी और स्वर्णकार अनेक समय सोहागेसे कृत्रिम मणि तैयार करते हैं।

सोहागा उत्तम लोहेकी तरह आगमें जलानेसे वह पहले फट जाता और गल कर तरल हो जाता है, बादमें वह बतासेकी तरह फूल उठता है। जब आंच लगनेसे वह अग्निवर्णका होता है और उसमें विन्दुमात्र भी जलका अंश नहीं रहता, तब वह कांचकी तरह सफेद दिखाई देने लगता है। उस अवस्थामें मालाकी तरह सांचेमें ढाल लिया जाता है। वहां अभी रासायनिक परीक्षा के लिये सर्वत्र रखा जाता है। ऐसी एक मालाको उत्तप्त कर उसमें किसी प्रकारका मेटालिक सल्ट मिलाने से उसका रूपान्तर दिखाई देता है। सब अक्सिद आव कपार मिलानेसे वह लाल, फेरस अक्सिद मिलानेसे सब्जवर्ण, कोबाल्ट अक्सिद मिलानेसे नील वर्ण, माङ्गानिज सल्फेट मिलानेसे बैंगनी वर्ण, बोरिक अक्सिद मिलानेसे लालवर्ण इत्यादि सुन्दर सुन्दर वर्ण धारण करता है। इसके सिवा इसकी पचननिवारकता शक्ति वाणिज्यविषयमें सबसे आदरणीय है। जीवमांस, फल, शाक, सब्जी आदि सोहागेके साथ वर्षों प्रकृत अवस्थामें रखे जाते हैं।

सोहागिनी (हिं० स्त्री०) सुहागिन देखो।

सोहागिल (हिं० स्त्री०) सुहागिन देखो।

सोहाता (हिं० वि०) सुहावना, अच्छा।

सोहाना (हिं० क्रि०) १ शोभित होना, सजना। २ रुचिकर होना, अच्छा लगना, रुचना।

सोहाना—पञ्जाबके गुरगांव जिलान्तर्गत गुरगांव तहसील के अधीन एक शहर। यह अक्षा० २८° १५' उ० तथा देशा० ७७ ५ पू० गुरगांव शहरसे १५ मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या ६ हजारसे ऊपर है। यहां पहले हिन्दू राजपूतों और पीछे मुसलमान राजपूतोंने प्रधानता स्थापन की थी। शेषोक्त राजाओंके प्रभावके निदर्शनस्वरूप आज भी यहां प्राचीन मसजिद देखनेमें आती है। यहांसे भगाये जा कर हिन्दू राजपूत वश जाल स्थानमें रहने लगे थे। एक समय कुलदेवताने इन्हें स्वप्न दिया। तदनुसार वे इस स्थान पर फिरसे अधिकार जमानेके लिये अग्रसर हुए और तुमुल युद्धके बाद इस पर अधिकार कर बैठे। तभीसे यह उन्हींके वंशधरों के अधीन चला आ रहा है। १८०३ ई०में यह अंगरेजोंके दखलमें आया। उस समय भरतपुरके जाट लोग यहांके सरदार थे। शहर छोटा होने पर भी उन्नतिशील है। यहां देशी अनाज, चीनी और कांचकी चूड़ीका अच्छा व्यवसाय चलता है। १८८५ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें एक मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल और एक चिकित्सालय है।

सोहावल—१ मध्यभारतके बघेलखण्डका एक देशीय राज्य, जो पोलिटिकल सुपरिण्टेण्डेण्टके अधीन है। यह अक्षा० २४° ३३' से २४° ५०' उ० तथा देशा० ८०° ३५' से ८०° ४६' पू० के मध्य अवस्थित है। यह कोठी द्वारा दो स्वतन्त्र खण्डों में विभक्त है। उत्तरी भाग पन्ना राज्यके अन्तर्गत जमीन

के साथ इस तरह मिला है, कि सोहावलको जमीनका प्रकृत परिमाण निर्णय करना कठिन है। इसका भूपरिमाण लगभग २१३ वर्गमील है। इसमें १८३ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ४० हजारसे ऊपर है, हिन्दूकी संख्या ही अधिक है। कुछ मुसलमान, कोल और गोंड जातिके लोग भी देखे जाते हैं। राजस्व कुल मिला कर डेढ़ लाख रु०के लगभग है। किन्तु इसका प्रायः सभी अंश निष्करखरच और देवोत्तर आदिके कारण राजकोषभुक्त नहीं हो सकता। राजा स्वयं ३२००० रु० पाते हैं। पहले सोहावल राज्य रेवाराज्यके अन्तर्भुक्त था, किन्तु १८वीं सदीके मध्यभागमें रेवापति अमरसिंहके पुत्र फतेसिंहने पितृद्रोही हो अपनेको सोहावलका स्वाधीन राजा कह कर घोषित किया। अंगरेजोंने जब बघेलखण्ड पर अधिकार किया, उस समय उनके वंशोद्भव लाला अमलसिंह यहांके सिंहासन पर अधिष्ठित थे। उन्होंने अंगरेज सरकारकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, इस कारण अंगरेजराजने इन्हींको राजा बनाया। राजाओंकी अविमृश्यकारिता और दुःशासनके लिये गवमेंण्टको अनेक बार इस राज्यके शासनव्यापारमें हस्तक्षेप करना पड़ा है। अन्तिम बार (१८७१ ई०में) राजप्रजा कुल ऋण चुका कर गवमेंण्टने यह राजा लाला शेर जङ्गबहादुर सिंहके हाथ सौंप दिया। उनकी मृत्युके बाद भगवन्त राजबहादुर राजसिंहासन पर बैठे। ये ही वर्त्तमान सरदार हैं। इन्हें वृटिश सरकारका ओरसे राजाकी उपाधि मिली है। ये बघेल राजपूतवंशीय हैं।

शासनकार्यको सुविधाके लिये यह राज्य दो तहसीलमें विभक्त है। राजाको केवल राजकीय-सम्बन्धी सामान्य विषयों पर विचार करनेका अधिकार है। भारी अपराधका विचार पालिटिकल एजेण्ट द्वारा होता है। राजाके पास केवल पचास पुलिसकी फौज है।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४°३५´ उ० तथा देशा० ८०° ४६´ पू०के मध्य सतना नदीके बायें किनारे अवस्थित है। जनसंख्या दो हजारसे ऊपर है। इष्ट इण्डियन रेलवे इलाहाबाद और जब्बलपुरके मध्यवर्ती सतना स्टेशनसे यह ६ मील दूर पड़ता है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई १०५६ फुट है। पहले यहां एक दुर्ग था जो अभी खडहरमें पड़ा है।

सोहाया (हिं० वि०) शोभायमान, सुन्दर।

सोहाल (हिं० पु०) सुहाल देखो।

सोहावना (हिं० वि०) १ सुहावना देखो। (क्रि०) २ सोहाना देखो।

सोहिनी (सं० स्त्री०) १ शोभायमान, सुन्दर। (स्त्री०) २ करुण रसकी एक रागिणी। यह षाडव जातिकी है और इसमें पञ्चम वर्जित है। कोई इसे भैरव रागकी और कोई मेघ रागकी पुत्रवधू मानते हैं। हनुमत्‌के अनुसार यह मालकोश रागकी पत्नी है। इसके गानेका समय रात्रि २६ दंडसे २६ दंड तक है।

सोहिनी (हिं० स्त्री०) झाड़ू, बुहारी।

सोहिल (हिं० पु०) एक तारा जो चन्द्रमाके पास दिखाई पड़ता है, अगस्त्य तारा।

सोहिला (हिं० पु०) सोहला देखो।

सोहीटो (हिं० स्त्री०) ६ या ७ इंच चौड़ी एक लकड़ी जो अपतीके सामने लेवाके नीचे नापकी लवाईमें लगाई जाती है।

सौंधाई (हिं० स्त्री०) अधिकता ज्यादती।

सौंधो (हिं० वि०) १ अच्छा। २ उचित, ठीक।

सौंचर (हिं० पु०) सोचर देखो।

सौंतुख (हिं० पु०) १ प्रत्यक्ष, सम्मुख। (क्रि० वि०) २ आँखोंके आगे, सामने।

सौंदन (हिं० स्त्री०) धोबियोंका वह कृत्य जिसमें वे कपड़ोंको धोनेसे पहले रेह मिले पानीमें भिगोते हैं।

सौंध (हिं० स्त्री०) सुगन्ध, खुशबू।

सौंधना (हिं० क्रि०) १ सौंदना देखो। २ सुगन्धित करना, वासना।

सौंधा (हिं० पु०) सोंधा देखो।

सौंनमक्खी (हिं० स्त्री०) सोनामक्खी देखो।

सौंपना (हिं० क्रि०) १ किसी व्यक्ति या वस्तुको दूसरेके अधिकारमें करना, सपुर्द करना, हवाले करना। २ सहेजना।

सौंफ (हिं० स्त्री०) १ पांच छः फुट ऊंचा एक पौधा जिसकी खेती भारतमें सर्वत्र होती है। विशेष विवरण शतपुष्पा शब्दमें देखो। २ सौंफकी तरहका एक प्रकारका जङ्गली पौधा जो काश्मीरमें अधिकतासे पाया जाता है। इसकी पत्तियां

और फूल सौंफके समान ही होते हैं। फल झुमकोंमें चौथाईसे तीन चौथाई इंच तकके घेरेमें होते हैं। बीज गोल और कुछ चिपटेसे होते हैं। हकीम लोग इसका व्यवहार करते हैं। इसे बड़ा सौंफ, मौरी या मौड़ी भी कहते हैं।

सौंफिया (हिं० स्त्री०) सौंफकी बनी हुई शराब।

सौंफी (हिं० स्त्री०) वह शराब जो सौंफसे बनाई जाती है, सौंफिया।

सौंर (हिं० पु०) १ मिट्टीके बरतन, भाँडे आदि जो सन्तानोत्पत्तिके दसवें दिन अर्थात् सूतक हटने पर तोड़ दिये जाते हैं। २ सौरी देखो।

सौंह (हिं० पु०) सम्मुख, सामने।

सौंहन (हिं० पु०) सोहन देखो।

सौंही (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका हथियार। (अव्य०) २ सौंह देखो।

सौ (हिं० वि०) १ जो गिनतीमें पचासका दूना हो, नव्वे और दश। (पु०) २ नव्वे और दशकी संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

सौक (हिं० स्त्री०) १ किसी स्त्रीके पति या प्रेमीकी दूसरी स्त्री या प्रेमिका, सौत। (वि०) २ एक सौ। (पु०) ३ शौक देखो।

सौकन्य (सं० त्रि०) सुकन्या सम्बन्धी, सुकन्याका।

सौकर (सं० त्रि०) १ सूकर-सम्बन्धी, सूअरका। २ सूअर-सा। ३ वराह-अवतार सम्बन्धी। (पु०) ४ सौकर तीर्थ देखो।

सौकरक (सं० त्रि०) १ सूकर सम्बन्धी, सौकर। (पु०) २ सौकर-तीर्थ।

सौकरतीर्थ (सं० पु०) एक प्राचीन तीर्थका नाम।

सौकरसद्म (सं० त्रि०) सूकरसद्म-सम्बन्धी।

सौकरायण (सं० पु०) सूकर-ढञ्। १ शिकारी, व्याध, अहेरी। २ एक वैदिक आचार्यका नाम।

सौकरिक (सं० पु०) १ सूअरका शिकार करनेवाला। २ व्याध, शिकारी। ३ सूअरका व्यापार करनेवाला।

सौकरीय (सं० त्रि०) सूकर-सम्बन्धी, सूअरका।

सौकर्य (सं० क्ली०) १ सुविधा, सुभीता। २ सुकरका भाव, सुकरता, सुसाध्यता। ३ सूकरका भाव या धर्म, सूकरता, सूअरपन।

सौकीन (फा० पु०) शौकीन देखो।

सौकीनी (फा० स्त्री०) शौकीनी देखो।

सौकुमारक (सं० क्ली०) सुकुमारका भाव या धर्म, सुकुमारता।

सौकुमार्य (सं० क्ली०) सुकुमार ष्यञ्। १ सुकुमारका भाव, सुकुमारता, नाजुकपन। २ यौवन, जवानी। ३ काव्यका एक गुण जिसके लानेके लिये ग्राम्य और श्रुति कटु शब्दोंका प्रयोग त्याज्य माना गया है। (साहित्यद० ८।६१७) (त्रि०) ४ सुकुमार, नाजुक।

सौकृति (सं० पु०) १ एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम। २ उक्त ऋषिके गोत्रका नाम।

सौकृत्य (सं० क्ली०) १ दान, यज्ञादि पुण्यकर्मोंका सम्यक् अनुष्ठान। २ शौकर्म देखो।

सौकृत्यायन (सं० पु०) वह जो सुकृत्यके गोत्रमें उत्पन्न हुआ हो।

सौक्त (सं० पु०) १ एक प्राचीन ऋषिका नाम। २ एक गोत्रका नाम। (संस्कृतकौ०)

सौक्तिक (सं० त्रि०) १ सूक्त-सम्बन्धी, सूक्तका। २ वह जो सिरका आदि बनाता हो, शौक्तिक।

सौक्ष्म (सं० क्ली०) सूक्ष्मता, सूक्ष्मका भाव या धर्म।

सौक्ष्मक (सं० पु०) सूक्ष्मकीट, बारीक कीड़ा।

सौक्ष्म्य (सं० क्ली०) सूक्ष्मका भाव, सूक्ष्मता, बारीकी।

सौख (सं० पु०) सुख अपत्यार्थे (शिवादिभ्योऽण्। पा ४।१।११२) इति अण्। १ सुखका अपत्य। २ सुखका भाव या धर्म, सुख, आराम।

सौखयानिक (सं० त्रि०) स्तावक, भाट।

सौखरात्रिक (सं० त्रि०) वैतालिक, वंदी।

सौखशय्यिक (सं० त्रि०) वैतालिक, वंदी।

सौखशायनिक (सं० त्रि०) वैतालिक, स्तुतिपाठक, वंदी।

सौखशायिक (सं० पु०) स्तुतिपाठक, वैतालिक।

सौखसुप्तिक (सं० त्रि०) सुख सुप्ति ठञ्। वैतालिक, वंदी।

सौखिक (सं० त्रि०) सुख (वेतनादिभ्यो जीवति। पा ४।४।१२) इति ठञ्। सुखार्थी, सुख चाहनेवाला।

सौख्य (सं० क्लो०) सुखमेव स्वार्थे ष्यञ्। १ सुख, आराम। २ सुखका भाव, सुखता।

सौख्यद (सं० लि०) सुखद, सुख देनेवाला।

सौख्यदायक (स० पु०) मुद्ग, मूंग।

सौख्यदायिन् (सं० लि०) सुखद, सुख देनेवाला।

सौगत (सं० पु०) सुगत-अण्। १ सुगतका अनुयायी, बौद्ध। २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। (लि०) ३ सुगत-सम्बन्धी। ४ सुगत मतका।

सौगतिक (सं० पु०) १ बौद्ध धर्मका अनुयायी। २ बौद्ध भिक्षु। ३ नास्तिक, शून्यवादी। ४ अनीश्वरवादी।

सौगन्द (हिं० स्त्री०) शपथ, कसम।

सौगन्ध (स० क्ली०) १ भूतृण, कर्त्तृण, अगिया घास २ सुगन्ध, खुशबू। (पु०) ३ सुगन्धित तेल, इत्र आदिका व्यापार करनेवाला, गंधी। ४ एक वर्णसंकर जाति। महाभारत १३।४८।२२में लिखा है, कि मायोप जीवी कूरसे मागधीके गर्भसे मास, स्वादुकर, क्षौद्र और सौगन्ध इन चार प्रकारकी जातिकी उत्पत्ति हुई। (लि०) ५ शोभन गन्धयुक्त, सुगन्धित, खुशबूदार। (स्त्री०) ६ सौगन्द देखो।

सौगन्धक (सं० क्ली०) नीलपद्म, नीला कमल।

सौगन्धिक (सं० क्ली०) सुगन्ध ठन्, ततः स्वार्थे अण्। १ कर्तृण, अगिया घास। २ रोहिषतृण, रूसा घास। ३ कह्लार, सफेद कमल। ४ रक्त कमल। ५ नील कमल। ६ पद्मरागमणि, पुखराज। (पु०) ७ गन्धक। ८ एक प्रकारका कीड़ा जो श्लेष्मासे उत्पन्न होता है। (चरक विमान १ अ०) ९ दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनोंका समूह, त्रिसुगन्धि। १० एक प्रकारका नपुंसक जिसे किसी पुरुषकी इन्द्री अथवा स्त्रीकी योनि सूंघनेसे उद्दीपन होता है, नासायोनि। ११ एक पर्वतका नाम। १२ सुगन्धित तेल, इत्र आदिका व्यवसाय करनेवाला, गंधी। (लि०) १३ सुगन्धित, सुवासित, खुशबूदार।

सौगन्धिकवन (सं० क्ली०) १ पद्मपुष्पसमाकीर्ण वनभेद, कमलका घना झुंड, कमलका वन या जंगल। (भारत सभापर्व) २ महाभारतके अनुसार एक तीर्थका नाम।

सौगन्धिका (सं० स्त्री०) कुबेरकी नगरीकी नदीका नाम।

सौगन्धिपलक (सं० पु०) श्वेतार्जक, सफेद बबरी।

सौगन्ध्य (सं० क्ली०) सुगन्धस्य भावः ष्यञ्। सुगन्धिका भाव या धर्म, सुगन्धता।

सौगम्य (सं० क्ली०) सुगमका भाव, सुगमता, आसानी।

सौगरिया (हिं० पु०) क्षत्रियोंकी एक जाति या वंश।

सौगात (तु० स्त्री०) वह वस्तु जो परदेशसे इष्टमित्रोंको देनेके लिये लाई जाय, भेंट, नजर।

सौगाती (हिं० वि०) १ सौगातके लायक, उपहारके योग्य। २ उत्तम, बढ़िया, उमदा।

सौचक्य (सं० क्ली०) सूचकका भाव या कर्म।

सौचि (सं० पु०) सौचिक देखो।

सौचिक (सं० पु०) सूच्या जीवतीति सूची ठक्। १ सूचीकर्मोपजीवी, सूचीकर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला, दरजी। २ एक वर्णसंकर जाति। कैवर्त्तकी कन्या तथा शौण्डिकसे इस जातिकी उत्पत्ति हुई है। (पराशरप०)

सौचिक्य (सं० क्ली०) सूचिकका कार्य, दरजीका काम।

सौचित्ति (सं० पु०) वह जो सुचित्तके अपत्य हो।

सौचीक (सं० पु०) १ सूचीकार, दरजी। २ यज्ञमें एक प्रकारकी अग्नि।

सौचुक (सं० पु०) भूतिराजके पिताका नाम।

सौचुक्य (सं० क्ली०) सूचकका भाव या कर्म, सूचकता।

सौज (हिं० स्त्री०) १ उपकरण, सामग्री, साज सामान। (त्रि) २ शक्तिशाली, बलवान, ताकतवर।

सौजन्य (सं० क्ली०) सुजनका भाव, सुजनता, भलमनसत।

सौजस्क (हिं० वि०) सौज देखो।

सौजात (सं० पु०) सुजातके वंशमें उत्पन्न व्यक्ति।

सौजामि (स० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सौड (हिं० पु०) सौड देखो।

सौडल (सं०पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

सौड्ल उपाध्याय—एक न्यायाचार्य। पण्डित यादवव्यासने स्वकृत न्यायसिद्धान्तमञ्जरीसार ग्रन्थमें इनका उल्लेख किया है।

सौण्डी (सं० स्त्री०) पिप्पली, पीपल।

सौत (सं० लि०) १ सूत ऋषिसे उत्पन्न। २ सूतसम्बन्धी, सूतका।

सौत (हिं० स्त्री०) किसी स्त्रीके पति या प्रेमीकी दूसरी स्त्री या प्रेमिका, सौक।
सौतन (हिं० स्त्री०) सौत देखो।
सौतनि (हिं० स्त्री०) सौत देखो।
सौति (सं० पु०) सूतके अपत्य, कर्ण।
सौति (हिं० स्त्री०) सौत देखो।
सौतिक्य (सं० क्ली०) सूतिकका भाव या कर्म।
सौतिन (हिं० स्त्री०) सौत देखो।
सौतेला (हिं० वि०) १ सौतसे उत्पन्न, सौतका। २ जिसका सम्बन्ध सौतके रिश्तेसे हो। जैसे,—सौतेला भाई, सौतेला लड़का।
सौत्य (सं० त्रि०) १ सूत या सारथिसम्बन्धी। २ सुत्यसम्बन्धी, सोमाभिषव-सम्बन्धी। (क्ली०) ३ सूत या सारथिका काम।
सौत्र (सं० पु०) १ ब्राह्मण। सूत्रे पठितं पाणिन्यादिभिः कर्मविशेषाय अण्। २ सूत्रमें पठित धातुविशेष, सौत्रधातु, नित्यधातु, नित्यप्रयोगाभाव धातुविशेष, केवल शब्दविशेषसाधनार्थं स्वीकृत सूत्रनिवेशित धातु विशेष। सूत्रस्येदं अण्। (त्रि०) ३ सूत्र-सम्बन्धी, सूतका।
सौत्रान्तिक (सं० पु०) बौद्धोंका एक भेद। इनके मतसे अनुमान प्रधान है। इनका कहना है, कि बाहर कोई पदार्थ सांगोपांग प्रत्यक्ष नहीं होता, केवल एक देशके प्रत्यक्ष होनेसे शेषका ज्ञान अनुमानसे होता है। ये कहते हैं, कि सब पदार्थ अपने लक्षणसे लक्षित होते हैं और लक्षण सदा लक्ष्यमें वर्त्तमान रहता है।
सौत्रामण (सं० त्रि०) १ इन्द्र-सम्बन्धी, इन्द्रका। (पु०) २ एक दिनमें होनेवाला एक प्रकारका याग, एकाह।
सौत्रामण धनु (सं० पु०) इन्द्र-धनुष।
सौत्रामणी (सं० स्त्री०) इन्द्रके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकारका यज्ञ।
सौत्रिक (सं० पु०) १ ब्राह्मण। २ धातुविशेष। ३ जुलाहा। (क्लि०) ४ कार्पास, कपास।
सौत्वन (सं० पु०) सुत्वनके अपत्य या वंशज।
सौदक्ष (सं० त्रि०) १ सुदक्ष-सम्बन्धी, सुदक्षका। २ सुदक्षसे उत्पन्न।
सौदक्षेय (सं० पु०) सुदक्षके अपत्य या वंशज।
सौदत्त (सं० त्रि०) १ सुदत्त-सम्बन्धी, सुदत्तका। २ सुदत्तसे उत्पन्न। (पा ४।२।७५)
सौदन्ति (सं० पु०) सुदन्तके अपत्य या वंशज।
सौदन्तेय (सं० पु०) सुदन्तके अपत्य। (पा ४।२।१२३)
सौदर्य (सं० त्रि०) १ सहोदर या सगे भाई सम्बन्धी। २ सोदर या भाईका-सा। (पु०) ३ भ्रातृत्व, भाईपन।
सौदर्शन (सं० पु०) प्राचीन उशीनर और वाहीक जाति द्वारा अध्युषित एक ग्राम। (पा ४।२।११८)
सौदा (अ० पु०) १ वह चीज जो खरीदी या बेची जाती हो, क्रय-विक्रयकी वस्तु, माल। २ व्यवहार, लेन-देन। ३ क्रय-विक्रय, खरीद-फरोख्त, व्यापार। ४ खरीदने या बेचनेकी बातचीत पक्की करना।
सौदा (फा० पु०) १ पागलपन, दीवानापन। २ उर्दूके एक प्रसिद्ध कविका नाम।
सौदाई (अ० पु०) जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो, बावला।
सौदागर (फा० पु०) व्यापारी, तिजारत करनेवाला।
सौदागर बच्चा (हिं० पु०) सौदागर अथवा सौदागरका लड़का।
सौदागरी (फा० स्त्री०) सौदागरका काम, व्यापार, तिजारत।
सौदामनी (सं० स्त्री०) सुदामा मेघः पर्वतो वा तेन एकादिक् (तेनैकदिक्। पा ४।३।११२) इति अण्। १ विद्युत, बिजली। २ एक प्रकारका विद्युत या बिजली, मालाकार विद्युत्। (भाग० १।६।८) ३ एक अप्सराका नाम। ४ एक रागिणी जो मेघरागकी सहचरी मानी जाती है। ५ पुराणानुसार कश्यप और विनताकी एक पुत्रीका नाम।
सौदामनीय (सं० त्रि०) सौदामनी या विद्युत्के समान, सौदमनी या विद्युत्-सा।
सौदामिनी (सं० स्त्री०) सौदामनी देखो।
सौदामिनीय (सं० त्रि०) सौदामनीय देखो।
सौदामेय (सं० पु०) सुदामाके अपत्य या वंशज।
सौदाम्नी (सं० स्त्री०) सौदामनी देखो।
सौदायिक (सं० पु०) सुदाय-ठञ्। १ वह धन आदि

जो स्त्रीको उसके विवाहके अवसर पर उसके पिता-माता या पतिके यहांसे मिले। दायभागके अनुसार इस प्रकार मिला हुआ धन स्त्रीका हो जाता है। उस पर उसीका सोलहों आने अधिकार होता है और किसीका कोई अधिकार नहीं होता। (त्रि०) २ दाय-सम्बन्धी, दायका।

सौदास (सं० पु०) इक्ष्वाकुवंशीय राजभेद। श्रीमद्भागवतमें इनका उपाख्यान इस प्रकार लिखा है—इक्ष्वाकुवंशीय राजा ऋतुपर्णके पुत्र सर्वकाम, सर्वकामके पुत्र सुदास और सुदासके पुत्र सौदास थे। दमयन्ती इनकी स्त्रीका नाम था। ये मित्रसह और कल्माषपाद नामसे प्रसिद्ध थे। एक दिन राजा सौदास आखेटको निकले और वहां उन्होंने एक राक्षसका वध किया, परन्तु दयापरवश हो उसके भाईको छोड़ दिया। अब वह भ्रातृहन्ता राजाके अनिष्ट करनेका उपाय सोचने लगा। इस उद्देशसे वह पाचक बन कर राजाके यहां नौकरी करने लगा। एक दिन महर्षि वशिष्ठने राजगृहमें आ कर खाने की इच्छा प्रकट की। वह पाचकरूपी राक्षस नरमांस पका लाया। वशिष्ठको दिव्य चक्षु द्वारा मालूम हो गया और उन्होंने राजाको शाप दिया, 'तुमने मुझे नरमांस दिया है, इस दोषसे तुम राक्षस होगे।' पीछे जब राजा को मालूम हुआ, कि इसमें राजाका कोई दोष नहीं है, तब इस दोषसे छुटकारा पानेके लिये उन्होंने बारह वर्ष तक व्रत ठान दिया।

इधर राजा भी विना अपराधके अभिशप्त हो जलगण्डूष ले गुरुको प्रतिशाप देने उद्यत हुए, परन्तु उनकी पत्नी दमयन्तीके रोकने पर राजाने वह जल अपने पैर पर फेंक दिया। पीछे राजा स्वयं राक्षसभावापन्न हो कल्मषताको प्राप्त हुए और कल्माषपाद राक्षस हो वनमें घूमने लगे। एक दिन उन्होंने रतिक्रीडासक्त एक द्विजदम्पतीको देखा। उस समय उन्हें बहुत भूख लगी हुई थी। भूखसे अत्यन्त प्रपीडित हो उन्होंने दम्पतीमेंसे ब्राह्मणको भोजनार्थ ले लिया। इस पर ब्राह्मणी अत्यन्त कातर हो कहने लगी, 'राजन्! तुम राक्षस नहीं हो, इक्ष्वाकु-वंशधरोंमेंसे एक महावीर हो और तुम्हारी पत्नी दमयन्ती है। अतएव अधर्माचरण करना तुम्हें उचित नहीं। यह विप्र मेरे पति हैं, मैं अपत्यकी कामनासे इन की सेवा करती थी, अब तक भी इनकी रति समाप्त नहीं हुई है, अतएव कृपा करके मेरे पतिको छोड़ दीजिये।' ब्राह्मणीके इस प्रकार अनुनय विनय करने पर भी राक्षसरूपी राजाने कान नहीं दिया और ब्राह्मणको खा ही डाला।

अनन्तर ब्राह्मणीने अत्यन्त क्रुद्ध हो राक्षसको शाप दिया, 'मेरे पतिको रतिसे निवृत्त कर तुमने खा डाला, इस कारण तुम्हारी भी रतिसे मृत्यु होगी।' पतिपरायणा वह ब्राह्मणी राजाको इस प्रकार शाप दे कर पतिकी हड्डियोंको जलती आगमें फेंक आप भी सती हो गई।

पीछे बारह वर्ष बीत जाने पर राजा सौदास वशिष्ठके शापसे मुक्त हुए। इसके बाद वे एक दिन जब मैथुनार्थ उद्यत हुए, तब उनकी महिषीने ब्राह्मणीके शापका स्मरण दिलाते हुए इस कामसे रोका। राजा सौदास तभीसे स्त्रीसुखसे वञ्चित और अपने कर्मदोषसे अपुत्रक हो रहने लगे। कुछ समय बाद इक्ष्वाकुवंश लोप होते देख महर्षि वशिष्ठने राजाकी अनुमति ले कर दमयन्तीके साथ रमण किया। रानीको गर्भ रह गया। सौ वर्ष बीतने पर भी वह किसी तरह प्रसव न कर सकी। पीछे वशिष्ठ मुनि आ कर उस गर्भको पत्थरसे आघात पहुंचाने लगे। अश्म द्वारा गर्भ पर आघात पहुंचानेसे रानीने एक पुत्र प्रसव किया और अश्मक उसका नाम रखा गया।

(भागवत ६।६ अ०) सुदास देखो।

सौदासि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौदेव (सं० पु० सुदेवका पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि (सं० पु०) १ सुद्युम्नका गोत्रापत्य। ये भरत दौःषन्तिके पूर्वपुरुष थे। २ युवनाश्वके पूर्वपुरुष।

सौध (सं० पु० क्ली०) १ भवन, प्रासाद। २ रौप्य, चांदी। ३ दुग्धपाषाण, दुधिया पत्थर। (त्रि०) ४ सुधा सम्बन्धी। ५ पलस्तर या अस्तरकारी किया हुआ, सफेदी।

सौधक (सं० पु०) परावसु गन्धर्वके नौ पुत्रोंमेंसे एक।

सौधकार (सं० पु०) सौधं करोतीति कृ-अण्। सौधनिर्माता, प्रासाद या भवन बनानेवाला, राज।

सौधन्य (सं० त्रि०) सुधनविशिष्ट।

सौधन्वन (सं० पु०) १ सुधन्वाके पुत्र, ऋभुगण। २ एक वर्णसंकर जाति।

सौधर्म (सं० त्रि०) जैनियोंके देवताओंका निवासस्थान, कल्पभवन।

सौधर्मज (सं० पु०) जैन देवगणभेद।

सौधर्मेन्द्र (सं० पु०) जैन साधुभेद।

सौधर्म्य (सं० क्ली०) १ साधुता, सुधर्मका भाव। २ साधुता, भलमनसत।

सौधान (सं० पु०) ब्राह्मण और भृज्जकण्ठीसे उत्पन्न सन्तान। भृज्जकण्ठ एक वर्णसङ्कर जाति थी जो ब्रात्य ब्राह्मण और ब्राह्मणीसे उत्पन्न हुई थी।

सौधातकि (सं० पु०) सुधातके अपत्य।

सौधामित्रिक (सं० त्रि०) सुधामित्रसम्बन्धीय।

सौधार (सं० पु०) नाट्यशास्त्रके अनुसार नाटकके चौदह भागोंमेंसे एकका नाम।

सौधाल (सं० क्ली०) शिवका मन्दिर, शिवालय।

सौधालय (सं० पु०) सौध, सौधरूप आलय।

सौधावति (सं० पु०) सुधावतो गोत्रापत्यं (बाह्वादिभ्यश्च। पा ४।१।९७) इति इञ्। सुधावत्के गोत्रापत्य।

सौधृतेय (सं० पु०) सुधृतिके पुत्र।

सौन (सं० क्ली०) १ कसाई, बूचड़। २ वह ताजा मांस जो बिक्रीके लिये रखा हो। (त्रि०) ३ पशुवधशाला या कसाईखानेका, पशुवधशाला-संबंधी।

सौनन्द (सं० क्ली०) बलदेवका मूषल।

सौनन्दा (सं० स्त्री०) वत्सप्री राजाकी कन्या।

सौनन्दी (सं० पु०) बलरामका एक नाम जो अपने पास सौनन्द नामक मूषल रखते थे।

सौनव्य (सं० पु०) सूनो गोत्रापत्य (गर्गादिभ्यो यञ्। पा ४।१।१०५) इति यञ्। सूनुके अपत्य।

सौनव्यायनी (सं० पु०) सौनव्यकी अपत्य स्त्री।

सौनहोत्र (सं० पु०) १ वह जो शुनहोत्रके गोत्रमें उत्पन्न हुआ हो, शुनहोत्रके अपत्य। २ गृत्समद ऋषि।

सौनहोत्रि (सं० पु०) शौनहोत्रि देखो।

सौनाग (सं० पु०) वैयाकरणोंकी एक शाखाका नाम जिसका उल्लेख पतञ्जलिके महाभाष्यमें है।

सौनामि (सं० पु०) सुनामन् अपत्यार्थे बाह्वादित्वात् इञ्। (पा ४।१।९७) सुनामके गोत्रापत्य।

सौनिक (सं० पु०) १ मांसविक्रयकर्त्ता, मांस बेचनेवाला, कसाई। २ कौटिक, बहेलिया।

सौनीतेय (सं० पु०) सुनीतिके पुत्र ध्रुव।

सौन्दर्य (सं० क्ली०) सुन्दर-ष्यञ्। सुन्दर होनेका भाव या धर्म, सुन्दरता, रमणीयता, खूबसूरती।

सौप (सं० त्रि०) सुपां व्याख्यानः (तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्य नाम्नः। पा ४।३।६६) इति अण्। १ सुपका व्याख्यायुक्त ग्रन्थ। सुप्सु भवं अण्। २ सुप् प्रत्यय करनेसे जो होता है। व्याकरणके मतसे सुप् प्रत्ययके बाद जो सब कार्य होते हैं, उसे सौप कहते हैं।

सौपथि (सं० पु०) सुपथके अपत्य।

सौपर्ण (सं० क्ली०) सुपर्ण-अण्। १ मरकत, पन्ना। २ शुण्ठी, सोंठ। ३ गरुड पुराण। ४ गारुत्मतमन्त्र। (पु०) ५ गरुड। ६ ऋग्वेदका एक सूक्त। (त्रि०) ७ सुपर्ण अथवा गरुड सम्बन्धी, गरुडका।

सौपर्णकेतव (सं० त्रि०) विष्णु-सम्बन्धी, विष्णुका।

सौपर्णव्रत (सं० क्ली०) गरुड-सम्बन्धी व्रत, गारुडव्रत।

सौपर्णी (सं० स्त्री०) पातालगारुडी लता।

सौपर्णीकाद्रव (सं० त्रि०) सुपर्णी और कद्रु-सम्बन्धीय।

सौपर्णेय (सं० पु०) सुपर्ण्या अपत्य पुमानिति। (स्त्रीभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०) इति ढक्। १ सुपर्णीके पुत्र गरुड़। २ गायत्र्यादि छन्द।

सौपर्ण्य (सं० त्रि०) १ सौपर्ण। (ऐतरेयब्रा० ३।२५) (क्ली०) २ पक्षिस्वभाव।

सौपर्ण्यवत् (सं० त्रि०) पक्षिसदृश।

सौपर्व (सं० त्रि०) सुपर्वसम्बन्धीय।

सौपस्तम्बि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौपाक (सं० पु०) एक वर्णसङ्कर जाति जिसका उल्लेख महाभारतमें है।

सौपातव (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौपामायनि (सं० पु०) सुपामाके गोत्रापत्य।

सौपिक (सं० त्रि०) सूप (व्यञ्जनैरुपसिक्ते। पा ४।४।२६) इति ढक्। १ सूप द्वारा उपसिक्त, सूप या व्यञ्जन डाला हुआ। २ सूप या व्यञ्जन सम्बन्धी।

सौविष्ट (सं० पु०) सुविष्ट शिवादित्वादण् (पा ४।१।११२)। वह जो सुविष्टके गोत्रमें उत्पन्न हुआ हो, सुविष्टका गोत्रज।
सौविष्टी (सं० पु०) सुविष्टके गोत्रापत्य ऋषिभेद।
सौवुध्वि (सं० पु०) सुवुध्न अपत्यार्थे इञ्। सुवुध्नके गोत्रापत्य।
सौप्तिक (सं० क्ली०) १ रात्रि युद्ध, रातको सोते हुए मनुष्यों पर आक्रमण। २ महाभारतके दशवें पर्वका नाम। इसमें सोने हुए पाण्डवों पर आक्रमण करनेका वर्णन है। (त्रि०) ३ सुप्त सम्बन्धी।
सौप्रस्थ (सं० पु०) सुप्रस्थके गोत्रापत्य।
सौप्रजास्त्व (सं० क्ली०) शोभनापत्यत्व, अच्छी सन्तानोंका होना।
सौप्रतीक (सं० त्रि०) १ सुप्रतीक, दिग्गज संबंधी। १ हाथी-सम्बन्धी।
सौफ (हिं० स्त्री०) सौंफ देखो।
सौफिया (हिं० स्त्री०) रूसा नामकी घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।
सौफियाना (हिं० वि०) सोफियाना देखो।
सौबल (सं० पु०) सुवल-अण्। सुवलपुत्र शकुनि।
सौबलक (सं० पु०) १ सुवलका पुत्र शकुनि। (त्रि०) २ सौबल संबंधी, सौबलका।
सौबली (सं० स्त्री०) १ सुवलकी पुत्री, गांधारी। (त्रि०) २ सौबल संबंधी, सौबलका।
सौबलेय (सं० पु०) सौबल, शकुनि।
सौबलेयी (सं० स्त्री०) गांधारीका एक नाम।
सौबल्य (सं० पु०) एक प्राचीन जनपदका नाम।
सौबिगा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बुलबुल। यह पश्चिम भारतको छोड़ कर प्रायः समस्त भारतमें पाई जाती और ऋतुके अनुसार रंग बदलती है। यह लम्बाईमें प्रायः एक बालिश्तसे कुछ कम होती है। इसके ऊपरके पर सदा हरे रहते हैं। यह कीड़े मकोड़े खाती और एक बारमें तीन अंडे देती है।
सौबीर (सं० पु०) सौवीर देखो।
सौभ (सं० क्ली०) १ राजा हरिश्चन्द्रकी उस कल्पित नगरीका नाम जो आकाशमें मानी गई है, कामचारी पुर। २ शाल्वोंके एक नगरका नाम। ३ एक प्राचीन जनपदका नाम। ४ उक्त जनपदके राजा।
सौभकि (सं० पु०) द्रुपदका एक नाम।
सौभग (सं० क्ली०) सुभगस्य भावः अण्। १ सौभाग्य, सुभग होनेका भाव। २ सुख, आनन्द। ३ ऐश्वर्य, संपदा। ४ सुन्दरता सौन्दर्य। ५ वृहच्छ्लोकके एक पुत्रका नाम। (त्रि०) ६ सुभग वच्छ्लोंसे उत्पन्न या बना हुआ।
सौभगत्व (सं० पु०) सुख आनन्द।
सौभद्र (सं० पु०) सुभद्रा-अण्। १ सुभद्रापुत्र, अभिमन्यु। सुभद्रा प्रयोजनमस्य (संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः। पा ४।३।५६) इति अण्। २ वह युद्ध जो सुभद्राहरणके कारण हुआ था। ३ एक तीर्थका नाम जिसका उल्लेख महाभारतमें है। ४ ग्रन्थविशेष। सुभद्राको ले कर जो ग्रन्थ रचा गया, उसीको सौभद्र कहते हैं। (त्रि०) ५ सुभद्रा-सम्बन्धी।
सौभद्रेय (सं० पु०) सुभद्रा (स्त्रीभ्यो ढक्। पा ४।१।१२०) इति ढक्। १ सुभद्राके पुत्र, अभिमन्यु। २ विभीतक वृक्ष, बहेड़ा।
सौभर (सं० पु०) १ मुनिविशेष। (क्ली०) २ सामभेद। (त्रि०) ३ सोभरि सम्बन्धो, सोभरिका।
सौभरायण (सं० पु०) सौभरका गोत्रापत्य।
सौभरि (सं० पु०) एक ऋषि। विष्णुपुराण और भागवत आदि पुराणोंमें इनका विवरण इस प्रकार आया है—यह ऋषि अत्यन्त तपःपरायण थे। संसारको दुःखमय जान कर इन्होंने विवाह नहीं किया था। यमुनाके जलमें निमग्न रह कर ये तपस्या करते थे। एक दिन जलमें मीनराजका मैथुन देख ये बड़े प्रसन्न हुए और इनकी भी उस ओर प्रवृत्ति झुकी।

अनन्तर यमुनाके जलसे निकल कर ये मथुरा गये और मान्धातासे पत्नीके लिये एक कन्या प्रार्थना की। मान्धाताने उत्तरमें कहा था, 'मेरी कन्याएं स्वयम्वरा होंगी, वहां यदि वे आपके गलेमें माला डालें, तो आप उन्हें ले सकते हैं।'

अनन्तर ऋषिने तपके प्रभावसे कमनीय रूप धारण किया। एक दिन राज-कन्याएं उनका कन्दर्पकमनीय रूपकला देख कर विमोहित हुईं और सबोंने मिल कर उनके गलेमें माला डाल दी। सौभरि मन्त्रशक्तिसम्पन्न

थे, उनके तपःप्रभावसे ५० भवन बन गये और प्रत्येक भवनमें अमूल्य परिच्छद, दास दासियां, महामूल्य शय्या, आसन, वसन, भूषण, स्नान और अनुलेपनादि सुशोभित होने लगे। अनन्तर ऋषि सभी भवनोंमें सभी वनिताओंके साथ रात दिन विहार करने लगे।

अनन्तर किसी समय बहवृचाचार्य नामक ऋषि उनसे मिलने आये और एकान्तमें बैठ कर कहने लगे, 'भोगलालसासे आपकी तपस्याका नाश होता जा रहा है, क्या आपको यह मालूम नहीं ?' उनकी बात सुन कर सौभरिको चैतन्य हो आया। अब उन्होंने संसारका त्याग कर फिरसे तपस्या द्वारा भगवानकी सेवा करनेका संकल्प किया। वानप्रस्थधर्मका अवलम्बन कर वे वन चले गये। उनकी पत्नियां अत्यन्त पतिपरायणा थीं, इस कारण वे भी उनके साथ साथ चलीं। वनमें सौभरि एकाग्रचित्तसे तपस्या करने लगे। उन तत्त्वज्ञ मुनिने जिससे आत्मसाक्षात्कार लाभ हो, वैसी तीव्र तपस्या करके अग्नित्रयके साथ आत्माको परमात्मामें योग कर दिया। उनकी पत्नियां पतिकी इस प्रकार आध्यात्मिक गति अर्थात् परब्रह्ममें विलय देख अग्निशिखा जिस प्रकार निर्वाणप्राप्त अनलका अनुगमन करती है, उसी प्रकार ऋषिके तपःप्रभावसे वे लोग भी उनकी सहगामिनी हुई। (भागवत ९।६ अ०)

सौभव (सं० पु०) प्राचीन वैयाकरणभेद।

सौभागिनी (हिं० स्त्री० सधवा स्त्री, सोहागिन।

सौभागिनेय (सं० पु०) सुभगा इति ढक् इनडादेशश्च इति उभयपदवृद्धिः। सुभगापुत्र, उस स्त्रीका पुत्र जो अपने पतिको प्रिय हो।

सौभाग्य (सं० क्ली०) सुभगा-अण् (हृद्भगेति। पा ७।३।१९) इत्युभयपदवृद्धिः। १ सिंदूर। २ टङ्कण, सुहागा। ३ अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत। ४ सुख, आनन्द। ५ कल्याण, कुशल,क्षेम। ६ स्त्रीके सधवा रहनेकी अवस्था, अहिवात। ७ अनुराग। ८ ऐश्वर्य, वैभव। ९ सुन्दरता, खूबसूरती। १० मनोहरता। ११ मङ्गलकामना, शुभ कामना। १२ साफल्य, सफलता। १३ ज्योतिषके मतसे योगभेद, विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगोंके अन्तर्गत चतुर्थ शुभयोग। इस योगमें जन्म लेनेसे जातक सौभाग्यशाली, लोगोंके निकट श्लाघनीय, धनवान, गुणज्ञ, उदारचित्त, बलवान्, विवेकयुक्त, अतिशय अभिमानी और प्रियभाषी होता है। १४ व्रतविशेष। यह व्रत करनेसे सौभाग्यकी वृद्धि होती है। १५ एक प्रकारका पौधा।

सौभाग्यचिन्तामणि (सं० पु०) सन्निपात ज्वरकी एक औषध। प्रस्तुत प्रणाली—सुहागेका लावा, विष, जीरा, मिर्च, हड, बहेडा, आंवला, सेंधा, कर्कट, विट, सांचर और सांभर नमक, अभ्रक और गंधक, ये सब चीजें बराबर बराबर ले कर खरल करते हैं। फिर निर्गुंडी शेफालिका, भृङ्गराज, अडूस और अपामार्गके पत्तोंके रसमें अच्छी तरह भावना देनेके उपरान्त एक एक रत्तीकी गोली बनाते हैं। सन्निपातिक ज्वरकी यह उत्तम औषध मानी गई है।

सौभाग्य तृतीया (सं० स्त्री०) भाद्रमासकी शुक्ला तृतीया। यह तिथि मन्वन्तरा है।

सौभाग्य मण्डन (सं० पु०) हरताल।

सौभाग्यव्रत (सं० क्ली०) व्रतविशेष। फाल्गुन मासकी शुक्ला तृतीया तिथिसे यह व्रत किया जाता है। वराह पुराणमें इसका बड़ा माहात्म्य वर्णित है। यह व्रत स्त्री पुरुष दोनोंके लिये सौभाग्यदायक बताया गया है।

सौभाग्यवती (सं० त्रि०) १ जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो, जिसका पति जीवित हो। २ अच्छे भाग्यवाली।

सौभाग्यवान् (सं० त्रि०) जिसका भाग्य अच्छा हो, अच्छे भाग्यवाला।

सौभाग्यशयनव्रत (सं० क्ली०) व्रतविशेष।

सौभाग्यशुण्ठी (सं० स्त्री) सूतिका रोगाधिकारोक्त मोदकौषध। इस औषधका सेवन करनेसे सभी प्रकारके सूतिका रोग, पिपासा, वमि, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, कास, प्लीहा, और कृमि नष्ट होते हैं तथा मन्दाग्नि प्रदीप्त होती है। (भावप्रकाश)

सौभाग्याष्टकतृतीयाव्रत (सं० क्ली०) व्रतभेद।

सौभाञ्जन (सं० पु०) शोभाञ्जन वृक्ष।

सौभासिक (सं० त्रि०) समुज्ज्वल, प्रकाशवान्, चमकीला।

सौभिक (सं० पु०) इन्द्रजालिक, जादूगर। (हारा०)

सौभिक्ष (सं० त्रि०) १ सुभिक्षकर, सुसमय लानेवाला।

(पु०) २ घोड़ोंको होनेवाला एक प्रकारका शूलरोग, जो भारी और चिकने पदार्थ खानेसे होता है।

सौभिक्ष्य (सं० पु०) खाद्यपदार्थकी प्रचुरता, अन्नकी अधिकता आदिके विचारसे अच्छा समय।

सौभूत (सं० त्रि०) सुभूतसम्बन्धीय। (पा ४।२।७५)

सौमेय (सं० पु०) सौम देशवासी।

सौमेषज (सं० त्रि०) जिसमें सुभेषज या उत्तम औषधियां हों, उत्तम औषधियोंसे युक्त।

सौभ्रव (सं० क्ली०) सामभेद।

सौभ्रात्र (सं० क्ली०) सुभ्राताका भाव या धर्म, अच्छा भाईचारा।

सौम (सं० त्रि०) १ सोमलता-संबंधी। २ चन्द्र सम्बन्धी।

सौमक (स० पु०) सोमकका गोत्रापत्य।

सौमक्रतव (सं० पु०) एक सामका नाम।

सौमङ्गल्य (सं० क्ली०) सु मङ्गल भावे ष्यञ्। १ सुमङ्गल, कल्याण। २ मङ्गल सामग्री।

सौमतायन (स० पु०) सुमतके गोत्रापत्य।

सौमतायनक (सं० पु०) सौमतायन-सम्बन्धीय।

सौमदत्ति (सं० पु०) सोमदत्तके पुत्र, जयद्रथ।

सौमदायन (सं० पु०) सुमदके गोत्रापत्य।

सौमन (सं० पु०) १ एक प्रकारका अस्त्र। २ पुष्प, फूल।

सौमनस (सं० त्रि०) १ प्रसून या पुष्पसंबंधी, फूलोंका। २ मनोहर, रुचिकर। (पु०) ३ प्रफुल्लता, आह्लाद। ४ पश्चिम दिशाका हाथी। ५ कर्ममास या सावनके आठवीं तिथि। ६ एक पर्वतका नाम। ७ अनुग्रह, कृपा। ८ जातीफल, जायफल। ९ अस्त्रोंका एक संहार, अस्त्र निष्फल करनेका एक अस्त्र।

सौमनसा (सं० स्त्री०) १ जातीपत्री, जावित्री। २ एक नदीका नाम।

सौमनसायन (सं० पु०) सुमनाके गोत्रापत्य।

सौमनसायिनी (सं० स्त्री०) १ जातीपुष्प। २ जातीपत्र।

सौमनसी (सं० स्त्री०) कर्ममास अर्थात् सावन मासकी पांचवीं रात।

सौमनस्य (सं० क्ली०) १ श्राद्धमें पुरोहित या ब्राह्मणके हाथमें फूल देना। यह पुष्प मनको प्रसादजनक हो, इस प्रकार प्रार्थना करनी होती है। २ प्रसन्नचित्तता, आनन्द। ३ प्लक्षद्वीपके अन्तर्गत एक वर्षका नाम जहांके देवता सौमनस्य माने जाते हैं। ४ सुबोधता। (त्रि०) ५ आनंद देनेवाला, प्रसन्नता देनेवाला।

सौमनस्यवत् (सं० त्रि०) सौमनस्ययुक्त, संतुष्टचित्त।

सौमनस्यायनी (सं० स्त्री०) मालतीपुष्पकी कली।

सौमना (सं० स्त्री०) १ पुष्प, फूल। २ कलिका, कली। ३ एक दिव्यास्त्रका नाम।

सौमन्त्र (सं० पु०) सुमन्त्रिकथित।

सौमपौष (सं० क्ली०) सामभेद, सोम और पूषासम्बन्धीय साम।

सौमपोषिन् (सं० पु०) ऋषिविशेष।

सौममित्रिक (सं० त्रि०) सोम और मित्र सम्बन्धीय।

सौमराज्य (स० पु०) सोमराजके गोत्रापत्य।

सौमात्र (सं० पु०) सुमातुरपत्यं इति (मातुरुत्संख्यासंभद्र-पूर्वायाः। पा ४।१।११५) इति अण्। सुमातःके पुत्र।

सौमाप (सं० पु०) सोमापके गोत्रापत्य।

सौमापौष्ण (सं० पु०) १ सोमपूष देवता, जिनके अधिष्ठाता देव सोम और पूषा हैं। (त्रि०) २ सोम और पूषणका।

सौमायन (सं० पु०) सोमके अपत्य, चन्द्र, बुध।

सौमायनक (सं० त्रि०) सौमायन-सम्बन्धीय।

सौमारौद्र (सं० त्रि०) सोम और रुद्रदैवत, सोम और रुद्र-सम्बन्धी।

सौमिक (सं० त्रि०) १ सोम रससे किया जानेवाला। २ सोम यज्ञ संबंधी। ३ सोम अर्थात् चन्द्रमा सम्बन्धी। ४ सोमायण या चान्द्रायण व्रत करनेवाला। (पु०) ५ सोमरस रखनेका पात्र।

सौमिकी (सं० स्त्री०) सौमिक-ठक। १ दीक्षणीयेष्टि, एक प्रकारका यज्ञ। २ सोमलताका रस निचोड़नेकी क्रिया।

सौमित्र (सं० पु०) १ सुमित्राके पुत्र, लक्ष्मण। २ कई नामोंके नाम। ३ मित्रता, दोस्ती।

सौमित्रि (सं० पु०) १ सुमित्रानन्दन लक्ष्मण। २ एक आचार्यका नाम।

सौमित्रेय (सं० त्रि०) सौमित्रि-सम्बन्धीय।

सौमिल (सं० पु०) एक प्राचीन कवि।

सौमिलिक (सं० क्ली०) बौद्ध भिक्षुओंका एक प्रकारका दण्ड जिसमें रेशमका गुच्छा लगा रहता है।

सौमिल्ल (सं० पु०) सौमिल देखो।

सौमिवि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौमिश्रि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौमी (सं० स्त्री०) चन्द्रकिरण।

सौमुख्य (सं० क्ली०) १ सुमुखता। २ प्रसन्नता।

सौमुत्रि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौमेचक (सं० पु०) सुवर्णाद, सोना।

सौमेध (सं० क्ली०) सामभेद।

सौमेधिक (सं० पु०) १ सिद्ध, मुनि। (त्रि०) २ शोभन मेधासम्बन्धी।

सौमेन्द्र (सं०त्रि०) सोम और इन्द्रसम्बन्धीय, सोम और इन्द्रका।

सौमेरव (सं० त्रि०) १ सुमेरुसम्बन्धीय, सुमेरुका। (पु०) २ सुवर्ण, सोना। ३ इलावृत खण्डका एक नाम।

सौमेरुक (सं० क्ली०) १ सुवर्ण, सोना। (त्रि०) २ सुमेरु सम्बन्धी, सुमेरुका।

सौम्य (सं० पु०) सोमात्मज। १ बुधग्रह। २ विप्र, ब्राह्मण। ३ उडुम्बर वृक्ष, गूलर। ४ ज्योतिषके मतसे वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीनराशि। ५ भूखण्डविशेष। ६ सौम्यकृच्छ्रव्रत। इसमें पांच दिन क्रमसे खली, भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रह कर छठे दिन उपवास करना होता है। (गरुडपु० १०५।८) ७ ब्राह्मणोंके पितृगण। ८ सोमयज्ञ। ९ भक्त, उपासक। १० दायां हाथ। ११ यज्ञके यूपका नीचेसे पन्द्रह अरत्निका स्थान। १२ लाल होनेके पूर्वकी रक्तकी अवस्था। १३ पित्त। १४ मार्गशीर्ष मास, अगहन। १५ साठ संवत्सरोंमेंसे एक। इस वर्षमें अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी आदिसे फसलको हानि पहुंचती, रोग फैलता और राजाओंमें शत्रुता होती है। १६ ज्योतिषमें सातवें युगका नाम। १७ सुशीलता, सज्जनता। १८ मृगशिरा नक्षत्र। १९ वामनेत्र, बाईं आंख। २० हथेलीका मध्य भाग। २१ एक दिव्यास्त्र।

(त्रि०) २२ सोम लता-सम्बन्धी। २३ सोमदेवता-सबंधी। २४ चन्द्रमा संबन्धी। २५ शीतल और स्निग्ध, ठंढा और रसीला। २६ सुशील, शान्त। २७ उत्तरको ओरका। २८ माङ्गलिक, शुभ। २९ प्रफुल्ल, प्रसन्न। ३० मनोहर, सुन्दर। ३१ उज्ज्वल, चमकीला।

सौम्यकृच्छ्र (सं० पु०) व्रतविशेष। सौम्य देखो।

सौम्यगन्धा (सं० स्त्री०) शतपत्री, सेवती।

सौम्यगन्धी (सं० स्त्री०) शतपत्री, सेवती।

सौम्यगिरि (सं० स्त्री०) एक पर्वतका नाम।

सौम्यगोल (सं० पु०) उत्तर गोलार्द्ध की चन्द्रकिरणवत् रश्मि, सुमेरुस्थ दिव्यरश्मि।

सौम्यग्रह (सं० पु०) शुभग्रह। जैसे,—चन्द्र, बुध, वृहस्पति, शुक्र। फलित ज्योतिषमें ये चारों शुभ माने गये हैं।

सौम्यज्वर (सं० पु०) ज्वरभेद। यह वात और कफके प्रकोपसे उत्पन्न होता है। इसमें शरीरमें कभी उष्ण, कभी शीतल, ये दो विभिन्न भाव तथा साधारण ज्वरके सभी लक्षण दिखाई देते हैं। (चरक नि० ३ अ०)

सौम्यता (सं० स्त्री०) १ सौम्य होनेका भाव या धर्म। २ शीतलता, ठंढक। ३ सुशीलता, शान्तता। ४ सुन्दरता, सौन्दर्य। ५ परोपकारिता, उदारता।

सौम्यदर्शन (सं० त्रि०) प्रियदर्शन, जो देखनेमें सुन्दर हो।

सौम्यधातु (सं० पु०) कफ, श्लेष्मा।

सौम्यवार (सं० पु०) बुधवार।

सौम्यवासर (सं० पु०) बुधवार।

सौम्यशिखा (सं० स्त्री०) छन्दःशास्त्रमें मुक्तक विषम वृत्तके दो भेदोंमेंसे एक। इसके पूर्व दलमें १६ गुरु वर्ण और उत्तर दलमें ३२ लघु वर्ण होते हैं।

सौम्या (सं० स्त्री०) १ दुर्गा। २ माहेन्द्रवारुणी, बड़ी इन्द्रायन। ३ रुद्रजटा, शङ्करजटा। ४ महाज्योतिष्मती बड़ी मालकंगनी। ५ महिषवल्ली, पताल गारुडी। ६ गुञ्जा, घुंघची। ७ शालपर्णी, सरिवन। ८ ब्राह्मी। ९ शटी, कचूर। १० मल्लिका, मोतिया। ११ मोती, मुक्ता। १२ मृगशिरा नक्षत्र। १३ मृगशिरा नक्षत्र पर रहनेवाले पांच तारोंका नाम। १४ आर्या छन्दका एक भेद।

सौम्यी (सं० स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी।

सौयवस (सं० पु०) १ कई सामोंके नाम। २ तृण या घासकी प्रचुरता।

सौयामि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

सौयामुन (सं० पु०) सुयामुनके गोत्रापत्य।

सौर (सं० पु०) १ सूर्यके पुत्र, शनि। २ बीसवें कल्पका नाम। ३ धनिया। ४ तुम्बुरु। ५ एक सामका नाम। ६ दाहिनी आँख। ७ सूर्यका राशिभोगावच्छिन्न मासादि सौरमास, सौर दिन आदि। सूर्य जिस राशिमें रहते हैं, वह राशिभोग्य मास है। स्मृतिशास्त्रमें लिखा है, कि जो सब कर्म सूर्यभोग्य राशिका उल्लेख कर कहे गये हैं, वे सब कर्म सौरमासका उल्लेख कर करना होगा। जिन सब कर्मोंमें सूर्यभोग्यराशिका उल्लेख नहीं है, वे सब कर्म चान्द्रमासका उल्लेख कर करने होते हैं। विवाहादि संस्कारकर्म सौर मासका उल्लेख कर करना होता है।

तान्त्रिक सभी कार्यामें सौरमासका उल्लेख करना होता है।

८ सूर्योपासक, सूर्यका भक्त। शाक्त, शैव, वैष्णव, सौर और गाणपत्य ये ही पांच प्रकारके उपासक हैं। इनमेंसे जो भगवान् सूर्यकी उपासना करते हैं, वे सौर कहलाते हैं। इन लोगोंके मतसे भगवान् सूर्य ही परम ब्रह्म हैं। उन्हीं से इस जगत्‌की सृष्टि, स्थिति और प्रलय होता है, वे ही एकमात्र उपास्य हैं। सूर्य और आदित्य देखो।

'ब्रह्मजालसुत्त' नामक पालिग्रन्थसे जाना जाता है, कि भगवान् बुद्ध इस श्रेणीके सूर्यपूजक ब्राह्मण ज्योतिषियोंको बड़ी अवज्ञाकी दृष्टिसे देखते थे।

भविष्य, वराह और शाम्बपुराणमें सूर्यमूर्त्तिपूजाके प्राचीनत्वका प्रमाण मिलता है। इन तीनों ही ग्रन्थोंमें लिखा है, कि कुरुक्षेत्रयुद्धके बाद श्रीकृष्णके पुत्र शाम्ब कुष्ठरोगग्रस्त हुए। पीछे उन्होंने सूर्यदेवकी उपासना और आराधना कर उस रोगसे मुक्तिलाभ किया। यह पूजा करनेके लिये उन्हें शाकद्वीपसे सूर्यपूजाभिज्ञ ब्राह्मण लाने पड़े थे। पहले उन ब्राह्मणोंकी साधारण आख्या मग रहने पर भी पीछे ये लोग मग, सोमक और भोजक इन तीन श्रेणियोंमें विभक्त हुए। मग लोग अग्निके उपासक, सोमक सोमके उपासक और सोमोद्भूत तथा भोजक सूर्यके उपासक और सूर्योद्भूत माने गये हैं। भोजक ब्राह्मण देखो।

पारसिक धर्मशास्त्र अवस्थाका मिहिरयस्त पढ़नेसे जाना जाता है, कि एक समय सूर्योपासक और अग्न्युपासकोंमें विवाद हुआ। उसी समय शाकद्वीपी सूर्योपासक ब्राह्मण सपरिवार भारतवर्ष आये। इस विवादका काल वर्त्तमान युगके ४१०० वर्ष पहले निर्द्धारित हुआ है। इधर भविष्यपुराणमें शाम्बकी सूर्यपूजाके सम्बन्धमें जिन सब बातोंका उल्लेख है, उनसे शाकद्वीपी ब्राह्मणोंका भारतवर्षमें आगमन काल प्रायः ४३५७ वर्ष पहले साबित होता है। इस प्रकार दो विभिन्न स्थानके ग्रन्थमें ही जब ४ हजार वर्षका पूर्ववर्त्ती काल निर्द्धारित हुआ है, तब मालूम होता है, कि ऐसा अनुमान करना उतना असङ्गत नहीं होगा, कि ४ हजार वर्ष पहले सूर्य मूर्त्तिपूजा भारतवर्षमें प्रचलित हुई थी।

मूल शाम्बपुरका नाम शाम्बके नामानुसार रखा गया है। यही वर्त्तमान मूलतान शहर है। चीनपरिव्राजक यूएनचुवंगने मूलतानमें सूर्यकी एक सुवर्णमय मूर्त्ति देखी थी।

भारतवर्षमें सूर्यपूजाके प्रथम प्रवर्त्तन सम्बन्धमें रियाजुल् सलातिन नामक ग्रन्थमें इस प्रकार लिखा है, "राय महाराज (इन्हींको फेरिस्ताने राय बहदाज-(भर द्वाज-बताया है) के समय पारस्यसे किसी आदमीने आ कर भारतवासीको सूर्यपूजामें प्रवर्त्तित किया।"

"गौडाः शाक्तोद्भवाः सौरा मागधाः केरलास्तथा।
कोशलाश्च दशार्णाश्च गुरवः सप्त मध्यमाः॥"
(तन्त्रसार १ पंक्ति)

९ सूर्य सम्बन्धी, सूर्यका। १० सूर्यसे उत्पन्न। ११ सूर्यका अनुसारी। १२ दिव्य सुर या देवता-संबंधी।

सौरग्रीव (सं० पु०) एक प्राचीन देशका नाम।

सौरज (सं० पु०) १ तुम्बुरु वृक्ष। २ धान्यक, धनिया। (त्रि०) ३ सौरजात।

सौरठवाल (हिं० पु०) वैश्योंकी एक जाति।

सौरण (सं० त्रि०) सूरण सम्बन्धीय, ओलका।

सौरत (सं० क्ली०) १ रतिक्रीडा, केलि। (त्रि०) २ सुरत-सम्बन्धीय।

सौरत्य (सं० क्लो०) सम्भोग, सुरतसुख।
सौरदिवस (सं० पु०) एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदय तक-का समय, ६० दण्डका समय।
सौरध्री (सं० स्त्री०) वाद्ययन्त्रविशेष, एक प्रकारका तंबूरा या सितार।
सौरनक्त (सं० क्लो०) व्रतविशेष। रविवारको हस्ता नक्षत्र होने पर यह व्रत करना होता है।
सौरपात (सं० पु०) सूर्योपासक, सूर्यपूजक।
सौरपरिकर (सं० पु०) सूर्यके चारों ओर भ्रमण करनेवाले ग्रहोंका मण्डल, सौर जगत्।
सौरर्षि (सं० पु०) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।
सौरभ (सं० क्लो०) १ कुङ्कुम, केसर। २ सुगन्ध, महक। ३ तुम्बुरु नामक गंधद्रव्य। ४ धान्यक, धनिया। ५ बोल, हीराबोल। ६ एक प्रकारका मसाला। ७ आम्र, आम। ८ एक सामका नाम। (त्रि०) ९ सुगन्धयुक्त, खुशबूदार। १० सुरभि वा गायसे उत्पन्न।
सौरभक (सं० पु०) छन्दोभेद। इसके पहले चरणमें सगण, जगण, सगण और लघु; दूसरेमें नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरेमें रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथेमें सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है।
सौरभमय (सं० त्रि०) सौरभयुक्त, सुगन्धित।
सौरभित (सं० त्रि) सौरभयुक्त, महकनेवाला।
सौरभेय (सं० पु०) १ वृष, सांड़। (त्रि०) २ सुरभि-सम्बन्धी।
सौरभेयक (सं० पु०) वृष, सांड।
सौरभेयी (सं० स्त्री०) सुरभि-ढक्, ङीप्। १ गाभी, गाय। २ एक अप्सराका नाम।
सौरभ्य (सं० क्लो०) सुरभि-ष्यञ्। १ मनोज्ञता, खुबसूरती। २ सुगन्ध, खुशबू। ३ कीर्त्ति, प्रसिद्धि। (पु०) ४ कुवेर।
सौरमास (सं० पु०) वह महीना जो सूर्यकी किसी एक राशिमें रहने तक माना जाता है, एक संक्रान्तिसे दूसरी संक्रान्ति तकका समय।

सूर्य एक वर्षमें क्रमसे मेष, वृष आदि बारह राशियोंको भोग करता है। एक राशिमें यह प्रायः ३० दिन रहता है। प्रायः इतने दिनका ही एक सौरमास होता है।
सौरवर्ष (सं० पु०) सौरसंवत्सर देखो।
सौरसंवत्सर (सं० पु०) सूर्यका द्वादश राशि भोगाव-च्छिन्न काल, उतना काल जितना सूर्यको मेष, वृष आदि बारह राशियों पर घूम आनेमें लगता है।

सूर्यकी यही वार्षिकी गति है। इस वार्षिकी गति द्वारा एक सौर वर्ष होता है। सूर्य शब्द देखो।
सौरस (सं० पु०) १ सुरसा नामक पौधेसे निकला या बना हुआ। २ सुरसाका अपत्य या पुत्र। ३ जूं। ४ नमकीन रसा या शोरवा।
सौरसिद्धान्त (सं० पु०) ज्योतिषका एक सिद्धांत ग्रन्थ।
सौरसूक्त (सं० पु०) ऋग्वेदके एक सूक्तका नाम जिसमें सूर्यकी स्तुति है।
सौरसेन (सं० पु०) शूरसेन देखो।
सौरसेय (सं० पु०) १ स्कन्द, कार्त्तिकेय। (त्रि०) २ सुरसाई।
सौरसैन्धव (सं० त्रि०) सुर-सिन्धु-अण्। १ गङ्गा सम्बन्धी, भीष्मादि। (पु०) २ सूर्यघोटक, सूर्यका घोड़ा।
सौरस्य (सं० पु०) सुरसता, रसीला होनेको भाव।
सौराकि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।
सौराज्य (सं० क्लो०) सुशासन, सुराज्य।
सौराटी (सं० स्त्री०) एक रागिणी।
सौराव (सं० पु०) नमकीन रशा या शोरवा।
सौराष्ट्र (सं० पु०) सुराष्ट्र एव अण्। १ गुजरात-काठियावाड़का प्राचीन नाम, सूरतके आस-पासका प्रदेश। २ उक्त प्रदेशका निवासी। ३ कांस्य, कांसा। ४ मल्लकी निर्यास, कुंदरु नामक गंधद्रव्य। ५ एक वर्णवृत्तका नाम। (त्रि०) ६ सोरठ देशका।
सौराष्ट्रक (सं० क्लो०) १ पञ्चलौह। २ एक प्रकारका विष। ३ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेशका रहनेवाला। (त्रि०) ४ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश-सम्बन्धी, सोरठ देशमें उत्पन्न।
सौराष्ट्र-मृत्तिका (सं० स्त्री०) गोपी-चन्दन।
सौराष्ट्रा (सं० स्त्री०) तुवरी, गोपी-चन्दन।
सौराष्ट्रिक (सं० त्रि०) १ सौराष्ट्र देशसम्बन्धी, गुजरात-काठियावाड संबंधी। (पु०) २ सोरठ देशका निवासी।

३ कांसा नामको धातु। ४ एक प्रकारका विषैला कन्द। इसके पत्ते पलाशके पत्तोंसे मिलते जुलते हैं। यह काले अगरके समान काला और गुग्गुलकी तरह चिपटा और फैला हुआ होता है।

सौराष्ट्री (सं० स्त्री०) १ सौराष्ट्रदेशीय सुगन्ध मृत्तिका। गुण—कफ, पित्त, विसर्प और व्रणनाशक, तिक्त, कटु कषाय, अस्त्र, लेखन, चक्षुका हितकर, ग्रहणी, छर्दि और पित्तज सन्तापनाशक। २ गोपीचन्दन। वैष्णव लोग इसी मिट्टीका तिलक लगाते हैं।

सौराष्ट्रेय (सं० त्रि०) सौराष्ट्रभव, गुजरात-काठियावाड़का।

सौरास्त्र (सं० पु०) एक प्रकारका दिव्यास्त्र।

सौरि (सं० पु०) १ शनि। २ असनवृक्ष, विजैसार। ३ आदित्यभक्ता, हुलहुलका पौधा। ४ एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि। ५ दक्षिणका एक प्राचीन जनपद।

सौरिक (सं० पु०) सुर ठक्। १ स्वर्ग। सुरा ठक्। २ सुराविक्रयकर्त्ता, वह जो शराब बेचता है, कलाल। सौरि स्वार्थे क। ३ शनैश्चर। (त्रि०) ४ स्वर्गीय। ५ सुरा या मद्य संबंधी।

सौरिकीर्ण (सं० पु०) दक्षिणका एक प्राचीन जनपद।

सौरिन्ध्र (सं० पु०) १ जनपदविशेष, ईशान कोणमें स्थित एक प्राचीन जनपद। (बृहत्स० १४।२९) २ उक्त देशका निवासी।

सौरिरत्न (सं० क्ली०) नीलकान्त मणि, नीलम् नामक मणि।

सौरी (सं० स्त्री०) १ सूर्यकी अपत्य पत्नी। २ सूर्यकी और कुरुकी माता तपती, वैवस्वती। ३ गौ, गाय। ४ आदित्यभक्ता, हुलहुलका पौधा।

सौरी (हिं० स्त्री०) १ वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने, जच्चाखाना। २ शष्कुली मत्स्य, एक प्रकारकी मछली। भावप्रकाशके अनुसार इसका मांस मधुर, कसैला और हृद्य है।

सौरीय (सं० त्रि०) सूर्य-छ। १ सूर्यसम्बन्धी, सूर्यका। (पु०) २ एक वृक्ष जिसमेंसे विषैला गोंद निकलता है। ३ इस वृक्षसे निकला हुआ विष।

सौरेय (सं० पु०) शुक्ल झिण्टावृक्ष, सफेद कटसरैया। गुण—कुष्ठ, वात, कफ, कण्डु और विषनाशक, तिक्त, उष्ण, मधुर, दंतरोगमें हितकर, सुस्निग्ध और केशरञ्जक।

सौरेयक (सं० पु०) सौरेय देखो।

सौरोहिक (सं० पु०) सुरोहिकायाः अपत्यं (शिवादिभ्योऽण् पा ४।१।११२) इति अण्। सुरोहिकाके अपत्य।

सौरोहितिक (सं० पु०) सुरोहितिकाके अपत्य।

सौर्य (सं० त्रि०) सूर्य-अण्। १ सूर्यसम्बंधी, सूर्यका। (पु०) २ सूर्यका पुत्र, शनि। ३ एक संवत्सरका नाम। ४ हिमालयके दो शृङ्गोंका नाम।

सौर्यचान्द्रमस (सं० त्रि०) सूर्य और चंद्रमासम्बन्धीय।

सौर्यपृष्ठ (सं० पु०) एक सामका नाम।

सौर्यप्रभ (सं० त्रि०) सूर्यप्रभासम्भूत।

सौर्यभगवत् (सं० पु०) एक प्राचीन वैयाकरणका नाम जिनका उल्लेख पतंजलिके महाभाष्यमें है।

सौर्ययाम (सं० पु०) सूर्य और यम सम्बंधीय।

सौर्यवर्चस (सं० पु०) सूर्यवर्चसके गोत्रापत्य।

सौर्यवैश्वानर (सं० त्रि०) सूर्य और वैश्वानरसंबंधीय।

सौर्यायणि (सं० पु०) सौर्यके गोत्रापत्य।

सौर्यायणि (सं० पु०) गर्ग्यवंशीय ऋषिविशेष।

सौर्यिन् (सं० पु०) हिमालय पर्वत।

सौर्योदयिक (सं० त्रि०) सूर्योदयसम्बंधी।

सौलक्षण्य (सं० पु०) शुभ या अच्छे लक्षणोंका होना, सुलक्षणता।

सौलभ (सं० पु०) सुलभ कर्तृक अधीत।

सौलभ्य (सं० पु०) सुलभता।

सौला (हिं० पु०) १ राजगीरोंका शाकुल, साहुल। २ हलके जूएके उपरकी गाड़।

सौलाभ (सं० पु०) सुलभलभ्य, आसानीसे मिलनेयोग्य

सौलाभ्य (सं० पु०) सुलाभीका अपत्य।

सौलोह्य (सं० पु०) सुलोहिनका अपत्य।

सौल्विक (सं० पु०) सुल्व ठक्। ताम्रकुट्टक, ठठेरा।

सौव (सं० त्रि०) १ स्वसम्बन्धी। २ स्वर्गीय। ३ स्वःसम्बन्धी। (शुक्लयजु० १३।५१)

सौवक्षसेय (सं० पु०) सुवक्षसके गोत्रापत्य।

सौवग्रामिक (सं० त्रि०) स्वग्रामभव वस्तु, जो वस्तु अपने ग्राममें होती हो।

सौवर (सं० त्रि०) स्वर-सम्बन्धी।

सौवर्चनस (सं० पु०) सुवर्चनसके गोत्रापत्य।

सौवर्चल (सं० क्ली०) १ सुवर्चल देशजात लवण, सोंचर नमक। गुण—रुचिकारक, उष्णवीर्य, निर्मल, कटु, गुल्म, शूल और विबन्धनाशक, कुछ पित्तवर्द्धक, लघु, ऊर्ध्व वात और आमशूलनाशक। (राजनि०) २ सर्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी। (त्रि०) ३ सुवर्चल-सम्बन्धी।

सौवर्चला (सं० स्त्री०) रुद्रकी पत्नीका नाम।

सौवर्ण (सं० त्रि०) १ सुवर्ण-सम्बन्धी। २ कर्षमित हेमसम्बन्धी। (पु०) ३ एक कर्ष भर सुवर्ण। ४ सुवर्ण-निर्मित कर्णालङ्कार, सोनेकी बाली। (क्ली०) ५ सुवर्ण, सोना।

सौवर्णनाभ (सं० पु०) सुवर्णनाभके शिष्य।

सौवर्णभेदिनी (सं० स्त्री०) प्रियंगु, फूलफेन।

सौवर्णरेतस (सं० पु०) सुवर्णरेतसके गोत्रापत्य।

सौवर्णिक (सं० त्रि०) सुवर्ण निर्मित, सोनेका बना हुआ। सुवर्णसम्बन्धीय, सोनेका। (पु०) २ स्वर्ण-कार, सुनार।

सौवर्णिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका विषैला कीड़ा।

सौवश्व (सं० पु०) स्वश्व राजाके पुत्र। (ऋक् १।६१।१५)

सौवश्य (सं० पु०) घुड़दौड़।

सौवस्तिक (सं० पु०) १ पुरोहित। (त्रि०)। २ मङ्गला-काङ्क्षी, स्वस्ति कहनेवाला।

सौवात (सं० त्रि०) सुवातयुक्त, भवन निर्माणकी कुश-लतासे युक्त।

सौवाध्यायिक (सं० त्रि०) स्वाध्याययुक्त, वेदपाठ करनेवाला।

सौवास (सं० पु०) एक प्रकारकी सुगन्धित तुलसी।

सौवासिनी (सं० स्त्री०) सुवासिनी देखो।

सौवास्तव (सं० त्रि०) १ सुवास्तुयुक्त, अच्छी कारी-गरीका। २ अच्छे स्थान पर बना हुआ।

सौविद (सं० पु०) अन्तःपुर या रणिवासका रक्षक, कञ्चुकी।

सौविदल्ल (सं० पु०) अन्तःपुररक्षक।

सौविदल्लक (सं० पु०) सौविदल्ल देखो।

सौविष्टकृत् (सं० त्रि०) स्विष्टकृत् अग्निसंबन्धीय।

सौविष्टि (सं० पु०) स्विष्टके गोत्रापत्य।

सौवीर (सं० पु०) १ सिन्धु नदके आस-पासके एक प्राचीन प्रदेशका नाम। सिन्धु देखो। २ बदर, बेरका पेड़ या फल। ३ काञ्जिक। पके या अधपके जौकी भूसी निकाल कर उससे जो कांजी बनाई जाती है, उसे सौवीर कहते हैं। गेहूंकी बनी हुई कांजीको भी कोई कोई सौवीर कहते हैं। इसका गुण ग्रहणीरोगनाशक, अर्शघ्न, कफनाशक, भेदक, अग्निदीप्तिकारक तथा उदा-वर्त्त, अङ्गमर्द, अस्थि, शूल और आनाहरोगमें विशेष प्रशस्त है। ४ स्रोतोऽञ्जन, सुरमा। ५ बृहद्बदर, बड़ी बेर। ६ सौवीराञ्जन, नीलाञ्जन। ७ रसाञ्जन।

सौवीरक (सं० क्ली०) १ काञ्जिकविशेष। गुण—अम्लरस, केशवर्द्धक, मस्तकदोष, जरा और शैथिल्यनाशक, बल कारक, सन्तर्पण। (राजनि०) २ जयद्रथका एक नाम।

सौवीरपाण (सं० पु०) वाह्लीक देशवासी, वाह्लीक। उक्त देशवासी जौ या गेहूंकी कांजी बहुत पिया करते थे, इसीसे उनका यह नाम पड़ा है।

सौवीरसार (सं० क्ली०) स्रोतोऽञ्जन, सुरमा।

सौवीराञ्जन (सं० क्ली०) अञ्जनविशेष, सुरमा। गुण—शीतल, कटु, तिक्त, कषाय, चक्षुका हितकर, कफवात और विषनाशक तथा रसायन। (राजनि०)

चक्रदत्तके मतानुसार इसकी आकृति वाल्मीकके अग्रभागकी तरह और तोड़ने पर नीलोत्पलकी तरह चम-कीला मालूम होता है।

सौवीराम्ल (सं० क्ली०) सौवीर काञ्जिविशेष, जौ या गेहूं-की कांजी।

सौवीरिका (सं० स्त्री०) बेरका पेड़ या फल।

सौवीरी (सं० स्त्री०) १ सङ्गीतमें एक प्रकारकी मूर्च्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—म, प, ध, नि, स, रे, ग, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म। २ सौवीर-की राजकुमारी।

सौवीर्य (सं० पु०) १ सौवीरके राजा। २ महान् वीरता, बहुत अधिक पराक्रम।

सौवीर्या (सं० स्त्री०) सौवीरकी राजपुत्री।
सौव्रत्य (सं० क्ली०) सुव्रतका भाव।
सौशब्द्य (सं० क्ली०) सुशब्दका भाव। सुप् और तिङ् की व्युत्पत्तिका नाम सौशब्द है।
सौशमि (सं० पु०) सुशमके गोत्रापत्य।
सौशाम्य (सं० पु०) सुशान्ति, सुशमता।
सौशर्मक (सं० त्रि०) सुशर्मके अदूरभव देशादि।
सौशर्मण (सं० त्रि०) सुशर्म-सम्बन्धीय।
सौशर्मि (सं० पु०) सुशर्मके गोत्रापत्य।
सौशल्य (सं०पु०) जनपदविशेष। इसका नाम सौवल्य भी है।
सौशाम्य (सं० क्ली०) उत्तमरूप शाम्य।
सौशील्य (सं० क्ली०) सुशीलका भाव, विशुद्ध स्वभाव, साधुता।
सौश्रय (सं० पु०) ऐश्वर्य, वैभव।
सौश्रव (सं० पु०) ऋषिविशेष।
सौश्रवस (सं०पु०) १ सुश्रवाके अपत्य, उपगु। २ सुकीर्त्ति, सुयश। ३ दो सामोंके नाम। (त्रि०) ४ जिसका अच्छा नाम या यश हो, कीर्त्तिमान्।
सौश्रुत (सं० त्रि०) सुश्रुत-अण्। १ सुश्रुतसम्बन्धीय। २ सुश्रुतका रचा हुआ। (पु०) ३ वह जो सुश्रुतके गोत्रमें उत्पन्न हुआ हो।
सौषद्मन (सं० पु०) सुषद्मनके गोत्रापत्य।
सौषाम (सं० क्ली०) सामभेद।
सौषिर (सं० पु०) १ मसूड़ोंका एक रोग। इसमें कफ और पित्तके विकारसे मसूड़े सूज जाते हैं, उनमें दर्द होता है और लार गिरती है। २ वह यन्त्र जो वायुके जोरसे बजता हो, फूंक कर या हवा भर कर बजाया जानेवाला बाजा। जैसे,—वंशी, तुरही, शहनाई आदि।
सौषिर्य (सं० पु०) पोलापन।
सौषुम्ण (सं० पु०) सूर्यकी किरणोंमेंसे एक।
सौष्ठव (सं० क्ली०) सुष्ठु भावः, इति अण्। १ आतिशय्य। २ उपयुक्तता, सुडौलपन। ३ सौन्दर्य, सुन्दरता। ४ क्षिप्रता, तेजी। ५ शरीरकी एक मुद्रा। ६ नाटकका एक अंग।
सौष्मिकि (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिभेद।

सौसन (फा० पु०) सोसन देखो।
सौसनी (फा० पु०) सोसनी देखो।
सौसाम (सं० पु०) सुसामनके गोत्रापत्य।
सौसुक (सं० क्ली०) नगरभेद। इसका उल्लेख महाभारतमें है।
सौसुराद (सं० पु०) पुरीषजात कृमिभेद, विष्ठामें होनेवाला एक प्रकारका कीड़ा।
सौस्त्र (सं० क्ली०) सुस्त्रीका भाव।
सौस्थित्य (सं० क्ली०) सुस्थित ष्यञ्। १ अच्छी स्थिति। २ ग्रहोंका शुभ स्थानमें होना। वृहत्संहितामें लिखा है, कि ग्रहोंका सौस्थित्य अर्थात् शुभ स्थानमें स्थिति देख कर राजा यदि आक्रमण करे, तो वह कमजोर होने पर भी विजयी होता है।
सौस्थ्य (सं० क्ली०) सुस्थ-ष्यञ्। सुस्थका भाव।
सौस्नातिक (सं० त्रि०) यज्ञान्तस्नानकारी, यह प्रश्न कि यज्ञके उपरान्त स्नान सफल हुआ या नहीं।
सौस्वर्य (सं० क्ली०) सुस्वर ष्यञ्। सुस्वरता, सुरीलापन।
सौहँ (हिं० स्त्री०) १ शपथ, कसम। (क्रि० वि०) २ सामने, आगे।
सौहन (हिं० पु०) पैसेका चौथाई भाग, छदाम।
सौहर (फा० पु०) शौहर देखो।
सौहरा (हिं० पु०) ससुर।
सौहविष (सं० क्ली०) सामभेद।
सौहार्द (सं० क्ली०) १ मित्रता, मैत्री। २ सुहृद् या मित्रका पुत्र।
सौहार्दनिधि (सं० पु०) रामका एक नाम।
सौहार्घ (सं० क्ली०) मित्रता, दोस्ती।
सौहित्य (सं० क्ली०) १ तृप्ति, संतोष। २ मनोरमता, मनोज्ञता। ३ पूर्णता।
सौहीं (फा० स्त्री०) १ एक प्रकारकी रेती। २ एक प्रकारका हथियार। (क्रि० वि०) ३ सामने, आगे।
सौहृद (सं० क्ली०) सुहृद्-अण्। १ मित्रता, सख्य। २ मित्र, दोस्त। ३ एक प्राचीन जनपद। (महाभारत) (त्रि०) ४ सुहृद् या मित्र सम्बन्धी।
सौहृदय (सं० पु०) सौहार्द, दोस्ती।

सौहृद्य (सं० क्ली०) सौहार्द्द, मित्रता, दोस्ती।
सौहोत्र (सं० पु०) सुहोत्रके अपत्य, अजमीढ और पुरु मीढ नामक वैदिक ऋषि।
सौह्म (सं० पु०) सुह्म देशके राजा।
स्कंक (अं० पु०) अमेरिकामें मिलनेवाला एक प्रकारका काले रंगका जानवर। इसका शरीर अठारह तसू और पूंछ बारह तसू लम्बी होती है। गरदनसे पूंछ तक दो सफेद धारियां होती हैं और माथे पर सफेद टीका होते हैं। नाक लम्बी, पर पतली तथा कान छोटे और गोल होती है। बाल लंबे और मोटे होते हैं। इसके शरीरसे ऐसी दुर्गंध आती है, कि पास ठहरा नहीं जाता।
स्कन्दृ (सं० लि०) छलांग मारनेवाला, उछलनेवाला।
स्कन्द (सं० पु०) १ कार्त्तिकेय, कुमार। भविष्यपुराणके मतसे स्कन्द कुमाररूप, शक्तिधर और मयूरवाहन हैं। देवसेनापति होनेके कारण इनका दूसरा नाम कार्त्ति-केय है। श्रु धातुका अर्थ गति है। शीघ्र गतिशील होनेके कारण ये स्रोत नामसे भी परिचित हैं। ये सूर्य-के अनुचर हैं। (भविष्यपु० ब्राह्मप० १२४ अ०)

पारसिकोंके जेन्द अवस्तामें ये 'स्रउशावरेज' नामसे प्रसिद्ध हैं। बौद्धग्रन्थ ललितविस्तरसे जाना जाता है, कि बुद्धदेवके जन्मकालमें यह स्कन्दपूजा प्रचलित थी।

कुमार, कार्त्तिक और कौमार शब्द देखो।

२ देवोंका द्वारपालविशेष। कालिकापुराणमें लिखा है, कि शरत्कालमें महानवमी तिथिको यवचूर्ण द्वारा इसकी मूर्त्ति तथा मृत्तिका द्वारा शत्रुकी मूर्त्ति बना कर स्कन्दकी पूजा करनेके बाद शत्रुको बलि देनी होती है।

३ महादेव। ४ नृपति। ५ शरीर। ६ पारद। ७ नदीतट। ८ पण्डित। ९ बालग्रहविशेष।

बालग्रहोंमें स्कन्द श्रेष्ठ हैं। शरवनस्थ कार्त्तिकेयकी रक्षा करनेके लिये कृत्तिका, उमा, अग्नि और महादेव इन्होंने अपने अपने तेजके प्रभावसे बालग्रहोंकी सृष्टि की। इनमेंसे देवदेव त्रिपुरारिने स्कन्दग्रहकी भी सृष्टि की। इस स्कन्दग्रहका दूसरा नाम कुमार है। किंतु ये कार्त्ति-केय जब देवसेनापतिपद पर नियुक्त हुए, तब स्कन्दादि ग्रहोंने उनसे कहा, 'आप हम लोगोंकी वृत्ति निर्द्धारण कर दें।' इस पर कार्त्तिकेयने उन सबोंको महादेवके पास भेज दिया। महादेवने उनसे कहा, बालकोंके प्रति तुम लोगोंका वृत्तिविधान स्थिर किया गया अर्थात् तुम लोग दोषानुष्ठान देख कर जब बालकके शरीरमें अधिष्ठित होगे, तभी लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

स्कन्दग्रह जब बालक पर आक्रमण करता है, तब बालक कभी उद्विग्न और कभी त्रासयुक्त हो रोने लगता है, कभी नाखून और दांतसे अपने या पृथिवीको विदारण करता है। ऊपरकी ओर आंख उठाये रखता है। दांत पीसता है, आर्त्तनाद करता है, ओंठ चबाता है और पहलेकी तरह भोजन नहीं कर सकता। जृम्भा, बलह्रास, देहकी मलिनता, स्तन्यावरोध, दोनों भ्रूका कम्पन, पुनः पुनः फेनवमन, अत्यन्त निद्रानाश, स्वरभङ्ग और अतीसार आदि उपद्रव होते हैं तथा शरीरसे मछली और रक्त-सी गंध निकलती है।

इसकी चिकित्सा—भेरडेके पत्तोंके काढ़ेसे इसका परिषेक करने पर स्कन्द ग्रहदोष प्रशमित होता है। देव-दारु, रास्ना और जीवनीयगणके कल्क और दुग्ध द्वारा घृत पाक कर पान करानेसे यह दोष दूर होता है। सर्षप सर्पत्वक्, वच, श्वेतगुञ्जा, घृत, उष्ट्ररोम, छागरोम, मेष रोम तथा गरुडरोम द्वारा धूप देनेसे भी स्कन्दग्रहजन्य दोष नष्ट होता है।

स्कन्दग्रहके उद्देशसे यदि बलि दी जाय, तो उक्त ग्रह प्रसन्न हो कर बालकको छोड देता है और तब बालक बड़े प्रसन्नसे रहता है। (भावप्र०)

स्कन्दक (सं० पु०) १ वह जो उछले। २ सैनिक, सिपाही। ३ एक प्रकारका छंद।
स्कन्दगुप्त (सं० पु०) १ गुप्तवंशके एक प्रसिद्ध सम्राट्। इनका समय ४५० से ४६७ ई० तक माना जाता है। ये गुप्तवंशके प्रतापी सम्राट् समुद्रगुप्तके प्रपौत्र थे। इन्होंने पुष्यमित्र, हूणों तथा नागवंशियोंको परास्त किया था। इनका दूसरा नाम क्रमादित्य भी था।

गुप्तराजवंश देखो।

२ हर्षवर्द्धनका एक सेनापति और दूत।
स्कन्दगुप्त (सं० पु०) शिव, महादेव।
स्कन्दग्रह (सं० पु०) स्कन्द नामक बालग्रह। स्कन्द देखो।

स्कन्दजननी (सं० स्त्री०) पार्वती।
स्कन्दजित् (सं० पु०) स्कन्दको जीतनेवाले विष्णुका एक नाम।
स्कन्दता (सं० स्त्री०) स्कन्दका भाव या धर्म।
स्कन्दन (सं० क्ली०) स्कन्द-ल्युट्। १ रेचन, कोठा साफ होना। (सुश्रुत १।१४।२) २ गमन, जाना। ३ शोषण, सोखना। ४ निकलना, बहना। ५ खूनका जमना।
स्कन्दपुर (सं० पु०) राजतरङ्गिणी-वर्णित एक प्राचीन नगरका नाम।
स्कन्दपुराण (सं० क्ली०) अठारह पुराणोंमेंसे एक प्रसिद्ध पुराण। पुराण देखो।
स्कन्दफला (सं० स्त्री०) खर्जुर वृक्ष, खजूर।
स्कन्दमातृ (सं० स्त्री०) स्कन्दस्य माता। दुर्गा।
स्कन्दराज (सं० पु०) महाभारतोक्त राजभेद।
स्कन्देश्वरतीर्थ (सं० पु०) एक प्राचीन तीर्थका नाम।
स्कन्दविशाख (सं० पु०) शिवका एक नाम।
स्कन्दषष्ठी (सं० स्त्री०) १ चैत्र मासकी शुक्ला षष्ठी। इसी तिथिमें स्कन्द देवसेनापतिपद पर अभिषिक्त हुए थे।

यह षष्ठी तिथि पञ्चमीयुक्त ग्राह्य है अर्थात् पञ्चमीयुक्त षष्ठी तिथिमें ही षष्ठीको उपवासादि होगे।

स्त्रियां इस षष्ठी तिथिमें स्कन्दकी पूजा करके ६ अशोक पुष्पको कली खाती हैं। इस दिन अशोकको कली खानेसे उनका शोक और भय दूर होता है।

२ षष्ठी नामसे प्रसिद्ध देवीमूर्त्तिभेद। तन्त्रमें इन्हें स्कन्दकी भार्या कहा है। षष्ठी देखो। तन्त्रसारमें स्कन्द षष्ठीका ध्यान इस प्रकार लिखा है,—

"ओं द्विभुजां युवतीं षष्ठीं वराभययुतां स्मरेत्।
गौरवर्णां महादेवीं नानालङ्कारभूषिताम्॥
दिव्यवस्त्रपरिधाना वामक्रोडे सुपुत्रिकाम्।
प्रसन्नवदना नित्या जगद्धात्रीं सुखप्रदाम्॥
सर्वलक्षणसम्पन्ना पीनोन्नतपयोधराम्।
एवं ध्यायेत् स्कन्दषष्ठीं सर्वदा विन्ध्यवासिनीम्॥"

स्कन्दस्वामी (सं० पु०) वैदिक निघण्टु और निरुक्त भाष्यकार। इनका दूसरा नाम रुद्रस्कन्द स्वामी था।
स्कन्दांशक (सं० पु०) पारद, पारा। कहते हैं कि शिवजीके वीर्यसे पारेकी उत्पत्ति हुई है, इसीसे इसे स्कन्दांशक या शिवांशक कहते हैं।
स्कन्दापस्मार (सं० पु०) बालग्रहविशेष। इस ग्रहके बालकमें आश्रय लेने पर बालक अचेतन होता है तथा उसके मुखसे हमेशा फेन निकलता रहता है। वह फिरसे चैतन्य लाभ करके नृत्य करनेकी तरह हाथ पाव सञ्चालन करता है, हमेशा जँभाई लेता है और मलमूत्र विलम्बसे उतरता है।

बिल्व, शिरीष, श्वेतदूर्वा और सुरक्षादिगण इनके क्वाथ द्वारा परिषेक करने पर स्कन्दापस्मारग्रह प्रशमित होता है। गो, छाग, मेष, महिष, अश्व, गर्दभ, उष्ट्र और हस्ती इन आठ पशुओंके मूत्र द्वारा तैल पाक कर शरीरमें लगानेसे भी यह नष्ट होता है।

वटवृक्षके मूलमें पकान्न, मांस, प्रसन्ना, रुधिर, दुग्ध और मुद्गान्न द्वारा बलि देनेसे उक्त ग्रह प्रसन्न होते हैं तथा स्कन्दापस्मारी द्वारा चौराहे पर स्नान करा कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़नेसे यह दोष जाता रहता है। मंत्र इस प्रकार है—

"स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः स्कन्दस्य दयितः सखा।
विशाखं स शिशोरस्य शिवायास्तु शुभाननः॥"

स्कन्दापस्मारी (सं० त्रि०) स्कन्दापस्मार ग्रहयुक्त, जिस पर स्कन्दापस्मार ग्रहका आक्रमण हुआ है।
स्कन्दित (सं० त्रि०) स्खलित, पतित।
स्कन्दी (सं० त्रि०) १ बहनेवाला, गिरनेवाला। २ उछलनेवाला, कूदनेवाला।
स्कन्दिलाचार्य (सं० पु०) प्रसिद्ध जैनाचार्य।
स्कन्देश्वर तीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष।
स्कन्दोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्भेद।
स्कन्दोल (सं० त्रि०) १ शीतल, सर्द। (पु०) २ शीतलता, ठंढक।
स्कन्ध (सं० पु०) १ अवयवविशेष, कंधा। २ वृक्षको या तनेका वह भाग जहांसे ऊपर चल कर डालियाँ निकलती हैं। पर्याय—प्रकाण्ड, काण्ड, दण्ड। ३ नृपति, राजा। ४ शाखा, डाल। ५ समूह, गरोह। ६ व्यूह सेनाका अंग। ७ ग्रंथका विभाग जिसमें कोई पूरा प्रसङ्ग हो, खंड। जैसे, भागवतका दशम स्कन्ध।

८ मार्ग, पथ। ९ शरीर, देह। १० वह वस्तु जिसका राज्याभिषेकमें उपयोग हो। जैसे,—जल, छत्र आदि। ११ आचार्य, मुनि। १२ युद्ध, संग्राम। १३ संधि, राजीनामा। १४ कंक पक्षी, सफेद चील। १५ एक भागका नाम। १६ आर्याछन्दका एक भेद। १७ बौद्धोंके अनुसार विज्ञानादि पांच स्कन्ध।

रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पांच स्कन्ध हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंधादि इस विषयप्रपञ्चका नाम रूपस्कन्ध, शब्दादि विषयप्रपञ्चका नाम वेदनास्कन्ध, आलयविज्ञान संतानका नाम विज्ञान स्कन्ध, नामप्रपञ्चका नाम संज्ञास्कन्ध और वासनाप्रपञ्चका नाम संस्कारस्कन्ध है। बौद्ध लोग पञ्चस्कन्धके अतिरिक्त और पृथक् आत्माको स्वीकार नहीं करते।

१८ दर्शन-शास्त्रके अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये पांच विषय हैं।

स्कन्धक (सं० क्ली०) आर्यागीत या खंधा नामक छन्दका एक नाम।

स्कन्धचाप (सं० पु०) वंशादिनिर्मित शिक्यधान, बहंगी जिस पर कहार बोझ ढोते हैं।

स्कन्धज (सं० पु०) १ शल्लकी वृक्ष, सलई। २ वट वृक्ष, बड़।

स्कन्धतरु (सं० पु०) नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़।

स्कन्धदेश (सं० पु०) १ हाथीकी गरदन जिस पर महावत बैठता है, आसन। २ कंधा, मोढा। ३ पेड़का तना या धड़।

स्कन्धपरिनिर्वाण (सं० पु०) बौद्धोंके अनुसार शरीरके पांचो स्कन्धोंका नाश, मृत्यु।

स्कन्धपाद (सं० पु०) पुराणोक्त गिरिभेद।

स्कन्धप्रदेश (सं० पु०) स्कन्धदेश। (अमर)

स्कन्धफल (सं० पु०) १ नारिकेलवृक्ष, नारियलका पेड़। २ उदुम्बर वृक्ष, गूलर।

स्कन्धफला (सं० स्त्री०) खर्जूरवृक्ष, खजूर।

स्कन्धबन्धना (सं० स्त्री०) स्कन्धे बन्धनमिवास्याः। मधुरिका, सौंफ।

स्कन्धबन्धन (सं० पु०) मधुरिका, सौंफ।

स्कन्धमल्लक (सं० पु०) स्कन्धेन मल्ल इव कन्। कङ्क पक्षी, सफेद चील।

स्कन्धमय (सं० त्रि०) स्कन्धविशिष्ट।

स्कन्धरुह (सं० पु०) वटवृक्ष, बड़।

स्कन्धवत् (सं० पु०) स्कन्धयुक्त, गरदनवाला।

स्कन्धवाह (सं० पु०) शकटादि वाहक वृष, वह पशु जो कंधोंके बल बोझ खींचता हो। जैसे बैल, घोड़ा आदि।

स्कन्धवाहक (सं० पु०) १ शकटादि वाहक वृष। (त्रि०) २ स्कन्ध द्वारा वहनकारी, कंधे पर बोझ ढोनेवाला।

स्कन्धशाखा (सं० स्त्री०) वृक्षकी प्रधान शाखा या डाल।

स्कन्धशिरस् (सं० क्ली०) कंधेकी हड्डी, मोढा।

स्कन्धशृङ्ग (सं० पु०) महिष, भैंस।

स्कन्धस् (सं० क्ली०) १ अंस। २ प्रकाण्ड।

स्कन्धा (सं० स्त्री०) १ शाखा। २ लता।

स्कन्धाग्नि (सं० पु०) वृहत्काष्ठाग्नि, मोटे लकड़ोंकी आग।

स्कन्धाक्ष (सं० पु०) स्कन्दानुचर देवगणभेद।

स्कन्धानल (सं० पु०) स्कन्धाग्नि, मोटे लकड़ोंकी आग।

स्कन्धावार (सं० पु०) १ सैन्यस्थिति, छावनी। २ सेना, फौज। ३ राजधानी, राजाका निवासस्थान। ४ शिविर, कंप। ५ वह स्थान जहां बहुतसे व्यापारी या यात्री आदि डेरा डाल कर ठहरे हों।

स्कन्धिक (सं० पु०) वृष, बैल।

स्कन्धी (सं० पु०) १ वृक्ष पेड़। (त्रि०) २ स्कन्धयुक्त। ३ काण्डविशिष्ट।

स्कन्धिल (सं० पु०) बौद्ध यतिभेद।

स्कन्धेमुख (सं० पु०) १ स्कन्दानुचर देवगणभेद। (त्रि०) २ जिसका मुख कंधे पर हो।

स्कन्धोग्रीवी (सं० स्त्री०) वृहती नामक वर्णवृत्तका एक भेद।

स्कन्धोपनेय (सं० पु०) राजाओंमें होनेवाली एक प्रकारकी संधि।

स्कन्ध्य (सं० त्रि०) स्कन्ध इव (शाखादिभ्यो यः। पा ५।३।१०३) इति इवार्थे यः। १ स्कन्धसदृश, कंधेके समान। २ स्कन्ध सम्बन्धी, कंधेका।

स्कन्न (सं० त्रि०) स्कन्द-क्त। १ च्युत, गिरा हुआ। २ शुष्क, सूखा। ३ गत, गया हुआ।

स्कभन (सं० पु०) शब्द, आवाज।

स्कभीयस् (सं० वि०) प्रतिबंधकारियोंमें श्रेष्ठ ।
स्कम्भ (सं० पु०) स्कम्भ-घञ् । स्तम्भ, खम्भा ।
स्कम्भदेष्ण (सं० वि०) अविरत दानकारी, खूब दानी ।
स्कम्भन (सं० क्ली०) स्कभि-ल्युट् । स्तम्भन, खम्भा ।
स्कम्भसर्जनी (स० क्ली०) वह वस्तु जो बैलको इधर उधर भगानेसे रोके ।
स्कान्द (सं० क्ली०) स्कन्द अण् । १ स्कन्दपुराण । पुराण देखो । (वि०) २ स्कन्द-सम्बन्धी, स्कन्दका ।
स्कान्दायन (सं० पु०) स्कान्दायन्य देखो ।
स्कान्दायन्य (सं० पु०) स्कन्दके गोत्रमें उत्पन्न व्यक्ति ।
स्कान्धी (सं० पु०) स्कन्धके शिष्य या उनकी शाखाके अनुयायी ।
स्कालर (अं० पु०) १ वह जो स्कूलमें पढता हो, छात्र । २ वह जिसने बहुत विद्याध्ययन किया हो, पण्डित ।
स्कोलरशिप (अं० पु०) १ वह वृत्ति या निर्धारित धन जो विद्यार्थीको किसी स्कूल या कालेजमें शिक्षा प्राप्त करनेके लिये नियमित रूपसे सहायतार्थ दिया जाय, छात्रवृत्ति । २ विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
स्कीम (अं० स्त्री०) किसी बड़े कामको करनेका विचार या आयोजन, योजना ।
स्कूल (अं० पु०) १ वह विद्यालय जहां किसी भाषा, विषय या कला आदिकी शिक्षा दी जाती हो । २ वह विद्यालय जहां एण्ट्रेंस या मैट्रिकुलेशन तककी पढाई होती हो । ३ विद्यालय, मदरसा ।
स्कूलमास्टर (अं० पु०) स्कूल या अंगरेजी विद्यालयमें पढ़ानेवाला, शिक्षक ।
स्कूली (अं० वि०) १ स्कूलका, स्कूल-सम्बंधी ।
स्कोटिका (सं० स्त्री०) पक्षिविशेष ।
स्क्रू (अं० पु०) वह कील या कांटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियां बनी होती हैं और जो ठोंक कर नहीं, बल्कि घुमा कर जड़ा जाता है, पेंच ।
स्खदन (सं० पु०) स्खद-ल्युट् । १ विदारण, फाड़ना । २ स्थैर्य, स्थिरता । ३ हिंसा वध । ४ क्लेशोत्पादन, सताना । ५ पातन ।
स्खदा (सं० स्त्री०) दुःख, क्लेश । (पा ५।१।१२)
स्खद्य (सं० वि०) स्खदा-सम्बन्धीय ।
स्खलन (सं० क्ली०) स्खल-ल्युट् । १ पतन, गिरना । २ अभिघात । ३ उच्चारण ।
स्खलित (सं० क्ली०) स्खल-क्त । १ धर्मयुद्धमें नियमोंको छोड कर युद्धमें छल कपट या घात करना । २ भ्रान्ति, भूल । (वि०) ३ च्युत, गिरा हुआ । ४ फिसला हुआ, सरका हुआ । ५ विचलित, लड़खड़ाया हुआ । ६ चुका हुआ ।
स्टांप (अं० पु०) १ एक प्रकारका सरकारी कागज । इस पर अर्जा दावा लिख कर अदालतमें दाखिल किया जाता है या कभी कभी इस पर किसी प्रकारकी पक्की लिखा पढ़ी की जाती है । यह भिन्न भिन्न मूल्योंका होता है और विशिष्ट कार्यों के लिये विशिष्ट मूल्यका व्यवहृत होता है । ऐसे कागज पर जो लिखा पढ़ी की जाती है, वह पक्की समझी जाती है । २ डाकका टिकट । ३ मोहर, छाप ।
स्टाइल (अं० स्त्री०) १ ढंग, तरीका । २ पद्धति, शैली । ३ लेखन-शैली ।
स्टाक (अं० पु०) १ बिक्री या बेचनेका माल । २ सामान, रसद । ३ वह स्थान जहां बिक्रीका सामान जमा हो, गुदाम । ४ वह धन या पूंजी जो व्यापारी लोग या उनका कोई समूह किसी काममें लगाता हो, किसी साझेके काममें लगाई हुई पूंजी । ५ सरकारी कागजमें व्याज पर लगाया हुआ धन, सरकारी कर्ज की हुण्डी ।
स्टाक्-एक्सचेंज (अं० पु०) १ वह मकान, स्थान या बाड़ा जहां स्टाक या शेयर खरीदे और बेचे जाते हों । २ स्टाकका काम करनेवालोंकी संघटित सभा ।
स्टाक-ब्रोकर (अं० पु०) वह दलाल जो दूसरोंके लिये स्टाक या शेयरोंकी खरीद, बिक्रीका काम करता हो ।
स्टिचिंग मशीन (अं० स्त्री०) एक प्रकारकी किताब सीनेकी कल । इसमें लोहेके तारोंसे सिलाई होती है ।
स्टीम (अं० पु०) जलवाष्प, भाप ।
स्टीम इंजिन (अं० पु०) वह इंजिन जो खौलते हुए पानीमेंसे निकलनेवाली भापके जोरसे चलता हो ।
स्टीमर (अं० पु०) स्टीम या भापके जोरसे चलनेवाला जहाज, अग्निपोत ।
स्टूल (अं० पु०) एक प्रकारकी छोटी ऊंची चौकी जिसमें तीन या चार पांव होते हैं । इस पर एक ही आदमी बैठ सकता है ।

स्टेज (अं० पु०) १ नाट्यमंदिर या थियटरके अंदर जमीनसे कोई तीन हाथ ऊंचा बना हुआ मंच । इसी पर नाटक खेला जाता है । २ मंच ।

स्टेज मनेजर (अं० पु०) रंगमंचका प्रबंधक या व्यवस्थापक ।

स्टेट (अं० पु०) १ सभ्य या स्वतन्त्र समाज या राष्ट्र । २ वह शक्ति जिसके द्वारा कोई सरकार किसी देशका शासन करता हो । ३ ऐसे राष्ट्रोंमेंसे कोई एक जिनका कोई सम्मिलित संघ हो और जो व्यक्तिशः स्वतन्त्र होने पर भी किसी एक केन्द्रस्थ शक्ति या सरकारसे सम्बद्ध हों । ४ आधुनिक भारतका कोई स्वतन्त देशी राज्य । ५ बड़ी जमींदारी । ६ स्थावर और जंगम संपत्ति ।

स्टेशन (अं० पु०) १ वह स्थान जहां निर्दिष्ट समय पर नियमित रूपसे रेलगाड़ियां ठहरा करती हैं । २ वह स्थान जहां कुछ लोगोंको रहनेके लिये कुछ लोगोंकी नियुक्त और निवास हो ।

स्टोइक (अं० पु०) जीनो नामक एक यूनानी विद्वान्का चलाया हुआ सम्प्रदाय । इस सम्प्रदायवालोंका सिद्धान्त है, कि मनुष्यको विषय-सुखोंका त्याग करके बहुत संयमपूर्वक रहना चाहिये ।

स्ट्रेट (अं० पु०) जलडमरूमध्य ।

स्तन (सं० पु०) अवयवविशेष, स्त्रियों या मादा पशुओंकी छाती जिसमें दूध रहता है । पर्याय—कुच, कुम्भ, उरोज, वक्षोज, पयोधर, वक्षोरुह, उरसिज । स्तनके अग्रभागका नाम चूचुक है ।

स्तन रोमहीन, पीन, घन, अविषम और कठिन होने से शुभ होता है । जिन स्त्रियोंका स्तन इस प्रकार होता है, वे सुखी होती हैं । गरुड़पुराणमें लिखा है, कि कुट और नागवलीचूर्णको नवनीतके साथ मिला कर स्तन पर प्रलेप देनेसे युवतियोंका स्तन मनोहर होता है ।

स्तनकील (सं० पु०) स्तनविद्रधि, स्त्रियोंकी छातीमें होनेवाला एक प्रकारका फोड़ा ।

स्तनकुण्ड (सं० क्ली०) पवित्र तीर्थक्षेत्रभेद ।

स्तनग्रह (सं० पु०) स्तनधारण ।

स्तनचूचुक (सं० क्ली०) स्तनका अग्रभाग, कुचके ऊपरकी घुंडी, ढेपनी ।

स्तनथ (सं० पु०) १ गर्जन-शब्द, सिंहकी गरज । २ घोर या भीषण नाद, गड़गड़ाहट ।

स्तनथु (सं० पु०) दहाड़, गरज ।

स्तनदात्री (सं० स्त्री०) स्तनदानकारिणी, छातीका दूध पिलानेवाली ।

स्तनद्वेषिन् (सं० त्रि०) स्तनसे घृणा करनेवाला ।

स्तनन (सं० क्ली०) स्तन शब्दे ल्युट् । १ ध्वनि, नाद । २ मेघगर्जन, बादलोंकी गड़गड़ाहट । ३ कुन्थित, कराह, आह ।

स्तनन्धय (सं० पु० स्त्री०) स्तन्यपायी शिशु, दूधपीता बच्चा ।

स्तनन्धयी (सं० स्त्री०) स्तनन्धय-टाप् पक्षे ङीप् । अतिबालिका, नन्हीं बच्ची ।

स्तनप (सं० पु०) स्तनं पिबतीति पा-क । १ अति शिशु, दूध पीता बच्चा । (त्रि०) २ स्तनपानकर्त्ता, स्तन पीनेवाला ।

स्तनपा (सं० स्त्री०) अतिबालिका, बहुत छोटी बच्ची ।

स्तनपान (सं० क्ली०) स्तन्यपान, स्तनमेंका दूध पीना ।

स्तनपायिका (सं० स्त्री०) स्तन-पा ण्वुल् टाप् टापि अत इत्वं । दुग्धपोष्या, दूधपीती बच्ची ।

स्तनपायी (सं० त्रि०) स्तनप, जो माताके स्तनसे दूध पीता हो ।

स्तनपोषिक (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपद जिसे स्तनयोषिक, स्तनपोषिक और स्तनपोषिक भी कहते थे । (भारत भीष्म०)

स्तनबाल (सं० पु०) १ एक प्राचीन जनपद । २ इस देश का निवासी । (भारत भीष्म०)

स्तनभर (सं० पु०) स्तनयोर्भरः । १ स्थूलस्तनभार, बड़ी और भरी छाती । २ वह पुरुष जिसका स्तन या छाती स्त्रीके समान हो ।

स्तनभव (सं० पु०) १ एक प्रकारका रतिबंध या सम्भोग-आसन । (त्रि०) २ स्तनसे उत्पन्न ।

स्तनमध्य (सं० क्ली०) दोनों स्तनोंके बीचका स्थान ।

स्तनमुख (सं० पु०) स्तनाग्रभाग, चूची ।

स्तनमूल (सं० क्ली०) स्तनयोर्मूलं । स्तनका मूल ।

स्तनयद्म (सं० त्रि०) शब्दोपेतगण, शब्दयुक्त ।

स्तनयित्नु (सं० पु०) स्तन अभ्र शब्दे (स्तनिहृषिपुषीति। उण् ३।२६) इति इत्नुच्। (अयामन्तेति। पा ६।४।५५) इति अयादेशः। १ मेघ, बादल। २ मुस्तक, मोथा। ३ मेघध्वनि, बादलोंकी गड़गड़ाहट। ४ विद्युत्, बिजली। ५ मृत्यु, मौत। ६ रोग, बीमारी।

स्तनरोग (सं० पु०) गर्भवती और प्रसूता स्त्रियोंके स्तनोंमें होनेवाला एक प्रकारका रोग। वैद्यकके अनुसार यह रोग वायु, पित्त और कफके कुपित होनेसे होता है। इसमें स्तनका मांस और रक्त दूषित हो जाता है।

सुश्रुतमें लिखा है, कि कन्याओंकी स्तन मिश्रित धमनियोंका द्वार सङ्कुचित रहता है, इस कारण उन्हें स्तनरोग नहीं होता। गर्भिणी और प्रसूता रमणियोंकी धमनीका मुंह स्वभावतः ही खुला रहता है, इससे दोष सञ्चारित हो कर स्तनरोग उत्पन्न होता है। स्तनरोग पांच प्रकारका है, वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगन्तुज।

चिकित्सा—इस रोगमें विद्रधिरोगकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये। स्तनरोग जब अपक्व अवस्थामें अथवा पक कर दाहयुक्त हो, तो पित्तनाशक और शीतल द्रव्यका प्रयोग करना हितकर है। गोपालककर्कटीके मूलको अथवा हल्दी और कनकधतूरेके पत्तोंको अथवा वाम ककड़ीके मूलको पीस कर उसका प्रलेप देने तथा तप्तलौह जलमें निमग्न कर वह जल पिलानेसे स्तनरोग अति शीघ्र नष्ट होता है।

स्तनरोहित (सं० पु०) स्तन या कुचके अग्रभागके ऊपर दोनों ओरका अंग जो सुश्रुतके अनुसार परिमाणमें दो अंगुल होता है।

स्तनविद्रधि (सं० पु०) स्तन पर होनेवाला फोड़ा, थनैली।

स्तनवृन्त (सं० पु०) स्तन या कुचका अग्रभाग, ढेपनी।

स्तनशिखा (सं० स्त्री०) स्तनवृन्त, चूची, ढेपनी।

स्तनशोष (सं० पु०) एक प्रकारका रोग जिसमें स्तन सूख जाते हैं।

स्तनस्यु (सं० त्रि०) स्तनपान।

स्तनाग्र (सं० क्ली०) स्तनयोरग्रं। स्तनवृन्त, ढेपनी।

स्तनान्तर (सं० क्ली०) स्तनयोरन्तरं। १ हृदय, दिल। २ स्तन परका एक चिह्न जो वैधव्यसूचक समझा जाता है।

स्तनाभुज (सं० स्त्री०) प्राणी जो अपने बच्चोंको स्तनसे दूध पिलाता हो।

स्तनाभोग (सं० पु०) स्तनभार, स्तनकी पूर्णता या पुष्टता।

स्तनित (सं० क्ली०) स्तन क्त। १ मेघनिर्घोष, मेघकी गड़गड़ाहट। २ करतल ध्वनि, ताली बजानेका शब्द। ३ ध्वनि, आवाज। (त्रि०) ४ ध्वनित, निनादित। ५ गर्जित, गर्जन किया हुआ।

स्तनितकुमार (सं० पु०) जैनोंके देवताओंका एक वर्ग। इन्हें भुवनाधीश भी कहते हैं।

स्तनितफल (सं० पु०) विकंकतवृक्ष, कंटाय का पेड़।

स्तनी (सं० त्रि०) स्तनयुक्त, जिसके स्तन हो।

स्तनोत्तरीय (सं० क्ली०) दोनों स्तन ढकनेका वस्त्र।

स्तन्य (सं० क्ली०) स्तने भवं स्तन (शरीरावयवाच्च। पा ४।३।५५) इति यत्। १ स्तनभव दुग्ध। आहारीय सामग्री उदरस्थ होनेसे परिपाकके बाद जो रस उत्पन्न होता है, वह समूचे शरीरमें फैल कर मधुर भावापन्न होता है, इसीको स्तन्य कहते हैं। स्त्रियोंको हृदयस्थ धमनियां विसारित होनेसे प्रसवके दिनसे तीन अथवा चार रात्रिके बाद स्तनमें दूधका सञ्चार होता है।

स्तन्यप्रवृत्तिका कारण—जिस प्रकार कामिनियोंके आलिङ्गन, दर्शन और स्पर्शनादि द्वारा पुरुषोंका शुक्र स्खलित होता है, उसी प्रकार स्तन दर्शन, स्पर्शन, स्मरण और ग्रहण द्वारा स्त्रियोंके स्तनसे स्तन्य प्रवर्त्तित होता है अर्थात् दूध टपकने लगता है। अतएव स्नेह ही एकमात्र स्तन्यप्रवृत्तिका कारण है।

स्तन्य अल्प होनेका कारण—स्नेहके अभाव, भय, शोक, क्रोध और अवतर्पण द्वारा तथा फिरसे गर्भसञ्चार होने पर स्तन्यकी अल्पता अर्थात् दूधकी कमी होती है।

दूषित स्तन्यका लक्षण—जो स्तन्य वायु द्वारा दूषित होता है, उसे जलमें डालनेसे लघुत्व प्रयुक्त उत्प्लावित होता है अर्थात् तैरने लगता है। पित्त द्वारा दूषित स्तन्य अम्ल कटुरस और रेखायुक्त जलमें डालनेसे पीला दिखाई देता है। श्लेष्म कर्त्तृक दूषित स्तन्य जलमें डालनेसे डूब जाता है। द्विदोष द्वारा दूषित होने पर द्विदोषके

लक्षण और त्रिदोष द्वारा दूषित होनेसे त्रिदोषके लक्षण दिखाई पड़ते हैं। अर्थात् स्तन्य वायु और पित्त द्वारा दूषित होनेसे वायु और पित्तदूषित दुग्धका लक्षण नजर आता है। वायु और कफ द्वारा दूषित होनेसे पित्त और कफदूषित स्तन्यका लक्षण, कफ, पित्त और वायु द्वारा दूषित होनेसे त्रिदोषदूषित लक्षण दिखाई देते हैं।

दुष्ट स्तन्यशोधनविधि—स्तन्यशोधनार्थपेपित कल्किका, देवदारु, वच और अतीसके साथ मूंगका जूस अथवा मांसरस पान करे। पटोल, निम्ब, पीतशाल, देवदारु आदि, शुचिमुस्ता, गुड़ूची, कटकी और कच्चूरका काढ़ा सेवन करनेसे स्तन्यदोष शीघ्र ही नष्ट होता है।

विशुद्ध स्तन्यलक्षण—स्तन्यको जलमें डालनेसे यदि वह जलके साथ मिल जाय तथा वातादि दोषसे दूषित होने पर जो नव वर्ण या तंतुकी तरह दिखाई न दे कर शुद्धवर्ण दिखाई दे और शीतल हो जाय, तो उस स्तन्य को विशुद्ध जानना चाहिये।

स्तन्यवृद्धिके हेतु—शालिधानका चावल, साठी धानका चावल, गेंहू, मांस और छोटी मछलीका जूस, कालशाक, लौकी, नारियल, केशर, सिंघाड़ा, शतावर, भूईं-कुम्हड़ा और लहसुन, ये सब द्रव्य सेवन करनेसे स्त्रियों का स्तन्य बढ़ता है।

स्तन्यदोषसे बालकके नाना प्रकारके रोग होते हैं। इस कारण बड़ी सावधानीसे बालकको स्तन्य पान कराना होता है। बालकको स्तन्य पान करानेके पहले यदि कुछ स्तन्य जमीन पर न गिरा दिया जाय, तो मुंहमें अधिक स्तन्य गिरनेसे बालककी गलनाली भर जाती है जिससे वह बालक वमि, कास और श्वासरोगसे प्रपीड़ित होता है।

स्तन्य ही बालकका एकमात्र जीवन है। स्तन्यकी विशुद्धिके ऊपर बालकका भावी स्वास्थ्य निर्भर करता है। इस कारण बड़ी सावधानीसे स्तन्य पान कराना होता है। स्तन्यका अभाव होनेसे गाय या बकरीका दूध पिलावे। (भावप्र०)

सुश्रुतमें स्तन्यका विषय इस प्रकार लिखा है,—स्तन्यको जलमें डालनेसे यदि वह शीतल, निर्मल, पतला और शंखकी तरह सफेद हो, सूतकी तरह न हो, जलमें न डूबे और न ऊपर हो उठे, तो उसे विशुद्ध कहते हैं। ऐसा स्तन्य पिलानेसे बालकके शरीर और बलकी वृद्धि होती है। गर्भिणीके क्षुधित, शोकार्त्ता, श्रांत, दूषित धातु, ज्वरित, अतिशय क्षीण और अति स्थूल होनेसे अथवा अधिक अम्लजनक भक्ष्य अथवा विरुद्ध आहारीय भोजन करनेसे संतानको वह स्तन्य नहीं पिलाना चाहिये।

स्तनकी ढेपनी ऊपरकी ओर होनेसे बालकका मुख विवर बढ़ता है। स्तनके लंबे होनेसे बालककी नासिका और मुख आच्छादित हो कर प्राणनाशकी सम्भावना है। माता या धात्री प्रशस्त दिनमें दाहिने स्तनको धो कर कुछ दूध गिरा दे और निम्न लिखित मंत्र पढ़ कर संतानको पिलावे।

'चत्वारः सागरास्तुभ्यं स्तनयोः क्षीरवाहिनः।
भवन्तु सुभगे नित्यं बालस्य बलवृद्धये॥
पयोऽमृतरसं पीत्वा कुमारस्ते शुभानने।
दीर्घमायुरवाप्नोतु देवाः प्राश्यामृतं यथा॥"

(सुश्रुत शारीरस्था०)

चरक आदि सभी वैद्यक ग्रंथोंमें स्तन्यका विषय विशेषरूपसे लिखा है।

(त्रि०) २ स्तनहित, जो स्तनमें हो।

स्तन्यजनन (सं० त्रि०) स्तनदुग्धवर्द्धक, दूध उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।

स्तन्यदा (सं० त्रि०) जिसके स्तनोंमेंसे दूध निकलता हो, दूध देनेवाली।

स्तन्यदान (सं० पु०) स्तनसे दूध पिलाना।

स्तन्यप (सं० त्रि०) १ स्तन या दूध पीनेवाला। (पु०) २ शिशु, दूधपीता बच्चा।

स्तन्यपान (सं० पु०) स्तनमेंका दूध पीना।

स्तन्यपायी (सं० त्रि०) जो स्तनसे दूध पीता हो दूध पीता।

स्तन्यरोग (सं० पु०) अस्वस्थ माताका दूध पीनेसे होनेवाला रोग। स्तनरोग देखो।

स्तन्यशोधन (सं० त्रि०) स्तनदोषनाशक।

स्तन्यसम्पत् (सं० क्ली०) प्रशस्त स्तन्य, सुन्दर स्तन।

स्तन्या (सं० स्त्री०) कालशी शाक, कलमी साग।

स्तब्ध (सं॰ त्रि॰) स्तभ क्त । १ स्तम्भित, जो जड या अचल हो गया हो । २ दृढ, स्थिर । ३ दृढीभूत, मजबूतीसे ठहराया हुआ । ४ मन्द, धीमा । ५ दुराग्रही, हठी । ६ अभिमानी, घमण्डी । ७ बधिर, बहरा । ८ मूर्च्छित । (पु॰) ९ वंशीके छः दोषोंमेंसे एक जिसमें उसका स्वर कुछ धीमा होता है ।

स्तब्धकर्ण (सं॰ त्रि॰) निश्चलोद्दर्ध्व कर्ण, बहरा ।

स्तब्धता (सं॰ स्त्री॰) १ स्तब्धका भाव, जड़ता । २ स्थिरता, दृढता । ३ बधिरता, बहरापन ।

स्तब्धपाद (सं॰ त्रि॰) जिसके पैर जकड गए हों, खंज, पंगु ।

स्तब्धपादता (सं॰ स्त्री॰) खञ्जता, लँगडापन ।

स्तब्धमति (सं॰ त्रि॰) मन्द बुद्धि, कुंद जेहन ।

स्तब्धमेढ्र (सं॰ त्रि॰) ध्वजभङ्ग, जिसकी पुरुषेन्द्रियमें जडता आ गई हो ।

स्तब्धरोमा (सं॰ पु॰) १ शूकर, सूअर । (त्रि॰) २ स्तम्भित, जिसके रोम या रोंगटे खडे हो गये हों ।

स्तब्धसक्थिता (सं॰ स्त्री) स्तब्धपात ।

स्तब्धसम्भार (सं॰ पु॰) राक्षसभेद ।

स्तब्धीभाव (सं॰ पु॰) स्तब्ध-भू अभूततद्भावे च्वि घञ् । जडीभाव ।

स्तभ (सं॰ पु॰) छाग, बकरा ।

स्तम्ब (सं॰ पु॰) स्था (स्थःस्तोऽम्बजवकौ । उण् ४।९६) इति अम्बच् स्तादेशश्च । १ काण्डरहित वृक्ष, ऐसा पौधा जिसकी एक जडसे कई पौधे निकलें और जिसमें कडी लकडी या डंठल न हो । पर्याय—गुल्म । २ घासकी आंटी । ३ रोहितक वृक्ष, रोहिडा । ४ एक पर्वतका नाम ।

स्तम्बक (सं॰ पु॰) १ गुच्छा । २ क्षवक वृक्ष, छिकनी ।

स्तम्बकरि (सं॰ पु॰) स्तम्ब कृ (स्तम्बशकृतो रिन) इन् । धान्य, धान ।

स्तम्बकरिता (सं॰ स्त्री॰) स्तम्बकरिका भाव, धान्य ।

स्तम्बकार (सं॰ पु॰) गुच्छ-कारक, गुच्छे बनानेवाला ।

स्तम्बकित (सं॰ त्रि॰) स्तम्बकविशिष्ट ।

स्तम्बघन (सं॰ त्रि॰) तृणाद्युन्मूलनकारी खनित्रादि, दांती या हंसिया जिससे घास आदि काटते हैं ।

स्तम्बघात (सं॰ पु॰) स्तम्बघन देखो ।

स्तम्बघ्न (सं॰ त्रि॰) स्तम्ब-हन्-क (पा ३।३।८३) स्तम्बघ्न ।

स्तम्बज (सं॰ त्रि॰) घनतृण या गुल्माच्छादित ।

स्तम्बपुर (सं॰ स्त्री॰) ताम्रलिप्तपुरका एक नाम ।

स्तम्बमित्र (सं॰ पु॰) जरिताके एक पुत्रका नाम ।

स्तम्बयजुस् (सं॰ क्ली॰) यजुर्मन्त्रपूर्वक तृणगुच्छ आहरण ।

स्तम्बवती (सं॰ स्त्री॰) हारवंशवर्णित राजकुलललनाभेद ।

स्तम्बवन (सं॰ पु॰) व्यक्तिभेद (हरिवंश)

स्तम्बशस् (सं॰ अव्य॰) गुल्मलतादिका वन ।

स्तम्बहनन (सं॰ क्ली॰) स्तम्बघन, घास आदि खोदनेके खुरपी ।

स्तम्बी (सं॰ पु॰) घास खोदनेकी खुरपी ।

स्तम्बेरम (सं॰ पु॰) हस्ती, हाथी ।

स्तम्बेरमासुर (सं॰ पु॰) गजासुर, एक असुरका नाम ।

स्तम्भ (सं॰ पु॰) १ स्थूणा, थूनी, खंभा । घर बनाते समय पहले सूता गिरा कर स्तम्भरोपण अर्थात् खंभे खडे करने होते हैं । शुभ दिनमें यदि स्तम्भारोपण न किया गया हो, तो घर कदापि नहीं बनावे, बनानेसे अशुभ होता है । इसका विशेष विधान ज्योतिस्तत्त्व और कृत्यतत्त्वमें लिखा है ।

२ जडीभाव, प्रतिभाशून्यता । ३ प्रतिबंध, रुकावट । ४ शीतादिनिबंधन जडता, ठंढ आदि लग जानेसे बेहोशी । ५ रोग आदिके कारण होनेवाली बेहोशी । ६ इन्द्रजाल द्वारा चेष्टारोध, एक प्रकारका तांत्रिक प्रयोग जिससे किसीकी चेष्टा या शक्तिको रोकते हैं । ७ तरुस्कन्ध, पेडका तना । ८ काव्यमें सात्विक भावोंमेंसे एक । स्तम्भ, स्वेद, रोमाञ्च आदि सात्त्विक भाव हैं । ९ एक ऋषिका नाम । १० अभिमान, दंभ ।

स्तम्भक (सं॰ त्रि॰) १ रोधक, रोकनेवाला । २ कब्ज करनेवाला । (पु॰) ३ खंभा, थूनी । ४ शिव, महादेव ।

स्तम्भकर (सं॰ पु॰) करोतीति कृ अच् । १ वेष्टन, घेरा । (त्रि॰) २ रोधक, रोकनेवाला । ३ जडता करनेवाला । ४ स्थूणाकारक, खंभा खडा करनेवाला ।

स्तम्भकी (सं० पु०) १ वाद्यविशेष, प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था। (स्त्री०) २ एक देवीका नाम।

स्तम्भता (सं० स्त्री०) स्तम्भस्य भावः तल्, टाप्। स्तम्भका भाव या धर्म, जड़ता।

स्तम्भतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष। यह आज कल खंभातके नामसे प्रसिद्ध है। किसी समय यह एक प्रसिद्ध तीर्थ और व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र था।

स्तम्भन (सं० क्ली०) स्तम्भ-ल्युट्। १ अवरोध, रुकावट। २ स्थिरीकरण। ३ वीर्य आदिके स्खलनमें बाधा या विलम्ब। ४ वह औषध जिससे वीर्यका स्खलन विलम्बसे हो, वीर्यपात रोकनेवाली दवा। ५ सहारा, टेकान। ६ जड़ीकरण, जड़ या निश्चेष्ट करना। ७ रक्तके प्रवाह या गतिका रोकना। ८ वह औषध जो रूखी, ठंढी और कसैली हो, जिसमें पाचनशक्ति कम हो और जो वायु करनेवाली हो, मलावरोधक। ९ तन्त्रके मतसे षट्कर्मके अंतर्गत आभिचारिक कर्मविशेष। साधक जिसके लिये इस आभिचारिक क्रियाका अनुष्ठान करेंगे, वह जड़ हो जायेगा, उसकी कार्यकरी शक्ति रहने नहीं पायेगी। तान्त्रिकोंके मध्य यह निन्दित कार्य है। साधक सिद्धि द्वारा मारणादि कर्ममें अभिज्ञता लाभ कर सकते हैं, पर वे इसका प्रयोग कदापि न करें, करनेसे उनकी अधोगति होगी।

स्तम्भनकार्यकी अधिष्ठात्री देवी रमा हैं। अतएव यह कार्य करनेमें पहले रमाकी उपासना करनी होती है। साधक पूर्वकी ओर बैठ कर इस कर्मका अनुष्ठान करें। ५० दण्डके बाद ६० दण्ड तकका काल शिशिर ऋतु है, अतएव उसी समय उक्त कार्यका अनुष्ठान करना होगा। सोम और बुधवारको शुक्ला पञ्चमी शुक्ला दशमी और पूर्णिमा तिथिको यह कार्यानुष्ठान करना उचित है, दूसरे दिन नहीं। स्तम्भन कार्यमें पश्चिम मुख बैठ कर जप करना होता है। सबोंका प्रवृत्तिरोध जिससे हो, उसीको स्तम्भन कहते हैं।

यह कर्मानुष्ठान विकटासन पर बैठ कर करना होगा। गदा मुद्रा इस कर्ममें प्रशस्त है। जब यह दिखाई दे, कि पञ्चतत्त्वके मध्य पृथिवीतत्त्वका उदय हुआ है, उस समय यदि पूर्वोक्त काल हो, तो उसी समय स्तम्भन कार्य करे। इससे उसी समय वह कार्य सफल होगा। यह कर्म 'लं' बीज और संपुट मन्त्रका विन्यास कर करना होता है। साध्य व्यक्ति अर्थात् जिसको स्तम्भन करना होगा, उसके नामके आदि और अन्तमें मन्त्र लिखनेको सम्पुट कहते हैं। इस कर्मका मन्त्र और देवताका वर्ण पीत है अर्थात् यह कर्म करते समय मन्त्र और देवताका वर्ण पीत है, ऐसा सोच कर ध्यान करे। इस कार्यमें हल्दीसे मन्त्र लिखना होता है।

वाक्स्तम्भनके सम्बन्धमें यों लिखा है—श्मशानका अङ्गार, केश और साध्यकी शवयसनजात प्रतिकृति बना कर उसकी प्राणप्रतिष्ठा करे। पीछे हृद्गत नाम और मन्त्र ललाटदेशमें लिखे। बादमें प्राणप्रतिष्ठा कर हजार बार मन्त्र जपे और जपके बाद उस वस्त्रप्रतिकृतिको उसका द्वारा दग्ध कर जमीनमें गाड़ दे। श्मशानमें जिसके उद्देशसे यह कर्मानुष्ठान किया जाता है, उसका उसी समय वाक्स्तम्भन होता है।

गरुड़पुराणके १८९वे अध्यायमें इस प्रकार लिखा है—कैथके रसमें जोंक पीस कर हाथमें उसका लेप लगावे। पीछे वह हाथ अग्निमें देनेसे अग्निस्तम्भन होता है अर्थात् आगमें हाथ डालनेसे भी वह नहीं जलता।

शाल्मलीरस ले कर धारसूत्रमें वह रस दे आगमें डालनेसे अग्निस्तम्भन होता है अर्थात् वह आग कोई भी वस्तु नहीं जला सकती।

वायसीका उदर लेकर मण्डूककी चर्बीके साथ मिलावे, पीछे उसे अग्निमें डालनेसे उत्तम अग्निस्तम्भन होता है। मुण्डीतक, वच, कुष्ठ, मरीच और नागर ये सब वस्तु चबा कर जीभके ऊपर रखनेसे अग्नि स्तम्भित होती है।

जलस्तम्भन अग्निस्तम्भन आदिका मन्त्र है। वह मन्त्र पढ़नेसे अग्निस्तम्भन जलस्तम्भन आदि होते हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

"ओं हुं अग्निस्तम्भनं कुरु। ओं नमो भगवते जलं स्तम्भय स्तम्भय सं समं सके कके कचर। जलस्तम्भनमन्त्रोऽयं जलं स्तम्भयते शिव।"

(गरुड़पु० १८९ अ०)

युद्धस्थलमें शत्रुसेनाओंको स्तम्भन करनेसे वे कठपुतलीकी तरह खड़ी रहती हैं, उस समय उन्हें आसानीसे परास्त किया जा सकता है। अग्निपुराणके १२६ अध्यायमें स्तम्भनादिके मन्त्र और प्रणाली लिखी है।

(पु०) स्तम्भयतीति स्तम्भ-णिच्-ल्यु। कामदेवके पांच वाणोंमेंसे एक। शेष चार वाण ये हैं—उन्मादन, शोषण, तापन और सम्मोहन। (त्रि०) ११ स्तम्भक।

स्तम्भनी (सं० स्त्री०) एक प्रकारका इन्द्रजाल या जादू।

स्तम्भनीय (सं० त्रि०) स्तम्भनके योग्य।

स्तम्भवृत्ति (सं० स्त्री०) प्राणको जहांका तहां रोक देना जो प्राणायामका एक अंग है।

स्तम्भि (सं० पु०) समुद्र, सागर।

स्तम्भिका (सं० स्त्री०) १ चौकी या आसनका पाया। २ छोटा खम्भा, खंभिया।

स्तम्भित (सं० त्रि०) स्तम्भ-क्त। १ जड़ीभूत, निश्चल, जो जड़ या अचल हो गया हो। २ स्थित, ठहरा या ठहराया हुआ। ३ निवारित। ४ अवरुद्ध, रुका या रोका हुआ।

स्तम्भिन् (सं० त्रि०) १ स्तम्भ या खंभों से युक्त। २ दाम्भिक, रोकनेवाला। (पु०) ३ समुद्र, सागर।

स्तम्भिनी (सं० स्त्री०) योगके अनुसार पांच धारणाओंमेंसे एक।

स्तर (सं० पु०) स्तृ-अच्। १ तबक, परत, तह। २ भूगर्भशास्त्रके अनुसार भूमि आदिका एक प्रकारका विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालोंमें बनी हुई तहोंमें आधार पर होता है। ३ शय्या, सेज।

स्तरण (सं० क्ली०) १ फैलाने या बिखेरनेकी क्रिया। २ अस्तरकारी, पलस्तर। ३ बिस्तर, बिछौना।

स्तरणीय (सं० त्रि०) १ फैलाने या बिखेरनेके योग्य। २ बिछानेके योग्य।

स्तरिमन् (सं० पु०) स्तृ (इमधुस्स्तृभ्य इमनिच्। उण् ४।१४७) इति इम-णिच्। शय्या, तल्प, सेज।

स्तरी (सं० स्त्री०) स्तृ (अवितृस्तृतन्त्रिभ्यः ईः। उण् ७।१५८) इति ई। धूम, धूआँ।

स्तरीमन् (सं० पु०) शय्या, सेज। (ऋक् १०।३५।६)

स्तरु (सं० पु०) शत्रु, वैरी।

स्तर्य (सं० त्रि०) स्तृ-यत्। १ स्तरणीय, बिछाने योग्य। २ फैलाने या बिखेरने योग्य।

स्तव (सं० पु०) १ किसी देवताका छन्दोबद्ध स्वरूप कथन या गुण—गान, स्तुति, स्तोत्र। जैसे,—शिवस्तव, दुर्गास्तव। २ ईश-प्रार्थना।

स्तवक (सं० पु०) स्था (स्थेरस्तोऽम्बजवकौ। उण् ४।६६) इति स्तवक, धातोश्च स्तोदेशः। १ गुच्छक, फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता। २ स्तव, स्तोत्र। ३ पुस्तकका कोई अध्याय या परिच्छेद। ४ समूह, ढेर। (त्रि०) ५ स्तवकारक, जो किसीकी स्तुति या स्तव करता हो, गुणकीर्त्तन करनेवाला।

स्तवथ (सं० पु०) स्तु-अथच्। स्तव, स्तोत्र।

स्तवन (सं० क्ली०) स्तु-ल्युट्। स्तव, स्तुति।

स्तवनीय (सं० त्रि०) स्तु-अनीयर्। स्तव या स्तुति करनेके योग्य, प्रशंसाके योग्य।

स्तवरक (सं० पु०) वेष्टन, घेरा।

स्तवराज (सं० पु०) श्रेष्ठ स्तव, उत्तम स्तव।

स्तवावलि (सं० स्त्री०) स्तवस्य स्तोत्रस्य आवलिः। बहु स्तव।

स्तवि (सं० पु०) सामगायक, साम गान करनेवाला।

स्तवितव्य (सं० त्रि०) स्तवके योग्य, प्रशंसाके योग्य।

स्तविता (सं० त्रि०) स्तव या स्तुति करनेवाला, गुण गान करनेवाला।

स्तवेय्य (सं० पु०) इन्द्र।

स्तव्य (सं० त्रि०) स्तु-यत्। स्तवनीय, स्तव या स्तुतिके योग्य।

स्तासु (सं० त्रि०) स्तोता, स्तवकारक। (निघण्टु ३।१६)

स्ताम्भायन (सं० पु०) स्तम्भके गोत्रापत्य।

स्ताम्भिन् (सं० पु०) स्तम्भके शिष्योंका समूह।

स्तायु (सं० पु०) चोर।

स्तारा (सं० क्ली०) एक प्रकारका पौधा।

स्ताव (सं० पु०) स्तु-घञ्। १ स्तव, स्तुति, गुण गान। २ स्तव करनेवाला, गुण गान करनेवाला।

स्तावक (सं० त्रि०) स्तौतीति स्तु-ण्वुल्। १ स्तव

या स्तुति करनेवाला, गुणकीर्त्तन करनेवाला। २ यंद्दीजन।

स्तावर (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी बेल।

स्तावा (सं० स्त्री०) एक अप्सराका नाम।

स्ताव्य (सं० त्रि०) स्तु-छन्दसि (निष्टर्क्यदेवहूयेत्यादि। पा ३।१।१२३) इति ण्यत्। स्तवके योग्य, प्रशंसाके योग्य।

स्तिंगोमूरा (हिं० पु०) जहाजका पाल और उसकी रस्सी।

स्तिप (सं० त्रि०) गृहपालक, आश्रितोंकी रक्षा करनेवाला।

स्तिभि (सं० पु०) स्तभ्नातीति स्तम्भ (क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च। उण् ४।१२१) इति इन अत इच्च। १ समुद्र, सागर। २ स्तवक फूलोंका गुच्छा। ३ अवरोध, प्रतिबंध।

स्तिभिनी (सं० स्त्री०) स्तवक, गुच्छा।

स्तिमित (सं० त्रि०) स्तिम-क्त। १ अचञ्चल, निश्चल, स्थिर। २ आर्द्र, भींगा। ३ शान्त। ४ प्रसन्न, सन्तुष्ट। (क्ली०) ५ आर्द्रता, नमी। ६ निश्चलता, स्थिरता।

स्तिया (सं० स्त्री०) स्थिर जल।

स्तीम (सं० त्रि०) अलस, सुस्त, धीमा।

स्तीमित (सं० त्रि०) स्तिमित देखो।

स्तीर्ण (सं० त्रि०) स्तॄ-क्त। १ विस्तृत, विकीर्ण, फैलाया हुआ। (पु०) २ शिवके एक अनुचरका नाम।

स्तीर्णबर्हिस (सं० त्रि०) प्रस्तृत दर्भ, जिसने कुश बिछा दिया हो।

स्तोर्वि (सं० पु०) स्तृणातीति स्तॄ (जृश्स्तृजागृभ्यः क्विन्। उण् ४।५४) इति क्विन। १ नभः, आकाश। २ रुधिर। ३ तृण, घासपात। ४ वयः। ५ शत्रु। ६ अध्वर्यु। ७ इन्द्र। ८ शरीर।

स्तुक (सं० त्रि०) अपत्य, सन्तान।

स्तुकी (सं० स्त्री०) स्तोक घृतधारा, थोड़ा घी।

स्तुटि (सं० पु०) भरद्वाज पक्षी, भरदूल नामक पक्षी।

स्तुत (सं० त्रि०) १ कीर्त्तित, प्रशंसित, जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। २ चूआ हुआ, बहा हुआ। (पु०) ३ शिव। ४ स्तव, स्तुति, प्रशंसा।

स्तुतस्तोम (सं० त्रि०) कीर्त्तित, प्रशंसित, जिसका गुणगान या प्रार्थना की गई हो।

स्तुति (सं० स्त्री०) स्तु-क्तिन्। १ गुण-कीर्त्तन, प्रशंसा, तारीफ। २ दुर्गा। ३ प्रतिहर्त्ताकी पत्नीका नाम। (पु०) ४ विष्णु।

स्तुतिगीतक (सं० क्ली०) प्रशंसाका गीत।

स्तुतिपाठक (सं० पु०) बन्दी जिसका काम प्राचीनकालमें राजाओंकी स्तुति या यशोगान करना था, चारण, भाट।

स्तुतिवाद (सं० पु०) प्रशंसात्मक कथन, यशोगान, गुणगान।

स्तुतिवादक (सं० त्रि०) १ स्तुति या प्रशंसा करनेवाला, प्रशंसक। २ खुशामदी, चाटुकार।

स्तुतिव्रत (सं० पु०) स्तुतिपाठक, वह जो स्तुति करे।

स्तुत्य (सं० त्रि०) श्लाघनीय, प्रशंसनीय, स्तुति या प्रशंसाके योग्य।

स्तुत्यव्रत (सं० पु०) १ हिरण्यरेताके एक पुत्रका नाम। २ एक वर्षका नाम जिसके अधिष्ठाती देवता स्तुत्यव्रत माने जाते हैं। (भागवत)

स्तुत्या (सं० स्त्री०) १ नलिका नामक गन्धद्रव्य, नली। २ सौराष्ट्री, गोपीचन्दन।

स्तुनक (सं० पु०) छाग, बकरा। (शब्दच०)

स्तुभ (सं० पु०) १ छाग, बकरा। (भरत) २ अग्नि विशेष। (भारत ३।२२०।१४)

स्तुभ्वन (सं० त्रि०) स्तोता, स्तुति करनेवाला।

स्तुव (सं० पु०) घोड़ेके सिरका एक अंग।

स्तुवत् (सं० त्रि०) १ स्तुति करनेवाला। २ उपासक, पूजक।

स्तुवि (सं० त्रि०) १ स्तावक, स्तुति करनेवाला। २ उपासक, पूजक। (पु०) ३ यज्ञ।

स्तुवेय्य (सं० पु०) स्तु (स्तुवकेय्यश्चन्दसि। उण् ३।९६) इति केय्य क्त्विवात् गुणोभावे सत्युन्डादेश। इन्द्र।

स्तुषेय्य (सं० त्रि०) १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ (ऋक् १०।१२०।६) २ स्तुत्य, स्तुति करने योग्य।

स्तूप (सं० पु०) स्तु (स्तुवोदीर्घश्च। उण् ३।२५) इति पः दीर्घश्च। १ मिट्टी आदिका ढेर, अटाला। २ ऊंचा ढूह या टीला। ३ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदिका बना ऊंचा ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्माकी अस्थि, दांत, केश या इसी प्रकारके अन्य स्मृतिचिह्न संरक्षित हों। ४ केशगुच्छ, लट। ५ मकानोंका सबसे बड़ा शहतीर, जोता।

स्तृत (सं० त्रि०) १ आच्छादित, ढका हुआ। २ विस्तृत, फैला हुआ।

स्तृति (सं० स्त्री०) १ विस्तृति। २ आस्तरण। ३ आच्छादन।

स्तृत्य (सं० त्रि०) आस्तरणके योग्य।

स्तेन (सं० पु०) स्तेन पचाद्यच्। १ चौर, चोर। स्तेय देखो। २ एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य। ३ चोरी करना, चुराना।

स्तेम (सं० पु०) स्तिम आर्द्रीभावे घञ्। १ आर्द्रता, नमी, गीलापन।

स्तेय (सं० क्ली०) स्तेन (स्तेनाद्यन्नलोपश्च। पा ५।१।१२५) इति यत् नलोपश्च। १ चौर्य, चोरी। शास्त्रमें स्तेय महापातक कहा गया है, अतएव जो चोरी करते हैं, वे शास्त्रानुसार पतित हैं। मन्वादि धर्मशास्त्रके स्तेय-प्रकरणमें इसका विशेष विवरण लिखा है। चौर्य्य देखो।

प्रत्यक्ष या परोक्षमें, रात या दिनमें जो दूसरेकी चीज हरण करता है, उसे स्तेय कहते हैं। दूसरेकी चीज चोरी करनेसे नरक होता है।

(त्रि०) २ जो चोरी गया हो या चुराया जा सके।

स्तेयकृत (सं० त्रि०) चोरी करनेवाला, चोर।

स्तेयिन् (सं० पु०) स्तेयमस्यास्तीति इनि। १ चौर, चोर। २ स्वर्णकार, सुनार। ३ वनमूषिका, मूसा, चूहा।

स्तेयिफल (सं० पु०) तेजःफल वृक्ष, तेजफलका पेड़।

स्तैन (सं० क्ली०) स्तेन-अण्। चौर्य, चोरी।

स्तैन्य (सं० क्ली०) स्तेन-ष्यञ्। १ चौर्य, चोरी। (पु०) स्तेन एव स्वार्थे ष्यञ्। २ चौर, चोर।

स्तैमित्य (सं० क्ली०) स्तिमित ष्यञ्। १ जड़ता। २ आर्द्रत्व।

स्तोक (सं० पु०) १ चातक, पपीहा। २ विंदु, बूंद। ३ कणा। (त्रि०) ४ ईषत्, थोड़ा।

स्तोकक (सं० पु०) १ चातक, पपीहा। पानीका जल अपहरण करनेसे चातक होता है। (मनु १२।६७) २ वत्सनाग विष, बछनाग विष।

स्तोकशस् (सं० अव्य०) अल्प अल्प, थोड़ा थोड़ा।

स्तोतव्य (सं० त्रि०) स्तु-तव्य। स्तवार्ह, स्तव या स्तुतिके योग्य।

स्तोतृ (सं० त्रि०) १ स्तवकर्त्ता, स्तुति करनेवाला। (पु०) २ विष्णु। (भारत १३।१४९।८२)

स्तोत्र (सं० क्ली०) स्तु (दाम्नीशसयुयुजेति। पा ३।२।१८२) इति ष्ट्रन्। किसी देवताका छन्दोबद्ध स्वरूप कथन या गुणकीर्त्तन, स्तव, स्तुति। स्तोत्र चार प्रकारका होता है,— द्रव्यस्तोत्र, कर्मस्तोत्र, विधिस्तोत्र और अभिजनस्तोत्र।

स्तोत्रिय (सं० त्रि०) स्तोत्र सम्बन्धी, स्तोत्रका।

स्तोत्रीय (सं० त्रि०) स्तोत्रिय देखो।

स्तोभ (सं० पु०) १ सामवेदका एक अंग। यह गीतालापका पूरणाक्षर रूप है। यह स्तोभ तेरह प्रकारका है। यथा,—१ वायलोको हाउकारः, २ वायुर्हा इकारः, ३ चन्द्रमा अथकारः, ४ आत्मेहकारः, ५ अग्निरीकारः, ६ आदित्य उकारः, ७ निहव एकारः, ८ विश्वेदेवा औहोइकारः, ९ प्रजापतिर्हिंकारः, १० प्राणः स्वरः, ११ अन्नं या १२ वाग्विराड् निरुक्तः, १३ त्रयोदशः स्तोभः सञ्चरो हुंकारः। (छान्दोग्य उप० १ प्रपा०)

इन सब स्तोभ सामोंमें योजना की जाती है। रथन्तर साममें प्रथम स्तोभ, वामदेव साममें द्वितीय स्तोभ इस तरह स्तोभ योजन करनी होती है।

सामवेद शब्द देखो।

२ स्तम्भन, जड़ या निश्चेष्ट करना। (हेम) ३ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना, अवज्ञा करना।

स्तोभन (सं० त्रि०) स्तोभविशिष्ट।

स्तोभवत् (सं० त्रि०) स्तोभविशिष्ट, स्तोभयुक्त।

स्तोम (सं० क्ली०) स्तूयते इति स्तु (अर्त्तिस्तुसुहुस्रिति। उण् १।१३९) इति मन्। १ मस्तक, सिर। २ धन, दौलत। ३ शस्य, अनाज। ४ लौहाग्रदण्ड, लोहेकी नोक-वाला डंडा या सोंटा। (त्रि०) ५ वक्र, टेढ़ा। (पु०) ६ समूह, राशि। ७ यज्ञ। ८ एक विशेष प्रकारका यज्ञ। ९ स्तुति, प्रार्थना। १० यज्ञकारी, यज्ञ करनेवाला। ११ दशम मन्वन्तर अर्थात् चालीस हाथकी एक माप। १२ एक प्रकारकी ईंट।

स्तोमतष्ट (सं० त्रि०) स्तोमकारी, कर्तृक।

स्तोमभागिक (सं० त्रि०) १ स्तोमभागार्ह, जो यह भाग पानेके योग्य हो। २ स्तोम-भाग सम्बन्धी।

स्तोमवर्द्धन (सं० त्रि०) स्तोम अर्थात् त्रिवृत् और पञ्चदशादि द्वारा वर्द्धनीय । (ऋक् ८।१५।११)

स्तोमवाहस (सं० त्रि०) स्तोमं वहन्ति (वहि हाधाञ् भ्यश्छन्दसि । उण् ४।२२०) इति असुन् । स्तोमवहनकारी ।

स्तोमाघ्न (सं० क्ली०) यज्ञमें बलि दिया जानेवाला पशु ।

स्तोमीय (सं० त्रि०) स्तोम-सम्बन्ध, स्तोमका ।

स्तोम्य (सं० त्रि०) स्तोम यत् । स्तुत्य, स्तुतिके योग्य, प्रार्थनाके योग्य । (ऋक् १।१२।८)

स्तौपिक (सं० क्ली०) १ अस्थि, नख, केश आदि स्मृतिचिह्न जो स्तूपके नीचे संरक्षित हो, बुद्धद्रव्य । २ वह मार्जनी जो जैनयति अपने पास रखते हैं ।

स्तौभ (सं० त्रि०) स्तोभ-अण् । स्तोभ सम्बन्धी, स्तोभका

स्तौभिक (सं० त्रि०) स्तोभयुक्त, जिसमें स्तोभ हो ।

स्तौल (सं० त्रि०) स्थूल । (ऋक् ६।४४।७)

स्त्यान (सं० क्ली०) स्त्यै क्त । १ प्रतिध्वनि, आवाज । २ घनत्व, घनापन । ३ आलस्य, अकर्मण्यता । ४ अमृत । ५ सत्कर्ममें चित्तका न लगना । (त्रि०) ६ स्निग्ध, चिकना । ७ कठोर, घना, कड़ा । ८ ध्वनिकर्त्ता, शब्द या ध्वनि करनेवाला ।

स्त्यानर्द्धि (सं० स्त्री०) वह निद्रा जिसमें वासुदेवका आधा बल होता है । जिसे यह निद्रा होती है, वह उठ कर कुछ काम करके फिर लेट जाता है और इस प्रकार वास्तवमें वह सोता हुआ काम करता है, पर कामकी उसे सुध नहीं रहती ।

स्त्यायन (सं० क्ली०) जन-समूह, भीड़, मजमा ।

स्त्येन (सं० पु०) स्त्यायतेरिति स्त्यै (श्यास्त्याहृञ् विभ्य इनच् । उण् २।४६) इति इनच् । १ चौर, चोर । २ अमृत ।

स्त्यैन (सं० पु०) स्त्येन एव अण् । १ स्तेन, चोर । (त्रि०) २ अल्प, थोड़ा, कम ।

स्त्रियम्मन्य (सं० त्रि०) स्त्रिय मन ख्श् (पा ६।३।६८) इति अमागमः । स्त्रीमन्य, जो अपनेको स्त्री माने या समझे ।

स्त्री (सं० स्त्री०) स्त्यै (स्त्यायते ड्रट् । उण् ४।१६५) इति ड्रट्, डित्वात् टिलोपः टित्वात् ङीप् । स्तनयोन्यादि मती, औरत । पर्याय—योषित्, अबला ।

मन्वादि शास्त्रमें लिखा है, कि स्त्रियोंकी देहशुद्धिके लिये उपनयनको छोड़ और सभी संस्कार यथाकालमें और यथाक्रमसे विधेय है । जिस प्रकार पुत्रके छठे या ८वें महीनेमें अन्न-प्राशन-संस्कार होता है, उसी प्रकार कन्याओंका भी ५वें या ७वें महीनेमें अन्नप्राशन-संस्कार करे । इस प्रकार पुरुषके सम्बन्धमें संस्कारकार्यके जो सब काल कहे गये हैं, उन सब कालोंमें स्त्रियोंका भी संस्कारकार्य करना होता है । विवाह-संस्कार ही स्त्रियोंका वैदिक उपनयनसंस्कार है । स्वामिसेवाको ही गुरुकुलमें वास और गृहकर्म ही सायंप्रातर्होम जानना होगा । (मनु २।६६-६७)

स्त्री बिना स्वामीकी अनुमतिके कोई धर्म कर्म नहीं कर सकती । क्योंकि, शास्त्रमें लिखा है, कि स्त्री पृथक् यज्ञ, व्रत, उपवासादि कुछ भी न करे, एकमात्र पति शुश्रूषा ही उसका धर्म है । इस पतिसेवा द्वारा ही उसे स्वर्गलाभ होगा । स्वामी जो सब धर्मानुष्ठान करें, स्त्री केवल उन सब कार्योंमें उन्हें मदद पहुंचा सकती है । स्वामीके यज्ञानुष्ठान द्वारा जो पुण्य प्राप्त होगा, स्त्री उस की अंशभागिनी होगी ।

स्त्री स्वामीकी अनुमति न ले कर यदि कोई पृथक् व्रत उपवासादि करे, तो स्वामीकी आयु विनष्ट होती है । अतएव वे सब धर्मानुष्ठान उसे न करना चाहिये ।

स्त्री बाल्यावस्थामें पिताके वशमें, यौवनमें स्वामीके वशमें और स्वामीकी मृत्युके बाद पुत्रके वशमें रहेगी । स्वाधीन भावमें वह कभी भी नहीं रह सकती । उसे पिता, स्वामी या पुत्रसे अलग हो कर कभी नहीं रहना चाहिये, रहनेसे दोनों कुल कलङ्कित होता है । स्त्री सर्वदा प्रहृष्ट हो कर कालयापन करे, गृहकर्ममें दक्ष हो, गृह सामग्री परिष्कार परिच्छन्न रखे और व्यय-विषयमें सदा अमुक्तहस्त हो ।

विवाहकर्त्ता पति ऋतुकालमें या अन्य कालमें स्त्रीको सुख देनेवाले हैं, केवल इसी कालमें नहीं, परकाल में भी स्वामी स्त्रीको सुख पहुंचाते हैं ।

स्त्रीको बड़े आदरसे भोजनादि देना और भूषणादि द्वारा सदा भूषित करना पिता, भ्राता, पति और देवरों का कर्त्तव्य है । जिस कुलमें स्त्रीका सम्यक् समादर होता है, देवगण उस कुलके प्रति सर्वदा प्रसन्न रहते हैं ।

फिर जिस परिवारमें स्त्री सर्वदा दुःखित भावमें रहती है, वह कुल शीघ्र ही विनष्ट होता है। जहां स्त्रियोंको किसी प्रकारका दुःख नहीं होता, वहां श्रीकी वृद्धि होती है। स्त्रियां अनादर भावमें रह कर जिस घरको शाप देती हैं, वह घर अभिचारहतकी तरह विनाशको प्राप्त होता है। अतएव जो श्रीवृद्धिकी कामना करते हैं उन्हें विविध सत्कार्य और उत्सव कालमें अशन, वसन और भूषणादि द्वारा स्त्रियोंको संतुष्ट रखना चाहिये।

जिस परिवारमें स्त्री और स्वामी दोनों ही सन्तुष्ट रहते हैं, उस कुलका निश्चय ही कल्याण होगा। वस्त्राभरणादि द्वारा कान्तिमती नहीं होनेसे स्त्री स्वामीको प्रसन्न नहीं कर सकती। फिर स्वामीके प्रसन्न नहीं होनेसे सन्तानोत्पादन होना असम्भव है। स्त्री यदि भूषणादि द्वारा अपनेको हमेशा सजाए रखे, तो घरकी शोभा बढ़ती है। फिर स्त्री यदि रुचिकर न हो, तो घर शोभा नहीं पाता।

"यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः॥
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत् कुलं।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा॥
जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः॥"

स्त्री पूर्वोक्त धर्मका अवलम्बन कर अवस्थान करे तथा स्वामीकी मृत्युके बाद यदि उसे सन्तान न रहे, तो वह प्रति दिन पतिके उद्देशसे तर्पण और वर्षके अन्तमें मृत-तिथिको एकोद्दिष्टके विधानानुसार श्राद्धकर्मानुष्ठान करे। सधवा या पुत्रवती विधवा स्त्रीको श्राद्ध तर्पणादि करनेका अधिकार नहीं है। पर हां, वे स्वामीकी स्वर्गादि कामनासे दानादिका अनुष्ठान कर सकती हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि स्त्रीको इस प्रकार रहना चाहिये, कि सूर्य भी उसे देख न सके। क्योंकि स्त्री यदि परपुरुष देख कर उसकी कामना करे तो वह स्त्री दुष्टा होती है और उसका परित्याग करना ही उचित है। जो स्त्री असूर्यम्पश्या हो कर रहती है, वह पतिव्रता है अतएव विशुद्धा है। विशुद्धा नारी ही वैकुण्ठ जानेकी अधिकारिणी होती है।

उक्त पुराणमें दूसरी जगह यह भी लिखा है, कि यह स्त्री तीन प्रकारकी होती है, उत्तमा, मध्यमा और अधमा। इनमेंसे जो स्त्री प्राणान्त होने पर भी परपुरुषके साथ नहीं करती तथा पतिकी तरह देवता, द्विज और अतिथिकी पूजा करती है, व्रत-उपवासादि सभी नियमोंका प्रतिपालन करती है, उसे उत्तमा स्त्री कहते हैं। फिर जो स्त्री गुरुलोक द्वारा रक्षिता होनेके कारण भयवशतः परपुरुषसंसर्ग नहीं करती, स्वामीकी सेवा कम करती है, उसे मध्यमा स्त्री कहते हैं। अधमा स्त्री अत्यन्त निकृष्टा और असद्वंशजाता, अधर्मशीला, दुर्मुखा, प्रति दिन पतिके साथ कलह किया करती है और हमेशा परपुरुषके साथ रहती है। सुवेश रतिशूकर पुरुष देखनेसे अधमा कामुकी स्त्रीकी योनि क्लिन्न होती है, वह इस पुरुषके लिये नाना प्रकारका अधर्म करती है। कोई भी उसको इस कामसे रोक नहीं सकता।

शास्त्रमें लिखा है, कि यह अधमा स्त्री अत्यन्त निन्दिता होती है, इसे देखनेसे भी पाप लगता है। अतएव ऐसी दुष्टा स्त्रीके साथ बातचीत तक भी न करनी चाहिये। जगत्में ऐसा असाध्य कर्म नहीं जो अधमा नारी न कर सकती है। जो स्त्री लक्ष्मी है, उसीमें लक्ष्मी वास करती है। महाभारतमें लिखा है, कि स्वधर्मनिष्ठा, धर्मज्ञा, वृद्धसेवानिरता, दान्ता, क्षमाशीला, सत्यस्वभावा, सरला और देवद्विज पूजनशीला स्त्रीमें लक्ष्मीका वास है। जिसकी गृहसामग्री नाना स्थानोंमें बिखरी रहती है, जो स्त्री बिना सोचे विचारे काम करती है, जो पतिकी प्रतिकूलवादिनी है, परगृहमें रहना चाहती है और जो लज्जाहीना है, वैसी निन्दिता स्त्रीसे लक्ष्मी दूर रहती हैं। पतिव्रता, कल्याणशीला, विभूषिता, सत्यवादिनी, प्रियदर्शना, सौभाग्ययुक्ता और गुणान्विता स्त्रीके पास लक्ष्मी हमेशा वास करती है तथा निर्दया, अपवित्रा और सतत शयाना स्त्रीको लक्ष्मी छोड़ चली जाती है।

'सस्त्रीको धर्ममाचरेत्', स्त्रीके साथ एकत्र धर्माचरण करे। परन्तु अनेक स्त्री रहने पर किस स्त्रीके साथ धर्माचरण करना होता है, उस विषयमें ऐसा लिखा है। सवर्णा अनेक स्त्रीके विद्यमान रहने पर उनमेंसे जो बड़ी है अर्थात् पहलेकी ब्याही है, उसीके साथ धर्मानुष्ठान करे।

मिश्र अर्थात् सवर्णा और असवर्णा अनेक स्त्री रहने पर सवर्णा स्त्री छोटी होने पर भी उसीके साथ धर्मकार्य करना उचित है। समानवर्णा स्त्रीके अभावमें अव्यवहित परवर्णाके साथ वह कार्य करे। आपत्कालमें अर्थात् पत्नीके रजोदर्शनादि स्थलमें भी यही नियम जानना होगा। किन्तु द्विज शूद्रा स्त्रीके साथ कदापि धर्मकर्म-का अनुष्ठान न करे। शूद्रा केवल ब्राह्मणके कामभोगार्थ ही स्त्रीरूपमें कल्पित होती है, धर्मार्थ नहीं। द्विजाति गण यदि मोहवशतः हीनजातिकी स्त्रीसे विवाह करे, तो सन्तानके साथ समस्त वंश शीघ्र ही शूद्रत्वको परिणत होता है।

स्त्रीग्रहण—शास्त्रमें स्त्रीग्रहणके विषयमें लिखा है, कि जो स्त्री माताकी असपिण्डा है अर्थात् सप्तम पुरुष तक मातामहादि वंशजात नहीं है और मातामहके चौदह पुरुष तक सगोत्रा नहीं है तथा पिताकी सगोत्रा या सपिण्डा नहीं अर्थात् पितृस्वस्रादि सन्ततिसम्भूता नहीं है, वही स्त्री विवाह कर्ममें प्रशस्त है। अति समृद्ध महत् वंशजात होने पर भी स्त्रीग्रहणके सम्बन्धमें उक्त कुल विशेष निषिद्ध है। हीन-क्रिय अर्थात् जातकर्मादि संस्कारविरहित, निष्पुरुष अर्थात् जिस कुलमें पुरुष उत्पन्न नहीं होता केवल कन्या ही उत्पन्न होती है, वेदाध्ययनरहित, रोमश, बहुलोमयुक्त, अर्श, राजयक्ष्मा, अपस्मार, श्वित्रि आदि महापातकज रोग-विशिष्ट, इन दश कुलोंसे स्त्रीसंग्रह नहीं करना चाहिये। (मनु ३ अ०) विशेष विवरण विवाह शब्दमें देखो।

गृहिणीधर्म—गृहिणी स्त्री सवेरे उठ कर पतिको प्रणाम करे, पीछे जल या गोबरसे आंगन लीपे, बादमें सभी गृहकर्म करके स्नान करे। अनन्तर देवता, ब्राह्मण और पतिको प्रणाम कर गृहदेवताकी पूजा करे। पीछे गृहकृत्य रंधनादि कार्य शेष करके अतिथि, पति और अन्यान्य व्यक्तियोंको खिलावे। बादमें आप भोजन करे। गृहादि परिष्कार परिच्छन्न रखावे, स्वामी, देवर, श्वशुर, सास आदि जिससे सुखस्वच्छन्दसे रह सके उस ओर विशेष ध्यान रहे। किसीको भी अप्रिय वाक्य न कहे, सदा मधुरहासिनी और मधुभाषिणी हो। घरका खर्च बूझ सोच विचार कर करे। (श्रीकृष्णजन्मख० ८४ अ०)

इधर पुरुषको भी चाहिये, कि वह सर्वदा स्त्रीका सम्मान करे। जो प्रतिपदमें स्त्रीका सम्मान करता है, उसे भी प्रतिपदमें शुभ होता है। जो पुरुषाधम स्त्रीका अपमान करता है, उसे पदपदमें अमङ्गल होता है।

(श्रीकृष्णजन्मख० ३२ अ०)

परस्त्रीसंसर्ग पापजनक है। शास्त्रमें लिखा है, कि परस्त्रीका संसर्ग कदापि न करे। गीतामें भगवान्ने स्वयं कहा है, 'जब अधर्मका प्रादुर्भाव होता है, तब कुल स्त्रियां व्यभिचारिणी होती हैं। स्त्रियोंके दुष्टा होनेसे वर्णसङ्कर जातिकी उत्पत्ति होती है। इन सब वर्णसङ्कर जाति द्वारा बहुत दिनोंका कुलधर्म और जातिधर्म विनष्ट होता है। पितृगण पिण्डाभावसे अवसन्न होते हैं। अतएव स्त्रियां जिससे विशुद्ध रहें, उस ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये।'

विवाहाभिमुखीभूत अलङ्कृता कन्या हरण करनेसे उत्तम साहस दण्ड, सामान्यतः कन्या हरण करनेसे प्रथम साहस, दण्ड कन्याके सवर्णा होने पर ऐसा ही दण्ड होगा। उच्चवर्णा होने पर उसका प्राणदण्ड कहा गया है। स्वापेक्षा निकृष्टवर्णकी कन्या यदि सकामा हो और उसके साथ रमण किया जाय, तो कोई दोष नहीं होगा। सकामा नहीं होनेसे प्रथम साहस दण्ड, अकामा कन्याको नखक्षतादि द्वारा दूषित करनेसे करच्छेदन दण्ड और वह कन्या यदि उच्च जातिकी हो, तो उसका वधदण्ड होगा।

व्यभिचारदोषमें लिप्त होनेसे राजाको चाहिये, कि वे स्त्री या पुरुष दोनोंका ही प्रमाण ले कर उन्हें पूर्वोक्त विधानसे दण्ड दें। पुरुष या स्त्रीके सम्बन्धमें बड़ी सावधानीसे रहें, युवती स्त्रीसे बिलकुल अलग रहें। क्योंकि शास्त्रमें कहा है, कि प्रबल इन्द्रिय विद्वानोंका भी मन खींच लेती है, इस कारण युवाशिष्य युवती गुरुपत्नीका पादग्रहण कर भी उसे अभिवादन न करे। इस लोकमें मनुष्यको दूषित करना ही स्त्रीका स्वभाव है, इससे पण्डितोंको चाहिये, कि वे स्त्रीके सम्बन्धमें कभी प्रमत्त या असावधान न होवें। संसारमें जितना धर्मार्थी सभी कामक्रोधके वशीभूत हैं। उनमें जो विद्वान् हों, या अविद्वान्, स्त्री उन्हें बड़ी आसानीसे

उन्मार्गगामी कर सकती है। बहन, कन्या आदिके साथ भी निर्जन गृहमें नहीं रहना चाहिये। अधिक क्या कहा जाय, इन्द्रियां इतनी बलवान् होती हैं कि वे ज्ञानवान् लोगोंका भी चित्त आकर्षण कर लेती हैं। इस कारण युवती स्त्रीके साथ बड़ी सावधानीसे रहनेकी व्यवस्था है। (मनु २।२१३ १७)

शास्त्रमें लिखा है, कि स्त्री पर विश्वास नहीं करना चाहिये। स्त्रीके निकट मन्त्रणादि प्रकाश कर देनेसे वह छिपी नहीं रह सकती, शीघ्र ही खुल जाती है। अतएव उसके साथ गुप्त विषय कभी भी प्रकाश नहीं करना चाहिये।

"स्त्रियाश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं
देवा न जानन्ति कुतो मनुष्याः।" (उद्भट)

प्रायः सभी पुराणोंमें स्त्रियोंके स्वभाव और चरित्रका आश्चर्यरूपसे वर्णन किया गया है। पुरुषकी अपेक्षा स्त्रीका आहार दूना, प्रज्ञा चौगुनी, व्यवसाय छः गुना और काम आठ गुना है। अतएव कामोपभोग द्वारा स्त्रीको कभी भी संतुष्ट नहीं किया जा सकता।

स्त्रीवधनिषेध—शास्त्रमें लिखा है, कि स्त्रीका वध नहीं करना चाहिये। यदि वह वधके योग्य अपराध भी करे, तो भी राजा उसे निर्वासित कर दें, प्राणदण्ड कदापि न दें। स्त्री अवध्या है। (अग्निपु०)

स्त्रीका चाञ्चल्य अत्यन्त निन्दनीय है। चंचला स्त्री कदाचित् सती नहीं होती, वह प्रायः व्यभिचारिणी हुआ करती है। चंचला स्त्री जिस कुलमें जाती है, वह कुल शीघ्र ही विनष्ट होता है। अतएव विवाहादि कालमें स्त्रीका स्वभाव चञ्चल है या नहीं भली भांति इसकी परीक्षा कर विवाह करना कर्त्तव्य है।

शास्त्रमें लिखा है, कि स्त्रीनायक देशमें वास नहीं करना चाहिये। (गरुडपु० ११५ अ०)

उपयाचिका स्त्रीत्यागमें दोष—स्त्री कामोपभोगके लिये स्वामीके पास यदि स्वयं उपयाचिका हो कर आवे तो उसे विमुख नहीं करना चाहिये। जो पुरुष स्त्रीका इशारा जान कर उसमें उपरत होता है, वह पुरुष उत्तम और जो स्त्रीका अभिप्राय स्पष्टरूपसे जान कर पीछे उसमें उपरत होता है, वह मध्यम और जो कामातुरा स्त्री द्वारा पुनः पुनः प्रेरित हो उसे परित्याग करता है, वह पुरुष नहीं, क्लीव है और अधम पदवाच्य है। (ब्रह्मवैवर्त्त पु० श्रीकृष्णजन्मख० ३३)

शास्त्रमें परस्त्रीसंसर्गको विशेष निन्दित कहा है। परस्त्रीका संसर्ग कदापि नहीं करना चाहिये। जो पुरुष परस्त्री संसर्ग करता है, उसे इस लोकमें अपयश और अन्तमें नरक होता है। राजा परस्त्रीदूषकको देशसे निर्वासित कर दें। परस्त्रीदूषकका दर्शन स्पर्शन भी पापजनक है। वह धर्म और समाजच्युत होगा। परस्त्रीगामी नरकभोगके बाद इस लोकमें जन्म ले कर यक्ष्मरोगी होता है।

जो स्त्री स्वामिवल्लभता लाभ करती है, वही स्त्री सौभाग्यवती है। जिस स्त्रीको स्वामी प्यार नहीं करता, उसका जीवन वृथा है। शयनभोजनादिमें उसे जरा भी सुख नहीं है। फिर जो स्त्री स्वामीको प्यार नहीं करती है, वह स्त्री अशुचि, धर्महीना और सर्वकर्मविवर्जिता है। स्त्रीका स्वामी ही एकमात्र गुरु और देवता है। स्त्रीके लिये स्वामीसे बढ़ कर देवता और गुरु दूसरा नहीं है। (श्रीकृष्णजन्मख० ४७ अ०)

स्त्रीजातिनिरूपण—रतिमञ्जरीमें चार प्रकारकी स्त्रीजाति निरूपित हुई है। यथा—पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्खिनी और हस्तिनी। इन चार प्रकारकी स्त्रीको चार प्रकारके पुरुष निर्दिष्ट हुए हैं। यथा—शशक, मृग, वृषभ और हय। विशेषविवरण उन्हीं सब शब्दोंमें और नारी शब्दमें देखो।

स्त्रीगमनविधान—आयुर्वेद और धर्मशास्त्रमें स्त्रीगमनका विशेष विधान लिखा है। मानवशरीरमें प्रतिदिन रमणेच्छा उपस्थित होती है। वह इच्छा रोक कर यदि स्त्रीसेवा न की जाय, तो नाना प्रकारके रोग होते हैं। इस कारण विधिविधानसे स्त्रीसेवा हितकर है। सोलह वर्षकी स्त्री बाला, उससे ऊपर ३० तक तरुणी, उसके बाद ५५ वर्ष तक प्रौढ़ा, और प्रौढ़ाके बाद स्त्री वृद्धा कहलाती है। वृद्धा स्त्री मैथुन विषयमें परित्यज्य है। ग्रीष्म और शरत्कालमें बाला स्त्री, शीतकालमें तरुणी, वर्षा और वसन्तकालमें प्रौढ़ा स्त्री मैथुन विषयमें प्रशस्त और हितकारिणी है। बाला स्त्रीका सेवन करनेसे बल-

वृद्धि, तरुणी स्त्रीसेवनसे शक्तिह्रास और प्रौढा स्त्रीगमनसे शरीर जराग्रस्त होता है। प्रभातकालमें स्त्रीसंसर्ग नहीं करना चाहिये, करनेसे सद्य वल नाश होता है। तरुणी स्त्रीके साथ रमण करनेसे वृद्ध व्यक्ति भी तरुणत्वको प्राप्त होता है। अपनेसे ज्यादे उमरवाली स्त्रीके साथ गमन करनेसे युवा व्यक्ति भी जराग्रस्त होता है। विधिपूर्वक स्त्रीसंसर्ग करनेसे परमायु वृद्धि, वार्द्धक्यकी अल्पता, शरीरकी पुष्टि, वर्णकी प्रसन्नता और वलकी वृद्धि तथा मांस स्थिर और उपचित होता है।

हेमन्तकालमें वाजीकरण औषधका सेवन कर वल और कामवेगके अनुसार यथासम्भव स्त्रीसंसर्ग, शिशिर-कालमें इच्छानुसार, वसन्त और शरत्कालमें तीन दिनके अन्तर पर तथा ग्रीष्मकालमें १५ दिनके अन्तर पर स्त्रीससर्ग करना उचित है। सुश्रुतके मतानुसार सभी ऋतुओंमें तीन दिनके अन्तर पर, केवल ग्रीष्मकालमें एक पक्षके अन्तर पर स्त्री संसर्ग करना उचित है। इससे अधिक स्त्रीसंसर्ग करनेसे वल और आयुका नाश होता है।

संध्याकालमें, पर्व दिनमें, प्रत्यूषमें, अर्द्धरात या अर्द्ध दिनमें स्त्रीसंसर्ग कदापि न करे। रजस्वला) अकामा (जिस स्त्रीके कामोद्रेक नहीं हुआ है), मलिनवेशा, मलिनान्तःकरणविशिष्टा, वर्णवृद्धा, वयोवृद्धा, व्याधिपीडिता, हीनाङ्गी, सगोत्रा, गुरुपत्नी अथवा जिस स्त्री पर मन आसक्त नहीं हुआ है तथा गर्भवती स्त्रीके साथ कदापि संसर्ग नहीं करना चाहिये।

आत्मसंयममें असमर्थ हो यदि रजस्वला स्त्रीके साथ उपगत किया जाय, तो दर्शनशक्तिका ह्रास, परमायुकी हीनता, तेजकी हानि और धर्मका नाश होता है। संन्यासिनी, गुरुपत्नी, सगोत्रा और वृद्धा स्त्रीके साथ तथा पर्वदिन या संध्याकालमें स्त्रीसंसर्ग करनेसे जीवनका नाश होता है। गर्भिणी स्त्रीके साथ संसर्ग करनेसे गर्भपीडा उत्पन्न होती है। गर्भिणी शब्दसे गर्भसञ्चार दिनसे तृतीय मासका वोध होता है अर्थात् पुंसवन संस्कार हो जानेसे उसमें उपगत नहीं होना चाहिये। हीनाङ्गी, मलिना, द्वेषभावापन्ना, अकामा और वन्ध्या स्त्री संसर्ग करनेसे शुक्र क्षीण होता है और मन अप्रसन्न रहता है। अतिशय स्त्रीसंसर्ग करनेसे शूल, कास, ज्वर, श्वास, कृशता, पाण्डु, क्षय और आक्षेप आदि विविध रोग उत्पन्न होते हैं। पीडिता स्त्रीके संसर्गसे प्लीहा और मूर्च्छादि विविध रोग उत्पन्न होते हैं और अन्तमें मृत्यु पर्यान्त पीडित हो कर रहना पडता है। (भावप्र०)

धर्मशास्त्रमें लिखा है, कि ऋतुके सोलह दिन तक ही स्त्रीगमनकाल है। इनमेंसे प्रथम चार दिन वाद दे कर शेष १२ दिनके मध्य युग्मदिनमें, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, ज्येष्ठा, मूला, मघा, अश्लेषा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्रपद और उत्तर फल्गुनी इन सव तिथि नक्षत्रादिका परित्याग कर स्त्रीसंसर्ग करे। ऋतुके वाद १६ दिन ही स्त्रियोंके गर्भग्रहणयोग्य काल है, इस कारण सन्तानकी कामना करते हुए शुभ दिनमें स्त्रीसंसर्ग करना ही उचित है। स्वभावतः ही मानवकी कामकी प्रवृत्ति होती है, परन्तु उस प्रवृत्तिसे निवृत्त होना ही महाफलजनक है।

महामति शङ्कराचार्यने कहा था, कि इस जगत्में हेय अर्थात् परित्याज्य क्या है? कनक और कान्ता, अर्थात् जो कामिनी और काञ्चनको त्याग कर सकते हैं, वे ही यथार्थ योगी हैं। यह कामिनी काञ्चन ही आसक्तिका मूल है।

२ पत्नी, जोरू। ३ मादा। ४ प्रियंगु लता। ५ सफेद च्यूंटी। ६ एक वृत्तका नाम। इसमें दो गुरु होते हैं।

स्त्रीकरण (सं० क्ली०) सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीकाम (सं० स्त्री०) स्त्री कामो यस्य। स्त्रीकामनायुक्त। स्त्रीकी कामना या इच्छा करनेवाला, जिसे औरतकी ख्वाहिश हो।

स्त्रीकोश (सं० पु०) खड्ग, कटार।

स्त्रीक्षीर (सं० क्ली०) स्त्रियाः क्षीरं। स्त्रीके स्तनका दूध।

स्त्रीक्षेत्र (सं० क्ली०) स्त्रीरेव क्षेत्रं। स्त्रीरूप क्षेत्र।

स्त्रीग (सं० त्रि०) स्त्री-गम-ड। स्त्रीगामी, स्त्रीसे गमन करनेवाला।

स्त्रीगमन (सं० क्ली०) स्त्रीसंसर्ग, सम्भोग। शास्त्रमें स्त्रीगमनकी विधि और निषेध विशेषरूपसे लिखा है। स्त्री देखो।

स्त्रीगवी (सं॰ स्त्री॰) धेनु, गाय।

स्त्रीगुरु (सं॰ पु॰) स्त्री चासौ गुरुश्चेति। दीक्षाकर्त्री, मन्त्रमात्रोपदेष्ट्री। तन्त्रमें स्त्रीगुरुका विधान इस प्रकार लिखा है,—पुरुषसे जिस प्रकार दीक्षा ग्रहण की जा सकती है, स्त्रीसे भी इसी प्रकार दीक्षा लेनेका विधान है। पुरुष गुरुके सम्बन्धमें जिस प्रकार कुछ निन्दित लक्षण हैं, स्त्रीके भी उसी प्रकार निन्दित लक्षण हैं। ऐसी निन्दनीया स्त्रीसे मन्त्रग्रहण नहीं करना चाहिये।

साध्वी, सदाचारा, सर्वमन्त्रार्थविशारदा, सुशीला और पूजादिमें अधिकारिणी स्त्रीसे मन्त्र लिया जा सकता है, परन्तु विधवा स्त्रीमें यदि पूर्वोक्त गुण पाया जाय, तो भी उससे मन्त्र लेना निषेध है। पुरुषकी अपेक्षा स्त्रीगुरुसे दीक्षा लेनेसे विशेष शुभफल होता है। माताके निकट उसके उपासित मन्त्रमें दीक्षित होनेसे अपेक्षाकृत अठगुने फलकी प्राप्ति होती है।

दूसरे मन्त्रमें लिखा है, कि गुरु कर्तृक अपना उपासित मन्त्र देनेमें गुरुको जगह विचारकी आवश्यकता नहीं है अर्थात् पुं॰ स्त्री इत्यादिका विचार नहीं करना होता है। स्त्रीगुरु निषेधस्थलमें विधवाका परित्याग करे यही तन्त्रका मर्मार्थ है। मन्त्रग्रहणविषयमें विधवा स्त्री निषिद्धा होने पर भी किसी किसी मन्त्रमें लिखा है, कि विधवा स्त्री पुत्रकी आज्ञासे, कन्या पिताकी आज्ञासे और सधवा स्त्री पतिकी आज्ञासे दीक्षाकार्यमें अधिकारिणी हो सकती है। गर्भवती स्त्रीसे भी दीक्षा ली जा सकती है, परन्तु विशेषता यह है, कि गर्भके दशवें मासमें उससे दीक्षा न ले।

गुप्तसाधनतन्त्रके २य पटलमें स्त्रीगुरुकी पूजा, बृहन्नीलतन्त्रके २य पटलमें स्त्रीगुरुस्तोत्र और कवच तथा मातृकाभेदतन्त्रके ७म पटलमें इन सबोंका विशेषरूपसे उल्लेख है।

स्त्रीग्रह (सं॰ पु॰) ग्रहविशेष। ज्योतिषमें पुरुष, स्त्री और क्लीव तीन प्रकारके ग्रह माने गये है जिनमें बुध, चन्द्र और शुक्र स्त्री-ग्रह हैं। जातकके पञ्चम स्थान पर इन ग्रहोंकी स्थिति या दृष्टि रहनेसे स्त्री-सन्तान होती है और लग्न आदिमें रहनेसे सन्तान स्त्री स्वभाववाली होती है।

स्त्रीघातक (सं॰ स्त्री॰) स्त्रीहत्याकारी, स्त्रीको हत्या करनेवाला। जो स्त्रीको हत्या करता है, वह शास्त्रानुसार महापातकी है। राजा उसे प्राणदण्ड दें।

स्त्रीघोष (सं॰ पु॰) स्त्रीणां घोषो यत्र। प्रत्यूष, प्रभात, तड़का।

स्त्रीघ्न (सं॰ त्रि॰) स्त्रियं हन्ति हन-क। स्त्रीघातक, स्त्री या पत्नीकी हत्या करनेवाला।

स्त्रीचञ्चल (सं॰ त्रि॰) कामी, लम्पट।

स्त्रीचित्तहारिन् (सं॰ पु॰) १ शोभाञ्जन, सहिजन। २ स्त्रीका चित्त हरण करनेवाला।

स्त्रीचिह्न (सं॰ क्ली॰) १ योनि, भग, स्तन आदि जो स्त्री होनेके चिह्न हैं।

स्त्रीचौर (सं॰ पु॰) १ कामुक, लम्पट। (त्रि॰) २ स्त्रीको चुरानेवाला।

स्त्रीजन (सं॰ पु॰) स्त्री चासौ जनश्चेति, स्त्रीलोक।

स्त्रीजननी (सं॰ स्त्री॰) वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करे।

स्त्रीजन्मन् (सं॰ क्ली॰) स्त्री सन्तानकी उत्पत्ति।

स्त्रीजातक (सं॰ क्ली॰) ग्रन्थविशेष। इसमें स्त्रियोंके शुभाशुभ लक्षण लिखे हैं।

स्त्रीजित (सं॰ त्रि॰) स्त्रीवशीभूत, स्त्री या पत्नीके वशमें रहनेवाला, जोरूका गुलाम। जो स्त्रीके गुलाम होते हैं, संसारमें उनकी निन्दा होती है। शास्त्रोंके अनुसार उन लोगोंका स्पर्श करनेसे पुण्य विनष्ट होता है। वे लोग पापियोंके मध्य श्रेष्ठ हैं।

स्त्रीता (सं॰ स्त्री॰) स्त्रीत्व देखो।

स्त्रीत्व (सं॰ क्ली॰) स्त्रियाः भावः त्व। स्त्रीका भाव या धर्म, स्त्रीपन, जनानापन। २ व्याकरणके अनुसार प्रत्ययविशेष। व्याकरणके टाप्, डाप्, ङीप्, ङीष् आदि स्त्रीबोधक सभी प्रत्ययोंको स्त्रीत्व प्रत्यय कहते हैं। शब्दके उत्तर कहीं कहीं आप् या ङीष् आदि प्रत्यय हो कर स्त्रीलिङ्गबोधक होगा। विशेष विवरण व्याकरणमें देखो।

स्त्रीदैवत (सं॰ त्रि॰) जिसकी स्त्री देवता हो।

स्त्रीदेहार्द्ध (सं॰ पु॰) अर्द्धनारीश्वर महादेव, हरगौरीमूर्त्ति।

स्त्रीद्विष् (सं० त्रि०) स्त्रीद्वेषकारी, स्त्रीसे द्वेष करनेवाला।

स्त्रीद्वेषिन् (सं० त्रि०) स्त्री-द्विष-णिनि। स्त्री-द्वेषकारी, स्त्रीसे द्वेष करनेवाला।

स्त्रीधन (सं० क्लो०) स्त्रियोंका स्वत्वास्पदीभूत धन जिस धनमें स्त्रियोंका सम्पूर्ण स्वत्व है, उसीको स्त्रीधन कहते हैं। मन्वादि शास्त्रमें स्त्रीधनका विशेष विधान लिखा है।

स्त्रीधन ६ प्रकारका है, अध्यग्नि, अध्यावाहनिक, प्रीतिदत्त, मातृदत्त, पितृदत्त और भ्रातृदत्त। विवाहके होम कालमें स्त्री जो धन पाती है, उसे अध्यग्नि तथा पितृगृहगमनकालमें जो धन लाभ होता है उसका नाम अध्यावाहनिक या व्यवहारिक स्त्रीधन, रति या अन्य किसी समय पति स्त्रीको प्रीतिपूर्वक जो धन देता है, उसे प्रीतिदत्त; माता, पिता और भ्राता आदि जो धन देते हैं, उसे मातृदत्त, पितृदत्त और भ्रातृदत्त कहते हैं। यह छः प्रकारका स्त्रीधन स्त्रीका सम्पूर्ण निजस्व है। इस धनमें दूसरे किसीका भी अधिकार नहीं है। स्त्री यह धन जिसको चाहे, दे सकती है। विवाहके बाद पिता, माता और भर्त्ता, पितृकुल, मातृकुल और भर्तृकुलसे जो धन मिलता है, उसको अन्वाधेय धन भी कहते हैं।

इस स्त्रीधनविभागके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—ब्राह्म, दैव, आर्ष, गान्धर्व और प्राजापत्य यह पांच प्रकारका विवाहलब्ध जो स्त्रीधन है, स्त्रीके निःसन्तान मरने पर स्वामीके हाथ लगेगा। फिर, आसुर, राक्षस और पैशाच विवाहलब्ध स्त्रीधन स्त्रीके अनपत्यावस्थामें परलोकवासिनी होने पर पहले माताको और माताके अभावमें पिताको प्राप्य होगा।

ब्राह्मण-परिगृहीत नाना जातिकी स्त्रियोंमेंसे यदि कोई अनपत्यपतिका हो कर मरे, अर्थात् पति और सन्तानादि न रहें, तो उसका पितृदत्त जो स्त्रीधन है, सपत्नी ब्राह्मणीकी कन्या उसकी अधिकारिणी होगी। अभावमें उसके पुत्रादि पावेंगे। (मनु ६ अ०)

अनेक परिवारोंमें रह कर कोई स्त्री साधारण धन या अलङ्कारादिके लिये धनसञ्चय नहीं कर सकती। यदि करे, तो वह स्त्रीधन नहीं समझा जायेगा। स्वामीकी जीवितावस्थामें स्त्री जो सब अलङ्कारादि पहनती है, स्वामीकी मृत्यु होने पर वह बंटवारा हो जायेगा।

माताके मरने पर माताका धन सहोदर भाई और अविवाहिता सहोदरा बहन समान भाग कर लेगी। विवाहिता कन्या रहने पर उसको अपने अंशसे चौथाई भाग देना होगा। यदि उन सब कन्याओंके फिर कन्या रहे अर्थात् अविवाहिता दौहित्री रहे, तो सम्मानार्थ उन्हें मातामहीके धनसे दे। इसमें अंशका कोई उल्लेख नहीं है। स्त्री स्वामी या पुत्रादिकी मृत्युके बाद उत्तराधिकारसूत्रसे जो धन पाती है, उस धनमें स्त्रीका सम्पूर्ण स्वत्व रहने पर भी वह स्त्रीधन नहीं कहलायेगा। उत्तराधिकारसूत्रमें स्त्रीको जो धन मिलेगा, वह धन वे यथेच्छरूपसे दानविक्रयादि नहीं कर सकती, करनेसे वह असिद्ध होगा।

दायभागमें लिखा है, कि स्त्रीकी मृत्युके बाद पुत्र और कन्या दोनोंका समान अधिकार है अर्थात् जितना पुत्र-कन्या रहेंगी सबोंको समान भाग मिलेगा। एकके अभावमें दूसरा अर्थात् पुत्र नहीं रहनेसे कन्या या कन्या नहीं रहनेसे पुत्र उस धनका अधिकारी होगा। बहुकन्यास्थलमें विवाहिता, पुत्रवती और सम्भावित पुत्रा ये ही स्त्री धनमें समान अधिकार पावेंगी। इनके अभावमें स्वामी धनाधिकारी होते हैं। (दायभाग)

स्त्री यदि व्यभिचारिणी, अपकारक्रियायुक्त, निर्लज्ज और अर्थनाशिनी हो, तो वह स्त्रीधनकी अधिकारिणी नहीं होती। स्त्रीमें यदि ये सब दोष पाये जायं, तो स्वामी स्त्रीसे वह धन ले सकता है।

स्त्री स्वामी आदिको बिना पूछे जो धन दानविक्रयादि कर सकती है, वही प्रकृत स्त्रीधन है। स्त्री शिल्पादि कार्यमें जो धन पाती है, वह भी उसका निजी है। इसमें और किसीका भी अधिकार नहीं है। स्वामी यदि साझेदारोंको ठगनेके लिये स्त्रीको धन दे दे और वह प्रमाणित हो जाय, तो वह स्त्रीधन नहीं समझा जायेगा। इस धनमें सबोंका समान अधिकार होगा। स्त्रीका धन होनेसे ही वह स्त्रीधन नहीं कहलायेगा, जिस धनमें स्त्रीका

सम्पूर्ण स्वातन्त्र्य है, वही प्रकृत स्त्रीधन है। दायतत्त्व, दायभाग, मिताक्षरा आदिमें स्त्रीधनका विशेष विवरण और उसका विभाग लिखा है। दायभाग देखो।

स्त्रीधर्म (सं० पु०) स्त्रीणा धर्मः। १ ऋतु, पुष्प, आर्त्तव, रज। जवानी आने पर प्रतिमासमें स्त्रियोंके योनिमार्गसे रज निकलता है, यह स्त्रियोंका स्वाभाविक है, इसीसे इसको स्त्रीधर्म कहते हैं। जब तक स्त्रियोंकी जवानी रहती है, तब तक इसी प्रकार निकलता रहता है। इस अवस्थामें स्त्री अशुचि होती है। अशुचि अवस्थामें उन्हें किसी भी धर्मकर्ममें अधिकार नहीं रहता। विशेष विवरण रजस्वला शब्द देखो।

२ मैथुन। ३ स्त्रियोंके शुभ कर्मादि।

स्त्रीधर्मिणी (सं० स्त्री०) ऋतुमती स्त्री, रजस्वला स्त्री।

स्त्रीधव (सं० पु०) पुरुष। (जटाधर)

स्त्रीधूर्त्त (सं० पु०) स्त्रीको छलनेवाला पुरुष।

स्त्रीध्वज (सं० पु०) १ हस्ती, हाथी। (त्रि०) २ जिसमें स्त्रियोंके चिह्न हों, स्त्रीके चिह्नोंसे युक्त।

स्त्रीनामन् (सं० त्रि०) जिसका स्त्रीवाचक नाम हो, स्त्रीनामवाला।

स्त्रीनिबन्धन (सं० पु०) घरका धंधा जो स्त्रियां करती हैं।

स्त्रीनिर्जित (सं० त्रि०) स्त्रिया निर्जितः। स्त्रीवशीभूत, स्त्रैण। स्त्रीजित देखो।

स्त्रीपण्योपजीविन् (सं० पु०) वह जो अपनी स्त्रीको दूसरेके पास भेज कर उससे मिले हुए धनसे जीविका निर्वाह करता है। शास्त्रमें ऐसी जीविकाको निन्दित कहा है, जिनकी जीविका इस प्रकारकी है, वे अत्यन्त पापी होते हैं, उन्हें देखने छूने आदिसे भी पाप लगता है।

स्त्रीपर (सं० पु०) स्त्रीपु परः निरतः। कामुक, विषयी।

स्त्रीपर्वन् (सं० क्ली०) स्त्रियोंका पर्वदिन, स्त्रियोंका त्योहार।

स्त्रीपुंधर्म (सं० पु०) स्त्री और पुरुषका व्यवहार। यह अठारह विवादपदके अन्तर्गत एक व्यवहार है। मनुमें इस प्रकार लिखा है—

स्वामी आदि स्वजनगण स्त्रीजातिको कदापि स्वाधीनावस्थामें रहने न दें, वरन सर्वदा अनिषिद्ध रूपरसादि विषयमें प्रसक्त कर उन्हें अपने वशमें रखे रहे। स्त्रीजाति कौमारावस्थामें पिता द्वारा, यौवनमें स्वामी द्वारा और वृद्धावस्थामें पुत्र द्वारा रक्षणीय है। ये कदापि स्वाधीनावस्थामें रहने योग्य नहीं हैं। उद्वाह-योग्यकालमें अर्थात् कन्याकालके मध्य कन्या यदि पात्रस्था न हो, तो पिता लोकसमाजमें निन्दनीय होते हैं तथा ऋतुकालमें पति यदि पत्नीके साथ रमण न करे, तो वे भी निन्दनीय हैं। फिर स्वामीके मरने पर यदि उसके लड़के अपनी माताकी देखभाल नहीं करे, तो वे भी नितान्त लोकनिन्दाके पात्र होते हैं। स्त्रीजाति अति सामान्य दुःसङ्गसे भी रक्षणीय हैं, क्योंकि रक्षण विषयमें जरा भी अवहेला होनेसे स्त्रीजाति पितृकुल और भर्तृकुलके सन्तापका कारण होती है। भार्या-रक्षण सभी धर्मोंसे श्रेष्ठ है, यह जान कर क्या दुर्बल, क्या सबल, क्या अंध, क्या खञ्ज सभी अपनी अपनी भार्याकी रक्षा बड़े यत्नसे करें। जो अपनी भार्याकी रक्षा करनेमें हमेशा यत्नवान् हैं, वे उससे निज वंश परम्परा, आत्मचरित्र और धर्म इन सबोंकी रक्षा करते हैं। पति भार्याके गर्भमें प्रविष्ट हो कर उस गर्भसे पुत्ररूपमें जन्म लेते हैं, जायासे पुनर्जन्म होता है, इसीसे जाया-का जायात्व है। यह स्थिर सिद्धान्त है, कि पत्नी जैसे स्वामीका भजन करेगी, ठीक वैसा ही पुत्र जन्म लेगा।

समुद्रमें मिलनेसे जिस प्रकार नदीका जल खारा हो जाता है, स्त्री भी उसी प्रकार साधु या असाधु पुरुषके साथ विवाहसूत्रमें सम्मिलित हो कर वैसे ही गुणवाली हो जाती है। निकृष्ट कुलमें उत्पन्न अक्ष-माला और पक्षिणी शार्ङ्गी यथाक्रम ऋषि वशिष्ठ और मन्दपालके साथ उद्वाहसूत्रमें मिल कर परम मान्या हो गई थी फिर सत्यवती आदि और भी कितनी रम-णियोंने अपकृष्टयोनिजा हो कर भी स्वामीके गुणसे विशेष उत्कर्ष लाभ किया था।

मद्यपानासक्ता, दुश्चरित्रा, पतिविद्वेषिणी, असाध्य व्याधिग्रस्ता, अपकारसाधनक्षमा, धनक्षयकारिणी स्त्री होने पर स्वामी दूसरा विवाह कर सकता है। स्त्री यदि बांझ हो, तो आद्यऋतुसे अष्टम वर्षमें, मृतवत्सा होने पर दशम वर्षमें और केवल कन्या उत्पादन करने पर एकादश वर्षमें, द्वितीय बार दारपरिग्रह किया जा सकता है। परन्तु पत्नीके अप्रियभाषिणी होने पर

दारपरिग्रहमें विलम्ब नहीं करना चाहिये। जो स्त्री रोगसे पीड़ित है पर सुशील है, उसकी अनुमति ले कर दूसरी वार विवाह करना उचित है। परन्तु स्वामी कदापि उसका अपमान न करे। स्त्री यदि गुस्सेमें आ कर घर छोड़ देना चाहे, तो उसे शीघ्र ही घरमें बंद कर दे, किंवा आत्मीय स्वजन आदिके सामने वर्जन करे। कहनेका तात्पर्य यह, कि परस्पर अव्यभिचारावस्थामें रहना ही स्त्रीपुरुष दोनोंका धर्म है।

स्त्रीपुंस (सं० पु०) स्त्री और पुरुष।

स्त्रीपुंसलक्षणा (सं० स्त्री०) वह जिसे स्त्री और पुरुष इन दोनोंका चिह्न रहे, वह जिसे स्त्रीचिह्न स्तन और पुरुषचिह्न मूंछ हो। पर्याय—पोटा।

स्त्रीपुर (सं० पु०) अन्तःपुर, जनानखाना।

स्त्रीपुष्प (सं० क्ली०) आर्त्तव, रज।

स्त्रीपूर्व (सं० पु०) स्त्रीजित देखो।

स्त्रीप्रत्यय (सं० पु०) व्याकरणके मतसे स्त्रीलिङ्ग शब्दके उत्तर ङीप, ङीप्, टाप् आदि जो सब प्रत्यय होते हैं, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं। व्याकरणमें स्त्रीतद्धितमें स्त्रीप्रत्ययका विशेष विधान है।

स्त्रीप्रधान (सं० त्रि०) स्त्री प्रधानं यत्र। जहां स्त्री ही प्रधान हो।

स्त्रीप्रसङ्ग (सं० पु०) सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीप्रसू (सं० त्रि०) स्त्रीजननी देखो।

स्त्रीप्रिय (सं० पु०) १ आम्रवृक्ष, आमका पेड़। २ अशोक। (त्रि०) ३ स्त्रियोंका प्रिय द्रव्यमात्र।

स्त्रीबन्ध (सं० पु०) सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीभव (सं० क्ली०) स्त्रीत्व, स्त्रीका भाव या धर्म।

स्त्रीभूषण (सं० पु०) केतकी, केवड़ा।

स्त्रीसम्भोग (सं० पु०) मैथुन, प्रसङ्ग।

स्त्रीमन्त्र (सं० पु०) वह मन्त्र जिसके अन्तमें स्वाहा हो।

स्त्रीमानिन् (सं० पु०) १ भौत्य मनुके एक पुत्रका नाम। (मार्कण्डेयपु १००।३२) (त्रि०) २ अपनेको स्त्री समझनेवाला।

स्त्रीमुखप (सं० पु०) बकुल, मौलसिरी। (राजनि०)

स्त्रीम्मन्य (सं० त्रि०) स्त्रियम्मन्य देखो।

स्त्रीरजस् (सं० क्ली०) स्त्रियोंका रज।

स्त्रीरञ्जन (सं० क्ली०) ताम्बूल, पान।

स्त्रीरत्न (सं० क्ली०) १ नारीरत्न, श्रेष्ठा स्त्री। २ लक्ष्मी।

स्त्रीराज्य (सं० पु०) महाभारतके अनुसार प्राचीन कालका एक प्रदेश जहां स्त्रियोंकी ही बस्ती थी।

स्त्रीराशि (सं० पु०) राशिविशेष। राशि देखो।

स्त्रीरोग (सं० पु०) स्त्रिया रोगः। स्त्रियोंकी योनिसम्बन्धीय पीड़ा। लक्षण—क्षीर मत्स्यादि आहार, विरुद्ध द्रव्यभोजन, मद्यपान, पहलेका आहार जीर्ण हुए बिना पुनर्वार भोजन, अपक्व द्रव्यभोजन, गर्भपात, अतिरिक्त मैथुन, पथपर्यटन, अधिक यानारोहण, शोक, उपवास, भारवहन, अभिघात और अतिनिद्रा आदि कारणोंसे स्त्रियोंके यह रोग होता है। इसको प्रदर या असृक् कहते हैं। अङ्गमर्द्दन द्वारा हो कर स्राव निकलना ही इसका साधारण लक्षण है। यह धातुज, कफज, पित्तज और सन्निपातज भेदसे चार प्रकारका है। जिसमें अपक्व रसयुक्त पिच्छिल, पाण्डुवर्ण और मांस धोए हुए जलकी तरह स्राव निकलता है, वह कफज है। जिसमें पीत, नील, कृष्ण या रक्तवर्ण उष्णस्राव निकलता है, जलन देती है, वक्षःस्थल लाल दिखाई देता है, फेनदार और मांसके धोए हुए जलकी तरह स्राव सूई चुभने सी वेदनाके साथ निकलता है, वह वातज है। सन्निपातज रोगमें मधु, घृत या हरितालके रंगसा अथवा मज्जाके समान और शवकी तरह गन्धविशिष्ट स्राव निकलता है। यह सन्निपातज रोग असाध्य है। यह आरोग्य नहीं होता, पर उपयुक्त रूपसे चिकित्सा की जाये, तो इसका प्रशमन होता है। इस रोगमें रक्त और बल क्षीण, निरन्तर स्राव, तृष्णा, दाह और ज्वरादि उपद्रव उपस्थित होनेसे वह भी असाध्य होता है।

इसके सिवा और भी एक प्रकारका स्त्रीरोग है जिसे बोलचालमें बाधक कहते हैं। यह रोग होनेसे संतानमें बाधा पहुंचती है, इसीसे इसका बाधक नाम पड़ा है। यह बाधक रोग नाना प्रकारका है। किसी बाधकमें कमर, नाभिके अधोभाग, पार्श्वद्वय और दोनों स्तनमें वेदना होती है और कभी कभी एक या दो मास तक रजस्राव

होता रहता है। किसी बाधकमें चक्षु:, हस्ततल और योनिमें ज्वाला देती, लालासयुक्त रजःस्राव होता, कभी कभी एक मासमें दो बार ऋतु होते देखा जाता है। किसी बाधकमें मानसिक अस्थिरता, शरीरमें भारबोध, अधिक रक्तस्राव, हाथ पैरमें जलन, कृशता, नाभिके नीचे शूलवत् वेदना तथा कभी तीन या चार मासके अन्तर पर ऋतु होता है। इसमें नियमित रूपसे ऋतु नहीं होता। फिर किसी बाधकमें बहुत दिनोंके बाद रजःप्रवृत्ति होती है तथा उस समय बहुत कम रजःस्राव होता है। दोनों स्तनकी गुरुता और स्थूलता, देहकी कृशता, योनिमें शूलवत् वेदना, ये सब लक्षण दिखाई देते हैं। किसी किसी बाधकमें ऋतु एकदम बंद हो जाता है। परन्तु महीनेके अन्तमें निर्दिष्ट समय एक एक बार पेटमें, कमरमें, दोनों स्तनमें तथा सारे शरीरमें दारुण वेदना उपस्थित होती है। प्रायः सभी बाधकमें बीच बीचमें योनि द्वार हो कर थोड़ा थोड़ा रेत निकलता है। जब तक ऐसा ही उपद्रव बना रहता है, तब तक स्त्रियोंके सन्तान नहीं होती। फलतः यह बाधकरूपमें स्त्रीरोग होनेसे बड़ी सावधानीके साथ चिकित्सा करनी होती है।

जो ऋतु मास मासमें निर्दिष्ट कालमें प्रवृत्त हो कर पांच दिन रहता है, दाह और वेदना आदि कोई भी शारीरिक यन्त्र नहीं होती, रक्त पिच्छिल तथा परिमाणमें अल्प या अधिक नहीं होता, रक्तका वर्ण लाहके रसके जैसा होता है। रक्त कपड़ेमें लगनेसे लाल तथा जलसे धो डालने पर तुरत उठ जाता है, वही विशुद्ध ऋतुरक्त है। इसमें जरा भी फर्क होनेसे वह भी कष्टदायक समझा जावेगा।

योनिव्यापद् लक्षण—अनुपयुक्त आहार विहार, दुष्ट रज और बीजदोष आदि कारणोंसे नाना प्रकारके योनिरोग होते हैं। यह योनिरोग भी स्त्रीरोगमें गिना जाता है। स्त्रियोंके योनिदेशमें बड़े कष्टसे जो फेनदार रज निकलता है, उसका नाम उदावर्त्ता, जिसमें रक्त दूषित हो कर सन्तानोत्पत्तिको शक्ति नष्ट हो जाती है, उसका नाम वन्ध्यात्व है। विप्लुतानामक योनिव्यापद्‌में योनिदेशमें हमेशा दर्द मालूम होता है। परिप्लुता-रोगमें मैथुनके समय योनिमें अत्यन्त वेदना होती है। यह चारों रोग वातज है। इसमें योनि कर्कश, कठिन तथा शूल और सूचीवेधवत् वेदनायुक्त होती है।

लोहितक्षय नामक रोगमें योनिदेशमें अत्यन्त दाह और रक्तक्षय होता है। वामिनीरोगमें योनिद्वारसे वायुके साथ रक्त मिला हुआ शुक्र निकलता है। प्रस्रंसिनी अधोदेशमें लम्बित और वायु जन्य उपद्रवयुक्त होती है। इस रोगमें सन्तान-प्रसवकालमें अत्यन्त कष्ट होता है। पुत्रघ्नी रोगमें बीच बीचमें गर्भसञ्चार होता है, परन्तु वायु द्वारा रक्तक्षय हो जानेके कारण वह गर्भ नष्ट हो जाता है। ये चारों रोग पित्तज हैं। इसमें अत्यन्त दाहज्वर उपस्थित होता है।

अत्यानन्दा नामक योनिरोगमें अतिरिक्त मैथुन करनेसे भी तृप्ति नहीं होती। योनिमें कफ और रक्त द्वारा मांसकन्दकी तरह ग्रन्थि उत्पन्न होनेसे उसको कर्णिनी रोग कहते हैं। अतिचरणा रोगमें मैथुनके समय पुरुषका रेतःस्खलित होनेके पहले ही स्त्रीका रेतःपात हो जाता है। अतएव वह स्त्री रेत लेनेमें समर्थ नहीं होती। अतिरिक्त मैथुनके कारण रेतःग्रहणकी शक्ति नष्ट होनेसे उसको अतिचरणा कहते हैं। इसमें योनि पिच्छिल कण्डूयुक्त और अत्यन्त शीतलस्पर्श होती है।

जिस स्त्रीके ऋतु नहीं होता, स्तन बहुत छोटे होते हैं तथा मैथुनकालमें योनि कर्कशस्पर्श-सी मालूम होती है, उसकी योनिको षण्ढी कहते हैं। अल्प वयस्का और सूक्ष्म योनिद्वारविशिष्टा रमणी स्थूललिङ्ग वाले पुरुषके साथ यदि सहवास करे, तो उसकी योनि अण्डकोषकी तरह लटक जाती है, इसको अण्डली कहते हैं। अति विस्तृत योनिका नाम महायोनि और सूक्ष्मद्वारविशिष्ट योनिका नाम सूचीवक्त्रा है।

दिवानिद्रा, अतिरिक्त क्रोध, अधिक व्यायाम, अतिशय मैथुन करनेसे तथा किसी भी कारणवश योनिदेश क्षत होनेसे वातादि तीनों दोष कुपित हो कर योनिदेशमें पूयरक्त जैसा वर्णविशिष्ट और मन्दार फल जैसा आकृतिविशिष्ट एक प्रकारका मांसकन्द उत्पादन करता है, उसे योनिकन्द कहते हैं। वायुकी अधिकता रहनेसे कन्द रूखा विवर्ण और विदीर्ण हो जाता है। श्लेष्माकी अधि-

कना रहनेसे ये सभी लक्षण मिश्रित भावमें दिखाई देते हैं। ये सब स्त्रीरोग होनेसे बड़ी सावधानीसे चिकित्सा करनी होती है, नहीं तो साध्यरोग असाध्य हो जाता है तथा रोगिणीके अनेक प्रकारकी यन्त्रणा और अन्तमें उसका जीवननाश होता है। चिकित्साका विषय प्रदर और योनिरोग शब्दमें देखो।

स्त्रीरोग होने ही इसका प्रतिविधान करना उचित है। स्त्रीरोग होनेसे स्त्रियां लज्जावशतः पहले उसे प्रकाश नहीं करती, जब यन्त्रणा असह्य और रोग असाध्य हो जाता है, तब ही वे इसे खोलती हैं। रोग बढ़ जानेसे चिकित्सा करनेसे उतना उपकार नहीं होता। सभी वैद्यक ग्रन्थोंमें तथा गरुड़पुराणके १७६वें अध्यायमें स्त्रीरोगका विशेष विधान लिखा है।

स्त्रीलक्षण (सं० क्ली०) स्त्रिया लक्षणं। १ स्तनोद्गमादिरूप स्त्रीचिह्न। २ स्त्रियोंके शुभाशुभ लक्षण। बृहत्संहिताके ७० वें अध्यायके स्त्रीलक्षणनामाध्यायमें इस लक्षणका विशेष विवरण लिखा है।

स्त्री और नारी शब्दमें लक्षणादि देखो।

स्त्रीलम्पट (सं० त्रि०) स्त्रीकी सदा कामना करनेवाला, कामी, विषयी।

स्त्रीलिङ्ग (सं० क्ली०) व्याकरणमें प्रकारयुक्त स्त्रीवाचक शब्द। व्याकरणमें पुं, स्त्री और क्लीव ये ही तीन लिङ्ग हैं। इनमेंसे जो सब स्त्री जातिबोधक हैं, उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे—नारी, बालिका, सिंही, घोटकी इत्यादि। साधारणतः दीर्घ ईकारान्त और आकारान्त शब्दमात्र ही स्त्रीलिङ्ग है। व्याकरणमें स्त्रीलिङ्गविहित प्रत्ययके सम्बन्धमें अनेक विषय लिखे हैं। स्त्रीलिङ्ग शब्दसे किसी स्थानमें आ और किसी स्थानमें ई प्रत्यय होगा, यह स्त्रीलिङ्ग नामक प्रकरणमें विशेष रूपसे लिखा है। स्त्री, लज्जा, तृष्णा, क्षुधा, पृथिवी, दिश्, रात्रि, ज्योत्स्ना, प्रभा, शोभा, वीणा, लता, नदी, सेना, श्रेणी, सम्पद्, विपद्, इच्छा, बुद्धि और तिथिवाचक शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं। आकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग हुआ करता है, केवल हाहा और विश्वपा आदि शब्द पुंलिङ्ग हैं। द्वा, मोधा, मेधा आदि सभी आकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। दीर्घ ईकारान्त शब्द प्रायःस्त्रीलिङ्ग होते हैं, केवल अग्रणी, सेनानी, सुधीन आदि शब्द पुंलिङ्ग हैं। रमणी, दासी वेणी आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। काशी, काञ्ची आदि स्थानवाचक तथा गङ्गा यमुना आदि नदी वाचक शब्द सभी स्त्रीलिङ्ग हैं। मक्षिका, पुत्तलिका, हरीतकी, आमलकी, ननु काकु आदि शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं। क्विप् प्रत्ययान्त शब्दोंमेंसे जो विशेष्य हैं वे सभी स्त्रीलिङ्ग हैं। यथा—मुद्, स्रज, दृश, परिषद् इत्यादि। विंशतिसे नवनवति तक संख्यावाचक सभी शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। यथा--त्रिंशत्, षष्टि, सप्तति, नवति इत्यादि।

जातिवाचक अकारान्त शब्दके स्त्रीलिङ्गमें अकी जगह ई होता है। जैसे—ब्राह्मणी, मृगी, हंसी। परन्तु कुछ शब्दोंके उत्तर नहीं होता, जैसे—क्षत्रिया, वैश्या इत्यादि। जिन सब शब्दोंके अन्तमें नकार, ऋकार, अच् मत् या ईयस् रहता है, उनके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ई होता है। जैसे—गुणिन् गुणिनी, कर्तृ कर्त्री, प्राच् प्राची, गुणवत् गुणवती। वस् भागान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ई और व-की जगह उ होता है। जैसे—विद्वस् विदुषी। अन् भागान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ई और नकारके पूर्ववर्त्ती अकारका लोप होता है। जैसे—राजन् राज्ञी, नामन् नाम्नी। नदादि कुछ शब्दोंके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ई होता है, जैसे—नद, नदी, गौरी इत्यादि। गुणवाचक उकारान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे ई होता है, जैसे—साधु साध्वी, साधू, गुरु गुर्वी, गुरु। बहुव्रीहि समास निष्पन्न कुछ अकारान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे आ और ई होता है। जैसे—सुकेश, सुकेशा, सुकेशी। क्ति प्रत्ययान्तको छोड़ इकारान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे ई होता है। यथा—अवनि, अवनी, श्रेणि श्रेणी। क्ति प्रत्ययान्त, यथा—गति, स्थिति, मति इत्यादि। पत्नीके अर्थमें अकारान्त शब्दके उत्तर ई होता है तथा अन्त्य अकारका लोप हो जाता है। जैसे ब्राह्मणकी पत्नी ब्राह्मणी, इसी प्रकार क्षत्रियी, वैश्यी, गोपी इत्यादि। पत्नीके अर्थमें ब्रह्मन्, रुद्र, भर्व, सर्व, मृड इन्द्र और वरुण शब्दके अन्त्य वर्णस्थानमें आना होता है। जैसे—इन्द्राणी,

रुद्राणी, भवानी, सर्वाणी इत्यादि। मनुष्य, जाति और अप्राणिवाचक उकारान्त शब्दके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ऊ होता है। जैसे—कुरू। तनु आदि कुछ शब्दोंके उत्तर विकल्पसे ऊ होता है। तनु तनू, चञ्चु चञ्चू, भीरु, भीरू इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग शब्द निपातनसे सिद्ध होता है। जैसे—श्वन् शुनी युवन् यूनी। युवति, युवती, लोहित लोहिता लोहिनी, असित असिता असिक्नी, पलित पलिता पलिक्नी इत्यादि।

स्त्रीशौण्ड (सं० त्रि०) स्त्रीमें आसक्त, स्त्रीके लिये पागल रहनेवाला, कामुक।

स्त्रीसख (सं० पु०) स्त्रियोंका सखा, बन्धु।

स्त्रीसंग्रहण (सं० पु०) किसी स्त्रीसे बलात् आलिङ्गन या सम्भोग आदि करना, व्यभिचार।

स्त्रीसमर्ग (सं० पु०) मैथुन।

स्त्रीसङ्ग (सं० पु०) सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसमागम (सं० पु०) मैथुन, प्रसंग।

स्त्रीसम्भोग (सं० पु०) मैथुन, प्रसंग।

स्त्रीसुख (सं० क्ली०) १ मैथुन। (पु०) २ शिग्रु वृक्ष, सहिजन।

स्त्रीसेवन (सं० पु०) सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसेवा (सं० स्त्री०) स्त्रीसंसर्ग, मैथुन।

स्त्रीस्वभाव (सं० पु०) १ अन्तःपुररक्षक, खोजा। २ स्त्रियोंका स्वभाव।

स्त्रीहत्या (सं० स्त्री०) स्त्रीवध, स्त्रीकी हत्या।

स्त्रीहुत (सं० क्ली०) स्त्री द्वारा हुत।

स्त्रैण (सं० त्रि०) १ स्त्री सम्बन्धी, स्त्रियोंका। २ स्त्रियोंके कहनेके अनुसार चलनेवाला, स्त्रियोंका वशीभूत। ३ स्त्रियोंके योग्य।

स्त्रैयूप (सं० क्ली०) स्त्रीजातक, स्त्रीजन्म।

स्त्रैराजक (सं० पु०) स्त्रीराज्यका अधिवासी।

स्त्र्यगार (सं० पु०) अन्तःपुर, जनानखाना।

स्त्र्यध्यक्ष (सं० पु०) १ रानियोंकी देखभाल करनेवाला। २ स्त्रीनायक।

स्त्र्यनुज (सं० त्रि०) जो बहनके बाद उत्पन्न हुआ हो।

स्त्र्याख्या (सं० स्त्री०) प्रियंगु लता।

स्त्र्याजीव (सं० त्रि०) स्त्री आजीवो जीविका यस्य। वह जो अपनी या दूसरी स्त्रियोंकी वेश्यावृत्तिसे अपनी जीविका चलाता हो, औरतोंकी कमाई खानेवाला। यह जीविका शास्त्र और लोकव्यवहारमें विशेष निन्दित और पातकमें परिगणित है। (मनु ११।६४)

स्थ (सं० त्रि०) तिष्ठत्यस्मिन्निति स्था घञर्थे क। १ स्थल। सुवन्तोपपदेतु (सुपिस्थः। पा ३।२।४) इति कप्रत्ययः। २ स्थितिशील।

स्थकर (सं० क्ली०) स्थगर देखो।

स्थकित (सं० त्रि०) शिथिल, थका हुआ।

स्थग (सं० त्रि०) धूर्त्त, ठग, धोखेबाज।

स्थगणा (सं० स्त्री०) पृथ्वी।

स्थगन (सं० क्ली०) स्थग-ल्युट्। १ गोपन, छिपाना, लुकाना। २ आच्छादन, ढांकना।

स्थगिका (सं० स्त्री०) १ अंगूठे, उंगलियों और लिङ्गेन्द्रियके अग्रभाग परके घाव पर बांधे जानेवाली (पनडब्बेके आकारकी) एक प्रकारकी पट्टी। (सुश्रुत चि० १० अ०) २ पान, सुपारी, चूना, कत्था आदि रखनेका डब्बा, पनडब्बा; पानदान।

स्थगित (सं० त्रि०) स्थग-क्त। १ तिरोहित, गुप्त, छिपा हुआ। २ अवरुद्ध, रोका हुआ। ३ आच्छादित, ढका हुआ। ४ रुद्ध बंद। ५ जो कुछ समयके लिये रोक दिया गया हो, मुलतवी।

स्थगी (सं० स्त्री०) स्थग घञर्थे क गौरादित्वात् ङीष्। पान, सुपारी, आदि रखनेका डिब्बा, पनडिब्बा; पानदान।

स्थगु (सं० क्ली०) गड्डु, पीठ परका कूबड़।

स्थड्डु (सं० क्ली०) स्थगु देखो।

स्थण्डिल (सं० क्ली०) १ यज्ञके लिये साफ की हुई भूमि, चत्वर। यज्ञ करते जानेमें पहले परिष्कृत भूमि पर वेदी प्रस्तुत करनी होती है। इस वेदीके ऊपर या अन्य किसी परिष्कृत विशुद्ध भूमि पर होम करनेके लिये स्थण्डिल प्रस्तुत करना होता है। यथाविधान स्थण्डिल निर्माण कर उसके ऊपर होम करे। साधारणतः संक्षेप होमकर्ममें चतुरस्र स्थण्डिल करना होता है। नित्यनैमित्तिक सभी कार्योंमें होमार्थ स्थण्डिल करनेका विधान है। स्थण्डिलके सिवा होम नहीं होगा।

वेदि और होम देखो।

२ भूमि, जमीन। ३ मिट्टीका ढेर। ४ सीमा, हद, सिवान। ५ एक प्राचीन ऋषिका नाम।

स्थण्डिलशय्या (सं० स्त्री०) व्रतके कारण भूमि या जमीन पर सोना, भूमिशयन।

स्थण्डिलशायिन् (सं० पु०) स्थण्डिले शेते इति शी-इनि (पा ३।२।८०) इति इनि। वह जो व्रतके कारण भूमि या यज्ञस्थल पर सोता हो।

स्थण्डिल-संवेशन (सं० क्ली०) स्थण्डिलशय्या, भूमिशयन।

स्थण्डिलसितक (सं० क्ली०) यज्ञकी वेदी।

स्थण्डिलेय (सं० पु०) रौद्राश्वके एक पुत्रका नाम।

स्थण्डिलेशय (सं० पु०) स्थण्डिले शेते शी अच् अलुक् समासः। १ स्थण्डिलशायिन देखो। २ एक प्राचीन ऋषिका नाम।

स्थण्डिलेशयन (सं० क्ली०) स्थण्डिलशय्या।

स्थपति (सं० पु०) स्था-क, स्थः स्थानं तं पातीति पा बाहुलकात् अति (उण् ४।५६) १ राजा, सामन्त। २ शासक, उच्च कर्मचारी। ३ कञ्चुकी, अन्तःपुररक्षक। ४ वास्तुशिल्पी, भवन-निर्माण, कलामें निपुण। जो वास्तुविद्यामें पारदर्शी, लघुहस्त अर्थात् शीघ्र कार्य कर सकते हों, जिन्होंने परिश्रमको जय किया है तथा दीर्घ दर्शी और शूर हैं, उन्हें स्थपति कहते हैं। ५ रथ या गाड़ी बनानेवाला, बढ़ई। ६ रथ हांकनेवाला, सारथी। ७ कुबेर। ८ बृहस्पति। ६ रामचन्द्रका सखा, गुह। १० वह जिसने बृहस्पतिसवन नामक यज्ञ किया हो। (त्रि०) ११ प्रधान, मुख्य। १२ उत्तम, श्रेष्ठ।

स्थपनी (सं० स्त्री०) दोनों भंवोंके बीचका स्थान जो वैद्यकके अनुसार मर्मस्थान माना जाता है।

स्थपुट (सं० त्रि०) १ विपन्न, जिस पर संकट पड़ा हो। २ विषम उन्नत, कुबड़ा, कुबड़ा। ३ पीड़ा-नत, पीड़ाके कारण झुका हुआ। (पु०) ४ पीठ परका विषम उन्नत स्थान, कूबड़।

स्थपुटित (सं० त्रि०) स्थपुट तारकादित्वादितच्। अतिशय उन्नत, बहुत ऊंचा।

स्थल (सं० क्ली०) स्थल स्थाने अच्। १ जलशून्य भूभाग, खुश्की। २ भूमि, भूभाग, जमीन। ३ पटवास, तंबू। ४ टीला, दूह। ५ स्थान, जगह। ६ अवसर, मौका। ७ परिच्छेद, पुस्तकका एक अंश। (पु०) ८ वलके एक पुत्रका नाम। (भागवत)

स्थलकन्द (सं० पु०) आरण्य शूरण, कटैला, जमीकन्द।

स्थलकमल (सं० क्ली०) स्थलस्थ कमलं। कमलकी आकृतिका एक प्रकारका पुष्प जो स्थलमें उत्पन्न होता है। इसका क्षुप ६से १२ इंच तक ऊंचा और पत्ते कुछ लम्बे तरे और आधसे दो इंच तक लम्बे तथा तिहाई इंच तक चौड़े होते हैं। जड़के पासके पत्ते डालोंके पत्तोंसे कुछ चौड़े होते हैं। फूल गुलाबी रंगके और पांच दलवाले होते हैं। यह बंगालमें होता है। वैद्यकमें यह शीतल, कड़वा, कसैला, चरपरा, हलका, स्तनोंको दृढ़ करनेवाला तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, वात, शूल, वमन दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और कासका नाश करनेवाला माना गया है।

स्थलकमलिनी (सं० स्त्री०) स्थलकमलका पौधा।

स्थलकाली (सं० स्त्री०) दुर्गाकी एक सहचरीका नाम।

स्थलकुमुद (सं० पु०) करवीर, कनेर।

स्थलग (सं० त्रि०) स्थलचर, स्थल या भूमि पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलगामिन् (सं० त्रि०) स्थलग देखो।

स्थलचर (सं० त्रि०) स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलचारिन् (सं० त्रि०) स्थलचर, स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलज (सं० त्रि०) १ स्थल या भूमिमें उत्पन्न, स्थलमें उत्पन्न होनेवाला। २ स्थल मार्गसे जानेवाले माल पर लगनेवाला (कर, चुंगी या महसूल)।

स्थलजा (सं० स्त्री०) मधुयष्टी, मुलेठी।

स्थलनलिनी (सं० स्त्री०) स्थलस्थ नलिनी। स्थलकमलिनी देखो।

स्थलनीरज (सं० क्ली०) स्थलकमल।

स्थलपथ (सं० पु०) स्थलरूप पथ। जलपथ और स्थल पथ भेदसे यह दो प्रकारका है।

स्थलपद्म (सं० क्ली०) १ स्वनामख्यात पुष्पविशेष। पर्याय—शतपत्र, तमालक। (त्रिका०) यह स्थलपद्म चार प्रकारका है, नेवाली, गुलाव, बकुल, कदम्बक। २ स्थलकमल।

(पु०) स्थलजातः पद्मम् इव। ३ मानक, मानकच्चू।

स्थलपद्मिनी (सं० स्त्री०) स्थलपद्म। गुण—तिक्त, शीतल, वमन, रक्त, मेह और अतीसारनाशक।

स्थलपिण्डा (सं० स्त्री०) पिण्डखर्जूरिका, पिंड खजूर।

स्थलपुष्पा (सं० स्त्री०) भण्डूक नामक क्षुप, गुल मखमली।

स्थलभण्डा (सं० स्त्री०) वृहती, वनभंटा।

स्थलमञ्जरी (सं० स्त्री०) स्थलस्य मञ्जरी। अपामार्ग, लटजीरा। (रत्नमाला)

स्थलमर्कट (सं० पु०) करमर्द्दक, करौंदा।

स्थलयुद्ध (सं० क्ली०) वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है, खुश्कीकी लडाई।

स्थलरुहा (सं० स्त्री०) स्थलपद्मिनी। (राजनि०)

स्थलवर्त्मन् (सं० क्ली०) स्थलमेव वर्त्म। स्थलपथ।

स्थलविग्रह (सं० पु०) वह लडाई या युद्ध जो स्थल या भूभाग पर होता है, खुश्कीकी लड़ाई।

स्थलविहङ्ग (सं० पु०) स्थल पर विचरण करनेवाले मोर आदि पक्षी।

स्थलशृङ्गाट (सं० पु०) गोक्षुरस, गोखरू।

स्थलशृङ्गाटक (सं० पु०) गोक्षुरक, गोखरू।

स्थलसीमन् (सं० पु०) स्थण्डिल, सरहद।

स्थलस्थ (सं० त्रि०) स्थलस्थित, ज़मीन पर अवस्थित।

स्थला (सं० स्त्री०) स्थल टाप्। जलशून्य भूभाग, खुश्क जमीन।

स्थलारविन्द (सं० क्ली०) स्थलपद्म।

स्थली (सं० स्त्री०) स्थल-ङीप्। १ जलशून्य भूभाग, खुश्क ज़मीन, भूमी। २ ऊंची सम भूमि। ३ स्थान, जगह।

स्थलीदेवता (सं० स्त्री०) ग्राम्य देवता, वनदेवता।

स्थलीय (सं० त्रि०) १ स्थल या भूमि सम्बन्धी, स्थलका भूमिका। २ स्थानीय, किसी स्थानका।

स्थलेयु (सं० पु०) रौद्राश्वके एक पुत्रका नाम।

स्थलेरुहा (सं० स्त्री०) १ घृतकुमारी घीकुआर। २ दुग्धावृक्ष, कुरुहो। (त्रि०) ३ स्थलजातमात्र।

स्थलेशय (सं० पु०) १ कुरङ्ग, कस्तूरी मृग आदि। (त्रि०) २ स्थलशायी, स्थल या भूमि पर सोनेवाला।

स्थलौकस् (सं० पु०) स्थलचर जीव, स्थल पर रहनेवाला पशु।

स्थवि (सं० पु०) तिष्ठतीति स्था (कुवृघृष्ठ्वीति। उण् ४।५६) इति किन् प्रत्ययेन साधुः। १ तन्तुवाय, जुलाहा। २ स्वर्ग। ३ जङ्गम। ४ फल। ५ थैला, थैली। ६ अग्नि, आग। ७ कोढ़ी या उसका शरीर।

स्थविका (सं० स्त्री०) मक्षिकाभेद, एक प्रकारकी मक्खी।

स्थविर (सं० क्ली०) स्था (अजिरशिशिरेति। उण् १।५४) इति किरच् प्रत्ययेन साधुः। १ शैलेय, शैलज, छरीला। (पु०) २ ब्रह्मा। ३ वृद्ध, बूढ़ा। ४ भिक्षु। ५ अचल। ६ वृद्धदारक, विधारा। ७ कदम्ब। ८ जैन और बौद्धोंका एक प्राचीन साधु।

स्थविरदारु (सं० क्ली०) वृद्धदारक, विधारा।

स्थविरा (सं० स्त्री०) स्थविर-टाप्। १ महाश्रावणिका, गोरखमुण्डी। २ वृद्धा स्त्री, बूढ़ी औरत।

स्थविष्ठ (सं० त्रि०) स्थूल-इष्ठन्। (स्थूलदूरेति। पा ६।४।१५६) इति स्थूलशब्दस्थाने स्थवादेशः। अत्यन्त स्थूल, बहुत मोटा।

स्थवीयस् (सं० त्रि०) स्थूल-ईयसुन्, स्थूलशब्दस्य स्थवादेशः। (पा ६।४।१५६) सुविष्ठ, बहुत मोटा।

स्थशस् (सं० अव्य०) स्थान स्थान पर, जगह जगह पर।

स्थाई (सं० त्रि०) स्थापित देखो।

स्थाग (सं० पु०) १ शव, लाश। २ शिवके एक अनुचरका नाम।

स्थाणवीय (सं० त्रि०) स्थाणु-सम्बन्धी, शिव-सम्बन्धी।

स्थाणु (सं० पु०) तिष्ठतीति स्था (स्थाणुः। उण् ३।३७) इति णु। शिव, महादेव। वामनपुराणके ४६वें अध्यायमें इस प्रकार लिखा है,—"जलसे निकल कर मैंने प्रजाओंकी सृष्टि की थी, परन्तु सृष्टिके बाद सभी प्रजाको तेजोहीन देख मुझे बहुत क्रोध हो आया। अत्यन्त क्रुद्ध हो कर मैंने लिङ्गको उखाड़ कर फेंक दिया था, पर वह लिङ्ग फेंके जाने पर भी जलमें ऊर्द्ध्वभावमें खड़ा रहा, तभीसे मेरा स्थाणु नाम हुआ है।" २ ब्रह्मा। (पु० क्ली०) ३ निःशाखवृक्ष, मुड़ा पेड। ४ अस्त्रभेद। ५ स्थिर।

स्थाणुकर्णी (सं० स्त्री०) महेन्द्रवारुणीलता, बड़ी इन्द्रायन।

स्थाणुतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष, थानेश्वर। वामनपुराणके ४३वें अध्यायमें लिखा है, कि यह तीर्थ अतिशय पुण्यजनक है। यहां आनेसे मानवके सभी पाप दूर होते हैं। इस तीर्थमें स्थाणु नामक अनादि लिङ्ग हैं तथा इसके पास एक सरोवर है। ज्ञानी, अज्ञानी, पापी, पुण्यात्मा, चाहे जो कोई क्यों न हो, इस लिङ्गका दर्शन करनेसे वह सभी पापोंसे मुक्तिलाभ करता है। पुष्कर प्रभृति सभी पुण्यतीर्थ मध्याह्नकालमें यहां आते हैं जो इस लिङ्गके स्तवादि करते हैं, उनके लिये इस जगत्‌में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। थानेश्वर देखो।

स्थाणुदिश (सं० स्त्री०) शिवकी दिशा, उत्तर-पूर्व दिशा।

स्थाणुमती (सं० स्त्री०) रामायणके अनुसार एक प्राचीन नदी।

स्थाणुरोग (सं० पु०) घोड़ेको होनेवाला एक प्रकारका रोग। इसमें घोड़ेकी जांघमें व्रण या फोड़ा निकलता है। यह दूषित रक्तके कारण होता है। यह प्रायः बरसातमें ही होता है।

स्थाणुवर (सं० क्ली०) महाभारतके अनुसार एक तीर्थका नाम।

स्थाण्डिल (सं० पु०) १ स्थाण्डिलशायी, वह जो व्रतके कारण भूमि या यज्ञस्थल पर सोता है। (त्रि०) २ व्रतके कारण भूमि पर शयन करनेवाला।

स्थाण्वीश्वर (सं० पु०) स्थाणुतीर्थमें स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिङ्ग। थानेश्वर देखो।

स्थाण्वाश्रम (सं० पु०) हिमाचलस्थित शिवका तपश्चरण स्थानविशेष। महादेवने हिमालय प्रदेशके जिस आश्रममें रह कर तपस्या की थी, वही आश्रम इस नामसे प्रसिद्ध है।

स्थातव्य (सं० त्रि०) स्था तव्य। स्थानीय, स्थितियोग्य, रहने लायक।

स्थातुर (सं० क्ली०) स्थावर। (ऋक् १।६८।१)

स्थातृ (सं० क्ली०) १ स्थावर, स्थितिशील जगत्। (ऋक् १।१६६।३) स्था-तृच्। (त्रि०) २ अवस्थानयुक्त, स्थितियुक्त।

स्थान (सं० क्ली०) स्था-ल्युट्। १ नीतिवेदियोंके त्रिवर्गके अन्तर्गत एक वर्ग। कृषि, वणिक्पथ और दुर्ग आदि आठ वर्ग हैं। इन आठ वर्गोंके अपचयका नाम क्षय है। इसके उपचयका नाम वृद्धि तथा उपचय और अपचय इन दो अवस्थाओंमेंसे किसीके न रहने पर समान भावसे रहनेका नाम स्थान है। २ किसी अभिनेताका अभिनय या अभिनयगत चरित्र। ३ वेदी। ४ एक गन्धर्वराजका नाम। ५ स्थिति, ठहराव, टिकाव। ६ भूमि भाग, जमीन, मैदान। ७ वह अवकाश जिसमें कोई चीज न रह सके, जगह, ठाम। ८ डेरा, घर। ९ काम करनेकी जगह, पद, ओहदा। १० पद, दर्जा। ११ मुंहके अन्दरका वह अंग या स्थल जहांसे किसी वर्ण या शब्दका उच्चारण हो। १२ राज्य, देश। १३ देवालय, मन्दिर। १४ किसी राज्यका मुख्य आधार या बल जो चार माने गये हैं। १५ गढ़, दुर्ग। १६ सेनाका अपने बचावके लिये डटे रहना। १७ आखेटमें शरीरकी एक प्रकारकी मुद्रा। १८ गुदाम, जखीरा। १९ अवसर, मौका। २० अवस्था, दशा। २१ उद्देश्य, कारण। २२ ग्रन्थसन्धि, पारच्छेद।

स्थानक (सं० क्ली०) १ ठाम, जगह। २ नगर, शहर। ३ आलवाल, वृक्षका थाला। ४ फेन। ५ नृत्यमें एक प्रकारकी मुद्रा। ६ स्थिति, दर्जा, पद।

स्थानचञ्चला (सं० स्त्री०) वर्वरी, वनतुलसी।

स्थानचिन्तक (सं० पु०) सेनाका वह अधिकारी जो सेनाके लिये छावनीकी व्यवस्था करता हो।

स्थानच्युत (सं० त्रि०) स्थानात् च्युतः। १ स्थानभ्रष्ट, जो अपने स्थानसे गिर गया हो, अपनी जगहसे गिरा हुआ। २ जो अपने पदसे हटा दिया गया हो, अपने ओहदेसे हटाया हुआ।

स्थानतव्य (सं० त्रि०) स्थितिके योग्य, ठहरनेके योग्य।

स्थानत्याग (सं० पु०) स्थान परिवर्जन।

स्थानदातृ (सं० त्रि०) स्थानस्य दाता। स्थान देनेवाला।

स्थानपाल (सं० पु०) स्थान-पालि-अण्। १ स्थान या देशका रक्षक। २ प्रधान निरीक्षक। ३ चौकीदार, पहरेदार।

स्थानप्रच्युत (सं० लि०) स्थानच्युत, स्थानभ्रष्ट।
स्थानभङ्ग (सं० पु०) १ ध्वंस। (लि०) २ स्थानच्युत।
स्थानभूमि (सं० स्त्री०) रहनेकी जगह, मकान।
स्थानभ्रंश (सं० पु०) स्थाननाश।
स्थानभ्रष्ट (सं० लि०) स्थानात् भ्रष्टः। स्थानच्युत।
स्थानमृग (सं० पु०) १ कर्कट, केंकड़ा। २ मत्स्य, मछली। ३ कच्छप, कछुआ। ४ मकर, मगर।
स्थानयोग (सं० पु०) स्थान और उसके परस्परसंयोगविषयक ज्ञान।
स्थानविद् (सं० लि०) स्थानीय विषयोंका ज्ञाता या जानकार।
स्थानवीरासन (सं० पु०) ध्यान करनेकी एक प्रकारकी मुद्रा या आसन।
स्थानसन्निवेश (सं० पु०) स्थाननिर्णय और उसका सोमादि निरूपण।
स्थानस्थ (सं० लि०) स्वस्थानस्थित, जो अपने पद पर अधिष्ठित हो।
स्थानाङ्ग (सं० पु०) जैन धर्मशास्त्रका तीसरा अंग।
स्थानाध्यक्ष (सं० पु०) स्थान-रक्षक, वह जिस पर किसी स्थानकी रक्षाका भार हो।
स्थानान्तर (सं० पु०) प्रकृत या प्रस्तुतसे भिन्न स्थान, दूसरा स्थान।
स्थानान्तरित (सं० लि०) जो एक स्थानसे हट या उठ कर दूसरे स्थान पर गया हो, जो एक जगहसे दूसरी जगह पर भेजा या पहुंचाया गया हो।
स्थानापत्ति (सं० स्त्री०) स्थानप्राप्ति।
स्थानापन्न (सं० लि०) दूसरेके स्थान पर अस्थायी रूपसे काम करनेवाला, कायम मुकाम, एवजी।
स्थानावरोधकभा (सं० स्त्री०) जिस गुणसे जड़पदार्थ अपना आश्रयस्थान रुद्ध कर रखे।
स्थानासनविहारवत् (सं० लि०) स्थान, आसन और विहारयुक्त।
स्थानिक (सं० लि०) १ उल्लिखित, वक्ता या लेखक के स्थानका। (पु०) २ वह जिस पर किसी स्थानकी रक्षाका भार हो, स्थानरक्षक। ३ मन्दिरका प्रबन्धक।
स्थानिन् (सं० लि०) स्थान इनि। १ स्थानयुक्त, पदयुक्त। २ स्थायी, ठहरनेवाला। ३ उपयुक्त, उचित, ठीक।
स्थानिवत् (सं० अव्य०) स्थानिन् इवार्थे वति। व्याकरणके मतसे तत्सदृश प्रत्ययादिके बाद जैसा आदेश हो, ठीक वैसा ही आदेश।
स्थानीय (सं० क्लो०) स्थान-छ। १ नगर, शहर, कस्बा। (लि०) २ स्थान-सम्बन्धी। ३ स्थितियोग्य। ४ स्थान-स्थित।
स्थाने (सं० अव्य०) १ योग्य, उपयुक्त, उचित। २ सत्य। ३ सदृश। ४ तदनुसार। ५ सुतरां।
स्थानेश्वर (सं० पु०) कुरुक्षेत्रका थानेश्वर नामक स्थान जो किसी समय एक प्रसिद्ध तीर्थ था। थानेश्वर देखो।
स्थापक (सं० लि०) स्थापि-ण्वुल्। १ स्थापनकर्त्ता, रखने या खड़ा करनेवाला। २ देव-प्रतिमा या मूर्त्ति बनानेवाला। (पु०) ३ जो किसीके पास कोई चीज जमा करे, अमानत रखनेवाला। ४ संस्थापक, प्रतिष्ठाता, कोई संस्था खोलने या खड़ा करनेवाला। ५ सूत्रधार का सहकारी, सहकारी रंगमञ्चाध्यक्ष।
स्थापत्य (सं० पु०) स्थपति ष्यञ्। १ अन्तःपुररक्षक, रनिवासकी रखवाली करनेवाला। (क्लो०) २ स्थपतिका कर्म, भवन-निर्माण, मेमारी। ३ वह विद्या जिसमें भवन निर्माण-सम्बन्धी सिद्धान्तों आदिका विवेचन हो। ४ स्थानरक्षकका पद।
स्थापत्यवेद (सं० पु०) चार उपवेदोंमेंसे एक। इसमें वास्तुशिल्प या भवन निर्माण-कलाका विषय वर्णित है। कहते हैं, कि इसे विश्वकर्माने अथर्ववेदसे निकाला था।
स्थापन (सं० क्लो०) स्था णिच्-ल्युट्। १ खड़ा करना, उठाना। २ जमाना, बैठाना, रखना। ३ नया काम खोलना, नया काम जारी करना। ४ जकड़ना, पकड़ना। ५ प्रतिपादन, साबित करन, सिद्ध करना। ६ पुंसवन। ७ समाधि। ८ आवास, मकान, घर। ९ निरूपण। १० अन्नकी राशि। ११ रक्षा या आयुवृद्धिका उपाय। १२ रोकनेका उपाय।
स्थापननिक्षेप (सं० पु०) अर्हत्की मूर्त्तिका पूजन।
स्थापना (सं० स्त्री०) स्था-णिच् युच् टाप्। १ स्थापन, प्रतिष्ठित या स्थित करना, बैठाना। २ जमा करना,

रखना। ३ प्रतिपादन, साबित करना, सिद्ध करना। ४ व्यवस्थापन, निर्देश।

स्थापनासत्य (सं० पु०) किसी प्रतिमा या चित्र आदिमें स्वयं उस वस्तु या व्यक्तिका आरोप करना जिसकी वह प्रतिमा या चित्र हो।

स्थापनिक (सं० त्रि०) जमा किया हुआ।

स्थापनी (सं० स्त्री०) स्था-णिच्-ल्युट्-ङीप्। पाठा, पाढ़।

स्थापनीय (सं० त्रि०) स्था-णिच्-अनीयर्। स्थापित करने योग्य, जो स्थापना करनेके योग्य हो।

स्थापयितृ (सं० त्रि०) स्था-णिच्-तृच्। प्रतिष्ठा या स्थापन करनेवाला, संस्थापक।

स्थापित (सं० त्रि०) स्था-णिच्-क्त। १ निश्चित। २ प्रतिष्ठित, कायम किया हुआ। ३ जो जमा किया गया हो। ४ रक्षित, जो जमा कर रखा गया हो। ५ विवाहित। ६ जमा हुआ, ठहरा हुआ। ७ व्यवस्थित, निर्दिष्ट।

स्थापितृ (सं० त्रि०) स्था-णिच्-तृच्। स्थापनकर्त्ता, प्रतिष्ठा या स्थापन करनेवाला।

स्थापिन् (सं० त्रि०) स्था-इनि। स्थापक, स्थापन करनेवाला।

स्थाप्य (सं० त्रि०) स्था-णिच्-यत्। १ स्थापनीय, स्थापित करनेके योग्य। (पु०) २ देवप्रतिमा। ३ धरोहर, अमानत।

स्थामन् (सं० क्ली०) स्था (सर्वधातुभ्यो मनिन्। उण् ४।१४४) इति मनिन्। १ सामर्थ्य, शक्ति, ताकत। २ अश्वघोष, घोड़ेका हिनहिनाहट। ३ स्थान, जगह, मुकाम।

स्थाय (सं० पु०) १ आधार, पात्र। २ स्थामन् देखो।

स्थाया (सं० स्त्री०) पृथ्वी, धरती।

स्थायिता (सं० स्त्री०) स्थायित्व देखो।

स्थायित्व (सं० क्ली०) १ स्थायी होनेका भाव, टिकाव, ठहराव। २ स्थिरता, दृढ़ता, मजबूती।

स्थायिन् (सं० त्रि०) स्था-णिनि। १ स्थितिविशिष्ट, बना रहनेवाला, स्थिर। २ ठहरनेवाला, टिकनेवाला। ३ बहुत दिन चलनेवाला, टिकाऊ। ४ विश्वास करने योग्य, विश्वस्त। (पु०) ५ साहित्यमें तीन प्रकारके भावोंमेंसे एक जिसकी रसमें सदा स्थिति रहती है। ये सदा चित्तमें संस्काररूपसे वर्त्तमान रहते हैं और विभाव आदिमें अभिव्यक्त हो कर रसत्वको प्राप्त होते हैं। ये विरुद्ध अथवा अविरुद्ध भावोंमें नष्ट नहीं होते, बल्कि उन्हींको अपने आपमें समा लेते हैं। ये संख्यामें नौ हैं, यथा—रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निन्दा, विस्मय और निर्वेद।

स्थायिभाव (सं० पु०) स्थायी भावः। शृङ्गारादि रसके तीन भावोंमेंसे एक भाव। स्थायिन् देखो।

स्थायुक (सं० पु०) स्था (लषपतपदेति। पा ३।२।१५४) इति उकञ्। १ गांवका अध्यक्ष या निरीक्षक। (त्रि०) २ स्थितिशील, ठहरनेवाला, टिकनेवाला।

स्थारश्मन् (सं० त्रि०) स्थिररश्मि, स्थिररश्मिविशिष्ट।

स्थाल (सं० क्ली०) स्था (स्थाचतिमृजेरिति। उण् १।११५) घञ्। १ थाल, परात, थाली। २ दांतोंके नीचेका और मसूड़ोंका भीतरी भाग। ३ आधार, पात्र, बरतन। ४ देग, देगची, पतीला।

स्थालक (सं० क्ली०) पीठकी एक हड्डी।

स्थालिक (सं० पु०) मलकी दुर्गन्ध।

स्थालिका (सं० स्त्री०) मक्षिकाविशेष, एक प्रकारकी मक्खी। (सुश्रुत)

स्थालिकास्थि (सं० क्ली०) अर्बुदाकार अस्थि।

स्थालिद्रुम (सं० पु०) नदीवृक्ष, बेलिया पीपल।

स्थालिन् (सं० त्रि०) स्थालविशिष्ट पात्रयुक्त।

स्थालिपर्णी (सं० स्त्री०) शालिपर्णी देखो।

स्थाली (सं० स्त्री०) स्था-आलच्, ततः गौरादित्वात् ङीष्। (उण् १।११५) १ पाकपात्रविशेष, हंडी हंडिया। २ मिट्टीकी रिकाबी। ३ एक प्रकारका बरतन जो सोमका रस बनानेके काममें आता था। ४ पाटला वृक्ष, पाडरका पेड़।

स्थालीपक (सं० त्रि०) स्थालीपक्व अन्नादि।

स्थालीपाक (सं० पु०) १ भाजनपक्व अन्नादि। २ चरुविशेष, आहुतिके लिये दूधमें पकाया हुआ चावल या जौ। शास्त्रमें लिखा है, कि मांसाष्टका श्राद्धमें मांसका प्रतिनिधि स्थालीपाक करे अर्थात् जहां मांसका अभाव होगा, वहां स्थालीपाक अर्थात् चरुविशेष पाक कर श्राद्धकार्यका अनुष्ठान करे, परन्तु मांस पाककालमें ऐसा अनुकल्प नहीं चलेगा।

३ वैद्यकोक्त भानुपाकके बाद लोहेकी थालीमें पाक-विधि। वैद्यकमें लिखा है, कि लोहा जितना होगा, उसका तिगुना त्रिफला, इसे सोलह गुना जलमें पाक करे। जब पाक कर शेष आठ भाग रह जाय, तब उसे उतार ले। मृदु, मध्य और कठोर लौह समान भागमें ले कर चौगुने, अठगुने और सोलहगुने जलमें पाक कर लौहतुल्य क्वाथ ग्रहण करे। स्थालीपाकमें सभी खर लौह तुल्य परिमाणमें देना होता है। पूर्वोक्त रूपसे यथाविधि क्वाथादि हण्डीमें रख कर पाक करते करते जब वह सूख जाय, तब उसे स्थालीपाक कहते हैं। (रसेन्द्रसारस०)

स्थालीपाकीय (सं० त्रि०) स्थालीपाक-सम्बन्धी।

स्थालीपुलाक (सं० पु०) न्यायविशेष। अन्न पाक करते समय चावल पका है या नहीं, यह जाननेके लिये हांडीमेंसे दो एक चावल निकाल टो कर देखा जाता है, टोनेसे यदि वह चावल पका मालूम हो, तो सभी चावलोंका पकना अनुमित होता है। क्योंकि सभी चावल एक ही समयमें आंच पर चढ़ाया गया है। इनमेंसे जब एक चावल पक गया तब सभी चावल पक गये होंगे, इसमें संदेह नहीं। इस युक्तिका शास्त्रीय नाम स्थालीपुलाकन्याय है।

स्थालीबिल (सं० क्ली०) पाकपात्र (बटलोही या हांडी आदि)का भीतरी भाग।

स्थालीबिलय (सं० त्रि०) पाकपात्र (देग, हाडी आदि) में उबलने या पकने योग्य।

स्थालीबिल्य (सं० त्रि०) स्थालीबिलय देखो।

स्थालीवृक्ष (सं० पु०) अश्वत्थवृक्ष, बेलिया पीपल। गुण—लघु, स्वादु, तिक्त, तुवर, उष्ण, कटु, पाकरस, विष, पित्त, कफ और अस्रनाशक। (भावप्र०)

स्थावर (सं० क्ली०) स्था वरच्। १ धनुर्गुण, धनुषकी डोरी। २ पर्वत, पहाड़। ३ अचल सम्पत्ति, गैरमनकूला जायदाद। ४ वह सम्पत्ति जो वंश परम्परासे परिवारमें रक्षित हो और जो बेचा न जा सके। ५ जैनदर्शनके अनुसार एकेन्द्रिय पदार्थ आदि जिनके पांच भेद कहे गये हैं, यथा पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजस्काय, वायुकाय और वनस्पतिकाय। (त्रि०) ६ जो चले नहीं, सदा अपने स्थान पर रहनेवाला। ७ जो एक स्थानसे दूसरे स्थान पर लाया न जा सके, अचल। ८ स्थायी, स्थितिशील। ९ स्थावर संपत्ति संबंधी। मनुमें इस प्रकार लिखा है—

जगत्‌के सभी उद्भिद् स्थावरसृष्टि हैं। इनमेंसे कुछ बीजोंसे और कुछ रोपित शाखासे उत्पन्न होते हैं। इन स्थावरोंमेंसे जो बहुपुष्प और फलयुक्त होते हैं तथा पुष्पित फल पकते ही सूख जाते हैं, उन्हें ओषधि कहते हैं, जैसे—धान, जौ आदि। जिनमें विना फूलके ही फल लगते हैं, उन्हें वनस्पति तथा जो पुष्पित हो या केवल फलवान् हों, दोनों प्रकारको ही वृक्ष कहते हैं। गुच्छ और गुल्म नाना प्रकारके हैं, तृणजाति भी विविध प्रकारकी है। इसमेंसे कोई बीजसे और कोई काण्डसे उत्पन्न होता है। ये सब स्थावर अनेक प्रकारके असत् कर्मफलमें तमोगुणसे आच्छन्न हैं। इनके अभ्यन्तर चैतन्य है तथा ये सुखदुःखादिका अनुभव करते हैं। (मनु १।४६ ४९)

स्थावरतीर्थ (सं० क्ली०) एक प्राचीन तीर्थका नाम।

स्थावरधन (सं० क्ली०) धनभेद। धन, स्थावर और अस्थावरभेदसे दो प्रकारका है। स्थितिशील धन, जो धन शीघ्र विनष्ट नहीं होता, भूसम्पत्तिको ही स्थावरधन कहते हैं। दायभाग शब्द देखो।

स्थावरनाम (सं० पु०) वह पाप कर्म जिसके उदयसे जीव स्थावर कायमें जन्म ग्रहण करते हैं।

स्थावरराज (सं० पु०) हिमालय।

स्थावरविष (सं० पु०) विषभेद। विष दो प्रकारका होता है—स्थावर और जङ्गम। सुश्रुतमें इस स्थावरविषका विवरण लिखा है। स्थावरविषके आधार दश हैं। यथा—१ मूल, २ पत्र, ३ फल, ४ पुष्प, ५ त्वक्, ६ क्षीर, ७ सार, ८ निर्यास, ९ धातु और १० कन्द।

क्लीतक, करवीर, गुञ्जा, सुगन्ध, गर्गरक, करघाट, विद्युच्छिखा और विषय ये आठ मूलविष हैं। अर्थात् इनका मूल ही विषाक्त है। विषपत्रिका, (जयपाल बीजके भीतरका पत्रवत् अंश) तितलौकी, अवरदारुक, प्रियङ्गु और महाकरम्भ, पांच पत्रविष हैं। कुमुदलता, रेणुका, प्रियङ्गु, महाकरम्भ, कर्कटक, रेणुक, खद्योतक, चर्मरी, इभगन्धा, सर्पघाती, नन्दन और सारपाक ये

बारह फलविष हैं। बेल, कदम्ब, वल्लिज, करम्भ और महाकरम्भ ये पांच पुष्पविष हैं।

त्वगादिविष—अन्त्रपाचक, कर्त्तरीय, सौरीयक, करघाट, करम्भ, नन्दन और वराटक इन सातोंका त्वक्, सार और निर्यास विपाक्त है। कुमुदघ्नी, स्नुही और जाल ये तीन क्षीरविष हैं अर्थात् इनके दूधमें विष रहता है।

धातुविष—संकों और हरिताल ये दोनों धातुविष हैं। कालकूट, वत्सनाभ, सर्षप, पालक, कर्दमक, वैराटक, मुस्तक, शृङ्गीविष, प्रपौण्डरिक, मूलक, हलाहल, महाविष और कर्कटक ये तेरह प्रकारके कन्दविष हैं। कुल मिला कर स्थावर विष ५५ प्रकारका होता है। इन सब विषोंमें-से वत्सनाभ चार प्रकारका, मुस्तक दो प्रकारका, सर्षप छः प्रकारका और बाकी विष एक एक प्रकारका होता है।

तेरह प्रकारका कंदविष अत्यन्त उग्र होता है। इसमें निम्नोक्त दश गुण दिखाई देते हैं। यथा—रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु कार्यकारी, व्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी। रूक्षताप्रयुक्त वायु कुपित, उष्णताप्रयुक्त पित्त और शोणित कुपित, तीक्ष्णताप्रयुक्त मनका मोह और शरीरके सभी बंधन शिथिल हो जाते हैं। सूक्ष्मताप्रयुक्त विष शरीरके सभी अंगोंमें घुस कर विकृत भाव उत्पादन करता है। यह विष आशु कार्यकारी है। इसीसे शीघ्र प्राणनाश करता है। व्यवायी—इसके कारण स्त्री संगमकी बड़ी अभिलाषा होती है। विकाशी—इससे शरीरका दूषित धातु और मलका नाश होता है। विशद—इससे अतिशय विरेचक होता है। लघुताप्रयुक्त चिकित्सामें कष्टसाध्य अविपाकी है, इसीसे जल्द नहीं पचता और बहुत दिनों तक कष्ट होता है।

इन सब विषोंके शरीरसे निकलने, जीर्ण होने, विषघ्न औषध द्वारा विनष्ट होने तथा वायु अथवा सूर्यकिरणसे शोषित होने पर भी यदि शरीरमें उसका कुछ अवशिष्ट रह जाय अथवा स्वभावतः गुणहीन किसी प्रकारका विष यदि शरीरमें घुस जाय, तो उसे दूषी-विष कहते हैं।

पूर्वोक्त क्षीणतेज विष देश, काल और भक्ष्यद्रव्यके दोषसे तथा दिवानिद्रा द्वारा दूषित हो कर सभी धातुओंको दूषित करता है, इसलिये भी इसका दूषीविष नाम पड़ा है। यह स्थावरविष भक्षण करनेसे पहले जिह्वा श्यामवर्ण, स्तब्ध, मूर्च्छा और श्वासमें सब उपद्रव होते हैं। द्वितीय वेगमें कम्प, घर्म, दाह, कण्डु और आमाशयगत हो कर हृदयमें वेदना उत्पादन करता है। तृतीय वेगमें तालुशोष और आमाशयमें अत्यन्त शूल होता है, दोनों आंखें नीली और वेदनायुक्त होती हैं। यह विष पक्वाशयगत हो कर मेद, हिक्का, कास और अन्त्र कूजन ये सब उपद्रव होते हैं। चतुर्थ वेगमें मस्तक भारी मालूम होता है। इस अवस्थामें सभी दोष दिखाई देते हैं तथा पक्वाशयमें वेदना होती है। पञ्चम वेगमें स्कन्ध, पृष्ठ और कटीदेश टूट जाता और ज्ञान नहीं रहता है।

चिकित्सा—स्थावर विषके प्रथम विष वेगमें वमन करावे। शीतल जल, घृत और मधुके साथ औषध पान करना होगा। द्वितीय वेगमें पहलेकी तरह वमन करा कर विरेचक द्रव्य सेवन करावे। तृतीय वेग औषध पान, नस्य और अञ्जन ये तीनों ही आवश्यक हैं। चतुर्थ वेगमें स्नेहमिश्रित औषध पान करानी होती है। पञ्चम वेगमें मधु और यष्टिमधुके साथ औषधका काथ पिलावे। षष्ठ वेगमें अतीसार रोगकी तरह चिकित्सा करे। सप्तममें नस्यका प्रयोग करे तथा मस्तक पर काकपद चिह्न बना कर केशमुण्डन करावे अथवा रक्तके साथ उस स्थानका मांस फेंक देवे। किसी एक वेगके बाद जब दूसरा वेगकाल उपस्थित होता है तथा शीतल क्रिया तथा घृत और मधुके साथ जौका माड पिलाना कर्त्तव्य है। सूर्यावल्ली, सोनापाठा, गुलञ्च, हरीतकी, शिरीष, अपाङ्, गिरिमृत्तिका, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, श्वेत पुनर्णवा, रेणुका, त्रिकटु, श्यामालता, अनन्तमूल और अतिबला इन सब वस्तुओंके काढ़ेमें जौका माड तैयार कर पिलानेसे दोनों प्रकारके विषकी शान्ति होती है। यष्टिमधु, तगरपादुका, कुट, भाद्रदारु, रेणुका, पुन्नाग, इलायची, एलवालुक, नागकेशर, उत्पल, चीनी, विडङ्ग, चन्दन, तेजपत्र, प्रियंगु, गन्धतृण, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, वृहती, कण्टकारी, श्यामालता, अनन्तमूल, शालपर्णी और पिठवन इन सब काढ़ोंके साथ घृत प्रस्तुत करे। इसका नाम अजेय घृत है। विष दोषमें यह घृत अत्यन्त उत्कृष्ट माना गया है। इससे सभी

प्रकारके विषदोष नष्ट होते हैं, प्रायः किसी भी स्थानमें यह व्यर्थ नहीं जाता।

दूषी विष द्वारा पीडित रोगोका शरीर स्वेद, भेद और वमन द्वारा सशोधित होनेसे निम्नोक्त औषधका पान करावे। पिप्पली, गजपिप्पली, गंधतृण, जटामांसी, लोध्र, केवटीमोथा, सुवर्चिका, छोटी इलायची, सुगंध वाला, कनकपलाश और गिरिमृत्तिका, इन्हें मधुके साथ पान करनेसे दूषीविष नष्ट होता है। इसका नाम विषारि औषध है। इस औषधका अन्यान्य रोगोंमें भी व्यवहार होता है ज्वर, दाह, हिक्का, शुक्रक्षय, शोथ, अतीसार, मूर्च्छा, हृद्रोग, जठररोग, उन्माद और कम्प आदि उपद्रवोंमें भी उपकार होता है। आत्मवान् व्यक्तिके दूषीविष द्वारा कोई विष उपस्थित होने पर वह चिकित्सासे शीघ्र ही आरोग्य होता है। परन्तु ८५ वर्षसे अधिक हो जाने पर भी यदि उनके प्रतिकारकी चेष्टा न की जाय, तो पीछे आरोग्य नहीं होता। क्षीण और अहिताचारीके यह विषदोष होनेसे आरोग्य नहीं होता।

स्थावरविषका प्रतिविधान पूर्वोक्त प्रणालीसे करे। फलविषमें विरुद्ध क्रिया उपस्थित होनेसे उसके प्रतिविधानमें भी समय न बिताना चाहिये। इसमें हठात् प्राण हानि नहीं होने पर भी जब तक जीवन रहता है, तब तक असह्य यन्त्रणाका भोग करना होता है। ये सब यन्त्रणा मृत्युसे भी कष्टतर है।

स्थावरादि (सं० क्ली०) १ वत्सनाभ विष, बच्छनाग विष। (पु०) २ स्थावर प्रभृति वस्तु।

स्थाविर (सं० क्ली०) स्थविरस्य भावः कर्म वा स्थविर (हायनान्तयुवादिभ्योऽण्। पा ५।१।१३०) इत्यण्। वृद्धावस्था, वार्धक्य, बुढ़ौती। ७०से ९० वर्ष तक स्थाविरावस्था मानी गई है। ९० वर्षके उपरान्त मनुष्य वर्षीयान् कहलाता है।

स्थाविर्य (सं० क्ली०) स्थविरावस्था, बुढ़ौती।

स्थासक (सं० पु०) १ शरीरको चंदन आदिसे चर्चित या सुगन्धित करना। २ जलबुद्बुद, पानीका बुलबुला। ३ घोड़ेके साज पर बुलबुलके आकारका एक गहना।

स्थासु (सं० क्ली०) स्था सु। शरीर बल।

स्थास्नु (सं० त्रि०) तिष्ठतीति स्था (ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः। पा ३।२।१३९) १ स्थिरतर, अत्यन्त स्थितिशील। २ शाश्वत। ३ स्थावर।

स्थिक (सं० पु०) कटिप्रोथ, नितम्ब, चूतड़।

स्थित (सं० त्रि०) स्था-क्त। १ प्रतिज्ञाविशिष्ट, अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। २ ऊर्द्ध्व, खड़ा हुआ। ३ निश्चल, स्थिर। ४ संलग्न, लगा हुआ, मशगूल। ५ अवस्थित, बसा हुआ। ६ आसीन, बैठा हुआ। ७ विद्यमान, वर्त्तमान, मौजूद। ८ अवलम्बित, अपने स्थान पर ठहरा हुआ, टिकाया हुआ। ९ निवासी, रहनेवाला। (क्ली०) स्था-भावे क्त। १० अवस्थान, निवास। ११ कुल मर्यादा।

स्थितधी (सं० त्रि०) १ ब्रह्मस्थिरबुद्धिसम्पन्न। जिसका चित्त दुःखमें विचलित न हो, सुखकी जिसे चाह न हो और जिसमें राग, आसक्ति, भय या क्रोध न रह गया हो, ऐसे व्यक्तिको स्थितधी मुनि कहते हैं। (गीता २।५६) २ जिसका मन किसी बातसे डाँवाँडोल न होता हो, जिसकी बुद्धि सदा स्थिर रहती हो।

स्थितप्रज्ञ (सं० त्रि०) जो समस्त मनोविकारोंसे रहित हो, आत्मसंतोषी। जो योगी मनोगत सभी कामनाओंको परित्याग कर आत्म द्वारा आत्मामें ही संतुष्ट रहते हैं, उन्हें स्थितप्रज्ञ कहते हैं। (गीता २।५५,५७) स्थितप्रज्ञ परमात्मसन्दर्शनजनित परम आनन्दानुभव कर कामरूप वासनाको समूल नष्ट कर देते हैं। जिनकी इन्द्रियां अपने वशमें हैं, उनके ही प्रज्ञा प्रतिष्ठिता हुई है।

स्थितप्रेमन् (सं० पु०) स्थितं प्रेम यस्य। स्थिरतर बन्धु।

स्थितबुद्धिदत्त (सं० पु०) बुद्ध। (ललितवि०)

स्थितवत् (सं० त्रि०) स्थितिविशिष्ट, अवस्थित।

स्थिति (सं० स्त्री०) स्था क्तिन्। १ न्याय्यपथावस्थिति, मर्यादा। २ अवस्थान, निवास। ३ रहना, ठहरना। ४ सीमा, हद। ५ नियम। ६ पालन। ७ अवस्था, दशा। ८ निवृत्ति। ९ निष्पत्ति, निर्णय। १० मयोग, मौका। ११ स्थिरता। १२ ठहरनेका स्थान। १३ आकार, आकृति, सूरत। १४ अस्तित्व, निरंतर बना रहना। १५ ढंग, तरीका। १६ पद, दर्जा।

स्थितिविरोध (सं० पु०) एक समय एकत्र दो द्रव्योंका अनवस्थान।

स्थितिस्थापक (सं० पु०) १ वह गुण जिसके रहनेसे कोई वस्तु साधारण स्थितिमें आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्थाको प्राप्त हो जाय, किसी वस्तुको अनुकूल परिस्थितिमें फिर उसकी पूर्व अवस्था पर पहुंचानेवाला गुण (त्रि०) २ किसी वस्तुको उसकी पूर्व अवस्थाको प्राप्त करानेवाला। ३ जो सहजमें लचक या झुक जाय और छोड़ देने पर फिर ज्योंका त्यों हो जाय, लचीला।

स्थितिस्थापकता (सं० स्त्री०) स्थितिस्थापक होनेकी अवस्था या गुण, अनुकूल परिस्थितिमें फिर अपनी पूर्व अवस्थाको पहुंच जानेका गुण या शक्ति, लचक।

स्थिर (सं० पु०) १ देव। २ पर्वत। ३ कार्त्तिकेय। ४ शनि। ५ मोक्ष, मुक्ति। ६ वृक्ष, पेड़। ७ शिव ८ स्कन्दके एक अनुचरका नाम। ९ अनडुह, वृष, सांड १० धववृक्ष, धौ। ११ ज्योतिषमें एक योगका नाम। १२ ज्योतिषमें वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ ये चारों राशियां जो स्थिर मानी गई हैं। कहते हैं, कि इन राशियोंमें कोई काम करनेसे वह स्थिर या स्थायी होता है। जो बालक इनमेंसे किसी राशिमें जन्म लेता है, वह स्थिर और गम्भीर स्वभाववाला, क्षमाशील और दीर्घसूत्री होता है। १३ एक प्रकारका छन्द। १४ एक प्रकारका मन्त्र जिससे शस्त्र अभिमन्त्रित किये जाते थे। १५ वह कर्म जिससे जीवको स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं। (त्रि०) १६ निश्चल, जो चलता या हिलता डोलता न हो, ठहरा हुआ। १७ निश्चित। १८ शान्त। १९ दृढ़, अचल। २० स्थायी, सदा बना रहनेवाला।

स्थिरक (सं० पु०) शाक वृक्ष, सागौन।

स्थिरकर्मन् (सं० त्रि०) स्थिरता और दृढतासे काम करनेवाला।

स्थिरकुसुम (सं० पु०) वकुल वृक्ष, मौलसिरी।

स्थिरगन्ध (सं० पु०) १ चम्पकवृक्ष, चम्पा। (त्रि०) २ स्थिर या स्थायी गन्धयुक्त, जिसकी सुगन्ध स्थिर रहती हो।

स्थिरगन्धा (सं० स्त्री०) १ पाटला, पाढर। २ केतकी, केवड़ा।

स्थिरचक्र (सं० पु०) स्थिरं चक्रं यस्य। मञ्जुघोष या मञ्जुश्री नामक प्रसिद्ध बोधिसत्वका एक नाम। मञ्जुघोष देखो।

स्थिरचित्त (सं० त्रि०) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो, जो जल्दी अपने विचार न बदलता हो अथवा घबराता न हो।

स्थिरचेता (सं० त्रि०) स्थिरचित्त देखो।

स्थिरच्छद (सं० पु०) भूर्जपत्र, भोजपत्र।

स्थिरच्छाय (सं० पु०) १ छायातरु, छाया देनेवाले पेड़। (त्रि०) २ निश्चल छायायुक्त।

स्थिरजिह्व (सं० पु०) स्थिरा जिह्वा यस्य। मत्स्य, मछली।

स्थिरजीविता (सं० स्त्री०) शाल्मलि वृक्ष, सेमलका पेड़।

स्थिरजीविन् (सं० पु०) कौआ जिसका जीवन बहुत दीर्घ होता है।

स्थिरतर (सं० त्रि०) स्थिर तरप्। अतिशय स्थिर।

स्थिरता (सं० स्त्री०) १ स्थिर होनेका भाव, ठहराव। २ दृढ़ता, मजबूती। ३ स्थायित्व। ४ धैर्य, धीरता।

स्थिरदंष्ट्र (सं० पु०) १ भुजङ्ग सांप। २ वाराहरूपी विष्णु। ३ ध्वनि।

स्थिरधन्वन् (सं० त्रि०) दृढ चित्त, जिसकी बुद्धि या चित्त स्थिर हो।

स्थिरपत्र (सं० पु०) १ हिन्ताल, एक प्रकारका खजूरका पेड़। २ महाताल, ताड़से मिलता जुलता एक प्रकारका पेड़।

स्थिरपीत (सं० त्रि०) स्थिरप्राप्ति।

स्थिरपुष्प (सं० पु०) १ चम्पकवृक्ष, चम्पेका पेड़। २ वकुल वृक्ष, मौलसिरीका पेड़। ३ तिलकपुष्पवृक्ष, तिलपुष्प।

स्थिरपुष्पिन् (सं० पु०) तिलकपुष्पवृक्ष, तिलपुष्पी।

स्थिरप्रेमन् (सं० त्रि०) निश्चलप्रेमविशिष्ट।

स्थिरफला (सं० स्त्री०) कुष्माण्डलता, कुम्हड़े या पेठेकी लता।

स्थिरबुद्धि (सं० त्रि०) दृढचित्त, जिसकी बुद्धि स्थिर हो।

स्थिरमति (सं० स्त्री०) स्थिरधी, निश्चल बुद्धिविशिष्ट।

स्थिरमद (सं० पु०) मयूर, मोर।

स्थिरमना (सं० त्रि०) स्थिरचित्त देखो।

स्थिरमुद्ग (सं० स्त्री०) रक्त कुलत्थ, लाल कुलथी।

स्थिरयोनि (सं० पु०) छायातरु, वह वृक्ष जो सदा छाया देता हो।

स्थिरयौवन (सं० पु०) १ विद्याधर। विद्याधरोंका यौवन

चिरस्थायी होता है इसीसे वे स्थिरयौवन कहलाये। (विका०) (क्ली०) २ निश्चल यौवन। (त्रि०) ३ जो सदा जवान रहे।

स्थिररङ्गा (सं० स्त्री०) नीलका पौधा।

स्थिरराग (सं० त्रि०) निश्चल प्रेमविशिष्ट।

स्थिररागा (सं० स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारुहल्दी।

स्थिरवाच् (सं० त्रि०) निश्चल वाक्यविशिष्ट, सत्य प्रतिज्ञ।

स्थिरवाजिन् (सं० त्रि०) स्थिरप्रकृति अश्वविशिष्ट।

स्थिरश्री (सं० त्रि०) स्थिरलक्ष्मीक, जिसकी धनसम्पत्ति निश्चल भावसे रहे।

स्थिरसाधनक (सं० पु०) सिन्धुवार वृक्ष, संभालू। (राजनि०)

स्थिरसार (सं० पु०) शाकवृक्ष, सागौन।

स्थिरा (सं० स्त्री०) १ पृथिवी। २ शालपर्णी, सरिवन। ३ काकोली। ४ शाल्मलिवृक्ष, सेमल। ५ वनमुद्ग, वन मूंग। ६ माषपर्णी, मषवन। ७ मूषाकर्णी, मूसाकानी। ८ दृढचित्तवाली स्त्री।

स्थिराङ्घ्रिप (सं० पु०) हिन्तालवृक्ष।

स्थिरायुस् (सं० पु०) १ शाल्मलि वृक्ष, सेमल। (त्रि०) २ चिरजीवी, जिसकी आयु बहुत अधिक हो। ३ अमर, जो कभी मरे नहीं।

स्थिरीकरण (सं० क्ली०) स्थिर अभूततद्भावे च्वि, कृ-ल्युट्। पहले जो अस्थिर था उसे स्थिर करना, चित्तकी धारणा। पातञ्जलदर्शनमें लिखा है, कि वैराग्य द्वारा विषय आदि प्रवाह प्रतिरुद्ध होता है तथा विवेकदर्शनानुशीलन द्वारा विवेकपथका स्रोत उद्घाटित होता है, अतएव इन दोनों अर्थात् अभ्यास और वैराग्यकी सहायतासे चञ्चल चित्तका स्थिरीकरण या निरोध होता है।

स्थिवि (सं० पु०) कुसीद, सूद, वृद्धि।

स्थिविमत् (सं० त्रि०) स्थानविशिष्ट।

स्थुरिका (सं० स्त्री०) क्षुरिका, बांझ गायका नथना।

स्थुरिन् (सं० पु०) स्थौरी, पीठ पर बोझ ढोनेवाला घोड़ा, लद्दना घोड़ा।

स्थुल (सं० क्ली०) पट्टवास, एक प्रकारका लंबा तंबू।

स्थूण (सं० पु०) १ विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम। २ एक यक्षका नाम।

स्थूणकर्ण (सं० पु०) ऋषिविशेष, स्थूलकर्ण।

स्थूणा (सं० स्त्री०) स्था (रास्नासास्नास्थूणावीणाः। उण् ३।१५) इति न प्रत्ययेन साधुः। १ गृहस्तम्भ, घरका खंभा, थूनी। २ सूर्मी, निहाई। ३ लौहप्रतिमा, लोहेका पुतला। ४ पेड़का तना या ठूंठ। ५ एक प्रकारका रोग।

स्थूणाकर्ण (सं० पु०) १ एक प्रकारका व्यूह। २ एक यक्षका नाम। ३ एक रोगग्रहका नाम। ४ एक प्रकारका वाण।

स्थूणापक्ष (सं० पु०) सेनाका एक प्रकारका व्यूह।

स्थूणाराज (सं० पु०) प्रधान स्तम्भ, प्रधान खंभा।

स्थूम (सं० पु०) १ दीप्ति, प्रकाश। २ चन्द्रमा।

स्थूर (सं० पु०) तिष्ठतीति स्था (स्था किच्च। उण् ५।४) इति ऊरन्। १ वृष, सांड़। २ मनुष्य, आदमी।

स्थूरयूप (सं० पु०) ऋग्वेदके अनुसार एक ऋषि।

स्थूरि (सं० त्रि०) एक धुर्य द्वारा युक्त शकट, एक धुरेकी गाड़ी। (ऋक् १०।१३१।३)

स्थूरिका (सं० स्त्री०) धूरिका, बांझ गायका नथना।

स्थूरिन् (सं० पु०) बोझ लादनेवाला पशु, लद्दू घोड़ा या बैल।

स्थूल (सं० त्रि०) स्थूल अच्। १ पीन, पीवर, मोटा, जिसके अंग फूले हुए या भारी हों। २ जड़, मूर्ख। ३ जो यथेष्ट स्पष्ट हो, सहजमें दिखाई देने या समझमें आने योग्य। ४ जिसका तल समान हो। (क्ली०) स्थूल अच्। ५ कूट। ६ समूह। (पु०) ७ पनस, कटहल। ८ विष्णु। ९ शिवके एक गणका नाम। १० प्रियंगु, कंगनी। ११ तुद या तूनका वृक्ष। १२ ऊख, ईख। १३ वैद्यकके अनुसार शरीरकी सातवीं त्वचा। १४ अन्नमय कोश। १५ वह पदार्थ जिसका साधारणतया इन्द्रियों द्वारा ग्रहण हो सके, वह जो स्पर्श घ्राण, दृष्टि आदिकी सहायतासे जाना जा सके, गोचर पिण्ड। १६ एक प्रकारका कदम्ब।

स्थूलक (सं० पु०) १ एक प्रकारका तृण, उलप, उन्नक। (त्रि०) स्थूल (स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन्। पा ५।४।३) इति कन्। २ स्थूल देखो।

स्थूलकङ्गु (सं० पु०) वरक धान्य, चेना।

स्थूलकणा (सं० क्ली०) स्थूल जीरक, मँगरैला।

स्थूलकण्टक (सं० पु०) जालबबूर, बबूलकी जातिका एक प्रकारका पेड़।

स्थूलकण्टकिका (सं० स्त्री०) शाल्मलिवृक्ष, सेमलका पेड़।

स्थूलकण्टफल (सं० पु०) पनस, कटहल।

स्थूलकण्टा (सं० स्त्री०) बृहती, बड़ी कटाई, बनभंटा।

स्थूलकन्द (सं० पु०) १ रक्तलशुन, लाल लहसुन। २ शूरण, ओल। ३ जंगली शूरण, बनओल। ४ हस्तिकंद, हाथीकंद। ५ मानकंद। ६ मण्डपारोह, मुखालु।

स्थूलकन्दक (सं० पु०) स्थूल-कन्द स्वार्थे-कन्। स्थूलकन्द देखो।

स्थूलकर्ण (सं० पु०) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन ऋषिका नाम।

स्थूलका (सं० स्त्री०) आँबा हल्दी।

स्थूलकाष्ठदह (सं० पु०) बृहत् काष्ठाग्नि, स्कन्धानल।

स्थूलकाष्ठाग्नि (सं० पु०) बृहत् काष्ठानल, स्कन्धाग्नि।

स्थूलकुमुद (सं० पु०) श्वेतकरवीर, सफेद कनेर।

स्थूलकेश (सं० पु०) एक प्राचीन ऋषिका नाम।

स्थूलक्ष्वेड (सं० पु०) वाण, तीर।

स्थूलङ्करण (सं० त्रि०) स्थूलताजनक।

स्थूलग्रन्थि (सं० स्त्री०) महाभरी वचा, महाभरी वच।

स्थूलचञ्चु (सं० पु०) महाचञ्चु नामक साग, बड़ा चेंच।

स्थूलचम्पक (सं० पु०) श्वेतचम्पक, सफेद चम्पा।

स्थूलचाप (सं० पु०) रूई धुननेकी धुनकी।

स्थूलचूड (सं० त्रि०) १ स्थूलचूडायुक्त। (पु०) २ किरात।

स्थूलजङ्घा (सं० स्त्री०) नौ समिधाओंमेंसे एक।

स्थूलजिह्व (सं० त्रि०) १ जिसकी जीभ बहुत बड़ी हो। (पु०) २ एक प्रकारके भूत।

स्थूलजीरक (सं० पु०) जीरकभेद, मंगरैला। गुण—कटु, तिक्त, उष्ण, वातगुल्म, आमदोष, श्लेष्मा, आध्मान और कृमिनाशक तथा दीपन।

स्थूलतण्डुलक (सं० पु०) स्थलशालि, एक प्रकारका मोटा धान।

स्थूलता (सं० स्त्री०) १ स्थूल होनेका भाव, स्थूलत्व। २ मोटापन, मोटाई। ३ भारीपन।

स्थूलताल (सं० पु०) हिन्ताल, श्रीताल।

स्थूलतिक्ता (सं० स्त्री०) दारुहल्दी।

स्थूलतिन्दुक (सं० पु०) काकतिन्दुक, आबनूस।

स्थूलत्वचा (सं० स्त्री०) काश्मीरी, गँभारी।

स्थूलत्वच् (सं० त्रि०) वह जीव जिसका शरीर मोटे चमड़ेसे ढका हो। जैसे—हाथी, गैंडा, सूअर आदि।

स्थूलदण्ड (सं० पु०) महानल, बड़ा नरकट।

स्थूलदर्भ (सं० पु०) मूंज नामक तृण।

स्थूलदर्भा (सं० स्त्री०) स्थूलदर्भ, मूंज नामक तृण।

स्थूलदर्शक (सं० पु०) वह यन्त्र जिसकी सहायतासे सूक्ष्म वस्तु स्पष्ट और बड़ी दिखाई दे, सूक्ष्म दर्शकयन्त्र।

स्थूलदला (सं० स्त्री०) गृहकन्या, घीकुआर।

स्थूलनाल (सं० पु०) देवनल, बड़ा नरकट। (राजनि०)

स्थूलनास (सं० पु०) शूकर, सूअर।

स्थूलनासिक (सं० पु०) स्थूला नासिका यस्य। (अङ्‌नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात्। पा ५।४।११८) इत्यत्र स्थूलवर्ज्जनात् न नसादेशः। १ शूकर, सूअर। (त्रिको०) (त्रि०) २ पीननासायुक्त, जिसकी नाक बड़ी और लम्बी हो।

स्थूलनिम्ब (सं० पु०) महानिम्बू, बड़ा नीबू।

स्थूलनील (सं० पु०) रणगृध्र, बाज।

स्थूलपट (सं० त्रि०) १ पीवर वस्त्रयुक्त, जो मोटा कपड़ा पहने हो। (पु० क्ली०) २ स्थूलवस्त्र, मोटा कपड़ा।

स्थूलपट्ट (सं० पु०) स्थूलः पट्ट कौषेय इव। कार्पास, कपास।

स्थूलपट्टाक (सं० पु०) स्थूलवस्त्र, मोटा कपड़ा।

स्थूलपत्र (सं० पु०) १ दमनक, दौना नामक पौधा। २ सप्तपर्ण, सतिवन।

स्थूलपर्णी (सं० स्त्री०) सप्तपर्णवृक्ष, सतिवन।

स्थूलपाद (सं० पु०) १ हस्ती, हाथी। २ श्लीपद रोगसे युक्त व्यक्ति, वह जिसे फीलपा रोग हो।

स्थूलपिण्डा (सं० स्त्री०) पिण्डखजूर।

स्थूलपुष्प (सं० पु०) १ वक या अगस्त नामक वृक्ष। २ झण्टुक, गुलमखमली।

स्थूलपुष्पा (सं० स्त्री०) १ पर्वत पर होनेवाली अपराजिता। २ अस्फोता, हापरमाली।

स्थूलपुष्पी (सं० स्त्री०) यवतिका, शंखिनी।

स्थूलप्रियङ्गु (सं० स्त्री०) वरकधान्य, चेना।

स्थूलफल (सं० पु०) १ शाल्मलिवृक्ष, सेमलका पेड़। २ महानिम्ववृक्ष, बड़े नीबूका पेड़।

स्थूलफला (सं० स्त्री०) १ शणपुष्पी, वनसनई। २ शाल्मली, सेमल।

स्थूलबर्बुरिका (सं० स्त्री०) बबूलका पेड़।

स्थूलबालुका (सं० स्त्री०) एक प्राचीन नदीका नाम। इसका उल्लेख महाभारतमें है।

स्थूलभ (सं० पु०) स्थूल, मोटा।

स्थूलभण्टा (सं० पु०) वनभण्टा देखो।

स्थूलभद्र (सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैन श्रुतकेवलि। जैन शब्द देखो।

स्थूलभाव (सं० पु०) स्थूलविषय।

स्थूलभुज (सं० पु०) विद्याधर विशेष।

स्थूलभूत (सं० पु०) क्षिति, अप्, तेजः, मरुत् और आकाश पञ्चीकृत ये पाच भूत हैं। वेदान्तके मतके अपञ्चीकृत अवस्थामें सभी भूत तथा पञ्चीकृत अवस्थामें स्थूलभूत कहलाते हैं। भूत शब्द देखो।

स्थूलमञ्जरी (सं० स्त्री०) अपामार्ग, चिचड़ा।

स्थूलमरिच (सं० क्ली०) कक्कोल, शीतलचीनी, कबाबचीनी। (राजनि०)

स्थूलमुख (सं० त्रि०) स्थूलमुखविशिष्ट, चौड़ा मुंहवाला।

स्थूलमूल (सं० क्ली०) बड़ी मूली।

स्थूलमूलक (सं० क्ली०) स्थूलमूल देखो।

स्थूलम्भविष्णु (सं० त्रि०) जो स्थूल हो, स्थूलम्भावुक।

स्थूलरुहा (सं० स्त्री०) स्थूलपद्म।

स्थूलरोग (सं० पु०) मोटे होनेका रोग, मोटाईकी व्याधि।

स्थूललक्ष (सं० त्रि०) १ बहुप्रद, जो बहुत अधिक दान करता हो, बहुत बड़ा दानी। (पु०) २ विद्वान, पण्डित। ३ कृतज्ञ।

स्थूललक्षिता (सं० स्त्री०) १ दानशीलता। २ पाण्डित्य, विद्वत्ता। ३ कृतज्ञता।

स्थूललक्ष्य (सं० त्रि०) १ जो बहुत अधिक दान करता हो, बहुत बड़ा दाता। (पु०) २ किसी विषयकी ऊपरी या मोटी बातें बताना।

स्थूलवर्त्मकृत् (सं० पु०) ब्राह्मणयष्टिका, बभनेटी।

स्थूलवल्कल (सं० पु०) १ रक्तलोध्र, लाल लोध। २ पट्टिका लोध्र, पठानी लोध।

स्थूलवृक्ष (सं० पु०) बकुल, मौलसिरीका पेड़।

स्थूलवृक्षफल (सं० पु०) मदनफल, मैनफल।

स्थूलवैदेही (सं० स्त्री०) गजपिप्पली, गजपीपल।

स्थूलशर (सं० पु०) भद्रमुञ्ज, रामशर। गुण—मधुर, सुतिक्त, कोष्ण, कफ, भ्रान्ति और मदावह, बलवीर्यकारक। यह रोज सेवन करनेसे कुछ वातवृद्धि भी होती है।

स्थूलशाकिनी (सं० स्त्री०) राजशाकिनी।

स्थूलशाटक (सं० पु०) पोनवस्त्र, मोटा कपड़ा।

स्थूलशाटका (सं० स्त्री०) स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा।

स्थूलशालि (सं० पु०) शालिधान्यभेद, एक प्रकारका मोटा चावल। गुण—स्वादु, मधुर, शिशिर, पित्तनाशक, जीर्णज्वर, दाह, जठरपीड़ानाशक, शिशु, युवा और वृद्धोंके पक्षमें हितकर। इस धान्यका सेवन करनेसे अग्नि, बल और वीर्य वृद्धि होती है।

स्थूलशिम्ब (सं० पु०) शिम्बीभेद, एक प्रकारकी सेम।

स्थूलशिम्बी (सं० स्त्री०) श्वेत निष्पावी, सफेद सेम।

स्थूलशिरस (सं० क्ली०) १ बृहन्मस्तक, बड़ा सिर। २ मुनि विशेष। (त्रि०) ३ स्थूल मस्तकयुक्त, बड़ा सिरवाला।

स्थूलशीर्षिका (सं० स्त्री०) १ क्षुद्रपिपीलिका, छोटी च्यूंटी। (त्रि०) २ बृहन्मस्तक, बड़ा सिरवाला।

स्थूलशूरण (सं० क्ली०) शूरणभेद, एक प्रकारका जमींकन्द या ओल।

स्थूलषट्पद (सं० पु०) बरैल, बोलता।

स्थूलसायक (सं० पु०) भद्रमुञ्ज, रामशर।

स्थूलस्कन्ध (सं० पु०) लकुच, बड़हर।

स्थूलहस्त (सं० पु०) १ हस्तिशुण्ड, हाथीका सूंड़। (त्रि०) २ पीनभुज, बड़ी भुजावाला।

स्थूलाशा (सं० स्त्री०) गन्धपत्र।

स्थूला (सं० स्त्री०) स्थूल टाप्। १ गजपिप्पली, गज-

पीपल। २ वृहदेला, बड़ी इलायची। ३ कार्पास, कपास। ४ ककड़ी। ५ कपिलद्राक्षा, मुनक्का। ६ मिश्रेया, सौंफ। ७ शतपुष्पा, सोआ नामक साग।

स्थूलाङ्ग (सं० पु०) १ स्थूलशालि, मोटा धान। (त्रि०) २ स्थूल अङ्गविशिष्ट, मोटा शरीरवाला।

स्थूलाक्ष (सं० पु०) एक राक्षसका नाम जो खरका साथी था।

स्थूलाजाजी (सं० स्त्री०) स्थूलजीरक, मंगरैला।

स्थूलाय (सं० पु०) १ एक प्राचीन ऋषिका नाम। २ एक राक्षसका नाम।

स्थूलाम्ल (सं० क्ली०) बड़ी अमड़ो।

स्थूलाम्र (सं० पु०) महाराजचूतवृक्ष, कलमी आम।

स्थूलोडुम्बक (सं० क्ली०) क्षुद्र कुष्ठभेद, सफेद कोढ़। कुष्ठरोग देखो।

स्थूलास्य (सं० पु०) १ सर्प, सांप। (त्रि०) २ वृहन्मुख, लम्बा मुंहवाला।

स्थूलिन् (सं० पु०) उष्ट्र, ऊंट।

स्थूलेरण्ड (सं० पु०) वृहदेरण्डवृक्ष, बड़ा एरंड।

स्थूलैला (सं० स्त्री०) एलाविशेष, बड़ी इलायची। गुण—शीतल, तिक्त, उष्ण, सुगन्धि, पित्तपीड़ा और कफनाशक, हृद्रोग, मलार्त्ति, वस्तिकारक, दुःस्वप्ननाशक। यह बहुत दिनका होनेसे गुणकारक होता है। (राजनि०)

स्थूलोच्चय (सं० पु०) १ गण्डोपल। २ हाथीकी मध्यम चाल जो न बहुत तेज हो और न बहुत सुस्त। ३ असाकल्य। ४ वरण्ड। ५ हस्तिदन्तरन्ध्र।

स्थेमन (सं० पु०) उत्सवका समय।

स्थेय (सं० पु०) स्था यत्। १ वह जो किसी विवादका निर्णय करता हो, निर्णायक। २ पुरोहित। (त्रि०) ३ स्थाप्य, स्थापित करनेयोग्य।

स्थेयस् (सं० त्रि०) स्थिर-ईयसुन् (प्रियस्थिरेति। पा ६।४।१५७) इति स्थादेशः। १ स्थिरता, अतिशय स्थिर। २ शाश्वत।

स्थेष्ठ (सं० त्रि०) स्थिर, इष्ठन् (प्रियस्थिरेति। पा ६।४।१५७) इति स्थादेशः। अतिशय स्थिर।

स्थैरकायण (सं० पु०) स्थिरक (नड़ादिभ्यः फक्। पा ४।१।९९) इति फक्। स्थिरकके गोत्रापत्य।

स्थैर्य (सं० क्ली०) स्थिर भ्यञ्। १ स्थिर होनेका भाव, स्थिरता। गर्भस्थ बच्चेके चौथे महीनेमें सभी अंगोंकी स्थिरता होती है। २ दृढ़ता, मजबूती।

स्थोरिन् (सं० पु०) भारवाहक अश्व, बोझ ढोनेवाला घोड़ा, लद्दू घोड़ा।

स्थौणाभारिक (सं० त्रि०) स्थूणाभारवहनकारी।

स्थौणिक (सं० त्रि०) स्थूणा सम्बन्धी।

स्थौणेय (सं० क्ली०) स्थूणा ठक्। एक प्रकारकी ग्रन्थिपर्णी, थुनेर। नेपालमें इसे भटिउर कहते हैं। गुण—सुगन्धि, कटु, तिक्त, पित्तप्रकोपशमक, बलवुद्धिविवर्द्धन। (राजनि०) भावप्रकाशके मतसे पर्याय—निशाचर, धनहर, कितव, गन्धहारक, रोचक। गुण—मधुर तिक्त, कटु, लघु, तीक्ष्ण, हृद्य, हिम, कुष्ठ, कण्डु, कफ और वायुनाशक।

स्थौणेयक (सं० क्ली०) स्थौणेय देखो।

स्थौर (सं० पु०) पृष्ठारोपित भारादि, वह भार जो पीठ पर लादा जाय।

स्थौरिन (सं० पु०) भारवाहक पशु; घोड़े, बैल, खच्चर आदि जिनकी पीठ पर भार लादा जाता है।

स्थौर्य (सं० पु०) पृष्ठारोपित भारवहन, पीठ पर लाद कर भार ढोना।

स्थौलक (सं० त्रि०) स्थूलता-सम्बन्धी।

स्थौलपिण्डि (सं० पु०) वह जो स्थूलपिण्डके वंश या गोत्रमें उत्पन्न हुआ हो।

स्थौललक्ष्य (सं० क्ली०) अतिशय दातृत्व।

स्थौलशीर्ष (सं० त्रि०) वृहत् मस्तक-सम्बन्धी। (काशिका)

स्थौल्य (सं० पु०) स्थूल ष्यञ्। १ स्थूलता, स्थूलत्व, स्थूलका भाव या धर्म। २ रोगविशेष, स्थौल्यरोग। इस रोगमें रोगी केवल मोटा होता है। वैद्यकशास्त्रमें इस प्रकार लिखा है,—

जो सब मनुष्य कायिक परिश्रमसे विरत रह कर दिन भर सोते और अत्यन्त श्लेष्माजनक वस्तु खाते हैं, उनके भुक्तान्नका सारभूत समस्त रस मधुरताको प्राप्त होता है, अतएव स्नेहबाहुल्यप्रयुक्त मेदकी वृद्धि होती है। वर्द्धित मेद द्वारा सभी स्रोतोंके रुद्ध रहनेसे अन्यान्य धातुकी पुष्टि नहीं हो सकती, केवल मेद ही सञ्चय होता है। इस कारण रोगी स्थूल हो जाता है और स्थूलताके कारण वह किसी कामका नहीं रह जाता।

इस रोगमें क्षुद्रश्वास, पिपासा, मोह, निद्राधिक्य, हठात् उच्छ्वास, शरीरकी अवसन्नता और क्षुधाकी अधिकता होती है तथा पसीनेमें दुर्गन्ध निकलती है, रोगीका बलह्रास और मैथुन शक्तिकी अल्पता होती है। सभी प्राणियोंके उदरमें मेद है, इस कारण प्रायः उदरमें ही मेद बढ़ कर यह रोग उत्पन्न होता है।

चिकित्सा—इस रोगीको पुराने चावल, मूंग, कुलथी कालाय, वनकोदों और कोदोंका सेवन तथा लेखनवस्तिका प्रयोग करावे। धूमपान, क्रोध, रक्तमोक्षण तथा भुक्त द्रव्य जीर्ण होने पर जौ और गेहूंका खाद्यभोजन हितकर है। यथोपयुक्त उपवास, असुखजनक शय्या तथा सत्त्व, उदारता और तमोराहित्य, इन सबसे सन्तर्पणजनित स्थौल्यरोग विनष्ट होता है। परिश्रम, चिन्ता, स्त्रीप्रसङ्ग, पथपर्य्यटन, अश्वारोहण, मधुभोजन, रात्रिजागरण, इन सबसे स्थूलता नष्ट होती है। जौ और सावा धानका भात खानेसे इस रोगका बड़ा उपकार होता है। चई, जीरा, त्रिकटु, हिङ्गु, सौवर्चल और चिता इन सबका चूर्ण समान भाग ले कुछ मिला कर जितना हो उससे १६ गुना लावेका सत्तू मिला कर दहीके पानीके साथ पिलानेसे अग्निकी दीप्ति हो कर मेद विनष्ट होता है। मेदके नष्ट होनेसे यह रोग आपे-आप दूर होता है। त्रिफला और त्रिकटु तैल तथा लवणके साथ छः मास सेवन करनेसे कफमेद और वायुका नाश होता है। त्रिडङ्ग, कचूर, यवक्षार, कान्तलौह, जौ और आमलकी इनका समान समान भाग मधुके साथ सेवन करनेसे स्थौल्य नष्ट होता है। शुष्क मूला चूर्ण या त्रिफला चूर्ण मधुके साथ सेवन या असमान भागमें मधु मिश्रित जल पान करनेसे अथवा बिल्वादि पञ्चमूलका चूर्ण मधुके साथ सेवन कर मण्डपान करनेसे स्थौल्य निश्चय ही नष्ट होता है।

स्नपन (सं० क्ली०) स्ना-णिच्-ल्युट्। स्नान, नहानेकी क्रिया।

स्नपित (सं० त्रि०) स्ना-णिच्-क्त। कृतस्नान, जिसने स्नान किया हो, नहाया हुआ।

स्नव (सं० पु०) स्रवण, क्षरण।

स्नसा (सं० स्त्री० स्नायु। (हेम)

स्ना (सं० स्त्री०) वह चमड़ा जो गाय या बैल आदिके गलेकी नीचे लटकता है, लो।

स्नात (सं० त्रि०) स्ना-क्त। कृतस्नान, जिसने स्नान किया हो, नहाया हुआ। स्नान नहीं करनेसे किसी दैव या पैत्र कर्ममें अधिकार नहीं होता, लेकिन पीड़ितके लिये स्वतन्त्र व्यवस्था है। स्नान शब्द देखो।

स्नातक (सं० पु०) स्नात एव स्नात (यावादिभ्यः कन्। पा ५।४।२९) इति स्वार्थे कन्। वह जिसने ब्रह्मचर्य्य व्रतकी समाप्ति पर स्नान करके गृहस्थ-आश्रममें प्रवेश किया है।

मन्वादि संहिताके मतानुसार स्नातक तीन प्रकारके होते थे, व्रतस्नातक, विद्यास्नातक और विद्याव्रतस्नातक। जो स्नातक २५ वर्षकी अवस्था तक ब्रह्मचर्य्यका पालन करके बिना वेदोंका पूरा अध्ययन किये ही घर लौटते थे, वे व्रतस्नातक, जो लोग २५ वर्षकी अवस्था हो जाने पर भी गुरुके यहां ही रह कर वेदोंका अध्ययन करते थे और गृहस्थ-आश्रममें नहीं आते थे, वे विद्यास्नातक और जो लोग ब्रह्मचर्य्यका पूरा पूरा पालन करके गृहस्थ आश्रममें आते थे वे उभयस्नातक या विद्याव्रतस्नातक कहलाते थे। ये तीनों प्रकारके स्नातक ब्राह्मण यदि घर आवें, तो मधुपर्क द्वारा उनकी पूजा करनी होती है।

स्नातक ब्राह्मण प्रति दिन पञ्चमहायज्ञका अनुष्ठान करें। कोई स्वाध्यायमें प्राणवायुको सर्वदा लय कर अथवा प्राणायाम द्वारा प्राणवायुमें वागिन्द्रियको सर्वदा विलीन कर पञ्चयज्ञका अक्षय फल लाभ करते हैं। विद्यास्नातक, व्रतस्नातक और विद्याव्रत उभयस्नातक गृहस्थ श्रोत्रियगणको हव्यकव्य द्वारा पूजा करें। स्नातक ब्राह्मणको कभी मस्तक न मुड़वाना चाहिये, परन्तु केश, नख और श्मश्रु कटानेमें कोई दोष नहीं। वे तपःक्लेशसहिष्णु होवें, शुक्ल वस्त्र पहनें, अन्तर्बाह्यादि शुचि होवें, प्रति दिन स्वाध्याय कार्यमें उद्योगी रहें तथा गुरु भोजनादि वर्जन द्वारा नित्य आत्महितपरायण होवें, सर्वदा यज्ञोपवीत, कुशमुष्टि और सुन्दर सुवर्णमय दो कुण्डल धारण करें। उदित या अस्तमित अवस्थामें सूर्यका दर्शन न करें। राहुग्रस्त सूर्य, जलप्रतिबिम्बित

सूर्य और आकाशमण्डलके मध्यस्थित सूर्यदर्शन भी उनके लिये मना है।

स्नातक ब्राह्मण ब्राह्ममुहूर्त्तमें अर्थात् रात्रिके शेष प्रहरमें निद्राभङ्ग करें, पीछे वेदतत्त्वार्थ परब्रह्मका निरूपण करें। अनन्तर शय्यात्याग कर मलमूत्रका त्याग और प्रातःस्नानके बाद शुचि हो समाहित चित्तसे संध्या उपासना कर गायत्रीका जप करें। अपर संध्याकालमें भी गायत्रीको उपासना करना कर्त्तव्य है।

श्रावण मासकी पूर्णिमा अथवा भाद्रमासकी पूर्णिमासे ले कर गृह्यानुसार उपाकर्म समाप्त करके साढ़े चार मास वेद अध्ययन करें। पौष या माघके शुक्ल पक्षके प्रथम दिनमें पूर्वाह्नमें यह उत्सर्गकर्म करना होगा। जिन्होंने भाद्रमासकी पूर्णिमामें उपाकर्म आरम्भ किया है, वे ही माघीय शुक्ल प्रतिपद्में उत्सर्ग करेंगे। पीछे वेदपाठ करें। अतिप्रातः या अतिसायंकालमें भोजन करना निषिद्ध है। पूर्वाह्नमें अतिशय भोजन करनेसे फिर सायंकालमें भोजन न करें। तीनों प्रकारके स्नातक विधिनिषेधका प्रतिपालन करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये।

स्नातव्रत (सं० क्लो०) स्नातक ब्राह्मणोंका नियम।

स्नातव्रतिन् (सं० त्रि०) स्नातकव्रतविशिष्ट।

स्नातव्य (सं० त्रि०) स्ना-तव्य। स्नानके योग्य, नहाने लायक।

स्नान (सं० क्लो०) स्ना-ल्युट्। १ शरीरको स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करनेके लिये उसे जलसे धोना, अथवा जलकी बहती हुई धारामें प्रवेश करना।

शास्त्रमें लिखा है, कि विना स्नान किये दैव और पैत्र कर्ममें अधिकार नहीं होता। वैद्यकशास्त्रमें लिखा है, कि शरीरका क्लेश दूर करना ही केवल स्नानका कार्य नहीं है। स्नान द्वारा शरीर स्निग्ध, मन प्रफुल्ल, मस्तिष्क शीतल, वायु और पित्तादिका दमन तथा मुखकी श्री और प्रसन्नताकी वृद्धि होती है। नदी, कूप, तड़ाग, सरोवर आदि स्नानके लिये व्यवहृत होते हैं। अवगाहन-स्नान करना ही मुख्य व्यक्तियोंके लिये हितकर है। प्रातःस्नानसे शरीरका बड़ा उपकार होता है। जिन्हें अभ्यास नहीं है, वे यदि धीरे धीरे प्रातःस्नानका अभ्यास कर लें, तो उन्हें किसी प्रकारका अनिष्ट नहीं होता। स्नानके पहले तेल लगाना विशेष आवश्यक और उपकारक है। तेलकी मालिश करनेसे शरीरमें रक्तका सञ्चार होता है। तेलका व्यवहार न करके यदि स्नान किया जाय, तो लोमकूपसे जो एक प्रकारका तैलवत् पदार्थ क्रमागत शरीरसे निकलता है, वह धुल जानेसे चमड़ा रूखड़ा हो जाता है।

भावप्रकाशके मतसे स्नान अग्निप्रदीपक, शुक्रवर्द्धक, आयुष्कर और ओजोधातुवर्द्धक, बलकारक तथा खुजली, मल, श्रान्ति, घर्म, तन्द्रा, तृष्णा, दाह तथा पाप्मविनाशक है। शीतल जलादि परिषेचन द्वारा बाह्य उष्मा प्रतिहत हो कर शरीरके अभ्यन्तर प्रविष्ट होता है। इस कारण स्नान करते ही मानवोंका जठरानल प्रदीप्त हो कर क्षुधाका उदय होता है। शीतल जल द्वारा स्नान करनेसे रक्त और पित्तका उपशम होता है। गरम जल द्वारा स्नान करनेसे बलकी वृद्धि तथा वायु और कफका विनाश होता है। परन्तु अत्यन्त उष्ण जल द्वारा शिरःस्नान करनेसे चक्षुकी तेजी जाती रहती है। जहां वायु और कफका प्रकोप रहता है, वहां कुछ गरम जलसे स्नान करना ही हितकर है। कुछ गरम जलमें जो स्नान किया जाता है, वह विशेष हितकर माना गया है।

स्नानके पहले जो अभ्यङ्ग करना होता है, उस अभ्यङ्गमें सर्षप तैल, गन्ध तैल, अगुरु आदि गन्धद्रव्य, अग्नि द्वारा निष्काशित तैल, पुष्पवासित तैल तथा अन्य कोई हितकर औषधादि संयुक्त तैल प्रशस्त है। अभ्यङ्ग द्वारा वायु, कफ और श्रान्ति विनष्ट होती है तथा बल, सुख, निद्रा, शरीरकी कोमलता, परमायुकी वृद्धि और शरीरकी पुष्टि होती है। मस्तकमें तेल लगानेसे सभी इन्द्रियोंकी तृप्ति, दर्शनशक्तिकी वृद्धि, शरीरकी पुष्टि और शिरोगत रोगोंका नाश होता है। केशवृद्धि, केशमूलकी दृढ़ता, कोमलता, दीर्घता, कृष्णवर्णता तथा मस्तककी पूर्णता अर्थात् मस्तिष्ककी वृद्धि होती है। स्नानके पहले प्रति दिन कानमें तेल डालनेसे कानमें मल, मन्याग्रह, हनुग्रह, उच्चैःश्रुति तथा बधिरताकी उत्पत्ति नहीं होती। पादाभ्यङ्ग द्वारा दोनों पदकी स्थिरता, निद्रा, चक्षुकी प्रसन्नता तथा पादसुप्ति अर्थात्

पादस्पर्शज्ञानरहित, श्रम, दोनों पदकी स्तब्धता, सङ्कोच और स्फुटन निवृत्त होता है। (भावप्र०)

धर्मशास्त्रमें त्रिकाल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायाह्नमें स्नान करनेका विधान है। त्रिकालीन स्नान सबोंके लिये नहीं कहा गया है। केवल स्नातक ब्राह्मणके सम्बन्धमें ही इस त्रिकालीन स्नानकी व्यवस्था है। परन्तु द्विकालीन अर्थात् प्रातः और मध्याह्न इन दोनों समय सबोंका स्नान करना कर्त्तव्य है। सूर्योदयके पहले जो स्नान किया जाता है, उसे प्रातःस्नान कहते है। सूर्योदयके बादका स्नान प्रातःस्नान नहीं कहलाता। क्योंकि विष्णुने कहा है, कि पूर्व दिशा अरुणकिरणग्रस्त होनेसे प्रातःस्नान करना चाहिये।

प्रातःकालके स्नानमें तैलाभ्यङ्ग नहीं करना चाहिये अर्थात् तेल लगा कर प्रातःस्नान नहीं करना चाहिये, क्योंकि 'प्रातस्तैलं सुरासमं' प्रातःकालमें तेल सुराके समान अस्पृश्य है।

शास्त्रमें प्रातःस्नानकी विशेष प्रशंसा देखनेमें आती है। प्रातःस्नान करनेसे दृष्टादृष्ट पाप अर्थात् शरीरका मल जिस प्रकार दूर होता है, उसी प्रकार दुष्टादि पाप क्षय होते हैं। अतएव द्विजातिमात्रको ही प्रातःस्नान अवश्य कर्त्तव्य है। परन्तु बालक, वृद्ध और आतुरके लिये स्वतन्त्र व्यवस्था है। समर्थ होने पर प्रातःस्नान सबोंको करना चाहिये। प्रातःस्नानके बाद संध्या देवपूजा आदि सभी कर्मोंका अनुष्ठान कर मध्याह्नस्नान करे।

चतुर्थ यामार्द्धमें अर्थात कमसे कम साढ़े दश और बारह बजेके भीतर मध्याह्न स्नान करे। स्नानकालमें कुशहस्त हो कर स्नान करना होता है। बाएं हाथमें बहुतसे कुश तथा दाहिने हाथमें पवित्र धारण कर स्नान करे। दो या तीन कुशसे पवित्र बनाना होता है। एक कुशसे कभी भी पवित्र नहीं बनावे। स्नानके पहले तैलाभ्यङ्ग करे, इस तैलाभ्यङ्गमें तिलतैल ही प्रशस्त है। व्यासने कहा है, कि तिल तेल लगा कर स्नान करना बड़ा लाभदायक है। आंवला शरीरमें लगा कर स्नान करनेसे श्रीवृद्धि होती है। सप्तमी, नवमी, पर्वदिन अर्थात चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति और षष्ठीको तेल न लगावे, लगानेसे नरक होता है।

इसके सिवा चित्रा, अश्विनी, हस्ता और श्रवणा नक्षत्रमें तथा सूर्य, मङ्गल और शुक्रवारको तेल लगाना मना है। इन सब निषिद्ध दिनोंको छोड़ अन्य दिनोंमें तेल लगा कर मध्याह्न स्नान करे। प्रातःस्नानमें सभी दिन तैल निषिद्ध है, यह पहले ही कहा जा चुका है। इन सब निषिद्ध दिनोंमें यदि तेल लगाना हो, तो प्रतिप्रसव करके। वह इस प्रकार है—रविवारको तेलमें पुष्प, गुरुवारको दूर्वा, मङ्गलवारको मृत्तिका तथा शुक्रवारको गोमय डाल कर। अर्थात् इस प्रक्रिया द्वारा तैलदोष विनष्ट होता है। इन सब निषिद्ध दिनोंको छोड़ अन्य दिनोंमें तेल लगा नाभिमात्र जलमें अवस्थान कर स्नान करे।

भोजन करके स्नान नहीं करना चाहिये, दो पहर रातको भी स्नान करना निषिद्ध है। अनेक वस्त्र पहन कर तथा जिस जलाशयका हाल कुछ भी मालूम नहीं, उसमें भी स्नान न करे।

पूर्वोक्त विधानसे प्रतिदिन स्नान करे। यह स्नान नित्य कहलाता है। पुत्रजन्म, पितृ मातृमरण, अशौचोपगम आदि निमित्तवशतः जो स्नान किया जाता है, उसको नैमित्तिक स्नान कहते हैं। पापक्षयादिकी कामना करके गङ्गादि पुण्य तीर्थमें जो स्नान किया जाता है वह काम्यस्नान कहलाता है।

पहले ही कहा जा चुका है, कि स्नान नहीं कर सकनेसे स्नानके अनुकल्प ७ प्रकारके स्नान कहे गये हैं, स्नान न करके किसी कर्ममें अधिकार नहीं होता, अतएव अस्वस्थताके कारण यदि स्नान न किया जा सके, तो इस अनुकल्प स्नान द्वारा ही स्नान सिद्ध होगा।

१ मान्त्र स्नान—"आपोहिष्ठा" इत्यादि तीन वेदमन्त्रका पाठ कर मस्तक और अङ्ग पर जलका छींटा देनेसे मान्त्रस्नान होता है। इस कारण सन्ध्याके प्रथममें "आपो हिष्ठादि" मन्त्र द्वारा मान्त्रस्नान करना होता है।

२ भौम अर्थात् पार्थिव स्नान—गङ्गामृत्तिकाका तिलक लगानेसे यह स्नान होता है। ३ गात्रमें भस्म लगानेको आग्नेय स्नान, ४ गोरजः स्पर्श करनेको वायव्य स्नान, ५ आतप डाल कर देवोद्देश्यके दिव्यस्नान, ६ अवगाहनको वारुण स्नान और ७ विष्णुस्मरणको मानस स्नान कहते हैं। ये ही सात प्रकारके स्नान अनुकूल है।

इन सात प्रकारके स्नानोंमेंसे जो स्नान किया जाय, उससे स्नान सिद्ध हो कर सभी कर्मों में अधिकार होता है। ये सब स्नान असमर्थके लिये जानने होंगे। समर्थ व्यक्ति अवगाहन स्नान ही करें। क्योंकि अवगाहन स्नान ही सभी प्रकारके स्नानों से श्रेष्ठ है। जो वस्त्र पहन कर स्नान किया जाता है, उस वस्त्रसे गात्रमार्जन नहीं करना चाहिये। नग्न हो कर भी स्नान न करे।

स्नानकलश (सं० पु०) स्नानकुम्भ, वह घड़ा जिसमें स्नान करनेका पानी रहता है।

स्नानकुम्भ (सं० पु०) स्नानकलश देखो।

स्नानगृह (सं० क्ली०) स्नानागार, वह कमरा, कोठरी या इसी प्रकारका और घिरा हुआ स्थान जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नानतृण (सं० क्ली०) कुश जिसे हाथमें ले कर नहानेका शास्त्रोंमें विधान है।

स्नानद्रोणी (सं० स्त्री०) स्नानकलश देखो।

स्नानयात्रा (सं० स्त्री०) यात्रा उत्सवविशेष, ज्यैष्ठी पूर्णिमा तिथिको श्रीविष्णुका महास्नानरूप उत्सव। ज्येष्ठी पूर्णिमामें भगवान् विष्णुको महास्नानके विधानानुसार करा कर उत्सव करना होता है। भगवान विष्णुके स्नानके कारण उत्सव होता है, इसीसे इसको स्नानयात्रा कहते हैं। यह पूर्णिमा श्रीजगन्नाथदेवका जन्म दिन है, अतएव इस दिन जगन्नाथ, सुभद्रा और बलरामको अवलोकन करनेसे विष्णुलोककी गति होती है।

पुरुषोत्तमधाम जगन्नाथक्षेत्रमें इस ज्यैष्ठ पूर्णिमाको बड़ी धूमधामसे स्नानयात्रोत्सव मनाया जाता है। बहुत दूर दूरसे भक्तवृन्द उस दिन वहां आते हैं। भगवज्जन्मोत्सव दर्शन करनेसे जीवन और जन्म सार्थक होता है। विशेष विवरण जगन्नाथ शब्द देखो।

स्नानवस्त्र (सं० क्ली०) वह वस्त्र जिसे पहन कर स्नान किया जाता है।

स्नानवासस् (सं० क्ली०) स्नानार्थ वासः। स्नानवस्त्र।

स्नानविधि (सं० पु०) स्नानका विधान। स्नान शब्द देखो।

स्नानवेश्मन् (सं० क्ली०) स्नानगृह, स्नानागार।

स्नानशाटी (सं० स्त्री०) स्नानवस्त्र। शास्त्रमें लिखा है, कि स्नान करनेके बाद स्नानशाटीसे शरीर नहीं पोंछना चाहिए।

स्नानशाला (सं० स्त्री०) स्नानार्थं शाला। स्नानगृह, नहानेका कमरा या कोठरी, गुसलखाना।

स्नानाम्बु (सं० क्ली०) स्नान करने या नहानेका पानी।

स्नानीय (सं० त्रि०) स्नान-छ। १ जो नहानेके योग्य हो। २ जिससे नहाया जा सके।

स्नानोदक (सं० क्ली०) स्नानीय जल, नहानेका पानी।

स्नानोपकरण (सं० क्ली०) स्नानका उपकरण द्रव्य।

स्नापन (सं० क्ली०) स्ना णिच्-ल्युट्। स्नापन, स्नान।

स्नायविक (सं० त्रि०) स्नायु सम्बन्धी, स्नायुका।

स्नायवीय (सं० पु०) कर्मेन्द्रिय। जैसे—हाथ, पैर, आंख आदि।

स्नायिन् (सं० त्रि०) स्ना णिनि। स्नानकर्त्ता, नहानेवाला।

स्नायु (सं० स्त्री०) स्ना बाहुलकात् उन् (आतोयुक् चिण्कृतोः। पा ७।३।३३) इति युक्। वायुवाहिनी नाड़ी। वैद्यकमतसे गर्भस्थ बालकके सातवें मासमें स्नायु उत्पन्न होती है। याज्ञवल्क्यसंहितामें लिखा है, कि शरीरमें ६०० सौ स्नायु हैं।

जिन सब नाड़ियों द्वारा वायु चलाचल होती है, उन्हें स्नायु कहते हैं। यह स्नायु चार भागोंमें विभक्त है, यथा—प्रतानवती अर्थात् शाखाप्रशाखाविशिष्ट, वृत्ता अर्थात् गोलाकार, पृथुल स्थूल और सुषिर छिद्रयुक्त। ये ही चार प्रकारकी स्नायु हैं। हाथ, पैर और सन्धिस्थलकी स्नायु प्रतानवती, सभी कण्डरा वृत्ता, पार्श्वदेश, वक्ष, पृष्ठ और मस्तककी स्नायु पृथुल तथा आमाशय और पक्वाशयके अन्तभाग तथा वस्तिकी स्नायु सुषिर कहलाती है।

किस किस स्थानमें कितनी स्नायु हैं, उनकी तालिका भावप्रकाशके मतानुसार इस प्रकार है। स्नायुसंख्या ६०० सौ है।

प्रत्येक पादाङ्गुलिमें—

६ करके—३००		दोनों हाथमें इसी प्रकार	३००
लके अग्रभाग		कटिदेशमें	६०
गुल्फमें—३०		पृष्ठमें	८०
जङ्घामें	३०	दोनों पार्श्वमें	६०
जानुमें	३०	वृक्षःस्थलमें	३०
ऊरुदेशमें	४०	ग्रीवादेशमें	३६
वङ्क्षणमें	१०	मूर्द्ध देशमें	३४
इसी प्रकार दूसरे पैरमें			
	१५०		६००
	१५०		३००
	३००		६००

स्नायुमण्डल ही जीवकी सभी प्रकारकी चेष्टा और चैतन्यका प्रधान यन्त्र है।

स्नायुविधानको साधारणतः दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। १ मस्तिष्ककशेरुकामज्जागत, २ सहानुभूतिक।

मस्तिष्क और कशेरुकामज्जा तथा उनकी स्नायु द्वारा मस्तिष्क कशेरुकामज्जागत स्नायुविधान संगठित हैं। मस्तिष्क कशेरुकामज्जा अथवा पृष्ठवंशीय मज्जासे सभी स्नायु उत्पन्न हुई हैं। इस कारण इन दोनोंको स्नायुमूल कहते हैं। करोटी-गह्वरके अस्थिमय प्राचीर-के अभ्यन्तर मस्तिष्क अवस्थित है तथा कशेरुका मज्जा पृष्ठवंशकी प्रणालीमें संस्थित है। एक बृहत् रन्ध्रके भीतरसे मस्तिष्क और स्नायु परस्पर मिल गई है। उस रन्ध्रका नाम खर्परन्ध्र है। तीन झिल्ली पृथक् पृथक् रूप में इन दोनों स्नायुकेन्द्रोंको आच्छादित की हुई है। मस्तिष्क और कशेरुका या पृष्ठवंशीय मज्जा दो प्रकार-के स्नायु पदार्थ द्वारा संगठित है। वर्णानुसार ये दोनों धूसर और शुभ्र पदार्थ कहलाते हैं। सभी स्नायु मस्तिष्क और पृष्ठवंश मज्जासे उत्पन्न हुई है।

मस्तिष्कजात स्नायु—मस्तिष्कसे बारह जोडी युग्म स्नायु निकली है। ये मस्तिष्कके तलदेशसे युग्माकार-मे अर्थात् एक एक जोडा एक साथ बहिर्गत हुई हैं। इस कारण इन्हें युग्म स्नायु कहते हैं। इन सब स्नायु-मेंसे कितनी शरीरकी प्रधान इन्द्रिय हैं। यथा—घ्राणे-न्द्रिय, दर्शनेन्द्रिय, गतिसाधक, चैतन्यसाधक और चल-च्छक्तिसाधक इत्यादि।

घ्राणस्नायु—यह मस्तिष्कके आभ्यन्तरीण एक विशेष स्नायुपिण्डसे उत्पन्न तथा स्नायुगुच्छ द्वारा मस्तिष्कके साथ संयुक्त है। यह शौषिर अस्थिके छिद्रोंके बीचसे तीन गुच्छोंमें विभक्त हो नासिकाकी भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्लीमें फैल गई है। इसकी प्रधान क्रिया घ्राणग्रहण है।

दर्शनस्नायु—यह मस्तिष्कसे निकल कर अक्षि-गोलकमें घुस गई है। इसका प्रधान कार्य दर्शन है।

तृतीय स्नायु—यह भी मस्तिष्कके भीतरसे निकली है। अक्षिगोलककी बहुत सी पेशियां इसमें अवस्थित हैं। इस कारण दर्शन कार्यकी सहायता करना इसका प्रधान कार्य है।

चतुर्थ स्नायु—यह युग्मस्नायु है। यह तृतीय स्नायुमूलके निम्नस्थ धूसर पदार्थसे निकली है। मस्तिष्कसे जितनी स्नायु निकलती हैं उनमेंसे यह सबसे छोटी है। दर्शनेन्द्रियकी पेशीका गतिसाधन ही इसका प्रधान कार्य है।

पञ्चम स्नायु—यह युग्मस्नायु है। मस्तिष्कजात स्नायुओंमें यह सबसे बडा है। इसके दो मूल हैं, जिनमें-से एक बडा और दूसरा छोटा है। बडा मूल चैतन्य-साधक और छोटा गतिसाधक है। यह स्नायु मस्तिष्क के तलदेशसे उत्पन्न हुई है। प्रधानतः इसकी दो क्रिया है, प्रथम चैतन्यसाधन, जिस अंश द्वारा यह क्रिया साधित होती है, वह मुखमण्डलसम्मुख, कपाल, चक्षु, कर्ण, नासिका, मुखगह्वर, जिह्वा और दन्तमें विस्तृत है। द्वितीय गतिविधान यह अंश चबानेवाली पेशियोंमें व्याप्त है।

षष्ठ स्नायु—यह भी युग्मस्नायु है। गतिविधान इसका प्रधान कार्य है।

सप्तम स्नायु—यह युग्म स्नायु है। यह युग्मस्नायु दो स्नायुरज्जुमें विभक्त है। दोनोंकी ही गठन और क्रिया विभिन्न प्रकारकी है। इनमेंसे एक बाह्य और दूसरी आभ्यन्तरीण है। आभ्यन्तरीण स्नायु बाह्यसे छोटी है। इसका नाम मौखिक स्नायु है, बाह्य स्नायुको श्रवणस्नायु कहते हैं। कोई कोई इन दोनों स्नायुको पृथक् पृथक् बतलाते हैं। उक्त स्नायुके दो अंश छोटी स्नायुसे

संयुक्त है। इस स्नायु द्वारा मुखमण्डलस्थ पेशियोंकी सञ्चालनक्रिया साधित होती है। केवल चबानेके काममें मदद पहुंचानेवाली पेशियां इसके अन्तर्गत नहीं हैं। अतएव यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि आस्वादन और कुछ आघ्राण तथा श्रवण आदि प्रधान प्रधान कार्य इसके द्वारा सम्पादित होते हैं। इसके सिवा यह मुंहको राल निकालनेमें बड़ी मदद करती है। इस स्नायुका पक्षाघात होनेसे वधिर, श्रवणशक्तिकी कुछ हानि तथा दर्शन, आघ्राण और आस्वादनशक्तिका नाश होता है।

अष्टम स्नायु—यह भी युग्मस्नायु है। इसमें तीन पृथक् पृथक् स्नायु हैं। कोई कोई इसे पृथक् न कह कर एक कहते हैं। इस स्नायुके एकमें चैतन्य विधान तथा परिचालन और आस्वादन कार्य पूरा होता है। दूसरा श्वासमण्डल, हृत्पिण्ड, अन्नवहा नालीक ऊर्द्धांश और तत्संलग्न आभ्यन्तरीण यन्त्रोंमें फैल गई है। इसका कार्य एक-सा नहीं है। यह स्वरयन्त्र, पाकस्थली, अन्त्र-मण्डल आदि तथा फुसफुसका ताकत बढ़ाती है, हृत्पिण्डका कार्य संयत कर रखती है और राल निकलनेमें मदद पहुंचाती है।

कशेरुका प्रणालीके भीतरी स्नायु पदार्थके लम्बे नलाकार पिण्डको मेरुरज्जु कहते हैं। यह मज्जामय तीन झिल्लियों द्वारा आच्छादित है। ये तीनों झिल्ली बहुत कुछ मस्तिष्ककी तीनों झिल्ली सी हैं। मेरुमज्जासे ३१ युग्मनाल उत्पन्न हुए हैं। इसीसे उन सब स्नायुका मेरुमज्जाजात नाम हुआ है।

कशेरुका मज्जा दो प्रकारकी है, स्नायविक पदार्थसे संगठित है। ये दोनों स्नायु पदार्थ भी मस्तिष्कके स्नायु पदार्थकी तरह दो प्रकारके हैं, धूसर और शुभ्र।

ग्रीवादेशीय स्नायु ८ हैं। ये सब स्नायु जितनी नीचे आई हैं, उतनी ही उनके आयतनकी वृद्धि हुई है।

पृष्ठदेशीय स्नायु १२ हैं। इनमेंसे प्रथम स्नायु पृष्ठदेशीय प्रथम और द्वितीय कशेरुकाके मध्यभागसे तथा अन्तिम स्नायु द्वादशसंख्यक पृष्ठावलम्बी और प्रथमसंख्यक कटिदेशीय कशेरुकाके मध्यसे उत्पन्न हुई है।

कटिजात स्नायु संख्यामें दश है। प्रत्येक पार्श्वमें पांच पांच है। इनमेंसे कुछ नीचे बड़े आकारमें हो कर साहानुभूतिक स्नायुओंके साथ मिल गई हैं।

उक्त तीन प्रकारकी स्नायुको छोड़ कर पृष्ठवंशमूलमें पाच तथा शङ्खावर्त्तमें स्नायु है। ये दोनों प्रकारकी स्नायु यथाक्रम पृष्ठवंशमूलीय और शङ्खावर्त्तीय कहलाती हैं। ऊपर जिन सब स्नायुका उल्लेख किया गया, उन सब स्नायुओंको छोड़ छोटी और भी अनेक स्नायु हैं।

साहानुभूतिक स्नायु—साहानुभूतिक स्नायुविधान दो ग्रन्थिमय स्नायुरज्जु द्वारा संगठित है तथा बीच बीचमें एक एक स्नायु-रज्जु द्वारा परस्पर संयुक्त है। ये पृष्ठवंशमें प्रत्येक कशेरुकाके सम्मुख और पार्श्वदेशमें स्थित हैं। मेरुदण्ड या मेरुपृष्ठ जितना बड़ा है, साहानुभूतिक स्नायुविधानकी ग्रन्थिमय स्नायुरज्जु भी उतनी ही बड़ी है। ऊपरमें ये करोटीके तलदेशसे नीचे मज्जावर्त्त तक विस्तृत है। पृष्ठवंशके भिन्न भिन्न प्रदेशानुसार उक्त दोनों स्नायुरज्जुका नाम पड़ा है। जैसे—ग्रीवावलम्बी पृष्ठप्रदेशीय, कटिस्थानीय और पृष्ठवंशमूलीय। ग्रीवावलम्बी अंशके सिर्फ तीन ग्रन्थि हैं। अवशिष्ट तीन अंशमें जितनी कशेरुका है, उनकी ग्रन्थिसंख्या भी उतनी ही है।

इस स्नायुकी विविध शाखा और प्रशाखा है। प्रत्येक ग्रन्थिसे अन्तः और वाह्य शाखाएं निकली हैं। अन्तः शाखाएं रक्तवहा नाड़ी और आभ्यन्तरीण यन्त्रमें व्याप्त है। वे वक्षः, उदर और वस्तिगह्वरमें मस्तिष्क, कशेरुकामज्जाजात स्नायुके साथ मिली हैं। इन सब स्नायुमें दो प्रकारके सूत्र देखे जाते हैं। उनमेंसे एक मज्जागत स्नायुसे साहानुभूतिक स्नायुमें और दूसरा ग्रन्थिके साथ मज्जाजात स्नायुमें चला गया है। इन सब अन्तः और वहिः शाखाको छोड़ और भी कितनी शाखाप्रशाखा स्नायु देखी जाती है। उनमेंसे कोई कोई स्नायु मस्तिष्कजात स्नायुके साथ मिल गई है। कुछ स्नायु गलेकी बड़ी धमनीके साथ साथ खोपड़ीमें घुसी है और वहां बहुत-सी स्नायुके साथ मिल गई है।

क्रिया—साहानुभूतिक स्नायुका कार्य गति और शक्ति देना, हृत्पिण्डको मजबूत बनाना और शरीरकी खोई हुई शक्तिको फिरसे लाना।

स्नायुक (सं० पु०) स्नायुरोग, नहरुआ नामक रोग।

जिस रोगमें जङ्घादिमें दोष कुपित हो कर विसर्पकी तरह शोथ उत्पन्न होता है और भिन्न हो कर शोथ

में जखम कर देता है तथा दोष उष्माके साथ मिल कर क्षतस्थानके मांसको चूस कर सूतको तरह बना देता है, उस स्थानमें यदि मट्ठे और सत्तूका पिण्ड बना कर प्रयोग किया जाय, तो सूत्राकृति मांस जखमसे धीरे धीरे बाहर निकलता है, अभिघातादि द्वारा वह सूत टूट कर गिर पड़नेसे शोथ दूर हो जाता है। परन्तु रोगका मूल ध्वंस नहीं होनेसे वह दोष प्रकुपित हो कर फिरसे दूसरी जगह वह रोग उत्पादन करता है। किसीको स्नायु रोग होनेसे विसर्परोगको तरह चिकित्सा करनी होती है। विसर्प देखो।

स्नायुदुर्बलता (सं० स्त्री०) स्नायुकी कमजोरी।

स्नायुरोग (सं० पु०) नहरुआ या बाला नामक रोग।

स्नायुमर्मन् (सं० क्ली०) स्नायुका मर्म। आणि, विटप, कक्षधर, कूर्च, कूर्चशिर, वस्ति, क्षिप्र, अंस, विधुर और उत्क्षेप ये सब स्नायुमर्म है। (सुश्रुत)

स्नायुशूल (सं० पु०) शूलरोगविशेष। इसका लक्षण—छोटी छोटी शिराओंका नाम स्नायु है। उस स्नायु समूहमें शूलवत् तीव्र वेदना होनेसे उसको स्नायु कहते हैं। यह वायुजनित एक प्रकारकी शूलवेदना है। शरीरके सभी स्थानोंमें यह वेदना हो सकती है। स्थानभेदसे स्नायुशूलके तीन प्रकारके नाम रखे गये हैं। समस्त मुखमण्डल पर जो स्नायुशूल होता है, उसे ऊद्धर्व्वभेद, मुखमण्डलके अर्द्धांशमें होनेसे उसे अर्द्धभेद तथा स्फिक् अर्थात् पाछे होनेसे उसे अर्द्धभेद कहते हैं। बलक्षय, रक्तक्षय, वृक्कदोष, मस्तिष्कदोष, अजीर्ण तथा विविध दन्तरोगसे ऊद्धर्व्वभेद नामक स्नायुशूल उत्पन्न होता है। इसमें ललाटमें, निम्न अक्षिपुटमें, गण्डस्थलमें, नासिकामें, ओष्ठमें, जिह्वापार्श्वमें, अधरमें और दन्तमें शूल तथा दाहवत् वेदना होती है। यह वेदना पहले मुखके एक पार्श्वमें उपस्थित हो कर पीछे सम्पूर्ण मुखमें फैल जाती है। शूलरोग देखो।

स्नाय्वर्मन् (सं० क्ली०) शुक्लनेत्ररोगविशेष, आंखका एक प्रकारका रोग जिसमें उसकी कौड़ी या सफेद भाग पर एक छोटी गांठ-सी निकल आती है।

स्नाव (सं० पु०) स्नावन, स्नायु।

स्नावन् (सं० पु०) स्ना (स्नामदिपद्यतीति। उण् ४।११२) इति वनिप्। १ स्नायु। (शुक्लयजु० ३९।१०) (त्रि०) २ रसिक।

स्निग्ध (सं० पु०) स्निह अकर्मकत्वात् कर्त्तरि क्त। १ रक्तैरण्ड, लाल रेंड। २ धूप सरल या सरल नामक वृक्ष। ३ शिक्थक, मोम। ४ गन्धाविरोजा। ५ दूध परकी मलाई। (त्रि०) ६ स्नेहयुक्त, चिकना।

स्निग्धकन्दा (सं० स्त्री०) कन्दली।

स्निग्धकरञ्जक (सं० पु०) गुच्छकरञ्ज।

स्निग्धच्छद (सं० पु०) वटवृक्ष, बड़का पेड़।

स्निग्धच्छदा (सं० स्त्री०) बदरीवृक्ष, बेरका पेड़।

स्निग्धजीरक (सं० पु०) पशबगोल, ईसबगोल।

स्निग्धतण्डुल (सं० पु०) षष्टिशालि, साठी धान।

स्निग्धता (सं० स्त्री०) १ प्रिय होनेका भाव, प्रियता। २ स्निग्ध या चिकना होनेका भाव, चिकनापन।

स्निग्धदल (सं० पु०) गुच्छकरञ्ज।

स्निग्धदारु (सं० पु०) १ देवदारुका पेड़। २ धूप सरल। ३ अश्वकर्ण या शाल नामक वृक्ष।

स्निग्धनिर्मल (सं० क्ली०) उत्तम कांस्य, बढ़िया कांसा।

स्निग्धपत्र (सं० पु०) १ मर्ज्जर या माजुर नामकी घास। २ घृतकरञ्ज, घोरंज। ३ गुच्छकरञ्ज। ४ आवर्त्तकी, भगवत्वल्ली।

स्निग्धपत्रक (सं० पु०) स्निग्धपत्र देखो।

स्निग्धपत्रा (सं० स्त्री०) १ बदरी, बेर। २ पालक्य, पालका साग। ३ काश्मरी, गंभारी। ४ लोणिका, लोनीका साग।

स्निग्धपत्राणी (सं० स्त्री०) स्निग्धपत्रा देखो।

स्निग्धपर्णिका (सं० स्त्री०) १ मूर्वा, मरोड़फली। २ पृश्निपर्णी, पिठवन।

स्निग्धपिण्डीतक (सं० पु०) मदनवृक्षविशेष, मैनफलका पेड़। गुण—कटु, तिक्त, छर्दन, कफ, हृद्रोग, पक्व और आमाशयरोगनाशक। (राजनि०)

स्निग्धफल (सं० पु०) गुच्छकरञ्ज।

स्निग्धफला (सं० स्त्री०) १ नाकुली, नकुल कन्द। २ वालुककर्कटिका, फूट

स्निग्धबीज (सं० स्त्री०) यशवगोल, ईसपगोल।

स्निग्धमज्जक (सं० पु०) बादाम।

स्निग्धराजि (सं० पु०) एक प्रकारका साँप। इसकी उत्पत्ति सुश्रुतके अनुसार काले साप और राजमती जातिकी सापिनसे होती है।

स्निग्धा (सं० स्त्री०) १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ मज्जा, अस्थिसार। ३ विकङ्कतवृक्ष, वइंची। ४ स्नेह-विशिष्टा, जिसमें स्नेह हो।

स्नु (सं० पु०) १ सानु, पर्वतका समभूभाग। (स्त्री०) २ स्नायु।

स्नुक् (सं० स्त्री०) स्नुह-क्विप। स्नूही, थूहर।

स्नुकच्छद (सं० पु०) क्षीरस्नुकी, क्षारी या क्षीरसागर नामक वृक्ष।

स्नुकच्छदोपम (सं० पु०) वाराहीकन्द, गेंठी।

स्नुग्दल (सं० पु०) स्नूही, थूहड।

स्नुत (सं० त्रि०) स्नु-क्त। १ अग्नि जलादि। २ सिक्त।

स्नुषा (सं० स्त्री०) स्नु (स्नुव्रश्चिकृत्यषिभ्यः कित्। उण् ३।६६) इति स सच कित्। १ पुत्रवधू, लडकेकी स्त्री, पतोहू। २ स्नूही, थूहड।

स्नुह (सं० स्त्री०) स्नुह-क्विप्। स्नूही, थूहड।

स्नुहा (सं० स्त्री०) स्नूही, थूहड।

स्नुहाद्यतैल (सं० क्ली०) पालित्यरोगमें तैलौषधविशेष।

स्नुहि (सं० स्त्री०) स्नुह इन्। स्नूही, थूहड़।

स्नुही (सं० स्त्री०) वृक्षविशेष, थूहडका पौधा। तैलङ्ग—चेमुरचेट्ट, बम्बई—निवडुङ्ग। गुण—बहुदोषमें प्रयोक्तव्य तथा अग्नितुल्य, वात, विष, आध्मान और गुल्मोदररोग-नाशक, उष्ण, पित्तदाहनाशक, कुष्ठ, वात और प्रमेह-नाशक। (राजनि०)

स्नुही पौधेकी जडमें श्रावण मासकी कृष्णा पञ्चमीके दिन अष्टनागके साथ मनसादेवीकी पूजा करनी होती है। इस दिन साँपका भय दूर करनेके लिये इस पौधेमें मनसाकी पूजा करे। मनसा देखो।

चैत्र मासकी संक्रान्तिमें विस्फोटक आदिका भय अर्थात् वसन्त आदिका भय निवारण करनेके लिये स्नुही-के पौधेमें घण्टाकर्णकी पूजा कर पीछे शीतला देवीकी पूजा और उनका स्तवपाठ करे। इस प्रकार पूजा करनेसे पूजा करनेवालेको और वसन्त आदिका भय नहीं रहता।

स्नुहीक्षीर (सं० क्ली०) स्नुहीवृक्षनिर्यास, थूहडका दूध। यह दूध आखमें लगानेसे आखकी बीमारी तथा दृष्टिशक्ति-का नाश होता है।

स्नुहीबीज (सं० क्ली०) थूहडका बीज।

स्नुह्य (सं० क्ली०) उत्पल, कमल।

स्नेय (सं० क्ली०) १ स्नान करनेके योग्य, नहाने लायक। २ जो नहानेको हो।

स्नेह (सं० पु०) स्निह घञ्। १ प्रेम, प्रणय, प्यार, मुहब्बत। देखने, छूने, सुनने और कहनेमें जहां मन बैठ जाता है, उसे भी स्नेह कहते हैं। शास्त्रमें लिखा है, कि स्नेह ही दुःखका कारण है। जहा स्नेह है, वही भय है, अतएव जो स्नेह छोड सकते हैं, वही सुखी हैं। २ चिकना पदार्थ, चिकनाहटवाली चीज। घी, तेल, चर्बी, मज्जा ये ही चार प्रकारके पदार्थ स्नेह कहलाते हैं। ये फिर स्थावर और जङ्गम भेदसे द्वियोनि, स्थावरयोनि और जङ्गमयोनि हैं। तेल स्थावरयोनि और घी जङ्गम-योनि है। ३ नैयायिकोंके मतसे गुणविशेष। यह गुण दो प्रकारका है,—नित्य और अनित्य। वैद्यकशास्त्रमें स्नेह पान और स्नेहपाकका विशेष विधान लिखा है। ४ कोमलता। ५ दूध परकी साढी, मलाई। ६ सर्षप, सरसों। ७ सिरके अंदरका गूदा, भेजा। ८ एक प्रकारका राग जो हनुमत्के मतसे हिंडोल रागका पुत्र है।

स्नेहक (सं० त्रि०) स्नेहयुक्त।

स्नेहकर (सं० पु०) अश्वकर्ण या शाल नामक वृक्ष।

स्नेहकर्तृ (सं० त्रि०) स्नेहकारी।

स्नेहकुम्भ (सं० पु०) तैलकुम्भ, स्नेह पदार्थ पूर्ण कुम्भ।

स्नेहगर्भ (सं० पु०) तिल।

स्नेहघट (सं० पु०) स्नेहकुम्भ।

स्नेहचतुष्टय (सं० क्ली०) चार प्रकारका स्नेह पदार्थ, घृत, तैल, वसा और मज्जा। स्नेह देखो।

स्नेहचूर्ण (सं० क्ली०) आखकी बीमारीकी एक औषध।

स्नेहन् (सं० पु०) १ रोगविशेष। २ बन्धु। ३ चन्द्र।

स्नेहन (सं० क्ली०) स्निह-ल्युट्। १ तैलमर्दन, शरीरमें तेल लगाना। २ चिकनाहट उत्पन्न करना, चिकनाई लाना। ३ श्लेष्मा, कफ। ४ नवनीत, मक्खन।

स्नेहनीय (सं० त्रि०) स्नेहके योग्य ।

स्नेहपात्र (सं० पु०) प्रेमपात्र, वह जिसके साथ प्रेम किया जाय ।

स्नेहपान (सं० क्ली०) वैद्यकके अनुसार एक प्रकारकी क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगोंमें तेल, घी, चरबी आदि पीते हे । इससे अग्नि दीप्त होती है, कोठा साफ होता है और शरीर कोमल तथा हलका होता है । हमारे यहां स्नेह चार प्रकारके माने गये हैं—तेल, घी, वसा और मज्जा । खाली तेल पीनेको साधारण पान कहते हैं । यदि तेल और घी मिला कर पीया जाय, तो उसे यमक, इन दोनोंके साथ यदि वसा भी मिला दी जाय, तो उसे त्रिवृत और यदि चारों साथ मिला कर पीये जायं, तो उसे महास्नेह कहते हैं ।

स्नेहपिण्डीतक (सं० पु०) मदनफल, मैनफल ।

स्नेहपीत (सं० त्रि०) स्नेहपानविशिष्ट, जिसे स्नेह पिलाया गया हो ।

स्नेहपूर (सं० पु०) तिल ।

स्नेहप्रिय (सं० पु०) १ प्रदीप । (हेम) (त्रि०) २ तैलादि प्रिय ।

स्नेहफला (सं० पु०) तिल ।

स्नेहबीज (सं० पु०) १ पियाल, चिरौंजी । (क्ली०) २ स्नेह कारण ।

स्नेहभू (सं० पु०) १ श्लेष्मा, कफ । (स्त्री०) २ स्निग्धभूमि । (त्रि०) ३ स्निग्धभूमिविशिष्ट ।

स्नेहमय (सं० त्रि०) स्नेह स्वरूप ।

स्नेहमुख्य (सं० पु०) तेल, रोगन ।

स्नेहरङ्ग (सं० पु०) स्नेहेन रज्यते इति रञ्ज-घञ । तिल ।

स्नेहरेकभू (सं० पु०) चन्द्रमा ।

स्नेहल (सं० त्रि०) स्नेहविशिष्ट, स्नेहयुक्त ।

स्नेहलवण (सं० क्ली०) वैद्यकोक्त लवणौषधभेद ।

स्नेहवती (सं० स्त्री०) मेदा नामकी अष्टवर्गीय ओषधि ।

स्नेहवस्ति (सं० स्त्री०) वस्तिक्रियाविशेष, तेलकी पिचकारी । तैलादि स्नेहपदार्थ द्वारा जो पिचकारी दी जाती है, उसे स्नेहवस्ति कहते हैं । वस्ति दो प्रकारकी है, स्नेहवस्ति और निरूहवस्ति । निरूहवस्तिका विषय निरूहवस्ति शब्दमें देखो । एकमात्र स्नेह पदार्थ द्वारा जो वस्तिप्रयोग किया जाता है, उसको अनुवासनवस्ति भी कहते हैं । कुष्ठरोगी, मेहरोगी, स्थूलकाय और उदर रोगीके लिये स्नेहवस्ति अनुपकारी है । इसके अजीर्ण, उन्माद, तृष्णा, शोथ, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास, कास और क्षय इन सब रोगाक्रान्त व्यक्तिके लिये भी यह वस्ति उपयुक्त नहीं कही गई है ।

वस्तिप्रयोग करनेमें पहले वस्तिक्रियोपयोगी नल बनाना होता है । यह नल सुवर्णादि धातु, वृक्ष, बांस, नल, दन्त, शृङ्गाग्र और मणि आदि द्वारा बनावे । यह वस्तिप्रयोगका नल एक वर्षसे ६ वर्ष तकके रोगीके लिये ६ अंगुल, ६ वर्षसे ऊपर बारह वर्ष तक रोगीके लिये ८ अंगुल और उससे भी ऊपरवाले व्यक्तियोंके लिये १२ अंगुलका बनावे । उस नलका छिद्र यथाक्रम मूंग, उड़द और बेरकी गुठलीके समान होना चाहिये । उसका आकार श्लक्ष्ण और गोपुच्छके जैसा होगा । नलका मूल भाग गोपुच्छ जैसा बना कर मुंहकी ओर क्रमशः सूक्ष्म करना होगा ।

स्नेहवस्ति प्रयोगकालमें रोगीके शरीरमें तेल लगा कर कुछ गरम जलसे स्नान करावे । पीछे भोजनके बाद सौ कदम टहलावे । अनन्तर वायु, मूत्र और मलत्याग होने पर वस्ति प्रयोग करे । जिस समय स्नेहवस्तिका प्रयोग करना होगा, उस समय रोगीको बाईं करवट सुला कर बायां अंग फैलावे और दाहिनी जांघ सिकुड़ा कर गुदामार्गमें तेल आदि लगा दे । बादमें चिकित्सक वस्तिका मुंह सूतसे बांध कर बायें हाथसे उसका मुंह पकड़े रहे और दाहिने हाथसे गुदामार्गमें योजना कर मध्य वेगसे पीड़न करे । तीस गिननेमें जितना समय लगता है, उतने ही समय तक पीड़न करना कर्त्तव्य है, उससे ज्यादा कदापि नहीं । इस वस्तिप्रयोगके समय जंभाई, खांसी आदि न करे ।

इस प्रकार स्नेहके भीतर प्रविष्ट करने पर एक सौ गिननेमें जितना समय लगता है, उतने ही समय तक चित हो कर रहे । वस्तिवीर्य जिसमें सारे शरीरमें शीघ्र ही फैल जाय, उसके लिये चिकित्सक रोगीको दोनों जांघ और दोनों बाहुको तीन बार आकुञ्चन और प्रसारण करे,

सूचित होता है। मलमासतत्त्वमें रघुनन्दनने लिखा है, कि अशुभ स्पन्दन और चक्षुःस्पन्दन होने तथा दुःस्वप्न देखनेमें पीपलवृक्षके समीप जा कर निम्नोक्त मन्त्रपाठ करना होता है।

"चक्षुःस्पन्दं भुजस्पन्दं तथा दुःस्वप्नदर्शनं।
शत्रूणाञ्च समुत्थानमश्वत्थ शमयाशु मे।
अश्वत्थरूपी भगवान् प्रीयतां मे जनार्दन॥"

(मलमासतत्त्व)

मत्स्यपुराणमें लिखा है, कि साधारणतः अङ्गका दक्षिण भाग फड़कनेसे शुभ और वाम भाग फड़कनेसे अशुभफल होता है। इस पर कोई कोई निमित्तज्ञ कहते हैं, कि पुरुषका दक्षिण भाग और स्त्रीका वाम भाग फड़कना शुभ तथा पुरुषका वाम भाग और स्त्रीका दक्षिण भाग फड़कना अशुभ है।

मस्तक और ललाट फड़कनेसे पृथिवीलाभ, भ्रू और नासिका फड़कनेसे प्रियसङ्गम और स्थानवृद्धि, अक्षिदेश फड़कनेसे भृत्यलाभ, चक्षुका ऊपरी भाग फड़कनेसे धनागम, उपकण्ठ अर्थात् कण्ठके समीप फड़कनेसे लाभ, दृगवन्धन अर्थात् आंखकी पलक फड़कनेसे जय, अपाङ्गदेशसे स्त्रीलाभ, श्रवणान्तदेशसे प्रियश्रवण, नासिकादेशसे प्रीति, सौख्य, अधर और ओष्ठदेशसे प्रियलाभ, कण्ठसे भोगलाभ, अंसद्वयसे भोगवृद्धि, वाहुद्वयसे सुहृत्स्नेह, हस्तद्वयसे धनागम, पृष्ठसे पराजय, वक्षःस्थलसे जय, कुक्षिद्वयसे प्रीति, स्तनसे स्त्रीजनन, नाभिदेशसे स्थाननाश अन्त्रदेशसे धनागम, जानुसन्धिसे संधिलाभ, पदद्वयसे उत्तम स्थानलाभ, पादतलसे लाभके साथ अध्वगमन। पूर्वोक्त सभी अङ्गस्पन्दनसे पूर्वोक्त फललाभ होता है। ये सब फल पुरुष और स्त्रीके मध्य विपर्य्ययसे जानने होंगे अर्थात् पुरुषके दक्षिण भागसे शुभ, स्त्रीके दक्षिण भागसे अशुभ होता है। (मत्स्यपु०)

स्पन्दन (सं० क्ली०) स्पन्द ल्युट्। १ प्रस्फुरण, फड़कना। २ किसी चीजका धीरे धीरे हिलना, कांपना।

स्पन्दिन् (सं० त्रि०) स्पन्द-इनि। स्पन्दनयुक्त, जिसमें स्पन्दन हो, हिलने, कांपने या फड़कनेवाला।

स्पन्दिनी (सं० स्त्री०) १ रजस्वला, रजोधर्मवाली स्त्री। २ वह गौ जो वरावर दूध देता रहे, कामधेनु।

स्पर (सं० क्ली०) साममेद।

स्परणी (सं० स्त्री०) वैदिक कालकी एक प्रकारकी लता।

स्परित् (सं० त्रि०) दुःखकारण, शत्रु, दुर्जन और रोगादि।

स्परिश (सं० पु०) स्पर्श।

स्पर्द्धा (सं० स्त्री०) १ संघर्ष, रगड़। २ किसीके मुकाविलेमें आगे बढ़नेकी इच्छा, होड़। ३ साहस, हौसला। ४ ईर्ष्या, द्वेष। ५ साम्य, वरावरी।

स्पर्द्धिन् (सं० त्रि०) १ स्पर्द्धायुक्त, जिसमें स्पर्द्धा हो, स्पर्द्धा करनेवाला। (पु०) २ ज्यामितिमें किसी कोणमेंको उतनी कमी जितनीकी वृद्धिसे वह कोण १८० अंशका अथवा अर्द्ध-वृत्त होता है।

स्पर्श (सं० पु०) १ पीड़ा, कष्ट। २ दान। ३ स्पर्शन, छूना। ४ स्पर्शक। ५ सम्पराय, आपत्ति। ६ प्रणिधि। ७ उपतप्ता। ८ वर्गाक्षर। ९ वायु। १० एक प्रकारका रतिवन्ध या आसन। ११ व्याकरणमें उच्चारणके आभ्यन्तर प्रयत्नके चार भेदोंमेंसे स्पष्ट नामक भेदके अनुसार 'क'से ले कर 'म' तकके २५ व्यञ्जन। इनके उच्चारणमें वागिन्द्रियका द्वार वन्द रहता है। १२ ग्रहण या उपरागमें सूर्य अथवा चन्द्रमा पर छाया पड़नेका आरम्भ।

१३ नैयायिकोंके मतसे त्वगिन्द्रियग्राह्य गुणविशेष। यह गुण २४ प्रकारका है, इनमेंसे स्पर्श तीन प्रकारका है, उष्ण, शीत और अनुष्णाशीत, उष्णस्पर्श, शीतस्पर्श और अनुष्णाशीतस्पर्श। तेजः पदार्थका स्वाभाविक स्पर्श उष्ण है, इस कारण तेजका जो स्पर्श है, वह उष्ण स्पर्श, जलका स्वाभाविक स्पर्श शीतल है। इससे जलका स्पर्श शीतस्पर्श है। वायुका स्वाभाविक स्पर्श अनुष्णाशीत है। चन्द्रमा और सूर्य तेजमें तेजस्वी हैं। चन्द्रमण्डल जलवहुल है अतएव जलके शीतस्पर्श द्वारा तेजः स्पर्शकी उष्णता मालूम होती है, इसीसे चन्द्ररश्मिकी उष्णताका अनुभव नहीं होता। अग्नि और सूर्यकिरण सम्पर्कमें जलस्पर्शकी उष्णता है, इसी प्रकार वायुस्पर्शकी उष्णता और हिमानी सम्पर्कमें शीतलताका अनुभव होने पर भी वायुका स्वाभाविक स्पर्श अनुष्णाशीत है। पृथिवीका स्पर्श कठिन और सुकुमारके भेदसे दो प्रकारका है। इनमेंसे कठिन या दृढ़ वस्तुके स्पर्शका नाम कठिन स्पर्श,

कोमल वस्तुके स्पर्शका नाम सुकुमारस्पर्श है। इसके सिवा पृथिवीके पाकजस्पर्श भी है। अग्निस्पर्श होनेके पहले घट शरावादिका जैसा स्पर्श रहता है, अग्नि स्पर्श होनेके बाद वैसा स्पर्श होता है, इसका नाम पाकजस्पर्श है। यह नित्य और अनित्यभेदसे दो प्रकारका है। जलीय परमाणुस्पर्श नित्य है। इसके सिवा अन्य स्थलमें स्पर्श अनित्य है।

पुराणके मतसे स्पर्श ११ प्रकारका है—१ उष्ण, २ शीत, ३ सुख, ४ दुःख, ५ स्निग्ध, ६ विशद, ७ खर, ८ मृदु ९ सूक्ष्म, १० लघु, ११ गुरु। यदि विचार कर देखा जाय, तो सभी प्रकारके स्पर्श नैयायिकोक्त तीन प्रकारके स्पर्शके अन्तर्भुक्त होंगे।

स्पर्शकोण (सं० पु०) गणितमें वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखाके कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखाके बीचमें बनता है।

स्पर्शजन्य (सं० पु०) जो स्पर्शके कारण उत्पन्न हो, संक्रामक छुतहा।

स्पर्शतन्मात्र (सं० पु०) स्पर्श भूतका आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप।

स्पर्शदिशा (सं० स्त्री०) वह दिशा जिधरसे सूर्य या चन्द्रमाको ग्रहण लगा हो, चन्द्रमा या सूर्य पर ग्रहणकी छाया आनेकी दिशा।

स्पर्शन (सं० क्ली०) स्पृश ल्युट्। १ दान देना। २ स्पर्श, छूनेका क्रिया। ३ सम्बन्ध, लगाव, ताल्लुक। (पु०) स्पृश-ल्यु ४ वायु, हवा। (राजनि०)

स्पर्शना (सं० स्त्री०) छूनेकी शक्ति या भाव।

स्पर्शनेन्द्रिय (सं० क्ली०) वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श किया जाता है, छूनेकी इन्द्रिय, त्वचा।

स्पर्शमणि (सं० पु०) मणिविशेष। पारस पत्थर जिसके स्पर्शसे लोहेका सोना होना माना जाता है।

स्पर्शमणिप्रभव (सं० क्ली०) स्वर्ण सोना।

स्पर्शयत (सं० पु०) यज्ञीय द्रव्य स्पर्शपूर्वक निवेदन।

स्पर्शरसिक (सं० त्रि०) कामुक, लंपट।

स्पर्शरेखा (सं० स्त्री०) गणितमें वह सीधी रेखा जो किसी वृत्तकी परिधिके किसी एक बिन्दुको स्पर्श करती हुई खींची जाय।

स्पर्शलज्जा (सं० स्त्री०) लाजवन्ती या लजालु नामकी लता।

स्पर्शवज्रा (सं० स्त्री०) बौद्धोंकी एक देवी।

स्पर्शवत् (सं० त्रि०) स्पर्शविशिष्ट, स्पर्शयुक्त।

स्पर्शशुद्धा (सं० स्त्री०) शतमूली, शतावर।

स्पर्शसङ्कोचपत्रिका (सं० स्त्री०) लाजवन्ती या लजालु नामकी लता।

स्पर्शसङ्कोचिन् (सं० पु०) रोमालु, पिण्डालु।

स्पर्शसञ्चारिन् (सं० पु०) शूकरोगका एक भेद।

स्पर्शस्यन्द (सं० पु०) भेक, मेढक।

स्पर्शहानि (सं० स्त्री०) शूकरोगमें रुधिरके दूषित होनेके कारण लिङ्गके चमड़ेमें स्पर्शज्ञान न रह जाना।

स्पर्शा (सं० स्त्री०) स्पृश-अच् टाप्। कुलटा, दुश्चरित्रा, छिनाल।

स्पर्शाक्रामक (सं० त्रि०) जो स्पर्श या संसर्गके कारण उत्पन्न हो, संक्रामक, छुतहा।

स्पर्शाज्ञ (सं० त्रि०) जिसे स्पर्श ज्ञान हो।

स्पर्शानन्दा (सं० स्त्री०) अप्सरस्।

स्पर्शासहत्व (सं० क्ली०) स्पर्श सहन न कर सकना।

स्पर्शास्पर्श (सं० पु०) छूने या न छूनेका भाव या विचार, इस बात विचार कि अमुक पदार्थ छूना चाहिए और अमुक पदार्थ न छूना चाहिए, छूतछात।

स्पर्शिक (सं० त्रि०) १ स्पर्श करनेवाला। (पु०) २ वायु, हवा।

स्पर्शिन् (सं० त्रि०) स्पर्श-इनि। स्पर्शयुक्त, छूनेवाला।

स्पर्शेन्द्रिय (सं० क्ली०) वह इन्द्रिय जिससे स्पर्शका ज्ञान होता है, त्वचा।

स्पर्शोपल (सं० पु०) स्पर्शमणि, पारस पत्थर।

स्पष्ट (सं० त्रि०) जिसके देखने या समझने आदिमें कुछ भी कठिनता न हो, साफ दिखाई देने या समझमें आनेवाला। स्फुट देखो।

स्पष्टकथन (सं० पु०) व्याकरणमें कथनके दो प्रकारोंमेंसे एक। इसमें किसी दूसरेकी कही हुई बात ठीक उसी रूपमें कही जाती है जिस रूपमें वह उसके मुंहसे निकली हुई होती है।

स्पष्टतया (सं० क्रि० वि०) स्पष्ट रूपसे, साफ साफ।

स्पष्टता (सं० स्त्री०) स्पष्ट होनेका भाव, सफाई।

स्पष्टवक्ता (सं० पु०) वह जो साफ साफ बातें कहता हो, वह जो कहनेमें किसीका मुलाहजा या रिआयत न करता हो।

स्पष्टवादिन् (सं० पु०) वह जो साफ साफ बातें कहता हो, स्पष्टवक्ता।

स्पष्टस्थिति (सं० स्त्री०) ज्योतिषमें राशियोंके अंश, कला, विकला आदिमें (बालकके जन्मकी) दिखलाई हुई ग्रहोंकी ठीक ठीक स्थिति।

स्पात (हिं० पु०) इस्पात देखो।

स्पार्ह (सं० त्रि०) स्पृहणीय, स्पृहाके योग्य।

स्पार्हराधस् (सं० त्रि०) स्पृहणीय धन।

स्पार्हवीर (सं० त्रि०) स्पृहणीय पुत्रभृत्यादियुक्त।

स्पिरिट (अं० स्त्री०) १ शरीरमें रहनेवाली आत्मा, रूह। २ वह कल्पित सूक्ष्म शरीर जिसका मृत्युके समय शरीरसे निकलना और आकाशमें विचरण करना माना जाता है, सूक्ष्म शरीर। ३ जीवनी शक्ति। ४ किसी पदार्थका सत्त या मूल तत्त्व। ५ एक प्रकारका बहुत तेज मादक द्रव पदार्थ जिसका व्यवहार अंगरेजी शराबों, दवाओं और सुगन्धियों आदिमें मिलाने अथवा लैंपों आदिके जलानेमें होता है। इसे फूल शराब भी कहते हैं।

स्पीच (अं० स्त्री०) १ वह जो कुछ मुंहसे बोला जाय, कथन। २ वाक्‌शक्ति, बोलनेकी शक्ति। ३ किसी विषयकी जबानी की हुई विस्तृत व्याख्या, व्याख्यान, लेकचर।

स्पीन किशमिशी—एक प्रकारका बढ़िया अंगूर जो कोटा पिशीन प्रान्तमें होता है।

स्फटिक (सं० पु०) १ सूर्यकान्तमणि। २ एक प्रकारका बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो कांचके समान पारदर्शी होता है, बिल्लौर। पर्याय—स्फटिक, स्फाटक, भास्वर, स्फाटिकोपल, शालिपिष्ट, धौतशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ, स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुषरत्न, शिवप्रिय। गुण—समवीर्य, शोथ, पित्त और दाहत्रिदोषनाशक। (राजनि०)

गरुड़पुराणमें लिखा है, कि कावेर, विन्ध्य, यवन, चीन और नेपाल देशमें दानवोंके यत्नसे लाङ्गलीमेद फैलाया गया। उससे आकाशके समान निर्मल तैलाख्य जो वस्तु उत्पन्न हुई थी, उसीका नाम स्फटिक है। यह मृणाल या शङ्खके समान सफेद या कुछ दूसरे रंगका होता है। रत्नोंमेंसे इसके समान पापनाशक दूसरा नहीं है। शिल्पी जब इसे संस्कृत या काटते छांटते हैं, तभी इसका मोल होता है।

अकसर जो सब स्फटिक देखे जाते हैं, वे सब सफेद हैं। स्फटिक प्रधानतः दो प्रकारका होता है,—साधारण स्फटिक और भीष्मरत्न। साधारण स्फटिक भी फिर अनेक भागोंमें विभक्त है। इनका आपेक्षिक गुरुत्व २०५ से २०८ तक है। साधारण स्फटिक सैकड़े पीछे ४८·०४ भाग विशुद्ध बालुका तथा ५१·६६ भाग अम्लजन गैस मिला रहता है। हाइड्रोफ्लुओरिक अम्लके सिवा दूसरा कोई अम्ल इसके ऊपर काम नहीं कर सकता। साधारण अग्निप्रयोगसे अथवा नलकी सहायतासे अग्नि संयोग करने पर भी यह नहीं गलता। लेकिन आक्सिजन और हाइड्रोजन मिश्रित गैसकी दीपशिखाके सामने रखनेसे यह जल्द ही गल जाता है। तब इसे ढाल कर सूक्ष्म सूत्राकारमें परिणत किया जा सकता है। इस प्रकार जलाया हुआ स्फटिक और भी अधिक देर उत्तप्त करनेसे यह क्रमशः वाष्पाकारमें परिणत हो वायुके साथ मिल जाता है। दो टुकड़े स्फटिकको परस्पर रगड़नेसे वह बहुत गरम हो जाता है तथा उसमेंसे ज्योतिः निकलती है। साधारण स्फटिक प्रायः ही स्वच्छ होता है, किन्तु इनमें आधा स्वच्छ तथा आविल वर्णका रत्न भी देखा जाता है।

पहले हिमालय पर्वत पर, सिंहलदेशमें तथा विन्ध्यपर्वतके अरण्यप्रदेशमें नाना प्रकारका स्फटिक पाया जाता था। युक्तिकल्पतरुमें लिखा है—हिमालय, सिंहल तथा विन्ध्याटवी तट पर चमकीला रंग-बिरंगा स्फटिक उत्पन्न होता है। हिमालयप्रदेशमें जो चन्द्रमाके समान स्फटिक पैदा होता है, वह दो प्रकारका है—सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त। सूर्यके अंशुस्पर्शसे जिस स्फटिकसे अग्नि निकलती है, उसे सूर्यकान्त स्फटिक और चन्द्रकिरण संस्पर्शसे जिस स्फटिकसे अमृत झड़ता है, उसे चन्द्रकान्त

स्फटिक कहते हैं। यह स्फटिक कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभ है। विन्ध्याटवी तट पर स्फटिक मिलता है, वह मन्द कान्ति-विशिष्ट है। इसकी छाया अशोकपल्लव और अनारके बीजके समान है। सिंहलदेशमें गन्धनीलकी खानमें काला स्फटिक उत्पन्न होता है तथा पद्मराग मणिकी खानमें तीन प्रकारका स्फटिक पैदा होता है। इसमेंसे जो स्फटिक अत्यन्त निर्मल होता है, वह बहुत स्वच्छ तथा उससे जलस्राव होता है। जो सब स्फटिक लाल होता है, उसका नाम राजावर्त्त तथा जो आनील होता है, उसे राजमय और जो ब्रह्मसूत्रस्वरूप होता है, उसे ब्रह्मसय कहते हैं।

पुराकालमें प्राचीन प्रत्येक जातिके मध्य ही भोगम-रत्नका बहुत प्रचलन था। मिस्रवासी इस मणिसे अनेक प्रकारके द्रव्यादि तैयार करते थे। ऐतिहासिक थिओफ्रास्टसने लिखा है, कि मोल मुहर तैयार करनेमें इसका अधिक व्यवहार होता था। फिर प्लिनिका कहना है, कि रहनेका घर सजानेमें यह एक प्रधान उपकरण है।

कहते हैं, कि रोमसम्राट् निरोके अति सुन्दर दो स्फटिकके पानपात्र थे। जब उन्होंने सुना, कि वे राज्यच्युत हुए हैं, तब वे क्रोध और क्षोभसे अधीर हो उठे और उक्त दोनों पानपात्रोंको जमीन पर जोरसे पटक कर फोड़ दिया। रोमकी सम्राज्ञी लिभियाके एक करीब २५ सेर वजनका स्फटिक था। रोमी चिकित्सकगण स्फटिकमें गोल लेन्सके समान व्यवहार कर सूर्यरश्मि द्वारा जख्म आदिको जला देते थे। यह काचसे कठिन होता तथा अनेकांशमें उत्कृष्टतर समझ कर पहले यह चश्मेमें व्यवहृत होता था।

स्वीजरलैण्ड और जर्मन देशमें नाना वर्णमें रंगा हुआ स्फटिक देखा जाता है। स्फटिक रंगानेमें पहले इसे खूब उत्तप्त किया जाता है। उस उत्तप्त स्फटिकको नाना वर्णके रासायनिक तरल पदार्थके मध्य निमज्जित करनेसे ही इसका भिन्न भिन्न स्थान फट जाता है तथा उक्त रासायनिक सभी पदार्थ उस फटे हुएमें घुसते हैं। पीछे वही उत्तप्त स्फटिक खूब ठण्डा होने पर अति मनोरञ्जित स्फटिक समझा जाता है।

ऐतिहासिक मध्ययुगमें पाश्चात्य देशके पण्डित लोग भी स्फटिकको सब प्रकारका विषनाशक समझते थे। डाक्टर डि० साहबके प्रसिद्ध "प्रदर्शनप्रस्तर"में असाधारण ऐसी शक्ति थी। यदि कोई व्यक्ति अपनी भविष्यत् घटनावली जाननेके लिये अथवा किसी दूरस्थित व्यक्तिका दर्शनाभिलाषी हो कर इसके पास पहुंचता था, तो इसमें भविष्यत् घटनावली अथवा ईप्सित व्यक्तिकी प्रतिमूर्त्ति अंकित हो जाती थी। यह "प्रदर्शनप्रस्तर' आज भी वृटिश म्युजियम (जादूघर) में विद्यमान है, इसका व्यास प्रायः ३ इञ्च है।

पुराकालमें पाश्चात्य चिकित्सकगण औषधके लिये स्फटिक व्यवहार करते थे। आमाशय और मूत्राशयका रोग दूर करनेमें इसका अधिक व्यवहार होता है।

अभी जितने स्फटिक द्रव्य मौजूद हैं, उनमेंसे एक वृहत् पानपात्र विशेष उल्लेखयोग्य है। इसका व्यास ५॥ इञ्च तथा ऊंचाई ६ इञ्च है। यह पानपात्र एक स्फटिकका बना हुआ है। इसके ऊपरी अंशमें निद्रित नोवाकी मूर्त्ति, उनकी सन्तान तथा फलपूर्ण साजी हाथमें लिये एक रमणीकी मूर्त्ति खोदी हुई है। फरासी राष्ट्रविप्लवके समय यह फरासी सम्राटके कब्जेमें था। उस समय यह स्थिर हुआ था, कि इसकी कीमत करीब १० लाख फ्रांक्स है।

पूर्वकालमें भारतवर्षमें घर बनानेके काममें स्फटिक व्यवहृत होता था। रामायण, महाभारत तथा पुराणादि ग्रन्थोंमें इसका उल्लेख देखनेमें आता है। महाभारतके सभापर्वमें देखा जाता है, कि मयदानव कर्तृक हस्तिनापुरमें युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें जो अधिवेशन-प्रासाद बनाया गया था, वह समूचा स्फटिकका था। पुराणके मतसे जो स्तम्भ विदीर्ण कर नृसिंहावतार हिरण्यकशिपुको वध करनेके लिये पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे, वह भी स्फटिकका स्तम्भ था। नेपालके प्रियास्तूप मध्यस्थित स्फटिक पानपात्र और पुष्पाधार देखनेसे ज्ञात होता है, कि ये खराद कर बनाये गये थे। इसलिये ईस्वीसन्‌के पहले छठी सदीमें शिल्पी लोग जो खरादकी सहायतासे स्फटिक काट सकते थे, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। २ शीशा, काँच। ४ कपूर। फिटकरी।

स्फटिकमय (सं० त्रि०) स्फटिक स्वरूप।

स्फटिकविष (सं० पु०) दारदराव नामका विष ।
स्फटिका (सं० स्त्री०) फिटकरी ।
स्फटिकाख्या (स० स्त्री०) फिटकरी ।
स्फटिकाचल (सं० पु०) कैलास पर्वत जो दूरसे देखनेमें स्फटिकके समान जान पड़ता है ।
स्फटिकात्मन् (सं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर ।
स्फटिकाद्रिभिद् (सं० पु०) कर्पूर, कपूर ।
स्फटिकाभ्र (सं० पु०) कर्पूर, कपूर ।
स्फटिकारि (सं० स्त्री०) श्वेतवर्ण खनामख्यात द्रव्य विशेष, फिटकरी । गुण—कटु, स्निग्ध, कषाय, प्रदर, मेह, कृच्छ्र, वमि, शोथनाशक, वात, पित्त, कफ, व्रण, श्वित्र और विसर्पनाशक । (राजनि०)
स्फटिकोपम (सं० पु०) १ कर्पूर, कपूर । २ जस्ता नाम की धातु । ३ चन्द्रकान्त मणि ।
स्फटिकोपल (सं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर ।
स्फटी (सं० स्त्री०) स्फट-अच्-ङीष् । स्फटिकारी, फिटकरी ।
स्फाटक (सं० क्ली०) १ स्फटिक, बिल्लौर । (पु०) २ जलबिन्दु, पानीकी बूंद ।
स्फाटिक (सं० क्ली०) १ स्फटिक, बिल्लौर । (त्रि०) २ स्फटिक-सम्बन्धी, बिल्लौरका ।
स्फाटिकोपल (स० पु०) स्फाटिक, बिल्लौर ।
स्फाटीक (सं० क्ली०) स्फाटिक, बिल्लौर ।
स्फान (सं० त्रि०) स्फाय-क्त । वृद्धियुक्त ।
स्फाति (सं० स्त्री०) स्फाय क्ति । वृद्धि ।
स्फातिमत् (सं० त्रि०) स्फाति अस्त्यर्थे मतुप् । वृद्धियुक्त ।
स्फार (सं० त्रि०) १ प्रचुर, विपुल, बहुत । २ विकट । (पु०) ३ सोने आदिका बुद्बुद ।
स्फारण (सं० क्ली०) स्फर-णिच्-ल्युट् । स्फुरण देखो ।
स्फाल (सं० पु०) स्फूर्त्ति ।
स्फिक् (सं० पु०) चूतड़ ।
स्फिक्घातनक (सं० पु०) कटफलवृक्ष, कायफल ।
स्फिकस्राव (सं० पु०) रक्त आमाशय ।
स्फिगी (सं० स्त्री०) कटी । (शुक् ३।३२।११)
स्फिच् (सं० स्त्री०) कटिप्रोथ, चूतड़ ।

स्फिर (सं० त्रि०) स्फाय वृद्धौ (अजिरशिशिरशिथिलेति । उण् १।५४) इति किरच् । प्रचुर, विपुल ।
स्फीत (सं० त्रि०) स्फाय (स्फायः स्फी निष्ठायां । पा ६।१।२२) इति धातोः स्फी-क्त । १ वर्द्धित, बढ़ा हुआ । २ फूला हुआ । ३ समृद्ध ।
स्फीति (सं० स्त्री०) स्फाय क्ति, स्फायस्य स्फी आदेशः । वृद्धि, बढ़ती ।
स्फुजिध्वज (सं० पु०) प्रसिद्ध प्राचीन ज्योतिर्विद् ।
स्फुट (सं० त्रि०) स्फुट-क्त । १ प्रकाशित, जो सामने दिखाई देता हो । २ विकशित, खिला हुआ । ३ शुक्ल, सफेद । ४ स्पष्ट हुआ, साफ । ५ फुटकर, अलग अलग । (पु०) ६ ग्रहस्फुट, ग्रहोंका प्रकाशीकरण ।

जातककी जन्मकोष्ठी द्वारा ग्रहोंका शुभाशुभ फल निरूपण करनेमें उनका स्फुटसाधन करना आवश्यक है । स्फुटगणना बहुत कठिन है । सूर्यसिद्धांतके अनुसार ग्रहोंकी जो स्फुटगणना की जाती है, वह बहुत सूक्ष्म है ।

स्फुटगणना करनेमें अब्दपिण्ड, शीघ्र, मंदकेन्द्र आदि ला कर पीछे स्फुट निरूपण करना होता है । पहले कल्पाब्दमान स्थिर करना आवश्यक है । कल्पाब्दका ३१७९ वर्ष बीतने पर शकाब्द आरम्भ हुआ है, इस कारण चलित शकमें उक्त कल्पाब्दमान ३१७९ जोड़ कर उसे चतुर्युग दिनसंख्या अर्थात् १५७७९१७८२८से गुणा करे । गुणनफल जो हो, उसमें ६१३३७६० घटावे । पीछे चतुर्युग परिमित अब्द अर्थात् ४३२०००० संख्यासे भाग देने पर विषुवदिनका दिनवृन्द होता है । उस दिनकी शुक्रवारसे गणना करनी होगी, क्योंकि, कलियुग शुक्रवारमें प्रवृत्त होता है । अतएव जितना दिन होगा, उसमें ७का भाग दे, भागशेष जो बचेगा, वह शुक्रवारसे गिना जायेगा अर्थात् एकादि संख्याक्रमसे शुक्रवार, शनिवार आदि जानने होंगे । इसके बाद कल्पाब्दको दो पृथक् स्थानमें रख कर एक स्थानके अङ्कको १०से गुणा कर ८से भाग दे । पीछे दूसरे अङ्कको ७से गुणा कर ८००से भाग देने पर भागफल जो होगा, उसे पूर्वाङ्कमें जोड़नेसे वार, दण्ड, पल इत्यादि होंगे । इसके बाद फिर कल्पाब्दको ७से गुणा कर ३००से भाग दे कर जोड़ दे । यदि वह पल ६०से अधिक हो, तो उसे दण्डादि कर लेना

होगा। पीछे ३।३४।४८।३२ वारादि क्षेपाङ्क उसमें जोड़नेसे विपुवसंक्रान्ति सञ्चारका वार, दण्ड, पलादि होता है। अनन्तर इस वारको ७से भाग देना होगा, भागशेष जो रहेगा, वह विपुवसंक्रान्तिका वारादि होगा। उसमें देशान्तरसंस्कार और चरार्द्धसंस्कार करनेसे स्वीय देशके विपुवसंक्रान्तिके वारादि निर्दिष्ट होंगे।

देशान्तरसंस्कार—सुमेरु और लङ्काके बीचसे उत्तर दक्षिणमें विस्तृत जो एक रेखा कल्पित होती है, उसका नाम मध्यरेखा है।

कलकत्ता मध्यरेखाके दो सौ योजन पूरबमें अवस्थित है। इस कारण यहाँ देशान्तर २।३४ दण्ड विपुवसंक्रांतिका वार ध्रुवमें जोड़ देना होगा, विपुव दिनका दिवामानार्द्ध १५ दण्डसे जो अधिक होगा, वह युक्तचरार्द्ध और जितना कम होगा, वह हीनचरार्द्ध है। युक्तचरार्द्ध जितना होगा, उसे विपुवसंक्रान्तिके वारादिमें जोड़ना और हीन चरार्द्ध जितना होगा, उसे विपुवसंक्रान्तिके वारादिमें घटाना होगा। ऐसा करनेसे ही चरार्द्धसंस्कृत विपुवध्रुव होता है। जो वार जितने दण्ड समयमें विपुव ध्रुव होगा, उस समय सूर्य मेषराशिमें जायंगे।

सूर्य, बुध और शुक्रकी मध्यगति तथा मङ्गल, शनि और वृहस्पतिकी शीघ्र गति है। दूसरे ग्रहोंका भगण स्थिर करना होता है।

मन्दोच्च—रविका मन्दोच्च २ राशि, १७ अंश, ७ कला और ४८ विकला, मङ्गलका ४।६।५१।३६, बुधका ७।१०।१६।१२, वृहस्पतिका ५।२१।०।०, शुक्रका २।१६।२६ और शनिका ७।२६।३६।३६ है।

कल्यब्दपिण्डको ३८७ से गुणा कर दो लाखसे भाग करे। भागफल जो होगा, उसे कलादि जानना होगा। रविका पूर्वोक्त मन्दोच्च अर्थात् २।१७।७।४८ जो पहले कहा गया है, उसके कलादिमें लब्ध कलादि जोड़नेसे रविका मन्दोच्च होता है। इसी प्रकार कल्यब्दको २०४से गुणा कर दो लाखसे भाग देने पर लब्धाङ्क कलादि होगा, वह पूर्वोक्त मङ्गलका मन्दोच्च होता है। इसी प्रकार ३ कल्यब्दको ३६८से गुणा और दो लाखसे भाग दे कर जो कलादि लाभ होता है, उसमें पूर्वोक्त वृहस्पतिका मन्दोच्च जोड़नेसे वृहस्पतिका मन्दोच्च होता है। कल्यब्दपिण्डको ५३५से गुणा और दो लाखसे भाग देने पर जो कलादि लाभ होता है, वह कलादि शुक्रका उक्त मन्दोच्च होगा। कल्यब्दपिण्डको ३९ से गुणा और दो लाखसे भाग देने पर जो कलादि होता है उसमें शनिका उक्त मन्दोच्च जोड़नेसे शनिका मन्दोच्च होगा।

ये सब मन्दोच्च निकाले विना स्फुटसाधन नहीं होता, इस कारण उक्त नियमानुसार मन्दोच्च निकाले। मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि इन पांच ग्रहोंके मन्दोच्चको २४ अंश सिद्धान्तरहस्योक्त मन्दोच्चके साथ एकत्र करे। चन्द्रकेन्द्रका ५ कला बाद दे देनेसे सिद्धान्त रहस्योक्त चन्द्रकेन्द्रके समान होता है।

सिद्धान्तरहस्यके मतसे दिनवृन्द—सिद्धांतरहस्योक्त खंडानुसार बड़ी आसानीसे दिनवृन्द निकला जा सकता है। इस खण्डामें तीन कोष्ठ लिखे गये हैं। प्रति कोष्ठमें ६ अङ्कश्रेणी है। इसका प्रथम कोष्ठ एकाईका, द्वितीय कोष्ठ दहाईका और तृतीय कोष्ठ सैकड़ेका जानना होगा।

अब्दपिण्डमें जो थोड़े अङ्क रहेंगे, उसका शेषाङ्क एकाई अंक होगा। उस एकाई अंकमें जो संख्या होगी, उसे प्रथम कोष्ठमें उस संख्याश्रेणीका अङ्क ले कर पहले जो अङ्क स्थापित किये गये हैं, उसके नीचे रख कर एक साथ मिलावे। योगाङ्क ही विपुव दिनका दिनवृन्द है। इस दिनवृन्दमें जो दण्डादि रहेंगे, उन्हें लेनेकी जरूरत नहीं। अब्दपिण्डके अङ्कमें एक की जगह या दहाईकी जगह शून्य रहे, तो भी दहाईकी कोष्ठाका अङ्क नहीं लेना होगा।

इसके बाद बीजानयन निकालना आवश्यक है। कल्यब्दपिण्डमें ३००० से भाग देने पर जो भागफल होता है, उसके भागादिको बीज कहते हैं। उस बीजांशादिको चन्द्रकेन्द्रमें जोड़ना होता है। फिर उस बीजांशको तीनसे गुणा कर शनिकी मध्यभुक्तिमें तथा उसे चतुर्गुण कर बुधकी शीघ्रभुक्तिमें योग करना होगा। फिर उसको दूना कर वृहस्पतिकी मध्यभुक्तिमें तथा त्रिगुणित बीजांशको शुक्रकी भुक्तिमें घटानेसे उनका मध्य और शीघ्रबीज शुद्ध जानना होगा। इसी प्रणालीसे बीजानयन करना होता है।

ग्रहोंका क्षेपाङ्क—१२८८६०१ है। इसमें ६०का भाग दे

कर भागफलको फिर ६०से भाग देने पर जो भागफल होता है, उसको ६० से भाग दे। भागफल जो होगा और भागशेष जो बच जायेगा, उसमे रविका क्षेपाङ्क होगा। इसी प्रकार चन्द्रके ६००८३२ को उक्त रूपसे दो बार ६०से और पीछे ३०से भाग देने पर भागफल जो होता है, उससे क्षेपाङ्ककी राशि और शेष अङ्क द्वारा अंशादि मालूम होंगे।

चन्द्रकेन्द्रका—१२५८८२६
राहुमध्यका—६५६४८१
कुज मध्यका—८६२६८७
बुध शीघ्रका—७६८६३३
वृहस्पतिका—७५५४४८
शुक्र शीघ्रका—६२४३०
शनिका—२४४८६६

इसके द्वारा पूर्वोक्त नियमानुसार उक्त ग्रहोंका क्षेपाङ्क होता है उपयुक्त ३० द्वारा भागलब्ध राशि शेष अंश तथा ६० द्वारा भागशेषमें कलादि जानने होंगे। इसी प्रणालीसे दिनवृन्द, मध्य, शीघ्र, बीजानयन और क्षेपाङ्क स्थिर कर पीछे स्फुट स्थिर करना होता है।

रवि चन्द्र आदि देखो।

स्फुट गणनामें अहर्गिण्ड द्वारा दिनवृन्द स्थिर कर रविग्रहके स्फुटके मध्य, कुज, शुक्र और शनिका शीघ्र तथा बुध, शुक्रके मध्य स्थिर कर पीछे स्फुटगणना करनी होती है। पहले ग्रहके मध्य स्थापन कर उसे अपने अपने शीघ्र द्वारा घटानेसे जो राशि आदि बच रहेंगी, वह शीघ्रकेन्द्र तथा ग्रहोंके मध्यसे अपनी अपनी मन्दोच्च राशि आदि निकाल देनेसे जो राश्यादि होंगी, वह मन्दकेन्द्र कहलाती हैं। इस शीघ्रकेन्द्र और मन्दकेन्द्र-की भी स्फुटगणनामें आवश्यकता होती है। इसी नियमानुसार ग्रहस्फुटगणना करनी होती है।

जातककी कोष्ठीगणनामें पहले उक्त नियमानुसार ग्रहोंका स्फुट, भाव, सन्धि और बल स्थिर करे। ग्रहों-का स्फुटसाधन कर लग्नादिका भी स्फुट साधन करना होता है।

ग्रह स्फुटगणना करनेमें पूर्वोक्त रूपसे गणना नहीं करके भी आसानीसे ग्रहस्फुटगणना की जा सकती है। ज्योतिषका फलितांश स्फुटगणनाके ऊपर निर्भर करता है। अतएव सूक्ष्मरूपसे जिससे ग्रहस्फुटगणना की जाय, वही कर्त्तव्य है। लग्न और राशि देखो।

स्फुटक (सं० पु०) ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी।

स्फुटत्वचा (सं० स्त्री०) महाज्योतिष्मता, मालकंगनी।

स्फुटध्वनि (सं० पु०) सफेद पंडुक।

स्फुटन (सं० क्ली०) स्फुट-ल्युट्। १ विदारण, फटना या फूटना। २ विकसित होना, खिलना।

स्फुटफल (सं० पु०) तुम्बुरु।

स्फुटबन्धनी (सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती, मालकंगनी।

स्फुटरङ्गिणी (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी लता जिसका व्यवहार औषधमें होता है।

स्फुटवल्कली (सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती, मालकंगनी।

स्फुटा (सं० स्त्री०) स्फुट क, टाप्। सर्पफणा, साँपका फन।

स्फुटार्थ (सं० त्रि०) प्रकाशित।

स्फुटि (सं० स्त्री०) स्फुट-इन्। १ पादस्फोटक नाम-का रोग पैरकी बिवाई फटना। २ स्फुटित कर्कटिका, फूट नामका फल।

स्फुटिका (सं० स्त्री०) १ फूट नामक फल। २ फिट-करी।

स्फुटित (सं० त्रि०) स्फुट-क्त। १ विकसित, खिला हुआ। (हेम) २ भिन्न। ३ परिहसित, हंसता हुआ। ४ व्यक्तीकृत, प्रकट किया हुआ।

स्फुटितकाण्डभग्न (सं० पु०) वैद्यकके अनुसार हड्डी टूटने का एक भेद, हड्डीका टुकड़े टुकड़े हो कर खिल जाना।

स्फुटी (सं० स्त्री०) १ पादस्फोट नामक रोग, पैरका बिवाई फटना। २ कर्कटीफल, फूट नामका फल।

स्फुटीकरण (सं० पु०) स्पष्ट करना, प्रकट या व्यक्त करना।

स्फुत्कर (सं० पु०) अग्नि, आग।

स्फुत्कार (सं० पु०) स्फुत्-कृ-घञ्। फुत्कार, फुफकार।

स्फुर (सं० पु०) स्फुर घञ्। १ फलक। २ स्फुरण।

स्फुरण (सं० पु०) स्फुर ल्युट्। १ किञ्चिच्चलन, किसी पदार्थका जरा जरा हिलना। २ अंगका फड़कना।

स्फूर्त्ति देखो।

स्फुरणा (सं० स्त्री०) स्फुर-णिच् युच् टाप् । स्फुरण, अङ्गों का फड़कना।

स्फुरत् (सं० त्रि०) स्फुर-शतृ। १ कम्पनयुक्त। २ स्फूर्त्ति-विशिष्ट।

स्फुरित (सं० क्ली०) स्फुर भावे क। १ स्फुरण। (त्रि०) २ स्फुरणविशिष्ट, जिसमें स्फुरण हो, हिलने या फड़कने-वाला।

स्फुल (सं० क्ली०) स्फुलतीति स्फुल-क । १ वस्त्रवेश्म, तम्बू, खेमा। २ स्फूर्त्ति।

स्फुलन (सं० क्ली०) स्फुल-ल्युट्। स्फुरण।

स्फुलमञ्जरी (सं० पु०) हुलहुल नामक पौधा।

स्फुलिङ्ग (सं० क्ली०) स्फुल-इङ्गच्। अग्निकण, आगकी चिनगारी।

स्फुलिङ्गक (सं० पु०) स्फुलिङ्ग स्वार्थे कन्। स्फुलिङ्ग देखो।

स्फुलिङ्गिनी (सं० स्त्री०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

स्फूर्जक (सं० पु०) स्फूर्ज ण्वुल्। १ तिन्दुक या तेंदू नामक पेड़। २ सोनापाढ़ा।

स्फूर्जथु (सं० पु०) स्फूर्ज निर्घोषे अथुच्। १ बिजली-की कड़क। २ चौलाईका साग।

स्फूर्जन (सं० पु०) १ स्फूर्जक, तेन्दू नामका पेड़। २ नन्दी-तरु, बलिया पीपल।

स्फूर्त्ति (सं० स्त्री०) स्फुर-क्तिन्। १ स्फुरण, धीरे धीरे हिलना, फड़कना। २ कोई काम करनेके लिये मनमें उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३ फुरती, तेजी।

स्फूर्त्तिमत् (सं० पु०) स्फूर्त्ति-मतुप्। १ पाशुपत। (त्रि०) २ स्फूर्त्तिविशिष्ट।

स्फेयस् (सं० त्रि०) अतिशय, बहुत।

स्फोट (सं० पु०) स्फुट-अच्। १ स्फोटक, फोड़ा, फुंसी। स्फुट भावे घञ्। २ विदारण, अंदर भरे हुए किसी पदार्थका अपने ऊपर आवरणको तोड़ या भेद कर बाहर निकलना। ३ मुक्ता, मोती। स्फुट विकसने घञ्। ४ शब्द-व्यापारविशेष। वर्णका अतिरिक्त तथा वर्णके द्वारा अभि व्यक्त अर्थप्रत्यायक जो नित्य शब्द है, उसीका नाम स्फोट है। सर्वदर्शनसंग्रहमें माधवाचार्यने इसकी विशद आलोचना की है। इस मतसे स्फोट ही सच्चिदानन्द ब्रह्म है। शब्दशास्त्रकी आलोचना करनेसे अविद्या निवृत्ति होती है, पीछे मुक्ति होती है। शब्द देखो।

स्फोटक (सं० पु०) स्फुटतीति स्फुट-ण्वुल्। १ रोग विशेष, फोड़ा, फुंसी। रसरक्त आदिके बिगड़नेसे फोड़े निकलते हैं। त्वक्, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि, कोष्ठ और मर्म ये आठ स्फोटकके स्थान हैं अर्थात् इन्हीं आठ स्थानोंमें फोड़े होते हैं। इन सब फोड़ोंमेंसे जो सब फोड़े चमड़ेको छेद कर निकलते हैं, उनसे उतना कष्ट नहीं होता। इसके सिवा जिस किसी स्थानमें स्फोटक होनेसे वह कष्टसाध्य और दुश्चिकित्स्य होता है।

२ भल्लातक, भिलावा। इसका तेल लगानेसे शरीरमें फोड़ा-सा हो जाता है।

स्फोटका (सं० पु०) भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ।

स्फोटन (सं० क्ली०) स्फुट ल्युट्। १ विदारण, फाड़ना। २ अंदरसे फोड़ना। ३ प्रकट या प्रका-शित करना। ४ शब्द, आवाज। ५ सुश्रुतके अनुसार वायुके प्रकोपसे होनेवाली व्रणकी पीड़ा जिसमें व्रण फटता हुआ सा जान पड़ता है।

स्फोटनी (सं० स्त्री०) मणिशङ्कुवेधोपकरण।

स्फोटलता (सं० स्त्री०) कर्णस्फोटालता, कनफोड़ा नामकी लता।

स्फोटवादी (सं० पु०) वह जो स्फोट या अनित्य शब्दको ही संसारका मूल हेतु या कारण मानता हो।

स्फोटबीजक (सं० पु०) भल्लातक, भिलावा।

स्फोटहेतुक (सं० पु०) भल्लातक, भिलावाँ।

स्फोटा (सं० स्त्री०) १ सर्पफणा, सांपका फन। २ सफेद अनन्तमूल।

स्फोटायन (सं० पु०) मुनिविशेष।

स्फोटिक (सं० पु०) पत्थर या जमीन आदि तोड़ने फोड़ने-का काम।

स्फोटिका (सं० स्त्री०) १ हारीतिका नामक पक्षी। २ स्फोटक, छोटा फोड़ा, फुंसी।

स्फोटिनी (सं० स्त्री०) कर्कटिका, ककड़ी।

स्फोता (सं० स्त्री०) १ शारिवा, अनन्तमूल। २ सफेद आक, सफेद मदार।
स्फोरण (सं० त्रि०) १ स्फार, प्रचुर। २ विकट। ३ विपुल।
स्फोलन (सं० क्ली०) स्फाल, स्फूर्त्ति।
स्मत् (सं० अव्य०) अति प्रभूत, अनेक, विपुल।
स्मत्पुरन्धि (सं० त्रि०) स्वर्गकुटुम्बी।
स्मदभीशु (सं० त्रि०) शोभन रज्जुयुक्त।
स्मदिभ (सं० पु०) वैदिक कालके एक ऋषिका नाम।
स्मदिष्ट (सं० त्रि०) प्रशस्त गतिविशिष्ट, सुन्दर चाल वाला।
स्मदूध्नी (सं० स्त्री०) वह गाय जो हमेशा दूध देती हो।
स्मद्दिष्टि (सं० त्रि०) उत्तम दर्शनविशिष्ट।
स्मय (सं० त्रि०) १ अद्भुत, विलक्षण। (पु०) २ गर्व, अभिमान, शेखी।
स्मयन (सं० क्ली०) स्मि ल्युट्। गर्व, अभिमान, शेखी।
स्मर (सं० पु०) स्मरयति उत्कण्ठयतीति स्मृ-णिच्-अच। १ कामदेव, मदन। स्मृ अण्। २ स्मरण, स्मृति, याद। ३ शुद्ध रागका एक भेद।
स्मरकथा (सं० स्त्री०) स्मरस्य कथा। कामकथा, स्त्रियोंके सम्बन्धकी या शृंगाररसकी ऐसी बातें जिनसे काम उत्तेजित हो।
स्मरकार (सं० त्रि०) कामोद्दीपक, जिससे कामका उद्दीपन हो।
स्मरकूपक (सं० पु०) योनि, भग।
स्मरकूपिका (सं० स्त्री०) स्मरस्य कूपिका। योनि, भग।
स्मरगुरु (सं० पु०) १ श्रीकृष्ण। महादेवके शापसे भस्म हो कर कामदेवने श्रीकृष्णसे प्रद्युम्न रूपमें जन्म ग्रहण किया था। २ वह जो कामकलाकी शिक्षा दे।
स्मरगृह (सं० क्ली०) स्मरस्य गृहं। योनि, भग।
स्मरचक्र (सं० पु०) स्त्री-सम्भोगके लिये एक प्रकारका रतिबन्ध। लक्षण —

'धृत्वा वामकरेणोरुं स्वपादस्योपरिस्थितं।
दृढञ्च रमते कामी स्मरचक्रः प्रकीर्त्तितः ॥" (स्मरदीपिका)

स्मरचन्द्र (सं० पु०) स्मरदीपिकाके अनुसार एक प्रकारका रतिबन्ध।

स्मरच्छत्र (सं० क्ली०) स्मरस्य छत्रमिव। योनि, भग।
स्मरण (सं० क्ली०) स्मृ-ल्युट्। १ स्मृति, किसी देखी, बीती या अनुभवमें आई हुई बात। पर्याय—आध्यान, चर्चा। (जटाधर) संस्कारजन्य ज्ञानविशेषका नाम स्मृति या स्मरण है। जो कोई कार्य किया जाता है, उसी समय उसका संस्कार होता है। यह संस्कार चित्तमें आबद्ध रहता है, पीछे इस संस्कारजन्य जो ज्ञान होता है, उसीका नाम स्मरण है। भाषापरिच्छेदमें लिखा है, कि अनुभूति या अनुभव तथा स्मृति या स्मरण रूपमें भी ज्ञान दो प्रकारका है। पूर्व संस्कारजन्य ज्ञानविशेषका नाम स्मरण है। अननुभूत विषयका स्मरण नहीं होता। पहले जिस विषयका अनुभव था, पीछे उसीका स्मरण होता है। पातञ्जलदर्शनमें लिखा है, कि स्मृति या स्मरण एक चित्तवृत्ति है। अनुभूत वस्तु विषयिणी वृत्तिका नाम स्मृति है।

"अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः"
(पातञ्जलद० १।११)

प्रमाण, विपर्यय आदि द्वारा अधिगत पदार्थसे अतिरिक्त पदार्थ विषय नहीं करता, ऐसी जो चित्तवृत्तिको स्मृति या स्मरण कहते हैं।

शास्त्रमें लिखा है, कि सन्ध्यावन्दना, पूजा, याग और यज्ञादिके अनुष्ठानकालमें भ्रमप्रमादादिवशतः यदि उसमें त्रुटिकी आशङ्का हो, तो यागयज्ञादिके अन्तमें विष्णुका स्मरण करे। विष्णुका नाम स्मरण करनेसे उसी समय कार्य सम्पूर्ण होगा।

२ नौ प्रकारकी भक्तियोंमेंसे एक प्रकारकी भक्ति। इसमें उपासक अपने इष्टदेवको बराबर याद किया करता है। ३ साहित्यमें एक प्रकारका अलंकार। जहां सदृश वस्तुके अनुभव द्वारा वस्तुस्मृति होती है, उसे स्मरण कहते हैं। सदृश देख कर पूर्वानुभूत वस्तुका स्मरण होनेसे यह अलङ्कार होता है।
स्मरणपत्र (सं० पु०) वह पत्र जो किसीको कोई बात स्मरण दिलानेके लिये लिखा जाय।
स्मरणशक्ति (सं० स्त्री०) वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातोंको ग्रहण करके रख छोड़ती है और आवश्यकता पड़ने, प्रसग

आने या मस्तिष्क पर जोर देनेसे वह घटना या बात फिर हमारे मनमें स्पष्ट कर देती है। स्मरण देखो।

स्मरणाप्रत्यतर्पक (सं० पु०) कच्छप।

स्मरणासक्ति (सं० स्त्री०) भगवान्‌के स्मरणमें होनेवाली आसक्ति जिसके कारण भक्त दिन रात भगवान् या इष्टदेवका स्मरण करता है।

स्मरणीय (सं० लि०) स्मृ-अनीयर्। स्मरण रखने योग्य, याद रखने लायक।

स्मरदशा (सं० स्त्री०) वह दशा जो प्रेमी या प्रेमिकाके न मिलने पर उसके विरहमें होती है विरहकी अवस्था। यह अवस्था दश प्रकारकी है,—नयनप्रीति, चिन्ता, सङ्ग, सङ्कल्प, निद्राच्छेद, कृशता, विषयनिवृत्ति, लज्जानाश, उन्माद, मूर्च्छा तथा अन्तमें मृत्यु।

स्मरदहन (सं० पु०) स्मरस्य दहनः। शिव।

स्मरदीपन (सं० लि०) १ कामोद्दीपक। (पु०) २ एक विख्यात शाक्त आचार्य।

स्मरध्वज (सं० क्ली०) १ स्त्रीको योनि, भग। (पु०) २ पुरुषका लिङ्ग। ३ वाद्य, बाजा।

स्मरध्वजा (सं० स्त्री०) ज्योत्स्ना रात्रि, चांदनी रात।

स्मरप्रिया (सं० स्त्री०) रति, कामदेवकी पत्नी।

स्मरमन्दिर (सं० क्ली०) योनि, भग।

स्मरलेखनी (सं० स्त्री०) शारिका पक्षी, मैना।

स्मरवधू (सं० स्त्री०) कामदेवकी पत्नी, रति।

स्मरवल्लभ (सं० पु०) अनिरुद्ध।

स्मरवीथिका (सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।

स्मरवृद्धि (सं० पु०) कामवृद्धि या कामज नामक क्षुप।

स्मरवृद्धिमन्त्र (सं० पु०) कामवृद्धि या कामज नामका क्षुप।

स्मरशत्रु (सं० पु०) कामदेवका दहन करनेवाले, महादेव।

स्मरशास्त्र (सं० क्ली०) वह शास्त्र जिसमें काम-कलाका विवेचन हो, कामशास्त्र।

स्मरसख (सं० पु०) १ चन्द्रमा। (लि०) २ कामोद्दीपक, जिससे कामकी उत्तेजना हो।

स्मरस्तम्भ (सं० पु०) पुरुषकी इन्द्रिय, लिङ्ग।

स्मरस्मरा (सं० स्त्री०) सेवती।

स्मरस्मर्य (सं० पु०) गर्दभ, गधा।

स्मरहर (सं० पु०) शिव, महादेव।

स्मरागार (सं० क्ली०) भग, योनि।

स्मराङ्कुश (सं० पु०) लिङ्ग।

स्मराधिवास (सं० पु०) अशोक वृक्ष।

स्मराम्र (सं० पु०) राजाम्र, कलमी आम।

स्मरारि (सं० पु०) कामदेवके शत्रु, महादेव।

स्मरासव (सं० पु०) १ लाला थूक। २ ताड़से निकलनेवाला ताड़ी नामक मादक द्रव्य।

स्मरोद्दीपन (सं० लि०) कामोद्दीपनकारी, कामकी उत्तेजना करनेवाला। कामोद्दीपक देखो।

स्मर्तव्य (सं० लि०) स्मृ-तव्य। स्मरणीय, स्मरण रखने योग्य।

स्मर्तृ (सं० त्रि०) स्मृ-तृच्। स्मरणकारी, याद रखनेवाला।

स्मर्य (सं० लि०) स्मृ-यत्। स्मरणीय, स्मरण रखने योग्य।

स्मशान (सं० पु०) श्मशान देखो।

स्माय (सं० पु०) स्मि घञ्। गूढहसित।

स्मार (सं० पु०) स्मरण, याद।

स्मारक (सं० लि०) स्मृ-णिच्-ण्वुल्। १ स्मरणकारक, स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला। (पु०) २ वह कृत्य, पदार्थ या वस्तु आदि जो किसीकी स्मृति बनाये रखनेके लिये प्रस्तुत किया जाय, यादगार। ३ वह चीज जो किसीको अपना स्मरण रखनेके लिये दी जाय, यादगार।

स्मारण (सं० क्ली०) स्मृ-णिच्-ल्युट्। स्मरण करनेकी क्रिया, याद दिलाना।

स्मारणी (सं० स्त्री०) ब्राह्मी या ब्रह्मी नामकी वनस्पति। इसके सेवनसे स्मरणशक्तिका बढ़ना माना जाता है।

स्मारित (सं० पु०) कृतसाक्षीके पांच भेदोंमेंसे एक, वह साक्षी जिसका नाम पत्र पर न लिखा हो परन्तु अर्थी अपने पक्षके समर्थनके लिये स्मरण करके बुलावे।

स्मारिन् (सं० लि०) स्मृ-णिनि। स्मरणकारी, याद रखनेवाला।

स्मार्त (सं० क्ली०) स्मृति अण्। १ वे कृत्य आदि

जो स्मृतियोंमें लिखे हुए हैं। स्मृतिशास्त्रके अनुसार कर्म, श्रौत और स्मार्त्तभेदसे कर्म दो प्रकारका है। (त्रि०) २ स्मृतिशास्त्रवेत्ता, जो स्मृतियों आदिका अच्छा ज्ञाता हो। ३ जो स्मृतियोंमें लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। ४ स्मृति-सम्बन्धी, स्मृतिका।

स्मार्त्तिक (सं० त्रि०) स्मृति सम्बन्धी, स्मृतिका।

स्मार्य (सं० त्रि०) स्मृ णिच्-यत्। स्मरण करानेके योग्य, याद दिलाने लायक।

स्मित (सं० क्ली०) स्मि-क्त। १ ईषद्धास, मंद हास्य, धीमी हंसी। (त्रि०) २ प्रस्फुटित, खिला हुआ।

स्मृत (सं० त्रि०) स्मृ-क्त। जो स्मरणमें आया हो, याद किया हुआ।

स्मृति (सं० स्त्री०) स्मृ-क्तिन्। १ अनुभूत विषयज्ञान, अनुभव संस्कारजन्य ज्ञान। पर्याय—चिन्ता, आध्यान, चिन्तिया, चिन्त, आध्या, चिन्तिति, ध्यान, स्मरण और चर्चा। (जटाधर) सुखबोधमें लिखा है, कि गर्भस्थित बालकके प्रथम मासमें स्मृतिशक्तिका उद्भव होता है। चरकमें लिखा है, कि निमित्तरूप ग्रहण, सादृश्य, सुविपर्य्यय, तत्त्वानुबन्ध, अभ्यास, ज्ञानयोग, पुनःश्रुत और दृष्टश्रुतानुबन्धका स्मरण, इन आठ कारणोंसे स्मृति या स्मरण हुआ करता है। स्मरण शब्द देखो।

स्मरति वेदमनया स्मृतिः। २ मन्वादि मुनि-प्रणीत शास्त्रविशेष। महर्षियोंने जिस वेदार्थकी चिन्ता की थी, उनका नाम स्मृति है। "महर्षिभिर्वेदार्थचिन्तनं स्मृतिः" महर्षियोंने वेदकी चिन्ता कर तदनुसार जो सब ग्रन्थ प्रणयन किये थे, उन्हींको स्मृति कहते हैं। पर्याय—धर्मसंहिता, धर्मशास्त्र, संहिता, श्रुति, जीविका।

धर्मशास्त्रका नाम ही स्मृति है। वेदार्थस्मरणसे शास्त्र हुआ है, इसीसे इसका नाम स्मृति हुआ है।

श्रुति और स्मृतिके अनुशासन पर भारतीय आर्य-समाज संगठित और परिचालित है। जो अपौरुषेय है, जिसे ध्यानमग्न ऋषियोंने मानसनेत्रसे दर्शन किया है या पुरुषपरम्परासे जो अपौरुषेय महावाक्य सुनते आये हैं, वही श्रुति है। वेदमन्त्र, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ही श्रुतिपदवाच्य हैं।

इसके सिवा ऋषिगण वेदमूलक जो सब अवश्य कर्त्तव्य तत्त्वोंका स्मरण करते आए हैं, आर्यसमाज-परिचालनके लिये ऋषि या ऋषिकल्प महापुरुषगण जिन सब व्यवस्थाओंका विधान कर गये हैं, वेदमूलक होने पर भी जो अपौरुषेय नहीं हैं, वही स्मृति है। यास्क रचित निरुक्त आदि वेदाङ्गसमूह, यज्ञ और गार्हस्थ्य धर्मनिर्वाहार्थ सूत्राकारमें रचित श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र, मनु आदि रचित धर्मशास्त्रसमूह, रामायण और महाभारतादि इतिहास तथा पुराण स्मृतिमें गिने जाते हैं।

नाना मुनियोंने स्मृतिकी रचना की है, उनमेंसे कौन स्मृति प्रामाण्य और कौन स्मृति अप्रामाण्य है, इसके सम्बन्धमें शङ्कराचार्यने शारीरकभाष्यमें विचार किया है। पहले ही कहा जा चुका है, कि स्मृति छः भागोंमें विभक्त है—१म छः वेदाङ्ग, २य स्मार्त्तसूत्र, ३य धर्मशास्त्र, ४र्थ इतिहास, ५म अष्टादश पुराण, ६ष्ठ नीतिशास्त्र। इनमेंसे स्मार्त्तसूत्र और धर्मशास्त्र ही अभी प्रधानतः स्मृति कहलाता है। वेद, वेदाङ्ग, गृह्य, इतिहास, पुराण और नीति शब्द देखो।

वैदिक गृह्यसूत्रसे ही धर्मशास्त्र या स्मृतिकी उत्पत्ति हुई है। नित्यनैमित्तिक क्रियाकलाप ही इन सब धर्मसूत्रोंका प्रकृत विषय है।

धर्मसूत्रकारोंमेंसे कौन किस समय विद्यमान थे, मालूम नहीं। बहुतसे धर्मसूत्र विलुप्त हो गये हैं, अभी जो थोड़े धर्मसूत्र मिलते हैं, उनकी आलोचना करनेसे मालूम होता है, कि मनुरचित मानवधर्मसूत्र ही सर्वादिम है। यह मानवधर्मसूत्र अभी विलुप्त होने पर भी यही प्रचलित मनुसंहिता या मानवधर्मशास्त्रका मूल माना जाता है। मानवधर्मसूत्रके बाद अन्यान्य धर्मसूत्र प्रचलित रहने पर भी उनके नाम नहीं मिलते। इसके बाद हम गौतमधर्मसूत्र पाते हैं। गौतमके बाद वसिष्ठ और बौधायनने धर्मसूत्रका प्रचार किया। बौधायनचरण तैत्तिरीय शाखाभुक है। किसीके मतसे बौधायन ही तैत्तिरीय शाखाके प्रथम सूत्रकार हैं, किन्तु मनुसे मानवचरण हैं, ये भी तैत्तिरीय शाखाभुक हैं। इस हिसाबसे मनु ही तैत्तिरीय शाखाके प्रथम सूत्रकार हैं। बौधायनसे अनेक

पीढ़ी बाद भारद्वाज, भारद्वाजसे अनेक पीढ़ी बाद आपस्तम्ब और आपस्तम्बसे अनेक पीढ़ी बाद सत्याषाढ़-हिरण्यकेशी सूत्रकार रूपमें आविर्भूत हुए थे। आपस्तम्बके धर्मसूत्रमें एक, कण्व, काण्व, कुणिक, कुत्स, कौत्स, पुष्करसादि, वार्ष्यायणि, श्वेतकेतु और हारीत इन सब धर्मशास्त्रवेत्ताओंके नाम मिलते हैं। हिरण्यकेशिधर्मसूत्रके वृत्तिकार महादेवने लिखा है, कि हिरण्यकेशीके बाद भी कुछ सूत्रकार आविर्भूत हुए थे, किन्तु उनके नाम मालूम नहीं।

मानवधर्मसूत्र आज तक आविष्कृत नहीं होने पर भी मानवगृह्यसूत्र आविष्कृत और वह हालैण्डकी प्राच्य सभासे प्रकाशित हुआ है। हम लोगोंका विश्वास था, कि मनुरचित यह गृह्यसूत्र मानवधर्मशास्त्रका मूल है, परन्तु आश्चर्यका विषय है, कि इसके प्रतिपाद्य विषयके साथ प्रचलित मानवधर्मशास्त्रका मेल नहीं रहने पर भी प्रचलित याज्ञवल्क्यसंहिताके साथ बहुत कुछ मेल देखा जाता है। दोनों ग्रन्थकी यदि आलोचना की जाय, तो मालूम होगा, कि याज्ञवल्क्यसंहिता मानवगृह्यसूत्रकी विवृति है।

अभी जो सब धर्मसूत्र प्रचलित हैं, उनमें गौतम धर्मसूत्र प्रचलित अन्यान्य धर्मसूत्रोंसे प्राचीन है। पराशरके मतसे सत्ययुगमें मनु और त्रेतायुगमें गौतमका धर्मशास्त्र प्रचलित हुआ था। सच पूछिये, तो प्रचलित अन्यान्य सभी धर्मसूत्र गौतम धर्मसूत्रके अनुवर्त्ती हैं, इस कारण संक्षेपमें गौतम धर्मसूत्रका परिचय दिया जाता है।

गौतमने केवल मनुका ही मत उद्धृत किया, दूसरे किसी धर्मसूत्रका नहीं। गौतमचरण सामवेदीय राणायनी शाखाभुक्त थे। अतएव लाट्यायन और गोभिल सूत्रोंकी तरह गौतमरचित श्रौत, गृह्य और धर्मसूत्र सामवेदीय साहित्यके अन्तर्गत थे। सामवेदके वंशब्राह्मणमें सामप्रकाशकोंमेंसे चार गौतमके नाम देखे जाते हैं—यथा मातृगौतम, सुमन्त्रबाभ्रव गौतम, शङ्कर गौतम और राध गौतम। इसके सिवा प्रचलित श्रौत और गृह्यसूत्रोंमें केवल गौतम और स्थविर गौतमका मत उद्धृत हुआ है। सामवेदके पितृमेधसूत्ररचयिता एक गौतमका नाम मिलता है। इनमेंसे किसने गौतमधर्मसूत्रका प्रचार किया, कह नहीं कह सकते। पर हां, गौतमधर्मसूत्रकार जो निःसन्देह सामवेदी थे, वह इस धर्मसूत्रसे ही प्रमाणित होता है। वेद शब्दमें गृह्यसूत्रका विवरण देखो।

गौतम धर्मशास्त्र छन्दोगोंके तथा वसिष्ठ धर्मशास्त्र वह्वृच या ऋग्वेदीयगणके पाठ्यमें गिने जाते थे। बौधायन और वसिष्ठके धर्मसूत्रमें धर्मसूत्रकार गौतमका विशेष विशेष मत उद्धृत हुआ है।

गौतम धर्मसूत्र पढ़नेसे मालूम होगा, कि वे परवर्त्ती किसी किसी स्मृतिकारकी तरह देशाचारको प्रामाण्य नहीं मानते। मनुकी तरह उन्होंने भी पहले ही 'वेदोऽखिलधर्ममूलं" सूत्र प्रकाश किया है। जो सभी देशोंमें शिष्ट समाजके मध्य ग्राह्य है, जो वेदमूलक है, उसीको वे सदाचार कहते हैं तथा दूसरे सभी वर्णोंकी अपेक्षा उन्होंने ब्राह्मणको ही इस सदाचार व्यापारमें विशेष मनोयोगी होनेका उपदेश दिया है।

धर्मशास्त्र।

अभी साधारणतः ४८ धर्मशास्त्रोंका उल्लेख देखनेमें आता है। इनमेंसे कमसे कम २७ विद्यमान हैं तथा याज्ञवल्क्यमें भी इनका उल्लेख है (१।३-५) यथा—१ मनु, २ याज्ञवल्क्य, ३ अत्रि, ४ विष्णु, ५ हारीत, ६ उशनस्, ७ अङ्गिरा, ८ यम, ९ आपस्तम्ब, १० सम्वर्त्त, ११ कात्यायन, १२ वृहस्पति, १३ पराशर, १४ व्यास, १५ शङ्ख, १६ लिखित, १७ दक्ष, १८ गोतम या गौतम, १९ शातातप और २० वशिष्ठ। नारद, भृगु, बौधायन आदि प्रणीत धर्मशास्त्रका भी उल्लेख मिलता है।

धर्मशास्त्र और मानव देखो।

मनुने जिस प्रकार ब्राह्मणसमाजको सभी समाजोंका आदर्श और प्रभु बतलाया है, क्षत्रियसमाजको भी उन्होंने समान्यभावसे देखा है। नीचेकी उक्तिसे ही यह जाना जा सकता है—

"नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं ब्रह्म वर्द्धते।
ब्रह्मक्षत्रञ्च सम्पृक्तमिह चामुत्र वर्द्धते॥" (९।३२२)

अर्थात् क्षत्रियके विना ब्राह्मणकी वृद्धि नहीं होती और ब्राह्मणके विना क्षत्रिय भी समृद्धिको प्राप्त नहीं होते।

ब्राह्मण और क्षत्रियके एकत्र होनेसे वे इहलोक और परलोकमें समृद्धि लाभ करते हैं।

धर्मशास्त्रका संक्षिप्त इतिहास

आदि स्मृतिकारगण।

आर्य्यसमाजकी प्रतिष्ठाके साथ धर्मशास्त्रका आरम्भ हुआ है। शुक्लयजुर्वेदीय शतपथब्राह्मण (१४।४।२।२३) और वृहदारण्यकमें लिखा है, कि धर्म राजाओंका राजा है, राजगणसे शक्तिशाली और कठोर है। धर्मसे बढ़ कर और कुछ भी नहीं है। श्रेष्ठतम राजप्रभावकी तरह इस धर्मप्रभावसे दुर्बल भी बलवानके ऊपर शासन कर सकता है। अतएव देखा जाता है, कि अति पूर्वकालसे ही ऋषिगण धर्मशास्त्रकी प्रधानता स्वीकार करते आये हैं। इस धर्मका मूल क्या है? मानवधर्मशास्त्रमें लिखा है, १म अखिलवेद, २य वेदविद् ऋषिगण पुरुषानुक्रमसे देवपितृ भक्तिरूप जो दश प्रकारके 'शील' की शिक्षा करते आये हैं, ३य साधुओंका अनुष्ठित 'आचार' और ४र्थ आत्मतुष्टि' अर्थात् जो महात्माओंके विवेक और बुद्धिमें सन्तोषजनक समझा जाता है, यही चार प्रकारके धर्मके मूल हैं। (मनु २।६) इन चार प्रकारके विषयोंके ऊपर धर्मशास्त्र प्रतिष्ठित है। पहले ही लिखा जा चुका है, कि श्रुति अपौरुषेय है, परन्तु स्मृति पौरुषेय या पुरुषरचित है। श्रौत या कल्पसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, ये सभी एक स्वरूपसे घोषणा कर गये हैं, कि स्मृतिशास्त्रकारोंमें मनु ही आदि हैं। मनुरचित श्रौत और गृह्यसूत्र पाये गये हैं। 'मानवधर्मसूत्र' नहीं मिलने पर भी मानवधर्मशास्त्र नामक वर्त्तमान जो भृगुप्रोक्त मनुसंहिता प्रचलित है, वही मानवधर्मसूत्रके श्लोकाकारमें निवद्धरूप है। सुप्रसिद्ध मीमांसक कुमारिल भट्टने लिखा है, "प्रातिशाख्यकी तरह प्रत्येक चरणमें ही धर्मशास्त्र और गृह्य ग्रन्थ पढ़ा जाता है।" यहां 'धर्मशास्त्र' ही सम्भवतः 'धर्मसूत्र' वाच्य है, इस हिसावसे मानवधर्म शास्त्रका अधिकांश श्लोक गृह्यसूत्रका समकालीन होना आश्चर्य नहीं है। वेदशब्दमें गृह्य और धर्मसूत्रमें लिखा गया है, कि मुनिने पहले वैदिकयागकर्मनिर्वाहार्थ श्रौतसूत्रकी रचना की। फिर वे ही गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र कर गये हैं। वे ही शिष्योंके सहजमें मुखस्थ होनेके लिये जो श्लोकाकारमें धर्मशास्त्रकी रचना नहीं कर सकते, यह अविश्वास नहीं किया जा सकता। आपस्तम्ब-धर्मसूत्रमें भविष्य-पुराणका श्लोक उद्धृत हुआ है। सुतरां पुराणकी तरह धर्मशास्त्रका भी उस समय श्लोकाकारमें रहना सम्भव है। रामायण और महाभारतमें प्रचलित मनुसंहिता या मानवधर्मशास्त्रका श्लोक ही अधिकांश उद्धृत देखा जाता है इसीसे प्रचलित मानवधर्मशास्त्रको हम रामायण महाभारतसे प्राचीन समझते हैं। फिर प्रचलित मनुसंहिता भृगुप्रोक्त कह कर प्रचलित है। इसका प्रथम अध्याय पढ़नेसे मालूम होगा, कि भगवान् मनुने पहले जो वर्णन किया था, वही २यसे १२श अध्यायमें विवृत हुआ है तथा उक्त अंशमेंसे ही रामायण महाभारतादिमें श्लोक उद्धृत होनेसे इन अध्यायकी श्लोकावलि भगवान् मनुकी ही उक्ति समझी जायेगी। यजुर्वेदको मैत्रायणीय शाखामें ६ विभागके मध्य मानव एक है। मानवस्मृति इस मानवचरणके लिये ही पहले रची गई है और क्रमशः संहिताकारमें वर्त्तमान अवस्थाको प्राप्त हुई है। मनुसंहिताकी आलोचना करनेसे ही मालूम होगा, कि इसमें वैदिक या आर्षभाषाका अभाव नहीं है तथा लौकिक संस्कृत भाषा भी है। इससे हम आसानीसे कह सकते हैं, कि वैदिक या श्रौतयुगमें ही आदि मानवशास्त्र रचा गया। सर विलियम जोन्सने पहले अंगरेजीभाषामें मनुसंहिताका अनुवाद किया तथा अपने अनुवादकी उपक्रमणिकामें वे लिख गये हैं, कि १२५०से ५०० खृष्टपूर्वाब्दके मध्य प्रचलित मानवधर्मशास्त्र रचा गया। किन्तु डाक्टर वुरनल, वुह्लर आदि पाश्चात्य पण्डितोंने अपनी अपनी गवेषणा द्वारा यह प्रमाणित करनेकी चेष्टा की है, कि वह १लीसे ५वीं सदीके मध्य ब्राह्मणाभ्युदयके साथ प्रकाशित हुआ। यद्यपि दोनों महात्माकी गवेषणा प्रशंसनीय है, तथापि हम जरा भी उनके मतानुवर्त्ती न हो सके। हमने पहले ही मनुसंहिताके प्रतिपाद्य विषयोंकी आलोचना कर देखा है, कि इसके मध्य भारतीय आर्य्यसमाजकी अति प्राचीन अवस्थाका चित्र ही प्रदर्शित हुआ है। हिमालय और विन्ध्यपर्वतकी सीमाके मध्य उस समय आर्यावर्त्त या आर्य्यसमाज था। यहां तक, कि अङ्गवङ्ग और कलिङ्ग अर्थात् प्राच्य भारत

तथा सौराष्ट्र या दक्षिण-पश्चिम भारत तक आर्यावासका अयोग्य या हीन देश समझा जाता था। दाक्षिणात्यमें आर्यसमाजकी प्रतिष्ठाका कोई भी चिह्न मनुसंहितामें नहीं है। वरन पौण्ड्रक, अङ्ग और द्राविड़देशवासी क्षत्रियोंको वृषल या आर्यवैदिकाचारविहीन तथा अन्ध्रोंको अति हीन वन्य व्याधके मध्य गिना गया है। फिर १ली सदीके बहुत पहले आन्ध्र और द्राविडमें जो आर्यावर्त्तसे ब्राह्मणने जा कर उपनिवेश बसाया था और वैदिकाचारपरायण क्षत्रिय राजगण जो वहां आधिपत्य करते थे, उसका उल्लेख करना ही निष्प्रयोजन है। मनुसंहितामें यवन, शक, पारद, पह्लव और चीन जातिका उल्लेख रहनेके कारण बहुतेरे कहना चाहते हैं, कि अलेकसन्दरके अनुवर्त्ती ग्रीक, स्किदीय और पार्थिव लोगोंके भारतमें प्रवेश करनेके बाद मनुका वचन रचा गया था। पार्थिव या पह्लव लोगोंने २री सदीमें भारतवर्षमें आ कर आधिपत्य फैलाया था। अतएव मनु उसके बादकी रचना है। परन्तु हमारा कहना है, कि मनुने कहीं भी उन सब जातियोंको आर्यावर्त्त या भारतवासी कह कर उल्लेख नहीं किया। उनके निर्दिष्ट आर्यावर्त्तकी पूर्व और पश्चिम सीमामें समुद्र विद्यमान था। वर्त्तमान भूतत्त्वविदोंने परीक्षा कर देखा है, कि एक समय राजमहल तक समुद्र विस्तृत था। इधर ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मणकी आलोचना करनेसे मालूम होगा, कि सप्त सिन्धुनिषेवित आर्यावासभूमिकी पश्चिमी सीमा पारस्योपसागरकी लहरको चुम्बन करती थी। इस सीमाके बाहर यवन या Ionian, शक या Scythian, पारद या Parthian, चीन या Chinese गणका वास है। मनुका दारद अभी दार्दिस्तान और खश लोगोंकी वासभूमि 'खसघर' या 'खासगर' कहलाता है। कहना नहीं पड़ेगा, कि ईसाजन्मके कई सदी पहलेसे ही उन सब जातियोंका सन्धान पाया गया है। यवन, शक, पारद आदि शब्द देखो। एक प्रश्न उठता है, कि मनुके टीकाकार कल्लूकभट्टने मनुवर्णित 'पाषण्डिनः' (४।३०) शब्दका 'शाक्यभिक्षुक्षपणकादयः' अर्थ किया है तथा मूल मनुसंहिताके हेतुशास्त्र आश्रयमें धर्ममूल वेदशास्त्राव माननाकारीको 'नास्तिक' (२।११) कहा गया है। इस परोक्ष प्रमाणसे बहुतेरे समझते हैं, कि वर्त्तमान मनुसंहिता बौद्धप्रभावके बाद रची गई है। इसके उत्तरमें हमारा इतना ही कहना है, कि मनुने कहीं भी बुद्ध या बौद्ध-भिक्षुका उल्लेख नहीं किया। मनुने हेतुशास्त्र द्वारा वेदनिन्दक या वेद विरोधी तार्किकोंको नास्तिक कहा है, वास्तविक हेतुशास्त्रकी निन्दा नहीं की है, वरन् परिषत् रचनाके सम्बन्धमें व्यवस्था है—

'त्रैविद्य' या त्रिवेदवेत्ता 'हैतुक' या श्रुतिस्मृतिका अविरुद्ध न्यायशास्त्रज्ञ 'तर्की' या मीमांसात्मक तर्कशास्त्रवित्, 'नैरुक्त' या वेदार्थनिपुण', 'धर्मपाठक' या धर्मशास्त्राध्यापक, ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ यही 'तीन आश्रमी' कमसे कम इसी प्रकार दश ब्राह्मणको ले कर परिषद् होगी। इस परिषद्से जो धर्म कह कर निर्णीत होगा, उसीको धर्म मानो, उससे विचलित न हो।*

इस हिसाबसे ब्राह्मणसमाजमें हैतुक या हेतुशास्त्रका स्थान बहुत ऊंचा था, यह अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा। फिर किसी किसी पण्डित महाशयके मतसे काण्वायनगणके आधिपत्यकालमें १ली सदीको जब आर्यावर्त्तमें ब्राह्मणप्रभाव सुप्रतिष्ठित था और वैदिकाचार प्रचलनका यथेष्ट आयोजन चल रहा था, मनुसंहिता उसी समयकी रचना है। परन्तु यह मत भी समीचीन प्रतीत नहीं होता। क्योंकि, मगधकी राजधानी पाटलिपुत्रके सिंहासन पर चन्द्रगुप्त, अशोक आदि शासनदण्ड परिचालन करते थे। उस मगधके सिंहासन पर मौर्यवंशध्वंसके बाद ब्राह्मण्यप्रतिष्ठापक शुङ्गमित्र और काण्वायनवंशका अभ्युदय हुआ। काण्वायनवंशके समय यदि मनुसंहिता रची गई होती, तो इस ग्रन्थमें अवश्य ही कण्ववंश और मगधका उल्लेख रहता। किन्तु हमें कहीं भी इन दोनों शब्दका आभासमात्र भी नहीं मिला। विशेषतः

---

* "त्रैविद्यो हैतुकस्तर्की नैरुक्तो धर्मपाठकः।
त्रयश्चाश्रमिणः पूर्वे परिषत् स्याद्दशावरा॥ १११
दशावरा वा परिषद्यं धर्मपरिकल्पयेत्।
त्र्यवरा वापि वृत्तस्था तं धर्मं न विचालयेत्॥" ११२
(मनु १२ अध्याय)

मगधके काण्वोंके समय रचित होनेसे इसमें प्राच्य भारतका गौरव घोषित होता। परन्तु ऐसा न हो कर उसके बदले प्राच्य भारतकी निन्दा ही की गई है। वेद की संहिता और ब्राह्मण युगमें पञ्जाब और पञ्जाबके पूर्व प्रान्तस्थ सरस्वती और दृषद्वतीप्रवाहित जनपद ही आर्यसभ्यताका केन्द्रस्थान समझा जाता था। आर्य और वेद शब्द देखो। मनुसंहितामें भी हम उसी प्रकार सरस्वती और दृषद्वतीप्रवाहित जनपद ही आर्य ब्राह्मणोंकी सर्वश्रेष्ठ वासभूमि कह कर परिचित देखते हैं। जो अयोध्या, मथुरा, माया या हरिद्वार तथा काशी रामायण और महाभारतके समयसे पुण्य भूमि कह कर गिना जाता था, मनुने उन सब सुप्राचीन पुण्यभूमिका उल्लेख नहीं किया है। अतएव उन सब स्थानोंकी प्रसिद्धि होनेके पहले ही मनुसंहिता रची गई थी, इसमें संदेह नहीं।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि मनुने त्रिमूर्त्तिका उल्लेख नहीं किया और उनके संहितारचनाकालमें आर्य ब्राह्मणसमाजमें प्रतिमापूजाका आदर नहीं था। यहां तक कि, उस समय शैववैष्णवादि विभिन्न सम्प्रदायकी उत्पत्ति भी नहीं हुई, अथवा सांख्य, योग, वेदान्त आदि दार्शनिक सूत्र भी नहीं रचे गये थे। मौर्यसम्राट् अशोककी अनुशासनलिपिकी आलोचना करनेसे जाना जाता है, कि उसके पहले या खृष्टपूर्व ४थी सदीमें बौद्धोंके आदि सूत्रग्रन्थ प्रकाशित हुए थे। उसमें हम नाना देवदेवीका पूजाका तथा मनुकथित ब्रह्मचर्यधर्मका आभास पाते हैं। उसके भी बहुत पहले २३वें निर्ग्रन्थोंका अभ्युदय हुआ। ७७७ ई०सन्‌के पहले पार्श्वनाथ स्वामी निर्वाणको प्राप्त हुए। इन पार्श्वनाथ स्वामीका मत सुप्राचीन जैनसूत्र ग्रन्थमें भी मिलता है, अथच मनुसंहितामें उसका कुछ भी आभास नहीं है। इस हिसाबसे वर्त्तमान मनुसंहिताको खृ० पूर्व ८वीं सदीकी पूर्ववर्त्ती स्मृति मान सकते हैं।

प्राचीन स्मृतिके टीकाकार और निबन्धकारगणने वृद्धमनु, वृहन्मनु आदि नामोंसे अनेक मनुवचन उद्धृत किये हैं। सम्भवतः मनुसंहिताके आदर्श पर परवर्त्तीकालमें विभिन्न व्यक्तिने मनुके नामसे वे सब स्मार्त्तग्रन्थ चलाये थे।

पहले ही गौतमधर्मसूत्रका प्रमाण उद्धृत कर दिखलाया गया है, कि अभी प्रचलित धर्मसूत्रोंके मध्य गौतमका धर्मसूत्र ही प्राचीन है, अथच इस धर्मसूत्रमें मनुका मत उद्धृत हुआ है और दूसरे किसीका भी नहीं। इस हिसाबसे मनु आदिधर्मशास्त्रकार कह कर जो प्रवाद प्रचलित है, वह बहुत कुछ प्रकृत समझा जाता है।

मनु देखो।

मानवधर्मशास्त्र केवल ब्राह्मणशासित भारतीय हिन्दू-समाजमें ही नहीं, बौद्धसमाजमें भी प्रचलित हुआ था। आज भी ब्रह्मदेशमें बौद्धसमाजके मध्य पालिभाषामें 'मनुसार' नामक जो धर्मग्रन्थ प्रचलित है, उसका सीमाविवाद और साक्षिप्रकरण अविकल मनुसंहितासे लिया गया है। ब्रह्मभाषामें जो 'दमथत्' या 'धर्मतत्त्व' नामक आईनग्रन्थ प्रचलित है*, उसके अष्टादश विवादपद, द्वादश प्रकारके पुत्र, तीन प्रकारके प्रतिभू, दायविभाग कालमें ज्येष्ठ पुत्रका विशेष अधिकार आदि अनेक विषयोंमें ही मनुसंहिताके साथ अविकल मेल है। ब्रह्मदेशके आईनग्रन्थ आधुनिक नहीं हैं। ब्रह्म, आराकन, पेगू आदि स्थानोंके बौद्धराजवंश बहुत दिनोंसे मनुके धर्मशास्त्रके अनुसार ही राज्यशासन करते आ रहे हैं। श्यामराज्यमें जो आईन प्रचलित है, वह भी पूर्वोक्त 'दमथत्' से ही सङ्कलित है। डाक्टर फुहररने दिखलाया है, कि ब्रह्मदेशमें ३री सदीसे धर्मग्रन्थ प्रचलित हुआ था। केवल श्याम, ब्रह्म और मलयद्वीप ही नहीं, जावा और वालिद्वीपमें भी हिन्दू औपनिवेशिकगण अति प्राचीन कालमें ही मानवधर्मशास्त्रको साथ ले गये थे। आज भी वालिद्वीपमें संस्कृत और कविभाषामें खण्डित मानव धर्मशास्त्र देखा जाता है।† इस अवस्थामें मानवधर्मशास्त्रके अतिप्राचीनत्व और सभ्यजगत्‌के धर्मग्रन्थ या आईन समूहके मध्य श्रेष्ठत्वके सम्बन्धमें किसीको भी आपत्ति नहीं होगी।

पहले ही कहा जा चुका है, कि धर्मसूत्रकारोंने कई

---

* Tagore Law Lectures, 1883, by J. Jolly, p. 16

† Friederich Voolopig Verslag, in the Transaction of the Batavian Society, Vol XXII and Weber's Ind. Stud Vol. II p 124-119

जगह जो सब मनुवचन उद्धृत किये हैं, वे प्रचलित मनुसंहितामें भी मिलते हैं। यथा —गौतमधर्मसूत्र २१।७= मनुसंहिता ११।९०।९२,-१०४ १०५। यहां तक, कि वाशिष्ठधर्मसूत्रके ३९ स्थलोंमें मनुवचन उद्धृत हुए हैं। उनका वर्त्तमान मनुके साथ ठीक मेल खाता है। केवल मेल ही नहीं, गद्य और पद्य दोनों ही प्रकारसे वचन उद्धृत हुए हैं। इससे मालूम होता है, कि गद्यांश मानवधर्मसूत्रसे और पद्यांश मनुसंहिता या मानवधर्मशास्त्रसे लिया गया है। इस हिसाबसे प्रचलित मानवधर्मशास्त्रका कुछ अंश जो गौतम और वशिष्ठधर्मसूत्र रचित होनेके पहले प्रचलित था, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु यह सामञ्जस्य देख कर कोई कोई पाश्चात्य पण्डित कहते हैं, कि मानवमैत्रायणीय शाखाकी आलोचनासे जाना जाता है, कि कृष्ण यजुर्वेदके कठ नामसे एक प्रसिद्ध चरण था। अभी कठसूत्र विलुप्त होने पर भी प्रचलित विष्णुस्मृति इस कठसूत्रकी विवृति या परिणति है। प्रचलित मनु और विष्णुस्मृतिके मध्य कई जगह यथेष्ट सामञ्जस्य रहनेसे मालूम होता है, कि दोनोंने ही कृष्णयजुर्वेदकी उस कठशाखासे अपना अपना उपादान ग्रहण किया है। किन्तु सुप्राचीन धर्मसूत्रकारगण स्पष्ट ही मनुकी दोहाई दे गये हैं। इस कारण कठवादको समीचीन नहीं कह सकते।

गृह्य और धर्मसूत्रोंका परिचय पहले ही दिया गया है। मानवगृह्य और धर्मसूत्रके साथ मानवधर्मशास्त्र या मनुसंहिताका जैसा सम्बन्ध है, गौतमादिरचित गृह्य और धर्मसूत्रके साथ गौतमादिरचित संहिताका भी वैसा ही सम्बन्ध है। मन्वादिकी तरह आश्वलायनस्मृति भी पाई गई है। इसे भी बहुतेरे आश्वलायनगृह्यसूत्रका श्लोकाकार मानते हैं, किसी किसीके मतसे प्रसिद्ध मीमांसक कुमारिलभट्टने आश्वलायन गृह्यसूत्रको आश्वलायनस्मृति रूपमें प्रकाश किया है। यह भी अवश्य स्वीकार करनेयोग्य है, कि मनुसंहिता नित्यपाठ्य और सर्वजनका समादृत होना इसका जिस प्रकार प्राचीन पाठ विकृत नहीं हुआ है, परन्तु गौतमादिरचित संहिता उस प्रकार सर्वजनसमादृत नहीं रहने तथा निर्दिष्ट चरण या शाखाके मध्य सीमाबद्ध होनेके कारण परवर्त्ती कालमें बहुत कुछ रूपान्तर या पाठविकृति हुई है। पहले कह आये हैं, कि मानवधर्मशास्त्र कृष्णयजुर्वेदीय मैत्रायणीय शाखाके मानवचरणका आदिधर्मशास्त्र होने पर भी अन्यान्य शाखाएं भी पहले इसीका मत ग्रहण कर चली थीं। परन्तु देश, काल और पात्रभेदसे इसका सुप्राचीन मत कहीं कहीं देशाचार और समयोपयोगी नहीं होने तथा विभिन्न चरणके मध्य पाठ, अर्थ और मीमांसा ले कर मतान्तर उपस्थित होनेसे उन सब भिन्न भिन्न चरणोंके अपने अपने समाजका उपयोगी बना कर गृह्य और धर्मसूत्र प्रणयन करता है। इसी कारण भिन्न भिन्न स्मृतिमें मतभेद देखा जाता है। उक्त गृह्यसूत्रोंके मध्य मानवगृह्यसूत्रकी तरह और भी जो दो गृह्यसूत्र एक समय आर्यसमाजमें विशेष समादृत थे, उनका नाम गोभिल गृह्यसूत्र और पारस्करगृह्यसूत्र था। प्राचीन स्मार्त्तनिबन्धकारोंमेंसे बहुतोंने ही इन दोनोंका सूत्रवचन प्रमाणस्वरूप व्यवहार किया है। इन दोनों गृह्यसूत्रके ऊपर अनेक भाष्य, टीका और टिप्पनी रची गई हैं। गोभिलसूत्र सामवेदीय और पारस्कर यजुर्वेदीय है, इस कारण सामवेदीय वाशिष्ठ-धर्मसूत्रके साथ गोभिल गृह्यसूत्रका तथा यजुर्वेदीय मानव और पारस्कर गृह्यसूत्रके साथ याज्ञवल्क्यसंहिताका बहुत कुछ ऐक्य देखा जाता है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि याज्ञवल्क्यका धर्मशास्त्र मनुसंहिताके बहुत पीछे मिथिलामें प्रचारित हुआ। शुक्लयजुर्वेद या वाजसनेयसंहिताके साथ स्मृतिका विशेष सम्बन्ध है तथा वैदिक सूत्रयुगका अन्तिम निदर्शन माना जाता है। मानवगृह्यसूत्र और विष्णुस्मृतिके प्रतिपाद्य अनेक विषय याज्ञवल्क्यस्मृतिमें सन्निवेशित देखे जाते हैं। पहले ही आभास दिया गया है, कि अनेक विषयोंमें मनुसंहिताके साथ विष्णुस्मृतिका मेल है। फिर विष्णुस्मृतिमें साम्प्रदायिक प्रभाव और नाना तीर्थस्थानोंका उल्लेख रहनेसे वह जो मनुसंहिताके बहुत पीछे रचा गया है, उसमें जरा भी सन्देह नहीं। याज्ञवल्क्यस्मृति इसके भी बहुत पीछे रची गई है। विष्णुस्मृतिकारने कूटशासनकर्त्ताको प्राणदण्ड तथा तुलामान कूटकारी और कूटवादीका उत्तम साहस दण्ड

की व्यवस्था दी है (५।६, १२२-१२३) परन्तु कूटमुद्राकी कोई भी बात नहीं लिखी है। याज्ञवल्क्यने 'नाणक' नामक मुद्राका उल्लेख और कूटमुद्राकारीका विशेष दण्ड-विधान किया है। मनु या विष्णुस्मृतिके रचनाकालमें नाणक या इस प्रकारकी और किसी मुद्राका प्रचलन नहीं था, अतएव याज्ञवल्क्यस्मृति विष्णुस्मृतिके पीछे रची गई है, इसमें जरा भी संदेह नहीं। पाश्चात्य पण्डितोंका कहना है, कि याज्ञवल्क्य स्मृतिको १म शताब्दीके पहलेकी कदापि नहीं मान सकते। परन्तु हम लोग उसकी अपेक्षा कहीं प्राचीन समझते हैं। याज्ञवल्क्यके समय बुद्ध, जिन, अर्हत् आदि शब्द प्रचलित नहीं थे, फिर भी उन्होंने 'मुण्ड' और 'कषायवास' शब्द द्वारा बुद्धशिष्योंका ही आभास दिया है। इस हिसाबसे हमें ऐसा प्रतीत होता है, कि जिस समय बुद्ध अथवा बुद्धका मत सर्वत्र समादृत नहीं हुआ, और न बुद्धशिष्योंकी ही स्वतन्त्र आख्या हुई, अथच मुण्डितशिर और कषायवासधारी बुद्धशिष्यगण सर्वत्र विचरण किया करते थे, उस समय प्रायः खृ० पूर्व ४थी या ५वीं सदीमें इस स्मृतिका रचनाकाल है। नये नये सम्प्रदायका उद्भव, धर्ममतका पार्थक्य और आचार-व्यवहारका परिवर्तन देख कर ही याज्ञवल्क्य स्मृति रची गई। इस कारण मनु, विष्णु आदि धर्मशास्त्रकी अपेक्षा यह स्मृति सुश्रृङ्खल और सुनियमबद्ध तथा समयोपयोगी हुई थी, इसीसे बौद्धप्रभावके समय तथा ब्राह्मणधर्मके पुनरभ्युदयकालमें हिन्दूधर्माधिकरणमें यह स्मृति विशेष आदृत थी और प्रधान प्रधान स्मार्त्त पण्डित इसके ऊपर निबन्ध और नाना टीकाटिप्पनीकी रचना कर हिन्दूसमाजशासनकी व्यवस्था कर गये हैं।

याज्ञवल्क्य-स्मृतिमें याज्ञवल्क्यको छोड़ मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, सम्वर्त्त, कात्यायन, वृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप और वशिष्ठ, इन २० स्मृतियोंके नाम पाये जाते हैं। अतएव याज्ञवल्क्य स्मृति रचनाके समय ये सब स्मृति जो प्रचलित थीं, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। पहले ही वृद्धगौतमका वचनके अनुसार दिखलाया गया है, कि वृद्धगौतमस्मृतिकारने ५७ स्मृतिका उल्लेख किया है। नन्दपण्डितने अपनी केशव-वैजयन्ती नामक विष्णुस्मृतिटीका (८३।८) और मित्र मिश्रने अपने वीरमित्रोदयमें इसी प्रकार ५७ स्मृतिका नाम दिया है। उनमेंसे मित्रमिश्रने इस प्रकार विभाग किया है, १८ मुख्य, १८ उप और २१ अतिरिक्त स्मृति। परंतु लघु, वृहत् और वृद्ध आख्यायुक्त स्मृति तथा एक नाम होने पर भी विभिन्न पाठ और विषययुक्त विभिन्न शाखाको स्मृतिको एकत्र करनेसे सौसे अधिक स्मृति होंगी, संदेह नहीं। हमें मालूम होता है, कि याज्ञवल्क्य स्मृतिके प्रचारकालमें जब नाना सम्प्रदायका अभ्युत्थान हुआ, उस समय वैदिकाचारपरायण स्मार्त्तसमाज अवसन्न हो गये थे। याज्ञवल्क्यके उस समाजरक्षाकी व्यवस्था करने पर भी तत्पूर्वप्रचलित मनु आदि दो स्मृतियोंको छोड़ अधिकांश स्मृति ही लुप्तप्राय या विरलप्रचार हो गई थी। पीछे समस्त भारतमें क्रमशः जैन और बौद्धप्रभाव विस्तारके साथ नाना स्थानोंमें दुर्बल ब्राह्मणसमाज प्राचीन ऋषियोंके नामसे छोटी छोटी स्मृति चला रहे थे। इसी कारण एक ही नाम पर विभिन्न विषयक स्मृति पाई जाती हैं, अथच उस नामकी आदि स्मृति साम्प्रदायिक बाढ़में बह गई थी। उसके दो एक वचन या विषय स्मार्त्त-समाजने कण्ठस्थ कर लिये थे। इसी कारण प्राचीन निबन्धोंमें जो सब स्मृतिवचन देखे जाते हैं उस नामकी स्मृति यद्यपि मिलती है, पर निबन्धधृत वचनोंमें मेल नहीं खाता। प्रचलित छोटी छोटी स्मृतियोंमें आधुनिकताका स्पष्ट निदर्शन पाया जाता है।

पहले दिखलाया गया है, कि बौद्धसमाजने भी राज्यशासनके लिये मनुस्मृतिको ग्रहण किया था, इस कारण बौद्धप्रभावके समय बहुत-सी प्राचीन स्मृतियां विलुप्त होने पर भी मनुस्मृति विलुप्त नहीं हो सकी। इधर स्मार्त्त ब्राह्मणसमाज अपना उपयोगी याज्ञवल्क्य स्मृतिकी बड़ी सावधानीसे रक्षा कर रहे थे।

ब्राह्मणधर्मके पुनरभ्युदयकालमें जो सब स्मृति रची गई थी, उनमें पराशर और नारद ये ही दो प्रधान थे। यद्यपि अन्यान्य स्मृति भी वर्त्तमान कलियुगमें रची गई थी, तथापि ब्राह्मणस्मार्त्तगण बौद्धप्रभावकालसे ही प्रकृत

कलियुगका आरंभ समझते थे। इसी कारण पराशर-स्मृति कलियुगके लिये रचित स्मृति घोषित हुई थी। बौद्ध और जैनप्रभावसे भारतीय आर्यसमाजका धर्मनैतिक आचार, यज्ञपूजा और प्रायश्चित्तविधि आदि बहुत कुछ परिवर्त्तित हुई थी। इसीसे मालूम होता है, कि नारद-स्मृतिकारने उन सब विषयोंमें हस्तक्षेप न करके केवल राजधर्म या राज्यशासनविधिको ही लिपिबद्ध किया था। बौद्ध और जैनसमाजने मनुकथित व्यवहार-राजधर्म भक्तिके साथ ग्रहण किया था, यह पहले ही कहा जा चुका है। इसीसे ज्ञात होता है, कि नारदस्मृतिकारने अपने ग्रन्थको मनुस्मृतिका ३य संस्करण कह कर प्रकाश किया है।

बौद्धशासनकालमें और ब्राह्मणसमाजके पुनरभ्युदय-कालमें उन दोनों स्मृतियोंका बहु प्रचार रहनेसे देश, काल, पात्र और सम्प्रदायके भेदसे उपयोगी बना लेने के लिये उन दोनों स्मृतिके अनेक संस्करण हुए थे। अभी उनमेंसे केवल दो तीन संस्करणका संधान पाया गया है। पराशर और नारद जब दोनों रचे गये उस समय उनका आकार उतना बड़ा नहीं था, किन्तु पीछे जब २य या ३य संस्करण हुआ, तब पराशरका आकार तिगुना और नारदका दुगुना बढ़ गया। वृहदाकार पराशर 'वृहत्पराशर' नामसे और नारदस्मृति 'नारदीय धर्मशास्त्र' नामसे प्रचलित हुआ। वृहत्पराशरका परिचय पहले ही दिया गया है। पण्डितवर बुहर साहबने नारदका दूसरा संस्करण आविष्कार किया। यह संस्करण जन साधारणमें अप्रचलित रहने पर भी असहायकी तरह सुप्राचीन टीकाकारने इस संस्करणका प्रामाणिकभाष्य रचा। उनके परवर्त्ती विज्ञानेश्वरने मिताक्षरामें असहायका नारदीय-भाष्य उद्धृत किया है।

मनुके भाष्यकार मेधातिथि ८वीं सदीमें विद्यमान थे।* असहाय उनके बहुत पहले हुए।† इस हिसाबसे १लीसे २री सदीके मध्य १म संस्करण और ३री ४थी सदीके मध्य नारदका २य संस्करण प्रचारित होना ही सम्भव है। नारद स्मृतिमें 'दीनार' शब्दका उल्लेख है। 'दीनार' शब्द लाटिन Danarius शब्दसे निकला है। खृ० पूर्व २०७ अब्दमें रोममें Denarius मुद्रा प्रचलित हुई। इस समय और तत्परवर्त्ती १ली शताब्दी तक रोमके साथ भारतका विशेष संस्रव था। रोमक ऐतिहासिक प्लिनिने १ली सदीके पराक्रान्त भारतीय राजाओंका नामोल्लेख किया है। यहां तक, कि १ली सदीमें उत्कीर्ण रोमक दीनार भारतवर्षके नाना स्थानोंसे आविष्कृत हुए हैं। अतः १ली शताब्दीमें नारदस्मृति प्रकाशित होना ही सम्भवपर है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि मनु, याज्ञवल्क्य और गौतमके सिवा अधिकांश सुप्राचीन स्मृति विलुप्त हुई थी। पराशर और नारदस्मृति प्रचारित होनेके पुनरुद्धार-की चेष्टा हुई थी या नहीं, संदेह है और तो क्या, वाराणसीवासी सर्वप्रधान स्मार्त्तवंशमें उत्पन्न स्मार्त्तप्रवर कमलाकरने १७वीं सदीमें मनु याज्ञवल्क्य और गौतम स्मृतिसे साक्षात्भावमें प्रमाण उद्धृत करने पर भी कात्यायन, देवल, प्रजापति और वृहस्पति आदिके वचन कल्पतरु, मदनरत्न, पारिजात, अपरार्क आदिका निबन्ध-धृत कह कर प्रयोग किया है। अतः मूल कात्यायन आदि स्मृतियोंका जो उस समय विरल प्रचार हो गया था, इसमें संदेह नहीं। उक्त स्मृतिनिबन्धोंमें देवल, वृहस्पति आदि स्मृतिके जो सब वचन उद्धृत हुए हैं, आश्चर्यका विषय है, कि उस नामकी स्मृतिमें उसका अधिकांश वचन ही नहीं मिलता।

प्राचीन भाष्य और टीकाकार।

मनु और याज्ञवल्क्यस्मृतिके सुप्राचीन भाष्य अधिकांश नष्ट हो गये हैं। अभी जो सब भाष्य और टीका मिलती है, उनमें असहाय और मेधातिथिरचित मनुस्मृति भाष्य ही सर्वप्राचीन है। पहले कहा जा चुका है, कि मेधातिथि ८वीं सदीमें विद्यमान थे। उन्होंने जब असहायका मत उद्धृत किया है, तब असहायका उनके भी दो तीन सौ वर्षका होना सम्भव है।

मेधातिथिको बहुतोंने दाक्षिणात्यका आदमी कहा है।

* Tagore's Law Lectures 1880, by Rajkumar Sarvadhikari, p 326

† Tagore's Law Lectures 1883, by Prof Jolly p. 3

उसका कारण यह है, कि उन्होंने उदीच्यप्रसङ्गमें 'कम्बलाजिन'का व्यवहार किया है, किन्तु हम इसे विश्वास नहीं करते। राढ़ीय ब्राह्मणोंके प्राचीन कुलकारिका हरिमिश्रके ग्रन्थमें लिखा है, कि ६५४ शक या ७३२ ई०मे क्षितीश, मेधातिथि आदि पांच साग्निक ब्राह्मण यज्ञकर्म करनेके लिये गौड़ाधिप आदिशूरकी सभामें आये थे। मेधातिथि 'वीरसूनु' कह कर परिचित हुए हैं। इन्हीं के पुत्र श्रीहर्ष थे। मेधातिथिने निज भाष्यमें अपनेको वीरस्वामीका पुत्र कहा है। उनका पूर्ववास कान्यकुब्जमें था। कान्यकुब्जवासीके निकट भी नेपाल औदीच्य है। गौड़देशमे पहले नेपाल और भोटका कम्बल प्रचलित था, इस कारण प्राचीन बङ्गला ग्रन्थमें भोटकम्बलका उल्लेख है। नेपाल और भोट गौड़वासीके निकट औदीच्य है। इस अवस्थामें कान्यकुब्ज और गौड़वासी मेधातिथि नेपाली 'कम्बलाजिन' औदीच्य माने गे, यह सङ्गत है। सुप्रसिद्ध कुमारिलभट्ट ८वीं सदीके शेष भागमें विद्यमान थे। वे एक वैदिक मार्गप्रवर्त्तक समझे जाते थे। साग्निक मेधातिथि भी उसी प्रकार गौड़में वैदिकाचारकी अन्यतम कह कर प्रसिद्ध थी।

मेधातिथिने अपने भाष्यमें बौद्धजैनादिका मत खण्डन किया है तथा आपस्तम्ब, गौतम, नारद, यम, विष्णुस्मृति, कुमारिलका वार्त्तिक और पतञ्जलिका महाभाष्य उद्धृत किया है।

मेधातिथि ७२० ई०में गौड़वासी हुए थे, परन्तु इसके बाद ८० वर्षके भीतर ही गौड पालाधिकारभुक्त हुआ। गौड़बङ्ग बहुत दिनों तक बौद्धशासनमें रहनेसे पठन-पाठनके अभावमें मेधातिथिका भाष्य विलुप्त होने पर था। आश्चर्यका विषय है कि यमुनातटवासी काष्ठाके प्रसिद्ध धार्मिक राजा मदनपालने इस भाष्यका उद्धृत किया, इससे मालूम होता है, कि मेधातिथिके कान्यकुब्जमें रहते समय मनुभाष्य रचा गया। यहां उस समय वैदिक धर्मप्रवर्त्तक यशोधर्मदेव विद्यमान थे। कुमारिलके शिष्य भवभूतिने भी उनकी सभाको अलङ्कृत किया था तथा उन्हीं से शायद मेधातिथि कुमारिलके मीमांसावार्त्तिकसे अवगत हुए थे। गौड़ आने पर उनके भाष्यकी नकल कान्यकुब्ज अञ्चलमें प्रचलित होना असम्भव नहीं। यही कारण है, कि पश्चिमाञ्चलसे राजा मदनपाल मेधातिथिका भाष्य उद्धार करनेमें समर्थ हुए थे।

मेधातिथिके बाद ११वीं सदीमें भोजराजने एक मनुटीकाकी रचना की। अभी वह टीका नहीं मिलती है। पीछे कान्यकुब्जपति गोविन्दराजने १२वीं सदीमें एक मनुटीका प्रकाशित की। यही टीका छप गई है। इसके बाद नारायणकृत मनुस्मृति-वृत्त रची गई। उनकी वृत्ति संक्षिप्त होने पर भी उन्होंने स्वाधीन भावमें विशेष-विशेष श्लोककी टीका और पूर्ववर्त्ती टीकाकारोंके निबन्धकी समालोचना की है। सर्वज्ञनारायणके बाद १५वीं सदीमें वारेन्द्रकुलतिलक कुल्लूकभट्टने 'मन्वर्थमुक्तावली' नामक प्रसिद्ध टीका लिखी। इस टीकाका सर्वत्र आदर है।

मेधातिथिके बाद ही मिताक्षरानाम्नी याज्ञवल्क्यटीका रचयिता परमहंस परिव्राजक चार्य्य विज्ञानेश्वरका नाम विशेष उल्लेखयोग्य है। ९९७ से १०३० शकके मध्य चालुक्यराज विक्रमादित्यकी सभामें वे रहे थे। असहाय और मेधातिथिको छोड़ उन्होंने और भी कई प्राचीन भाष्यकारका नामोल्लेख किया है। परन्तु वे सब भाष्य या टीका अभी नहीं मिलती।

चालुक्यराज विक्रमाङ्कदेवका प्रभाव जिस प्रकार समस्त दाक्षिणात्यमें विस्तृत हुआ था, परमहंसप्रवर विज्ञानेश्वरकी ऋजुमिताक्षरा भी उसी प्रकार समस्त भारतवर्षमें प्रचलित हुई थी। मुसलमानी अमलके अन्तमें इसका विरल प्रचार होने पर भी अङ्गरेजी अमलमें महात्मा कोलब्रुक साहबने जब इस श्रेष्ठ टीकाका अङ्गरेजी अनुवाद कर प्रचार किया, तबसे फिर मिताक्षरा पूर्ववत् समस्त भारतमें व्यवहारजीवियोंमें भी समादृत हुई है।

विज्ञानेश्वरके पहले विश्वरूप नामक एक व्यक्तिने याज्ञवल्क्य-टीकाकी रचना की थी। वह टीका अभी नहीं मिलती है। विज्ञानेश्वरके समय या कुछ समय बाद शिलाहारराज अपरार्क या अपरादित्यने ११३४ से ११५० ई०के मध्य एक बृहत् याज्ञवल्क्यस्मृतिका भाष्य प्रणयन किया। ये कोङ्कणप्रदेशमें पुरी नामक स्थानमें राज्य करते थे। उनका यह भाष्य मिताक्षराकी तरह सर्वजन-

परिचित नहीं होने पर भी परवर्त्ती स्मृतिचन्द्रिका, चतुर्वर्गचिन्तामणि, मदनपारिजात आदि प्रधान प्रधान स्मृतिनिबन्धमें इस अपरार्कका मत उद्धृत हुआ है तथा भाष्यग्रन्थ होने पर भी 'याज्ञवल्क्यधर्मशास्त्रनिबन्ध' नामसे भी इसकी प्रसिद्धि हुई थी। अपरार्कने कहीं भी विज्ञानेश्वरकी मिताक्षरा उद्धृत नहीं की, अथच दोनों ग्रन्थमें कई जगह एक ही वचन उद्धृत हुआ है, इससे बोध होता है, कि दोनोंने ही पुरातन किसी एक ग्रन्थका साहाय्य पाया था। शिलाहारराज अपरार्कने अपनेको जीमूतवाहनका वंशधर बतलाया है। कोई कोई उक्त जीमूतवाहन और दायभागके रचयिता जीमूतवाहनको एक व्यक्ति समझते हैं, परन्तु दोनों ही सम्पूर्ण भिन्न व्यक्ति, भिन्न जातीय, भिन्न प्रदेशवासी और भिन्न समयके आदमी थे। शिलाहारराजवंशके पूर्वपुरुष क्षत्रिय और कोङ्कणवासी, दायभागके रचयिता जीमूतवाहन गौडवासी राढीय ब्राह्मण पारिभद्र वा पारियल गाञी थे ये शिलाहार, जीमूतवाहनके बहुत पीछे हुए। अपरार्कके पूर्वपुरुषके साथ इस प्रकार नामसादृश्य रहनेके कारण कोई कोई अपरार्कमतको प्राचीन गौडीय मानते हैं।

अपरार्कके बाद राढीय ब्राह्मण साहुडियानग्रामी महामहोपाध्याय शूलपाणिकी 'दीपकलिका' नामक संक्षिप्त याज्ञवल्क्यटीका मिलती है। संक्षिप्त होने पर भी नारायणकी संक्षिप्त मनुटीकाकी तरह दीपकलिकामें याज्ञवल्क्यस्मृतिके प्रयोजनीय श्लोकोंकी अच्छी व्याख्या है। रघुनन्दन और कमलाकर दोनोंने ही शूलपाणिका मत उद्धृत किया है। ऐसी हालतमें शूलपाणिका १५वीं सदीके बहुत पहले आविर्भाव हुआ है, इसमें जरा भी संदेह नहीं।

इसके बाद सुप्रसिद्ध स्मार्त्त मदनपारिजातके रचयिता विश्वेश्वर भट्टने राजा मदनपालके आदेशसे १३६० से १३७० ई०के मध्य सुबोधिनी नामक मिताक्षराटीका प्रकाशित की।

विश्वेश्वर भट्टकी टीकाके बाद नन्दपण्डितने प्रमिताक्षरा नामक मिताक्षराकी एक टीका रची। कोई कोई कहते हैं, कि नन्दपण्डित इस ग्रन्थको समाप्त नहीं कर सके थे।

लक्ष्मीव्याख्यान' या 'बालम्भट्टि' नामक मिताक्षराके व्यवहार अध्यायकी और भी एक टीका मिलती है। वैद्यनाथ पायगुण्डकी स्त्री और तमालकृष्णकी कन्या श्रीमती लक्ष्मीदेवीने इस सुन्दरटीकाकी रचना की। उन्हींके नामानुसार यह टीका 'लक्ष्मीव्याख्यान' कहलाई। भारतीय स्मार्त्तसमाजमें ऐसी स्मार्त्तविदुषी विरल है, इस कारण महाराष्ट्रके पण्डितसमाज बड़ी भक्तिके साथ 'लक्ष्मीव्याख्यान'का पाठ करते हैं। लक्ष्मीदेवीने अपने प्रिय पुत्र बालम्भट्टके नामानुसार अपना ग्रन्थ प्रचार किया, इस कारण स्मार्त्तसमाजमें यह टीका 'बालम्भट्टि' नामसे ही परिचित है।

बालम्भट्टिके कुछ पहले मित्रमिश्रने याज्ञवल्क्यस्मृतिके ऊपर 'वीरमित्रोदय' नामकी एक बड़ी टीका लिखी। टीका होने पर भी अपरार्ककी तरह यह मित्रोदय ग्रन्थ निबन्धमें गिना जाता है। निबन्धमें इसका विषय आलोचित हुआ है।

मनु और याज्ञवल्क्यके बाद ही वर्त्तमान स्मार्त्त समाजमें विष्णु और पराशरका आदर है। नन्दपण्डितकी केशव वैजयन्ती नामक विष्णुस्मृतिकी टीका पढ़नेसे मालूम होगा, कि पहले अनेक प्राचीन टीका थीं जो अभी नष्ट हो गई हैं। अभी नन्दपण्डितकी 'केशव वैजयन्ती' या विष्णुस्मृतिविवृति एक उपादेय स्मार्त्तग्रन्थ कह कर परिचित है। वाराणसीवासी महाराज केशव नायकके उत्साहसे धर्म्माधिकारी रामपण्डितके पुत्र नन्दपण्डितने १६७९ संवत् (१६२२ ई०में) इस ग्रन्थकी रचना की।

पराशरस्मृतिके टीकाकारोंमें माधवाचार्य्य ही प्रथम थे, यह बात 'पराशरस्मृतिविवृति'में माधवाचार्य्य स्वयं लिख गये हैं—

> "पराशरस्मृतिः पूर्वैं न व्याख्याता निबन्धृभिः।
> मयातो माधवाचार्य्येण तद्व्याख्याया प्रयत्यते ॥"

माधवकी 'पराशरस्मृतिविवृति' ही 'पराशरमाधव' कहलाती है। यह सुबृहत्ग्रन्थ पराशरस्मृतिकी टीका कह कर गण्य होने पर भी यथार्थमें यह दाक्षिणात्यमें प्रधान और प्रामाणिक स्मृतिनिबन्ध समझा जाता है। माधवाचार्य्यने बौद्धादिका कुमत निराश और वैदिकमार्ग

प्रवर्त्तनके लिये जो सब धर्मग्रन्थ प्रचार किये थे, उनमेंसे यह पराशरस्मृतिव्याख्या एक है। यह केवल पराशरस्मृतिकी श्लोकविवृति नहीं है, समस्त आर्यधर्मशास्त्रका सार-संग्रह है। उदाहरण स्वरूप इतना ही कहना यथेष्ट होगा, कि पराशरके एक श्लोककी व्याख्यामें माधवाचार्यने समस्त राजधर्म लिपिबद्ध किया है। बौद्धजैनादिका मत खण्डन करनेके लिये ही उन्होंने मानो लेखनी पकडी थी। ग्रन्थके उपक्रममें ही उनका यह उद्देश्य प्रकाशित हुआ है, यथा—

"अर्हच्चार्वाकवाक्यानि बौद्धादिपठितानि तु।
विप्रलम्भकवाक्यानि तानि सर्वाणि वर्जयेत्॥"

माधवाचार्यके मतसे प्रधानतः ३६ धर्मशास्त्रकार हैं। इस सम्बन्धमें उनके पराशरमाधवमें ऐसा पैठिनसि-वचन देखा जाता है—

"तेषां मन्वङ्गिरोव्यासगौतमात्र्युशनोयमाः।
वशिष्ठदक्षसंवर्त्तशातातपः पराशराः॥
विष्ण्वापस्तम्बहारीताः शङ्खः कात्यायनो भृगुः।
प्रचेता नारदो योगी बोधायनपितामहौ॥
सुमन्तुः कश्यपो बभ्रुः पैठिनो व्यास एव च।
सत्यव्रतो भरद्वाजो गार्ग्यः कार्ष्णाजिनिस्तथा॥
जावालिर्जमदग्निश्च लौगाक्षिर्ब्रह्मसम्भवः।
इति धर्मप्रणेतारः षट्त्रिंशदपयस्तथा॥"

इसके सिवा उन्होंने आत्रेय, आश्वलायन, ऋष्य शृङ्ग, कण्व, कौशिक, क्रतु, वृद्धगार्ग्य, गालव, गोभिल, वृद्धगौतम, श्लोकगौतम, च्यवन, छागलेय, जातुकर्ण्य, जैमिनि, देवल, धौम्य, नारायण, वृद्धपराशर, पारस्कर, पितामह, पुलस्त्य, पुलह, वृहत् प्रचेता, प्रजापति, वृद्ध वृहस्पति, वृहन्मनु, वृद्ध-मनु, मरीचि, मुद्गल, लघुयम, वृद्ध याज्ञवल्क्य, वृहत् और वृद्धवशिष्ठ, विवस्वत, विश्वामित्र, व्याघ्रपाद, वृद्ध शङ्ख, वृद्ध शातातप और शौनक आदि स्मृतिकारोंका मत भी उद्धृत किया है। केशव-वैजयन्तीकार नन्दपण्डित ने उक्त माधवीय टीकाका अनुसरण कर बहुत संक्षेपमें 'विद्वन्मनोहरा' नामक पराशरस्मृतिकी विवृति रची है।

इसके सिवा बहुत सी छोटी छोटी स्मृतिटीका देखी जाती है। इनमेंसे हरदत्त रचित 'उज्ज्वला' नामक आपस्तम्बधर्मसूत्रकी वृत्ति तथा 'गौतमीय मिताक्षरा' नामक गौतमस्मृतिकी टीका उल्लेखयोग्य है। हरदत्तका ग्रन्थ प्रामाणिक होने पर भी वैसा प्राचीन नहीं है। माधवाचार्य, हेमाद्रि आदि किसीने भी हरदत्तका मत उद्धृत नहीं किया है। परन्तु १७वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मित-मिश्रने इनका मत उद्धृत किया है। इस हिसाबसे हर-दत्तको १३वीं सदीके परवर्त्ती और १६वीं सदीके पूर्व वर्त्ती कह सकते हैं।

स्मृतिनिबन्ध।

पहले लिखा जा चुका है, कि बौद्ध और जैन प्रभाव-कालमें ब्राह्मण समाजकी अवनतिके साथ बहुत सी स्मृति विलुप्त हुई थी। जो सब स्मृति प्रचलित थी, उनका अर्थ और पाठ ले कर मतभेद चल रहा था। विशेषतः बौद्ध और जैनसमाजने अपने अपने सम्प्रदायका धर्म और समाजोपयोगी स्मृतियोंका प्रचार कराया था। यद्यपि उसका अधिकांश अभी विलुप्त है। परन्तु एक समय भारतीय आर्यसमाजमें उन सब स्मृतियोंका मत जो विशेष भावसे प्रचलित था, वह हम पराशरमाधवसे जान सकते हैं। माधवाचार्यने प्राचीन निबन्धका मत उद्धृत कर बौद्ध-स्मृतियोंकी समालोचना इस प्रकार की है—

"अथोच्यते। मन्वादिस्मृतीनां शाक्यादिस्मृतीनां नास्ति महद्वैषम्यं, प्रत्यक्षवेदेनैव साक्षान्मन्वादि प्रामा-ण्याङ्गीकारात्। यत् वै किञ्च मनुरवदत्तद्भेषजमिति ह्याम्नायते। नत्वेवं शाक्यादिस्मृत्यनुग्राहकं किञ्चिद्वैदिक वचोऽस्ति। अतो नोकातिप्रसङ्गेति। तन्न। गद्वे किञ्चेत्यस्यार्थवादत्वेन स्वार्थे तात्पर्याभावात्। + + + मानान्तराविरुद्धानामननुवादिनां मन्वादीनां स्वार्थे-प्रामाण्यमुत्तरमीमांसायां देवताधिकरणे व्यवस्थापितं। अर्थवादाधिकरणे तु स्वार्थप्रामाण्यनिराकरणं विरुद्धानु-वादयोः सावकाशं। अतो यद्वै किञ्चेत्यर्थवादस्य विधि-स्तावकस्य स्वार्थेऽपि तात्पर्यमस्तीति न शाक्यादिप्रति वन्दीयुक्ता।" (पराशरमाधवीय उपक्रम)

उद्धृत वचनोंसे स्पष्ट जाना जाता है, कि माधवाचार्यके समय १४वीं सदीमें भी दाक्षिणात्यमें बौद्धस्मृति प्रच लित थी। उन सब स्मृतियोंमें वेदवचन नहीं रहनेसे अर्थात् वेदविरुद्ध मत स्थान पानेसे वैदिक और स्मार्त्त

ब्राह्मणसमाज उन सब बौद्ध ग्रन्थोंको स्मृतिमें नहीं गिनते थे।

ब्राह्मणसमाज जिस प्रकार वेदविरुद्ध स्मृतियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते थे और उनका प्रामाण्य स्वीकार नहीं करते थे, शायद बौद्धधर्माधिकारिगण भी उसी प्रकार वेदानुगत आर्यस्मृतियोंको देखते थे। उन लोगोंने तत्कालीन भारत-समाजोपयोगी मन्वादि प्राचीन स्मृतिका मत ग्रहण किया था सही, परन्तु वैदिक कर्मकाण्डादि वे ग्रहण नहीं कर सके थे। उनकी स्मृति वैदिक कर्मकाण्डकी विरोधी होनेके कारण ब्राह्मण स्मार्त्त-समाजने उनके मत उपेक्षा की थी। अतएव समस्त भारतमें ब्राह्मणप्राधान्य प्रतिष्ठित होनेसे बौद्धस्मृतिका भी प्रचार बिलकुल न होगा इसमें सन्देह ही क्या? ब्राह्मणप्रधानतासे जिस प्रकार बौद्धस्मृतियां भारतवर्षसे विलुप्त हो गई हैं, बौद्ध प्राधान्य कालमें वैदिक ब्राह्मण रचित आर्यस्मृतियोंका अधिकांश भी उसी प्रकार विरल प्रचार हुआ था। उसमें संदेह नहीं मनुस्मृतिकामत ले कर बौद्धस्मृतियां प्रचलित होनेसे वे सब वेदविरोधी स्मृति मत ही कई जगह आर्यसमाजमें बद्धमूल हो गया था। अतएव वैदिक प्राधान्य-स्थापनके साथ फिर प्राचीन धर्मशास्त्रोंके मत प्रचारका प्रयोजन हुआ था।

यद्यपि शुङ्गमित्र, काण्व और गुप्तवंशके अभ्युदय-कालमें ब्राह्मणप्राधान्यकी सूचना देखी जाती है, तो भी उस समय बौद्ध और आर्हत मत भी विशेष प्रबल था। राज लोगोंमेंसे भी कोई ब्राह्मणका और कोई श्रमणका आदर करते थे। अतएव मालूम होता है, कि इस समय ब्राह्मण स्मार्त्तोंने समयाचारके उपयोगी धर्मशास्त्रके प्रचारमें सुविधा नहीं पाई। ७वीं सदीको समस्त आर्यावर्त्तमें बौद्धप्रभाव और ८वीं सदीसे वैदिक ब्राह्मणाभ्युदयका यथेष्ट प्रमाण मिलता है। ७वीं सदीमें प्रसिद्ध मीमांसक कुमारिलने दाक्षिणात्यमें बौद्ध और जैनमतका खण्डन कर वैदिक मतको प्रतिष्ठाके लिये जो मीमांसावार्त्तिक प्रचार किया था, ८वीं सदीके प्रारम्भमें उनके शिष्य भवभूति कान्यकुब्जमें वह वैदिक मत प्रचार कर रहे थे। भवभूतिके सुप्रसिद्ध नाटक काव्योंके वैदिक धर्माभ्युदयका चित्र दिखाई देता है।

उस समय आर्यावर्त्तमें जो सब हिन्दूराजा वैदिक धर्मप्रतिष्ठामें विशेष उद्योगी थे, उनमें कान्यकुब्जपति कमलायुध यशोवर्मदेवका नाम सर्वप्रधान है। यशोवर्मदेव देखो। इस यशोवर्मदेवकी सभामें आर्यावर्त्तसे सर्वश्रेष्ठ श्रौत और स्मार्त्त ब्राह्मण पण्डित विद्यमान थे। इन्हीं की सभामें प्राचीन धर्मशास्त्रका मत प्रचार करनेके लिये सबसे पहले स्मृतिनिबन्धकी रचना हुई। उस प्रथम स्मृतिनिबन्धनका नाम 'स्मृतिविवेक' है। निबन्धकार स्वयं मेधातिथि भट्ट थे। स्मृतिविवेकके पहले दूसरे निबन्धका प्रचारित रहना कुछ असम्भव नहीं है, परन्तु आज तक तत्पूर्ववर्त्ती स्मृतिनिबन्धका नाम भी न मिलनेसे स्मृतिविवेकको प्रथम निबन्ध माना जाता है। दुःखका विषय है, कि यह स्मृतिविवेक भी अभी अप्रचलित है। मेधातिथिने मनुभाष्यमें यह 'स्मृति-विवेक' वचन उद्धृत किया है। अतएव मनुभाष्यरचनाके पहले उन्होंने स्मृतिविवेककी रचना की थी। पहले मनुभाष्यप्रसङ्गमें मेधातिथिका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। ७३२ ई०में वे गौडराजसभामें आये। इस हिसाबसे ८वीं सदीके प्रथम भागमें 'स्मृतिविवेक' रचा गया होगा।

९वीं सदीमें किसी भी निबन्धकारका संधान नहीं मिलता। सम्भवतः इसी समय उत्तरराढमें काञ्जी-विल्लिय राढीय ब्राह्मणप्रवर नारायणने छन्दोगपरिशिष्ट प्रकाश किया। १०वीं सदीके शेषमें सुप्रसिद्ध भवदेव भट्टका आविर्भाव हुआ। वे भी सिद्धलग्रामी राढीय ब्राह्मणवंशमें उत्पन्न हुए थे। वे एक प्रधान मीमांसक, प्रधान स्मार्त्त और वङ्गाधिप हरिवर्मदेवके एक प्रधान अमात्य थे। उनकी ख्याति और प्रतिपत्ति केवल राढ ही नहीं, वङ्ग और उत्कल तक फैल गयी थी। उनकी उपाधि थी 'बालवलभीभुजङ्ग'। उन्होंने स्मृतिकौस्तुभ आदि कुछ स्मृतिनिबन्ध रचे थे। उनकी सामवेदीय संस्कारपद्धतिके अनुसार आज भी गौडवङ्गवासी सामवेदिय ब्राह्मणोंका संस्कारकार्य सम्पन्न होता है। 'प्रायश्चित्त निर्णयामृत' नामक उनका एक दूसरा निबन्ध मिलता है।

११वीं सदीके प्रथम भागमें परमारवंशीय मालवपति भोजराजका अभ्युदय हुआ। उन्होंने 'कामधेनु' नामक

एक वृहत् स्मृतिनिवन्ध प्रकाशित किया । कहते हैं, कि ऐसा बड़ा स्मृतिनिवन्ध इसके पहले किसीने भी लिपिबद्ध नहीं किया था। यह संग्रह अभी विलुप्त हो गया है। परवर्त्ती निवन्धकारोंमेंसे किसी किसीने इसका मत उद्धृत किया है। 'व्यवहारसमुच्चय' नामक एक निवन्ध भोजराजके नामसे प्रचलित देखा जाता है। १२वीं सदीके प्रथमांशमें कान्यकुब्जपति गोविन्दचन्द्रने समाजसुधारकी ओर ध्यान दिया। उनके सान्धिविग्रहिकामात्य लक्ष्मीधर भट्टने १२ काण्डोंमें विभक्त 'कृत्यकल्पतरु' नामक एक स्मृतिनिवन्धकी रचना की। शिलाहारपति अपरादित्यने ११४०से ११७० ई०के मध्य 'अपरार्क' नामक सुवृहत् 'याज्ञवल्क्यधर्मशास्त्रनिवन्ध प्रकाशित किया। पहले ही इसका परिचय दे चुके हैं। १२वीं सदीमें पालवंशके साथ गौड़वङ्गमें बौद्धशासन विलुप्त हुआ। इस समय परमशैव सेनराजाओंके यत्नसे श्रेष्ठ पण्डितोंने हिन्दूसमाजके सुधारके लिये नाना पुराण और तन्त्रप्र थप्रचारके साथ स्मृतिनिवंध प्रचारकी व्यवस्था की। इनमेंसे गौड़ाधिप वल्लालसेनके गुरुस्वरूप वारेन्द्रवासी चम्पाहट्टीय अनिरुद्ध भट्टने 'स्मृतिसंग्रह' और 'हारलता' नामक दो निवंध प्रकाशित किये। उन्हींके अनुरोधसे १०६१ शकमें (११६६ ई०में) वल्लालसेनने 'दानसागर' नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रचार किया। 'अद्भुतसागर' नामक वृहत् ज्योतिर्निबन्धग्रंथ भी महाराज वल्लालसेनकी एक दूसरी कीर्त्ति है। उसी साल वल्लालसेनके परलोकवासी होने पर उनके प्रिय पुत्र महाराज लक्ष्मणसेनने १०६२ शक या ११७० ई०में 'अद्भुतसागर' समाप्त किया।

वल्लालसेन शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

उक्त शताब्दीमें केशवादित्यके पुत्र देवणभट्टने 'स्मृतिचन्द्रिका' नामक एक वृहत् स्मृतिनिवंधकी रचना की। आचार और प्रायश्चित्तके सम्बन्धमें ऐसा बड़ा स्मृतिनिवंध इसके पहले और किसीने भी प्रकाशित नहीं किया।

उसी साल गौड़ाधिप लक्ष्मणसेनकी सभामें हलायुध, ईशान और पशुपति, ये तीनों भाई विराजमान् थे। धर्माधिकारी हलायुध 'ब्राह्मणसर्वस्व' तथा ईशान और पशुपति ग्रंथ लिख कर प्रसिद्ध हो गये हैं। किसीका कहना है, कि राढ़ीय ब्राह्मणप्रवर महामहोपाध्याय शूलपाणि साहुड़ियानने भी इसी समय 'प्रायश्चित्तविवेक' प्रकाशित किया।

१२वीं सदीमें श्रीधराचार्य नामक एक व्यक्तिने 'आदिस्मृत्यर्थसार' नामक एक उत्कृष्ट निवंध लिखा। इन्होंने गोविन्दराजका नामोल्लेख किया है। फिर हेमाद्रि इनका मत उद्धृत कर गये हैं। इसके सिवा इन्होंने 'श्रीधरीय' नामक एक वृहत् धर्मशास्त्रनिवंध प्रकाश किया। उसका वचन प्रयोगपारिजात और संस्कार कौस्तुभमें उद्धृत हुआ है।

१३वीं सदीमें जो सब निवंधकार आविर्भूत हुए थे। उनमेंसे यादवराज महादेवका श्रीकरणाधिप हेमाद्रि सर्वप्रधान है। उनके 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' के समान वृहत् निवंध ग्रंथ और किसीने भी नहीं लिखा। उन्होंने स्मृतिसमुद्र मंथन कर यह 'चतुर्वर्ग चिन्तामणि' प्रकाशित की थी। केवल दाक्षिणात्य ही नहीं, तमाम भारतवर्षमें हेमाद्रि एक प्रधान निबंधकार कह कर स्मार्त्तसमाजमें पूजित होते आ रहे हैं। यह वृहत् ग्रंथ पांच खण्डोंमें विभक्त है, यथा—१ व्रत, २ दान, ३ तीर्थ, ४ मोक्ष और ५ परिशेषखण्ड।

हेमाद्रिके बाद दो प्रधान गौड़ीय स्मार्त्त जीमूतवाहन का नाम उल्लेखयोग्य है। पहले ही लिखा जा चुका है, कि राढ़ीय श्रेणीके ब्राह्मण, पारिभद्र या 'पारियाल' ग्रामी थे। इन्हीं ने 'धर्मरत्न' नामक एक उत्कृष्ट निवन्धकी रचना की। भारतप्रसिद्ध 'दायभाग' ग्रन्थ उक्त धर्मरत्नका ही एक अंश है।

१२वीं और १३वीं शताब्दीमें मुसलमानी शासनकी तूती सभी जगह बोलती थी। जहां जहां बौद्ध और जैनसमाज विद्यमान था, मुसलमानोंके उत्पीडनसे वे सब समाज टूट गये थे। पीछे हिन्दू लोग मुसलमानी आचार-व्यवहारका अवलम्बन न कर सकें और जनसाधारणमें जिससे ब्राह्मणभक्ति और स्मार्त्त धर्मानुरागकी जागृति हो, उसके लिये १४ वीं सदीमें आर्यावर्त्तके नाना स्थानोंमें अनेक निवन्धकारोंका अभ्युदय देखा गया। स्थानीय सामन्तराजे इन सब निवन्धकारके उत्साहदाता और प्रतिपालक थे। उनमेंसे चण्डेश्वर, विश्वे-

श्वर भट्ट, शेष नृसिंह और लखिमा देवीके नाम विशेष उल्लेखयोग्य हैं। इनमेंसे चण्डेश्वर ठक्कुर सर्वप्रधान थे। वे मिथिलाधिप महाराज हरसिंहदेवके मन्त्री थे। मिथिलाके पुरावृत्तकी आलोचना करनेसे जाना जाता है, कि महाराज हरिसिंहदेव कर्णाटक्षत्रियवंशीय एक परमधार्मिक तेजस्वी स्वाधीन हिन्दू राजा थे। उन्हींके उत्साहसे उनके प्रधान मन्त्री चण्डेश्वरने 'स्मृतिरत्नाकर' नामक एक बड़े स्मृतिनिबन्धकी रचना की। उनका यह निबन्ध सात रत्नाकरमें विभक्त है, १म कृत्य, २ दान, ३ व्यवहार, ४ शुद्धि, ५ पूजा, ६ विवाद और ७ गृहस्थ-रत्नाकर। उनके 'विवादरत्नाकर'से जाना जाता है, कि वे १२३६ शकमें (१३१४ ई०में) वागमतीके किनारे स्वर्णतुला पर तौले गये थे। उनके तत्त्वावधानमें 'कृत्यचिन्तामणि' नामक एक और सुन्दर स्मृतिनिबन्ध रचा गया। उनके उत्साहदाता हरसिंहदेवने दिल्लीश्वर १म तुगलकशाहके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था, किन्तु आखिर हार खा कर वे नेपाल भाग गये। १२४५ शकमें (१३२३ ई०में) नेपालके भाटगाँव नामक स्थानमें आ कर उन्होंने राजधानी बसाई।

इस शताब्दीमें 'मदनरत्न' या 'मदनरत्नप्रदीप' नामक एक और निबन्ध रचा गया। किसी किसीका कहना है, कि यह निबन्ध भी मदनपालका रचित है, परन्तु यथार्थमें यह ग्रन्थ 'महाराजाधिराज श्रीशक्तिसिंहदेवात्मज महाराजाधिराज मदनसिंहदेवविरचित' है। खण्डेराय, कमलाकर आदि मदनरत्नसे प्रमाण उद्धृत करनेके कारण यह ग्रन्थ १३वीं सदीके शेष या १५वीं सदीका निबन्ध माना जा सकता है। पूर्ववर्णित मिथिलाधिपति हरसिंहदेव भी शक्तिसिंहदेवके वंशधर कह कर परिचित हैं। ऐसी हालतमें मदनसिंह और हरसिंहदेव दोनों एक वंशके थे या नहीं, कह नहीं सकते।

कर्णाटक हरसिंहदेव जब नेपालमें जा कर प्रतिष्ठित हुए, तब ब्राह्मण कामेश्वर झाके पुत्र भवेश या भवसिंहने दिल्लीश्वरकी कृपासे मिथिलाका आधिपत्य लाभ किया। उनके पुत्र हरिसिंहदेवने भी चण्डेश्वरको उत्साहित किया था। इस कारण कृत्यरत्नाकरमें कर्णाटकराज हरसिंह और ब्राह्मणराज दोनोंके ही नाम देखे जाते हैं।

मिथिलाधिप हर और हरिसिंहदेव जिस प्रकार प्रधान स्मार्तोंके उत्साहदाता थे, यमुनातटवर्ती काष्ठाधिपति मदनपाल भी उसी प्रकार एक थे। राजा मदनपाल स्वयं सुपण्डित तथा सभी प्रधान प्रधान पण्डितोंके गुणानुरक्त थे। मदनपाल देखो। उन्हींके आश्रय और उत्साहसे तथा उन्हींके नामानुसार विश्वेश्वरभट्टने 'मदनपारिजात' नामक 'मदनपालनिबन्ध' नामक सुप्रसिद्ध निबन्धग्रन्थ (१३६०से १३७० ई०के मध्य) प्रणयन किया। यह वृहत् 'पारिजात' नौ स्तवकमें ग्रथित है, १म ब्रह्मचर्य, २ गृहस्थ, ३ आह्निक, ४ गर्भाधानादिसंस्कार, ५ अशौच, ६ द्रव्यशुद्धि, ७ श्राद्ध, ८ विभाग और ९ प्रायश्चित्त। मदनपारिजातको छोड़ विश्वेश्वरने राजा मदनपालके समय 'महादानपद्धति' और स्मृतिकौमुदी तथा उनके पुत्रने मान्धाताके समय 'महार्णव' या 'महार्णवकर्मविपाक' नामक एक और बड़े निबन्धकी रचना की। मदनपारिजातके बाद नृसिंहने प्रयोगपारिजात नामक एक और निबन्ध प्रणयन किया। यह निबन्ध संस्कार, पाकयज्ञ, आधान, आह्निक और षोडशकर्मकाण्ड इन पांच काण्डोंमें विभक्त है। उनके रचित 'गोत्रप्रवरनिर्णय' ग्रंथको भी कोई कोई प्रयोग पारिजातके पञ्चकाण्डके अन्तर्गत मानते हैं।

किसी किसीका कहना है, कि उक्त नृसिंह भट्टने ही काशीराज गोविन्दचन्द्रके उत्साहसे 'गोविन्दार्णव' या 'स्मृतिसागर' नामक निबंध प्रणयन किया। 'स्मृतिसागर'के रचयिता शेष नृसिंहने अपनेको काशीराजका मंत्री कहा है, परन्तु प्रयोगपारिजातके रचयिताने ऐसा कोई परिचय नहीं दिया। 'गोविन्दार्णव' ६ वीचिमें विभक्त है—१म संस्कार, २ आह्निक, ३ श्राद्ध, ४ शुद्धि, ५ काल, ६ शेष या प्रायश्चित्तवीचि।

१४वीं सदीके अन्तमें नन्दपद्रक नामक स्थानमें दुर्गसिंह नामक एक सामन्तराज राज्य करते थे। उनके मंत्री कर्णसिंहके उत्साहसे पद्मनाभके पौत्र और काह्लडसूनुने १३८४ ई०में 'सारमहकर्मविपाक' नामक कर्मविपाक सम्बन्धीय एक वृहत् निबंध प्रकाशित किया। उस समय या उसके कुछ पहले लखिमादेवीने 'विवादचन्द्र' नामक प्रसिद्ध विवाद सम्बन्धीय पुस्तक प्रकाशित की।

किसी किसीका कहना है, कि, 'बालभूभट्टी' और 'विवादचन्द्र' एक लखिमादेवीके नामसे ही प्रचलित था। किंतु दोनों ग्रंथकी लखिमादेवी जो सम्पूर्ण स्वतन्त्र और विभिन्न समयमें विद्यमान थीं, इसमें सन्देह नहीं। एक होती हैं मिथिलाधिप चंद्रसिंहकी महिषी, दूसरी वैद्यनाथ पायगुण्डकी पत्नी। सुप्रसिद्ध चण्डेश्वर ठक्कुरके उत्साहदाता हरिसिंहदेव मिथिलाधिप भवेशके पुत्र और लखिमादेवीके स्वामी चन्द्रसिंह, उक्त भवेशके प्रपौत्र थे। किसी किसीने लिखा है, कि लखिमादेवीने अपने भाँजे मिसरुमिश्रके नाम विवादचन्द्र प्रचार किया। किन्तु हम समझते हैं, कि पण्डित मिसरुमिश्रने अपनी आश्रयदात्री लखिमादेवीके नामसे ही स्वरचित निबंध चलाया था।

इसके बाद एकचक्राधिप सूर्यसेनके आदेशसे अल्लाडनाथ सूरिने 'निर्णयामृत' नामक एक निबंध रचा।

१४वीं सदीमें जिन सब निबंधकारोंने जन्मग्रहण किया था, उनमेंसे माधवाचार्य विद्यारण्य स्वामी सर्वप्रधान थे। वे विजयनगराधिप १म वीरबुकरायके प्रधान मन्त्री और दाक्षिणात्यमें वैदिकप्राधान्य प्रतिष्ठाके प्रधान उद्योगी थे। पहले स्मृतिटीकाके इतिहासप्रसङ्गमें दिखलाया गया है, कि उन्होंने बौद्ध और जैनादिका स्मृतिमत खण्डन कर विशुद्ध वैदिकमतकी प्रतिष्ठाके लिये केवल वेदभाष्य ही नहीं, 'पराशरमाधवीय' नामक एक बृहत् स्मृतिनिबंध प्रकाशित किया। माधवाचार्य और विजयनगर शब्द देखो। उनके समयसे ले कर आज तक मान्द्राजप्रदेशमें 'पराशरमाधवीय'का मत चाल रहा है।

१५वीं सताब्दीमें गुजरातके अणहिल्ल-पाटक या अणहिल्लवाडपाटनमें एक विख्यात स्मार्त्त पण्डितने जन्म ग्रहण किया। लक्ष्मीधर उनका नाम था। स्मार्त्तने ग्रंथवर्णित परस्पर विरुद्ध युक्तियोंकी समालोचना कर 'विरुद्धविधिविध्वंस' नामक एक सुन्दर निबंध प्रणयन किया। इस निबंधसे जाना जाता है, कि आनन्दपुरके नागरब्राह्मणवंशमें काश्यप गोत्रमें लक्ष्मीधर पैदा हुए। उनके पित मल्लदेवने 'सुभाषितावली' की रचना की। उनके पितामह वामन शाकम्भरीपति पृथ्वीराजके 'सान्धिविग्रहिकामात्य' और उनके वृद्धप्रपितामह स्कन्द 'सेनाधिप' थे। उनके प्रपितामह सोढ़ भी शाकम्भरीके अधश्वर सोमेश्वरके प्रधान मन्त्री थे। स्कन्दने मुसलमानोंको अनेक बार परास्त कर विशेष सुख्याति लाभ की थी और वामननिरापदसे रहनेके लिये अपरिमित धनराशि ले कर अणहिल्लपाटकमें आ बस गये थे।

१५वीं सदीके मध्यभागमें राढीय ब्राह्मणकुलमें अद्वितीय पण्डित रायमुकुट बृहस्पतिका जन्म हुआ। उन्होंने भी गौड़ीय ब्राह्मणसमाजके लिये एक बृहत् स्मृतिनिबंधकी रचना की थी। वह निबंध अभी नहीं मिलता है। स्मार्त्त रघुनन्दनने रायकूटपद्धति' से प्रमाण उद्धृत किया है।

१५वीं सदीके शेष भागमें दलपतिके पूर्वपुरुष संग्रामशाहके उत्साहसे दामोदर ठक्कुरने 'संग्रामसाहीय विवेकदीपिका' और 'दिव्यनिर्णय' नामक दो निबंध प्रकाशित किये।

१५वीं सदीमें दक्षिणापथमें मुसलमानी शासन प्रतिष्ठित हुआ। मुसलमान-राजे हिन्दूशास्त्रानुसार ही हिन्दुओंके विचारकी व्यवस्था करते थे, इस कारण उनके समयमें भी बहुतसे स्मृतिनिबंधकी रचना हुई थी। इन सब निबंधोंमें 'नृसिंहप्रसाद' नामक बृहत् निबंध विशेष उल्लेखयोग्य है। अहमदनगराधिप निजामशाहके प्रधान मन्त्री नृसिंह दलपतिने यह बृहत् निबंध प्रकाशित किया। निजामशाहने १४८६ से १५०८ ई० तक राज्य किया था। अतएव इसी समयके अन्दर 'नृसिंहप्रसाद' रचा गया। यह सुबृहत् निबंध १२ सार या खण्डोंमें विभक्त है। यथा—१ संस्कार, २ आह्निक, ३ श्राद्ध, ४ कालनिर्णय, ५ व्यवहार, ६ प्रायश्चित्त, ७ कर्मविपाक, ८ व्रत, ९ दान, १० शान्ति, ११ तीर्थ और १२ प्रतिष्ठासार। एक समय मुसलमान शासित दक्षिणापथमें नृसिंहप्रसादका विशेष आदर था और इस निबंधके अनुसार ही हिन्दुओंका विचार और शासनकार्य सम्पन्न होता था।

१५वीं सदीके शेष भागमें और १६वीं सदीके प्रथम भागमें भारतवर्षमें सभी जगह निबन्धरचनाकी चेष्टा देखी जाती है। इस शताब्दीके निबंधकारोंमें वाचस्पतिमिश्र और स्मार्त्तभट्टाचार्य रघुनन्दनका नाम सबसे पहले उल्लेख

किया जा सकता है। जिस समय मिथिलामें ब्राह्मणराज हरिनारायण (भैरवसिंह) प्रबल प्रतापसे राज्यशासन करते थे और निकटवर्ती मुसलमान राजे उनके डरसे थर्राते थे, उसी समय उनकी सभामें स्मार्त्तप्रवर वाचस्पति मिश्रका अभ्युदय हुआ। उन्होंने स्मृतिचिंतामणि, स्मृतिसारसंग्रह, द्वैतनिर्णय, तिथिनिर्णय, कृत्यमहार्णव आदि अनेक निबंध रचे हैं। उनका कृत्यमहार्णव (प्रायः १४२३ शक=१५०१ ई०में) राजा हरिनारायणके आदेशसे और द्वैतनिर्णय उक्त भैरवसिंहकी महिषी जयाके आदेशसे रचा गया है, ऐसा उन्होंने स्वयं कहा है। उनकी निबंधावलियोंमें, 'स्मृतिचिंतामणि' बहुत बड़ा ग्रंथ है। वह ५ चिंतामणि और ५ खण्डोंमें विभक्त है। यथा—१म आचार, २ विवाद, ३ व्यवहार, ४ श्राद्ध और ५ प्रायश्चित्तचिंतामणि। बङ्गदेशमें जिस प्रकार स्मार्त्त रघुनन्दन हैं, मिथिलामें उसी प्रकार वाचस्पति मिश्रका मत प्रचलित है।

वाचस्पति मिश्रके समयमें भी मिथिलाधिप भैरवसिंहके आदेशसे वर्द्धमानने 'दण्डविवेक' नामक एक निबंधकी रचना की।

स्मार्त्त रघुनंदनका 'अष्टाविंशतिस्मृतितत्त्व' ही बङ्गमें नव्यस्मृति और यहांके स्मार्त्तसमाजमें सर्वप्रधान प्रामाणिक ग्रंथ समझा जाता था। किस समय यह वृहत् निबंध रचा गया, यह लेकर मतभेद चला आता है। किसीके मतसे उनके—

'विषुवं मीनकन्यार्द्धे त्वेकाब्धीन्द्रशकाब्दके।'

इस ज्योतिस्तत्त्वधृत वचनानुसार १४२१ शकमें (१४९९ ई०में) उनका निबन्ध रचा गया है। परन्तु इस ज्योतिस्तत्त्वमें ही फिर "नवाष्टशकहीनेन शकाब्देङ्केन पूरिता" इस वचनसे १४८९ शक पाया जाता है। इस हिसाबसे मालूम होता है, कि १४२१ शकमें उनका जन्म और १४८९ शकमें उनका ग्रंथ सम्पूर्ण हुआ होगा। वे महाप्रभु चैतन्यदेवके समय विद्यमान थे, सभी जगह ऐसा प्रवाद प्रचलित है।

१५वीं सदीके शेष भागमें और १६वीं सदीके प्रथम भागमें 'मदनपालविलास' नामक एक वृहत् निबंधका संधान पाया जाता है। स्वर्णपुरीराज कोशलवंशीय जटमल्लके उत्साहसे श्रीधर नामक एक पण्डितने यह निबंध संकलन किया। जटमल्लके पिताका नाम धायमल्ल, पितामहका नाम बालचंद्र और प्रपितामहका नाम ढोल था। कहते हैं, कि ढोल दिल्लीश्वरके सर्वप्रधान मन्त्री थे।

१६वीं सदीमें 'सरस्वतीविलास', 'अनूपविलास,' दुर्गावतीविलास' आदि 'विलास' नामके और भी कितने निबंध रचे गये थे। इनमेंसे 'सरस्वतीविलास' एक प्रधान निबंध कह कर दाक्षिणात्यमें समादृत है। उत्कलाधिपति गजपति प्रतापरुद्रदेवके ऐकान्तिक यत्नसे और उनके तत्त्वावधानमें 'सरस्वतीविलास' रचा गया। इसमें १म शास्त्रमुखस्वरूपनिरूपण, २ धर्मस्थानव्यवस्थान, ३ व्यवहारेतिकर्त्तव्यता, ४ प्रतिष्ठावाद, ५ उत्तरस्वरूप, ६ लिखितभुक्ति, ७ ऋणदान, ८ व्रतनानापकर्म, ९ अन्याविक्रीय, १० विक्रीयासम्प्रदान, ११ क्रीतानुशय, १२ समयानपकर्म, १३ अप्रतिबंध-दायविभाग, १४ दायविभाग, १५ साहस, १६ वाक्पारुष्य, १७ दण्डपारुष्य, १८ द्यूतसमाह्वय और १९ दण्डविधिप्रकरण है। प्रायः १५१५ ई०में यह निबंध रचा गया।

इसके बाद 'दुर्गावतीप्रकाश' या 'समयावलोक' नामक एक निबन्ध प्रकाशित हुआ। नर्मदातटवासी राजा दलपतिकी प्रधाना महिषी और वीरसाहिकी माता रानी दुर्गावतीके उत्साहसे पद्मनाभ भट्टाचार्यने इस वृहत् निबंधकी रचना की। पद्मनाभने उक्त वीरसाहिके नामानुसार १५७८ ई०में 'वीरचम्पू'की रचना की। उसके पहले ही उनका 'दुर्गावतीविलास' रचा गया होगा।

अनन्तर मध्यप्रदेशमें गौरवंशीय जैत्रसिंहके वंशधर कनकसिंहके पुत्र कीर्त्तिसिंहके समय उनके मन्त्री 'स्वराट सम्राट् अग्निचित्' उपाधियुक्त विष्णुशर्माने 'कीर्त्तिप्रकाश' नामक एक निबंध रचा।

जिस समय दाक्षिणात्यमें 'दुर्गावतीप्रकाश' रचा गया। उस समय दिल्लीश्वर अकबरके प्रधान अर्थसचिव टोडरमल्लने 'आचारोद्योत', 'कालनिर्णय' और 'व्यवहारसौख्य' नामक कुछ निबन्ध प्रकाशित किये।

इस समय या इसके कुछ बाद दाक्षिणात्यमें वरदराज नामक एक प्रधान स्मार्त्तपण्डितने 'वरदराजीय'

नामक एक स्मृतिनिबन्ध संकलन किया। इसमें आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त ये तीनों ही विषय आलोचित हुए हैं। ग्रन्थकारने अपना मत प्रकाश न करके प्राचीन स्मृतिवचन ही अधिकांश स्थलोंमें उद्धृत किये हैं।

१६वीं सदीमें वाराणसीधाममें एक विख्यात स्मार्त्त भट्टवंशका अभ्युदय हुआ। इस वंशमें रामकृष्ण, दिवाकर या दिनकर, कमलाकर, विश्वेश्वर या गागाभट्ट और अनंतभट्ट आदि स्मार्त्त निबंधकारोंने जन्मग्रहण किया। इनमेंसे रामकृष्ण भट्ट कमलाकरके पिता, दिवाकर या दिनकर उनके बड़े भाई, गागाभट्ट उनके भतीजे और अनंतभट्ट उनके पुत्र थे। प्रधान स्मार्त्त पण्डित कह कर इन सबोंकी प्रसिद्धि थी। प्रत्येकके रचित छोटे बड़े अनेक निबंधग्रंथ प्रचलित हैं। दिनकरभट्ट अद्वितीय पण्डित थे। उन्होंने स्मृत्यर्थसार, कर्मविपाकसार, भाट्ट दिनकर और शांतिसारकी रचना की। महाराष्ट्र वीर छत्रपति शिवाजीके उत्साहसे भी उन्होंने दिनकरोद्योत या शिवद्युमणिदीपिका नामक एक वृहत् निबन्ध आरम्भ किया। पुस्तक शेष होने भी न पाई थी, कि उनका देहांत हुआ। पीछे उनके प्रिय पुत्र अद्वितीय पण्डित विश्वेश्वरभट्टने गागाभट्ट नामसे यह ग्रंथ सम्पूर्ण किया। यह ग्रंथ सात उद्योतमें विभक्त है, यथा आचार, व्रत, संस्कार, प्रतिष्ठा, पूर्त्त, संस्कार, प्रायश्चित्त और शूद्रोद्योत। शिवाजी और उनके पुत्र सम्भाजीके समय इस निबंधके अनुसार ही सामाजिक क्रियाकलापादि सम्पन्न होते थे। दिनकरके पुत्र विश्वेश्वरके उद्योगसे ही छत्रपति शिवाजीकी राज्याभिषेकक्रिया सम्पन्न हुई थी। इन्होंने महाराष्ट्रवासी प्रभु-कायस्थोंके आचार-संस्कारादि निर्देशक 'कायस्थधर्मदीप' या 'कायस्थपद्धति', 'अशौचदीपिका' और 'जातिविवेक' आदि कुछ स्मार्त्तग्रंथ प्रणयन किये। दिनकरके छोटे भाई कमलाकरभट्टका नाम समस्त आर्यावर्त्तमें विख्यात है। आप बहुत-से निबंधग्रंथ रच गये हैं। कमलाकर भट्ट शब्द देखो। इनमेंसे 'निर्णयसिन्धु' और 'शूद्रधर्मतत्त्व' प्रधान है। उनका निर्णय-सिन्धु १६१६ ई०में रचा गया।

कमलाकरभट्टके समय महाराष्ट्र अञ्चलमें एक और विख्यात निबंधकारने जन्मग्रहण किया। अनंतदेव उनका नाम था। उन्होंने चंद्रवंशीय बाजबहादुरचंद्रके उत्साहसे स्मृतिकौस्तुभ रचा। इस ग्रंथका महाराष्ट्र अञ्चलमें बड़ा आदर है।

कमलाकरभट्टके समय राजसम्मानित एक और प्रसिद्ध निबंधकार उत्पन्न हुए। उनका नाम नंदपण्डित था। उनकी 'केशववैजयन्ती' विष्णुस्मृतिकी टीका होने पर भी काशीवासी स्मार्त्तसमाजमें निबन्ध कह कर उसका आदर है। पहले ही लिखा जा चुका है, कि १६२२ ई०में यह ग्रन्थ रचा गया।

इसके बाद नागेशभट्टके पुत्र अनन्तभट्टने १६२५ ई०में 'विधानपारिजात' नामक एक बड़ा निबन्ध प्रणयन किया। यह ग्रन्थ ५ स्तवकमें विभक्त है—१म प्रायश्चित्त-प्रयोग, २ दुष्टनक्षत्रादिजननशांति, ग्रहयज्ञविधान, ३ संस्कार और आह्निकविधान तथा तीर्थप्रकरण, ४ दान-विधान, ५ श्राद्ध, अशौच, व्यवहार और प्रायश्चित्त-विधान।

उनके बाद ही प्रसिद्ध स्मार्त्त मित्रमिश्र हुए। पहले टीकाप्रसङ्गमें लिखा जा चुका है, कि उन्होंने वीरसिंहके आदेशसे 'वीरमित्रोदय' नामक याज्ञवल्क्यविवृतिकी रचना की। यह ग्रन्थ आज भी पाश्चात्य और मैथिल समाजमें एक प्रधान निबंध समझा जाता है। जिन वीरसिंहके आदेशसे यह 'वीरमित्रोदय' रचा गया, वे बुन्देलाधिपति प्रसिद्ध मधुकर शाहके पुत्र थे। उन्होंने ही अकबरके प्रिय सचिव अबुल फजलका प्राणवध किया था। अन्तिम अवस्थामें वे काशीवासी हो गये थे। काशीमें रहते समय उनका यह 'वीरमित्रोदय' रचा गया।

अनन्तर हम प्रसिद्ध निबन्धकार नीलकण्ठ भट्टका नाम पाते हैं। नीलकण्ठने १६४० ई०में सेङ्गरवंशीय राजा भगवन्तदेवके उत्साहसे 'भगवन्त भास्कर' या 'स्मृतिमयूख' नामक एक अति वृहत् निबन्ध प्रणयन किया। यह निबन्ध १२ मयूखमें विभक्त है, यथा—१म संस्कार, २ आचार, ३ काल, ४ श्राद्ध, ५ नीति या राजनीति, ६ विवाद, ७ दान, ८ उत्सर्ग, ९ प्रतिष्ठा, १० प्रायश्चित्त, ११ शुद्धि और १२ शान्ति-मयूख।

उक्त नीलकण्ठके पुत्र भट्ट शङ्करने भी भगवन्तदेवके उत्साहसे 'संस्कारभास्कर'की रचना की। इस संस्कार-

भास्करके अन्तर्गत कुण्डभास्करको १६७१ ई०में रचा गया। उनका 'व्रतार्क' व्रतसम्बन्धीय एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है।

१७वीं सदीके प्रथमांशमें कृपाराम नामक एक सामन्तराजने अपने नामानुसार 'रामप्रकाश' धर्मशास्त्र-निबंधकी रचना की। ये गौड़क्षत्रकुलोद्भव माणिक्य चन्द्रवंशीय यादवरायके पुत्र और सम्राट् शाहजहाके कृपापात्र थे।

बहुतोंका अनुमान है, कि प्रसिद्ध राढ़ीय पण्डित राघवेन्द्र शतावधानने ही उक्त 'रामप्रकाश'की रचना कर राजा कृपारामके नामसे प्रकाशित किया। राघवेन्द्र शतावधानके समय नवद्वीपमें एक और प्रधान स्मार्त्तने जन्म ग्रहण किया। रघुनाथ सार्वभौम उनका नाम था। ये प्रसिद्ध नैयायिक मथुरेशतर्कपञ्चाननके पुत्र थे। इन्होंने नवद्वीपपति राघवरायके आदेशसे १५८३ शकमें (१६६१ ई०में) 'स्मार्त्त-व्यवस्थार्णव' प्रणयन किया। एक समय नवद्वीपके स्मार्त्त समाजमें इस ग्रन्थका बड़ा आदर था। इस समय इरावती तटस्थ लावपुर (वर्त्तमान लाहौर) नगरवासी माधव नामक एक सामन्त राजाके अनुरोधसे महेशशर्माने 'माधवप्रकाश' नामक एक निबंध प्रकाशित किया।

उस समय बीकानेरराज्यमें अनूपसिंह नामक एक पण्डितानुरागी विख्यात धार्मिक राठौर राजा (१६६६ ई०में) राज्य करते थे। उनके उत्साहसे मणिराम दीक्षितने 'अनूपविलास' या 'धर्माम्बोधि' नामक एक बड़ा निबंध तथा अनन्तभट्टने 'तीर्थरत्नाकर' रचा। उक्त राठौर राजाने भी 'अनूपविवेक' और 'श्राद्धप्रयोग-चिन्तामणि'की रचना की थी। इस समय दाक्षिणात्यमें माध्वसम्प्रदायभुक्त छलारि नृसिंह नामक एक व्यक्तिने (१६८२ ई०में) 'स्मृत्यर्थसागर'की रचना की। यह ग्रन्थ चार तरङ्गोंमें विभक्त है—१ काल, २ अशौच, ३ आह्निक और ४ वस्तुशुद्धि। ग्रन्थकारके मतसे १०५६ शक (११२७ ई०) तक रामानुज और बौद्धादिका मत प्रबल था। मध्वाचार्यने ११२० शकमें (११९८ ई०में) आविर्भूत हो कर उन सब मतोंका खण्डन किया। १७वीं सदीके मध्य और शेष भागमें काशीराम वाचस्पति, राधामोहनगोस्वामी और गङ्गाधर आदि कुछ गौड़ीय स्मार्त्त रघुनन्दनके स्मृतितत्त्वकी टीका लिख गये हैं।

१८वीं सदीमें भी बहुत-से बड़े बड़े स्मृतिनिबन्ध रचे गये। उनमेंसे जयपुराधिप जयसिंहके मथुरामें रहते समय काशीके विख्यात स्मार्त्त रत्नाकर पण्डितने अपने उत्साहदाता जयसिंहके नामानुसार १७१३ ई०में 'जयसिंहकल्पद्रुम' नामक एक वृहत् धर्मशास्त्र निबन्ध लिखा। उसके पहले ही महाराज जयसिंहके उत्साहसे सदाशिव दशपुत्रने 'स्मृतिचन्द्रिका' सङ्कलन किया था।

१७३६ ई०में वाराणसीधाममें विश्वनाथ दैवज्ञने 'व्रतराज' की रचना की। पश्चिम भारतमें इस ग्रंथका बड़ा आदर है और उसीके मतानुसार वहां व्रतादि अनुष्ठित होते हैं।

उस समयके कुछ बाद नवद्वीपाधिपति कृष्णचन्द्रके आदेशसे प्रति मासके धर्मकृत्यादिनिर्देशक 'कृत्यराज' नामक एक पञ्जी रची गई थी।

इसके बाद अंगरेजी शासन आया। हिन्दुओंके ऊपर शासन फैलानेके लिये हिन्दुओंका धर्मशास्त्र या आईन जानना अंगरेज राजपुरुषोंको प्रयोजन हुआ। पहले बड़े लाट वारेन हेष्टिंसने वाणेश्वर, कृपाराम, रामगोपाल, कृष्णजीवन, वीरेश्वर, कृष्णचन्द्र, गौरीकान्त, कालीशङ्कर, श्यामसुन्दर, कृष्णकेशव और सीताराम इन ११ प्रधान पण्डितोंकी सहायतासे 'विवादार्णवसेतु' नामक एक स्मृति निबंधसार प्रकाशित किया। इस समय अंगरेज राजपुरुषोंके व्यवहारार्थ या उनके उत्साहसे और भी कितने निबंध रचे गये। उनमेंसे 'विवादभङ्गार्णव' 'विवादसारार्णव' और 'विवादार्णवभञ्जन' ये ही उल्लेखयोग्य हैं।

त्रिवेणीवासी पालधिकुलतिलक अद्वितीय पण्डित जगन्नाथ तर्कपञ्चाननने 'विवादभङ्गार्णव' और सर विलियम जोन्सके लिये सर्वोरुमिश्र त्रिवेदीने १७८९ ई०में 'विवादसारार्णव' सङ्कलन किया। 'विवादार्णवसेतु' २१ तरङ्गमें, विवादभङ्गार्णव ४ द्वीपमें और 'विवादसारार्णव' ९ तरङ्गमें विभक्त है।

१९वीं शताब्दीके प्रारम्भमें कोलब्रुक साहबने महामहोपाध्याय चितपति शर्मा द्वारा 'व्यवहारसिद्धान्तपीयुष' नामक दीवानी और फौजदारी आईन लिखवाया था। चितपति मूलग्रन्थकी टीका भी लिख गये हैं। इस शताब्दीमें और भी बहुत-से निबन्ध रचे गये हैं। उनमेंसे

इस शताब्दीके प्रथमांशमें रचित तर्कोरपतिशरमेोजिका लिखा हुआ 'व्यवहारप्रकाश' तथा इस शताब्दीके शेष भागमें महामहोपाध्याय चन्द्रकान्त तर्कालङ्कार-रचित 'उद्वाहचन्द्रालोक', चन्द्रालोक' आदि विशेष उल्लेखयोग्य है।

स्मृतिकार (सं० पु०) स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला।

स्मृतिकारक (सं० पु०) १ वह औषध जिसके सेवनसे स्मरण शक्ति तीव्र होती है। ब्राह्मीघृत देखो। २ धर्मशास्त्रके प्रणेता मन्वादि ऋषि।

स्मृतिकारिन् (सं० त्रि०) १ स्मरणशक्तिकारक। २ स्मृतिशास्त्रकर्त्ता।

स्मृतिपाठक (सं० त्रि०) स्मृतिपाठकारी, स्मृति पढ़नेवाला।

स्मृतिभू (सं० पु०) जीवदेवभेद।

स्मृतिभ्रंश (सं० पु०) स्मृतिशक्तिका नाश।

"क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥"

स्मृतिमत् (सं० त्रि०) १ स्मृतिविशिष्ट। २ चिन्तायुक्त।

स्मृतिवर्द्धिनी (सं० स्त्री०) ब्राह्मी नामक वनस्पति जिसके सेवनसे स्मरणशक्ति तीव्र होती है।

स्मृतिविभ्रम (सं० पु०) स्मरणशक्तिका विपर्यय।

स्मृतिविरुद्ध (सं० त्रि०) धर्मशास्त्रके विपरीत। स्मृति विरुद्ध कोई कार्य न करे, करनेसे नरक होता है।

स्मृतिशास्त्र (सं० क्ली०) धर्मशास्त्र।

स्मृतिशेष (सं० त्रि०) स्मृत्यवशेष विशिष्ट।

स्मृतिसम्मत (सं० त्रि०) स्मृतिशास्त्रानुमोदित।

स्मृतिहर (सं० त्रि०) स्मृतिनाशक।

स्मृतिहरा (सं० स्त्री०) दुःसहकी कन्या। (मार्कपु० ५१।६)

स्मृतिहिता (सं० पु०) शङ्खपुष्पीलता।

स्मृतिहेतु (सं० पु०) स्मरणकारण, वासना, भावना।

स्मृत्यपेत (सं० त्रि०) स्मृतेरपेतः। स्मृतिविरुद्ध।

स्मेर (सं० त्रि०) स्मिङ् (नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः। पा ३।२।१६७) इति र। १ प्रस्फुटित, खिला हुआ। २ ईषद्धसनशील।

स्मेरविष्किर (सं० पु०) मयूर, मोर।

स्यद (सं० पु०) वेग।

स्यन्द (सं० पु०) १ स्यन्दन, टपकना, चूना। २ गलना, पानी होना। ३ स्वेदोद्गम, पसीना निकलना। ४ चन्द्रमा। ५ एक प्रकारका चक्षुरोग।

स्यन्दक (सं० पु०) तिन्दुक वृक्ष, तेंदू।

स्यन्दन (सं० क्ली०) स्यन्द-ल्युट्। १ क्षरण, चूना, टपकना। २ गलना, पानी होना। ३ गमन, चलना, जाना। ४ जल। (पु०) ५ चक्रयुक्त युद्धप्रयोजन यान, विशेषतः युद्धमें काम आनेवाला रथ। ६ वायु, हवा। ७ तिनिशवृक्ष, तिनसुना। ८ गत उत्सर्पिणीके २३वें अर्हत्का नाम। ९ एक प्रकारका मन्त्र जिससे अस्त्र मन्त्रित किये जाते थे। १० तिंदुक वृक्ष, तेंदू। ११ चित्र, तसवीर। १२ तुरङ्ग, घोड़ा।

स्यन्दनतैल (सं० क्ली०) वैद्यकमें एक प्रकारकी तैलौषध जो भगंदरके लिये उपकारी मानी जाती है।

स्यन्दनद्रुम (सं० पु०) १ तिनिशवृक्ष, तिनसुना। इसकी लकड़ी रथके पहिये आदि बनानेके काममें आती थी, इसीसे इसका नाम स्यन्दनद्रुम पड़ा। २ तिंदुक, तेंदू।

स्यन्दनारोह (सं० पु०) रथस्थित योद्धा, रथी। (अमर)

स्यन्दनाह्वय (सं० पु०) १ तिनिशवृक्ष तिनसुना। २ तिन्दुकवृक्ष, तेंदू।

स्यन्दनि (सं० पु०) तिनिशवृक्ष, तिनसुना।

स्यन्दनिका (सं० स्त्री०) १ छोटी नदी, नहर। २ लारकी बूंद।

स्यन्दिनी (सं० स्त्री०) स्यन्द-णिनि-ङीप्। १ लाला, थूक। २ वह गाय जिसने एक साथ दो बछड़ोंको जन्म दिया हो।

स्यन्दोलिका (सं० स्त्री०) दोलावलम्ब।

स्यन्द्रा (सं० स्त्री०) स्यन्दनशील।

स्यन्न (सं० त्रि०) स्यन्द क्त। स्रुत।

स्यन्नवीण (सं० त्रि०) स्यन्ना वीणा यत्र। स्तुत।

स्यमन्तक (सं० पु०) मणिविशेष, श्रीकृष्णकी हस्तस्थित मणि। श्रीकृष्णके हाथमें स्यमन्तक और बाहुमें कौस्तुभमणि थी। श्रीमद्भागवतमें इस मणिकी कथा इस प्रकार है—सत्राजित् नामक एक राजा थे। इन्होंने अपनी तपस्यासे सूर्यनारायणको प्रसन्न कर यह मणि प्राप्त की

थी। यह सभी मणियोंमें श्रेष्ठ और सूर्यके समान प्रभाविशिष्ट थी। यह प्रति दिन आठ भार (१ भार=२० तुला=२००० पल) सोना देती थी। जिस स्थान या नगरमें यह रहती थी, वहां रोग, शोक, दुःख, दारिद्र आदिका नाम न रहता था।

एक दिन सत्राजित् यह मणि गलेमें पहन कर द्वारकामें श्रीकृष्णके साथ मिलने गये। मणि पहन कर उन्होंने सूर्यके समान प्रभाशाली और तेजसे अनुपलक्षित हो द्वारकामें प्रवेश किया। द्वारकावासीने उन्हें दूरसे देख कर भगवान्से जा कहा, 'भगवान् सूर्यदेव आपसे मिलने स्वयं आ रहे हैं। उनकी प्रखर किरण मनुष्य सहन नहीं कर सकते।' भगवान् श्रीकृष्ण उस समय पाशा खेल रहे थे। उन्होंने यह संवाद पा कर उन लोगोंसे कहा, 'ये सूर्य नहीं हैं, सत्राजित् स्यमन्तक मणि पहन कर आ रहे हैं। सत्राजित्ने गृहमें प्रवेश कर वह मणि देवमन्दिरमें रखी। मणि प्रति दिन आठ भार सोना देती थी, यह पहले ही लिखा जा चुका है।

एक दिन यादवोंके कहनेसे श्रीकृष्णने यदुराज उग्रसेनके लिये यह मणि मांगी, पर सत्राजित्ने नहीं दी। सत्राजित्से उनके भाई प्रसेनने यह ले ली और कण्ठमें धारण कर आखेटको गया। वहां एक सिंहने उसे मार डाला और मणि ले कर वह एक गुफामें घुसा। गुफामें रीछोंका राजा जाम्ववंत रहता था। मणिके प्रकाशसे गुफाको प्रकाशमान देख कर जाम्ववंत आ पहुंचा और उसने सिंहको मार कर मणि हस्तगत की। वह मणि ले कर जाम्ववंतका लड़का रोज खेला करता था। इधर श्रीकृष्ण पर यह कलङ्क लगा कि उन्होंने प्रसेनको मार कर मणि ले ली है। यह झूठा कलङ्क दूर करनेके लिये श्रीकृष्ण नगरवासियोंके साथ प्रसेनकी खोजमें निकले। बहुत खोज करनेके बाद उन्होंने सिंह द्वारा निहत अश्वके साथ प्रसेनको देख पाया। अनन्तर सबोंने पर्वतपृष्ठ पर प्रसेनघाती सिंहको जाम्ववंत द्वारा निहत देखा। इसके बाद श्रीकृष्ण अपने साथ आये हुए नगरवासियोंको बाहर रख ऋक्षराजकी उस अंधेरी गुफामें अकेले घुसे। वहां जा कर उन्होंने ऋक्षकुमारके हाथमें वह मणि देखी। बालककी धाती उस अपूर्व नरविग्रहको देख कर डरके मारे रो उठी। उसका रोना सुन कर बलिश्रेष्ठ जाम्ववान् क्रोधांध हो प्राकृत पुरुष ज्ञान अपने अभीष्ट देवता भगवान्से युद्ध करने लगा। दोनोंमें घनघोर युद्ध छिड़ गया। जाम्ववान् श्रीकृष्णकी दृढ़ मुष्टिके आघातसे क्षीणबल और घर्माक्त-कलेवर हो बड़े विस्मयके साथ कहने लगा, 'प्रभो! आप साधारण पुरुष नहीं हैं, आप पुरातन विष्णु हैं, आप ही हमारे अभीष्ट देव हैं।'

इसके बाद श्रीकृष्णने गम्भीर स्वरसे उससे कहा, 'हे ऋक्षपते! हम बहुतसे लोग इस मणिके लिये गुफाके द्वार पर आये थे, कलङ्क दूर करनेके लिये मैं अकेले इस भयानक गुफामें घुसा हूं। अन्यान्य सभी लोग दरवाजे पर खड़े हैं।' ऋक्षराज श्रीकृष्णके मुखसे यह बात सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ और उनकी पूजाके लिये स्यमन्तक मणिके साथ अपनी कन्या जाम्ववती उनके हाथ सौंप दी।

अनन्तर श्रीकृष्ण पत्नी जाम्ववती और स्यमन्तक मणिके साथ घर लौटे। भरी सभामें सत्राजित्को बुला कर जिस प्रकार उन्हें मणि मिली। कुल हाल श्रीकृष्णने कह दिया और मणि भी उसे लौटा दी। इस पर सत्राजित् बड़े लज्जित हुए और मुंह नीचा कर मणिरत्न ले लिये। पीछे वह अपने किये हुए पर पश्चात्ताप करते हुए घर वापिस गये।

अब सत्राजित्को यह चिन्ता होने लगी—मैंने जो अपराध किया है, वह क्या करनेसे दूर होगा? किस उपायसे श्रीकृष्ण मुझ पर प्रसन्न होंगे? मुझे सत्यभामा नामक एक कन्यारत्न है, अभी श्रीकृष्णको इस कन्यारत्नके साथ उक्त स्यमन्तक मणि उपहार देनेसे सम्भव है कि वे प्रसन्न होंगे। यह सोच कर वह श्रीकृष्णके पास गया और मणिके साथ सत्यभामाको उन्हें उपहारमें दे दिया। भगवान् श्रीकृष्णने सत्यभामाको ले कर कहा, 'मैं यह मणि लेना नहीं चाहता, क्योंकि आप सूर्यभक्त हैं, यह मणि आप हीके पास रहे, पर हम लोग इसके फलभागी होंगे।' इसका तात्पर्य यह कि सत्राजित्के पुत्र नहीं था, उसके अभावमें यह मणि मैं ही पाऊंगा, यह कह कर श्रीकृष्णने सिर्फ सत्यभामाको ले लिया, मणि

नहीं ली। (भागवत १०।५६ अ०) हरिवंशमें स्यमन्तको-पाख्यानमें इस मणिका विस्तृत विवरण लिखा है। नष्ट-चन्द्र नहीं देखना चाहिये, देखनेसे मिथ्या कलङ्क होता है। प्रवाद है, कि श्रीकृष्णने नष्टचन्द्र देखा था, इसीसे उन पर यह कलङ्क लगा। भाद्रमासकी शुक्ला या कृष्णा, इन दोनों चतुर्थी तिथिमें जो चन्द्रमा उदय होते हैं उसे नष्ट चन्द्र कहते हैं। यदि दैवात् कोई यह चन्द्र देख ले, तो उसके दूसरे दिन वह दोष मिटानेके लिये स्यमन्तको-पाख्यान सुन कर निम्नोक्त मन्त्रसे अभिमन्त्रित जलपान करे। मन्त्र इस प्रकार है—

"सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।

सुकुमारक मारोदीस्तवह्येष स्यमन्तकः॥" (तिथितत्त्व)

स्यमन्तपञ्चक (सं० क्ली०) एक तीर्थका नाम जहां भागवतके अनुसार परशुरामने पितरोंका शोणितसे तर्पण किया था। (भाग० १०।८२ अ०)

स्यमिक (सं० पु०) १ वल्मीक, चींटियों या दीमकोंका बनाया हुआ मिट्टीका घर, बाँबी। २ एक प्रकारका वृक्ष।

स्यमीक (सं० पु०) १ वल्मीक, बाँबी। २ काल, समय। ३ मेघ, बादल। ४ एक प्राचीन राजवंशका नाम। ५ जल।

स्यमीका (सं० स्त्री०) १ नीलिका, नीलका पौधा। २ कीट भेद, एक प्रकारका कीड़ा।

स्यात् (सं० अव्य०) कदाचित्, शायद।

स्याद्वाद (सं० पु०) जैनदर्शन। इसमें एक वस्तुमें नित्यत्व, अनित्यत्व, सदृशत्व, विरूपत्व, सत्त्व, असत्त्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मोंका साक्षेप स्वीकार किया जाता है और कहा जाता है, कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है आदि।

स्यानप (हिं० पु०) स्यानपन देखो।

स्यानपत (हिं० स्त्री०) १ चतुरता, चतुराई। २ धूर्त्तता, चालाकी।

स्यानपन (हिं० पु०) १ चतुरता, बुद्धिमानी, होशियारी। २ धूर्त्तता, चालाकी।

स्याना (हिं० वि०) १ बुद्धिमान्, चतुर, होशियार। २ धूर्त्त, चालाक, काइयां। ३ वयस्क, जो अब बालक न हो, बड़ा। (पु०) ४ वृद्ध पुरुष, बड़ा बूढ़ा। ५ नायक, मुखिया, नंबरदार। ६ चिकित्सक, हकीम। ७ वह जो झाड़ फूंक करता हो, ओझा।

स्यानपन (हिं० पु०) १ स्याने होनेकी अवस्था, लड़कपनके बादकी अवस्था, बालिग होनेकी अवस्था। २ चतुराई, चातुरी, होशियारी। ३ धूर्त्तता, चालाकी।

स्यापा (फा० पु०) मरे हुए मनुष्यके शोकमें कुछ काल तक घरकी तथा नाते रिश्तेकी स्त्रियोंके प्रति दिन एकत्र हो कर रोने और शोक मनानेकी रीति। मुसलमानों तथा पंजाबके हिन्दुओंमें यह चाल है, कि घरमें किसीकी विशेषकर जवान मनुष्यकी मृत्यु होने पर स्त्रियां एकत्र हो कर रोती पीटती हैं। वे दिन रात एक ही बार भोजन करती हैं और घरके बाहर नहीं निकलती। इसीको स्यापा कहते हैं।

स्यारकाँटा (हिं० पु०) स्वर्णक्षीरी, सत्यानासी।

स्यारपन (हिं० पु०) शृगाल प्रकृति, सियार या गीदड़का सा स्वभाव।

स्यारलाठी (हिं० स्त्री०) अमलतास।

स्यारी (हिं० स्त्री०) शृगाली, सियारकी मादा, सियारिन।

स्याल (सं० पु०) श्यालक, साला।

स्यालक (सं० पु०) पत्नीका भाई, साला।

स्याला (हिं० पु०) अधिकता, बहुतायत।

स्यालिका (सं० स्त्री०) पत्नीकी छोटी बहन, साली।

स्याली (सं० स्त्री०) पत्नीकी बहन, साली।

स्याली (सं० पु०) पत्नीका भाई, साला।

स्याह (फा० वि०) १ कृष्ण वर्णका, काला। (पु०) २ घोड़ेकी एक जाति।

स्याह करना गुलकट (हिं० पु०) लकड़ीका बना हुआ एक प्रकारका ठप्पा जिससे कपड़ों पर बेल बूटे छापे जाते हैं।

स्याहगोसर (सं० पु०) सियाहगोश देखो।

स्याहजबान (फा० पु०) वह हाथी या घोड़ा जिसकी जबान स्याह हो। ऐसे हाथी घोड़े ऐबी समझे जाते थे।

स्याह जीरा (हिं० पु०) काला जीरा।

स्याह तालू (हिं० पु०) वह हाथी या घोड़ा जिसका तालू बिलकुल स्याह हो। ऐसे हाथी घोड़े ऐबी समझे जाते हैं।

स्याहदिल (फा० वि०) जो दिलका काला हो, खोटा, दुष्ट।

स्याहभूरा (हिं० पु०) काली।

स्याहा (फा० पु०) सियाहा देखो।

स्याही (फा० स्त्री०) १ एक प्रसिद्ध रंगीन तरल पदार्थ जो प्रायः काला होता है और जो लिखने, छापने आदिके काममें आता है, लिखने या छापनेकी रोशनाई। २ कालापन, कालिमा। ३ कालिख, कालिमा। ४ कडवे तेलके दीयेसे पारा हुआ एक प्रकारका काजल जिससे गोदना गोदते हैं।

स्याही (हिं० स्त्री०) शल्यकी, साही।

स्युम्न (सं० क्ली०) आह्लाद।

स्युम्न (सं० क्ली०) आह्लाद।

स्युवक (सं० पु०) पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद।

स्यू (सं० स्त्री०) सूत, सून।

स्यूत (सं० त्रि०) १ सूचित, सीया हुआ, बुना हुआ। (पु०) सिव-क्त। २ मोटे कपडेका थैला, थैली।

स्यूति (सं० स्त्री०) सिव-क्तिन्-ऊट्। १ सीवन, सीना। २ वयन, बुनना। ३ सन्तति, संतान, औलाद। ४ थैला।

स्यून (सं० पु०) सिव (सिवेष्टेर्यू च्। उण् ३।६) इति न, ट युच्। १ किरण, रश्मि। २ सूर्य। ३ स्यूत, थैला।

स्यूम (सं० क्ली०) सिव (अविसिविसिशुषिभ्यः कित्। उण् १।१४३) इति मन् ज्वरत्वरेत्यूट्। १ जल। २ रश्मि, किरण।

स्यूमक (सं० क्ली०) सुख। (नैघण्टु ३।६)

स्यूमगभस्ति (सं० त्रि०) सुखरश्मिविशिष्ट।

स्यूमगृभ् (सं० त्रि०) वर्त्तमान शत्रुओंका हिंसक।

स्यूमन् (सं० त्रि०) अनुस्यूत। (ऋक् १।११३।१७)

स्यूमन्यु (सं० त्रि०) अपना सुख चाहनेवाला।

स्यूमरश्मि (सं० पु०) ऋग्वेदके अनुसार एक ऋषि।

स्योत (सं० पु०) स्यूत, थैला।

स्योन (सं० पु०) १ थैला। २ सूर्य। ३ किरण। (क्ली०) ४ आनन्द, सुख।

स्योनकृत (सं० त्रि०) अतिथियोंको सुख देनेवाला।

स्योनशी (सं० त्रि०) सुखप्रद।

स्योनाक (सं० पु०) श्योनाक वृक्ष, सोनापाढा।

स्योनाग (सं० पु०) श्योनाक वृक्ष, सोनापाढा।

स्योहार (हिं० पु०) वैश्योंकी एक जाति।

स्रंस (सं० पु०) स्रंस-घञ्। भ्रंश, च्युति।

स्रंसन (सं० क्ली०) स्रंस-ल्युट्। १ गर्भस्राव, गर्भपात, कच्चे गर्भका गिरना। २ अधःपतन। ३ भ्रंश। ४ वह औषध जो कोठेके पाक आदि दोष तथा मलको नियत समयके पहले ही बलात् गुदामार्गसे निकाल दे, दस्त लानेवाली दवा। (त्रि०) स्रंस-णिच्-ल्यु। ५ अधःपतन करनेवाला। ६ मलभेदक, दस्त लानेवाला।

स्रंसिन् (सं० पु०) स्रंस णिनि। १ पीलू वृक्ष, अखरोटका पेड। २ पूगवृक्ष, सुपारीका पेड। (त्रि०) ३ पतनशील, गिरनेवाला। ४ असमयमें गिरनेवाला।

स्रंसिनी (सं० स्त्री०) भावप्रकाशके अनुसार एक प्रकारका योनिरोग जिसमें प्रसंगके समय रगड जाने पर योनि बाहर निकल आती है और गर्भ नहीं ठहरता, प्रस्रंसिनी।

स्रंसिनीफल (सं० पु०) शिरीषवृक्ष, सिरस।

स्रक् (सं० पु० स्त्री०) १ फूलोंकी माला। २ एक वृत्तका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें चार नगण और एक सगण होता है तथा ६ और ६ पर यति होती है। ३ ज्योतिषमें एक प्रकारका योग। ४ एक प्रकारका वृक्ष।

स्रक (सं० पु० स्त्री०) स्रक् देखो।

स्रक्ष (सं० पु०) सृक्व देखो।

स्रगणु (सं० पु०) स्रग अणु। मालामन्त्र।

स्रगाल (सं० पु०) सियार, गीदड।

स्रग्जिह्व (सं० पु०) अग्नि।

स्रग्धर (सं० त्रि०) मालाधारी, माला पहननेवाला।

स्रग्धरा (सं० स्त्री०) १ छन्दोविशेष। इस छन्दके प्रत्येक चरणमें २१ अक्षर होते हैं। इसके सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षरमें यति होती है और ५, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६ और १९वां अक्षर लघु और बाकी वर्ण गुरु होते हैं। २ एक बौद्ध देवीका नाम। (त्रि०) ३ माल्यविशिष्ट, माला पहननेवाला।

स्रग्वान् (सं० त्रि०) मालासे युक्त, मालाधारी।

स्रग्विन् (सं० त्रि०) स्रज् (अस्मायामेधास्रजो विनिः। पा ५।२।१२१) इति विनि। मालाधारी, मालासे युक्त।

स्रग्विनी (सं० स्त्री०) १ छन्दोविशेष। इस छन्दके प्रत्येक चरणमें बारह अक्षर होते हैं जिनमेंसे २, ५, ८, १०वां

अक्षर लघु और बाकी गुरु होते हैं। २ माला पहनने-वाली स्त्री।

स्रज् (सं० स्त्री०) १ माल्य, माला। शास्त्रमें लिखा है, कि एक आदमीकी पहनी हुई माला दूसरेको नहीं पहननी चाहिये। (मनु ४।६६) २ छन्दोभेद। ३ ज्योतिषोक्त योगभेद। (बृहत्स० १२।२)

स्रजस् (सं० स्त्री०) स्रज, माल्य।

स्रजिष्ठ (सं० त्रि०) स्रज्-विन्-इष्ठ (विन्मोतोर्लुक्। पा ५।३।६५) इति विनोलुक्। माल्यविशिष्ट, मालाधारी।

स्रजीयस् (सं० त्रि०) माल्यविशिष्ट, मालाधारी।

स्रज्वा (सं० पु०) १ प्रजापति। २ रज्जू, रस्सी। ३ मालाकार, माला बनानेवाला, माली।

स्रणिका (सं० त्रि०) लाल।

स्रद्व (सं० स्त्री०) वातकर्म।

स्रपाटी (हिं० स्त्री०) पक्षीकी चोंच।

स्रव (सं० पु०) स्रु-अप्। १ स्रवण, मूत्र, पेशाब। २ निर्झर, प्रस्रवण, झरना। ३ प्रवाह, बहाव।

स्रवण (सं० क्ली०) स्रु-ल्युट्। १ मूत्र, पेशाब। २ घर्म, पसीना। ३ प्रवाह, बहाव। ४ गर्भपात।

स्रवत्तोया (सं० स्त्री०) रुद्रवन्ती, रुदन्ती।

स्रवथ (सं० पु०) स्रवण, क्षरण।

स्रवद्गर्भा (सं० स्त्री०) वह स्त्री या गाय जिसका गर्भ गिर गया हो।

स्रवद्रङ्ग (सं० पु०) १ प्रदर्शनी, मेला, नुमाइश। २ बाजार, हाट।

स्रवत्तोया (सं० स्त्री०) रुदन्तीवृक्ष।

स्रवना (हिं० क्रि०) १ बहाना, टपकाना। २ गिराना।

स्रवन्ती (सं० स्त्री०) स्रु शतृ-ङीप्। १ नदी, दरिया। २ एक प्रकारकी वनस्पति। (त्रि०) ३ क्षरणविशिष्ट, बहनेवाला।

स्रवस् (सं० क्ली०) स्रु-असि। स्राव।

स्रवा (सं० स्त्री०) १ मूर्वा, मरोडफली। २ जीवन्ती, डोडी।

स्रष्टृ (सं० पु०) स्रज तृच। १ ब्रह्मा। २ शिव। ३ विष्णु। ४ वैद्य। (त्रि०) ५ सृष्टिकर्त्ता, सृष्टि करने-वाला।

स्रस्तर (सं० पु०) घास पातका बिछावन।

स्रस्त (सं० त्रि०) स्रंस क्त। १ पतित, च्युत, गिरा हुआ। २ शिथिल, ढीला ढाला। ३ हिलता हुआ। ४ धंसा हुआ। ५ अलग किया हुआ।

स्रस्तर (सं० पु०) बैठनेका आसन।

स्राकिशमिशी (फा० स्त्री०) हलके बैंगनी रंगका एक प्रकारका छोटा अंगूर जो क्वेटा जिलेमें होता है और जिसको सुखा कर किशमिश बनाते हैं।

स्रस्ति (सं० स्त्री०) स्रंस-क्ति। च्युति, क्षरण।

स्राक् (सं० अव्य०) द्रुत।

स्रावत्य (सं० त्रि०) स्रक्ति सम्बन्धी, स्रक्त्य।

स्राग्विण (सं० पु०) स्रग्विणके अपत्य।

स्राम (सं० त्रि०) व्याधित। (ऋक् १।११७।१६)

स्राम्य (सं० क्ली०) व्याधि।

स्राव (सं० पु०) स्रु-घञ्। १ स्रव, क्षरण, झरना। २ नेत्ररोगान्तर्गत सन्धिगत रोगविशेष।

कुपित दोष अश्रुमार्ग द्वारा नेत्रगत समस्त सन्धियोंमें व्याप्त हो कर अपने अपने लक्षणयुक्त चार प्रकारका स्राव उत्पादन करता है। कोई कोई इसे नेत्रनाडी कहते हैं। यह स्राव पैत्तिक, श्लेष्मज, सान्निपातिक और रक्तज भेदसे चार प्रकारका है। पैत्तिक स्राव पित्तके बिगडनेसे होता है। इसमें सन्धिगत नाडीसे पीला और लाल जल जैसा उष्ण स्राव होता है। सान्निपातिक स्राव—इस रोगमें नेत्रसंधिमें शोथ उत्पन्न होता है और पकने पर इससे हमेशा पीप निकलती है। यह अत्यन्त कष्टदायक है। रक्तज स्राव—इस स्रावमें सधिगत नाडीसे सर्वदा उष्ण रक्त निकलता है। यह अत्यन्त कष्टसाध्य है। (सुश्रुत)

३ रस, निर्यास। ४ गर्भस्राव, गर्भपात। ५ वह जो बह, रस या चू कर निकला हो।

स्रावक (सं० क्ली०) स्रु णिच् ण्वुल्। १ काली मिर्च, गोल मिर्च। (त्रि०) २ क्षरक, बहाने, चुआने या टपकानेवाला।

स्रावकत्व (सं० क्ली०) पदार्थोंका वह धर्म जिसके कारण कोई अन्य पदार्थ उनमेंसे हो कर निकल या रस जाता है। जैसे—बलुए पत्थरमेंसे पानी जो रस रस कर

निकल जाता है, वह उसके स्रावकत्व गुणके कारण ही।

स्रावण (सं० क्ली०) स्रु णिच् ल्युट्। स्राव देखो।

स्रावणी (सं० स्त्री०) ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध। श्रावणी देखो।

स्रावित (सं० त्रि०) जिसका स्राव कराया गया हो, बहा, रसा या चुआ कर निकाला हुआ।

स्राविन् (सं० त्रि०) स्रु-णिनि। क्षरण करनेवाला, रसानेवाला, बहानेवाला।

स्राव्य (सं० त्रि०) स्रु ण्यत्। क्षरणयोग्य, बहानेयोग्य।

स्रुक् (सं० स्त्री०) लकड़ीकी छोटी करछी जिससे हवनादिमें घीकी आहुति देते हैं, स्रुवा।

स्रुक्कार (सं० पु०) स्रुक्‌का शब्द। स्रुव देखो।

स्रुग्दारु (सं० क्ली०) विकङ्कत वृक्ष, कंटाई।

स्रुग्वत् (सं० त्रि०) स्रुकविशिष्ट।

स्रुघ्न (सं० पु०) थानेश्वरके उत्तरवर्त्ती एक प्राचीन जनपद और उसकी राजधानी। प्राचीन यमुनाके गर्भ-वेष्टित सुघ नामक ग्रामको कोई कोई प्राचीन स्रुघ्न कहते हैं। किन्तु चीनपरिव्राजककी वर्णनासे दूसरा स्थान समझा जाता है। महाभारतके समयसे यह स्थान प्रसिद्ध था। ७वीं सदीमें चीनपरिव्राजक यहां बौद्ध कीर्त्ति और बहु हीनयान सम्प्रदायके लोग देखे गये हैं।

स्रुघ्नी (सं० स्त्री०) सर्जिका क्षार, सज्जी मिट्टी।

स्रुच (सं० स्त्री०) स्रु स्रुतौ (चिक् च। उण् २।६२) इति चिक्। यज्ञपात्रविशेष, वह पात्र जिससे घृतादिकी आहुति दी जाय। ध्रुवा, उपभृत् और जुहू ये तीन प्रकारके स्रुच हैं। इनमेंसे जिसकी आकृति दरख-के समान होती है, उसे ध्रुवा, चक्राकार होनेसे उपभृत् तथा अर्द्धचन्द्राकृति होनेसे जुहू कहते हैं। वैकङ्कत-वृक्षसे ध्रुवा, अश्वत्थवृक्षसे उपभृत्, पलाशकाष्ठसे जुहू और खदिर काष्ठसे स्रुच् बनावे।

स्रुच्य (सं० त्रि०) स्रुक योग्य

स्रुत् (सं० त्रि०) स्रु-क्विप्। स्रावणकारी, क्षरणकारी।

स्रुत (सं० त्रि०) स्रु-क्त। १ क्षरित, बहा हुआ, चुआ हुआ। २ स्नुत।

स्रुता (सं० स्त्री०) स्रु-क्त-टाप्। हिङ्गुलपत्री, हिंगपत्री।

स्रुति (सं० स्त्री०) स्रु-क्तिन्। क्षरण, बहाव।

स्रुत्य (सं० त्रि०) क्षरण योग्य, बहने योग्य।

स्रुव (सं० पु० स्त्री०) स्रु स्रवती घृतादिकमस्मादिति स्रु (स्रुवः कः। उण् २।६१) इति क। यज्ञपात्रविशेष।

स्रुवतरु (सं० पु०) विकङ्कतवृक्ष।

स्रुवा (सं० स्त्री०) स्रु-क-टाप्। १ शल्लकी, सलई। २ मूर्वा, मरोड़फली। ३ स्रुक्, लकड़ीकी बनी हुई एक प्रकारकी छोटी करछी जिससे हवनादिमें घीकी आहुति देते हैं। ४ निर्झर, झरना।

स्रू (सं० स्त्री०) स्रु स्रुतौ (क्विप् वचिप्रच्छीति। उण् २।५७) इति क्विप्। १ यज्ञपात्रविशेष। २ निर्झर।

स्रोत (सं० पु० क्ली०) स्रोतः, सोता।

स्रोत आपत्ति (सं० स्त्री०) बौद्धशास्त्रके अनुसार निर्वाण साधनाकी प्रथम अवस्था जिसमें सांसारिक बंधन शिथिल होने लगते हैं।

स्रोत-आपन्न (सं० त्रि०) जो निर्वाण साधनाकी प्रथम अवस्था पर पहुंचा हो।

स्रोतईश (सं० पु०) स्रोतसामीशः। स्रोतःपति, समुद्र।

स्रोतपत (सं० पु०) समुद्र।

स्रोतस् (सं० क्ली०) स्रु गतौ (स्रुरीभ्यां तुट् च। उण् ४।२०१) इति असुन् तुट् च। १ जल-प्रवाह, पानीका बहाव या झरना। २ नदी। गीतामें भगवान्‌ने कहा है, कि स्रोतः अर्थात् नदियोंमें मैं जाह्नवी हूं। ३ वैद्यकके अनुसार शरीरस्थ छिद्र या मार्ग जो पुरुषोंमें प्रधानतः ६ और स्त्रियोंमें ११ माने गये हैं।। इनके द्वारा प्राण, अन्न, जल, रस, रक्त, मांस, मेद, मल, मूत्र, शुक्र और आर्त्तवका शरीरमें संचार होना माना जाता है।• यह बहुसंख्यक है, इसलिये इसका वर्णन करना कठिन है। ४ वंशपरम्परा, कुलधारा।

स्रोतस्य (सं० पु०) स्रोतस्-यत्। १ शिव। २ चोर, चौर। (त्रि०) ३ स्रोतोभव।

स्रोतस्वती (सं० स्त्री०) नदी।

स्रोतस्विनी (सं० स्त्री०) नदी। (भरत)

स्रोतोञ्जन (सं० क्ली०) यमुनास्रोतोभव अञ्जन। यमुना स्रोतमें सौवीर देशमें उत्पन्न अञ्जन, आंखमें लगानेका सुरमा। इस अञ्जनकी आकृति वल्मीकके शिखरदेशकी तरह होती है। जो तोड़नेसे मध्यदेश कृष्णवर्ण और

घिसनसे गेरूमिट्टी जैसा होता है, उसे सौवीराञ्जन कहते हैं। भावप्रकाशमें लिखा है, कि जामुन और कापोताञ्जन ये दो ही स्रोतोञ्जनके दूसरे नाम हैं। कृष्णवर्ण अञ्जनको स्रोतोञ्जन और श्वेतवर्णके अञ्जनको सौवीराञ्जन कहते हैं। स्रोतोञ्जन वल्मीकके शिखरके समान आकृतिविशिष्ट होता है। टूटने पर उसके भीतर अञ्जन सदृश आभा दिखाई देती है और घिसने पर गेरूमिट्टीके रंग जैसा हो जाता है। इसका गुण—मधुर, कषाय, रस, चक्षु का हित कारक, कफघ्न, शीतवीर्य, पित्तनाशक, लेखनगुणयुक्त, स्निग्ध, धारक तथा वमि, विष, श्लेष्म, क्षय और रक्त-दोषनाशक। इसलिये पण्डितोंको इसका सर्वदा सेवन करना चाहिये। दो प्रकारके अञ्जनोंमें स्रोतोञ्जन ही श्रेष्ठ है। (भावप्र०) किसी किसी वैद्यकमें यह स्रोतोञ्जन श्वेत, कृष्ण और लोहित वर्णभेदसे तीन प्रकारका कहा गया है।

स्रोतोद्भव (सं० क्ली०) स्रोतोञ्जन, सुरमा।

स्रोतोनदीभव (सं० क्ली०) स्रोतोञ्जन, सुरमा।

स्रोतोवह (सं० स्त्री०) स्रोतो वहतीति वह-क्विप्। नदी।

स्रोतोवहा (सं० स्त्री०) स्रोतोवाहिनी नदी।

स्रोत्या (सं० स्त्री०) स्रवणशीला। (ऋक् ३।३३।६)

स्रौग्मत (सं० क्ली०) साममेद।

स्रौघ्न (सं० त्रि०) स्रुघ्न-सम्बन्धी।

स्रौघ्निका (सं० स्त्री०) सर्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी।

स्रौच (सं० त्रि०) स्रुक्-सम्बन्धी।

स्रौत (सं० क्ली०) साममेद।

स्रौतिक (सं० क्ली०) मृगनाभि।

स्लीपर (अं० पु०) १ एक प्रकारकी जूती जो एड़ीकी ओर से खुली होती है, चटी। २ लकड़ीका वह चौपहल लंबा टुकड़ा या धरन जो प्रायः रेलकी पटरियोंके नीचे बिछी रहती है।

स्लेज (अं० स्त्री०) एक प्रकारकी बिना पहियेकी गाड़ी जो बर्फ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट (अं० स्त्री०) एक प्रकारके चिकने पत्थरकी चौकोर चौरस पतली पटरी जिस पर प्रारम्भिक श्रेणियोंके विद्यार्थी अक्षर और अंक लिख कर अभ्यास करते हैं। इस पर लिखा हुआ हाथसे पोंछने अथवा पानीसे धोने-से मिट जाता है।

स्लेसम अङ्क (सं० पु०) लसूड़ेका वृक्ष।

स्लो (अं० वि०) १ धीमी चालमें चलनेवाला, मंदगति। २ सुस्त, काहिल। (पु०) ३ घड़ीको चालका मंद या धीमा होना।

स्लोथ (अं० पु०) एक प्रकारका बहुत सुस्त जानवर। यह दक्षिण अमेरिकाके जंगलोंमें पाया जाता है। इसके दाँत बहुत कम होते हैं और प्रायः कटीले नहीं होते। किसी किसीके तो बिलकुल दाँत नहीं होते। यह पेड़ोंकी पत्तियां खा कर गुजारा करता है। जब तक पेड़की सब पत्तियां नहीं खा लेता, तब तक उस पेड़से नहीं उतरता। यह हिंसक जन्तु नहीं है, पर यदि कोई इस पर आक्रमण करे, तो यह अपने नाखूनोंसे अपनी रक्षा कर सकता है।

स्वः (सं० पु०) स्वर्ग।

स्वःपथ (सं० पु०) स्वर्गमार्ग, मृत्यु।

स्वःपाल (सं० पु०) स्वर्गका रक्षक।

स्वःपृष्ठ (सं० क्ली०) साममेद।

स्वःसरिता (सं० स्त्री०) गंगा।

स्वःसुन्दरी (सं० स्त्री०) अप्सरा।

स्व (सं० पु० क्ली०) १ धन, दौलत। (पु०) २ आत्म, निज, अपना आप। ३ विष्णु। ४ ज्ञाति, भाई-बंधु, गोती।

स्वक (सं० त्रि०) स्वीय, निजका, अपना।

स्वकम्पन (सं० पु०) वायु, हवा।

स्वकम्बला (सं० स्त्री०) पुराणानुसार एक नदीका नाम।

स्वकरण (सं० क्ली०) १ स्वीकार, मंजूर। २ निज कार्य, अपना काम।

स्वकर्मन् (सं० क्ली०) आत्मकृत कार्य, अपना किया हुआ कर्म। अपना कर्म शुभ होनेसे सुख तथा अशुभ होनेसे दुःख या नरक भोगादि हुआ करता है।

स्वकर्मिन् (सं० त्रि०) केवल अपने ही कामसे मतलब रखनेवाला, स्वार्थी, खुदगरज।

स्वकामिन् (सं० त्रि०) अपने लिये कामना करनेवाला।

स्वकाल (सं० पु०) स्वीय काल, किसी कार्यका निर्दिष्ट काल।

स्वकाय (सं० त्रि०) स्वीय, निजका, अपना। (हेम)

स्वकीया (सं० स्त्री०) साहित्यमें नायिकाके दो प्रधान भेदोंमेंसे एक, अपने ही पतिमें अनुराग रखनेवाली नायिका, या स्त्री। स्वकीया दो प्रकारकी कही गई हैं—(१) ज्येष्ठा और (२) कनिष्ठा। अवस्थानुसार इनके तीन और भेद किये गये हैं—मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा।

स्वकुल (सं० क्ली०) अपना कुल, अपना वंश।

स्वकुलक्षय (सं० पु०) १ मत्स्य, मछली। २ अपने वंशका नाश। (त्रि०) ३ अपने वंशका नाश करनेवाला। ४ जिसका वंश नाश हो गया हो।

स्वकुल्य (सं० त्रि०) अपने वंशका।

स्वकृत् (सं० त्रि०) स्वकार्यकारी, अपना काम करनेवाला।

स्वकृत (सं० त्रि०) अपनेसे किया हुआ।

स्वक्ष (सं० त्रि०) सुन्दर अक्षयुक्त।

स्वक्षत्र (सं० त्रि०) आत्मभूतबलविशिष्ट (ऋक् १।५५।३)

स्वगत (सं० क्ली०) १ स्वगत-कथन देखो। (क्रि० वि०) २ आप ही आप, अपने आपसे।

स्वगत-कथन (सं० पु०) नाटकमें पात्रका आप ही आप बोलना। जिस समय रङ्गमञ्च पर कई पात्र होते हैं, उस समय यदि उनमेंसे कोई पात्र अन्य पात्रोंसे छिपा कर इस प्रकार कोई बात कहता है, मानो वह किसीको सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है, तो ऐसे कथनको स्वगत, अश्राव्य या आत्मगत कहते हैं।

स्वगुप्ता (सं० स्त्री०) १ शुकशिम्बी, कौंछ। १ लज्जालू, लजालू।

स्वगूर्त (सं० त्रि०) स्वयंगामी, खुद जानेवाला।

स्वगृह (सं० पु०) १ कलिकार नामक पक्षी। (पु० क्ली०) २ निजालय, अपना घर। ज्योतिषके अनुसार राशिचक्रमें ग्रहोंके स्वगृह हैं। इस स्वगृहमें ग्रहगण बड़े बलवान् हैं। इनमेंसे सिंहराशि रविका स्वगृह, कर्कट चन्द्रका, मेष और वृश्चिक मङ्गलका, मिथुन और कन्या बुधका, धनु और मीन वृहस्पतिका, वृष और तुला शुक्रका, मकर और कुम्भ शनि तथा राहुका कन्याराशि स्वगृह है।

स्वगोप (सं० त्रि०) स्वभूतरक्षण, अपने आपको बचानेवाला।

स्वग्नि (सं० त्रि०) शोभन अग्नियुक्त।

स्वग्रह (सं० पु०) बालकोंको होनेवाला एक प्रकारका रोग।

स्वग्राम (सं० पु०) अपना गाँव।

स्वङ्ग (सं० त्रि०) १ शोभनाङ्गविशिष्ट, सुन्दर शरीरवाला। (क्ली०) २ शोभन अङ्ग, सुन्दर शरीर।

स्वङ्गुरि (सं० त्रि०) शोभन अंगुलियुक्त, अच्छी अंगुलीवाला।

स्वच्छ (सं० त्रि०) १ स्वस्थ, नीरोग। २ शुक्ल, उज्ज्वल। ३ निर्मल, जिसमें किसी प्रकारकी मैल या गंदगी आदि न हो। ४ स्पष्ट, साफ। ५ निष्कपट। ६ शुद्ध, पवित्र। (पु०) ७ स्फटिक, बिल्लौर। ८ बदरी वृक्ष, बेर। ९ विमल नामक उपधातु। १० सोने और चाँदीका मिश्रण। ११ अभ्रक, अबरक। १२ रौप्यमाक्षिक, रूपामाखी। १३ स्वर्णमाक्षिक, सोनामाखी। १४ मुक्ता, मोती।

स्वच्छता (सं० स्त्री०) स्वच्छ होनेका भाव, निर्मलता, सफाई।

स्वच्छन्द (सं० त्रि०) १ जो किसी दूसरेके नियन्त्रणमें न हो और अपनी ही इच्छाके अनुसार सब कार्य करे, स्वाधीन, स्वतंत्र, आजाद। २ अपने इच्छानुसार चलनेवाला, मनमाना काम करनेवाला। ३ अपत्यजात, अपने आपसे होनेवाला। ४ सुस्थ, नीरोग। (पु०) ५ स्कंदका एक नाम। (क्रि० वि०) ६ स्वतन्त्रतापूर्वक, मनमाना, बेधड़क।

स्वच्छन्दचारिणी (सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।

स्वच्छन्दचारी (सं० त्रि०) स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छानुसार चलनेवाला, मनमौजी।

स्वच्छन्दता (सं० स्त्री०) स्वच्छन्द होनेका भाव, स्वतंत्रता, आजादी।

स्वच्छन्दनायक (सं० पु०) ज्वराधिकारोक्त औषधविशेष। इस औषधका सेवन करनेसे अभिन्यास नामक सन्निपातज्वर शीघ्र आराम होता है।

स्वच्छन्दभैरव (सं० पु०) एक भैरव। दुर्गापूजाके समय इनकी पूजा करनी होती है।

स्वच्छन्दभैरव (सं० पु०) ज्वराधिकारोक्त औषधविशेष। यह औषध सेवन करनेसे उग्र सन्निपातज्वर, ग्रहणी और सूतिका आदि रोग जल्द आराम होता है।

स्वच्छपत्र (सं० क्ली०) अभ्रक, अबरक।
स्वच्छमणि (सं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर। (राजनि०)
स्वच्छवालुका (सं० स्त्री०) विमल नामक उपधातु।
स्वच्छा (सं० स्त्री०) श्वेत दूर्वा, सफेद दूब।
स्वज (सं० क्ली०) १ रक्त, खून। (पु०) २ पुत्र, बेटा। ३ स्वेद, पसीना। (त्रि०) ४ आत्मजात, अपनेसे उत्पन्न। ५ स्वाभाविक।
स्वजन (सं० पु०) १ ज्ञाति, सगे सम्बन्धी, रिश्तेदार। २ आत्मीय जन, अपने परिवारके लोग।
स्वजनता (सं० स्त्री०) १ स्वजन होनेका भाव, आत्मीयता। २ नातेदारी, रिश्तेदारी।
स्वजन्मन् (सं० त्रि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो, अपने आपसे उत्पन्न। (ऋक् ७।१।१२)
स्वजा (सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी।
स्वजात (सं० त्रि०) १ अपनेसे उत्पन्न। (पु०) २ पुत्र, बेटा।
स्वजाति (सं० स्त्री०) अपनी जाति, अपनी कौम।
स्वजातिद्विष् (सं० पु०) अपनी जातिसे द्वेष करनेवाला, कुत्ता।
स्वजातीय (सं० त्रि०) १ अपनी जातिका। २ एक ही जातिका।
स्वजात्य (सं० त्रि०) स्वजातीय।
स्वजित (सं० त्रि०) अपनेसे जय करनेवाला।
स्वजन्य (सं० त्रि०) स्वजन्मा, अपनेसे उत्पन्न।
स्वतः (सं० अव्य०) स्वतस् देखो।
स्वतन्त्र (सं० त्रि०) १ जो किसीके अधीन न हो, स्वाधीन, आज़ाद। २ स्वेच्छाचारी, अपने इच्छानुसार चलनेवाला, मनमानी करनेवाला। ३ वयस्क, सयाना, बालिग। ४ भिन्न, अलग, जुदा। ५ किसी प्रकारके बंधन या नियम आदिसे रहित अथवा मुक्त।

ज्येष्ठ व्यक्तिमें गुण और वयःकृत स्वातन्त्र्य है, पृथिवीपति राजा स्वतन्त्र है, प्रजा अस्वतन्त्र है, प्रभु स्वतंत्र है; स्त्रीमात्र, पुत्र, दास और अनुजीवि आदि सभी अस्वतंत्र है, माता और पिता जीवित रहनेसे पुत्रकी स्वतंत्रता नहीं होती। पिता माताके अभावमें १६ वर्षके बाद मानव स्वातन्त्र्य लाभ करता है।

स्वतन्त्रता (सं० स्त्री०) स्वतंत्र होनेका भाव, स्वाधीनता, आज़ादी।
स्वतन्त्रिक (सं० त्रि०) स्वाधीन, आज़ाद।
स्वतन्त्रिन् (सं० त्रि०) स्वाधीन, आज़ाद।
स्वतस् (सं० अव्य०) स्व 'पञ्चम्यास्तसिल्' इति तसिल्। १ अपने आप, आप ही। २ धनसे। (मनु ८।१६६)
स्वतुल्य (सं० त्रि०) अपने तुल्य, अपने समान।
स्वतोविरोध (सं० पु०) आप ही अपना विरोध या खंडन करना।
स्वतोविरोधी (सं० पु०) अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।
स्वत्व (सं० क्ली०) स्वस्य भावः स्व-त्व। शास्त्रसम्मत यथेष्ट विनियोगार्ह, अधिकार, हक्। यह स्वत्व दो प्रकारका है, द्रव्यगत और गुणगत। दानादि द्वारा द्रव्यगत स्वत्व होता है अर्थात् कोई वस्तु दान करनेसे उसमें दाताका स्वत्व ध्वंस हो कर गृहीताका स्वत्व होता है।

जीमूतवाहनकृत दायभागमें लिखा है, कि जिसका जिस वस्तुमें स्वत्व है, उसका वह स्वत्व ध्वंस नहीं होनेसे दूसरेका उस वस्तुमें अधिकार नहीं होता। कोई वस्तु किसीको दान करनेसे मालिकका स्वत्व ध्वंस हो कर जिसे वह वस्तु दान की जाती है, उसका उसमें स्वत्व होता है। जब तक अपना स्वत्व ध्वंस न हो कर दूसरेका स्वत्व नहीं हो, तब तक वह दान नहीं कहलाता है। यह स्वत्व तीन प्रकारसे अर्थात् दान, क्रय और उत्तराधिकार सूत्रसे होता है।

मरण, पातित्य, आश्रमान्तर गमन तथा उपेक्षामें धनीका स्वत्व ध्वंस होता है। इस प्रकार यदि स्वत्वनाश हो जाय, तो उत्तराधिकारियोंको उचित है, कि वे शास्त्रके नियमानुसार धन विभाग कर लें। धनी यदि पुत्रादिको जीवित कालमें ही धन बांट देना चाहें, तो वह बांट सकते हैं।

यदि पुत्रादि न रहे और स्वामीकी मृत्यु हो जाय, तो स्त्री स्वामीके धनमें स्वत्ववती होगी सही, पर उक्त धनमें उसका निरूढ़ स्वत्व नहीं होगा। वह जीवित काल पर्यन्त उस धनका केवल भोग कर सकती है, दानविक्रयादि नहीं कर सकती, करनेसे वह शास्त्रानुसार सिद्ध

नहीं होगा। स्त्रियां विवाहादिमें यौतुक स्वरूप जो धन पाती हैं और स्वामी उसे सन्तोषके लिये जो धन देता है, उस धनमें स्त्रियोंका सम्पूर्ण स्वत्व है। इस स्त्रीधनका वह यथेच्छरूपसे व्यवहार कर सकती हैं।

(दायभाग)

स्वत्वाधिकारी (सं० पु०) १ वह जिसके हाथमें किसी विषयका पूरा स्वत्व हो। २ स्वामी, मालिक।

स्वदन (सं० क्ली०) स्वद-ल्युट्। १ भक्षण, खाना, स्वाद लेना। २ लौह, लोहा। (त्रि०) ३ आत्मसाक्षी।

स्वदृष्ट (सं० त्रि०) स्वेन दृष्टः। १ अपनेसे देखा हुआ। २ शोभन अदृष्टविशिष्ट।

स्वदार (सं० पु०) स्वस्त्री, अपनी स्त्री। यह शब्द नित्य बहुवचनान्त है।

स्वदेश (सं० पु०) वह देश जिसमें किसीका जन्म और पालन पोषण हुआ हो, अपना और अपने पूर्वजोंका देश, मातृभूमि, वतन।

स्वदेशी (सं० त्रि०) १ अपने देशका, अपने देश-सम्बन्धी। २ अपने देशमें उत्पन्न या बना हुआ।

स्वदोषज (सं० त्रि०) जो अपने दोषसे उत्पन्न हुआ हो।

स्वधर्म (सं० पु० क्ली०) स्वस्य धर्मः। स्वजात्युक्ताचार। शास्त्रमें चार वर्णोंमेंसे प्रत्येकका पृथक् पृथक् धर्म कहा है। जिसका जो धर्म है, उसका वही स्वधर्म है। ब्राह्मणका यजनयाजनादि स्वधर्म और युद्धादि परधर्म, क्षत्रियका युद्धादि स्वधर्म और याजन तथा भिक्षादि परधर्म है। गीतामें भगवान्ने अर्जुनको उपदेश दिया है—

"श्रेयान स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥" (गीता ३।३५)

सुन्दर रूपसे अनुष्ठित परधर्मसे भी विगुण अर्थात् अङ्गहीन स्वधर्मानुष्ठान ही उत्तम है। स्वधर्ममें यदि मृत्यु भी हो जाय, तो वह कल्याणकर है। परधर्म अत्यन्त भयावह हैं।

स्वधा (सं० अव्य०) स्वदनेऽनयेति स्वद आस्वादने आ 'स्वदर्धश्च' इति दस्य धः। १ देवहविर्दानमन्त्र। इस मन्त्रसे देवताओंके उद्देशसे हविर्दान किया जाता है। स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट् और स्वधा, ये पांच शब्द देवहविर्दानमें व्यवहृत होते हैं।

२ पितृस्वप्रदानमन्त्र। 'पितृभ्यः स्वधा' इस मन्त्रसे पितरोंको सभी वस्तु दी जाती है। ३ पितरोंका अन्न। व्याकरणके मतसे इस स्वधाका जब अव्ययमें व्यवहार होता है, तब चतुर्थी विभक्ति होती है। 'स्वधा' यह मन्त्र उच्चारण न करके यदि पितरोंको कोई वस्तु चढ़ाई जाय, तो वह उसे ग्रहण नहीं करते।

स्वधा (सं० स्त्री०) १ गौर्यादि षोडश मातृकाभेद। नान्दीमुखश्राद्धकालमें या षष्ठीपूजाके समय मातृका पूजास्थलमें इनकी पूजा होती है।

२ श्रीमद्भागवतके मतसे दक्षकी कन्या। यह पितरोंकी पत्नी थी। इनके दो कन्या थी, यमुना और धारिणी। ये दोनों ही तपस्विनी हो कर तपश्चर्यामें दिन बिताती थीं। इसीसे इन्हें कोई सन्तति नहीं हुई। (भागवत)

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि स्वधा ब्रह्माकी मानसी कन्या थी। ब्रह्माने पितरोंकी दुःख कहानी सुन कर मनसे मनोहारिणी एक कन्याकी सृष्टि की। इनका वर्ण श्वेतचम्पकसदृश और सभी अङ्ग रत्नालङ्कारसे विभूषित है। ये हमेशा हँसमुख रहती हैं। इनमें लक्ष्मीदेवीके कुल लक्षण दिखाई देते हैं। ब्रह्माने सन्तुष्ट हो कर पितरोंके हाथ यह कन्या सौंप दी तथा ब्राह्मणोंको बुला कर कहा, कि आजसे तुम लोग पितरोंके उद्देशसे जो वस्तु दान करोगे उस वस्तुके शेषमें स्वधा यह मन्त्र कहना होगा। ऐसा करनेसे पितृगण परितृप्त होंगे। (ब्रह्मवै० प्र० ४१ अ० और देवीभागवत ९म स्कन्ध ४४ अ०)

शास्त्रमें लिखा है, कि श्राद्ध और तर्पणादि कालमें सभी स्वधा इस मन्त्रका पाठ कर श्राद्ध और तर्पणादि कार्यका अनुष्ठान करें। स्त्री और शूद्रको यह मन्त्र पढ़नेका अधिकार नहीं है।

स्वधाकर (सं० त्रि०) श्राद्धाधिकारी, श्राद्ध करनेवाला।

स्वधाकार (सं० पु०) स्वधाकर देखो।

स्वधाधिप (सं० पु०) स्वधापति, अग्नि।

स्वधाप्राण (सं० त्रि०) स्वधात्मक।

स्वधाप्रिय (सं० पु०) १ कृष्ण तिल, काला तिल। २ अग्नि।

स्वधाभुज् (सं० पु०) १ पितृगण। स्वधा यह मन्त्र बिना पढ़े कोई वस्तु देनेसे पितृगण ग्रहण नहीं करते। २ देवता। (हेम)

स्वधाभोजिन् (सं० पु०) स्वधाभुक्, पितृगण।

स्वधामन् (सं० पु०) १ सुनृतागर्भज सत्यसहसके एक पुत्रका नाम। २ एक मनु।

स्वधामय (सं० त्रि०) स्वधा स्वरूपे मयट्। स्वधा-स्वरूप।

स्वधामृतमय (सं० त्रि०) श्राद्ध।

स्वधाविन् (सं० त्रि०) अन्नशील, भोजन करनेवाला।

स्वधावत् (सं० त्रि०) हविर्लक्षणान्नविशिष्ट।

स्वधाविन् (सं० त्रि०) स्वधान्नभक्षणशील।

स्वधाशन (सं० पु०) स्वधाभक्षक, पितर।

स्वधिचरण (सं० पु०) सुन्दर विचरण।

स्वधित (सं० त्रि०) सुधित।

स्वधिति (सं० पु० स्त्री०) १ कुठार, कुल्हाडो। २ वज्र।

स्वधितिहेतिक (सं० पु०) परशुधारी योद्धा।

स्वधितीवत् (सं० त्रि०) वज्रविशिष्ट। (ऋक् ६।८८।२)

स्वधिष्ठान (सं० त्रि०) अच्छी स्थिति या स्थानसे युक्त।

स्वधिष्ठिन (सं० त्रि०) १ उत्तम रूपसे अवस्थित। (पु०) २ हाथी पर अच्छी तरहसे बैठना।

स्वधीन (सं० त्रि०) अच्छी तरहसे पढा हुआ।

स्वधीति (सं० त्रि०) १ स्वाध्याययुक्त। (क्ली०) २ साम-भेद।

स्वधृति (सं० स्त्री०) अच्छी तरह धरना या पकडना।

स्वधैनव (सं० त्रि०) धेनु-सम्बन्धी सोम, धेनु द्वारा क्रोत।

स्वध्वर (सं० पु०) १ शोभन यज्ञ, उत्तम यज्ञ। २ शोभन यागयुक्त अग्नि। (ऋक् १।४४।८) (त्रि०) ३ सुन्दर यज्ञ युक्त।

स्वध्वर्यु (सं० त्रि०) प्रशस्त अध्वर्युविशिष्ट।

स्वन (सं० पु०) शब्द, ध्वनि, आवाज।

स्वनचक्र (सं० पु०) एक प्रकारका सम्भोग आसन या रतिबन्ध।

> "धृत्वा बाहू तथा कण्ठं पादतोऽपि शिरः स्थितः।
> गूढ़ञ्च कामयेत् कामी स्वनचक्रः प्रकीर्त्तितः॥"
>
> (रतिमञ्जरी)

स्वनद्रथ (सं० त्रि०) शब्दायमान रथयुक्त।

स्वनन्दा (सं० स्त्री०) दुर्गा। (हेम)

स्वनय (सं० पु०) भावजव्यके एक पुत्रका नाम।

स्वनामधन्य (सं० त्रि०) अपने नामके कारण धन्य होने-वाला, जो अपने नामके कारण धन्य हो।

स्वनामन् (सं० क्ली०) १ अपना नाम। (त्रि०) २ जो अपने नामके कारण प्रसिद्ध हो, अपने नामसे विख्यात होनेवाला।

स्वनि (सं० पु०) स्वन-इन्। १ शब्द, आवाज। २ अग्नि, आग।

स्वनित (सं० क्ली०) स्वन-क्त। १ शब्द, आवाज। २ मेघ गर्जन, बादलोंको गडगडाहट। ३ गर्जन, गरज। (त्रि०) ४ शब्दित, ध्वनित।

स्वनिताह्वय (सं० पु०) तण्डुलीय शाक, चौलाईका शाक।

स्वनिष्ठ (सं० त्रि०) स्वकर्त्ता, अपना काम करनेवाला।

स्वनीक (सं० त्रि०) शोभनज्वालरूप, सेनायुक्त।

स्वनुगुप्त (सं० त्रि०) आत्मगुप्त, आत्मरक्षित।

स्वनुरक्त (सं० त्रि०) अतिशय अनुरक्त, अत्यन्त अनुराग विशिष्ट।

स्वनुष्ठित (सं० त्रि०) सु-अनु-स्था-क्त। उत्तम रूपसे अनुष्ठित।

स्वनोत्साह (सं० पु०) गण्डक, गैंडा।

स्वन्त (सं० त्रि०) जिसका अन्त सुन्दर हो।

स्वन्न (सं० क्ली०) सुशोभनं अन्नं। बढ़िया अन्न।

स्वपक्ष (सं० पु०) स्वस्य पक्षः। अपना पक्ष।

स्वपति (सं० पु०) १ गोस्वामी। (ऋक् १०।२७।८) २ अपना पति।

स्वपतित (सं० त्रि०) अपनेसे पतित।

स्वपत्य (सं० क्ली०) १ शोभन आपतनका हेतुभूत कर्म। (ऋक् १।८३।६) (त्रि०) २ सुन्दर अपत्ययुक्त।

स्वपन (सं० क्ली०) स्वप ल्युट्। १ निद्रा, नींद। २ स्वप्न, सपना, ख्वाब।

स्वपनीय (सं० त्रि०) निद्राके योग्य, सोने लायक।

स्वपस् (सं० त्रि०) शोभनकार्यकारी त्वष्टा।

स्वपस्या (सं० स्त्री०) शोभन कर्मयोग्या।

स्वपिण्डा (सं० स्त्री०) पिण्डखर्जूरी, पिण्ड खजूर।

स्वपितिकर्मन् (सं० पु०) शयनकर्त्ता, सोनेवाला।

स्वपितृ (सं० त्रि०) १ निज पितृलोक-सम्बन्धी। (पु०) २ अपना पिता।

स्वपुर (सं० क्ली०) स्वस्य पुः अच् समासान्तः। अपना पुर।

स्वपुरस् (सं० अव्य०) अपनी पुरी।

स्वपूर्ण (सं० त्रि०) जो अपने हीसे पूर्ण हो।

स्वप्तव्य (सं० त्रि०) स्वप-तव्य। निद्राई, निद्राके योग्य।

स्वप्न (सं० पु०) स्वप (स्वपोनन्। पा ३।३।९१) इति नन्। १ निद्रा। रात्रिकालमें जगना और दिनमें सोना नहीं चाहिये। २ निद्रावस्थामें वस्तुदर्शन, निद्रावस्थामें विषयानुभव। निद्रितावस्था जाग्रत्‌कालकी तरह जो विषयानुभव होता है, उसे स्वप्न कहते हैं। दर्शनशास्त्रमें लिखा है, कि यह संसार स्वप्नदृष्ट वस्तुकी तरह मिथ्या है। निद्रावस्थामें स्वप्नदृष्ट वस्तु जिस प्रकार प्रत्यक्षकी तरह अनुभूत होती है, परन्तु निद्राभङ्गके बाद फिर उस वस्तुकी सत्ता नहीं रहती, उसी प्रकार अज्ञानसे आवद्ध जीव सुख, दुःख और मोहमें अभिभूत हो कर सुखी, दुःखी, मुग्ध इत्याकार ज्ञानमें आवद्ध है, यथार्थमें यह जीवका धर्म नहीं है। निद्राभङ्गके बाद जिस प्रकार स्वप्नदृष्ट वस्तु नहीं रहती, उसी प्रकार अज्ञान निवृत्ति होने पर उसे सुख, दुःख और मोहात्मक संसार नहीं रहता।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है,—रात्रिके प्रथममें स्वप्न देखनेसे एक वर्षमें, द्वितीय याममें आठ मासमें, तृतीय याममें तीन मासमें, चतुर्थ याममें आध मासमें और अरुणोदय कालमें स्वप्न देखनेसे दश दिनके मध्य उसका फल होता है। फिर प्रातःकालमें स्वप्न देख कर यदि नींद टूट जाय, तो स्वप्न उसी समय फलप्रद होता है। चिन्ताव्याधिसमाकुल मनुष्य दिनके समय मन ही मन जिन सब विषयोंकी पर्यालोचना करते हैं, रातको स्वप्नमें उन्हें वही सब विषय दिखाई देते हैं। अतएव वे सब स्वप्न निष्फल होते हैं। मूल या पुरीषसे जड़ीभूत, पीड़ित, भयाकुल, उलङ्ग या मुक्तकेश पुरुषको स्वप्नजफल लाभ नहीं होता। निद्रालु व्यक्ति यदि स्वप्नदर्शनके बाद फिरसे सो जाय अथवा विमूढ़ताबशतः उसे रातको ही प्रकाश कर दे, तो स्वप्नज फल लाभ नहीं होता।

स्वप्न देख कर उसे काश्यप गोत्रीय व्यक्तिके निकट प्रकाश नहीं करना चाहिये, करनेसे दुर्गति, नीच व्यक्तिके निकट कहनेसे व्याधि और शत्रुके निकट कहनेसे भयको प्राप्ति होती है। फिर मूर्खके निकट प्रकाश करनेसे कलह, कामिनीके निकट प्रकाश करनेसे धनहानि और रात्रिकालमें प्रकाश करनेसे चोरका भय होना है। स्वप्नदर्शनके बाद निद्रा न होनेसे शोक और पण्डितके निकट स्वप्नविवरण व्यक्त करनेसे वाञ्छित फल प्राप्त होता है।

(ब्रह्मवैवर्त्त श्रीकृष्णजन्मखण्ड ७७वें अध्यायमें विशेष विवरण देखो।)

दुःस्वप्नदर्शन प्रतिविधान—दुःस्वप्न देख कर जो व्यक्ति घृताक्त रक्तचन्दनकाष्ठकी आहुति दान और सहस्र वार गायत्री जप करता है, उसके दुःस्वप्न सूचित अशुभकी शान्ति होती है। अथवा भक्तिपूर्वक सहस्र वार मधुसूदन नाम जपनेसे भी दुःस्वप्न होता है।

'ओं ह्रों श्रीं क्रूं दुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा" शुचि हो कर इस मन्त्रका जप और 'ओं नमो मृत्युञ्जयाय स्वाहा' इस मन्त्रका लाख वार जप करनेसे मृत्युसूचक स्वप्नदर्शनमें भी सौ वर्षकी आयु होती है।

वाभट शारीरस्थानके ६ठे अध्यायमें इस स्वप्नका विस्तृत विवरण देखा जाता है, इसके सिवा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण गणेशखण्डके ३३वें और ३४वें अध्यायमें, देवीपुराणके २२वें अध्यायमें, कालिकापुराणके ८७वें अध्यायमें और मत्स्यपुराणके २४२वें अध्यायमें स्वप्नका विशेष विवरण लिखा है, विस्तार हो जानेके भयसे यहां उन सबका उल्लेख नहीं किया गया।

स्वप्नक (सं० त्रि०) निद्राशील, सोनेवाला।

स्वप्नकृत् (सं० त्रि०) १ स्वप्नकारक, नींद लानेवाला। (पु०) २ सुनिषण्णक, शिरियारी। कहते हैं, इस शाकके खानेसे नींद आती है, इसीसे इसका नाम स्वप्नकृत् या नींद लानेवाला पड़ा।

स्वप्नगृह (सं० क्ली०) निद्रागृह, शयनागार, सोनेका कमरा।

स्वप्नज् (सं० त्रि०) निद्राशील, नींद लानेवाला।

स्वप्नज्ञान (सं० क्ली०) स्वप्नका ज्ञान। स्वप्न देखो।

स्वप्नदर्शन (सं० त्रि०) १ स्वप्न देखनेवाला। २ बड़ी बड़ी कल्पनायें करनेवाला, मनमोदक खानेवाला।

स्वप्नदोष (सं० पु०) निद्रावस्थामें रेतःस्खलन। स्त्री सहवास करनेसे जिस प्रकार रेतःस्खलन होता है, स्वप्नावस्थामें भी किसी कामिनीके साथ सम्भोग होता है ऐसा ज्ञात होनेसे जो रेतःस्खलन होता है, उसे स्वप्नदोष कहते हैं। स्वप्नावस्थामें किसी कामिनीके साथ सम्भोग हो या न हो, रेतःपात होनेसे ही उसको स्वप्न-दोष कहेंगे। शुक्र ही जीवका जीवन है, शुक्रक्षय होनेसे शरीरक्षय होता है। अतिरिक्त स्त्री सम्भोगादि द्वारा इन्द्रियशैथिल्य होनेसे स्वप्नदोषादि होता है। मनुसंहितामें लिखा है, कि अकामतः यदि ब्रह्मचारीका भी स्वप्नदोषमें रेतःपात हो, तो वे स्नान कर सूर्यदेवकी अर्चना कर लें तथा 'पुनर्मामैत्विन्द्रियम्' अर्थात् 'मेरा वीर्य फिरसे पलट जाय' इत्यादि वेदमन्त्रका तीन बार जप करें। (मनु २।१८१)

स्वप्नदोष दुश्चिकित्स्य व्याधि है। यह स्वकृत कर्मफल है। अपने दोषसे ही यह हुआ करता है। शरीरके अत्यन्त गरम या पेटकी गड़बड़ी होनेसे कभी कभी स्वप्नदोष हो जाया करता है। परन्तु यह व्याधि नहीं है। हस्तमैथुन, दुष्टयोनिगमन, अतिरिक्त इन्द्रिय परिचालनादि द्वारा जब यह व्याधि होती है, तब उसे भयानक जानना चाहिये। यह दोष होनेसे उससे सभी प्रकारकी व्याधि विशेषतः क्षय, यक्ष्मा और शिरोरोग होते हैं। यह दोष आयुर्वेदमें पृथक् व्याधिरूपमें नहीं गिना गया है।

बड़के अंकुरका दूध माक्षिकके साथ मिला कर सायं कालमें सेवन करनेसे स्वप्नदोष दूर होता है।

स्वप्ननाशन (सं० पु०) निद्राका नाश करनेवाले सूर्य।

स्वप्ननिकेतन (सं० क्ली०) स्वप्नगृह, शयनागार, सोनेका कमरा।

स्वप्नविचारिन् (सं० त्रि०) स्वप्नविचारकर्त्ता।

स्वप्न देखो।

स्वप्नस्थान (सं० क्ली०) निद्रास्थान, निद्रागृह, सोनेका कमरा।

स्वप्नान्त (सं० पु०) प्रबोध, जागरण।

स्वप्नान्तिक (सं० क्ली०) स्वप्नगृह, सोनेका कमरा।

स्वप्नालु (सं० त्रि०) स्वप्नशील, निद्रालु, सोनेवाला।

स्वप्नेश्वर—सुप्रसिद्ध राढ़ीय वन्द्यवंशीय एक दर्शनवित्। ये जनेश्वर वाहिनीपतिके पुत्र, विद्यानिवासके भाई और विशारदके पौत्र थे। इन्होंने सांख्यतत्त्वकौमुदीकी 'प्रभा' नामकी टीका और शाण्डिल्यसूत्रके भाष्यकी रचना की।

स्वप्रकाश (सं० त्रि०) जो आप ही प्रकाशमान हो, जो अपने ही तेजसे प्रकाशमान हो।

स्वप्रकृतिक (सं० त्रि०) प्राकृतिक रूपसे होनेवाला, जो विना किसी कारणके स्वयं अपनी प्रकृतिसे ही हो।

स्वप्रतिकर (सं० त्रि०) समानकर्मकारी।

स्वप्रधान (सं० त्रि०) आत्मनिर्भरशाली, अपने पर भरोसा रखनेवाला।

स्वबीज (सं० पु०) १ आत्मा। (क्ली०) २ निज वीर्य।

स्वभिद्र् (सं० त्रि०) सम्भृतशब्द। (ऋक् ८।३३।२)

स्वभद्रा (सं० स्त्री०) गंभारी वृक्ष।

स्वभाजन (सं० क्ली०) आनन्दन।

स्वभानु (सं० त्रि०) स्वीय दीप्तिविशिष्ट।

स्वभाव (सं० पु०) १ मनकी प्रवृत्ति, प्रकृति, स्वाभाविक अवस्था। जिसका जो स्वभाव है, वह कदापि नहीं छूटता। अङ्गारको सौ बार धोनेसे भी उसकी मलिनता दूर नहीं होती। इस कारण किसी व्यक्तिकी परीक्षा करनेमें पहले अन्य गुणकी परीक्षा न करके उसके स्वभावकी ही परीक्षा करना उचित है। क्योंकि स्वभाव सभीको अतिक्रम कर मस्तक पर रहता है अर्थात् श्रेष्ठ होता है। स्वभावके अनुसार ही मनुष्य काम करते हैं। स्वभाव ही सबोंको अतिक्रम करता है, परन्तु स्वभावको अतिक्रम करनेकी किसीमें भी सामर्थ्य नहीं है।

स्वभावकृपण (सं० त्रि०) स्वाभाविक कृपण।

स्वभावत्व (सं० क्ली०) स्वभावका भाव या धर्म, प्रकृतिगत भाव।

स्वभावज (सं० त्रि०) स्वभावजात, जो स्वभाव या प्रकृतिसे उत्पन्न हुआ हो, सहज।

स्वभावतस् (सं० अव्य०) स्वभाव-तसिल्। स्वभावसे, प्राकृतिकरूपसे, सहज ही।

स्वभावसिद्ध (सं० त्रि०) स्वाभाविक, स्वभावसे ही होनेवाला, सहज।

स्वभाविक (सं० त्रि०) स्वाभाविक देखो।

स्वभावोक्ति (सं० स्त्री०) १ स्वभावकथन। २ एक प्रकारका अर्थालङ्कार जिसमें किसीका जाति या अवस्था आदिके अनुसार यथावत् और प्राकृतिक स्वरूपका वर्णन किया जाय। इसके दो भेद कहे गये हैं—सहज और प्रतिज्ञाबद्ध। जहां किसी विषयका बिलकुल सहज और स्वाभाविक वर्णन होता है, वहां सहज स्वभावोक्ति अलंकार होता है और जहां अपने सहज स्वभावके अनुसार प्रतिज्ञा या शपथ आदिके साथ कोई बात कही जाती है, वहां प्रतिज्ञाबद्ध स्वभावोक्ति होती है।

स्वभिगमसुख (सं० त्रि०) शोभन अभिगमनीय सुखयुक्त।

स्वभू (सं० पु०) १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३ शिव। (त्रि०) ४ जो अपने आपसे उत्पन्न हुआ हो, आपसे आप होनेवाला।

स्वभूति (सं० पु०) वायु, हवा। (शुक्लयजु० २७।३३)

स्वभूमि (सं० स्त्री०) १ अपनी भूमि। (पु०) २ उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। (विष्णुपु० ४।११।५)

स्वभ्यक्त (सं० त्रि०) सम्यक् रूपसे अभिषिक्त।

स्वमेक (सं० पु०) संवत्सर, वर्ष।

स्वयं (सं० अव्य०) स्वयम् देखो।

स्वयंगुप्ता (सं० स्त्री०) शूकशिम्बी, कौंछ।

स्वयंदत्त (सं० पु०) वह पुत्र जो अपने माता पिताके मर जाने अथवा उनके द्वारा परित्यक्त होने पर अपने आपको किसीके हाथ सौंप दे और उसका पुत्र बन जाय।

स्वयंदान (सं० स्त्री०) अपने हाथसे कन्यादान देना।

स्वयंदूत (सं० पु०) वह नायक जो अपना दूतत्व आप ही करे। नायिका पर अपनी कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक।

स्वयंदूती (सं० स्त्री०) वह परकीया नायिका जो अपना दूतत्व आप ही करती हो, नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली नायिका।

स्वयंदृश (सं० त्रि०) स्वयंद्रष्टा, खुद देखनेवाला।

स्वयंपतित (सं० त्रि०) जो आपसे आप गिरे।

स्वयंप्रकाश (सं० पु०) १ वह जो आप ही आप बिना किसी दूसरेकी सहायताके प्रकाशित हो। २ परमेश्वर, परमात्मा।

स्वयंप्रकाश मुनि—गोपाल योगीन्द्रका शिष्य तथा एक श्लोकव्याख्या और पञ्चीकरणप्रक्रिया विवरणके प्रणेता।

स्वयंप्रकाश यति—एक विख्यात वेदान्तिक। ये कैवल्यानन्द योगीन्द्रके शिष्य थे। इन्होंने अद्वैतमकरन्दकी टीका और तत्त्वसुधा नामक दक्षिणामूर्त्तिस्तोत्रव्याख्या, दक्षिणामूर्त्त्येकटीका, हरितत्त्वमुक्तावली, आत्मनात्मविवेक, वेदान्तसंग्रह आदि ग्रन्थ लिखे।

स्वयंप्रकाशात्मन् मुनि—पञ्चपादिकाकी टीकाके रचयिता।

स्वयंप्रकाशानन्द सरस्वती—एक प्रसिद्ध वैदान्तिक। ये अच्युतानन्दसरस्वतीके शिष्य थे। इन्होंने वेदान्तनयनभूषण-चन्द्रिका नामकी परिभाषार्थसंग्रहकी टीका और सरस्वती नामक वेदान्तग्रन्थकी रचना की।

स्वयंप्रभ (सं० पु०) १ जैनियोंके अनुसार भावी २४ अर्हतोंमेंसे चौथे अर्हत्का नाम। (त्रि०) २ स्वयंप्रकाश।

स्वयंप्रभा (सं० स्त्री०) इन्द्रकी एक अप्सराका नाम। इसे मय दानव हर लाया था और इसके गर्भसे उसने मन्दोदरी नामक कन्या उत्पन्न की थी। जब हनुमान् आदि वानर सीताको ढूंढने निकले थे, तब मार्गमें एक गुफामें इससे उनकी भेंट हुई थी।

स्वयंप्रमाण (सं० त्रि०) जो आप ही प्रमाण हो और जिसके लिये किसी दूसरे प्रमाणकी आवश्यकता न हो।

स्वयंफल (सं० त्रि०) जो आप ही अपना फल हो और किसी दूसरे कारणसे न उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंवर (सं० पु०) १ प्राचीन भारतका एक प्रसिद्ध विधान, जिसमें विवाहयोग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियोंमेंसे अपने लिये स्वयं वर चुनती थी। स्वयंवरा देखो। २ वह स्थान जहां इस प्रकार लोगोंको एकत्र करके कन्याके लिये वर चुना जाय।

स्वयंवरण (सं० स्त्री०) स्वयं-वृ ल्युट्। कन्याका अपने इच्छानुसार अपने लिये पति मनोनीत करना, स्वयंवर।

स्वयंवरा (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने लिये स्वयं ही उपयुक्त वरको वरण करे, अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री।

प्राचीन कालमें भारतीय आर्यों विशेषतः क्षत्रियों या राजाओंमें यह प्रथा थी, कि जब कन्या विवाहके योग्य हो जाती थी, तब उसकी सूचना उपयुक्त व्यक्तियोंके पास भेज दी जाती थी जो एक निश्चित समय और

स्थान पर आ कर एकत्र होते थे। उस समय वह कन्या उन उपस्थित व्यक्तियोंमेंसे जिसे अपने लिये उपयुक्त समझती थी, उसके गलेमें वरमाल या जयमाल डाल देती थी, और तब उसीके साथ उसका विवाह होता था। कभी कभी कन्याके पिताकी ओरसे बलपरीक्षाके लिये कोई शर्त्त भी लगा दी जाती थी और वह शर्त्त पूरी करनेवाला ही कन्याके लिये उपयुक्त पात्र समझा जाता था। सीताजी और द्रौपदीका विवाह इसी प्रथाके अनुसार हुआ था।

स्वयंवश (सं० त्रि०) स्वयं वशीभूत।

स्वयंवह (सं० क्ली०) १ वह बाजा जो चाबी देनेसे आपसे आप बजे। (त्रि०) २ स्वयं अपने आपको धारण करनेवाला, जो आप ही अपने आपको वहन करे।

स्वयंसिद्ध (सं० त्रि०) १ जो आप ही आप सिद्ध हो, जिसकी सिद्धिके लिये और किसी तर्क, प्रमाण या उपकरण आदिकी आवश्यकता न हो। २ जिसने आप ही सिद्धि प्राप्त की हो, जो बिना किसीकी सहायताके सिद्ध या सफल हुआ हो।

स्वयंसेवक (सं० पु०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतनके किसी कार्यमें अपनी इच्छासे योग दे, स्वेच्छासेवक।

स्वयहारिका (सं० स्त्री०) दुःसहकी पत्नी निर्माष्टिके गर्भसे उत्पन्न आठ कन्याओंमेंसे एक। मार्कण्डेयपुराणमें इसका विषय यों लिखा है—दुःसहकी भार्याका नाम निर्माष्टि था। ऋतुके समय चाण्डालका दर्शन हो जानेसे कलिकी भार्यामें उसका जन्म हुआ। इनके सभी अपत्य जगद्व्यापी हुए। इन अपत्योंकी संख्या सोलह है, जिसमेंसे ८ पुत्र और ८ कन्या हैं। स्वयहारिका इन ८ कन्याओंमेंसे एक है। यह भोजनशालामेंसे अधपका अन्न, गौके स्तनमेंसे दूध, तिलोंमेंसे तेल, कपासमेंसे सूत आदि हरण कर ले जाती है, इसीसे इसका यह नाम पड़ा। यह स्वयंहारिका सर्वदा अन्तर्ध्यानतत्परा हो कर रहती है।

इस स्वयहारिकाकी रक्षाके लिये कृत्रिम स्त्रीमूर्त्ति तथा दो मयूरोंका निर्माण और होमाग्नि तथा देवोद्देश से प्रदत्त धूप इन दोनोंकी भस्म द्वारा क्षीरादि भाण्डोंका परिष्करण करे। (मार्कण्डेयपु० ५१ अ०)

स्वयङ्कृतिन् (सं० त्रि०) अपने हाथसे बनानेवाला।

स्वयङ्गुप्ता (सं० स्त्री०) शूकशिम्बिका, कौंछ।

स्वयङ्ग्रह (सं० पु०) स्वयंवर।

स्वयङ्ग्राह (सं० पु०) स्वयं ग्रहण, खुद लेना।

स्वयञ्ज (सं० त्रि०) जो अपने ही उत्पन्न हो।

स्वयंज्योतिस् (सं० पु०) स्वप्रकाश, आत्मा, ब्रह्म।

स्वयम् (सं० अव्य०) १ आप, खुद। २ आपसे आप, अपने होसे, खुद बखुद।

स्वयमधिगत (सं० त्रि०) स्वयं-अधिगम-क्त। स्वयं प्राप्त।

स्वयमनुष्ठान (सं० क्ली०) अपने होसे जिसका अनुष्ठान किया जाय।

स्वयमर्जित (सं० त्रि०) स्वोपार्जित, खास अपना कमाया हुआ।

स्वयमवदीर्ण (सं० त्रि०) जो अपने ही मिट्टी छेद कर निकले।

स्वयमासनढौकन (सं० क्ली०) योगासनभेद। (हेम)

स्वयमिन्द्रियमोचन (सं० क्ली०) स्वयंसिद्धि।

स्वयमीश्वर (सं० पु०) परमात्मा, परमेश्वर।

स्वयमीहितलब्ध (सं० त्रि०) जो अपनी ही चेष्टासे मिले।

स्वयमुक्ति (सं० पु०) पांच साक्षियोंमेंसे एक प्रकारके साक्षी, वह साक्षी जो बिना वादी या प्रतिवादीके बुलाये स्वयं ही आ कर किसी घटना या व्यवहार आदिके सम्बन्धमें कुछ कहे।

स्वयमुज्ज्वल (सं० त्रि०) जो अपने होसे उज्ज्वल हो।

स्वयमुदित (सं० त्रि०) स्वभावतः प्रकाशित।

स्वयम्भु (सं० पु०) स्वयम्भवतीति स्वयं भू डु। ब्रह्मा।

स्वयम्भुव (सं० पु०) १ आदि मनु। स्वायम्भुव देखो। २ ब्रह्मा। ३ वेद। ४ शिव, महादेव। ५ अज। ६ जैनियोंके नौ वासुदेवोंमेंसे एक। ७ वनमुद्ग, वनमूंग। (त्रि०) ८ स्वयमुत्पन्न, जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयम्भुवा (सं० स्त्री०) १ धूम्रपत्रा, तमाकूका पत्ता। २ माषपर्णी, मखवन। ३ लिङ्गिनी, शिवलिङ्गी नामकी लता।

स्वयम्भू (सं० पु०) १ ब्रह्मा। २ जिन चक्रवर्त्तिविशेष। ३ काल। ४ कामदेव। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ माष-

पर्णी, मखवन। ८ लिङ्गिनी, शिवलिङ्गी नामकी लता। (त्रि०) ६ स्वयमुत्पन्न, जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयम्भूत (सं० त्रि०) जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो, आपसे आप पैदा होनेवाला।

स्वयम्भूमातृकातन्त्र (सं० क्ली०) तन्त्रभेद।

स्वयम्भूलिङ्ग (सं० क्ली०) ज्योतिर्लिङ्ग, स्वयं उत्थित जो सब आदिलिङ्ग हैं, उन्हें स्वयम्भूलिङ्ग कहते हैं।

स्वयम्भोज (सं० पु०) १ प्रतिक्षत्रके एक पुत्रका नाम। २ राजा शिविके एक पुत्रका नाम। (भाग० ६।२४।२५)

स्वयम्भ्रमि (सं० त्रि०) स्वतन्त्र भ्रमणस्वभाव, स्वेच्छासे घूमनेवाला। (भाग० ६।५।८)

स्वयम्मथित (सं० त्रि०) जो खुद मथा हुआ हो।

स्वयशस (सं० त्रि०) १ स्वायत्तयशस्क, बड़ा यशस्वी। (ऋक् १।६५।२) (क्ली०) २ अपनी कीर्त्ति।

स्वयावन् (सं० त्रि०) अपनेसे असहाय।

स्वयु (सं० त्रि०) स्वयंगन्ता, खुद जानेवाला।

स्वयुक्त (सं० त्रि०) परस्पर संयुक्त या धनयुक्त।

स्वयुक्ति (सं० स्त्री०) स्वीय युक्ति, अपनी तरकीब।

स्वयुग्वम् (सं० पु०) स्वयंयुक्त रश्मि द्वारा तमोहन्ता, अपनी किरणसे अन्धकार दूर करनेवाला।

स्वयोनि (सं० त्रि०) १ जो अपना कारण अथवा अपनी उत्पत्तिका स्थान आप ही हो। (क्ली०) २ सामभेद।

स्वर् (सं० पु०) १ स्वर्ग। २ परलोक। ३ आकाश। ४ शोभन। ५ व्याहृतिविशेष। 'भूः भुवः स्वः' यह तीन व्याहृति है।

स्वर (सं० पु०) स्वर अच्। १ उदात्तादि तीन स्वर, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ये तीन स्वर। स्वनित या शब्दित होनेके कारण इसको स्वर कहते हैं। जो उच्च भावमें ग्रहण अर्थात् उच्च भावमें उच्चारण किया जाता है, उसे उदात्त, इसके विपरीतको अनुदात्त अर्थात् नीच भावमें जो उच्चारित होता है, उसे अनुदात्त कहते हैं। समाहार अर्थात् इस उदात्त अनुदात्तके मिलनका नाम स्वरित है अर्थात् उच्च भी नहीं, नीच भी नहीं जो मध्यमरूपसे उच्चारित होता है, वही स्वरित है।

वेदपाठकालमें इस उदात्तादि स्वरज्ञानकी आवश्यकता होती है।

२ व्याकरणमें वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आपसे आप स्वतन्त्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यञ्जनके उच्चारणमें सहायक होता है। वर्ण दो प्रकारका है। स्वर और व्यञ्जन। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः यही १६ स्वर हैं। यह ह्रस्व और दीर्घभेदसे दो प्रकारका है। इनमेंसे अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ये पांच ह्रस्व स्वर हैं। इसके सिवा और सभी स्वर दीर्घ हैं। बिना स्वरवर्णकी सहायताके व्यञ्जनवर्ण उच्चारित नहीं होता। स्वरवर्ण ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीन प्रकारसे उच्चारित होता है। एकमात्रा काल जो उच्चारित होता है, वह ह्रस्व और द्विमात्राकाल जो उच्चारित होता है, वह दीर्घ और त्रिमात्राकाल जो उच्चारित होता है, वह प्लुत है।

"एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनञ्चार्द्धमात्रकं॥" (पाणिनि)

इस अकारादि वर्णके कण्ठादि भिन्न भिन्न उच्चारण स्थान हैं। व्याकरणमें इसका विशेष विवरण लिखा है। स्वरोदयमतमें भी १६ स्वर कहे गये हैं। हिन्दी वर्णमालामें ११ स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ। ३ नासावायु। इसके द्वारा अजपा मंत्रका जप करना होता है। ४ सङ्गीतमें वह शब्द जिसका कोई निश्चितरूप हो और जिसकी कोमलता या तीव्रता अथवा उतार चढ़ाव आदिका सुनते ही सहजमें अनुमान हो सके, सुर।

सङ्गीतशास्त्रमें सुर ही प्रधान है। सुर नहीं होनेसे सङ्गीत नहीं होता, इसीसे सङ्गीतशास्त्रमें इसका विशेष विवरण लिखा है। अति सक्षेपमें इसका विषय आलोचित हुआ है। देवादिदेव महादेवने पहले प्रणवध्वनि की। इस प्रणवध्वनिसे स्वर सात भागोंमें विभक्त हुआ। इस सात भागोंका मूल नाम सप्तस्वर या सप्तसुर है। इन सप्तसुरोंमें पहले जो सुर होता है, वह षड्ज, द्वितीय ऋषभ, तृतीय गांधार, चतुर्थ मध्यम, पञ्चम सुर पञ्चम, षष्ठ धैवत और सप्तम निषाद है।

कोमल और तीव्रस्वर—उक्त सप्तसुरोंमें षड्ज और पञ्चम ये दो स्वर शुद्धस्वर हैं अर्थात् अचल और विकारशून्य हैं। बाकी पांच सुर सचल अर्थात् तीव्र और कोमल भाव धारण करते हैं। हिन्दीमें इसे तृतीय और

कोमल कहते हैं। सुर अग्रसर होनेसे प्रथम नाम तीव्र, द्वितीय अतितीव्र, तृतीय तीव्रतर, चतुर्थ तीव्रतम और यह सुर पश्चादुगत होनेसे क्रमशः कोमल, अति कोमल, कोमलतर, कोमलतम इस प्रकार विकृति लक्षण होते हैं। वे सब स्वर विकृतिके साथ युक्त हो कर २२ प्रकारके हुए हैं। यह स्वरके अनुलोम और विलोममें अर्थात् आरोही और अवरोही नामसे प्रसिद्ध है।

स, रि, ग, म, प, ध, नि स्वरकी ये ही ७ प्रकारकी आकृति है। यह चार प्रकारका है, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और व्यञ्जनस्वर। कहीं कहीं और भी चार प्रकारके कहे गये हैं। यथा—वादी, सम्वादी, विवादी और अनुवादी।

कोई कोई कहते हैं, कि ये सात स्वर सात पशुके शब्दसे गृहीत तथा सप्तदेवदेवीके अधिकृत कह कर निर्दिष्ट हुए हैं। षड्ज स्वर गोधाके शब्दसे निकला है और इसका अधिष्ठात्री देवता अग्नि है, ऋषभ मेकके शब्दसे, देवता ब्रह्मा, गान्धार छागलके शब्दसे, देवता सरस्वती, मध्यम मयूरके शब्दसे, देवता महादेव, पञ्चम कोकिलकी ध्वनिसे—देवता लक्ष्मी, धैवत अश्वके शब्दसे—देवता गणेश और निषाद हस्तीके शब्दसे निकला है, इसके देवता सूर्य माने गये हैं। उक्त सभी देवता सप्त स्वरके अधिष्ठात्री देवता हैं और उक्त पशुओंके शब्दसे सुर लिये गये हैं। श्रुति, मूर्च्छना, षड्ज आदि शब्द, वेद और शिक्षा शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

वैदिक मन्त्रपाठ करनेमें ही स्वरज्ञानकी विशेष आवश्यकता होती है। शब्दका अर्थज्ञान और स्वरज्ञान नहीं होनेसे वेदपाठ नहीं हो सकता। क्योंकि स्वरानुसार ही अधिकांश पदच्छेद निर्णीत होता है। इस कारण स्वरानुसार अर्थज्ञान हुआ करता है। वेदमें स्वरज्ञानके लिये पदसंहिता नामक ग्रन्थ है। उसमें स्वरानुसार पदच्छेदका विषय विशेष रूपसे लिखा है। एक ही मन्त्र तीन वेदमें है, परन्तु तीनों ही वेदमें उक्त मन्त्रका पदच्छेद भिन्न भिन्न रूपसे लिखा है। वहां किस स्वरानुसार यह मन्त्र उच्चारित होगा, वही विशेष रूपसे मीमांसित है। विस्तार हो जानेके भयसे यहां उसका उल्लेख नहीं किया गया।

मनुष्य, पक्षी आदिकी कण्ठध्वनिको भी स्वर कहते हैं। पक्षी आदिकी कण्ठध्वनि द्वारा शुभाशुभ जाना जा सकता है। शाकुनशास्त्रमें इसका विशेष विवरण लिखा है।

चरकके स्वराधिकारमें स्वर द्वारा जैसा अरिष्ट सूचित होता है, उसका विषय यों लिखा है—हंस, चक्र, दुन्दुभि, रथचक्र, कलविङ्कपक्षी, काक, कपोत और झर्झर इनकी ध्वनिके सदृश स्वर होनेसे उसको प्रकृतिस्वर जानना होगा। इसके जो सब स्वर अन्यान्य वस्तुकी ध्वनि सदृश सुने जाते हैं, अथवा अन्यान्य वस्तुकी ध्वनि सदृश नहीं रहने पर भी जिसका स्वर निर्देश किया जाता है, वे सब स्वर भी प्रकृतिस्वर हैं। आतुरका स्वर शुकपक्षीवत् स्वर, सूक्ष्मस्वर, ग्रहग्रस्त अर्थात् सर्वथा अनुच्चरण (जिसका उच्चारण स्पष्ट नहीं होता) अस्फुट स्वर, गद्गद स्वर, क्षीण, दीन और अनुद्गीर्ण तथा उपर्युपरि उच्चार्यमाण स्वर होनेसे उसको वैकारिक स्वर कहते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य जो सब स्वर विकृत स्वरोत्पत्तिके कुछ पहले ही उत्पन्न होते हैं, उन्हें भी वैकारिक स्वर कहते हैं।

प्रकृति और वैकारिक स्वरके मध्य यदि प्रकृति स्वरके उपघातसे वैकारिक स्वरकी शीघ्र ही उत्पत्ति हो अथवा अनेक प्रकृति स्वर या अनेक विकृत स्वरके मिश्रणसे एक प्रकारका स्वर उत्पन्न हो अथवा एक प्रकारका स्वर अनेक प्रकारका हो, तो वैसे स्वरको अरिष्टसूचक जानना होगा, जिस रोगीका स्वर इस प्रकार अरिष्टसूचक होता है, उस रोगीकी शीघ्र ही मृत्यु होती है।

स्वरकर (सं० पु०) वह पदार्थ जिसके सेवनसे गलेका स्वर तीव्र और सुन्दर होता है।

स्वरक्षय (सं० पु०) स्वरक्षीणरोग। स्वरभङ्ग देखो।

स्वरक्षु (सं० स्त्री०) महानदीविशेष। मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि जब भगीरथ गंगाको स्वर्गसे इस लोकमें लाये, जब उसकी चार धाराएं हो गई। उन्हींमेंसे एक धारा मेरु पर्वतके पश्चिमी भागमें चली गई जो स्वरक्षु या चक्षु (Oxus) कहलाती है। वहांसे शीतोद सरोवर प्लावित कर चित्रकूट पर्वत पर पहुंची।

स्वरघ्न (सं० पु०) सुश्रुतके अनुसार वायुके प्रकोपसे होनेवाला गलेका एक रोग। इसमें गला सूखता है, आवाज बैठ जाती है, खाये हुए पदार्थ जल्दी गलेके नीचे नहीं उतरते और श्वासवाहिनी नाड़ी दूषित हो जाती है। गलरोग देखो।

स्वरङ्कृत (सं० त्रि०) स्वलङ्कृत, उच्चारण सौष्ठवादि द्वारा सुसम्पन्न। (ऋक् १।१६२।५)

स्वरण (सं० त्रि०) प्रकाशनवत्, प्रकाशविशिष्ट।

स्वरता (सं० स्त्री०) स्वरका भाव या धर्म, स्वरत्व।

स्वरतिक्रम (सं० पु०) स्वर्ग अतिक्रम कर वैकुण्ठप्राप्ति।

स्वरदीप्त (सं० त्रि०) शब्द द्वारा दीप्त।

स्वरनादिन् (सं० पु०) वह बाजा जो मुंहसे फूंक कर बजाया जाता हो।

स्वरनाभि (सं० पु०) प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जो मुंहसे फूंक कर बजाया जाता था।

स्वरपत्तन (सं० क्ली०) सामवेद। (त्रिका०)

स्वरप्रधान (सं० पु०) रागका एक प्रकार वह राग जिसमें स्वरका ही आग्रह या प्रधानता हो तालकी प्रधानता न हो।

स्वरब्रह्मन् (सं० क्ली०) स्वर एक ब्रह्म। स्वर रूप ब्रह्म।

स्वरभक्ति (सं० स्त्री०) स्वरविभाग।

स्वरभङ्ग (सं० पु०) स्वरनाशक रोगविशेष, स्वरभेद-रोग। अत्यन्त उच्च शब्दसे वाक्यप्रयोग और वेदपाठ, विषसेवन तथा कण्ठादिमें लगुडादि द्वारा आघात, इन सब कारणोंसे कुपित वातादि दोष स्वरवह चार स्रोतोंमें अधिष्ठित हो स्वरको नष्ट कर डालता है। यह स्वरभेद छः प्रकारका है—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षयज और मेदज।

चरकमें लिखा है, कि वातज स्वरभेदमें आहारके बाद ही घृत पान करना होगा तथा बीजपूर, रास्ना और गुलञ्च, इनका क्वाथ, चूर्ण, अवलेह और कवल इन चार प्रकार प्रयोग करने पर वातज स्वरभेद शीघ्र ही प्रशमित होता है। पञ्चमूलके अर्द्धसृत क्वाथमें मयूर, तीतर या मुर्गेका मांस पका कर उस मांसका रस पान करे अथवा मयूरसृत, क्षीर, सर्पि या त्रिकटुचूर्ण पान करे।

पैत्तिक स्वरभेदमें विरेचन उत्तम है। मधुरगणके साथ दुग्धपाक कर वह दुग्ध तथा सर्पि, गुड़, तिक्तक घृत, जीवनीय घृत और वृष्य घृत पान करनेसे यह प्रशमित होता है।

कफज स्वरभेदमें तीक्ष्ण शिरोविरेचन, नस्य, वमन, धूम, यवकृत अन्न तथा कटु द्रव्य सेवन करे। वच, बरंगी, हरीतकी, त्रिकटु, यवक्षार और चितामूल, इनके चूर्णको मधु मिला कर चाटे। तीक्ष्ण मद्यपान भी इसमें प्रशस्त है।

रक्तज स्वरभेदमें जङ्गली जानवरके मांसके रसको घीमें बघार कर पान करे तथा क्षयकासनाशक जो सब औषध कही गई हैं, सोच विचार कर उनका प्रयोग करनेसे भारी उपकार होता है। पित्तज स्वरभेदकी तरह भी इसमें चिकित्सा कर सकते हैं। इसमें शिरावेध कर रक्तमोक्षण करनेसे विशेष लाभ पहुंचता है। त्रिदोषज स्वरभेदमें उक्त वातजादि स्वरभेद क्रिया ही करे। केवल शिरावेध नहीं करे। (चरक चिकि० २६ अ०)

क्षयरोगमें यक्ष्माकासमें जहां स्वरभेद होता है, वहां रोगीके जीवनकी आशा नहीं रहती। वह रोगी शीघ्र ही कराल कालके गालमें फंस जाता है।

स्वरभङ्गिन् (सं० पु०) १ एक प्रकारका पक्षी। २ वह जिसे स्वरभंग रोग हुआ हो, वह जिसका गला बैठ गया हो और मुंहसे साफ आवाज न निकलती हो।

स्वरभानु (सं० पु०) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दश पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम।

स्वरभाव (सं० पु०) संगीतमें भावके चार भेदोंमेंसे एक, बिना अंग संचालन किये केवल स्वरसे ही दुःख सुख आदिका भाव प्रकट करना।

स्वरभेद (सं० पु०) स्वरभङ्ग, गला या आवाज बैठ जाना।

स्वरमण्डल (सं० पु०) एक प्रकारका वाद्य जिसमें बजानेके लिये तार लगे होते हैं।

स्वरमण्डलिका (सं० स्त्री०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी वीणा।

स्वरयोग (सं० पु०) स्वरसंयोग, सुरलय।

स्वरलासिका (सं० स्त्री०) वंशी या मुरली नामका बाजा जो मुंहसे फूंक कर बजाया जाता है।

स्वरवत् (सं० त्रि०) स्वरविशिष्ट, स्वरयुक्त।

स्वरवाद्दिन् (सं० पु०) वह बाजा जिसमेंसे केवल स्वर निकलता हो और जो ताल आदिका सूचक न हो।

स्वरविभक्ति (सं० स्त्री०) सामका स्वर विभाग।

स्वरशास्त्र (सं० क्ली०) स्वर-विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें स्वर सम्बन्धी बातोंका विवेचन हो।

स्वरसंक्रम (सं० पु०) संगीतमें स्वरोंका आरोह और अवरोह, स्वरोंका उतार और चढ़ाव।

स्वरसंयोग (सं० पु०) स्वरयोग।

स्वरस (सं० पु०) शिलापिष्ट कल्क। कषायविशेषको पहले भिगो डाले, पीछे अच्छी तरह कूट कर बारीक गीले कपड़ेमें छान ले। इसीको स्वरस कहते हैं।

वैद्यकशास्त्रमें स्वरस, कल्क, क्वाथ आदिका भिन्न भिन्न लक्षण लिखा है। भावप्रकाशमें इसके लक्षणादिका विषय यों लिखा है—जो वस्तु शीत, अग्नि और कीटादि द्वारा आक्रान्त न हुई हो, ऐसी वस्तु ले कर उसी समय उसे कूट डाले। पीछे उसे कपड़ेमें छान ले, इसीको स्वरस कहते हैं। अथवा अर्द्ध परिमित द्रव्यके चूर्णको एक सेर जलमें डाल कर एक दिन एक रात भिगो रखे। पीछे उसको कपड़ेमें छान लेनेसे वह भी उत्कृष्ट रसकी तरह ग्रहण किया जा सकता है। इसे भी स्वरस कहते हैं। यह स्वरस पाकमें गुरु होता है। यह केवल चार तोला पान किया जाता है। जलमें डुबो कर बासी बना कर इसकी मात्रा सिर्फ एक पल कही गई है।

स्वरसमुद्र (सं० पु०) प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जिसमें बजानेके लिये तार लगे होते थे।

स्वरसम्पद् (सं० स्त्री०) स्वरस्य सम्पद्। स्वरवत्ता, उत्तर सुर।

स्वरसा (सं० स्त्री०) १ कपित्थपत्रक नामकी ओषधि २ लाख, लाह।

स्वरसाद (सं० पु०) स्वरभङ्ग, गला बैठ जाना।

स्वरसादि (सं० पु०) ओषधियोंको पानीमें औटा कर तैयार किया हुआ काढ़ा, कषाय। (वैद्यकनि०)

स्वरसाम (सं० पु०) साममेद।

स्वरहन् (सं० पु०) स्वरघ्न, स्वरनाशक।

स्वरांश (सं० पु०) संगीतमें स्वरका आधा पाद।

स्वरा (सं० स्त्री०) ब्रह्माकी बड़ी पत्नीका नाम जो गायत्री-की सपत्नी कही गई है। पद्मपुराणके उत्तरखण्डमें कार्त्तिकमाहात्म्यके १५६ वें अध्यायमें इनका विवरण लिखा है।

स्वराज् (सं० पु०) राज् (सत्सूद्विषेति। पा ३।२।६१) इति क्विप्। १ वैदिक छन्दोविशेष। जिस छन्दके प्रत्येक द्विपादमें अष्टाक्षर और एक पादमें दशाक्षर हैं, उसे स्वराज् कहते हैं। २ ईश्वर। ३ ब्रह्मा। (त्रि०) ४ स्वयंदीप्त, जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरोंको प्रकाशित करता हो।

स्वराजन् (सं० त्रि०) स्वराज्।

स्वराज्य (सं० क्ली०) वह राज्य जिसमें कोई राष्ट्र या किसी देशके निवासी स्वयं ही अपना शासन और अपने देशका सब प्रबन्ध करते हैं, अपना राज्य।

स्वराट् (सं० पु०) स्वराज् देखो।

स्वरादिगण—पाणिणयुक्त स्वर आदि कर अव्यय शब्दका गण। ये स्वरादिगण अव्यय हैं। अव्यय शब्दकी तरह इन सब शब्दोंका रूप होता है।

स्वरापगा (सं० स्त्री०) स्वर्गङ्गा, मन्दाकिनी।

स्वरामक (सं० पु०) अक्षोटवृक्ष, अखरोटका पेड़।

स्वरालु (सं० पु०) वचा, वच। (शब्दच०)

स्वराष्टक (सं० पु०) संगीतमें एक प्रकारका संकर राग जो बंगाली, भैरव, गान्धार, पञ्चम और गुर्जरीके मेलसे बनता है।

स्वराष्ट्र (सं० क्ली०) स्वस्य राष्ट्रं। १ अपना राज्य। (पु०) २ जनपदविशेष, सुराष्ट्रदेश। ३ राजभेद, तामस मनुके पिता। मार्कण्डेयपुराणमें इनका विवरण यों लिखा है—स्वराष्ट्र नामक सार्वभौम एक प्रसिद्ध राजा थे। इन्होंने अनेक यागयज्ञ किये थे। मन्त्री द्वारा आराधित भगवान् भास्करने उन्हें दीर्घायु दी थी। इन्हें एक सौ पत्नी थीं। राजा सूर्यके वरसे दीर्घायु थे सही, पर उनकी पत्नियां वैसी दीर्घायु न हो सकीं। इस कारण आगे चल कर वे सभी निधनको प्राप्त हुईं। उनके भृत्य, मन्त्री और अन्यान्य परिजनवर्ग भी उसी प्रकार अल्पायुवशतः कालधर्मके वशवर्त्ती हुए थे। इस प्रकार धीरे धीरे वे वीर्यहीन होने लगे। उनके परम भक्त भृत्योंने भी उन्हें

छोड़ दिया। विमर्द नामक एक राजाने उन्हें परास्त कर राज्य छीन लिया। राज्यच्युत हो जानेके कारण वे बड़े दुःखित हो जंगलको चले गये। वहां वितस्ता नदीके किनारे वे कठोर तपस्या करने लगे।

इसी समय एक मृगीके गर्भमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वनवासी मुनियोंने कहा, इस पुत्रने तामसीयोनिसे पतित: मातृगर्भसे जन्म ग्रहण किया है, वर्त्तमान सभी लोग तामस प्रकृतिके हो गये हैं, इस कारण इनका नाम तामस होगा। देवताओंके वाक्यानुसार राजा स्वराष्ट्रने पुत्रका नाम तामस रखा। पीछे तामसके पृथ्वीपति होने पर उन्होंने कलेवरका परित्याग कर अपने तपोऽर्जित लोकको प्राप्त किया। (मार्क०पु० ७४।७५ अ०)

तामस मनुका विशेष विवरण तामस मनु शब्दमें देखो।

स्वरित (सं० पु०) १ उच्चारणके अनुसार स्वरके तीन भेदोंमेंसे एक वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोरसे हो और न बहुत धीरेसे। (त्रि०) २ स्वरसे युक्त, जिसमें स्वर हो। ३ गूंजता हुआ।

स्वरिन् (सं० त्रि०) शब्दयिता, शब्द करनेवाला।

स्वरोदस् (सं० क्ली०) सामभेद।

स्वरु (सं० पु०) स्वृशब्दोपतापयोः (शृ स्वृ स्निहि त्रपीति। उण् १।११) इति उ, स च नित्। १ वज्र। २ यूपखण्ड। (ऋक् ७।३५।७) ३ यज्ञ। ४ शर तीर। ५ सूर्यरश्मि, सूर्यकी किरण। ६ वृश्चिकभेद, एक प्रकारका विच्छू।

स्वरुचि (सं० पु०) १ जो सब काम अपनी रुचिके अनुसार करे, स्वाधीन आजाद। (स्त्री०) २ स्वेच्छा, अपनी इच्छा।

स्वरूप (सं० क्ली०) १ आकृति, आकार, शक्ल। २ मूर्त्ति या चित्र आदि। ३ स्वभाव। ४ देवताओं आदिका धारण किया हुआ रूप। ५ आत्मा। (पु०) ६ वह जो किसी देवताका रूप धारण किये हुए हो। ७ विद्वान्, पण्डित। (त्रि०) ८ सुन्दर, खूबसूरत। ९ तुल्य, समान।

स्वरूपक (सं० पु०) स्वरूप देखो।

स्वरूपगञ्ज—नदीया जिलेकी जलङ्गी नदीके तट पर बसा हुआ एक प्रसिद्ध गाँव। यह अक्षा० २३° २५' उ० तथा देशा० ८८° २६' १५" पू०के बीच पड़ता है। यहां चावल, सरसों और गुड़ आदिकी खूब आमदनी होती है।

स्वरूपज्ञ (सं० पु०) वह जो परमात्मा और आत्माका रूप पहचानता हो।

स्वरूपदया (सं० पु०) जैनियोंके अनुसार दया वह या जीव रक्षा जो इहलोक और परलोकमें सुख पानेके लिये लोगोंकी देखा देखी की जाय। यद्यपि यह ऊपरसे देखनेमें दया ही जान पड़ती है, परन्तु वास्तवमें मनके भावसे नहीं बल्कि स्वार्थके विचारसे होती है।

स्वरूपप्रतिष्ठा (सं० स्त्री०) जीवका अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणोंसे युक्त होना।

स्वरूपयोग्य (सं० त्रि०) कार्य्यसाधनयोग्य।

स्वरूपयोग्यता (सं० स्त्री०) कार्यसाधनयोग्यता।

स्वरूपवान् (सं० त्रि०) जिसका स्वरूप अच्छा हो, सुन्दर, खूबसूरत।

स्वरूपसम्बन्ध (सं० पु०) अभिन्न सम्बन्ध, वह सम्बन्ध जो किसीके परस्पर ठीक अनुरूप होनेके कारण स्थापित होता है।

स्वरूपाभास (सं० पु०) कोई वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास दिखाई देना।

स्वरूपिन् (सं० त्रि०) स्वरूप अस्त्यर्थे इनि। १ स्वरूपयुक्त, स्वरूपवाला। २ जो किसीके स्वरूपके अनुसार हो अथवा जिसने किसीका स्वरूप धारण किया हो।

स्वरूपोत्प्रेक्षा (सं० स्त्री०) उत्प्रेक्षालङ्कारभेद।

स्वरूपोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्भेद।

स्वरूपसिंह—उदुम्बर सरकारके अन्तर्गत एक परगना।

स्वरेणु (सं० स्त्री०) सूर्यकी पत्नी, संज्ञा।

स्वरोचिस् (सं० क्ली०) स्वस्य रोचिः। १ स्वप्रकाश। (पु०) २ स्वारोचिस मनुके पिता, कलिनामक गन्धर्वसे वरूथिनी नाम्नी अप्सराके गर्भजात पुत्र। मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि वरुणा नदीके किनारे अरुणास्पद नगरमें कोई ब्राह्मण रहते थे। एक दिन उनके घर एक अतिथि आया। वह अतिथि विविध औषधियोंके प्रभाव और मन्त्रविद्यामें विशेष निपुण था। अतिथिने ब्राह्मणसे कहा, 'विप्र! मन्त्रौषधिके प्रतापसे मैं आधे दिन अर्थात् दो पहर तक एक सहस्र योजन जाता हूं।' यह वाक्य सुन कर ब्राह्मणने उससे कहा, सारी पृथ्वी घूमनेकी मेरी बड़ी इच्छा है, इसलिये आप यदि मेरी इच्छा पूरी कर दें, तो मैं *विशेष* उपकृत होगा।

अनन्तर उदारबुद्धि अतिथिने ब्राह्मणके एक पादमें प्रलेप लगाया और उनकी गन्तव्य दिशाको अभिमन्त्रित कर दिया। पीछे वह द्विज अतिथि द्वारा अनुलिप्त पादसे हिमालयप्रदेशमें गये। हिमालयके रम्यप्रदेशमें घूमते घूमते वरूथिनी नामक एक अप्सरासे उनकी भेंट हुई। अप्सराने मन्मथशरसे पीड़ित हो ब्राह्मणके निकट अपना मनोभाव प्रकट किया। ब्राह्मण वरूथिनीकी उपेक्षा कर अपने आश्रमको चले गये।

कलि नामक कोई गन्धर्व पहले ही वरूथिनीके प्रेममें फंस गया था, परन्तु वरूथिनी उसे नहीं चाहती थी। उक्त गन्धर्वने समाधिबलसे इस बातका पता लगा लिया, कि वह किसी ब्राह्मणसे प्रेम करना चाहती है। अनन्तर कलि ब्राह्मणका वेश धारण कर वरूथिनीके आस-पास घूमने लगा। अनन्तर वह वरूथिनीके साथ गिरिशिखर पर जा विहार करने लगा। सम्भोगकालमें वरूथिनी निमीलित नेत्रसे ब्राह्मणके रूपकी चिन्ता करती थी। गन्धर्वके वीर्य और ब्राह्मणकी रूपचिन्ता, इन दोनोंके संयोगसे वरूथिनीके गर्भ रह गया। वह गर्भस्थ बालक सूर्यके समान स्वरोचिःसम्पन्न हो दिशाओंको उजाला करता हुआ भूमिष्ठ हुआ। उस बालकने स्वरोचिः द्वारा सभी दिशाओंको समुद्भासित किया था, इस कारण उसका नाम स्वरोचिस् हुआ।

एक दिन स्वरोचिःने मन्दराचल पर भ्रमण करते समय तीन कन्याओंको देखा। उन तीनोंके नाम थे,—मनोरमा, विभावरी और कलावती। स्वरोचिःने उन तीनोंसे यह सोच कर विवाह कर लिया, कि उनसे आगे चल कर यथेष्ट साहाय्य मिलेगा। पीछे स्वरोचिःने विवाहिता तीनों पत्नियोंसे क्रमशः तीन प्रकारकी विद्या सीखी। उस विद्याप्रभावसे सभी जीवोंकी भाषा समझने लगे। कुछ दिन बाद उनके तीन पुत्र हुए। उनमेंसे एक पुत्रका नाम द्युतिमान् था। द्युतिमान् स्वरोचिःके पुत्र होनेके कारण स्वारोचिष नामक विख्यात द्वितीय मनु हुए थे। विशेष विवरण स्वारोचिष शब्दमें देखो।

स्वरोद (सं० पु०) एक प्रकारका बाजा जिसमें बजानेके तार लगे होते हैं।

स्वरोदय (सं० पु०) शास्त्रविशेष, स्वरज्ञापक ग्रन्थ, स्वर-शास्त्र। इस शास्त्रमें अभिज्ञता रहनेसे एकमात्र स्वरके द्वारा ही सभी शुभाशुभ जाने जाते हैं।

नरपतिने जयचर्या स्वरोदयमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है। इस स्वरोदयसे लाभालाभ, सुखदुःख, जीवनमरण, जयपराजय और सन्धि, ये सब जाने जाते हैं। मातृकावर्ण बिना स्वरके उच्चारित नहीं होता तथा इस मातृकावर्ण द्वारा चराचर जगत् व्याप्त है। स्थावर-जङ्गमात्मक जगत् स्वरसे निकला है। अतएव स्वरोदय द्वारा सभी जाने जा सकते हैं।

मातृकामें लिखा है कि स्वरकी संख्या सोलह है, यथा—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः। इन सोलह स्वरोंमें अन्त्यस्वर अर्थात् अं, अः ये दो त्याज्य, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ये चार स्वर क्लीव हैं, अतएव यह भी त्याज्य है। बाकी दश स्वरोंमें दो दो कर यह पञ्चस्वर अर्थात् अ, इ, उ, ए, ओ ये पांच स्वर ह्रस्व हैं। इस कारण उक्त पञ्चस्वर ही स्वरोदयमें अवलम्बित होते हैं।

इन अकारादि पांच स्वरोंसे पांच देवता समझे जाते हैं। यथा—अकारसे ब्रह्मा, इकारसे विष्णु, उकारसे रुद्र, एकारसे पवन, ओकारसे सदाशिव। इसी प्रकार उस अकारादि पञ्चस्वरोंमें निवृत्ति आदि पञ्चकला तथा इच्छा आदि पञ्चशक्ति निर्दिष्ट है। निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शान्ति और शान्त्यतीता यही पञ्चकला है तथा इच्छा, प्रज्ञा, प्रभा, श्रद्धा और मेधा यह पञ्चशक्ति है। उक्त पञ्चस्वरोंमें यथाक्रम अकारादि पञ्चचक्र, पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश यह पञ्चभूत; गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द ये पांच विषय तथा सम्मोहन, उन्मादन, शोषण, तापन और स्तम्भन, ये पांच बाण लक्षित होते हैं।

यह अकारादि पञ्चस्वर ८ भागोंमें विभक्त है। यथा—मात्रा, वर्ण, ग्रह, जीव, राशि, नक्षत्र, पिण्ड और योगस्वर।

इन आठ प्रकारके स्वरोंकी फिर पांच प्रकारकी अवस्था है, यथा—बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत। सभी स्वर इसी अवस्थानुसार फल प्रदान करते हैं। बालकस्वरमें कुछ लाभ, कुमारस्वरमें अर्द्धलाभ, युवा स्वरमें सम्पूर्ण लाभ, वृद्धस्वरमें क्षति और मृतस्वरमें

क्षय होता है। यात्रा, युद्ध, विवाह आदि वाल स्वर अनिष्टकारी होनेसे विवाहमें यह स्वरविशेष शुभ है।

मृतस्वरसे वृद्धस्वर, वृद्धस्वरसे वालस्वर, वालस्वरसे कुमारस्वर और कुमारस्वरसे तरुणस्वर बलवान् है। इसका तात्पर्य यह कि जब दो व्यक्तिमें युद्ध या मुकदमा चलता है, तब यदि एक व्यक्तिका वृद्धस्वर हो, तो जिसका वृद्धस्वर होता है, वही जयी होगा। इसी प्रकार सवल जानना होगा। जो स्वर जिसका पञ्चम है, वह स्वर उसकी मृत्यु या विपद्दायक होगा। किसी व्यक्तिके तृतीय स्वरका उदय अर्थात् तरुणस्वर होनेसे उसके कुल कार्य सिद्ध होते हैं। अवशिष्ट तीन स्वर अर्थात् वृद्ध, वाल और कुमार स्वर मध्यम प्रकारके फल देते हैं।

दो पक्षमें विवाद उपस्थित होनेसे जिसका स्वर बलवान् होगा, उसीकी जीत होगी। दोनोंका स्वर यदि समान बलका हो, तो उस स्वरके वालयादि अवस्थानुसार शुभाशुभ स्थिर करना होता है। जिस किसी समय वालस्वरके उदय पर मध्यविध फल, कुमारस्वरमें अर्द्ध-फल, तरुण स्वरमें सम्पूर्ण फल, वृद्ध स्वरमें बन्धन तथा मृत स्वरमें शारीरिक या मानसिक भय होता है।

दण्डस्वरके उदयकालमें मात्रास्वर ग्रहण कर वाल्यादि अवस्थाका विचार करनेके वाद शुभाशुभ फलका विचार करना होता है। तिथिस्वरके उदयकालमें वर्णस्वर, पक्षस्वरके उदयकालमें ग्रहस्वर और मास स्वरके उदयकालमें जीवस्वर उदित कर विचार करे। ऋतुस्वरके उदयकालमें राशिस्वर और उसकी वाल्यादि अवस्थाका विचार कर शुभाशुभ निरूपण करना होता है। अयनस्वरके उदयकालमें नक्षत्रस्वर और अब्दस्वरके उदयकालमें पिण्डस्वर उदित कर उसकी वाल्यादि अवस्थाके अनुसार फल निरूपण करना उचित है।

सभी वर्णस्वर कालमें ही बलवान् हैं, क्योंकि वर्णस्वरका अवलम्बन करके ही शुभाशुभ फल और बलवान्-का विचार करे। सभी नदियां जिस प्रकार समुद्रमें लीन हो जाती हैं, उसी प्रकार अन्यान्य स्वर भी वर्णमें लीन होते हैं. इसीसे वर्णस्वर ही सबोंमें प्रधान है।

जब मात्रास्वर बलवान् रहेगा, तब मन्त्रसाधन, यन्त्रसाधन, निर्माण और अन्यान्य सभी अधोमुख कर्मका अनुष्ठान करे। वर्णस्वर बलवान् रहनेसे जिस किसी शुभ या अशुभ कर्मका अनुष्ठान किया जाय, वही सफल होता है। क्योंकि वर्णस्वर ही सभी वर्णोंमें प्रधान है। ग्रहस्वर प्रबल होनेसे मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, विवाद, युद्ध. प्रहार या संहार यह सब कार्य करना उचित है। जीवस्वर प्रबल होनेसे वस्त्र, अलङ्कार, भूषणधारण, विद्यारम्भ, विवाह और यात्रा प्रशस्त है। राशिस्वर प्रबल होनेसे प्रासाद, हर्म्य, उद्यान, देवप्रतिमा, राज्याभिषेक और दीक्षा, इन सब कर्मोंमें विशेष शुभ होता है। नक्षत्रस्वर बलवान् होनेसे शान्तिकर्म, पुष्टिकर्म, गृहादिप्रवेश, बीजवपन, विवाह और यात्रा ये सब कर्म उत्तम हैं। पिण्डस्वर प्रबल होनेसे शत्रुपक्षका भङ्ग, कूटयुद्ध, शत्रु या शत्रुओंका देश अवरोध, सेनापति और मन्त्रिनियोग तथा योग स्वर प्रबल होनेसे ज्ञानोत्पादक योगसाधन करे। उक्त सभी स्वरोंको प्रबलावस्थामें उक्त सभी कार्य करनेसे शुभ फल होता है।

इस स्वरोदय द्वारा सभी प्रकारके फल निर्णय किये जा सकते हैं। इसके सिवा इडा, पिङ्गला और सुषुम्ना नाडीके श्वास प्रश्वास द्वारा सभी तत्त्व जाने जाते हैं। उन सब तत्त्वों द्वारा भी शुभाशुभ फल जाना जा सकता है। यह भी स्वरोदय शास्त्रके अन्तर्गत है।

जिस समय इडा नाडी द्वारा सांस प्रवाहित होता है, उस समय सौम्य कर्मका अनुष्ठान करनेसे सुफल होता है। इसी प्रकार पिङ्गला नाडीके प्रवाह-कालमें शान्तिजनक कर्मका अनुष्ठान करना होता है। इस तरह उक्त तीनों नाडियोंके प्रवाहकालमें शुभाशुभ कर्मका फल स्थिर कर शुभाशुभ कर्मके अनुष्ठान और उन सब कर्मोंसे विरत रहें। नरपति जयचर्या नामक स्वरोदय ग्रन्थमें विशेष विवरण लिखा है।

स्वरोदयमें सर्वतोभद्रचक्र, शतपदीचक्र, अंशचक्र, सिंहासनचक्र, कूर्मचक्र, पद्मचक्र, फणीश्वरचक्र आदि चक्र तथा ओड्रिकाभूमि, जालन्धरीभूमि, कामाख्याभूमि आदिका विषय लिखा है। इन सबके द्वारा भी शुभाशुभ फल जाने जा सकते हैं। (वर्षास्वरोदय)

स्वरोपध (सं० त्रि०) उपधस्वरविशिष्ट।

स्वर्क (सं० त्रि०) १ शोभन गमनयुक्त। २ शोभन स्तुतिविशिष्ट। ३ शोभन दीप्तियुक्त। (ऋक् १।८८।१)

स्वर्ग (सं० पु०) स्वरिति गीयते इति गै क। देवताओंका आलय, सुरलोक, देवलोक।

जो कुछ पुण्य या शुभ कर्म किया जाता है, उसके फलसे मृत्युके बाद कुछ दिनोंके लिये जो सुख मिलता है, उसे स्वर्ग कहते हैं। स्वर्गमें दुःख नहीं। दर्शनशास्त्रमें लिखा है, कि वेदोक्त यज्ञादिके अनुष्ठान द्वारा स्वर्गलाभ होता है। दार्शनिकोंने स्वर्ग शब्दका अर्थ दुःखविरोधी सुखविशेष लगाया है। परन्तु स्वर्ग स्थायी नहीं है, कुछ दिन स्वर्ग-भोगके बाद उसका क्षय होता है। अत्यन्त दुःखकी निवृत्ति जब तक नहीं होती, तब तक जीवको मुक्ति होना असम्भव है। अतएव स्वर्गमें तात्कालिक दुःखनिवृत्ति होनेसे भी आत्यन्तिक दुःखनिवृत्ति नहीं होती।

वैदिकयज्ञका अनुष्ठान करनेसे जिस प्रकार प्रभूत पुण्य सञ्चय होता है, उसी प्रकार वह यज्ञानुष्ठान हिंसा-साध्य होनेके कारण प्रभूत पुण्यके साथ यत्किञ्चित् पापका भी सञ्चय होता है। अतएव यज्ञकर्त्ता जब स्वोपार्जित,पुण्यराशिके फलस्वरूप स्वर्गसुखका उपभोग करें, तब हिंसाजन्य पापांशके फलस्वरूप यत्किञ्चित दुःखका भी उन्हें उपभोग करना होगा।

स्वर्ग विनाशी है, यह चिरस्थायी नहीं है। स्वर्ग-सुखविशेष मात्र है। सुख जिस तरह उत्पन्न होता है, उसी तरह विनाशी भी है। सुख नित्य वा अविनाशी नहीं हो सकता। जो कारण वशतः उत्पन्न होता है, वह कारणविगममें या अन्यरूपसे अवश्य विनाश होगा। सुतरां दुःखनिवृत्तिको वैदिकयज्ञानुष्ठानके फलरूपमें नहीं कहा गया है, स्वर्ग नामक सुखविशेष उसका फल कहा गया है।

सुख अभाव रूप नहीं है, वह भावरूपपदार्थ है। उत्पन्न भावपदार्थोंका विनाश है। भगवानने गीतामें कहा है—

'ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।' (गीता ९ अ०)

वे उस विशाल स्वर्गलोकका भोग कर पुण्यक्षय होनेसे मर्त्यलोकमें प्रवेश करते हैं। अतएव यह स्थिर हुआ, कि स्वर्गसुखभोग चिरस्थायी नहीं है। स्वर्गमें दुःखकी अत्यन्त निवृत्ति नहीं होती, सामयिक दुःखका केवल अभाव होता है। (सांख्यद०) नैयायिकोंने लिखा है—

दुःखासम्भिन्न सुख ही स्वर्ग है अर्थात् जो सुख दुःख मिश्रित नहीं है और जो किसी भी समय दुःखके साथ नहीं मिलता या अभिलाष मन्त्र ही उपनीत होता है, वही स्वर्ग है। इससे स्थिर हुआ, कि निरवच्छिन्न सुख ही स्वर्ग है।

चार्वाकादि नास्तिकगण स्वर्ग और नरकको स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है, कि स्वर्ग और नरक कवि-कल्पना है। इस जीवनमें जो सुखभोग होता है, वही स्वर्ग है, वही नरक है। बिना देहके भोग नहीं होता, स्थूल देहके नाशसे मृत्यु होती है। सुतरां मृत्युके बाद भोगायतन देह नहीं रहती। अतएव बिना देहके भोग किस प्रकार संभव है? सूक्ष्म देहमें भोग होता है, यह भी नहीं कह सकते क्योंकि मृत्युके बाद लौकिक आत्माके अस्तित्व या सूक्ष्म देहमें प्रमाण नहीं है।

आस्तिकमात्र ही स्वर्गनरक पर विश्वास करता है। मृत्युके बाद एक ऐसी देह बन जाती है जिसमें स्वर्ग और नरक भोग होता है। स्वर्ग और नरक भोगके बाद फिरसे जन्म होता है।

पद्मपुराणके भूखण्डमें लिखा है, कि स्वर्गमें दिव्य, रमणीय नन्दनादि कानन विद्यमान हैं। ये सब कानन अत्यन्त पवित्र हैं। इन काननोंके चारों ओर फलप्रद वृक्ष शोभा दे रहे हैं। सुदिव्य विमान और अप्सरोगण इसके चारों ओर विराजित हैं। इस सर्वत्र कामग और विचित्र है। यहां चन्द्रमण्डल शुभ्रवर्ण आसन और शय्या सुवर्णमय है। और तो क्या, जितने प्रकारके सुख हो सकते हैं, वे सभी प्रकारके सुख यहां मिलते हैं। सुकृतकारी मनुष्य यहां सुखसे विचरण करते हैं। नास्तिक, स्तेय, अजितेन्द्रिय, नृशंस, पिशुन, कृतघ्न आदि पापिगण यहां नहीं जा सकते। यज्वा, दानशील आदि सुकृत कर्मकारी ही यहां जाते हैं। यहां रोग, शोक, जन्म, जरा और मृत्यु कुछ भी नहीं है। यहां क्षुत्पिपासा या ग्लानि भी नहीं है। समस्त शुभ कर्मका फल इसी स्थानमें मिलता है। यहां सभी शुभ फलोंका भोग होनेके बाद वे कर्मभूमिमें जन्म ग्रहण करते हैं।

भूः, भुवः, स्वः, आदि करके सात लोक हैं। उनमेंसे इस पृथिवी लोकको भूर्लोक कहते हैं। इस पृथ्वीसे ले कर सूर्य तक भूर्लोक, सूर्यलोकसे ध्रुवलोक तक स्वर्लोक कहलाता है। सूर्यके ऊपरी भागमें ध्रुवके संस्थान तक जो स्थान है, वही स्वर्गलोक है। यहांके अवस्थानका नाम स्वर्गवास है।

नृसिंहपुराणमें लिखा है, कि पृथिवीके मध्य अति श्रेष्ठ मेरु नामक एक पर्वत है। इस सुमेरुके तीन शृङ्ग स्वर्ग कहलाते हैं। इन तीन शृङ्गोंमेंसे मध्य शृङ्ग स्फटिकमय और वैदूर्यखचित, पूर्वशृङ्ग इन्द्रनील और पश्चिम शृङ्ग माणिक्यमय है। जो पुण्यात्मा हैं, वे ही इन सब शृङ्गों पर पुण्यफलका भोग करते हैं।

इन तीन शृङ्गों पर इक्कीस स्वर्ग हैं। पुण्यके तारतम्यानुसार इन सब स्वर्गोंमें पुण्यात्माओंका वास होता है।

पुराणादिमें लिखा है, कि स्वर्गके अधिपति इन्द्र हैं, यह इन्द्र शब्द उपाधिविशेष है। जब जो स्वर्गराज्यके अधिपति होते हैं, तब वे ही इन्द्र कहलाते हैं। मन्वन्तर विशेषमें अनेक इन्द्र हुए हैं। फिर मन्वन्तरके बाद वे इन्द्रत्वसे च्युत हुए हैं। इसके सिवा दैत्य और असुरगण बीच बीचमें देवताओंको परास्त कर स्वयं इन्द्रत्व ग्रहण करते थे। फिर देवतागण भगवान् विष्णुकी सहायतासे उन्हें निधन कर फिरसे स्वर्गराज्य ले लेते थे। पुराणोंमें इसके यथेष्ट विवरण देखे जाते हैं। विस्तार हो जानेके भयसे यहां कुछ नहीं लिखा गया। महाभारतमें लिखा है, कि युधिष्ठिरने स्वशरीर स्वर्गारोहण किया था। महाभारतके स्वर्गारोहणपर्वमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है, पारिभाषिक स्वर्ग जैसे मनोवृत्त्यनुसारिणी रूपवती अलङ्कृता कामिनी और प्रासादपृष्ठ पर वास ही स्वर्ग है। (गरुड़पु० १०६।४४)

जगत्‌की सभी सभ्य जातियोंमें स्वर्गके सम्बन्धमें एक प्रकारका विश्वास है। बाइबिलसे जाना जाता है, कि प्राचीन हिब्रु जाति समझती थी, कि मजबूत दीवार और गुम्बजदार स्तम्भके ऊपर स्वर्ग प्रतिष्ठित है। फिर बहुतोंकी धारणा थी, कि स्वर्ग एक परदा और तंबूकी तरह है। यहूदी लोग अधः, मध्य और उच्चतर इन थोड़े प्रकारके स्वर्गकी कल्पना करते थे। इनमेंसे अधःस्वर्ग, मेघ और वायुमण्डल, मध्यस्वर्ग तारका या नक्षत्रमण्डल तथा ऊर्द्ध्व या स्वर्लोक ईश्वर और उनके दूतोंकी निवासभूमि है। पूर्वतन बौद्ध लोग भी 'त्रयस्त्रिंशत्' स्वर्गकी कल्पना करते थे। इसके सिवा बौद्ध, खृष्टान, यहूदी, मुसलमान आदि प्रधान धर्मसम्प्रदायगण भी बराबर स्वर्गका एक आध्यात्मिक अर्थ स्वीकार करते थे। आदि बौद्धगण 'निब्बाणं परमं सुखं' (धम्मपद) परम सुखको ही *निर्वाण* कह गये हैं। आधुनिक बौद्धोंमेंसे कोई कोई ऐसी निर्वाण अवस्थाको स्वर्ग मानते हैं। प्राचीन ग्रीक और रोमनोंने चिरसुखशान्तिमय स्वर्गको ही Elysium नाम रखा है। मानव जहां अनन्त सुखभोग करते हैं, केवल नरकके लेद नामक सरोवरका जल पान करके ही उन्हें उस *अनन्त शान्तिमय अवस्थाको भूल कर फिर इस जगत्‌में* आना होता है।

पुराणमें जिस प्रकार स्वर्गमें इन्द्र, चन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य आदि भिन्न भिन्न 'लोक' कहे गये हैं, पूर्वकालमें मेक्सिको-वासिगण भी उसी प्रकार विभिन्न देवयोनिके निवासस्वरूप ६ सुखशान्तिमय स्वर्गलोककी कल्पना करते थे। मृत्युके बाद पुण्य कार्योंके तारतम्यानुसार उन सब स्वर्गोंका भोग होता है।

यहूदियोंके 'रान्नि' या धर्माध्यक्षोंके मतसे ऊर्द्ध्व और अधः ये दो स्वर्ग हैं। बीचमें 'जिअन्' नामक एक स्तम्भ खड़ा है। प्रति पुण्याह या उत्सवके दिन पुण्यशील उसी स्तम्भसे स्वर्गको जाते हैं और सर्वशक्तिमान् भगवान्‌की विभूति दर्शन कर आते हैं। ऊर्द्ध्व और अधः इन दोनों ही स्वर्गमें सात भवन हैं। धार्मिक लोग सुकृतिके अनुसार उन सब भवनोंमें जा कर वास करते हैं। ऊर्द्ध्वमें स्वर्गलाभ ही श्रेष्ठ सुकृतिका परिचायक है। इस ऊर्द्ध्वमें जो सात भवन हैं, उनमेंसे जो धर्मराज और भगवान्‌के सम्मानकी रक्षाके लिये आत्मोत्सर्ग करते हैं, उनका प्रथम भवन, जो समुद्रमें मृत्युमुखमें पतित होते हैं, उनका २य भवन, रान्नि जोहानन बेन ज़काई और शिष्यमण्डलीके लिये ३य भवन, मेघमें जो अवतरण करते हैं उनके लिये ४र्थ

भवन, अनुतप्त और विशुद्ध धार्मिकोंके लिये ५म भवन, आकुमार ब्रह्मचारी और आजीवन निष्पाप लोगोंके लिये ६ष्ठ भवन तथा वाइबल और मिस्ना या धर्मग्रन्थको चर्चा द्वारा जो सब दरिद्र भिक्षु जीविका चलाते हैं अथवा जो न्यायसङ्गत व्यवसाय करते हैं, उनके लिये ७म भवन है। धार्मिक या पुण्यवान्‌की मृत्यु होने पर वे सीधे ऊद्धर्ध्व स्वर्गमें नहीं जा सकते। ऊद्धर्ध्व स्वर्ग और जड़ जगत्‌के मध्यवर्ती अधःस्वर्गमें ही उन्हें पहले जाना होगा। अधःस्वर्गमें अवस्थान किये बिना किसीको भी श्रेष्ठतम भवनमें जानेका अधिकार नहीं है। जानेकी चेष्टा करनेसे ही वहांकी महावह्निमें भस्मीभूत होना पड़ेगा। पर हां, कोई कोई अशेष सुकृतिके फलसे सीधे भगवान्‌के समीप सर्वश्रेष्ठ ऊद्धर्ध्वलोकमें तथा अन्यान्य भवनोंमें आ जा सकते हैं, परन्तु ऐसे लोगोंकी संख्या बहुत कम है।

पूर्वकालमें मिस्रदेशके धर्मयाजक हिन्दुओंको तरह शिक्षा देते थे, कि आत्माका विनाश नहीं है, देहत्यागके बाद आत्मा स्वर्गलोकमें जा कर परमात्मामें मिल जाते हैं। पूर्वतन स्कन्दनभ जाति भी दो पृथक् स्वर्ग जानती थी। उनमेंसे एकमें 'वलहल्ला' नामक ओदिन या बुधका प्रासाद है। जिनकी रणस्थलमें स्वरोचित मृत्यु होती है, ओदिन वहां उनका स्वागत करते हैं। दूसरे स्वर्गका नाम 'गिमूली' है। यह धाम स्वर्णमय प्रासादमण्डित तथा पुण्यवान्‌को चिरशान्ति और आनन्दभोगका स्थान है। ओदिनके प्रासादमें जो प्रवेश करते हैं, उन्हें प्रति दिन युद्धसज्जा करनी पड़ती है और वे आपसमें युद्ध कर क्षतविक्षत हो जाते हैं। किन्तु भोजनका समय आने पर सभी सुस्थ शरीरसे बेरोकटोक ओदिनके भोजन-मन्दिरमें आ कर पान भोजन करते हैं। एक बकरीके दूधमें अभिषुत सुरा और 'सेरिन्‌हिर' नामक एक वराहके मांससे सभी तृप्ति लाभ करते हैं। भगवान् ओदिन केवल दाखकी बनी हुई शराब पीते हैं। वीरोंका भोजन सुन्दरी कुमारियां टेबुलके पास खड़ी रह कर परोसती है और पानपात्र भर देती हैं। पूर्वतन खृष्टीय धर्मयाजकगण स्वर्ग शब्दसे 'स्थान' और 'अवस्था' दोनों ही समझते थे। वाइवलमें लिखा है—"सबसे पहले ईश्वरने स्वर्ग और मर्त्यकी सृष्टि की।" स्वर्ग सृष्ट जगत्‌का केन्द्र और भगवान्‌की राजधानी है। यहीं पर सर्वव्यापी भगवान्‌का सामीप्य और सालोक्य लाभ होता है, उनकी महिमाकी पूर्णाभिव्यक्ति जानी जाती है। (Kings 8. 27 Isa 6. 3, 15. 66. 1. Math 6. 9.) मृत्युके बाद चिरसुखशान्तिमय अवस्थाको भी आदि ईसाइयोंने स्वर्ग कहा है। बाइवलमें लिखा है, कि भगवान्‌ने अपने प्रिय पुत्र यीशु खृष्टके हाथमें ही उस स्वर्गसुखका भार दे रखा है। स्वर्ग आनन्दमय अवस्था समझे जाने पर भी यह अनिर्वचनीय शान्तिसुखका स्थान माना जाता है। इसीसे बाइबलने इसको Paradise या नन्दनकानन, ईश्वरका भवनमन्दिर, उत्कृष्टतर राज्य, भगवान्‌की शान्ति, विश्राम और आनन्दका स्थान कहा है। बाइबलसे यह भी जाना जाता है, कि स्वर्ग साधुओंके लिये है। साधुसंश्रवके फलसे भी "everlasting habitations" अर्थात् अक्षयधाम या स्वर्गलाभ होता है। स्वर्गवासिगण पूर्ण और अनन्त आनन्दका उपभोग करते हैं।

मुसलमान धर्मयाजकोंका कहना है, कि प्रकृत इसलाम धर्मविश्वासी, प्रकृत धर्मशास्त्रवक्ता और पैगम्बर महम्मदके शिष्यानुशिष्योंके लिये ही स्वर्ग है। वहां चिरोज्ज्वल आलोकमाला और स्वर्गीय आनन्द नित्य विद्यमान है। स्वर्गभोगिगण भी चिरसुन्दर, ओजस्वान्, पूर्णशक्तिमान् तथा सूर्यसे भी दीप्तिमान् हैं। वे अल्लाहके दर्शन और उपासनाके उपयुक्त हैं। मुसलमानोंके मतसे प्रधानतः आठ 'विहिश्त' या स्वर्ग हैं जिनमेंसे १ला दरुल जलाल या गौरवधाम मुक्तामण्डित, २रा दरुलसलाम या शान्तिधाम माणिक्यमण्डित, ३रा जन्नत् उल-मोआ या दर्शनोद्यान पित्तलमण्डित, ४था जन्नत्-उल्-खुल्द या अक्षय उद्यान पीत प्रवालमण्डित, ५वां जन्नत् उल-नुइम या आनन्दोद्यान उज्ज्वल हीरकमण्डित, ६ठा जन्नत् उल फिरदुल या नन्दनकानन रक्तिम सुवर्णमय, ७वां दरुल करार या अक्षयधाम विशुद्ध मृगनाभि सुवासित और ८वां जन्नत्-उल्-आदन या इडेन-उद्यान रक्तिम मुक्तामण्डित। कुरानमें लिखा है, कि नाना सुखमय स्थान कल्पित होने पर भी अल्लाहके सामीप्य

और सायुज्यलाभसे हो उच्च सुख लाभ होता है। उसकी तुलनामें दूसरे सुखकी कल्पना कुछ भी नहीं है। एक पैगम्बर ही स्वर्गमें जा सकते हैं। धर्मके लिये जो आत्मोत्सर्ग करते हैं, वे स्वर्गीय हुम्मा पक्षीके कण्ठमें और साधारण इसलाम भक्तोंकी आत्मा कब्रिस्तान या जेम जेम नामक कूपमें अथवा आदमके साथ सबसे नीचे स्वर्गमें जाते हैं।

ग्रीनलैण्डवासी सिर्फ एक भावी 'आनन्द' या स्वर्गोद्यानकी आशा रखते हैं और विश्वास करते हैं, कि वह महासमुद्रके अतलस्पर्शी गर्भके मध्य विद्यमान है। केवल सुदक्ष धीवर वहां जानेकी आशा कर सकते हैं। अमेरिकाके अपलाचीय नामक आदिम जातियोंकी धारणा है, कि मृत्युके बाद भावी सुखमय अवस्थाका भोग होता है। चिरप्रीतिमय, चिरस्थायी उत्सवविभूषित, नाना सुदृश्य मृगपक्षिसमाकुल, मत्स्यपूर्ण स्वच्छसरोवर और प्रभूत शस्यशाली, जरामरणदुर्भिक्षविवर्जित स्थान ही उनकी वह भावी सुखमय अवस्था है। अमेरिकावासी समझते थे, कि चतुर शिकारी, समरकुशल, योद्धा और बन्दी शत्रुओंको जो विशेष कष्ट देने या उनका मांस खानेमें समर्थ हैं, केवल वे ही उस सुखमय अवस्था या स्वर्गभोगके अधिकारी हैं।

स्वर्गकाम (सं० त्रि०) स्वर्गगामी, जो स्वर्गको कामना रखता हो।

स्वर्गखण्ड (सं० क्ली०) पद्मपुराणके अन्तर्गत एक खण्ड।

स्वर्गगति (सं० स्त्री०) स्वर्गे गतिः। स्वर्गमें जाना, मरना।

स्वर्गङ्गा (सं० स्त्री०) मन्दाकिनी। (शब्दरत्ना०)

स्वर्गजित् (सं० त्रि०) स्वर्गजेता।

स्वर्गत (सं० त्रि०) स्वर्गीय जो स्वर्ग चला गया हो।

स्वर्गतरङ्गिणी (सं० स्त्री०) स्वर्गङ्गा, मन्दाकिनी।

स्वर्गतरु (सं० पु०) स्वर्गस्य तरुः। १ पारिजात, परजाता। २ कल्पनवृक्ष।

स्वर्गति (सं० स्त्री०) स्वर्गगति, स्वर्गगमन।

स्वर्गद (सं० त्रि०) जो स्वर्ग पहुंचता हो, स्वर्गदेने वाला।

स्वर्गदायक (सं० त्रि०) स्वर्गद देखो।

स्वर्गदेव—आसामके एक प्रसिद्ध राजा। कामरूप देखो।

स्वर्गद्वार (सं० क्ली०) स्वर्गस्य द्वारं। स्वर्गका द्वार।

स्वर्गधेनु (सं० स्त्री०) स्वर्गस्य धेनुः। कामधेनु।

स्वर्गनदी (सं० स्त्री०) आकाशगङ्गा।

स्वर्गपति (सं० पु०) स्वर्गस्य पतिः। इन्द्र।

स्वर्गपथ (सं० पु०) स्वर्गका पथ, स्वर्गमार्ग।

स्वर्गपर्व्वन् (सं० पु०) महाभारतके अन्तर्गत अठारह पर्व्वमेंसे एक पर्व्व। इस पर्व्वमें पाण्डवोंका स्वर्गारोहण वर्णित है।

स्वर्गपुरी (सं० स्त्री०) इन्द्रकी पुरी, अमरावती।

स्वर्गपुष्प (सं० पु०) लवङ्ग, लौंग।

स्वर्गभूमि—भविष्यब्रह्मखण्डवर्णित एक प्राचीन जनपद। यह वाराणसीके पश्चिम ओर था। उक्त ब्रह्मखण्डमें लिखा है, कि इस स्थानके मध्यवर्त्ती गोपालपुर ग्राममें सुमाली दैत्यवंशीय दुर्ग नामक असुरका विनाश कर भगवती दुर्गा नामसे प्रसिद्ध हुईं। उस दैत्यवंशमें हम्ताल नामक एक दैत्यने अपने नाम पर एक पुरी बसाई। गोपजातीय किसी एकने मण्डलेश्वर हो कर यहां दुर्ग बनाया था। कलिके प्रारम्भमें यहां पौण्ड्रदेशाधिपतिके साथ शृगाल वासुदेवका युद्ध हुआ था।

इस स्वर्गभूमिमें अनेक ग्राम लगते थे। उन ग्रामोंमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और हीन जातिका वास था। इस स्थानकी मानवकीर्त्तिकहानी भविष्य ब्रह्मखण्डमें लिखी है।

स्वर्गमन (सं० क्ली०) स्वर्गगमन, स्वर्ग जाना।

स्वर्गमन्दाकिनी (सं० स्त्री०) स्वर्गङ्गा, मन्दाकिनी।

स्वर्गमार्ग (सं० पु०) स्वर्गगमनका पथ, स्वर्गपथ।

स्वर्गयाण (सं० पु०) १ स्वर्गगमनका पथ। २ स्वर्गका यान।

स्वर्गयोनि (सं० पु०) यज्ञ, दान आदि वे शुभ कर्म जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाते हैं।

स्वर्गराज्य (सं० क्ली०) स्वर्गरूप राज्य, स्वर्गलोक।

स्वर्गलाभ (सं० पु०) स्वर्गकी प्राप्ति, स्वर्ग पहुंचना, मरना।

स्वर्लोक (सं० पु०) स्वर्लोक, स्वर्ग।

स्वर्गलोकेश (सं० पु०) १ शरीर, तन। २ स्वर्गके स्वामी, इन्द्र।

स्वर्गवधू (सं० स्त्री०) अप्सरा। (हेम)

स्वर्गवत् (सं० त्रि०) स्वर्गयुक्त, स्वर्गवासविशिष्ट।

स्वर्गवाणी (सं० स्त्री०) आकाशवाणी।

स्वर्गवास (सं० पु०) १ स्वर्गमें निवास करना, स्वर्गमें रहना। २ स्वर्गको प्रस्थान करना, मरना।

स्वर्गवासिन् (सं० त्रि०) १ स्वर्गमें रहनेवाला। २ मृत, जो मर गया हो।

स्वर्गसद् (सं० पु०) स्वर्गवासी देवगण।

स्वर्गसरिद्वरा (सं० स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी।

स्वर्गसार (सं० पु०) चतुर्दश तालके चौदह भेदोंमेंसे एक।

स्वर्गस्त्री (सं० स्त्री०) स्वर्गवधू, अप्सरा।

स्वर्गस्थ (सं० त्रि०) १ स्वर्गमें स्थित, स्वर्गका। २ स्वर्गवासी, जो मर गया हो।

स्वर्गापगा (सं० स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी।

स्वर्गामिन् (सं० त्रि०) स्वर्गगामी, जो स्वर्ग चला गया हो।

स्वर्गारूढ (सं० त्रि०) स्वर्ग सिधारा हुआ।

स्वर्गारोहण (सं० क्ली०) १ स्वर्गकी ओर जाना या चढ़ना। २ स्वर्ग सिधारना, मरना।

स्वर्गावास (सं० पु०) स्वर्गवास, स्वर्गमें निवास करना।

स्वर्गिगिरि (सं० पु०) १ सुमेरु पर्वत जिसके शृङ्ग पर स्वर्गकी स्थिति मानी जाती है। २ ईश्वर। ३ सुख। ४ वह स्थान जहां स्वर्गका सुख मिले। ५ आकाश। ६ प्रलय।

स्वर्गिन् (सं० पु०) १ देवता। (त्रि०) २ स्वर्गवासी, स्वर्गका निवासी। ३ स्वर्गगामी।

स्वर्गिवधू (सं० स्त्री०) अप्सरा।

स्वर्गिस्त्री (सं० त्रि०) अप्सरा।

स्वर्गीय (सं० त्रि०) १ स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्गका। २ स्वर्गसुखजनक। ३ स्वर्गगत, जिसका स्वर्गवास हो गया हो।

स्वर्गौकस् (सं० पु०) १ देवता, सुर। २ स्वर्गवासी।

स्वर्ग्य (सं० त्रि०) स्वर्गनिमित्तक, स्वर्गके योग्य।

स्वर्चक्षस् (सं० त्रि०) सर्वदर्शन। (ऋक् ६।६६।४६)

स्वर्चिन (सं० पु०) वह अग्नि जिसमेंसे सुन्दर ज्वाला निकलती हो।

स्वर्चिनस् (सं० त्रि०) सब प्रकार अन्नयुक्त।

स्वर्चि (सं० त्रि०) स्वर्चिन देखो।

स्वर्जक्षार (सं० पु०) सज्जिक्षार, सज्जी मिट्टी।

स्वर्जारिघृत (सं० क्ली०) वैद्यकमें एक प्रकारका घृत। कहते हैं, कि इसे घाव पर लगानेसे उसमेंके कोड़े मर जाते हैं, सूजन कम हो जाती है और वह जल्द भर जाता है।

सर्ज्जि (सं० स्त्री) १ सज्जी मिट्टी। २ यवक्षार, शोरा।

सर्ज्जिक (सं० पु०) स्वर्ज्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी। गुण—थोड़ा उष्ण, तीक्ष्ण, वात और कफनाशक, गुल्म, आध्मान, कृमि, व्रण और जठरदोषनाशक। (राजनि०) २ यवक्षार, शोरा। गुण—लघु, स्निग्ध, अग्निदीपक, शूल, वात, श्लेष्मा, श्वास और गलरोगनाशक। (भावप्रकाश)

स्वर्ज्जिक्षार (सं० पु०) सर्ज्जिकाक्षार, सज्जी मिट्टी।

स्वर्ज्जिकाद्यतैल (सं० क्ली०) तैलौषधविशेष। यह तेल कानके दर्द और बहरेपन आदिके उपयोगी माना जाता है।

सर्ज्जिकापाक्य (सं० पु०) सर्ज्जिक्षार, सज्जी मिट्टी।

स्वर्ज्जित (सं० त्रि०) १ वह जिसने स्वर्ग पर विजय प्राप्त कर ली हो, स्वर्गजेता। (पु०) २ एक प्रकारका यज्ञ।

स्वर्ज्जित (सं० पु०) एक प्रकारका यज्ञ।

स्वर्ज्जिन् (सं० पु०) स्वर्जिक्षार, सज्जी मिट्टी।

स्वर्जेष (सं० पु०) स्वर्गगमनसाधन। (ऋक् १।१३३।२)

स्वर्ज्योतिस् (सं० त्रि०) सूर्यज्योतिः। (शुक्लयजुः ५।३२)

स्वर्ण (सं० क्ली०) १ सुवर्ण, सोना।

एक दिन देवगण सुरसभामें इकट्ठे हुए। अप्सरायें नाचगान करती थीं। अग्निदेव सुश्रोणी रम्भाको देख कर कामार्त्त हुए और उनका वीर्यस्खलन हुआ। लज्जावशतः ब्रह्माने वस्त्र द्वारा उसी समय उसे ढंक दिया। अनन्तर उससे अतिभास्वर सुवर्णकी उत्पत्ति हुई। यह सुवर्ण क्षणभरमें बढ़ कर सुमेरुपर्वतरूपमें परिणत हो गया। पण्डित लोग इसीसे अग्निको सुवर्णरेता कहा करते हैं। देवी भागवतमें लिखा है, कि मन्दरगिरिसे जम्बू नदी निकली है। इस जम्बू नदीमें जम्बूफल गिरनेके कारण वायु और सूर्यरश्मिके संयोगसे सुवर्णकी उत्पत्ति हुई

है। इससे देवगण ललनाओंका अलङ्कार बनाते हैं।
विशेष विवरण सुवर्ण शब्दमें देखो।

२ धुस्तूर, धतूरा। ३ गौरसुवर्णशाक। ४ नागकेशर-पुष्प। ५ भविष्यब्रह्मखण्डवर्णित नदीभेद। ६ योगिनीतन्त्र वर्णित कामरूपस्थ नदीभेद।

स्वर्णक (सं० क्ली०) स्वर्ण देखो।

स्वर्णकण (सं० पु०) १ कर्णगुग्गुल। २ स्वर्णकणा।

स्वर्णकणिका (सं० स्त्री०) कनककणा।

स्वर्णकण्ड (सं० क्ली०) १ सर्जरस, धूना। २ रञ्जन।

स्वर्णकदली (सं० स्त्री०) सुवर्णकदली सोनकेला।

स्वर्णकमल (सं० क्ली०) रक्तपद्म, लाल कमल।

स्वर्णकाय (सं० पु०) १ गरुड। (हेम)। (त्रि०) २ स्वर्णमय शरीर, जिसका शरीर सोनेका अथवा सोनेका-सा हो।

स्वर्णकार (सं० पु०) एक प्रकारकी जाति जो सोने चांदीके आभूषण आदि बनाती है, सुनार। पर्याय—नाडिन्धम, कलाद, रुक्मकार, कणाद, हेमल।

स्वर्णकूट (सं० क्ली०) हिमालयकी एक चोटीका नाम।

स्वर्णकृत् (सं० पु०) स्वर्णकार देखो।

स्वर्णकेतकी (सं० स्त्री०) पीली केतकी जिससे इत्र और तेल आदि बनाया जाता है। गुण—शीतल, कटु, पित्त और कफनाशक, रसायन, वर्णवृद्धि तथा देहदृढताकारक।

स्वर्णक्षीरी (सं० स्त्री०) हेमपुष्पा, सत्यानासी, भरभाँड। गुण—शीतल, तिक्त, कृमि, पित्त और कफनाशक, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, शोफ, दाह और ज्वरनाशक। (राजनि०) अमरटीकामें भरतने लिखा है, कि इसका दूध अर्थात् निर्यास हेमवर्ण, हिमवत् भूमि पर इसकी उत्पत्ति होती है। इसका आकार नागजिह्विकाके समान तथा मूल औषध रूपमें व्यवहृत होता है।

स्वर्णकोश—पुराणानुसार पूर्व बङ्गके एक नदका नाम।

स्वर्णखण्ड (सं० क्ली०) सोनेका टुकड़ा।

स्वर्णगणपति (सं० पु०) स्वर्णवर्णगणेश, हरिद्रागणेश।

स्वर्णगर्भाचल—हिमवत्खण्डवर्णित हिमालयकी एक चोटी।

स्वर्णगिरि (सं० पु०) सुवर्णगिरि, सुमेरु पर्वत।

स्वर्णगैरिक (सं० क्ली०) रक्तगैरिक, सोना गेरू।

स्वर्णगोगीत्र (सं० क्ली०) मन्त्रविशेष।

स्वर्णग्राम—१ सुवर्णग्राम नामसे विख्यात। सुवर्णग्राम देखो। २ भविष्य ब्रह्मखण्डवर्णित भोजदेशके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम।

स्वर्णग्रीव (सं० पु०) स्कन्दके एक अनुचरका नाम।

स्वर्णग्रीवा (सं० स्त्री०) कालिकापुराणके अनुसार एक नदीका नाम जो नाटकशैलके पूर्वी भागसे निकली हुई और गङ्गाके समान पवित्र कही गई है।

स्वर्णघर्म (सं० पु०) वैदिक अनुवाकमन्त्रविशेष।

स्वर्णचूड (सं० पु०) नीलकण्ठ नामक पक्षी।

स्वर्णचूल (सं० पु०) स्वर्णचूड देखो।

स्वर्णज (सं० क्ली०) १ वङ्ग नामकी धातु, रांगा। २ स्वर्ण माक्षिक, सोनामक्खी। (त्रि०) ३ स्वर्णजात, सोनेसे उत्पन्न। ४ सोनेसे बना हुआ।

स्वर्णजातिका (सं० स्त्री०) पीतजातीपुष्प, पीली चमेली।

स्वर्णजाती (सं० त्रि०) स्वर्णजातिका देखो।

स्वर्णजीवन्ती (सं० स्त्री०) पीली जीवन्ती। गुण—वृष्य, मधुर, चक्षुष्य, शीतल, वातपित्त, अस्र, दाहनाशक और बलवर्द्धक। (राजनि०)

स्वर्णजीरी (सं० स्त्री०) वैद्यकके अनुसार एक प्रकारका औषध।

स्वर्णजीवा (सं० स्त्री०) स्वर्णजीवन्ती, पीली जीवन्ती।

स्वर्णजीविन् (सं० पु०) वह जो सोनेके आभूषण आदि बना कर जीविका निर्वाह करता हो, सुनार।

स्वर्णजूही (हिं० स्त्री०) पीली जूही।

स्वर्णटिकरि—आसामके अन्तर्गत ब्रह्मपुत्रतीरस्थ एक प्राचीन ग्राम। (भविष्यब्रह्मख० १६।६४)

स्वर्णटिक्कर—वराहभूमिके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम।

स्वर्णतीर्थ—कूर्मपुराणके अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

स्वर्णद (सं० त्रि०) १ सुवर्णदाता, स्वर्ण या सोना देनेवाला। २ सुवर्ण या सोना दान करनेवाला। शास्त्रमें लिखा है, कि सब दानोंमेंसे सुवर्णदान ही श्रेष्ठ है। सुवर्ण शब्द देखो। (पु०) ३ वृश्चिकाली, बरहंटी।

स्वर्णदी (सं० पु०) १ मन्दाकिनी, स्वर्णगङ्गा। २ वृश्चिकाली, बरहंटा। ३ सितगङ्गा। यह नदी कामाख्याके पूर्वमें तथा दिक्करवासिनीके प्रान्तदेशमें अवस्थित है। इस नदीमें स्नान कर ललितकान्ताख्या देवीकी पूजा और शम्भु आदिके दर्शन करनेसे उसका फिर पुनर्जन्म नहीं होता। (कालिकापु० ८२ अ०)

स्वर्णदीधिति (सं० पु०) अग्नि । (त्रिका०)

स्वर्णदुग्धा (सं० स्त्री०) स्वर्णक्षीरिका, सत्यानासी, भरभांड ।

स्वर्णद्रु (सं० पु०) स्वर्णः स्वर्णवर्णः द्रुः । आरग्वध वृक्ष, अमलतास ।

स्वर्णद्वीप (सं० पु० क्ली०) सुवर्णद्वीप ।

स्वर्णद्वीप—भविष्यखण्ड वर्णित बङ्गके अन्तर्गत वरद-मध्यस्थ एक प्राचीन ग्राम । यह इच्छामतीके निकट अवस्थित है । राजा बल्लालने ब्राह्मणोंको यह गाँव दिया था । (भविष्यब्र० खा० १६।३३)

स्वर्णधातु (सं० पु०) १ स्वर्णगैरिक, सोनागेरू । २ सुवर्ण, सोना ।

स्वर्णनसा—हिमवत्खण्ड वर्णित हिमालयमें प्रवाहित एक नदी ।

स्वर्णनाभ (सं० पु०) शालग्रामभेद ।

स्वर्णनिभ (सं० क्ली०) १ स्वर्णगैरिक, सोनागेरू । (त्रि०) २ स्वर्णसदृश, सोनेके समान ।

स्वर्णपक्ष (सं० पु०) स्वर्णवत् शोभौ पक्षौ यस्य । गरुड । इसके दोनों पक्ष सुवर्णवर्ण हैं, इसीसे इसका यह नाम पड़ा है । (त्रिका०)

स्वर्णपत्र (सं० क्ली०) पत्तल, सोनेका पत्ता या तबक ।

स्वर्णपत्रिका (सं० स्त्री०) सुवर्णमुखी, सोनामुखी ।

स्वर्णपत्री (सं० स्त्री०) स्वर्णपत्रिका देखो ।

स्वर्णपद्मा (सं० स्त्री०) स्वर्णगङ्गा, मन्दाकिनी । इस गंगामें सभी स्वर्णपद्म प्रस्फुटित होते हैं ।

स्वर्णपर्णी (सं० स्त्री०) पीली जीवन्ती ।

स्वर्णपर्पटी (सं० स्त्री०) वैद्यकमें एक प्रसिद्ध औषध जो सग्रहणी रोगके लिये सबसे अधिक गुणकारी मानी जाती है । इसके बनानेके लिये एक तोले सोनेको पहले आठ तोले पारेमें भलीभांति खरल करते हैं । और तब उसमें ८ तोला गन्धक मिला कर उसकी कज्जली तैयार करते हैं । इसके सेवनके समय रोगीको उतना अधिक दूध पिलाया जाता है जितना वह पी सकता है ।

स्वर्णपाटक (सं० पु०) टङ्कण, सोहागा । इसका दूसरा नाम 'स्वर्णपाचक' भी है ।

स्वर्णपारेवत (सं० क्ली०) बड़ा पारेवत फल ।

स्वर्णपुष्प (सं० पु०) १ आरग्वध, अमलतास । २ कोकड़, बबूल । ३ कपित्थ, कैथ । ४ चम्पक, चम्पा । चम्पा फूलसे यदि विष्णुकी पूजा की जाय तो अनन्त काल विष्णुलोकमें वास होता है । (पद्मपु० क्रिया० ६ अ०)

स्वर्णपुष्पध्वजा (सं० स्त्री०) स्वर्णालीवृक्ष, सोनालू ।

स्वर्णपुष्पा (सं० स्त्री०) १ लाङ्गली, कलिहारी । २ स्वर्णुली, सोनुली । ३ सातला नामका थूहर । ४ मेषशृङ्गी, मेढ़ासिंगी । ५ स्वर्णकेतकी ।

स्वर्णपुष्पी (सं० स्त्री०) १ आरग्वध, अमलतास । स्वर्ण केतकी, पीला केवड़ा । ३ सातला, थूहर ।

स्वर्णप्रस्थ (सं० पु०) जम्बूद्वीपके एक द्वीपका नाम । भागवतमें लिखा है, कि जम्बूद्वीपके मध्य स्वर्णप्रस्थ, चन्द्र, शुक्र आदि करके ८ उपद्वीप हैं । (भाग० ५।१६।२६)

स्वर्णफल (सं० क्ली०) धुस्तूरफल, धतूरा ।

स्वर्णफला (सं० स्त्री०) पीतरम्भा, चम्पा केला ।

स्वर्णबीज (सं० क्ली०) धुस्तूरबीज, धतूरेका बीया ।

स्वर्णवणिज् (सं० पु०) एक प्रकारकी वणिक्जाति । सुवर्णवणिक् देखो ।

स्वर्णभाज् (सं० पु०) सूर्य ।

स्वर्णभूमि (सं० स्त्री०) १ गुडत्वक, दारचीनी । २ वह स्थान जहां सब प्रकारके सुख हों, बहुत उत्तम भूमि ।

स्वर्णभूषण (सं० पु०) १ आरग्वध, अमलतास । स्वर्ण गैरिक, सोनागेरू । ३ सुवर्णनिर्मित अलङ्कार, सुवर्णालङ्कार ।

स्वर्णभृङ्गार (सं० पु०) १ स्वर्णभृङ्गराज, पीला भंगरा । २ स्वर्णकलस । ३ मार्कण्डेयपुराणके अनुसार एक जनपदका नाम ।

स्वर्णमण्डल (सं० क्ली०) स्वर्णभूषण ।

स्वर्णमहा (सं० स्त्री०) नदीविशेष । स्वर्णसहा देखो ।

स्वर्णमाक्षिक (सं० पु० क्ली०) स्वनामख्यात उपधातुविशेष, सोनामक्खी नामका उपधातु । पर्याय—तापीज, मधुमाक्षिक, तीक्ष्ण, माक्षिकधातु, मधुधातु । इस धातुमें स्वर्णका कुछ अंश मिला है, इसीसे इस धातुका स्वर्णमाक्षिक नाम हुआ है । इसमें स्वर्णका गुण भी कुछ रहता है, इससे औषध प्रस्तुतकालमें स्वर्णके अभावमें इस उप धातुका प्रयोग किया जा सकता है । स्वर्णमाक्षिक स्वर्ण-

की अपेक्षा अप्रधान है। अतएव स्वर्णसे इसमें गुण भी कम है। स्वर्णमाक्षिकमें केवल स्वर्णका ही गुण है, सो नहीं, इसमें अन्यान्य द्रव्योंका मेल रहनेसे यह अन्यान्य गुणविशिष्ट भी है। स्वर्णमाक्षिक तीन भाग, सैन्धव लवण एक भाग, इसे जंबीरी नीबूके रसमें लोहेके बरतनमें रखनेसे जब लाल हो जाय तब यह शोधित होता है।

शोधित स्वर्णमाक्षिकका गुण—मधुर, तिक्तरस, शुक्र वर्द्धक, रसायन, चक्षुका हितकारक तथा वस्तिवेदना, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, विष, उदर, अर्शः, शोथ, क्षय, पाण्डु और त्रिदोषनाशक। अशोधित स्वर्णमाक्षिक मन्दाग्निकारक, अत्यन्त बलनाशक, विष्टम्भी, चक्षुरोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणरोगोत्पादक। (भावप्र०)

स्वर्णमातृ (सं० स्त्री०) १ महाजम्बू, बड़ा जामुन। २ स्वर्णमाला, हिमालयकी एक छोटी नदीका नाम।

स्वर्णमुद्रा (सं० स्त्री०) सोनेका सिक्का, अशरफी।

स्वर्णयूथिका (सं० स्त्री०) स्वर्णवर्णा यूथी, पीली जूही।

स्वर्णयूथी (सं० स्त्री०) स्वर्णयूथिका देखो।

स्वर्णरम्भा (सं० स्त्री०) स्वर्णकदली, चंपा केला।

स्वर्णरीति (सं० स्त्री०) राजपीतल, सोनापीतल।

स्वर्णरेखा (सं० स्त्री०) १ सुवर्णरेखा नदी। २ सुवर्णकी रेखा। ३ विद्याधरी विशेष। (हितोप०)

स्वर्णरेतस् (सं० पु०) सूर्य।

स्वर्णरोमन् (सं० पु०) एक सूर्यवंशी राजाका नाम। ये राजा महारोमाके पुत्र और ह्रस्वरोमाके पिता थे।

स्वर्णलता (सं० स्त्री०) १ स्वर्णवर्णा लता। २ ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी। ३ स्वर्णजीवन्ती, पीली जीवन्ती।

स्वर्णलाभ (सं० स्त्री०) स्वर्णपुष्पी, सोनुली नामक क्षुप।

स्वर्णवज्र (सं० क्ली०) लौहविशेष, एक प्रकारका लोहा। वज्र शब्द देखो।

स्वर्णवर्ण (सं० पु०) १ कर्णगुग्गुलु, कणगुग्गुल। २ हरिताल, हरताल। ३ स्वर्णगैरिक, सोनागेरू। ४ दारुहरिद्रा, दारुहल्दी। (त्रि०) ५ सुवर्णके समान वर्णविशिष्ट।

स्वर्णवर्णभाज् (सं० स्त्री०) पुष्पलताविशेष।

स्वर्णवर्णा (सं० स्त्री०) १ हरिद्रा, हल्दी। २ दारुहरिद्रा, दारुहल्दी। ३ स्वर्णके समान स्वर्णविशिष्टा।

स्वर्णवर्णाङ्क (सं० पु०) कङ्कुष्ठ, मुरदा संग।

स्वर्णवर्णाभा (सं० स्त्री०) जीवन्ती।

स्वर्णवल्कल (सं० पु०) श्योनाक, सोनापाढ़ा, अरलू।

स्वर्णवल्ली (सं० स्त्री०) स्वर्णलता। गुण—शिरःपीड़ा, त्रिदोषनाशक और दुग्धदायक। (भावप्र०) २ स्वर्णुली नामक क्षुप। ३ स्वर्ण जीवन्ती, पीली जीवंती।

स्वर्णविद्या (सं० स्त्री०) स्वर्ण प्रस्तुत करनेकी विद्या।

स्वर्णविन्दु (सं० पु०) १ विष्णु। २ स्वर्णकणिका। (क्ली०) ३ तीर्थविशेष।

स्वर्णशिख (सं० पु०) स्वर्णचूड़ या नीलकंठ।

स्वर्णशृङ्गी (सं० पु०) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम जो सुमेरुपर्वतके उत्तर ओर माना जाता है।

स्वर्णशेफालिका (सं० स्त्री०) १ आरग्वध, अमलतास। २ संभालू, पीला सिन्धुआर।

स्वर्णसिन्दूर (सं० क्ली०) रससिन्दूरविशेष। प्रस्तुत प्रणाली—विशुद्ध पारद ८ तोला, विशुद्ध गन्धक ८ तोला तथा स्वर्ण २ तोला वटाङ्कुररसमें एक पहर तथा घृतकुमारीके रसमें एक पहर मर्द्दन कर काचके बोतलमें रख कर वालुकायन्त्रमें पाक करे। पाक हो कर ठंढा होने पर उस बोतलके बीचसे पीला रस निकाले। अनुपान विशेषसे इस औषधका सेवन करनेसे सब प्रकारके रोग प्रशमित होते हैं। इसे मकरध्वज भी कहा जा सकता है।

स्वर्णसू (सं० त्रि०) स्वर्णप्रसविनी, स्वर्णप्रसवकारिणी।

स्वर्णहालि (सं० पु०) आरग्वध, अमलतास।

स्वर्णाकर (सं० पु०) सोनेका आकर, सोनेकी खान।

स्वर्णाङ्ग (सं० पु०) आरग्वध, अमलतास।

स्वर्णाद्रि—उड़ीसा प्रदेशका भुवनेश्वर नामक तीर्थ जो स्वर्णाचल भी कहलाता है। भुवनेश्वर देखो।

स्वर्णाभ (सं० क्ली०) १ हरिताल, हरताल। (त्रि०) २ स्वर्णके समान आभाविशिष्ट।

स्वर्णाभा (सं० स्त्री०) पीतपुष्प, पीली जूही।

स्वर्णारि (सं० पु०) १ गन्धक। २ शीषक, सीसा नामक धातु।

स्वर्णालु (सं० पु०) स्वर्णुली, सोनुली।

स्वर्णाह्वा (सं० स्त्री०) स्वर्णक्षीरी, सत्यानाशी, भरभांड़।

स्वर्णिका (सं० स्त्री०) धनिया।

स्वर्णुली (सं० स्त्री०) एक प्रकारका क्षुप जो सोनुली कहलाता है। इसे हेमपुष्पी और स्वर्णपुष्पी भी कहते हैं। वैद्यकके अनुसार यह कटु, शीतल, कषाय और व्रणनाशक होता है। (राजनि०)

स्वर्णेतृ (सं० पु०) स्वर्गाधिपति, स्वर्गके नेता।

स्वर्णोपधातु (सं० पु०) सोनामक्खी नामक उपधातु।

स्वर्दृश (सं० त्रि०) सूर्यदर्शी, सर्वत्र द्रष्टा।

स्वर्धामन् (सं० पु०) १ स्वर्गीय दीप्तिविशिष्ट। (क्ली०) २ स्वर्गीय दीप्ति।

स्वर्धुनी (सं० स्त्री०) गङ्गा।

स्वर्नगरी (सं० स्त्री०) स्वर्गकी पुरी, अमरावती।

स्वर्नदी (सं० स्त्री०) स्वर्गङ्गा।

स्वर्पति (सं० पु०) १ स्वर्गके स्वामी, इन्द्र। २ सर्वोके स्वामी।

स्वर्भानव (सं० पु०) गोमेदकमणि, राहुरत्न।

स्वर्भानु (सं० पु०) स्वर् भा (दाभाभ्यानुः। उण् ३।३२) इति नु। १ राहु। २ सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम। (भाग० १०।६१।११)

स्वर्भानुसूदन (सं० पु०) सूर्य।

स्वर्य (सं० त्रि०) १ स्तुत्य, स्तुतिके योग्य। (ऋक् १।१२१।१३) स्वर्-यत्। २ स्वर् सम्बन्धी।

स्वर्यात् (सं० त्रि०) स्वर्गगमनकारी, स्वर्ग जानेवाला।

स्वर्याण (सं० क्ली०) स्वर्गगमन, स्वर्ग प्रयाण।

स्वर्यात (सं० त्रि०) मृत, स्वर्गगत।

स्वर्युं (सं० त्रि०) अपना स्वर्ग सुखकामी।

स्वर्लीन (सं० क्ली०) जनपदभेद।

स्वर्लोक (सं० पु०) स्वर्ग।

स्वर्वधू (सं० स्त्री०) १ अप्सरा। २ स्वर्गीय स्त्रीमात्र।

स्वर्वत् (सं० त्रि०) १ सुखविशिष्ट, सुखी। (ऋक् १।१६५।७) २ शोभनगमनयुक्त। (ऋक् १।१२६।८) (क्ली०) ३ साममेद। (लाट्या० ७।७।२५)

स्वर्वापी (सं० स्त्री०) गङ्गा। (हेम)

स्वर्विद् (सं० त्रि०) १ जो यज्ञ आदि करके स्वर्ग जाता हो। (ऋक् १।९६।४) २ सूर्य या स्वर्गवेत्ता।

स्वर्वीथि (सं० स्त्री०) वत्सर नामक नृपतिकी पत्नी। इसका दूसरा नाम 'सुवीथि' भी था।

स्वर्वेश्या (सं० स्त्री०) उर्वशी आदि वेश्या।

स्वर्वैद्य (सं० पु०) स्वर्गके वैद्य, अश्विनीकुमार। पर्याय—अश्विनेय। (अमर)

स्वर्षा (सं० त्रि०) सुष्ठु धनदाता। (ऋक् १।६१।३)

स्वर्हण (सं० क्ली०) सु-अर्ह-ल्युट्। सुष्ठु पूजा।

स्वर्हत्तम (सं० त्रि०) स्वर्हत्-तमप्। अतिशय पूज्य, पूज्यतम।

स्वलङ्कृत (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे अलंकृत, उत्तम रूपसे शोभित।

स्वलदा (सं० स्त्री०) रौद्राश्वकी माता। (हरिवं०)

स्वलिङ्ग (सं० पु०) १ स्वीय लिङ्ग, अपना चिह्न। (त्रि०) २ स्वय चिह्नविशिष्ट।

स्वलीन (सं० पु०) एक दानवका नाम। अग्निपुराणके स्वर्गङ्गावतरण नामाध्यायमें इस दानवका विवरण लिखा है।

स्वल्प (सं० त्रि०) १ अल्पल्प, बहुत थोड़ा। (पु०) २ नखी या हट्टविलासिनी नामक गन्धद्रव्य।

स्वल्पक (सं० त्रि०) स्वल्प स्वार्थे कन्। स्वल्प देखो।

स्वल्पकन्द (सं० पु०) कसेरु। (वैद्यकनि०)

स्वल्पकस्तुरीभैरवरस (सं० पु०) सन्निपातज्वरोक्त औषध विशेष। (भैषज्यरत्ना०)

स्वल्पकाष्ठ (सं० पु० क्ली०) श्वेतालु, साख आलू।

स्वल्पकेशर (सं० पु०) कचनार।

स्वल्पकेशिन् (सं० पु०) १ भूतकेश नामक पौधा। (त्रि०) २ अल्पल्पकेशविशिष्ट, जिसे बहुत कम बाल हों।

स्वल्पकेशरिन् (सं० पु०) कोविदार।

स्वल्पक्षुधावतीगुडिका—अम्लपित्त रोगाधिकारोक्त गुड़-कौषधविशेष। (भैषज्यरत्ना०)

स्वल्पखदिरवटिका (सं० स्त्री०) मुखरोगाधिकारोक्त वटिकाविशेष।

स्वल्पगङ्गाधरचूर्ण (सं० क्ली०) ग्रहणीरोगाधिकारोक्त चूर्णौषधिविशेष।

स्वल्पग्रहणीकवाटरस (सं० पु०) ग्रहणी और अतिसार रोगको औषध।

स्वल्पघण्टा (सं० स्त्री०) आरण्य शणवृक्ष, वनसनई।

स्वल्पचक्रसन्धान (सं० क्ली०) ग्रहणीरोगाधिकारोक्त औषधविशेष।
स्वल्पचटक (सं० पु०) क्षुद्र चटकपक्षी, गौरैया नामक पक्षी।
स्वल्पचन्द्रोदयमकरध्वज (सं० पु०) वाजीकरण औषधविशेष। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पचैतसघृत (सं० क्ली०) उन्माद रोगको एक उत्कृष्ट औषध।
स्वल्पजम्बूक (सं० पु०) क्षुद्र जम्बूक, लोमड़ी।
स्वल्पतरु (सं० पु०) केसुक, केसुआ।
स्वल्पदृश् (सं० त्रि०) अतिशय अल्पदर्शी, बहुत कम देखनेवाला।
स्वल्पधात्रीघृत (सं० क्लो०) सोमरोगकी एक उत्कृष्ट औषध। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पनख (सं० पु०) नखी या हट्टविलासिनी नामक गन्धद्रव्य।
स्वल्पनायिकाचूर्ण (सं० क्ली०) ग्रहणी रोगकी एक उत्कृष्ट चूर्णौषध।
स्वल्पपञ्चगव्यघृत (सं० क्ली०) अपस्माररोगकी एक उत्कृष्ट घृतौषध। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पपत्रक (सं० पु०) गौरशाक, पहाड़ी महुआ।
स्वल्पपर्णी (सं० स्त्री०) मेदा नामकी अष्टवर्गीय ओषधि।
स्वल्पफला (सं० स्त्री०) हवुषाभेद, हाऊबेर।
स्वल्पभार्गादिपाचन (सं० क्ली०) ज्वररोगका एक उत्कृष्ट पाचन औषध। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पमाषतैल (सं० क्ली०) वातव्याधि रोगको एक उत्कृष्ट तैलौषध।
स्वल्पमृगाङ्क (सं० पु०) क्षयरोगकी एक उत्कृष्ट औषध।
स्वल्पयव (सं० क्ली०) जौ नामक अन्न।
स्वल्परूपा (सं० स्त्री०) अरण्य शणवृक्ष, वातव्याधि रोगकी एक उत्कृष्ट औषध।
स्वल्परसोनपिण्ड (सं० पु०) वातव्याधिरोगकी एक उत्कृष्ट औषध।
स्वल्पलवङ्गाद्यचूर्ण (सं० क्ली०) ग्रहणीरोगकी एक उत्कृष्ट चूर्णौषध।
स्वल्पवडवानलरस (सं० पु०) उदररोगकी एक उत्कृष्ट औषध। (रसेन्द्रसारस०)
स्वल्पवर्त्तुल (सं० पु०) मटर।
स्वल्पवल्कला (सं० स्त्री०) तेजोवती, तेजबल।
स्वल्पविटप (सं० पु०) केसुक, केसुआ।
स्वल्पविरामज्वर (सं० पु०) ठहर ठहर कर थोड़ी देरके लिये उतर कर फिर आनेवाला ज्वर।
स्वल्पविष्णुतैल (सं० क्ली०) वातव्याधिरोगकी एक तैलौषध।
स्वल्पशम्बरा (सं० स्त्री०) शणपुष्पी, वनसनई।
स्वल्पशरीर (सं० त्रि०) क्षुद्रकाय, छोटे कदका।
स्वल्पशूरणमोदक (सं० पु०) अर्शरोगकी एक उत्कृष्ट मोदकौषधि। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पशृगाल (सं० पु०) रोहितक मृग, वनरोहा।
स्वल्पसंघातवीर्य (सं० पु०) पक्षिविशेष, सरमुनिया नामकी एक पक्षी।
स्वल्पाग्निमुखचूर्ण (सं० क्ली०) अग्निमान्द्य रोगकी एक उत्कृष्ट चूर्णौषध। (भैषज्यरत्ना०)
स्वल्पेच्छ (सं० त्रि०) अतिशय अल्पाभिलाषयुक्त।
स्ववग्रह (सं० क्ली०) अनावृष्टि, वर्षाका न होना।
स्ववर्णरेखा (सं० स्त्री०) एक नदी जो छोटानागपुरसे निकल कर बंगालकी खाड़ीमें गिरती है।
स्ववश (सं० पु०) १ जो अपने वशमें हो। २ जिसका अपने आप पर अधिकार हो, जो अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखता हो, जितेन्द्रिय।
स्ववशिनी (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वैदिक छन्द।
स्ववश्य (सं० त्रि०) जो अपनेही वशमें हो, अपने पर अधिकार रखनेवाला।
स्ववस् (सं० त्रि०) धनवान्, अमीर।
स्ववहा (सं० स्त्री०) त्रिवृत, निसोथ।
स्ववासिन् (सं० क्ली०) सामभेद।
स्ववासिनी (सं० स्त्री०) वह कन्या अथवा विवाहिता स्त्री जो अपने पिताके घर रहती है।
स्वविग्रह (सं० पु०) अपना शरीर।
स्वविद्युत् (सं० त्रि०) स्वयं प्रकाशशील।
स्वबीज (सं० त्रि०) १ जो अपना बीज या कारण आप ही हो। (पु०) २ आत्मा।

स्ववृक्ति (स० स्त्री०) स्वयकृत दोषवर्ज्जित स्तुति ।

स्ववृज (सं० त्रि०) स्वयछेत्ता । (ऋक् १०।३८।५)

स्ववृत्ति (सं० स्त्री०) अपनी वृत्ति । आपत्कालको छोड़ ब्राह्मणादि सभी वर्ण ही स्ववृत्ति अर्थात् अपनी अपनी वृत्ति द्वारा जीविका चलाते हैं ।

स्ववृष्टि (सं० पु०) स्वभूतवृष्टिविशिष्ट । (ऋक् १।५२।५)

स्वशिरस् (स० क्ली०) अपना सिर, अपना मस्तक ।

स्वशोचिस् (सं० त्रि०) अपनी दीप्ति ।

स्वश्चन्द्र (सं० त्रि०) स्वकीय आह्लादक तेजोयुक्त ।

स्वश्चूडामणि (सं० पु०) स्वर्गकी चूडामणिके समान अवस्थित ।

स्वश्लाघा (स० स्त्री०) आत्मश्लाघा ।

स्वश्व (सं० त्रि०) शोभन अश्वयुक्त ।

स्वश्वयु (स० त्रि०) कल्याणविशिष्ट, अश्वाभिलाषी ।

स्वश्व्य (सं० त्रि०) शोभन अश्वयुक्त ।

स्वःशिरस् (सं० क्ली०) स्वर्गका ऊर्द्ध्वभाग ।

स्वस्त्र (सं० त्रि०) शोभन अस्त्रविशिष्ट ।

स्वसंविद् (सं० त्रि०) १ जिसका ज्ञान इन्द्रियोंसे न हो, अगोचर । (स्त्री०) २ अपनी प्रज्ञा ।

स्वसंवृत (सं० त्रि०) अपने द्वारा रक्षित ।

स्वसंवेदन (सं० क्ली०) अपना अनुभव ।

स्वसंवेद्य (सं० त्रि०) जिसका अनुभव वही कर सकता हो जिस पर वह बीती हो, केवल अपने ही अनुभव होने योग्य ।

स्वसमुत्थ (सं० त्रि०) स्वाभाविक । (मार्क० पु ४६।४१)

स्वसम्भव (सं० त्रि०) आत्मसम्भव, जो अपनेसे उत्पन्न हो ।

स्वसम्भूत (सं० त्रि०) जो आपसे आप उत्पन्न हो ।

स्वसर (सं० क्ली०) १ गृह, मकान, घर । (निघण्टु ३।४) २ अहः, दिन । (ऋक् १।३।८)

स्वसर्व (सं० क्ली०) सर्वस्व ।

स्वसा (स० स्त्री०) भगिनी, बहिन । यह शब्द ऋकारान्त है, किन्तु रामायण और महाभारतमें इस शब्दका आकारान्त पाठ भी देखा जाता है ।

स्वसिच् (सं० त्रि०) विश्वाभिषेका । (शुक्लयजु: १०।१६)

स्वसित (सं० त्रि०) अतिशय कृष्णवर्ण, घोर काला ।

स्वसिद्ध (सं० त्रि०) स्वयंसिद्ध, जो अपने ही सिद्ध हो ।

स्वसुर (हिं० पु०) ससुर देखो ।

स्वसुराल (हिं० स्त्री०) ससुराल देखो ।

स्वसृ (सं० स्त्री०) सु-अस (सुञ्ज्यसेऋन् । उण् २।६७) इति ऋन् आदेशश्च । भगिनी, बहिन । (मनु २।५०)

स्वसृत् (स० त्रि०) शत्रुके प्रति स्वयं गमनकारी ।

स्वसृत्व (सं० क्ली०) भगिनीका भाव या धर्म ।

स्वसेतु (सं० त्रि०) जगद्बन्धक स्वभूता रश्मिविशिष्ट ।

स्वस्तर (सं० पु०) निजस्थान, अपनी जगह ।

स्वस्ति (सं० अव्य०) सु-अस् । (सावसे: । उण् ४।१८०) इति ति, बहुलवचनात् न भूभावः । कल्याण हो, मङ्गल हो, आशीर्वाद । प्रायः दान लेने पर ब्राह्मण लोग 'स्वस्ति' कहते हैं, जिसका अभिप्राय होता है—दाताका कल्याण हो । व्याकरण मतानुसार इस शब्दके योगमें चतुर्थी विभक्ति होती है ।

"स्वाहाग्नये स्वधा पित्रे स्वस्ति धात्रे नमः सते ।"

(मुग्धबोध)

(स्त्री०) २ दानग्रहणमन्त्र । शास्त्रमें लिखा है, कि ब्राह्मणको यदि कोई वस्तु दान की जाय, तो उन्हें उचित है, कि वे सावित्रीका पाठ कर स्वस्ति बोल उसे ले लें और पीछे कामस्तुतिका पाठ करें । ३ कल्याण, मङ्गल । ४ पुराणानुसार ब्रह्माकी तीन स्त्रियोंमें से एक स्त्रीका नाम । ५ सुख ।

स्वस्तिक (सं० पु० क्ली०) १ वह घर जिसमें पश्चिम ओर एक दालान और पूर्व ओर दो दालान हो । ऐसे घरमें पूर्व ओरका दरवाजा उत्तम नहीं है । कहते हैं, कि ऐसे घरमें रहनेसे गृहस्थकी स्वस्ति अर्थात् कल्याण होता है । २ सुनिषण्ण शाक, सुसना नामका साग । ३ लहसुन । ४ पिष्टकविकार । ५ पूर्णकुम्भादि । ६ योगाङ्ग आसनविशेष । हठयोगके अभ्यासकालमें स्वस्तिक आदि आसन पर बैठ कर योगशिक्षा करनी होती है । ७ एक प्रकारका मङ्गल द्रव्य जो विवाह आदिके समय चावलको पीस कर और पानीमें मिला कर तैयार किया जाता है और जिसमें देवताओंका निवास माना जाता है । यह त्रिकोणाकार होता है । ८ एक प्रकारका यन्त्र जो शरीरमें गड़े हुए शल्य आदिको बाहर निकालनेके काममें आता

है। यह अठारह अंगुल तक लंबा और यथाक्रम सिंह, व्याघ्र, वृक, तरक्षु, ऋक्ष, द्वीपी, मार्जार, ऐर्वारुक, काक, कङ्क, शृगाल, मृग, कुरर, चास, भास, शश, धातुलक, चिल्ल, श्येन, गृध्र, क्रौञ्च, भृङ्गराज, अञ्जलिकर्ण, अवभञ्जन और नन्दिमुख आदिके आकारके अनुसार १८ प्रकारका होता है, शल्य नाना प्रकारसे विद्ध होता है, इससे उस शल्यको निकालनेमें भी नाना प्रकारके यन्त्रकी आवश्यकता होती है। अतएव भिन्न भिन्न मुखका वह यन्त्र बनाना होता है। ६ व्रणबन्धनविशेष, फोड़े आदि पर बाँधा जानेवाला बन्धन या पट्टी जिसका आकार तिकोना होता था। १० चतुष्पथ, चौमुहानी। ११ गृहभेद। १२ रक्तालु, रतालु। १३ मूली। १४ साँपके फन परकी नीली रेखा। १५ प्राचीन कालका एक प्रकारका मङ्गल चिह्न। यह शुभ अवसरों पर माङ्गलिक द्रव्योंसे अङ्कित किया जाता था और कई आकार तथा प्रकारका होता था। प्रायः किसी मङ्गल कार्यके समय गणेशपूजन करने से पहले यह चिह्न बनाया जाता है। आजकल लोग इसे भ्रमसे गणेश ही कहा करते हैं। १६ शरीरके विशिष्ट अंगोंमें होनेवाला इसी प्रकारका एक चिह्न। यह सामुद्रिकके अनुसार बहुत शुभ माना जाता है। कहते हैं, कि रामचन्द्रजीके चरणमें इस आकारका चिह्न था। जैनी लोग जिन देवताके २४ लक्षणोंमेंसे इसे भी एक मानते हैं। १७ प्राचीन कालकी एक प्रकारकी बढ़िया नाव जो प्रायः राजाओंकी सवारीके काममें आती थी।

स्वस्तिकयन्त्र (सं० क्ली०) प्राचीन कालका एक प्रकारका यन्त्र। इसका व्यवहार शरीरमें घँसे हुए शल्यको निकालनेके लिये होता था।

स्वस्तिकर (सं० पु०) प्राचीन कालके एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

स्वस्तिकर्मन् (सं० क्ली०) मङ्गलजनक कर्म।

स्वस्तिका (सं० स्त्री०) चमेली।

स्वस्तिकाह्वय (सं० पु०) चौलाईका साग।

स्वस्तिकृत् (सं० पु०) १ शिव। (त्रि०) २ कल्याणकारी, मङ्गल करनेवाला।

स्वस्तिग (सं० त्रि०) सुखसे गमन करनेवाला।

स्वस्तिगव्यूति (सं० त्रि०) विनाशरहित मार्गविशिष्ट, भयवर्जित यवसोदक मार्ग।

स्वस्तिद (सं० पु०) १ शिव। (त्रि०) २ मंगल या कल्याण देने अथवा करनेवाला।

स्वस्तिदा (सं० त्रि०) मङ्गल या कल्याण देने अथवा करनेवाला।

स्वस्तिपुर (सं० क्ली०) महाभारत वनपर्वके अनुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

स्वस्तिमत् (सं० त्रि०) १ अविनाशी। (ऋक् १।६१।५) २ मङ्गलयुक्त।

स्वस्तिमती (सं० स्त्री०) कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम। (भारत)

स्वस्तिमुख (सं० पु०) १ लेख। २ ब्राह्मण। ३ स्तुतिपाठक, वह जो राजाओंकी स्तुति करता हो।

स्वस्तिवाच (सं० स्त्री०) स्वस्तिवाक्य, शुभ हो ऐसा वाक्य।

स्वस्तिवाचक (सं० त्रि०) १ वह जो मङ्गलसूचक बात कहता हो। २ वह जो आशीर्वाद देता हो।

स्वस्तिवाचन (सं० क्ली०) कर्मकाण्डके अनुसार मङ्गल कार्योंके आरम्भमें किया जानेवाला एक प्रकारका धार्मिक कृत्य। इसमें गणेशका पूजन होता है, कलश स्थापित किया जाता है और कुछ मङ्गलसूचक मन्त्रोंका पाठ किया जाता है। स्वस्तिवाचन किये विना संकल्प करना नहीं चाहिये।

स्वस्तिवाद (सं० त्रि०) आशीर्वाद।

स्वस्तिवाहन (सं० त्रि०) सुखग्राहक।

स्वस्तीन (सं० पु०) स्वस्त्ययन देखो।

स्वस्त्ययन (सं० क्ली०) मङ्गलजनक दैवकर्म। जो कर्म करनेसे अशुभ विनष्ट हो कर शुभ होता है उसे स्वस्त्ययन कहते हैं। शास्त्रमें लिखा है, कि पीड़ा या ग्रहदोषादि उपस्थित होने पर उसकी शान्तिके लिये स्वस्त्ययन करना होता है। स्वस्त्ययन करनेसे ग्रहदोष आदिकी शान्ति होती है।

ग्रहोंके उद्देशसे दान, होम और पूजा कर स्वस्त्ययन करना आवश्यक है। अवस्थानुसार अर्थात् शठता न करके स्वानुरूप पञ्चाङ्ग या एकाङ्ग स्वस्त्ययन करे। पञ्चाङ्गस्वस्त्ययनस्थलमें मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत देवीमाहात्म्य चण्डीपाठ पार्थिव शिवलिङ्गपूजा,

नारायणको तुलसी, दुर्गानाम जप और मधुसूदनमन्त्र का जप किया जाता है। पूर्वोक्त पाँच प्रकारके कर्म अनुष्ठित होते हैं, इसीसे इसको पञ्चाङ्गस्वस्त्ययन कहते हैं। यह पञ्चाङ्ग स्वस्त्ययन करनेमें यदि असमर्थ हों तो एकाङ्ग अर्थात् उक्त पाँचमेंसे कोई एक कर्म किया जा सकता है। स्वस्त्ययनके मध्य शतावृत्ति या सहस्रावृत्ति चण्डीपाठ विशेष प्रशस्त और आशु फलप्रद है। वैदिक शतरुद्रीपाठ भी प्रधान स्वस्त्ययन है। स्वस्त्ययन करानेमें ज्योतिषोक्त शुभदिन देख कर करना होता है। शुभकर्मके लिये जो सब तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण आदि निन्दित कहे गये हैं, स्वस्त्ययनमें भी उन्हें निषिद्ध जानने होंगे। जिस कर्मके लिये स्वस्त्ययन करना होता है, संकल्प करनेके समय उस कर्ममें शुभ हो, ऐसी कामना कर संकल्प करे।

स्वस्थ (सं० त्रि०) १ जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो, जिसे किसी प्रकारका रोग न हो। वैद्यक शास्त्रमें लिखा है, कि जब जीवके मल, मूत्र, समस्त दोष और धातुकी समता रहती है अन्न और जलमें अच्छी अभिरुचि होती है, जरा भी अरुचि नहीं रहती, शरीरकी कान्ति नहीं बिगडती, खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह परिपाक कर सारभाग रसरूपमें परिणत होता है, नींद खूब आती है, शरीरमें कुछ भी क्लान्ति मालूम नहीं होती, विषयग्रहण करनेमें इन्द्रियां उपयुक्त रूपसे समर्थ होती हैं, तब उसे स्वस्थ कहते हैं।

जो द्रव्य स्वप्रमाणमें स्थित दोष, धातु और मलसमूहके समता संस्थापनके हेतुस्वरूप है तथा जो स्वस्थताके अनुवर्त्तनकारी है वही स्वस्थके लिये हितजनक है।

२ जिसका चित्त ठिकाने हो, सावधान।

स्वस्थचित्त (सं० त्रि०) जिसका चित्त ठिकाने हो, शान्तचित्त।

स्वस्थवृत्त (सं० क्ली०) स्वस्थका आचरण, वह विधि जिसका आचरण करनेसे शरीर सुस्थ रहता है।

स्वास्थ्य देखो।

स्वस्थान (सं० क्ली०) अपना स्थान।

स्वस्थारिष्ट (सं० पु०) घोडेका मृत्युचिह्न।

स्वस्रवन्ति (सं० स्त्री०) स्वःसरित्, गंगा।

स्वस्रीय (सं० पु०) स्वसृ (स्वसुश्छः। पा ४।१।१४३) इति छ। भागिनेय, बहनका लडका, भानजा।

स्वस्रीया (सं० स्त्री०) भागिनेयी, बहनकी लडकी, भानजी।

स्वांग (हिं० पु०) स्वाङ्ग देखो।

स्वांस (हिं० स्त्री०) सांस देखो।

स्वांसा (हिं० पु०) १ वह सोना जिसमें तांबेका खोट मिला हो, तांबेका खोट मिला हुआ सोना। २ सांस देखो।

स्वःसरित् (सं० स्त्री०) गङ्गा। (भाग० ३।४।३६)

स्वःसामन् (सं० क्ली०) साममेद।

स्वःसिन्धु (सं० स्त्री०) स्वःसरित्, गंगा।

स्वःसुन्दरी (सं० स्त्री०) अप्सरा।

स्वःस्यन्दन (सं० पु०) इन्द्रका रथ।

स्वहोतृ (सं० पु०) स्वयं होता, स्वयं होम करनेवाला।

स्वह्न (सं० पु०) १ सुदिन। २ दक्षिणाके गर्भसे उत्पन्न विष्णुका पुत्र।

स्वाकार (सं० पु०) स्वाभाविक रूप, अपना आकार।

स्वाक्त (सं० क्ली०) सुन्दर अंजन।

स्वाक्षपाद (सं० पु०) नैयायिक।

स्वाक्षर (सं० पु०) हस्ताक्षर, दस्तखत।

स्वाक्षरित (सं० त्रि०) अपने हस्ताक्षरसे युक्त, अपना हस्ताक्षर किया हुआ, अपना दस्तखत किया हुआ।

स्वाख्यात (सं० त्रि०) उत्तम रूपसे कथित, अच्छी तरह कहा हुआ।

स्वागत (सं० क्ली०) १ किसी अतिथि या विशिष्ट पुरुषके पधारने पर उसका सादर अभिनन्दन करना, अभ्यर्थना, अगवानी। (पु०) २ एक बुद्धका नाम। (त्रि०) ३ सुष्ठु आगत।

स्वागतकारिणीसभा (सं० स्त्री०) स्थानीय लोगोंकी वह सभा जो उस स्थानमें निमन्त्रित किसी विराट सभा या सम्मेलन आदिका प्रबन्ध करने और आनेवाले प्रतिनिधियोंका स्वागत, निवासस्थान, भोजन आदिकी व्यवस्था करनेके लिये सङ्गठित हो।

स्वागतकारिन् (सं० त्रि०) स्वागत या अभ्यर्थना करनेवाला, पेशवाई करनेवाला।

स्वागतपतिका (सं० स्त्री०) अवस्थानुसार नायिकाके दश भेदोंमेंसे एक, वह नायिका जो अपने पतिके परदेशसे लौटनेसे प्रसन्न हो, आगत-पतिका।

स्वागतप्रिया (सं० पु०) वह नायक जो अपनी पत्नीके परदेशसे लौटनेसे उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो।

स्वागता (सं० स्त्री०) छन्दोविशेष। इस छन्दके प्रति चरणमें ११ अक्षर होते हैं जिनमेंसे १,३,७ और १०वां अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं।

स्वागतिक (सं० त्रि०) स्वागत करनेवाला, आनेवालेकी अभ्यर्थना या सत्कार करनेवाला।

स्वागम (सं० पु०) स्वागत, अभिनन्दन।

स्वाग्रयण (सं० त्रि०) श्रेष्ठ स्थानप्रापक यज्ञ।

स्वाङ्किक (सं० पु०) मार्दङ्किक, ढोल या मृदंग बजानेवाला। (शब्दरत्ना०)

स्वाङ्ग (सं० क्ली०) १ कृत्रिम या बनावटी वेश जो अपना वास्तविक रूप छिपाने या दूसरेका रूप बनानेके लिये धारण किया जाय, भेस, रूप। २ मजाक खेल या तमाशा, नकल। ३ धोखा देनेको बनाया हुआ रूप। ४ अपना अंग।

स्वाङ्गि (सं० पु०) स्वङ्गका गोत्रापत्य।

स्वाङ्गी (सं० पु०) वह जो स्वांग सज कर जीविका उपार्जन करता है, नकल करनेवाला, नक्काल। २ अनेक रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया। (त्रि०) ३ रूप धारण करनेवाला।

स्वाच्छन्द्य (सं० क्ली०) स्वच्छन्दता।

स्वाजन्य (सं० क्ली०) स्वजनता देखो।

स्वाजीव (सं० त्रि०) जहां कृषिवाणिज्य आदि जीविकाका साधन सुलभ हो।

स्वाजीव्य (सं० त्रि०) स्वाजीव देखो।

स्वाञ्जलयक (सं० क्ली०) उत्तम रूपसे अञ्जलिबद्ध हो कर रहना।

स्वाढ्यङ्करण (सं० क्ली०) अतिशय समृद्धिसाधन, ऋद्धिसम्पादन।

स्वातत (सं० त्रि०) सब जगह फैला हुआ।

स्वातन्त्र (सं० क्ली०) स्वातन्त्रस्य भावः अण्। स्वातन्त्र्य, स्वतन्त्रता।

स्वातन्त्र्य (सं० क्ली०) स्वतन्त्रका भाव या धर्म, स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, आजादी।

स्वाति (सं० स्त्री०) १ सूर्यकी एक पत्नी। २ अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे पन्द्रहवां नक्षत्र। यह नक्षत्र शुभ है और कुंकुमसदृश अरुणतर एक तारकायुक्त है। इसका अधिष्ठात्री देवता वायु है। यह विद्रुम और प्रवाल सदृश लाल होता है। इस नक्षत्रमें जन्म लेनेसे जातक कन्दर्प जैसा रूपवान् स्त्रियोंका अत्यन्त प्रिय, प्रसन्न, धीसम्पन्न और सुखी होता है। इस नक्षत्रमें तुलाराशि, देवगण और क्षत्रियवर्ण होता है। नामकरण स्थल में इस नक्षत्रके चार पादमें चार अक्षर होंगे। शतपदचक्र देखो। अष्टोत्तरीके मतसे स्वाति नक्षत्रमें जन्म होनेसे बुधकी दशा होती है। इस नक्षत्रका दशाभोगकाल चार वर्ष तीन मास है। दशा शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

कहते हैं, कि चातक इसी नक्षत्रमें बरसनेवाला पानी पीता है और इसी नक्षत्रमें वर्षा होनेसे सीपमें मोती, बांसमें वंशलोचन और सांपमें विष उत्पन्न होता है। (त्रि०) ३ स्वाति नक्षत्रमें उत्पन्न।

स्वातिकारी (सं० स्त्री०) कृषिकी देवी।

स्वातिपन्थ (सं० पु०) आकाशगंगा।

स्वातियोग (सं० पु०) ज्योतिषके अनुसार आषाढ़के शुक्ल पक्षमें स्वाति नक्षत्रका चन्द्रमाके साथ योग।

स्वातिसुत (सं० पु०) मुक्ता, मोती।

स्वातिसुवन (हिं० पु०) मुक्ता, मोती।

स्वात्मवध (सं० पु०) आत्महत्या।

स्वात्माराम (सं० त्रि०) ब्रह्मज्ञान लाभ हेतु अपनेमें ही परमानन्दलाभकारी, जो अपनेमें ही परमानन्द उपभोग करते हैं। आत्माराम देखो।

स्वात्माराम योगीन्द्र—एक विख्यात हठयोगी। इन्होंने हठप्रदीपिका और वर्णदीपिकातन्त्र लिखा है। इन्होंने गोरक्षनाथका नामोल्लेख किया है।

स्वाद (सं० पु०) स्वाद घञ्। १ किसी पदार्थके खाने या पीनेसे रसनेन्द्रियको होनेवाला अनुभव, ज़ायका। २ रसानुभूति, आनन्द, मजा। ३ इच्छा, चाह, कामना। ४ मीठा रस।

स्वादक (सं० पु०) वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है, स्वादुविवेकी। राजा महाराजोंको पाकशालाओंमें प्रायः ऐसे कर्मचारी होते हैं जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर पहले चख लेते हैं कि पदार्थ उत्तम बना

है या नहीं। ऐसे ही लोग स्वादक कहलाते हैं।
स्वादन (सं० क्ली०) १ स्वाद लेना, चखना। २ रस ग्रहण, आनन्द लेना, मजा लेना।
स्वादित (सं० त्रि०) स्वाद क्त। १ रस लिया हुआ, चखा हुआ। २ स्वादयुक्त, जायकेदार। ३ प्रीत, प्रसन्न।
स्वादिष्ट (सं० त्रि०) जो खानेमें बहुत अच्छा जान पड़े।
स्वादिष्ठ (सं० त्रि०) स्वादिष्ट देखो।
स्वादिमन् (सं० पु०) स्वादका भाव या धर्म, स्वादिष्ट, वस्तु।
स्वादी (सं० त्रि०) १ स्वाद चखनेवाला। २ रसिक, मजा लेनेवाला।
स्वादु (सं० पु०) स्वद आस्वादने (कृवापाजीति। उण् १।१) इति उण्। १ मधुर रस, मीठा रस। २ गुड़। (त्रिका०) ३ जीवकौषधि। गुण—कटु, कषाय, उष्ण सुगन्ध-युक्त तथा वातनाशक। (राजनि०) ४ मधुकवृक्ष, महुआ। ५ पियाल, चिरौंजी। ६ दाडिमवृक्ष, अनार। ७ मातुलुङ्ग, कमला नीबू। ८ काशतृण, कास। ९ बदर, बेर। (क्ली०) १० दुग्ध, दूध। ११ सैन्धव लवण, सेंधा नमक। (स्त्री०) १२ द्राक्षा, दाख। (त्रि०) १३ मधुर, मिष्ट, मीठा। १४ मनोज्ञ, सुन्दर। १५ मजेदार, जायकेदार।
स्वादुकण्टक (सं० पु०) १ विकङ्कतवृक्ष। २ गोक्षुरक, गोखरू।
स्वादुकन्द (सं० पु०) १ भूमिकुष्माण्ड, भुंई कुम्हड़ा। २ श्वेत पिण्डालु। ३ केमुक, कोबी, केउंआ।
स्वादुकन्दक (सं० पु०) केमुक, कोबी, केउंआ।
स्वादुकन्दा (सं० स्त्री०) विदारीकंद।
स्वादुकर (सं० पु०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी वर्ण-सङ्कर जाति। इसका उल्लेख महाभारतमें है।
स्वादुका (सं० स्त्री०) नागदन्ती।
स्वादुकोषातकी (सं० स्त्री०) मधुर कोषातकी, घीआ नरोई।
स्वादुखण्ड (सं० पु०) १ गुड़। २ मधुर भाग।
स्वादुगन्ध (सं० पु०) रक्तशोभाञ्जन, लाल सहिंजन।
स्वादुगन्धच्छदा (सं० स्त्री०) कृष्ण तुलसी, काली तुलसी।
स्वादुगन्धा (सं० स्त्री०) १ भूमिकुष्माण्ड, भूंई कुम्हड़ा। २ रक्त शोभाञ्जन, लाल सहिंजन।

स्वादुगन्धि (सं० स्त्री०) रक्त शिग्रु, लाल सहिंजन।
स्वादुतिक्त (सं० क्ली०) पीलु फल, अखरोट।
स्वादुतिक्तफल (सं० पु०) ऐरावती वृक्ष, नीबूका पेड़।
स्वादुधन्वन् (सं० पु०) कामदेव।
स्वादुपटोलिका (सं० स्त्री०) परवलकी लता।
स्वादुपत्र (सं० पु०) परवलकी लता।
स्वादुपर्णी (सं० स्त्री०) दुग्धिका, दूधी।
स्वादुपाकफला (सं० स्त्री०) काकमाचिका, मकोय।
स्वादुपाका (सं० स्त्री०) काकमाची, मकोय।
स्वादुपिण्डा (सं० स्त्री०) पिण्डखर्जूरिका, पिण्ड खजूर।
स्वादुपुष्प (सं० पु०) कृष्ण कटभी, काली कटभी।
स्वादुपुष्पिका (सं० स्त्री०) दुग्धिका, दूधी।
स्वादुपुष्पी (सं० स्त्री०) कटभीका पेड़।
स्वादुफल (सं० क्ली०) १ बदरीफल, बेर। २ धन्व वृक्ष, धामिन।
स्वादुफला (सं० स्त्री०) १ कोलिवृक्ष, बेर। २ खर्जूरी वृक्ष, खजूरका पेड़। ३ कदली, केला। ४ कपिलद्राक्षा, मुनक्का।
स्वादुबीज (सं० पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपल।
स्वादुमज्जन् (सं० पु०) पर्वतपीलु, अखरोट।
स्वादुमस्तका (सं० क्ली०) खर्जूरी वृक्ष, खजूरका पेड़।
स्वादुमांसी (सं० स्त्री०) काकोली नामक अष्टवर्गीय औषधि।
स्वादुमाषी (सं० स्त्री०) माषपर्णी, मषवन।
स्वादुमूल (सं० क्ली०) गर्जर, गाजर।
स्वादुरसा (सं० स्त्री०) १ काकोली। २ मदिरा, शराब। ३ आम्रातक फल, अमड़ा। ४ शतावरी, सतावर। ५ द्राक्षा, दाख। ६ मूर्वा, मरोड़फली। (त्रि०) ७ स्वादु-रसविशिष्ट।
स्वादुल (सं० पु०) क्षीरमूर्वा। (वैद्यकनि०)
स्वादुलता (सं० स्त्री०) विदारीकन्द।
स्वादुलुङ्गि (सं० स्त्री०) १ मधुकर्कटिका, संतरा। २ स्वादुमातुलुङ्ग, मीठा नीबू।
स्वादुवारि (सं० पु०) स्वादु जलविशिष्ट समुद्र।
स्वादुशुण्ठी (सं० स्त्री०) श्वेतकिणिही, सफेद कटभी।
स्वादुशुद्ध (सं० क्ली०) सैन्धव लवण, सेंधा नमक।

स्वादुषंसद् (सं० त्रि०) शत्रुओंका अन्न खानेवाला।
स्वादुसिञ्चितिकाफल (सं० क्ली०) सेव।
स्वादूदक (सं० पु०) मीठा जलवाला समुद्र।
स्वाद्मन् (सं० पु०) स्वादयिता स्वाद चखनेवाला।
स्वाद्य (सं० त्रि०) स्वाद लेने योग्य, चखनेके लायक।
स्वाद्वगुरु (सं० पु०) एक प्रकारकी अगरकी लकडी। गुण—उष्ण, आमवातहर और तुवर। (राजनि०)
स्वाद्वन्न (सं० क्ली०) स्वादुरसयुक्त अन्न, यह अन्न खानेसे सौमनस्य, बल, पुष्टि, उत्साह और आयुकी वृद्धि होती है।
स्वाद्वम्ल (सं० पु०) १ दाडिमवृक्ष, अनारका पेड। २ नागरङ्गवृक्ष, नारंगीका पेड़। ३ कदम्बवृक्ष।
स्वाद्वी (सं० स्त्री०) १ द्राक्षा, दाख। २ कपिलद्राक्षा, मुनक्का। ३ चिर्भटिका, फूट। ४ खर्ज्जुर वृक्ष, खजूरका पेड़।
स्वाधिष्ठान (सं० क्ली०) हठयोगमें माने हुए कुण्डलिनीके ऊपर पडनेवाले छः चक्रोंमेंसे दूसरा चक्र। इसका स्थान शिश्नके मूलमें, रंग पीला और देवता ब्रह्मा माने गये हैं। इसके दलोंकी संख्या छः और अक्षर व से ल तक हैं। षट्चक्र देखो।
स्वाधी (सं० त्रि०) सब समय ध्यानविशिष्ट।
स्वाधीन (सं० त्रि०) १ जो अपने सिवा और किसीके अधीन न हो, स्वतन्त्र, आजाद। २ किसीका बन्धन न माननेवाला, अपने इच्छानुसार चलनेवाला। गरुड़पुराणके १५ अध्यायमें लिखा है, कि जो स्वाधीन है, उसका जीवन सफल और जो पराधीन है, वह जीवित रहने पर भी मृत है। (पु०) समर्पण, हवाला, सुपुर्द।
स्वाधीनता (सं० स्त्री०) स्वाधीन होनेका भाव, स्वतन्त्रता, आजादी।
स्वाधीनपतिका (सं० स्त्री०) वह नायिका जिसका पति उसके वशमें हो, पतिको वशीभूत करनेवाली नायिका। यह नायिका पांच प्रकारकी है—जैसे, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा, परकीया और सामान्यामुग्धा। रसमञ्जरीमें इसका विस्तृत विवरण लिखा है।
स्वाधीनभर्त्तृका (सं० स्त्री०) स्वाधीनपतिका नायिका। कान्त रतिगुणसे आकृष्ट हो जिसका सामीप्य परित्याग नहीं करता तथा जो विचित्रविभ्रमासक्ता है, उसे स्वाधीनभर्त्तृका कहते हैं। (साहित्यद० ३।११३)
स्वाधीनी (सं० स्त्री०) स्वाधीनता, स्वतन्त्रता, आजादी।
स्वाध्याय (सं० पु०) आवृत्तिपूर्वक वेदाध्ययन, जप, जाप। सम्यक्‌रूपसे शास्त्रमात्रके अध्ययन करनेको ही स्वाध्याय कहते हैं।

किसी किसी तन्त्रमें लिखा है, कि स्व शब्दमें स्वाधिष्ठान-चक्र और अध्याय शब्दमें कुलकुण्डलिनीका साक्षात् दर्शन, अपनी देहके षट्चक्रोंमेंसे स्वाधिष्ठान चक्रमें कुलकुण्डलिनिका साक्षात् दर्शन कर सकनेपर वह स्वाध्याय होगा।

मन्वादिशास्त्रमें लिखा है, कि द्विजातिको विशेषतः ब्राह्मणको प्रतिदिन स्वाध्याय कर्त्तव्य है।

विप्र गुरुके पास वेदाध्ययन कर पीछे मृत्यु पर्यन्त प्रतिदिन स्वाध्याय करे। एकमात्र स्वाध्याय द्वारा ही उसे श्रेयोलाभ होगा। विप्रके लिये तपस्यादि कुछ भी करने नहीं होंगे। स्वाध्याय रूप तपस्या ही उसकी श्रेष्ठ तपस्या है। मनु, याज्ञवल्क्य आदि संहितामें इस स्वाध्यायका विषय विशदरूपमें लिखा है. विस्तार हो जानेके भयसे यहां कुलका उल्लेख नहीं किया गया। पातञ्जलदर्शनमें स्वाध्याय, तपस्या और ईश्वरप्रणिधान क्रियायोगमें माना गया है।

२ किसी विषयका अनुशीलन, अध्ययन। ३ वेद।
स्वाध्यायन (सं० पु०) १ प्रवरभेद। (क्ली०) वेदाध्ययन।
स्वाध्यायवत् (सं० त्रि०) स्वाध्यायविशिष्ट, वेदपाठ-करनेवाला।
स्वाध्यायिन् (सं० पु०) १ पत्तनवणिक्। (त्रिका०) (त्रि०) २ वेदपाठक।
स्वाध्वरिक (सं० त्रि०) सुयाज्ञिक।
स्वान (सं० पु०) स्वन शब्दे (स्वनहसोर्वा। पा ३।३।६२) इति घञ्। शब्द, आवाज, घडघडाहट।
स्वानिन् (सं० त्रि०) शब्दविशिष्ट, शब्दयुक्त।
स्वानुभव (सं० पु०) आत्मानुभव, अपना अनुभव।
स्वानुरूप (सं० त्रि०) अपने अनुरूप, अपने समान।
स्वान्त (सं० क्ली०) स्वन-क्त। (क्षुब्धस्वान्तध्वान्तेति।

पा ७।२।१८) इति अनिट् कत्वं निपातितञ्च। १ अन्तः-करण, मन। २ गह्वर, गुफा। ३ अपना राज्य या प्रदेश (पु० क्ली०) अपना अन्त या मृत्यु।

स्वान्तज (सं० पु०) १ मनोज, कामदेव। (लि०) २ प्रेम। ३ गह्वरजात, गुफासे उत्पन्न।

स्वान्तवत् (सं० त्रि०) स्वान्तविशिष्ट, मनोयुक्त।

स्वान्तस्थ (सं० त्रि०) मनःस्थित या अपने अंतरमें स्थित।

स्वाप (सं० पु०) स्वप-घञ्। १ निद्रा, नींद। २ स्वप्न, ख्वाब। ३ अज्ञान। ४ शयन। ५ निस्पन्दता।

स्वापक (सं० त्रि०) निद्राकारक, नींद लानेवाला।

स्वापद (सं० पु०) श्वापद। (हलायुध)

स्वापन (सं० पु०) १ प्राचीन कालका एक प्रकारका अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किये जाते थे। २ नींद लानेकी औषध। (त्रि०) ३ निद्राकारक, नींद लानेवाला।

स्वापि (सं० पु०) शोभनप्रापक।

स्वापिक (सं० क्ली०) उत्सवभेद।

स्वापिशि (सं० पु०) स्वपिशके गोत्रापत्य।

स्वाप्त (सं० त्रि०) सु आप-क्त। उत्तमरूपसे प्राप्त, अच्छी तरह पाया हुआ।

स्वाप्न (सं० त्रि०) स्वप्न-अण्। स्वप्नकल्पित।

स्वाप्यय (सं० पु०) स्वप्न, ख्वाब।

स्वाब (अं० पु०) कपड़े या सनकी बुहारी या झाड़ू जिससे जहाजकी डेक आदि साफ किये जाते हैं।

स्वाभाव (सं० पु०) अपना अभाव।

स्वाभाविक (सं० त्रि०) स्वभाव-ठक्। १ स्वभावसिद्ध, प्राकृतिक, नैसर्गिक। २ जो स्वभावसे उत्पन्न हुआ हो, जो आप ही आप हो। (पु०) ३ व्याधिप्रकारभेद। वैद्यकशास्त्रमें लिखा है, कि रोग चार प्रकारका होता है, स्वाभाविक, आगन्तुक, मानसिक और कायिक। इनमेंसे जो स्वभावतः उत्पन्न होता है उसे स्वाभाविक रोग कहते हैं, जैसे—क्षुधा, पिपासा, निद्रा, जरा, और मृत्यु। ये सब आपे आप होते हैं किसी भी कारणसे उत्पन्न नहीं होते इसीसे इन्हें स्वाभाविक कहते हैं। क्षुधादि होनेसे शरीर क्लिष्ट होता है, इसीसे यह स्वाभाविक रोग कहलाता है। भोजन करनेसे यह रोग निवृत्त होता है। जन्मकालसे जो सब रोग होते हैं, वे ही स्वाभाविक या सहज रोग हैं। जैसे जन्मान्धता आदि। चिकित्सादि द्वारा इस रोगका कोई प्रतिकार नहीं होता।

स्वाभाविकी (सं० त्रि०) स्वभावसिद्ध, प्राकृतिक।

स्वाभाव्य (सं० त्रि०) १ स्वयं उत्पन्न होनेवाला, आपही आप होनेवाला। (क्ली०) २ स्वभावता, स्वभावका भाव।

स्वाभीष्ट (सं० त्रि०) अपना अभीष्ट।

स्वाभू (सं० पु०) सुन्दर भवन। (ऋक् १।१२।६)

स्वामिकार्त्तिक (सं० पु०) १ शिवके पुत्र कार्त्तिकेय, देवसेनापति। २ छः आघात और दश मात्राओंका ताल।

स्वामिकार्य (सं० क्ली०) प्रभु और राजाका कार्य।

स्वामिकुमार (सं० पु०) शिवके पुत्र कार्त्तिकेयका एक नाम, स्वामिकार्त्तिकेय।

स्वामिगिरी—स्वामिनिलय नामसे ख्यात। स्वामिनिलय देखो। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें स्वामिगिरीमाहात्म्य वर्णित है।

स्वामिजङ्घिन् (सं० पु०) परशुराम।

स्वामिता (सं० स्त्री०) स्वामी होनेका भाव, प्रभुत्व, मालिकपन।

स्वामिदत्त—सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन संस्कृत कवि।

स्वामिन् (सं० पु०) १ पति, शोहर। स्त्रीके ऊपर स्वामीका सम्पूर्ण क्षमता है, इसलिए वे उसके स्वामी हैं। २ वह जिसके आश्रयमें जीवननिर्वाह होता हो, वह जो जीविका चलाता हो, प्रभु, अन्नदाता। अग्निपुराणमें लिखा है, कि अपने प्रभुके लिये जान देने पर उसको स्वर्ग तथा नरमेधयज्ञका फल होता है। ३ घरका कर्त्ता, घरका प्रधान पुरुष। ४ भगवान्, ईश्वर। ५ नरपति, राजा। ६ कार्त्तिकेय। ७ शिव। ८ विष्णु। ९ साधु, सन्यासी और धर्माचार्योंकी उपाधि। १० गरुड। ११ सेनाका नायक। १२ गत उत्सर्पिणीके ११वें अर्हत्का नाम। १३ वात्स्यायन मुनिका एक नाम।

स्वामिनारायण—एक प्रसिद्ध ब्रह्मचारी और शास्त्रविशारद। मनियर विलियम साहबने इनकी शिक्षापत्री प्रकाश की है।

स्वामिनिलय—दाक्षिणात्यका एक पर्वत। यह सुब्रह्मण्यके निकट और कुम्भकोणसे तीन कोस पश्चिममें अवस्थित है।

स्वामिनी (सं० स्त्री०) स्वत्वाधिकारिणी, मालिकिन। २ गृहिणी, घरकी मालिकिन। ३ श्रीराधिका। ४ अपने स्वामी या प्रभुकी पत्नी।

स्वामिपाल (सं० पु०) गोमहिषादिका अधिकारी और प्रतिपालक।

स्वामिमिश्र—शृङ्गाररसखेस्व नामक संस्कृत भाणके रचयिता।

स्वामिशास्त्रिन्—सर्वमन्त्रोपयुक्तपरिभाषाके प्रणेता।

स्वामी (सं० पु०) स्वामिन देखो।

स्वाम्य (सं० क्ली०) स्वामी होनेका भाव, स्वामित्व, मालिकपन। (मनु ५।१५२)

स्वाम्युपकारक (सं० पु०) १ अश्व, घोड़ा। (त्रि०) २ प्रभुहितकारक।

स्वायत्त (सं० त्रि०) जो अपने आयत्त या अधीन हो, जिस पर अपना ही अधिकार हो।

स्वायत्तशासन (सं० पु०) वह शासन या हुकूमत जो अपने आयत्त या अधिकारमें हो, स्थानिक स्वराज्य।

स्वायम्भुव (सं० पु०) प्रथम मनु। चौदह मनुओंमें स्वायम्भुव प्रथम मनु हैं। स्वयम्भु ब्रह्मासे इन मनुका जन्म हुआ है, इसीसे इनका स्वायम्भुव नाम पड़ा है। श्रीमद्भागवतमें लिखा है, कि भगवान् ब्रह्माने इस चराचर जगत्‌की सृष्टि करके सृष्टिवृद्धिके लिये अपने दक्षिणाङ्गसे इस मनुको और वामाङ्गसे शतरूपा नाम्नी स्त्रीकी सृष्टि की। इस प्रकार दोनोंकी सृष्टि करके उन्होंने शतरूपाको स्वायम्भुवकी पत्नी निर्देश कर दिया। इनके प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र और आकूति, देवहूति तथा प्रसूति नामकी तीन कन्यायें हुईं। स्वायम्भुव मन्वन्तरमें यज्ञ अवतार और वे ही इन्द्र हुए। यम आदि इस मन्वन्तरमें देवता तथा मरीचि आदि सप्तर्षि थे।

उक्त मनुके पुत्र पिताके समान गुणशाली हैं। उनके पुत्र और पौत्रादिसे यह सारी पृथिवी परिव्याप्त है। (मार्क पु० ५०-५३ अ०) मनु शब्दमें विशेष विवरण देखो।

स्वायम्भुवमनुपितृ (सं० पु०) स्वायम्भुव मनुके पिता ब्रह्मा।

स्वायम्भुवी (सं० स्त्री०) ब्राह्मी।

स्वायम्भू (सं० पुत्र) स्वायम्भुव देखो।

स्वायव (सं० पु०) स्वायुके गोत्रापत्य।

स्वायस (सं० त्रि०) शोभन अयःसारभूत।

स्वायु (सं० त्रि०) शोभन आयुर्युक्त।

स्वायुस् (सं० त्रि०) शोभन आयुः।

स्वार (सं० पु०) १ मेघध्वनि, बादलकी गड़गड़ाहट। (ऋक् ३।१।१७) २ घोड़ेके खराटेका शब्द। ३ स्वरसम्बन्धी।

स्वारथी (सं० त्रि०) स्वार्थी देखो।

स्वारब्ध (सं० त्रि०) अपने द्वारा आरब्ध, अपनेसे किया हुआ।

स्वारम्भक (सं० त्रि०) विकृत, अपनेसे किया हुआ।

स्वाराज् (सं० पु०) इन्द्र।

स्वाराज्य (सं० क्ली०) १ वह शासनप्रबंध जिसका संचालन सूत्र अपने ही देशके लोगोंके हाथोंमें हो, वह शासन या राज्य जिस पर किसी बाहरी शक्तिका नियन्त्रण न हो, स्वाधीन राज्य। २ स्वर्गका राज्य, स्वर्गलोक।

स्वाराट् (सं० पु०) स्वर्गके राजा इन्द्र।

स्वाराम (सं० त्रि०) आत्माराम।

स्वारायण (सं० त्रि०) स्वरके गोत्रापत्य।

स्वारूढ (सं० त्रि०) अपने द्वारा आरूढ।

स्वारूपा (सं० स्त्री०) स्थानभेद। स्वरूपा देखो।

स्वारोचिष (सं० पु०) स्वरोचिषके पुत्र, द्वितीय मनु। प्रथम स्वायम्भुव मन्वन्तरके बाद द्वितीय स्वारोचिष मनुका अधिकार होता है। मनुमें लिखा है, कि स्वायम्भुव मनुके वंशमें स्वारोचिष आदि ६ मनुओंका जन्म हुआ। ये ही मनु स्वायम्भुव मनुकी तरह चराचर जगत्‌की सृष्टि तथा पालन कर अपने मन्वन्तरकाल तक भोग करते हैं।

मार्कण्डेयपुराणमें लिखा है, कि इस मनुका नाम द्युतिमान् है, स्वरोचिषके पुत्र होनेके कारण ये स्वारोचिष नामसे विख्यात हुए। स्वरोचिष शब्द देखो।

श्रीमद्भागवतमें लिखा है, कि यह मनु अग्निके पुत्र हैं। इस मन्वन्तरमें अवतार विभु, रोचन, इन्द्र, तुषितादि देवगण तथा ऊर्ज्जस्तम्भादि सप्तर्षि, द्युमत्, सुषेण और रोचिष्मत् आदि मनुके पुत्र हैं। ये सभी पृथ्वीपरिपालक थे। (मत्स्यपु० ९ अ०) मनु शब्द देखो।

स्वार्जित (सं० त्रि०) स्वोपार्जित, अपना कमाया हुआ।

स्वार्थ (सं० पु०) १ अपना उद्देश्य, अपना मतलब। २ अपना लाभ, अपनी भलाई। ३ अपना धन, अपनी वस्तु। (त्रि०) ४ स्वार्थक, सफल।

स्वार्थता (सं० स्त्री०) स्वार्थका भाव या धर्म, खुद-गर्जी।

स्वार्थत्याग (सं० पु०) अपने स्वार्थ या हितको निछावर करना, किसी भले कामके लिये अपने हित या लाभका विचार छोड़ना।

स्वार्थत्यागी (सं० त्रि०) जो अपने स्वार्थ या हितको निछावर कर दे, दूसरेके भलेके लिये अपने हित या लाभका विचार न रखनेवाला।

स्वार्थपण्डित (सं० त्रि०) अपना मतलब साधनेमें चतुर, बड़ा भारी स्वार्थी या खुदगरज।

स्वार्थपर (सं० त्रि०) जो केवल अपना ही स्वार्थ या मतलब देखे, अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला, स्वार्थी, खुदगरज।

स्वार्थपरता (सं० स्त्री०) स्वार्थपर होनेका भाव, खुदगरजी।

स्वार्थपरायण (सं० त्रि०) स्वार्थपर, स्वार्थी, खुदगरज।

स्वार्थपरायणता (सं० स्त्री०) स्वार्थपरायण होनेका भाव, स्वार्थपरता, खुदगरजी।

स्वार्थसाधक (सं० त्रि०) अपना मतलब साधनेवाला, अपना काम निकालनेवाला, खुदगरज।

स्वार्थसाधन (सं० क्ली०) अपना प्रयोजन सिद्ध करना, अपना मतलब साधना।

स्वार्थान्ध (सं० त्रि०) जो अपने स्वार्थके वश अन्धा हो जाता हो, अपने हित या लाभके सामने और किसी बातका विचार न करनेवाला।

स्वार्थिक (सं० त्रि०) १ पाणिन्युक्त स्वार्थविहित प्रत्यय। व्याकरणमें जो सब प्रत्यय स्वार्थमें होता है उसे स्वार्थिक कहते हैं। (पा ५।३।१) २ अपने स्वार्थ द्वारा सम्पादित। ३ स्वार्थपर।

स्वार्थी (सं० त्रि०) अपना ही मतलब देखनेवाला, मतलब, खुदगरज।

स्वालक्षण (सं० त्रि०) १ अपनी दुर्दशा, जो स्वयं भी न देख सकता है। (क्ली०) २ अपना अलक्षण, अमङ्गल।

स्वालक्षण्य (सं० क्ली०) व्यभिचारशीलत्व।

स्वालक्ष्य (सं० त्रि०) स्वयं भी अलक्ष्य।

स्वावमानन (सं० क्ली०) अपनी अवमानना।

स्वावश्य (सं० क्ली०) स्ववशता, आत्मवशता।

स्वावृज् (सं० त्रि०) स्वावर्जन। (ऋक् १०।१३।३)

स्वावेश (सं० त्रि०) शोभन निवास, उत्तम निवासयुक्त।

स्वाशित (सं० त्रि०) सुन्दर रूपसे भुक्त अतएव तृप्त।

स्वाशिर (सं० क्ली०) सामभेद।

स्वाशिस् (सं० त्रि०) आशीर्व्वादयुक्त।

स्वाश्रय (सं० पु०) १ अपना आश्रय। (त्रि०) २ अपने आश्रययुक्त।

स्वास् (सं० त्रि०) शोभन मुखविशिष्ट, सुन्दर मुंहवाला।

स्वासस्थ (सं० त्रि०) सुखकर आसन पर अवस्थित।

स्वासा (हिं० स्त्री०) श्वास, सांस।

स्वासीन (सं० त्रि०) सुन्दर रूपसे आसीन, सुखो-पविष्ट।

स्वास्तीर्ण (सं० त्रि०) सुन्दररूपसे आस्तीर्ण।

स्वास्थ्य (सं० क्ली०) नीरोग या स्वस्थ होनेकी अवस्था, नीरोगता, तंदुरुस्ती, यथोपयुक्त बलवर्णादिसम्पन्न नीरोग शरीरमें निर्दिष्ट आयुष्कालके उपभोगका नाम स्वास्थ्य है। जो स्वस्थवृत्त अर्थात् वैद्यकोक्त विधिका सम्यक् रूपसे अनुष्ठान करते हैं, वही नीरोग रह कर सौ वर्ष तक जीते हैं। २ सन्तोष। (हेम)

स्वास्थ्यकर (सं० त्रि०) स्वस्थ करनेवाला, तंदुरुस्त करनेवाला।

स्वाहुत (सं० त्रि०) १ अपनेसे आहृत। २ विशेष रूप-से आहृत।

स्वाहा (सं० अव्य०) १ एक शब्द या मन्त्र जिसका प्रयोग देवताओंको हवि देनेके समय किया जाता है। पर्याय—श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वधा। (अमर) अग्निमें देवताओंके उद्देशसे होम करनेमें इस मंत्रसे आहुति देनी होती है। देवगण अग्निमुखसे भोजन करते हैं। 'इन्द्राय स्वाहा' इस मन्त्रसे होम करनेमें इन्द्र उसे ग्रहण करते हैं, इस प्रकार देवता मात्र ही 'स्वाहा' इस मन्त्रसे हविर्ग्रहण करते हैं।

(स्त्री०) २ बौद्धशक्तिविशेष। पर्याय—तारा, महाश्री, ओङ्कारा, श्री, मनोरमा, तारिणी, जया, अनन्ता, शिवा, लोकेश्वरात्मजा, खदूरवासिनी, भद्रा, वैश्या, नीलसरस्वती, शङ्खिनी, महातारा, वसुधारा, धनदा, त्रिलोचना, लोचनास्या। (त्रिका०) व्याकरणके मतसे इस शब्दके योगमें चतुर्थी विभक्ति होती है। ३ अग्निकी पत्नीका नाम। श्रीमद्भागवतके मतानुसार ये दक्ष की कन्या हैं। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें लिखा है, कि एक समय ब्राह्मणक्षत्रियादि सभी जातियां यज्ञमें देवोद्देशसे हविः प्रदान करती थीं, परन्तु देवताओंको याज्ञिकदत्त अपना अपना भाग नहीं मिलता था। इस पर वे लोग बड़े दुःखित हुए और पितामहसे जा कर बोले, कि भोजन नहीं मिलनेके कारण वे भारी क्लेश पा रहे हैं। ब्रह्माने देवताओंके वाक्य सुन कर ध्यान द्वारा हरिकी आराधना की और हरिके आज्ञानुसार प्रकृतिकी पूजा ठान दी। अनन्तर सर्वशक्तिस्वरूपिणी प्रकृति देवी दाहिकाशक्तिरूपमें अग्निभार्या स्वाहा नामसे विख्यात हुई। देवीने कुछ मुसकुराती हुई कहा, 'ब्रह्मन्! जो इच्छा हो, वर मांगो।' ब्रह्मा बोले, 'शक्ति देवि! आप अग्निदेवकी दाहिका शक्ति और प्रिया स्वाहा हैं। अग्नि सर्वभुक् होने पर भी विना आपकी सहायताके कोई वस्तु भस्म नहीं कर सकते, इसलिये जो व्यक्ति मन्त्रके अन्तमें आपका नाम उच्चारण करके देवताओंके उद्देशसे हविर्दान करेंगे उसे देवगण पायेंगे, यही वर मुझे दीजिये।' स्वाहा देवीने यही वर दिया।

अनन्तर स्वाहा देवी भगवान् श्रीकृष्णको पानेके लिये घोर तपस्या करने लगी। श्रीकृष्णने बहुत दिनोंसे तप करनेके कारण कृशाङ्गी अनङ्गवशीभूता स्वाहाका अभिप्राय जान कर उसे अपनी गोदमें उठाया और कहा, 'तुम द्वापरयुगमें अपने अंशसे नग्नजित् राजाकी कन्या नाग्नजिती नामसे विख्यात हो कर मुझे पतिरूपमें पाओगी। अभी कुछ दिनोंके लिये अग्निकी पत्नी हो कर रहो।' अनन्तर अग्निदेवने ब्रह्माके कहनेसे साम विधानानुसार स्वाहाका पाणिग्रहण किया। पीछे अग्निसे दक्षिण, गार्ह्यपत्य और आहवनीय ये तीन पुत्र हुए। मुनि, ऋषि, ब्राह्मण और क्षत्रिय आदि वर्ण स्वाहा शब्दका उच्चारण कर प्रतिदिन हविर्दान करने लगे, देवगण भी स्वाहा द्वारा उक्त हविः पा कर बड़े सन्तुष्ट हुए। (ब्रह्मवै०प्र० ४ अ०)

स्वाहाकरण (सं० क्ली०) स्वाहाकृति।

स्वाहाकार (सं० पु०) स्वाहाकृति देखो।

स्वाहाकृत् (सं० त्रि०) यज्ञकृत, यज्ञ करनेवाला।

स्वाहाकृति (सं० स्त्री०) हविमें दीयमान।

स्वाहाप्रसण (सं० पु०) देवता।

स्वाहापति (सं० पु०) स्वाहायाः पतिः। अग्नि।

स्वाहाप्रिय (सं० पु०) स्वाहायाः प्रियः। अग्नि।

स्वाहाभुज् (सं० पु०) देवता।

स्वाहार (सं० पु०) १ अपना आहार। (त्रि०) २ अपने आहारसे युक्त।

स्वाहार्ह (सं० त्रि०) स्वाहाके योग्य, हविः पानेके योग्य।

स्वाहावल्लभ (सं० पु०) स्वाहापति, अग्नि।

स्वाहाशन (सं० पु०) स्वाहाभुक् देवता। देवगण स्वाहा इस मन्त्रसे भोजन करते हैं।

स्वाहि (सं० पु०) वृजिनीवन्तके पुत्रका नाम।

स्वाहुत (सं० त्रि०) १ सुन्दर रूपसे अभिमुखमें हुत। (ऋक् १।४४।६) २ अपने द्वारा आहुत।

स्वाहेय (सं० पु०) कार्त्तिकेय।

स्वाह्य (सं० त्रि०) स्वाहा-सम्बन्धी।

स्वित् (सं० अव्य०) १ प्रश्न। २ वितर्क। (अमर) ३ पादपूरण।

स्विद्ध (सं० त्रि०) १ सुदीप्तास्य। २ सूर्यकिरण द्वारा सुदीप्त।

स्विन्न (सं० त्रि०) १ घर्मयुक्त, पसीने तर। २ पक्व, सीझा हुआ, उबला हुआ।

स्विषु (सं० त्रि०) शोभन बाणयुक्त।

स्विष्ट (सं० त्रि०) विशेषरूपसे इष्ट।

स्विष्टकृत् (सं० त्रि०) १ विशेष रूपसे इष्टकारक। (शुक्ल यजु० २।६) (पु०) २ होमविशेष।

स्विष्टि (सं० स्त्री०) शोभन यजन।

स्वीकरण (सं० क्ली०) १ अंगीकार करना, कबूल करना, अपनाना। २ पत्नीको ग्रहण करना, विवाह करना। ३ सम्मत होना, राजी होना, मानना।

स्वीकरणीय (सं० त्रि०) स्वीकार करनेके योग्य, माननेके लायक।

स्वीकर्त्तृ (सं० त्रि०) स्वीकार करनेवाला, मंजूर करनेवाला।

स्वीकार (सं० पु०) १ अंगीकार, अपनानेकी क्रिया, कबूल, मञ्जूर। २ प्रतिज्ञा, वचन, कौल। ३ प्रतिग्रह, ग्रहण, लेना। ४ वशीकरण।

स्वीकार्य (सं० त्रि०) स्वीकार करने योग्य, माननेके लायक।

स्वीकृत (सं० त्रि०) १ अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ, मंजूर। २ सम्मत। ३ परिगृहीत। ४ स्वायत्तीकृत।

स्वीकृति (सं० स्त्री०) स्व कृ-क्तिन्-च्वि। स्वीकार देखो।

स्वीय (सं० त्रि०) १ स्वकीय, अपना। (पु०) २ आत्मीय, अपने, आदमी रिश्तेदार।

स्वीया (सं० स्त्री०) नायिका विशेष। इसका लक्षण—स्वामीमें अनुरक्ता तथा पतिव्रता होनेकी चेष्टा, स्वामीकी शुश्रूषा, शीलरक्षा, सरलता और क्षमा। यह नायिका पहले तीन प्रकारकी है,—मुग्धा, मध्या और प्रगल्भा। अवस्था-भेदसे इनमेंसे फिर प्रत्येक नौ प्रकारकी है,—प्रोषितभर्तृका, खण्डिता, कलहान्तरिता, विप्रलब्धा, उत्कण्ठिता, वासकसज्जा, स्वाधीनपतिका, अभिसारिका और प्रवत्स्यत्पतिका। यह सब नायिका फिर उत्तम, मध्यम और अधम भेदसे १२८ प्रकारकी हैं। (रसमञ्जरी) विशेष विवरण नायिका शब्दमें देखो।

स्वृद्ध (सं० त्रि०) सुसमृद्ध, अतिसमृद्ध।

स्वेच्छा (सं० स्त्री०) अपनी इच्छा, अपनी मर्जी।

स्वेच्छाचार (सं० पु०) मनमाना काम करना, जो जीमें आवे वही करना।

स्वेच्छाचारिता (सं० स्त्री०) स्वेच्छाचारका भाव या धर्म, निरंकुशता।

स्वेच्छाचारिन् (सं० त्रि०) अपने इच्छानुसार चलनेवाला, मनमाना काम करनेवाला।

स्वेच्छामृत्यु (सं० पु०) १ भीष्म पितामह जो अपने इच्छानुसार मरे थे। (त्रि०) २ अपने इच्छानुसार मरनेवाला।

स्वेच्छासेवक (सं० पु०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतनके किसी कार्य्यमें अपनी इच्छासे योग दे, स्वाधीन सेवक।

स्वेतरङ्गी (हिं० स्त्री०) कीर्त्ति, यश।

स्वेद (सं० पु०) स्विद-घञ्। १ घर्म, पसीना। २ क्लेद, गीलापन। ३ वाष्प, भाप। ४ उष्म, गरमी। ५ ताप, स्वेदन। वैद्यकशास्त्रमें लिखा है—स्वेद चार प्रकारका होता है, तापस्वेद, उष्णस्वेद, उपनाहस्वेद और द्रव स्वेद। ये चारों प्रकारके स्वेद साधारणतः वायुनाशक होने भी इनमें कुछ विशेषता है, अर्थात् तापस्वेद और उष्णस्वेद कफनाशक, उपनाह स्वेद वायुनाशक और द्रव स्वेद पित्तनाशक है।

खाये हुए द्रव्यके परिपाक होने पर रोगीको वायुरहित स्थानमें रख स्वेदका प्रयोग करना होता है। स्वेदसिक्त व्यक्तिको स्वेदप्रदान करनेसे उसके धातुगत दोष द्रवीभूत हो कर कोष्ठके भीतर घुस जाते हैं जिससे विरेचन होता है। शरीरमें स्नेह प्रक्षण और शीतल वस्त्रादि द्वारा दोनों चक्षु आवृत कर स्वेदप्रदान करे। स्वेदप्रदानके बाद हृदयमें शीतल वस्तुका स्पर्श कराना होता है।

अजीर्णरोगी, मेहरोगी, क्षीणरोगी, तृष्णार्त्त, दुर्बल, क्षत, अतीसार, रक्त, पित्त, पाण्डु, उदर और मेदोरोगी तथा गर्भिणी स्त्रीको स्वेदप्रयोग न करे। क्योंकि इन्हें स्वेदप्रदान करनेसे रोग असाध्य होता अथवा शरीर एकदम विनष्ट हो जाता है। इनका रोग यदि एकान्त स्वेदसाध्य हो, तो अतिमन्द स्वेद देना होगा। हृदय, मुष्क और नेत्रप्रदेशमें भी मन्द स्वेद देना उचित है।

जो स्वेद व्याधिके उपयोगी, व्याधिग्रस्त व्यक्तिके उपयोगी और ऋतुविशेषके उपयोगी है, जो अति उष्ण और अति मृदु नहीं हैं, जो स्वेद उन सब रोगहर द्रव्य द्वारा कल्पित है और जो आमाशयादि स्वेदोपयुक्त स्थानमें दिया जाता है, वही स्वेद हितकर है। जो नित्य कषाय या मद्यपान करते हैं, उन्हें तथा विषरोगी, स्थूल व्यक्ति, क्षुधार्त्त, क्रुद्ध और शोकार्त्त इन्हें भी स्वेदप्रदान न करे।

इसके सिवा भावप्रकाशमें १३ प्रकारके स्वेदोंका उल्लेख है। यथा—सङ्करस्वेद, प्रस्तरस्वेद, नाडीस्वेद, परिषेकस्वेद, अवगाहनस्वेद, जेन्ताकस्वेद, अश्मघनस्वेद, कर्षुस्वेद, कुटीस्वेद, भूस्वेद, कुम्भीस्वेद, कूपस्वेद और होलाकस्वेद।

अग्निसम्बन्धयुक्त उक्त १३ प्रकारके स्वेदको छोड़ कर अग्निसम्पर्कशून्य और भी १० प्रकारके स्वेद हैं। यथा—व्यायाम, उष्णगृह, स्थूल वस्त्राच्छाम, क्षुधा, अधिक उष्ण मद्यादिपान, भय क्रोध, सलोम चर्मादि द्वारा बन्धन, युद्ध और आतप। ये १० प्रकारके स्वेद उष्णवीर्य हैं। इसके अतिरिक्त एकाङ्गगत, सर्वाङ्गगत, स्निग्ध और रूक्षभेदसे तीन प्रकारके द्वन्द्वस्वेद कहे गये हैं।

रोगीको पहले स्नेह प्रयोगसे स्निग्ध कर स्वेदप्रयोगके बाद उपयुक्त पथ्य देना होता है। स्वेद-प्रयोगके दिन व्यायाम निषिद्ध है।

स्वेदक (सं० पु०) १ अयस्कान्तभेद, कान्तलौह। (त्रि०) २ घर्मदायक, पसीना लानेवाला।

स्वेदचूषक (सं० पु०) शीतल वायु, ठण्ढी हवा।

स्वेदज (सं० त्रि०) स्वेदसे जो उत्पन्न होता है। दंश, मशक, यूक, मक्षिक और मत्कुण ये सब स्वेदज हैं।

मानवके स्वेदमलसे मक्षिकादिकी, नवमेघ-प्रसिक्त भूमिसे पिपीलिकादि, भाप, युद्ध, फल, समिध् आदिसे क्षुद्र कीट, काष्ठसे घूणकादि, शुक्रविकारसे पूतिका, शुष्क गोमयसे वृश्चिक, गो, महिष, मनुष्य और मत्स्यादि के अन्तःकुक्षिप्रदेशसे नाना प्रकारसे कृमि आदि स्वेदजोंकी उत्पत्ति होती है। (वह्निपु०)

स्वेदजल (सं० क्ली०) घर्म, पसीना।

स्वेदजशाक (सं० क्ली०) एक प्रकारका शाक। यह भूमि, गोबर, घास, लकड़ी आदिसे उत्पन्न होता है। इसका दूसरा नाम भूईफोड़ या भुइं छत्त भी है। गुण—शीतल, दोषकारक, पिच्छिल, गुरु, छर्दि अतिसार, ज्वर और श्लेष्मरोगनाशक। (भावप्र०)

स्वेदन (सं० क्ली०) स्विद्-ल्युट्। १ स्वेद, पसीना। २ स्वेदनयन्त्र। वैद्यकशास्त्रमें लिखा है, कि पारदयुक्त औषधको एक त्रिफल भूर्जपत्र द्वारा लपेट कर एक पोटली बनावे। पीछे सूतसे उस पोटलीको लकड़ीके एक टुकड़ेके साथ मजबूतीसे बांध दे। अनन्तर काञ्जिकादिपूर्ण एक पात्रके ऊपरी भाग पर वह लकड़ीका टुकड़ा इस तरह बांधे, कि सूतसे बंधी हुई पोटली उस पात्रमें लटकता रहे। बादमें उस पात्रके नीचे अग्नि प्रज्वलित कर यथाविधि पाक करे। इसको स्वेदन यन्त्र कहते हैं। इस यन्त्रका दूसरा नाम दोलायन्त्र है।

स्वेदनाश (सं० पु०) वायु, हवा।

स्वेदनिका (सं० स्त्री०) १ कन्द। २ लौहपात्रविशेष, तवा। ३ पाकशाला, रसोईघर। ४ शराब चुआनेका बरतन या भभका।

स्वेदनी (सं० स्त्री०) लौहमयपात्र, तवा।

स्वेदमलोज्झितदेह (सं० पु०) १ सर्वकल्पीय जिनोत्तम। (त्रि०) २ जिसके शरीर स्वेदमलसे विरहित हो।

स्वेदमाता (सं० स्त्री०) शरीरसेंका रस।

स्वेदविप्रुष (सं० स्त्री०) घर्मविन्दु, पानीकी बूंद।

स्वेदवाहिस्रोतस् (सं० क्ली०) घर्मवाहिनाड़ी। इसका मूल मेद और रोमकूप है। (चरक वि० ५अ०)

स्वेदस्राव (सं० पु०) पित्तजरोग, पसीना चलना।

स्वेदाञ्जि (स० पु०) मरुद्गण। (ऋक् १०।६७।६)

स्वेदाम्बु (सं० क्ली०) स्वेदजल, पसीना।

स्वेदायन (सं० पु०) रोमकूप, लोमछिद्र।

स्वेदाप्रसवन (सं० क्ली०) १ घर्मातिशय। २ घमनिग्रह।

स्वेदावरोध (सं० पु०) १ घर्मावरोध। २ जठराग्निका अवरोध।

स्वेदित (सं० त्रि०) १ स्वेदसे युक्त। २ भफारा हुआ, सेंका हुआ।

स्वेदिन् (स० त्रि०) घर्मकारक, पसीना लानेवाला।

स्वेदुहव्य (सं० त्रि०) १ स्वभूत समृद्ध हविष्क। (ऋक् १।१२१।६) २ स्वायत्त इद्धहविर्युक्त। (ऋक् १।१७३।२)

स्वेद्य (सं० त्रि०) स्वेदके योग्य, पसीनेके योग्य।

स्वैतु (सं० त्रि०) शोभन गमन, शोभनगमनयुक्त।

स्वैदायन (सं० पु०) स्वेदके गोतापत्य, शौनक।

स्वैर (सं० त्रि०) १ स्वच्छन्द, अपने इच्छानुसार चलनेवाला, मनमाना काम करनेवाला। २ मन्द, धीमा। ३ ऐच्छिक, यथेच्छ, मनमाना। (क्ली०) ४ स्वेच्छा धीनता।

स्वैरगति (सं० त्रि०) स्वच्छन्दगति, स्वाधीनगति।

स्वैरचारिणी (सं० स्त्री०) १ मनमाना काम करनेवाली स्त्री। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरचारिन् (सं० त्रि०) स्वेच्छाचारी, मनमाना काम करनेवाला।

स्वैरता (सं० स्त्री०) स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता।

स्वैरथ (सं० पु०) १ ज्योतिष्मत्के एक पुत्रका नाम। २ एक वर्षका नाम जिसके देवता स्वैरथ माने जाते हैं।

स्वैरवर्त्तिन् (सं० त्रि०) स्वेच्छाचारी, अपने इच्छानुसार चलने या काम करनेवाला।

स्वैरवृत्त (सं० त्रि०) स्वेच्छाचारी, अपने इच्छानुसार चलने या काम करनेवाला।

स्वैरवृत्ति (सं० स्त्री०) स्वाधीनवृत्ति।

स्वैराचार (सं० पु०) जो जीमें आवे वही करना; मनमाना काम करना।

स्वैरिणी (सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री। चतुःपुरुषगामिनी स्त्रीको स्वैरिणी कहते हैं।

स्वैरिता (सं० स्त्री०) यथेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता, स्वाधीनता।

स्वैरिन् (सं० त्रि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।

स्वैरिन्ध्री (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरेके घर रह कर शिल्पका काम करती हो। द्रौपदी अज्ञातवास कालमें विराट-भवनमें विराट-महिषीके समीप सैरिन्ध्रीका काम कर सैरिन्ध्री नामसे रही थी।

स्वौजस (सं० त्रि०) उत्तम ओजोयुक्त।

स्वोत्थ (सं० त्रि०) स्वोत्थित, अपनेसे निकला हुआ।

स्वोपार्जित (सं० त्रि०) अपना उपार्जन किया हुआ, अपना कमाया हुआ। स्वोपार्जित धनमें भाइयोंका अधिकार नहीं है। उसका उत्तराधिकारी ही इस धनका अधिकारी होता है। इस स्वोपार्जित धन तथा उसकी विभागादिका विषय दायभागमें विशेष रूपसे आलोचित हुआ है।

स्वोरस (सं० पु०) शिलाविष्टकल्क।

स्वौजस् (सं० क्ली०) अपना ओजः, अपना तेज।

स्वौयश (सं० त्रि०) विलासचतुर अवयवसमूहविशिष्ट।

ह

ह—संस्कृत या हिन्दी वर्णमालाका तेंतीसवाँ व्यञ्जन जो उच्चारण विभागके अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है। व्याकरणके मतसे यह अष्टम वर्गीय चतुर्थवर्ण है और कण्ठ इसका उच्चारण स्थान है।

'अकुह विसर्जनीयानां कण्ठः" (व्याकरण)

कामधेनुतन्त्रमें लिखा है—हकार चतुर्वर्गप्रदायक, कुण्डलीत्रयसंयुक्त, रक्तविद्युल्लतोपम, सत्त्व, रजः और तमोगुणयुक्त, पञ्च देवमय, पञ्च प्राणात्मक, त्रिशक्ति और त्रिविन्दुयुक्त है। इस हकारको हृदयमें भावना करनेसे सभी कामना सिद्ध होती है।

ध्यान इस प्रकार है—

"करीषभूषिताङ्गीश्च साट्टहासा दिगम्बरी।
अस्थिमाल्याष्टभुजा वरदाम्बुजेक्षणा॥
नागेन्द्रहारभूषाढ्या जटामुकुटमण्डिता।
सर्वसिद्धिप्रदा नित्या धर्मकामार्थमोक्षदा।
एवं ध्यात्वा हकारन्तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्॥"

(वर्णोद्धारतन्त्र।)

इस वर्णके नाम या पर्याय—हः, शिव, गगन, हंस, नागलोक, अम्बिकापति, शिव, नकुलीश, जगत्प्राण, प्राणेश, कपिलामल, परमात्मात्मज, जीव, यवाक, शान्तिद, अङ्गन, मृग, भय, अरुण, स्थाणु, कूटकूपदिरावण, लक्ष्मीमेविहर, शम्भु, प्राणशक्ति, ललाटज, स्वकोप वारण, शूली, चैतन्य, पादपूरण, महालक्ष्मी, पर, शम्भु, शाखोट, सोममण्डल, शुक्र, अथ, हकार, अंश, प्राण, सात, शिव, वियत्, अकुल, नकुलीश, अनन्त, नकुली, जीव, परमात्मा, ललाटज, नकुलीश, हंस, अंकुश, महेश, वराव, गगन, रवि, लिङ्ग, शून्य, महाशून्य और प्राण।

इस वर्णका उच्चारणस्थान कण्ठ है। तन्त्रमता-

तुसार पूजाकार्यमें मातृकान्यासस्थलमें इस वर्णका दक्ष-पादमें न्यास करना होता है। काव्यमें इस वर्णका प्रथम प्रयोग नहीं करना चाहिये, करनेसे खेद होता है।

(वृत्तरत्ना० टीका)

ह (सं० पु०) १ हास, हंसी। २ शिव, महादेव। ३ जल, पानी। ४ शून्य, सिफर। ५ धारण। ६ मङ्गल, शुभ। ७ गगन, आकाश। ८ विष्कम्भ, योगका एक आसन। ९ गर्व, घमंड। १० वैद्य। ११ कारण, हेतु। १२ चन्द्रमा। १३ ज्ञान। १४ ध्यान। १५ विष्णु। १६ भय। १७ युद्ध, लड़ाई। १८ स्वर्ग। १९ अश्व, घोड़ा। २० रक्त, खून।

हं (सं० अव्य०) १ रुषोक्ति, गुस्सेसे कहना। २ अनुनय।

हंकं—चीनदेशके प्रान्तभागमें काण्टन नदीके मुहाने पर अवस्थित एक द्वीप। यह अक्षा० २७° १७´ उ० तथा देशा० ११४° १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। यह मकावसे ४२ मील और काण्टन शहरसे १०५ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इसकी लम्बाई १० मील और चौड़ाई ४॥ मील है। इसका बन्दर ४ मील लम्बा है। इस द्वीपका घेरा प्रायः २२ मील होगा। इसका अधिकांश ऊसर और पहाड़ी है। इसकी सबसे ऊंची चोटी १८०५ फुट है। यह द्वीप और इसके उत्तरांशमें संलग्न भिक्टोरिया शहर १८४१ ई०में अङ्गरेजोंको दे दिया गया। अधिकारभुक्त होनेके बादसे ही बहुतसे अङ्गरेजोंने पहाड़के ऊपर खूब साफ सुथरे बंगले बनवाये हैं। चीन लोग इस द्वीपको हेअंकिअं अर्थात् सुगन्धित जल कहते हैं।

पुर्त्तगीजोंने उक्त द्वीपपुञ्जको लाद्रानेश या जलदस्युका द्वीप कह कर वर्णन किया है। प्रशान्त महासागरमें हंकं अभी एक प्रधान वृटिश बन्दर गिना जाता है।

हंक (हिं० स्त्री०) हाक देखो।

हंकड़ना (हिं० क्रि०) झगड़ने हुए जोर जोरसे चिल्लाना, दपके साथ बोलना। ललकारना।

हंकरना (हिं० क्रि०) हंकड़ना देखो।

हंकराया (हिं० पु०) बुलानेकी क्रिया या भाव, बुलाहट, पुकार। २ निमन्त्रण, न्योता, बुलावा।

हंकवा (हिं० पु०) शेरके शिकारका एक ढंग। इसमें बहुत लोग ढोल, ताशे आदि बजाते और शोर करते हुए जिस स्थान पर शेर होता है, उस स्थानके चारों ओरसे चलते हैं और इस प्रकार शेरको हाँक कर उस मचानकी ओर ले आते हैं जहां शिकारी उसे मारनेके लिये बंदूक भरे बैठे रहते हैं।

हंकवाना (हिं० क्रि०) १ हाँक लगवाना, बुलवाना। २ पशुओं या चौपायोंको आवाज दे कर हटवाना या किसी ओर भगाना।

हंका (हिं० स्त्री०) ललकार, दपट।

हंकाई (हिं० स्त्री०) १ हाकनेकी क्रिया या भाव। २ हाँकनेकी मजदूरी।

हंकाना (हिं० क्रि०) चौपायों या जानवरोंको आवाज दे कर हटाना या किसी ओर ले जाना, हाकना। २ पुकारना, बुलाना। ३ दूसरेसे हाकनेका काम कराना, हंकवाना।

हंकार (हिं० स्त्री०) १ आवाज लगा कर बुलानेकी क्रिया या भाव, पुकार। २ वह ऊंचा शब्द जो किसीको बुलाने या संबोधन करनेके लिये किया जाय, पुकार। (पु०) ३ वीरोंका दर्पनाद, ललकार, दपट।

हंकारना (हिं० क्रि०) आवाज दे कर किसीको संबोधन करना, जोरसे पुकारना, टेरना। २ अपने पास आनेको कहना, बुलाना, पुकारना। ३ युद्धके लिये आह्वान करना, ललकारना। हाँक देना। ४ हुंकार शब्द करना, घोरनाद करना, दपटना।

हंकारा (हिं० पु०) १ पुकार, बुलाहट। २ निमन्त्रण, बुलौवा।

हंगामा (फा० पु०) १ उपद्रव, हलचल, दंगा। २ शोर-गुल, कलकल हल्ला।

हंगोरी (हिं० पु०) एक बहुत बड़ा पेड़ जो दार्जिलिंगके पहाड़ोंमें होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और मेज, कुरसी, आलमारी आदि सजावटके सामान बनानेके काममें आती है। पहाड़ी लोग इसका फल भी खाते हैं।

हंटर (अं० पु०) लम्बी चाबुक, कोड़ा।

हंडना (हिं० क्रि०) १ घूमना, फिरना। २ व्यर्थ इधर उधर फिरना, आवारा घूमना। ३ इधर उधर ढूंढना, छानबीन करना।

हंडल (अं० पु०) १ बेंट, दस्ता, मुठिया। २ किसी कल

यों पंखका वह भाग जो हाथसे पकड कर घुमाया जाता हो।

हंग (हिं० पु०) पीतल या तांबेका बहुत बडा बरतन जिसमें पानी भर कर रखा जाता है।

हडिक (हिं० पु०) तौलनेका बाट।

हडियां (हिं० स्त्री०) १ बडे छोटेके आकारका मिट्टीका बरतन जिसमें चावल दाल पकाते या कोई वस्तु रखते हैं, हांडी। २ इस प्रकारका शीशेका पात्र जो शोभाके लिये लटकाया जाता है और जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। ३ जौ, चावल आदि अनाज सडा कर बनाई हुई शराब।

हंडी (हिं० स्त्री०) हंडिया और हडी देखो।

हथोरी (हिं० स्त्री०) हथोरी देखो।

हथौरा (हिं० पु०) हथौडा देखो।

हंदा (हिं० पु०) पुरोहित या ब्राह्मणके लिये निकाला हुआ भोजन। पंजाबकी खत्री-ब्राह्मणोंमें यह प्रथा है, कि सवेरेकी रसोईमेंसे कुछ अंश अपने पुरोहितके लिये अलग कर देते हैं। इसीको हंदा कहते हैं।

हंवा (हिं० अव्य०) सम्मति या स्वीकृति-सूचक अव्यय, हां।

हंस—अवधूतभेद, चार प्रकारके अवधूतोंमेंसे हंस तीसरा अवधूत है। प्राणतोषिणीधृत महानिर्वाणतन्त्रमें लिखा है—हंस नामक यह अवधूत स्त्रीसहवास और प्रतिग्रहको स्वीकार नहीं करता। प्रत्याख्यान और प्रार्थनाहीन अवस्थामें जो कुछ मिलता है, वही खा कर यह जीवनधारण करता है। इसे स्ववंशके चिह्नों और गृहाश्रमकी साधारण क्रियाओंका परित्याग कर कामना और चेष्टा रहित होना चाहिये तथा क्रोध और मोह आदिका परित्याग कर सर्वदा अपनी अवस्थामें सन्तुष्ट रहना चाहिये। इसे गृहत्याग, त्यागशील, लोक-सम्पर्करहित और उपद्रवशून्य होना पडेगा। इसे ध्यान धारणा और खाने पीनेके लिये निवेदन नहीं करना चाहिये। इस प्रकारका यति मुक्त, विमुक्त, निर्विवाद और हंसाचारपरायण होता है।

हंस (सं० पु०) पक्षिविशेष, वकजातीय जलचर पक्षी। इसे महाराष्ट्रमें चक्रांकि कहते हैं। हंस, सारस, कारण्डव, वक आदि एकवक्तजातीय जलचर पक्षी हैं।

प्राणितत्त्वविदोंने हंसोंको युक्तपद पक्षिश्रेणीमें माना है। यह उभचर है। इसके पैरकी सामनेवाली तीन उंग-लियां जालीदार होती हैं, इससे यह बडी आसानीसे जलमें तैर सकता है। जलमें तैरते समय यह जलज उद्भिज, पङ्कज शैवाल और छोटी छोटी मछलियां और कीटादि बडे आनन्दके साथ खाता है। स्थलभागमें चलते समय घासकी कोंपल, इधर उधर बिखरा हुआ अनाज और गीली जगहमें उत्पन्न कीडोंको बडे चावसे खाता है।

इस जातिके पक्षीको दो पंख और दो सुन्दर आंख होती हैं, गला पतला और लम्बा तथा दोनों पैर छोटे होते हैं। दोनों पैरके सम्मुखभागमें तीन उंगलियोंमें तीन नख होते हैं। वे तीनों उंगलियां जालीदार होती हैं। पदतलके पश्चाद्भागमें एक छोटी उंगलीका नाखून है, वह अन्यान्य उंगलीसे परस्पर विच्छिन्न है। देहभाग स्थूल और मांसल तथा समूचा अंग मुलायम परोंसे ढंका होता है। पूंछके पर छोटे होते हैं।

पाश्चात्य प्राणितत्त्वविदोंने हंसको Anatinæ जातिभुक्त कर पंख, गले, पैर और चोंचको विभिन्नता देख कर हंसवंशकी स्वतन्त्रता निर्देश की है। उन लोगोंके मतसे हंसके Natatores, Anserina, Ceteopsina Ana tina, Cygnina आदि कई दल हैं। शेषोक्त Cygnina शाखाके Colymbidæ, Alcidæ, Pelecanidæ और Laridae नामक चार दल स्वतन्त्र हंसवंशमें गिने गये हैं।

इस जातिका हंस प्रधानतः उत्तरमेरुमें रहती है। ग्रीष्म ऋतुमें यह एशिया और यूरोपके उत्तरमेरुस्थ द्वीपोंमें स्कन्दनाभ राज्यके उत्तर और आइसलैण्ड द्वीपमें चला जाता है। जब जाडा खूब पडने लगता है, उस समय यह क्रमशः उत्तरदेशका त्याग कर आकाश मार्गसे उडता हुआ वृटिश राज्यके सेटलाण्ड और अर्कानी द्वीपमें आता है। यहां मादा हंस अण्डे पारती है। विमानचारी हंस इस प्रकार क्रमशः दक्षिणमें आ कर हालण्ड, फ्रान्स, प्रोभेन्स और इटली होता हुआ भूमध्यसागर पार करके आफ्रिकाके उत्तर-सीमान्तस्थ बार्बरि और मिस्र राज्यमें आ पहुंचता है। इसके बाद दक्षिणमें और कहीं भी इसका वास नहीं देखा जाता। पूर्वाञ्चलमें जापान द्वीप तक इसका वास है, दक्षिणमें उतना नहीं। चोंच-

से ले कर पूंछ तक इसकी लंबाई ५ फुट होती है और पंखकी चौड़ाई आठ फुटसे कम नहीं होगी।

मादा हंस साधारणतः, छः सात अंडे एक साथ देती है। अंडेकी लम्बाई ४" इञ्च और चौड़ाई २॥" इञ्च होती है। पालतू हंस घरमें, तालावमें या आसपासकी भूमिमें चलता फिरता है। यही हम लोगोंके देशमें राजहंस कहलाता है। C. Bewickn नामक राजहंस उक्त Hooper नामक हंससे आकृति, गठन और वर्णमें बहुत कुछ पृथक् है। यह ३ फुट १०" इञ्चसे ४ फुट २" इञ्च तक बड़ा होता है। इसकी चोंच और टांग काली, चोंचकी जड़ पीली, कभी कभी कमला नीबू-सी होती है। छाती और सिरके बाल लाल होते हैं। यह शैवालके ढेरमें अपना घोंसला बनाता है। उसका बहिरायतन प्रायः ६ फुट लम्बा, ४॥। फुट चौड़ा और दो फुट ऊंचा होता है। अंडे रखनेके स्थानका गर्भ १ फुट और व्यास आध फुट होता है। अंडा कुछ पीलापन लिये लाल होता है। एक एक बार छः सात अंडा पाये जाते हैं। इस जातिका हंस २५।३० के झुण्डमें कर्कश शब्द करता हुआ आकाशमें उड़ता है।

C. immutabilis या पोलण्डीय हंस (Polish swan) C. olor या Mute Swan, C Buccinator नामक उत्तर-अमेरिकाका हंस और C. atratus या Anas Plutonia नामक अस्ट्रेलियाका काला हंस, ये सब राजहंस समझे जाते हैं और इनसे छोटे पालीहंस Anserinæ शाखाभुक्त हैं। अंगरेजी भाषामें यह Ducks, Geese आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। इस श्रेणीका हंस वर्फसे ढके हुए सुमेरुश्रृङ्गसे ग्रीष्मप्रधान ऊसर जमीन पर भी विचरण करते देखा जाता है। स्थानभेदसे जलवायुके परिवर्त्तनसे इन सब हंसोंकी आकृतिमें भी कुछ हेरफेर हो जाता है। कोई रंगबिरंगका, कोई छोटी चोंचवाला, कोई बड़ी चोंचवाला, कोई लम्बा और टेढ़ा गलावाला, कोई छोटे पैरवाला और कोई बड़े पैरवाला होता है।

पूर्व यूरोपके ग्रेलाग हंसोंके साथ बीन-गुजोंका बहुत थोड़ा प्रभेद देखा जाता है। अन्तिम हंसकी चोंच छोटी और उसका अगला हिस्सा नुकीला होता है। इसकी चोंच काली पर ग्रे-लागकी चोंच कमला नीबूकी तरह लाल होती है। बीनगुजके डैने पूंछके अन्तिम भाग तक चले आते हैं। इस जातिका हंस सितम्बर या अक्तूबरके प्रारम्भमें उत्तर देश होता हुआ इङ्गलैण्ड और स्काटलैण्डमें आ कर बस जाता है। आखिर अप्रिलसे मई मासके प्रारम्भ तक वह वहीं रह कर ग्रीष्म कालमें फिर उत्तर देशमें चला जाता है।

A. Ægyptiacus मिस्र देशकी इतिहास-प्रसिद्ध हंस-जाति है। आरिष्टटल, आरिष्टोफेनिस, हेरोदोतस आदिने इस पक्षीको Chenalopex नामसे उल्लेख किया है। यह नदी और तालाबके किनारे विचरण करता है। मिस्रवासी पवित्र जान कर इसका मांस खाते थे। ग्रीक ऐतिहासिकोंके Chenalopex शब्दसे बहुतेरे इस हंस श्रेणीको C. Ægyptiacus नामसे पुकारते हैं। इस हंस-श्रेणीकी चोंच लम्बी, पतली और सीधी तथा अगला हिस्सा गोल होता है। दोनों टांग और उंगली मांसकी तरह लाल होती है। गला सफेद और सर्वाङ्ग धूसर कृष्ण वर्णका होता है। कहीं कहीं घोर लालसे काली काली रेखाका दाग दिखाई देता है।

इस श्रेणीके हंसके साथ A. Gambensis (Plectropterus gambensis) या gambo goose नामक हंस जातिका विशेष सादृश्य है।

A. Canadensis या कनाडा देशीय हंस। इसका दूसरा नाम Cravatgoose भी है। इसका गला राजहंसकी तरह टेढ़ा और लम्बा होता है। इस जातिका हंस हमेशा २५।३०का दल बांध कर विचरण करता है, इस कारण शिकारीका लक्ष्य प्रायः व्यर्थ नहीं जाता। फार राज्यवासीका यह ग्रीष्म कालमें प्रधान भोजन है। इसके आने पर उस देशके वनवासी खुशीके मारे उछलने लगते हैं। कनाडामें आनेके एक मासके भीतर ही मादा हंस अण्डा देनेकी कोशिश करती है तथा प्रत्येक हंस और हंसी दल विच्छिन्न हो कर स्वतन्त्र भावसे स्वतन्त्र दिशामें ५०'से ६७' उत्तर अक्षांशके मध्यवर्त्ती अपने इच्छानुसार निभृत स्थानमें चली जाती है। उस समय हडसन वे नामक उपसागरके किनारे अथवा उत्तर मेरुस्थ समुद्रोपकूलवर्त्ती देशमें फिर वे देखनेमें नहीं आते। जुलाई मासमें अंडेसे बच्चे निकलते हैं। इस समय वृद्ध

हंस और हंसोके पर उड जाते हैं। इसीसे वे उड नहीं सकते। इस समय वे निकटवर्त्ती नदी या छोटे तालावमें आहारकी खोजमें तैरते फिरते हैं। देशवासी अच्छा मौका देख कर छोटी डोंगी पर चढते और उनके पीछे दौडते हैं। हंस प्राणके भयसे बार बार जलमें गोता मारते और आखिर क्लान्त हो कर किनारे लगते हैं और आत्मरक्षाके लिये दूसरे स्थानकी तलाश करते हैं। इस समय शिकारी बडी आसानीसे उनका शिकार करते हैं।

शरत्कालमें इसके फिर पर निकलने लगते हैं। उस समय वे हडसन-वे नामक उपसागरके किनारे झुण्डके झुण्ड इकट्ठे होते हैं तथा तीन सप्ताहके बाद शीतका आगमन समझ कर वहांसे और भी दक्षिण देशमें चले जाते हैं। कनाडाके हंस साधारणतः जमीन पर घोंसले बना कर अण्डे देते हैं।

उत्तर अमेरिकाको छोड और भी कई जगह An-erina शाखाका हंस देखनेमें आता है। इसमें हिमालयप्रदेश और भारतके अन्यान्य स्थानोंका A. Indicus या शिररेख हंस और A. melanotos या कृष्णपृष्ठहंस और करमण्डल उपकूलका A. Coromandeliana आदि उल्लेखयोग्य है। कलकत्तासे वाराणसी पर्यन्त गङ्गा नदीके किनारे जो हंसजाति अकसर घुमा करती है अङ्गरेजोंमें उसे Gura Teal कहते हैं। इसके सिवा समस्त दाक्षिणात्यमें, विन्ध्यशैलमालासे नर्मदातटवर्त्ती गढ़मण्डल तकके स्थानोंमें धवलाकार एक प्रकारको हंसजाति विचरण करती है। यूरोपीयगण उसे Cotton Teal कहते हैं। पाश्चात्य शाकुनतत्त्वविदोंने उसका Anser girra नाम रखा है। मगलहापन प्रणालीमें Anser inornatus नामक और भी एक प्रकारका हंस है।

पाश्चात्य पक्षितत्त्वविदोंने Anatinae शाखाकी जिन सब विभिन्न श्रेणीके हंसको अन्तर्भुक्त किया है, यूरोपीयगण उसे True Ducks कहते हैं। इस शाखाके हंसोंमें Anas clypeata श्रेणीके हंस shoveler कहलाते हैं। इनके शरीरका रंग काला होता है, परन्तु मस्तकके दोनों पार्श्व, गला और चुडादेश चमकीले चोकने हरे रंगसे रंगे होते हैं। पूंछ और पादमूल पीलापन लिये काला होता है। दोनों पैर कमलानीबूकी तरह लाल, तथा पेट और दोनों पार्श्व कमला नीबूसे भी घोर लाल होते हैं। गलेका निचला हिस्सा, कक्ष, दोनों स्कन्ध और पादमूलके पार्श्व इत्यादि सफेद, नील और कृष्णाभ लाल वर्णसे रंगे होते हैं। A rubens श्रेणीके हंसोंका पक्ष A. clypeata से नीला होता है। इस कारण इसे Blue-winged Shoveler कहते हैं। इसकी चोंच मस्तकके संयोगस्थलमें उतनी चौडी नहीं होती, पर अन्यान्य हंसोंकी चोंचसे अधिक ऊंची होती है। चोंचका अगला हिस्सा नुकीला होता है, परन्तु इसके ठीक ऊपरका भाग बहुत चौडा होता है। यह विलायती सावलकी तरह होता है, इसीसे इसका 'सोमेलर' नाम पडा है। ऊपरकी चोंच नुकीली और टेढ़ी होती है, इससे कीटादि पकडनेमें बडी कामियाव है। इस जातिकी हंसी हंससे भिन्न वर्णकी होती है। इसका डैना पूंछ तक विस्तृत और २१ इञ्चसे अधिक लंबा नहीं होता है। ह्रद, जलाभूमि अथवा नदीतट पर यह अंडा पारती है तथा एक बारमें १२से १४ अंडे तक देती देखी गई है। जलज मत्स्य, कीट और तृणगुल्मादि ही इसका प्रधान भोजन है।

भारतके नाना स्थानों और करमण्डल उपकूल, अस्ट्रेलिया, एशिया महादेशके नाना स्थानोंमें, रूस, हालैण्ड, इङ्गलैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी, रोम और फिलाडेल-फिया आदि स्थानोंमें इस श्रेणीका हंस देखा जाता है। अक्टूबर महीनेमें जब खूब जाडा पडने लगता है, तब यह इङ्गलैण्ड चला जाता है। इटलीके रोमनगरके आस पासके देशोंमें तथा अमेरिकाके फिलाडेल्फिया राजधानीमें जाड़ेके समय यह आता है।

दक्षिण गोलार्द्धमें 'सोमेलर'की तरह Malacorhynchus नामक एक और प्रकारका हंस देखनेमें आता है। Chaulelodus (A. Strepera) श्रेणीके हंसोंकी चोंचकी आकृति बहुत कुछ सोमेलर-सी होती है। किन्तु इसकी पूंछ शेषोक्त श्रेणीके हंससे कुछ बडी है। अंगरेजीमें इसे Gadwall कहते हैं।

Dafila caudacuta (A. acuta) श्रेणीका हंस अंगरेजीमें Pintail Duck नामसे परिचित है। इसकी चोंच खूब बडी होती है, सोमेलरकी तरह जड

पतली नहीं होती, पर अगला भाग वैसा ही टेढ़ा होता है, इसके शरीरका रंग सफेद, काला और धूसर होता है। अफ्रिकाके C. capensis श्रेणीके हंस इसी श्रेणीके अन्तर्भुक्त हैं।

ऊपरमें वर्णित 'सोमेलर' और 'गढ़वाल' श्रेणीके हंसोंमें Boschas Formosa, B. Javenes s और B. domastica श्रेणीके हंस स्थान पा सकते हैं। Boschus discors श्रेणीके हंसोंके साथ न्युहालैण्ड (अस्ट्रेलिया) देशीय सोमेलर' हंसका वर्णसादृश्य है, फर्क इतना ही है, कि इस श्रेणीके हंसोंके डैनेके ऊपर सफेद सफेद अर्द्धचन्द्राकार रेखा नहीं रहती। इनके डैने नीले होनेके कारण अंगरेजीमें इनका नाम Blue-winged Teal रखा गया है। Boschas domastica श्रेणीके हंस देखनेमें सुन्दर और विचित्र होते है। इङ्गलैण्डमें यह Cammon Mallard या Wild duck नामसे परिचित है। इस श्रेणीमें Boschus Crecea नामक एक प्रकारका हंस भी देखा जाता है। Marecá Americana या मार्किन् देशीय Widgeon नामक पक्षी तथा Dendronessa sponsa और D. galericulata शाखाके हंस भी इसी श्रेणीके अन्तर्भुक्त हैं। अमेरिकाके वोजन शीतकालमें फ्लोरिडासे रोडस् द्वीप तकके समुद्रोपकूलोंमें, सेण्ट-डेमिङ्गो, गुयेन, मार्टिनिका, युक्तराज्यके स्थान स्थानमें तथा मईके महीनेमें हडसन-बे नामक उपसागरके किनारे चले जाते हैं। D Sponsa ग्रीष्मकालमें दिखाई देता है, इसीसे इसको Summer Duck कहते हैं।

D. Galericula'a या जटाधारी हंसका वास दाक्षिणात्यमें ही अधिक है। इसके शिरके पर लंबे लंबे जटाके आकारमें लटके देखे जाते हैं। इस कारण यूरोपियोंने इसका Mandarin Duck नाम रखा है। D. sponsa और D. galericula'a शाखाके हंस पालित अवस्थामें रह कर भी डिम्बसे बच्चे जनते हैं।

एक और श्रेणीका हंस है जिसे Fuligulinas कहते हैं। इस श्रेणीमें Somateria, Oidemia, Fuligula, Clangula और Harelda नामक कुछ स्वतन्त्र शाखा भी है। इन शाखाओंके हंस अक्सर समुद्रके किनारे रहते हैं। समुद्रज शम्बूकादि और गुल्म आदि इनका प्रधान भोजन है। लवणाक्त समुद्रतीर इनका प्रिय होनेके कारण ये पाश्चात्य जगत्में Sea ducks नामसे परिचित हैं। उत्तर गोलार्द्धकी प्रान्त सीमा ही प्रधानतः इनके रहने लायक है। ये सुमिष्ट जलपूर्ण नदी और ह्रदादिमें वास करते हैं।

Merganinae श्रेणीमें जो सब हंस हैं उनकी चोंच सीधी, पतली, चोंगेकी तरह लम्बी और अग्रभाग हुकके कांटेकी तरह टेढ़ा होता है। जीभ पतली और लम्बी तथा पैर छोटे छोटे होते हैं। सिर पर कलगी होती है। Mergus Castor अङ्गरेजोंका Goosander या Mersander इस शाखाके हंस Mergus Merganser और M rgus rubricapillus भी कहलाते हैं। Mergus albellus अङ्गरेज पक्षितत्त्वविदोंके निकट Smew अथवा White-nun नामसे परिचित है। इनके शरीरका रङ्ग सफेद राख जैसा और काला विचित्राकारमें रंगा होता है। काकातुआकी तरह सिर पर कलंगी होती है। इस श्रेणीके हंसशावक और हंसियोंको विभिन्न पक्षितत्त्वविदोंने M minutus, M Asiaticus और M. Stellatus आदि नाम रखा है।

पूर्ववर्णित हंसोंके अलावा और भी अनेक प्रकारके हंस देखनेमें आते हैं। ये सब हंस अफ्रिका, अमेरिका और यूरोपके नानास्थानोंमें पाये जाते हैं।

प्राणिविदोंने हंसतत्त्वकी आलोचना कर स्थिर किया है, कि राजहंस और अधिकांश श्रेणीके छोटे हंस उत्तरमेरुके आस पास रहते हैं। वे शीतके न्यूनाधिक्यके अनुसार यूरोप, एशिया और अमेरिकाके दक्षिण अंशमें उड़ कर चले आते हैं, फिर गरम पड़ने पर शीतप्रधान उत्तर प्रदेशमें चले जाते हैं। ये सब हंस उत्तर महासागरस्थ तुषारमण्डित द्वीपवासियोंमेंसे बहुतेरे बड़े चावसे खाते हैं। इस उद्देशसे ग्रीष्मके समय जब हंसजाति अन्य स्थानसे इस देशमें उड़ कर आते हैं तब देशवासी तीर या बन्दूकसे अनेक हंस मार कर भविष्यके खाद्यरूपमें संग्रह कर रखते हैं। कहीं कहीं उन्हें संदुकमें भर कर दूसरी जगह विक्रयार्थ भेज देते हैं। दक्षिण मेरुदेशमें Penguin Duck (पेङ्गुइन) नामक एक प्रकारका हंस है। यह ठीक हंस जैसा आकृतिविशिष्ट होता है सही, पर साधारण हंसकी तरह पैरके बल चलने और उत्तरमेरुके हंस जैसा उड़नेमें समर्थ नहीं है। इसके डैने

अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। यह घुटने तक जमीनमें टेक कर मनुष्यकी तरह ऊँचा खड़ा होता है और जब शिकारकी खोजमें जलमें तैरता है, तब हंस जैसा दिखाई देता है।

Colymbidae श्रेणीमें पेङ्गुइनकी तरह Guillemot नामक और एक प्रकार हंसाकार पक्षी देखनेमें आता है। उसका समूचा अंग हंस जैसा, केवल चोंच कोणाकार नुकीली होती है। इस श्रेणीका पक्षी जीवविज्ञानमें Urin नामसे प्रसिद्ध है। इस श्रेणीमें U. Troile, U. Brunnichii, U. Grylle, U. Alle, U. Baltica आदि कई स्वतन्त्र शाखाके पक्षी हैं। नारवे, इङ्गलैण्ड, बाल्टिक सागरके किनारे, स्पिटसवर्जेन, लापलैण्ड, कामस्कटका, न्युफाउण्डलैण्ड और लाब्रेडरके किनारे ये सब पक्षी देखनेमें आते हैं।

पाश्चात्य शाकुनतत्त्वविदोंकी धारणा है, कि हंस उत्तर-मेरु देशका प्रधान पक्षी है। यह दक्षिण पथसे आ कर धीरे धीरे इङ्गलैण्ड, फ्रान्स, स्कोजलैण्ड, जर्मनी देशमें बस गया है और वहांसे कोई कोई शाखा सुदूर अफ्रिका महादेशमें चली गई है। अंगरेजोंका मत है, कि उसी प्रकार साइवेरिया राज्य अतिक्रम कर हंसगण क्रमशः एशियाके समस्त स्थानोंमें, यहां तक, कि भारत और दक्षिण ब्रह्ममें भी चले गये है। उनके इस मतको हम लोग समीचीन नहीं मान सकते। भारतमें जो बहुत पहले ही हंसका प्रचार था वह हमें प्राचीन ग्रन्थ पढनेसे मालूम होता है। हिमालयसे कुमारिका पर्यन्त समग्र भारतमें जो एक स्वतन्त्र प्रकारका हंस विराज करता है वह भारतके सिवा पृथ्वीमें और कहीं भी दिखाई नहीं देता।

ऋग्वेद (१।६५।५) पढ़नेसे मालूम होता है, कि हंस अन्तरीक्षमें तेजीसे उड़नेवाला और जलमें तैरनेवाला पक्षी है। महाभारतके वनपर्वके ५३वें अध्यायमें नलोपाख्यान-प्रसङ्गमें हंसके दौत्य तथा नल और दमयन्तीको एक दूसरेका संवाद कहना, आदिका विवरण लिपिबद्ध है। हंस उस समय जो Messenger Bird नामक पक्षीकी तरह एक राज्यसे दूसरे राज्यमें सवाद ले जाता था, उक्त उपाख्यानसे यही ज्ञात होता है। पुराणमें इस हंसको ब्रह्माका वाहन कहा गया है। चीनदेशमें हाङ्ग-यूएन सुइ नामक एक मृत महापुरुषके पूजक लोग हंसको उक्त साधकप्रवरका पवित्र पदार्थ मानते हैं। कान्टन और चीनके अन्यान्य नगरवासी हंसको इस प्रकार सिखा कर तालिम कर देते हैं, कि वे सिस् या साङ्केतिक शब्द सुन हो शस्यक्षेत्र और खाद्यका परित्याग कर चला आता है और उनके सङ्केतानुसार जमीन या जलमें तैरने लगता है। इङ्गलैण्ड और यूरोपके अन्यान्य स्थानोंमें इसी प्रकार हंसपालनकी विधि है। महारानी विक्टोरियाने टेम्स नदीके किनारे इसी प्रकार हंस पालनेके लिये एक हंस-का घर बनाया था। उक्त नदीके मुहाने पर महारानीके सिवा और भी कई भद्र लोगोंका हंसावास हैं।

राजपूत जातिके निकट लाल हंस विश्वस्तताका प्रधान चिह्न समझा जाता है। ब्रह्मराजके सिंहासनके सामने सोनेकी हंस मूर्त्ति रखी हुई है। उसका साधारण नाम हन्थ है। हन्थ शब्द संस्कृत हंस शब्दका ही अपभ्रंश है।

वैद्यकमतसे हंसका मास पित्तघ्न, स्निग्ध, मधुर रस, गुरु, शीतवीर्य्य, सारक, वायु, कफ, बल और शुक्रवर्द्धक माना गया है। (भावप्र०) राजवल्लभके मतसे वातहर, वृष्य, स्वरवर्द्धक, मांस और बलप्रद तथा राजनिर्घण्टके मतसे स्निग्ध, शीतल, गुरु, वृष्य और वातनाशक है। डिम्बगुण—रेतःक्षीण, कास, हृद्रोग और क्षत आदि रोगो-में हितकर, गुरुपाक तथा सद्योबलकारक है।

धर्म्मशास्त्रमें लिखा है, कि हंसका मांस या अंडा नहीं खाना चाहिये, खानेसे चान्द्रायण करना होता है। परन्तु इस मासभोजनमें रोगियोंके लिये स्वतन्त्र व्यवस्था है। कविलोग शरत्कालके वर्णन स्थलमें मानससरोवरमें हंस गमनका वर्णन करते हैं। कवियों तथा जनसाधारणमें इसके मोती चुंगने और नीरक्षीर विवेक करने अर्थात् दूधमेंसे पानी अलग करनेका प्रवाद चला आता है जो कल्पना मात्र है। यूरोपके पुराने कवियोंमें ऐसा प्रवाद था, कि यह पक्षी बहुत सुन्दर राग गाता है, विशेषतः मरते समय। वसन्तराजशाकुन (८ सर्ग)-में हंसके देखने या उसके शब्द सुननेका फल इस प्रकार लिखा है—

किसी भी ओर जाते समय यदि इसका शब्द सुनाई दे या उसका दर्शन हो जाय, तो सर्वार्थसिद्धि होती है। जो गमनकालमें हंस, यह नाम सुनते हैं उनके सभी

पाप दूर होते हैं। हंस स्वका आदि शब्द सुननेसे चोर-का दर्शन, द्वितीय शब्द सुननेसे निधि लाभ, तृतीय शब्द-से भय, चतुर्थसे विवाद और पञ्चमसे राजानुग्रह लाभ होता है।

२ निर्लोभ नृप। ३ शुद्ध आत्मा। ४ सूर्य। ५ पर मात्मा, ब्रह्म। ६ मत्सर, द्वेष। ७ योगिभेद। ८ शरीरस्थ वायुविशेष, प्राणवायु। ९ तुरङ्गमभेद, एक प्रकारका घोडा। १० गोविशेष, एक प्रकारकी गाय।

जिस गायका वर्ण शुक्ल, चक्षु पिङ्गल, सींग ताम्रवर्ण और मुख वृहत् होता है उसे हंस कहते हैं। सभी गौओंमें यह हंस नामक गौ विशेष फलप्रद है।

११ गुरु। १२ पर्वत। १३ शिव। १४ विष्णु, १५ विष्णु का एक अवतार। एक बार सनकादिकने ब्रह्मासे जा कर पूछा—"कृपा कर बताइये, कि विषयने चित्त ग्रहण किये हुए है या विषय ही चित्तको ग्रहण किये हैं। ये दोनों ऐसे मिले हुए हैं, कि हमसे अलग नहीं करते बनता।" जब ब्रह्मा उत्तर न दे सके, तब सनकादिकको अपने ज्ञान का बड़ा गर्व हो गया। इस पर ब्रह्माने भक्तिपूर्वक भग-वान्‌का ध्यान किया। तब भगवान् हंसका रूप धारण कर सामने आये और सनकादिकसे बोले, "तुम्हारा यह प्रश्न ही अज्ञानपूर्ण है। विषय और उनका चिन्तन दोनों ही माया हैं, अर्थात् एक हैं।" इस प्रकार सनकादिकका ज्ञानगर्व दूर हो गया।

१६ उदार और संयमी राजा, श्रेष्ठ राजा। १७ संन्या-सियोंका एक भेद। १८ कामदेव। १९ भैंसा। २० दोहेके नवें भेदका नाम। इसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। २१ एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें एक भगण और दो गुरु होते हैं। इसे 'पंक्ति' भी कहते हैं। २२ एक प्रकारका नृत्य। २३ प्रासादका एक भेद जो हंसके आकारका बनाया जाता था। यह १२ हाथ चौडा और एक खंडका होता था और इसके ऊपर एक शृङ्ग बनाया जाता था। (वास्तुविद्या)

२४ मन्त्रभेद, अजपामन्त्र। हं इस शब्दसे बहिर्गमन और स इस शब्दसे अन्तःप्रवेश अर्थात् जीव हं मन्त्रसे बहिर्गमन और स मन्त्रसे अन्तःप्रवेश कर सकता है, इसीसे इस मन्त्रका नाम हंस हुआ है। तन्त्रशास्त्रमें लिखा है, कि हंस यह अजपामन्त्र कल्पवृक्षस्वरूप है अर्थात् इस मन्त्रकी उपासना द्वारा सिद्धि लाभ करनेसे सभी अभिलाष सिद्ध होते हैं। ध्यान इस प्रकार है—

"उद्यद्भानुस्फुरिततडिदाकारमर्द्धाम्बिकेशं।
पाशाभीतिं वरदपरशुं सन्दधानं कराब्जैः॥
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः शोभितं विश्वमूलं।
सौम्याग्नेयं वपुरवतु वश्चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं॥"

इस प्रकार ध्यान, मानसपूजा और शङ्खस्थापन आदि पूजाङ्गक्रिक नियम सभी कार्य करे। पीछे पीठ-पूजा, पुनर्वार ध्यान, आवाहन और पञ्चपुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त सभी कर्म करके आवरणदेवताकी पूजा करनी होगी। साधक यदि इस हंसमन्त्रमें सिद्ध हो जाय, तो उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी प्राप्ति होती है। (तन्त्रसार) यह हंसमन्त्र दो प्रकारका है, व्यक्त और गुप्त। (निरुत्तरतन्त्र ४ प०)

२५ राजा जरासन्धके एक सेनापतिका नाम। (भारत २।२२।३१) २६ मेरुके उत्तर एक पर्वतका नाम। (विष्णुपु० २।२।२८) २७ ब्रह्मसूत्रके एक भाष्यकारका नाम। (त्रि०) ८ अग्रमें अवस्थित, सामनेमें खडा। २९ श्रेष्ठ। ३० विशुद्ध।

हंसक (सं० पु०) १ हंस पक्षी। २ पैरकी उंगलियोंमें पहननेका एक गहना, बिछुआ। ३ संगीतमें एक प्रकारका ताल।

हंसकवती (सं० स्त्री०) नगरीविशेष।

हंसकाकीय (सं० त्रि०) हंस और काक सम्बन्धी। महाभारतके आदि पर्वमें हंसकाकीय नामक एक आख्यान है।

हंसकान्ता (सं० स्त्री०) हंसपत्नी।

हंसकायन (सं० पु०) महाभारतोक्त जनपदभेद।

हंसकालीतनय (सं० पु०) महिष।

हंसकोलक (सं० पु०) रतिबन्धविशेष।

"नारी पादद्वयं कृत्वा कान्तस्योरुयुगोपरि।
कटीमान्दोलयेत् यत्नात् बन्धोऽयं हंसकीलकः।"

(स्मरदीपिका)

हंसकूट (सं० पु०) १ ककुद, बैलके कंधोंके बीच उठा हुआ कूबड, डिल्ल। २ पर्वतविशेष।

हंसक्रीड (सं० क्ली०) जनपदभेद।

हंसग (सं० लि०) १ हंसवाहन ब्रह्मा। (लि०) २ हंसगामिमात्र।

हंसगति (सं० स्त्री०) १ हंसके समान सुन्दर धीमी चाल। २ ब्रह्मत्वकी प्राप्ति, सायुज्यमुक्ति। ३ बीस मात्राओंके एक छन्दका नाम। इसमें ग्यारहवें मात्रा पर विराम होता है। इसी छन्दकी बारहवीं मात्रा पर यति मान कर मंजुतिलका भी कहते हैं।

हंसगद्‌दा (सं० स्त्री०) प्रियभाषिणी स्त्री।

हंसगद्‌गदा (सं० स्त्री०) मधुरभाषिणी।

हंसगर्भ (सं० पु०) एक रत्नका नाम।

हंसगामिनी (सं० स्त्री०) १ नारीविशेष। नारियोंका चलना हंसके समान होता है, इसीसे उन्हें हंसगामिनी कहते हैं। २ ब्रह्माणी।

हंसगुह्य (सं० क्ली०) स्तो विशेष, हंसगुह्याख्य स्तोत्र।

हंसचूड (सं० पु०) यक्ष। (भारत सभाप०)

हंसचौपड (हिं० पु०) एक प्रकारका पुराना चौपडका खेल जो पासोंसे खेला जाता था। इसकी तख्तीमें ६२ घर होते थे। एक ६३वां घर केन्द्रमें होता था जो जीतका घर होता था। तख्तीके प्रत्येक चौथे और पांचवें घरमें एक हंसका चिह्न होता था, खेलनेवालेका पासा जब हंस पर पडता था तब वह दूनी चाल चल सकता था।

हंसज (सं० पु०) स्कन्दानुचर विशेष। (भारत)

हंसजा (सं० स्त्री०) सूर्य्यकी कन्या यमुना।

हंसतामुखी (हिं० पु०) प्रसन्नमुख, हंसी चेहरेवाला।

हंसतीर्थ (सं० क्ली०) पुण्यतीर्थ विशेष।

हंसदफरा (हिं० पु०) वे रस्से जो छोटे नावमें उसकी मजबूतीके लिये बंधे रहते हैं।

हंसदाहन (सं० क्ली०) गुग्गुल, धूप।

हंसद्वीप (सं० पु०) कथासरित्‌सागर वर्णित द्वीपभेद।

हंसध्वज (सं० पु०) पौराणिक राजभेद।

हंसन (हिं० स्त्री०) १ हंसनेकी क्रिया या भाव। २ हंसनेका ढंग।

हंसना (हिं० क्रि०) १ आनन्दसे कण्ठके वेगसे एक विशेष प्रकारका आघातरूप स्वर निकलना, खिलखिलाना। २ रमणीय लगना, मनोहर जान पडना, गुलजार या रौनक होना। ३ आनन्द मानना, प्रसन्न या खुशी होना, खुश मनाना। ४ केवल मनोरञ्जनके लिये कुछ कहना या करना, दिल्लगी करना, मजाक करना। ५ किसीका उपहास करना, अनादर करना, हंसी उडाना।

हंसनादिन् (सं० लि०) हंसके समान नाद करनेवाला।

हंसनादिनी (सं० स्त्री०) मधुरभाषिणी, सुन्दर बोलनेवाली।

हंसनादोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्‌विशेष।

हंसनाभ (सं० पु०) पर्वतविशेष। (मार्क०पु० ५५ अ०)

हंसनी (सं० स्त्री०) हंसी देखो।

हंसपक्ष (सं० पु०) हाथकी एक शुभ रेखा।

हंसपथ (सं० पु०) हंसमार्ग। हंसमार्ग देखो।

हंसपद (सं० क्ली०) कर्षपरिमाण, दो तोला।

हंसपदिका (सं० स्त्री०) राजा दुष्यन्तकी एक पत्नी, इसका दूसरा नाम था हंसवती।

हंसपदी (सं० स्त्री०) गोधापदी। पर्याय—मधुस्रवा, हंसपादी, त्रिपदी, कीटमाता, त्रिपादिका। इसका गुण—गुरु, शीतल, रक्त, विष, व्रणरोग, विसर्प, दाह, अतीसार और लूताविषनाशक। (भावप्र०)

हंसपाकाग्नि (सं० पु०) हंसपाकयन्त्रमें पाकयोग्य अग्नि।

हंसपाकयन्त्र (सं० क्ली०) औषधपाकका यन्त्रविशेष।

हंसपाद (सं० क्ली०) १ हिंगुल, ईंगुल, शिंगरफ। (पु०) २ हंसका पैर।

हंसपादिका (सं० स्त्री०) हंसपदी।

हंसपादी (सं० स्त्री०) १ गोधापदी। २ हिंगुल, ईंगुल, शिंगरफ।

हंसपादीतैल (सं० क्ली०) नाडी व्रणादिकी एक उत्कृष्ट तैलौषध। (भैषज्यरत्ना०)

हंसपाल (सं० पु०) प्राग्‌वाटवंशीय एक हिन्दू नरपति। ये १२वीं सदीमें विद्यमान थे।

हंसपोट्टली (सं० स्त्री०) ग्रहणी रोगकी एक उत्कृष्ट वटिकौषध।

हंसप्रपतन (सं० क्ली०) एक तीर्थ। महाभारतके वनपर्वमें इस तीर्थका विवरण लिखा है। भविष्य ब्रह्मखण्डके मतसे यह स्थान भोजदेशके अन्तर्गत है।

हंसबीज (सं० क्ली०) हंसडिम्ब, हंसका अण्डा। गुण—

अतिशय बलकारक, बृंहण, वातनाशक, पाकमें अतिशय लघु तथा समस्त आमाशयनाशक। (भावप्र०)

हंसभट्ट—एक प्राचीन संस्कृत कवि।

हंसभूपाल—संगीतरत्नाकरटीकाके रचयिता।

हंसमञ्जुला (सं० स्त्री०) एक संकर रागिणी जो शङ्कराभरण, टोरट और अडानेके मेलसे बनी है।

हंसमण्डूरक (सं० क्ली०) वैद्यकके अनुसार मिली गई एक प्रकारकी औषध।

हंसमार्ग (सं० पु०) पार्वत्यदेशभेद।

हंसमाला (सं० स्त्री०) १ कादम्ब। २ हंसोंकी पंक्ति।

हंसमाषा (सं० स्त्री०) माषपर्णी, मखवन।

हंसमुख (हिं० वि०) १ प्रसन्नवदन, जिसके चेहरेसे प्रसन्नताका भाव प्रकट होता हो। २ विनोदशील, हास्यप्रिय, ठठोल, चुहलबाज।

हंसयान (सं० क्ली०) १ हंसरूप-यान; ब्रह्माका यान हंस। (त्रि०) २ हंसवाहन ब्रह्मा।

हंसयाना (सं० स्त्री०) सरस्वती।

हंसरथ (सं० पु०) ब्रह्मा। (त्रिका०)

हंसराज (सं० पु०) १ श्रेष्ठ हंस, राजहंस। २ एक बूटी जो पहाड़ोंमें चट्टानोंसे लगी हुई मिलती है, समलपत्ती। यह एक छोटी घास होती है जिसमें चारों ओर आठ दश अङ्गुलके सूतकेसे डंठल फैलते हैं। इन डण्ठलोंके दोनों ओर बन्द मुट्ठीके आकारकी छोटी छोटी कटावदार पत्तियाँ गुछी होती हैं। इससे बगीचोंमें कङ्कड पत्थरके ढेर खड़े करके इसे लगाते हैं। वैद्यकमें यह गरम मानी जाती है और ज्वरमें दी जाती है। कहते हैं, इससे बवासीरसे खून जाना भी बन्द हो जाता है। ३ एक प्रकारका अगहनी धान।

हंसराज—१ बालबोधिनी नामक श्रुतबोधटीकाकार। २ एक प्रसिद्ध वैद्य। इन्होंने भिषक्चक्रचित्तोत्सव' नामक एक वैद्यकग्रन्थ लिखा।

हंसरुत (सं० क्ली०) १ हंसस्वर, हंसका शब्द। २ छन्दोभेद। इसके प्रत्येक चरणमें आठ शब्द रहते हैं। उनमेंसे चौथा, पाँचवाँ और छठा वर्ण लघु और बाकी गुरु होते हैं। (छन्दोम०)

हंसली (हिं० स्त्री०) १ गरदनके नीचे और छातीके ऊपरकी धन्वाकार हड्डी। ३ गलेमें पहननेका स्त्रियोंका एक गहना जो मंडलाकार और ठोस होता है। यह बीचमें मोटा और छोरों पर पतला होता है।

हंसलोमश (सं० क्ली०) कसीस।

हंसवंश (सं० पु०) सूर्यका वंश।

हंसवक्त्र (सं० पु०) स्कन्दानुचरविशेष। (भारत)

हंसवत् (सं० त्रि०) हंसयुक्त, हंसविशिष्ट।

हंसवती (सं० स्त्री०) १ हंसपदी लता। २ राजा दुष्यन्तकी एक पत्नी, हंसपदिका।

हंसवाह (सं० पु०) ब्रह्मा।

हंसवाहन (सं० पु०) ब्रह्मा।

हंसवाहनी (सं० स्त्री०) सरस्वती।

हंससाचि (सं० पु०) पक्षिभेद। (तैत्तिरीय स०)

हंससुता (सं० स्त्री०) यमुना नदी।

हंसाई (हिं० स्त्री०) १ हंसनेकी क्रिया या भाव। २ उपहास, लोगोंमें निन्दा, बदनामी।

हंसाङ्घ्रि (सं० पु०) १ हिङ्गुल, ईंगुर, शिंगरफ। २ हंसका चरण या पैर।

हंसाण्ड (सं० क्ली०) हंस डिम्ब, हंसका अंडा।

हंसाधिरूढ (सं० पु०) ब्रह्मा।

हंसाधिरूढ़ा (सं० स्त्री०) सरस्वती।

हंसाना (हिं० क्रि०) दूसरेको हंसनेमें प्रवृत्त करना।

हंसाभिख्य (सं० क्ली०) चांदी। (हेम)

हंसारूढ (सं० पु०) ब्रह्मा।

हंसारूढा (सं० स्त्री०) सरस्वती।

हंसालि (सं० स्त्री०) ३७ मात्राओंका छन्द। इसमें बीसवीं मात्रा पर यति और अन्तमें मगण होता है।

हंसास्य (सं० पु०) हाथका शुभचिह्न, शुभरेखाभेद।

हंसाह्वया (सं० स्त्री०) हंसपदी लता।

हंसिका (सं० स्त्री०) हंसकी मादा, हंसी।

हंसिनी (सं० स्त्री०) हंसी देखो।

हंसिया (हिं० पु०) १ लोहेका एक धारदार औजार जो अर्द्धचन्द्राकार होता है और जिससे खेतकी फसल या तरकारी आदि काटी जाती है। २ लोहेकी धारदार अर्द्धचन्द्राकार पट्टी जिससे कुम्हार गीली मिट्टी काटते हैं। ४ हाथीके अंकुशका टेढ़ा भाग। ५ चमड़ा छील कर

चिकना करनेका औजार। (स्त्री०) ६ गरदनके नीचे-की धन्वाकार हड्डी, हंसली।

हंसी (सं० स्त्री०) १ हंसकी मादा, स्त्रीहंस। २ दूध देनेवाली गायकी एक अच्छी जाति। ३ बाईस अक्षरोंकी एक वर्णवृत्ति। इसके प्रत्येक चरणमें दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है।

हंसी (हिं० स्त्री०) १ हंसनेकी क्रिया या भाव, हास। २ हंसने हंसानेके लिये की हुई बात, मजाक, दिल्लगी। ३ किसी व्यक्तिको मूर्ख या वस्तुको तुच्छ ठहरानेके लिये कही हुई विनोदपूर्ण उक्ति, अनादरसूचक हास। ४ लोक निन्दा, बदनामी।

हंसीय (सं० त्रि०) हंस-सम्बन्धी।

हंसेश्वरतीर्थ (सं० क्ली०) पुण्यतीर्थविशेष।

हंसोड़ (हिं० वि०) हंसी ठट्ठा करनेवाला, दिल्लगीबाज, मसखरा।

हंसोदक (सं० क्ली०) पानीयविशेष। किसी एक नये मिट्टीके बरतनमें जल रख कर धूपमें छोड़ दे। रातको चन्द्रकिरण और मन्द मन्द वायुसे शीतल करके उसे इलायची आदि सुगन्धित द्रव्यसे सुवासित करे। इस तरह जो जल तैयार किया जाता है उसे हंसोदक कहते हैं। यह जल अति श्रेष्ठ और विशेष उपकारक माना गया है। इस जलका गुण—श्रमनाशक, पित्त, उष्ण, दाह, विष, मूर्च्छा, रक्तवमन और मदात्ययमें विशेष हितकर है।

(राजनि०)

हंसोपनिषद् (सं० स्त्री०) उपनिषद्विशेष।

हंहो (सं० अव्य०) १ सम्बोधन। २ दर्प। ३ दम्भ। ४ प्रश्न।

हई (हिं० स्त्री०) आश्चर्य, अचरज।

हक (अ० वि०) १ जो झूठ न हो, सत्य, सच। २ जो धर्म और नीतिके अनुसार हो, वाजिब। (पु०) ३ किसी वस्तुको पाने, पास रखने या व्यवहारमें लानेकी योग्यता, जो न्याय या लोकरीतिके अनुसार किसीको प्राप्त हो, किसी वस्तुको अपने कब्जेमें रखने, काममें लाने या लेनेका अधिकार। ४ कोई काम करने या किसीसे करानेका अधिकार जो किसीकी आज्ञा, लोकरीति या न्यायके अनुसार प्राप्त हो, इख्तियार। ५ कर्त्तव्य, फर्ज। ६ वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काममें लानेका अथवा वह बात जिसे करनेको न्यायसे अधिकार प्राप्त हो। ७ वह द्रव्य या धन जो किसी काम या व्यवहारमें किसीको रीतिके अनुसार मिलता हो, किसी मामलेमें दस्तूरके मुताबिक मिलनेवाली कुछ रकम, दस्तूरी। ८ ठीक बात, वाजिब बात। ९ उचित पक्ष, न्यायपक्ष। १० ईश्वर, खुदा।

हकदार (फा० पु०) वह जिसे हक हासिल हो, स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।

हकनाहक (अ० अव्य०) १ बिना उचित अनुचितके विचारके, जबरदस्ती धींगा धींगीसे। २ बिना कारण या प्रयोजन, निष्प्रयोजन, फजूल।

हकबक (हिं० वि०) हकाबका देखो।

हकबाना (हिं० क्रि०) किसी ऐसी बात पर जिसका पहलेसे अनुमान तक न रहा हो अथवा जो अनहोनी या होनी या भयानक हो, स्तम्भित हो जाना, ठक रह जाना।

हकमालिकाना (फा० पु०) किसी भी जमा जायदादके मालिकका हक।

हक मौरूसी (अ० पु०) वह अधिकार जो पितृपरंपरासे प्राप्त हो, वह हक जो बाप दादोंसे चला आता हो।

हकला (हिं० वि०) रुक रुक कर बोलनेवाला, वाग्दोषके हकलानेवाला।

हकलाना (हिं० क्रि०) स्वर-नालीके ठीक काम न करने या जीभ तेजीसे न चलनेके कारण बोलनेमें अटकना, रुक रुक कर बोलना।

हकशफा (अ० पु०) किसी जमीनको खरीदनेका औरोंसे ऊपर या अधिक वह हक या स्वत्व जो गांवके हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियोंको प्राप्त हो। यदि कोई इस प्रकारकी जमीन बेच लेता है, तो जिसे इस प्रकारका स्वत्व प्राप्त होता है, वह अदालतके द्वारा उतना ही या जितनो अदालत ठहरा दे, दाम दे कर वह जमीन ले सकता है।

हकार (सं० पु०) ह स्वरूपे कार। ह अक्षर या वर्ण।

हकारना (हिं० क्रि०) १ पाल तानना या खड़ा करना। २ झंडा या निशान उठाना।

हकीकत (अ० स्त्री०) १ तत्त्व, सच्चाई, असलियत। २ तथ्य,

ठीक बात, असल अमल बात। ३ ठीक ठीक वृत्तान्त, असल हाल।

हकीकी (अ० वि०) १ सच्चा, ठीक, सत्य। २ खास अपना सगा। ३ ईश्वरोन्मुख, भगवत्सम्बन्धी।

हकीम (अ० पु०) १ विद्वान् आचार्य। २ यूनानी रीतिसे चिकित्सा करनेवाला वैद्य।

हकीमी (अ० स्त्री० १ यूनानी आयुर्वेद, युनानी चिकित्सा शास्त्र। २ हकीमका पेशा या काम, वैद्गी।

हकीयत (अ० स्त्री०) १ स्वत्व, अधिकार। २ वह वस्तु या जायदाद जिस पर हक हो। ३ अधिकार होनेका भाव।

हकीर (अ० वि०) १ जिसका कुछ महत्त्व न हो, बहुत छोटा, नाचीज। २ उपेक्षाके योग्य।

हकूक (अ० पु०) 'हक'का बहुवचन, कई प्रकारके स्वत्व या अधिकार।

हक्क (स० पु०) गजसमाह्वान, हाथीको बुलानेका शब्द।

हक्का (हिं० पु०) वह नोट या पुरजा जो कोई गल्लेका व्यापारी किसी असामीके लगानका अमानतके रूपमें जमींदारको देता है।

हक्काक (हिं० पु०) नग गढनेवाला, नगको काटने, सान पर चढ़ाने, जडने आदिका काम करनेवाला।

हक्काबक्का (हिं० वि०) किसी ऐसी बात पर स्तम्भित जिसका पहलेसे अनुमान तक न रहा हो अथवा जो अन होनी या भयानक हो, भौचक, घबराया हुआ।

हक्कार (स० पु०) आह्वान, चिल्ला कर बुलानेका शब्द, पुकार।

हगना (हिं० क्रि०) १ मलोत्सर्ग करना, मल त्याग करना, पाखाना फिरना। २ दबावके मारे कोई वस्तु दे देना, झख मार कर अदा कर देना।

हगनेटा (हिं० स्त्री०) हगनहटी देखो।

हगाना (हिं० क्रि०) १ हगनेकी क्रिया कराना, पाखाना फिराने पर विवश करना। २ मल त्याग कराना, पाखाना फिरनेमें सहायता देना।

हगास (हिं० स्त्री०) मल त्यागका वेग या इच्छा, हगनेकी इच्छा।

हगोडा (हिं० वि०) बहुत हगनेवाला, बहुत झाडा फिरनेवाला।

हचकना (हिं० क्रि०) चारपाई। गाडी आदिका झोंका खाना या बार बार हिलना, धक्केसे हिलना डोलना।

हचका (हिं० पु०) धक्का, झोंका।

हचकाना (हिं० क्रि०) धक्केसे हिलाना, झोंका दे कर हिलाना।

हचकोला (हिं० पु०) वह धक्का जो गाडी चारपाई आदि पर उछाला या हिलने डोलनेसे लगे।

हज (अ० पु०) मुसलमानोंका काबेके दर्शनके लिये मक्के जाना, मुसलमानोंकी मक्केकी तीर्थ-यात्रा।

हजदेश (स० पु०) अरब देश।

हजम (अ० पु०) १ पाचन, पेटमें पचनेकी क्रिया या भाव। (वि०) २ जो पाचन शक्ति द्वारा रस या धातुके रूपमें हो गया हो, पेटमें पचा हुआ। २ अन्यायरूपसे दूसरेकी वस्तु ले कर न दी हुई, बेईमानीसे लिया हुआ।

हजमरो—सिन्धुप्रदेशमें प्रवाहित एक नदी। यह सिन्धुनदका ही एक शाखा है और कराचीके पास समुद्रमें मिलती है। १८४५ ई०में इसकी चौडाई इतनी कम थी, कि वर्षाके समय केवल छोटी छोटी डोंगी आजा सकती थी। १८७० ई०में खेदकरि नामक समुद्रकी खाडीमें मिल कर बहुत बडी हो गई है तथा समुद्रसे सिन्धुनदमें प्रवेश करनेका प्रधान पथ रूपमें परिणत हुई है। इसका पूर्व प्रवेशमुख प्राय ६५ फुट लम्बा है।

हजरत (अ० पु०) १ महापुरुष, महात्मा। २ अत्यन्त आदरका सम्बोधन, महाशय। ३ नटखट या खोटा आदमी।

हजरत सलामत (अ० पु०) १ बादशाहों या नवाबोंके लिये संबोधनका शब्द। २ बादशाह।

हजाम (अ० पु०) हज्जाम देखो।

हजामत (अ० स्त्री०) १ हज्जामका काम। २ बाल बनानेकी मजदूरी। ३ सिर या दाढ़ीके बढे हुए बाल जिन्हें कटाना या मुंडाना हो।

हजार (फा० वि०) सहस्र, जो गिनतीमें दश सौ हो। २ बहुत-से, अनेक। (पु०) ३ दश सौकी संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००। (क्रि०वि०) ४ कितना हो, चाहे जितना अधिक।

हजारहा (फा० वि०) १ सहस्रों, हजारों। २ बहुत से।

हजारा (फा० वि०) १ सहस्रदल, जिसमें हजार या बहुत अधिक पखडियां हों। (पु०) २ फुहारा, फौवारा। ३ एक प्रकारकी आतिशबाजी।

हजारा—एक जाति, यह शब्द शायद पारस्य 'हजार' शब्दसे निकला है। चेङ्गिजखाने जब हजार लोगोंके वासस्थानको दखल किया, तब यहां कमसे कम दश छावनी डाली गई थी। प्रत्येक छावनीमें हजारसे कम सेना नहीं थी। इसीसे पारसिकोंने उसके पासवाले प्रदेशके अधिवासियोंका 'हजारा' नाम रखा था।

हजारा लोग भारतसरकारके अधिकृत प्रदेशकी उत्तर पश्चिम सीमान्तमें रहते हैं। यह प्रदेश अन्यान्य वृटिश गवर्मेण्टके अधिकृत सीमान्तप्रदेशोंसे बड़ा है। पूर्व ओर काबुल, पश्चिम ओर पारस्य सीमान्त, दक्षिण ओर गान्धार और उत्तर ओर बल्ख वेष्टित प्रदेश इनका वासस्थान है।

बाबरके समय तक ये लोग तातार भाषामें बोलचाल करते थे। पीछे इन्होंने पारस्य भाषा और सियाधर्मका अवलम्बन किया। आज भी उत्तर और पश्चिममें इनमेंसे बहुतेरे सुन्नीसम्प्रदायभुक्त हैं। हजारा लोगोंकी भाषामें कुछ तुर्क शब्दोंका भी मेल देखा जाता है। अभी सिर्फ यही उन लोगोंके पूर्व पुरुषकी स्मृति है।

हजारालोग नाना जातियोंमें विभक्त हैं। इनकी प्रधान जातियोंके नाम ये हैं—जाघुरी, खुद, दाहिजंगिङ्गि, और दाहिकुन्दी गौर। इनमेंसे कोई भी हजारा कह कर अपना परिचय नहीं देता। साधारणतः ये लोग काबुली, घिलाज या औगण नामसे परिचित हैं।

ये लोग सबल और अशिक्षित होते हैं तथा मुल्लाकी आज्ञाका पालन करते हैं। इन लोगोंमें जो दलपति है वही विचारकर्त्ता है और उसीका शासन अप्रतिहत है। ये लोग अत्यन्त दरिद्र, पर कर्मठ होते हैं। शीतके समय ये नौकरीकी खोजमें झुण्डके झुण्ड पञ्जाब जाते और वहां कुआं खोदना तथा घर बनाना इत्यादि कार्य्य करके अपनी जीविका चलाते हैं।

ये लोग देशमें साहसी और कर्मक्षम तथा अफगानिस्तानमें विश्वासी और बुद्धिमान् भृत्य समझे जाते हैं। शीतकालमें जब गजनी और काबुल तुषारसे ढका रहता है, तब इनमेंसे हजारों आदमी वहां जा कर काम करते हैं। पहले ही कह आये हैं, कि ये कष्टसहिष्णु और बलिष्ठ होते हैं, इस कारण रास्ते और घरकी छत परसे तुषार हटानेमें इन्हें जरा भी कष्ट मालूम नहीं होता। सिया होनेके कारण अफगान सुन्नी इनके प्रति दास जैसा व्यवहार करते हैं। इनकी स्त्रीजातिमेंसे हजारों दासी प्रत्येक वर्ष इन सब देशोंमें बिकती हैं।

ये लोग कमसे कम पचास दलोंमें विभक्त हैं। इन सब दलोंमें हमेशा जातिगत और धर्मगत दलबंदी हुआ करती है। सिया और सुन्नीमें हमेशा तकरार हुआ करता है, यहां तक, कि एक दूसरेका जानी दुश्मन हो जाता है। इसके सिवा प्रबल दलपति दुर्बलको पराजय कर दूसरे दलको अपने दलके पदानत करनेमें सर्वदा तैयार रहते हैं।

यह जाति युद्धप्रिय है। यहां तक, कि इनकी स्त्रियां भी युद्धमें शामिल हो जाती हैं। शत्रु लोग हिंसा और निष्ठुरताके लिये हजारा पुरुषकी अपेक्षा इनकी स्त्रियोंसे अधिक भय खाते हैं। ये लोग घोड़े दौड़ानेमें जैसे सुदक्ष हैं, वैसे तलवार चलानेमें भी। स्त्रियां किसी भी यूरोपीय सेनासे शारीरिक बल या सामर्थ्यमें कम नहीं हैं। युद्ध और हत्यादि अपराधमें ये पुरुषकी तरह निर्भय हो कर शामिल हो जाती हैं। अलेकसन्दरको भारत पर चढ़ाई करते समय जिन योद्धाओंने बाधा डाली थी, सम्भवतः आधुनिक हजारालोगोंके ही पूर्वपुरुष थे। ये लोग मङ्गोल जातिसे उत्पन्न होनेके कारण आकृतिमें गुर्खाओंसे मिलते जुलते हैं। शरीरका रंग गुर्खाओंसे कुछ साफ होता है।

हजारा—युक्तप्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० ३३° ४४´से ३५° १०´ उ० तथा देशा० ७२° ३३´ से ७४° ६´ पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण २८५८ वर्गमील है।

हजारा जिला एक दीर्घ और सकीर्ण पार्वत्य उपत्यका है। इसके चारों ओर बड़े बड़े पर्वत खड़े हैं। पर्वतोंसे घिरे रहनेके कारण यह उपत्यका और भी कई छोटी छोटी उपत्यकासे विभक्त हुई है। उन छोटी उपत्यकाओंमें अग्रोर, मानसेरा, आबटाबाद और खानपुर उल्लेखयोग्य हैं। उन सब उपत्यकाओंमें फिर बहुत-सी उल्लेखयोग्य नदियां बह गई हैं।

इस जिलेका प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोहर है। नाना प्रकारकी स्थानीय शोभाने इसे भूस्वर्ग बना रखा है। उत्तरमें हिमानी पर्वतके शृङ्ग हमेशा बर्फसे ढके रहते हैं। उन पर मूल्यवान् और वृहत् वनस्पति भी शोभा पा रही हैं। देवदारु और भाऊके पेड़ अधिक संख्यामें दिखाई देते हैं। तमाम हरियाली ही नजर आती है। दक्षिण ओर ढालू पहाड़ पर बहु योजनव्यापी कृषिक्षेत्र है। पहाड़ी नदियां भी इस स्थलकी सौन्दर्यवृद्धिमें सहायता दे रही हैं। हरिपुर और पाखलीके समतल देशोंका उर्वरा बनानेके लिये कृतिम उपायसे नहर काट कर निकाली गई है। प्रत्येक समभूमि समृद्धिशाली ग्राम द्वारा परिपूर्ण है।

नाना प्रकारके भग्नावशेषसे यहां पाये गये हैं। कनिहम साहब अनुमान करते हैं, कि पुराना तक्षशिला प्रदेश हजारा जिला और रावलपिण्डीके अन्तर्गत था। इस देशसे बहुत सी वाकट्रीय मुद्रा आविष्कृत हुई है। कारलाघ हजारा नामक एक तुर्कवंशने तैमूरके साथ आ कर १४वीं सदीमें यह देश अधिकार किया और यहीं राज्य करने लगा। किसी किसीका ख्याल है, कि इसी परिवारसे यह देश हजारा कहलाया। हजारा जाति देखो। पीछे १८वीं सदीके प्रथम भागमें स्वातसे अफगानोंने आ कर समूचा उत्तरीय भाग दखल कर लिया। अनन्तर १८वीं सदीके मध्य भागमें अहमदशाह दुर्रानीने इसका शासनभार ग्रहण किया। किन्तु फिरसे आन्तर्जातिक विप्लव और कलह हो जानेके कारण इसका शीघ्र ही अधःपतन हुआ। १८२६से १८४६ ई० तक यह जिला सिख गवर्मेण्टके अधिकारमें रहा। परन्तु रणजित् सिंहकी मृत्युके बादसे सिख-पराधीनता हजारा लोगोंके निकट दुःसह मालूम होने लगी। १८४५ ई०में वे सबके सब पञ्जाब-सरकारके विरुद्ध बागी हो गये। उन लोगोंने मिल कर सैयद अकबर नामक एक भारतीय मुसलमानको राजपद पर प्रतिष्ठित किया। परन्तु १८३६ ई०में अंगरेजोंकी सन्धि-शर्तोंके अनुसार हजारा जिला काश्मीरराज महाराज गुलाब सिंहको मिला। कुछ समय शासन करनेके बाद महाराजने हजारा जिला अङ्गरेजों को दे दिया। इसके पहले उन्हें जम्मूका दक्षिण सामान्त-प्रदेश मिला। मि० आवट साहबने पहले पहल इस जिलेके राजस्व उगाहनेका सुप्रबन्ध और शासनकी व्यवस्था की। द्वितीय सिख-युद्धके समय हजारा लोगोंने अंगरेजोंकी सहायता पहुंचायी थी। युद्धके बाद हजारा जिला अङ्गरेजोंके दखलमें आया। मि० आवट साहबने हरिपुरसे शासनकेन्द्र अन्यत्र उठा ले जानेकी कल्पना की थी। पीछे उनके निर्दिष्ट स्थानमें ही हजारा जिलेका शासनकेन्द्र प्रतिष्ठित हुआ। उनके सम्मानार्थ इस नये शहरका आवटाबाद नाम रखा गया।

इस जिलेमें आवटाबाद, हरिपुर, नवाशहर और बफा नामक चार शहर और ९१४ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ५ लाखसे ऊपर है। मुसलमानोंकी संख्या सैकड़े पीछे ९५ है। विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पिछड़ा हुआ है। केवल हिन्दू और सिख लोगोंका इस ओर विशेष ध्यान है। अभी कुल मिला कर ८ सिकेण्डरी, ७० प्राइमरी, १७५ एलिमेण्ट्री स्कूल और आवटाबादमें दो ऐङ्गलो वर्नाक्युलर हाई स्कूल हैं। स्कूलके अलावा पांच चिकित्सालय भी हैं।

हजारी (फा० पु०) १ एक हजार सिपाहियोंका सरदार, वह सरदार या नायक जिसके अधीन एक हजार फौज हो। इस प्रकारके पद अकबरने सरदारों और राजाओं महाराजाओं को दे रखे थे। २ व्यभिचारिणीका पुत्र, दोगला।

हजारीबाग—बिहार और उड़ीसाके छोटानागपुर विभागका एक जिला। यह अक्षांश २३° २५´ से २४° ४९´ उ० तथा देशा० ८४ २७´ से ८६ ३४´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ७०२१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें गया और मुङ्गेर, पूर्वमें सन्थालपरगना और मानभूम जिला, दक्षिणमें रांची और पश्चिममें पलामू है। हजारीबाग इस जिलेका सदर है। दामोदरही इस जिलेकी सबसे बड़ी नदी है। ९० मील तक यह नदी हजारीबाग जिलेमें बह गयी है।

१८वीं सदीके मध्यभागसे हजारीबागका इतिहास जाना जाता है। राजा मुकुन्दसिंह रामगढ़के राजा थे। उस समय हजारीबाग रामगढ़के अन्तर्गत था। उनके भाई तेजसिंह सेनानायक थे। छोटानागपुरके राजासे बड़े भाईने रामगढ़की जमींदारी पाई थी। तेजसिंहने

लेफ्टेनाण्ट गाईकी सहायतासे भाई मुकुन्दरामको रामगढसे भगा कर रामगढकी ज़मींदारी अपना ली। जब मुसलमानी अमलके शेष भागमें समस्त राज्यमें विश्रृंखल हो गया तब घटवालोंने हज़ारीबागके पार्श्वस्थ खरकडिहा ग्राम अधिकार कर लिया। कप्तान ब्राउनने सनद दे कर उन लोगोंका करद राज्य स्वीकार किया। १८८० ई०में घटवालोंके मध्य शान्ति स्थापित होनेके बाद रामगढ और खरकडिहा मजिस्ट्रेटके अधीनस्थ एक जिलेमें परिणत हुआ। १८३३ ई०में कोल-विद्रोहके बाद छोटानागपुर जिलेके राज्यशासनकी व्यवस्था एकदम बदल गई। खरकडिहा केन्द्री, कुन्दा परगना और रामगढको ले कर हज़ारीबाग नामका एक जिला कायम किया गया।

इस जिलेमें छः कोयलेकी खान है। यहांके अनेक स्थानोंसे तांबे, लोहे और टीनकी खान आविष्कृत हुई हैं। इसमें हज़ारीबाग, छतरा और गिरिडीह नामक ३ शहर और ८८४८ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ११ लाखसे ऊपर है। हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। हिन्दुओंमें अहीर और भुंइया लोग ही अधिक संख्यामें वास करते हैं। यहां की प्रधान उपज अगहनी धान, जुनहरी, मडुआ, गोदली, उड़द, अरहर, कुरथी, गेहूं, चना, खेसारी, मडुआ और जई है।

विद्याशिक्षामें यह जिला बहुत पीछे पड़ा हुआ है। अभी इस ओर लोगोंका ध्यान कुछ कुछ आकृष्ट हुआ है। जिले भरमें ७०० प्राइमरी, २० सेकेण्डरी और ४० स्पेशल स्कूल हैं। इनमेंसे डबलिन युनिवर्सीटी मीशन फस्ट ग्रेड कालेज और रिफमेटेरी प्रधान हैं। स्कूलके अलावा सात चिकित्सालय हैं जिनमेंसे पांचमें रोगी रखे जाते हैं। यहांकी आबहवा कुल मिला कर अच्छी है।

२ उक्त जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २३ २५´से २४´२८ उ० तथा देशा० ८४´ २७´से ८६´७´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५०१६ वर्गमील है। जनसंख्या ७ लाखसे ऊपर है। इसमें छतरा और हज़ारीबाग नामक २ शहर और ५४४० ग्राम लगते हैं।

३ उक्त जिलेका प्रधान शहर। यह अक्षा० २३´५६´ उ० तथा देशा० ८५´ २२´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या १३ हजारसे ऊपर है। शहरके दक्षिण-पूरबमें छावनी है। यहां सरकारी अदालत और सेण्ट्रल जेल है जिसमें डेढ हज़ारके लगभग कैदी रखे जाते हैं। यहांके रिफार्मेटरी स्कूलमें कपड़ा बिनने, जूता बनाने, खेतीबारी करने, दर्जी, बढ़ई, मोची और सोनार आदिके काम सिखाये जाते हैं।

हज़ारों (फा० वि०) १ सहस्रों। २ बहुतसे, अनेक।

हज़ूर (अ० पु०) हुज़ूर देखो।

हज़ूरी (अ० पु०) किसी बादशाह या राजाके सदा पास रहनेवाला सेवक।

हजो (अ० स्त्री०) अपकीर्त्ति, निन्दा।

हज्ज (अ० पु०) हज देखो।

हज्जाम (अ० पु०) युक्तप्रदेश और विहारवासी नाई। ये लोग हज्जाम, नाई, नाऊ, नौआ आदि नामोंसे परिचित हैं। इन लोगोंमें सात श्रेणी या दल देखे जाते हैं, यथा—१ अवधिया (अयोध्यावासी), २ कनौजिया या ब्याहुत, ३ तिरहुतिया, ४ श्रीवास्तव या वास्तव, ५ मघैया। ६ बंगाली और ७ तुर्क नौआ। पहलेके छः हिन्दू और तुर्क नौआ मुसलमान हैं।

इन लोगोंमें विधवा-विवाह चलता है। विधवा अक्सर देवरसे ही विवाह कर लेती है। पलामू और सथाल परगनेमें परित्यक्त स्त्रियां सगाई प्रथासे परपुरुषको ग्रहण कर सकती हैं। साधारण हिन्दूसमाजकी तरह इन लोगोंमें भी अनेक धर्मसम्प्रदाय और धर्ममत प्रचलित हैं। कनौजिया या श्रोत्रिय ब्राह्मण ही इनका पुरोहिताई करते हैं। बिहारके हज्जाम अन्यान्य देवपूजाके सिवा बेणीराम या गोरइया नामक एक ग्राम्यदेवताके उद्देश्यसे खस्सी, गुड़, मिष्टान्न, पान सुपारी और गांजा चढ़ाते हैं। धर्मदास नामक इनके एक स्वजातीय महापुरुषकी पूजा भी जहां तहां प्रचलित है। ये लोग तेरहवें दिनमें मृतके उद्देशसे श्राद्ध करते हैं। तुर्क या मुसलमान हज्जामको छोड़ बाकी सभी श्रेणियोंके हाथका ब्राह्मण लोग जल पीते हैं। ब्राह्मण, राजपूत, बाभन और उच्चश्रेणीके बनिया लोगोंके घर ये खाते पीते हैं। हिन्दूके जातकर्म विवाहादि सभी प्रधान संस्कारोंमें हज्जामकी जरूरत पड़ती है। किन्तु तुर्क हज्जामको हिन्दूसमाजमें घुसनेका

एक दम अधिकार नहीं है। अब ये लोग खेतीवारी करने लग गये हैं।

हञ्जा (सं० अव्य०) नाट्योक्तिमें चेटीसम्बोधन।

हञ्जि (सं० पु०) क्षुत्, छींक।

हञ्जिका (सं० स्त्री०) भार्गी, वरङ्गी।

हञ्जे (सं० अव्य०) नाट्योक्तिमें चेटी सम्बोधन।

हट (हिं० स्त्री०) हठ देखो।

हटकन (हिं० स्त्री०) १ वर्जन, मना करना। २ चौपायोंको फेरनेका काम, हाँकना। ३ चौपायोंको हाँकनेकी छड़ी या लाठी।

हटकना (हिं० क्रि०) १ निषेध करना, मना करना। २ चौपायोंको किसी ओर जानेसे रोक कर दूसरी ओर फेरना, रोक कर दूसरी तरफ हाँकना।

हटका (हिं० पु०) किवाड़ोंको खुलनेसे रोकनेके लिये लगाया हुआ काठ, किल्ली।

हटतार (हिं० स्त्री०) मालाका सूत।

हटताल (हिं० स्त्री०) किसी कर या महसूल अथवा और किसी बातसे असंतोष प्रकट करनेके लिये दूकानदारोंका दूकान बन्द कर देना।

हटना (हिं० क्रि०) १ किसी स्थानको त्याग कर दूसरे स्थान पर हो जाना, खिसकना, सरकना। २ पीछेकी ओर धीरे धीरे जाना, पीछे सरकना। ३ विमुख होना, जी चुराना। ४ सामनेसे दूर होना, सामनेसे चला जाना। ५ किसी बातका नियत समय पर न हो कर और आगे किसी समय होना। ६ दूर होना, न रह जाना। ७ व्रत, प्रतिज्ञा आदिसे विचलित होना, बात पर दृढ़ न रहना।

हटनी उड़ी (हिं० स्त्री०) मालखंभकी एक कसरत। इसमें पीठके बल हो कर ऊपर जाते हैं।

हटपर्णी (सं० स्त्री०) शैवाल, सेंवार।

हटवया (हिं० पु०) हाट या बाजारमें बैठ कर सौदा बेचनेवाला, दूकानदार।

हटवाना (हिं० क्रि०) हटनेका काम दूसरेसे कराना।

हटाना (हिं० क्रि०) १ एक स्थानसे दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना। २ किसी स्थान पर न रहने देना, दूर करना। ३ आक्रमण द्वारा भगाना, स्थान छोड़ने पर विवश करना। ४ किसी कामका करना या किसी बातका विचार या प्रसंग छोड़ना। ५ किसी व्रत, प्रतिज्ञा आदिसे विचलित करना, डिगाना।

हटुवा (हिं० पु०) १ दूकानदार। २ अनाज तौलनेवाला, बया।

हटौती (हिं० स्त्री०) शरीरका ढाँचा, देहकी गठन।

हट्ट (सं० पु०) १ बाजार। २ दूकान।

हट्टचौरक (सं० पु०) बाजारमें घूम कर चोरी करने या माल उचकनेवाला, गिरहकट।

हट्टविलासिनी (सं० स्त्री०) १ गन्धद्रव्यविशेष। २ हरिद्रा, हल्दी। ३ वाराङ्गना, वेश्या।

हट्टाकट्टा (हिं० वि०) हृष्ट पुष्ट, मोटा ताजा।

हट्टाध्यक्ष (सं० पु०) हट्टका अध्यक्ष, बाजारका मालिक।

हट्टीपाल—देशावलिवर्णित नाटोरसे ३ योजनकी दूरी पर अवस्थित एक प्राचीन ग्राम।

हठ (सं० पु०) १ बलात्कार, जबरदस्ती। २ शत्रु पर पीछेसे आक्रमण। ३ अवश्य होनेकी क्रिया या भाव। ४ दुराग्रह, जिद, टेक। ५ दृढ़ प्रतिज्ञा, अटल संकल्प। ६ हठयोग।

हठपर्णी (सं० स्त्री०) शैवाल।

हठधर्म (सं० पु०) दुराग्रह, कट्टरपन।

हठधर्मी (सं० स्त्री०) १ सत्य असत्य, उचित अनुचितका विचार छोड़ कर अपनी बात पर जमे रहना। २ अपने मत या सम्प्रदायकी बात ले कर अड़नेकी क्रिया या प्रवृत्ति।

हठयोग (सं० पु०) योगविशेष, परमात्मसाधक योग। योग दो प्रकारका है, राजयोग और हठयोग। हठयोगी यह योग करके परमात्मतत्त्व पाते हैं। योगस्वरोदयमें लिखा है, कि हठात् सिद्धिलाभ होनेके कारण इसका हठयोग नाम हुआ है। हठयोग करनेमें पहले आसनसिद्धि कर रेचक, पूरक और कुम्भक द्वारा वायुजय, पीछे धौती आदि षट्कर्मोंका अनुष्ठान करना होगा। इन सब कर्मोंका अनुष्ठान करनेसे मन निश्चल और आनन्दपूर्ण होता है। यह हठयोग करनेमें समयका कोई नियम नहीं है। सिवा इसके और भी एक प्रकार भेद है। आकाश या नासिकाग्र पर सूर्य कोटिसम श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण इत्यादि रूपमें ध्यान करे। इस प्रकार ध्यान करते करते हठात् ज्योतिर्मय रूप दिखाई देगा।

जो हठयोग करेंगे उन्हें पहले सभी कदाचारका वर्जन कर पुण्यतीर्थादिमें स्नानादि द्वारा पवित्र हो लेना चाहिये। पीछे वे गुरुके उपदेशानुसार धीरे धीरे सभी योगक्रिया करें। गुरु जैसा उपदेश देंगे, उन्हें भी ठीक वैसा ही करना होगा। उसका व्यतिक्रम करनेसे सिद्धि लाभ करनेमें विलम्ब होता है। 'योगे रोगभयं' यह योगानुष्ठान करनेमें रोगका भय है, रोग होगा, इस डरसे योगानुष्ठान करनेसे हाथ न खींचें। रोग होने पर गुरु उसका प्रतिकार करेंगे। योगजन्य जो रोग होता है, लौकिक औषध आदिसे उसका कोई भी प्रतिकार नहीं होता।

कामक्रोधादि सभी इन्द्रियोंको जीत कर यह योग करना होगा। इस योगानुष्ठानकालमें स्त्रीसेवन, अभक्ष्य-भोजन आदि करनेसे योग भंग होता है। आहार द्वारा सत्त्वशुद्धि होती है। अतएव जिस द्रव्यसे सत्त्वगुण-की वृद्धि न हो वैसा आहार एकदम छोड़ देना चाहिये। इस अवस्थामें अति लघु भोजन करना होता है।

हठयोगीको उचित है, कि वे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्य, धृति, क्षमा, दया, ऋजुता, मिताहार, शौच, तपः, आस्तिक्य, दान, ईश्वरपूजन, शास्त्रका सिद्धान्तवाक्य श्रवण अर्थात् शास्त्रके विचारादि त्याग कर जो सब मीमांसा सिद्धान्तित हुई है, सर्वदा उन्हीं सब वाक्योंका श्रवण और उचित कार्यानुष्ठान करें।

हठयोगी इस योगानुष्ठानकालमें बहुत सवेरे शिरः स्नान न करें अर्थात् जलसे मस्तक न धो डालें। प्रातः-स्नान इस योगीके लिये अनिष्टकारक है। स्नानकी आव-श्यकता होने पर मध्याह्नकालमें कुछ गरमजलसे स्नान करना उचित है। ठण्ढे जलसे स्नान करना बिलकुल निषेध है।

योगानुष्ठानकालमें दिवानिद्रा, रात्रिजागरण, चिन्ता और जिससे आत्माको क्लेश हो, उन सबका परित्याग करे। प्राणायाम करते करते जब खूब थकावट मालूम होने लगे, तब कुछ विश्राम करना आवश्यक है।

इसके बाद त्राटक द्वारा कूर्म वायुको जय, मूलबन्ध द्वारा अपान वायुको जय, जालन्धर द्वारा समान वायु आदिको जय करे। इस प्रकार सभी वायुको जय कर आसनसाधन करना होता है। इस सब आसनोंका लक्षण योग शब्दमें लिखा जा चुका है। योग देखो।

फलतः इस हठयोगमें वायुजय ही प्रधान है। जब तक देहमें वायु रहती है, तब तक जीवन रहता है। अतएव यह हठयोगी वायुजय कर हमेशा जीवित रह सकता है।

हठयोगी शीतलीकुम्भक, भस्त्रिका, भ्रमरीकुम्भक, मूर्च्छनाकुम्भक, संहितकुम्भक, केवलकुम्भक आदिका अनुष्ठान करें। मुद्रामहाबन्ध, महावेध, खेचरी मुद्रा, मूलबन्ध, जालन्धरबन्ध, विपरीतकरण, लम्बिकाच्छेदन, नादानुसंधान, आरम्भावस्था, घटावस्था, परिचयावस्था, निष्ठावस्था आदिका भी उन्हें अनुष्ठान करना होगा।

हठयोगका फल—हठयोगी पूर्वोक्त विधानसे यदि योगानुष्ठान करें, तो वे समाधि लाभ कर परमात्मतत्त्व-को पाते हैं। तब उनके जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, रोग, शोक, ताप और सुखदुःखका लय होता है। पीछे वे स्वात्माराम हो कर परमानन्द उपभोग करते हैं।

(हठस०) योग शब्द देखो।

हठविद्या (सं० स्त्री०) हठयोग।

हठशील (सं० त्रि०) हठी, जिद्दी।

हठात् (स० अव्य०) १ हठपूर्वक, दुराग्रहके साथ। २ बलात्, जबरदस्तीसे। ३ अवश्य, जरूर।

हठात्कार (सं० पु०) बलात्कार, जबरदस्ती।

हठालु (सं० स्त्री०) कुम्भिका, जलकुम्भी।

हठिका (सं० स्त्री०) कोलाहल, शोर।

हठी (सं० स्त्री०) वारिपर्णी, जलकुम्भी।

हठी (हिं० वि०) हठ करनेवाला, जिद्दी, टेकी।

हठीला (हिं० वि०) १ हठी, जिद्दी। २ दृढ़प्रतिज्ञ, बात-का पक्का। ३ लड़ाईमें जमा रहनेवाला, धीर।

हड़ (हिं० स्त्री०) १ एक बड़ा पेड़ जिसके पत्ते महुएसे चौड़े चौड़े होते हैं और शिशिरमें झड़ जाते हैं। विशेष विवरण हरीतकी शब्दमें देखो। २ एक प्रकारका गहना जो हड़के आकारका होता और नाकमें पहना जाता है, लटकन।

हड़क (हिं० स्त्री) १ पागल कुत्तेके काटने पर पानीके लिये गहरी आकुलता। २ किसी वस्तुको पानेकी गहरी झक, पागल करनेवाली चाह।

हड़कत (हिं॰ स्त्री॰) हड़जोड़ देखो।

हड़कना (हिं॰ क्रि॰) किसी वस्तुके अभावसे दुःख होना, तरसना।

हड़काना (हिं॰ क्रि॰) १ आक्रमण करने, घेरने, तङ्ग करने आदिके लिये पीछे लगा देना, लहकारना। २ कोई वस्तु मांगनेवालेको न देकर भगा देना, नाहीं करके हटा देना। किसी वस्तुके अभावका दुःख देना, तरसाना।

हड़काया (हिं॰ वि॰) १ पागल, बावला। २ किसी वस्तुके लिये उतावला, घबराया हुआ।

हड़गिल्ल (हिं॰ पु॰) हड़गीला देखो।

हड़गीला (हिं॰ पु॰) बगलेकी जातिका एक पक्षी। इसकी टांगें और चोंच बहुत लंबी होती है।

हड़जोड़ (हिं॰ पु॰) एक प्रकारकी लता। इसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर गांठें होती हैं। यह भीतरी चोटके स्थान पर लगाई जाती है। कहते हैं, कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल (हिं॰ स्त्री॰) किसी कर या महसूलसे अथवा और किसी बातसे असंतोष प्रकट करनेके लिये दूकानदारोंका दूकान या काम करनेवालोंका काम बन्द कर देना।

हड़ना (हिं॰ क्रि॰) तौलमें जांचा जाना।

हड़प (हिं॰ वि॰) १ पेटमें डाला हुआ, निगला हुआ। २ अनुचित रीतिसे ले लिया हुआ, गायब किया हुआ।

हड़पना (हिं॰ क्रि॰) १ मुंहमें डाल लेना, खा जाना। २ दूसरेकी वस्तु अनुचित रीतिसे ले लेना।

हड़फूटन (हिं॰ स्त्री॰) शरीरके भीतरका वह दर्द जो हड्डियोंके भीतर तक जान पड़े, हड्डियोंकी पीड़ा।

हड़फूटनी (हिं॰ स्त्री॰) चमगादड़। लोग चमगादड़की हड्डीकी गुरिया पैरके दर्दमें पहनते हैं।

हड़फोड़ (हिं॰ पु॰) एक प्रकारकी चिड़िया।

हड़बड़ (हिं॰ स्त्री॰) जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गतिविधि, उतावलेपनकी मुद्रा।

हड़बड़ाना (हिं॰ क्रि॰) शीघ्रताके कारण कोई काम घबराहटसे करना, जल्दी करना। २ किसीको जल्दी करनेके लिये कहना।

हड़बड़िया (हिं॰ वि॰) आतुरता प्रकट करनेवाला, उतावला।

हड़बड़ी (हिं॰ स्त्री॰) १ शीघ्रता, उतावली। २ शीघ्रताके कारण आतुरता, जल्दीके कारण घबराहट।

हड़हड़ाना (हिं॰ क्रि॰) शीघ्रता करनेकी प्रेरणा करना, जल्दी मचा कर दूसरेको घबराना।

हड़हा (हिं॰ पु॰) १ जंगली बैल। २ वह जिसने किसीके पुरखेका हत्याकी हो। (वि॰) ३ जिसकी देहमें हड्डियां ही रह गई हों, बहुत दुबला पतला।

हड़ा (हिं॰ पु॰) १ चिड़ियोंको उड़ानेका शब्द जो खेतके रखवाले करते हैं। २ पथरकला बन्दूक।

हड़ावल (हिं॰ स्त्री॰) १ हड्डियोंकी पंक्ति या समूह। २ हड्डियोंका ढांचा, ठठरी। ३ हड्डियोंकी माला।

हड़ि (सं॰ पु॰) प्राचीन कालकी काठकी बेड़ी जो पैरमें डाल दी जाती थी।

हड़िक (सं॰ पु॰) नीच जातिविशेष, हाड़ी।

हड़ीला (हिं॰ वि॰) १ जिसमें हड्डी हो। २ जिसकी देहमें केवल हड्डियां ही रह गई हों, बहुत दुबला पतला।

हड़ुवा (हिं॰ स्त्री॰) कश्कमें मिलनेवाली एक प्रकारकी हल्दी।

हड्ड (सं॰ क्ली॰) अस्थि, हड्डी।

हड्डक (सं॰ पु॰) नीच जाति विशेष, हाड़ी।

हड्डचन्द्र (सं॰ पु॰) हड्डचन्द्र, अमरकोषके एक टीकाकार।

हड्डज (सं॰ क्ली॰) मज्जा या अस्थिसे उत्पन्न।

हड्डा (हिं॰ पु॰) पतङ्ग जातिका एक कीट। यह मधुमक्खियोंके समान छत्ता बना कर अंडे देता है, भिड़, बर्रे।

हड्डि—नीच जातिविशेष, हाड़ी, भंगी। मलमूत्र उठाना इस जातिकी जीविका है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमें चाण्डालोके गर्भ और लेट जातिके औरससे इस जातिका होना बताया है। हाड़ी देखो।

हड्डिप (सं॰ पु॰) मलेग्रहि, भंगी।

हड्डी (हिं॰ स्त्री॰) अस्थि। विशेष विवरण अस्थि शब्दमें देखो।

हण्डा (सं॰ अव्य॰) १ नाट्योक्तियोंमें नीच सम्बोधन। (स्त्री॰) २ मृत्पात्र, मिट्टीका बरतन, हांडी।

हण्डिका (सं॰ स्त्री॰) मृत्पात्रविशेष, हांडी।

हण्डिकासुत (सं० पु०) क्षुद्र हण्डिका, छोटी हाडी।

हण्डो (सं० स्त्री०) हण्डिका, हाडो।

हण्डे (सं० अव्य०) नाट्योक्तिमें नीच सम्बोधन।

हत (सं० त्रि०) हन क्त। १ आशारहित, जिसकी आशा न रह गई हो। २ विनष्ट, बिगाडा हुआ, खराब किया हुआ। ३ वध किया हुआ, मारा हुआ। ४ जिस पर आघात किया गया हो पोटा हुआ। ५ खोया हुआ, गंवाया हुआ। ६ जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ७ तङ्ग किया हुआ, हैरान। ८ ग्रस्त, पोडित। ६ स्पर्श किया हुआ, लगा हुआ। १० निकृष्ट, निकम्मा। ११ गुणित, गुणा किया हुआ।

हतक (सं० पु०) नीच मनुष्य।

हतक (अ० स्त्री०) अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

हतक इज्जती (अ० स्त्री०) अप्रतिष्ठा, मानहानि।

हतचूर्णक (सं० पु०) सोमलता।

हतज्ञान (सं० त्रि०) ज्ञान-शून्य, अचेतन।

हतदैव (सं० त्रि०) अभागा।

हतना (हि० क्रि०) १ वध करना, मार डालना। २ अन्यथा करना, पालन न करना।

हतपितृ (सं० त्रि०) जिसका पिता मारा हुआ हो। वेदमें ही इस शब्दका प्रयोग देखनेमें आता है।

हतपुत्र (सं० त्रि०) मृतपुत्र, जिसका लडका मर गया हो।

हतप्रभ (सं० त्रि०) प्रभा-रहित, जिसकी कान्ति या तेज नष्ट हो गया हो।

हतप्रभाव (सं० त्रि०) १ जिसका प्रभाव न रह गया हो, जिसका असर जाता रहा हो। २ जिसका अधिकार न रह गया हो, जिसकी बात कोई न मानता हो।

हतबुद्धि (सं० त्रि०) बुद्धिशून्य, मूर्ख।

हतभाग्य (सं० त्रि०) भाग्यहीन, बदकिस्मत।

हतमातृ (सं० त्रि०) जिसकी माता मर गई हो।

हतमूर्ख (सं० त्रि०) गण्डमूर्ख, अत्यन्त मूर्ख।

हतवर्चस् (सं० त्रि०) तेजोहीन, जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

हतवाना (हिं० क्रि०) वध कराना, मरवाना।

हतवीर्य (सं० त्रि०) शक्तिहीन, बलरहित।

हतवृत्त (सं० त्रि०) काव्यका एक दोष। जहां श्लोकके छन्द और यतिभङ्ग आदि होते हैं वहां यह दोष होता है।

हतवृष्णी (सं० स्त्री०) जिन सब स्त्रियोंके वृत्त हुआ है, वे सब निवारणरहित स्त्री।

हतस्वर (सं० त्रि०) स्वरभङ्ग, जिसकी आवाज बैठ गई हो।

हतस्वसृ (सं० त्रि०) जिसकी बहिन मर गई है।

हता (सं० त्रि०) व्यभिचारिणी, नष्ट चरित्रकी।

हतादर (सं० त्रि०) १ अवज्ञात, जिसका आदर घट गया हो। २ असम्मान, अमर्यादा।

हताद्यशस (सं० त्रि०) पापनिवृत्तक। (शुक्लयजु० २८।१७)

हताधिमन्थ (सं० पु०) सर्वगत अक्षिरोगविशेष। नेत्ररोग देखो।

हताध्वर (सं० पु०) महादेव। सतीके प्राण विसर्जनका हाल सुन कर महादेवने बडे क्रुद्ध हो दक्षका यज्ञ विध्वंस कर डाला, इसीसे उनका हताध्वर नाम पडा है।

हताना (हिं० क्रि०) हतवाना देखो।

हताश (सं० त्रि०) १ निर्दय, कठोर। २ आशारहित, जिसकी आशा न रह गई हो। ३ पिशुन, दुर्जन। (पु०) ४ वन्ध्य, बांझ।

हताहत (सं० त्रि०) मारे गये और घायल।

हति (सं० स्त्री०) १ अपकर्ष। २ हत्या, हनन। ३ व्याघात। ४ ताडन।

हतोत्साह (सं० त्रि०) जिसे कुछ करनेका उत्साह न रह गया हो, जिसे कोई बात करनेकी उमंग न हो।

हतौजस् (सं० त्रि०) तेजोहीन, कमजोर। (पु०) २ दौर्बल्य-सहकृत ज्वर।

हत्था (हिं० पु०) १ किसी बडे और भारी यन्त्रका वह भाग जो हाथसे पकडा जाता हो। इसे दस्ता या मूठ भी कहते हैं। २ तीन हाथके करीब लम्बा लकडीका बल्ला। यह एक छोर पर हाथकी हथेलीके समान चौडा और गहरा होता है। इससे खेतकी नालियोंका पानी चारों ओर उलीचा जाता है। ३ रेशमी कपडे बुननेवालोंके करघेमें लकडीका वह ढांचा जो छतसे लगा कर नीचे लटकाया और इधर उधर झूलता रहता है। ४ सुर्खी लिये पीला या मटमैला एक प्रकारका भद्दा रंग। ५ निवार बुननेमें लकडीका एक यन्त्र। यह एक ओर कुछ पतला होता है और कंघीकी भांति सूत बैठानेके

कामसें आता है। ६ केलेके फलोंका घोद या गुच्छा। ७ पत्थर या ईंट जो दंड करते समय हाथके नीचे रखी जाती है। ८ गड़ेरियोंका वह यन्त्र जिससे वे कंबल बुनते समय पटिया ठोकते हैं। ६ ऐपनसे बना हाथके पंजेका चिह्न जो पूजन आदिके अवसर पर दीवार पर बनाया जाता है, हाथका छापा।

हत्थाजड़ी (हिं० स्त्री०) भारतमें मिलनेवाला एक छोटा पौधा। इसकी पत्तियां सुगन्धित होती हैं। पत्तियोंका रस घाव और फोड़े आदि पर रखा जाता है। बिच्छू और भिड़के डंक मारे हुए स्थान पर भी इसे लोग लगाते हैं। संस्कृतमें इसका नाम हस्तिशुण्ड है।

हत्थी (हिं० स्त्री०) हत्था, मूंठ। २ कड़ाहेमें ईखका रस चलानेकी एक लकड़ी। ३ घोड़ोंका बदन पोछनेका एक ऊनी थैला जो गोमुखीकी तरहका होता है। ४ चमड़ेका एक टुकड़ा। इसे छीपी रंग छापते समय हाथमें लगा लेते हैं। ५ एक लकड़ी जो बारह गिरह लम्बी होती है। इसमें पीतलके छः दांत लगे रहते हैं और यह कपड़ा बुनते समय उसे ताने रहनेके लिये लगाई जाती है।

हत्थे (हिं० क्रि० वि०) हाथमें।

हत्थेदण्ड (हिं० पु०) वह कसरत या दण्ड जो ऊंची ईंट या पत्थर पर हाथ रख कर किया जाता है।

हत्नु (सं० पु०) हन्ति शरीरमिति हन (कृहनिभ्यां क्त्नुः। उण् ३।२९) इति क्त्नुः (अनुदात्तोपदेशेति। पा ६।४।३७) इति अनुनासिकलोपः। १ व्याधि, रोग। २ शस्त्र, हथियार। (त्रि०) ३ हननशील, मारने योग्य।

हत्या (सं० स्त्री०) १ वध, खून। २ झंझट, बखेड़ा।

हत्यारा (हिं० पु०) हत्या करनेवाला, जान लेनेवाला।

हत्यारी (हिं० स्त्री०) १ हत्या करनेवाली, प्राण लेनेवाली। २ हत्याका पाप, प्राणदण्डका दोष।

हथ (सं० पु०) विषण्ण, उदास।

हथ (हिं० पु०) हाथका संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार समस्त पदोंमें होता है।

हथ उधार (हिं० पु०) वह कर्ज जो थोड़े दिनोंके लिये यों ही बिना किसी प्रकारकी लिखा पढ़ीके लिया जाय, हथफेर।

हथकंडा (हिं० पु०) १ हस्तलाघव, हाथकी सफाई। २ गुप्त चाल, चालाकीका ढङ्ग।

हथकड़ी (हिं० स्त्री०) डोरीसे बन्धा हुआ लोहेका कड़ा जो कैदीके हाथमें इसलिये पहना दिया जाता है, कि वह भाग न सके।

हथकरा (हिं० पु०) १ चमड़ेका दस्ताना जो चारेके लिये कंटीले झाड़ काटते समय पहना जाता है। २ कपड़े या रस्सीका वह टुकड़ा जो धुनियेकी कमानमें बंधा रहता है। इसे धुनिए हाथसे पकड़े रहते हैं।

हथकरी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका ताला जो दूकानके किवाड़ोंमें लगा हुआ होता है। यह एक कड़ीसे जुड़े हुए लोहेके दो कड़ोंके रूपमें होता है और दोनों ओर तालेके अड्डे की तरह खुला रहता है। इसीमें हाथ डाल कर कुञ्जी लगा दी जाती है।

हथकल (हिं० पु०) १ पेंच कसनेके लिये लुहारोंका एक औजार। २ तार ऐंठनेके लिये एक औजार। यह आठ अंगुलका होता है और इसमें पेचकस लगा होता है। ३ करघेकी दो डोरियां जिनका एक छोर तो हत्थेके ऊपर बंधा रहता है और दूसरा लपमें।

हथकोड़ा (हिं० पु०) कुश्तीका एक पेंच।

हथखंडा (हिं० पु०) हथकंडा देखो।

हथछुट (हिं० वि०) जिसका हाथ मारनेके लिये बहुत जल्दी छूटता या उठता हो, जिसको मार बैठनेकी आदत हो।

हथधरी (हिं० स्त्री०) लकड़ीकी पटरी जो नावसे लगा कर जमीन तक दो आदमी इसलिये पकड़े रहते हैं जिसमें उस परसे हो कर लोग उतर जायें।

हथनाल (हिं० पु०) वह तोप जो हाथियों पर चलती थी, गजनाल।

हथनी (हिं० स्त्री०) हाथीकी मादा।

हथफूल (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी आतशबाजी। २ हथेलीकी पीठ पर पहननेका एक जड़ाऊ गहना। यह सिकड़ियोंके द्वारा एक ओर तो अंगूठियोंसे बंधा रहता है और दूसरी ओर कलाईसे।

हथफेर (हिं० पु०) १ प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरनेकी क्रिया। २ रुपये पैसेके लेन देनके समय हाथसे

कुछ चालोंको करना जिससे दूसरेके पास कम या खराब सिक्के जायें। ३ दूसरेके मालको चुपचाप ले लेना, किसीकी वस्तु या धनको सफाईसे उड़ा लेना। ४ थोड़े दिनों के लिये विना लिखा पढ़ीके लिया या दिया हुआ कर्ज।

हथबेंटा (हिं० पु०) एक प्रकारकी कुदाली जो खड़े गन्ने काटनेके काममें आती है।

हथरकी (हिं० स्त्री०) चमड़े की थैली। कोल्हूमें गन्ने डालनेवाला इसे हाथमें पहनते हैं।

हथलो (हिं० स्त्री०) चरखेकी मुठिया जिसे पकड़ कर चरखा चलाया जाता है।

हथलेवा (हिं० पु०) पाणिग्रहण।

हथवांस (हिं० पु०) नाव चलानेका सामान।

हथवांसना (हिं० क्रि०) व्यवहार करना।

हथवा—विहारके सारण जिलान्तर्गत एक राज्य। भूपरिमाण ५६१ वर्गमील और जनसंख्या ६ लाखके करीब है। विहारमें जितने कुलीन राजवंश हैं, उनमेंसे यह वंश सबसे प्राचीन माने जाते हैं। सौसे ऊपर पीढ़ियोंसे यह वंश सारण जिलेमें रहते आये हैं। बनारस, बेतिया और टिकारीके महाराजको तरह यह राज भी भूमिहार ब्राह्मणवंशोद्भव हैं। इस राज्यका प्राचीन इतिहास मालूम नहीं, महाराज फतह साहीसे आज तक जो मालूम है वह नीचे लिखा गया है—

१७६५ ई०में जब इष्ट इण्डिया कम्पनीको बंगाल और विहारकी दीवानी मिली, तब फतह साहीने कर देना अस्वीकार कर दिया। इस पर कम्पनीने उनके विरुद्ध सेना भेजी। ये बड़े मुश्किलसे गोरखपुर और सारणके मध्यवर्त्ती जंगलमें भाग गये। वहींसे वे वृटिश राज्य पर चढ़ाई करते रहे और १७७५ ई० तक उन्हें नाकों-दम लाये। कुछ वर्षों तक यह राज्य गवर्मेण्टके खास इन्तेजाममें रहा। पीछे १७९१ ई०में लार्ड कार्नवालिसने फतह साहीके भाईके पोते छत्रधारी साहीको राज्य प्रदान किया। १८३७ ई०में उन्हें महाराज बहादुरकी उपाधि दी गई। १८५७ ई०के गदरमें उन्होंने अच्छी राजभक्ति दिखलाई थी। इस कारण शाहाबाद जिलेमें जब्त किये हुए कुछ ग्राम उन्हें पुरस्कारमें मिले। महाराज छत्रसाही बहादुरका १८५८ ई०में देहान्त हुआ। पीछे उनके प्रपौत्र महाराज राजेन्द्र प्रताप साही राजसिंहासन पर बैठे। १८९६ ई०में आप एक सुपुत्र महाराज गुरु महादेवाश्रम प्रसाद साही बहादुरको छोड़ परलोक सिधारे। आप ही वर्त्तमान राजा हैं। आपका सुन्दर प्रासाद सिवानसे १२ मील उत्तर हथवामें अवस्थित है। आपकी माताजी द्वारा प्रतिष्ठित विक्टोरिया अस्पतालसे जनसाधारणका बड़ा उपकार हो रहा है। आप धीर, शान्त, सच्चरित्र और विद्यानुरागी हैं।

हथसंकर (हिं० पु०) हथेलीकी पीठ पर पहननेका एक गहना। इसका आकार फूल-सा होता है और इसमें पतली सिकड़ियां लगी होती हैं।

हथसांकला (हिं० पु०) हथसंकर देखो।

हथसार (हिं० स्त्री०) वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं, फीलखाना।

हथा (हिं० स्त्री०) गीले पिसे हुए चावल और हल्दी पोत कर बनाया हुआ पञ्जेका चिह्न।

हथिनी (हिं० स्त्री०) हाथीकी मादा।

हथिया (हिं० पु०) १ हस्ता नक्षत्र। (स्त्री०) २ जुलाहेकी कंघीके ऊपरकी लकड़ी।

हथियाना (हिं० क्रि०) १ अधिकारमें करना, हाथमें करना। २ हाथमें पकड़ना, हाथसे पकड़ कर काममें लाना। ३ दूसरेकी वस्तु धोखा दे कर ले लेना, उड़ा लेना।

हथियार (हिं० पु०) १ वह वस्तु जिसकी सहायतासे कोई काम किया जाय, औजार। २ अस्त्र शस्त्र, तलवार भाला आदि आक्रमण करने या मारनेका साधन। ३ लिङ्गेन्द्रिय।

हथियारबन्द (हिं० वि०) सशस्त्र, जो हथियार बान्धे हो।

हथुआ—हथवा देखो।

हथुई मिट्टी (हिं० स्त्री०) गीली मिट्टीका वह लेप जो कच्ची दीवारका खुरदरापन दूर करनेके लिये लगाया जाता है।

हथुई रोटी (हिं० स्त्री०) वह रोटी जो गीले आटेको हाथसे गढ़ कर बनाई गई हो।

हथेरा (हिं० पु०) लकड़ीका बल्ला जो तीन साढ़े तीन हाथ लम्बा होता है। इसका एक सिरा हथेलीकी तरह चौड़ा होता है। इससे खेतोंकी नाली या पानी चारों ओर सिंचाईके लिये उलीचते हैं। इसका दूसरा नाम हाथा भी है।

हथेल (हिं० स्त्री०) वह लम्बी कमाची जिस पर बुना हुआ कपड़ा तान कर रखा जाता है।

हथेली (हिं० स्त्री०) १ हाथकी कलाईका चौड़ा सिरा जिसमें उंगलियाँ लगी होती हैं, हाथकी गद्दी। २ चरखे का मुठिया जिसे पकड़ कर चरखा चलाते हैं।

हथौटी (हिं० स्त्री०) १ हस्तकुशल, किसी काममें हाथ लगानेका ढंग। २ किसी काममें लगा हुआ हाथ, किसी काममें हाथ डालनेकी क्रिया या भाव।

हथौड़ा (हिं० पु०) १ किसी वस्तुको ठोंकने, पीटने या गढ़नेके लिये साधन वस्तु। इसे मार ताल भी कहते हैं। २ कील ठोंकने, खूंटे गाड़ने आदिका यन्त्र।

हथौड़ी (हिं० स्त्री०) छोटा हथौड़ा।

हथौना (हिं० पु०) दूल्हे और दुल्हनके हाथमें मिठाई रखनेकी रीति।

हद (अ० स्त्री०) १ मर्यादा, सीमा। २ किसी बातकी उचित सीमा, कोई बात जहाँ तक करनी चाहिये इसका नियत मान। ३ किसी वस्तु या बातका सबसे अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो।

हदन (सं० क्ली०) हद ल्युट्। पुरीषत्याग, पाखाना फिरना।

हद मयाअत (अ० स्त्री०) किसी बातका दावा करनेके लिये समयकी नियत अवधि।

हद सियासत (अ० स्त्री०) किसी न्यायालयके अधिकारकी सीमा।

हदिया—उष्ट्रचरोंमें उदास वेदुइनोंकी वीररमणी। कहते हैं, कि युद्धके समय ये ऊंट पर चढ़ कर सैन्यदलके अग्रणी हो युद्धमें शामिल होती हैं। ये विद्रूप वाक्यसे निरुत्साहियोंको उत्साहित और साहसियोंको प्रशंसा द्वारा उत्तेजित करती हैं। यही इनका प्रकृत कार्य है।

हदीस (अ० स्त्री०) महम्मदका उपदेशसंग्रह और आचार-पद्धतिकी विवरणी। इनकी संख्या ५२६६ है। ये कुरानकी परिशिष्ट समझी जाती है। इन्हें कभी सुन्ना, कभी आहदिस नववीया अर्थात् महापुरुषोंका अनुशासन कहा जाता है। मुसलमानोंके मध्य सिया, सुन्नी और ओहावी ये तीनों सम्प्रदाय हदिसको मान कर चलते हैं। परन्तु सुन्नी लोग जिस विशेष संग्रहको मानते हैं, सिया लोग उसे नहीं मानते तथा ओहावी लोग केवल रत्नसंग्रहके छः अध्यायको स्वीकार करते हैं।

हद्दा (सं० स्त्री०) ताजकोक्त मेषादि लग्नका तीसवां अंश। इस अंश द्वारा बारह लग्नमें पांच ग्रहके सख्याविशेषमें भागविशेष होता है। यह हद्दा स्थिर कर वर्षप्रवेशका शुभाशुभ फल निरूपण करना होता है। नीलकण्ठ ताजकमें इसका विशेष विवरण लिखा है।

हन (स० अव्य) १ रुषोक्ति। २ अनुनय।

हन (सं० पु०) हननकर्त्ता, हत्यारा।

हनन (सं० क्ली० हन् ल्युट्। १ मारण, मार डालना, वध करना। २ आघात करना, पीटना। ३ गुणन, गुणा करना।

हननीय (सं० त्रि०) १ हनन करने योग्य, मारने लायक। २ जिसे मारना हो।

हनफी (अ० पु०) मुसलमानोंमें सुन्नियोंका एक संप्रदाय।

हनबल (इमाम)—अहम्मद इब्न हनबल, महम्मद इब्न हनबलके पुत्र। यह सुन्नियोंके चार कट्टर सम्प्रदायोंमेंसे एक-प्रवर्त्तक थे। इसीसे इनको इमाम कहते हैं। खलीफा आल मुक्तादिके शासनकालमें इस सम्प्रदायने वागदाद-में बहुत हलचल मचा दी। इन लोगोंका विश्वास है, कि भगवान्‌ने महम्मदको सिंहासन पर स्थापित किया, क्योंकि कुरानमें लिखा है कि, 'भगवान् शीघ्र ही तुमको (महम्मदको) उपयुक्त पदमर्यादा प्रदान करेंगे।' इस प्रकारके धर्मविश्वास पर आघात पहुंचाया। उन लोगोंने समझा, कि उपयुक्त 'पदमर्यादा' इसका अर्थ सिंहासन नहीं है, मध्यस्थका पद है तथा महम्मदने जगत्‌में मध्यस्थका पद ही अवलम्बन किया था। दोनोंमें जो विवाद हुआ उसने भयङ्कररूप धारण किया। हजारों लोगोंके प्राण गये। ९३५ ई०में हनबलका शिष्यसम्प्रदाय इतना उद्धत हो उठा, कि उन लोगोंने हथियारबंद हो कर वागदाद पर चढ़ाई कर दी, बहुत-सी दूकानें लूट लीं। अहम्मदने बहुतसे जनप्रवाद संग्रह और मुखस्थ किये थे। इनमेंसे ऐतिहासिक जनप्रवाद चुन कर 'मसनद' नामक पुस्तक-के आकारमें उसे प्रकाशित किया गया। कहते हैं, कि उन्होंने दश लाख जनप्रवाद मुखस्थ कर लिये थे। उनका जन्म ७८० और देहान्त ८५५ ई०सन्‌में हुआ था

उनके समाधिके समय ८ लाख पुरुष और ६० हजार स्त्री एकत्र हुई थी।

हनवाना (हिं० क्रि०) हननेका कार्य दूसरेसे कराना, मरवाना।

हनीफा इमाम—मक्काके चार प्रसिद्ध इमाममेंसे एक। हनीफा मक्काका एक प्रसिद्ध चिकित्साव्यवसायी और हनीफी सम्प्रदायका प्रधान व्यक्ति था। यद्यपि मुसलमानोंमेंसे अधिकांश उसके चलाये हुए साम्प्रदायिक नियमोंका पालन करते हैं, फिर भी अपने जीते जी यह लोगोंसे बड़ा अपमानित हुआ था। ७६७ ई०को बगदादके कारागारमें इसकी मृत्यु हुई। यह 'मसनद' 'फिलकलम' 'मुअल्लीमउल इस्लाम' इत्यादि ग्रन्थ लिख गया है। सिया लोग इसके तथा इसके सम्प्रदायको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। परन्तु सुन्नी लोग देवताके समान भक्ति करते हैं। इसके शिष्योंके मद्यपान करनेके कारण पारसिक लोग इसके चलाये धर्ममतकी निन्दा करते हैं। क्योंकि, मद्यपानको महम्मदीय धर्मशास्त्रमें निषेध बताया है।

हनीयस् (सं० त्रि०) अतिशय हन्ता।

हनील (सं० पु०) केतकी।

हनु (सं० पु० स्त्री०) गण्डदेशका ऊपरी भाग, ठुड्डी। २ दाढ़की हड्डी, जबड़ा। सुश्रुतिका कहना है, कि हनुप्रदेशमें जन्माक्षर सभी दांत उत्पन्न होते हैं। सभी कठिन वस्तु इसी जगह हत होती हैं, इसीसे इसका हनु नाम हुआ है। (स्त्री०) ३ हट्टविलासिनी। ४ रोग। ५ अस्त्र। ६ मृत्यु।

हनुका (सं० स्त्री०) हनु, दाढ़की हड्डी।

हनुग्रह (सं० पु०) वातव्याधिरोगविशेष। इसमें जबड़े बैठ जाते हैं और जल्दी खुलते नहीं। यह किसी प्रकारकी चोट लगने आदिसे वायु कुपित होनेके कारण होता है। इस रोगमें प्रसारिणीतैल सर्वोत्कृष्ट है। (भावप्र०) २ घोड़ेका वातव्याधिरोगविशेष। इस रोगमें घोड़ेके दोनों जबड़े बैठ जाते हैं और हमेशा राल टपकती रहती है।

हनुभेद (सं० पु०) जबड़ेका खुलना।

हनुमंत उड़ी (हिं० स्त्री०) मालखंभकी एक कसरत। इसमें सिर नीचे और पैर ऊपरकी ओर करके सामने लाते हैं और फिर ऊपर खनकते हैं।

हनुमंती (हिं० स्त्री०) मालखम्भकी एक कसरत। इसमें एक पांवके अंगूठेसे बेंत पकड़ कर खूब तानते हैं और दूसरे पांवको अड़ी दे कर और उससे बेंत पकड़ कर बैठते हैं।

हनुमन् (सं० पु०) वानरविशेष, हनूमान्। हनूमत् देखो।

हनुमत्—खण्डप्रशस्ति और हनुमन्नाटकके रचयिता। सुभाषितावलि, सदुक्तिकर्णामृत आदि प्राचीन पद्यसंग्रह ग्रन्थमें हनुमानकी कविता उद्धृत हुई है।

हनुमत्कवच (सं० पु०) १ हनुमानको प्रसन्न करनेका एक मन्त्र। इसे लोग तावीज वगैरहमें रख कर पहनते हैं। २ हनुमान्जीको प्रसन्न करनेकी एक स्तुति।

हनुमदाचार्य—एक प्रसिद्ध नैयायिक। ये व्यासवर्यके पुत्र और वीरराघवके शिष्य थे। इन्होंने तर्कदीपिकाकी टीका और अपने शिष्य नन्दरामके लिये 'तत्त्वचिन्तामणिवाक्यार्थदीपिका'की रचना की।

हनुमन्त—हनुमत् देखो।

हनुमन्त—एक हिन्दी कवि। ये राजा भानुप्रताप सिंहकी सभामें विद्यमान थे।

हनुमन्तगुडि—मदुरा जिलान्तर्गत रामनाड़ राज्यका एक तालुक और उस तालुकका सदर। यहां अति प्राचीन शिवमन्दिर और पुरानी मसजिद है। मसजिदमें जो शिलाफलक है उसमें लिखा है, कि तिरुमलय सेतुपतिने ५६५ शकमें एक मुसलमानको जमीन दान की। मसजिदमें तामिल अक्षरमें खुदा हुआ एक ताम्रशासन भी है। उससे भी जाना जाता है, कि युवराजकुमार विजय रघुनाथ सेतुपतिने १६६६ शकमें एक मुसलमानको जमीन दी थी। यहां एक प्राचीन जैनमन्दिर भी देखा जाता है।

हनुमान् (हिं० वि०) १ दाढ़वाला, जबड़ेवाला। २ महावीर, भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। (पु०) ३ एक वीर बन्दर जिन्होंने सीता-हरणके उपरान्त रामचन्द्रकी सेवा और सहायता की थी।

विशेष विवरण हनूमत शब्दमें देखो।

हनुमान् बैठक (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बैठक। इसमें

एक पैर पैंतरेकी तरह आगे बढ़ाते हुए बैठते उठते हैं।

हनुमूलवन्धनास्थि (सं० क्ली०) जबड़ेकी हड्डी।

हनुमोक्ष (सं० पु०) दाढ़का एक रोग। इसमें बहुत दरद होता है और मुंह खोलते नहीं बनता।

हनुल (सं० त्रि०) पुष्ट या दृढ़ दाढ़वाला, मजबूत जबड़े-वाला।

हनुस्तम्भ (सं० पु०) हनुग्रह रोग।

हनू (सं० स्त्री०) हनु-पक्षे ऊङ्। हनु, ठुड्डी।

हनूफल (हिं० पु०) एक मात्रिक छन्द। इसके प्रत्येक चरणमें बारह मात्राएं और अन्तमें गुरु लघु होते हैं।

हनूमत् (सं० पु०) हनूरस्त्यस्येति हनू मतुप्। हनूमान। पर्याय—हनुमान्, आञ्जनेय, योगचर, अनिली, हिडिम्बा-रमण, रामदूत, अर्जुनध्वज, मरुतात्मज। पवनके औरस और अञ्जनाके गर्भसे इनका जन्म हुआ। ये हनूमान् पवनके अवतार माने जाते हैं। रामायणमें इनका विषय यों लिखा है—

अप्सराओंमें परम रूपवती पुञ्जिकस्थला नामक लोक-विख्याता एक अप्सरा थी। वह कपिश्रेष्ठ केशरीकी भार्या हो कर अञ्जना नामसे विख्याता हुई। इस अप्-सराने ऋषिके शापसे कामरूपिणी वानरी हो कर पृथ्वी पर जन्मग्रहण किया था। पर्वतश्रेष्ठ सुमेरुपर्वत पर केशरी राज्यशासन करते थे। अञ्जना उनकी एक प्रिय-तमा महिषी थी। वानरपति और कुञ्जरदुहिता अञ्जना दोनों एक दिन मनुष्यका वेश धारण कर पर्वतशिखर पर क्रीड़ा कर रहे थे। अञ्जनाका मनोहर रूप देख पवन काममोहित हुए और उसे आलिङ्गन किया। साध्वीचरिता अञ्जनाने आश्चर्या हो कर कहा, 'कौन दुरात्मा मेरा पातिव्रत्य धर्म नष्ट करनेको तैयार हुआ है?' अञ्जनाकी यह बात सुन कर पवनने कहा, 'सुश्रोणि! मैंने तुम्हारा पातिव्रत्य नष्ट नहीं किया, अतएव यदि कुछ भी सन्देह हो गया हो तो उसे दूर कर दो। आलिङ्गन द्वारा मन ही मन मैंने जो तुम्हारे साथ गमन किया है उससे तुम्हें बुद्धिशाली और अतिवीर्यवान् एक पुत्र होगा। वह पुत्र सभी विषयोंमें मेरे जैसा होगा।' इस प्रकार वायुने उसके गर्भमें एक पुत्र उत्पादन किया। अञ्जना वह पुत्र प्रसव कर फल लाने जंगलको चली गई। इधर शिशु क्षुधातुर हो रोने लगा। उस समय सूर्यदेव जवापुष्पवत् रक्तिमवर्ण धारण कर उदय हो रहे थे। वह बच्चा फल समझ कर सूर्यकी ओर उछला। जब वह सूर्यदेव-को पकड़नेका इच्छुक हो कर तरुण दिवाकरकी ओर आकाशमें बड़े जोरसे दौड़ने लगा, तब देव, दानव, यक्ष सभी विस्मित हुए। इधर पवन पुत्रकी यह अवस्था देख डर गये, कि कहीं सूर्यदेवकी प्रखर किरणसे वह दग्ध भी न हो जाय, इसलिये वे तुषारकी तरह शीतल हो कर पुत्रकी रक्षा करनेके लिये उसके पीछे पीछे जाने लगे। पितृशक्तिके प्रभावसे हजारों योजन पथ अतिक्रम कर वह वानर सूर्यके पास पहुंचे। सूर्यदेवने भी उसे यह सोच कर दग्ध नहीं किया, कि उससे अनेक देवकार्य साधन होंगे।

यह वानर जिस दिन भास्करको पकड़नेके लिये उछला उसी दिन राहु सूर्यदेवको ग्रास करने जा रहा था, परन्तु इस शिशुके सूर्य-रथके ऊपर राहुको स्पर्श करने पर, राहु डरके मारे सूर्यमण्डलसे भाग चला। पीछे राहुने कुपित हो इन्द्रसे जा कहा, 'इन्द्रदेव! मुझे चन्द्र और सूर्यको ग्रास करनेका अधिकार देते हुए भी आपने फिर एक और व्यक्तिको अधिकार दे डाला है।" यह सुन कर इन्द्र बड़े बिगड़े और राहुके साथ वहां जाने लगे, परन्तु राहु इन्द्र-के पहले ही वहां पहुंच गया। हनुमान् राहुको एक फल समझ सूर्यदेवका परित्याग उसी पर टूट पड़ा। राहु उसका विशाल शरीर देख बहुत डरा और इन्द्रको अपना रक्षक समझ कर पुकारने लगा। इन्द्र राहुका आर्त्तनाद सुन कर 'डरो मत, मैं इसका वध करता हूं' कहते हुए उसके पास पहुंच गये। हनुमान् इन्द्रवाहन ऐरावतको देख उसे पकड़नेको इच्छासे दौड़ा। इन्द्रने कुपित हो कर उसे वज्र द्वारा आघात किया। इन्द्रके वज्रप्रहारसे ताड़ित हो वानर पर्वतके ऊपर जा गिरा जिससे उसकी वाम हनु टूट गया।

हनुमान् जब वज्राघातसे छटपटाने लगा, तब पवन उसे उठा कर गुफामें ले गये। वे देवताओंके प्रति क्रुद्ध हो त्रिभुवनकी वायुको रोकने लगे। वायुके बंद हो जाने से त्रिलोक वायुहीन हो काष्ठवत् हो गया। इस पर इन्द्रादि देवगण ब्रह्माके पास गये। पीछे ब्रह्माके कथना-

नुसार सभी वायुके पास जा कर स्तव करने लगे। वायुने पितामहको देख उनको प्रणाम किया और पितामहने वज्राघातसे आहत शिशुको हाथसे स्पर्श किया। ब्रह्माके स्पर्श करते ही बालक उठ कर खडा हो गया। पवन पुत्र को पुनर्जीवित और सभी प्रकारकी वेदनादिको अपगत देख प्रसन्न हुए और फिरसे सभी भूतोंमें विचरण करने लगे। अनन्तर ब्रह्माने वायुकी हितकामनासे देवताओंसे कहा, 'इन्द्रादि देवगण! इस शिशु द्वारा तुम लोगोंके सभी कर्त्तव्य कार्य्य सम्पादित होंगे। इस लिये तुम लोग इसे वर दो।' इन्द्रने कहा, 'मेरे करच्युत वज्रके आघातसे इस वानरका हनुभङ्ग हो गया है, इसलिये यह वानरश्रेष्ठ हनूमान् कहलायेगा। मैं इसे एक और भी अद्भुत वर देता हूं, कि आजसे हनूमान् मेरे वज्राघातसे नहीं मारा जायगा।' पीछे सूर्यने कहा, 'मैंने इसे अपने तेजके शताशका एक अंश दिया। जब यह वानर सभी शास्त्र पढना चाहेगा, तब मैं इसे पढाऊंगा। हनूमान वाग्मी होगा।' वरुणने वर दिया, 'मेरे पाश अथवा वारिसे सौ अयुत वर्षमें भी इसकी मृत्यु नहीं होगी।' यमने प्रसन्न हो कर इसे दण्डका अवध्य, नियत आरोगित्य और युद्धमें अविषाद होनेका वर दिया। कुवेरने वर दिया, कि यह हनूमान् मुझसे भी न मरेगा। महादेवने भी इसी प्रकार वर दिया। विश्वकर्माने वर दिया, कि मैंने जो सब अस्त्र बनाये हैं और मेरे जो सब दिव्यास्त्र हैं, यह बालक उन सभी अस्त्रोंसे अवध्य हो कर चिरजीवी होगा। अनन्तर ब्रह्माने उसे कहा, 'तुम ब्रह्मज्ञ और चीरायु तथा समस्त ब्रह्मास्त्र और ब्रह्मशापके अवध्य होंगे।'

इस प्रकार देवताओंके वर देनेसे ब्रह्माने वायुसे कहा 'पवन! तुम्हारा यह पुत्र शत्रुओंका भयङ्कर, मित्रोंका आह्लादजनक और अजेय होगा। अधिकन्तु हनुमान् इच्छानुसार नाना रूप धारण, नाना स्थानोंमें गमन और विविध द्रव्य भक्षण कर सकेगा, कीर्त्तिमान् और अप्रतिहतगतिका होगा। फिर रावणका विनाश करनेमें यह रामचन्द्रकी सहायता कर रामका प्रीतिपद होगा तथा समय पर लोमहर्षण कार्य्य करेगा।' पितामह आदि देवगण इस प्रकार वर दे कर स्वस्थानको चले गये।

देवकृपासे हनूमान् पूर्वोक्त सभी वर पा कर बहुत बलिष्ठ हो गया। अनन्तर वह बलगर्वसे गर्वित हो कर निर्भयहृदयसे ऋषियोंको कष्ट पहुंचाने लगा। ऋषिगण यह जानते थे, कि हनूमान् ब्रह्माके वरसे ब्रह्मदण्डका अवध्य है, इसलिये दण्ड प्रदानकी शक्ति रहते हुए भी वे उसका अपराध सह्य करनेको वाध्य हुए। केशरी और पवनके बार बार मना करने पर भी हनुमान् ऋषियोंके प्रति अत्याचार करनेसे बाज नहीं आता था। इस प्रकार तंग आ कर अङ्गिरा आदि ऋषियोंने हनुमान्को शाप दिया, कि तुम जिस बलगर्वसे गर्वित हो कर हम लोगोंको कष्ट दे रहे हो, बहुत दिनों तक तुम उस बलको भूल जाओगे। जब तुम्हारी कीर्त्ति तुम्हें कोई याद दिला देगा, तब फिरसे तुम्हारा बल बढेगा, अन्यथा नहीं।'

हनूमान ऋषियोंके शापसे बलवीर्य्य-हीन हो कर मन्द भावसे आश्रममें विचरण करने लगा। वाली और सुग्रीवके पिता ऋक्षराज सभी वानरोंके राजा थे। उनकी मृत्यु होने पर मन्त्रियोंने वालीको पितृ-सिंहासन पर और सुग्रीवको वालीके पद पर अभिषिक्त किया। अग्निके साथ वायुका जैसा सौहार्द्य था, सुग्रीवके साथ हनुमान्का भी वैसा ही था। जब वाली और सुग्रीवमें विवाद खड़ा हुआ, तब हनूमान् शापके कारण अपना बल नहीं जानता था, बिलकुल भूल गया था। इस कारण वह सुग्रीवका कोई उपकार नहीं कर सका था। परन्तु वह हमेशा सुग्रीवके साथ ही रहता था। सुग्रीव वालीके भयसे जब ऋष्यमुख पर्वत पर रहने लगे, उस समय भी हनुमान् सुग्रीवके सहचर था। रामचन्द्र पितृसत्य पालन करनेके लिये जब बनको गये, तब पञ्चवटी वनमें रावणने सीताका हरण किया। राम और लक्ष्मण सीतादेवीकी खोज करते करते ऋष्यमुख पर्वत पर गये। वहां हनूमान् राम और लक्ष्मणको देख संन्यासीके वेशमें रामचन्द्रसे मिला। पीछे दोनों भाइयोंसे सीताहरण वृत्तान्त सुन कर उसने सुग्रीवके साथ उनकी मित्रता करा दी। रामने वालीका वध कर सुग्रीवको राज्यप्रदान किया। पीछे सुग्रीवने हनूमान् आदि वानरोंको सीताकी खोजमें भेजा। हनूमान्ने रामचन्द्रकी अंगूठी ले कर सारी पृथिवी पर पर्य्यटन किया। पीछे जब उसने सम्पातिपक्षिसे सुना, कि लङ्कापति रावण सीताको हर ले गया है, तब वह वानरो-

के साथ समुद्रके किनारे आया। स्वयं हनुमान् महेन्द्र पर्वत परसे कूद कर समुद्र पार कर गया। अनन्तर वह रावणके अन्तःपुरमें घुसा और अशोकवनमें सीताको देख उनसे अभिज्ञान ले कर फिरसे समुद्र पार कर गया। यहां उसने रामचन्द्रसे सीताका कुल संवाद कह सुनाया।

रामचन्द्रने हनुमान्, अङ्गद और सुग्रीव आदिको ले कर समुद्रबंधन किया और लंका जा कर रावणका संहार तथा सीताका उद्धार किया। सीता उद्धार और रावण वधमें हनुमान् ही रामचन्द्रका प्रधान सहाय था। हनुमान् जैसा रामभक्त कोई भी न था। हनुमान् रामचन्द्रको अभीष्टदेव और सीताको जननीके समान समझता था। हनुमान् सहाय नहीं होनेसे रामचन्द्र रावण-वध कदापि नहीं कर सकते थे। राम, लक्ष्मण, सीता और रावण शब्दमें विशेष विवरण देखो।

रामायण, महाभारत और अन्यान्य अनेक पुराणोंमें हनुमान्के सम्बन्धमें बहुत-सी बातें लिखी हैं। किसी किसी पुराणमें लिखा है, कि हनुमान् महादेवका अवतार है। प्रवाद है, कि राम पितृसत्य पालन कर जब अयोध्या लौटे, तब सीतादेवी स्वयं रन्धन कर हनुमान्को भोजन कराने गई थीं। किन्तु अन्नव्यञ्जनादि जितना ही उसको दिया जाने लगा, हनुमान् बातकी बातमें सभी निगलने लगा। तब सीता निरुपाय हो हनुमान्के पश्चात् भागमें उसके मस्तक पर 'ओं नमः शिवाय' कह कर अन्न प्रदान किया। इससे हनुमान् तृप्त हो गया और कुछ भी खा न सका। ऐसा करनेका यही उद्देश था जिससे सबोंको मालूम हो जाय, कि वह शिवका अवतार है।

हनुमान् चिरजीवी है। जन्मतिथि आदिमें सप्त चिरजीवीकी पूजा करनी होती है। हनुमान, मार्कण्डेय, अश्वत्थामा आदि सप्त चिरजीवियोंमें गिने जाते हैं।

अतिप्राचीनकालसे भारतवर्षमें हनूमानकी पूजा चली आती है। बङ्गालाके मङ्गल ग्रन्थोंमें हनुमान्के प्रभावका यथेष्ट परिचय पाया जाता है। क्या धर्ममङ्गलमें, क्या मनसामङ्गलमें, जहां हो झंझावात या झटिकाका प्रयोजन हुआ है, वहीं पर धर्मठाकुर या मनसादेवीने हनुमान्का स्मरण किया है। भारतीय वणिकोंके वाणिज्यगृहमें हनुमान्की मूर्त्ति अङ्कित देखी जाती है। भारत भरमें हनुमान्की पूजा प्रचलित है। नाना प्राचीन पुराणों और तन्त्रोंमें हनुमान्की पूजाविधि देखी जाती है। हनुमत्कल्प देखो।

२ वानर श्रेणियोंमें जिनका मुंह काला है उन्हें भी हनुमान कहते हैं। प्रवाद है, कि लङ्कादहनमें वीर हनुमान्का मुंह दग्ध हो गया था। पीछे सीतादेवीने लज्जित हनुमान्को यह कह कर आश्वासन दिया, कि हनुमान्के सभी आत्मीयस्वजनोंका मुंह काला होगा। ऐसा होनेसे फिर इस विश्वासी भृत्यको स्वजातिवर्गके मध्य लज्जित होना नहीं पड़ेगा। तभीसे हनुमान्का ज्ञातिवर्ग भी हनुमान् कहलाया।

हनूमत्कल्प (सं० पु०) हनुमान्के मन्त्रादि। शिव, दुर्गा, गणेश आदिकी तरह हनूमान् भी पूज्य हैं। तन्त्रसारमें हनुमत्साधनको अति पवित्र पापनाशक, गुह्यतम और आशुफलप्रद कहा है। अर्जुनने इस मन्त्रका साधन कर चराचर जगत्को जीता था। तन्त्रसार देखो।

हनूमन्तेश्वरतीर्थ (सं० क्ली०) तीर्थविशेष।

हनूमान्—हनूमत् देखो।

हनूमान्गढ़—बीकानेर राज्यके अन्तर्गत भाटनेरका दूसरा नाम। भाटनेर देखो।

हनूमान्नाटक—हनूमद्विरचित सुप्राचीन नाटक। इसमें रामचरितका वर्णन है। कहते हैं, कि महावीर हनूमान्ने पहले एक पहाड़के ऊपर यह नाटक लिख रखा था। पीछे कालचक्रसे वह गिरिलिपि अस्पष्ट हो गई। अनन्तर अनेक कवियोंने वह प्राचीन नाटक उद्धार करनेकी चेष्टा की। अन्तमें १०वीं या ११वीं सदीको भोजराजके कहनेसे दामोदर मिश्रने इस ग्रन्थको सङ्कलन किया।

हनूष (सं० पु०) हन (ऋहनिभ्यामूषन्। उण् ४।७३) इति ऊषन्। राक्षस।

हनोज (फा० अव्य०) अभी, अभी तक।

हनोद (हिं० पु०) हिंडोल रागके एक पुत्रका नाम।

हन्त (सं० अव्य०) हन-क्त। १ हर्ष। २ अनुकम्पा। ३ वाक्यारम्भ। ४ विषाद। ५ आर्त्ति। ६ वाद। ७ सम्भ्रम। ८ खेद। ९ अन्तकल्पन।

हन्तकार (सं० पु०) अतिथि या संन्यासी आदिके लिये निकाला हुआ भोजन जो पुष्पकलका चौगुना अर्थात् मोरके सोलह अण्डोंके बराबर होना चाहिये।

हन्तव्य (सं० त्रि०) १ हननयोग्य, मारने योग्य। २ गुणनीय।

हन्तु (सं० पु०) हन-तु। १ मृत्यु, मौत। २ वृष, बैल। ३ विनाश, बरबादी।

हन्तृ (सं० त्रि०) हननकर्त्ता। मारनेवाला, हत्यारा।

हन्तोक्ति (सं० स्त्री०) अनुकम्पोक्ति।

हन्थवदी—वृटिश वर्माके पेगू विभागका एक जिला। यह अक्षा० १६° १६' से १७° ४७' उ० तथा देशा० ९५° ४५' से ९६° ४५' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ३०२३ वर्गमील है। इसके उत्तरमें थोनेगवा और थरवदी, पूरबमें पेगू और पश्चिममें थेनेगवा है। पूर्वकालमें यह थोखार देश नामसे प्रसिद्ध था और आज भी चीन बकिर आदि स्थानोंमें उसी पुराने नामसे पुकारा जाता है।

चीन बकिरके पास समुद्रसे ले कर पेगूयोम तक विस्तृत एक समतल क्षेत्र द्वारा यह जिला आच्छादित है। केवल पेगूयोमके पूरबसे ले कर नदी पर्यन्त जो सङ्कीर्ण देश मौजूद है, उसमें बहुत-सी छोटी छोटी नदियां बहती हैं। इसमेंसे कितनी नदियोंमें नाव और ष्टीमर चलते हैं।

लेइङ्ग नदी इस जिलेमें सबसे बड़ी है। यह प्रोमके पाससे निकल कर हन्थवदी जिलेमें १३° ३०' उ० अक्षा० में घुस गई है। पीछे यह रंगून नाम धारण कर १६° ३०' उ० अक्षा० में समुद्रमें गिरि है। रङ्गून तक सभी ऋतुओंमें इसमें जहाज चल सकते है।

स्थानीय प्रवाद है, कि ईसा जन्मके पहले तैलङ्ग वासियोंने यहां उपनिवेश बसाया। उस समय मून लोग पेगूमें रहते थे। तैलङ्ग लोग जो एक समय यहां आ कर बस गये थे, वह इस देशके 'तैलङ्ग' शब्दसे अनुमान किया जा सकता है। स्थानीय ग्रन्थसे जाना जाता है, कि दो भाईने मिल कर स्युदागोन पागोडा स्थापन किया। वे लोग बुद्धके समसामयिक थे, क्योंकि उनके साथ बुद्धका परिचय था। इसके बाद तीसरी सदीमें जब तीसरी बार बौद्धसभाका अधिवेशन हुआ, उस समय सुवर्णभूमिमें सोन और उत्तरको बौद्धधर्मका प्रचार करनेके लिये भेजा गया।

पेगूके राजाने ११वीं सदीमें इस देशको फतह किया। प्रायः दो सदी तक यह ब्रह्मवासियों द्वारा शासित होता रहा। पीछे १८वीं सदीके मध्यभागमें तैलङ्गोंने स्वाधीनता लाभ की; परन्तु आलंपराने इस प्रदेशको फिरसे जीता। १८५२ ई०में यह वृटिश गवर्मेण्टके शासनाधीन हुआ।

इस जिलेमें दो पागोडा स्यु-दागोन और सण्डो बहुत विख्यात हैं। कहते हैं, कि गौतम बुद्धके कुछ केश गुच्छ स्युदागोन पागोडामें रखे हुए हैं। इसीसे बौद्धजगत्‌में यह मन्दिर सर्वश्रेष्ठ तीर्थ समझा जाता है। हजारों बौद्ध यहां तीर्थ करनेको आते हैं।

इस जिलेमें १ शहर और २०५९ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ५ लाखसे ऊपर है। यहांका वाणिज्यद्रव्य लवण, मिट्टीका बरतन, मछली पकड़नेका जाल, चटाई तथा रेशमी और सूती कपड़ा है।

यहांकी आबहवा अच्छी नहीं है, परन्तु जाड़ेके समय कुछ अच्छी रहती है।

हन्दाल मिरजा—मुगल बादशाह बाबरका एक लड़का। १५१८ ई०में इसका जन्म हुआ था। यह कामरानकी ओरसे हुमायूंके विरुद्ध दो पहर रातको खैबरघाटीके निकट लड़ा और वहीं मारा गया। बाबरके मकबरेके पास ही इसकी कब्र बनाई गई। इसकी लड़की रजिया सुलतानाके साथ अकबरका विवाह हुआ था।

हन्न (सं० त्रि०) हद-क्त। जिसने मलत्याग किया हो।

हन्मन् (सं० क्ली०) हननसाधन। (ऋक् १।३३।११)

हन्यमान (सं० त्रि०) वर्त्तमान हननीय वस्तु।

हप (हिं० पु०) मुंहमें झटसे ले कर ओंठ बंद करनेका शब्द। जैसे—हपसे खा गया।

हपटाना (हिं० क्रि०) हांफना देखो।

हपुषा (सं० स्त्री०) वणिकद्रव्यविशेष, होवेर। यह दो प्रकारका होता है, पहला मत्स्यसदृश और विस्रगन्धयुक्त तथा दूसरा अश्वत्थ फलसदृश और मत्स्यगन्धयुक्त। गुण—दीपन, तिक्त, मृदु, उष्ण, गुरु, पित्त, उदर, प्रमेह, अर्श, ग्रहणी, गुल्म और शूलरोगनाशक।

हप्त हिन्द—जन्द अवस्तामें पञ्जाब हप्त-हिन्दु, हप्तसिन् या हप्त-हिन् नामसे उल्लिखित है। इसका अर्थ है, सप्तसिन्धु अर्थात् सात नदी। वेदमें 'सप्तसिन्धव' नामसे पञ्जाबका उल्लेख देखनेमें आता है। सिन्धुनद और उसकी छः शाखा नदियोंका सप्तसिन्धव कहते हैं। यथा—

संस्कृत नाम	ग्रीक नाम।
(१) वितस्ता	Hydaspes
(२) असिक्नी	Acesines
(३) परुष्णी	Hydraotis
(४) विपाशा	Hyphasis
(५) शतद्रु	Hesydrus
(६) कुभा	Kophes

सिन्धु और शतद्रु नदीके बीचके देशको ही वेदोंमें 'सप्तसिन्धव' कहा है। कोई कोई कहते हैं, कि सरस्वती नदी इस देशके अन्तर्भुक्त है।

हफ्तगाना (फा० पु०) गाँवके पटवारीके सात कागज जिनमें जमीन लगान आदिका लेखा रहता है

हफ्ता (फा० पु०) सप्ताह, सात दिनका समय।

हफ्ती (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी जूती।

हब—बम्बई और सिन्धुप्रदेशकी सीमामें प्रवाहित एक नदी। यह नदी कहीं कहीं बलूचिस्तान और वृटिश राज्यकी सीमा निर्देश करती है। यह खिलातसे निकल कर दक्षिण-पूर्वकी ओर बहती हुई अरबसागरमें २४° ५२' उ० अक्षा० पर गिरती है। इस नदीमें मछली बहुत मिलती है।

हबकना (हिं० क्रि०) मुंह बाना, खाने या दाँत काटनेके लिये झटसे मुंह खोलना।

हबर दबर (हिं० क्रि० वि०) १ उतावलीसे, जल्दी जल्दी। २ हड़बड़ीसे।

हबर हबर—हबर दबर देखो।

हबश (फा० पु०) अफ्रिकाका एक प्रदेश। यह मिस्रके दक्षिण पड़ता है। यहाके लोग बहुत काले होते हैं।

हबशी (फा० पु०) १ हबश देशका निवासी जो बहुत काला होता है। हबशियोंका रंग बहुत काला, कद नाटा, बाल घुंघराले और ओंठ बहुत मोटे होते हैं। पहले ये गुलाम बनाये जाते थे और बिकते थे। २ एक प्रकारका अङ्गूर जो जामुनकी तरह काला होता है।

हबशी सनर (फा० पु०) अफ्रिकाका गेंडा जिसके दो सींग या खाँग होते हैं।

हबीगञ्ज—श्रीहट्ट जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २३° ५९' से २४° ४१' उ० तथा देशा० ९१° १०' से ९१° ४१' पु०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ९५२ वर्गमील और जनसंख्या ५ लाखसे ऊपर है। मुसलमानकी संख्या हिन्दूसे ज्यादा है।

२ उक्त उपविभागका शहर। यह अक्षा० २४° २३' उ० तथा देशा० ९१° २६' पु०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ५ हजारसे ऊपर है। यहां वाणिज्य व्यवसाय जोरों चलता है।

हबीब (अ० पु०) १ मित्र, दोस्त। २ प्रिय। ३ काश्मीरका एक मुसलमान राजा। यह १५५६ ई०में राज्य करता था।

हबीब इब्न् अाल मुहलब—सिन्धुप्रदेशका एक मुसलमान शासनकर्त्ता। महम्मद इब्न् कासिमके मरने पर खलीफा सुलेमानने यजीद इब्न् आबू कबशाको सिन्धुका शासन कर्त्ता बना कर भेजा। यहां आनेके १८ दिन बाद ही उसका देहान्त हो गया। पीछे हबीब ही सिंहासन पर बैठा। ७१५ ई० में इसने अलोर जीता था।

हबुषा (सं० स्त्री०) हपुषा देखो।

हबूब (अ० पु०) १ पानीका बबूला, बुल्ला। २ निःसार बात, झूठ मूठकी बात।

हबूरा—भ्रमणशील नीच जातिविशेष। हाबुरा देखो।

हब्बा डब्बा (हिं० पु०) जोर जोरसे सांस या पसली चलनेकी बीमारी जो बच्चोंको होती है।

हब्बुल आस (अ० पु०) बगीचोंमें लगाई जानेवाली एक प्रकारकी मेंहदी। यह दवाके काममें आती है। इसकी पत्तियोंसे एक प्रकारका सुगन्धित तेल निकाला जाता है। इसका लेप कृमिघ्न होनेके कारण घाव पर किया जाता है। इस तेलसे बाल भी बढ़ते हैं। इसके फल अतिसार और संग्रहणीमें दिये जाते हैं और गठियाका दर्द दूर करने और खून रोकनेके काममें आते हैं।

हब्स (अ० पु०) कारावास, कैद।

हब्सबेजा (अ० पु०) अनुचित रीतिसे बन्दी करना।

हम (हिं० सर्व०) १ उत्तम पुरुष, बहुवचनसूचक सर्वनाम शब्द। (पु०) २ अहङ्कार, हमका भाव।

हम (फा० अव्य०) १ साथ, संग। २ तुल्य, समान।

हम असर (फा० पु०) १ वे जिन पर एक ही प्रकारका प्रभाव पड़ा हो, समान संस्कार या प्रवृत्तिवाले। २ एक ही समयमें होनेवाले, साथी।

हमजिंस (फा० पु०) एक ही जातिके प्राणी, एक ही प्रकारके व्यक्ति।

हमजोली (फा० पु०) साथी, संगी।

हमदर्द (फा० पु०) दुःखमें सहानुभूति रखनेवाला, दुःखका साथी।

हमदर्दी (फा० स्त्री०) दूसरेके दुःखसे दुःखी होनेका भाव, सहानुभूति।

हमनिवाला (फा० पु०) एक साथ बैठ कर भोजन करनेवाले, घनिष्ठ मित्र।

हमराह (फा० अव्य०) संगमें, साथ।

हमल (अ० पु०) गर्भ।

हमला (अ० पु०) १ युद्धयात्रा, चढ़ाई। २ प्रहार, वार। ३ किसीको हानि पहुंचानेके लिये किया हुआ प्रयत्न। ४ आक्रमण, प्रहारके लिये वेगसे बढ़ना। ५ क्रूर व्यंग्य, शब्द द्वारा आक्षेप।

हमवतन (अ० पु०) स्वदेशवासी, देशभाई।

हमवार (फा० वि०) समतल, सपाट।

हम-सबक (फा० पु०) सहपाठी, एक साथ पढ़नेवाला।

हमसर (फा० पु०) जोड़का आदमी, बराबरीका आदमी।

हमसरी (फा० स्त्री०) समानताका भाव, बराबरी।

हमसाया (फा० पु०) पड़ोसी।

हमहमी (हिं० स्त्री०) हमाहमी देखो।

हमाम (अ० पु०) स्नानागार, नहानेका घर।

हमारा (हिं० सर्व०) 'हम'का सम्बन्धकारक रूप।

हमाल (अ० पु०) १ भार उठानेवाला, बोझ ऊपर लेनेवाला। २ रक्षा करनेवाला, सम्भालनेवाला। ३ कुली, मजदूर।

हमालल (हिं० पु०) सिंहल या सिलोनका सबसे ऊंचा पहाड़, जिसे आदमकी चोटी कहते हैं।

हमाहमी (हिं० स्त्री०) १ अपने अपने लाभका आतुर प्रयत्न, स्वार्थपरता। २ अपनेको ऊपर करनेका प्रयत्न, अहंकार।

हमीदउल्ला मुस्तौफी-बिन-आबु-बकर-अल कजविनी—एक प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक। इसका दूसरा नाम हमीद उद्दीन मुस्तौफी भी था। इसने १३२६ ई०में 'तारीख गुजीदा' या इतिहाससारको रचना की। यह ग्रन्थ 'जमाउत् तवारिख'के रचयिता रसीद उद्दीनके पुत्र गयासुद्दीन्‌के नाम उत्सर्ग किया गया है। हमीद पिता-पुत्र दोनों ही मुंशी थे। इसका बनाया हुआ पूर्वोक्त इतिहास प्राच्यजगत्‌में एक श्रेष्ठ इतिहास समझा जाता है। इस ग्रन्थ रचनाके ११ वर्ष पीछे इसने 'नुजहत् उल् कलुब्' नामक भूगोल और प्राणितत्त्व सम्बन्धीय एक ग्रन्थ प्रकाशित किया। यूरोपीय पुराविदोंमेंसे बहुतेरे इस ग्रन्थकी बड़ी तारीफ कर गये हैं। १३४६ ई०में हमीद उल्लाका देहान्त हुआ।

हमीदा बनो बेगम—अकबर बादशाहकी माता। १५४१ ई०में इसके साथ सम्राट् हुमायूंका विवाह हुआ। वह अत्यन्त धर्मशीला थीं। यह मक्का गई थी और वहांसे ३०० अरबियोंको साथ लाई थी। उन अरबियोंके लिये पुरानी दिल्लीमें इसने अपने पति हुमायुंके मकबरेके पास १५६० ई०में 'अरबसराय'की प्रतिष्ठा की। १६०३ ई०को आगरा शहरमें इसकी मृत्यु हुई। इसका दूसरा नाम मरियम मकानी और हाजी बेगम भी था।

हमीद उद्दीन् नागौरी—नागौरवासी एक काजी। दिल्लीमें कुतबुद्दीनके मकबरेके पास इसे दफनाया गया था। इसकी कब्रके ऊपर जो शिलालिपि है उससे मालूम होता है, कि ६६५ हिजरीमें (१२६६ ई०में) इसकी मृत्यु हुई। 'तवाला-उस-समुस' नामक इसने धर्म और सिद्धान्तसम्बन्धीय एक ग्रन्थकी रचना की।

हमीर—रणस्तम्भगढ़ या रणथम्भरके एक प्रसिद्ध चौहान वंशीय राजा। जो सब राजपूत अपनी अपनी जातीय गौरवरक्षा, आश्रितवत्सलता और वीरताके कारण पूजित और चिरस्मरणीय हो गये हैं उनमेंसे महावीर हमीर एक हैं। उनके सभासद राजकवि सारङ्गधरके संस्कृतभाषामें रचित 'हम्मीरकाव्य' और हिन्दी भाषामें रचित 'हमीररासा' और निमराणाके योधराजविरचित 'हमीररायसा' नामक हिन्दी काव्यमें इन महावीरका इतिहास वर्णित हुआ है

रणथम्भरके सुदृढ़ दुर्गमें १२२८ संवत्* (१२७६ ई०)

* जोधराजके हमीररासाके मतसे ११४१ सम्वत्‌में हमीरका जन्म हुआ, पर यह ठीक नहीं है, क्योंकि सभी मुसलमान ऐति

कार्त्तिकी शुक्लाद्वादशी तिथिको इन्होंने जन्मग्रहण किया। इनके पिताका नाम राजा जयत्राय था। अर्बुदाचलके राव पुआरकी कन्या आशा देवीके साथ हमीरका विवाह हुआ। पिताके स्वर्गवासी होने पर ये पितृसिंहासन पर बैठे।

इस समय अलाउद्दीन् दिल्लीके बादशाह थे। चिमना बेगम नामकी उनकी एक महिषी थी। महम्मदशाह नामक अपने एक मर्दाके साथ उसका अनुचित सम्बन्ध था। कभी कभी वह बादशाहके विरुद्ध षड्यन्त्र भी करता था। एक दिन वह पकड़ा गया, पर सम्राट्का प्रियपात्र होनेके कारण उसकी जान तो नहीं गई पर राज्यसे निकलवा दिया गया।

इस पर महम्मदने नाना देशोंमें मारे मारे फिर कर बहुतसे राजाओंसे आश्रय चाहा, पर किसीने भी आश्रय नहीं दिया। आखिर वह सपरिवार रणथम्बर आया। आश्रितवत्सल चौहानराजने बादशाहकी जरा भी परवाह न कर बड़े सम्मानसे महम्मदको ग्रहण किया और उसका यथोचित वासस्थान निर्देश कर दिया।

बादशाहको जब मालूम हुआ कि चौहानपति हमीरने उसे आश्रय दिया है, तब उन्होंने दूतके हाथ कहला भेजा कि ऐसे आदमीको आश्रय देना उचित नहीं। हमीरने इसके उत्तरमें कहा, कि आश्रितका परित्याग करना क्षत्रियधर्म नहीं है।

हमीरके इस निराशजनक उत्तर पर सम्राट् बड़े क्रुद्ध हुए और दलबलके साथ आ कर उन्होंने रणथम्बरमें घेरा डाला। हमीर अपने मानसम्भ्रमकी रक्षाके लिये प्राणपणसे युद्ध करने लगे। अला उद्दीन् राजपूत-वीरोंकी असाधारण वीरता देख कर दांतों उंगली चबाने लगे। उनकी सेनाको कई बार रणस्थलसे पीठ दिखाई पड़ी थी। हमीर-रासमें लिखा है, कि इस युद्धमें पहले राजपूतके पक्षमें ८००० चौहान, ३००० राठौर और ५००० पुंआर, कुल १६००० तथा मुसलमानके पक्षमें ७००० पदाति, ५००० अश्वारोही और सिपाही, कुल ७५००० आदमी मारे गये। फिर भी सम्राट्ने पीछे कदम नहीं हटाया। वे बार बार नये उत्साहसे युद्ध चलाने लगे। चैत्र शुक्ला-नवमीके दिन हमीरके दक्षिण हस्त वीरवर रणधीरने बड़ी वीरता दिखा कर रणक्षेत्रमें प्राणविसर्जन किया। इस दिन दुर्गरक्षाके लिये ३० हजार राजपूतोंने प्राण दिये थे तथा १० हजार राजपूतरमणियां जलती हुई चितामें सती हो गई थी। इसके बाद कृष्ण-तृतीयाके दिन जो भीषण संग्राम छिड़ा उसमें लाखसे ऊपर मुसलमानी सेना तथा उसके सेनानायक हिम्मत बहादुर और आली खां मारे गये थे। इतने पर भी सम्राट्ने घेरा नहीं उठाया। उन्होंने किला फतह करनेके उद्देशसे नाना स्थानोंमें छावनी डाल कर युद्ध चलाया था।

इस समय सर जन शाह नामक एक जैन वणिक्ने रणधीरकी जागीर पानेकी आशासे विश्वासघातकता-पूर्वक अला उद्दीनका साथ दिया। उस दुर्वृत्तने जमीनके अंदर गड़े हुए गुप्तशस्यभंडारोंके ऊपर चमड़ा ढक कर दो पहर रातको हमीरसे जा कहा, कि अब रसद बिलकुल नहीं है। अभी अला उद्दीन्की शरण लेनेके सिवा और कोई उपाय नहीं है। धूर्त्तकी बात सुन कर हमीर क्रुद्ध हो गये थे, पर क्रोध रोक कर भण्डार देखनेके लिये उसी रातको सरजनके साथ चल पड़े। धूर्त्त वणिक्ने मिट्टीके भण्डारके ऊपर पत्थरका टुकड़ा फेंका, सूखे चमड़े पर लगनेके कारण उससे ठन् ठन् शब्द निकला। हमीरने समझा, कि सचमुच चावल नहीं है, नहीं तो ऐसा शब्द होता क्यों? यदि सच पूछा जाय तो गुप्त भण्डारमें इतनी काफी रसद थी, कि वह वर्षसे ऊपर चल सकती थी। जो हो विश्वासघातककी मनस्कामना सिद्ध हुई। हमीर आसन्न विपद देख कर सभी आत्मीय स्वजनोंको दरबारमें बुलाया। सबोंने ज्ञातीय समाज रक्षाके लिये रणक्षेत्रमें प्राणविसर्जन करनेकी प्रतिज्ञा की। युद्ध फिरसे छिड़ गया। इस बार महम्मद शाह हमीरकी ओरसे और उसका भाई मीर गबरू सम्राट्की ओरसे लड़ता था। दोनों भाई असाधारण वीरता दिखा कर एक दूसरेके अस्त्राघातसे अपने अपने आश्रयदाताके लिये प्राण न्योछावर कर दिये महम्मदके मारे जाने पर सम्राट्ने अब निरर्थक खून खराबा

(हाजिकीके मतसे अला उद्दीनने १२९९ १३०० ई०में रणथम्भरमें घेरा डाला। हमीरासामें भी लिखा है, कि इस समय हमीरको उमर सिर्फ २८ वर्षकी थी।)

करना नहीं चाहा तथा सन्धिके प्रस्ताव और देवलकुमारी के पाणिग्रहण करनेकी इच्छा प्रकट की। परन्तु हमीर इस प्रस्तावको कब माननेवाले थे, उन्होंने सम्राट्को खूब फटकारा। इस बार सारी राजपूतशक्तिने मिल कर सम्राट्के विरुद्ध कदम उठाया। मुसलमानी सेना उनके सामने ठहर न सकी और रणस्थलसे पीठ दिखानेको वाध्य हुई। आखिर हमीरकी विजय हुई। जयोल्लासमें सैन्यसामन्तोंके साथ हमीर अपने दुर्गमें घुसे। परन्तु यहां आ कर देखा, कि उनकी प्राणप्रियतमा आशा देवी और सम्भ्रान्त राजपूत-महिलाओंने जलती चितामें कूद कर प्राण दे दिये हैं। हमीर इस दुःसहशोकको सहन न कर सके, और उसी समय महादेवके मन्दिरमें जा कर अपने हाथसे अपना मुण्ड काट डाला। इस प्रकार चौहान गौरवरवि अस्त हुए। सरजनने फौरन यह संवाद अला उद्दीनसे आ कहा। सम्राट्ने आ कर रणस्तम्भगढ़ पर अधिकार किया, पर वे विश्वासघातक सरजनको क्षमा न कर सके, उसका सिर काट डाला गया। हमीरने अन्तिम वारके युद्धक्षेत्रमें आनेके पहले अपने एकमात्र पुत्र रतनको चित्तौर भेज दिया था।

हमीरपुर—युक्तप्रदेशके इलाहाबाद विभागका एक जिला। यह अक्षा० २५° ५' से २६° ७' उ० तथा देशा० ७९° १७' से ८०° २७' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें यमुना जो इसको कानपुर और फतहपुरसे पृथक् करती है, उत्तर पश्चिममें देशी राज्य बौनी और बेतवा नदी, पश्चिममें धसान नदी, अलीपुर-छतपुर और चर्खारी तथा पूर्वमें बांदा जिला है।

९वीं सदीसे १४वीं सदी तक इस जिलेका चन्देल लोग राज्य करते थे। महोबामें उन लोगोंकी राजधानी थी। उन्होंने महोबा और आस पासके स्थानोंमें वृहत् मन्दिर और प्रासाद बना कर इसे सुशोभित कर दिया था। इस स्थानके अन्तिम राजा परमाल ११८३ ई०में दिल्लीश्वर चौहानवंशीय पृथ्वीराज द्वारा पराजित हो महोबाका परित्याग कर कालञ्जरमें राजधानी उठा ले गये। उसके १२ वर्ष बाद कुतबुद्दीनने महोबा पर दखल जमाया और प्रायः पांच सौ वर्ष यह मुसलमानोंके अधीन रहा। १६८० ई०में बुन्देलोंके अधिपति छत्रसाल ने इसे दखल किया। यह जिला उस समय हिन्दू और मुसलमानोंके युद्धक्षेत्ररूपमें गिना जाता था। युद्धमें ही छत्रशालने प्राणविसर्जन किया। उनकी मृत्युके बाद उन्हींके निर्देशानुसार महाराष्ट्रोंने महोबा तथा इस जिलेका कुछ अंश अधिकार किया, तथा अवशिष्ट भाग उनके पुत्र जगत्‌राजके शासनाधीन रहा।

१८०३ ई०में जब वृटिश सेनाने हमीरपुर दखल किया उस समय इस जिलेकी अवस्था बड़ी शोचनीय थी। महाराष्ट्रों और दस्युदलपतियोंके बार बार उपद्रवसे डर कर बहुतसे जमींदार अपनी अपनी जमींदारीको छोड़ चले गये थे। सिपाहीविद्रोहके बाद यहां शान्ति और शासनकी सुश्रृङ्खला स्थापित हुई।

इस जिलेमें ७ शहर और ७१६ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ५ लाखके करीब है। शहरवासी शहरका परित्याग कर अभी ग्राममें जा बस गये हैं, इस कारण शहरकी जनसंख्या बहुत घट गई है।

यह जिला विद्या-शिक्षामें और जिलाओंसे बढ़ा चढ़ा है। अभी कुल मिला कर २०० स्कूल हैं। स्कूलके अलावा पांच अस्पताल भी हैं।

२ उक्त जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ४२' से २६° ७' उ० तथा देशा० ७९° ५१' से ८०° २१' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ३७६ वर्गमील और जनसंख्या ७० हजारसे ऊपर है। इसमें हमीरपुर और सुमेरपुर नामक दो शहर और १२४ ग्राम लगते हैं। तहसीलके उत्तरमें यमुना और पूरबमें बेतवा नदी बहती है।

३ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह अक्षा० २५° ५८' उ० तथा देशा० ८०° ९' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ७ हजारके करीब है। कहते हैं, कि ११वीं सदीमें करचूली राजपूत हमीर देवने इसे बसाया था। अकबरके समय भी यहां जिलेका शासनकेन्द्र था। अभी शहरमें कारागार, अस्पताल, स्कूल, दो सराय और बाजार है।

हमीरपुर—पञ्जाबके काङ्गडा जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३१° २५' से ३१° ५८' उ० तथा देशा० ७६° ९' से ७६° ४४' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ६०२ वर्गमील और जनसंख्या डेढ़ लाखसे ऊपर है। इसमें ६४ ग्राम और १ शहर लगते हैं।

हमे (हिं० सर्व०) 'हम' का कर्म और सम्प्रदानकारकका रूप, हमको।

हमेल (अ० स्त्री०) सिक्कों या सिक्केके आकारके धातुके गोल टुकड़ोंकी माला जो गलेमें पहनी जाती है। यह प्रायः अशर्फियों या पुराने रुपयोंको तागेमें गूंथ कर बनती है।

हमेशा (फा० अव्य) सर्वदा, सदा।

हम् (सं० अव्य) १ रोषभाषण। २ अनुशय। ३ अनुनय।

हम्बा (सं० स्त्री०) गोध्वनि, गायके बोलनेका शब्द।

हम्भा (सं० स्त्री०) गोध्वनि, गाय या बैल आदिके बोलनेका शब्द, रंभानेकी आवाज।

हम्माम (अ० पु०) नहानेकी कोठरी जिसमें गरम पानी रखा जाता है और जो आग या भापसे गरम रखी जाती है, स्नानागार।

हम्मीर (स० पु०) १ सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग जो शंकराभरण और मारूके मेलसे बना है। इसके गानेका समय संध्याको एकसे पांच दण्ड तक है। यह राग धर्म संबंधी उत्सवों या हास्य रसके लिये अधिक उपयुक्त समझा जाता है। २ रणथम्भरगढ़का एक अत्यन्त वीर चौहान राजा। ये १३०० ई० सनमें अला-उद्दीन खिलजीसे बड़ी वीरताके साथ लड़ कर मारे गये थे। हमीर और विष्णुपुर देखो।

हम्मीरनट (सं० पु०) सम्पूर्ण जातिका एक संकर राग। यह नट और हम्मीरके मेलसे बना है। इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

हय (सं० पु०) १ घोटक, घोड़ा। अश्ववैद्यक और गरुडपुराणके २०७वें अध्यायमें हयायुर्वेदका विस्तृत विवरण लिखा है। अश्व और घोटक शब्द देखो। २ कवितामें सातकी मात्रा सूचित करनेका शब्द। ३ चार मात्राओंका एक छन्द। ४ इन्द्रका एक नाम। ५ धनुराशि।

हयकन्थरा (सं० स्त्री०) हयकातरावृक्ष।

हयकर्म (सं० क्ली०) अश्वकर्म

हयकातरा (स० स्त्री०) अश्वकातरावृक्ष, घोड़काथरा।

हयकातरिका (स० स्त्री०) अश्वकातरावृक्ष। गुण—तिक्त, वातघ्न और दीपन।

हयगन्ध (सं० क्लो०) काला नमक।

हयगन्धा (सं० स्त्री०) १ अश्वगन्धा, असगंध। अश्व-गन्धा शब्द देखो। २ अजमोदा।

हयगर्दभि (सं० पु०) शिव।

हयगृह (सं० पु०) अश्वशाला, घुड़सार।

हयग्रीव (सं० पु०) १ दैत्यभेद, एक असुर। यह कल्पा-न्तमें ब्रह्माको निद्राके समय वेद उठा ले गया था। विष्णु-ने मत्स्य अवतार ले कर वेदका उद्धार और इस राक्षस-का वध किया था। २ एक और राक्षसका नाम। ३ तान्त्रिक बौद्धोंके एक देवता। ४ विष्णुके चौबोस अवतारोंमेंसे एक अवतार। भगवान् विष्णुने इस दैत्य का वध करनेके लिये हयग्रीव मूर्त्ति धारण की थी। देवी भागवतमें लिखा है—यह असुर दितिका पुत्र था। सर स्वती नदीके किनारे महामायाके उद्देशसे इसने कठोर तपस्या आरम्भ कर दी। इस प्रकार हजार वर्ष बीत गये। महामाया इसकी तपस्यासे संतुष्ट हुईं और इसे वर देनेको आईं। हयग्रीवने महामायाको देख कर कहा, "यदि आप प्रसन्न हैं, तो कृपया यही वर दीजिये जिससे देव या असुर कोई भी संग्राममें मुझे जीत न सके और मैं हमेशा अमर हो कर इस जगत्‌में विचरण कर सकूं।"

इस पर देवी बोलीं, 'इस जगत्‌में कोई भी अमर नहीं हो सकता, जन्म होनेसे मृत्यु अवश्यम्भावी है। इस लिये तुम कोई दूसरा वर मांगो।' देवीकी यह बात सुन कर हयग्रीवने कहा, 'मातः। जब आप अमर होनेका वर देनेको राजी नहीं तब दूसरा यही वर दीजिये कि हयग्रीवको छोड़ और किसी भी प्राणीसे मेरी मृत्यु न हो।' देवी 'तथास्तु' कह कर अन्तर्हित हो गईं। अनन्तर यह असुर अत्यन्त बलदीप्त हो कर समस्त देवता, मुनि और ऋषि आदिको कष्ट देने लगा। उस समय तीनों लोकमें ऐसा एक भी शक्तिशाली पुरुष नहीं था जो उसका दमन कर सके। देवगण उसके अत्याचारसे तंग आ कर विष्णुकी शरणमें आये। भगवान्‌ने हयग्रीव मूर्त्ति धारण कर इस असुरका वध किया। (देवीभाग० १,५ अ०)

महाभारतमें लिखा है—जब कल्पान्तमें यह पृथिवी जलमग्न हो गई थी तब भगवान् विष्णुको बड़ी चिन्ता हुई और वे जगत्की विविध विचित्र रचनाका विषय सोचते हुए योगनिद्राका अवलम्बन कर जलमें सो रहे। कुछ समय बाद भगवान्ने पद्मके मध्य दो जलविन्दु देखे। एक विन्दुसे मधु और दूसरेसे कैटभ उत्पन्न हुआ। जन्म लेते ही दोनों दैत्योंने पद्मके मध्य ब्रह्माको देख पाया। पीछे दोनों ही सनातन वेदोंको ले कर रसातलमें घुस गये। वेदके अपहृत होने पर ब्रह्मा इस प्रकार चिन्ता करने लगे, "वेद मेरे परम चक्षु हैं, विना वेदके मैं किस प्रकार लोककी सृष्टि करूंगा।' अनन्तर वे वेदका उद्धार करनेके लिये भगवान् विष्णुका स्तव करने लगे। ब्रह्माके स्तवसे भगवान् विष्णुने हयग्रीवकी मूर्त्ति धारण की। इस हयग्रीवका नक्षत्र और तारका समन्वित आकाशमण्डल मस्तक हुआ, सूर्यके समान देदीप्यमान् उसके लम्बे लम्बे केश हुए। आकाश और पाताल दोनों कान, भूतधारिणी धरणी ललाट, गङ्गा और सरस्वती दोनों कटि, समुद्र दोनों भ्रू, चन्द्र और सूर्य दोनों नेत्र और सन्ध्या उसकी नासिका हुई। ओङ्कार द्वारा उसका संस्कार हुआ। इस प्रकार उन्होंने हयग्रीव मूर्त्ति धारण कर रसातलमें प्रवेश किया और जहां मधु-कैटभ नामक दोनों असुर रहते थे, वहांसे वेद ले कर पुनः ब्रह्माको दे दिया। इसी समय हयग्रीवावतार विष्णुने दोनोंका वध किया।

(भारत शान्तिप० ३४७ अ०)

हयग्रीवमन्त्र (सं० क्ली०) हयग्रीवस्य मन्त्र। भगवान् विष्णुके अवतार हयग्रीवका मन्त्र। इस हयग्रीवके पूजा मन्त्र और साधन-प्रणाली आदिका विषय तन्त्रशास्त्रमें विशेषरूपसे लिखा है।

हयग्रीवहन् (सं० पु०) विष्णु।

हयग्रीवा (सं० स्त्री०) दुर्गा।

हयघ्न (सं० पु०) करवीर वृक्ष। (वैद्यकनि०)

हयघ्नी (सं० स्त्री०) तेजोवती।

हयङ्कष (सं० पु०) इन्द्रका सारथी मातली।

हयचर्या (सं० स्त्री०) अश्वमेधयज्ञीय अश्वकी परिचर्या।

हयज्ञ (सं० लि०) अश्वायुर्वेद।

हयदानव (सं० पु०) दानवविशेष। (हरिवंश)

हयद्विषत् (सं० पु०) महिष, भैंसा।

हयन (सं० क्ली०) १ कर्णीरथ, खेलनेकी गाड़ी। २ वर्ष, साल।

हयनाल (हिं० स्त्री०) वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयप (सं० पु०) अश्वपालक, हयपति।

हयपुच्छिका (सं० स्त्री०) माषपर्णी, जंगली उड़द।

हयपुच्छी (सं० स्त्री०) माषपर्णी, जंगली उड़द।

हयप्रिय (सं० पु०) हयस्य प्रियः। यव, जौ।

हयप्रिया (सं० स्त्री०) १ अश्वगंध, असगंध। २ खजूरी, जंगली खजूर।

हयमार (सं० पु०) करवीर, कनेर।

हयमारक (सं० पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़।

हयमारण (सं० पु०) १ अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़। २ करवीर, कनेर।

हयमुख (सं० क्ली०) १ अश्वका वदन, घोड़ेका मुंह। २ एक देशका नाम जिसके सम्बन्धमें प्रसिद्ध है, कि वहां घोड़ेके जैसे मुंहवाले आदमी बसते हैं। ३ और्व ऋषिका क्रोधरूपी तेज जो समुद्रमें स्थित हो कर वड़वानल कहलाता है। (रामायण) ४ राक्षस-विशेष।

(रामा० ५।२५।३४)

हयमेध (सं० पु०) अश्वमेधयज्ञ। यह यज्ञ सभी यज्ञोंसे श्रेष्ठ है। कात्यायनीय श्रौतसूत्रके २० वें अध्यायमें इस यज्ञका विषय लिखा है। जो राजा यथाविधान सिंहासन पर अभिषिक्त हुए हैं, केवल वे ही यह यज्ञ करनेके अधिकारी हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कोई भी यह यज्ञ नहीं कर सकते। अश्वमेध यज्ञमें विस्तृत विवरण देखो।

हयवरप्रिय (सं० पु०) कदम्ब वृक्ष। (वैद्यकनि०)

हयवाहन (सं० पु०) १ रेवन्त, सूर्यपुत्र। २ कुबेर।

हयवाहनशङ्कर (सं० पु०) रक्तकाञ्चन वृक्ष।

हयविद्या (सं० स्त्री०) अश्वविद्या।

हयवैरी (सं० पु०) महिष, भैंसा।

हयशाला (सं० स्त्री०) अश्वालय, घुड़सार। मत्स्यपुराणमें लिखा है, कि हयशालामें कुक्कुट, वानर, मर्कट, सवत्सा धेनु और बकरा रहनेसे घोड़ोंका बड़ा उपकार होता है। सूर्यके डूबने पर अश्वशालासे पुरीषादि बाहर नहीं

निकालना चाहिये। सारी रात दीया जलाना आवश्यक है। (मत्स्यपु० ३१३ अ०)

हयशास्त्र (सं० क्ली०) अश्वशास्त्र।

हयशिक्षा (सं० स्त्री०) अश्वोंको शिक्षा।

हयशिर (सं० पु०) १ अश्वमुख विष्णु। २ एक ऋषिका नाम। ३ एक दिव्यास्त्रका नाम।

हयशिरा (सं० स्त्री०) वैश्वानरकी कन्या।

हयशीर्ष (सं० पु०) विष्णु। (भाग० ६।८।१५)

हयस्कन्ध (सं० पु०) हयग्रीव, हयशीर्ष।

हया (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा, असगंध।

हया (अ० स्त्री०) लज्जा, शर्म।

हयाङ्ग (सं० त्रि०) १ अश्वाङ्गविशिष्ट, जिसका शरीर घोड़े जैसा हो। (पु०) २ धनुराशि।

हयागार (सं० पु०) अश्वशाला।

हयात (अ० स्त्री०) जीवन, जिंदगी।

हयादार (फा० पु०) लज्जाशील, शर्मदार।

हयादारी (फा० स्त्री०) लज्जाशीलता, हयादार होनेका भाव।

हयाध्यक्ष (सं० पु०) अश्वाध्यक्ष। जो घोड़ोंको शिक्षा प्रणालीसे अच्छी तरह जानकार है और जो उनकी चिकित्सा भी जानता है, वही हयाध्यक्ष होने लायक है।

हयानन (सं० पु०) १ हयग्रीव। २ हयग्रीवका स्थान।

हयानन्द (सं० पु०) दुग्धा।

हयायुर्वेद (सं० पु०) अश्वका चिकित्साशास्त्रविशेष, अश्ववैद्यक। नकुल, जयदत्त आदिके अश्वचिकित्सासम्बन्धमें अनेक ग्रन्थ हैं।

हयारि (सं० पु०) करवीर, कनेर।

हयारोह (सं० पु०) अश्वारोही, घुड़सवार।

हयालय (सं० पु०) हयशाला, घुड़सार।

हयाशना (सं० स्त्री०) एक प्रकारका धूपका पौधा। यह मध्य-भारत तथा गया और शाहाबादके पहाड़ोंमें बहुत होता है।

हयास्य (सं० पु०) विष्णु, हयग्रीव।

हयाह्वया (सं० स्त्री०) अश्वगंधा, असगंध।

हयिन् (सं० त्रि०) हययुक्त, अश्वविशिष्ट।

हयी (सं० स्त्री०) घोटकी, घोड़ी।

हयेष्ट (सं० पु०) १ यव, जौ।

हयोत्तम (सं० पु०) कुलीनाश्व, बढ़िया घोड़ा।

हय्यङ्गवीन (सं० क्ली०) सद्योजातघृत।

हर (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ अग्नि, आग। ३ गदभ, गदहा। ४ वह संख्या जिससे भाग दें, भाजक। ५ हरण, भाग। ६ एक राक्षस। यह वसुदाके गर्भसे उत्पन्न माली नामक राक्षसके चार पुत्रोंमेंसे एक था और विभीषणका मन्त्री था। ७ भिन्नमें नीचेकी संख्या। ८ छप्पयके इगवें भेदका नाम। ९ टगणके पहले भेदका नाम। (त्रि०) १० हरण करनेवाला, छीनने या लूटनेवाला। ११ दूर करनेवाला, मिटानेवाला। १२ वाहक, ले जानेवाला।

हर (फा० वि०) प्रत्येक, एक एक।

हर—१ पद्यावलिधृत एक संस्कृत कवि। २ आशौचदशकटीकाके रचयिता।

हरक (सं० पु०) १ शिव, महादेव। २ चौर, चोर। (त्रि०) ३ हरणकर्त्ता।

हरकत (अ० स्त्री०) १ गति, चाल। २ चेष्टा क्रिया। दुष्ट व्यवहार, बुरी चाल।

हरकरण—मूलतानवासी एक कम्बोज-कायस्थ, मथुरादासके पुत्र। ये नवाब यातूबर खाँके अधीन मुन्शी थे। इन्होंने 'इनशाइ हरकरन्' नामक पारसी भाषामें एक-संग्रह प्रकाश किया। डाकूर वलफुर अंगरेजी भाषामें उसका अनुवाद कर गये हैं। १८०४ ई०में इङ्गलैण्डमें इसका २य संस्करण प्रकाशित हुआ।

हरकारा (फा० पु०) १ चिट्ठी पत्री ले जानेवाला, संदेसा ले जानेवाला। २ चिट्ठीरसाँ, डाकिया।

हरकुमार ठाकुर—कलकत्तेके प्रसिद्ध ठाकुर वंशोद्भव स्वनाम धन्य एक प्रसिद्ध व्यक्ति, महाराज सर यतीन्द्रमोहन ठाकुरके पिता। आप एक संस्कृत शास्त्रानुरागी और संस्कृतज्ञ पण्डित थे। आप अनेक संस्कृत ग्रन्थ लिखे गये हैं। इनमेंसे 'हरतत्त्वदीधिति' नामक तान्त्रिक पूजापद्धतिविषयक ग्रन्थ आपके तन्त्रशास्त्र ज्ञानका प्रगाढ परिचायक है।

हरकेलिनाटक—अजमीरपति विग्रहराजरचित एक संस्कृत नाटक। शिलाफलकमें यह नाटक उत्कीर्ण है। प्रायः १२१० संवत्में यह नाटक रचा गया।

हरकेश (सं० पु०) हरिकेश देखो।

हरकेस (हिं० पु०) अगहनमें होनेवाला एक प्रकारका धान।

हरक्षेत्र (स० क्लो०) महादेवका स्थान।

हरगाँव—अयोध्या प्रदेशके सीतापुर जिलेका एक परगना और उस परगनेका प्रधान नगर। यह नगर अक्षा० २७°४५' उ० तथा देशा० ८०°५७' पू०के मध्य विस्तृत है। यहाँ पर हरगाव तहसीलका सदर है। कहते हैं, कि सूर्यवंशीय राजा हरिश्चन्द्रने इस नगरको बसाया। उसके बहुत पीछे यहा चैयड और विक्रमादित्यवंशने राज्य किया था। १७१२ ई०में गौड़-राजपूतोंने पश्चिमसे आ कर यह स्थान दखल किया। यहांका सूर्यकुण्ड हिन्दुओंके निकट एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है। कार्त्तिक और ज्यैष्ठ मासमें सूर्यकुण्डमें मेला लगता है। जिसमें पचास हजार आदमी जमा होते हैं। इसके सिवा यहा चार प्राचीन हिन्दू देवमन्दिर और एक मसजिद तथा नगरकी बगलमें ही सैनिक शिविरका स्थान है। यहां दो बार हाट लगती हैं।

हरगिज (फा० अव्य०) कदापि, कभी।

हरगिरि (सं० पु०) कैलास पर्वत।

हरगिला (हिं० पु०) हड़गीला देखो।

हरगुप्त—सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन संस्कृतकवि।

हरगोविन्द—१ दक्षिणाकल्प नामक तान्त्रिक ग्रन्थके रचयिता। २ वैष्णवपक्षमें महिम्नःस्तवटोकाके प्रणेता।

हरगौरी (स० स्त्री०) अर्द्धनारीश्वरमूर्त्ति, अर्द्धभाग हर अर्द्धभाग गौरी। कालिकापुराणमें लिखा है, कि गौरीने एक दिन अपने योगनिद्रास्वरूपकी चिन्ता की, पीछे हरको और तब ब्रह्मा और विष्णुको प्रणाम किया। जगन्मयीने उन सबोंको एकरूपता और अपनेको योगनिद्रास्वरूपाकी चिन्ता कर स्वशरीरके दक्षिण भागमें शिव शरीरार्द्ध ग्रहण किया। शिवने भी गौरीको प्रसन्न करनेके लिये अपना देहार्द्धभाग गौरीके शरीरमें लगा दिया। इस प्रकार दोनों हरगौरीरूपमें शोभा पाने लगे। उनका एक भाग सपन कशपाशयुक्त और अर्द्धभाग जटाजूटविभूषित, एक भाग स्वर्णरचित श्रवणालङ्कारसे शोभित, दूसरा भाग श्रवणकुण्डलयुक्त, अर्द्ध मृगलोचना, अर्द्ध वृषभाक्ष, नासिका एक ओर स्थूल और दूसरी ओर तिलकुसुम सदृश, एक भाग दीर्घ श्मश्रुयुक्त, दूसरा भाग श्मश्रु रहित, एक ओर आरक्तदशन तथा रक्त वर्ण ओष्ठ, दूसरी ओर शुक्लवर्ण विपुल नेत्र और दीर्घ दन्त। अर्द्धगलदेश नील वर्ण, अपरार्द्ध मनोहर हारसे सुशोभित, एक बाहु कनकमय केयूरभूषित और दूसरी बाहु नागरूप केयूरयुक्त, स्थूल और द्योतिहीन, एक बाहु मृणालसदृश आयत और दूसरी करिकर सदृश स्थूल, एक हाथ दीप्तिशाली शिखास्वरूप और दूसरा वैसा नहीं, वक्षका अर्द्धभाग एक स्तनयुक्त और अर्द्धभाग रोमावली विराजित, एक पार्श्वस्थित ऊरु रम्भातरु सदृश, पार्ष्णि मनोहर तथा चरणतल अति कोमल, दूसरे पार्श्वका ऊरु स्थूल कटि पर्यन्त बद्ध, एक जंघा मृदु और मनोहर, दूसरी दृढरूपसे पद और कटि पर्यन्त सम्बद्ध; देवीके शरीरका एकांश व्याघ्र चर्म और विभूतियुक्त, दूसरा अंश चन्दनसिक्त मृदु वस्त्र शोभित, इस प्रकार अर्द्धभाग स्त्रीलक्षणसम्पन्न और अर्द्ध भाग सुदृढ पुरुषाकृतिका हुआ। शिव और पार्वती दोनोंने इसी प्रकार हरगौरीमूर्त्ति धारण की। (कालिकापु० ४४ अ०)

हरगौरीरस (सं० पु०) रससिन्दूर।

हरचन्द (फा० अव्य०) १ कितना ही, बहुत या बहुत बार। २ यद्यपि, अगरचे।

हरचन्द्र—थानेश्वरके एक अधिपति। अबुल फजलके मतसे ये महम्मद इबन् कासिमके समसामयिक थे।

हरचूडामणि (सं० पु०) १ चन्द्रमा। २ शिवशिरोरत्न।

हरचोका—छोटा नागपुरके चाङ्गभकार राज्यके अन्तर्गत, एक प्राचीन बड़ागाव। यह अक्षा० २३°५१' उ० तथा देशा० ८१°४५' उ०पू०के मध्य अवस्थित है। चाङ्गभाकरके सोमान्त पर सुवाही नदीके किनारे यह बसा हुआ है। यहां गिरिगुहाका खोद कर बहुत सुन्दर और बड़े बड़े मन्दिर बनाये गये थे जिनका खण्डहर आज भी देखनेमें आता है।

हरज (सं० पु०) पारद, पारा। महादेवके वीर्यसे इसकी उत्पत्ति हुई है।

हरज (अ० पु०) हर्ज देखो।

हरजा (फा० पु०) संगतराशोंकी वह टाँकी जिससे वे सतहको हर जगह बराबर करते हैं, चौरस करनेकी छेनी।

हरजाई (फा० पु०) १ हर जगह घूमनेवाला, जिसका कोई ठीक ठिकाना न हो। २ वहल्ला, अवारा। (स्त्री०) ३ व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा। ४ वेश्या, रंडी।

हरजाना (फा० पु०) १ क्षतिपूर्त्ति, हानिका वदला। २ वह धन या वस्तु जो किसीको उस नुकसानके वदलेमें दी जाय जो उसे उठाना पड़ा हो, क्षतिपूत्ति का द्रव्य।

हरजीभट्ट—एक विख्यात ज्योतिर्विद्‌। इन्होंने फलदीपिका और मुहूर्त्तचन्द्रकलाकी रचना की। इनके पुत्र हरिदत्त भी एक ज्योतिषी थे।

हरजुकवि—एक प्राचीन हिन्दी कवि। आप १६४८ ई०में विद्यमान थे।

हरण (सं० क्ली०) १ यौतुकादि देय द्रव्य, दायजा जो विवाहमें दिया जाता है। २ वह भिक्षा जो यज्ञोपवीतके समय ब्रह्मचारीको दी जाती है। ३ ग्रहण, लेना, ले जाना। ६ भागकरण, भाग देना। ७ भुज, वाहु। ८ स्वर्ण, सोना। ९ शुक्र। १० कपर्द्दक, कौडी। ११ उष्णोदक, गरमजल १२ दूर करना, हटाना। १३ संहार, विनाश।

हरणहल्ली—महिसुर राज्यके हसन जिलान्तर्गत एक तालुक और उस तालुकका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० १३° १४' ३०" उ० तथा देशा० ७६°२५' ४०" पू०के मध्य अवस्थित है। १०७० ई०में दुर्ग और एक वडे तालावके साथ साथ यह नगर स्थापित हुआ। यहां प्राचीन मन्दिर और पुराकीर्त्तिका ध्वंसावशेष विद्यमान है। यह अभी एक छोटे गांवमें परिणत हो गया है।

हरणीय (सं० त्रि०) हरणयोग्य, छीननेे लायक।

हरता धरता (हिं० पु०) १ रक्षा और नाश दोनों करनेवाला, सव अधिकार रखनेवाला स्वामी। २ सव कुछ करनेकी शक्ति या अधिकार रखनेवाला, पूर्ण अधिकारी।

हरताल (हिं० स्त्री०) एक खनिज पदार्थ। हरिताल देखो।

हरताली (हिं० वि०) हरतालके रङ्गका।

हरतालेश्वर (सं० पु०) एक रसौषध जो हरतालके योगसे बनती है। प्रस्तुत प्रणाली—पुनर्णवाके रसमें हरतालको खरल करके टिकिया वनाते हैं। पीछे उस टिकियाको पुनर्नवाकी राखमें रख कर मिट्टीके वरतनमें डाल मन्द आंच पर चढा देते हैं। इस प्रकार पांच दिन तक वह टिकिया पकती है, फिर ठंढा करके उसे रख लेते हैं इस भस्मकी एक रत्ती गिलोयके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे वात रक्त, अठारह प्रकारके कुष्ठ, फिरङ्ग वात, विसर्प और फोड़े आराम हो जाते हैं।

हरतेज (सं० क्ली०) १ पारद, पारा। २ शिववीर्य।

हरदग्धमूर्त्ति (सं० पु०) कामदेव।

हरदत्त—प्रसिद्ध शैव पण्डित, रुद्रकुमारके पुत्र और अग्निकुमारके छोटे भाई। माधवाचार्यने सर्वदर्शनसंग्रहमें इनका मत उद्धृत किया है। इन्होंने आपस्तम्ब और आश्वलायनगृह्यसूत्रकी व्याख्या, आपस्तम्ब और गौतमीय धर्मसूत्रकी विवृति, मन्त्रप्रश्नभाष्य, चतुर्वेद तात्पर्यसंग्रह, पदमञ्जरी नामक काशिकावृत्तिकी टीका, अध्ययनभाष्य, शिवलीलार्णव, शिवस्तोत्र, हरिहरतारतम्य आदि ग्रन्थोंकी रचना की।

२ अनर्घराघवटीकाके रचयिता। ३ ज्ञानकरत्नके प्रणेता। ४ मथुराके एक राजा। गजनीके महमूदने मथुरा पर आक्रमण कर इन्हें परास्त किया था।

हरदा (हिं० पु०) कीटाणुओंका समूह जो पीली या गेरूके रंगकी बुकनीके रूपमें फसलकी पत्तियों पर जम जाता है और वडी हानि पहुंचाता है।

हरदिया (हिं० वि०) १ हल्दीके रंगका, पीला। (पु०) २ पीले रंगका घोडा।

हरदियादेव—हरदौल देखो।

हरदी (हिं० स्त्री०) हल्दी देखो।

हरदू (हिं० पु०) एक वडा पेड। यह हिमालयमें यमुनाके पूर्व तीन हजार फुट तकके ऊंचे लेकिन तर स्थानोंमें होता है। इसका छिलका अंगुल भर मोटा, वहुत मुलायम, खुरदरा और सफेद होता है। भीतरकी लकडी वहुत मजवूत और पीले रंगकी होती है और साफ करने से वहुत चमकती है। खेतीके और सजावटके सामान वन्दूकके कुंदे, कंघियां और नावें वनती हैं।

हरदेव लाला—वुन्देलखण्डके एक राजा। स्थानीय अधिवासियोंका विश्वास है, कि इनके उद्यानमें प्रति दिन गोहत्या होने कारण इनका प्रेतात्मा महामारी रोगको ले कर वडे लाट हेष्टिङ्गसके शिविरमें गया था। आज भी एक ऊंचे स्तूप पर हरदत्तके स्मरणार्थ स्थानीय लोग ध्वजा दान करते हैं। लोगोंका ख्याल है, कि इस प्रकार निशान गाडनेसे सक्रामक रोगका भय नहीं रहता।

हरदेव कवि—एक विख्यात हिन्दी कवि। आप १८१३ ई०में नागपुरके रघुनाथ रावकी सभामें विद्यमान थे।

हरदेव शाह—पन्नाके एक राजा। पन्ना देखो।

हरदौल—ओड़छाके राजा जुझारसिंहके कनिष्ठ सहोदर। ये बड़े सच्चे और भ्रातृभक्त थे। हरदत्तसिंह नामसे भी इनकी प्रसिद्धि थी। एक बार जब महाराज जुझारसिंह दिल्ली-सम्राट्के काममें गये थे, तब उन्होंने राज्यका कुल प्रबंध इन्हींके ऊपर छोड़ दिया था। इनके सुशासनसे बेईमानोंको जरा भी दाल गलने नहीं पाती थी। कुछ समय बाद जुझारसिंह लौटे। राज्यके सभी बेईमानोंने मिल कर इनकी चुगली खाई और कहा, कि महारानी (उनकी भाभी)का हरदौलके साथ अनुचित सम्बन्ध है। महारानी अपने देवरको बहुत प्यार करती थी और हरदत्त भी उन्हें अपनी माताके समान मानते थे। राजाने रानीसे कहा, कि मेरा संदेह तभी दूर हो सकता है जब तुम अपने हाथसे हरदौलको विष दो। रानीने विवश हो कर हरदौलको विष मिली मिठाई खिलानेको बुलाया। हरदौलके पहुंचने पर रानीने सभी बातें कह दीं। सुनते ही हरदौलने कहा, "माता! तुम्हारे सतीत्वकी मर्यादा-रक्षाके लिये मैं सहर्ष इसे खाऊंगा।" इतना कह वे भाभीके हाथसे मिठाई ले कर झटसे खा गये और थोड़ी देर बाद परलोक सिधारे। इस घटनाका प्रजा पर बड़ा प्रभाव पड़ा और सब लोग हरदौलकी देवताके समान पूजा करने लगे। क्रमशः इनकी पूजाका प्रचार बहुत बढ़ा और सारे बुन्देलखण्डमें ही नहीं, बल्कि युक्तप्रान्त और पंजाब तक इनकी पूजा होने लगी। इनकी चौरी या वेदी स्थान स्थान पर बनी मिलती है और बहुतोंके यहां ये कुलदेवता माने जाते हैं। इन्हें 'हरदिया' देव भी कहते हैं।

हरद्वार—हरिद्वार देखो।

हरनर्तक (सं० क्ली०) छन्दोभेद, हरिणप्लुतछन्द।

हरना (हिं० क्रि०) १ जिसकी वस्तु हो, उसकी इच्छाके विरुद्ध लेना, छीनना, लूटना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना, मिटाना। ४ वहन करना, ले जाना। ५ परास्त करना, पराजित होना। ६ शिथिल होना, हिम्मत हारना।

हरनाथ—सप्तशती प्रयोगपटलके प्रणेता।

हरनारायण—एक विख्यात नव्य नैयायिक। आप गादाधरी और जागदीशीकी टीका लिख गये हैं।

हरनी (हिं० स्त्री०) १ मृगी, हिरनकी मादा। २ कपड़ोंमें हर्रेका रंग देनेकी क्रिया।

हरनेत्र (सं० क्ली०) १ शिवचक्षुः, महादेवके नेत्र। २ तीन संख्या। महादेवके तीन नेत्र थे इस कारण हरनेत्र जहां संख्या-बोधक होगा वहां तीनका ही बोध होगा।

हरपति—बैजल्ली ग्रामवासी रुचिपतिके पुत्र, मन्त्रप्रदीपके रचयिता।

हरपरेवरी (हिं० स्त्री०) किसानोंकी औरतोंका एक टोटका जो वे पानी न बरसने पर करती हैं।

हरपा (हिं० पु०) सुनारोंका तराजू रखनेका डिब्बा।

हरपाल—देवगिरिके यादववंशीय एक राजा। अपने श्वशुर यादवराज शङ्करकी मृत्युके बाद इन्होंने देवगिरिका सिंहासन सुशोभित किया। यह एक स्वाधीनचेता वीरपुरुष थे। मुसलमान-राजाकी अधीनता इन्होंने अस्वीकार कर दी थी, इस कारण दिल्लीपति मुबारक शाहने आ कर इन्हें परास्त किया और पीछे यमपुर भेज दिया। यह १३१८ ई०की बात है। इन्हीं हरपालके साथ यादव राजवंशका अवसान हुआ।

हरपुजी (हिं० स्त्री०) कार्त्तिकमें हलका पूजन जो किसान करते हैं। इस पूजनमें किसान उत्सव करते और मिठाई आदि बांटते हैं।

हरप्पा—पञ्जाबके मोण्टगोमारी जिलेका एक अति प्राचीन ग्राम। यह अक्षा० ३०´ ४०´उ० तथा देशा० ७२´ ५३´पू०के मध्य रावी नदीके दाहिने किनारे कोट-कमालियासे १६ मील दक्षिणपूर्वमें अवस्थित है। पुराविदोंका कहना है, कि यही स्थान एक समय मल्लियोंकी राजधानी था। माकिदन-वीर अलेकसन्दरने उन लोगोंको परास्त कर यह स्थान अधिकार किया। अभी उस प्राचीन शहरका केवल विस्तीर्ण ध्वंसावशेष दिखाई देता है। कहते हैं, कि राजा हरप्पाने इस नगरको बसाया था। अभी यहांसे प्राग्वैदिकयुगका ध्वंसावशेष निकला है।

हरपुर (सं० क्ली०) शिवलोक, महादेवकी पुरी।

हरप्रिय (सं० पु०) १ महादेवके प्रिय। २ धुस्तूरवृक्ष, धतूरा।

हरफ (अ० पु०) मनुष्यके मुंहसे निकलनेवाली ध्वनियोंके

संकेत जिनका व्यवहार लिखनेमें होता है, अक्षर, वर्ण।

हरफ़गीर (फा० वि०) १ अक्षर अक्षरका गुण दोष दिखानेवाला, बहुत बारीकीसे दोष देखने या पकड़नेवाला। २ बालकी खाल निकालनेवाला।

हरफ़गीरी (फा० स्त्री०) सूक्ष्म परीक्षा, बालकी खाल निकलना।

हरफा (हिं० पु०) कड़ा चारा या भूसा रखनेका घर जो लकड़ीके घेरेसे बनाया जाता है।

हरफारेवड़ी (हिं० स्त्री०) १ कमरखकी जातिका एक पेड़। इसमें आंवलोंकेसे छोटे छोटे फल लगते हैं जो खानेमें कुछ खटमीठे होते हैं। इसे संस्कृतमें लवली कहते हैं। २ उक्त पेड़का फल।

हरबा (अ० पु०) अस्त्र, हथियार।

हरबीज (सं० क्ली०) १ पारद, पारा। २ महादेवका वीर्य।

हरबोंग (हिं० वि०) १ गंवार, अक्खड़। २ मूर्ख, जड़।

हरभुज (सं० क्ली०) जनपदविशेष।

हरभूली (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका धतूरा। इसके बीज फारससे बम्बईमें आते और बिकते हैं।

हरम (अ० पु०) १ अन्तःपुर, जनानखाना। (स्त्री०) २ रखेली स्त्री, मुताही। ३ दासी। ४ स्त्री, बेगम।

हरमजदगी (फा० स्त्री०) बदमासी, शरारत।

हरमोहनचूड़ामणि—नवद्वीपके एक प्रधान नव्य नैयायिक। ये प्रसिद्ध नैयायिक श्रीराम शिरोमणिके ज्येष्ठपुत्र और महामहोपाध्याय भुवनमोहन विद्यारत्नके बड़े भाई थे। १७८५ संवत् (१८६३ ई०)में इन्होंने जगदीशके सामान्य-लक्षण परिच्छेदकी 'सामान्य लक्षणा-व्याख्या' नामकी एक सुन्दर टीका लिखी। पिताके मरने पर इन्होंने ही नवद्वीपके प्रधान नैयायिकका पद लाभ किया था। इनकी मृत्युके बाद भाई भुवनमोहन इस पद पर प्रतिष्ठित हुए थे।

हरयाण (सं० पु०) शत्रुजीवितैश्वर्यादि हरणशील यान।

हरराम—कुष्माण्डदीपकके रचयिता।

हररूप (सं० पु०) शिव, महादेव।

हरवल (हिं० स्त्री०) वह रुपया जो हलवाहोंको बिना ब्याजके पेशगी या उधार दिया जाता है।

हरवली (हिं० स्त्री०) सेनाकी अध्यक्षता, फौजकी अफसरी।

हरवल्लभ (सं० पु०) तालके साठ मुख्य भेदोंमेंसे एक।

हरवाना (हिं० क्रि०) शीघ्रता करना, जल्दी करना।

हरवाल (हिं० पु०) एक प्रकारकी घास जिसे 'सुरारी' भी कहते हैं।

हरवाहन (सं० पु०) शिवकी सवारी बैल।

हरवाहा (हिं० पु०) हल चलानेवाला मजदूर या नौकर।

हरवाही (हिं० स्त्री०) १ हलवाहेका काम। २ हलवाहेको मजदूरी।

हरशंकरी (हिं० स्त्री०) पीपल और पाकड़के एक साथ लगे हुए पेड़। इस प्रकारका पेड़ बहुत पवित्र माना जाता है।

हरशेखरा (सं० स्त्री०) गङ्गा जो शिवके शिर पर रहती है।

हरस् (सं० क्ली०) हरणशील, लेने लायक।

हरसमुद्र—मन्द्राज प्रदेशके बेल्लरी जिलेका एक प्रधान ग्राम। यह रायदुर्गसे १६ मील उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहां शङ्करपल्ली उपवनके पास मन्दिरप्रतिष्ठानिर्देशक १५७६ शकमें उत्कीर्ण एक शिलालिपि है।

हरसिंगार (हिं० पु०) मझोले कदका एक पेड़। इसकी पत्तियां चार पांच अंगुल लम्बी और तीन चार अंगुल चौड़ी तथा किनारों पर कुछ कटावदार होती हैं। यह वृक्ष फूलोंके लिये बगीचोंमें लगाया जाता है। विन्ध्य पर्वतके कई स्थानों पर यह जंगली होता है। यह शरद् ऋतुमें कुआरसे अगहन तक फूलता है। फूलमें छोटे छोटे पांच दल और नारंगी रंगकी लंबी पोली डांडी होती है। फूल पेड़में बहुत काल तक लगे नहीं रहते, बराबर झड़ा करते हैं। डांडियोंको लोग पीला रंग निकालनेके लिये सुखा कर रखते हैं। इसकी पत्ती ज्वरकी बहुत अच्छी ओषधि समझी जाती है। इसका दूसरा नाम परजाता भी है।

हरसिंह—१ कर्णाटक वंशीय एक राजा। १३२४ ई०में ये मिथिलाका त्याग कर नेपालमें राज्य करने लगे।

२ मिथिलाके ब्राह्मणवंशीय एक राजा। हरिसिंह नामसे भी इनकी प्रसिद्धि थी। इन्हींके उत्साहसे मन्त्री चण्डेश्वरने स्मृतिरत्नाकरकी रचना की। स्मृति देखो।

३ इटावाके एक स्वाधीनचेता हिन्दू राजा। १३९२ ई०

में उन महम्मदशाहने इटावाके राजाको परास्त कर पटावा दुर्ग तहस नहस कर डाला। हरसिंहने काठेहरमें आ कर अपनी जान बचाई। १४१३ ई०में दौलत खाँ लोदी जब काठेहर पहुंचा, तब हरसिंहने उसकी अधीनता स्वीकार की। इसके कुछ समय बाद ही हरसिंहने अपनी स्वाधीनता घोषित की। उनका दमन करनेके लिये १४१८ ई०में खिजिर खाँने ताजुल मुल्कको भेजा। ताजुलके काठेहर पहुंचने पर दोनोंमें मुठभेड़ हो गई। अन्तमें काठेहरपति हार खा कर आत्मरक्षाके लिये कुमायूंके पहाड़ीप्रदेशमें भाग गये।

हरसूनु (सं० पु०) हरपुत्र स्कन्द, कार्त्तिकेय।

हरस्वत् (सं० त्रि०) वेगवत्, वेगविशिष्ट।

हरहा (हिं० वि०) १ हरहट देखो। (पु०) २ वृक, भेड़िया।

हरहाई (हिं० वि०) नटखट गाय जो बार बार खेत चरने दौड़े या इधर उधर भागती फिरे।

हरहार (सं० पु०) शिवका हार, सर्प, साँप। २ शेषनाग।

हरहूरा (सं० स्त्री०) १ हारहूरा, हुरहुर। २ द्राक्षा, दाख।

हरहोरवा (हिं० पु०) एक प्रकारकी चिड़िया।

हराँस (हिं० पु०) मन्द ज्वर, हरारत।

हरा (हिं० वि०) १ हरित, सब्ज। २ प्रफुल्ल, प्रसन्न। ३ सजीव, ताजा। ४ जो सूखा या मरा न हो। ५ दाना या फल जो पका न हो। (पु०) ६ हरितवर्ण, घास या पत्तीका सा रंग। ७ मवेशियोंको खिलानेका ताजा चारा। (स्त्री०) ८ हर या महादेवकी स्त्री, पार्वती।

हराई—मध्यप्रदेशके छिन्दवाड़ा जिलान्तर्गत एक छोटा राज्य या जमींदारी। भूपरिमाण १६४ वर्गमील है। इसमें ६० ग्राम पड़ते हैं। यहांके सामन्तराज गोंड जातिके हैं। वे इस जमींदारीके मध्यवर्त्ती हराई नामक ग्राममें एक पक्केके किलेमें रहते हैं। हराई ग्राम अक्षा० २२°३७´ उ० तथा देशा० ७९°१८´ पू०के मध्य अवस्थित है।

हराक (सं० स्त्री०) जनपदभेद। इराक देखो।

हराद्रि (सं० पु०) कैलास पर्वत।

हरानत (सं० पु०) रावणका एक नाम।

हराना (हिं० क्रि०) १ परास्त करना, पराजित करना। २ शत्रुको विफलमनोरथ करना, दुश्मनको नाकामयाब करना। ३ प्रयत्नमें शिथिल करना, थकाना।

हरापन (हिं० पु०) हरितता, सब्जी।

हराम (अ० वि०) १ निषिद्ध, बुरा। (पु०) २ वर्जित बात या वस्तु, वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्रमें निषेध हो। ३ सूअर जिसके खाने आदिका इसलाममें निषिद्ध है। ४ अधर्म, बेईमानी। ५ स्त्री पुरुषका अनुचित संबंध, व्यभिचार।

हरामक—काश्मीर राज्यके उत्तर जो ऊंची पर्वतमाला दिखाई देती है उसीकी एक चोटी हरामक है। यह समुद्र-पृष्ठसे १३००० फुट ऊंची और अक्षा० ३४° २६ उ० तथा देशा० ७५° पू०के मध्य विस्तृत है। इसके उत्तर पाददेशमें गङ्गाबल नामक एक तालाब है जो हिन्दुओंके निकट एक पुण्यप्रद तीर्थ समझा जाता है।

हरामकार (फा० अ० पु०) १ निषिद्ध कर्म करनेवाला, बुरेकाम करनेवाला। २ व्यभिचारी।

हरामकारी (फा० स्त्री०) १ निषिद्ध कर्म, पाप। २ व्यभिचार, परस्त्रीगमन।

हरामखोर (फा० पु०) १ पापकी कमाई खानेवाला, अनुचित रूपसे धन पैदा करनेवाला। २ बिना मिहनत मजदूरी किये यों ही किसीका धन लेनेवाला, मुफ्तखोर। ३ आलसी, निकम्मा।

हरामजादा (फा० पु०) १ व्यभिचारसे उत्पन्न पुरुष, दोगला। २ दुष्ट, पाजी।

हरामी (अ० वि०) १ व्यभिचारसे उत्पन्न। २ दुष्ट, पाजी।

हरारत (अ० स्त्री०) १ गर्मी, ताप। २ हलका ज्वर, मंद ज्वर।

हरावती—राजपूतानेका एक प्राचीन भूभाग। अभी यह कोटा नामसे प्रसिद्ध है। कोटा देखो।

हरावल (तु० पु०) १ सेनाका अगला हिस्सा, सिपाहियोंका वह दल जो फौजमें सबके आगे रहता है। २ ठगों या डाकुओंका सरदार जो आगे चलता है।

हरावास (सं० पु०) हरका आवास, कैलासपर्वत।

हरास (फा० पु०) १ भय, डर। २ आशंका, खटका। ३ विषाद, दुःख। ४ नैराश्य, ना-उम्मेदी।

हरि (सं० पु०) १ विष्णु। जीवोंके पाप हरण करनेके कारण इनको हरि कहते हैं। २ सिंह, शेर। ३ शुक

पक्षी, तोता। ४ सर्प, सांप। ५ वानर, बन्दर। ६ भेक, मेढक। ७ शशी, चन्द्रमा। ८ अर्क, सूर्य। ९ वायु, हवा। १० अश्व, घोड़ा। ११ यमराज। १२ शिव। १३ ब्रह्मा। १४ किरण। १५ इन्द्र। १६ साठ संवत्सरोंमेंसे एक संवत्सर। यह वर्ष शुभ माना गया है। इस वर्षमें नाना प्रकारके शुभ फल होते हैं। १७ मयूर, मोर। १८ कोकिल, कोयल। १९ हंस। २० अग्नि, आग। २१ भर्तृहरि। २२ सिंहराशि। २३ शृगाल, गीदड़। २४ गरुड़के एक पुत्रका नाम। २५ एक पर्वतका नाम। २६ श्रीरामचन्द्र। २७ अठारह वर्णोंका एक छन्द या वृत्त। २८ बौद्धशास्त्रोंमें एक बड़ी संख्याका नाम। २९ वंश, बांस। ३० मुद्ग, मूंग। (लि०) ३१ पिङ्गल, भूरा या बादामी। ३२ पीत, पीला। ३३ हरित्, हरा।

पुराणादि शास्त्रोंमें हरिनाममाहात्म्यका विशेष विवरण देखा जाता है। इस कलिकालमें एक हरिनाम ही जीवके उद्धारका उपाय है।

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलं।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥"

हरिभक्तिविलासमें लिखा है, कि हरिनाम ही मेरा जीवन है। इस कलिकालमें हरिनाम भिन्न जीवकी और कोई गति नहीं है, नहीं है, नहीं है। कलिकालमें एक नाममाहात्म्यसे ही जीवका उद्धार होगा। सिर्फ एक बार चैतन्यमय हरिके नाम लेनेसे कितना फल है, उसका सहस्रमुख अनन्त भी वर्णन नहीं कर सकते।

जो नामापराधके अपराधी हैं, सभी नाम उनके पाप को हरण करते हैं। अतएव उन्हें अनवच्छिन्न भावसे नामकीर्त्तन करना चाहिये। इससे सभी प्रकारके अभीष्ट सिद्ध होते हैं। हरिभक्तिविलास, पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्त्तपुराण आदि ग्रन्थोंमें हरिनामकीर्त्तन, श्रवण आदिका विशेष विवरण लिखा है।

हरि—१ त्रिगर्त्त या कोट काङ्गड़ाके एक हिन्दूराजा। आप प्रायः १४५ ई०में राज्य करते थे।

२ पद्यावलिधृत एक प्राचीन संस्कृत कवि। ३ एक विख्यात प्राकृत अलङ्कारग्रन्थके रचयिता। नमिने अपने काव्यालङ्कारमें इनका ग्रन्थ उद्धृत किया है। ४ अशौच-निर्णयके रचयिता। ५ पदकौमुदी नामक व्याकरणके प्रणेता। ६ प्रमाणप्रमोद नामक न्याय-ग्रन्थकार। ७ शिवाराधनदीपिकाके रचयिता। ८ सप्तपदार्थी व्याख्याकार। ९ सहृदय नामक स्मार्त्तग्रन्थकार। १० हैहयेन्द्रकाव्य और उसके टीकाकार।

हरिआचार्य—रामतत्त्वप्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थ और रामस्तवराजटीकाके रचयिता।

हरिआली (हिं० स्त्री०) १ हरेपनका विस्तार। २ घास और पेड़ पौधोंका फैला हुआ समूह।

हरिक (सं० पु०) पीत और हरिद्वर्ण अश्व, पीलापन लिये भूरे रंगका घोड़ा।

हरिकण्ठ—किरातार्जुनीय-टीकाकार।

हरिकथा (सं० स्त्री०) १ भगवान् या उनके अवतारोंका चरित्रवर्णन।

हरिकर्म (सं० पु०) यज्ञ।

हरिकीर्त्तन (सं० पु०) भगवान् या उनके अवतारोंकी स्तुतिका गान, भगवान्‌का भजन।

हरिकुहस (सं० पु०) गोत्र प्रवरभेद।

हरिकूट—लिङ्गपुराणोक्त एक पर्वत।

हरिकृष्ण—उपसर्गवाद नामक न्यायग्रन्थके रचयिता।

हरिकृष्णसिद्धान्त—मकरन्द-प्रकाश नामक स्मार्त्तग्रन्थकार।

हरिकेलीय (सं० पु०) १ वंग देशका एक नाम। २ उस देशके अधिवासी।

हरिकेश (सं० पु०) १ शिव। २ विष्णु। ३ शिवभक्त यक्षविशेष। यह यक्ष महादेवका बड़ा प्रिय था। महादेवके उद्देशसे तपस्या करने पर महादेवने इसे वर दिया। उस वरसे यह जरामरणविमुक्त, शोकरहित और गणाध्यक्ष हुआ था। (मत्स्यपु० १८० अ०) इसने काशीमें महादेवके प्रसादसे दण्डपाणित्व लाभ किया था।

(काशीखण्ड ३२ अ०)

४ श्यामक नामक यादवका पुत्र जो वसुदेवका भतीजा लगता था।

हरिकेश—१ सह्याद्रिखण्डवर्णित राजभेद। (५३।१) बुन्देलखण्डके जहांगीराबादवासी एक प्राचीन कवि।

हरिकेशरिदेव—दाक्षिणात्यके एक कादम्बराज।

कादम्ब वंश देखो।

हरिकान्त (सं० पु०) घोटक, घोड़ा।

हरिकान्ता (सं० स्त्री०) विष्णुकान्ता, कृष्ण अपराजिता।

हरिक्षेत्र (सं० क्ली०) हरिस्थान, विष्णुस्थान।

हरिक्षेत्र—१ हिमालयका एक प्राचीन पुण्यस्थान। २ नर्मदा-तीरवर्त्ती एक पुण्यस्थान। (रेवाखण्ड०)

हरिगांव—आसाम प्रदेशके गारो पहाड़के अन्तर्गत एक बड़ा गांव। यह तुरा और सिंङ्गिमारी जानेके रास्ते पर कालुनदीके किनारे अवस्थित है। यहां अङ्गरेज यात्रियोंके रहनेका पान्थनिवास है।

हरिगन्ध (सं० पु०) कुङ्कुमागुरुचंदन, पीला चंदन।

हरिगिरि—१ कुशद्वीपका एक पर्वत। (लिङ्गपु० ५३।८) २ प्रसिद्ध बौद्धराज, धर्मपूजाके प्रवर्त्तक। ३ प्रतिहार राजवंशके प्रतिष्ठाता।

हरिगीता (सं० स्त्री०) हरिगीतिका देखो।

हरिगीतिका (सं० स्त्री०) सोलह और बारहके विरामसे अट्ठाईस मात्राओंका एक छन्द। इसकी पांचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु होनी चाहिये। अन्तमें लघु गुरु होता है।

हरिगृह (सं० क्ली०) १ हरिका आलय। २ एकचक्र, शुम्भपुरी।

हरिग्रह (सं० पु०) ग्रहविशेष। घोड़ोंके इस ग्रह द्वारा पीड़ित होने पर उनके शरीरका पूर्वार्द्ध भाग हमेशा कांपता रहता है और पश्चाद्भाग निश्चल और कम्पयुक्त हो कर अत्यन्त पीड़ित होता है। (जयदत्त ५७ अ०)

हरिचन्द्र कवि—बरसानेके रहनेवाले भाषाके कवि। इन्होंने छन्दोंमें पिङ्गल ग्रंथ लिखा है। परन्तु इनका समय नहीं बतलाया जा सकता, क्योंकि इन्होंने अपनी पुस्तकमें सन् संवत् कुछ भी नहीं लिखा है।

हरिचन्दन (सं० क्ली०) १ एक प्रकारका चन्दन। गुण—शीत, वमथु, भ्रमदोष, अग्निमान्द्य और मेदोदोषनाशक। (राजनि०) २ स्वर्गके पांच वृक्षोंमेंसे एक। शेष चार वृक्षोंके नाम ये हैं—पारिजात, मन्दार, सन्तान और कल्पवृक्ष। ३ पीत चन्दन। ४ पारिभाषिक चन्दन। तुलसीकी लकड़ीको घिस कर कपूर और अगर अथवा केशर मिलानेसे उसको हरिचंदन कहते हैं। ५ ज्योत्स्ना, चाँदनी। ६ कुंकुम, केशर। ७ पद्मकेशर, कमलका पराग। ८ कान्ताङ्ग। ९ रक्तचंदन।

हरिचन्द्र—१ विख्यात प्राचीन संस्कृत गद्य-साहित्यके रचयिता। बाण हर्षचरितके प्रारम्भमें भट्टारक हरिचंद्रका नामोल्लेख किया है। २ सदुक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि। ३ सुभाषितावलीधृत एक वैद्य कवि। ४ चरकसंहिताके एक प्राचीन भाष्यकार। महेश्वर हेमाद्रि आदिने इनका नामोल्लेख किया है। ५ बुंदेलखण्डके अन्तर्गत चर्खारिनिवासी एक हिंदी कवि। इन्होंने छंदःस्वरूपिणी नामक एक हिंदी छन्दोग्रंथकी रचना की।

हरिचन्द्रगढ—बम्बईमें अङ्कोलासे २० मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित एक गिरि और गिरिदुर्ग। समुद्रकी तहसे यह ४७०० फुट ऊंचा है। इस पर जैन और बौद्धोंका बनाया हुआ एक बहुत बढ़िया गुहामंदिर दिखाई देता है।

हरिचरणदास—१ कुमारसम्भवकी देवसेना नामक टीकाके रचयिता। २ एक बङ्गीय कवि, अद्वैतप्रभुके पुत्र अच्युतके शिष्य। इन्होंने अद्वैत प्रभुकी जीवनीके आधार पर 'अद्वैतमङ्गल'की रचना की।

हरिचर्म (सं० पु०) व्याघ्रचर्म, बाघंबर।

हरिचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुष।

हरिज (सं० क्ली०) हरिके पुत्र, हरिसे उत्पन्न।

हरिजटा (सं० स्त्री०) एक राक्षसी जिसे रावणने सीताको समझानेके लिये नियत किया था। (वाल्मीकि०)

हरिजन (सं० पु०) भगवान्‌का दास, ईश्वरका भक्त।

हरिजन—इस नामके हिन्दीके चार कवियोंके नाम मिलते हैं। इनमेंसे कविप्रियाके पद्यटीकाकार और रसिकप्रियाके टीकाकार ही प्रसिद्ध हैं।

हरिजात (सं० त्रि०) हरितवर्ण, हरे रंगका।

हरिजीवक (सं० पु०) चणक वृक्ष, चनेका पौधा।

हरिजीवनमिश्र—१ लालमिश्रके पुत्र, वैद्यनाथके वंशोद्भव। इन्होंने संस्कृत भाषामें 'विजयपारिजात' नाटककी रचना की। २ स्नानसूत्रपद्धतिके रचयिता।

हरिण (सं० पु०) हृ (श्याम्स्याद्रुञ् विभ्य इनच्। उण् २।४९) इति इनच्। स्वनामख्यात पशु, हिरण। पर्याय—मृग, कुरङ्ग, वातायु।

यह स्तन्यपायी और रोमन्थनकारी चतुष्पद पशु श्रेणीके अन्तर्भुक्त है। गौ आदिकी तरह घास ही इसका प्रधान भोजन है। जङ्गलके तृणगुल्माच्छादित मैदानमें यह झुण्डके झुण्ड विचरण करता है। शिकारी शत्रु वनमें घुस कर छिपके इन पर तीर या गोली चला कर इनको जान ले लेते हैं। जब इन्हें इस अतर्कित अवस्थामें शत्रुका आगमन मालूम हो जाता है, तब अपने लम्बे लम्बे चारों पैरके बल पे प्राण ले कर इतनी तेजीसे भागते हैं, कि शिकारी लोग उनका पीछा नहीं कर सकते। महाकवि कालिदासने अपने सुप्रसिद्ध "अभिज्ञान शकुन्तलं" नामक नाटकमें उस दौड़नेवाली हरिणीका वर्णन किया है जिसे शकुन्तलाने पोसा था। वह हरिणमात्रके ही द्रुतगामित्वका प्रकृष्ट उदाहरण है। इसका शरीर बड़े बड़े रोओंसे ढका होता है। दो पैरमें दो भागोंमें विभक्त खुर हैं। मस्तकके ऊपर दो सींग होते हैं, ये सींग जातिभेदसे भिन्न भिन्न प्रकारके हैं। किसी किसी श्रेणीके हरिणके सींगमें चार पांच शाखा होती हैं, किसीके सींग सुन्दर मांसपिण्डवत् चमड़ेसे ढके और किसी किसीके गाय आदिकी तरह दो सींग होते हैं। स्थानविशेषमें और जातिभेदसे इसके मुखकी आकृति और शरीरका रंग भिन्न भिन्न प्रकारका होता है। अधिकांश हरिणके शरीर गाढ़े पीले रंगके रोओंसे ढंके होते हैं। फिर किसी किसीके शरीर पर सफेद धब्बे या रस्सीकी तरह लम्बी रेखा दिखाई देती है। कुछ हरिण ऐसे भी हैं जिनका शरीर एकदम भूरा या बादामी होता है। यह जन्तु अपनी तेज चाल, कुदान और चञ्चलताके लिये प्रसिद्ध है। यह स्वभावतः डरपोक होता है। मादाके सींग नहीं बढ़ते, अंकुर मात्र रह जाते हैं। इसीसे पालनेवाले अधिकतर मादा पालते हैं। इसकी आंखें बहुत बड़ी बड़ी और काली होती हैं, इसीसे कवि लोग बहुत दिनोंसे स्त्रियोंके सुन्दर नेत्रोंकी उपमा इसकी आंखोंसे देते आये हैं। शिकार भी जितना इस जन्तुका संसारमें हुआ करता है, उतना शायद ही और किसी पशुका होता हो।

प्राणितत्त्वविदोंने बाह्य पृथक्ता और अस्थिगठन देख कर हरिणजातिको प्रधानतः दो श्रेणियोंमें विभक्त किया है—१ बहुधा विभक्त शृङ्ग हरिण—Cervidæ और २ द्विशृङ्ग हरिण—Bovidæ। प्रथमोक्त श्रेणीके हरिणको अङ्गरेजीमें Deer और शेषोक्त श्रेणीको Antilope कहते हैं। जिन सब हरिणके सींग ठोस हड्डीके होते हैं वे Deer और जिनके सींग खोखले होते हैं वे ही Antilope कहलाते हैं।

Cervus श्रेणीके हरिण प्रकृत हरिणपदवाच्य है। इस श्रेणीमें यूरोपका Red-deer या लाल हरिण और उससे बहुत कुछ मिलनेवाला अन्यान्य हरिण, Rein deer या बलगा हरिण और Fallow deer (भूमिकर्षणकार्योपयोगी) गिना जा सकता है। एशिया और यूरोप महादेशके उत्तरी भागमें ही इनका वास है।

Cervus elaphus काश्मीरदेश प्रसिद्ध हाँगुल नामक हरिण हिन्दीमें बड़सिंगा कहलाता है। प्राणितत्त्वविदोंने इसका C. Wallichib नाम भी रखा है। यह साधारणतः ७से ७॥ फुट लम्बा और १२।१३ हाथ (घोड़ेके समान) ऊंचा होता है। इसकी पूंछ ५ इञ्च लंबी होती है। काश्मीरके बड़े बड़े बड़सिंगोंके सींग साधारणतः तीन शाखाप्रशाखाओंमें विस्तृत हो १२से १८ तक तेज नोकवाले देखे जाते हैं। सींगकी लम्बाई ४०से ४८ इञ्च तथा दोनों सींगोंका फासला ४१ इञ्च होता है। इसके शरीरका रंग भूरा या बादामी होता है।

यह हरिण यूरोपमें विशेषतः स्काटलैण्डके लाल हरिण (Red deer) जैसा होता है, परन्तु यूरोपीय हरिण इससे कुछ छोटा होता है। बड़सिंगा ग्रीष्म ऋतुमें काश्मीरके पर्वत पर देवदारुवनमें ९ हजारसे १२ हजार फुट ऊंचे स्थान पर स्वच्छन्दतासे विहार करता है। जब जाड़ा पड़ने लगता है, तब यह पर्वतका परित्याग कर नीचेवाले जंगलमें उतर आता है। अप्रिल मासमें प्रायः प्रत्येक हरिण सींग छोड़ता है और अक्तूबर बीतते न बीतते उसके सींग फिर एकदम बढ़ आते हैं। यही समय उसका मैथुनकाल है। इस समय वनमें हमेशा हरिणका चीत्कार सुना जाता है। वैशाख मासमें हरिणी बच्चा जनती है।

Red Deerमेंसे प्रत्येक प्रायः चार मन भारी होता है। कर्सिकाद्वीपजात इस श्रेणीके हरिण C, Corsican-

नामक शाखाके अन्तर्गत है। C. Barbarus नामक हरिण अफ्रिकाके बर्बरी राज्योपकूलदेशमें वास करता है। वहांके मूर लोग इसे ब्र शगोट कहते हैं।

C affinis सिक्किमराज्यका पहाड़ी हरिण—यह तिब्बतदेशमें 'सौ' या सिवा रूपचू कहलाता है। वह अक्सर शालके वनमें ही विचरण करते देखा जाता है। सिक्किमके हरिणके लंबे लंबे सींग होते हैं। शरीरका रंग जाड़ेके समय उज्ज्वल धूसर दिखाई देता है, पर ग्रीष्मकालमें फीका लाल रंगका हो जाता है। इस श्रेणीका हरिण ८ फुट लंबा और ५॥० से ५ फुट तक ऊंचा होता है। इसके एक जोड़े सींगकी वक्रता ले कर ५४ इञ्च हुआ है। इस श्रेणीका हरिण प्रधानतः तिब्बतके पूर्वांशमें और सिक्किम सीमान्तवर्त्ती चुम्बि उपत्यका नामक तिब्बत-राज्यांशमें देखा जाता है। जापानद्वीपके C. Sika (सिका) नामक हरिण तथा मंचूरिया और फर्मोजाके C. mantchuricus और C. taouanus नामक दो स्वतन्त्र शाखाके हरिणको इस श्रेणीकी एक शाखामें स्थान दिया जा सकता है।

'कारिबौ' बलगा हरिण उत्तर एशिया, यूरोप और अमेरिकामें मिलता है। उडलण्ड कारिबौ फार राज्यके दक्षिणमें अवस्थित वनमालाविभूषित भूखण्डमें वास करता है। एक और श्रेणीका कारिबौ जो Barren-ground Cariboुसे प्रसिद्ध है। जाड़ा आने पर जंगलमें चला जाता है। परन्तु ग्रीष्मकालमें वह वनभागका परित्याग कर उत्तर महासागरके किनारे और तुषारमय बालुकाकीर्ण मरुमय मैदानमें विचरण करता है। साइबेरिया का बलगा हरिण बड़ा होता है। इसके सींग भी बड़े और नाना प्रशाखायुक्त होते हैं। तङ्गुसीय नामक वहांके अधिवासी इसके मुंहमें लगाम लगा कर गाड़ी खींचते हैं। लापलैण्डदेशके अधिवासी वहांके बलगा हरिणको गाड़ीमें जोतते हैं। यह हरिण कुछ छोटा होता है। यह स्लेज नामकी गाड़ी खींचता है। माल असबाब ढोनेके लिये पशुरूपमें भी इसका यथेष्ट व्यवहार देखा जाता है। इस जातिका हरिण स्लेजके ऊपर चार मन तक माल आसानीसे खींच सकता है।

इसकी चाल बड़ी तेज होती है। १६९६ ई०में एक अंगरेज कर्मचारी और उसके आवश्यकीय माल असबावको ले कर बड़ी तेजीसे ४८ घंटेमें ८०० मील तक ले गया था। गन्तव्य स्थान पर पहुंचते ही वह बेचारा पशु मर गया। स्वीडेन राजप्रासादमें उस अभागे पशुका चित्र और उसकी अद्भुत भ्रमण कहानी लिखी है।

उत्तर अमेरिकाके अधिवासी विशेषतः ग्रीनलैण्डवासी और वहांके एस्कुइमोगण बलगा हरिणका शिकार करते हैं। वे लोग उसका मांस खाते हैं। उसके चमड़ेसे जाड़ेका कपड़ा और उसके रोओंसे एक प्रकारका कम्बल बनाया जाता है। वैसा रोओंका बना कम्बल ओढ़ कर और चमड़ेका कुरता पहन कर वड़े मजेसे उत्तरमेरुमें जाड़ेकी रात कट जाती है।

C Canadensis—उत्तर अमेरिकाके कनाडा राज्यका हरिण। इसके शरीरका रंग, आकार और शृङ्गकी गठन यूरोपीय लाल हरिण-सी होती है। C Canadensis नामक हरिण Wapiti (वापिति) कहलाता है। वीनोपेग नामक हृदकी दक्षिणी सीमासे सस्काटचेवान नदीतट और वहांसे १११° देशा० एक नदीतट पर्यन्त इनका वास देखा जाता है। कालीफोरनियाके समतल मैदानमें और मिसौरी नदीके उत्तरांशमें ये झुण्डके झुण्डमें पाये जाते हैं।

Alces Malchis हरिणकी जातिमें सबसे बड़ा है। अङ्गरेजी लेखकोंने इसको Elk, Black Elk या Moose deer आदि नाम रखे हैं। इसकी ऊंचाई घोड़ेसे अधिक होती है। दोनों सींगका वजन प्रायः ३०।३५ सेर होता है। हरिणी और शावक दोनों एक-से दिखाई देते हैं सही, पर एक पूर्णवयस्क हरिणको सशृङ्ग देखनेसे उसके वन्य-सौन्दर्यका गाम्भीर्य अतीव रमणीय और हृदयग्राही समझा जाता है। इसकी आंखें छोटी और धंसी होती हैं तथा कान लम्बे रोओंसे ढके होते हैं। ग्रीवा और स्कन्धसन्धि निबिड़ जटाकी तरह रोमजालसे समाच्छन्न है। कण्ठमें भी लंबे लंबे मोटे लोम हैं। पूंछ ४ इञ्चसे अधिक लंबी नहीं होती। चारों पैर लम्बे, रोमहीन, परिच्छन्न और मजबूत होते हैं। रोम इतने कड़े होते हैं, कि थोड़ा झुकानेसे वे टूट जाते हैं। इस जातिका हरिण बड़ा ही डरपोक होता है। मनुष्यका आगमन जान

कर वह जान ले कर भागता है। मैथुनकालमें इसका स्वभाव मदनोन्मत्त हो कर बड़ा ही भयावह हो जाता है। यहां तक, कि उस समय पैरके खुर अथवा सींगके आघातसे यह बाघको भी मार डालता है। इस समय क्रोधान्ध हरिणोंकी ऐसी अवस्था होती है, कि कंधेके रोएं सिंहकेशरकी तरह खड़े हो जाते हैं। इसके चमड़े-से कुरता पायजामा आदि बनते हैं। पूर्व कालमें सैनिकोंकी वरदी प्रायः हरिणके चमड़े की ही बनती थी। इस श्रेणीका हरिण सहजमें पोस मानता है। इसकी गति बड़ी तेज होती है। पूर्व कालमें बहुत-से लोग स्लेज चलानेके लिये एक एक हरिण अपने अपने घर रखते थे। अपराधी लोग सजा पानेके डरसे स्लेज पर चढ़ दूर देशमें भाग जाते थे, इस कारण स्लेज पर चढ़ना निषिद्ध कर दिया है। स्वीडेनमें राजाज्ञाका पालन करते हुए कोई भी इस हरिणकी हत्या नहीं कर सकता। परन्तु नारवे राज्यमें ऐसा कोई नियम नहीं है, परन्तु १ली जुलाईसे १ली नवम्बरके मध्य निर्दिष्ट संख्यामें पशु हत्या की जा सकती है, ऐसा राजाका हुकुम है। यदि इससे एक भी अधिक हरिणका शिकार किया जाय, तो शिकारीको २० पौंड जुरमाना देना होता है।

Fallow deer श्रेणीका हरिण यूरोपके उत्तरांशमें स्पेन, ग्रीस, हेलिलाण्ड, चीन, थावोर शैल और सुद्रालडे नामक स्थानमें बहुतायतसे पाया जाता है। इङ्गलैंड-के मोलडाभिया और लिथुयानिया प्रदेशमें भी इसका अभाव नहीं है। निनिभे नगरोंके भग्न प्रासादप्राचीरमें इस श्रेणीके हरिणका भास्करचित्र उत्कीर्ण है।

Panolia Eldii—एक प्रकारका भारतीय हरिण। इसके सींग नहीं होते। यह सुङ्गाई या सुङ्गनाई नाम-से मशहूर है। Rucirvus Duvancellii नामक एक और प्रकारका भारतीय हरिण है। यही सुन्दरवनका सुप्रसिद्ध चित्रित हरिण है। अङ्गरेज लोग इसे Swamp Deer कहते हैं। भारतीय शिकारियोंने इसका 'बड़सिंङ्गा' नाम रखा है। इसके शरीरका रंग साम्बरहरिणसे बहुत कुछ फीका होता है। रोएं पतले होते हैं। हरिणी सफेद और बादामी रंगकी होती है। छोटे छोटे बच्चोंके शरीर पर सफेद धब्बे दिखाई देते हैं। इस हरिणकी लम्बाई ६ फुट, ऊंचाई ११से ११॥ हाथ अर्थात् ४४से ४६ इञ्च और पूंछ ८।६ इञ्च होती है। सींग ३ फुट या उससे कुछ बड़े होते हैं। बूढ़े हरिणके सींगमें प्रायः १४।१५ नुकीली अग्रभागयुक्त प्रशाखा दिखाई देती है।

नेपालके Rusa dimorpha और Panolia Eldii दो पृथक् पृथक् जातिके हैं। ब्रह्मराज्यमें यह थोमिन या तं-मिन, ढाका और पूर्ववङ्गमें घोष तथा नेपाल-मोरङ्गके शालवनमें गौर या घोष नामसे प्रसिद्ध है।

Rusa Aristotelis हिमालयसे फिलिपाइन द्वीपपुञ्ज तक सारे भारतवर्षमें पाया जाता है। यही भारतका चिरप्रसिद्ध साम्बर हरिण है। अंगरेजीमें इसे Sambo० या Sambor Stag कहते हैं। इस श्रेणीमें C hippelaphus या सफेद जराय, C. Aristotelis या रक्त जराय और C. heterocercus या काला जराय देखनेमें आता है। इसके सिवा दक्षिण भारतका A Leschenaultii, बङ्गालका C. niger, सुमात्राका Rusa Tungae, मलक्का द्वीपका C. moluccensis और तिमोरका C. Peronii इसी श्रेणीके अन्तर्भुक्त है। Axis maculatus नामक एक और श्रेणीका हिरण है जिसे भारतवासी चीतल, चित्र या चित्री कहते हैं। अङ्गरेजीमें इसका The Spotted Deer नाम रखा गया है। यह ५ फुट लम्बा और ३६से ३८ इञ्च ऊंचा देखा जाता है। A majo, A medius, A. minor, A oryzeus शाखाके हरिण प्रथमोक्त बड़े आतिके हरिणसे छोटे होते हैं। A porcinus शुकरिया हरिण कहलाता है। अंग-रेजीमें इसे Hog-deer कहते हैं।

Cervulus aureus उत्तर भारतका काकुड। अङ्गरेजीमें इसे the Rib faced or Barking Deer कहते हैं। यवद्वीप और मलय प्रायोद्वीपका मुन्तजक (C. muntjac), C. Ratwa, C. Stylocoros और C. allipes काकुड हरिण-श्रेणीके अनुरूप होने पर भी एक दूसरेसे स्वतंत्र है। जावा और सुमात्राद्वीपका C. Vaginalis और चीनका C. Relvesii भारतीय Cervulusसे बड़ा पशु होता है। अमे-रिकाका Cariacus Virginianus और C. mexicanus वहांके भर्जिनिया और मेक्सिको प्रदेश-जात है। स्काट-

लैण्डका Capreolus europoeus (Roe-deer of Scotland) और मध्य एशियाका C pygargus कदमें लम्बा होता है। इसके रोएं भी बड़े बड़े होते हैं।

Moschus Saturatus, M. Chrysogasten और M. leucogaster श्रेणीके हरिणके नाभिमूलमें एक प्रकारको थैली होती है। उस थैलीमें लाल रङ्गका जो पदार्थ रहता है, वह अत्यन्त सुगन्धयुक्त और वैद्यक गुण प्रधान है।

मृगनाभि और कस्तूरिका मृग देखो।

बंगालमें जिलि हरिण नामक जो हरिण देखनेमें आता है उसे हिन्दीमें (Memimna Indica) पिसोड़ा, पिसुरो या पिसाई हरिण कहते हैं। अङ्गरेजोमें इसका नाम Mouse deer है। ब्रह्मराज्यके मलय और तेनसेरिम-प्रदेशमें Tragulus श्रेणीके चार पांच प्रकारके हरिण हैं। उनमेंसे T. Rauchil उल्लेखयोग्य है। इसके सिवा यूरोप और अमेरिका महादेशमें और भी अनेक प्रकारके हरिण हैं।

दो सींगवाली छोटी हरिण जाति (Antilopinæ) नाना शाखाओंमें विभक्त है। उनमेंसे कुछ ये सब हैं,—

Tragelaphus scriptus भारतमें इसके दो प्रकार और अफ्रिकामें अनेक प्रकार देखे जाते हैं। इसका अङ्गरेजी नाम the Bush Antilope है। इस देशमें नील गाय या रुई नामसे प्रसिद्ध हैं। नीलगाय देखो।

Tetraceros quadricornis—चौका या चौसिंगा हरिण (the Four-Horned Antilope, Tragelphine शाखामें और भी जितने प्रकारके हरिण देखे जाते हैं, उनके नाम ये हैं—Elands, Oreas Canna, O Derbianus, the gnoos, Catoblepas Gnu, C Gorgon, the Koodoo, Strepsiceros kuda, Grysbok, Klipspringer, the Harnessed Antilope। इसके सिवा और भी कितने हरिण अफ्रिका महादेशमें देखे जाते हैं।

Gazella Bennettii—भारतीय गज़ाल नामक हरिण। इसे चिकाड़ा, काला पंच भी कहते हैं। कोई कोई इसे Antilope dorcas भी कहते हैं। इस शाखाका G. Sulgutturosa सिन्धु और कच्छप्रदेशका चिकोरा नामक हरिण है। कोई कोई G. christii को स्वतन्त्र दलके हरिण मानते हैं। G. Dorcas और G. Cora अरबदेशीय समश्रेणीका हरिण है। तिब्बतका या गोआ, चीन और मध्य एशियाका Antilope Gutturosa, तातार और मध्य एशियाका Saiga tartarica, अफ्रिकाका Oryx leucoryx, O. gazella, The Hartebeast, Boselaphus Canna, Aigoceros niger, A. equinus और Addax शाखाके नाना प्रकारके हरिण भिन्न भिन्न जातिमें गिने जाते हैं। Cephalophinæ, Aleiotinæ श्रेणीके हरिण अफ्रिकादेशजात और नाना शाखाओंमें विभक्त है। ये सब हरिण शृङ्गहीन और चार स्तनयुक्त होते हैं। इसके सिवा यूरोप और अमेरिकामें और भी कितने छोटे हरिण देखनेमें आते हैं। बहुत बढ़ जानेके भयसे उनका उल्लेख नहीं किया गया।

वैद्यकके मतसे हरिणके मांसका गुण—लघु, शीतल, वृष्य, त्रिदोषनाशक, षड्रसयुक्त और रुचिकर, कफ और पित्तनाशक, वायुवर्द्धक, शीतवीर्य, मलमूत्ररोधक, अग्निप्रदीपक, लघु, मधुररस, मधुर विपाक, सुगन्धि और सन्निपातनाशक माना गया है। मन्वादि शास्त्रमें लिखा है, कि हरिणमांस विशुद्ध है, इसलिये खानेमें कोई दोष नहीं। मासाष्टकादि श्राद्धकालमें इसके मांससे श्राद्ध किया जा सकता है। इसका चर्म भी अति विशुद्ध है। हरिणचर्मका आसन बड़ा पवित्र माना गया है। इस चर्म पर बैठ कर पूजा, याग और यज्ञादि कार्य किये जा सकते हैं। कालिकापुराणमें लिखा है, कि हरिण पांच प्रकारका होता है। यथा—ऋष्य, खड्ग, रुरु, पृषत और मृग। ये पाचों प्रकारके हरिण देवीके बलिदानमें प्रशस्त हैं।

२ शुक्लवर्ण, सफेद रंग। ३ विष्णु। ४ शिव। (भारत १३।१७,११६) ५ सूर्य। ६ हंस। ७ ऐरावत वंशोद्भूत नागविशेष। (भारत १।५७।११) ८ पाण्डुवर्ण, भूरा या बादामी रंग। ९ लोकविशेष। (त्रि०) १० पाण्डुवर्णविशिष्ट, भूरे या बादामी रंगका।

हरिणक (सं० पु०) १ हरिणका बच्चा। २ हरिण देखो।

हरिणकलङ्क (सं० पु०) मृगाङ्क, चन्द्रमा।

हरिणघाटा—१ बङ्गकी मधुमतीका नदीका एक नाम। २ वलेश्वरका एक नाम। वलेश्वर देखो।

हरिणधामन् (सं० पु०) चन्द्रमा।

हरिणनयना (सं० स्त्री०) हरिणकी आखोंके समान सुन्दर आखोंवाली, सुन्दरी।

हरिणनयनी (सं० स्त्री०) हरिणनयना देखो।

हरिणनर्त्तक (सं० पु०) किन्नर।

हरिणप्लुत (सं० क्ली०) छन्दोभेद। इस छन्दके प्रति चरणमें १८ अक्षर रहेंगे जिनमेंसे ४, ५, ७, ६, १०, १२, १४, १५ और १७वां अक्षर लघु तथा शेष वर्ण गुरु होते हैं।

हरिणलक्षण (सं० पु०) मृगाङ्क, हरिणकलङ्क, चन्द्रमा।

हरिणलाञ्छन (सं० पु०) चन्द्रमा।

हरिणहृदय (सं० त्रि०) भीरु, डरपोक।

हरिणक्रीड़न (सं० क्ली०) मृगया, शिकार।

हरिणाक्ष (सं० त्रि०) हरिणलोचन, हरिणकी आंखोंके समान सुन्दर आंखोंवाला।

हरिणाक्षी (सं० त्रि०) १ हरिणकी आंखोंके समान सुन्दर आंखोंवाली, सुन्दरी। (पु०) २ हरिणाक्षी, हट्टविलासिनी नामक गंधद्रव्य, नखी।

हरिणाङ्क (सं० पु०) चन्द्रमा।

हरिणी (सं० स्त्री०) हरिण-ङीप्। १ मृगी, मादा हिरन। २ स्वर्णप्रतिमा। ३ हरिता, दूब। ४ कामशास्त्रके अनुसार स्त्रियोंकी चार जातियों या भेदोंमेंसे एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं। दो अच्छी जातिकी स्त्रियोंमें यह मध्यम है। 'पद्मिनी' से इसका स्थान दूसरा है। यह पद्मिनीकी अपेक्षा कम सुकुमार तथा चञ्चल और क्रीड़ाशील प्रकृतिकी होती है। ५ एक वर्णवृत्तका नाम जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं। इसके छठे, चौथे और सातवें अक्षरमें यति होती है। इसके ६, ७, ८, ६, १०, १२, १५ और १७वां अक्षर गुरु, बाकी लघु होते हैं। ६ मञ्जिष्ठा, मजीठ ७ स्वर्णयूथी, जर्द चमेली। ८ विजया, सिद्धि। ६ श्वेत यूथिका, सफेद जूही। १० तरुणी, वराङ्गना। ११ सुराङ्गनाभेद।

हरित् (सं० त्रि०) १ नीलपीतमिश्रित वर्ण सब्ज २ कपिश, भूरे या बादामी रंगका। (पु०) ३ अश्वविशेष, एक प्रकारका घोड़ा। ४ सूर्याश्व, सूर्यके घोड़ेका नाम। ५ मुद्ग, मूंग। ६ सिंह। ७ सूर्य। ८ विष्णु। ६ एक प्रकारका तृण। १० हरिद्रा, हल्दी। ११ मरकत, पन्ना।

हरित (सं० त्रि०) १ हरिद्वर्ण, भूरे या बादामी रंगका। २ पीला, जर्द। ३ हरे रंगका, सब्ज। (पु०) ४ सिंह। ५ कश्यपके एक पुत्रका नाम। ६ यदुके एक पुत्रका नाम। ७ युवनाश्वके एक पुत्रका नाम। ८ द्वादश मन्वन्तरका एक देवगण। ६ सैन्य, सेना। १० सब्जी, हरियाली। ११ सब्जी, शाक, भाजी।

हरितक (सं० क्ली०) १ शाक। २ आर्द्रकादि।

हरित-कपिश (सं० त्रि०) पीलापन या हरापन लिये भूरा लोदके रंगका।

हरितगोमय (सं० पु०) ताजा गोबर।

हरितच्छद (सं० पु०) श्वेत शिग्रु, सफेद सहिंजन।

हरितनेत्र (सं० पु०) १ उल्लू, पेचक। २ गङ्गापत्री, कपूर शाक।

हरितमणि (सं० पु०) पन्ना, मरकत।

हरितलता (सं० स्त्री०) १ पानी नामक लता। २ हरिद्वर्ण लता।

हरितशाक (सं० पु०) शिग्रु, सहिञ्जन।

हरिता (सं० स्त्री०) १ दूर्वा, दूब। २ जयन्ती। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ कपिलद्राक्षा, भूरे रंगका अंगूर। ५ पानी। ६ नीलदूर्वा। ७ ब्राह्मी शाक। ८ भूरे रंगकी गाय। ६ स्वर भक्तिका एक भेद। १० हरि या विष्णुका भाव, विष्णुपन।

हरिताल (सं० क्ली०) १ खनिज पीतवर्ण उपधातुविशेष।

वैद्यक शास्त्रमें लिखा है, कि हरिके वीर्यसे हरितालकी और लक्ष्मीके वीर्यसे मनःशिलाकी उत्पत्ति हुई थी।

ताल, आल और तालक ये तीन हरितालके पर्याय हैं। हरिताल दो प्रकारका होता है, पत्रहरिताल और पिण्डहरिताल। इनमेंसे पत्राख्य हरिताल सर्वश्रेष्ठ और पिण्डहरिताल गुणहीन है। पत्रहरिताल सुनहली, भारी, चिकना, अबरक जैसा तहवाला, श्रेष्ठ गुणदायक और रसायन तथा पिण्ड हरिताल पिण्ड जैसा, स्तरहीन, स्वल्प, सत्व और अल्प गुणयुक्त, लघु और रजोनाशक है।

औषधादिके व्यवहारमें यह शोधन कर लेना होता है। शोधित हरिताल कटु, कषाय रस, स्निग्ध, उष्णवीर्य तथा विष, कण्डु, कुष्ठ, मुखरोग, रक्तदोष, कफ और पित्त नाशक है। अशोधित हरिताल सेवन करनेसे शरीरका लावण्य नष्ट होता है तथा अनेक प्रकारके सन्ताप, आक्षेप, कफ, वायुवृद्धि और कुष्ठरोग उत्पन्न होते हैं।

शोधनप्रणाली—हरितालको चूर्ण कर उसे कांजीके साथ कुष्माण्ड रसमें एक पहर, तिल तैलमें एक पहर और त्रिफलाके काथमें एक पहर, इस प्रकार चार पहर तक दोलायन्त्रमें पाक करनेसे यह शोधित होता है।

हरितालमारण—आंवलेके रसमें, कागजी नीबूके रसमें और चूनेके जलमें बारह पहर भावना दे कर धो ले। पीछे शालमलीके क्षारमें रख कचलोयन्त्रमें बालूसे ऊपर का भाग भर कर बारह प्रहर पाक करनेसे यह शोधित होगा। इसके बाद उसे चूर्ण कर लेना होता है। रत्ती भर इसका सेवन करनेसे कुष्ठ, श्लीपद आदि रोग प्रशमित होते हैं। (रसेन्द्रसारस०)

हरितालकी भस्म सभी रोगोंकी महौषध है। अच्छी तरह भस्म किये विना हरितालका व्यवहार करनेसे असाध्य रोग होता है। परन्तु भस्म किया हुआ हरिताल व्यवहार करनेसे असाध्य रोग आरोग्य होते हैं। साधु संन्यासी लोग ही हरिताल भस्म कर सकते हैं। यक्ष्मा आदि रोग आयुर्वेदमतसे दुःसाध्य हैं, पर वे भी हरिताल भस्मका सेवन करनेसे आरोग्य हो गये हैं, ऐसा सुना जाता है।

२ एक प्रकारका कबूतर। इसका रंग कुछ पीलापन या हरापन लिये होता है। इसका मांस कषाय, मधुर, लघु, रक्तपित्तनाशक, तृष्णाघ्न और वातकोपक होता है।

हरितालक (सं० क्ली०) १ हरिताल देखो। २ नाटकके अभिनयमें शरीरमें रंग आदि पोतनेका कर्म।

हरितालिका (सं० स्त्री०) १ दूर्वा, दूब। २ सौर भाद्रकी शुक्ला चतुर्थी तिथि। इस तिथिमें चन्द्रदर्शन नहीं करना चाहिये। इस मासके शुक्ल और कृष्ण इन दोनों पक्षकी चतुर्थी तिथिमें चन्द्रदर्शन करना मना है, करनेसे उस पर झूठा कलंक लगता है।

इस तिथिमें भगवान् श्रीकृष्णने चन्द्रदर्शन किया था, इसीसे उन पर कलंक लगा था। इसलिये भूल कर भी इस तिथिमें चन्द्र दर्शन नहीं करना चाहिये। यदि दैवात् दर्शन हो जाय, तो उस रातको उपवास कर निम्न लिखित मन्त्र पढ कर जल पान करे। पीछे श्रीमद्भागवतोक्त स्यमन्तकोपाख्यान सुने। दैवादर्शन पर ही यह व्यवस्था कही गई है, इच्छापूर्वक दर्शन पर नहीं। जलपानका मन्त्र इस प्रकार है—

"सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मारोदीस्तवह्येष स्यमन्तकः॥
अनेन मन्त्रेण अभिमन्त्रित जलं पेयं" (तिथितत्त्व)

हरिताली (सं० स्त्री०) १ दूर्वा, दूब। २ आकाशरेखा, आकाशमें मेघ आदिकी पतली धज्जी। ३ तलवारका वह भाग जो धारदार होता है। ४ हरितालिका। ५ सौर भाद्रीय नक्षत्रविशेषयुक्त चतुर्थी। ६ मालकंगनी। ७ वायु, हवा।

हरिताश्मन् (सं० क्ली०) तुत्थ, तूतिया।

हरिताश्व (सं० पु०) सुद्युम्नके पुत्रका नाम। (विष्णुपु०)

हरितोपल (सं० पु०) मरकत मणि।

हरित्पर्ण (सं० क्ली०) मूलक, मूली।

हरित्य (सं० त्रि०) आर्द्र काष्ठादिजात, गीली लकडीसे उत्पन्न। (शुक्लयजु० १६।४५)

हरित्वत् (सं० त्रि०) हरिद्वर्णयुक्त, हरा।

हरिदत्त—१ सदुक्तिकर्णामृतधृत एक संस्कृत कवि। २ एक ज्योतिर्विद्, श्रीपतिके पुत्र। इन्होंने गणितनाममाला और सुबोधजातककी रचना की। ३ 'काना हरिदत्त' नामक बङ्गालके एक प्राचीन कवि। इन्होंने ही पहले पहल मनसाका गीत रचा। इन्हें १३वीं सदीका आदमी कहा जा सकता है।

हरिदत्त भट्ट—एक विख्यात ज्योतिर्विद्, हरजी भट्टके पुत्र। इन्होंने कर्णसिंहके पुत्र राजा जगत्सिंहके आदेशसे १६३९ ई०में 'जगद्भूषण' नामक एक संस्कृत ज्योतिर्ग्रन्थ प्रणयन किया।

हरिदत्तमिश्र—१ तिथिचन्द्रिकाके रचयिता। २ व्यवहार परिभाषाके प्रणेता।

हरिदर्भ (सं० पु०) १ हरिद्वर्ण कुश, सब्ज रंगका कुश। २ सब्ज घोडा। ३ सूर्य। इनका घोडा हरित माना जाता है।

हरिदश्व (सं० पु०) १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष, अकवन।

हरिदास (सं० पु०) श्रीहरिका दास, विष्णुभक्तिपरायण।

हरिदास—१ एक विख्यात भक्तिशास्त्रवित्, विट्ठलेश्वरका आत्मीय। इन्होंने भक्तितत्त्वके सम्बन्धमें अनेक ग्रन्थ रचे हैं। उनमेंसे ऐश्वर्याविवरण, कामाख्यादोषविवरण, द्विदलाशय, नवरत्नप्रकाश नामक वल्लभाचार्यरचित

नवरत्नकी टीका, निरोधलक्षणविवृति, भक्तिमार्गनिरूपण, भक्तिवृद्ध्युपाय, विष्णुभक्तिविवरण, वेदान्तसिद्धान्त-कौमुदी, श्रुतिकल्पद्रुम, श्लोकपञ्चकविवरण, सिद्धान्त-रहस्यवृत्तिकारिका, सेवनभावनाकाव्य, सेवाफलस्तोत्र-विवृति और स्वमार्गधर्मविवरण ये सब संस्कृत ग्रन्थ उल्लेखयोग्य हैं। २ पुरञ्जन नामक संस्कृत नाटकके रचयिता। ३ मेघदूतटीकाकार। ४ एक कायस्थ ग्रन्थ-कार, पुरुषोत्तमके पुत्र और कृष्णदासके कनिष्ठ भ्राता। इन्होंने १५५७ ई०में प्रस्तावरत्नाकर नामक संस्कृत ग्रन्थकी रचना की। ५ वत्सराजके पुत्र, लेखकमुक्ता-मणि नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

हरिदास कवि—१ ये जातिके कायस्थ और पटनाके निवासी थे। इन्होंने भाषा साहित्यमें 'रसकौमुदी' नामक बहुत उत्तम ग्रन्थ बनाया है। इसके अतिरिक्त भाषा साहित्यके १२ ग्रन्थ और भी इन्होंने बनाये हैं।

२ बन्दीजन भाषाके कवि। ये बांदाके रहनेवाले थे। इन्हींके पुत्र नोने कवि थे। इन्होंने 'राधाभूषण' नामक एक शृङ्गारका सुन्दर ग्रंथ बनाया है।

हरिदास ठाकुर—श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके एक प्रधान पार्षद। बूढ़न ग्राममें इनका जन्म हुआ। प्राचीन ग्रन्थादि पढ़नेसे जाना जाता है, कि मुसलमान कुलमें इनका जन्म हुआ था। कोई कोई कहते हैं, कि ये हिन्दू थे। किसी मुसल-मान द्वारा प्रतिपालित होनेके कारण लोग इन्हें 'यवन' कहा करते थे। ये अद्वैताचार्य प्रभुके प्रायः समवयस्क थे। मालूम होता है, १३०० शकके शेषभागमें ही ये पैदा हुए थे। इनका जीवनवृत्तान्त पढ़नेसे ज्ञात होता है, कि शैशव-कालमें ही इन्हें हरिनामका सुधास्वाद मिल चुका था।

हरिदास बहुत दिनों तक फुलियाकी गुफामें साधन भजनमें मग्न थे। उस समय भी नदियामें श्रीगौराङ्ग भगवत्ताका प्रकाश नहीं था। इसके बाद धीरे धीरे नव द्वीपमें श्रीकीर्त्तनकी लहरी गूंज उठी। हरिदास गुफाको छोड़ नवद्वीपमें चले गये। श्रीगौराङ्गने अपने चिह्नित भक्तको बड़े आदरसे ग्रहण किया। इस समय श्रीमन्नित्या-नन्द प्रभु भी नवद्वीप पधारे। मानो गङ्गा यमुना और सरस्वतीका सम्मेलन हुआ। नदियामें प्रेमका तूफान बहने लगा। हरिदास और नित्यानन्दने प्रेमानन्दसे मग्न हो नृत्य करते करते कृष्ण नामका प्रचार आरम्भ कर दिया। उसके फलसे जगाई माधाईने उद्धार पाया।

गौराङ्गमहाप्रभु संन्यास ग्रहण कर जब पुरीधाममें रहते थे, उस समय उनके आश्रमके पास ही हरिदासका वासस्थान निर्दिष्ट हुआ था। यहां चैतन्यमहाप्रभु भक्तोंके साथ हमेशा आया करते थे। रूपसनातनने भी पुरीधाम आ कर यहीं पर डेरा डाला था। हरिदास एकनिष्ठभाव-से प्रति दिन तीन लाख नामका जप करते थे। कभी कभी कीर्त्तनमें भी भाग लेते थे। अपने अन्तिम दिनमें इन्होंने अपने आराध्य श्रीगौराङ्गदेवका स्मरण किया। उनके चरणोंमें मस्तक रख कर उनके दोनों चरणोंको देखते देखते तथा श्रीकृष्णचैतन्यका नाम जपते जपते इन्होंने सदाके लिये आंखें मुंद ली। पीछे श्रीकृष्णचैतन्य उनकी मृतदेह-को कन्धे पर रख नृत्य करते हुए समुद्रके किनारे पहुंचे। वहां उन्होंने बालूमें हरिदासका शरीर गाड़ कर अपने हाथसे गड्ढा भर दिया और उसके ऊपर बालूकी वेदिका बना दी। सपार्षद श्रीगौराङ्गने इस प्रकार अपने प्रिय तम वृद्ध भक्तको समुद्रके बालूमें चिरशायित कर हरि-दास-विजयोत्सव समाप्त किया।

हरिदास तर्काचार्य—एक स्मार्त्त ग्रन्थकार। स्मार्त्त रघु-नन्दन और रघुनाथने इनका मत उद्धृत किया है।

हरिदासन्यायवाचस्पतितर्कालङ्कार भट्टाचार्य—एक विख्यात नैयायिक, वासुदेवसार्वभौमके शिष्य। इन्होंने तत्त्व चिन्तामणिके अनुमानखण्डकी टीका, पक्षधरमिश्रकी तत्त्वचिन्तामण्यालोकटीका और न्यायकुसुमाञ्जलि कारिकाव्याख्याकी रचना की।

हरिदासभट्ट—हरिकारिका नामक न्यायग्रन्थकार।

हरिदाससाधु—एक प्रसिद्ध संन्यासी। महाराष्ट्रके एक छोटे ग्राममें इनका जन्म हुआ। जब इनकी उमर पन्द्रह या सोलहकी हुई, उस समय तैलङ्गदेशसे एक संन्यासीने आ कर इनके घरके पास ही एक वृक्षके नीचे डेरा डाला। वे कुबेरपन्थी वैष्णव थे। हरिदास उन संन्यासीकी बड़ी भक्ति करते थे और हमेशा उन्हींके साथ रहते थे। एक दिन तैलङ्गस्वामीके दर्शन नहीं होनेसे हरिदास भी ग्रामको छोड़ बाहर चले गये। हरिदास तैलङ्गस्वामीके अनुगामी हुए थे। पुष्करमें इन्होंने संन्यासधर्मग्रहण किया था।

१८१५ ई०से हरिदास साधुकी अलौकिक क्षमताकी बात जनसमाजमें प्रचारित हुई। रणजित्‌सिंहके मन्त्री ध्यानसिंह जब जम्बूमें थे, उस समय उन्हें मालूम हुआ, कि हरिदास साधु नामक एक संन्यासी अमृतसरमें मिट्टी के नीचे चार महीना रह कर फिर जीवितावस्थामें वहांसे बाहर निकले हैं। उन्होंने दूत भेज कर साधुको लानेकी बड़ी चेष्टा की। जब दूतके लाख चेष्टा करने पर भी साधु जम्बू नहीं आये, तब ध्यानसिंह स्वयं आ कर सशिष्य योगीको जम्बू ले गये। वह साधु जम्बू नगरमें चार मास मिट्टीके भीतर जड़वत् पड़े रहे थे। ध्यानसिंहने यह अपनी आंखोंसे देखा। समाधिमें बैठनेके पहले साधु-को मूंछ, दाढ़ी आदि मुड़वा दी गई थी, किन्तु चार महीनेमें एक भी मूंछ न निकली। इस समय उनकी समस्त जीवनीक्रिया बन्द हो जानेसे भी उनके प्राण नहीं गये।

इस अत्याश्चर्य क्षमताकी बात जब पत्रिकामें प्रकाशित होने लगी, तब बहुतोंने इस पर विश्वास नहीं किया। कहते हैं, कि लार्ड बेण्टिङ्क और लार्ड आकलैंडने इस विषयका सत्यासत्य जाननेके लिये राजपूताने और पञ्जाबके पालिटिकल एजण्टोंको पत्र लिखा था।

राजपूतानेके पालिटिकल एजेण्ट मैकनटन साहब इस बातका पता लगानेके लिये साधुको पुष्कर लाये। यहां अनेक सम्भ्रान्त लोगोंके सामने जब हरिदास साधुने आसन सजाया, तब उन्हें सन्दूकमें बंद कर मैकनटन साहबने अपने घरमें रखा। तेरह दिन बीत जाने पर सन्दूक खोल कर देखा गया, कि हरिदासके होशहवाश कुछ भी नहीं है, समूचा शरीर सूख कर काठ जैसा हो गया है, परन्तु कुछ समय बाद उस शरीरमें फिर प्राण-सञ्चार हुआ।

जयशलमेरके महारावल निःसन्तान थे। उन्होंने ईश्वर लाल नामक अपने एक मंत्रीकी सलाहसे हरिदास साधुको अपनी राजधानी बुलाया। हरिदास समाधि-रोहणके जो सब पूर्वानुष्ठान हैं, उन्हें अपने डेरे पर सम्पन्न कर महाराजके अहवैगुण्यकी शांतिके लिये समाधि आसन पर बैठे। उन्हें अत्यंत सङ्कीर्ण एक दो हाथ लम्बे, डेढ़ हाथ चौड़े और कमसे कम दो हाथ गहरे एक गढ़ेमें गाड़ रखा गया। लेफटनाण्ट बेलो आदि अन्यान्य सम्भ्रान्त राजकर्मचारियोंके सामने एक महीनेके बाद जब इस योगीको गढ़हेसे निकाला गया, तब भी वे जीवित पाये गये। इस प्रकारकी अत्याश्चर्य घटनाको बहुतसे लोगोंने अपनी आंखों देखा था। साधु हरिदासका नाम तमाम फैल गया।

हरिदासने बेलो प्रमुख साहबोंको योगाभ्यासके तीन उपाय संक्षेपमें कह दिये थे। वे तीनों उपाय ये सब हैं, प्राणायाम, खेचरीमुद्रा और भक्ष्यका नियम। समाधि अवस्थामें इन सब योगाभ्यास द्वारा शारीरिक क्रिया बिलकुल बंद रहती है, देह मृतवत् हो जाती है।

१८३५ ई०में नवनिहालसिंहके विवाहमें हरिदास लाहोर आये। मंत्री ध्यानसिंहके साथ साधुका पूर्व-परिचय था। उन्होंने महाराज रणजित् सिंहके निकट इन सिद्धपुरुषकी अलौकिक क्षमताकी बात निवेदन की। महा-राजने बड़े आश्चर्यान्वित हो साधुको अपने यहां बुला मंगाया। उन्होंने भी साधुकी क्षमता जाननेके लिये उन्हें एक संदूकमें बंद किया और सीलमोहर कर उसे जमीनमें गाड़ दिया। महाराजके आदेशसे वहां जौ बुना गया। चालीस दिन बाद जब अङ्कुर बड़े हुए, तब कप्तान वेड आदि बड़े बड़े साहबोंके सामने वह संदूक जमीनमेंसे निकाला गया। हरिदासकी देह जब निकाली गई, तब माक ग्रेगर और मरे आदि डाक्टरोंने परीक्षा कर कहा, कि यदि यह आदमी जीवित हो जावे, तो हम लोग यह अवश्य कहेंगे, कि मनुष्यकी सृष्टि की जा सकती है। पीछे शिष्य-गण नाना प्रकारके श्वास प्रश्वासकी प्रक्रिया द्वारा हरिदास साधुको होशमें लाये। इसके बादसे हरिदास साधुके अलौकिकत्वमें फिर किसीको भी संदेह न रहा।

समाधिप्रसङ्ग पर हरिदास कहते थे, कि उस समय उन्हें ऐसा निर्मल आनंद मिलता है, कि वे समाधिको कभी भी तुच्छ साधन नहीं समझ सकते।

इसके बाद साधु हरिदास महाराज रणजित्‌सिंहके अनुरोधसे दस मासके लिये जमीनके नीचे रहे। यही उनकी अंतिम प्रक्रिया थी। अदीन नगरमें जब फिरसे समाधि पर बैठनेके लिये असवर्ण प्रमुख साहबोंने इन्हें अनुरोध किया, तब वे तरह तरहका बहाना लगा कर इनकार चले गये।

झिन्दन रानी जैसी बुद्धिमती और तेजस्विनी नारी उस समय कोई भी न था, पर हरिदास पर वह क्यों चिढ़ी रहती थी, उसका कारण जानना कठिन है। उनके हुकुमसे एक दिन दूतोंने साधुका खूब अपमान किया था। हरिदासने क्रोधसे प्रज्वलित हो दूतोंसे कहा, 'तुम लोग अपने पापिष्ठ महाराजसे कहना, कि उनका वंश एकदम निर्मूल हो जायेगा, एक भी जीवित न रहेगा।' इसके बाद दूसरे दिन लाहोरमें यह अफवाह उडी, कि हरिदास नहीं हैं, वे शिष्योंको ले कर न मालूम कहां अन्तर्ध्यान हो गये।

हरिदासकी मृत्यु अत्याश्चर्य थी। उन्होंने शिष्योंको बुला कर कहा, कि उनकी मृत्युका समय आ पहुंचा। इस बार वे जो समाधिस्थ होंगे, उससे उन्हें फिर कोई भी बचा नहीं सकेगा। इसके बाद उन्होंने समाधिरूढ हो देहत्याग किया।

हरिदासस्वामी—मथुराके एक प्रधान वैष्णवसमाजके प्रवर्त्तक। इनके दो भाईके वंशधर मथुराके विहारीजीके नाम पर उत्सृष्ट एक बड़े मन्दिर-रक्षक और सेवाइत हैं। मन्दिरसंश्लिष्ट विषयसम्पत्तिका हरिदासस्वामीके भ्रातृवंशधर उपभोग करते हैं।

प्रियदासके परिशिष्ट और भक्तसिंधुमें हरिदासस्वामीका जीवनवृत्तांत देखा जाता है।

हरिदासके पितामह ब्रह्मधर हरिदासपुरकी सनाढ्य श्रेणीके ब्राह्मण थे। वे श्रीकृष्णचंद्रके परम भक्त थे। इनके पुत्रका नाम आशधीर था। ये ही विख्यात संन्यासी हरिदासस्वामीके पिता थे। आशधीरका विवाह वृन्दावनके निकटवर्त्ती राजपुरके गंगाधर नामक एक ब्राह्मण-कन्यासे हुआ। १४४१ सम्वत् भाद्रमासकी कृष्णाष्टमीमें हरिदासका जन्म हुआ। हरिदासने मातापिताके बहुत कहने सुनने पर भी विवाह नहीं करनेकी प्रतिज्ञा की। २५ वर्षकी उमरमें ये मानसरोवरके समीपवर्त्ती एक संन्यासाश्रममें जा कर ईश्वरसाधनामें नियुक्त हुए।

उनके मामा विट्ठलविपुलने ही पहले पहल हरिदासस्वामीका शिष्यत्व ग्रहण किया। उनका यशःसौरभ धीरे धीरे चारों ओर फैल गया। उनके दर्शनार्थी आगन्तुकोंमेंसे दयालदास क्षत्रीने एक दिन दिल्लीसे आ कर उन्हें बहुमूल्य स्पर्शमणि उपहारमें दी। उसे हरिदासने ले कर यमुनामें फेंक दिया। इस उपलक्षमें प्रियदासने लिखा है—

"पारशपषान करि जल डरवाई दियो।
चियो तब शिष्य ऐसैं नानाविधि गाइये॥"

हरिदासने जब देखा, कि दयालदास इस पर अप्रसन्न हो गये हैं, तब वे उन्हें ले कर यमुनाके किनारे गये और एक मुट्ठी बालू उन्हें उठाने कहा। बालू ले कर प्रत्येक कणा स्पर्शमणि जैसी है, उसका जिसमें स्पर्श होता था, वही सोना हो जाता था। यह देख कर दयालदासको चैतन्य हुआ। उन्होंने समझा, कि संन्यासियोंके निकट पार्थिव अर्थका कोई मोल नहीं है। वे लोग अपनेमें ही सम्पूर्ण और सार्थक हैं। अनन्तर वे हरिदासके शिष्य बन गये।

एक दिन एक कायस्थने स्वामीजीको एक बोतल भरा हुआ बहुमूल्य इतरकी उपहारमें दिया था। स्वामीने वह बोतल ले कर तोड़ फोड़ डाली। इस पर कायस्थ असंतुष्ट हुआ। परंतु उसने मंदिरमें जा कर देखा, कि समूचा मन्दिर गंधसे तरावोर हो रहा है। क्योंकि देवताने उसका दान ग्रहण कर लिया था।

दिल्लीकी सभामें एक बन्दी गायकके एक निर्बोध मूर्ख पुत्र था। उसका पिता जब किसी तरह सुधार न सका, तब उसने अंतःकरणसे उसको घरसे निकाल दिया। एक दिन बहुत तड़के हरिदास स्नान करने जा रहे थे, राहमें संयोगवश पैर फिसल जानेसे वे उसी निर्बोध बालक पर जो कहीं आश्रय न पा कर सड़क पर सो रहा था, गिर पड़े। स्वामीजीके गात्रस्पर्शसे उसकी नींद टूट गई और उसने अपने जीवनका सारा दुखड़ा उन्हें कह सुनाया। स्वामीजीने उसका तानसेन नाम रखा और उनके वरसे तानसेन सुकण्ठ सङ्गीताचार्य हुआ। तानसेन जब दिल्ली लौटा, तब संङ्गीतमें उसका अद्भुत दखल देख कर दिल्लीके सम्राट् अकबर मोहित हो गये, वे स्वामीजीके दर्शनाभिलाषी हो मथुरा आये। बादशाह भटरोन्द तक तो घोड़े पर आये, वहांसे पैदल चल कर साधुके दर्शनार्थ निधुवन उपस्थित हुए। हरिदास स्वामीने तानसेनका अच्छा स्वागत

किया, पर उसके साथ जो सम्राट् आये थे, उसकी ओर उन्होंने दृष्टि भी न फेरी। सम्राट् बार बार उनसे यह अनुरोध करने लगे, वे यदि उन्हें किसी कार्य्यमें लगा लें, तो अत्यन्त कृतार्थ होंगे। अन्तमें स्वामी जो विहारीघाट गये और सम्राट्को वहांसे एक खराब पत्थर उठा कर वहां एक मूल्यवान् पत्थर अपने हाथसे बैठाने कहा। यह काम सम्राट की शक्तिके बाहर था। पीछे सम्राट् वृन्दावनमें मयूर और हनुमानोंकी जीविकाके लिये वृत्ति निर्द्धारण कर चले आये। हरिदासकी कविता पढ़नेसे मालूम होता है, कि वे तुलसीदासके बहुत पहले हो गये हैं। किंतु तुलसीदासकी मृत्यु १६८० सम्वत्‌में हुई। अतः हरिदास स्वामी १६वीं सदीके शेष भागसे १७वीं सदीके प्रथम भाग तक जीवित थे, इसमें जरा भी संदेह नहीं।

हरिदासस्वामीने दो छोटी छोटी कविता रची है, 'साधारणसिद्धान्त' और 'रसके पद'। उनके मतके साथ चैतन्यदेवका धर्ममत बहुत कुछ मिलता है। यह धर्म वैष्णवधर्मकी एक शाखा है। उनकी रचित कविता जयदेवकी पदावलीकी तरह शब्दलालित्य-सम्पन्न है। देशी कवितामें सूरदास और तुलसीदासके नीचे ही इनका स्थान है।

हरिदिन (सं० क्ली०) श्रीहरिका दिन, हरिवासर, एकादशी।

हरिदिश् (सं० स्त्री०) इन्द्रसम्बंधीय दिक्, पूर्व दिशा।

हरिदीक्षित—एक प्रसिद्ध वैयाकरण, वीरेश्वर दीक्षितके पुत्र, भट्टोजीदीक्षितके पौत्र और नागोजी भट्टके गुरु। इन्होंने परिभाषेपरकार, फिट्‌सूत्रटीका, सिद्धान्तकौमुदी टीका तथा भावार्थप्रकाशिका शब्दसिद्धि और शब्दरत्न नामक कई संस्कृत व्याकरणसम्बन्धीय ग्रंथ रचे।

हरिदेव (सं० पु०) १ श्रवणा नक्षत्र। २ हरि। (त्रि०) २ हरिभक्तिपरायण।

हरिदेव—सारस्वतसार नामक संस्कृत व्याकरणके रचयिता।

हरिदेवमिश्र—कर्णकुतूहल नामक संस्कृत काव्यके रचयिता

हरिदेवसूरि—विवाहपटलके रचयिता।

हरिद्दर्भ (सं० पु०) हरिद्वर्णकुशविशेष, पीला कुश। गुण—त्रिदोषनाशक, मधुर, तुवर, हिम, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, तृष्णा, वस्ति, प्रदर और अस्रदोषनाशक। इसके मूलका गुण—शीतल, रुचिकर, मधुर, पित्तनाशक, रक्तज्वर, तृष्णा, श्वास और कामलारोगनाशक।

हरिद्रु (सं० पु०) तरुविशेष, पीला चन्दन।

हरिद्रुक (सं० पु०) १ हल्दीका पौधा। २ पीला चन्दन ३ एक नागका नाम।

हरिद्राखण्ड (सं० पु०) एक औषध। इसके सेवनसे दाद, खुजली, फोड़े फुंसी और कुष्ठ रोग दूर होता है। सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, तज, पत्रज, वायविड़ंग, नागकेसर, निसोथ, त्रिफला, केशर और नागरमोथा सब रुपये भर ले कर चूर्ण करे और गायके घीमें सान डाले और चार रुपये भर हल्दीका चूर्ण चार सेर दूधमें मिला कर खोया बना ले। फिर मिस्रीकी चाशनीमें सबको मिला कर रुपये भरकी गोलियां बाँध ले।

हरिद्राघ्नी (सं० स्त्री) हरिद्रा, हल्दी।

हरिद्राव (सं० पु०) नागकेशरचूर्ण।

हरिद्रा (सं० स्त्री०) ओषधिविशेष, हल्दी। विभिन्न स्थानमें यह विभिन्न नामसे प्रचलित है। यथा,—पञ्जाब—हलदार हलजा, अरब—कारकुम, औरुकेशाफर, जरसुद, पारस्य—दारजरद, जरद छोवा; तामिल—मञ्जाल, तेलगू—पशुपु, मलयालम् मन्नाल, मरिनालु, कनाड़ि—अरिपिना, मराठी—हलदी; गुजरात—हलद, शिङ्गापुर—कहा, ब्रह्मो—सनि, तानुन, हसनवेन्, हिब्रु—कारकुन, चीन—किया होया, अंगरेजी Turmeric।

इसका पौधा डेढ़ दो हाथ ऊंचा होता है। इसमें चारों ओर टहनियाँ नहीं निकलतीं, काण्डके चारों ओर हाथ पौन हाथ लंबे और तीन चार अंगुल चौड़े पत्ते निकलते हैं। इसकी जड़ जो गांठके रूपमें होती है, व्यापारकी एक प्रसिद्ध वस्तु है। जब यह कन्दमूल सुपुष्ट हो जाता, तब जमीनके अंदरसे उसे निकाल कर सिद्ध करना होता है। पीछे उसे धूपमें अच्छी तरह सुखा लेते हैं। यही हल्दी बाजारमें बिकती है। यह मसालेके रूपमें नित्यके व्यवहारकी भी वस्तु है और रंगाई तथा औषधके काममें भी आती है। गांठ पीसने पर बिलकुल पीली हो जाती है। इससे दाल, तरकारी आदिमें भी यह डाली

जाती है और इसका रंग भी बनता है। इसके सिवा इसमें नाना प्रकारके भेषज गुण भी है।

इसकी खेती भारतवर्षमें प्रायः सब जगह होती है। हल्दीकी कई जातियां होती है। साधारणतः दो प्रकारकी हल्दी देखनेमें आती है—एक बिलकुल पीली, दूसरी लाल या ललाई लिये जिसे रोचनी हल्दी कहते हैं। जिसमें पतली पतली सफेद गांठ होती है, उसे 'देशी, दक्षिणी या मसलीपटम हल्दी' और जिसमें मोटी मोटी गांठे होती हैं उसे 'पटनया हल्दी' कहते हैं। कोचीन चीनमें हल्दी जंगली भावमें उत्पन्न होती है।

युक्तप्रदेश, पञ्जाब, बम्बई, मन्द्राज और बंगालमें कई जगह हल्दीकी खेती होती है। बंगालमें करीब ३० हजार एकड़, मन्द्राजमें १५ हजार, बम्बईप्रदेशमें ६ हजार, बेरारमें २ हजार और पञ्जाबप्रदेशमें ३५०० एकड़ जमीनमें हल्दी उत्पन्न होती है।

पहले ही कह आये हैं, कि हल्दी व्यापारकी एक प्रसिद्ध वस्तु है। व्यञ्जनादिमें चाहे इसका व्यवहार कितना ही क्यों न हो, रंग बनानेके काम ही इसका अधिक आदर है। प्रति वर्ष बङ्गालसे प्रायः दो लाख मन हल्दीकी इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और अमेरिकाके युक्तराज्यमें रफतनी होती है। भारतके अन्यान्य बन्दरोंसे भी प्रायः २ लाख ३० हजार हंडर हल्दी समुद्रपथसे विभिन्न देशोंमें भेजी जाती है।

भारतवासी विवाहादि उत्सवमें बहुत दिनोंसे हल्दीका व्यवहार करते आ रहे हैं। गात्रहरिद्रापर्व उसका एक निदर्शन है। आज भी माघके महीनेमें सरस्वती पूजाके समय पहले हल्दीसे कपड़ा रंगा कर पीछे उसे इमलीके जलमें डुबो देते हैं। ऐसा करनेसे वह वासन्ती रंग हो जाता है। यह प्रथा भारत भरमें प्रचलित है। कई जगह तो स्त्रियां शरीरमें हल्दी लगाती हैं। उनका विश्वास है, कि शरीरमें हल्दी लगानेसे कोई भी संक्रामक रोग छू नहीं सकता। कभी कभी ज्वरका ताप बढ़ जानेसे शरीरमें हल्दी लगाई जाती है।

हिन्दूके निकट हल्दी अति पवित्र समझी जाती है। शास्त्रीय क्रिया-कर्म और आचारादिके अनेक कार्यों में भी हल्दीका व्यवहार देखा जाता है। अन्नप्राशन, विवाहादि कार्योंमें 'श्री' बनाते समय वरण डाला पर, पञ्चगुडिकाके आसन पर, श्राद्धमें, पुण्याह कर्म आदिमें हल्दीका व्यवहार है। वैष्णव लोग हल्दीके साथ नीबूका रस मिला कर तिलचूर्णम् बनाते हैं और उसीका तिलक लगाते हैं। कुदृष्टिके कुफलसे मनुष्यकी रक्षा करनेके लिये आरती उत्सवमें हल्दी और चूना मिला कर दिया जाता है।

वैद्यकमतसे गुण—कटु, तिक्त, उष्ण, कफ, वात, अस्र, कुष्ठ, मेह, कण्डू, व्रणनाशक और देहका वर्णविधायक है। (राजनि०) भावप्रकाशमें लिखा है, कि हरिद्रा, काञ्चनी, पीता आदि हरिद्रा शब्दके पर्याय हैं। हरिद्रा, कर्पूर-हरिद्रा, वनहरिद्रा और दारुहरिद्राके भेदसे यह चार प्रकारकी है। इनमेंसे हरिद्रा—कटु, तिक्त, रस, रूक्ष, उष्ण वीर्य, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, त्वक्दोष, प्रमेह, रक्त दोष, शोथ, पाण्डु और व्रणदोषनाशक।

शरीरमें यदि जखम हो गया हो या दर्द होता हो, तो हल्दी लगानेसे बहुत कुछ उपकार होता है। कच्ची हल्दी शैत्य, हृद्य और रक्तपरिष्कारक है। हल्दीका जल आँखके लिये बड़ा हितकर है। आँख आने पर हल्दीसे रंगे कपड़ेसे आँखका पानी पोछा जाता है। कभी कभी आँखके चारों ओर हल्दीका लेप किया जाता है। हल्दीके फूलको अच्छी तरह पीस कर दाद आदि चर्मरोगमें लगानेसे विशेष उपकार होता है। हकीम लोग यकृत् और न्यावा रोगमें हल्दीका प्रयोग करते हैं। सविराम ज्वरमें, जलोदरी रोगमें तथा उदरामयमें यह विशेष हित कर है। फ्लेष्मामें यदि रक्तकी अधिकता हो, तो हल्दी जला कर नाक द्वारा उसका धुंआ लेनेसे कफ निकल कर शरीर स्निग्ध और सबल होता है।

हल्दीकी जड़का चूर्ण ब्रङ्काइटिस रोगमें ३०से ४० ग्रेन मात्रामें फलप्रद है। आगमें हल्दीका चूर्ण डाल उसका धुआँ कैकड़े या बिच्छूके काटे हुए स्थान पर लगानेसे जलन बहुत कुछ दूर हो जाती है। कच्ची हल्दीका रस शैत्यगुणप्रधान है। कच्ची हल्दीको पीस कर मस्तक पर प्रलेप देनेसे शिरका चकराना आदि रोग आरोग्य होता है। हिष्टिरियारोगमें हल्दीकी जड़ जला कर रोगीको नाकमें उसकी गन्ध लगानेसे फिट कम हो जाता है। हल्दी और फिटकरी १ं २० परिमाणमें मिला कर कानमें

देनेसे कानसे पीप निकलना बंद हो जाता है। दाक्षिणात्य में सर्दीज्वरमें हल्दी और पीपलके चूर्णको गरम दूधके साथ खिलाया जाता है।

कर्पूर-हरिद्राका गुण—शीतवीर्य, वायुवर्द्धक, पित्तनाशक, मधुर, तिक्त रस और सब प्रकारका कण्डूविनाशक। इसे आम्रगन्धि हरिद्रा कहते हैं।

वनहरिद्राका गुण—कुष्ठ और वातरक्त-विनाशक।

दारुहरिद्राका गुण—हरिद्राकी तरह, विशेषतः नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगनाशक। दारुहरिद्राका काढ़ा और दूध समान भागमें पाक कर पादावशिष्ट रहने उतार ले। यह काढ़ा आँखोंके लिये विशेष उपकारी है।

(भावप्र०)

काली हल्दी क्षतादि रोगमें उपकारक है। वनहरिद्रा को जंगली हल्दी भी कहते हैं।

दाम, वसन्त, खुजली, दाद आदिमें कच्ची हल्दी अमृतके समान उपकारी है। मेहरोगमें भी कच्ची हल्दीका रस विशेष उपकारी है। मूत्रकृच्छ्र या प्रमेहरोगमें कच्ची हल्दीका टुकड़ा ईखके गुड़के साथ खानेसे बड़ा उपकार होता है।

हरिद्रा अमङ्गलनाशक है। दुर्गापूजा आदिमें पूजाके पहले भूत, प्रेत, पिशाच आदिको माषभक्तकी बलि देनी होती है, वह हल्दी माष कलाय और कच्ची हल्दी है।

२ वन, जंगल। ३ मङ्गल। ४ सोसा धातु। ५ एक नदीका नाम।

हरिद्राखण्ड (सं० पु०) शीतपित्तरोगकी एक औषधि। यह हरिद्राखण्ड और बृहत्हरिद्रा भेदसे दो प्रकारका है।

हरिद्रागणपति (सं० पु०) हरिद्रावर्ण गणेशजीकी एक मूर्त्ति जिन पर मन्त्र पढ़ कर हल्दी चढ़ाई जाती है।

हरिद्रागणेश (सं० पु०) गणेशविशेष। गणेश, महागणेश, हेरम्ब और हरिद्रागणेश आदि गणेशके भेद हैं। तन्त्रशास्त्रमें इन सब गणेशोंके पृथक् मन्त्र और पूजादि का विशेष विवरण लिखा है।

हरिद्राङ्ग (सं० पु०) हरिताल पक्षी, एक प्रकार कबूतर।

हरिद्रादिचूर्ण (सं० क्ली०) हिक्काश्वासरोगकी चूर्णौषधिविशेष।

हरिद्रादिवर्ग (सं० पु०) हरिद्रा, दारुहरिद्रा यष्ट्याह्व, पृश्निपर्णी और कूटजोद्भव द्रव्य। गुण—आमातिसारनाशक, मेद और कफनाशक तथा स्तन्यदोषनाशक।

हरिद्राद्यघृत (सं० क्ली०) पाण्डु रोगाधिकारोक्त घृतौषधविशेष।

हरिद्राद्वय (सं० क्ली०) हरिद्रा और दारुहरिद्रा, हल्दी और दारु हल्दी।

हरिद्रापञ्चक (सं० क्ली०) पांच प्रकारकी हरिद्रा। यथा—हरिद्रा, आम्रहरिद्रा, दारुहरिद्रा, शटी और विकङ्कत।

हरिद्रापत्रकण्टका (सं० स्त्री०) दार्वी, दारुहरिद्रा।

हरिद्राप्रमेह (सं० पु०) प्रमेहका एक भेद। इसमें पेशाब हल्दीके समान पीला आता है और जलन होती है।

हरिद्राभ (सं० पु०) १ पीतशाल, पियाशाल। २ कर्पूरक, कपूर। ३ पीतवर्ण, पीला रंग। (त्रि०) ४ पीतवर्णविशिष्ट, पीले रंगका।

हरिद्रामेह (सं० पु०) पित्तजन्य प्रमेहरोगविशेष।

हरिद्राराग (सं० पु०) साहित्यमें पूर्वराग का एक भेद, वह प्रेम जो हल्दीके रंगके समान कच्चा हो, स्थायी या पक्का न हो। पूर्वरागके कुसुम्भ राग, मञ्जिष्ठा राग आदि कई भेद किये गये हैं।

हरिद्रु (सं० पु०) १ वृक्ष, पेड़। २ दारुहरिद्रा, पीतदारु। हरिद्रा देखो।

हरिद्रुक (सं० त्रि०) दारुहरिद्रायुक्त।

हरिद्वार—इतिहासप्रसिद्ध शहर और प्राचीन तीर्थस्थान। यह शहर युक्तप्रदेशके सहारनपुर जिलेके अन्तर्गत अक्षा० २९° ५७' ३०" उ० तथा देशा० ७८° १२' ६२" पू०के मध्य अवस्थित है। यह रुड़कीसे १७ मील और सहारनपुर शहरसे ३९ मील उत्तरपूर्वमें पड़ता है। जहां शिवालिक पहाड़की कन्दरासे निकल कर गङ्गा समतल मैदानमें आई है उसके पास ही गङ्गाके दाहिने किनारे यह इतिहासप्रसिद्ध शहर बसा हुआ है। यूएनचुवंगने अपने भ्रमण-वृत्तान्तमें 'मयूरो' नामक जिस शहरका उल्लेख किया है, वह हरिद्वारके निकटवर्त्ती मायापुर ग्राम है। इस ग्रामको पूर्वसमृद्धि अब देखनेमें नहीं आती।

शरभनाथसे ले कर राजा वेनके प्राचीन गढ़ तक नदीकी दक्षिणी सीमासे उत्तरी सीमा शिवालिक पहाड़ पर्य्यन्त जगह जगह अनेक प्राचीन कारुशिल्पके खण्ड खण्ड नमूने

देखे जाते हैं। यहांसे प्रति वर्ष बहुत सी प्राचीन मुद्राएं पाई जाती हैं। नारायणशिलाका मन्दिर बहुत प्राचीन है और इसके भग्नांशसे एक छोटी बुद्धमूर्त्ति आविष्कृत हुई है। मायादेवीका मन्दिर पत्थरका बना हुआ है। इसके गात्रमें जो प्रस्तरलिपि है, उससे अनुमान किया जा सकता है, कि यह मन्दिर १०वीं या ११वीं सदीमें बनाया गया है। इस मन्दिरमें जो प्रधान मूर्त्ति है, वह मायादेवीकी मूर्त्ति कहलाती है। उस मूर्त्तिके तीन मस्तक और चार हाथ हैं। एक हाथमें चक्र है। उस चक्रसे देवी एक पराजित मूर्त्तिका विनाश करनेको उद्यत हुई हैं। दूसरे हाथमें वे मुण्ड और तीसरेमें त्रिशूल धारण की हुई हैं। इस आकृतिसे अनुमान किया जा सकता है, कि यह मायादेवीकी मूर्त्ति नहीं है, शिवपत्नी असुरमर्दिनी महामायाकी मूर्त्ति है। हरिद्वारनाम आधुनिक है। पहले इसका नाम कपिल था। कहते हैं, कि यहां कपिलका तपोवन था। आज भी वह कपिलस्थान समझा जाता है। आधुनिक नाम ले कर शैव और वैष्णवोंमें मतभेद है। शैव लोगोंका कहना है, कि यह हरिद्वार नहीं है, इसका प्रकृत नाम हरद्वार है। बहुत पहलेसे ही लोग इसे एक प्रधान तीर्थ समझते आ रहे हैं। यद्यपि अभी इसकी पूर्व-समृद्धि कुछ भी नहीं है, तो भी भारतवर्षसे हजारों यात्री यहां तीर्थ करनेके लिये आते हैं। हिन्दुओंमें 'हरिका चरण' नामक घाट एक सर्वापेक्षा पवित्र तीर्थ समझा जाता है। विष्णुका चरणचिह्न ऊपरके एक प्राचीरगात्रमें उत्कीर्ण है। शुभ मुहूर्त्तमें सबसे पहले उस पुष्करिणीमें स्नान करनेसे महापुण्य होता है, यह सोच कर सभी यात्री पहले उसी तीर्थमें गोता लगाते हैं। प्रति बार वर्षके अन्तमें यहां कुम्भका मेला लगता है। इस मेलेमें प्रायः एक लाख आदमी इकट्ठे होते हैं, परन्तु कुम्भमेलाके उपलक्षमें तीन लाख आदमीसे कम नहीं आते।

हरिद्वार उत्तरपश्चिमाञ्चलका एक प्रधान वाणिज्य केन्द्र है। यहां घोड़े बिकनेको आते हैं। वृटिश सरकार साधारणतः भारतसेनाके लिये हरिद्वारसे ही घोड़े खरीदती है। यहां भारत और यूरोपकी वाणिज्य वस्तु की खूब बिक्री होती है।

पद्मपुराणके क्रियायोगसारमें लिखा है, कि सभी स्थानोंमें गङ्गा सुलभ है, परन्तु हरिद्वार, प्रयाग और गङ्गासागरसङ्गम इन तीनों स्थानमें गङ्गा अति दुर्लभ है। इन्द्रादि देवगण इस हरिद्वारमें आ कर स्नानदानादि करते हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग आदि जिस किसी प्राणीका यहां देहान्त होता है, वह परमपद पाता है। यह तीर्थ हरिप्राप्तिका द्वारस्वरूप है, इसीसे इसका हरिद्वार नाम पड़ा है। इस तीर्थमें गङ्गा स्नान ही प्रधान है। यहां स्नान करनेसे जन्मजन्मार्जित पाप विनष्ट होते हैं तथा इस लोकमें नाना प्रकारके सुख सौभाग्य और परलोकमें हरिपदकी प्राप्ति होती है। यह हरिद्वार गङ्गाद्वार नामसे प्रसिद्ध है। गङ्गा इस स्थानसे उतर कर समतल मैदानमें आई है, इसीसे इसको गंगाद्वार कहते हैं। पद्मपुराण और अन्यान्य पुराणोंमें भी हरिद्वार तीर्थकी विशेष विवरणी और प्रशंसा लिखी है।

हरिधनुष (सं० पु०) इन्द्रधनुष।

हरिधाम (सं० पु०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।

हरिधायस् (सं० त्रि०) हरिद्वर्णधारक रश्मिविशिष्ट।

हरिन (हिं० पु०) खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्रायः सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ोंमें रहता है। विशेष विवरण हरिण शब्दमें देखो।

हरिनक्षत्र (सं० पु०) श्रवणा नक्षत्र। इसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हैं।

हरिनख (सं० पु०) १ सिंह या बाघका नाखून। २ बाघके नाखून लगी तावीज जो स्त्रियां बच्चोंको नजर आदिसे बचानेके ख्यालसे पहनाती हैं। इसे बघनहां भी कहते हैं।

हरिनदी (सं० स्त्री०) राढ़देशमें गङ्गाके पूरबकी ओर प्रवाहित एक नदी।

हरिनन्दन—१ मुहूर्त्तरत्नाकर और उसके टीकाकार। २ युद्धरत्नस्वरके रचयिता।

हरिनाथ—१ भगवन्नामकौमुदीटीकाके रचयिता। २ वैद्यजीवनके एक टीकाकार। ३ वासुदेवके पुत्र, धरणीधरके पौत्र, रामविलास नामक संस्कृत काव्यके रचयिता। ४ विश्वधरके पुत्र, केशवके भाई। इन्होंने काव्यादर्श-

माज्जन नामक काव्यादर्शटीका और सरस्वतीकण्ठाभरण-मार्जन नामक सरस्वतीकण्ठाभरणकी टीका लिखी है।

हरिनाथ (सं० पु०) वंदरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्।

हरिनाथ आचार्य—सङ्केतकौमुदी और संतानदीपिका नामक ज्योतिर्ग्रन्थके रचयिता।

हरिनाथ उपाध्याय—स्मृतिसार नामक धर्मशास्त्र निबंधके रचयिता। वाचस्पतिमिश्र, रघुनंदन आदिने इनका ग्रंथ उद्धृत किया है।

हरिनाथ कवि—गुजरात पीछे काशीवासी एक प्रसिद्ध कवि। इन्होंने 'अलंकारदर्पण' और 'पोथी शाह मुहम्मद-शाही'की रचना की। शेषोक्त ग्रन्थमें मुहम्मद शाहका इतिहास लिखा है।

हरिनाथ महापात्र—अकबर बादशाहकी सभाके एक विख्यात हिन्दी कवि। फतेपुर जिलेके असनी ग्राममें सं० १६४४को इनका जन्म हुआ था। कविवर बहुत से राजाओंकी सभामें अपनी कविताका परिचय दिया करते थे। इनके पिताका नाम नरहरिजू था। बाधव नरेश नेजारायकी प्रशंसामें हरिनाथने यह दोहा पढा था -

"लङ्का लौ दिल्ली दई, साहि विभीषण काम।
भयो बघेले रामसो, राजा राजाराम॥"

इस दोहेको सुन कर बाधव नरेश बड़े प्रसन्न हुए और कविजीको उन्होंने लाख रुपये दे कर विदा किया। इसके बाद ये आमेरके राजा मानसिंहके यहा पहुंचे और उनको प्रशंसामें दो दोहे पढे—

'बलि बोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात।
सींची मान महीपने, जब देखी कुंभिलात॥
जाति जाति तें गुण अधिक, सुन्यों न अबहूं कान।
सेतु बांधि रघुवर तरे, हेला दै नृप मान॥"

इन दोनों दोहोंसे महाराज मानसिंह बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने दो लाख रुपये तथा हाथी आदि दे कर कविको विदा किया। आमेर दरबारसे विदा हो कर जब कवि-हरिनाथजी घरको लौटे आते थे, तब मार्गमें एक नागा पुत उन्हें मिला और उनको प्रशंसामें एक दोहा उसने पढा, जो इस प्रकार है—

"दान पाय दोनो बढे, कै हरि कै हरिनाथ।
उन बढि ऊंचो पग कियो, इन बढि ऊंचो हाथ॥"

इस दोहेको सुन कर कवि हरिनाथने आमेर दरबार-से प्राप्त धन दे दिया और आप खाली हाथ घर लौट आये।

हरिनाम (सं० क्ली०) १ श्रीहरिका व्याख्यान, भगवान्का नाम। कलिकालमें एकमात्र हरिनाम ही सत्य है, इस नामके सिवा और कुछ नहीं है।

"हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलं।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥"
(हरिभ० वि० ११ वि०)

"हरेकृष्ण हरेकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥"

वैष्णवगण पूर्वोक्तरूपसे हरिनाम करते हैं। यह हरि-नाम सकल पातकनाशक है। हरि शब्द देखो।

(पु०) २ मुद्ग, मूंग। (त्रिका०)

हरिनारायण—१ मिथिलाके एक प्रसिद्ध शास्त्रानुरागी नृपति। सुप्रसिद्ध स्मार्त्तपण्डित वाचस्पतिमिश्र इनकी ही सभाको उज्ज्वल करते थे तथा इनके ही उत्साहसे कृत्यमहार्णव आदि ग्रन्थ उन्होंने लिखा। २ जगन्नाथमिश्रके पुत्र और गोवर्द्धनके पौत्र। इन्होंने मधुविध्वंसभास्कर लिखा। ३ मुहूर्त्तमञ्जरीके रचयिता। ४ शुद्धितरङ्गकारि-काकार।

हरिनारायण (सं० पु०) हरि और नारायण।

हरिनी (हिं० स्त्री०) १ मादा हिरन, स्त्री जातिका मृग। २ जूही फूल। ३ बाज पक्षीकी मादा।

हरिनेत्र (सं० क्ली०) १ श्वेतपद्म। २ श्रीहरिका लोचन। ३ हरिद्वर्णचक्षु, पीली आंख। (पु०) ४ पेचक।

हरिन्द्र (सं० पु०) वृक्षविशेष।

हरिन्मणि (सं० पु०) मरकतमणि, पन्ना।

हरिन्मुद्ग (सं० पु०) मारद मुद्ग, हरिमूंग।

हरिपञ्चकव्रत (सं० क्ली०) वह व्रत जो श्रीहरिके उद्देश-से किया जाय।

हरिपण्डित—रामायणव्याख्याके रचयिता।

हरिपद (सं० पु०) १ विष्णुलोक, वैकुण्ठ। २ एक छन्द। इसके विषम (पहले और तीसरे) चरणोंमें १६ तथा सम (दूसरे और चौथे) चरणोंमें ११ मात्रायें होती हैं। अन्तमें गुरु लघु होता है।

हरिपर्ण (सं० क्लो०) १ कृष्णचन्दन । २ हरित्पत्र, मूलक ।
हरिपर्व्वत (सं० पु०) पर्व्वतविशेष । (मार्क०पु० ५६।१२)
हरिपा (स ० त्रि०) हरिद्वर्ण सोमपायी । (ऋक् १।१६१।८)
हरिपाल—१ पालवंशीय एक प्रसिद्ध राजा । इनके नामानुसार हुगली जिलेमें हरिपाल ग्राम विद्यमान है । कहते हैं, कि यहां हरिपालकी राजधानी थी । २ एक प्रसिद्ध शिलाहारराज, अपरादित्यके पुत्र । ये उत्तरकोङ्कणमें राजत्व करते थे ।
हरिपिण्डा (सं० स्त्री०) स्कन्दमातृभेद । (भारत)
हरिपुर (सं० पु०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ ।
हरिपुर—मयूरभञ्जकी प्राचीन राजधानी । यह वर्त्तमान राजधानी वारिपदासे १० मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है । वारिपदा प्रतिष्ठित होनेके पहले यहां मयूरभञ्जकी राजधानी थो । पूर्व समृद्धिका कुछ खंडहर यहां जंगलमें पड़ा हुआ है ।

नगावसानके श्यामकरणके घरमें जो वंशविवरणी पाई गई है, उसमें लिखा है, कि महाराज हरिहरभञ्ज भञ्जवंशके एक प्रवल प्रतापी राजा थे । १३२२ शक अर्थात् १४०० ई०में उन्होंने एक नगर बसाया था और उन्हींके नाम पर इसका नामकरण हुआ था ।

हरिपुर—१ हजारा जिलेकी एक तहसील । यह अक्षा० ३३ ४४´से ३४´१८´ उ० तथा देशा० ७२´३३´से ७३´१४´ पू०के मध्य अवस्थित है । भूपरिमाण ६५७ वर्गमील है । इसके उत्तर-पश्चिममें सिन्धु-नद बहता है । जनसंख्या डेढ़ लाखसे ऊपर है । इसमें हरिपुर नामक एक शहर और ३११ ग्राम लगते हैं ।

२ उक्त तहसीलका एक शहर । यह अक्षा० ३४´ उ० तथा देशा० ७२´ ५७´ पू०के मध्य डोर नदीके वाएं किनारे अवस्थित है । जनसंख्या ६ हजारके करीब है । हजाराके शासनकर्त्ता सिख-सरदार हरिसिंहने १८२२ ई०में यह नगर वसाया ।

पञ्जावके कांगड़ा जिलेका एक नगर । यह अक्षा० ३२ उ० तथा देशा० ७६´ १०´ पू०के मध्य विस्तृत है । जनसंख्या ढाई हजारके करीब है । पहले यहां एक कनौच राजवंशकी राजधानी थो । प्रवाद है, कि १३वीं सदीमें क्षितचंद्रराज हरिचांदने यहां वाणगंगा नदीके किनारे एक मजबूत किला वनवाया था । १८१३ ई०में महाराज रणजित्‌सिंहने अन्यायपूर्वक यह दुर्ग दखल किया । अभी यहां पूर्व राजवंशकी कनिष्ठ शाखा रहती है । पूर्वसमृद्धि कुछ भी नहीं है । यहां डाकघर, पुलिसथाना और स्कूल हैं ।
हरिपैड़ी (हिं० स्त्री०) हरिद्वार तीर्थमें गंगाका एक विशेष घाट जहांके स्नानका बहुत माहात्म्य है ।
हरिप्रबोध (सं० पु०) हरिका जागरण, विष्णुका उत्थान । आषाढ़ मासकी शयन-एकादशीमें अर्थात् शुक्ला-एकादशीके दिन विष्णुका शयन तथा कार्त्तिकी एकादशीके दिन विष्णुका प्रबोध अर्थात् जागरण होता है ।
हरिप्रसाद (सं० पु०) श्रीहरिका अनुग्रह, भगवान्‌का प्रसाद ।
हरिप्रसाद—१ विट्ठलसारके रचयिता । २ शास्त्रजलधिरत्नके प्रणेता । ३ माथुरमिश्र गंगेशके पुत्र । इन्होंने १७२८ ई०में काव्यालोक और सद्धर्मतत्त्वाख्यह्निककी रचना की । ४ काशीवासी एक प्रसिद्ध हिन्दी पण्डित । ५ इन्होंने काशीपति चेतसिंहके उत्साहसे संस्कृत पद्यमें विहारीकी सतसईका अनुवाद किया ।
हरिप्रस्थ (सं० पु०) इन्द्रप्रस्थ ।
हरिप्रिय (सं० क्ली०) १ कृष्णचन्दन । इसका दूसरा नाम कालीयक या कालिया भी है । २ उशीर, खस । (पु०) ३ कदम्बवृक्ष । ४ पीतभृङ्गराज, पोली भंगरैया । ५ विष्णुकन्द । ६ करवीर, कनेर । ७ शङ्ख । ८ वन्धुक, गुल दुपहरिया । ९ श्यामाकधान्य, श्यामा धान । १० शिव ११ वातुल, पागल । १२ कञ्चुक । १३ श्रीहरिका प्रिय ।
हरिप्रिया (सं० स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ तुलसी । ३ द्वादशी तिथि । ४ पृथिवी । ५ मधु । ६ लाल चन्दन । ७ मद्य । ८ एकमात्रिक छन्द । इसके प्रत्येक चरणमें १२+१२+१२+१० के विरामसे ४६ मात्राएं होती हैं और अन्तमें गुरु होता है । इसे चञ्चरी भी कहते हैं ।
हरिगीता (सं० स्त्री०) ज्योतिषमें एक मुहूर्त्तका नाम ।
हरिवालुक (सं० क्ली०) एलवालुक ।
हरिवीज (सं० क्ली०) हरिताल, हरताल ।
हरिताल शब्द देखो ।

हरिबोधिनी (सं० स्त्री०) कार्त्तिक शुक्ल एकादशी, देवोत्थान एकादशी।

हरिब्रह्मदेव—रायपुरके एक हैहयवंशीय नृपति, रामदेवके पुत्र। रायपुर और खलारीसे प्राप्त शिलालिपिसे जाना जाता है, कि ये १४५८ सम्वत्से १४७१ संवत् तक विद्यमान थे।

हरिभक्त (सं० पु०) विष्णु या भगवान्‌का भक्त, ईश्वरका प्रेमी।

हरिभक्ति (सं० स्त्री०) विष्णु या ईश्वरकी भक्ति, ईश्वरप्रेम।

हरिभक्तिविलास—गौडीय वैष्णवसम्प्रदायका सर्वप्रधान धर्मशास्त्रनिबन्ध, दाक्षिणात्यब्राह्मण श्रीमद्गोपालभट्ट द्वारा विरचित। गोपालभट्ट देखो। प्रवाद है, कि जब समस्त अङ्ग वङ्ग कलिङ्गमें महाप्रभु चैतन्यदेवप्रवर्त्तित गौडीय वैष्णवधर्ममत प्रचलित हुआ, जब लाखों मनुष्य इस सम्प्रदायमें आये, तब उन लोगोंके नित्यनैमित्तिक क्रियाकलाप निर्वाहके लिये एक भी धर्मशास्त्र प्रचलित नहीं था। उस समय भी गौडवङ्गके नाना स्थानोंमें शाक्तसम्प्रदायकी विशेष प्रबलता थी। इस कारण गौडीय वैष्णव स्मार्त्त और शाक्त-स्मार्त्तोंके मध्य नित्यनैमित्तिक क्रियासम्पादनकी विधि व्यवस्था ले कर यथेष्ट मतभेद चलने लगा। इस समय गौडीय वैष्णवसमाजको निर्दिष्ट विधिव्यवस्थाके अनुसार परिचालित करनेके लिये महात्मा गोपालभट्टने प्रचलित सभी स्मृति, पुराण और वैष्णवतन्त्रादिके आधार पर 'भगवद्भक्तिविलास' प्रकाशित किया। किसी किसीका कहना है, कि सनातन गोस्वामीने ही सबसे पहले 'हरिभक्तिविलास' प्रकाशित किया, परन्तु यवनदोषदूषित रह कर पीछे कहीं उच्च हिन्दूसमाज उनकी शास्त्रीय व्यवस्था ग्रहण न करे, इस आशङ्कासे उन्होंने गोपालभट्टके नाम पर अपना शास्त्रनिबंध चलाया। इसके बाद गोपालभट्टके 'भगवद्भक्तिविलास' प्रकाशित करने पर वह भी पूर्वोक्त ग्रन्थकी तरह 'हरिभक्तिविलास' नामसे ही प्रसिद्ध हुआ। श्रीरूपगोस्वामीने हरिभक्तिविलास नामसे हरिभक्तिविलासका एक संक्षिप्त संस्करण लिखा। सनातन गोस्वामी अपने हरिभक्तिविलासकी टीका रच कर ग्रंथका गौरव बढ़ा गये हैं। आज तक हरिभक्तिविलास ही गौडीय वैष्णव-सम्प्रदायका सर्वप्रधान धर्मग्रन्थ समझा जाता है। आज भी नित्यनैमित्तिक समस्त धर्मकार्यकी व्यवस्था ही इस हरिभक्तिविलाससे की जाती है।

हरिभट (सं० पु०) असुरभेद। (कथासरित्सा० ४६।६६)

हरिभट्ट—१ सुभाषितवलीधृत एक प्राचीन कवि। २ अन्त्यकर्मदीपिकाकार। ३ मुहूर्त्तमुक्तावलिके रचयिता। ४ विवादरत्नके प्रणेता। ५ एक प्रसिद्ध सङ्गीतशास्त्रवित्, संगीतकलानिधि और संगीतदर्पणके रचयिता। दामोदरने अपने संङ्गीतदर्पणमें इनका मत उद्धृत किया है।

हरिभद्र—१ सह्याद्रिखण्डवर्णित एक राजा। (४।५) २ जातकसार और ताजिकसारके रचयिता। ३ एक असाधारण जैनपण्डित। इनका 'षड्दर्शनसमुच्चय' एक उपादेय और पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ है। इनकी जम्बूद्वीपसंग्रहणीसे जाना जाता है, कि ये १३६० संवत्‌में विद्यमान थे।

हरिभद्र (सं० क्ली०) हरिवालुक, एलवालुक।

हरिभद्रक (सं० क्ली०) कुष्ठौषधि।

हरिभानु शुक्ल—एक नानाशास्त्रवित् पंडित। इन्होंने छान्दोग्योपनिषत्प्रकाशिका, पुराणप्रभा नामकी भागवतपुराणटीका, शास्त्रसारावली, सप्तश्लोकव्याख्या, सिद्धान्तरत्नावली नामकी सारस्वत प्रक्रियाकी टीका और जैमिनिसूत्रकी टीका लिखी। २ एक प्रसिद्ध ज्योतिषी। ये हरिवंश नामसे भी परिचित थे। इन्होंने गणकमोदकारिणी, गणितभूषण, जातकरत्नटीका, जातकालङ्कारटीका, ताजिकसंग्रह, तिथ्यादिचन्द्रिका, तिथ्यादिभास्वती और प्रश्नपञ्चिकाकी रचना की।

हरिभारती—चिकित्सासारके रचयिता।

हरिभास्करशर्म्मन्—एक नाना शास्त्रवित् पण्डित। ये आपाजीभट्टके पुत्र और हरिभट्टके पौत्र थे। इन्होंने अध्यात्मरामायणप्रकाश, गङ्गास्तुति, पद्यामृततरङ्गिणी, परिभाषाभास्कर, भास्करचरित्र, यशोवन्तभास्कर, लक्ष्मीस्तुति, वृत्तरत्नाकरसेतु, शुद्धिप्रकाश और स्मृतिप्रकाश लिखा। इनके वृत्तरत्नाकरसेतुसे जाना जाता है, कि ये १६७६ ई०में काशीवासी थे।

हरिभुज (सं० पु०) सर्प, साँप।

हरिमण्डल—सह्याद्रि वर्णित एक राजा। (३।२७)

हरिमाणिक्य—जयन्ताके एक राजा, रङ्गगृहमें इनकी राजधानी थी। (देशावलि)

हरिमन् (सं० पु०) शरीरगत हरिद्वर्ण प्राप्त गोरत्ववर्णता।

हरिमन्थ (सं० पु०) १ अग्निमन्थ, गनियारीका पेड़ जिसकी लकड़ी रगड़नेसे आग निकलती है। २ चणक, चना। ३ मटर। ४ एक प्रदेशका नाम।

हरिमन्थक (सं० पु०) १ चणक, चना। २ अग्निमन्थ, गनियारी।

हरिमन्थज (सं० पु० क्ली) १ चणक, चना। २ कृष्णमुद्‌ग। (हेम)

हरिमन्दिर (सं० क्ली०) हरिका गृह, विष्णुमन्दिर।

हरिमन्युसायक (सं० त्रि०) शत्रु हन्ताभिगन्ता।

हरिमिश्र—राढ़ीय ब्राह्मणोंके एक प्राचीन कुलाचार्य।

हरिमुद्‌ग (सं० पु०) नारदमुद्‌गविशेष। अंगरेजीमें इसे Phaseolus mungo कहते हैं। इसका गुण—कषाय, मधुर, पित्तकफघ्न, रक्तमूत्ररोगनाशक, शीतल, लघु और दीपन।

हरिमूला (सं० स्त्री०) शालपर्णी।

हरिमेध (सं० पु०) अश्वमेध यज्ञ।

हरिमेधस् (सं० पु०) १ विष्णु। २ हरिका पिता।

हरिम्भर (सं० पु०) इन्द्र। (ऋक् १०।९६।४)

हरिय (सं० पु०) पीतवर्ण घोटक, पीला घोड़ा।

हरियर (हि० वि०) हरा देखो।

हरियराना (हि० क्रि०) हरिअराना देखो।

हरियशम् मिश्र—एक प्रसिद्ध दार्शनिक, ठाकुरदासके पुत्र, अनुबंधप्रदर्शन (वेदान्त), भगवद्गीताटीका और वाक्यवादटीकाके रचयिता। इन्होंने अपनी गीताटीकामें मधुसूदनकी टीका उद्धृत की है।

हरियाथोथा (हि० पु०) नीला थोथा, तूतिया।

हरियान (सं० पु०) गरुड़।

हरियाना (हि० क्रि०) हरिआना देखो।

हरियाना—पञ्जाबके हिसार जिलेका एक भूभाग। यह अक्षा० २८° ३०' से ३०° ३० तथा देशा० ७५° ४५ से ७६ ३०' पु०के मध्य विस्तृत है। इसके उत्तरमें बागरा तराई, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और उत्तरमें बगार और घुनदौती, पूरबमें यमुना और उत्तर पूरबमें नरदाक देश है। कहते हैं, कि अयोध्यासे आये हुए राजा हरिचन्द्र हरियाना नाम हुआ है। ४थी सदी तक यह हनस, हरियानाकी राजधानी समझा जाता था। पीछे हिसार में राजधानी उठ कर चली आई। मुगलोंके अधःपतन पर यह मराठा, भट्टि और सिख-सरदारोंका युद्धस्थल समझा जाता था। सरदारोंने अपना अपना अधिकार जमानेकी आशासे भीषण समरानल धधका दिया था। १७८३ ई०में यहां घोर अकाल पड़ा जो 'चालीसा' नामसे आज भी अधिवासियोंके हृदयमें आतङ्क पैदा कर देता है। इस समय हरियाना मरुभूमि और श्मशानवत् हो गया था। १७९५ ई०में जार्ज टामस हिसार और हानसीको अधिकार कर बैठे। १८०१ ई०में सिख सरदारोंने एकत्र हो टामसको निकाल भगानेके लिये सिन्धियाके फरासी सेनानायक पेरोंको अनुरोध किया। पेरो द्वारा भेजे गये फरासी सेनापति बाकुईने दलबलके साथ जा कर टामसको हरियानासे निकाल भगाया।

२ पंजाबके होसियारपुर जिलेको होसियारपुर तहसीलका सदर और प्रधान नगर। यह अक्षा० ३१° ३८' उ० तथा देशा० ७९° ५२' पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ६ हजारके करीब है। १८६७ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें एक मिडिल स्कूल और एक चिकित्सालय है। यहांका मोटा आम और ईख बहुत प्रसिद्ध है।

हरियाली (हि० स्त्री०) १ हरेपनका विस्तार, हरे रंगका फैलाव। २ हरे हरे पेड़ पौधों या घासका समूह या विस्तार। ३ हरा चारा जो चौपायोंके सामने डाला जाता है।

हरियाली तीज (हि० स्त्री०) सावन बदी तीज।

हरियाव (हि० पु०) फसलकी एक बटाई जिसमें ६ भाग असामी और ७ भाग जमींदार लेता है।

हरियूपीया (सं० स्त्री०) ऋग्वेदोक्त प्राचीन जनपद।

हरियोग (सं० त्रि०) अश्वयोजनविशिष्ट।

हरियोजन (सं० क्ली०) रथमें घोड़ा जोड़ना।

हरियोनि (सं० पु०) हरि या विष्णुसे जात, ब्रह्मा।

हरिरत्न—बालबोधिनी नामक नलोदयटीकाके रचयिता।

हरिरस—कवि ज्योतिस्तत्त्वप्रश्नांशकाकार।

हरिराज-१ काश्मीरके एक राजा। १०२८ ई०में थोड़े दिनके लिये इन्होंने राज्यभोग किया। काश्मीर देखो। २ रेवाके कौरववंशीय एक महाराणक, सलक्षणवर्माके पुत्र और कुमारपालके पिता। ये १३वीं सदीके प्रथम भागमें आधिपत्य करते थे।

हरिराम—१ एक प्रसिद्ध पण्डित। इनके लिखे अत्रिस्मृतिटीका, आह्निकसार, गङ्गामाहात्म्य, परिभाषाभास्कर टीका, परिभाषेन्दुशेखरटीका, प्रायश्चित्तसार, बुधस्मृति टीका, भैरवीसपर्याविधि, मलमासतत्त्वटीका, महाभाष्य प्रदीपटीका, वैयाकरणसिद्धान्तभूषणटीका, वैयाकरण सिद्धान्तमञ्जूषाटीका, व्यवहारप्रकाश, शब्देन्दुशेखरटीका, श्राद्धवर्णन और षट्कर्मविवेक आदि ग्रन्थ मिलते हैं। २ दर्शनसंग्रह, द्वादश-महाकाव्यदिप्पण और अद्वैत-मकरन्दटीकाकार। ३ आचार्यमतरहस्यके प्रणेता। ४ कातन्त्र व्याख्यासार। ५ ग्रहस्थितिवर्णन नामक ज्योतिर्ग्रन्थकार। ६ एक प्रसिद्ध हिन्दीकवि। इनकी नखसिख उपादेय कविता है। शिवसिंहने इनके पिङ्गल ग्रन्थका नाम किया है।

हरिराम तर्कालङ्कार—नवद्वीपके एक प्रसिद्ध नैयायिक। १७वीं सदीके प्रारम्भमें ये विद्यमान थे। कोई कोई इन्हें रघुनन्दनका वंशधर मानते हैं। ये प्रसिद्ध नैयायिक गदाधर और रघुदेवको गुरु थे। नव्यन्यायसम्बंधमें। छोटे बड़े बहुत से ग्रन्थ लिख गये हैं जिनमेंसे निम्नोक्त पुस्तकें मिलती हैं—अनुमितिपरामर्शविचार, अनुमिति मानस, एवकारवादार्थ, कर्त्तृवाद, कारकवादकाप्रत्यय विचार, चित्रूपपदार्थविचार, 'धर्मितावच्छेदकताप्रत्यासत्तिवाद, नव्यमतरहस्य, पक्षतारहस्य, परामर्शवाद, प्रतियोगिज्ञानकारणता, प्रामाण्यवाद, बाधबुद्धिवाद, मङ्गलवाद, रत्नाकोषवाद, लकारवाद, काव्यवाद, विशिष्टवैशिष्ट्यवाद, विषयता, सामग्रीवाद, स्वप्रकाशरहस्य। गदाधरने इनकी लिखी तत्त्वचिन्तामणिटीकाका उल्लेख किया है।

हरिराम वाचस्पति—गोपीचन्द्रकी संक्षिप्तसारटीकाके वृत्तिकार।

हरिरामशुक्ल—बुन्देलखण्डके उर्छावासी एक गौड ब्राह्मण, हरिव्यासी नामक सम्प्रदायके प्रवर्त्तक। इनका दूसरा नाम व्यासस्वामी था। इन्होंने थोडी ही उम्रमें राधावल्लभी सम्प्रदायमें योगदान कर कृष्णभक्ति सीखी थी। १५५५ ई०में ४५ वर्षकी अवस्थामें ये वृन्दावन जा कर रहने लगे और वहां इन्होंने अपने नाम पर एक वैष्णव सम्प्रदाय प्रवर्त्तन किया। किसी किसीके मतसे ये निमादित्य या निम्बार्कके शिष्य थे।

हरिराय—१ वेदान्तकारिका, सप्तश्लोकिविवृति, स्वरूपनिर्णय और स्वामिनीस्तोत्रटीकाकार। २ दशकर्म और उसके टीकाकार। ३ प्रसिद्ध वैद्यक ग्रंथकार।

हरिराव होलकर—इन्दौरके एक राजा। ये ३य मलहार रावके भतीजे और उत्तराधिकारी थे। १८४३ ई०में इनकी मृत्यु हुई।

हरिरि—बसोरावासी एक अद्वितीय पण्डित। इनका पूरा नाम था आबू महम्मद कासिम बिन-आलि-बिन उसमान अल हरिर अल बसरी। इन्होंने 'मुकामात् हरिर' नामकी वक्तृता, कविता, धर्मनीति और उपहासरसात्मक एक सुन्दर ग्रन्थ लिखा। सुलतान मुहम्मद अलजुकीके प्रधान मन्त्री अनूशेर्वानके अभिप्रायसे ही उक्त ग्रंथ रचा गया था। १२२२ ई०में बसोरा नगरमें ही हरिरि परलोक सिधारे। उनका मुकामात् ग्रंथ क्या कवि क्या ऐतिहासिक सबोंके निकट कुरानके बाद ही समादृत होता है। यूरोपीय और एशियाकी अनेक भाषामें उक्त ग्रंथ अनूदित हुआ है।

हरिरिपु (सं० पु०) बाजीशत्रु, कनेर।

हरिरुद—अफगानिस्थानकी एक प्रधान नदी। यह अक्षा० ३४° ५०´ उ० तथा देशा० ६६° २०´ पू०के बीच पड़ती है। कोहिबाबा गिरिमालासे निकल कर ३०० मीलके बहरिरुद नामसे पश्चिमकी ओर शाहरेक, ओबे और हिरातके मध्य हो कर बह चली है। इस नदीकी धारा बडी ही तीव्र है।

हरिरुद्र (सं० पु०) हरि और रुद्र, विष्णु और शिव।

हरिरोमन् (सं० त्रि०) अश्वरोमयुक्त।

हरिल (हिं० पु०) हारिल देखो।

हरिलाल—१ आचार-दर्शदीपिकाके प्रणेता। २ तिथ्युकिरणावलिके रचयिता। ३ सिद्धान्तसारनामक ज्योतिर्ग्रन्थके एक टोकाकार।

हरिलीला (सं० स्त्री०) चौदह अक्षरोंका एक वर्णवृत्त।
हरिले (सं० अव्य०) नाट्योक्तिमें चेटीसम्बोधन।
हरिलोक (सं० पु०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।
हरिलोचन (सं० पु०) हरेरिव लोचनमस्य। १ कुलीर, कंकड़ा। २ पेचक, उल्लू। ३ दैत्यभेद। (त्रि०) ४ हरिद्वर्ण चक्षुयुक्त, पीली आँखवाला।
हरिवंश (सं० पु०) हरि या कृष्णका वंश। जिस ग्रंथमें श्रीकृष्ण और उनके अपने वंशका विस्तृत विवरण लिपिबद्ध है, वह भी हरिवंश कहलाता है। यह ग्रंथ महाभारतका परिशिष्ट समझा जाता है। महाभारत देखो। जैनोंके तीर्थङ्कर नेमिनाथ या अरिष्टनेमि कृष्णके ज्ञाति होनेके कारण वे भी हरिवंशमें गिने जाते हैं। जैनोंके हरिवंशमें नेमिनाथके जीवनाख्यायिका प्रसङ्गमें श्रीकृष्ण और उनके वंशका विवरण लिखा है। प्रचलित हरिवंशसे उस पुस्तकका विवरण सम्पूर्ण पृथक् है।

पुराण शब्दमें जैन पुराण प्रसङ्ग देखो।

हरिवंश—१ भोजप्रबन्धधृत एक प्राचीन कवि। २ नेपालके ललितपुरवासी एक पण्डित, सूर्याशतकटीकाकार।
हरिवंश कवि—नरपतिजयचर्याका जयलक्ष्मी नामक टीकाकार।
हरिवंश गोस्वामी हरिवंश हितजी—राधावल्लभी सम्प्रदाय प्रवर्त्तक एक कवि और पण्डित। १५५९ सम्वत्‌में ये पैदा हुए। इन्होंने कर्मानन्द और राधारससुधानिधि नामक संस्कृत ग्रन्थ तथा हिन्दीभाषामें चौरासीपद लिखा।
हरिवंशभट्ट रसमञ्जरीटीकाकार।
हरिवंश्य (सं० त्रि०) हरिवंशीय।
हरिवत् (सं० त्रि०) १ हरि नामक अश्वयुक्त। २ हरित् वर्णयुक्त।
हरिवर्ण (सं० पु०) सामभेद।
हरिवर्पस् (सं० त्रि०) हरिद्वर्णयुक्त।
हरिवर्म्मन् १ भोजप्रबन्धधृत एक संस्कृत कवि। २ राष्ट्रकूटवंशीय हस्तिकुण्डके एक राजा। ये ६वीं सदीमें विद्यमान थे। ३ मौखरिवंशीय एक महाराज। मौखरि देखो। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य। पूर्णचन्द्रोदयपुराणके ३य सर्गमें इनका विवरण है। ५ पूर्ववङ्गके एक राजा। इनके ही समयमें पाश्चात्य वैदिकगण पहले पहल बंगाल पधारे। वङ्गदेश और पाश्चात्य वैदिक शब्द देखो।
हरिवर्मापुर—रेवातीरस्थ एक प्राचीन तीर्थस्थान।
हरिवर्ष—१ जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक। यह निषध और हेमकूट पर्वतके मध्यभागमें अवस्थित है। इसके दक्षिण इलावृत वर्ष है। उत्सेध अयुत योजन है। यहां भगवान् नरहरि रूपमें अवस्थान करते हैं, इसलिये इसका यह नाम पड़ा है। यहांके दैत्यदानव सभी हरिभक्त हैं। (भागवत ५।१६।२२) २ अग्नीध्रका पुत्र। इसके ही हिस्सेमें हरिवर्ष पड़ा था। (विष्णुपु०)
हरिवल्लभ (सं० पु०) मुचुकुन्द वृक्ष।
हरिवल्लभ—१ एक विख्यात वैयाकरण। ये उत्प्रभावतीय श्रीवल्लभके पुत्र थे। इन्होंने वैयाकरणसिद्धान्तभूषणदर्पण और वैयाकरणसिद्धान्तभूषणसार दर्पणकी रचना की। २ सुबोधिनीके रचयिता। ३ एक हिन्दी कवि। शिवसिंह सरोजमें इनका नाम उद्धृत हुआ है।
हरिवल्लभा (सं० स्त्री०) १ जया। २ तुलसी। ३ लक्ष्मी।
हरिवाल—एक विख्यात भक्त। भक्तमालमें इनकी संक्षिप्त जीवनी है।
हरिवालुक (सं० क्ली०) एलवालुक।
हरिवास (सं० पु०) १ पीतभृङ्गराज, पीली भङ्गरैया। (राजनि०) २ अश्वत्थ वृक्ष, पीपलका पेड़। ३ श्रीहरिका वासस्थान।
हरिवासर (सं० क्ली०) श्रीहरिका दिन, एकादशी और द्वादशी ये दो तिथि। साधारणतः एकादशी तिथिको ही हरिवासर कहते हैं। कभी कभी तिथिकी कमी बेशीके कारण द्वादशी तिथिमें एकादशीका उपवास करना होता है, इस कारण द्वादशी तिथि भी हरिवासर कहलाती है।

हरिभक्तिविलासके १३वें विलासमें हरिवासरके विशेष विधान और फलादिका विषय विशद रूपमें लिखा है।

अभी वैष्णवसाम्प्रदायिक हरिवासर तिथिमें निम्नोक्त प्रणालीसे हरिवासर करते हैं। दशमीको रातको एक तुलसीका मञ्च बना कर विधिविधानसे अधिवास करे और एकादशीके दिन सूर्योदयकालसे तुलसीमञ्चकी परिक्रमा करते हुए केवल श्रीहरिका नामकीर्त्तन करे। इस प्रकारका कीर्त्तन अष्टप्रहर अर्थात् दिन रात होगा। ऐसे

हरिवासरमें प्रायः चार पांच दल कीर्तनकारी रहते हैं। इस प्रकार ये लोग दिन रात कीर्त्तन कर दूसरे दिन सवेरे नगर कीर्त्तनादि करते हैं।

हरिवालुक (सं० क्ली०) हरिवालुक, एलवालुक।

हरिवाहन (सं० पु०) १ गरुड। २ इन्द्र। ४ सूर्य।

हरिवीज (स० क्ली०) हरिताल, हरताल।

हरिवीर पाण्ड्य दाक्षिणात्यके एक पाण्ड्य राजा। ११वीं सदीमें इनके ही अधिकारमें परञ्जोति नामक एक ब्राह्मणने मधुरापुराण नामसे हालास्यमाहात्म्यका एक तामिल संस्करण प्रकाश किया।

हरिवृक्ष (सं० पु०) हरिद्रु वृक्ष, दारुहरिद्रा। (सुश्रुत)

हरिवृष (सं० पु०) हरिवर्ष। (भूरिप्र०) हरिवर्ष देखो।

हरिवोला—एक वैष्णव सम्प्रदाय। हरिनामगान और नामकीर्त्तन ही इन लोगोंका प्रधान धर्मानुष्ठान है, इसलिये ये लोग हरिवोला कहलाते हैं। इन लोगोंको जपमाला नहीं है, मन ही मन हरिनाम जप करना होता है। गुरु ही इनके प्रधान देवता हैं। गुरुका अङ्ग ही हरिका अङ्ग मान कर ये लोग गुरु भजना किया करते हैं। स्थान स्थान पर इनके अखाड़े हैं। अखाड़ेमें कहीं भी राधा कृष्णविग्रह देखा नहीं जाता।

हरिव्यास—हरिव्यासी सम्प्रदाय प्रवर्त्तक, निम्बार्करचित दशश्लोकी टीकाकार। ये हरिव्यासमुनि नामसे भी ख्यात थे। ये श्रीभट्टके शिष्य और परशुरामदेवके गुरु थे। हरिराम शुक्ल देखो।

हरिव्यासदेव—एक प्रसिद्ध पण्डित। इन्होंने अर्थपञ्चक, गोपालपटल और वेदान्तसिद्धान्तरत्नाञ्जलि लिखी।

हरिव्यास मिश्र—अर्ज्जुनमिश्रके पुत्र। इन्होंने १५७४ ई०में वृत्तमुक्तावलिकी रचना की।

हरिव्यासी—हरिव्यासप्रवर्त्तित एक धर्मसम्प्रदाय। यह निम्बार्क सम्प्रदायकी ही एक शाखा है। हरिव्यासरचित ग्रंथ ही इनका प्रधान ग्रंथ है।

हरिव्रत (स० क्ली०) १ वह व्रत जो भगवान् श्रीहरिके उद्देशसे किया जाय। (त्रि०) २ पिङ्गलवर्ण या हरित्वच्। "चंद्ररथं हरिव्रतं वैश्वानर" (ऋक् ३।३।५) 'हरिव्रतं पिङ्गलवर्णं हरित्वचं वा' (सायण)

हरिशङ्कर (स० पु०) १ विष्णु और शिव। २ एक रसौषध जो पारे और अभ्रकके योगसे बनती है और प्रमेहमें दी जाती है। शुद्ध पारे और अभ्रकको ले कर सात दिन तक आँवलेके रसमें घोंटते हैं फिर सुखा कर एक रत्तीका मात्रामें देते हैं।

हरिशङ्कर—१ यंत्रचिंतामणिदीपिकाके रचयिता। २ योगविवेक, रामपूजाविधि और षड्दर्शनविवेकके प्रणेता।

हरिशपुर—१ उड़ीसाके कटक जिलान्तर्गत एक किला। अभी उक्त नामका परगना हो गया है। २ नोआखाली जिलान्तर्गत एक नगर।

हरिशयन (सं० क्ली०) श्रीहरिकी निद्रा। शास्त्रमें लिखा है, कि आषाढमासकी शुक्ला एकादशीके दिन विष्णुका शयन होता है, इसीसे इस एकादशीको शयन एकादशी कहते हैं। इस दिनसे ले कर कार्त्तिकमासकी शुक्ला एकादशी तक विष्णुका शयनकाल है। कार्त्तिककी एकादशीमें विष्णुका उत्थान होता है। इस कारण यह एकादशी उत्थान-एकादशी कहलाती है। इस शयनैकादशीसे चातुर्मास्य व्रतारम्भ करना होता है।

हरिशयनी (सं० स्त्री०) आषाढ़ शुक्ल-एकादशी। पुराणोंके अनुसार इस दिन विष्णु भगवान् शेषकी शय्या पर सोते हैं और फिर कार्त्तिककी प्रबोधिनी एकादशीको उठते हैं।

हरिशर (सं० पु०) शिव, महादेव। त्रिपुर विनाशके समय शिवने विष्णु भगवान्‌को अपने धनुषका वाण बनाया था; इसीसे इनका यह नाम पड़ा है।

हरिशर्मन्—१ एक विख्यात तान्त्रिक आचार्य। शक्तिरत्नाकरमें इनका मत उद्धृत हुआ है। २ एक स्मार्त्त। रघुनन्दनने नाना स्थानोंमें इनका नामोल्लेख किया है। ३ उपाधिप्रकरणके रचयिता।

हरिशिप्र (सं० त्रि०) हरितवर्णनासिक, हरिद्वर्ण नासिकायुक्त या हरिद्वर्ण हनु। (ऋक् १०।९६।४)

हरिश्चन्द्री (हरिश्चन्द्री)—युक्तप्रदेशवासी एक वैष्णव सम्प्रदाय। सूर्यवंश-प्रथित राजा हरिश्चन्द्रके नामानुसार इस सम्प्रदायका नामकरण हुआ है। राजा हरिश्चन्द्र विश्वामित्रके कोपमें पड़ कर संसारत्यागी हो गये। उनका वैराग्य और दैन्य ही इस सम्प्रदायकी प्रधान शिक्षा है। राजा हरिश्चन्द्रने काशीके श्मशानमें रहते समय श्मशाना

भिकारी चण्डालको जो उपदेश दिया था, वही इस सम्प्रदायका धर्मशास्त्र है। इस सम्प्रदायके अधिकांश मनुष्य ही डोम हैं। ये लोग विष्णुको ही जगत्कर्त्ता मानते हैं।

हरिश्चन्द्र (सं० पु०) १ सनामख्यात राजभेद। पर्याय—त्रिशङ्कुज। ये त्रेतायुगके अट्ठाइसवें राजा थे।

श्रीमद्भागवतमें लिखा है—मान्धातृवंशमें राजा त्रिशंकुका जन्म हुआ। इन्हीं त्रिशङ्कुके पुत्र हमारे चरित नायक हरिश्चन्द्र थे। इन हरिश्चन्द्रको ले कर वशिष्ठ और विश्वामित्रमें घोर विवाद खड़ा हुआ। एक समय राजा हरिश्चन्द्रने राजसूययज्ञ ठान दिया। विश्वामित्र होता हुए। यज्ञके शेषमें उन्होंने दक्षिणाके बहाने हरिश्चन्द्रका सर्वस्व ले लिया और उन्हें भारी कष्ट दिया। यह संवाद पा कर वशिष्ठ बड़े बिगड़े और उन्होंने विश्वामित्रके पास जा कर उन्हें शाप दिया कि 'तुमने राजा हरिश्चन्द्रका सर्वस्व छीन कर बड़ा अन्याय किया है, इस कारण तुम बाज पक्षी हो जा।' विश्वामित्रने भी वशिष्ठको बक पक्षी होनेका शाप दिया। पीछे इस बक और बाज पक्षीमें घोर युद्ध हुआ। (भागवत ६।७-८ अ०)

देवीभागवतमें लिखा है, कि राजा त्रिशंकु वशिष्ठके शापसे चण्डालत्वको प्राप्त हो राजच्युत और स्वर्गभ्रष्ट हुए।

त्रिशंकु जब घृणाके मारे राजधानी अयोध्या नगरी परित्याग कर गङ्गाके किनारे जा रहने लगे, तब हरिश्चन्द्र राजसिंहासन पर बैठे। हरिश्चन्द्रके राज्य करते बहुत दिन बीत गये, पर उन्हें एक भी संतान न हुई। इस कारण उन्होंने अत्यन्त दुःखित हो वशिष्ठाश्रममें जा उनसे अपनी मनोवेदना प्रकट की। वशिष्ठने उन्हें वरुणदेवकी आराधना करने कहा।

राजा हरिश्चन्द्र तदनुसार गङ्गाके किनारे आये और वरुणदेवके उद्देश्यसे कठिन तपस्या करने लगे। वरुणदेवने उनकी तपस्यासे सन्तुष्ट हो कहा, 'राजन् यदि कार्य सिद्धिके बाद तुम अपने पुत्रको मेरे प्रियकार्यमें नियुक्त कर दो अर्थात् यदि तुम उस पुत्रको पशु बना कर निःशङ्कचित्तसे मेरा यज्ञ करो, तो मैं तुम्हें अभीष्ट वर दूंगा।' इसके उत्तरमें राजाने कहा, 'देव! मेरा वन्ध्यतादोष दूर कीजिये, यदि मुझे पुत्र प्राप्त हो जाय, तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि उसे पशु बना कर आपका यज्ञ करूंगा।'

कुछ दिन बाद उनकी धर्मपत्नी पटरानी पतिव्रता शैव्या वरुणदेवकी कृपासे गर्भवती हुई। दश मास पूरा होने पर रानीने एक सुन्दर पुत्र प्रसव किया।

कुछ दिन बाद वरुणदेव ब्राह्मणका रूप धारण कर राजाके पास आये और बोले, 'महाराज! मुझे वरुण ही जानिये। प्रतिज्ञाकी बात याद दिलानेके लिये मैं आया हूं। आपकी मनस्कामना पूरी हो गई, अब उस पुत्र द्वारा मेरा यज्ञ करके अपनी प्रतिज्ञाका पालन कीजिये।' इस पर राजाने कहा, 'देव! मैं वेदोक्त बहुदक्षिणायुक्त यज्ञानुष्ठान करूंगा। नरमेधयज्ञमें स्त्रीपुरुष दोनोंको ही अधिकार है, इस कारण आप कृपया मेरी स्त्रीके शुद्धिकाल एक मास तक और ठहर जाइये।'

वरुणदेवने कहा, "राजन्! एक मास बाद फिर आऊंगा। इस बीचमें तुम पुत्रका जातकर्म और नामकरण आदि संस्कार कर मेरा यज्ञ आरम्भ कर देना।" यथासमय राजाने पुत्रका रोहिताश्व नाम रखा। वरुणदेव फिर आये और बोले, "दन्तहीन पशु यज्ञमें प्रशस्त नहीं है, इस कारण पुत्रके दांत निकलनेके बाद मेरा यज्ञ अवश्य करना।" अनन्तर राजाने मायाके वशवर्त्ती हो वशिष्ठसे पुत्रके चूड़ाकरणकार्य होने तक ठहरनेकी प्रार्थना की।

इस प्रकार ग्यारह वर्ष बीत गये। रोहिताश्वका उपनयन संस्कार आने पर वरुणदेव पुनः आये। इस बार भी राजाने विनयपूर्ण प्रार्थना की, 'समावर्त्तनकाल तक अपेक्षा कर मुझे क्षमा कीजिये।'

राजकुमार बुद्धिमान् थे। वे पिताको उदास देख और यज्ञका वृत्तान्त सुन बड़े चिन्तित हुए। रोहिताश्व को जब अपने सहचरोंसे अपनी विनाशवार्त्ता मालूम हुई, तब वे छिपके नगरसे निकल कर जंगल चले गये। इधर राजाने पुत्रकी खोजमें चारों ओर दूत भेजा, पर कोई पता न चला। इसी समय वरुणदेव आये और राजा पुत्रका संवाद सुना कर अपने भाग्यको दोष देने लगे। वरुणने कुपित हो कर शाप दिया, "कठिन जलोदर रोगसे तुम पीड़ित होगे।'

जब वनमें राजकुमार रोहिताश्वको मालूम हुआ, कि राजा हरिश्चन्द्र रोगपीडित हो कठिन यन्त्रणा भोग कर रहे हैं, तब उन्होंने पिताका दर्शन करनेका संकल्प किया। इन्द्रको यह मालूम होने पर वे राजकुमारके पास आये और उन्हें पिताके पास जानेसे मना करने लगे और यह भी बोले, 'अभी पिताके पास जानेसे निश्चय ही यज्ञीय पशुरूपमें तुम्हारी बलि दी जायेगी, परन्तु पिताकी मृत्यु के बाद जानेसे तुम्हारा राज्यलाभ अनिवार्य है।' इन्द्रके आश्वासन पर विमुग्ध हो रोहिताश्वने अब वनसे जाना नहीं चाहा।

इधर हरिश्चन्द्रने पीडासे कातर हो अपने कुलपुरोहित वशिष्ठदेवसे रोगशान्तिका उपाय पूछा। वशिष्ठ देवने कहा 'आप मूल्य देकर एक पुत्र खरीदिये, क्रीत पुत्र दश प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक है, अतएव उसको दे कर यज्ञ करनेसे सभी विघ्न दूर हो जायगे'

राजाने वशिष्ठकी बात सुन कर प्रधान मन्त्रीको वैसे एक पुत्रकी खोज करने कहा। उस राज्यमें अजीगर्त्त नामक एक दरिद्र ब्राह्मण रहता था। उसने सौ गोमूल्यके लोभसे अपने मध्यम पुत्र शुनःशेफको यज्ञके लिये बेच डाला। राजाके हुकुमसे वह बालक नरमेध यज्ञके पशुरूपमें यूपकाष्ठमें बांधा गया। वह बालक डरके मारे बडे दीन स्वरसे रोने लगा, मुनिगण इस कातर क्रन्दनसे व्यथित हो बडे जोरसे चीत्कार कर उठे। शमिताने इस शिशुका वध करनेके लिये शस्त्र नहीं उठाया। इस पर बालकका पिता अजीगर्त्त राजाके लिये स्वयं पुत्रके वध करनेमें उद्यत हुए। सभी हाय हाय करने लगे। सभास्थलमें भीषण कोलाहल देख कौशिकनंदन विश्वामित्र राजाके पास आये और बोले, 'राजेंद्र! कातर और रोते हुए बालक शुनःशेफको छोड दीजिये, तुम्हारा व्याधिनाश और यज्ञ अवश्य पूर्ण होगा। तुम ब्राह्मणपुत्रको खेद और उसका नाश कर पापराशि सञ्चय कर रहे हो।"

इस पर महाराज हरिश्चन्द्रने कहा, 'गाधेय, मैं जलोदर पीडासे महाक्लेश पा रहा हूं इसलिये इस बालक को कभी छोड नहीं सकता।' यह सुन कर विश्वामित्र राजा पर बडे क्रुद्ध हुए और शुनःशेफको वरुण मन्त्र प्रदान कर मन ही मन उसका जप करने कहा। शुनःशेफके मन्त्र जप करनेसे वरुणदेव प्रसन्न हो कर हठात् वहां आविर्भूत हो गये। रोगातुर राजा हरिश्चन्द्र और सभी सभासद वरुणदेवके आगमन पर विस्मित हो उनका स्तव करने लगे। राजाके स्तवसे वरुणदेवने संतुष्ट हो यज्ञ पूर्ण कर राजाको रोगमुक्त किया और वरुणस्तवकारी द्विजपुत्रको शापविमुक्त कर दिया। अनन्तर महामुनि विश्वामित्र शुनःशेफको पुत्ररूपमें ग्रहण कर अपने स्थानको चल दिये*।

कुछ दिन बीत जाने पर रोहित अपना घर लौटा। राजा हरिश्चन्द्रने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान कर वशिष्ठ ऋषिको यज्ञका होता बनाया, पीछे यज्ञ समाप्त हो जाने पर ऋषिको प्रचुर धन दे कर सम्मानित किया। इसी समय एक दिन स्वर्गपुरीमें वशिष्ठ और विश्वामित्र मिले। शची-पतिकी सभामें वशिष्ठको सम्मान देख विश्वामित्रने बडे आश्चर्यान्वित हो पूछा, 'महर्षे! आपने यह महती पूजा कहां पाई?' उत्तरमें मुनिवर वशिष्ठने कहा, 'महाप्रतापी राजा हरिश्चन्द्रने प्रचुर दक्षिणासम्पन्न राजसूययज्ञमें मुझे यह महार्घ्य पूजा दी है।' विश्वामित्र वशिष्ठके मुखसे यह प्रशंसावाद सुन कर और अपना अपमान समझ कर क्रोधसे लाल लाल आंखें करते हुए बोले, 'राजा हरिश्चंद्र मिथ्यावादी और प्रवञ्चक है, तुम जिसकी इस प्रकार प्रशंसा करते हो, उस धूर्त्तने वचन दे कर भी उन्हें धोखा दिया है। मैंने आजन्म तपस्या और अध्ययन द्वारा जो पुण्य सञ्चय किया है तथा तुम्हें भी तपस्या द्वारा जो पुण्य प्राप्त हुआ है, उसीको बाजीमें रखो। मैं राजा हरिश्चन्द्रको मिथ्यावादी बनाऊंगा, नहीं तो मेरा सारा पुण्य लोप हो जायेगा। इस प्रकार पण करके दोनों ऋषि स्वर्ग लोकसे अपने अपने आश्रममें चल दिये।

* ऐतरेय-ब्राह्मण ७।१३ और शाङ्खायन-ब्राह्मणमें १५।१७ हरिश्चन्द्रके यज्ञ, शुनःशेफको यज्ञीय पशुरूपमें यूपमें बांधने और रोहितका प्रसङ्ग है। विश्वामित्र द्वारा शुनःशेफको वरुणमन्त्रप्रदान और उसे पुत्ररूपमें ग्रहण आदि विवरण ऐतरेयब्राह्मणमें विशदरूपसे लिखा है। मैत्रोपनिषद्में (१।४) जहां हरिश्चन्द्रका प्रसङ्ग आया है, वहां उन्हें राजर्षि कहा है।

इसके बाद एक दिन हरिश्चन्द्र शिकार खेलने जंगल गये। इसी समय उन्होंने एक रमणीका आर्त्तनाद सुना और पास होमें एक चारुलोचनाको देखा। राजाके पूछने पर रमणी कहने लगी, "राजेन्द्र! मैं सिद्धरूपिणी हूं, महर्षि विश्वामित्र मुझे पानेकी इच्छासे घोर तपस्या करते हैं। मैं कोमल स्वभावकी कमनीया स्त्री हूं, कौशिक ही मेरे कुल क्लेशके स्रष्टा हैं।"

रमणीके रोनेका कारण अच्छी तरह जान कर राजा हरिश्चन्द्रने उसे आश्वासन दिया और स्वयं विश्वामित्रके पास जा कर हाथ जोड़ कहा, 'महर्षे! आप जो कठोर तपस्या कर रहे हैं सो व्यर्थ, मैं आपका अभिलाष पूर्ण कर दूंगा।' राजाने विश्वामित्रको इस प्रकार मना कर अपने घरकी ओर प्रस्थान किया। उधर मुनिवर कौशिक भी बड़े क्रुद्ध हो अपने आश्रम लौटे।

इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। अनन्तर महर्षि विश्वामित्रने शूकराकृति एक भीमकाय दानवकी सृष्टि करके उसे राजा हरिश्चन्द्रकी राजधानीमें भेजा। वह बलिष्ठ शूकर भयानक चीत्कार करता हुआ राजाके उपवनमें घुसा। रक्षकोंने नाना अस्त्र ले कर उसे भगानेकी कोशिश की, पर व्यर्थ। अनन्तर उन लोगोंने राजासे यह बात जा कही। राजा दलबलके साथ घोड़े पर सवार हो उपवनकी ओर चल पड़े। राजाको आते देख वह शूकर राजाको लांघता हुआ आगे बढ़ा। राजाने भी शरासन खींच कर बड़ी तेजीसे उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया। देखते देखते राजा एक घने जंगलमें घुस गये। मध्याह्न कालमें राजा भूख प्यासके मारे बड़े व्याकुल हो गये, इसी बीच वह शूकर उनकी आंखोंकी ओट हो गया। अब राजा घर लौटनेकी इच्छा करने लगे, इसी समय विश्वामित्र वृद्ध ब्राह्मणके रूपमें वहां उपस्थित हुए। उन्होंने राजाको इस निर्जन काननमें आनेका कारण पूछा। राजाने आद्योपांत बातें सुना दीं और यह भी कहा, 'मैं अयोध्यापति हरिश्चन्द्र हूं और राजसूययज्ञ कर चुका हूं। मुझसे अब जो कोई जिस वस्तुके लिये प्रार्थना करता है, उसे मैं तुरत दे देता हूं।' यह सुन कर महर्षि विश्वामित्रने बड़े कौशलसे दानशील राजाको वंचना करनेके लिये गान्धर्वी माया द्वारा एक सुन्दर कुमार और कुमारीकी सृष्टि कर उनके विवाहके लिये धन मांगा। राजाने भी देनेकी प्रतिज्ञा की। इसके बाद विश्वामित्रके राह दिखा देने पर राजा अपने नगरकी ओर चल दिये।

एक दिन राजा अपनी राजधानीमें अग्निशालामें उपस्थित थे। इसी समय विश्वामित्रने आ कर उनसे कहा 'राजन् आज ही इस वेदीमें मुझे अभिलषित धन दीजिये।'

जब राजाने पूछा, कि आप कौनसी वस्तु चाहते हैं, तब विश्वामित्रने कहा, 'राजन्! इसी पवित्र वेदीमें आप मुझे छत्र, चामरादि, हाथी, घोड़े, रथ, सिपाही और रत्नपरिपूर्ण राज्य दीजिये।' राजाने मुनिवाक्य सुन कर मन्त्रमुग्धकी तरह उन्हें अपना विशाल राज्य दान कर दिया। अनन्तर विश्वामित्रने दानके उपयुक्त ढाई भार सोना दक्षिणामें मांगा।

दूसरे दिन सवेरे विश्वामित्रने राजसदनमें आ कर राजासे कहा, 'आप अपने राज्यका परित्याग कीजिये और प्रतिश्रुत सुवर्ण दक्षिणा दे कर अपने सत्यवादित्वका परिचय दीजिये।' राजाने जब दक्षिणा चुकानेका कोई उपाय नहीं देखा, तब अपने पत्नी-पुत्र और अपनेको बेच कर दक्षिणा देनेकी व्यवस्था की। इस मासके अन्तमें दक्षिणा दूंगे, इस प्रकार वचन दे कर वे वाराणसीपुरी चले गये।

महीनेके अन्तमें विप्रवेशधारी कौशिक हठात् वृद्ध ब्राह्मणका रूप धारण कर दासी खरीदनेकी इच्छासे वहां आये। उन्होंने पहले दासीरूपमें राजमहिषी माधवीको खरीदा, पीछे महिषीके अनुरोधसे बालक रोहितको भी खरीद लिया।

इसके बाद विश्वामित्रने अपने रूपमें दर्शन दे कर दक्षिणा मांगी। राजाको पत्नी और पुत्रके बेचनेसे जो ग्यारह करोड़ सुवर्णमुद्रा मिली थी, वही देने लगे, पर मुनिवरने उसे लेना नहीं चाहा। उन्होंने क्रोधपूर्वक कहा, 'यह सामान्य धन दक्षिणाके उपयुक्त नहीं है, और धनका प्रबन्ध कीजिये। मैं शाम तक अपेक्षा करूंगा, बादमें चला जाऊंगा।'

अब राजा हरिश्चन्द्र कोई उपाय न देख स्वयं बिकनेको तैयार हो गये। धर्म निर्दय प्रवीर चण्डालरूपमें क्रेता

बन कर खड़े हुए। इसी समय आकाशवाणी हुई, "महाभाग आज अङ्गीकृत दक्षिणा दे कर ऋणमुक्त हुआ।"

प्रवीर काशीके दक्षिण श्मशानमें हरिश्चन्द्रको ले कर चल दिये। वहां मृतदेहके वस्त्रादि संग्रह करना इत्यादि उनका कार्य ठहराया गया। श्मशानमें रह कर हरिश्चन्द्रने पत्नीपुत्रकी चिंतामें घृणित कार्य करते हुए बड़े कष्टसे बारह मास बिताया। इसी समय एक दिन काशीके पास ही बालक रोहित ब्राह्मणका दर्भ और समिध लाने गया। पिपासार्त्त हो निकटवर्त्ती जलाशयमें जलपान कर ज्यों ही समिधका पुला उठाया, त्यों ही एक काले सर्पने आ कर उसे डस लिया और वह उसी समय पञ्चत्वको प्राप्त हुआ।

रोहितके साथियोंने उसी समय यह संवाद उसकी मातासे जा कहा। रोहितकी माता पुत्रकी मृत्यु सुनते ही मूर्च्छित हो गई और करुणस्वरसे रोने लगी। उसका मालिक निष्ठुर ब्राह्मण विप्रदासीके पुत्रशोक पर दुःखित तो क्या होगा, उलटे उसे तीखी तीखी बातें कहने लगा। समस्त दिन गृहकार्य और मध्य रात्रि तक विप्रका कुल काम हो जाने पर उसने दासीसे कहा, "अब तुम्हारा काम शेष हो गया। जाओ, पुत्रका दाहादि कार्य शीघ्र कर आओ।" राजपत्नी माधवी उस दो पहर रातमें मृतपुत्रको छातीमें लगा रोती पोटती श्मशानकी ओर चली। उनका आर्त्तनाद सुन कर नगरपाल डर गये। उन लोगोंने रानीसे पूछा, 'यह किसका लड़का है, तुम कौन हो और तुम्हारा स्वामी कहां है?' जब रानीने कोई उत्तर न दिया और आगे ही बढ़ती गई, तब नगरपाल उन्हें मायाविनी बालघातिनी समझ कर चण्डालके घर घसीट ले गये। नगरपालने जल्लादको रानीका शिर काटनेका हुकुम दिया, पर उसने नहीं सुना। पीछे हरिश्चन्द्रको यह निष्ठुर कार्य करने कहा गया।

राजा हरिश्चन्द्रने श्मशानभूमिमें रानीको बैठने कह कर उनके शिरश्छेदके लिये खड्ग उठाया। रानी बोली, 'चण्डाल! तुम्हारी जो इच्छा हो करना, पर पहले मुझे सर्पके काटे हुए पुत्रका दाहकार्य कर लेने दो।' कष्ट तथा चिन्तासे दोनोंकी आकृति ऐसी बिगड़ गई थी, कि एक दूसरेको पहचान न सके। अनन्तर रानीने विलपती हुई पुत्रको श्मशानभूमिमें रख दिया। राजाने मुर्देके पास आ कर उसके मुंह परका ढका हुआ कपड़ा ले लिया। बालकका राजलक्षण और आपादमस्तक देख कर अब उन्हें समझनेमें जरा भी देर न लगी, 'यह शव मेरे पुत्रके सिवा और कोई भी नहीं हो सकता।' अब वे फूट फूट कर रोने लगे, पर तुरत ही उन्होंने अपनेको सम्हाल लिया। परन्तु रानीके हृदयद्रावी विलापसे राजाका धैर्य जाता रहा। राजा और रानी उस श्मशान भूमि पर मूर्च्छित हो पड़े। एकने दूसरेको जब पहचान लिया तब शोकप्रवाह और भी उमड़ आया। इसके बाद हुताशन प्रज्वलित कर दोनोंने प्राणत्याग करना स्थिर किया।

राजा हरिश्चन्द्रने चिता रच कर उस पर रोहितका शव रख दिया और आप पत्नीके साथ जगदीश्वरी परमेशानीका ध्यान करने लगे, तब ब्रह्मादि देवगण धर्मके साथ वहां पहुंचे और बोले, 'राजन्! हम लोकपितामह, स्वयं भगवान् विष्णु, साध्यगण, विश्वदेवगण, चारणगण, नागगण, गन्धर्वगण, रुद्रगण, अश्विनीकुमारयुगल, अन्यान्य सभी देवगण तथा विश्वामित्र स्वयं आ कर तुम्हें अभीष्ट दान देना चाहते हैं। इन्होंने अमृत बरसा कर रोहितको जिला दिया। उस समय आकाशसे पुष्पवृष्टि और दुन्दुभि ध्वनि होने लगी। इन्द्रने राजासे कहा, 'राजन्! तुम अपने कर्मफलसे पुत्र और कलत्रके साथ स्वर्गमें जा परम सम्पत्ति लाभ करो।'

राजाने बिना श्वपच प्रभुको अनुमतिके स्वर्ग जाना नहीं चाहा। इस पर धर्मने आगे जा कर कहा, 'वत्स! मैंने मायासे श्वपचरूप धारण कर तुम्हें चण्डालपुरीका प्रदर्शन कराया है। मैं ही वह ब्राह्मण था और मैंने ही कृष्णसर्प बन कर तुम्हारे पुत्रको डंसा था। अब तुम उसी धर्मबलसे स्वर्गारोहण करो।' राजाने फिर कहा, 'अयोध्यावासी अनुगत मानवगण मेरे विरहसे शोकसंतप्त हैं, वैसे भक्तोंको छोड़ कर मेरा जाना अनुचित होगा। यदि उन लोगोंको भी मेरे साथ जाने दें, तो मैं जा सकता हूं।' 'तथास्तु' कह कर इन्द्रने वर दिया। राजा अपने पुत्र रोहिताश्वको राज्य पर अभिषिक्त कर पुण्य प्रभावसे किङ्किणीजालमण्डित देवदुर्लभ दिव्य रथ पर चढ़

स्वर्गको चल दिये। उन्हें रथ पर उपविष्ट देख दैत्यकुलगुरु शुक्राचार्यने कहा,'अहो! दानकी क्या ही महिमा है! जिसके प्रभावसे राजा हरिश्चन्द्रने आज महेन्द्रका सालोक्य लाभ किया।" (देवीभाग० ७।१२-२७ अ०) ब्रह्मपुराणके ८ और १०४ अध्याय, पद्मपुराण सृष्टिखण्डका ८ अ० और स्वर्गखण्डका २४ अ०, श्रीमद्भागवत ९।७-८ अ०, ६।१६।३१ और १०।७२।२१ स्कन्दपुराणके नागरखण्ड और हाटकेश्वर-माहात्म्यमें हरिश्चन्द्रका विषय और विश्वामित्रका माहात्म्य विशद रूपमें लिखा है। इसके सिवा दूसरे सभी पुराणोंमें हरिश्चन्द्रका वंशवर्णन देखा जाता है।

(त्रि०) २ स्वर्णाभ, सोनेकी-सी चमकवाला। ३ हरित धाराविशिष्ट। (ऋक् ६।६६।२६।

हरिश्चंद्र—काशीवासी एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। हिन्दी साहित्यकी चर्चा करते ही, हिंदी गद्यपद्यको परिष्कृत रूपमें परिवर्त्तन करनेवाले 'भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र'का नाम अगत्या लेना ही पड़ेगा। इनका जन्म सन् १८५० ई० की ९वीं सितम्बरको हुआ था। ये काशीके इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन वैश्य-वंशमें उत्पन्न हुए थे। इनके पिताका नाम बाबू गोपालचंद्र उपनाम गिरिधर दास था। गिरिधर भी एक परिहासरसिक कवि थे। वे कुल मिला कर ४० ग्रंथ लिख गये हैं। बाबू हरिश्चंद्रकी नौ वर्षकी अवस्थामें गोपालचंद्रजीका २७ वर्षकी छोटी अवस्थामें परलोकवास हुआ। सुयोग्य पिताके सुयोग्य संतान बालक हरिश्चंद्रने पांच छः वर्षकी अवस्थामें ही अपनी चमत्कारिणी बुद्धिसे कविचूडामणि पिताको चमत्कृत कर दिया था। अङ्गरेजी पढ़नेके लिये आप बनारस कालेजमें भरती कराये गये। सभी परीक्षाओंमें वे बड़ी सफलतासे उत्तीर्ण होते गये। तीन चार वर्ष तक भारतेन्दु कालेजकी पढ़ाई पढ़ते रहे, पर उस समय भी उनका झुकाव कविताकी ओर ही था। आप बड़े उदार थे। आपने फीस दे कर न पढ़ सकनेवाले साधारण लोगोंके लड़कोंको पढ़ानेके लिये आपने घर पर स्कूल खोला था तथा चंद तरहसे उन्हें मदद पहुंचाते थे।

१८६८ ई०में आपने 'कविवचनसुधा'को फिर मासिक पत्रके रूपमें निकाला। पीछेसे यह 'सुधा' क्रमशः पाक्षिक और साप्ताहिक भी कर दी गई थी। १८७० ई०में आप बनारसके आनरेरी मजिस्ट्रेट चुने गये। महारानी विक्टोरियाके पुत्र ड्यूक आफ एडिनबरा जब काशी देखने आये, तब उनको नगर दिखानेका भार बाबू साहब हीको अर्पित किया गया था। आपने काशीके सब पण्डितोंसे कविता बनवा और उसे 'सुमनोञ्जलि' नामक पुस्तकमें छपवा कर उन्हें समर्पण की थी। उसी साल ये पंजाब यूनिवर्सिटीके परीक्षक नियुक्त हुए। १८७४ ई०में आपने स्त्रीशिक्षाके निमित्त 'बालाबोधिनी' नामकी एक मासिक पत्रिका निकाली थी। आपने काशीमें 'पेनी रीडिङ्ग' नामक एक समाज भी स्थापित किया था। इसमें स्थानीय विद्वान् अच्छे अच्छे लेख लिख कर लाते और स्वयं पढ़ते थे। इस समाजके प्रोत्साहनसे भी बहुत-से अच्छे अच्छे लेख लिखे गये। 'कर्पूरमञ्जरी' 'सत्य हरिश्चन्द्र' और 'चन्द्रावली' सच पूछिये, तो ये ग्रन्थ हिन्दीके टकसाल हैं। आपने भारतवर्षमें प्रिंस आफ वेल्सके पधारने पर भारतकी यावतीय भाषाओंमें कविता बनवा कर 'मानसोपायन' पुस्तक भेंट की। इङ्गलैण्डकी रानीने जब भारतकी साम्राज्ञीका पद ग्रहण किया, तब इन्होंने 'मनोमुकुलमाला' नामकी पुस्तक अर्पण की। काबुल विजय पर 'विजयवल्लरी' बनाई। मिश्र विजय पर 'विजयिनीविजयवैजयन्ती' उड़ाई।

बाबू श्रीहरिश्चन्द्र वल्लभ सम्प्रदायके पूरे अनुयायी थे। आपने सबसे पहले अपने पिताका बनाया 'भारतीभूषण' नामक ग्रन्थ छपवाया। आपका सबसे पहला बनाया हुआ 'विद्यासुन्दर' नाटक है। आपने राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्य सम्बंधी कितने ही उत्तमोत्तम ग्रन्थ लिखे। परंतु इन सबमें 'प्रेमफुलवारी', 'सत्यहरिश्चंद्र' 'चंद्रावली', 'काश्मीरकुसुम' और 'भारतदुर्दशा' ग्रन्थ विशेष उल्लेखयोग्य हैं। आपके गुणों पर मोहित हो कर तथा 'सारसुधानिधि'के प्रस्ताव करने पर आपको १८८० ई०में 'भारतेन्दु'की पदवी देना एक स्वरसे समस्त देशने स्वीकार किया था।

सन् १८८५ ई०की ६ठी जनवरीको रात्रिके पौने दश बजे भारतका इन्दु सदाके लिये अस्त हो गया।

हरिश्चन्द्र—१ भट्टारक हरिश्चन्द्र नामसे प्रसिद्ध एक प्राचीन वैद्यकग्रन्थकार। टोडरानन्द, भावप्रकाश आदि

ग्रन्थोंमें इनका मत उद्धृत हुआ है। किसी किसीका कहना है, कि भट्टार हरिश्चन्द्र और भट्टारक हरिश्चन्द्र दोनों एक व्यक्ति थे। हरिश्चन्द्र देखो।

२ एक जैन ग्रन्थकार, पुरुदेवचम्पूके रचयिता। ३ मालवके परमारवंशीय एक प्राचीन सामन्तराज, लक्ष्मीवर्माके पुत्र। ४ कन्नौजके अन्तिम राजा जयचन्द्रके पुत्र और उत्तराधिकारी। ५ कुमायूंके चान्द्रवंशीय एक राजा। ये १३८३ शकमें राज्य करते थे। ६ काष्ठाके टाकवंशीय एक सामन्त राजा, मदनपालके पितामह। मदनपाल देखो।

हरिश्चन्द्रगढ़—बम्बईप्रदेशके अहमदनगर जिलेका एक गिरिदुर्ग। मराठोंके जितने गढ़ हैं, उनमें यही गढ़ अति प्रसिद्ध है। समुद्रपृष्ठसे इसकी ऊंचाई ३८९४ फुट है।

हरिश्चन्द्रपाल—पूर्ववङ्गके एक प्रसिद्ध राजा। प्रवाद है, कि साभरमें इनकी राजधानी थी। आज भी साभर जंगलमें इनकी राजधानीका खंडहर पड़ा है। देशावलिक मतसे आदिशूरके पहले ये राज्य करते थे।

हरिश्चन्द्र मुखोपाध्याय—हिन्दू पेट्रियटके एक सम्पादक, विख्यात वाग्मी और स्वदेशभक्त। इन्होंने कलकत्तेके निकटवर्त्ती भवानीपुरमें अपने ननिहालमें १८२४ ई०को जन्मग्रहण किया। इनके पिता रामधन मुखोपाध्याय उच्चकुलीनवंशसम्भूत थे।

हरिश्चन्द्र पहले Hindu Intellegencer पत्रिकामें लिखते थे। पीछे Englishman पत्रिकामें भी इनका प्रबंध छपने लगा। बड़ाबाजारमें मधुसूदन रायके प्रेससे 'हिन्दूपेट्रियट' निकलता था। ये ही उसके सम्पादक हुए। उस समय बंगला और अंगरेजी जाननेवालोंकी संख्या बहुत कम थी। इस देशके साहब भी रुपये खर्च कर देशी पत्रिकाका पढ़ना नहीं चाहते थे। ये सब कठिनाइयां रहते हुए भी हिन्दूपेट्रियटका नाम शीघ्र ही फैल गया। १८५४ ई०में जब मधुसूदन राय महाशय अस्वस्थ हो कर अपने देश चले गये, तब उनका छापाखाना बिक गया। हरिश्चन्द्रने ही पीछे उसे खरीदा और उन्हींके 'हिंदू पेट्रियट' प्रेससे हिंदू पेट्रियट निकलने लगा। जब लार्ड डलहौसी उत्तराधिकारियोंके मरने पर बहुतसे देशी करद राज्योंको वृटिशसाम्राज्यमें मिलाने लगे, तब हिंदू पेट्रियटमें घोर प्रतिवाद प्रकाशित होता था। गवर्नरको अनेक समय हरिश्चंद्रके कथनानुसार चलना होता था। पीछे सिपाही विद्रोहकी आग धधकने पर इन्होंने उस घोर दुर्दिनमें गवर्मेण्टसे मिल कर देशमें शान्ति स्थापन करनेकी चेष्टा की। आखिर सभी साहबोंके मतके विरुद्ध जब कैनिङ्गने दयानीतिका अवलम्बन किया, उस समय हरिश्चन्द्र उनके दक्षिण हस्तस्वरूप थे।

नीलकरोंके अत्याचारसे जब सारा वङ्गाल हाहाकार कर रहा था, उस समय हरिचन्द्र निर्भीक भावसे प्रजाके पक्षमें थे। इस समय उन्हींकी चेष्टा और उद्यमसे गवर्मेण्टके अनेक गन्यमान्य साहब प्रकृत तथ्य जाननेके लिये नियुक्त हुए थे।

हरिश्चन्द्र १८६१ ई०को ३६ वर्षकी उमरमें चल बसे। जनसाधारणके लिये आप जो स्वार्थत्याग दिखला गये हैं, वह अतुलनीय है। आपने हिंदू पेट्रियटके लिये अपना सर्वस्व खर्च कर दिया था।

हरिश्मश्रु (सं० पु०) १ हिरण्याक्ष दैत्यके नौ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्मकल्पमें परावसु गन्धर्वके नौ पुत्रोंमेंसे एक था। (त्रि०) २ हरिद्वर्ण श्मश्रुविशिष्ट, पीली मूंछ दाढ़ीवाला।

हरिश्री (सं० त्रि०) अश्वकर्त्तृक सेव्य।

हरिश्रीनिधन (सं० क्ली०) सामभेद।

हरिष (सं० पु०) हर्षण।

हरिषाच् (सं० त्रि०) सोमसभक्ता। (ऋक् १०।९।१२)

हरिषेण (सं० पु०) इक्ष्वाकुवंशज जिनचक्रवर्त्ती।

हरिषेण—१ एक विख्यात जैनपण्डित। १४४६ शकमें इन्होंने 'जगत्सुन्दरीयोगमाला की रचना की। २ वाराणसीवासी एक पण्डित। इन्होंने राजनीतिसम्बन्धमें एक संस्कृत ग्रंथ लिखा। ३ एक वाकाटक-वंशीय महाराज। ये देवसेनके पुत्र थे। ४ एक प्राचीन भट्ट या कविका नाम जिसने गुप्तवंशीय सम्राट् समुद्रगुप्तकी यह प्रशस्ति लिखी थी जो प्रयागके किलेके भीतरके खंभे पर है।

हरिष्ठा (सं० त्रि०) घोड़े पर स्थित।

हरिस (हिं० स्त्री०) हलका वह लंबा लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकडी आडी जुडो रहती है और दूसरे छोर पर जूआ अटकाया जाता है। इसे ईषा भी कहते हैं।

हरिसङ्कीर्त्तन (सं० क्ली०) श्रीहरिका नामोच्चारण। कलिकालमें हरिसङ्कीर्त्तनके सिवा दान, व्रत, तपस्या, श्राद्ध या पितृतर्पण सभी निष्फल हैं।

हरिसामन्तराज—एक सामन्तनृपति। ये कृष्णके पुत्र थे। इन्होंने सूर्यप्रकाश नामक एक धर्मशास्त्रनिबंध रचा।

हरिसिंगार (हिं० पु०) हरसिंगार देखो।

हरिसिंहदेव—१ मिथिलाके कर्णाटक वंशीय एक नृपति। सिमराओनमें इनकी राजधानी था। ये एक विद्योत्साही थे। मिथिला और स्मृति शब्द देखो। २ एक प्रसिद्ध सिख-सरदार।

हरिसुत (सं० पु०) १ श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्न। २ इन्द्रके अंशसे उत्पन्न अर्जुन।

हरिसेन—हरिषेण देखो।

हरिसेवकमिश्र—एक प्रसिद्ध पण्डित। इन्होंने १७१४ ई०में हृदयरामके आदेशसे योगसारसमुच्चय नामक भवदेवके योगसंग्रहका सारसंग्रह प्रकाश किया।

हरिस्तुति (सं० स्त्री०) हरिस्तोत्र।

हरिस्वामिपुत्र—ताण्ड्यब्राह्मणभाष्यकार।

हरिहय (सं० पु०) १ इन्द्र। २ सूर्य्य। ३ कार्त्तिकेय। ४ गणेश।

हरिहर (सं० पु०) हरि और हरसंयुक्त, हरिहरमूर्त्ति। वामनपुराणके ५६वें अध्यायमें हरिहरमूर्त्तिके सम्बन्धमें यों लिखा है—

"सार्द्ध' त्रिनेत्रं कमलाहिकुण्डलं जटामहाभारशिरोजमण्डितं।
हरिं हरञ्चैव नगेन्द्रभूषया' पीताजिनाच्छन्नकटिप्रदं शर्क॥
चक्रासिहस्त धनुःशार्ङ्गपाणिं पिनाकशूलाजगवान्वितञ्च।
कन्दर्पखट्वाङ्गकपालघण्टा-सशङ्खचक्राब्जधरं महर्षे॥
दृष्ट्वैव देवा हरिशङ्करं तं नमोऽस्तु ते सर्वगताव्ययेति॥"

हरिहर—१ विद्यानगरके एक प्रसिद्ध राजा। १३७६ ई०से १४०१ ई० तक इन्होंने राजत्व किया। ये वेदभाष्यकार सायणाचार्यके प्रतिपालक तथा १म वीरबुक्करायके पिता थे। विद्यानगर, माधवाचार्य और सायणाचार्य देखो। २ एक प्राचीन स्मार्त्त। वाचस्पति मिश्र, कमलाकर आदिने इनका मत उद्धृत किया है। ३ आशौचदशक और दशश्लोकी-विवरणके प्रणेता। ४ क्रतुरत्नमालाके रचयिता। ५ छन्दोगपरिशिष्टप्रकाशके टीकाकार। ६ जानकीमाणिक्यस्तवके रचयिता। ७ देवीकवचकार। ८ एक प्रसिद्ध तान्त्रिकसाधु, पात्रशुद्धि और विद्यासाधनतंत्रके प्रणेता। ९ एक प्रसिद्ध मैथिल पण्डित, प्रभावतीपरिणय नामक संस्कृतनाटकके रचयिता। १० प्रयोगरत्नाकरके प्रणेता। ११ योगशिक्षा नामक योगशास्त्रकार। १२ रतिरहस्यकार। १३ रसमणि और रसाधिकार नामक वैद्यक ग्रन्थके रचयिता। १४ वैराग्यप्रदीपके प्रणेता। १५ शिवोपनिषद्कार। १६ शृङ्गारभेदप्रदीप नामक अलङ्कारग्रंथके रचयिता। १७ सिद्धान्तशिरोमणिटीकाकार। १८ सुभाषितके प्रणेता। १९ नृसिंहके पुत्र, अनर्घराघवटीका और तार्किकरक्षणसंग्रहटीकाकार। २० भट्टभास्कर पुत्र, अन्त्येष्टिपद्धतिके प्रणेता।

हरिहर—महिसुर राज्यके चित्तलदुर्ग जिलेका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० १४° ३१' उ० तथा देशा० ७५° ४८' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ६ हजारके करीब है। स्थलपुराणके मतसे हरिहरने एकाङ्ग हो कर यहां दैत्यका निधन किया था, इसीसे इस स्थानका नाम हरिहर हुआ। यहां १३वीं सदीमें उत्कीर्ण अनेक शिलालिपि निकली हैं। हरिहरका जो प्रधान मंदिर है, वह ११२३ ई०में बना। १७६३ ई०में हैदरअलीने यह शहर दखल किया, पीछे यह मराठोंके हाथ आया। १८६५ ई० तक इस शहरसे १ कोस उत्तर-पश्चिम देशी सैनिकोंका एक सेनावास था। १८६८ ई०में यहां तुङ्गभद्रा नदीके ऊपर एक सुदृढ़ सेतु बनाया गया।

हरिहर अग्निहोत्री—एक प्राचीन स्मार्त्त। हेमाद्रि, कामदेव, रघुनन्दन आदि स्मार्त्तोंने इनकी पद्धति उद्धृत की है।

हरिहरक्षेत्र—एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। इसका दूसरा नाम हरिहरछत्र भी है। वराहपुराणमें लिखा है, कि भगवान् हरि सभी गौओंको ले कर हरिक्षेत्र गये थे। वहां शूलपाणि हरने नन्दीके साथ गोधनकी रक्षा की और उसी दिनसे वे वहां रहने लगे, इसीसे इस स्थानका हरिहरक्षेत्र

नाम पड़ा। देवगण यहां विचरण करते हैं, इस कारण इस स्थानको देवघाट भी कहते हैं। हरिहरछत्र देखो।

हरिहरक्षेत्र—तापीखण्ड वर्णित तापी नदीतीरस्थ एक पुण्य स्थान।

हरिहरगञ्ज—शाहाबाद जिलेका एक शहर। यहां हाट बाजार और अनेक लोगोंका वास है।

हरिहरचाँद—कुमायूंके चांदवंशीय एक राजा। ये १४२० ई०में राजत्व करते थे।

हरिहरछत्र—सारण जिलेको गङ्गा और गण्डकीके सङ्गम पर अवस्थित सोनपुर शहरका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। यहां हरिहरनाथ महादेवका मन्दिर है और उन्हींके नामानुसार हरिहरछत्र नाम पड़ा है। यहां कार्त्तिकपूर्णिमाके समय दश दिन तक एक बड़ा मेला लगता है। ऐसा बड़ा मेला उत्तर-भारतमें और कहीं भी नहीं लगता। इस मेलेमें बड़े बड़े राजा महाराज तथा लाखों यात्री आते हैं। हाथी, घोड़े, ऊंट आदि पशुके सिवा भिन्न भिन्न देशकी भिन्न भिन्न वस्तु इस मेलेमें बिकनेको आती है। शोनपुर देखो।

हरिहरदेव—एक प्राचीन संस्कृत कवि।

हरिहरपण्डित—आचारसंग्रहके प्रणेता।

हरिहरपुर—१ मयूरभञ्जकी प्राचीन राजधानी। हरिपुर देखो। २ महिसुरराज्यके कदुर जिलेका एक गण्डग्राम। कोप्प तालुकका सदर है। यहां १५वीं सदीमें उत्कीर्ण एक शिलालिपि है।

हरिहरपुरी—एक प्रसिद्ध वैदान्तिक। विष्णुपुरीने इनका मत उद्धृत किया है।

हरिहरप्रसाद—रामतत्त्वभास्करके प्रणेता।

हरिहरभट्ट—१ अमरुशतकके एक टीकाकार। २ हृदयदूत नामक संस्कृत काव्यके प्रणेता।

हरिहरभट्टाचार्य—एक विख्यात स्मार्त्त। इन्होंने १५६० ई०में समयप्रदीपकी रचना की।

हरिहरसिंह—नेपालके एक राजा। ये राजा शिवसिंहके पुत्र और लक्ष्मीनरसिंहके पिता थे।

हरिहरस्वामी—एक प्रसिद्ध वेदविद्। ये नागस्वामिके पुत्र थे। इन्होंने कात्यायनश्राद्धसूत्रभाष्य, कात्यायन स्नानविधि सूत्रभाष्य और शतपथ-ब्राह्मण भाष्यकी रचना की।

हरिहरानन्द—एक प्रसिद्ध तान्त्रिक। ये महानिर्वाणतन्त्रटीका, उत्तरगीताव्याख्या, भैरवीपटल और बगलामन्त्र साधन आदि तान्त्रिक ग्रन्थ लिख गये हैं।

हरिहरात्मक (सं० पु०) १ गरुड़। २ शिववृष। (क्ली०) ३ हरिहरक्षेत्र। (त्रि०) ४ हरिहर स्वरूप।

हरिहित (सं० पु०) इन्द्रवधू, बीरबहूटी।

हरिहेतिहूति (सं० पु०) चक्रवाक, चकवा।

हरी (सं० स्त्री०) १ हरीत, सब्ज। २ १४ वर्णका एक वृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें जगण, रगण, जगण, रगण और अंतमें लघु गुरु होते हैं। इसका दूसरा नाम अनन्द भी है। ३ कश्यपकी क्रोधवशा नाम पत्नीके गर्भसे उत्पन्न दस कन्याओंमेंसे एक। इससे सिंह, बंदर आदि उत्पन्न हुए थे।

हरीकसीस (हिं० स्त्री०) हीराकसीस देखो।

हरीकेन (अं० पु०) एक प्रकारका लालटेन जिसकी बत्तीमें हवाका झोंक आदि नहीं लगता।

हरीचाह (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी घास। इसकी जड़में नीबूकी-सी सुगंध होती है।

हरीत (सं० पु०) हारीत देखो।

हरीतकी (सं० स्त्री०) १ स्वनामख्यात वृक्ष, हड़। इसका वैज्ञानिक नाम Terminalia chebula है। अङ्गरेजीमें इसे The Chebulic या Black Myrobalan कहते हैं।

उत्तर भारतके कुमायूंसे बङ्गाल तक, दक्षिणमें दाक्षिणात्य अधित्यकाके १०००से ३००० फुटकी ऊंचाई पर, ब्रह्मराज्यमें, सिंहल और मलय प्रायोद्वीपमें यह वृक्ष उत्पन्न होता है।

अश्विनीकुमारके दक्षप्रजापतिसे इसका उत्पत्तिविवरण पूछने पर उन्होंने कहा था, कि एक दिन इन्द्र अमृत पान कर रहे थे। उस अमृतसे एक बिन्दु अमृत जमीन पर गिरा, उसी अमृतविन्दुसे हरीतकीकी उत्पत्ति हुई है।

हरीतकी सात प्रकारकी है, यथा—विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी। इन सात प्रकारकी हरीतकीमें विजयाकी आकृति लौकी जैसी अर्थात् शिराविहीन और गोल होती है। रोहिणी सम्पूर्ण गोल, पूतना सूक्ष्म, अथच अपेक्षाकृत वृहत्वीज और स्वल्पत्वग्विशिष्ट, अमृता स्थूलत्वचा अर्थात् मांस

स्थूल, क्षुद्रबीजविशिष्ट, अभया पञ्चरेखायुक्त, जीवन्तीका वर्ण सुवर्णसदृश और चेतकी तीन रेखायुक्त होती हैं।

इन सब हरीतकियोंमें विजया सभी रोगोंमें उत्तम है। रोहिणी व्रण-विनाशकारी, पूतना प्रलेपमें उपकारी, अमृता संशोधनके पक्षमें हितकर, अभया चक्षुरोगमें विशेष उपकारी, जीवन्ती सभी रोगोपहारक, चेतकी चूर्णमें प्रशस्त है, इन सबोंका विचार कर हरीतकीका प्रयोग करना उचित है।

चेतकी हरीतकी फिर शुक्ल और कृष्णभेदसे दो प्रकारकी है। इनमें शुक्ल वर्णकी चेतकी आयतनमें छः अंगुलकी और कृष्ण वर्णकी चेतकी आयतनमें एक अंगुलकी होती हैं। इन सब हरीतकियोंमेंसे किसीके खानेसे, किसीके सूंघनेसे, किसीके छूनेसे और किसीके देखनेसे वमन हो जाता है।

मनुष्य, पशु, पक्षी और मृग आदि जिस किसी प्राणीके चेतकी हरीतकीवृक्षकी छायामें गमनागमन करनेमें उसी समय उन्हें वमन होता है। यह हरीतकी हाथमें रखनेसे जितना समय हाथमें रहेगी, उतना समय वमन होगा। हाथसे फेंक देने पर ही वमन बंद हो जायगा। तृष्णार्त्त, सुकुमार, कृश और जिन्हें औषधिके प्रति विद्वेष है, उनके लिये चेतकी सुखविरेचनके पक्षमें विशेष प्रशस्त है। इन सात जातिकी हरीतकियोंमें विजया ही उत्तम सुखसेव्य और सुलभ है। विशेषतः रोगके लिये यह विशेष हितकर है।

हरीतकी-वृक्ष बहुत बड़ा होता है। शीत और शरत्‌में इसके पत्ते झड़ जाते हैं। वसन्त ऋतुमें फिर नये पत्ते निकलते हैं।

इस वृक्षसे जो रस निकलता है, वह औषधके लिये प्रयोजनीय है। जो अपने शरीरमें रंगका व्यवहार करते हैं, उन्हींके लिये हरीतकीवृक्ष विशेष कामका है। इसके फलकी गुठलीका चूर्ण कर जलमें घोल उसमें कोई वस्तु डुबो देनेसे उसका रंग धूसर हो जायगा।

हरीतकी-फल चमारके लिये बड़े कामकी वस्तु है। उसके काढ़ेसे चमड़ेको सख्त कर व्यवहारोपयोगी बनानेमें हरीतकी-चूर्णकी जरूरत होती है। इससे चमड़ा चिकना और मुलायम होता है। रासायनिक विश्लेषण द्वारा यह दिखलाया गया है, कि इसमें संकोचक अम्लरस काफी मात्रामें है और इसीसे चमड़ा सहजमें संकुचित हो सकता है।

सरकारी वनविभागका हिसाब देखनेसे पता लगता है, कि हरीतकीकी बिक्रीसे गवर्मेण्ट खासा मुनाफा उठाती है। फ्लेमिं और रसवार्गप्रमुख यूरोपीय लेखकोंका कहना है, कि हरीतकी एक प्रकारकी निर्दोष काष्ठपरिष्कारक औषध है। बुकानन हैमिल्टन साहबके मतानुसार इसका सिर्फ औषधमें ही व्यवहार होता है सो नहीं, चर्मसङ्कोचनकार्यमें भी यह अत्यन्त प्रयोजनीय है।

वस्त्रादिकी अपेक्षा चमड़ेको साफ करने और रंगानेके लिये ही हरीतकीका अधिक व्यवहार होता है। इसी कारण समुद्रपथसे इसकी विभिन्न देशोंमें रफ्तनी होती है।

हरीतकी लवणरस भिन्न पञ्च रसयुक्त है अर्थात् मधुर, अम्ल, तिक्त, कषायरसयुक्त है। इनमेंसे कषाय रस ही प्रधान है। रसनेन्द्रियका अनुभवयोग्य है। रूक्ष, उष्णवीर्य, अग्निदीप्तिकर, मेधाजनक, मधुर, विपाक, रसायन, चक्षुका हितकर, लघु, आयुष्कर, मांसवर्द्धक, अनुलोमक, श्वास, काश, प्रमेह, अर्श, कुष्ठ, शोथ, उदर, कृमि, विस्वरता, ग्रहणीरोग, विबन्ध, विषम ज्वर, गुल्म, उदराध्मान, पिपासा, वमि, हिक्का, कण्डु, हृद्रोग, कमला, शूल, आनाह और प्लीहा, हरीतकीगत मधुर तिक्त और कषाय रस द्वारा पूर्वोक्त सभी रोग और पित्त नष्ट होते हैं। कटु, तिक्त और कषाय रस द्वारा कफ तथा अम्ल रस द्वारा वायु नष्ट होती है। कटु रस और अम्ल रस द्वारा पित्तकी वृद्धि अथवा तिक्त कषाय रस द्वारा वायुकी वृद्धि नहीं होती। हरीतकीकी मज्जामें मधुररस, स्नायुमें अम्लरस, वृन्तमें तिक्तरस, त्वक्‌में कटुरस और अस्थिमें कषायरस है।

जो हरीतकी नई, स्निग्ध, कठिन, गोल और भारी होती तथा जो जलमें डुबानेसे डूब जाती है, वही प्रशस्त और अत्यन्त फलदायक है। जो हरीतकी नूतन और पूर्वोक्त स्निग्धादि गुणयुक्त है तथा जिसका परिमाण दो कर्ष है, वही हरीतकी सबसे श्रेष्ठ है।

हरीतकी चबा कर खानेसे अग्निवृद्धि, पीस कर

सेवन करनेसे मलशोधित और सिद्ध कर सेवन करनेसे मलरोध तथा भून कर सेवन करनेसे त्रिदोष नष्ट होता है। खानेके साथ हरीतकी सेवन करनेसे बुद्धिका विकाश, बलकी वृद्धि और इन्द्रियकी पटुता, पित्त, कफ और वायु विनष्ट होती है तथा मूत्र, पुरीष और शारीरिक सभी मल निकल जाते हैं। खानेके बाद हरीतकी खानेसे अन्नपानकृत दोषके कारण वात, पित्त और कफजन्य पीडा तुरत हो आरोग्य होती है। हरीतकी लवण साथ खानेसे कफ, चीनीके साथ खानेसे पित्त, घीके साथ खानेसे वातज रोग और गुडके साथ खानेसे सभी प्रकारके रोग विनष्ट होते हैं। हरीतकीका वर्षा ऋतुमें सैन्धवके साथ, शरत्‌में चीनीके साथ, हेमन्तमें सोंठके साथ, वसन्तमें पीपलके साथ, ग्रीष्ममें मधुके साथ और प्रावृट् कालमें गुडके साथ सेवन करना चाहिये। एक तोला हरीतकीचूर्ण और एक तोला अनुपान द्रव्य मिला कर सेवन करनेसे सभी प्रकारके रोग प्रशमित होते हैं तथा यह उत्तम रसायन है।

पथपर्यटनके कारण अत्यन्त क्लान्त, बलहीन, रुक्ष शरीर, कृश, उपवासी या पित्तप्रबल व्यक्तियोंको अथवा जिन्हें रक्तस्राव हुआ है, उनको हरीतकी खाने नहीं देनी चाहिये। गर्भवती स्त्री मात्रको ही इसका खाना निषिद्ध है। (भावप्र०)

राजनिर्घण्टमें लिखा है, कि हरीतकीका सेवन करनेसे सभी व्याधि हठात् दूर हो जाती है, शरीर प्रदीप्त हो उठता है, इसीसे इसका नाम हरीतकी हुआ है। कहते हैं, कि पकी हरीतकी खानेसे भूख प्यास बिलकुल नहीं रहती तथा वह व्यक्ति अमर हो जाता है। (चरक चि० १ अ०) २ बाल हरीतकी, जंगी हर्रे।

हरीतकीखण्ड (सं० पु०) शूलरोगकी एक औषध।

हरीतकीतैल (सं० क्ली०) हरीतकी फलोद्भव तैल, हर्रेके फलसे तैयार किया हुआ तेल। गुण—शीतल, कषाय, मधुर, कटु, सभी व्याधिनाशक, पथ्य और नाना प्रकारके त्वग्दोषनाशक। (राजनि०)

हरीतकीरसायन (सं० पु०) चरकोक्त एक दीर्घायुकर रसायन औषध।

हरीतकीबीज (सं० क्ली०) हरीतकीकी अस्थि, हडकी गुठली। गुण—चक्षुका हितकर, गुरु, वातनाशक और पित्तघ्न।

हरीतक्यादि क्वाथ (सं० पु०) हडके प्रधान योगसे बना हुआ एक प्रकारका काढ़ा। यह मूत्रकृच्छ्र और बंधकुष्ठ रोगमें दिया जाता है।

हडका छिलका, अमलतासका गूदा, गोखरू, पखानभेद, धमासा और अडूस इन सबका चूर्ण ले कर पानीमें काढा उतारा जाता है। (भैषज्यरत्ना०)

हरीतक्यादिवर्त्ति (सं० स्त्री०) नेत्ररोगकी एक उत्कृष्ट वर्त्ति या बत्ती।

हरीन्द्रवैशेषिका (सं० स्त्री०) १ रेणुका, रेणुक। (चरक सू० २ अ०) २ निर्गुण्डी, निसोथ। ३ कम्पिल्लक, कमलागुंडी।

हरीफ (अ० पु०) १ दुश्मन, शत्रु। २ प्रतिद्वन्द्वी, विरोधी।

हरीरा (अ० पु०) १ एक प्रकारका पेय पदार्थ। यह दूधमें सूजी, चीनी और इलायची आदि मसाले और मेवे डाल कर औटानेसे बनता है। यह अधिकतर प्रसूता स्त्रियोंको दिया जाता है। (पु०) २ हर्षित, प्रसन्न।

हरीरी (अ० स्त्री०) हरीरा।

हरील (हिं० पु०) हारिल देखो।

हरीश (सं० पु०) १ बंदरोंके राजा। २ हनुमान्। ३ सुग्रीव।

हरीषा (सं० स्त्री०) मांसव्यञ्जनविशेष, आस। बनानेका तरीका—एक बड़े पाकपात्रमें मांस खण्ड कर डाल परिमाणानुसार जल, घृत, हींग, जीरा, हल्दी, अदरक, सोंठ, नमक, मरिच, चावल, गेहूं और बिजौरा नीबूका रस, इन्हें एक साथ मिला कर पाक करे। पाक करते करते जब यह माडकी तरह हो जाय, तब उतार ले। इसीको हरीषा कहते हैं। गुण—बलकारक, वायु और पित्तनाशक, गुरु, समशीतोष्ण, शुक्रवर्द्धक, स्निग्ध, सारक और भग्नादिसंधानकारक।

हरीस (हिं० स्त्री०) हलका वह लम्बा लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी आड़े बल जड़ी रहती है और दूसरे छोर पर जूआ लगाया जाता है।

हरुण (सं० पु०) एक बहुत बड़ी संख्या।

हरूफ (अ० पु०) अक्षर, हरफ।

हरे (सं० पु०) हरि शब्दका संबोधनका रूप। २ जो ऊंचा या जोरका न हो, जो तीव्र न हो। ३ जो कठोर या तीव्र न हो, हलका।

हरेणु (सं० स्त्री०) १ रेणुका नामक गन्धद्रव्य । २ मटर । ३ बाढ़ जो हद बांधनेके लिये लगाई जाय ।

हरेणुक (सं० पु०) १ कलाय, उड़द । २ हृच्चनक, बड़ा चना । ३ पर्पटक, पित्तपापड़ा ।

हरेणुका (सं० स्त्री०) १ रेणुका नामक गंधद्रव्य । २ मटर ।

हरेवा (हिं० पु०) हरे रंगकी एक चिड़िया । इसकी चोंच काली, पैर पीले और लंबाई १४ या १५ अंगुल होती है । यह युक्त प्रान्त, मध्य भारत और बंगालमें पाई जाती है । यह पेड़की जड़ और रेशोंसे कटोरेके आकारका घोंसला बनाती और दो अंडे देती है । इसका स्वर बड़ा मीठा होता है । इस कारण इसे 'हरी बुलबुल' कहते हैं ।

हरैना (हिं० पु०) १ वह टेढ़ी गावदुम लकड़ी जो हलके लट्ठेके एक छोर पर आड़े बलमें लगी रहती है और जिसमें लोहेका फाल ठोंका रहता है । २ बैलगाड़ीके सामनेकी ओर निकली हुई लकड़ी ।

हरैनी (हिं० स्त्री०) हरैना देखो ।

हरोच्छेद—ब्रह्मनीलतन्त्रोक्त एक प्राचीन तीर्थ ।

हरोना (हिं० पु०) रायपुर जिलेमें होनेवाली एक प्रकारकी अरहर ।

हरोल—हरावल देखो ।

हरौवती—१ पञ्जाबके निकटवर्त्ती सारस्वत या सरस्वती नदी प्रवाहित भूभाग । यह पारस्यराज दारयवुसकी शिलालिपिमें 'हरौवतिस्' नामसे प्रसिद्ध है । २ कोटाराज्यका प्राचीन नाम । कोटा देखो ।

हर्खनाथ झा—विहारवासी एक प्रसिद्ध मैथिल कवि । ये मोदनाथ झा और गोपाल ठाकुरके शिष्य थे । दरभङ्गा जिलेके अन्तर्गत उजाइन ग्राममें सोती या श्रोत्रिय ब्राह्मणकुलमें १८४७ ई०को इनका जन्म हुआ । इन्होंने बनारस कालेजमें विद्योपार्जन कर दरभङ्गा महाराजके सभा-पण्डितका पद प्राप्त किया । इनके रचित मैथिली, संस्कृत और प्राकृत-भाषामें मिश्रित एकसे अधिक प्रबन्ध देखे जाते हैं । प्रबन्धोंमें 'ऊषाहरण' अति प्रसिद्ध है ।

हर्ज (अ० पु०) १ काममें रुकावट, बाधा । २ हानि, नुकसान ।

हर्जल—युक्तप्रदेशके सीतापुर और खेरीवासी जातिविशेष । इन लोगोंके मुखसे सुना जाता है, कि पहले ये लोग अहीर या ग्वाले थे और चित्तौरमें रहते थे । मुसलमानोंने जब चित्तौर पर आक्रमण किया, उस समय इनके पूर्व पुरुष योगी और भिक्षुकके वेशमें अपने देशको छोड़ भाग आये । नाना प्रकारका छद्मवेश धारण करनेके कारण 'हरचोलिया' कहलाते थे । हर्जल हरचोलिया शब्दका ही अपभ्रंश है । फिर किसी किसीका कहना है, कि 'हर' अर्थात् सर्वोका जल ग्रहण करनेके कारण इनका 'हर्जल' नाम पड़ा है । इन लोगोंमें बहराइची, खैरवादी और लखनवी ये तीन दल देखे जाते हैं, ये सभी हिन्दू योगी हैं । भिक्षुकके वेशमें भिक्षावृत्ति ही इनकी उपजीविका है । ये लोग एक प्रकारका गान करते हैं जो 'सरवन' कहलाता है । उन्नाव जिलेमें 'सरवन' नामक एक ग्राम है, उसीसे उक्त नाम पड़ा है । इन लोगोंमें कोई खेतीबारी कर, कोई घास काट कर, कोई मजदूरी कर और कोई भैंस पोस कर उसका घी बेच जीविका चलाते हैं ।

हर्तव्य (सं० त्रि०) हृ-तव्य । हरणयोग्य, दूर करने लायक ।

हर्त्ता (सं० पु०) १ सूर्य । (त्रि०) २ हरणकर्त्ता, दूर करनेवाला । ३ संहारकारक, नाश करनेवाला ।

हर्त्तार (सं० त्रि०) हरण करनेवाला, हर्त्ता ।

हर्दा—१ मध्यप्रदेशके हुसङ्गाबाद जिलेके अधीन एक तहसील या महकमा । यह अक्षा० २१° ५३´ से २२° ३५´ उ० तथा देशा० ७६° ४७´ से ७७° ३१´ पू०के मध्य अवस्थित है । भूपरिमाण १४८३ वर्गमील और जनसंख्या १४३८३६ है । इसमें ३८ गांव लगते हैं ।

२ उक्त तहसीलका सदर और एक नगर । यह अक्षा० २२° २१´ उ० तथा देशा० ७७° ६´ पू० बम्बई-पथके किनारे अवस्थित है । जनसंख्या १६३०० है । मराठोंके अधिकार कालमें यहां एक आमोर या शासनकर्त्ता रहते थे । १८१७ ई०में यहां सरजान माल्कोमने अपनी सेनाको प्रधान छावनी डाली । १८४४ ई०में यहांके असिस्टेन्ट कमिश्नरकी कोशिशसे यहां एक बांध बनाया गया जिससे इस नगरकी और भी उन्नति हुई है । यहां रेलवे स्टेशन, एक 'हाई-स्कूल, एक मिडिल इङ्गलिश स्कूल और तीन अस्पताल हैं जिनमेंसे दोका खर्चा रेलवे कम्पनी देती है ।

हर्दु यागञ्ज—युक्तप्रदेशके अलीगढ़ जिलेका एक प्रसिद्ध नगर। यह अक्षा० २७° ५६´ उ० तथा देशा० ७८° १२ पू० अलीगढ़से ६ मील पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या ६६१६ है। प्रवाद है, कि कृष्णके भाई बलरामने इस नगरको नष्ट कर दिया। यहांका बाजार सुन्दर सुन्दर दूकानोंसे शोभित, पुलिस स्टेशन, डाकघर, अङ्गरेजी स्कूल, एक प्राइमरी और दो कन्या विद्यालय हैं। यहां प्रधानतः नमक, कौड़ी, तख्ते और वासकी आमदनी तथा कपास आदि नाना प्रकारके अनाजोंकी रफ्तनी होती है।

हर्दोई—१ अयोध्याके सीतापुरके अधीनस्थ एक जिला। अक्षा० २६° ५३´ से २७° ४७´ उ० तथा देशा० ७६° ४१´ से ८०° ४६´ पू० गोमती और गङ्गा नदीके मध्यवर्ती एक चौकोन स्थान जोड़ कर यह जिला अवस्थित है। भूपरिमाण २३३१ वर्गमील है। यह जिला एक समतलभूमि है, इसमें सबसे ऊंचा स्थान ४६० फुट ऊंचा है। इस जिलेमें सात नदियां वह चली हैं—गङ्गा, रामगङ्गा, गारा, सुखेता, साइवाइडा तथा गोमती। इनके अलावे बड़े बड़े बहुतसे विल हैं। प्रवाद है, कि महाभारत युद्धके समय बलराम यहां आये थे।

मुसलमानोंने १३वीं सदीमें इस जिलेमें उपनिवेश स्थापन किया। अफगानो और मुगलोंके बीच भारत साम्राज्य ले कर यहां बड़ी ही खूनखराबी हो गई है। अयोध्याप्रदेशके मध्य हर्दोईके अधिवासी सबोंकी अपेक्षा दुर्द्धर्ष हैं। लार्ड डलहौसीके समय यह जिला वृटिश-शासनाधीन हुआ। सिपाहीविद्रोहके बाद यहां शांति रही।

रामलीला उपलक्षमें बिलग्राममें एक बड़ा मेला लगता है। प्रायः ४० हजार आदमी यहां इकट्ठे होते हैं। ज्वरमें इस अञ्चलके बहुत मनुष्य मर जाते हैं, इसके सिवा दूसरी दूसरी व्याधिका भी प्रकोप है। इस जिलेमें १० शहर और १८८८ गांव लगते हैं। जनसंख्या १०९२८३४ है।

२ हर्दोई जिलेका एक महकमा। यह अक्षा० २७° ६´ से २७°३९´ उ० तथा देशा० ७९° ५०´ से ८०° २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ६३५ वर्गमील है। इस महकमेमें २ शहर और ४७० गांव लगते हैं।

३ हर्दोई जिलेका शासनकेन्द्र। करीब १७८० वर्ष पहले ठठेरोंको हरा कर चमार गौड़ोंने यह शहर कायम किया।

हर्दोई—१ रायबरेली जिलेके अंतर्गत दिग्विजयगञ्जके अधीनस्थ परगना। यह पहले भरोंके कब्जेमें था। पीछे जौनपुरके इब्राहिम सार्कीने इन्हें भगा कर यह स्थान अपने कब्जेमें किया।

२ उक्त दिग्विजयगञ्ज तहसीलके अंतर्गत एक शहर। सुलतान इब्राहिमने जब यह परगना जीता, तब उसने यहां एक मिट्टीका दुर्ग बनवाया था।

हर्फ (अ० पु०) हरफ देखो।

हर्वा (अ० पु०) हरवा देखो।

हर्मन् (सं० क्ली०) जृम्भण, जंभाई।

हर्मित (सं० त्रि०) १ क्षिप्त। २ दग्ध। ३ जृम्भित।

हर्मुट (सं० पु०) १ सूर्य। २ कच्छप।

हर्म्य (सं० क्ली०) १ राजभवन, महल। २ बड़ा भारी मकान, हवेली। ३ नरक।

हर्म्यपृष्ठ (सं० पु०) मकानको पाटन या छत।

हर्म्यचर (सं० त्रि०) हर्म्यस्थित। (ऋक् ७।५६।१६)

हर्यक्ष (सं० पु०) १ सिंह। २ कुवेर। ३ पृथुके पुत्र। ४ असुरभेद, हिरण्याक्ष। ५ पिङ्गलनेत्र।

हर्यत (सं० पु०) १ घोटक, घोड़ा। २ अश्वमेधीय अश्व।

हर्यवन (सं० पु०) कृतके पुत्र। (भागवत ६।१७।१७)

हर्यश्व (सं० पु०) १ इन्द्र। २ इन्द्राश्व। ३ इक्ष्वाकुवंशीय राजभेद, दिवोदासके पितामह। ४ दृढाश्वके पुत्र। ५ धृष्टकेतुके एक पुत्रका नाम। ६ पृषदश्वके पुत्र। ७ चक्षुके पुत्र। ८ अनरण्यके पुत्र। ९ दक्षके पुत्रगण।

हर्यश्वचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुः।

हर्यश्वत (सं० पु०) कृतिके पुत्र। (हरिवंश)

हर्यश्वप्रसूत (सं० त्रि०) इन्द्र द्वारा प्रेरित।

हर्यात्मन् (सं० पु०) उत्तम मन्वन्तरका व्यास।

हर्यानन्द (सं० पु०) रामानन्दका एक प्रसिद्ध शिष्य।

हर्र (हिं० स्त्री०) हड़ देखो।

हर्रा (हिं० पु०) बड़ा जातिकी हड़। इसका उपयोग त्रिफलामें होता है और यह रंगाईके काममें आती है।

हर्रे (हिं० स्त्री०) हड़ देखो।

हरैया (हिं० स्त्री०) १ हाथमें पहननेका एक गहना जिसमें हड्के-से सोने या चांदीके दाने पाटमें गुछे रहते हैं। २ माला या कंठेके दोनों छोरोंमें परका चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है।

हर्ष (सं० पु०) १ प्रफुल्लता या भयके कारण रोंगटोंका खड़ा होना। २ प्रफुल्लता, आनन्द, खुशी। ३ धर्मके पुत्रोंमेंसे एक। ४ कृष्णके एक पुत्रका नाम।

हर्ष—एक प्रसिद्ध शब्दशास्त्रविद। इन्होंने द्विरूपकोष, श्लेषार्थपदसंग्रह और कान्तालीयखण्ड नामके संस्कृत ग्रन्थ लिखे। २ गीतगोविन्दटीकाके रचयिता। ३ श्रीहर्ष नामसे प्रसिद्ध हीरके पुत्र। इन्होंने नैषधचरित और खण्डनखण्डखाद्यकी रचना की। नैषधचरितमें अर्णववर्णन, गौड़ोर्वीश-कुलप्रशस्ति, छन्दःप्रशस्ति, नवसाहसाङ्कचरित विजयप्रशस्ति, शिवशक्तिसिद्धि और स्थैर्यविचारण इत्यादि श्रीहर्षरचित और भी बहुतेरे ग्रन्थोंका उल्लेख है।

हर्षक (सं० पु०) १ पर्वतविशेष। २ चित्रगुप्तके एक पुत्रका नाम। ३ मगधके शिशुनागवंशका एक प्राचीन राजा। (त्रि०) ४ आनन्ददायक, हर्ष करनेवाले।

हर्षकर (सं० त्रि०) हर्षजनक, खुश करनेवाला।

हर्षकीर्त्ति (सं० पु०) वैद्यकसारग्रन्थके रचयिता।

हर्षकीर्त्ति—एक प्रसिद्ध जैनपण्डित चन्द्रकीर्त्तिके शिष्य। ये तपागच्छकी नागपुरीकी शाखाके एक प्रधान आचार्य थे। इन्होंने ज्योतिःसार, ज्योतिःसारोद्धार, धातुतरङ्गिणी नामक सारस्वत व्याकरणकी धातुपाठकी टीका, योगचिन्तामणि नामक वैद्यक, शारदीयाख्य नाममाला और श्रुतबोधवृत्तिकी रचना की।

हर्षकीलक (सं० पु०) रतिबन्धविशेष। लक्षण—

"नारीपदद्वयं धृत्वा कान्तस्योरुयुगोपरि।
कटिमान्दोलयेदाशु बन्धोऽयं हर्षकीलकः॥" (स्मरदीपिका)

हर्षकुलगणी—काव्यप्रकाशटीकाकार।

हर्षगणि—एक जैन ज्योतिर्विद्। गणककुमुदकौमुदी नामक करणकुतूहलटीकाके प्रणेता।

हर्षट—जयदेवरचित छन्दःशास्त्रके एक टीकाकार।

हर्षण (सं० क्ली०) १ हर्ष, आनन्द, प्रफुल्लता या भयसे रोंगटोंका खड़ा होना। २ प्रफुल्लित करना या होना। ३ शुक्रधातु। (पु०) ४ विष्कम्भ आदि सत्ताइस योगोंमेंसे चौदहवाँ योग। ५ चक्षुरोगविशेष। इसे शिराहर्ष भी कहते हैं। इसमें रोगीको देखनेकी शक्ति कम हो जाती है। (भावप्र०) ६ श्राद्धविशेष। ७ श्राद्धदेव। ८ कामदेवके पांच बाणोंमेंसे एक। ९ शस्त्रका एक संहार। (त्रि०) १० हर्षणकारक।

हर्षणी (सं० स्त्री०) १ कपिकच्छु, केवांच। २ भङ्ग, भांग सिद्धि।

हर्षणोक्रिया (सं० स्त्री०) सुरापानके लिये हर्षोत्पादक क्रिया।

हर्षदत्त—सुधाविन्दवलोधृत एक प्राचीन कवि। इनके पुत्रने भी बोधविलास नामक एक शैवग्रन्थ लिखा।

हर्षदेव—१ प्रसिद्ध भारत-सम्राट्। हर्षवर्द्धन देखो। २ भगदत्तवंशीय गौड़ङ्ग कलिङ्गके एक प्रबल पराक्रान्त राजा। नेपाल देखो। ३ चन्द्रात्रेयवंशीय एक पराक्रान्त नृपति। ये १०वीं सदीके शेष भागमें विद्यमान थे। चाहमानवंशीय कञ्चुकादेवीके साथ इनका विवाह हुआ। चन्द्रात्रेयवंश देखो। ४ काश्मीरके एक प्रसिद्ध राजा। ११वीं सदीमें ये राजत्व करते थे। काश्मीर देखो। ५ मालवके परमारवंशीय एक राजा। सीयक नामसे प्रसिद्ध थे। ये राजा वैरीसिंहके पुत्र और २य वाक्पतिके राजके पिता थे। परमारवंश देखो।

हर्षधर—केशवीजातक पद्धतिके उदाहरणके रचयिता।

हर्षधारिका (सं० स्त्री०) चौदह प्रकारके तालोंमेंसे एक।

हर्षनाथ शर्म्मन्—एक संस्कृत कवि। इन्होंने मिथिलाधिप लक्ष्मीश्वरसिंहके लिये उषाहरण नामक एक संस्कृत नाटक लिखा।

हर्षनाद (सं० पु०) १ आनन्दध्वनि, हर्ष, खुशी। २ आनन्दसूचक शब्द, आनन्दसूचक ध्वनि।

हर्षनिस्वनी (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी रागिणीका नाम।

हर्षमल्ल (सं० पु०) हर्षदेव। हर्षदेव देखो।

हर्षमित्र (सं० पु०) स्पनके एक राजा।

हर्षयित्नु (सं० पु०) १ पुत्र। (क्ली०) २ स्वर्ण, सोना। (त्रि०) ३ हर्षणशील।

हर्षराम—भक्तिमञ्जरी नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

हर्षवर्द्धन—एक संस्कृत वैयाकरण, श्रीवर्द्धनके पुत्र, लिङ्गानुशासनके रचयिता।

हर्षवर्द्धन—भारतके एक प्रसिद्ध वैश्यसम्राट्। उत्तर भारतमें जो सब प्रबल प्रतापी सम्राट् अपनी कीर्त्तिकहानी भारतके बाहर भी प्रचार कर गये हैं, सम्राट् हर्षवर्द्धन उनमेंसे एक हैं।

छठी सदीके शेष भागमें स्थाण्वीश्वरमें (वर्त्तमान थानेश्वर) प्रभाकरवर्द्धन नामक एक प्रबल प्रतापी राजा थे। उनके दो पुत्र थे, राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन।

प्रभाकरकी मृत्युके बाद राज्यवर्द्धन सिंहासन पर बैठे। कुछ वर्ष राज्य करनेके बाद एक दिन मालवराजके मित्र कर्णसुवर्णके राजा शशाङ्क-देवने राज्यवर्द्धनको निमन्त्रण दिया और उन्हें छिपके मार डाला। अब देश एक तरहसे अराजक हो गया। उन्हें एक पुत्र था सही, पर वह एकदम बच्चा था। राजमन्त्रिगण इस बातका विचार करने लगे, कि राजपुत्रको गद्दी पर बैठाया जाय या उनके भाई हर्षवर्द्धनको। इसके लिये उन लोगोंने हर्षवर्द्धनके सहपाठी और वयोवृद्ध ज्ञातिभ्राता भण्डीसे सलाह ली। भण्डीके हर्षवर्द्धनका पक्ष लेने पर सबोंने उन्हीं को राज्यभार ग्रहण करनेका अनुरोध किया। पर वे किसी तरह राजोपाधि धारण करनेके लिये राजी नहीं हुए। प्रकृतिपुञ्जकी अनुरोध रक्षाके लिये इस समय वे कुमार शिलादित्य' नामसे राजकार्य्य चलाने लगे।

उनका कोई उद्देश चाहे क्यों नहीं रहे, पर इसी भावमें वे प्रायः ५।६ वर्ष राज्य करनेके बाद ६१२ ई०में यथारीति अभिषिक्त हो राजपद पर अधिरूढ़ हुए। ६०६ ई०के आश्विनमासमें उन्होंने पहले पहल राज्यभार ग्रहण किया और एक नया संवत् चलाया। इस संवत्का प्रथम वर्ष ६०६-६०७ ई० है।

सिंहासन पर बैठ कर हर्षवर्द्धनने भ्रातृहन्ताका अनुसरण और विधवा बहनका अनुसन्धान करना ही अपना सर्वप्रथम और प्रधान कर्त्तव्य समझा। बड़े कष्टसे बहनका उद्धार कर हर्षवर्द्धनने कर्णसुवर्णराज विश्वासघातक शशाङ्कके विरुद्ध यात्रा कर दी।

बहनका उद्धार कर लेनेके बाद हर्षवर्द्धन भारतके 'एकच्छत्र सम्राट्' होनेके अभिप्रायसे अपनी विराट् वाहिनी ले कर दिग्विजयको निकले। चीनपरिव्राजक यूएनचुवंगका कहना है, कि प्रथम ५।७ वर्षके मध्य अनेक देश जीतने पर भी वे तृप्त नहीं हुए। क्षण भरके लिये भी उनकी सेना युद्धवेशका परित्याग नहीं कर सकती थी। इस प्रकार थोड़े ही समयके मध्य उन्होंने समस्त युक्तप्रदेश पर अपनी गोटी जमा ली थी। कहते हैं, कि बंगालमें भी कितने भागोंमें इनका अधिकार फैल गया था। राज्य जीतनेकी इनकी स्पृहा इतनी बढ़ चली थी, कि क्रमशः सैन्यबल बढाते बढ़ाते अन्तमें इन्होंने ६०००० गजारोही और १००००० अश्वारोहीका संग्रह कर लिया था। युद्धमें जो कोई राजा इनके विरुद्ध खड़े हुए हैं, उन्हींको अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी है, परन्तु एक युद्धमें इन्हें भी एक महावीरने परास्त किया था। उन महावीरका नाम २य पुलिकेशी था। वे चालुक्यवंशीय थे और उत्तर-भारतमें हर्षवर्द्धनका जैसा प्रभुत्व था, दक्षिण-भारतमें उनका भी वैसा ही था। किसी किसीका कहना है, उक्त दोनों महावीरोंके बीच ६२० ई०में युद्ध छिड़ा था।

बलभी देशमें द्वितीय ध्रुवसेन (ध्रुवभट) उस समय भी स्वाधीन भावसे राज्य करते थे। राज्यलोलुप हर्षवर्द्धनने उन्हें आक्रमण कर पराजित किया। ध्रुवसेनने निरुपाय हो भरोचके अधिपतिकी शरण ली। इसके बाद विजेताके साथ उनकी जो संधि हुई, तदनुसार वे हर्षवर्द्धनकी कन्याका पाणिग्रहण कर उनकी महासामन्तकी तरह बलभीदेशमें प्रतिष्ठित हुए थे। इसके बाद हर्षवर्द्धनने धीरे धीरे आनन्दपुर और सौराष्ट्रके दक्षिण भी अपना आधिपत्य फैलाया। ६४३ ई०में कलिङ्ग (गञ्जामराज्य)-को जीत कर उनकी जिगीषा परितृप्त हुई। इनके युद्धमें कुछ विशेषता थी, वह यह कि पराजित राजाओंको वे अकसर राज्यच्युत नहीं करते थे। अपने छोटे छोटे राज्योंके भीतरी शासनकार्य्यमें उन्हें यथेष्ट स्वाधीनता दी जाती थी।

सम्राट् स्वयं साहित्यसेवी थे और साहित्यिकका सम्मान भी करते थे, इस कारण बहुतेरे विद्वानोंने आ कर उनकी सभाको अलङ्कृत किया था। उन विद्वानोंमें श्रीहर्ष-चरितके प्रणेता बाणभट्ट ही प्रधान थे।

हर्षवर्द्धन हिन्दू, बौद्ध और जैन सभी धर्मों पर सम

दर्शी थे। विभिन्न सम्प्रदायके लिये राजकोषसे खुले हाथ अर्थदान करते थे। अनेक हिन्दूदेवमन्दिर और बौद्ध धर्माश्रमकी प्रतिष्ठा कर सम्राट्ने प्रकृतिपुञ्जके धर्माचरणका पथ सुगम कर दिया था। राजासे ले कर प्रजा तक सभी अपने अपने धर्ममतका संगठन और पोषण कर सकते थे। राजपरिवारमें ही भिन्न भिन्न धर्मके आदमी रहते थे। सम्राट्के पिता प्रभाकरवर्द्धन एक निष्ठावान् सूर्योपासक थे। पुष्यभूति नामक उनके एक पूर्व पुरुष परम शैव थे। वे किसी अन्य देवदेवीको नहीं मानते थे। राजा राज्यवर्द्धन और उनकी वहिन राज्यश्रीका बौद्धधर्मके प्रति प्रगाढ़ अनुराग था। सम्राट् हर्षवर्द्धन अपनी प्रथम अवस्थामें परम शैव थे, परन्तु अन्तिम अवस्थामें बौद्धमतके प्रति ही इनका अधिक झुकाव था। यूएनचुवंगके साथ पहले पहल वङ्गदेशमें इनकी भेंट हुई। परिव्राजककी वक्तृता और उपदेश सुन कर ये इतने मुग्ध हो गये थे, कि अपनी राजधानी कान्यकुब्जमें उन्हें वक्तृता सुनानेके लिये निमन्त्रण किया और आप भी वङ्गदेशसे गंगाके दक्षिणी किनारे होते ६० दिनोंमें कान्यकुब्ज आये।

६४४ ई०के माघ या फाल्गुनके महीनेमें एक विराट् सभा बुलाई गई। इस सभामें कामरूपराज, वलभीराज तथा और भी अठारह करद राजा, चार हजार बौद्धभिक्षु और प्रायः तीन हजार निष्ठावान् जैन और ब्राह्मण-पण्डित कान्यकुब्ज पधारे थे। गंगाके किनारे एक विशाल बौद्ध मठ प्रतिष्ठित किया गया। सम्राट्ने वहां एक सौ फुट ऊंचा एक प्रकोष्ठ और उसमें अपनी ऊंचाईके समान एक स्वर्णनिर्मित बुद्धमूर्त्ति स्थापन की। प्रति दिन तीन फुट उच्च एक दूसरी सुवर्णमय बुद्धमूर्त्तिको ले कर बीस राजा तथा तीन सौ हाथीकी एक शोभायात्रा निकाल कर नगर प्रदक्षिण कराया जाता था। मूर्त्तिके ऊपरका चंदवा स्वयं सम्राट् पकड़े रहते थे। इस समय वे अपने शक्रवेशमें और परम सुहृद कामरूप राज भास्कर वर्मा ब्रह्माके वेशमें सज्जित होते थे। उनके हाथमें भी एक श्वेत चामर शोभा पाता था।

पहले सभी धर्मोंके प्रति समदर्शी होने पर भी अन्तमें वे बौद्धधर्मके प्रति ऐकान्तिक अनुरक्ति दिखला कर कट्टर ब्राह्मणोंके विरागभाजन हुए थे। ऊपर कहे गये अनुष्ठान कुछ दिनों तक दिखलाये जानेके बाद एक दिन अकस्मात् पूर्वोक्त बौद्धमठमें आग लग गई। सम्राट्ने स्वयं उपस्थित रह कर वह आग बुझवाई थी। पीछे इस उपलक्षमें बनाये गये एक स्तूपके ऊपर खड़े हो कर जब वे सामन्तराजाओंके साथ उस भस्मावशिष्ट मठको देख कर नीचे उतर रहे थे, उसी समय एक आदमीने उन्मत्तकी तरह आ कर उन पर आक्रमण किया। परंतु छुरा भोंकनेके पहले ही वह पकड़ा गया। हर्षवर्द्धनने उसे ऐसा दुःसाहस करनेका कारण पूछा। पीछे उन्हें मालूम हुआ, कि कुछ कट्टर ब्राह्मणने उसे यह कार्य्य करनेके लिये उत्साहित किया था। उसी समय ५०० सौ विख्यात ब्राह्मणोंको पकड़वा कर मगाया गया। उन लोगोंको भी यह बात तथा मठमें आग लगानेकी बात स्वीकार करनी पड़ी। अनन्तर राजाके हुकुमसे षड़्यन्त्रकारी प्रधान नेताओंको प्राणदण्ड और पांच सौ ब्राह्मणको निर्वासन मिला।

कान्यकुब्जमें महासमारोहके साथ धर्मसभाका कार्य्य शेष कर हर्षवर्द्धन यूएनचुवंगको ले कर प्रयागतीर्थ आये। इस समय इन्होंने चीन परिव्राजकसे कहा था, कि उनके पूर्वपुरुषोंकी चलाई गई प्रथाके अनुसार गत तीस वर्षोंसे वे भी पांच पांच वर्षमें गङ्गायमुनाके सङ्गम पर एक दरबार लगाते आ रहे हैं और उस उपलक्षमें सञ्चित अर्थ दीन दुःखियोंके बीच बांटते हैं। उपस्थित छठा वार्षिक अधिवेशन ६४४ ई०में हुआ था। इनके पहले इन्होंने इस प्रकारकी और भी पांच महासभा की थी।

प्रयागकी वर्त्तमान सभामें सामन्तराज उपस्थित हुए थे। अनाथ, आतुर, दीनदरिद्र कितने आ कर उपस्थित हुए थे, उसकी सीमा नहीं। इनके अलावे उत्तर भारतके असंख्य ब्राह्मण तथा सभी धर्मके बहुतेरे साधु संन्यासी समादरमें निमंत्रण कर लिवाये गये थे। इस उपलक्षमें जो सब धर्मानुष्ठान हुए थे, उनसे जाना जाता है, कि उस समय समाजमें हिन्दू और बौद्ध धर्मके एक अपूर्व समन्वयसाधनकी चेष्टा होती थी। उत्सव, दान और पूजादि ७५ दिन तक हुई थी। पहले दिन

नदी से कतमें एक पर्णकुटीर बना कर उसमें एक बुद्ध-मूर्त्ति प्रतिष्ठाके बाद ही अगणित बहुमूल्य वस्त्रालङ्कार आदि वितरण हुए थे। दूसरे दिन सूर्याको तथा तीसरे दिन शिवकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित हुई। किंतु वितरणका परिमाण आधा कम गया। चौथे दिन दश हजार बौद्ध श्रमणको बहु धनरत्नादि दान कर परितुष्ट किया गया। इनमें से प्रत्येकको प्रचुर परिमाणमें उत्तम उत्तम खाद्य, पानीय, पुष्प तथा गन्धद्रव्यके सिवा एक सौ सुवर्णमुद्रा, एक मुक्ता और एक उत्कृष्ट गात्रावरण मिला था। परवर्त्ती बोस दिन ब्राह्मणोंका अभ्यर्थनामें बीते थे। इसके बाद दश दिन तक जैन और अन्यान्य सम्प्रदायभुक्त लोगोंको अर्थादि बांटा गया। अनन्तर दश दिन दूर देशसे आये हुए भिक्षुकोंको अर्थसे परितुष्ट कर एक मास तक अनाथ, आतुर और दरिद्रोंको नाना प्रकारको मदद पहुंचाई गई।

हर्षवर्द्धन इस विराट दानसागरसे स्वेच्छासे सर्वस्वान्त हुए थे। प्रयागमें सम्राट्ने इस भांति धनरत्न और वस्त्रालङ्कार बांटा था, कि भगिनी राज्यश्रीसे एक पुराना पहननेका कपड़ा ले कर उन्हें दशदिक्पाल और बुद्धोंकी अर्चना करनी पड़ी थी। बौद्ध धर्मकी अहिंसानीतिमें उन्होंने बहुत कुछ अद्भुतभावसे प्रतिष्ठित करनेकी कोशिश की थी। युद्धमें मनुष्योंका नाश करनेकी तनिक भी इच्छा न थी किन्तु जिससे उनके राज्यमें जीवहिंसा न हो, जिससे कोई मांस भक्षण न करे, इसके लिये उन्होंने कठोर आदेश प्रचार किया था।

चीन सम्राट्के साथ उनकी बड़ी दोस्ती थी। ६४१ ई०में उन्होंने एक ब्राह्मणको चीनराजके निकट दूत बना कर भेजा था। ६४३ ई०में यह ब्राह्मण अपना देश लौटा। उसके साथ एक दल चीनपरिव्राजक भी यहां आया था। ये लोग ६४५ ई० तक इस देशके नाना स्थानोंमें पर्यटन कर अपने देश लौट गये।

इसमें सन्देह नहीं, कि देशमें उस समय जनतामें शिक्षाका विशेष आदर था। ब्राह्मण पण्डित तथा बौद्ध-भिक्षु और मठाधिवासिगण साधारणतः ही बड़े शिक्षित थे। राजकोषसे भी शिक्षितोंका यथेष्ट सम्मान तथा साहाय्य होता था। हर्षवर्द्धन केवल जो साहित्यसेवियों और विद्यानुरागियोंको मुक्तहस्तसे अर्थ वितरण कर परितृप्त होते थे, सो नहीं, वे खुद भी प्रसिद्ध कवि थे। उनका हस्ताक्षर बड़ा ही सुन्दर होता था। नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका आदि संस्कृत नाटक उनके ही लिखे हैं। इन सब नाटकोंकी भाषा सरल और विशुद्ध, छन्दः सुललित तथा भाव सरल और महान् है।

यूएनचुवंग तथा उनके जीवनी-लेखकके लिखित विवरणसे पता चलता है, कि ६४७ या ६४८ ई०में हर्षवर्द्धनकी मृत्यु हुई। उनकी मृत्युके बाद कामभूति अरुणाश्व या अर्जुन नामक उनके एक मंत्री सिंहासन अधिकार कर बैठे।

हर्षसम्पुट (सं० पु०) रतिबन्धविशेष। लक्षण—

"नार्याश्चोरुयुगं धृत्वा कराभ्यां पीडयेत् पुनः।
कामयेन्निर्भयः कामी बन्धोऽयं हर्षसम्पुटः॥"

(स्मरदीपिका)

हर्षाना (हिं० क्रि०) हर्षित करना, आनन्दित करना।

हर्षिणी (सं० स्त्री०) हर्षिन्-ङीष्। १ विजया। (राजनि०) २ हृष्टा।

हर्षित (सं० त्रि०) आनन्दित, खुश।

हर्षीका (सं० स्त्री०) वैदिक छन्दोभेद।

हर्षुक (सं० त्रि०) हर्षक, हर्षकारी।

हर्षुल (सं० पु०) १ मृग, हिरन। २ प्रियतम, प्रेमी। ३ एक बुद्धका नाम। (त्रि०) ४ हर्षित रहनेवाला, खुशमिजाज।

हर्षुला (सं० स्त्री०) वह कन्या जिसको ठुड्डीमें बाल या दाढ़ी हो। शास्त्रोंमें ऐसी कन्या विवाहके अयोग्य कही गई है।

हर्षोत्फुल्ल (सं० त्रि०) खुशीसे फूला हुआ।

हर्द—१ उन्नाव जिलेकी उन्नाव तहसीलके अन्तर्गत एक परगना। लोधवंश पहले हर्द परगनेके मालिक थे। पीछे कान्यकुब्जाधिपति जयचांदने चतुर्भुज नामक एक कायस्थको यहां भेजा। इस परगनेमें अभी ११७ ग्राम लगते हैं।

२ अयोध्याके उन्नाव जिलेके अन्तर्गत हर्द तहसील का शासनकेन्द्र या शहर। आधुनिक हर्द शहर ११वीं सदीमें महम्मद गजनीने प्रतिष्ठित किया था। उक्त कायस्थवंशके बहुतेरोंने दिल्ली तथा लखनऊकी राज-

सभामें ऊंचा ओहदा पाया था। सप्ताहमें दो बार यहां हाट लगती है। यहां एक छोटा गवर्नमेंट स्कूल है।

हल् (सं० पु०) शुद्ध व्यञ्जन जिसमें स्वर न मिला हो। लिखनेमें अक्षरके नीचे एक छोटी तिरछी लकीर बना देनेसे यह सूचित होता है। जैसे.—'पृथक्' शब्दमें 'क' के नीचे ्।

हल—एक विख्यात वैदिक पण्डित। ये आस्तरके पुत्र और सूर्यदत्तके पौत्र, वाजसनेयी सर्वानुक्रमणिका भाष्य और उसके पद्धतिकार थे।

हल (सं० क्लो०) १ वह यन्त्र या औजार जिससे बीज बोनेके लिये जमीन जोती जाती है, वह औजार जिसे खेतमें सब जगह फिरा कर जमीनको खोदने और भुरभुरी करते हैं। इसे सोर या लाङ्गल भी कहते हैं। यह खेतीका मुख्य औजार है और सात आठ हाथ लम्बे लट्ठेके रूपमें होता है जिसके एक छोर पर दो ढाई हाथका लकड़ीका टेढ़ा टुकड़ा आड़े बलमें जड़ा रहता है, इसी आड़ी लकड़ीमें जमीन खोदनेवाला लोहेका फाल ठोंका रहता है। लम्बे लट्ठेको 'हरिस' या 'हर्सा' और आड़ी जड़ी लकड़ीको 'हरैना' कहते हैं।

हलसे जमीन जोत कर बीज बोया जाता है। शास्त्रमें लिखा है, कि हलमें बैल जोतना होता है। आज कल दो बैलसे हल जोता जाता है, लेकिन इस प्रकार जोतना शास्त्रमें निषेध किया है।

हलमें आठ बैल जोतना चाहिये, लेकिन जो जीविकाके लिये जमीन जोतते हैं, वे छः बैलसे जमीन जोत सकते हैं। चार बैल द्वारा हल जोतनेसे नृशंस और दो बैल द्वारा हल जोतनेसे ब्रह्महत्याका पातक होता है। गाय द्वारा हल नहीं जोतना चाहिये। शास्त्रमें लिखा है, कि ज्योतिषोक्त शुभ दिन देख कर पहले हल जोतना चाहिये। शुभ दिन जैसे,—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्या, मघा, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, उत्तरफाल्गुनी, हस्ता, स्वाति, मूला, श्रवणा और रेवती श्रेष्ठ, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र मध्यम, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, अश्लेषा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वभाद्रपद, पूर्वफाल्गुनी और चित्रा ये सब नक्षत्र निषिद्ध हैं। रिक्ता, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, पूर्णिमा और अमावस्या भिन्न तिथिमें मिथुन, कन्या, धनु, मीन, वृश्चिक और वृषलग्नमें शनि और मङ्गल भिन्न वारमें, शुभयोगकरणमें तथा चन्द्रतारा विशुद्ध होनेसे हल जोतना चाहिए। कृषि देखो।

(पु०) २ एक अस्त्रका नाम। ३ जमीन नापनेका लट्ठा। ४ उत्तरके एक देशका नाम। ५ पैरकी एक रेखा या चिह्न।

हल (अ० पु०) १ गणित करना, हिसाब लगाना। २ किसी कठिन बातका निर्णय, किसी समस्याका समाधान या उत्तर निकालना।

हलक (अ० पु०) गलेकी नली, कण्ठ।

हलककुद्द (सं० पु०) हलकी वह लकड़ी जो लट्ठेके एक छोर पर आड़े बलमें जड़ी रहती है, हरैना।

हलकम्प (हिं० पु०) १ भारी हल्ला या उथल पुथल, हड़कम्प। २ चारों ओर फैली हुई घबराहट, लोगोंके बीच फैला हुआ आवेग या आकुलता।

हलका (हिं० वि०) १ जो तौलमें भारी न हो, जिसमें वजन या गुरुत्व न हो। २ जो गाढ़ा न हो, पतला। ३ जो गहरा न हो, उथला। ४ जो करनेमें सहज हो, आसान। ५ कम अच्छा, घटिया। ६ जिसमें कुछ भरा न हो, खाली, छूंछा। ७ जो मोटा न हो, झीना, महीन। ८ जिसके ऊपर किसी कार्य या कर्त्तव्यका भार न हो, जिसे किसी बातके करनेकी फिक्र न रह गई हो। ९ जो कठोर या प्रचण्ड न हो, जो जोरसे न पड़ा या बैठा हो। १० प्रफुल्ल, ताजा। ११ जो उपजाऊ न हो, जो उर्वरा न हो। १२ जो गहरा या चटकीला न हो, जो शोख न हो। १३ जो अधिक न हो, कम, थोड़ा। १४ जिसमें गम्भीरता या बड़प्पन न हो, ओछा। १५ जो जोरका न हो, मन्द थोड़ा थोड़ा।

हलका (अ० पु०) १ वृत्त, मंडल, गोलाई। २ परिधि, घेरा। ३ हाथियोंका झुंड। ४ लोहेका बंद जो पहियेके घेरेमें जड़ा रहता है, हाल। ५ गलेका पट्टा। ६ मण्डली, झुंड, दल। ७ कई गावों या कसबोंका समूह जो किसी कामके लिये नियत हो।

हलकाना (हिं० क्रि०) १ किसी वस्तुमें भरे हुए पानीको हिलाना या हिला कर बुलाना। २ हिलोरा देना।

हलकापन (हिं० पु०) १ हलके होनेका भाव, भारका अभाव। २ तुच्छ बुद्धि, ओछापन। ३ अप्रतिष्ठा, हेठी, इज्जतकी कमी।

हलकारी (हिं० स्त्री०) १ कपड़ा रंगनेके पहले उसमें फिट-करी, हड़ या तेजाब आदिका पुट देना जिसमें रंग पक्का हो। २ हलदीके योगसे बने हुए रंगके द्वारा कपड़ोंके किनारे परकी छपाई।

हलगोलक (सं० पु०) एक प्रकारका कीड़ा।

हलग्राहिन् (सं० त्रि०) १ हल पकड़नेवाला, हलकी मूंठ पकड़ कर खेत जोतनेवाला। हल पकड़ना बहुत स्थानोंमें ब्राह्मणों और क्षत्रियोंके लिये निषिद्ध समझा जाता है। (पु०) २ खेती करनेवाला, किसान।

हलह्नो (सं० स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।

हलचल (हिं० स्त्री०) १ लोगोंके बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़ धूप, शोर गुल आदि, खलबली। २ उपद्रव, दंगा। ३ कम्प, हिलना डोलना। (त्रि०) ४ कम्पायमान, इधर उधर हिलता डोलता हुआ, डगमगाता हुआ।

हलजीवी (सं० त्रि०) हल चला कर अर्थात् खेती करके निर्वाह करनेवाला किसान।

हलजुता (हिं० पु०) १ तुच्छ कृषक, मामूली किसान। २ गंवार।

हलड़ा (हिं० पु०) हलरा देखो।

हलदण्ड (सं० पु०) हलका लंबा लट्ठा, हरिस।

हलद हात (हिं० स्त्री०) विवाहके तीन या पांच दिन पहले वर और कन्याके शरीरमें हलदी और तेल लगानेकी रस्म, हलदी चढ़ाना।

हलदा—चटगांव जिलेकी एक नदी। यह कर्णफुली नदीकी एक प्रधान शाखा है। इस नदीमें खूब मछली होती है।

हलदी (हिं० स्त्री०) १ डेढ़ दो हाथ ऊंचा एक पौधा। २ उक्त पौधेकी गांठ जो मसाले आदिके रूपमें व्यवहारमें लाई जाती है। विशेष विवरण हरिद्रा शब्दमें देखो।

हलदी—दक्षिण बङ्गालकी एक नदी। यह अक्षा० २२° १८' ३०" उ० तथा देशा० ८७° १३' १५" पू०के निकटसे निकल कर अक्षा० २२° ०' ३०" उ० तथा देशा० ८८° ६' १५' पू० हुगली नदीमें गिरी है। यह उपनदी कसाई तथा टेङ्गराखाली नदीके संयोगसे निकली है। साल भर टेंगराखाली तक इसमें स्टीमर आ जा सकता है।

हलदीघाट—मेवारका एक प्रसिद्ध गिरिपथ। प्रतापसिंह देखो।

हलदू (हिं० पु०) एक बहुत बड़ा और ऊंचा पेड़। इसकी डेढ़ अंगुल मोटी, सफेद और खुरदुरी छाल होती है। भीतरकी लकड़ी पीली और बहुत मजबूत होती है। यह पेड़ तर जगहोंमें—जैसे, हिमालयकी तलहटीमें होती है। लकड़ी बहुत वजनी होती है तथा साफ करनेसे चमकती है। इसमें खेती और सजावटके सामान जैसे, मेज, कुरसी, आलमारी, कंघियां, व दूकके कुंदे इत्यादि बनते हैं। इस पेड़को करम भी कहते हैं।

हलधर (सं० पु०) १ हलको धारण करनेवाला। २ बलराम जो हल नामक अस्त्र धारण करते थे।

हलधर—१ सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन संस्कृत कवि। २ अभिधानरत्नमाला नामक संस्कृत वैद्यकाभिधानके प्रणेता।

हलन्त (सं० पु०) हलन्ते यस्य। शुद्ध व्यञ्जन जिसके उच्चारणमें स्वर न मिला हो। हल् देखो। व्यञ्जन दो रूपोंमें आते हैं—स्वर और हलन्त।

हलपाणि (सं० पु०) बलराम जो हाथमें हल लिये रहते थे।

हलफ़ (अ० पु०) वह बात जो ईश्वरको साक्षी मान कर कही जाय, किसी पवित्र वस्तुकी शपथ, कसम।

हलफ़नामा (फा० पु०) वह कागज जिस पर कोई बात ईश्वरको साक्षी मान कर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलफ़ा (हिं० पु०) हिलोर, लहर, तरंग।

हलब (हिं० पु०) फारसकी ओरके एक देशका नाम जहाका शीशा प्रसिद्ध था।

हलबी (हिं० वि०) हलब देशका (शीशा), बढ़िया (शीशा)।

हलब्बी (हिं० वि०) हलबी देखो।

हलभली (हिं० स्त्री०) त्वरा, जल्दी, हड़बड़ी।

हलभूति (सं० स्त्री०) १ कृषिकर्म। (पु०) २ शंकराचार्यका एक नाम।

हलभृत् (सं० पु०) बलदेव।

हलभूति (सं० पु०) १ मुनिविशेष, उपवर्ष। (त्रिका०) २ कृषिकर्म।

हलमरिया (हिं० स्त्री०) जहाजके नीचेका खाना।

हलमिल लैला (हिं० पु०) एक प्रकारका बड़ा पेड़। यह सिंहल या सीलोनमें होता है और इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेतीके सामान आदि बनानेके काममें आती है। महिसूरमें भी यह पेड़ पाया जाता है।

हलमुख (सं० पु०) हलका फाल।

हलमुखी (सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें क्रमसे रगण, नगण और सगण आते हैं।

हलराक्ष (सं० क्ली०) आहुल्य नामक क्षुप।

हलराना (हिं० क्रि०) हाथ पर ले कर इधर उधर हिलाना डुलाना, प्यारसे हाथ पर झुलाना।

हलरिया—बम्बई विभागके दक्षिण काठियावाड़के अन्तर्गत एक छोटी जमींदारी। चार छोटे छोटे गांवमें उनके फिर तीन स्वतन्त्र जमींदार हैं। ये लोग बरोदाके अधीनस्थ जमींदार हैं।

हलवत (हिं० स्त्री०) वर्षमें पहले पहल खेतमें हल ले जानेकी रीति या कृत्य, हरोती।

हलवा (अ० पु०) १ एक प्रकारका मीठा भोजन या मिठाई। यह मैदे या सूजीको घीमें भून कर उसे शरबत या चाशनीमें पकानेसे बनती है। इसे मोहनभोग भी कहते हैं। २ गीली और मुलायम चीज।

हलवाइन (हिं० स्त्री०) १ हलवाईकी स्त्री। २ वह स्त्री जो मिठाई बनानेका काम करती है।

हलवाई (अ० पु०) मिठाई बनाने और बेचनेवाला, मिठाई बना कर या बेच कर जीविका चलानेवाला। इन लोगोंमें शैशव विवाह प्रचलित है। किन्तु अर्थाभाववशतः ये लोग उपयुक्त उम्रमें कन्याका विवाह नहीं कर सकें, तो उनकी निंदा नहीं होती। विहारकी दूसरी दूसरी जातिके मध्य जैसी विवाहप्रथा प्रचलित है, हलवाइयोंकी विवाह-प्रथा भी वैसी ही है। इनमें विधवाविवाह प्रचलित है। सगाई विधिके अनुसार विधवा फिर विवाह कर सकती है। मृत पतिकी सन्तानका लालन-पालन करनेके लिये विधवा साधारणतः देवरसे विवाह करती है। यो एक श्रेणीमें नियम है, कि स्त्री यदि असती हो अथवा यदि स्त्री पर कुव्यवहार करे, तो दोनों ही पंचा यतकी मदद ले विवाहयुक्ति भङ्ग कर सकते हैं। बादमें स्त्री या पुरुषका दूसरा विवाह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

इन लोगोंमें आधेसे अधिक ही वैष्णव हैं। अन्यान्य सम्प्रदायके लोग भी इनमें विरल नहीं हैं। धर्म कर्म और अनेक प्रकारके उत्सवोंमें हलवाई लोग मैथिल ब्राह्मण-की मदद लेते हैं। इनमेंसे बहुतेरे ही पाचपीर सम्प्रदाय-के हैं। ये लोग शव दाह करते हैं। मृत्युके बाद ३१ दिनमें श्राद्ध होता है।

समाजमें हलवाइयोंका स्थान सम्मानजनक है। ब्राह्मण लोग इनके हाथका जल ग्रहण करते हैं। इनमेंसे बहुत थोड़े लोग खेती-बारी करते हैं। ये लोग तरह तरहके फलका अचार बनाते हैं।

हलवाह (सं० पु०) वह जो दूसरेके यहां हल जोतनेका काम करता हो, हल चलानेका काम करनेवाला मजदूर या नौकर। हल चलानेके लिये गांवोंमें चमार आदि नीच जातिके लोग ही रखे जाते हैं।

हलवाहा (सं० स्त्री०) जमीनकी एक नाप जिसका व्यवहार प्राचीन कालमें होता था।

हलहल (सं० पु०) १ हल चलाना। २ किसी वस्तुमें भरे जलके हिलने डोलनेका शब्द।

हलहलाना (हिं० क्रि०) कंपित होना, काँपना, थरथराना।

हला (सं० स्त्री०) १ सखी। २ मद्य, शराब। ३ पृथिवी। ४ जल। ५ लाङ्गलिका वृक्ष। ६ नाट्योक्तिमें सखी-के प्रति आह्वान।

हलाक (अ० वि०) वध किया हुआ, मारा हुआ।

हलाकत (अ० स्त्री०) १ हत्या, वध। २ मृत्यु, विनाश।

हलाकान (हिं० वि०) परेशान, हैरान, तंग।

हलाकानी (हिं० स्त्री०) तंग होनेकी क्रिया या भाव, परेशानी, हैरानी।

हलाकी (अ० वि०) हलाक करनेवाला, मार डालनेवाला मारू।

हलाकू (अ० वि०) हलाक करनेवाला।

हलाकू खाँ—एलखाँ नामसे भी ये कभी कभी परिचित हुए थे। ये तुली खांके पुत्र थे। तुली खा फिर तातारके चेङ्गीज खांके पौत्र थे। हलाकू खां अपने भाई मानजू खा-के राजत्वकालमें १२५३ ई०में पारस्यविजयके लिये एक

सैन्यवाहिनीके साथ वहां भेजे गये थे। उन्होंने हसन सम्भर वंशधरोंको हरा कर उन्हें जिलकादा दुर्गसे भगा दिया तथा पारस्यमें मुगलवंशकी प्रतिष्ठा की। वे इसके बाद कनष्टान्टिनोपलमें अभियानका संकल्प करते थे, किन्तु उनके मन्त्री मसीरुद्दीन तुसीने उन्हें बोगदादके विरुद्ध यात्रा करनेको कहा। उन्होंने बोगदादमें जा कर घेरा डाल दिया। कुछ दिन घेरा डालनेके बाद बोगदाद हलाकू खांके कब्जेमें आया। उस समय हलाकूने खलीफा मुस्तासिम बिलहा तथा उनके पुत्र और उनके साथ साथ वहांके आठ लाख अधिवासियोंको यमपुर भेजा। अनन्तर वे तातार जा कर अपने मृत भाईके शून्य सिंहासन पर अधिकार करेंगे, उन्होंने ऐसा स्थिर किया था, किन्तु उनके एक सेनापति मामलुकोंके राजा सैफुद्दीनके हाथसे पराजित होनेसे हलाकू खांको अपना पूर्व संकल्प छोड़ना पड़ा। उन्होंने पारस्यशासनकी सुव्यवस्था कर आजरबैजानमें अपनी राजधानी कायम की और सारा जीवन वहीं बिताया। १२६५ ई०में उनकी मृत्यु हुई। मशहूर पारस्य कवि सादी उनके समसामयिक थे। हलाकूके पुत्र इब्राहिम पिताकी मृत्युके बाद पारस्यके राजा हुए।

हलाभ (सं० पु०) वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रंगके रोएं बराबर कुछ दूर तक चले गये हों।

हलामला (हिं० पु०) १ निर्णय, निबटारा। २ परिणाम, फल।

हलाभियोग (सं० पु०) वर्षमें पहले पहल खेतमें हल ले जानेकी रीति या कृत्य, हलवत, हरौती।

हलायुध (सं० पु०) बलदेव, बलराम।

हलायुध—इस नामके बहुतेरे संस्कृत ग्रंथकारोंके नाम मिलते हैं। जैसे—१ सदुक्तिकर्णामृतधृत प्राचीन कवि। २ कविरहस्य नामक ग्रंथकार। ये दाक्षिणात्यके राष्ट्रकूट वंशीय कृष्णराज (९६०-९८० ई०में)-के समासद थे। संस्कृत ग्रंथमें प्रकाशित धातुओंका जितने प्रकारसे प्रयोग किया जा सकता है, उसे ये सुललित श्लोकबन्धमें दिखा गये हैं। ३ महाराज लक्ष्मणसेनके प्रधान धर्माधिकारी। इनके पिताका नाम धनञ्जय तथा भाईका ईशान और पशुपति था। कई भाई ही महाशास्त्रवित् पण्डित थे। हलायुध बहुत-से ग्रन्थोंकी रचना कर गये हैं। उनमेंसे द्विजनयन, पण्डितसर्वस्व, ब्राह्मणसर्वस्व, मीमांसासर्वस्व, वैष्णवसर्वस्व, शैवसर्वस्व और श्राद्धपद्धतिटीका मिलती है। ब्राह्मणसर्वस्व ही उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। यह ग्रन्थ पढ़नेसे मालूम होता है, कि इन्होंने पहले राजपण्डितका पद और पीछे प्रधान धर्माधिकारका पद पाया। किसी किसीके मतसे इन्होंने ही मत्स्यसूक्तमहातंत्रकी रचना की।

४ सन्ध्यासूत्रप्रवचनके रचयिता। ५ अभिधानरत्नमालाके रचयिता। ६ ज्योतिःसारके प्रणेता। ७ मिताक्षराके एक टीकाकार। ८ पिङ्गलच्छन्दटीकाकार। ये १०वीं सदीमें विद्यमान थे। ९ गौड़वासी पुरुषोत्तमके पुत्र। इन्होंने १४७५ ई०में पुराणसर्वस्व लिखा।

हलाल (अ० वि०) १ जो धर्मशास्त्रके अनुसार उचित हो, जो शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तकके अनुकूल हो। २ वह पशु जिसका मांस खानेकी मुसलमानी धर्मपुस्तकमें आज्ञा हो, वह जानवर जिसके खानेका निषेध न हो।

हलालखोर (फा० पु०) १ हलालकी कमाई खानेवाला, मिहनत करके जीविका करनेवाला। २ मैला या कूड़ा करकट साफ करनेका काम करनेवाला, मेहतर, भंगी।

हलालखोरी (फा० स्त्री०) १ हलालखोरकी स्त्री। २ पाखाना उठाने या कूड़ा करकट साफ करनेवाली स्त्री। ३ हलालखोरका काम। ४ हलालखोरका भाव या धर्म।

हलाह (सं० पु०) चित्रिताश्व, नानावर्णविशिष्ट अश्व।

हलाहल (सं० पु०) १ वह प्रचण्ड विष जो समुद्र-मन्थनके समय निकला था और जिसके प्रभावसे सारे देवता और असुर व्याकुल हो गये थे। इसे अन्तमें शिवजीने धारण किया था। २ महाविष, भारी जहर। (चरक चि० २५अ०) ३ एक जहरीला पौधा। इसके पत्ते ताड़के-से, कुछ नीलापन लिये तथा फल गायके थनके आकारके सफेद सफेद लिखे गये हैं। इसका कंद या जड़की गांठें भी गायके थनके आकारकी कही गई है। लिखा है, कि इसके आसपास घास या पेड़ पौधे नहीं उगते और मनुष्य केवल इसकी महकसे मर जाता है। ४ ब्रह्मा, सर्प। ५ अञ्जना। ६ बुद्धविशेष।

हलि (सं० पु०) बड़ा हल।

हलिक्ष्ण (सं० पु०) एक प्रकारका सिंह।

हलिन् (सं० पु०) १ बलदेव । २ कृषिकर्मकर्त्ता, किसान ।
हलिनी (सं० स्त्री०) १ लाङ्गलिकी वृक्ष । २ हल समूह ।
हलिप्रिय (सं० पु०) कदम्बवृक्ष ।
हलिप्रिया (सं० स्त्री०) १ मदिरा, मद्य । २ ताड़ी ।
हलिमा (सं० स्त्री०) स्कन्दमातृभेद । (भारत वनप०)
हलिराम शर्म्मन्—कामरूपयात्रापद्धतिकार ।
हली (सं० स्त्री०) कलिकारीवृक्ष ।
हलीम (सं० पु०) चेतकी ।
हलीम (हिं० पु०) मटरके डंठल जो वम्बईकी ओर काट कर चौपायोंको खिलाये जाते हैं ।
हलीम (अ० वि०) १ सीधा, शान्त । (पु०) २ एक प्रकार का खाना जो मुहर्रममें बनता है ।
हलीमक (सं० पु०) पाण्डु रोगका एक भेद । यह वात पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न कहा गया है । इसमें रोगीके चमड़ेका रङ्ग कुछ हरापन, कालापन या धूमिलपन लिये पीला हो जाता है । उसे तन्द्रा, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, अरुचि और भ्रान्ति तथा उसके अङ्गमें पीड़ा रहती है ।
हलीयाल—१ बम्बई देशके दक्षिण कनाड़ा जिलेका एक महकमा । भू परिमाण ६८० वर्गमील है । इस महकमेमें एक शहर और २१५ गांव लगते हैं । यह महकमा उच्च नीच मालभूमि है । काली नदी तथा उसकी सभी उपनदियां इसके बीच हो कर बह चली हैं ।

२ उक्त महकमेका शहर और शासनकेन्द्र ।

हलीशा (सं० स्त्री०) नाव खेनेका छोटा डंडा जिसका एक जोड़ा ले कर एक हो आदमी नाव चला सकता है, चप्पू ।
हलुवा (अ० पु०) हलवा देखो ।
हलुहार (सं० पु०) वह घोड़ा जिसके अण्डकोश काले हों और जिसके माथे पर दाग हो ।
हलेबिद—महिसुरके हसन जिलेका एक गांव । यह अक्षा० १३° २० उ० तथा देशा० ७६° २ पू०के बीच पड़ता है । यहां पूर्वकालमें होयसल वल्लालवंशकी राजधानी द्वारसमुद्र अथवा द्वारावतीपुर था । १२वीं सदीमें वीर सोमेश्वरने इसका फिर निर्माण किया । हिन्दू शिल्पके श्रेष्ठ दृष्टान्तस्वरूप दो शिव मंदिर सम्भवतः इन्होंने ही बनवाये थे । उनमें होयसलेश्वरका मंदिर ही बड़ा है । होयसलेश्वर मूर्त्ति आसनसे २५ फुट ऊंची है । प्राचीनकालमें भारतीय चित्र सौन्दर्यका चरमोत्कर्ष नाना प्रकारके कारुकार्य द्वारा शोभित है ।

यहां वल्लाल राजाओंने ९५०से ले कर १३१० ई० तक राज्य किया था, पीछे अलाउद्दीनके सेनापति काफूरके हाथ लूटा गया । अन्तमें इस मुहम्मदने इसे ध्वस कर दिया । यहां प्रकाण्ड जैनमन्दिरका भग्नावशेष पड़ा है । वस्तुतः आधुनिक नगण्य गण्डग्राम हलेबिद पुराकालमें एक प्रबल पराक्रान्त वल्लालवंशियोंकी समृद्धिशाली राजधानी थी ।

हलेसा (सं० पु०) हलीशा देखो ।
हलोरना (हिं० क्रि०) १ पानीमें हाथ डाल कर उसे हिलाना डुलाना, जलको हाथके आघातसे तरंगित करना । २ मथना । ३ अनाज फटकना । ४ दोनों हाथोंसे या बहुत अधिक मानमें किसी पदार्थका विशेषतः द्रव्यका संग्रह करना ।
हल्का (हिं० वि०) हलका देखो ।
हल्द (हिं० स्त्री०) हलद देखो ।
हल्दहात (हिं० स्त्री०) विवाहके तीन या पांच दिन पहले वर और कन्याके शरीरमें हल्दी लगानेकी रीति, हरदी चढ़ाना ।
हल्दी (हिं० स्त्री०) हरिद्रा देखो ।
हल्य (सं० त्रि०) १ हल सम्बन्धी । २ कर्षित, जोता हुआ । (पु०) ३ हलका कर्ण । ४ वैरूप्य ।
हल्या (सं० स्त्री०) हलोंका समूह ।
हल्ल (सं० पु०) एक भारतीय नृपति । (तारनाथ)
हल्लक (सं० क्ली०) लाल कमल ।
हल्लन (सं० पु०) १ करवट बदलना । २ इधरसे उधर हिलना डोलना ।
हल्ला (हिं० पु०) १ एक या अधिक मनुष्योंका ऊंचे स्वरसे बोलना, चिल्लाहट, शोरगुल । २ लड़ाईके समयकी ललकार, धावेके समय किया हुआ शोर, हांक । ३ सेनाका वेगसे किया हुआ आक्रमण, धावा, हमला ।
हल्लार—गुजरातके काठियावाडके अन्तर्गत एक पश्चिमी विभाग । यह अक्षा० २२° ४४´से २२° ५५´ उ० तथा देशा० ६६° ४८´से ७१° २´ पू०के मध्य अवस्थित है ।

झाड़ेजा हाल राजपूतोंके नामसे इसका हालवाड़ और हल्लार नाम पड़ा है। यह विभाग बहुतेरे सामन्तराजों-के मध्य विभक्त है। यह कच्छोपसागर, ओखमण्डल, बड़ा पहाड़ तथा अरब सागर वेष्टित एक समतल क्षेत्र है।

हल्लीष (सं० क्ली०) १ मण्डल बांध कर होनेवाला एक प्रकारका नाच जिसमें एक पुरुषके आदेश पर कई स्त्रियां नाचती हैं। (त्रिका०) (पु०) २ नाट्यशास्त्रमें अठारह उप-रूपकोंमेंसे एक। इसमें एक ही अंक होता है और नृत्य-की प्रधानता रहती है। इसमें एक पुरुष मात्र और सात आठ या दश स्त्रियां पात्री होती हैं। संस्कृत केलिरैव-तक आदि ग्रन्थ इस श्रेणीके अन्तर्गत हैं।

हल्लीषक (सं० क्ली०) स्त्रियोंका गोल हो कर नाचना।

हव (सं० पु०) १ किसी देवताके निमित्त अग्निमें दी हुई आहुति, बलि। २ अग्नि, आग। ३ आह्वान। ४ अध्वर।

हवङ्ग (सं० पु०) कांसेके बरतनमें दही मिला हुआ अन्न खाना।

हवन (सं० क्ली०) हु-ल्युट्। १ किसी देवताके निमित्त मंत्र पढ़ कर घी, जौ, तिल आदि अग्निमें डालनेका कृत्य, होम। २ अग्नि, आग। ३ अग्निकुण्ड। ४ अग्निमें आहुति देनेका यज्ञपात्र, हवन करनेका चमचा।

हवनश्रुत (सं० त्रि०) आह्वानका श्रोता।

हवनायुस् (सं० पु०) हवनमेवायुर्यस्य। अग्नि, आग।

हवनी (सं० स्त्री०) होमकुण्ड। (त्रिका०)

हवनीय (सं० त्रि०) हु-अनीयर्। १ जो हवनके योग्य हो या जिसे आहुतिके रूपमें अग्निमें डालना हो। (पु०) २ वह पदार्थ जो हवन करनेके समय अग्निमें डाला जाता है।

हवलदार (फा० पु०) १ बादशाही जमानेका वह अफ-सर जो राजकरको ठीक ठीक वसूली और फसलकी निगरानीके लिये तैनात रहता था। २ फौजमें वह सबसे छोटा अफसर जिसके मातहत थोड़े-से सिपाही रहते हैं।

हववत् (सं० त्रि०) १ हवविशिष्ट। २ होमयुक्त। ३ यज्ञ-विशिष्ट। ४ आह्वायुक्त।

हवस् (सं० क्ली०) आह्वानसाधन स्तोत्र।

हवस (अ० स्त्री०) १ लालसा, कामना, चाह। २ तृष्णा।

हवा (अ० स्त्री०) १ वह सूक्ष्म प्रवाह रूप पदार्थ जो भू-मण्डलको चारों ओरसे घेरे हुए है और जो प्राणियोंके जीवनके लिये सबसे अधिक आवश्यक है, वायु, पवन। २ भूत, प्रेत। ३ व्यापारियों या महाजनोंमें धाक, बड़प्पन या उत्तम व्यवहारका विश्वास, साख। ४ किसी बातकी सनक, धुन। ५ अच्छा नाम, प्रसिद्धि, ख्याति।

हवाई (अ० वि०) १ वायु-सम्बन्धी, हवाका। २ हवामें चलनेवाला। ३ बिना जड़का, जिसमें सत्यका आधार न हो। (स्त्री०) ४ हवामें कुछ दूर तक बड़े झोंकसे जा कर बुझ जानेवाली एक प्रकारकी आतशबाजी, बान, आसमानी।

हवागीर (फा० पु०) आतशबाजीके बान बनानेवाला।

हवाचक्की (हिं० स्त्री०) आटा पीसनेकी वह चक्की जो हवाके जोरसे चलती हो।

हवादार (फा० वि०) १ जिसमें हवा आती जाती हो, जिसमें हवा आने जानेके लिये काफी छेद, खिड़कियां या दरवाजे हों। (पु०) २ वह हलका तख्त जिस पर बैठा कर बादशाहको महल या किलेके भीतर एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

हवान (अ० पु०) एक प्रकारकी छोटी तोप जो जहाजों पर रहती है, कोठी तोप।

हवाना (हिं० पु०) तमाकूका एक भेद। अमेरिकाके हवाना नामक स्थानका तंबाकू।

हवाल (अ० पु०) १ हाल, दशा। २ गति, परिणाम। ३ संवाद, समाचार।

हवालदार (फा० पु०) हवलदार देखो।

हवाला (अ० पु०) १ किसी बातकी पुष्टिके लिये किसीके वचन या किसी घटनाकी ओर संकेत, प्रमाणका उल्लेख। २ उदाहरण, मिसाल, नजीर। ३ अधिकार या कब्जा, सुपुर्दगी।

हवालात (अ० स्त्री०) १ पहरेके भीतर रखे जानेकी क्रिया या भाव, नजरबन्दी। २ अभियुक्तकी वह साधारण कैद जो मुकदमेके फैसलेके पहले उसे भागनेसे रोकनेके लिये दी जाती है, हाजत। ३ वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

हवास (अ० पु०) १ इन्द्रियां। २ संवेदन। ३ संज्ञा, चेतना, होश।

हवित्री (सं० स्त्री०) हवन कुण्ड।

हविध्र (सं० पु०) मनुके एक पुत्रका नाम। (हरिवं०)

हविरद् (सं० त्रि०) भक्षणयोग्य हविर्भोक्ता, हविर्भोजनकारी। (ऋक् १०।१५।१०) 'हविरदः भक्षणयोग्यस्य हविषोत्तरः।' (सायण)

हविरद्य (सं० क्ली०) हविर्भक्षण या भक्षणयोग्य हविः। "देवा इदस्य हविरद्य" (ऋक् १।१६३।६) 'हविरद्यं हविषोऽदनं भक्षणं, स्वार्थिको यत्। अदनयोग्यं हविर्वा।' (सायण)

हविरन्तरण (सं० क्ली०) यज्ञीय घृतका अन्तरकरण।

हविरशन (सं० त्रि०) हविरशनं भक्षणं यस्य। १ हविर्भोक्ता, हविर्भोजनकारी। (पु०) २ अग्नि, आग। (क्ली०) ३ हविर्भोजन।

हविराहुति (सं० स्त्री०) घृताहुति।

हविरुच्छिष्ट (सं० क्ली०) होमावशेष।

हविर्गन्धा (सं० स्त्री०) हविषो गन्धो यस्याः। शमी।

हविर्गृह (सं० क्ली०) हविषो गृह। होमगृह, वह घर जिसमें होम हो। पर्याय—हविर्गेह, होत्रीय। (हेम)

हविर्ग्रहणी (सं० स्त्री०) यज्ञीय घृतपात्र।

हविर्द (सं० त्रि०) हविर्दाता। "जनाय मित्रावरुणा हविर्दे च" (ऋक् १५४।३) 'हविर्दे हविषो दात्रे आतो मनिन् इति विच् मस्य आतो धातोरित्याकारलोपः' (सायण)

हविर्दान (सं० क्ली०) हविषो दानं। यज्ञमें घृतादिकी आहुति। मनुमें लिखा है, कि अग्नि, सोम और यम इन्हें आगे विधिवत् हविर्दानसे प्रीत कर पीछे अन्नादि द्वारा पितरोंको तृप्त करना चाहिए अर्थात् देवयज्ञ कर पितृयज्ञ करना होता है।

"अग्नेः सोमयमाभ्याञ्च कृत्वाप्यायनमादितः।
हविर्दानेन विधिवत् पश्चात् सन्तर्पयेत् पितॄन्॥"
(मनु ३।२११)

हविर्धान (सं० पु०) १ ऋग्वेदके १०वें मण्डलके ११वें-१५वें सूक्तद्रष्टा ऋषि। २ अन्तर्धानके पुत्र। (भाग० ४।२४।५) ३ सोमवाहनका शकट। ४ व्रीहि धान्य या पेषक। ५ सामभेद। ६ यज्ञीय पात्रभेद।

हविर्धानिन् (सं० त्रि०) हविर्धान-इनि। हविर्धानयुक्त।

हविर्धानी (सं० स्त्री०) १ सुरभि या कामधेनु। २ हविर्धानकी स्त्री।

हविर्धामन् (सं० पु०) अन्तर्धानके पुत्र।

हविर्भाग (सं० पु०) यज्ञीय हविका भाग।

हविर्भाज् (सं० त्रि०) हविर्पात्रयुक्त।

हविर्भुज् (सं० त्रि०) १ अग्नि, आग। २ देवता, हविर्भोक्ता। (पु०) ३ शिव।

हविर्भू (सं० स्त्री०) १ हवनकी भूमि। २ कर्दमकी पुत्री जो पुलस्त्यकी पत्नी थी।

हविर्मथि (सं० त्रि०) हविर्मन्थनकारी।

हविर्मन्थ (सं० पु०) गणियारी वृक्ष। (रत्नमाला)

हविर्यज्ञ (सं० पु०) हविद्वारा अनुष्ठित यज्ञ। गौतमके मतसे अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, दर्श और पौर्णमास, चातुर्मास्य, आग्रयणेष्टि, निरूढ़पशुबन्ध और सौत्रामणि ये सब हविर्यज्ञ हैं।

हविर्यज्ञर्त्विक् (सं० पु०) हविर्यज्ञकारी ऋत्विक्। आत्वायनर्थात सूत्रमें ब्रह्मा, होता, अध्वर्यु, मैत्रावरुण और आग्नीध्र ये सब हविर्यज्ञर्त्विक् कहलाते हैं।

हविर्वर्ण (सं० पु०) आग्नीध्रके पुत्रका नाम।

हविर्वह् (सं० त्रि०) हविर्वाहनकारी।

हविर्हुति (सं० स्त्री०) घृताहुति।

हविःश्रवस् (सं० पु०) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम।

हविष्करण (सं० क्ली०) हविर्दान।

हविष्कृत (सं० त्रि०) १ यज्ञमें हविर्दाता यजमान। (ऋक् १।१६६।२) २ यज्ञ। (ऋक् १०।९१।११)

हविष्ठ (सं० पु०) दानवभेद।

हविष्पङ्क्ति (सं० स्त्री०) हविःश्रेणी, दधि, धान्य, सक्तु, पुरोडाश और पयस्या आदि।

हविष्पति (सं० पु०) यजमान। (ऋक् १।१२।८)

हविष्पा (सं० त्रि०) हविःपानकर्त्ता।

हविष्पात्र (सं० पु०) वह पात्र जिसमें घृतादि यज्ञाय हविः रखी जाती हो।

हविष्मत् (सं० त्रि०) १ हवियुक्त, हवन करनेवाला। (ऋक् १।१२।६) (पु०) २ अङ्गिराके एक पुत्रका नाम। ३ छठे मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक। ४ पितरोंका एक गण।

हविष्य (सं० त्रि०) १ हवन करने योग्य। २ जिसको आहुति दी जानेवाली हो। (क्ली०) ३ वह वस्तु जो किसी देवताके निमित्त अग्निमें डाली जाय, वलि, हवि।

शास्त्रमें लिखा है, कि व्रतादिके पूर्व दिन तथा वैशाख, कार्त्तिक और माघ मास आदिमें हविष्य करना होता है। स्मृतिमें शुभ्रवर्ण असिद्ध हैमन्तिक धान्य, मूग, जौ, तिल, कलाय, कङ्गु अर्थात् कगनी धान, नेवार वास्तूकशाक, हेलञ्चा, षष्टिक धान्य, काल शाक, मूलक तथा केमुकको छोड अन्यान्य मूल द्रव्य, लवणके मध्य सैन्धव और करकच लवण, गायका दही और गायका घी, जिसका सार अर्थात् मक्खन नहीं निकला है वैसा दूध, कटहल, आवला, हड, पीपल, जोरा, नागरंग, इमली, केला, लवली, गुड छोड इक्षुविकार अर्थात् चीनी बतासा आदि तथा अतैलपक्व द्रव्य हविष्यान्न कहलाता है। हविष्य करनेमें उक्त द्रव्य भोजन करना चाहिये। केवल हैमन्तिक धान्य ही हविष्यमें प्रशस्त है। कङ्गु और नेवार धान्यसे भी हविष्य हो सकता है। इसके अलावे और सभी प्रकारके धान्य ही निषिद्ध हैं। भुनी हुई उडद और मूंग हविष्यमें व्यवहार न करे। कच्ची दाल पका कर हविष्यमें व्यवहार करना होता है। भैंसके दूध, दही और घीका हविष्यमें व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह बडा निषिद्ध है। गायका दूध, दही और घी प्रशस्त है। हविष्यके समय तेलमें पकी हुई चीज खाना तथा तेल लगाना निषिद्ध है। असमर्थ होने पर तेल भले ही लगा सकते हैं, पर भी तेलमें पकी हुई चीज कभी भी नहीं खा सकते। हविष्यमें दो बार भोजन निषिद्ध है। दिन या रातमें एक बार भोजन करे, दिनमें भोजन करनेसे रातमें भोजन करना मना है। हविष्यमें दिनमें भोजन करना ही उत्तम है। लेकिन नक्तव्रत सम्बन्धमें भी हविष्य कर सकते हैं। यव और व्रीहि इन दो द्रव्यों द्वारा ही हविष्य करने कहा है, किन्तु इन दोनोंमें यव ही श्रेष्ठ है। किन्तु हविष्यमें माष, कोद्रव और गौरादि सब प्रकारसे परित्याग करे।

हविष्यमें कासेके वरतनमें भोजन, मछली, मांस, मसूर, चना, कोरदूषक और परान्न विशेष निषिद्ध है। हविष्य दिनमें ब्रह्मचर्य अवलम्बन करना होता है। इस दिन झूठ बोलना, स्त्रीके साथ सङ्गम करना, द्यूतक्रीड़ा करना, दिनमें सोना आदि निषिद्ध है। महाहविष्यमें नमक खाना भी मना है।

हविष्पन्द (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।

हविष्यान्न (सं० क्ली०) वह अन्न या आहार जो यज्ञके समय किया जाय, खानेको पवित्र वस्तुएं।

हविस् (सं० क्ली०) १ हवनीय द्रव्य, घी। २ जल। (पु०) ३ विष्णु। ४ शिव।

हवीन (हिं० पु०) लकडियोंका बना हुआ एक यन्त्र जिसमें लंगर डालनेके समय जहाजकी रस्सियां बांधी या लपेटी जाती हैं।

हवीतन् (सं० क्ली०) आह्वान करना, पुकारना।

हवुषा (सं० स्त्री०) १ स्वनामख्यात फल। कलिङ्ग—हौवेर। इस फलकी गंध मछलीके समान होती है। गुण—कटु, तिक्त, उष्ण, गुरु, श्लेष्मा और वलासरोग नाशक, प्रदर, उदरी, विवन्ध, शूल, गुल्म और अर्शरोगनाशक। (राजनि०) २ शुष्क आम्रमुकुल, सूखी आमकी कली।

हवुषाद्यघृत (सं० क्ली०) गुल्मरोगकी एक घृतौषध।

हवेली (अ० स्त्री०) १ प्रासाद, पक्का बडा मकान। २ पत्नी, जोरू।

हव्य (सं० क्ली०) हवनकी सामग्री, वह वस्तु जिसको किसी देवताके अर्थ अग्निमें आहुति दी जाय। जैसे—घी, जौ, तिल आदि। देवताओंके अर्थ जो सामग्री हवन की जाती है, वह हव्य और पितरोंको जो अर्पित की जाती है, वह कव्य कहलाती है।

हव्यजुष्टि (सं० स्त्री०) हविःसेवा। (ऋक् १।१५४।७)

हव्यदाति (सं० त्रि०) १ देवताओंको हविर्दान करनेवाला। (ऋक् ३।२।८) (स्त्री०) २ हविर्दान। (ऋक् ५।५१।२)

हव्यप (सं० पु०) ऋषिविशेष। (हरिवंश)

हव्यपाक (सं० पु०) होमके लिये दुग्धघृतादिमिश्रित सिद्ध अन्न, चरु।

हव्यभुज् (सं० पु०) अग्नि, आग।

हव्ययोनि (सं० पु०) देवता।

हव्यलेहिन् (सं० त्रि०) १ यज्ञीय घृतलेहनकारी। (पु०) २ अग्नि आग।

हव्यवह (सं० पु०) हव्यवाह, अग्नि।
हव्यवाट् (सं० पु०) अग्निदेवता।
हव्यवाह (सं० पु०) १ अग्नि, आग। २ अश्वत्थवृक्ष, पीपल। इसकी लकड़ीकी अरणी बनती है।
हव्यवाहन (सं० पु०) हव्यवाह देखो।
हव्यसूक्ति (सं० स्त्री०) हव्य-सम्बन्धी सुवचन।
हव्यसूद (सं० त्रि०) क्षीरादि हविके उत्पादयिता।
हव्यसूदन (सं० त्रि०) हृदयजिह्वादिरूप हविका पाक हेतु।
हव्याद (सं० त्रि०) अग्नि, हव्यभोक्ता अग्नि।
हव्याद (सं० पु०) हव्यभोक्ता अग्नि।
हव्याशन (सं० पु०) हुताशन, अग्नि।
हव्याशन (सं० पु०) अग्नि। (हेम)

हषाम—अवदुल मालिकके पुत्र तथा उमैयावंशके दशवें खलीफा। ७२४ ई०में याजिदकी मृत्युके बाद इन्होंने खलीफा पद पाया। इन्होंने तुर्किस्थानका खाकान प्रदेश जीता तथा इंशोरीय देश लुईके विरुद्ध युद्ध किया था। प्रायः ६०० ऊंट इनका समर-साज ढोते थे। ये ७४३ ई०में स्वर्गवासी हुए। पीछे इनके भतीजे वालिद खलीफाने अपनाया हथियाया। लैलाके प्रेमिक मजनू इनके ही समसामयिक थे।

हषिम—जहांगीरके राजत्वकालमें प्रसिद्ध बुर्हानपुरके एक विख्यात कवि। ये शेख अहमद फरुकीके शिष्य, दीवान तथा अपरापर कितने फारसी ग्रन्थोंके प्रणेता थे। ये १७वीं सदीमें जीवित थे।

हषिम—अवदुल मनोफके पुत्र, अवदुल मुत्तालिवके पिता, अवदुल्के पितामह तथा मुसलमानधर्मप्रवर्त्तक महापुरुष महम्मदके प्रपितामह। पिताके मरने पर हषिम काबा मन्दिरके प्रधान अध्यक्ष-पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने अपना जातीय सम्मान इतना बढ़ा दिया था, कि दूसरी दूसरी आस-पासकी जाति तथा दलपतिगण उनसे मिलनेके लिये बड़े ही लालायित थे। अरबी लोग उनका इतना सम्मान करते थे, कि उनकी मृत्युके बाद उनके परिवारको जनसाधारण हषिमीय कह कर उल्लेख करते थे। हषिम सीरियाके गज्जा नामक स्थानमें मारे गये। उनकी मृत्युके बाद उनके पुत्र अवदुल मुत्तालिव काबा मन्दिरके अध्यक्ष हुए।

हषिम बिन हाकिम—एक मुसलमान साधु। इन्होंने सीरियाके गज्जा नामक स्थानमें जन्मग्रहण किया। ये मकाना नामसे परिचित थे, खुरासानी भाषामें मकानाका अर्थ अवगुण्ठित महापुरुष है। हषिम काने थे, शिरमें बाल नहीं थे तथा आकृति भी इतनी बेढब थी, कि सर्वाङ्ग वस्त्राच्छादनसे ढक उन्हें आत्म-गोपन करना होता था। ये अपनेको ईश्वर या खुदा कह कर प्रचार करते थे। समरकन्द और बोखारामें हषिमबिन हकीमके अनेक शिष्य हैं। तुर्किस्तानसे एक दल आ कर इनके साथ मिल गया। ट्रान्स अक्सियानाकी करीब एक सौ सुन्दरी औरतें इनकी अनुगामिनी थीं। १६३ हिजरीमें इन्होंने आत्महत्या कर ली।

हशमत (अ० स्त्री०) १ गौरव, बड़ाई। २ वैभव, ऐश्वर्य्य।
हस (सं० पु०) हास्य, हंसी।
हसत् (सं० त्रि०) उसी क्षण हंसनेवाला।
हसन (सं० क्ली०) १ हास्य, हंसना। २ परिहास, दिल्लगी। ३ विनोद। (पु०) ४ स्कन्दके एक अनुचरका नाम।

हसन अवदल (बाबा हसन अवदल)—खुरासानके विख्यात साधु पुरुष। ये सैयद थे। अमस तैमूरके पुत्र, मिर्जा शाहरुखके साथ हसन अवदल भारत पधारे। कन्दहारमें उनकी मृत्यु हुई। सैकड़ों यात्री अभी भी उनकी कब्र देखने आते हैं।

हसन अवदल—रावलपिण्डी जिलेकी आटक तहसीलके अन्तर्गत एक बहुत पुराना गांव। प्राचीन तक्षशिला राजधानीके आस-पासके कुछ समृद्धिशाली शहरोंमें यह गांव है। यह अक्षा० ३३° ४८′ ५५″ उ० तथा देशा० ७२° ४४′ ४१″ पू०के बीच पड़ता है। पञ्जा साहब अथवा बाबावली नामक जो पुष्करिणी आज भी देखी जाती है, सम्भवतः वही यूएनचुवङ्ग-कथित नागराज एलापत्रकी दिग्गी है। यह स्थान ले कर बौद्ध, ब्राह्मण, मुसलमान और सिख आदि नाना धर्म सम्प्रदायके मध्य जनप्रवाद प्रचलित है। इस गांवसे एक मील दूर एक ऊंचे पहाड़ पर पञ्जा साहबका मन्दिर मौजूद है। पहाड़की तराईमें ही उस नामकी पुष्करिणी आज भी देखी जाती है। इस नदीके चारों ओर भग्न मन्दिरका चिह्न है। इस पर्वतसे झरना बाहर हो कर

पुष्करिणीमें आ गिरा है, वहां एक हाथका चिह्न देखा जाता है। सिखोंका कहना है, कि यह उनके गुरु नानक द्वारा अंकित हुआ है। मुगलसम्राटोंके अमलमें इस शहर हो कर मुगल-सम्राट् काश्मीर जाते आते थे। यहां अकबरकी एक बेगमका कब्रिस्तान मौजूद है।

हसन अली महिसुरके टीपू सुलतानके एक सभा कवि। इन्होंने 'भोगवाल और कोकशास्त्र' लिखा संस्कृतसे इन दोनों पुस्तकोंका अनुवाद हिन्दीमें हुआ है। इस पुस्तकका फारसीमें 'लज्जातुन्नसा' नामक एक अनुवाद हुआ है।

हसन आसकरि—अलीवंशीय ग्यारहवें इमाम, हसन अली नकीके बड़े लड़के। ये मदीनेमें ८४६ ई०में पैदा हुए तथा ८७४ ई०में मरे। बोगदादमें इनके पिताकी समाधिके बहुत करीब इनकी लाश दफनाई गई है।

हसन इमाम—महम्मदकी लड़की फतेमा और अलीके बड़े भाई। ६२५ ई०में इन्होंने जन्मग्रहण किया। ६६१ ई०में पिताके मरने पर ये २य इमाम रूपमें खलीफा पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने खलीफाका पद अपनी इच्छासे त्याग कर उसे मुआवरके हाथ सौंप दिया। किंतु कुछ वर्ष बाद मुआवरके लड़के याजिदने हसनकी स्त्रीको जहर दे कर स्वामीकी जान लेनेकी सलाह दी, हसनके मारे जाने पर याजिद उससे विवाह करेगा, इस लोभसे हसनकी स्त्रीने जहर दे कर उसकी जान ले ली। यह शोचनीय घटना ६७० ई०में घटी था। मदीनाकी कब्रिस्तानमें हसनकी लाश दफनाई गई। हसनका चेहरा उसके मातामह महम्मदसे मिलता-जुलता था। कहते हैं, कि जब हसन पैदा हुए, तब महम्मदने उनके मुंहको थूक कर उनका नाम हसन रखा था।

हसनगञ्ज—अयोध्या प्रदेशके उन्नाव जिलान्तर्गत एक गांव। बहुत बड़ा बाजारके कारण यह स्थान मशहूर है। अयोध्याके सूबादार आसफ उद्दौलाके नायब हसन रेजा खांने १८वीं सदीमें यह गांव बसाया।

हसननिजामी—ताजउल मासिर अर्थात् विजयमुकुट नामक पुस्तकके प्रणेता। निशापुरमें इनका जन्म हुआ। उनके इतिहाससे हम लोग दासराज कुतबुद्दीन तथा महम्मद गजनीकी जीवनी जानते हैं। समसुद्दीन् अलतमसके राजत्वप्रसङ्गमें उन्होंने पुस्तकका उपसंहार किया।

हसन बुजुर्ग (सेख हसन या अमीर हसन इलकानी)—अमीर इलकन जलायके पुत्र। ये पारस्यराज सुलतान अर्घुन खांके वंशधर हसन सुलतान आबू सैयदके राजत्वके समय मुगलोंके मध्य एक प्रधान सामन्त थे। इन्होंने अमीर चोवानकी कन्या बोगदाद खातुनसे शादी की थी। किन्तु सुलतान परम सुन्दरी हसनकी पत्नीको हृदयसे प्यार करते थे। हसन बुजुर्गने सुलतानके लिये अपनी पत्नीका परित्याग किया। पीछे उक्त सुलतानकी मृत्युके बाद हसन बुजुर्गने दिलसाद खातुन नामक सुलतानकी एक विधवा बेगमके साथ शादी की तथा बोगदाद जा कर बोगदाद दखल किया। बोगदादके चारों ओर घेर कर एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करना ही उनके जीवनका प्रधान लक्ष्य था। इस उद्देशमें सफल होनेके पहले ही १३५६ ई०में उनकी मृत्यु हो गई।

हसन मीर—लखनऊके एक हिन्दी कवि। उनके पिताका नाम था गुलाम हुसेन जाहिक। उन्होंने बद्रोमुनि और बेनाजिरकी प्रेमवर्णना कर 'मसनवी मीर हसन' नामक एक उपन्यास लिखा। उन्होंने यह पुस्तक नवाब आसफउद्दौलाको उत्सर्ग की। १७८६ ई०में उनकी मृत्यु हुई।

हसनमञ्जरी—दिल्लीके एक पारस्य कवि। किसीके मतसे १३०७ ई०में और किसी किसीके मतसे १३३७ ई०में इन्होंने देहत्याग किया था।

हसन सब्बा—पारस्यमें इस्माइलवंशके प्रवर्त्तक। ये अरबी भाषामें लेख उलजबल (पर्वतराज) नामसे विख्यात थे। हसन सब्बा पहले सुलतान अल्प-अर्सलानके मूषलवाहक थे। आलहमत् दुर्ग कौशलसे हथिया कर धीरे धीरे उसके आस-पासके प्रदेशों पर दखल जमाने लगे। एकके बाद एक इसी प्रकार बहुत दुर्ग उनके हाथमें आ गये। उनके विरुद्ध सुलतानने जो फौज भेजी थी, वह भी निराश हो लौट आई। हसन ११२० ई०में मरे। इस वंशके शेष राजा रुकनुद्दीन हलाकूके हाथसे पराजित और बन्दी हुए थे।

हसन बिन महम्मद—अकबरके समयके एक प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक। उन्होंने 'मुन्तखिब उत तवारिक' नामक एक इतिहास लिखा। १६१० ई०में वे पटनामें दीवान नियुक्त हुए।

हसनी (सं० स्त्री०) अङ्गारधानी ।

हसनीमणि (सं० पु०) अग्नि ।

हसन्तिका (सं० स्त्री०) अंगीठी, गोरसी ।

हसन्ती (सं० स्त्री०) १ अङ्गारधानिका, आग रखनेका बरतन । २ मल्लिकाविशेष । ३ शाकिनीभेद । ४ हास्यकारिणी ।

हसब (अ० अव्य०) अनुसार, मुताबिक ।

हसरत (अ० स्त्री०) रंज, अफसोस ।

हसावर (हिं० पु०) खाकी रंगकी एक बड़ी चिड़िया । इसकी गरदन एक हाथ लंबी और चोंच केलेके फलके समान होती है । इसके बगलके कुछ पर और पैर लाल होते हैं ।

हसिक (सं० त्रि०) हास्यकर्त्ता, दिल्लगी करनेवाला ।

हसिका (सं० स्त्री०) हँसनेकी क्रिया या भाव, हँसी ठट्ठा ।

हसित (सं० क्ली०) १ हास, हँसना । २ उपहास, हँसी ठट्ठा । ३ कामदेवका धनुष । (त्रि०) ४ विकसित, खिला हुआ । ५ जो हँसा गया हो, जिस पर लोग हँसते हों । ६ जो हँसा हो ।

हसिर (सं० पु०) एक प्रकारका चूहा ।

हसीन (अ० वि०) सुन्दर, खूबसूरत ।

हस्कार (सं० पु०) दीप्तिकर ।

हस्त (सं० पु०) १ हाथ । २ हाथीकी सूंड । ३ कुहनीसे ले कर उंगलीके छोर तककी लम्बाई या नाप । यह नाप २४ अङ्गुलकी होती है । ४ संगीत या नृत्यमें हाथ हिला कर भाव बताना । यह सङ्गीतका सातवां भेद कहा गया है और दो प्रकारका होता है—लयाश्रित और भावाश्रित । ५ हाथका लिखा हुआ लेख, लिखावट । ६ एक नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथकासा माना गया है । नक्षत्र देखो । ७ वासुदेवके एक पुत्रका नाम । ८ छन्दका एक चरण । ९ गुच्छा, समूह ।

हस्तक (सं० पु०) १ हाथ । २ सङ्गीतका ताल । ३ हाथसे बजाई हुई ताली । ४ प्राचीन कालका एक बाजा जो हाथमें ले कर बजाया जाता था, करताल ।

हस्तकार्य्य (सं० पु०) १ हाथका काम । २ हस्तकारी ।

हस्तकित (सं० त्रि०) हस्तयुक्त ।

हस्तकोहली (सं० स्त्री०) वर और कन्याकी कलाईमें मङ्गल सूत्र बांधनेकी क्रिया या रीति ।

हस्तकौशल (सं० पु०) किसी काममें हाथ चलानेकी निपुणता, हाथकी सफाई ।

हस्तक्रिया (सं० स्त्री०) १ हाथका काम । २ हस्तकारी । ३ हाथसे इन्द्रिय सञ्चालन, सरका कूटना ।

हस्तक्षेप (सं० पु०) किसी काममें हाथ डालना, किसी होते हुए काममें कुछ कार्रवाई कर बैठना या बात भिड़ाना, दखल देना ।

हस्तग (सं० त्रि०) हस्तगत देखो ।

हस्तगत (सं० त्रि०) लब्ध, हाथमें आया हुआ, हासिल ।

हस्तगिरि (सं० पु०) पर्वतविशेष ।

हस्तग्रह (सं० पु०) १ हस्तग्रहण, हाथ पकड़ना । २ पाणिग्रहण, विवाह ।

हस्तग्राह (सं० पु०) १ हस्तग्रहणकारी, हाथ पकड़नेवाला । २ पाणिग्रहण, विवाह ।

हस्तग्राहक (सं० त्रि०) हस्तग्रहणकारी, हाथ पकड़नेवाला ।

हस्तचापल्य (सं० पु०) हाथकी फुरती, हाथकी सफाई ।

हस्तज्योडि (सं० पु०) स्वनामख्यात महाकन्दशाक, कर ज्योडि । गुण—रसबन्ध और वश्यकारक ।

हस्ततल (सं० पु०) हथेली ।

हस्तताल (सं० पु०) हस्तदत्त ताल, हाथसे ताल देना ।

हस्तत्र (सं० क्ली०) करत्राण, हस्तरक्षक ।

हस्तत्राण (सं० क्ली०) अस्त्रोंके आघातसे रक्षाके लिये हाथमें पहना जानेवाला दस्ताना ।

हस्तदक्षिण (सं० त्रि०) दक्षिणहस्तयुक्त ।

हस्तदीप (सं० पु०) हस्तधृत दीपाधार ।

हस्तधारण (सं० क्ली०) १ हाथ पकड़ना । २ हाथका सहारा देना । ३ वारको हाथ पर रोकना । ४ पाणिग्रहण करना, विवाह करना ।

हस्तपर्ण (सं० पु०) एक प्रकारका ताड़ ।

हस्तपृष्ठ (सं० पु०) हथेलीका पिछला या उलटा भाग ।

हस्तबिम्ब (सं० क्ली०) १ शरीरमें सुगन्धित द्रव्योंका लेपन करना । २ करप्रतिबिम्ब ।

हस्तमणि (सं० पु०) कलाईमें पहननेका रत्न ।

हस्तमैथुन (सं० पु०) हाथके द्वारा इन्द्रियां संचालन, मरका कूटना।

हस्तयत (सं० त्रि०) हस्त द्वारा संहत।

हस्तयोग (सं० पु०) १ हस्ता नक्षत्रके साथ योग। २ हाथके साथ योग, हाथ जोड़ना।

हस्तरेखा (सं० स्त्री०) हथेलीमें पड़ी हुई लकीरें। इन रेखाओंके विचारसे सामुद्रिकमें शुभाशुभ फलका निर्णय होता है।

हस्तरोधिन् (सं० पु०) शिव।

हस्तलक्षण (सं० पु०) १ हथेलीकी रेखाओं द्वारा शुभाशुभ सूचना। २ अथर्ववेदका एक प्रकरण।

हस्तलाघव (सं० पु०) हाथकी फुरती, हाथकी सफाई।

हस्तलिखित (सं० त्रि०) हाथका लिखा हुआ।

हस्तलिपि (सं० स्त्री०) हाथकी लिखावट, लेख।

हस्तवत् (सं० स्त्री०) १ हस्तयुक्त। २ थूलकर।

हस्तवातरक्त (सं० पु०) एक रोग जिसमें हथेलियोंमें छोटी छोटी फुंसियां निकलती हैं और धीरे धीरे सारे शरीरमें फैल जाती हैं।

हस्तवाम (सं० त्रि०) वामहस्तयुक्त।

हस्तवारण (सं० क्लो०) वार या आघातको हाथ पर रोकना।

हस्तविन्यास (सं० पु०) करविन्यास, करस्थापन।

हस्तसिद्धि (सं० स्त्री०) भृति, वेतन, तनखाह।

हस्तसूत्र (सं० क्ली०) सूतका कंगन। इसमें कपड़ेकी पोटली व धी होती है और यह विवाहके समय वर और कन्याकी कलाईमें पहनाया जाता है। विवाहादि मङ्गल कर्ममें नान्दीमुख श्राद्धमें पहले गन्धादि द्वारा अधिवास करना होता है। यथाविधि अधिवास कर तीन सधवा स्त्रियां संस्क्रियमान पुत्र या कन्याका शिर वस्त्रसे ढकतीं तथा सूतेसे घेरती हैं। तीन, पांच या सात बार सूतेसे घेरना होता है। हलदी या केसरसे रंगे हुए सूतेमें दूब बांध कर पुरुष होनेसे दाहिने हाथमें तथा स्त्री होनेसे बायें हाथमें बांध दिया जाता है। संस्कारके दो चार दिन पीछे यह कंगन खोल कर फेंक देना होता है।

हस्ता (सं० स्त्री०) नक्षत्रविशेष, अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रोंमेंसे तेरहवां नक्षत्र। इस नक्षत्रमें पांच तारे हस्ताकारमें सन्निविष्ट हैं। यह नक्षत्र शुभ माना जाता है। इस नक्षत्रमें जन्म होनेसे जातक दाता, यशस्वी, मनस्वी, देवता ब्राह्मणपूजक और नीतिज्ञ होता तथा सभी सम्पद् उसके हाथमें रहती है। (कोष्ठीप्र०)

इस नक्षत्रके अधिष्ठात्री देवता सूर्य हैं। इस नक्षत्रमें जन्म होनेसे जातकको कन्याराशि होती है। नामकरणमें शतपदचक्रानुसार नामकरण करनेसे इस नक्षत्रके चारपादमें चार अक्षर होंगे। शतपदचक्र शब्द देखो। अष्टोत्तरीके मतसे इस नक्षत्रमें जन्म लेनेसे बुधकी दशा होती है।

हस्तामलक (सं० क्ली०) १ हाथमें लिया हुआ आँवला। (पु०) २ वह वस्तु या विषय जिसका अङ्ग प्रत्यङ्ग हाथमें लिये हुए आंवलेके समान अच्छी तरह समझमें आ गया हो, वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो। ३ शङ्कराचार्यके एक प्रसिद्ध शिष्य।

हस्तालिङ्गन (सं० क्ली०) करमर्द्दन।

हस्तावनेजन (सं० क्ली०) हस्तधौत जलविशेष।

हस्तावलम्ब (सं० पु०) करमर्द्दन।

हस्तावाप (सं० पु०) हस्त द्वारा निगडित।

हस्ति (सं० पु०) १ कदलीवृक्ष, केलेका पेड़। २ गज, हाथी। ३ अजमोदा।

हस्तिक (सं० क्ली०) हस्तियोंका समूह।

हस्तिकक्ष (सं० पु०) १ सिंह। २ व्याघ्र, बाघ। ३ कणभ नामक कीट।

हस्तिकक्ष्य (सं० पु०) १ सिंह। २ व्याघ्र, बाघ।

हस्तिकन्द (सं० पु०) एक पौधा जिसका कन्द खाया जाता है, हाथी कन्द। गुण—कटु, उष्ण, कफ, वातामय, त्वग्दोष, श्रम, कुष्ठ, विष और विसर्पनाशक।

हस्तिकरञ्ज (सं० पु०) महाकरञ्ज, बड़ी जातिका करञ्ज या कञ्जा।

हस्तिकर्ण (सं० पु०) १ एरण्डवृक्ष, अंडीका पेड़। २ पलाश, टेसूका पेड़। गुण—अतिशय वृष्य, मेधा, आयु और बलवर्द्धक। गरुडपुराणमें लिखा है, कि हस्तिकर्णका मूल चूर्ण कर पान करनेसे सभी रोग जाते रहते हैं। यह दूधके साथ एकत्र मिला कर सात दिन खानेसे श्रुतिधर हो जाता है। मधु और सर्पिके साथ सेवन करनेसे

आयुकी वृद्धि, सिर्फ मधुके साथ सेवन करनेसे आयु-की वृद्धि, श्रुतिधर और प्रमोदाजनप्रिय, दधिके साथ खानेसे देह वज्रके समान मजबूत, काञ्जीके साथ सेवन करनेसे दिव्यदेह और वलीपलित नाश, त्रिफलाके साथ सेवन करनेसे अन्धा भी आंख पाता है। भैंसके दूधके साथ इसका चूर्ण मस्तक पर लेप देनेसे केश घोर काले तथा पुनः जन्मते हैं। इसका चूर्ण तेलके साथ उद्वर्त्तन करनेसे सभी रोग जाते रहते हैं। बकरीके दूधके साथ इसका चूर्ण मिला कर अञ्जन ६ महीने तक व्यवहार करनेसे दृष्टिशक्ति लाभ होती है।

(गरुडपु० १६७ अ०)

३ कच्चू, कएडा। ४ शिवके गणोंमेंसे एक। ५ गण देवताओंमेंसे एक।

हस्तिकर्णक (सं० पु०) किंशुकभेद, हस्तिकर्ण पलाश।

हस्तिकर्णदल (सं० पु०) पलाशभेद।

हस्तिकर्णपलाश (सं० पु०) हस्तिकर्ण शब्द देखो।

हस्तिकर्णा (सं० स्त्री०) कन्दविशेष, गजकर्णा। गुण—तिक्त-रस, उष्णवीर्य, मधुर, विपाक, वायु, कफ और शीतज्वर-नाशक। इसका कन्द पाण्डु, शोथ, कृमि, प्लीहा गुल्म, आनाह, उदररोगनाशक तथा वनशूरणकन्दकी तरह ग्रहणी और अर्शरोगनाशक जाना जाता है।

हस्तिकर्णिक (सं० क्ली०) १ गजकर्णा। २ कासालुक।

हस्तिकर्णिका (सं० स्त्री०) हठयोगका एक आसन।

हस्तिकर्णी (सं० स्त्री०) हस्तिकर्णा देखो।

हस्तिका (सं० स्त्री०) एक प्राचीन बाजा जिसमें बजानेके लिये तार लगा रहता है।

हस्तिकारवी (सं० स्त्री०) अजमोदा, वनयमानी।

हस्तिकुम्भ (सं० पु०) करिकुम्भ।

हस्तिकृष्णा (सं० स्त्री०) गजपिप्पली।

हस्तिकोल (सं० पु०) राजवदर, बड़ा बेर।

हस्तिकोलि (सं० स्त्री०) वदरीभेद, एक प्रकारका बेर।

हस्तिकोशातकी (सं० स्त्री०) महाकोशातकी, धुन्धुल।

हस्तिगिरि (सं० पु०) काञ्चीदेश, विष्णुकाञ्ची।

हस्तिघोषा (सं० स्त्री०) वृहद्धोषा, महाकोशातकी नामक फलशाकविशेष, बड़ी तरोई। गुण—स्निग्ध, सारक, पित्तानिलनाशक। (मदनविनोद)

हस्तिघोषातकी (सं० स्त्री०) हस्तिघोषा।

हस्तिघ्न (सं० पु०) १ मनुष्य। (त्रि०) २ गजनाशक, हाथीको मारनेवाला।

हस्तिचर्मन् (सं० क्ली०) हाथीका चमड़ा।

हस्तिचारिणी (सं० स्त्री०) महाकरञ्ज।

हस्तिजिह्वा (सं० स्त्री०) १ हाथीकी जीभ। २ दाहिनी आंखकी एक नस।

हस्तिजीविन् (सं० पु०) हस्त्याजीव, वह जो हाथीसे जीविका निर्वाह करते हैं।

हस्तिदन्त (सं० क्ली०) १ मूलक, मूली। (पु०) २ नाग-दन्तक, दीवारमें गड़ी हुई कपड़े आदि टांगनेकी खूंटी। ३ हाथी दांत। हाथी दांतसे बहुत प्रकारका द्रव्य तय्यार होता है। हाथी दांतकी मसी कर श्रेष्ठ रसाञ्जनके साथ प्रलेप देनेसे मानवोंके पाणितलमें भी रोवें निकल आते हैं। गज शब्द देखो।

हस्तिदन्तक (सं० क्ली०) मूलक, मूली।

हस्तिदन्तफला (सं० स्त्री०) एर्वारुक, गोमुक।

हस्तिदन्ती (सं० स्त्री०) १ महेन्द्रवारुणी, हस्तिदन्ती। २ नागदन्ती।

हस्तिद्वयस (सं० त्रि०) हस्ति-परिमाण।

हस्तिन् (सं० पु०) १ हाथी। हाथी चार प्रकारके कहे गये हैं—भद्र, मन्द्र, मृग और मिश्र। गज शब्दमें विशेष विवरण देखो। २ धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। ३ चन्द्र-वंशी राजा सुहोत्रके एक पुत्र जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया था। ४ अजमोदा।

हस्तिन्—डभाला (डहाला) नामक प्रदेशके प्राचीन हिन्दू राजा। ये 'परिव्राजक महाराज' उपाधिसे भूषित तथा ५वीं सदीमें राज्य करते थे।

हस्तिनख (सं० पु०) १ हाथीके नाखून। २ वह बुर्ज या टीला जो गढ़की दीवारके पास उन स्थानों पर बना होता है जहां चढ़ाव होता है।

हस्तिनपुर (सं० क्ली०) हस्तिनापुर। (हेम)

हस्तिनापुर (सं० क्ली०) चन्द्रवंशीय हस्तिनामक राजाका बना हुआ नगर, परीक्षितगढ़। पर्याय—नागाह्व, हस्तिन पुर, हस्तिन, गजाह्वय, गजाह्व, हस्तिनीपुर। (हेम) उत्तर पश्चिमाञ्चलमें मीरट जिलान्तर्गत एक प्राचीन भग्ना-

वशिष्ट शहर। यह शहर अक्षा० २९° ६´ उ० तथा देशा० ७८° ३´ पू०के मध्य अवस्थित है। महाभारतमें इसे पाण्डवोंकी राजधानी कहा है। कुरुक्षेत्र युद्धके बाद भी हस्तिनापुरमें परीक्षितकी राजधानी थी। पीछे कौशाम्बीमें पाण्डवोंकी राजधानी उठा लाई गई। अभी हस्तिनापुरमें सिर्फ कुछ कुटीर रह गये हैं।

हस्तिनाग (सं० पु०) पाट हाथी।

हस्तिनासा (सं० स्त्री०) हाथीकी सूंड।

हस्तिनी (सं० स्त्री०) १ गजपत्नी, मादा हाथी, हथिनी। इसके दूधका गुण—मधुर, वृष्य, गुरु, कषाय, स्निग्ध, स्थैर्यकर, शीतल, चक्षुका, दीप्तिकारक और बलवर्द्धक। इसके दहीका गुण—कषाय, लघु, उष्ण, पक्तिशूलनाशक, वीर्यवर्द्धक, उत्तम बलप्रद। इसके मक्खनका गुण—कषाय, शीतल, लघु, तिक्त, विष्टम्भी, पित्त, कफ और कृमिनाशक, कषाय, तिक्त और अग्निवर्द्धक।

२ कामशास्त्रके अनुसार स्त्रीके चार भेदोंमेंसे सबसे निकृष्ट भेद। इसका शरीर स्थूल, ओंठ और उंगलियां मोटी और आहार तथा कामवासना अन्यप्रकारकी सब स्त्रियोंसे अधिक कही गई है। यह हस्तिनी जातिकी स्त्री अश्वजातिके पुरुषसे परितुष्ट होती है। ३ एक प्रकारका सुगन्धित द्रव्य, हट्टविलासिनी।

हस्तिनीपुर (सं० क्ली०) हस्तिनापुर। (हेम)

हस्तिप (सं० पु०) हस्तिपक, महावत।

हस्तिपक (सं० पु०) गजारोह, महावत, फीलवान।

हस्तिपन (सं० पु०) हस्तिकन्द।

हस्तिपद (सं० क्ली०) १ हाथीका पांव। २ हाथीके पांवका चिह्न। (त्रि०) ३ हस्तिपदयुक्त।

हस्तिपर्णिका (सं० स्त्री०) कोषातकी, तरोई, तुरई।

हस्तिपर्णी (सं० स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी।

हस्तिपाद (सं० पु०) पिण्डालु।

हस्तिपिप्पली (सं० स्त्री०) १ गजपिप्पली, गजपीपल। २ चविका, चई।

हस्तिपृष्ठक (सं० क्ली०) १ हाथीकी पीठ। २ एक प्राचीन नगर जिसके पास कुटिका नामकी नदी बहती थी।

हस्तिप्रमेह (सं० पु०) एक प्रकारका प्रमेह। इसमें मूत्रके साथ हाथीके मदका-सा पदार्थ बिना वेगके तार सा निकलता है और पेशाब ठहर ठहर कर होता है।

हस्तिमद (सं० पु०) हाथीके गण्डसे क्षरित मदजल। गुण—स्निग्ध, तिक्त, केशवर्द्धक तथा अपस्मार, विष, कुष्ठ, कण्डूति, व्रण, दद्रु और विसर्पनाशक।

हस्तिमयूरक (सं० पु०) १ अजमोदा। २ इन्द्रवारुणी।

हस्तिमल्ल (सं० पु०) १ गणेश। २ पातालका एक नाग जिसे शंख भी कहते हैं। ३ ऐरावत। ४ धूलकी वर्षा। ५ भग्न स्तूप। ६ हिमानी।

हस्तिमुख (सं० पु०) १ राक्षसविशेष। (त्रि०) २ हाथीके समान मुखवाला।

हस्तिमूत्र (सं० क्ली०) हाथीका पेशाब। गुण—तिक्तोष्ण, लवण, वातघ्न, वातनाशक, कषाय, शूल, हिक्का और श्वासनाशक।

हस्तिमेह (सं० पु०) प्रमेहरोगविशेष। पित्त बिगड़ जानेसे मेहरोग होता है। इसमें रोगीको मत्त हाथीके समान पेशाब उतरता है।

हस्तिरोधक (सं० पु०) लोध्र, लोध।

हस्तिरोहणक (सं० पु०) महाकरञ्ज।

हस्तिलोध्रक (सं० पु०) लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़।

हस्तिवाह (सं० पु०) १ अंकुश। २ गजवाहक, महावत।

हस्तिवारुणी (सं० स्त्री०) महाकरञ्ज।

हस्तिविषाण (सं० पु०) कदली वृक्ष, केलेका पेड़।

हस्तिविषाणी (सं० स्त्री०) कदली वृक्ष, केलेका पेड़।

हस्तिवैद्यक (सं० क्ली०) हस्तिरोग सम्बन्धी चिकित्सा-ग्रन्थ।

हस्तिशाला (सं० स्त्री०) हाथीके रहनेका घर, फीलखाना।

हस्तिशिक्षा (सं० स्त्री०) गजशिक्षा।

हस्तिशुण्ड (सं० स्त्री०) १ क्षुपविशेष, स्वनामख्यात महाक्षुप, हाथीसुंडा। गुण—कटु, उष्ण और सन्निपात ज्वरनाशक। २ भूम्यामलकी, भुंई आंवला। ३ इन्द्रवारुणीलता। ४ गजशुण्डा। (पु०) ५ कपिकर।

हस्तिश्यामक (सं० पु०) १ शस्यविशेष, काला सांवा। गुण—धातुशोधक, पित्तश्लेष्मनाशक, वायुवर्द्धक और रूक्ष। (राजनि०) २ बाजरा।

हस्तिसूत्र (सं० क्ली०) हाथी चलानेकी विद्या।

हस्तिसोमा (सं० स्त्री०) महाभारत भीष्मपर्वके अनुसार एक नदी।

हस्ती (फा० पु०) अस्तित्व, होनेका भाव।

हस्ते (सं० अव्य) हाथसे, मारफत।

हस्तेकरण (सं० क्ली०) पाणिग्रहण, विवाह।

हस्तेबन्ध (सं० पु०) हस्तबन्ध।

हस्तोदक (सं० क्ली०) हस्तस्थित जल।

हस्त्य (सं० त्रि०) १ हाथसे अभियुक्त सोम। (ऋक् २।१४।६) २ हाथसे दिया हुआ। ३ हाथसे किया हुआ।

हस्त्यशन (सं० पु०) लोबानका पौधा।

हस्त्यजीव (सं० पु०) हस्तिजीवी, वह जो हाथी खरीद बेच कर अपनी जीविका चलाता हो।

हस्त्यध्यक्ष (सं० पु०) गजाध्यक्ष। (मत्स्यपु० १८६ अ०) जो हस्तिशिक्षा विषयमें विशेष पारदर्शी तथा हस्तीके वन्यादि जातिविषयमें विशारद और क्लेशसहिष्णु इन सब गुणोंसे युक्त व्यक्तिको राजा हस्त्यध्यक्ष नियुक्त करें।

हस्त्यायुर्वेद (सं० पु०) गजायुर्वेद, हस्तिचिकित्सा-शास्त्र। पालकाप्यके गजायुर्वेद और भोजराजकृत युक्तिकल्पतरुमें हस्तिचिकित्सा विशेष रूपसे लिखी है।

हस्त्यारोह (सं० पु०) हस्तिपाक, महावत।

हस्त्यालुक (सं० क्ली०) गजालु।

हस्र (सं० त्रि०) मूर्ख।

हस्सन—महिसुरप्रदेशके अष्टग्राम विभागके अधीन एक जिला। यह अक्षा० १२° ३०´ से १३° २२´ ३० तथा देशा० ७५° ३२´ से ७६° ५८´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें कदूर जिला, पूर्वमें तुंकुरु और दक्षिण-पूर्वमें मन्द्राज और दक्षिणमें कुर्ग जिला है।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास आज भी गुप्त है। यहां जैनोंकी बनाई बहुत-सी पत्थरकी मूर्त्तियां मिलती हैं। कहते हैं, कि ईस्वीसन् ४थी सदीमें चन्द्रगुप्तके राजत्व कालमें यहां जैनोंने उपनिवेश स्थापन किया था। इन्द्रबेट्ट शिखर पर बहुत-से पुराने मन्दिरोंका खंडहर देखा जाता है। उसीके निकट गोमतेश्वर नामक एक बड़ी पत्थरकी मूर्त्ति आविष्कृत हुई है। यह मूर्त्ति पर्वत काट कर निकाली गई है। इसकी ऊंचाई ६० फुट है।

बल्लालवंशने ईस्वीसन् १०वींसे १४वीं सदी तक यहां राज्य किया। अलाउद्दीनके सेनापति काफूरने मुसलमानी सेना ले कर इस राज्य पर धावा बोल दिया। बल्लालवंशीय राजा तण्डनूर भाग गये। विजयनगरके राजाओंने पीछे हस्सन जिलेका शासनभार ग्रहण किया। उनके प्रतिनिधिगण 'पलेगार' नामसे यहां शासन करते थे। टीपू सुलतानके मरने पर जब महिसुर राज्य हिन्दू राजाओंके कब्जेमें आया, तब वेङ्कटाद्रि हस्सन जिलेके पलेगार थे। उन्होंने अपनेको स्वाधीन कह कर घोषणा कर दी, किन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद वे युद्धमें खेत रहे। अनन्तर यह जिला महिसुरराज्यके अन्तर्भुक्त हुआ।

इस जिलेमें हिन्दूकी संख्या सबसे ज्यादा है। सैकड़े पीछे ६७ हिन्दू और बाकीमें अधिकांश ही मुसलमान हैं।

हस्सनूर—मन्द्राज विभागमें कोयम्बतुर जिलेके बलिरङ्गम पर्वतमालाका एक घाट या। गिरिपथ अक्षा० ११° ३५´ उ० तथा देशा० ७७° १०´ पू०के मध्य अवस्थित है।

हहर (हिं० स्त्री०) १ थरथराहट, कपकपी। २ भय, डर।

हहरना (हिं० क्रि०) १ काँपना, थरथराना। २ डरके मारे काँप उठना, दहलना, थर्राना। ३ चकित रह जाना, दंग रह जाना। ४ कोई वस्तु बहुत अधिक देख कर दंग होना, अधिकता देख कर चकपकाना। ५ कोई बात अघित देख कर क्षुब्ध होना, डाह करना, सिहाना।

हहराना (हिं० क्रि०) १ काँपना, थरथराना। २ डरके मारे काँपना, दहलना, थर्राना। ३ भयभीत होना, डरना। ४ हहराना देखो। ५ भयभीत करना, दहलाना।

हहल (सं० क्ली०) हलाहल।

हहलना (हिं० क्रि०) हहरना देखो।

हहलाना (हिं० क्रि०) हहराना देखो।

हहा (सं० पु०) हाहा नामक गन्धर्वविशेष।

हहा (हिं० स्त्री०) १ हँसनेका शब्द, ठट्ठा। २ दीनता-सूचक शब्द, गिड़गिड़ानेका शब्द। ३ विनती, चिरौरी, गिड़गिड़ाहट। ४ हाहाकार।

हाँ (हिं० अव्य०) १ स्वीकृति सूचक शब्द, सम्मति-सूचक शब्द, वह शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है, कि हम यह बात करनेको तैयार हैं। २ एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है, कि वह बात जो पूछी जा

रहा है ठीक है। ३ कोई बात स्वीकार न करने पर भी दूसरे रूपमें स्वीकार सूचित करनेवाला शब्द, वह शब्द जिसके द्वारा किसी बातका दूसरे रूपमें या अंशतः माना जाना प्रकट किया जाता है।

हाँक (हिं० स्त्री०) १ किसीको बुलानेके लिये जोरसे निकाला हुआ शब्द, जोरकी पुकार। २ लड़ाईमें धावा या आक्रमण करते समय गर्वसूचक चिल्लाहट, डाँट-डपट, ललकार। ३ बढ़ावेका शब्द, उत्साह दिलानेका शब्द, बढ़ावा। ४ दुहाई, सहायताके लिये की हुई पुकार।

हाँकना (हिं० क्रि०) १ जोरसे पुकारना, चिल्ला कर बुलाना। २ ललकारना, हुंकार करना। ३ खींचनेवाले जानवरको चला कर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ४ मुंहसे बोल कर या चाबुक आदि मार कर जानवरों (घोड़े, बैल आदि)को आगे बढ़ाना, जानवरोंको चलाना। ५ मार कर या बोल कर चौपायोंको भगाना, चौपायोंको किसी स्थानसे हटाना। ६ बढ़ बढ़ कर बोलना, लंबी चौड़ी बातें कहना, सीटना। ७ पंखेसे हवा पहुंचाना, हवा करना। ८ पंखा हिलाना, बीजन डुलाना, झलना।

हाँगर (हिं० पु०) एक प्रकारकी बड़ी मछली।

हागा (हिं० पु०) १ शरीरका बल, बूता, ताकत। २ अत्याचार, जबर्दस्ती, धींगा धींगी।

हागी (हिं० स्त्री०) स्वीकृति, हामी।

हाँडना (हिं० वि०) हाँडनेवाला, व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला।

हाँडी (हिं० पु०) १ मिट्टीका मझोला बरतन जो बटलोहीके आकारका हो, हंडिया। २ इसी प्रकारका शीशेका पात्र जो सजावटके लिये कमरेमें टाँगा जाता है और जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

हाँपना (हिं० क्रि०) हाँफना देखो।

हाँफना (हिं० क्रि०) कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदिके कारण जोर जोरसे और जल्दी जल्दी सांस लेना।

हाँफा (हिं० पु०) हाँफनेको क्रिया या भाव, जल्दी जल्दी चलती हुई सांस।

हाँमेला (हिं० पु०) एक प्रकारकी चिड़िया।

हाँस (सं० वि०) हंस-सम्बन्धी।

हाँसकायन (सं० पु०) हंसकके गोत्रापत्य।

हाँसखाली—नदिया जिलेके अन्तर्गत चूर्णी नदीके बायें किनारे पर अवस्थित एक शहर और थाना। नदिया जिलेमें यह वाणिज्यके लिये विख्यात है तथा अक्षा० २३° २१´ ३०´´ उ० तथा देशा० ८८° ३६´ ३०´ पू०के बीच पड़ता है।

हाँसल (हिं० पु०) घोड़ेका एक भेद, वह घोड़ा जिसका रंग मेहंदी-सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों, कुम्मैत, हिनाई।

हाँसिल (हिं० स्त्री०) १ रस्सा लपेटनेकी गराड़ी। २ लंगरकी रस्सी, पागर।

हासी (हिं० स्त्री०) १ हंसनेकी क्रिया या भाव, हंसी। २ परिहास, हंसी ठट्ठा, मजाक। ३ उपहास, निन्दा।

हासुल (हिं० पु०) हासल देखो।

हाँ हाँ (हिं० अव्य०) निषेध या वारण करनेका शब्द, वह शब्द जिसे बोल कर किसीको कोई काम करनेसे चटपट रोकते हैं।

हा (सं० अव्य०) १ शोक या दुःखसूचक शब्द। २ आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। ३ भयसूचक शब्द। (पु०) ४ हनन करनेवाला, मारनेवाला।

हाइफन (अं० पु०) एक विरामचिह्न जो एकमें समस्त दो या अधिक शब्दोंके बीचमें लगाया जाता है।

हाई (हिं० स्त्री०) १ दशा, हालत। २ ढंग, घात, तौर।

हाई कोर्ट (अं० पु०) हिन्दुस्तानमें किसी प्रान्तकी दीवानी और फौजदारीकी सबसे बड़ी अदालत, सबसे बड़ा न्यायालय। हिन्दुस्तानके प्रत्येक बड़े सूबेमें एक हाईकोर्ट है। जैसे,—कलकत्ता हाईकोर्ट, इलाहाबाद हाईकोर्ट।

हाईड्रोफोबिया (अं० पु०) शरीरके भीतर एक प्रकारका उपद्रव या व्याधि जो पागल कुत्ते, गीदड़ आदिके काटनेसे होता है। इसमें मनुष्य प्यासके मारे व्याकुल रहता है, पर पानी सामने आनेसे चिल्ला कर भागता है। इसका दूसरा नाम जलातङ्क भी है।

हाईस्कूल (अं० पु०) अंगरेजीको बड़ी पाठशाला जिसमें कालेजकी पढ़ाईके पहलेकी पूरी पढ़ाई होती है।

हाउस (अं० पु०) १ घर, मकान। २ कोठी, बड़ी दूकान। ३ सभा, मंडली।

हाऊ (हिं० पु०) एक कल्पित भयानक जन्तु जिसका नाम बच्चोंको डरानेके लिये लिया जाता है, हौवा, भकाऊं।

हाकल (सं० पु०) एक छन्दका नाम। इसके प्रत्येक चरणमें १५ मात्राएं और अन्तमें एक गुरु होता है। इसके पहले और दूसरे चरणमें ११ और तीसरे और चौथे चरणमें १० अक्षर होते हैं।

हाकलिका (सं० स्त्री०) पन्द्रह अक्षरोंका एक वर्णवृत्त।

हाकली (सं० स्त्री०) दश अक्षरोंका एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरणमें तीन भगण और एक गुरु होता है।

हाकिनी (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी घोर देवी।

हाकिम (अ० पु०) १ हुकूमत करनेवाला, शासक, प्रधान अधिकारी। २ बड़ा अफसर।

हाकिमी (अ० स्त्री०) १ हाकिमका काम, हुकूमत। (वि०) २ हाकिमका, हाकिम-सम्बन्धी।

हाकी (अं० पु०) एक खेल जिसमें टेढ़ी लकड़ी या डंडेसे गेंद मारते हैं, चौगानकी तरहका एक अंगरेजी खेल।

हाङ्गर (सं० पु०) स्वनामख्यात जलजन्तुविशेष।

हाङ्गल—बम्बई प्रदेशके धारावार जिलेका एक शहर।

हाजत (अ० स्त्री०) १ आवश्यकता, जरूरत। २ चाह। ३ पहरेके भीतर रखा जाना, हिरासत, हवालात।

हाज़मा (अ० पु०) पाचन-क्रिया, पाचनशक्ति।

हाज़िन—एक सुशिक्षित पारस्य कवि। इनका असल नाम था मौलाना शेख महम्मदअली। इनके पिता गिलान शेख आबू तालिब थे। १६९२ ई०में इस्पाहनमें इनका जन्म हुआ। इन्होंने पारस्य तथा अरब दोनों भाषामें हो पुस्तक लिखी है। पारस्यमें नादिर शाहके जुल्मसे ये १७३३ ई०में हिन्दुस्तान भाग आये। ये अनेक गद्य और पद्य लिख गये हैं। इनका अपना जीवनवृत्त प्रसिद्ध पुस्तक है।

हाज़िम (अ० वि०) हजम करनेवाला, भोजन पचानेवाला।

हाजिर (अ० वि०) १ सम्मुख, उपस्थित, सामने आया हुआ, मौजूद। २ कोई काम करनेके लिये सन्नद्ध, प्रस्तुत, तैयार।

हाजिर जवाब (अ० वि०) उत्तर देनेमें निपुण, जोड़की तोड़ बात कहनेमें चतुर।

हाजिर जवाबी (अ० स्त्री०) चटपट उत्तर देनेकी निपुणता, उपस्थित बुद्धि।

हाजिरबाश (फा० वि०) १ सामने मौजूद रहनेवाला, बराबर सेवामें रहनेवाला। २ लोगोंके पास जा कर बराबर मिलने जुलनेवाला।

हाजिरबाशी (फा० स्त्री०) १ सेवामें निरन्तर उपस्थिति। २ लोगोंसे जा कर मिलना जुलना, खुशामद।

हाजिराई (अ० पु०) १ भूतप्रेत बुलाने या दूर करनेवाला, ओझा। २ जादूगर।

हाजिरात (अ० स्त्री०) वन्दना या पूजा आदिके द्वारा किसीके ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह झूमने और अनेक प्रकारकी बातें कहने लगता है।

हाजी (अ० पु०) १ हज करनेवाला, तीर्थाटनके लिये मक्के मदीने जानेवाला। २ वह जो हज कर आया हो।

हाजी खलफा—साधारणतः मुस्तफा हाजी खलफा नामसे प्रसिद्ध एक प्रधान ग्रन्थकार। इन्होंने 'फजलक काशफुज अमिन' तथा 'ताकविम उत तवारिक रुमि' आदि ग्रंथ लिखे। ये कुस्तुनतुनियाके सम्राट् ४थ महम्मदके समसामयिक थे। १६५८ ई०के सितम्बर महीनेमें इनकी मृत्यु हुई।

हाजीगञ्ज—तिपुरा जिलेके अन्तर्गत एक शहर। यह डाकातीया नदीतट पर अवस्थित है तथा तिपुरा जिलेके नदीपथसे आनेजानेका एक प्रधान स्थान है। यहां सुपारी बहुत होती है तथा कलकत्ता, ढाका, नारायणगञ्ज आदिके साथ इसका वाणिज्य सम्बंध है।

हाजी महम्मदबेग खाँ—माशिर उलिखौके प्रसिद्ध लेखक। वे मिर्जा आकुतालेब खाँके पिता थे। इस्पाहनके अस्त्राबादमें उनका जन्म हुआ। वे जातिके तुर्क थे। नादिर शाहके अत्याचारसे डर कर ये भारतवर्ष चले आये तथा नवाब अबदुल मनसूर खाँ सफदरजङ्गके दोस्त हो गये। अयोध्याके निम्न शासनकर्त्ता राजा नवल रायकी मृत्युके बाद नवाब अबदुल मनसूर खांके भतीजे हाजिर सहचर स्वरूप उस पद पर नियुक्त हुए। नवाबके मरने पर सुजाउद्दौलाने डाहसे महम्मद कुली खांको

बन्दी कर उन्हें मार डाला। १७५३ ई०में हाजी बंगाल भाग गये। वहां मुर्शिदाबादमें वे और भी कितने वर्ष जीते रहे। १७६६ ई०में उन्होंने प्राणत्याग किया।

हाजी महम्मद काश्मीरी मौलाना—एक मुसलमान कवि। उनके पूर्वपुरुषगण हमदानके अधिवासी थे। उनमेंसे एक सैयद अली हमदानके साथ काश्मीर गये। यहां हाजीका जन्म हुआ, किन्तु थोड़ी उम्रमें उन्होंने दिल्ली आ कर शिक्षालाभ किया। वे एक उत्कृष्ट कवि थे तथा अकबरके समसामयिक थे। १५८७ ई०में उनकी मृत्यु हुई। वे बड़े धार्मिक थे तथा उनके बहुतसे शिष्य थे। उनमेंसे मौलाना हसन उनके कब्रिस्तान पर मरनेकी तारीख लिख गये हैं।

हाजो—आसामके कामरूपके अन्तर्गत एक गांव। यह लिया नदीके पूर्वी किनारे पर और ब्रह्मपुत्रसे ६ मील दूर पर यह गांव अवस्थित है। इसके पास ही महामुनिका एक प्रसिद्ध मन्दिर है। भारतके सभी स्थानोंसे हर साल हजारों मनुष्य यहां तीर्थ करनेके लिये आते हैं।

हाट (हिं० स्त्री०) १ वह स्थान जहां कोई व्यवसायी बेचनेके लिये चीजें रख कर बैठता है, दूकान। २ वह स्थान जहां बिक्रीकी सब प्रकारकी वस्तुएं रहती हों, बाजार। ३ बाजार लगानेका दिन।

हाटक (सं० पु०) १ एक देशका नाम। २ स्वर्ण, सोना। ३ धुस्तूर, धतूरा। (त्रि०) ४ सोनेका बना हुआ।

हाटकपुर (सं० पु०) लंका।

हाटकलोचन (सं० पु०) हिरण्याक्ष दैत्य।

हाटकीय (सं० त्रि०) १ स्वर्ण-सम्बन्धी, सोनेका। २ सोनेका बना हुआ।

हाटकेश्वर (सं० पु०) गोदावरीतीरस्थ शिवलिंगविशेष। गोदावरी तीर्थमें स्नान कर यह शिवलिङ्ग दर्शन करे। इसके दर्शनसे इहलोकमें सुख सौभाग्य तथा अन्तमें शिवलोककी प्राप्ति होती है। वामनपुराणमें इस हाटकेश्वर शिवका विशेष विवरण लिखा है। श्रीमद्भागवतमें लिखा है, कि अतल पातालके नीचे वितल नामक पाताल है। इस पातालमें भगवान् हाटकेश्वर शिव स्वपार्षद भूतोंसे परिवृत हो भवानीके साथ मिथुनीभूत अवस्थामें अवस्थान करते हैं। इनके वीर्यसे इस स्थानसे हाटकी नामकी एक बड़ी नदी निकली है।

हाटहजारी—चटगांवजिलेके अन्तर्गत एक गांव तथा थानाका सदर। चटगांवसे रामगढ़ जानेका जो रास्ता है, उससे दश मील उत्तर यह गांव पड़ता है। यहां एक बड़ा बाजार है।

हाडा (हिं० पु०) १ लाल रंगकी बड़ी भिड़, लाल ततैया। २ क्षत्रियोंकी एक शाखा।

हाडी (हिं० पु०) १ जमीनमें पत्थर गाड़ कर बनाया हुआ गड्ढा जिसमें अनाज रख कर साफ करनेके लिये मूसलसे कूटते हैं। २ वह गड्ढेदार पत्थर जिस पर रख कर पीटनेसे पीतल आदिकी चद्दर कटोरेनुमा बन जाती है। ३ एक प्रकारका बगला। ४ कौआ।

हाडी—मलमूत्र आदि साफ करनेवाली बंगाल-बिहारमें रहनेवाली एक नीच जाति। ये लोग मेहतर, मेथर और हरसन्तान नामसे परिचित हैं। इनमें बारभागिया या कोरा पाइक, मध्यभागिया या मध्यकुल, खोडिया, सिवली, मेहतर, मचैया, कराइया, पुरन्दर आदि श्रेणी हैं इनमेंसे सिर्फ मेहतर लोग ही मैला साफ करते हैं, बारभागिया चौकीदार होते, बाजा बजाते और पालकी ढोते हैं, खोडी सूअर पोसते हैं, सिवली खजूरके पेड़से ताड़ी चुआते हैं और बाकी लोग खेती बारी करते हैं। भिन्न भिन्न श्रेणीके मध्य अब इन लोगोंका आदान प्रदान नहीं चलता।

हात (सं० त्रि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

हाता (अ० पु०) १ घेरा हुआ स्थान, वह जगह जिसके चारों ओर दीवार खिंची हो, बाड़ा। २ देशविभाग, हलका या सूबा। ३ रोक, हद, सीमा। (वि०) ४ अलग, दूर किया हुआ, हटाया हुआ। ५ नष्ट, बरबाद। ६ मारनेवाला, वध करनेवाला।

हातिम (अ० पु०) १ निपुण, चतुर, कुशल। २ किसी काममें पक्का आदमी, उस्ताद। ३ अत्यन्त दानी मनुष्य, अत्यन्त उदार मनुष्य।

हातिम—साधारणतः 'हातिमताई' नामसे परिचित, ताई जातिके एक प्रसिद्ध सरदार। ये बड़े उदार, ज्ञानी और साहसी थे। महम्मदके जन्मके पहले हातिमकी मृत्यु हुई थी। अरबके अनवज्र गांवमें आज भी उनकी कब्र देखी जाती है। इनका जीवनवृत्तान्त 'हातिमताई' नामक फारसी उपाख्यानमें लिखा है।

हातिमताई—हातिम देखो।

हातिमर्द्दन—पञ्जाबके पेशावर जिलान्तर्गत एक सेनावास, यूसफजाई महकमेका सदर। यह अक्षा० ३४° ११' १५" उ० तथा देशा० ७२° ६' पू०के बीच पडता है। सेनानिवासके कुछ दक्षिण हाति और मर्द्दन नामके दो गांव हैं जिनसे इस शहरका नाम हातिमर्द्दन पडा है। यूसुफजाइके सहकारी कमिश्नर यहां रहते हैं।

हातिमकाशी मौलाना—पारस्य-सम्राट् साह अब्बासके समसामयिक एक काशानदेशीय कवि।

हातिया—वङ्गालके नोआखाली जिलेका एक द्वीप और थाना। यह २२° २५' से २२° ४२' उ० तथा देशा० ९०° ५३' से ९१° ६' पू०के मध्य अवस्थित है। भू-परिमाण १८५ वर्गमील तथा जनसंख्या ५५३९० है। यहां ४८ गांव तथा ४१७६ घर हैं। बीच बीचमें समुद्रका स्रोत आ कर इस द्वीपको भर देता है। विशेषतः १८६७ तथा १८७६ ई०के दुर्योगसे समुद्रकी तरङ्गने आ कर द्वीपको एकदम डुबा दिया जिससे प्रायः तीस हजार मनुष्य मृत्यु-मुखमें पतित हुए थे।

हातियागढ़—२४ परगनेके दक्षिणांशमें स्थित एक परगना। इसके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम है।

हात्र (सं० क्ली०) हा-ष्ट्रन्। १ वेतन। २ प्रमथन। ३ मरण, मृत्यु। (पु०) ४ राक्षस।

हाथ (हिं० पु०) १ मनुष्य, बन्दर आदि प्राणियोंका वह दण्डाकार अवयव जिससे वे वस्तुओंको पकड़ते या छूते हैं। बाहुसे ले कर पञ्जेतकका अङ्ग विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। २ हाथकी एक माप जो मनुष्यकी कुहनीसे ले कर पंजेके छोर तककी मानी जाती है, चौबीस अङ्गुलका मान। ३ ताश, जूए आदिके खेलमें एक एक आदमीके खेलनेकी वारी, दाव। ४ किसी ओजार या हथियारका वह भाग जो हाथसे पकड़ा जाय, दस्ता, मुठिया। ५ किसी कार्यालयके कार्यकर्त्ता, कारखानेमें काम करनेवाले आदमी।

हाथकण्डा (हिं० पु०) हथकण्डा देखो।

हाथड़ (हिं० पु०) जांते या चक्कीकी मुठिया।

हाथतोड़ (हिं० पु०) कुश्तोका एक पेच जिसमें जोड़का पंजा उलटा पकड़ कर मरोड़ते हैं और उसी मरोड़े हुए हाथके ऊपरसे अपनी उसी बगलकी टांगे जोडकी टांगोंमें फंसा कर उसे चित करते हैं।

हाथधुलाई (हिं० स्त्री०) वह बंधी रकम जो चमारोंको मरे हुए चौपायोंके फेंकनेके लिये दी जाती है।

हाथपान (हिं० पु०) हाथफूलके समान हथेलीकी पीठ पर पहननेका एक गहना जो पानके आकारका होता है और जंजीरोंके द्वारा अंगूठियों और कलाईसे लगा कर बंधा रहता है।

हाथफूल (हिं० पु०) हथेलीकी पीठ पर पहननेका फूलके आकारका एक गहना जो सिकडियोंके द्वारा अङ्गूठियों और कलाईसे लगा कर बांधा जाता है।

हाथबांह (हिं० स्त्री०) बांह करनेका एक ढङ्ग।

हाथरस—१ युक्तप्रदेशके अलीगड महकमेकी दक्षिण-पश्चिम सीमा पर स्थित एक तहसील। यह अक्षा० २७° २६' से २७° ४७' उ० तथा देशा० ७७° ५२' से ७८° १७' पू०के बीच पडती है। इसमें दो परगने हैं—हाथरस तथा मुर्सान। भू-परिमाण २९० वर्गमील है जिसमें २४६ वर्गमीलमें खेतीबारी होती है। जनसंख्या २२५५७४ है। इस शहरमें ५ शहर और ३९३ गांव लगते हैं।

२ उक्त अलीगढ जिलेका शहर तथा हाथरस तहसीलका सदर। अक्षा० २७° ३६' उ० तथा देशा० ७८° ४' पू० अलीगढ़ तथा आगरा पथके प्रायः बीचोबीचमें यह शहर अवस्थित है। जनसंख्या ४२५७८ है। हाथरस शहर सुनिर्मित तथा उत्तर-पश्चिम प्रदेशका एक वाणिज्यकेन्द्र है। इस शहरमें बहुतसे पत्थर और ईंटके बने घर हैं। १८वीं सदीके मध्यभागमें यह शहर जाटठाकुर दयारामके दखलमें था। उनके दुर्गका खण्डहर आज भी देखा जाता है। १८०३ ई०में जब यह दोआब वृटिश राज्यमें मिलाया गया, तबसे ठाकुर लोग गवर्नमेंटके साथ बुरी तरह पेश आने लगे। १८१७ ई०में गवर्नमेंटने मेजर जेनरल मार्सलके अधीन एक दल सेना भेजी। दुर्ग यद्यपि सुरक्षित था तथापि अङ्गरेजी सेनाको दुर्ग अधिकार करनेमें जरा भी देर न लगी। दयाराम रातको दुर्गसे भाग गये तथा बाकी दुर्गरक्षक सेनाने अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार कर ली। कानपुरके बाद ही वाणिज्यके लिये दोआबके मध्य यह शहर मशहूर है।

हाथा (हिं० पु०) १ किसी औजार या हथियारका वह भाग जो मुट्ठीमें पकड़ा जाता है, दस्ता । २ दो तीन हाथ लम्बा लकड़ीका एक औजार जिससे सिंचाई करते समय खेतमें आया हुआ पानी उलीच कर चारों ओर पहुंचाते हैं। ३ पंजेकी छाप या चिह्न जो गोले पिसे चावल और हल्दी आदि पोत कर दीवार पर छापनेसे बनाता है, छापा ।

हाथा-छांटी (हिं० स्त्री०) १ व्यवहारमें कपट या बेईमानी, चालाकी। २ चालबाजी या बेईमानीसे रुपया पैसा उड़ाना, माल हजम करना।

हाथाजोड़ी (हिं० स्त्री०) १ एक पौधा जो औषधके काममें आता है। २ सरकंडेकी वह जड़ जो दो मिले हुए पंजोंके आकारकी बन जाती है। इसका रखना लोग बहुत फलदायक मानते हैं।

हाथापाई (हिं० स्त्री०) ऐसी लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाये जायं, मुठभेड़, धौलधप्पड़ ।

हाथाबांहो (हिं० स्त्री०) हाथापाई ।

हाथी (हिं० पु०) एक बहुत बड़ा स्तन्यपायी जन्तु जो सूंड़के रूपमें बढ़ी हुई नाकके कारण और सब जानवरोंसे विलक्षण दिखाई पड़ता है । हस्ती देखो ।

हाथीखाना (फा० पु०) वह घर जिसमें हाथी रखा जाय, फीलखाना।

हाथीचक (हिं० पु०) एक प्रकारका पौधा जो औषधके काममें आता है ।

हाथीदाँत (हिं० पु०) हाथीके मुंहके दोनों छोरों पर डेढ़ हाथ निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं। यह बहुत ठोस, मजबूत और चमकीला होता है और अधिक मूल्य पर बिकता है। इससे अनेक प्रकारके सजावटके सामान बनते हैं।

हाथीनाल (हिं० स्त्री०) वह पुरानी तोप जिसे हाथियोंकी पीठ पर रख कर ले जाते थे, हथनाल ।

हाथीपांव (हिं० पु०) १ एक रोग जिसमें टांगें फूल कर हाथीके पैरकी तरह मोटी और बेडौल हो जाती हैं, फीलपाव। २ एक प्रकारका बढ़िया सफेद कत्था ।

हाथीपीच (हिं० पु०) एक प्रकारका हाथीचक जो शाम और रूमकी ओरसे आता है और औषधके कामका होता है ।

हाथीवच (हिं० स्त्री०) एक पौधा जिसकी तरकारी बनाई जाती है ।

हाथीवान (हिं० पु०) हाथीकी रक्षा करने और उसे चलानेके लिये नियुक्त पुरुष, फीलवान, महावत ।

हादसा (अ० पु०) दुर्घटना, बुरी घटना

हान—चीनके पांचवें राजवंश । २०६ ई०से २६८ ई० तक इन्होंने चीनका शासन किया। ये सभी प्रायः साहित्यकोंकी यथोचित सम्वर्द्धना करते थे । मिङ्गतिके राजत्व कालमें भारतवर्षके साथ चीनका यथेष्ट सद्भाव था। बहुत प्राचीन कालसे तथा विशेषतः सामलिम तामराज व शियोंके समय (४र्थासे ७वीं सदी तक) बङ्ग, मलबार तथा पञ्जाबके राजे चीनमें दूत भेजते थे । हानवंश ने ही चीनका पञ्जिकासंस्कार किया ।

हान (सं० क्ली०) हा-क्त । १ त्याग। २ सांख्यदर्शनके अनुसार दुःखकी अत्यन्त निवृत्ति ही हान है ।

सांख्यदर्शन शब्दमें विशेष विवरण देखो ।

हानि (सं० स्त्री०) १ न रहनेका भाव, नाश, क्षय । २ क्षति, नुकसान । ३ अनिष्ट, अपकार, बुराई । ४ स्वास्थ्यमें बाधा, तंदुरुस्तीमें खराबी ।

हानिकर (सं० लि०) १ हानिकरनेवाला, जिससे नुकसान पहुंचे। २ अनिष्ट करनेवाला, बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३ स्वास्थ्यमें त्रुटि या बाधा पहुंचानेवाला, तंदुरुस्ती बिगाड़नेवाला ।

हानिकारक (सं० लि०) हानिकर देखो ।

हानिकारी (सं० लि०) हानिकर देखो ।

हानुक (सं० लि०) १ घातुक, हत्याकारी। २ क्षतिकारक ।

हान्त (सं० क्ली०) मरण, मृत्यु ।

हान्दन (सं० पु०) जनपद ।

हान्‌लिन ओयेन—कुब्लाई खाँका प्रतिष्ठित चीनका विश्वविद्यालय । प्रायः ६०० वर्षसे हान्‌लिन ओयेनके शिक्षक लोग एक ही प्रकारसे शिक्षा चलाते आ रहे हैं। शायद पृथ्वीके और कोई भी विद्यालय इस विश्वविद्यालयके समान स्वातन्त्र्यरक्षा नहीं कर सका है। इस राज्यमें

उच्च पद पर जो नियुक्त होंगे उन्हें इस विद्यालयकी परीक्षामें उत्तीर्ण होना ही पड़ेगा। प्रत्येक परीक्षामें दो हजार परीक्षार्थी सम्मिलित होते थे जिसमेंसे २०से ले कर ८० तक निर्वाचित होनेसे उन्हें 'सिउतसाई' की उपाधि दी जाती थी। जो लोग सिउतसाई होते थे, प्रत्येक प्रदेशसे वैसे छात्रको फिर सम्राट् नियुक्त परीक्षकके निकट उच्च परीक्षाके लिये उपस्थित होना पड़ता था। सिउतसाई शब्दका अर्थ है स्फुटनोन्मुख प्रतिभा। उनमेंसे कुछ 'सिउतसाई' 'कुजिन' उपाधि पाते थे। कुजिन उपाधिधारी हजार छात्रोंमेंसे जो उच्चतर कुजिन परीक्षामें उत्तीर्ण होते थे, वे लोग दूसरे वर्ष उच्चतर राजपदके लिये पिकिनमें जाते थे। वहां जा कर सौभाग्यवशतः सिन सि उपाधि पाते थे, उन्हें ही निम्न मन्दारिनका पद मिलता था। जो मिहनतसे और भी उच्चतर पदप्रार्थी होते थे, वे राजाकी महासभामें सभ्य गिने जाते थे। किन्तु यदि सांसारिक पदोन्नति छोड़ विद्या द्वारा वे आत्म प्रतिष्ठा चाहते थे, तो बहु प्रतियोगितामें बाकी २०० या ३०० विद्वान राजप्रासादमें सम्राट्के पास सशरीरसे परीक्षित होते थे, उनमें योग्यताके हिसाबसे २० मनुष्यसे अधिक निर्वाचन नहीं किया जाता था। उन लोगोंकी विद्या और लिखनेकी क्षमता श्रेष्ठ थी। वे लोग ही हानलिनके अविनश्वरोंका आसन पाते थे। इन बीस मनुष्योंमेंसे फिर एक मनुष्यको टेयाङ्ग आयेनकी उपाधि मिलती थी। इनका साम्राज्यमें 'आदर्श विद्वान्' कह कर लोग सम्मान करते थे। यह विशिष्ट उपाधि किसीको दी जाने पर उसी क्षण राजदूतगण उनके आत्मीयके घर शीघ्रतासे जा कर उनके आत्मीयके सर्वश्रेष्ठ गौरवका सम्वाद दे आते थे। इस परिवारको उस दिनसे लोग पवित्र समझते थे। उनके स्त्री पुत्र और आत्मीय स्वजन साधारणकी नजरमें सर्वश्रेष्ठ सम्मानके अधिकारी थे। हानलिनके सभ्य लोग राजसभासदमें कवि ऐतिहासिकका गौरवजनक पद पाते थे। वे सब कङ्गही तथा कोन गुङ्गके राजत्वकालमें चीन-भाषामें महाविश्वकोष सम्पादित कर गये हैं। ५०२० खण्डमें यह बृहत् ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ।

आभिजात्यके लिये नहीं, चीनदेशमें सर्वोच्च राजकर्मचारी लोग विद्या और सामर्थ्यके लिये ही उच्च राजपद पाते थे।

हान्सी—पञ्जावके हिसार जिलान्तर्गत एक तहसील। यह अक्षा० २८° ५' से २९° २५' उ० तथा देशा० ७५° ५०' ३०" से ७६° २२' पू०के मध्य अवस्थित है। इस तहसीलका भू-परिमाण ७६१ वर्गमील है। यहां एक दीवानी और एक फौजदारी अदालत है।

हापन (सं० क्ली०) मारण।

हापुलिका (स० स्त्री०) पक्षिविशेष।

हापुत्री (सं० स्त्री०) हापुलिका पक्षी।

हाफिज (अ० पु०) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कण्ठ हो।

हाफिज आवरू—एक प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक। इनकी उपाधि नूरउद्दीन बिन् लतफुल्ला थी। हिरातनगरमें इनका जन्म हुआ।

ये सम्राट् तैमूरकी मृत्युके बाद उनके पुत्र शाहरुख मीर्जाके दरबारमें प्रतिष्ठित हुए। शाहरुखके पुत्र युवराज मीर्जा वैसङ्गर उनकी खूब भक्ति करते थे। भक्त राजकुमारके व्यवहारसे श्रद्धान्वित हो इन्होंने स्वरचित इतिहास 'जुवदातुउत् तवारिख वैसङ्गर' युवराजको भेंट किया। यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है, उसमें १४२५ ई० तकके समस्त पृथिवीका इतिहास, विभिन्न देशवासी और इनके धर्म और शिक्षाप्रणाली आदिका विवरण लिखा गया है। इसके अलावा इनका लिखा 'तवारिख हाफिज आवरू' नामक एक और इतिहास मिलता है। १४३० ई० (८३४ हि०)में जनजान नगरमें इनकी मृत्यु हुई।

हाफिज आदम—एक मुसलमान संन्यासी। ये शेख अहमद सरहिन्दीके शिष्य थे। कालमाहात्म्यसे फकीरकी कोमलता उनके हृदयसे अन्तर्हित हुई तथा वे कठोर हृदय नरपिपासु राक्षस हो उठे। १६७३ ई०में वे सिखगुरु तेज बहादुरसे मिले, पीछे दलबलसंग्रह कर उन्होंने आस-पासके गांवोंको लूट और बहुत धन-दौलत इकट्ठी कर ली। अन्तमें उन्होंने अपनेको भारतका अधीश्वर कह कर घोषित कर दिया। मुगल सम्राट् आलमगीरको जब खबर लगी, तो वे आगबबूले

हो गये और पञ्चनद प्रदेशकी यात्रा कर दी। मुगलसैन्य-ने उन्हें सिन्धुके पार भगा दिया।

हाफिज उद्दीन अह्मद मौलवी—एक मुसलमान मौलवी। इन्होंने कलकत्ता फोर्ट विलियम कालेजके पाठार्थ १८०३ ई०में खिरद अफराज नामक उर्दूमें एक ग्रन्थ लिखा।

हाफिज उल्ला शेख - दिल्लीवासी एक मुसलमान कवि। इन्होंने कविता बनानेके कारण 'असम' उपाधि पाई थी। १७६७ ई०में सम्राट् महम्मद शाहके अमलमें ये कराल-कालके मुखमें पतित हुए। ये सुकवि सिराज उद्दीन अली खां आजूके आत्मीय थे।

हाफिज ख्वाजा—बंगालमें हाफिज नामसे मशहूर एक पारसिक कवि। सादी और हाफिज इसलाम को संसारके अद्वितीय कवि कहनेमें अत्युक्ति न होगी। किन्तु सादीसे हाफिजकी कविता अच्छी होती थी। उनका असल नाम था—ख्वाजा सामस उद्दीन महम्मद-ई-हाफिज। ये १४वीं सदीके शुरूमें फारसके अन्तर्गत सिराज नगरमें किसी सम्भ्रान्त वंश-में पैदा हुए। पिता माताकी कर्त्तव्य-परायणतामें उन्होंने उपयुक्त शिक्षा पाई तथा धर्मशास्त्रमें अच्छे मौलवी हुए। काव्यकलामें उनका यश चारों ओर फैल गया तथा वे हाफिज या 'कुरानह' उपाधिसे जनसाधारणमें मशहूर हो गये। उनकी कविताके पद पदमें पवित्र सुफीमतकी अभिव्यक्ति और पोषकता झलकती थी। वास्तवमें वे सुफीमतके पृष्ठपोषक और प्रचारक थे।

इसमें जरा भी संदेह नहीं कि हाफिज उस समय पारसिक समाजमें एक गण्यमान्य कवि थे। एक दिन हाफिज अपने चचा सादीको* बगलमें बैठे हुए थे, इसी समय उन्होंने उन्हें सुफीमतपोषक एक स्तोत्र रचना करते देखा। सादीने इसी समय प्रथम चरण बनाया है, यह देख उन्होंने बाकी पूर्ण कर देना चाहा। सादीने कोई आपत्ति न की और भतीजेको ही उसकी पूर्त्ति करने कहा। बादमें आप वहांसे चल दिये। हाफिजके यह कविता समाप्त करने पर सादी आये और उसे देख चम त्कृत हो उठे तथा भतीजेको उन्होंने उक्त विषयमें एक ग्रन्थ लिखने कहा।

हाफिजने पहली गजल जैसी खूबीसे रची थी और समूचा ग्रन्थ माधुर्य्यमयी कवितासे जैसा सर्वाङ्गसुन्दर हो गया था, कि उसे देख उनके चचा सादी बड़े अलभुन उठे और भतीजेको अपनेसे अधिक काव्यकलाकुशल देख चमत्कृत हो गये। चचा भतीजेकी अद्भुत कवित्व शक्ति देख विमुग्ध हुए सही, पर उन्होंने भतीजेको यह कह कर अभिसम्पात किया, कि यद्यपि तुम्हारी कविता अपूर्व रसपरिपूर्ण, अभिव्यक्तिपूर्ण और परिस्फुट है तथापि पाठक मात्र ही उसे उन्मत्तका प्रलाप समझेंगे। सचमुच ही परवर्त्ती समयमें हाफिजकी कविता मुसलमानसमाजमें वैसी आदरणीय नहीं हुई। कुरनुनतुनियाके सिया-सम्प्र दाय उक्त कविताको विधर्मीकी उक्ति समझते थे।

हाफिज अन्तमें राजानुग्रहकी उपेक्षा कर निर्ज्जन स्थान-में रहते थे तथा अपने हृदय निहित सुफीमतके मौलिक तत्त्वोंको मन ही मन चिन्ता करना अच्छा समझते थे। याजद राजा हाफिजकी कविता पर जिस प्रकार आकृष्ट हुए थे, उन्हें सामने पा कर वे उस प्रकार आनन्दका अनु भव नहीं कर सकते थे। उन्होंने हाफिजकी दुरर्थ घटित गूढ़ रसास्वादन करनेमें समर्थ न हो कर कविताका उन्हें विदाई देनेका संकल्प किया तथा अपनी उद्देश्य सिद्धिके लिये उनके प्रति नाना प्रकारका असद्व्यवहार भी किया था।

सिराज-सिंहासनाधिकारी शाह सुजा (१३६३ ई०में मृत्यु)के वजीर ख्वाजा किवामुद्दीनने हाफिजको अध्यक्ष बना कर सिराज नगरमें एक विश्वविद्यालय स्थापन किया। वे इस विश्वविद्यालयमें धर्मशास्त्र और व्यवस्था शास्त्रकी अध्यापना कराते थे। बोगदादके शासनकर्त्ता सुलतान उवैश जलायर (१३७४ ई०में मृत्यु) उन्हें बड़े आदरके साथ अपने यहां ले गये, किन्तु कुछ दिन बाद उन्हें अनादर किया, क्योंकि, कविने उन्हें तीव्र उक्तिसे तिरस्कार किया था।

अनन्तर बोगदादके शासनकर्त्ता सुलतान अह्मद-ई-इलखानीने (१४१० ई०में मृत्यु) हाफिजसे सुख्याति पाने-

---

* ये शेखसादी ई-सिराजी (जन्म ११६५ मृत्यु १२९२ ई०) से भिन्न थे।

की प्रत्याशासे उन्हें बहुत धन रत्न देना स्वीकार किया, किन्तु वे इस प्रजापीडक राजाका दान लेनेको राजी न हुए। १३९२ ई०में तैमूरलङ्गने इराक और फार राज्यके अधिपति शाह मनसुरको मार कर सिराज राजधानी पर अपना दखल जमा लिया। इस समय हाफिजके साथ उनकी मुलाकात हुई। उन्होंने कविको समरकन्द राजधानीके निन्दावादके कारण बहुत फटकारा। पीछे कविवरने मुगलपतिको मीठी मीठी बातोंसे प्रसन्न कर छुटकारा पाया।

प्रवाद है, कि दाक्षिणात्यक सर्वगुणान्वित सुलतान महम्मदशाह वाह्मनी शिल्प और कलाविद्याके उत्साहदाता थे। पारस्य और अरववासी किसी कविके उन्हें अपनी बनाई सिर्फ एक कविता उपहारमें देने पर वे उन्हें सहस्र मुद्रा पारितोषिक तथा पीछे नाना प्रकारके उपहारके साथ बड़े सम्मानपूर्वक स्वदेश भेज देते थे। हाफिजने यह खबर पा एक बार उस उदार राजाको देखनेकी इच्छा की थी। जब मालूम हुआ, कि हाफिज अर्थाभाव वशतः राजदरबारमें आना नहीं चाहते तब राजाके वजीर मीर फजलुल्ला आवजने उन्हें रुपये भेज कर आनेके लिये अनुरोध किया।

हाफिजने यह निमन्त्रन स्वीकार कर लिया। इस रुपयेमेंसे कुछ अपने महाजनोंको, कुछ भाजोंको दे कर और कुछ आप अपने साथ ले कर भारतवर्षके लिये रवाना हुए। जब वे लाहौर तक पहुंचे, तब एक डकैतने उनसे दोस्ती कर ली। पीछे वह कुछ रुपया धूर्त्ततासे ऐंठ कर चम्पत हो गया। अब हाफिजको आगे बढ़नेका साहस न हुआ और वे उसी जगह बैठ गये। इसी समय दो पारसिक वणिक् वहां आये। वे लोग पारस्य लौट रहे थे, हाफिजके दुःखसे दुःखित हो उन्होंने हाफिजको साथ ले लाना चाहा तथा वे उनका कुल खर्च वर्च देनेको भी राजी हुए।

इन वणिकोंके साथ हाफिज पारस्योपसागरके किनारे (हुरमुज) आ पहुंचे। दाक्षिणात्यपति सुलतान महम्मूदने उनके आनेके लिये पारस्योपसागरमें एक जहाज भेज रखा था। जहाज पर चढ़ते समय भारी तूफान आया। इसे देख कवि बड़े डर गये कि कहीं तूफानसे जान भी न चली जाय। अतः उन्होंने भारतयात्राका संकल्प मन ही मन परित्याग किया और अपनी बनाई एक कविता मीर फजलुल्लाको देनेके लिये किसी मित्रके हाथ दे दी तथा तूफान बंद होने पर 'आता हूं' कह कर वे वहांसे वापिस लौटे।

यथासमय हाफिजको न आये देख जहाज भारत लौट आया। वजीर मीर फजलुल्लाको उक्त गजल पढ़नेसे कुल मालूम हो गया। पीछे उन्होंने सुलतानको कह सुन कर मसहद-निवासी मुल्ला महम्मद कासिलके हाथ सहस्र सुवर्ण मुद्रा भेज दी।

१३५७ ई०में मुवारिज उद्दीन् महम्मद मुजफर सिराजके शासनकर्त्ता शाह शेखने इसाकको मार डाला। तबसे उन पर दुःखका पहाड़ टूट पड़ा। १३५७ ई०में शाह सुजाने अपने पिता महम्मद मुजफ्फरकी आंखें उखाड़ कर उनका काम तमाम किया। वे भी सिराजके सिंहासन पर बैठ कर हाफिजके ऊपर नाना प्रकारका अत्याचार करने लगे। उनका विश्वास था, कि हाफिजकी कविताएं पवित्र इसलाममत-विरोधी हैं।

१३६९ ई०में बङ्गदेशाधिपति सुलतान गयासुद्दीन पुरवीने हाफिजके दर्शन करनेके अभिप्रायसे उन्हें निमन्त्रण पत्र भेजा। हाफिज इस घटनाका एक सुललित कवितामें उल्लेख कर गये हैं।

हाफिजकी मृत्यु कब हुई, मालूम नहीं। उनके समाधि-पत्थर पर ६९१ (१३८८ ई०) मृत्युकाल लिखा है। हाफिजकी रचित गजल 'दीवान-इ-हाफिज' नामसे संगृहीत और सङ्कलित है। उसकी भाषा और भाव अपूर्व और माधुर्यमय है। मूलमें शब्दविन्यासकी अनुप्रासच्छटा देखनेसे चमत्कृत होना पड़ता है। पारसी भाषा जाननेवाले सभी विद्वान उनकी कविताका आदर करते हैं।

हाफिज रहमत खां—एक प्रसिद्ध रोहिला सरदार। रोहिला लोगोंके अधिपति अली महम्मदखांके शासनकालमें ये राज्यके उच्च पद पर नियुक्त हुए थे। अलीमहम्मदने उन्हें पिलिभित् और बरेली दे दिया। वे राजकार्यमें जैसे दक्ष थे, सैन्य चालनामें भी उनकी वैसी ही असामान्य प्रतिभा थी। अली महम्मदके पुत्र सादुल्लाके

जमानेमें वे राज्यके सर्वेसर्वा हो गये थे। महाराष्ट्रोंके लूट पाटसे बचानेके लिये सादुल्लाने अयोध्याके नवाब सुजाउद्दौलाको ४० लाख रुपया देना कबूल किया था, परन्तु हाफिज इस शर्तके अनुसार कार्य करनेको राजी नहीं हुए। इस कारण अङ्गरेजी और नवाबी सेनाने मिल कर १७७४ ई०में रोहिलखण्ड पर आक्रमण कर दिया था। उस युद्धमें हाफिज मारे गये।

हाफु (सं० पु०) अहिफेन, अफीम।

हाबिल (हिं० पु०) जहाजका लंगर उखाड़ने या खींचनेकी क्रिया।

हामी (हिं० पु०) हाँ, करनेकी क्रिया या भाव, स्वीकृति, स्वीकार।

हाम्पि—मन्द्राजप्रदेशके वेल्लरी जिलान्तर्गत तुंगभद्राके दाहिने किनारे अवस्थित एक बहुत पुराना टूटाफूटा शहर। इसका खण्डहर ६२ मील तक फैला हुआ है। १३३६ ई०में वल्लालवंशीय दो भाई बुक्क और हरिहरने इस शहरकी प्रतिष्ठा की तथा १५६४ ई० तक उनके वंशधरोंने यहां राज्य किया। पीछे आनगुण्डी, वेल्लूर और चन्द्रगिरिमें उनकी राजधानी उठ कर चली गई। दो सदी तक यह नगर विजयनगरके राजाओंके दखलमें रहा। उन लोगोंने बहुतसे मन्दिर और राजप्रासाद बनवा कर शहरको सुशोभित कर दिया था। प्रति वर्ष यहां मेला लगता है।

हाम्भीरो (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी रागिणी।

हाय (हिं० अव्य०) १ शोक और दुःख सूचित करनेवाला एक शब्द, घोर दुःख या शोकमें मुंहसे निकलनेवाला एक शब्द, आह। २ कष्ट और पीड़ा सूचित करनेवाला शब्द, शारीरिक व्यथाके समय मुंहसे निकलनेवाली आवाज। (स्त्री०) ३ कष्ट, पीड़ा।

हायतपुर—मालदह जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २५° १६' ४०" उ० तथा देशा० ८७°५४' २१" पू०के मध्य गङ्गाके बाएं किनारे कालिन्दी और गङ्गाके सङ्गमस्थल पर अवस्थित है। मालदह जिलेके मध्य यहां नदीतीरवर्त्ती सबसे बड़ा बाजार है। वाणिज्यके लिये यह स्थान विख्यात है।

हायन (सं० पु० क्ली०) १ वत्सर, साल। २ व्रीहिभेद, एक प्रकारका मोटा धान जो लाल होता है। ३ अग्निशिखा।

हायनक (सं० पु०) एक प्रकारका मोटा धान जो लाल होता है।

हाय हाय (हिं० अव्य०) १ शोक दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। हाय देखो। (स्त्री०) २ कष्ट, दुःख। ३ व्याकुलता, घबराहट।

हाया—राजा दयावलके भाई शिवरामदासकी काव्योपाधि, मिर्जा अबदुल कादिर बेदिलके शिष्य। इन्होंने एक सुन्दर दीवानकी रचना की।

हायि (सं० क्ली०) सामभेद।

हायेना (अं० पु०) व्याघ्रजातीय एक हिंस्रपशु।

हार (सं० त्रि०) १ हरिसम्बन्धीय। २ हरणकर्त्ता, चुरानेवाला। ३ वाहक, ले जानेवाला। ४ नाश करनेवाला। ५ मनोहर, सुन्दर। (पु०) ६ मुक्तामाला, सोने चांदी या मोतियों आदिकी माला जो गलेमें पहनी जाय। किसीके मतसे इसमें ६४ और किसीके मतसे १०८ दाने होने चाहिये। ७ अङ्कगणितमें भाजक। ८ पिङ्गल या छन्दःशास्त्रमें गुरु मात्रा। ९ युद्ध, लड़ाई। १० हरण।

हार (हिं० स्त्री०) १ युद्ध, क्रीड़ा, प्रतिद्वन्द्विता आदिमें शत्रुके सम्मुख असफलता, लड़ाई, खेल, बाजी या चढ़ा ऊपरीमें जोड़ या प्रतिद्वन्द्वीके सामने न जीत सकनेका भाव। २ शिथिलता, थकावट। ३ क्षति, हानि। ४ विरह, वियोग। ५ वन, जङ्गल। ६ नावके बाहरी तख्ते। ७ चरनेका मैदान, चरागाह।

हारक (सं० पु०) १ कितव, धूर्त्त। २ चौर, चोर। ३ गणितमें भाजक। ४ गद्यभेद। ५ विज्ञानविशेष। ६ शाखोट वृक्ष, सिहोरका पेड़। ७ हार, माला। ८ हरणकर्त्ता, लेनेवाला। ९ वाहक, ले जानेवाला। ११ मन हरनेवाला, सुन्दर।

हारगुटिका (सं० स्त्री०) हारकी गुरिया, मालाके दाने।

हारना (हिं० क्रि०) १ युद्ध क्रीड़ा, प्रतिद्वन्द्विता आदिमें शत्रुके सामने असफल होना, पराभूत होना, शिकस्त खाना। २ व्यवहार या अभियोगमें दूसरे पक्षके मुकाबिलेमें कृतकार्य न होना, मुकदमा न जीतना। ३ लड़ाई, बाजी आदिको सफलताके साथ न पूरा करना। ४ नष्ट करना, गंवाना। ५ छोड़ देना, न रख सकना। ६ दे देना।

हारफलक (सं० पु०) पाँच लड़ियोंका हार।

हारगंध (सं० पु०) एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हारके आकारमें रखे जाते हैं।

हारभूरा (सं० स्त्री०) द्राक्षा, दाख।

हारमोनियम (अं० पु०) सन्दूकके आकारका एक अंगरेजी बाजा। इस पर उंगली रखनेसे अनेक प्रकारके स्वर निकलते हैं।

हारयष्टि (सं० स्त्री०) हार या मालाकी लड़ी।

हारल (हिं० पु०) एक प्रकारकी चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुलमें कोई लकड़ी या तिनका लिये रहती है।

हारव (सं० पु०) नरकभेद।

हारवर्ष—एक राष्ट्रकूट राजा। इन्हींके उत्साहसे अभिनन्दने रामचरितकी रचना की।

हारसिंगार (हिं० पु०) हारसिंगारका पेड़ या फूल, परजाता।

हारहारा (सं० स्त्री०) कपिलद्राक्षा।

हारहूण (सं० पु०) १ जनपद विशेष, सिन्धु और झेलम नदीका मध्यवर्त्ती भूभाग। २ उक्त देशके निवासी।

हारहूर (सं० पु०) १ एक प्रकारका मद्य। २ द्राक्षा, दाख।

हारहूरा (सं० स्त्री०) एक प्रकारका अंगूर

हारहूरिका (सं० स्त्री०) हारहूरा देखो।

हारहोर (सं० पु०) १ एक प्राचीन देशका नाम। २ उक्त देशका निवासी।

हारा (सं० स्त्री०) १ मद्य, शराब। (पु०) २ चौहान राजपूतोंकी एक शाखा। विशलदेवके वंशधर अजमेरपति माणिकरायसे इस शाखाकी उत्पत्ति हुई है। माणिकरायके वंशधर इष्टपालका गजनीके महमूदके साथ जो युद्ध हुआ उसमें वे बुरी तरह घायल हुए। उनके अंग प्रत्यंगकी हड्डियां जहां तहां गिर पड़ी थीं कहते हैं, कि उनकी रानी सूरवाईने उन सब हाड़ों या हड्डियोंका संग्रह किया तथा देवीकी कृपासे मृत-सञ्जीवनीजलसे इष्टपाल पुनर्जीवित हुए। इस 'हाड़'से 'हाडा' या हारा नाम हुआ है। हारा लोगोंका राज्य ही हारावती कहलाता है।

हारा (हिं० प्रत्यय) १ एक पुरानी प्रत्यय जो किसी शब्दके आगे लगा कर कर्त्तव्य धारण या संयोग आदि सूचित करता है, वाला। (स्त्री०) २ दक्षिणपश्चिमके कोनेकी हवा।

हारावली (सं० स्त्री०) १ हारश्रेणी, मुक्तावली। २ कोषविशेष। पुरुषोत्तमने यह कोष प्रणयन किया।

हारि (सं० स्त्री०) १ पथिक समूह, कारवां। २ हार, पराभव। (त्रि०) ३ रुचिकर, मनोज्ञ। ४ हरण करनेवाला।

हारिकण्ठ (सं० पु०) १ कोकिल, कोयल। (त्रि०) २ हारयुक्त कण्ठ, जिसके गलेमें हार हो।

हारिकर्ण (सं० पु०) हरिकर्णका गोत्रापत्य।

हारिण (सं० त्रि०) हरिणसम्बन्धीय।

हारिणिक (सं० पु०) १ व्याघ्र, बाघ। २ हरिणघातक, हिरणको मारनेवाला।

हारित (सं० पु०) १ पक्षिविशेष, तोता, सूआ। २ एक वर्णवृत्त जिसमें एक तगण और दो गुरु होते हैं। ३ हरिद्वर्ण, हरा रंग। (पु०) ४ हरितके पुत्र राजा हरिश्चन्द्रके पौत्र। (हरिवंश १२.१८)

(त्रि०) ५ हरण कराया हुआ। ६ लाया हुआ, जिसे ले आये हों। ७ छीना हुआ। ८ खोया हुआ, गंवाया हुआ। ९ वञ्चित १० हारा हुआ। ११ मुग्ध, मोहित।

हारितक (सं० क्ली०) शाक।

हारितकात (सं० पु०) हरितकात्यके वंश।

हारितयज्ञ (सं० त्रि०) हरितयज्ञसम्बन्धि।

हारितायन (सं० पु०) हारितका गोत्रापत्य।

हारिद्र (सं० त्रि०) १ हरिद्रारञ्जित, हल्दी रंगमें रंगा हुआ। (पु०) २ हरिद्रावर्ण, पीला रंग। ३ कदम्बवृक्ष। ४ विषभेद इसका पौधा हल्दीके समान होता है और यह हल्दीके खेतोंमें ही उगता है। इसकी गांठ बहुत जहरीली होती है। ५ एक प्रकारका प्रमेह जिसमें हल्दीके समान पीला पेशाब आता है।

हारिद्रक (सं० त्रि०) हारिद्र देखो।

हारिद्रव (सं० पु०) १ हरितालद्रुम, हरितालवर्ण। २ हरिद्रुका शिष्यसम्प्रदाय।

हारिद्राविक (सं० क्ली०) हारिद्रविरचित ग्रन्थभेद।

हारिद्रविन् (सं० पु०) हरिद्रुकी शिष्यपरम्परा।

हारिद्रसन्निपात (सं० पु०) सन्निपात ज्वरविशेष। यह

सन्निपात ज्वर होनेसे समूचा शरीर पीला पड जाता है ।

हारिनाश्वा (सं० स्त्री०) सङ्गीतमें एक मूर्च्छना ।

हारिल (हिं० पु०) एक प्रकारकी चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुलमें कोई लकड़ी या तिनका लिये रहती है। इसका रंग हरा, पैर पीले और चोंच कासनी रंगकी होती है ।

हारिवर्ण (सं० क्ली०) सामभेद । (लाट्या० ६।८।१२)

हारिवास (सं० पु०) देवभेद ।

हारिषेणि (सं० पु०) हरिषेणका गोत्रापत्य ।

हारिषेण्य (सं० पु०) हरिषेणका गोत्रापत्य ।

हारी (सं० त्रि०) १ हरण करनेवाला, छीननेवाला । २ ले जानेवाला, ले कर चलनेवाला । ३ चुरानेवाला, लूटनेवाला । ४ दूर करनेवाला, हटानेवाला । ५ ध्वंस करनेवाला, नाश करनेवाला । ६ उगाहनेवाला, वसूल करनेवाला । ७ जीतनेवाला । ८ मन हरनेवाला, मोहित करनेवाला । ६ हार पहननेवाला । (पु०) १० एक वर्णवृत्त । इसके प्रत्येक चरणमें एक तगण और दो गुरु होते हैं ।

हारीत (सं० पु०) १ पक्षिविशेष । एक प्रकारका कबूतर । इस पक्षीका मांसगुण—रूक्ष, उष्ण, रक्तपित्त और कफनाशक, स्वेद और स्वरवर्द्धक तथा ईषद्वातवर्द्धक ।

२ एक आयुर्वेदशास्त्रकार । चरकमें लिखा है, कि इन्द्रने भरद्वाज ऋषिको अति संक्षेपमें आयुर्वेदशास्त्रका उपदेश दिया । पीछे भरद्वाजने अङ्गिरा आदि ऋषियोंको आयुर्वेदशास्त्र सिखलाया । भरद्वाजकी कृपासे सभी जीवों पर कृपा दरसा कर पुनर्वसुने अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पराशर, हारीत आदिको आयुर्वेदशास्त्रकी शिक्षा दी । उक्त छः व्यक्तियोंने अपने अपने नाम पर छः तन्त्र लिखे । हारीतने जो ग्रन्थ लिखा था, वही हारीतसंहिता कहलाता है । ३ धर्मशास्त्रकार ऋषिविशेष । ४ चोर, लुटेरा । ५ चोरी, लुटेरापन ।

हारीतक (सं० पु०) हारीतपक्षी, परेवा, कबूतर ।

हारीतबन्ध (सं० पु०) छन्दोभेद ।

हारीति (सं० पु०) हारीतके गोत्रापत्य ।

हारीती (सं० स्त्री०) बौद्धतन्त्रके अनुसार एक यक्षिणी । ये षष्ठी देवीकी तरह शिशुओंकी रक्षा करती हैं । ये बराबर सैकड़ों शिशुओंसे घेरी रहती हैं ।

हारुक (सं० पु०) १ हरण करनेवाला, छीननेवाला । २ ले जानेवाला ।

हारुण अल् रसीद—सुविख्यात मुसलमान सम्राट् और पञ्चम खलीफा । ये अब्बासवंशीय तथा अल् महदीके पुत्र थे । बड़े भाई अल हादीके मरने पर ये ७८६ ई०में बोगदादके सिंहासन पर बैठे । जिन सब राजाओंने बोगदादके सिंहासनको अलङ्कृत किया था, उनमेंसे अल रसीद सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक ज्ञानवान् थे । युद्धविग्रह द्वारा मुसलमानी साम्राज्यकी उन्नति नहीं करने पर भी इन्होंने बहुतसे देशहितकर कार्य किये थे और इसीसे इनकी अच्छी प्रसिद्धि हो गई थी । इनके अधिकारकालमें पूर्वपुरुषोंकी तरह मुसलमानी-साम्राज्य उतना विस्तृत तो नहीं हुआ था, पर उससे कहीं अधिक उन्नतिके सोपान पर चढ़ गया था, इसमें सन्देह नहीं । इनके समयमें सुदूर यूरोपके स्पेनराज्यमें ओम्मयवंशके अधीन मुसलमानोंने स्वतन्त्र राजच्छत्र उड़ाया था । ओम्मयवंशीय खलीफा लोग जो सारासेन-समाजमें सम्यक् प्रतिष्ठाभाजन हुए थे, इसमें जरा भी सन्देह नहीं । मुसलमान और सारासेन देखो ।

सिरीया, पालेस्तिन, अरब, पारस्य, अर्मेनिया, नतोलिया, मेदिया या आजर्बेजान, बाबिलोनिया, आसिरिया, सिन्धु, सिजिस्थान, खुरासान, ताब्रिस्तान, जुर्जान, जाबुलिस्तान, मावारुन्नहर अर्थात् ग्रेटबुखारिया, इजिप्त, लिबिया मुरितानिया आदि देश अल रसीदके साम्राज्यभुक्त थे । रोम साम्राज्य अपने उन्नतिकालमें जहां तक फैला था, इनकी राज्यसीमा उससे कहीं अधिक थी तथा उस समय ऐसा शक्तिसम्पन्न सुदृढ़ राज्य और कहीं भी न था । ८०२ ई०में इन्होंने अपना बड़ा राज्य तीन पुत्रोंमें बांट दिया । विशेष विवरण खलीफा शब्दमें देखो ।

८०६ ई०की २४वीं मार्च शनिवारकी शामको २३ वर्ष राज्य करके महात्मा हारुण अल् रसीद इस लोकसे चल बसे । तुष (वर्त्तमान मशहद) नगरमें इनकी लाश दफनाई गई । पीछे इनके लड़के अल अमीन पिताके प्रस्तावानुसार सिंहासनाधिकारी हुए ।

हारुण अल रसीद अत्यन्त विद्योत्साही थे । उनके जमानेमें मुसलमानी समाजमें गणित, विज्ञान, ज्योतिष और सङ्गीत आदि शास्त्रोंकी बड़ी उन्नति हुई । उन्होंने आयुर्वेदादि नाना विषयक ग्रंथ मूल संस्कृतसे अरबी भाषामें अनुवाद करा कर जनसाधारणका बड़ा उपकार

कर दिया था। उन्हींके उद्योग और अध्यवसायसे जो सब प्राच्यविद्या अरबमें लाई गई थी, वही पीछे प्रतीच्य सभ्यतासे स्थानान्तरित हो सुदूर यूरोपमें फैल गई।

हारील (हिं० पु०) हरावल देखो।

हार्डिञ्ज—भारतवर्षके एक बड़े लाट या गवर्नर जनरल। इनका पूरा नाम हेनरी हार्डिञ्ज भाइकाउण्ट था। १७८५ ई०की ३०वीं मार्चको इङ्गलैण्डके केण्टप्रदेशमें डरहम नामक स्थानमें इन्होंने जन्मग्रहण किया। विख्यात ईटन कालेजमें कुछ दिन पढ़नेके बाद १७९८ ई०में ये पताकाधारी रूपसैन्यदलमें प्रविष्ट हुए। पेनिनसुला युद्धके समय इन्होंने कुछ समय वासिंटन सेनाविभागमें काम किया था। पीछे मार्शल बेरेसफोर्डके यत्नसे ये पुर्त्तगीज सेनादलमें क्वाटर मास्टर जेनरलके पद पर नियुक्त हुए। १८०९ ई०में रुणाके युद्धमें बड़ी वीरता और साहसिकता दिखलानेके कारण इन्होंने अच्छा नाम कमाया था। उस महायुद्धमें हार्डिञ्ज उपस्थित थे। अलबेरिया प्रदेशके भिमेरा और भिटोरिया नामक स्थानमें जो घमसान युद्ध छिड़ा था, उसमें ये वृटिश सम्मानकी रक्षा करनेमें बड़ी बुरी तरह घायल हुए थे। इसके बाद १८१५ ई०में विश्वविजयी नेपोलियनके एलवासे भागनेके बाद फिर जब शान्तिभङ्ग हुआ, तब हार्डिञ्ज पुनः असीम साहससे कर्मक्षेत्र पर उतरे थे। इस बार इन्होंने विशेष सम्मानजनक प्रुसीय-सैन्यदलके कमिसारीविभागका कार्य ग्रहण किया। हार्डिञ्ज जिस समय उक्त कार्य पर नियुक्त थे, उसी समय १८१५ ई०की १६वीं जूनको युद्धक्षेत्रमें इन्हें हठात् एक गोली लगी जिससे बायां हाथ कट गया। इस कारण उसके दो दिन बाद वे विख्यात वाटरलूके युद्धमें उपस्थित न रह सके। बायां हाथ नष्ट हो जानेसे गवर्मेण्टने इनकी १०० पौण्ड वृत्ति स्थिर कर दी। उसी साल इन्हें के० सी, बी, यह सम्मानजनक उपाधि मिली। १८२० और १८२६ ई०में डरहमवासियोंकी चेष्टासे हार्डिञ्ज पार्लियामेण्टके सभ्यपद पर निर्वाचित हुए। १८२६ ई०में वासिङ्गटनकी मन्त्रिसभामें इन्होंने युद्ध-सचिवका पद ग्रहण किया। १८४१ ई०से १८४३ ई० तक पिलके मन्त्रित्वकालमें इन्होंने उक्त पद ग्रहण कर बड़ी योग्यताके साथ कार्य चलाया था। १८३० और १८३४ ई०में ये आय-लैंण्डके चीफ सिक्रेटरी हुए। इसके बाद ही ये भारतवर्ष आये और १८४४ ई०में लार्ड एलेनबराके बाद भारतमें गवर्नर जनरलके पद पर अधिष्ठित हुए। बड़े लाट हो कर कठिनसे कठिन कामोंकी ओर इनका ध्यान दौड़ा। इन्होंने पहले पहल देशी सेनाओंको आभ्यन्तरिक असन्तुष्टि निवारण और उसके साथ साथ उन्हें कठिन शासन पाशमें आबद्ध रखनेकी व्यवस्था की। शिक्षाविभागकी उन्नति तथा वाष्पीययान और लौहवर्त्मसंस्थापनकी ओर भी इनका विशेष यत्न था। जिस समय ये इन सब देशहितकर कार्योंमें उलझे हुए थे, उस समय पञ्जाबप्रदेशमें काली घटा उमड़ रही थी। पञ्जाबपति रणजित्‌सिंहके १८०९ ई०में मरने पर बड़ा गोलमाल खड़ा हो गया। उनके लड़के खड्गसिंह पितृसिंहासन पर बैठे। पिताका एक भी गुण उनमें नहीं था। वे अपने पुत्र नवनेहाल सिंहके अधीन नाममात्रको राजा थे। दुर्भाग्यवशतः यह उद्धत युवक अपने पितामहकी तरह वृटिश गवर्मेण्टके साथ सद्भाव नहीं रख सका।

थोड़े ही समयमें नवनेहालकी मृत्यु और शेरसिंहकी सिंहासन प्राप्तिके साथ राजशक्तिके परिवर्त्तन, विद्रोहिता और अत्याचारका स्रोत लाहोरमें बहने लगा। बड़े लाट हार्डिञ्ज पहले हीसे ताड़ गये थे, इस कारण इससे बचनेके लिये भीतर ही भीतर कुल कार्रवाई कर रहे थे। १८४५ ई०की २री दिसम्बरको वे पहले अम्बाला आये और वहांसे ६ठी दिसम्बरको लुधियाना चल दिये। १३वीं दिसम्बरको उन्हें खबर मिली, कि सिखसेनादल शतद्रु पार कर उसके बाएं किनारे वृटिश अधिकारभुक्त एक स्थान पर छावनी डाले हुए है। उसी दिन बड़े लाट हार्डिञ्जने इस मर्म पर एक घोषणापत्र निकाला, कि सिखसेनाने बिना किसी कारणके वृटिशराज्य पर आक्रमण कर दिया है, इस कारण भारतशासनकर्त्ता गवर्नर जेनरलके वृटिश अधिकाररक्षाके यथायोग्य उपाय अवलम्बन करने बाध्य कर रहे हैं।

बस फिर क्या था, दोनों पक्षमें युद्ध छिड़ गया। इस समय बड़े लाट हार्डिञ्ज स्वयं उपस्थित रह कर लेफ्टेनाण्ट जेनरल काम कर रहे थे। इस भीषण युद्धमें वृटिश सेनाको अनेक बार विपद्ग्रस्त होना पड़ा था। प्रधान

अंगरेज सेनापतिने अपने ही मुखसे अनेक वार स्वीकार किया है, कि इस युद्धमें हार्डिंञ्जने यथेष्ट कार्यदक्षताका परिचय दिया है। उनके अद्भुत साहस और प्रत्युत्पन्न मतित्वके गुणसे वृटिश सेना कई वार विपद्के हाथसे रक्षा पाई है। ऐतिहासिकोंका कहना है, कि भारतीय इतिहासमें वृटिश सेनाको और कभी भी ऐसी घोर विपद्का सामना नहीं करना पड़ा है और न किसी बड़े लाटको भी ऐसे दृढ़ साहसके साथ सङ्कटके हाथसे छुटकारा पा कर युद्धमें विजयी होते देखा गया है।

सोवरावन-युद्धका पराजय संवाद जब लाहोर पहुंचा तब सिख लोग हताश हो गये। जयकी आशा बिलकुल न देख उन लोगोंने संधिका प्रस्ताव किया। गुलाब सिंह बड़ी चतुरतासे दोनों ही पक्षको आज तक संतुष्ट रखते आ रहे थे। अब वे उच्च आशासे उत्साहित हो गवर्नर जेनरल हार्डिञ्जके साथ मिलने आये। उस समय हार्डिञ्ज कसुमरमें रहते थे। १५वीं फरवरीको हार्डिंञ्जके साथ उनकी भेंट हुई। हार्डिंञ्जने सन्धिका जो प्रस्ताव उठाया, उस पर गुलाबसिंह राजी हो गये। परन्तु एक विषय ले कर मतभेद उपस्थित हुआ। गुलाब सिंहने कहा, कि वृटिश सेनाको इसी स्थानमें छावनी डाल कर रहना होगा, राजधानीके पास जाना नहीं होगा। हार्डिंञ्जने इसे मंजूर नहीं किया। उन्होंने बड़ी दृढ़तासे कहा, कि यदि उन्हें संधिपत्र पर स्वाक्षर करना होगा, तो वे लाहोरमें बैठ कर ही करेंगे। गुलाबसिंह बाध्य हो कर आखिर उसी पर सहमत हो गये। २२वीं फरवरीको वृटिश सेनाने लाहोर अधिकार किया। परन्तु गुलाबसिंहके अनुरोधसे और पुनर्सन्धिकी खातिरसे हार्डिंञ्जने केवल इतना ही किया, कि जहां रणजित्‌सिंहके परिवार रहते थे अर्थात् राजप्रासादकी सीमामें वृटिश-सेना नहीं रहेगी।

१८४६ ई०को १३वीं मार्चको अमृतसरमें सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किया गया। दलीपसिंह महाराज चुने गये, परन्तु विपाशा और शतद्रुके मध्यवर्ती जालन्धर दोआब वृटिश शासनाधीन रहा। गुलाबसिंह देखो।

इस प्रकार सिखयुद्ध शेष होनेके बाद बाकी जितने समय तक हार्डिंञ्ज बड़े लाटके पद पर अधिष्ठित रहे उतने थोड़े समयमें उन्होंने राजकीय साधारण कार्योंकी उन्नतिके लिये भी यथेष्ट बुद्धिमत्ता और शक्तिका परिचय दिया था। एक विषयके लिये ये भारतके खृष्टान सम्प्रदायके निकट चिरपरिचित हो गये हैं। इनके पहले रविवारको भी सरकारी कामकाज बंद नहीं रहता था, परन्तु हार्डिंञ्जने उसे बंद कर दिया। शिक्षा सम्बन्धमें भी इन्होंने नई पद्धति चलाई थी। वे गुणके विशेष पक्षपाती थे। इनके समय देशी राजकर्मचारियोंको यह अच्छी तरह मालूम हो गया था, कि केवल एक अक्षमताके सिवा अच्छे अच्छे कामकाज पानेमें उन्हें और कोई अड़चन नहीं है। ऐसी समदर्शिताके कारण हार्डिंञ्जकी अच्छी प्रसिद्धि हो गई थी। इसके पहले अफगान युद्धमें वृटिश सरकारके बहुत रुपये खर्च हो गये थे। इस कारण अर्थादि सम्बन्धमें भी गवर्मेण्टको विशेष क्षतिग्रस्त होना पड़ा था। हार्डिंञ्जने उस क्षतिकी भी पूर्ति कर दी थी। उस समयकी रेलवे कम्पनीको भी इनसे बड़ा उपकार हुआ था। इस प्रकार राज्यकी नींव मजबूत कर देनेसे राजस्वका परिमाण भी पहलेसे कहीं अधिक बढ़ गया था। इसके पहले राजसरकारमें स्वेच्छाचारिता, ईर्षा और विद्वेष तमाम विराजता था। हार्डिंञ्जने वह उच्छृङ्खलता दूर कर शान्ति स्थापन कर दी थी। साहसिकता, वदान्यता और बहुदर्शिता, इन तीनों ही गुणोंसे वे विभूषित थे। सिखयुद्ध शेष होने पर शान्तिस्थापनके बाद इन्होंने भाइकाउण्टकी उपाधि पाई तथा गवर्मेण्टसे इन्हें तीन हजार पौण्ड वृत्ति मिली। ईष्ट इण्डियन कम्पनीने भी वार्षिक ५००० पौण्ड देनेकी व्यवस्था कर दी। १८४८ ई०में ये इङ्गलैण्ड लौटे तथा १८५२ ई०में ड्यूक आव वेलिङ्गटनके स्थान पर वृटिश सेनाके प्रधान अधिनायकके पदको प्राप्त हुए। इनके सेनानायकत्व कालमें ही क्रिमियायुद्ध हुआ और आपसमें मेल करानेका भार भी इन्होंने लिया। १८५५ ई०में इन्होंने फिल्ड मार्शलका उच्च पद पाया, परन्तु इस समय इनका स्वास्थ्य बिगड़ जानेसे ये १८५६ ई०में प्रधान सेनापतिका पद छोड़ देनेको बाध्य हुए। उसी सालकी १४वीं सितम्बरको वेलस नामक प्रदेशके निकटवर्ती तानब्रीज स्थानमें अपने घरमें ही इनका देहान्त हुआ।

हार्य्य (सं० क्ली०) हर्त्ताका भाव या कर्म, हर्त्ताका कार्य्य, हरण।

हार्तृ'र (सं० पु०) हर्तृका गोत्रापत्य।

हार्द (सं० क्ली०) १ हेम। २ स्नेह। ३ अभिप्राय। ४ हृदयवेध। (त्रि०) ४ हृदयस्थ, हृदयका।

हार्दवत् (सं० त्रि०) प्रेमयुक्त, स्नेहविशिष्ट।

हार्दि (सं० क्ली०) हृदयमें अवस्थित रक्षण।

हार्दिक (सं० त्रि०) १ हृदय संबंधी, हृदयका। २ हृदयसे निकला हुआ, सच्चा।

हार्दिक्य (सं० पु०) मित्रभाव, मित्रता। २ हृदिकके गोत्रापत्य।

हार्दिन् (सं० त्रि०) स्नेहयुक्त।

हार्द्दन् (सं० त्रि०) हृदयप्रिय। (शुक्लयजु० ३८।१२)

हार्य्य (सं० पु०) १ विभीतक वृक्ष, बहेडे का पेड। (त्रि०) २ हरणीय, छीनने या लेने योग्य। ३ जो हरण किया जानेवाला हो, जो लिया या छीना जानेवाला हो। ४ जो हिलाया या इधर उधर किया जानेवाला हो। ५ जिसका अभिनय किया जानेवाला हो। ६ हरणीयाङ्क, जो भाग दिया जानेवाला हो। ७ ग्राह्य, स्वीकार करनेयोग्य। ८ त्याज्य, छोड़ने योग्य। ९ वहनीय, ले जाने योग्य। १० निवार्य्य, रोकने योग्य।

हार्य्यश्व (सं० पु०) हर्य्यश्वका गोत्रापत्य।

हार्य्या (सं० स्त्री०) एक प्रकारका चंदन।

हाल (सं० पु०) १ बलराम। २ शालिवाहनरूप। ३ हल, लाङ्गल। ४ अवस्था, हालत।

हाल (अ० पु०) १ परिस्थिति, माजरा। २ संवाद, समाचार। ३ अवस्था। ४ इतिवृत्त, ब्योरा, विवरण। ५ कथा, आख्यान। ६ ईश्वरके भक्तों या साधकोंकी वह अवस्था जिसमें वे अपनेको बिलकुल भूल कर ईश्वरके प्रेममें लीन हो जाते हैं। (त्रि०) ७ वर्तमान, चलता। (अव्य०) ८ इस समय, अभी। ९ शीघ्र, तुरन्त। (हिं० स्त्री०) १० लोहेका बन्द जो पहियेके चारों ओर घेरेमें चढ़ाया जाता है। (अं० पु०) ११ बहुत बड़ा कमरा, खूब लम्बा चौड़ा कमरा।

हालक (सं० पु०) पीत हरितवर्ण अश्व, पीलापन लिये भूरे रंगका घोडा।

हालगोला (हिं० पु०) गेंद।

हालडाल (हिं० पु०) १ हिलनेकी क्रिया या भाव। २ कम्प। ३ हलकम्प, हलचल।

हालत (अ० स्त्री०) १ दशा, अवस्था। २ आर्थिक दशा, जीवन निर्वाहकी गति। ३ चारों ओरकी वस्तुओं और व्यापारोंकी स्थिति, संयोग।

हालरा (हिं० पु०) १ बच्चोंको हाथमें ले कर हिलाना डुलाना। २ झोंका। ३ लहर, हिलोर।

हालहल (सं० क्ली०) विषभेद।

हालहाल (सं० क्ली०) विषभेद।

हालहुल (हिं० स्त्री०) १ हल्लागुल्ला, शोर गुल। २ हलकम्प, हलचल।

हालांकि (फा० अव्य०) यद्यपि, जो कि।

हाला (सं० स्त्री०) हल-धञ् टाप्। मद्य, मदिरा, शराब।

हाला—१ बम्बई विभागके अधीन हैदराबाद जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २५' ८से २६'१५' उ० तथा देशा० ६८ १६'३०' से ६६' ७७' पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें नौशहर महकमा, पूर्वमें थर और पार्कर, दक्षिणमें हैदराबाद तालुक और पश्चिममें सिन्धु है। भूपरिमाण २१२१ वर्गमील है। इसमें ४ तालुक, ५७६ ग्राम और ६ शहर लगते हैं।

२ उक्त उपविभागका एक तालुक। यह अक्षा० २५' २२' से २६' ६' उ० तथा देशा० ६८' १६'से ६८' ४३' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ५०३ वर्गमील और जनसंख्या लाखके करीब है। इसमें हाला और मतियारी नामक २ शहर और १०३ ग्राम लगते हैं। बाजरा, तमाकू और रुई यहांकी प्रधान उपज है।

३ हाला तालुकका एक शहर। यह अक्षा० २५' ४६' उ० तथा देशा० ६८' २८' पू०के मध्य अवस्थित है। जनसंख्या ५ हजारके लगभग है। नया शहर १८०० ई०में अलीगञ्ज नहरके किनारे बसाया गया है। १८५६ ई०में यहां म्युनिसपलिटी स्थापित हुई है। शहरमें मिट्टीके अच्छे अच्छे बरतन बनते हैं। सुईस नामक रेशमी कपड़ा यहांका प्रधान वाणिज्य द्रव्य है। शहरमें पीर महम्मदकी कब्र, एक अस्पताल, एक सब जजकी अदालत और एक स्कूल है।

हालानो—हैदराबाद जिलान्तर्गत नौशहर महकमेके अन्तर्गत एक शहर। इसी शहरके पास तालपुरसेनाने

कल्हौराके अन्तिम वंशधरोंको परास्त किया था। युद्धमें जिनकी मृत्यु हुई थी उनकी कब्र आज भी युद्धक्षेत्रमें देखी जाती है।

हालाह (सं० पु०) चित्रवर्ण घोटक, चीता घोड़ा।

हालाहल (सं० पु० क्ली०) १ विषभेद, अति भयानक विष। जिस विषवृक्षका फल द्राक्षाके समान गुच्छाकार, पत्र तालपत्र सदृश तथा जिसके तेजसे आस पासके वृक्षादि दग्ध हो जाते हैं, उसे हालाहल विष कहते हैं। यह विष किष्किन्धा, हिमालय, दक्षिण समुद्रकी तीरभूमि तथा कोङ्कणप्रदेशमें उत्पन्न होता है। २ कीटभेद, एक प्रकारका कीड़ा।

हालाहलधर (सं० पु०) सर्प, सांप।

हालाहला (सं० स्त्री०) क्षुद्र मूषिक, छोटी चुहिया।

हालाहली (सं० स्त्री०) मदिरा, शराब।

हालिक (सं० त्रि०) १ हल-सम्बन्धी। (पु०) २ कृषक, किसान, खेतिहर। ३ एक प्रकारका छन्द। ४ पशुओंका वध करनेवाला, कसाई।

हालिङ्ग (सं० पु०) हालिङ्गुके गोत्रापत्य।

हालिडे—बङ्गालके सर्वप्रथम छोटे लाट। १८५४से १८५९ ई० तक ये लेफ्टिनाण्ट गवर्नरके पद पर अधिष्ठित थे। ये विचक्षण और कार्यकुशल रह कर सर्वत्र सम्मानित हुए।

हालिनी (सं० स्त्री) स्थूलपल्ली, एक प्रकारकी छिपकली।

हालिम (हिं० पु०) एक प्रकारका पौधा। इसके बीज औषधके काममें आते हैं। इसे चंसुर या दालो भी कहते हैं। यह सारे एशियामें लगाया जाता है। इसके बीजोंसे एक प्रकारका सुगन्धित तेल निकलता है। बीज बाजारमें बिकते हैं और पुष्ट माने जाते हैं। ग्रहणी और चर्मरोगमें भी इनका व्यवहार होता है।

हालिशहर या हवेलीशहर—नदिया और २४ परगनेके अन्तर्गत एक परगना और उसके अन्दर एक प्राचीन गांव। गांवका दूसरा नाम कुमारहट्ट है। पहले यह एक बहुजनाकीर्ण शहर गिना जाता था। कुमारहट्ट देखो।

हाली (अ० अव्य०) शीघ्र, जल्दी।

हालु (सं० पु०) हल-उण्। दन्त, दांत।

हालूक (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी भेड़। यह तिब्बतके पूरबी भागमें होती और इसका ऊन बहुत अच्छा होता है।

हालो (हिं० पु०) हालिम देखो।

हाल्ट (अं० पु०) दल या सेनाका चलते हुए ठहर जाना, ठहराव। मार्च करती हुई या चलती हुई सेनाको ठहरानेके लिये यह शब्द जोरसे बोला जाता है।

हाव (सं० पु०) १ पास बुलानेकी क्रिया या भाव, पुकार, बुलाहट। २ संयोग समयमें नायिकाकी स्वाभाविक चेष्टाएं जो पुरुषको आकर्षित करती हैं। साहित्यमें ग्यारह हाव गिनाये गये हैं—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, विब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला। भाव-विधानमें हाव अनुभव के ही अन्तर्गत हैं।

हावक (सं० पु०) हवन या यज्ञ करानेवाला।

हावड़ा—बङ्गालके वर्द्धमान विभागके हुगली जिलेका एक छोटा जिला। यह अक्षा० २२° १३' से २२° ४७' उ० तथा देशा० ८७° ५१' से ८८° २२' पू०के मध्य विस्तृत है। भूपरिमाण ५१० वर्गमील है। इसके उत्तरमें हुगली जिला, पश्चिम रूपनारायण नदी और पूर्वमें हुगली नदी है।

इस जिलेमें २ शहर और १४५१ ग्राम लगते हैं। जनसंख्या ८ लाखसे ऊपर है। यहां ६० सिकेण्ड्री, ८५० प्राइमरी और ६० स्पेशल स्कूल हैं। इनमेंसे शिवपुरका सिविल इञ्जिनियरिङ्ग कालेज सर्वप्रधान है। स्कूलके अलावा हावड़ा शहरमें एक बड़ा स्पताल और ५ चिकित्सालय हैं।

२ हावड़ा जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३०' से २२° ४२' उ० तथा देशा० ८८° २' से ८८° २२' पू० के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण १७३ वर्गमील और जनसंख्या ५ लाखके करीब है। इसमें हावड़ा और बाली नामक २ शहर और ३६५ ग्राम लगते हैं।

३ हावड़ा जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २२° ३५' उ० तथा देशा० ८८° २१' पू०के मध्य विस्तृत है। १८वीं सदीमें यह स्थान एक सामान्य ग्राम समझा जाता था। १७८५ ई०में लोसेट साहबने इसे दखल किया। पीछे उन्होंने बोर्ड आव रेभेन्युको यह स्थान दे दिया। अनन्तर कलकत्तेकी समृद्धिके साथ ही साथ हवड़ाकी भी श्रीवृद्धि हुई। अभी यहां एक स्वतन्त्र मजिस्ट्रेट और दीवानी अदालत है। शहरमें एक बड़ी म्युनिसपलिटी है। हावड़ा शहरके साथ शिवपुर और रामकृष्णपुर उक्त म्युनिस्पलिटीके अधीन हैं। यहां इष्ट इण्डिया और बङ्गाल-नागपुर रेलवेका एक बड़ा स्टेशन है। इसके सिवा

बहुतसे कलकारखाने; हाट बाजार आदि भी हैं। कलकत्तेके तरह इस शहरकी भी जनसंख्या और भी दिन पर दिन बढ़ती ही है।

हावनदस्ता (फा० पु०) खरल और बट्टा, खल लोढ़ा।

हावनोय (सं० त्रि०) हवन कराने योग्य।

हावभाव (सं० पु०) स्त्रियोंकी वह चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकृष्ट होता है, नाज नखरा।

हावर (हिं० पु०) एक प्रकारका छोटा पेड़। यह अवध, राजपूताने, मध्यप्रदेश और मद्रासमें बहुत होता है। इसकी लकड़ी मजबूत, वजनी और भूरे रंगकी होती है और खेतीके सामान (हल, पटे आदि) बनानेके काममें आती है।

हावलक—वृटिश सैन्यदलमें तीन हावलक भाई कर्मचारी थे। विलियम हावलक रामनगरमें सिखों पर आक्रमण करने गये और वहीं मारे गये। बिशपवियरमाउथमें १७९५ ई०को हेनरी हावलकका जन्म हुआ। वे १८२३ ई०में भारतवर्ष पधारे। पहले वे डिपटी अडजुटाण्ट जेनरलका पद पा कर ब्रह्मयुद्धमें गये थे। ब्रह्मदेशमें इन्होंने जो कुछ देखा था उसे वे एक पुस्तकमें लिख गये हैं। १८२९ ई०में रेभरेण्ट मार्शमनकी छोटी लड़की हाना सेपहार्डके साथ इनका विवाह हुआ। वे पूर्णिया और महाराजपुरके युद्धमें उपस्थित थे। १८५७ ई०को पारस्ययुद्धमें यह एक सैन्यदलके सेनापति पद पर नियुक्त हुए। सिपाहिविद्रोहके समय इन्होंने फतेपुर और आउङ्ग-युद्धमें साथ दिया था उसी सालके सितम्बर मासमें इन्होंने कानपुर युद्धमें सिपाहियोंको परास्त कर कानपुर जीता था। लखनऊ जीतने पर इनकी अच्छी प्रसिद्धि हो गई थी। उस युद्धमें इनके सहचर आनर्ड असीम साहससे शत्रुओंके साथ लड़ कर गोलीके शिकार बने। हावलकने सिपाहीयुद्धमें अपनी वीरताका जो परिचय दिया था उससे ये वृटिश सरकारके बड़े सम्मानभाजन हुए थे।

हावला बावला (हि० पु०) पागल, सनकी।

हाविर्धानि (सं० पु०) हविर्धानके गोत्रापत्य।

हाविष्कृत (सं० क्ली०) सामभेद।

हाबुरा—गङ्गा और यमुनाको अन्तर्वेदीकी मध्यस्थलवासी नीच जातिविशेष। चोरी करना ही इनका प्रधान उपजीविका है। इसी उद्देशसे ये लोग नाना स्थानोंमें भ्रमण किया करते हैं। इस जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें नाना प्रकारकी किंवदन्ती सुनी जाती है। एक शाखाका कहना है, कि इनके पूर्वपुरुषका नाम रिग था। वे आखेटमें बाहर जा कर एक खरहेके पीछे दौड़े और एक वनसे दूसरे वनमें घूमते घूमते आखिर उसी वनमें आ पड़े जिसमें सीता जी निर्वासित हुई थीं। शान्तिप्रिय सीताने जीवहिंसासे क्षुब्ध हो रिगको शाप दिया कि बिना कारणके जिस प्रकार तुम खरहेको मारने कमर कसे हो उसी प्रकार तुम्हारी वंशपरम्परा मृगयामें वन वन घूम कर दिनपात करेगी।

पूर्व कालमें ये लोग अन्यान्य निकृष्ट जातियोंकी कन्या हरण कर उनसे विवाह कर लेते थे। जबसे यह अवैध अत्याचार रोकनेके गवर्मेण्टकी दृष्टि पड़ी, तबसे उन लोगोंने इसे रोकनेकी चेष्टा की, परन्तु इस चेष्टाके फलसे भी वे लोग आज तक अन्यान्य निकृष्ट जातियोंकी परित्यक्ता स्त्रीको अपने समाजमें ले कर उनसे विवाह करते आ रहे हैं। बिजनौरके हाबुरा समाजमें प्रकृत हाबुरा गर्भजात सन्तानकी अपेक्षा दूसरे समाजसे ली गई स्त्रीकी सन्तान निकृष्ट समझी जाती है।

एक हाबुरा कन्याके विवाहमें वरकर्त्ताको २५) रु० कन्यापण देना होता है। इसके अलावा भोजका कुल खर्चा भी वह देनेको बाध्य है। इनके समाजमें चरित्रहीनताका दोष अधिक देखा जाता है।

इनके स्वजातीय बिचौलिया विवाहसम्बन्ध ठीक करते हैं। वे लोग वरके पितासे दो रुपये ले कर कन्याके पिताके पास जाते और विवाहकी बात छेड़ते हैं। कन्याका पिता राजी हो जाने पर वह रुपया ले लेता है और उसीसे विवाहसम्बन्ध पक्का समझा जाता है। एटा जिलेमें इन लोगोंकी विवाहपद्धति कुछ और प्रकार की है। वहां वर और कन्यापक्षके आत्मीय कुटुम्बके एकत्र होने पर एक आदमी अकस्मात् घोड़े पर चढ़ विवाहसभासे दूर मैदानमें चला जाता है। उस समय सभी नर नारी उसका पीछा करती हैं। केवल वर और कन्या वहां रह जाती है। सबोंके चले जाने पर वर कन्याका हाथ पकड़ पास वाले पर्णकुटीरमें जा सोता है। यह सहवास ही विवाहबन्धनका प्रकृष्ट नियम है। अनन्तर आत्मीयवर्ग लौट कर नाच गान और नाना आनन्दोत्सव करते हैं। विधवाविवाहकी प्रथा अन्यान्य निकृष्ट जातिकी तरह है।

इन लोगोंकी अन्त्येष्टिपद्धति कुछ भी नहीं है। कहीं लाशको जलाते, कहीं जमीनमें गाड़ते और कहीं जंगलमें लाश रख कर अन्तिम सत्कार करते हैं। दाहकालमें अग्निसंयोगके पहले ये लोग प्रेतके उद्देशसे पिण्ड या पिष्टक चढ़ाते हैं। मृताहके बाद प्रथम सोमवार या वृहस्पतिवारको शोकार्त्त आत्मीय क्षौरकर्म समाप्त कर शवबाहियोंको भोज देते हैं। द्वादशाहमें ब्राह्मणोंको अपक्व वस्तु खिला कर आत्मीय स्वजनोंको भोज देते हैं। पीछे प्रतिवर्ष आश्विन मासके पितृपक्षमें मृत व्यक्तिके उद्देश्यसे तर्पण और श्राद्ध करते हैं तथा उसका नाम ले कर जमीन पर एक अञ्जलि जल फेंकते हैं।

ये लोग अपनेको हिन्दू बतलाते हैं, परन्तु किसी भी धर्मकार्यमें ब्राह्मणोंकी सहायता नहीं लेते। बालकोंकी उमर बारह वर्ष हो जाने पर पिता पहले उन्हें योग धर्ममें दीक्षित करता है। पीछे सौर धर्मका उपदेश देता है। जब बालक सुशिक्षित हो जाते हैं तब छोड़ दिये जाते हैं। ये लोग साधारणतः काली और भवानीकी पूजा करते हैं। आश्विन और चैत्रमासमें मथुराके हाबुरा ग्राम्य केला देवीकी पूजा करते हैं तथा देवीके उद्देशसे बकरे, भैंसे आदिकी बलि चढ़ाते हैं। साधारणतः घरके आगनमें ही बलि होती है। गङ्गास्नान ये लोग पुण्यजनक समझते हैं। मथुराका दाउजी मन्दिर इनका प्रधान पुण्यस्थान है। गायको ये लोग भगवती समझते हैं। इस कारण कोई भी गोमांस नहीं छूता।

बीमार पड़ने पर ये लोग औषध आदिका उतना सेवन नहीं करते। इस समय देवी भवानी अथवा जाहिर पीरकी पूजा, उपवास आदिकी मन्नत की जाती है। उन लोगोंका विश्वास है, कि पूर्वपुरुषोंकी प्रेतात्माके बिगड़नेसे ये सब रोग होते हैं।

निम्न श्रेणीके हाबुरा हमेशा चोरी डकैती किया करते हैं। इस समय जब पुलिस उन्हें पकड़नेकी कोशिश करती है, तब वे आत्मरक्षाकी चेष्टाके सिवा और किसी प्रकारका अत्याचार नहीं करते। किसीके पकड़े जाने पर वह कभी भी अपने साथीका नाम नहीं खोलता। दलके लोग उसके परिवारका प्रतिपालन करता है जब कोई निरीह व्यक्ति पकड़ा जाता है, तब दोषी व्यक्ति ही उसके परिवारको पालन करनेके लिये बाध्य है

चोरी करती समय ये लोग कुछ साङ्केतिक भाषाका व्यवहार करते हैं।

हावेरी—बम्बई-प्रदेशके धारवाड़ जिलान्तर्गत एक शहर। यह अक्षा० १४° ४७´ उ० तथा देशा० ७५° २८´ पू०के मध्य विस्तृत है। जनसंख्या ८ हजारके लगभग है। यहां चार मन्दिर और एक धर्मशाला है। १८७६ ई०में म्युनिस्पलिटी स्थापित हुई है। शहरमें एक सबजजकी अदालत, अस्पताल, म्युनिसिपल मिडिल स्कूल और चार दूसरे दूसरे स्कूल हैं। रूई यहांका प्रधान वाणिज्य द्रव्य है

हास (सं० पु०) हस घञ्। १ हसनेको क्रिया या भाव हंसी। २ परिहास, दिल्लगी, मजाक। ३ निन्दाका भाव लिये हुए हंसी, उपहास। (त्रि०) ४ श्वेत वर्ण, उज्ज्वल।

हासक (सं० पु०) हसनेवाला।

हासकर (सं० त्रि०) हंसानेवाला, जिसमें हंसी आवे।

हासन (सं० पु०) १ हंसाना। २ हंसानेवाला।

हासनिक (सं० पु०) विनोद या क्रीडाका साथी।

हासवती (सं० स्त्री०) तान्त्रिक बौद्धोंकी एक देवी।

हासशील (सं० त्रि०) हंसानेवाला, हंसोड़ा।

हासस् (सं० पु०) चन्द्रमा।

हासिका (सं० स्त्री०) हास्य। (हेम)

हासिद (अ० वि०) हसद करनेवाला, डाह करनेवाला।

हासिन (सं० त्रि०) १ हंसनेवाला। (पु०) २ श्वेत, सफेद।

हासिनी (सं० स्त्री०) अप्सरा। (भारत)

हासिल (अ० वि०) १ प्राप्त, पाया हुआ। (पु०) २ गणित करनेमें किसी संख्याका वह भाग या अंक जो शेष भाग-वहीं रखे जाने पर बच रहे। ३ उपज, पैदावार। ३ लाभ, नफा। ५ जमा, लगान, वसूली। ६ गणितकी क्रियाका फल।

हासिलपुर—मध्य भारतके इन्दोर राज्यान्तर्गत हासिलपुर परगनेका एक शहर। यह भानपुरसे ५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहां पानकी खेती खूब होती है, दूसरे दूसरे देशोंमें इसकी रफतनी होती है। आईन-इ-अकबरीमें हासिलपुर परगनेका उल्लेख है।

हासुआ—गया जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २४°५०´ उ० तथा देशा ८५°२५´के मध्य तिलियाके दाहिने किनारे अवस्थित है। जनसंख्या ७ हजारके करीब है। साउथ बिहार

रेलवेका यहां एक स्टेशन है। मिट्टीके अच्छे अच्छे बरतन बननेके कारण शहर मशहूर है।

हास्त (सं० त्रि०) हस्त-सम्बन्धी, ।

हास्तिक (सं० क्ली०) १ हस्तिसमूह, हाथीका झुंड। २ हस्त्यारोह, हाथी पर चढ़ना।

हास्तिदन्त (सं० त्रि०) हस्तिदन्त-सम्बन्धी, हाथी दांतका।

हास्तिदायि (सं० पु०) हस्तिदायके गोत्रापत्य।

हास्तिन (सं० क्ली०) १ हस्तिनापुर। (त्रिका०) हस्तीप्रमाण मत्स्य। २ गज भर। (त्रि०) ३ हस्त या हस्ति-सम्बन्धी।

हास्तिनपुर (सं० क्ली०) हस्तिनापुर। (भारत ६।३५।६)

हास्तिनायन (सं० पु०) हस्तीके गोत्रापत्य।

हास्य (सं० क्ली०) हस-ण्यत्। १ हंसनेकी क्रिया या भाव, हंसी। २ नौ स्थायी भावों और रसोंमें से एक। कौतुक द्वारा इस रसका उद्भव होता है।

विकृत आकार, वाक्य, वेश और हाव भावसे हास्य रसका उद्भव हुआ करता है अर्थात् नट जब वाक्य, वेश और आकृति आदिकी विकृति कर जब अभिनय करता है तब इस हास्यरसकी उत्पत्ति होती है। हास्यरसका हास स्थायिभाव है, वर्ण शुभ्र है और देवता प्रथम हैं। ज्येष्ठके स्मित और हसित मध्यके विहासित और अवहसित तथा नीचके अपहसित और अतिहासित यही छः प्रकारके भेद हास्यके कहे गये हैं।

हास्यरसका साक्षात् रूपसे वर्णन नहीं किया जाता; विभावादि सामर्थ्य द्वारा इसकी उपलब्धि हुआ करती है।

"अभेदेन विभावादिः साधारण्यात् प्रतीयते।
सामाजिकैस्ततो हास्यरसोऽयमनुभूयते॥"

भयानक और करुणरसके साथ हास्यरसका विरोध है। उक्त दोनों रसोंका वर्णन करनेमें हास्यरसका वर्णन नहीं करना होता है। विरोधी रसका वर्णन करनेसे रस भङ्ग होता है। (साहित्यद० ३।२४२)

गरुडपुराणमें लिखा है, कि अकम्प अर्थात् जिस हंसीसे शिरःकम्पादि नहीं होता वह श्रेष्ठ तथा मिलिताक्ष अर्थात् दोनों आंख मिला कर जो हंसी होती है वह पापनाशक और वार वारकी हंसी निंदित है।

कुलललनाओंके होठमें हंसी रहती है, पर बाहरके लोग देखने नहीं सकते। यही हास्य श्रेष्ठ है। अट्टहासको विशेष निन्दित कहा है। मृदु और मधुर हास्य ही श्रेष्ठ और हास्यके उपयुक्त है।

३ उपहास, निन्दापूर्ण हंसी। ४ ठट्ठा, मजाक। (त्रि०) ५ हंसने योग्य, जिस पर लोग हंसे। ६ उपहासके योग्य।

हास्यकथा (सं० त्रि०) हास्यकर देखो।

हास्यकर (सं० त्रि०) हंसानेवाला, जिसमें हंसी आवे।

हास्यकार (सं० त्रि०) हास्यकर देखो।

हास्यकृत् (सं० त्रि०) हास्यकार, हंसानेवाला।

हास्यरस (सं० पु०) काव्यकी हास्यात्मक रस। हास्य देखो।

हास्यवदन (सं० त्रि०) १ हास्ययुक्त मुखविशिष्ट। (क्ली०) २ हास्ययुक्त मुख।

हास्यास्पद (सं० पु०) १ हास्यका स्थान या विषय, वह जिसे देख कर लोग हंसे। २ उपहासका विषय, वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हंसी उड़ावे।

हास्योत्पादक (सं० त्रि०) जिससे लोगोंको हंसी आवे, उपहासके योग्य।

हाहस (सं० पु०) देवगन्धर्वविशेष।

हाहंत (सं० अव्य०) अत्यन्त शोकसूचक शब्द।

हाहा (सं० पु०) देवगन्धर्वविशेष। हाहा, हूहू और तुम्बुरु शब्द देवगन्धर्वपदवाच्य हैं। (अव्य) २ विस्मय और शोकवाचक शब्द। हाहा इस शब्दका प्रयोग करनेसे शोक और विस्मय समझा जाता है। ३ सम्भ्रम सूचक शब्द, शोकध्वनि।

हाहा (हिं० पु०) १ हंसनेका शब्द, वह आवाज जो जोर से हंसने पर आदमीके मुंहसे निकलती है। २ गिड़गिड़ानेका शब्द, अनुनय विनयका शब्द।

हाहाकार (सं० पु०) १ भयके कारण बहुत आदमियोंके मुंहसे निकला हुआ हाहा शब्द, घबराहटकी चिल्लाहट। शोकध्वनि, कुहराम। ३ युद्धकलरव, लड़ाईमें शोरगुल। ४ अश्वादि प्रेरणध्वनि, घोड़े आदिके दौड़नेकी आवाज।

हाहाठाठी (हिं० स्त्री०) विनोद क्रीड़ा, हंसी ठट्ठा।

हाहाल (सं० क्ली०) विष, जहर।

हाहूबेर (हिं० पु०) जंगली बेर, झड़बेरी।

चतुर्विंश भाग सम्पूर्ण।